इसमतबेमें जितने प्रकारकी रामायण छपीहैं उनमें से कुछ इसमें लिखीहैं ॥

यह प्रसिद्ध पुस्तक गोस्वामि तुलसीदासजी की काव्य भारतवर्ष में है जिसके पढ़ने पढ़ाने से मनुष्य इस लोक में जीवन्मुक्त होकर अन्तमें मुक्ति पाता है और इसके काण्ड पाठशालाओं में भी पढ़ाये जाते हैं और यह पुस्तक हरएक के घरमें होनी चाहिये और बहुत से छापेखानों में यह पुस्तक लाखों प्रति छपी है इसछापेखाने में बहुत से रूपों में यह पुस्तक छपी है सो नीचे लिखे के अनुसार यह पुस्तक मिलेगी ॥

रामायण मूल तुलसीकृत बहुत मोटे अक्षरों की ॥

बहुत मोटे अक्षरों में है जिसको बालक और वृद्ध सुगमता से पढ़सके हैं ऐसे मोटे अक्षरों की आजतक कहीं नहीं छपी तसवीरों और क्षेपकसमेत है ॥

रामायण मूल तुलसीकृत ॥

जो बहुतसी प्रतियोंसे शुद्ध की गई कोई दोहा चौपाई रहने नहीं पाया और इसके काण्ड अलग अलग भी मिलते हैं ॥

रामायण तुलसीकृत टीका सुखदेवलालकृत ॥

इसटीकाको मैनपुरी निवासि श्रीसुखदेवलालजीने रचाहै इसमें सर्वोत्तमगुणयहहै कि श्री गोस्वामी तुलसीदासजी महाराज की रामायण के अर्थ को स्पष्टरीति से सरलदेश भाषा में बखाना है न्यूनाधिक्य नहीं किया ॥

तथा मोटे और चिकने कागज़ की ॥

और इसके काण्ड भी अलग २ मिलते हैं ॥

रामायण टीका रामचरणदासकृत किताबनुमा व पत्रानुमा ॥

इस विस्तृत टीका को अयोध्यानिवासि रामचरणदासजी टीकाकारने निजदेश भाषा में करके रामायणको ऐसासुगम करदिया कि जो थोड़ी भी विद्या रखतेहों वे रामायणका पूरा आशय समझजावें और गूढ़ाशयों के समझने और भक्तिपक्षके बढ़ाने के लिये श्रुतिपुराण और अन्य आचार्यों के श्लोकों से विभूषित करके अति सुन्दर मनोहर बनादिया कोई सन्देह अब तुलसीकृतरामायण की पुस्तकमें इस टीका के देखनेसे रह नहीं गई ऐसा विचित्र और विस्तृत टीका आजतक रामायण [illegible] हीं हुआ है अवलोकन करने से अतीवानन्दहोगा ॥

अध्यात्मरामायण सटीकका सूचीपत्र ।

इति॥

अथ अध्यात्म रामायण सटीक ॥

बैजनाथजी कृत ॥

अप्रमेयत्रयातीतनिर्मलज्ञानमूर्तये ॥ मनोगिरांविदूरायदक्षिणामूर्तयेनमः १

दक्षिणामूर्त्तिःशिवाऽवतारःवेदांतविद्याप्रवर्तकः कथंभूताय दक्षिणामूर्तये अप्रमेयत्रयातीतनिर्मल ज्ञानमूर्तये प्रमातुंप्रमाणीकर्तुंयोग्यः प्रमेयःनप्रमेयःअप्रमेयःत्रयात्अतीतःत्रयातीतःजाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिरूपात् अथवा स्थूल सूक्ष्म कारण रूपशरीरत्रयात् अतीतःभिन्न. अतिइतःअतीतः इणगतावित्यस्मात्क्तप्रत्ययेइतः इतिसिद्धयति अतिउपसर्गःअप्रमेयंचतत्त्रयातीतंअप्रमेयत्रयातीतंमलेनरहितंनिर्मलं ज्ञायते अनेनेतिज्ञानंकरणाधिकरणयोर्ल्युट इतिल्युटप्रत्ययः तत्रचकरणेप्रत्ययेज्ञानंसाधनम् अधिकरणेप्रत्ययेकृतेज्ञायतेसर्वमस्मिन्निति ज्ञानं ब्रह्मनिर्म्मलंचतत्ज्ञानं निर्मलज्ञानं अप्रमेयत्रयातीतंचतत् निर्मलज्ञानं अप्रमेयत्रयातीतनिर्मलज्ञानंतदेवमूर्तिः स्वरूपयस्यसःअप्रमेयत्रयतीतनिर्मलज्ञानमूर्तिः तस्मैनमः पुनःकथंभूतायदक्षिणामूर्तये मनोगिरांविदूराय मनश्चगिरश्चमनोगिरःतासांविदुरायदूरप्रान्तवर्त्तिनेइत्यर्थः विशेषेणदूरः विदूरःतस्मैविदूरायअत्रचदक्षिणामूर्तिरित्यभिधानागुरोरेव परब्रह्मत्वं परमज्ञानदातृत्वं परमाप्रमेयत्वञ्चवर्णितमलमतिविस्तरतः यहअर्थलोकोपकारकनहींहै तातेसमासव्युत्पति रहित प्राकृतरीति अन्वयमात्र करिभाषामें अर्थकरब जामें थोड़ापढ़नेवालेभी मूलते अर्थ समुझैं यहवन्दनात्मकमंगलाचरणहै यथा (दक्षिणश्चासौअमूर्तिश्च दक्षिणामूर्तिः तस्मैपरब्रह्मणेनमः) दक्षिणेशरलोदारौइत्यमरः अर्थात् कृपादयादृष्टिसुलभ उदारभाव सबको परिपूर्ण दानदेनेवाले स्थूलसूक्ष्म कारणतन रहितऐसे जोअन्तर्यामीरूप उदारअमूर्ति परब्रह्म श्रीरघुनाथजीके अर्थ नमस्कार है अर्थात् इसरामायणमें रघुनाथजीको अन्तर्यामिनरूप विशेषि वर्णनहै ताते यहीरूपकहा (कथंभूतायदक्षिणामूर्तये मनोगिरांविदूराय) कैसीउदार अमूर्तिहै कि मन और वाणियों से विशेषि दूरिहै भाव मनकरिकैजाने नहींजात अरु वाणी बखाननहीं करिसकीहै यामें शंकाहोत काहेते इसग्रिथ में वाल्मीकिको बचनहै यथा संसारधर्मैर्निर्मुक्तस्तस्यतेमानसंगृहम् पुनः प्रह्लादकी वाणी के साथै नृसिंहरूप खंभते प्रकटे तौ कैसे मनवाणीते दूरिहैं ताको समाधान यहहै किवाणी तौमनके आधीन अरुमन में षट् अंशहै यथा जिज्ञासा पंचके कर्माकर्म विकर्मा द्राव नियमेन वर्त्तते संकल्पश्च विकल्पश्च मनांशो बहुशोयथा अर्थात्कर्म अकर्म विशेषिकर्म अनियम संकल्प विकल्प ये मनकेछःअंशहैं

जहाँ इनको व्यवहार तहाँ परमेश्वरकैसे जानोजात जब मन नहीं जानिसकत तब वाणी कैसे कहै इस भांति मन वाणी ते विशेषि दूरिहैं अरु जब जीव ईश्वरके सन्मुखभयो तब मनादि अपनो व्यवहार त्यागि बुद्धिमें लयभयो बुद्धिके अंशहै जप यज्ञ तपत्याग आचार अध्ययन तिनकरिकै ईश्वर जानो जात सोई आचार्य वर्णन भी करतेहैं भाव यावत् जीवमनके आधीन तावत्विषयासक्तविमुखहैं तिनकी मन वाणी ते विशेषि दूरिहैं (कथंभूतः) अप्रमेयःत्रयातीतः) जो कहेभी जातेहैं अरुमन वाणीते दूरिहैं तौहैं कैसे अप्रमेयहैं अर्थात् प्रमेयकही प्रमाण अप्रमेय कही नहीं है प्रमाण जाकी भाव जाकी महिमा अतौल असंख्यहै यथा पुरुषसूक्ते ॥ एतावानस्यमहिमाअतोज्यायाँश्चपुरुषःपादोस्य विश्वाभूतानित्रिपादस्यामृतंदिवि भाव उसश्रेष्ठ पुरुषकी ऐसी अपार महिमाहै जाके एक पाद चतुर्थांशमें भूतमात्र ब्रह्माण्डरचनाहै अरु तीनिपाद विनाशरहित आकाशमें है ऐसा वेद कहत इतिअप्रमेय पुनः त्रयः अतीतः अर्थात् माया जीव ईश्वर ये तीनि वा ब्रह्मा विष्णु शिव ये तीनिहूते अतीत नामपरे परमात्मा यथा अथर्वणे रामतापिन्यां ओंयोवैश्रीरामचन्द्रः सभगवान्योब्रह्माविष्णुरीश्वरोयः सर्ववेदात्माभूर्भुवःस्वस्तस्मैवैनमोनमः इतित्रयातीत (पुनःकथंभूतायनिर्मलज्ञानमूर्तये) यत्निर्मलंज्ञानंतत्स्वरूपाय अर्थात् मनवाणी ते दूरि तीनिहूते परजाकी महिमा असंख्य इत्यादि जाकोकहतौ अमूर्ति कैसे हैं तापरकहत कि जाको अमल ज्ञान है अर्थात् जैसे सोने की मूर्तिबाहेर भीतर एकही सोनाहै तथा देही देह विभागरहित बाहेर भीतर शुद्ध परमात्म तत्त्व त्यहि स्वरूपके अर्थ नमस्कार है १ ॥

सूतउवाच ॥ कदाचिन्नारदोयोगी परानुग्रहवाँछया
पर्यटन्सकलाल्लोकान्सत्यलोकमुपागमत् २ ॥

नारदः योगीपर अनुग्रहवांछया सकलान्लोकान् पर्यटन् कदाचित् सत्यलोकं उपागमत्) श्रोतन प्रतिसूतजी बोले कि यम नियम आसन प्रत्याहार प्राणायाम धारणा ध्यानसमाधि इतिअष्टौ अंग योगकरि परमात्मरूपकी समाधिमें थिर ऐसे नारदयोगी धर्मज्ञानभक्ति उपदेश द्वारापरदुःख हरणे की इच्छाकरिकै स्वर्गभूपातालादि जो सकल लोकहैं तिनहिपर्यटन् विचरतसंतेकदाचित् किसीसमयमें सत्यलोक जो ब्रह्मधाम है तहांगये २ ॥

तत्रदृष्ट्वामूर्तिमद्भिश्छन्दोभिःपरिवेष्टितम् ॥बालार्कप्रभयासम्यग्भासयंतंसभागृहम् ३
मार्कण्डेयादिमुनिभिःस्तूयमानंमुहुर्मुहुः ॥ सर्वार्थगोचरज्ञानंसरस्वत्यासमन्वितम् ४
चतुर्मुखंजगन्नाथंभक्ताभीष्टफलप्रदम् ॥ प्रणम्यदण्डवद्भक्त्यातुष्टावमुनिपुंगवः ५
संतुष्टस्तंमुनिम्प्राहस्वयंभूर्वैष्णवोत्तमम् ॥किम्प्रष्टुकामस्त्वमसितद्वदिष्यामितेमुने ६

(तत्रमूर्तिमद्भिःछन्दोभिःपरिवेष्टितंसम्यक्सभागृहम् बालार्कप्रभयाभासयंतंदृष्ट्वा) तहांमूर्तिमान जो सब वेद तिनकरि परिवेष्टित अर्थात् चारिहु दिशिघेरे वेदखड़ेहैं मध्य सिंहासनपर ब्रह्माजी कैसे शोभितहैं कि संपूर्ण जो सभामंदिरहै ताहिप्रातके सूर्यनकी ऐसी जो अपने तनकी प्रभाहै त्यहि करिकै प्रकाशित किहेहैं तिनहिं नारदजीदेखे ३ (मार्कंडेयादिमुनिभिःमुहुःमुहुःस्तूयमानम्सरस्वत्यासमन्वितम्सर्वार्थगोचरज्ञानम्) मार्कंडेय आदि जे चिरंजीवी समूहमुनिहैं तिनकरिकै बारंबार स्तूयमान अर्थात् स्तुतिकरिरहेहैं पुनः सरस्वती जो शक्तिहै तिन करिकै युक्त आसीनहैं पुनः वेदनको जो सिद्धांत जो अर्थहै ताकी गोचर जो विषय ताको परिपूर्ण ज्ञान है जिनके ऐसे ब्रह्मा विराजमानहैं ४ (मुनिपुंग

वः दण्डवत्प्रणम्यभक्ताभीष्टफलप्रदम् ॥ चतुर्मुखंजगन्नाथंभक्तयातुष्टाव) मुनिनमें उत्तमनारददण्डकी नाईं भूमिपै गिरि प्रणामकरि भक्तनके अभिअन्तर को इष्ट जोमनोरथ है सो फल को पुष्ट करि देनेवाले चारिमुखहैं जिनके ऐसे जो जगत् के नाथ ब्रह्माहैं तिनहिं भक्ति करिकै नारद प्रसन्न करतेभये ५ (संतुष्टःस्वयंभूर्वैष्णवोत्तममुनिंतंप्राहमुनेत्वमसिकिंप्रष्टुकामःतत्तेवदिष्यामि) प्रसन्न ह्वैकै स्वयंभू जो ब्रह्माजी है सो मनकी अभिप्राय विचारि वैष्णवनमें उत्तम भक्त नारदमुनि तिनप्रति ब्रह्मावोले हे मुने तुम्हारे मनमें क्या पूछनेकी कामनाहै भाव जो इच्छाहोइ सो प्रश्नकरौसो प्रसन्नतापूर्वक हम तुम्हारे हेत सम्पूर्ण वर्णन करहिंगे ६ ॥

इत्याकर्ण्यवचस्तस्यमुनिर्ब्रह्माणमब्रवीत् ॥ त्वत्तःश्रुतंमयासर्वंपूर्वमेवशुभाशुभम् ७ ॥
इदानीमेकमेवास्तिश्रोतव्यंसुरसत्तम ॥ तद्रहस्यमपिब्रूहियदितेऽनुग्रहोमयि ८
प्राप्तेकलियुगेघोरेनराःपुण्यविवर्जिताः ॥ दुराचाररताःसर्वेसत्यवार्त्तापराङ्मुखाः ९

(इतितस्यवचःआकर्ण्यमुनिःब्रह्माणंअब्रवीत् शुभाशुभम्सर्वंएवपूर्वंत्वत्तःमयाश्रुतं) जो ब्रह्माने कहा कि जो इच्छाहोय सो पूछौ ताको हम कहैंगे इत्यादि तिन ब्रह्माकेवचन आकर्ण्य अर्थात् सुनिकै नारदमुनि ब्रह्मा प्रतिबोलतभये अर्थात् नारदबोले कि शुभ जो धर्मके आचरण यथा यज्ञतपदान तीर्थव्रत पूजापाठ संध्या तर्पण परोपकारादि जहांलौं शुभकर्महैं पुनः अशुभ जो अधर्मके अचरण यथा हिंसाचोरी युवापर स्त्री वेश्यागमनपर अपकारादि जहांलौं अशुभकर्म हैं इत्यादि शुभाशुभ कर्म करनेते जो जो फल जीवको प्राप्तहोताहै सो सब निश्चयकरिकै पूर्वही आपके मुखते मैंने सुनाहै भाव इनबातोंको पूछनेकी इच्छानहीं है ७ (इदानींएकंश्रोतव्यंएवअस्तिसुरसत्तमयदिमयितेअनुग्रहः तत्रहस्यंअपिब्रूहि) नारदबोले कि इदानीं अर्थात् या समयमेंएकबात सुनिबेकी इच्छा निश्चयकरिकैहै हे देवनमें उत्तम ब्रह्माजी यदिमयिते अनुग्रहः अर्थात् आपना पुत्रजानि जो मेरेविषे आपकी सदादयाहोय तौ तत्रहस्यं अपिब्रूहि अर्थात् जो मैं पूछौंगो सोरहस्य गुप्ततत्त्व निश्चय करि कहिये ८ (घोरेकलियुगेप्राप्तेसर्वेनराःसत्यवार्तापराङ्मुखाःपुण्यविवर्जिताःदुरआचाररताः) ब्रह्माप्रति नारदकहत कि महाभयंकर कालकलियुग प्राप्तभये संते सब मनुष्यमात्र सत्यबातोंते पराङ्मुख विमुखहोयगे अर्थात् जो देखे सोई कहै जो कहै सोई करै इतिसत्य त्यहिते प्रतिकूलझूंठा व्यवहाररखे पुण्य विवर्जिताः अर्थात् पूजापाठ संध्या तर्पण तीर्थव्रत तपदानादि पुण्यकर्म त्यागिदुरआचाररता अर्थात् परधन हरणे परध्यानअनिष्ट चिंतवन नास्तीकतामनके पापहैं कटुवचन झूंठबोलन परनिंदावृथावादये वचनपापहैं हिंसाचोरी परस्त्रीरत कर्मके पापहैं इत्यादि दुष्टआचारमें प्रीतिकिहेरहेंगे ९॥

परापवादनिरताःपरद्रव्याभिलाषिणः ॥ परस्त्रीसक्तमनसःपरहिंसापरायणाः १०
देहात्मदृष्टयोमूढानास्तिकाःपशुबुद्धयः ॥ मातापितृकृतद्वेषाःस्त्रीदेवाःकामकिङ्कराः ११
विप्रालोभग्रहग्रस्तावेदविक्रयजीविनः ॥ धनार्जनार्थमभ्यस्तविद्यामदविमोहिताः १२

कैसे दुराचार में रत होयँगे सो प्रसिद्ध नारद कहत यथा (पर अपवाद निरताः) परारे अपवाद में रत प्रीति किहे अर्थात् परारी निन्दा करनेमें हर्ष सहित लगेरहेंगे तथा लोगनके उत्तमगुण मूंदनेहेत जो छिपे किंचित् अवगुण हैं तिनमें अनेक प्रबन्ध बांधि प्रसिद्ध करहिंगे पुनः (परद्रव्यःअभिलाषिणाः) परारी द्रव्य लेने की सदा अभिलाषा राखेंगे अर्थात् चोरी ठगी डाक छल दम्भादि अनेक उपाय करि परारधन हरिलेइँगे पुनः (परस्त्रीसक्तमनसः) परारिस्त्रीमें मन आसक्त रक्खैंगे

अर्थात् उत्तम गुणज्ञ कुलवन्ती स्वरूपवन्त अपनी स्त्री ताको अनादर करि कुलटा पुंचली नीच वेश्यादिकन पर ऐसी प्रीति करैंगे जो दण्ड अपमानादि अनेक दुख पावतहू उसीमेंमन लगाये रहैं-गे पुनः (परहिंसापरायणः) ईर्षा वैर अथवा पेटभरैहेत परजीव मारनेमें सदा लगे रहैंगे १० (देहे ष्वात्मबुद्धयः) देहैंविषे आत्मबुद्धि राखैंगे अर्थात् सत् चित् आनन्द सदा एकरस जो आपनो सहज स्वरूप ताहि भूलि जो अनित्य नाशमान देह ताही को आत्मवत् सत्य माने हैं ताते (मूढानास्तिकाः) देहके सुखहेत मूढ महाअज्ञानी नास्तीक होयँगे अर्थात् वेदधर्म्मको अनादर करि तनसुखहेत अधर्म आचरण करनेलगैंगे कौनभांति (पशुबुद्धयःमातापितृकृतद्वेषाः) केवल अहार विहारमें आसक्त इति पशुनकीसी बुद्धिहोगी माता पिताते विरोध करहिंगे पुनः (कामाकिंकरास्त्रीदेवाः) कामके सेवक ह्वै स्त्रीको इष्टदेव मानि उसीकी सेवामें लगेरहेंगे ११ प्रथम समान प्राणी मात्रोंको कहि अब ब्राह्मणादि वर्णोंके विलग आचरण कहते हैं यथा (विप्रालोभग्रहग्रस्ता) संसार सागरमें ब्राह्मणोंको तालोभरूप ग्राह नक्र सोई ग्रास करिलेइगा भाव ऐसालोभ अन्तरमें बढैगाजामें विचार बुद्धीलोप ह्वैजाइगी तब महालोभवश (वेदविक्रयजीविनः) वेदोंको बेंचिकै जीविका करैंगे अर्थात् लेखकी करि अथवा खरीदिकरि ग्रंथोंको बेचना अथवा जो धन लाभ देखेंगे उसी में अभ्यास करैंगे अथवा धनलोभते नीच ऊँच विचारहीन जासों लाभ देखैंगे ताहीको वेद पढ़ावैंगे सुनावेंगे इत्यादि रीतिते भोजन बसनादिको निर्बाह करैंगे पुनः (धनार्जनार्थअभ्यस्त) धनकेउपजावनेअर्थ विद्यामें अभ्यास करेंगे अर्थात् आपने धर्म कर्मकी तौ सूरति भी नकरैंगे जामें धनलाभ होते देखैंगे ताही विद्याको पढैंगे पुनः (विद्यामदविमोहिताः) विद्याके मदमें विशेषि मोहितरहैंगे अर्थात् जो विद्या पढैंगे उसीको चित्तमें हर्ष बढाये विचार चैतन्यतारहित रहैंगे १२ ॥

त्यक्तस्वजातिकर्माणः प्रायशः परवंचकाः क्षत्रियाश्चतथावैश्याःस्वधर्मत्यागशीलिनः १३
तद्वच्छूद्राश्चयेकेचिद्ब्राह्मणाचारतत्पराः ॥ स्त्रियश्चप्रायशोभ्रष्टाभर्तृवज्ञाननिर्भयाः १४
श्वशुरद्रोहकारिण्योभविष्यन्तिनसंशयः ॥ ऐतेषांनष्टबुद्धीनांपरलोकःकथम्भवेत् १५

(स्वजातिकर्माणःत्यक्तःपरवंचकःप्रायशःतथाक्षत्रियश्चवैश्याःस्वधर्मत्यागशीलिनः)अपनी जाति के कर्म ब्राह्मणलोग त्यागिदेईंगे अर्थात् ब्राह्मणके कर्म यथा गीतायां । समोदमस्तपःशौचंक्षांतिरार्जवमेवच ज्ञानंविज्ञानमास्तिक्यंब्रह्मकर्मस्वभावजम् ॥ इत्यादि अपनी जातिकेकर्म सोतौ त्यागिदेईंगे अरु परवंचका पराये छलिवेहेत दम्भ कपट ज्योतिष बैदक तन्त्रादिक क्रियाप्रायशः अर्थात् बहुत प्रकारते करैंगे ताही भांति क्षत्रीलोग पुनः वैश्यलोग तेभी स्वधर्मत्याग शीलिनः आपने धर्मोंके त्याग में तत्पर रहैंगे अर्थात् क्षत्रीकर्म यथा । शौर्यंतेजोधृतिर्दाक्ष्यंयुद्धेचाप्यपलायनंदानमीश्वरभावश्चक्षात्रंकर्मस्वभावजम॥वैश्यकर्मयथा। कृषीगोरक्षवाणिज्यंवैश्यकर्मस्वभाजम्॥इत्यादि आपनेकर्मनको त्यागि कुमार्ग रत भये १ (चतद्वत्येशूद्राःकेचित्ब्राह्मणाचारतत्परः) यथा ब्राह्मणादि तिनहीं सम ये शूद्रहैं तेभी त्रिवर्ण सेवा अपना कर्म त्यागे हैं कोउ ब्राह्मणोंकेसे आचार करतेहैं (चस्त्रियःप्रायशःभ्रष्टःभर्तृअवज्ञनिर्भयः) पुनः स्त्रीलोग बहुते भ्रष्ट होइँगी ते आपने पतिको अनादर करिबेमें निर्भय रहैंगी १४ (श्वसुरद्रोहकारिण्योभविष्यन्तिसंशयःन) स्त्रिजन सासु श्वसुरौ ते द्रोह करनेवाली होंगी यामें संशय नहीं है (येतेषांनष्टबुद्धीनांकथंपरलोकःभवेत्) येजो कहिआये जिनकी बुद्धि नाशभई तिनको कैसे परलोक में शुभगति होइगी अर्थात् शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध मैथुनादि विषयन को सेवतसन्ते इन्द्रिन के सुखहेत नीच ऊँच अनेक संग करी ताते कामना बढ़ी जाकेद्वारा कामना की हानि भई

तापर क्रोध भयो क्रोधते मोह अर्थात् अचेत भये शास्त्र गुरुउपदेश भूलिगये तब बुद्धि नाश भयो जीव नाशभयो यथागीतायाम् । ध्यायतोविषयान्पुंसःसंगस्तेषूपजायते । संगात्संजायतेकामःकामात्क्रोधोभिजायते ॥ क्रोधाद्भवतिसम्मोहःसम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः । स्मृतिभ्रंशाद्बुद्धिनाशोबुद्धिनाशात्प्रणश्यति ॥ इत्यादि जिनकी बुद्धि नाशभई तिनको परलोक में शुभ गति कैसे ह्वै सक्ती है १५ ॥

इतिचिन्ताकुलंचित्तंजायतेममसन्ततम् ॥ लघूपायेनयेनैषांपरलोकगतिर्भवेत् १६ तामुपायमुपाख्याहिसर्ववेत्तियतोभवान् ॥ इत्यृषेर्वाक्यमाकर्ण्यप्रत्युवाचाम्बुजासनः १७ साधुपृष्टंत्वयासाधोवक्ष्येतच्छृणुसादरम् ॥ पुरात्रिपुरहंतारंपार्वतीभक्तवत्सला १८ श्रीरामतत्त्वंजिज्ञासुःपप्रच्छविनयान्विता ॥ प्रियायैगिरिशस्तस्यैगूढंव्याख्यातवान्स्वयम् १९ ॥

(इतिचिन्ताममचित्तंसन्ततंआकुलंजायते) नारद बोले कि जो मैं कहि आयोहौं इसी चिन्ता करिकै मेरा चित्त सदा आकुलताको प्राप्तहोता है अर्थात् कलियुगी नष्टबुद्धी जीवनको कैसे परलोक बनी भाव नहीं बनसक्ता है सब घोर गतिको जायँगे यहि चिन्ता करिकै मेरा चित्त सदा आकुलता कों प्राप्तहोताहै १६ निर्हेतु परोपकारता यही दयाहै ताको धारण किहे नारद बोले (येनलघुनाउपायेनएषांपरलोकेगतिःभवेत् तांउपायंउपाख्याहियतःभवान्सर्ववेत्ति) नारद बोले हे भगवन् जौनी थोरी उपाय करिकै इन कलियुगी जीवनको परलोकमें शुभगति प्राप्तहोइ तौन जो उपाय होइ ताहि कहिये इस हेतु आपसे पूँछताहौं जाते आप सर्व सिद्धान्त तत्त्वके जाननेवाले सर्वज्ञहौ अब सूतजी बोले (इति ऋषेः वाक्यं आकर्ण्य अम्बुजासनः प्रति उवाच) इत्यादि नारदऋषि की जो वाक्य हैं ताहि सुनिकै अम्बुजआसनः अर्थात् कमल है आसन जिनको ऐसे ब्रह्माजी नारदप्रति बोलतेभये अर्थात् जो थोरे उपायमें कलियुगी जीवनकी गतिबनै तौन उपाय जो होय ताहि कृपाकरि कहिये काहेते आप सब तत्त्ववस्तुके जाननेवाले सर्वज्ञहौ सूतजीकहत कि पूर्वकहीहुई इत्यादि नारद ऋषि की वाक्य ताहि सुनिकै ब्रह्माजी नारदसों बोलते भये १७ (साधोत्वयासाधुपृष्टं) हे साधुपरोपकारी नारद तुमकरिकै जो प्रश्न किया गया सो भी साधु अर्थात् परोपकारी है (तत्अहंवक्ष्येत्वंसादरंशृणु) तुम्हारे प्रश्नको जो उत्तरहै ताहिहम कहते हैं सो तुम सहित आदरमन श्रवण लगायकै सुनौ (पुरा त्रिपुरहंतारंपार्वती) पूर्व किसी कालमें त्रिपुरासुरको नाशकरने वाले जो शिवजी तिन प्रति पार्वती जी प्रश्न किया कैसी हैं पार्वती (भक्तवत्सला) यथा छोटे बछवा परगऊ प्रीतिराखत इसी भांति भक्तन पर करुणा राखती हैं तिन श्रोता है प्रश्न किया अरु तीनिहूलोकन को महादुःख दायक जो त्रिपुरासुर ताको जिन एकहीबाणते मारि जननको आनन्द दिया ऐसे शिवजामें वक्ताहैं सो सम्वाद सुनिये १८ क्या पार्वतीजीने प्रश्नकिया सो कहत (श्रीरामतत्त्वंजिज्ञासुः) गुप्त श्रीरामतत्त्व जानवेकी इच्छा करिकै पार्वतीजी(विनयान्वितापप्रच्छ) नम्रता पूर्वक पूछतीभई सो सुनि (तस्यैप्रियायै) तौनी पार्वती प्राण प्रिया तिनको समुझावने अर्थ (गिरिशःस्वयं) शिवजी आपु (गूढंव्याख्यातवान्) जो अत्यंत गुप्तरहस्यहै ताको प्रसिद्ध समझायकै कहे अर्थात् परात्पर परब्रह्म साकेत विहारी की परिपूर्ण ऐश्वर्य ब्रह्मा विष्णु शिवादि नहीं जानिसक्ते हैं यथा स्कंदपुराणे निर्वाण खण्डे विष्णु वाक्यं । अनन्ताशक्तयोरामप्रदृश्यंतेतवप्रभो । तिनके नामरूप लीलाधामकी महिमा कहनेमें वेदनेति नेतिकरत सोई रघुवंशनाथ हैं जब माधुर्य लीलाकरनेलगे तब काकभुशुंडि सती गरुड इत्यादिकनको

देखिभ्रम भया सोई रामतत्त्व जानिवेहेतु अधिकारी आर्त्तहै पार्वतीजी प्रश्न किया सो एक तौ भक्त वत्सला परोपकारी पुनः अत्यंत प्यारी हैं ऐसा जानि गुप्त रामतत्त्व को प्रसिद्ध करि शिवजी आपु कहे १९ ॥

पुराणोत्तममध्यात्मरामायणमितिस्मृतम् ॥ तत्पार्वतीजगद्धात्रीपूजयित्वादिवानिशम्२०आलोचयंतीस्वानंदमग्नातिष्ठतिसांप्रतम् ॥ प्रचरिष्यतितल्लोकेप्राण्यदृष्टवशाद्यदा २१ ॥

(पुराणोत्तमं) जो पुराणमें उत्तम (अध्यात्मरामायणंइतिस्मृतं) अध्यात्मरामायण इत्यादि नाम विख्यात जानों (तत्पार्वतीजगद्धात्री) तेहि रामायणको पार्वती जगत्की माता (दिवानिशं पूजयित्वा) दिनों रात्रि पूजाकरती हैं अर्थात् जो अनादि कालतेहोइ ताको पुराण कही तिनविषे उत्तमभाव उत्पत्तिपालन प्रलय मन्वंतर वंशावली इत्यादि नवलक्षण पुराणनमें लौकिक कथा बहुत होतीहैं अरु यामें ज्ञानयुत केवल श्रीरामयशहै ताते पुराणनते उत्तमहै अथवा जाके श्रवणमात्र ते धर्म उपजत चित्त शुद्धहै रामतत्त्वजानवेको ज्ञानहोत पुनः (आत्मनिअधिकृतंअध्यात्मं) आत्म रूपविषे अधिकारजाहि ताहिकही अध्यात्म त्यहिविषे अयनमंदिरहै रघुनाथजीको अन्तर्यामी रूप ते वासकिहेहैंयथा रामतापिन्यां। रमंतेयोगिनोनंतेसत्यानंदेचिदात्मनि। इतिरामपदेनासौपरंब्रह्माभिधीयते॥सोई अन्तर्यामी रूपकी शुद्ध चित्तते प्राप्ती प्रतिपादनहै जहां ताको कहिये अध्यात्मरामायण इत्यादि याको नाम प्रसिद्धजानों तत् तौनी अध्यात्मरामायण की महिमा कैसी है जाको जगन्मातु पार्वतीजी दिनों राति पूजती हैं २० (आलोचयंती) रामरूपको अंतरके नेत्रनते अवलोकन करती हुई (स्वानंदमग्ना) अपने स्वरूपानंदमें बूड़ीहुई (सांप्रतंतिष्ठति) अबहूं बिराजमान हैं अर्थात् कौनेभावते पार्वतीजी पूजती हैं सो कहत कि बाह्य नेत्रनते रामायणको देखि भावार्थ बिचारती हैं अरु अन्तर दृष्टिते अन्तर्यामी रामरूपको अवलोकतमें अपने आत्मरूपके आनन्दमें अजहूँ बूड़ी हुई बिराजमान हैं (तत्प्राण्यदृष्टवशात्यदालोकेप्रचरिष्यति) तौन जो अध्यात्मरामायण है सो प्राणिनकी भाग्यवशते जौनेकाल लोकविषे प्रचारहोई अर्थात् ब्रह्मावोले कि हे नारद तुम्हारी प्रश्न अनुकूल कहताहौं जिसको गिरिजा पूजतीहैं तत् तौन जो अध्यात्म रामायण सो प्राणि लोक जनन की अदृष्ट भाग्यवश ते जौने काल लोक विषे प्रचार होई ताके श्रवण कीर्तन मात्रही ते कलियुगी निर्बुद्धी जननकी भी शुभगति हैजायगी इतिशेषः २१ ॥

तस्याध्ययनमात्रेणजनायास्यन्तिसद्गतिम् ॥ तावद्विजृंभतेपापंब्रह्महत्यापुरस्सरम् २२ यावज्जगतिनाध्यात्मरामायणमुदेष्यति ॥ तावत्कलिमहोत्साहोनिश्शंकंसंप्रवर्तते २३ तावद्यमभटाःशूराःसंचरिष्यन्तिनिर्भयाः ॥ यावज्जगतिनाध्यात्मरामायणमुदेष्यति २४ ॥

(तस्याध्ययनमात्रेण)तौनी अध्यात्मरामायणके पाठमात्रकरिकै(जनासद्गतिंयास्यंति)सामान्य जनभी उत्तमगति को जावैंगे (ब्रह्महत्यापुरस्सरम्पापम्) ब्राह्मणवधकी हत्या मुख्य आगे ताकेपाछे लगेहुये यथा हिंसा चोरी परहानि पर अपवाद पर स्त्री गमन इत्यादि यावत् पाप हैं ते सब (तावद्विजृंभते) जृम्भगात्र विनामे धातु है तामें पूर्व वि उपसर्ग अन्त ते प्रत्यय लगे विजृम्भतेभया अर्थात् सब पाप तबैतक सब प्राणिन की देहपर जमुहाते हैं कबतक सो आगे कहत २२ (यावत्जगति)

जबतक जगत् विषे (अध्यात्मरामायणंनउदेष्यति) अर्थात् कलि कुचाल रात्री में पापरूप चोर तबै तक जनन को दुःख दायक हैं जबतक जगत् में अध्यात्मरामायण रूप सूर्यवत् प्रभा नहीं उदयहोत (तावत् कलिमहाउत्साहः) तबै तक कलियुग महाउत्साह मनमें बढाये (निशंकंसंप्रवर्तते) शंका त्यागे लोक में प्रवर्तत अर्थात् तबैतक कलियुग लोक विजयी वीरवत् महा उत्साह युद्ध करिवे की बड़ी हर्ष मनमें बढाये अरु धर्मनीति विवेक विरागादिकोंकी शंकात्यागे जगत् जननमें आपनो अधर्म प्रभाव फैलावत रहैगो २३ (यमभटाःशूराः) यमराज के गण बड़े योधा शूर बने (निर्भयाःसंचरिष्यंति) भय त्यागे सम्पूर्ण लोकन में विचरि हैं (यावज्जगतिअध्यात्मरामायणंनउदेष्यति) अर्थात् सतयुगादि में हरिहर के पार्षदन को भय राखतेरहैं तिन सबलन सों युद्धमें प्राणघातकी शंकाते शूर वीर नहीं बनतेरहैं अरु कलियुग में तो अधर्मको प्रचार तहां हरिहर पार्षद किसहेत जाय ताते यम राज के गण बड़े योधा शूर बने तबतक निडर सब लोकन में घूमत रहिहैं जब तक अध्यात्मरामायण रूप सूर्यवत् प्रभा लोक में नहीं उदयहोत २४ ॥

यावज्जगतिनाध्यात्मरामायणमुदेष्यति ॥ तावत्सर्वाणिशास्त्राणिविवदंतिपरस्परम् २५ यावज्जगतिनाध्यात्मरामायणमुदेष्यति ॥ तावत्स्वरूपंरामस्यदुर्बोधंमहतामपि २६ ॥

जबतक अध्यात्मरामायण रूप सूर्यवत्प्रभा नहीं उदय होती है (तावत्सर्वाणिशास्त्राणिपरस्परं विवदंति) तबतक मीमांसादि सब छवो शास्त्र आपुसमें विशेषि वाद करते हैं यथा मीमांसा कहत कि यज्ञादि उत्तम कर्म करि देवलोक में फलभोग यही मुक्ति है पातंजलि योगशास्त्र कहत कि ईश्वर ते जीव न्यारा है ईश्वरकी सेवा करि मुक्तिहोत सांख्यकहत कि प्रकृति पुरुष सब तत्त्वनको ज्ञान भये सब एकही हैं सोई मुक्ति है न्याय कहत यथा कुम्हार माटी ते अनेक पात्र बनावत तथा कर्ता कारण पाय सब पदार्थ रचत तामें प्रमेय प्रमाणादि पदार्थ ज्ञान सोई मुक्ति है वैशेषिक कहत कि जगत् काल के आधीन है निवृत्त धर्मज्ञान मुक्ति है वेदांत कहत कि जीव ब्रह्म एकही माया आवरण ते भिन्न देखात आवरण मिटना मुक्तिहै इत्यादि शास्त्रन को परस्पर विवाद तबैतक है जबतक अध्यात्म रामायण नहीं देखता है भाव याके देखे ते आत्मरूप ज्ञान ते परब्रह्म परमात्मा अन्तर्यामी रामरूप को ज्ञान होत सन्ते सब शास्त्रनको मत उसी को अंग ह्वै जाते हैं २५ यावत् अध्यात्मरामायणना (तावत्रामस्यस्वरूपंमहतांअपिदुर्बोधं) तबतक रघुनाथजीके स्वरूपका बोधहोना शास्त्रज्ञानीमहात्मनको भी दुर्गमहै अर्थात् अध्यात्मरामायणको भावार्थ जबतक हृदयमें सूर्यवत् प्रकाश नहीं करता तब तक जो शास्त्रज्ञानभी है तबहूं श्रीरामरूपको यथार्थ ज्ञान नहीं ह्वैसकाहै इसीते सब विवाद करते हैं अरु जब श्रीरामरूपको बोधभया तब सबै शास्त्र अंगकरि देखाते हैं यथा भारतादौ टीकायां नीलकंठाचार्येणेदंपद्यमुक्तंतत्राहं वाह्यःस्तेनाभिभाषीवहिरुदवसितंयातितर्कोऽप्रतिष्ठोमीमांसाप्रातिहार्य्यंभजति गुणगणंयस्यसंख्यातिसांख्यः हृत्पीठेयोगशुद्धोनिहितमुपनिषद्वाहदृंदेरलंबोभाग्यंश्रीलक्ष्मणार्योजगतिविजयते यस्यलेशाशिवाद्याः अस्यश्लोकस्यार्थःस्तेनाऽभिभाषीप्रच्छन्नबौद्धः यः वस्त्रेणमुखंवध्वा आच्छाद्यभाषतेसप्रछन्नबौद्धः यत्रसदसिवाह्यः अंतरेप्रवेशंनकरोति किंतुवहिःस्थितोभवति वहिरुदवसितः अर्थात् बौधमतजाकेधाम के भीतर नहीं जायसकत बाहरै खड़ेरहत भाव जो रामरूपको ज्ञान होवै तौ सौभाविकही आपनामत त्यागकरै पुनः वेदाविरुद्धस्तर्कः तर्कशास्त्रंयत्र अप्रतिष्ठः प्रतिष्ठारहितयंयाति अर्थात् वैशेषिक न्याय शास्त्र अनादरते द्वारपरे है पुनः मीमांसाशास्त्रं

यत्रसदसि प्रातिहार्य्यं भजति द्वारपालकत्वंकुरुते सांख्यः शास्त्रं यस्य गुणगणं गुणसमूहं संख्यातिसं ख्यांकरोतियोगशुद्धेयोगश्चित्तवृत्तिनिरोधस्तेनशुद्धेहृत्पीठे हृदयकमले उपनिषद्वाहवृंदे निर्गमैर्नि हितंस्थापितंमेपरंभाग्यं सर्वोत्कृष्टविराजमानराजाधिराजकिशोरः श्रीरामचन्द्रः जगति लोके विजय ते सर्वोत्कृष्टतया विराजते यस्यलेशाः शिवाद्याः देवाः संति २६ ॥

अध्यात्मरामायणसंकीर्तनश्रवणादिजम् ॥ फलंवक्तुंनशक्नोमिकात्स्न्र्येनमुनिसत्तम २७ तथापितस्यमाहात्म्यंवक्ष्येकिञ्चित्तवानघ ॥ शृणुचित्तंसमाधायशिवेनोक्तंपुरामम २८

(मुनिसत्तम) मुनिन में श्रेष्ठ हेनारद अध्यात्मरामायण को (संकीर्तनश्रवणादिजं फलम्) संपूर्ण पढ़ने सुनने को जैसा फल है (कात्स्न्र्येनवक्तुंशक्नोमिन) संपूर्ण कहने को समर्थ हम नहीं हैं अर्थात् ब्रह्मा बोले कि मुनिन में उत्तम हेनारद अध्यात्मरामायण संपूर्ण पढ़ने तथा सुनवे को जैसा फल है सो संपूर्ण तौ हमहूं नहीं कहिसके हैं २७ (तथापिपुरामम शिवेनउक्तं) संपूर्णकहने को समर्थ नहीं हौं तौभी पूर्वकालमें मोंसे शिवजीने कहाहै (तस्यमाहात्म्यंकिंचित्) त्यहिअध्या त्म रामायणको माहात्म्य कछुथोरा (हेअनघतववक्ष्ये) हेपापरहित तुमते हमकहव (चित्तंसमा धायशृणु) चित्तको सावधान करिसुनौ अर्थात् ब्रह्माजी कहत कि संपूर्ण कहने को तौ हम समर्थ नहीं हैं तौभी पूर्वकालमें मोंसे जो शिवजीने कहाहै सो अध्यात्मरामायण को माहात्म्य कछु थोरा तुमतेहम कहब हे अनघनिः पाप नारद तुम चित्तको स्थिरकरि सुनिये २८ ॥

अध्यात्मरामायणतःश्लोकंश्लोकार्द्धमेववाः ॥ यःपठेद्भक्तिसंयुक्तःसपापान्मुच्य तेक्षणात् २९ यस्तुप्रत्यहमध्यात्मरामायणमनन्यधीः यथाशक्तिवदेद्भक्त्यासजी वन्मुक्तउच्यते ३० योभक्त्यार्चयतेऽध्यात्मरामायणमतंद्रितः ॥ दिनेदिनेऽश्वमे धस्यफलंतस्यभवेन्मुने ३१ ॥

(श्लोकंवाएवश्लोकअर्द्ध) एकश्लोक अथवा निश्चय करिकै आधाश्लोक (यःभक्तिसंयुक्तःप ठेत्) जो भक्तिसमेत पढ़ताहै (सक्षणात्पापान्मुच्यते) सो क्षण भरेमें पापते छूटिजात अर्थात् अध्यात्म रामायणको एकश्लोक यथा यः पृथ्वीभरवारणायदिविजैः संप्रार्थितश्चिन्मयः संजातः पृथिवीतले रविकुले मायामनुष्योऽव्ययः। निश्चक्रंहतराक्षसः पुनरगाद्ब्रह्मत्वमाद्यंस्थिरां कीर्तिं पापहरांविधायजगतांतंजानकीशं भजे ॥ पुनः अर्द्धश्लोक ॥ आनन्दसांद्रममलंनिजबोधरू पंसीतापतिंविदिततत्त्वमहंभजामि । इत्यादि भक्तिसंयुत अर्थात् सबको भरोसा त्यागि शुद्ध- चित प्रेमसमेत जो पढ़ै तौ एक क्षणभरे में पापनते छूटि शुद्ध रामसनेही ह्वैजाय २९ (तुपुनःयः अनन्यधीः) जो अनन्य बुद्धिते (प्रतिअहंअध्यात्मरामायणं) प्रति दिन अध्यात्मरामायण जो है ताहि (यथाशक्तिभक्त्यावदेत्)जैसी अपना कोशक्ति होइ तेतनी समय भक्ति करि पढ़ै (सजीवनमुक्त उच्यते) सो जीवनमुक्त कहिबे योग्य है अनन्यथा ॥ नविधिर्ननिषेधश्चप्रेमयुक्तंरघूत्तमे । इन्द्रियाणा मभावःस्यात्सोऽनन्योपासकःस्मृतः॥ इत्यादि अनन्य बुद्धिते प्रतिदिन रोज रोज अध्यात्मरामायण को अपनी शक्तिभरि शुद्धहृदय प्रेमसमेत पढ़ता है सो जीवनमुक्त जीवतहीं वाकी मुक्ति है ऐसा कहिबे योग्यहै ३० (योअतंद्रितः) जो आलस त्यागिकै (भक्त्याअर्चयते) अध्यात्मरामायण को भक्ति करिकै पूजन करता है (हेमुनेतस्यदिनेदिने) हे नारदमुनि तेहिको रोज रोज (अश्वमेधस्य फलंलभेत्) अश्वमेध यज्ञकरनेका फल होताहै अर्थात् जो आलस त्यागि भक्तिकरिकै प्रेमते नित्य

अध्यात्मरामायणको पूजताहै हे नारद ताको रोजरोज अश्वमेध यज्ञ करने कैसो फल मिलताहै ३१ ॥

यदृच्छयापियोऽध्यात्मरामायणमनादरात् ॥ अन्यतःशृणुयान्मर्त्यःसोपिमुच्येत पातकात् ३२ नमस्करोतियोऽध्यात्मरामायणमदूरतः ॥ सर्वदेवार्चनंफलंसम्प्राप्नोतिनसंशयः ३३ लिखित्वापुस्तकेऽध्यात्मरामायणमशेपतः ॥ योदद्याद्रामभक्तेभ्यस्तस्यपुण्यफलंशृणु ३४ अधीतेषुचवेदेषुशास्त्रेपुव्याकृतेषुच ॥ यत्फलं दुर्लभंलोकेतत्फलन्तस्यसम्भवेत् ३५ ॥

(यदृच्छया) यथा यदृच्छा स्वैरिता हेतु शून्या त्वास्था विलक्षणमित्यमरः अस्यार्थः यदृच्छास्वैरिता हे स्वच्छन्दतायाः हेतु शून्यः कारण रहिता अर्थात् सुनबेकी इच्छा नहीं है परन्तु यदृच्छाकरके अकस्मात् किसी वक्ताके पास जायपरे (अनादरात् अन्यतः) अनादरते औरके मुखते (शृणुयान्मर्त्यः) अध्यात्म रामायणको जो सुनताहै मनुष्य(सः अपि पातकात्मुच्येत)सो निश्चय करिके पापते छूटिजाता है अर्थात् दैवयोग जो कथाके समीप जायपरा विनाश्रद्धा अनादरते काहूके मुखते अध्यात्मरामायण को सुनिलीन जो मनुष्य सो भी निश्चय करिकै पापोंते छूटि शुद्धहोता है ३२ (यः अदूरतः नमस्करोति) अध्यात्मरामायण जोहै ताहि जो अदूरभाव समीप जाइके नमस्कारमात्र करि लेताहै ताको (सर्वदेवअर्चनंफलंप्राप्नोतिनसंशयः) गणेश देवी सूर्यादिग्रह शिव विष्णु इत्यादि सब देवन के पूजन करिबे को फल प्राप्तहोताहै केवल प्रणाममात्र ते यामें संशय नहीं ३३ (अशेपतः अध्यात्मरामायणंपुस्तकेलिखित्वा)कोई श्लोक बाकी न रहै संपूर्ण अध्यात्मरामायण जो है ताहिपुस्तक बिषे लिखिकै (रामभक्तेभ्यःयःदद्यात्तस्यपुण्यफलंशृणु) निज लिखी पुस्तकको श्रीरामभक्तनके अर्थ जो दैदेताहै तामें जैसी पुण्यफल होताहै ताहि शृणुसुनिये अर्थात् संपूर्ण अध्यात्म रामायण पुस्तकमें आपने हाथते लिखिकै जो रामभक्तनको पढ़ने अर्थ देताहै तामें जैसी पुण्यफल होताहै सो सुनिये ३४ (वेदेपुअधीतेपुचशास्त्रेषुव्याकृतेपु) वेद पाठ करने बिषे पुनः शास्त्रव्याख्यान करने विपे (लोकेयत्फलंदुर्लभंतत्फलंतस्यसंभवेत्) सहित अंग सब वेदनके पढ़नेमें पुनः सब शास्त्रन को व्याख्यान करनेमें लोकमें जो फल दुर्लभहै सुगम नहीं मिलिसक्ताहै तौन फल ताको संपूर्ण प्रकार प्राप्तहोताहै जो लिखिकै पुस्तक रामभक्तोंको दैदेताहै ३५ ॥

एकादशीदिनेऽध्यात्मरामायणमुपोषितः ॥ योरामभक्तःसदसिव्याकरोतिनरोत्तमः ३६ तस्यपुण्यफलंवक्ष्येशृणुवैष्णवसत्तम ॥ प्रत्यक्षरंतुगायत्रीपुरश्चर्य्याफलंभवेत् ३७ उपवासव्रतंकृत्वाश्रीरामनवमीदिने ॥ रात्रौजागरितोऽध्यात्मरामायणमनन्यधीः ३८ यःपठेच्छृणुयाद्वापितस्यपुण्यंवदाम्यहम् ॥ कुरुक्षेत्रादिनिखिलपुण्यतीर्थेष्वनेकशः ३९ ॥

(एकादशीदिनेउपोषितःयःनरोत्तमःरामभक्तःसदसिअध्यात्मरामायणंव्याकरोति) एकादशी के दिन व्रतकरि जो उत्तम मनुष्य श्रीरामभक्तके मन्दिरविषे अध्यात्म रामायणको अर्थ सहित पाठकरताहै ताको फल आगे कहत ३६ (तस्यपुण्यफलंवक्ष्येहेवैष्णवसत्तमशृणु) ताके पुण्यको जो फल है ताहि हम कहते हैं वैष्णवनमें उत्तम हेनारद सुनिये (गायत्रीतुपुनःप्रतिअक्षरंपुरश्चर्य्याफलंभवेत्) गायत्रीको जापपुनः ताके अक्षर प्रतिलक्ष गायत्री जापपुरश्चरण करने कैसोफल होताहै अर्थात् ए-

कादशीके दिन सहित अर्थ पाठहै ताके पुण्यको जो फलहै ताहि हम कहतेहैं हेनारद सुनिये चौविंसलक्ष गायत्री पुरश्चरणरीति जपकरने कैसेफल होताहै ३७ (श्रीरामनवमीदिनेउपवासव्रतंकृत्वारात्रौजागरितः) श्रीरामनवमी दिनविषे निराहार व्रतकरै रातिबिषे जागरणकरै सोवै नहीं (अनन्यधीः) अनन्य बुद्धिते अध्यात्म रामायण जो है ताहि ३८ (यःपठेत्वाशृणुयात्अपितस्यपुण्यंअहं वदामि) जो पढ़ै अथवा सुनै निश्चयकरि ताकी जो पुण्यहै ताहि हम वर्णन करते हैं (कुरुक्षेत्रादिनिखिलपुण्यतीर्थेषुअनेकशः) कुरुक्षेत्र पुष्कर नैमिषारण्य हरद्वार मथुरा काशी प्रयागादि जो बहुत से पुण्य तीर्थ संसारमें हैं तिनबिषे अनेक भांति जो धर्म कर्म करनाहै इतिशेषः अर्थात् अनन्यता सहित जो रामायण पढ़ताहै वा श्रवण करताहै निश्चय करिताकी जो पुण्य है ताहि हम कहते हैं यथा कुरुक्षेत्रादि पुण्य तीर्थन बिषे अनेक भांतिके सत्कर्म करना सो आगे कहत ३९ ॥

आत्मतुल्यंधनंसूर्यग्रहणेसर्वतोमुखे ॥ विप्रेभ्योव्यासतुल्येभ्योदत्त्वायत्फलमश्नुते ४० तत्फलंसंभवेत्तस्यसत्यंसत्यंनसंशयः ॥ योगायतेमुदाध्यात्मरामायणमहर्निशम् ४१ आज्ञांतस्यप्रतीक्षन्तेदेवाइन्द्रपुरोगमाः ॥ पठन्प्रत्यहमध्यात्मरामायणमनुव्रतः ४२ यद्यत्करोतितत्कर्मततःकोटिगुणंभवेत् ॥ तत्रश्रीरामहृदयंयःपठेत्सुसमाहितम् ४३ ॥

(सूर्यग्रहणेसर्वतोमुखे) सूर्य ग्रहण परत समय जलमें खड़े हैके (आत्मतुल्यंधनं) आत्मतुल्य प्रिय अथवा तौलमें देहकी बरावरि सोना चांदी इत्यादि जो है धनताहि (विप्रेभ्योव्यासतुल्येभ्योदत्त्वा) जेब्राह्मण व्यासकी समान भाव जिन राज्य नहीं ग्रहण किया ऐसा त्यागी तपस्वी होय तिनके अर्थ दान दीन्हेते (यत्फलंअश्नुते) जैसा फल व्याप्तहोताहै सर्वतो मुख यथा कबंध मुदकंपाथः पुष्करंसर्वतोमुखम् इत्यमरः अर्थात् सूर्यग्रहण परत समय में कुरुक्षेत्रमें तड़ागमध्ये जलमें खड़ेह्वैकै आत्मतुल्य धनको व्यासतुल्य ब्राह्मणके अर्थ दान देनेते जैसा फल व्याप्तहोताहै ४० (तत्फलंतस्य भवेत्) तैसेही फल ताको होताहै जो नवमी व्रतकरि रामायण पढ़ताहै (सत्यंसत्यंनसंशयः) सत्य सत्य हम कहते हैं यामें संशय नहीं है (यःअहर्निशंअध्यात्मरामायणंमुदागायते) जो प्राणी दिनौ राति अध्यात्म रामायण जो है ताहि सहज आनन्दते गावताहै यह गैधातुहै गायाति चाहिये गायते आर्ष पदहै ४१ (तस्यआज्ञांइन्द्रपुरोगमाःदेवाःप्रतीक्षन्ते) जो आनन्दते सदा गावताहै ताकी आज्ञाजो है ताहि इन्द्रहैं अग्रणीय जिनमें ऐसे सब देवता प्रतीक्षा करतेहैं अर्थात् नित्य अध्यात्म रामायण पाठ करने वाले प्रति देव सब मनमें यही इच्छारावते हैं कि हम सों कछु आज्ञाकरै सो कार्यकरि हम भी कृतार्थ होवैं पुनः (प्रतिअहंअध्यात्मरामायणंपठन्अनुव्रतः) प्रति दिन रोजरोज अध्यात्म रामायण पढ़ने पर तत्पररहत भाव नित्यक्रियामानि पाठकरताहै ताको फल आगे कहत ४२ (यत्यत्करोतितत्कर्म) सत्कर्म जो जो करताहै तौन जो कर्महैं (ततःकोटिगुणंभवेत्) तिहिते कोटिगुण अधिक फलहोत अर्थात् जो नित्यनेम करि अध्यात्म रामायण पाठकरत सो पूजापाठ जपदान व्रततीर्थादि जो जो सत्कर्म करत सो करोरि गुण अधिक फलदायक होत (तत्रश्रीरामहृदयं) तौनी अध्यात्म रामायणमें जो रामहृदयहै ताहि (सुसमाहितम्पठेत्) सुन्दर सावधान चित्त श्रद्धासमेत जे पाठकरतेहैं ताको फल आगे कहत ४३ ॥

सब्रह्मघ्नोपिपूतात्मात्रिभिरेवदिनैर्भवेत्॥श्रीरामहृदयंयस्तुहनुमत्प्रतिमान्तिके४४

त्रिपठेत्प्रत्यहंमौनीसर्वेप्सितभाग्भवेत् ॥ पठन्श्रीरामहृदयंतुलस्यश्वत्थयोर्यदि ४५ प्रत्यक्षरंप्रकुर्वीतब्रह्महत्यानिवर्तनम् ॥ श्रीरामगीतामाहात्म्यंकृत्स्नं जानातिशंकरः ४६ ॥

(सब्रह्मघ्नःअपित्रिभिःदिनैःएवपूतात्माभवेत्) जो निश्चयकरिकै ब्राह्मणको घात भी किया है सोऊ रामहृदय पढ़ते तीनिही दिन करिकै पवित्र आत्मा जरूरही है जाई (तुपुनःयःहनुमत्प्रतिमाअन्तिके) पुनः जो प्राणी हनुमान्‌जीकी मूर्त्तिके समीप (श्रीरामहृदयं) ४४ प्रतिअहंमौनीत्रिपठेत्) प्रतिदिन मौनरहि तीनिवार पाठकरै (ससर्वेप्सितभाग्भवेत्) सो सबमनोरथ को भागीहोइ अर्थात् जो मनुष्य हनुमान्‌जीकी मूर्त्तिके लगबैठि सब बार्ताते चुपह्वै श्रीराम हृदयको रोज तीनबार पाठकरताहै सो सब मनोरथ पूर्णकरि पावत (यदितुलसीअश्वत्थयोःश्रीरामहृदयंपठन्) ४५ अथवा तुलसी वा पीपरके वृक्ष निकट जो श्रीरामहृदय की पाठ करताहै सो (प्रतिअक्षरंब्रह्महत्यानिवर्तनंप्रकुर्वीत) एक एक अक्षर प्रति ऐसी पुण्यहोती है जो ब्रह्महत्यादिको निवृत्तिकरत इहां पुरश्चरण की विधी वर्णन कीन्हे तामें कछु लिखतहौं यथा फाल्गुन ज्येष्ठ भाद्र अगहन इत्यादि उत्तममास शुक्ल पक्ष ५।७।१०।११।१३। ये तिथी अश्विनी रोहिणी मृगशिरा पुनर्वसु पुष्य अनुराधा धनिष्ठा ये नक्षत्र रविचन्द्र गुरुवारको योगिनी पीछे चन्द्रमा सन्मुख चन्द्रतारा शुद्ध इत्यादि मुहूर्त्तशोधि ब्रह्मचर्य मिताहारी शौचतेरहि हनुमान्‌जीकी प्रतिमाके उत्तर भूमिलीपि कूर्मचक्र लिखितापर आसनी बिछाय पूर्व मुख बैठि कलशस्थापि शुद्ध मनते श्रीरामहृदयकी तीनिपाठै रोजकरै याते धरणीधन धाम जयबंध मोचन रुजहानि पुत्र प्राप्ती इत्यादि जो मनोरथ होइ सो संकल्पकरि राममंत्रकी सी न्यासध्यानकरि तब पाठकरै तीनिमास में मनोरथ पूर्णहोइ शीघ्रताचाहै तौ अधिक पाठैकरै इसी भांति घोर रोग नवग्रह भूत बाधा ब्रह्मदोषादि निवारण हेतु तुलसी वा पीपरके पास पाठैकरै इसी भांति समग्र अध्यात्म रामायणको पुरश्चरण पूर्व श्लोकोंमें विचारिये पुनः जो श्रीरामगीताको माहात्म्यहै सो (कृत्स्नं) संपूर्ण श्रीशिवजी जानते हैं ४६ ॥

तदर्द्धंगिरिजावेत्तितदर्द्धंवेद्म्यहंमुने ॥ तत्तेकिंचित्प्रवक्ष्यामिकृत्स्नंवक्तुंनशक्यते ४७ तद्ज्ञात्वातत्क्षणाल्लोकश्चित्तशुद्धिमवाप्नुयात् ॥ श्रीरामगीतायत्पापं ननाशयतिनारद ४८ तन्ननश्यतितीर्थादौलोकेक्कापिकदाचन ॥ तन्नपश्याम्यहं लोकेमार्गमाणापिसर्वदा ४९ रामेणोपनिषत्सिंधुमुन्मथ्योत्पादितांमुदा ॥ लक्ष्मणायार्पितांगीतांसुधांपीत्वामरोभवेत् ५० ॥

(तदर्द्धंगिरिजावेत्ति) तेहिका आधा पार्वती जानती हैं (हे मुने तदर्द्धं अहंवेद्मि) हे मुनि ताको आधा हम जानते हैं अर्थात् ब्रह्माजी कहत कि हे नारद श्री रामगीताको जैसा माहात्म्य है सो सम्पूर्ण तौ केवल शिवजी जानते अरु आधा पार्वती जानती हैं अरु चतुर्थांश हम जानते हैं ताते (कृत्स्नंवक्तुंनशक्यते) सम्पूर्ण माहात्म्य कहने को नहीं समर्थ है परन्तु (तत् किंचित् ते प्रवक्ष्यामि) तिसमें से कछु थोरा तुमसे हम वर्णन करते हैं ४७ (यद्ज्ञात्वालोकःतत्क्षणात् चित्तशुद्धिमवाप्नुयात्) जौने श्रीरामगीता को सिद्धान्ततत्त्व को जानेते लोकजन क्षणैभरे में चित्तशुद्धि ताको प्राप्तहोत पुनः (हे नारद यत् पापं श्रीरामगीता न नाशयति) जौने पापन को श्री रामगीता नहीं नाश करत ताको ऐसा जानौ सो आगे कहत ४८ (तत् लोके कापि तीर्थादौ कदाचन न

नश्यति) तौने पापन को लोक विषे कौनौ तीर्थादि कवहूँ नहीं नाश करिसकता है अर्थात् जौने पापनको श्रीरामगीता श्रवण पाठादि नहीं नाशकरत तौने पापन को नाशकर्त्ता लोकमें तीर्थादि ऐसा कोई नहीं है जहां ग्रहणादि पर्वों पाय स्नान दानादि करि पाप नाश ह्वैसकैं काहेते यहबात हम कहते हैं कि (सर्वदा मार्गमाणा अपि लोके तं अहं न पश्यामि) अर्थात् जा भांति श्रीरामगीता पापमात्र को नाशकरताहै ताकी समताको तीर्थादि दूसरा पदार्थ सब काल में सर्वत्र ढूंढ़ा निश्चय करिकै लोकविषे ताहि हम नहीं देखा जो गीताकी तुल्य होय ४९ कौन भांति यहगीता उत्पन्न भया सो कहत (उपनिषत्सिंधुं) वेदान्त की उपनिषत्रूप जो समुद्र है ताहि (रामेणउन्मथ्यउत्पादितां) श्री रघुनाथजी करिकै मथन किया गया तहांते उत्पन्न भया (तांसुशान्लक्ष्मणाय अर्पितां) ताहि आनन्द समेत लक्ष्मणजीके अर्थ देते भये (तां गीतां पीत्वा अमरो भवेत्) ताहि गीतारूप अमृत पान करि लोग अमर होते हैं अर्थात् जाभांति विष्णु भगवान् देवतनहेतु पयोनिधि मथि अमृत उत्पन्न कीन्हें ताको पानकरि देवता अमर भये तथा वेदान्तशास्त्रमें यावत् उपनिषदें हैं ते समुद्रहैं ताको श्री रघुनाथजी मथिकै अवलोकन करिके श्रीरामगीतारूप अमृत उत्पन्न करि पुनः अत्यन्त प्रिय जानि आनन्द समेत लक्ष्मणजीको दिया सोई श्रीरामगीता रूप अमृत जो मनुष्यादि पान करताहै भाव वाको सिद्धान्त हृदय में धारण करता है सो मुक्ति रूप अमरता को प्राप्त होता है ५० ॥

जमदग्निसुतःपूर्वंकार्त्तवीर्यवधेच्छया ॥ धनुर्विद्यामभ्यसितुंमहेशस्यांतिकेवसन् ५१ अधीयमानांपार्वत्यारामगीतांप्रयत्नतः ॥ श्रुत्वागृहीत्वासुपठन्नारायणकलामगात् ५२ ब्रह्महत्यादिपापानांनिष्कृतिंयदिवांछति ॥ रामगीतांमासमात्रंपठित्वामुच्यतेनरः ५३ ॥

(पूर्वंजमदग्निसुतः) पूर्वकालमें जमदग्नि ऋषिके पुत्र परशुराम ने (कार्त्तवीर्यवधइच्छया) सहस्रबाहु के मारने की इच्छा करिकै (महेशस्य अन्तिके वसन् धनुर्विद्यां अभिसितुं) श्रीमहादेव जीके समीप वासि धनुषविद्या जोहै ताहि पढ़े अर्थात् पूर्वकाल जासमय परशुरामजी सहस्रबाहु को नाशकी इच्छा करिकै श्रीमहादेवजीके पास बाणविद्या पढ़तेरहे ताही समय में ५१ (पार्वत्याप्रयत्नतःरामगीतांअधीयमानां) पार्वती करिकै पुष्ट विधिपूर्वक श्री रामगीता जोहै ताहि पठन होता रहे ताको (श्रुत्वागृहीत्वासुपठन्नारायणकलांअगात्) पार्वतीजी के सुखते सुनि ग्रहणकरि पढ़त में नारायण की कला आय व्यापी अर्थात् पार्वतीजीको पढ़ते सुनि परशुरामौ प्रार्थनाकरि उन्हींते पढ़ि कछुकाल पाठ करते रहे सोई श्रीरामगीताके प्रभावते नारायण की कला परशुराम में आय प्रवेश भई तातें आवेशा अवतारन में गिने गये ५२ (यदि ब्रह्महत्यादि पापानां निष्कृतिं वांछति) भाव जो कोऊ ब्रह्महत्यादि पापन को छुड़ावने की इच्छा करै (मासमात्रं रामगीतां पठित्वा नरः मुच्यते) एक महीना भरि श्री रामगीता को पाठ करै सो मनुष्य ब्रह्महत्यादि पापनते छूटि जाय शुद्ध होवे ५३ ॥

दुष्प्रतिग्रहदुर्भोज्यदुरालापादिसम्भवम् ॥ पापंयत्तत्कीर्तनेनरामगीताविनाशयत् ५४ शालग्रामशिलाग्रेचतुलस्यश्वत्थसन्निधौ ॥ यतीनांपुरतस्तद्वद्रामगीतांपठेत्तुयः ५५ तत्तत्फलमवाप्नोतियद्वाचोपिनगोचरम् ॥ रामगीतांपठेद्भक्त्या

यःश्राद्धेभोजयेद्द्विजम् ५६ तस्यतेपितरःसर्वेयान्तिविष्णोःपरम्पदम् ॥

(दुष्प्रतिग्रह) दुष्टनके हाथ दानलेना (दुर्भोज्य) दुष्टके घर भोजनकरना (दुर्लापादिसम्भवंयत्पापं) दुष्टन कैसी वार्ता करना इत्यादि कर्मन करि उत्पन्न जो पाप होते हैं (तत् रामगीता कीर्तनेन नाशयति) तौन सबपाप श्री रामगीता के पाठ करिके नाश होते हैं अर्थात् चोरी ठगी परहानि हिंसा इत्यादि करनेवाले जे दुष्ट तिनके हाथ दान लीन्हें वा उनके घरमें भोजन करते वा कुदान प्रेतअन्नादि अथवा वेदशास्त्र साधु ब्राह्मणादि की निन्दा करना गुरुजनादि को अनादर इत्यादि कर्मन करि जो पाप उत्पन्न होतेहैं तौन सब श्री रामगीताके पाठ करनेते नाश होतेहैं ५४ (शालग्रामशिलाग्रे) शालग्राम स्वरूप आसनके आगे स्थापित करि (चपुनः तुलसी अश्वत्थ सन्निधौ) पुनः तुलसी वा पीपर वृक्ष के पास (तद्वत् यतीनां पुरतः यः रामगीतां पठेत्) पुनः ताहीं भांति संन्यासिन के आगे जो श्री रामगीता पढ़ता है ५५ (तत् तत् फलं अवाप्नोति) ताको तौन फल प्राप्त होताहै (यत् वाचः अपि गोचरं न) जो निश्चय करि वचन के विषय में नहीं आवता है अर्थात् शालग्राम तुलसी पीपर संन्यासी इत्यादि के समीप जो कोऊ रामगीताको पढ़ता है ता पुरुष को जैसा फल प्राप्तहोताहै सो कहते नहीं बनता है (पुनः यः भक्त्या रामगीतां पठेत् श्राद्धे द्विजम् भोजयेत्) जो पुरुष भक्ति करिकै अर्थात् प्रेमभावते श्रद्धा समेत श्री रामगीता जो है ताहि पढ़त अरु श्राद्ध के दिन द्विज जो ब्राह्मण ताहि भोजन करावत ५६ (तस्य पितरः सर्वे ते विष्णोः परंपदं यान्ति) ताके पितर सब ते भगवान् के परमपद को जातेहैं अर्थात् श्राद्धके दिन रामगीता पाठ करै भक्ति सहित अरु उत्तम ब्राह्मणन को भोजनकरावै ताके पिता पितामह प्रपितामह माता महामाता वृद्धप्रमाता तथा नानी नानादि सब परमपद को जायँ ॥

एकादश्यांनिराहारोनियतोद्वादशीदिने ५७ स्थित्वागस्त्यतरोर्मूलेरामगीतांपठेत्तुयः ॥ सएवराघवःसाक्षात्सर्वैर्देवैश्चपूज्यते ५८ विनादानंविनाध्यानंविनातीर्थावगाहनम् ॥ रामगीतांनरोधीत्यतदनन्तफलंलभेत् ५९ बहुनाकिमिहोक्तेनशृणुनारदतत्त्वतः ॥ श्रुतिस्मृतिपुराणेतिहासागमशतानिच अर्हंतिनाल्पामध्यात्मरामायणकलामपि ६० ॥

(एकादश्यांनिराहारो) एकादशी के दिन निराहार व्रतकरै (नियतो द्वादशी दिने) ब्रह्मचर्यादि नियम सहित द्वादशी के दिन ५७ (तु अगस्त्य तरोः मूले स्थित्वा) पुनः अगस्त्य वृक्षके तरे जरन समीप बैठि (यः रामगीतां पठेत्) जो श्रीरामगीता पाठ करताहै (सएव साक्षात् राघवः) सो साक्षात् श्रीरघुनाथजी की तुल्य होवै (चदेवैःपूज्यते) पुनः देवन करिकै पूजन करिबे योग्य होवै अर्थात् जो निराहार एकादशी व्रत करि नेमसहित द्वादशी को अगस्त्य वृक्ष तर श्रीरामगीता पाठ करत सो रघुनाथजीकी तुल्य देवनकरिके पूजित होत ५८ लोक वेदमें यह रीति है कि देश काल सुपात्र विचारि दानदै पुनः जो तासमय पाठादि करै तो अधिक फल होत तथा ईश्वर को ध्यान सहित पाठते अधिक फल होत तथा प्रयागादि तीर्थन में स्नानसमय पाठते अधिक फल होत सो नहीं इहां बिनादान बिना ध्यान बिना तीर्थ अवगाहन केवल श्रीराम गीता जोहै ताहि (नरोधीत्य) जो मनुष्य पढ़ै तौ (अनतफलंलभेत्) अर्थात् साधन सहायता रहित जो केवल श्री रामगीताकी पाठमात्र करताहै उस मनुष्य को ऐसा असंख्य फल प्राप्तहोताहै जाको अंत नहीं ५९

(बहुनाउक्तेनइहकिं) बहुत कहनेते इहां क्या है (श्रृणुनारदतत्त्वतः) हे नारद तत्त्ववस्तु जो है सो सुनिये (श्रुति) चारिउ वेद (स्मृति) मनु पराशरादि यावत् धर्मशास्त्रहैं (पुराण) भागवत पद्मादि अठारहो (इतिहास) भारतादि (आगम) पंचरात्रादि (शतानिच) जो सैकरन ग्रंथहैं (अध्यात्मरामायण अल्पकलांअपिनअर्हंति) अध्यात्मरामायणके थोरिहूकला अंशके फलको नहीं पायसक्तेहैं अर्थात् अध्यात्मरामायण श्रवण कीर्तनते जो समुद्रवत् फल होताहै ताके एकबुंद के तुल्य वेदस्मृति पुराण इतिहास आगमादि कोई ग्रन्थ की पाठ नहीं ह्वै सकी है ६० ॥

अध्यात्मरामचरितस्यमुनीश्वरायमाहात्म्यमेतदुदितंकमलासनेन ॥ यःश्रद्धया पठतिवाश्रृणुयात्समर्त्यःप्राप्नोतिविष्णुपदवींसुरपूज्यमानः ६१ ॥

इतिश्रीब्रह्माण्डपुराणेउत्तरखण्डेएकषष्टितमोऽध्यायः ६१ ॥

(अध्यात्मरामचरितस्यएतत्माहात्म्यं) अध्यात्म नामे जो रामचरित है ताको इतनो जो माहात्म्य है ताहि (मुनीश्वरायकमलासनेनउदितं) मुनिनमें उत्तम जो नारद तिनके अर्थ कमलासन जो ब्रह्मा तिन करिकै कहागया (यःश्रद्धयापठतिवाश्रृणुयात्समर्त्यः) जो श्रद्धाकरिकै पढ़ता है वा सुनता है सो मनुष्य (सुरपूज्यमानः विष्णुपदवींप्राप्नोति) जीवन पर्यन्त देवतन करिकै पूजितहोताहै अन्तकालमें विष्णु पदको प्राप्त होताहै अर्थात् सूतजी कहते हैं कि हे शौनकादिको अध्यात्मनामे जो रामायणहै ताको इतनो जो माहात्म्यहै ताहि नारदमुनिके अर्थ ब्रह्मा करिकै कहा गया सो हम तुम्हैं सुनावा ताको जो श्रद्धा अर्थात् हर्ष सहित मनते चाह करिकै पढ़ै अथवा सुनै सो मनुष्य जब तक जीवै तब तक इन्द्रादि देवतन करिकै पूजितरहै अन्तकाल भगवत् धामको जावै ६१ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचितेअध्यात्मभूषणे माहात्म्यवर्णनोनामप्रथमःप्रकाशः १ ॥

यःपृथ्वीभरवारणायदिविजैःसंप्रार्थितश्चिन्मयः संजातःपृथिवीतलेरविकुलेमायामनुष्योऽव्ययः ॥ निश्चक्रंहतराक्षसःपुनरगाद्ब्रह्मत्वमाद्यंस्थिरां कीर्तिम्पापहरांविधायजगतांतंजानकीशंभजे १ ॥

दो० ॥ सतचित आनँदज्ञानघन परब्रह्मपरधाम ॥ नौमिप्रकट जगहेतुभू सीतासहश्रीराम १ सीय कहे हनुमंतप्रति गूढ़तत्त्वपुनिराम ॥ सोगिरिजाप्रतिशिवकहत रामहृदययहिनाम २ (यःपृथ्वीभरवारणाय) जो भूमिकोभार उतारने अर्थ (दिविजैःसंप्रार्थितः) दिवि आकाश तामें जउत्पन्न जो देवता तिनकरिकै संपूर्ण प्रकार याचना कियेगये (चिन्मयःअव्ययःपृथिवीतलेरविकुलेमायामनुष्यःसंजातः) जो सदा एकरस चैतन्य सो चिन्मय जो कबहूं घटै नसो अव्यय सो परब्रह्म पृथिवी तलमें सूर्यकुल विषे माया मनुष्यवत्रूप अर्थात् शिशुबाल पौगंड किशोरादि अवस्था धारण किहे संपूर्ण प्रकारते अंशन सहित उत्पन्नभये (निश्चक्रंहतराक्षसः) निः कहे नहीं चक्र कहे सेना यथा वरूथिनीबलंसैन्यंचक्रंचानीकमस्त्रियाम् इत्यमरः नहीं रही संग्राममें सैन्यजाके ऐसे राक्षस रावणको मारि आववाके मंत्री मित्रपुत्र बंधुसाहनी सुभटादि समग्रसेनाको पूर्वही नाशकरि अकेलाकरि रा-

वणको मारि भूभार उतारि देवनको अभयकरि (पापहरांस्थिरांकीर्तिंजगतांविधाय) पापहरनेवाली अचल कीर्ति जगमें स्थापित करिकै पुनः (आद्यंब्रह्मस्वंपुनःभगात्तंजानक्याईशंभजे) आदिको जो ब्रह्मत्वपदहै ताहि पुनः प्राप्तभये ऐसे जानकीनाथ जो हैं तिनहिं हमभजत हैं अर्थात् इसराम हृदयमें ऐश्वर्य माधुर्य मिश्रित लीलावर्णनकरैंगे ताके मंगलाचरणमें प्रथम ऐश्वर्य दर्शाय माधुर्यरूपमें मनलगाय ग्रंथप्रारंभकरैंगे सो व्यासजी कहत कि जो राक्षसनके पापकर्मनते भूमिपर महाभारहै गयारहै ताके उतारने हेतु देवगणयुत ब्रह्मादिककरिकै याचनाकियेगये ताते जो सदा एकरस चैतन्य अखंडपरब्रह्म सो भी भूतल अयोध्या पुरीमें सूर्य कुलमें मायामनुष्यनकी नाईं श्रीरामभरत लक्ष्मण शत्रुघ्न चारिरूपते अवतीर्णहै शिशुवाल किशोर विवाह वनगमन जानकी वियोगमें विरहलवरिलेनादि सब माया मनुष्यवत् लीलाकरत पुनः सेनसहित रावणको मारि भूमिकोभारउतारे साधु ब्राह्मण देवनको अभयकीन्हें पुनः दीननको दान गुरुजननको सन्मान नीतिसहित प्रजनको पालनकरि सुखी राखे अंतमें सबको मुक्तिदिये इत्यादि देखि जो लोक प्रशंसाकरत यही पावन कीर्तिहै जाके श्रवण कीर्तनते महापाप नाशहोत सो अचलकरि जगत्में स्थापितकीन्हें भाव जो कबहूं मिटि नहीं सकी है इत्यादि अविचलकरि पुनः लोकमें रहते मायाकृत दोष गुण जिनमें लेशमात्र नहीं छुइगयो जो पूर्व रहै ताही परब्रह्मपदको पुनः प्राप्तभये ऐसे अमल सदा एकरस अखंड ज्ञान तिन जानकी के ईश श्रीरघुनाथजी को हम भजते हैं १ ॥

विश्वोद्भवस्थितिलयादिषुहेतुमेकं मायाश्रयंविगतमायमचिंत्यमूर्तिं ॥ आनंदसांद्रममलंनिजबोधरूपं सीतापतिंविदिततत्त्वमहंभजामि २ ॥

(विश्वउद्भव) संसारकी उत्पत्ति (स्थितिलयादिषु) पालनप्रलय आदिकन विषे (हेतुंएकंमाया) सबनको कारण एक मायाहै (आश्रयं) सो माया जाकी आश्रयहै यथा अरिणापीड्यमानस्य बलवद्भूपालाद्याश्रयणं आश्रयः इत्यमरविवेके भाव शत्रुकरिकै पीडित किसी बली राजा के आसरे रहना ताको आश्रय कही अर्थात् संसारकी उत्पत्ति पालन प्रलय आदिकन विषे सबनको कारण एक मायेहै सो माया ज्यहि परब्रह्मकी आश्रय है अरु (विगतमायं) आप माया रहित हैं (अचिन्त्यमूर्तिं) जिनकी मूर्ति चिंतवनमें नहीं आयसकत (आनंदसांद्रं) आनंद सघनहै जिनमें (अमलं) सत्त रज तमादि मलरहित शुद्ध आत्मरूप (निजबोधरूपं) सहजस्वभाव अखण्डज्ञानहै जिनमें (विदिततत्त्वंसीतापतिंअहंभजामि) वेदनके सिद्धांततत्त्वकरिकै लोकमें विदित ऐसे जो सीतापतिहैं ताहि हम भजतेहैं सेवन सुमिरण करते हैं यामें केवल ऐश्वर्यरूप वर्णनकरतेहैं इसीहेतु सीतापति नामकहे अर्थात् सीता सोई मायाहैं अरु प्रभुकी इच्छाते संसारको उपजावत पुनः पालन करत अंतकाल आपै संहारकरती हैं इत्यादि संसारकी उत्पत्ति पालन प्रलय आदिकनविषे सबनकोकारण एक माया श्रीसीताजीहैं सो श्रीरघुनाथजी की आश्रयहैं भाव आज्ञापालनपर तत्पर अनुकूलता सहित सदासमीप आसीन रहती हैं यथा रामतापिन्यां॥ श्रीरामसान्निध्यवसाज्जगदानंददादिनी। उत्पत्तिस्थितिसंहारकारिणीसर्वदेहिनांसासीता भगवतीज्ञेयामूलप्रकृतिसंज्ञिता। प्रणवत्वात्प्रकृतिरितिवदन्तिब्रह्मवादिनः॥ अरु प्रभु मायाकरिकै रहित अचिंत्यमूर्तिहैं तौ एक सीताको भी मायाकहत सो तौ सदा प्रभुके आश्रित समीपही रहत अरु वह कौन मायाहै जिहि करिकै प्रभु रहितहैं तहां माया पंचप्रकारकी हैं प्रथम अविद्या जो जीवको भुलाय विषयविद्धकरि भवसागरमें डारत तामें पांचअंश हैं प्रथम आकाश ताको सूक्ष्मरूप शब्द जो श्रवणकी विषयहै दूसरा पवन ताको सूक्ष्मरूप स्पर्श जो

त्वचाकी विषयहै तीसर अग्नि सूक्ष्मरूप नेत्रकी विषयहै चौथ जल सूक्ष्म रस जिह्वाकी विषयहै पंचम भूमि सूक्ष्म गंध नासिका की विषय इत्यादि विषयनमें अविद्या कारणरूपते इंद्रिनको लगाय जीव को विषयी करिदेत पुनः कार्यरूप ते अविद्या मनमें कामादि उपजाय जीव को विमुख करिदेत इत्यादि जो अविद्या माया है तेहि करिकै रहित हैं अरु दूसरी विद्या माया है तामें चारि अंश विवेक बिराग सम दमादि षट् सम्पत्ति मुमुक्षुता इत्यादि करि जीव को चैतन्य करत पुनः तीसरी सन्धिनी माया है तामें नव अंश यथा श्रवण कीर्तन सुमिरण सेवन अर्चन वन्दन दास्यता आत्म निवेदन इति नवधा भक्तिकरि जीव ईश्वरकी सन्धि मिलावत चौथि सन्दीपिनी माया प्रेमाभक्तिकरि जीवके अन्तर ईश्वरकी दीप्ति प्रकाशतपचई आह्लादिनी माया पराभक्तिकरि जीवके अन्तर परब्रह्मकी आनन्द प्रकाशतसो माया श्री सीताजी सदा समीप रहती हैं तिनते प्रभुते कछु भेद नहींहै यथा चन्द्रचंद्रिका सूर्य प्रभा इत्यादि दोऊरूप एकहीहैं यथरामतापिन्यां॥उत्पन्नंतीतयभांतिचन्द्रइचंद्रिकयायथा॥प्रकृत्या सहितःश्यामःपीतवाससाप्रभाकरः॥द्विभुजःकुंडलीरत्नमालीधीरोधनुर्धरः॥पुनःसदाशिवसंहितायां॥रामः सीताजानकीरामचन्द्रोनाणुर्भेदोह्येतयोर्दितिकश्चित् ॥ पुनःरामायणे॥अनन्याहिमयासीताभास्करस्य प्रभायथा ॥ इत्यादि दोऊएकतत्त्वहैं अविद्या आवरणरहित शुद्धपरात्पररूप किसीकी चिंतवन में नहीं आवते हैं सांद्र आनन्द सघनआनन्द ते परिपूर्ण सतोगुण रजोगुण तमोगुणादि जो मल त्यहिकरिकै रहित सदा अमल निज बोध स्वयं सहजस्वभाव ते अखण्ड ज्ञानरूप सीता के पति वेद सिद्धांत तत्त्वकरिकै विदित हैं जिनको राम ऐसोनाम यथा केदारखण्डे शिववाक्यं ॥ रामनामसमंतत्त्वंनास्ति वेदांतगोचरं॥यत्प्रसादात्परांसिद्धिंसंप्राप्तामुनयोमलां॥अथर्वणे॥ यश्चांडालोपिरामेतिवाचंवदेत्तेनसह संवदेत्तेनसहसंवसेत्तेनसहसंभुंजीयात्॥ऋग्वेदे॥परंब्रह्मज्योतिष्मयंनामउपास्यंमुमुक्षुभिः॥ यजुर्वेदे रामनामजपतेनैवदेवतादर्शनंकरोति इत्यादि जो बिदित तत्त्व ताहि हम भजते हैं २ ॥

पठन्तियेनित्यमनन्यचेतसःशृण्वन्तिचाध्यात्मिकसंज्ञितंशुभम् ॥ रामायणंसर्वपुराणसम्मतंनिर्धूतपापाहरिमेवयान्तिते ३ अध्यात्मरामायणमेवनित्यंपठेद्यदीच्छेद्भवबन्धमुक्तिम् ॥ गवांसहस्रायुतकोटिदानात्फलंलभेद्यःशृणुयात्सनित्यम् ४ पुरारिगिरिसम्भूताश्रीरामार्णवसंगता ॥ अध्यात्मरामगंगेयंपुनातिभुवनत्रयम् ५ ॥

(सर्वपुराणसम्मतं) सब पुराणन को सम्मत है जामें ऐसी (अध्यात्मसंज्ञितंशुभंरामायणम्), अध्यात्मनामा तौनि मंगलीक रामायण जोहै ताहि (ये अनन्यचेतसः नित्यं पठंतिच शृण्वंति) जे अनन्यता चित्त सहित सदा पढ़तेहैं अथवा सुनते हैं (ते पापा निर्धूत हरिं एव यान्ति)ते जन पापनते निश्चयकरि छूटिकै भगवान् पदको निश्चयकरिकै जातेहैं अर्थात् भागवत पद्मादि अठारहौ पुराणन को संपूर्ण सिद्धान्त मतहै जामें ऐसी अध्यात्मनामा तौन मंगलीक रामायण जोहै ताहि जे अनन्य यथामहारामायणे ॥ नविधिर्ननिषेधश्चप्रेमयुक्तंरघूत्तमे । इन्द्रियाणामभावःस्यात्सनन्योपासकःस्मृतः इत्यादि अनन्यता चित्तमें धारणकरि सदापढ़तेहैं अथवा सुनते हैं तेजन अवश्य पापनते छूटि पावन ह्वैकै भगवान् पदको निश्चयकरि जाते हैं भाव सायुज्य मुक्ति पावते हैं ३ (भवबंध मुक्तिम् यदि इच्छेत्) संसार बन्धनते मुक्तहोने की जो इच्छाकरै सो (अध्यात्मरामायणं नित्यं एव पठेत्) अध्यात्मरामायण जोहै ताहि नित्यही निश्चय करि पढ़ै तौ भवबन्धन ते छूटिजाय इति शेष

यःनित्यं शृणुयात्) जो नित्य नियमकरि सुनता है (ससहस्रअयुतगवां दानात् कोटि फलं लभेत्) सहस्रकहे हजारवार अयुत कहे दश हजार करनेते करोरि भये भाव करोरि गोवैं दानते जो फल होत ताते करोरि भरि अधिक फल सो पावत अर्थात् भव जो संसार ताको बन्धन जन्म मरणादि चौरासी ताते जो मुक्तहोनेकी इच्छाकरै सो अध्यात्म रामायण. नित्य पढ़ै तो मुक्तिपावै अरु करोरि गोवें दान देनेते जो फल होताहै तेहिते करोरि गुण अधिक फल ताको होताहै जो नित्य अध्यात्म रामायण को सुनताहै ४ गंगाजी को रूपक रामायण को कहत (पुरारिगिरि सम्भूता) शिवरूप पर्वतते उत्पन्नभई (श्रीरामअर्णवसंगता) श्रीरामरूप समुद्रमें मिली है (इयंअध्यात्मरामगंगा) यह अध्यात्मरामायणरूप रामगंगा (भुवनत्रयंपुनाति) तीनिहू लोकनको पावन करती है गंगाकौन भांति भूलोकमें आई यथा स्वर्गलोक नापत समय वामनजीके पद अंगुष्ठकी ठोकर लागेते ब्रह्माण्ड भेदन ह्वैगया तेहि मार्ग पदकी अवलम्ब पाय ब्रह्म द्रव वहि आयाहै सो ब्रह्माजी कमण्डलु में धरिराख्यो पुनः सुलभ लोकोद्धार हेतु भगीरथ तपस्या करि प्रथम कैलास को लाये तहां ते आय हिमालय ते प्रकटी भूमिपर विस्तार करत समुद्र में जायमिली इति उपमान की उपमेय कहत ब्रह्मा नारद वाल्मीकि सूत शौनकादि अनेक सम्वादनमें गुप्तरही शिवरूप हिमालय ते पार्वती द्वारा प्रगट भई महिमा को समुद्र जो श्री रामरूप तामें मिली उहांहरद्वार प्रयाग गंगासागर मुख्य स्थान हैं इहां जन्म विवाह राज्याभिषेक यामें मुख्य है इत्यादि अध्यात्मरामायणरूप गंगा अनेक धाराते तीनिहूँ लोकन में फैली हैं श्रवणरूप दर्शन कीर्तनरूप स्नानते अनेकन जीवन को पावन करती हैं पाप हरि शुद्ध रामानुरागी करिदेत ५ ॥

कैलासाग्रेकदाचिद्रविशतविमलेमन्दिरेरत्नपीठे संविष्टंध्याननिष्ठंत्रिनयनमभयं सेवितंसिद्धसंघैः॥ देवीवामाङ्कसंस्थागिरिवरतनयापार्वतीभक्तिनम्रा प्राहेदंदेवमीशंसकलमलहरंवाक्यमानन्दकन्दम् ६ ॥

(कदाचित् कैलास अग्रे) किसीसमयमें कैलास के अग्रभाग पर (शतरविविमले मन्दिरेरत्न पीठे) सैकरन सूर्यनकैसी प्रकाशजामें ऐसे विमल मन्दिर के मध्य रत्न सिंहासन पर (ध्याननिष्ठं अभयं त्रिनयनं संविष्टं) ध्यान में स्थित सबकी भयत्यागे तीनिनेत्र हैं जाके ऐसे शिवजी बैठे हैं (सिद्धसंघैःसेवितं) सिद्धजनसमूह तिनकरिकै सेवित हैं (गिरिवरतनयादेवविामांकसंस्था) गिरिन में उत्तम हिमाचल तिनकी पुत्री देवी बामअकोरामें विराजमान (पार्वती भक्तिनम्रा) सोई पार्वती अन्तर में भक्ति सहित वाह्यनम्र ह्वैकै (ईशंदेवंइदंवाक्यंप्राह) महादेव प्रति इस प्रकारके वचन बोलती भई कैसे वचन (सकलमलहरंआनन्दकंदम्) सब भांतिके पापरूपी मल हरिलेनेवाले आनन्दरूप जल वर्षिवे को मेघवत् अर्थात् ब्रह्मा बोले हे नारद किसी समयमें कैलासके अग्रभाग पर सैकरन सूर्यन कैसी प्रकाश है जामें ऐसे दिव्य विमल मन्दिर के मध्य रत्न सिंहासन पर ध्यान में स्थित काल मृत्यु ते अभय शिवजी बैठे अनेकन सिद्धजन सेवा करिरहे हैं अरु हिमाचल की पुत्री देवी वाम अकोरा में विराजमान सोई पार्व्वती जी अन्तर में प्रेमाभक्ति सहितवाह्य नम्रहाथ जोरि माथ नाय महादेव प्रति इस भांति के वचन बोली जाते सब प्रकार के पापरूपी मल नाशहोयँ उर में आनन्द वृद्धि होवै ६ ॥

पार्वत्युवाच ॥ नमोस्तुतेदेवजगन्निवाससर्वात्मदृक्त्वंपरमेश्वरोसि ॥ पृच्छामित

त्वंपुरुषोत्तमस्यसनातनंत्वञ्चसनातनोसि ७ गोप्यंयदत्यंतमनन्यवाच्यंवदन्ति भक्तेषुमहानुभावाः ॥ तदप्यहोहंतवदेवभक्ताप्रियोसिमेत्वंवदयत्तुपृष्टम् ८ ॥

(हे जगन्निवास देव तेतुभ्यंनमोस्तु) चराचर जगत् सब आपही में बसा है इत्यादि हे जगन्निवास देव सबके पालनहारे आप के अर्थ मेरी नमस्कार है (सर्वात्मदृक्त्वंपरमेश्वरोसि) काहे तें नमस्कार है कि सबकी आत्मा जो अन्तर्यामी ब्रह्म ताही को देखतेहो देह जीव बुद्धी रहितहो ताते परमेश्वरहो (पुरुषोत्तमस्यसनातनंतत्त्वंपृच्छामि) पुरुषन में उत्तम जो श्रीरघुनाथजी तिनको जो नित्य सत्य तत्त्व है ताहि पूछतीहौं (च सनातनोसि) पुनः आपहू नित्य सत्यहौ अर्थात् पार्व्वतीजी कहत किहेजगत् को सुबश बसावनहारे देव आप के अर्थमेरी प्रणामहै देहाभिमान जीवत्वबुद्धी रहित सदा ज्ञान दृष्टि ते आत्मै रूप को देखतेहौ ताते परमेश्वरशुद्ध सच्चिदानन्दहौ ऐसा जानि ईश्वर कोटि पुरुषनमें उत्तम जो श्रीरघुनाथजी तिनको नामरूप लीला धामादि जो सच्चिदानन्द विग्रह सनातन तत्त्व है ताहि मैं पूछती हौं सो कहिवेको समर्थ आपहू सनातन सब सिद्धांत तत्त्व के जाननें वाले हौ ७ (यत्अत्यन्तंगोप्यंअनन्यवाच्यं) जो अत्यन्त गुप्त अनन्यवचन है (अहोतदपिमहानुभावाःभक्तेषुवदन्ति) यद्यपि आतंकमयी बार्ता है तदपि महात्मा लोग भक्तन की समाज में कहते हैं ऐसा विचारि (मेपृष्टंयत्तत्निश्चयेनवद) मेरा प्रश्न जो है ताको निश्चयकरिकै कहिये काहेते (हे देवअहंतवभक्ता) हे देव मैं आपकी भक्तहौं काहे ते (त्वंमेप्रियोसि) आपु मोकों प्यारे हौ अर्थात् पार्वती जी कहती हैं कि जो अनन्यमत वादी सुनैं तो कुतर्ककरैं ताते अत्यन्त गुप्तराखिबे योग्य अरु जे केवल रामानुरागी अनन्य हैं तिनहिंन प्रति कहिबे योग्य वचन यद्यपि आतङ्कमयी बार्ता हैं तदपि महात्मा लोग भक्तन की समाज में कहते हैं ऐसा विचारि मेरो प्रश्न जो है ताको उत्तर निश्चय करिकै कहिये काहे ते हे स्वामी मैं आपकी भक्त अर्थात् कर्म वचन मन छल रहित आपकी दासी हौं प्रत्यक्ष प्रमाण कि आप मोकों प्यारे हौ अरु मैं आपको प्यारी नहीं हौं भाव आप मोको त्याग भी करिदेतेहौ अरु मैं जन्मजन्मान्तर आपहीकीदासी होतीहौं इसन्यायते मेरावचनसत्यहै ८ ॥

ज्ञानंसविज्ञानमथानुभक्तिवैराग्ययुक्तंचमितंविभास्वत् ॥ जानाम्यहंयोषिदपित्व दुक्तंयथातथाब्रूहितरन्तियेन ९ ॥

(येनतरंतितत्ज्ञानंसविज्ञानं) ज्यहि करिकै जन तरिजाते हैं तौन ज्ञान सहित विज्ञान (अथ भक्तिअनुवैराग्ययुक्तं) आगे भक्ति ताके पाछे लगाहुआ ज्ञान सोऊ वैराग्ययुक्त होय (चमितं) पुनः अमित न होइ जो समुझमें न आवै मित प्रमाण होय भाव थोरी बात में बोधहोय (विभास्वत्) वेदशास्त्रन में विशेषि प्रकाशमान होय ऐसा जो ज्ञान है ताहि हे भगवन् (त्वत्उक्तं) आपु के कहे ते (अहंयोपित्अपियथाजानामि) मैं स्त्री जाति सोऊ जौनीप्रकार जानि सकौं (तथाब्रूहि) तौनी प्रकार कहिये अर्थात् पार्वती जी प्रश्न करती हैं कि हे नाथ जौने ज्ञान करिकै जन भवसागरको तरि जाते हैं सो ज्ञान भाव आत्मरूप पर सदा दृष्टि राखना सोऊ विज्ञान सहित भाव आत्मरूप ते परमात्मरूप को ध्यान स्थिर राखना पुनः भक्ति जाके आगेरहै भावरघुनाथजी में अनुराग जामें मुख्य होय पुनः वैराग्य सहित होय भाव विषय सुख को तनमन ते त्याग बनारहै पुनः मितहोय भाव थोरही शास्त्र प्रमाण ते बोधहोवै पुनः वेद शास्त्रादि द्वारा विशेषि प्रकाशमान होवै ऐसा जो ज्ञान है ताहि हे नाथ आप के कहे ते मैं स्त्री जाति सोऊ जौनी प्रकार जानिसकौं तौनी प्रकार कृपादृष्टि विस्तार सहित समुझायकै कहिये ९ ॥

पृच्छामिचान्यच्चपरंरहस्यंतदेवचाग्रेवमवारिजाक्ष ॥ श्रीरामचन्द्रेऽखिलतत्त्वसारे भक्तिर्दृढानौर्भवतिप्रसिद्धा १० भक्तिप्रसिद्धाभवमोक्षणायनान्यत्ततःसाधनमस्ति किंचित् ॥ तथापिहृत्संशयबंधनंमेविभेत्तुमर्हस्यमलोक्तिभिस्त्वं ११ ॥

(हेवारिजअक्षअन्यत्चपरंरहस्यंपृच्छामि) हे कमल नयन औरहू कछु पुनः परम रहस्य अत्यंत गुप्त तत्त्व पूछा चाहतीहौं (तत्चएवअग्रेवद) ताको पुनः निश्चय करिकै पूर्वही कहिये (अखिलतत्त्वसारेश्रीरामचन्द्रे) समग्र तत्त्वनको सारांश जोश्रीरघुनाथजी हैं तिनविषे (दृढाभक्तिःप्रसिद्धानौः भवति) पुष्टकरिकै जो भक्तिहै सो भवसागर तरिवेहेतु प्रसिद्धही नावहोतीहै अर्थात् पार्वतीजी बोलीं कि कृपारसभरे हे कमल नयन पूर्व्व जो पूछा ताहीमें संतोष न करना ताके ऊपर औरहू कछुपुनः परमरहस्यअत्यन्तगुप्ततत्त्वपूछाचाहतीहौंताकोपुनः निश्चय करिकै पूर्वही कहिये क्या कहिये पुराण शास्त्र वेदादिकनको जो सिद्धान्त तत्त्वहै तिन सबको सारांश जो श्रीरघुनाथजी हैं तिनविषे जो पुष्ट करिकै भक्तिहै अर्थात् सबको आशभरोसा कामादि विकार त्यागि शुद्धमनते प्रेमसहित सेवन सुमिरणमें अहर्निश निरन्तरलगे रहना इत्यादि जो दृढभक्तिहै सो भवसागर तरिवे हेतुप्रसिद्धही नाव होतीहै भावभक्ति द्वारानीचहू जीव सुगमभवपारहोतेहैं यहशास्त्र द्वारालोकमें प्रसिद्धहै यथागीतायां ॥ मांहिपार्थव्यपाश्रित्ययेपिस्युःपापयोनयः॥स्त्रियोवैश्यास्तथाशूद्रास्तेपियांतिपरांगतिम् १०(भवमोक्षणायभक्तिःप्रसिद्धा) भवबंधन छोड़ावने अर्थ सुलभ समर्थ एकभक्तिही शास्त्रद्वारा प्रसिद्धहै(ततःअन्यत् साधनंकिंचित्नअस्ति) त्यहि भक्तितेपरे और कछु साधन नहीं है यह जानतहौं (तथापिमे हृत्संशयबंधनं) ताहूपर मेरे हृदयमें संशयरूप बंधनहै भाव वै कौनरामहैं जिनकी भक्तिते भवछूटताहै-यह संशय हृदयमें बंधनहै ताहेतु (अमलउक्तिभिःत्वंविभेत्तुंअर्हसि) अमल बचनों करिकै आप भेदनकरिवेको समर्थहौ अर्थात् पार्वतीजी कहत कि जन्म मरणादि जो भवबंधनहै ताको छोड़ावने अर्थ सुलभ समर्थ एक भक्तिही शास्त्रद्वारा प्रसिद्धहै त्यहिते परे और साधन कछु नहीं है यह जानत हौं ताहूपर मेरे हृदयमें संशय अर्थात् वै कौनरामहैं जिनकी भक्तिते भवछूटताहै यह संशयबंधनहै ताहेतु अमल बचनों करिकै आपभेदन करिवेको समर्थहौ भाव ऐसे सत्यसार बचन कहिये जामें रामरूपको बोधहोय ११ ॥

वदन्तिरामंपरमेकमाद्यंनिरस्तमायागुणसंप्रवाहम् ॥ भजन्तिचाहर्निशमप्रमत्ता परंपदंयान्तितथैवसिद्धाः १२ ॥

(मायागुणसंप्रवाहंनिरस्त) रजतमादि जो माया के गुणहैं ताको संपूर्ण प्रवाह रागद्वेष हर्ष विषादादि मोहधारा जामें सब जीव बहेजात त्यहिते निरस्त भिन्न अर्थात् माया आकार रहित यथा प्रत्यादिष्टोनिरस्तःस्यात्इत्यमरः (तंरामपरंएकंआद्यंवदंति) तौन जो रघुनाथजी हैं तिनहिं परं सर्वोपरि एकं जिनकी समताको दूसरारूप नहीं है आद्यंसबके आदिकारणहैं ऐसा वेदशास्त्र द्वाराआचार्यलोग कहते हैं (चतथाएववदंति) पुनः ताही भांति निश्चयकरिकै ऐसा भी कहते हैं यथा (सिद्धाःअप्रमत्ताःअहर्निशंभजंति) तत्त्वज्ञाता सावधान शांतचित्त ह्वैकै जाको दिन राति भजते हैं ताके प्रभावते (परंपदंयान्ति) मुक्ति स्थानको जाते हैं अर्थात् पार्वतीजी अपनी संशयको प्रसिद्धकरि कहती हैं कि हे नाथ वेद शास्त्रद्वारा आचार्यलोग ऐसा कहते हैं कि श्रीरघुनाथजी सब ईश्वररूपनके परे रूपहैं जिनकी समताको दूसरारूप नहीं है आप एकही सब रूपनके आदि कारणहैं अरु मायाके गुण

जो रजोगुण तमोगुण ताको जो संपूर्ण प्रवाहराग द्वेष हर्ष विशादादि मोहरूप धाराहै ऐसाहिते रहित भावमाया आकार रहितहैं यथा सनत्कुमार संहितायां ॥ विज्ञानहेतुंविमलायताक्षंप्रज्ञानरूपंस्वसुखैकहेतुं ।श्रीरामचन्द्रंहरिमादिदेवं परात्परंराममहंभजामि ॥ इत्यादिरूप पुनः ताही भांति निश्चय करिकै प्रभाव ऐसा कहतेहैं कि सिद्धतत्त्वज्ञाता संतसावधान ह्वैकै दिनों राति जाको भजतेहैं ते परमपद मुक्तिस्थानको जातेहैं यथा सनत्कुमार संहितायां॥ श्रीरामरामेतिजनाये जपंतिच नित्यशः। तेषांभुक्तिश्चमुक्तिश्चभविष्यन्तिनसंशयः ॥ ऐसा प्रभाव सुनाहै १२ ॥

वदन्तिकेचित्परमोपिरामःस्वाविद्ययासंवृतमात्मसंज्ञम् ॥ जानातिनात्मानमतःपरेणसंबोधितोवेदपरात्मतत्त्वम् १३ यदिस्मजानातिकुतोविलापःसीताकृतेतेनकृतःपरेण ॥ जानातिनैवंयदिकेनसेव्यःसमोहिसर्वैरपिजीवजातैः १४ ॥

(केचित्वदन्ति) कोऊ ऐसाभी कहताहै (रामःपरमोऽपि) श्रीरघुनाथजी परात्पर रूप निश्चय करिकैहैं परन्तु (स्वाविद्ययाआत्मसंज्ञंसंवृतम्) अपनीअविद्या माया करिकै संवृतं ढकिगयाहै आत्म सञ्ज्ञक रूप तेहि कारणते (आत्मानंनजानाति) माया ढके कारण ते आत्मरूपको नहीं जानि सकेहैं (अतःपरेणसंबोधितःपरात्मतत्त्वमवेद) इसकारणते और करिकै सम्बोधित समुझावे जावैं तब परमात्मतत्त्वको वेदनाम जानितहै अर्थात् प्रथम ऐश्वर्यरूपको कहि अबऐश्वर्य माधुर्य मिश्रित रूप कहतीहैं कि कोऊ आचार्य ऐसाभी कहतेहैं कि श्रीरघुनाथजी परात्पर रूप निश्चय करिकै हैं परन्तु अपनी माया करिकै ढकिगयाहै आत्मसंज्ञक रूपभाव देह व्यवहार में अधिक लगेरहे तेहि कारणते आत्मरूपको स्वयं साधारण नहीं जानि सकेहैं इसकारणते जब और किसी करिकै समझाये जावैं तबअपने परमात्मतत्त्वको जानितहै भावयद्यपि परब्रह्महैं परन्तु अविद्यामय नररूपअपने ते देह व्यवहारमें परि आत्मरूप भूलिगये अपनाको राजपुत्र करि जानतेरहे जबलंकामें ब्रह्माने समुझाया तब अपना आत्मरूप जाने ऐसा बाल्मीकिजी कहाहै यथारामाह ॥ आत्मानंमानुषंमन्येरामं दशरथात्मजं। सोहंयश्चयतश्चाहंभगवांस्तद्ब्रवीतुमे॥ब्रह्मोवाच॥ बधार्थंरावणस्येहप्रविष्टोमानुषींतनुं। तदिदंनस्त्वयाकार्यंकृतंधर्मभृतांवरः१३ (यदिस्मजानाति)जोरामचन्द्र आपनेही बोधते आपने आत्मरूपको जानतेहोते तौ (सीताकृते) सीताको संयोग खण्डित होतसंते (परेण) अनात्मरूपेण यथादूरानात्मोत्तमाःपराःइत्यमरः अर्थात् देह बुद्धि करिकै (कुतोविलापःतेनकृतः) किसहेतु विलाप तिनराम करिकै कियागया (यदिएवंनजानाति) जो इसोप्रकार रामभी अपने आत्मरूपको नहीं जानते हैं तौ (केनसेव्यः) कौन गुणकरिकरि रामरूपसेव्यहै जीव सेवकहै काहेते यथा जीव अल्पज्ञ तथा रामभी अल्पज्ञहैं तौ (जीवजातैःअपिसर्वैःसमोहि) जीवजातिकरिकै यावत् निश्चयकियेहैं तिन सबन करिकै समता रामहूको निश्चय करना चाहिये अर्थात् इसश्लोकमें पार्वतीजी केवल माधुर्य रूपको कहि आपनी संशयपुष्ट करतीहैं यथा जो रामचन्द्र आपनेही बोधते आपने आत्मरूप परब्रह्म करि जानतेहोते तौ सीताको वियोगहोत संते प्राकृत मनुष्योंकी नाईं क्यों रोवत फिरते इसी भांति रामभी अपने आत्मरूपको नहीं जानते हैं प्राकृत विषयी मनुष्योंकी नाईं उनहूमें दुःख सुख वर्तमानहै तौ कौने गुणकरिकै रामसेव्य अरु जीवसेवकहैं यह तौ बनता नहीं क्योंकि यथा जीव अपने आत्मरूपको नहीं जानतेहैं तथा जो रामहू आत्मरूपको भूलि वियोग दुःखते दुःखीहैं तौ सब जीवनकी बराबरि रामौहैं उनमें विशेषता क्याहै जो जीव उनकी सेवकाई करैं भाव जो आपही दुःखितहैं तौ औरको कैसे सुखीकरैंगे १४ ॥

अत्रोत्तरंकिंविदितंभवद्भिस्तद्ब्रूतमेसंशयभेदिवाक्यम् ॥

(अत्र उत्तरं भवद्भिः किं विदितं) इस मेरे प्रश्न में उत्तर आपकरिकै क्या प्रसिद्ध भाव यामें क्या सिद्धान्त निश्चय करि राख्योहै (मे संशय भेदि वाक्यं तत्ब्रूत) जामें मेरी संशय कटिजावै ऐसा जो वचन ताको कहिये अर्थात् संशय पूर्वक पार्वती जी प्रश्न करती हैं कि हे भगवन् सनत्कुमार नारद पराशरादि तौ ऐसा कहतेहैं कि श्रीरघुनाथजी परात्पर परब्रह्म अद्वितीय सबके आदि कारणहैं जिनको दिनौं राति भजि सिद्धजन परमपद पावतेहैं अरु वाल्मीकिजी ऐसा कहत कि रघुनाथजी परब्रह्महैं परंतु प्राकृत तनुधरेते अपनी अविद्या मायामें परि आत्मरूप भूलि मनुष्यवत् आचरणमें तत्पररहे जब ब्रह्माने समुझावा तब सुधिभई इसमें मेरे संशय होती है कि जो आत्म रूपकी सुधिहोती तौ सीतावियोग दुःखते क्यों रोवत फिरते अरु जो मनुष्यवत् वोभी भूलिगे तौ यथा प्राकृत मनुष्य तथा वोभी हैं तौ कौनविशेपता उनमें है जो स्वामी मानि जीव सेवकबनि सेवाकरैं भाव जो आपही दुःखितहै सो और को दुःख कैसे मिटाय सक्ताहै अरु जो सेवाकीन्हें दुःख न छूटता तौ पराशरादि क्यों कहते ताते जिनकी सेवाते भवबंधन छूटताहै ते दशरथनन्दनहैं वा कोऊ और रामहैं यामें आपको क्या सिद्धान्तहै सो उत्तर दीजिये परंतु जामें मेरी संशय मिटै ऐसे वचन कहिये इत्यादि सुनि ॥

श्रीमहादेवउवाच ॥ धन्यासिभक्तासिपरात्मनस्त्वं यद्ज्ञातुमिच्छातवरामतत्त्वम् १५ पुरानकेनाप्यभिचोदितोऽहंवक्तुंरहस्यंपरमंनिगूढं ॥ त्वयाद्यभक्त्यापरिनोदितोहंवक्ष्येनमस्कृत्यरघूत्तमंते १६ ॥

शिवजीबोले (परमात्मनःभक्तासित्वंधन्यासि) हे पार्वती परमात्मा श्रीरघुनाथजी की भक्त हौ ताते तुमधन्यहौ काहेते (यद्रामतत्त्वंज्ञातुंतवइच्छा) जाते रामतत्त्व जानिवेकी तुमइच्छा कीन्हें भावगूढ तत्त्व सुनाचाहतीहौ ताते मुग्धवत्प्रश्न किया अर्थात् प्रसन्नह्वैकै शिवजी बोले कि हे पार्वती तुम रघुनाथजीकी परमभक्तहौ अरु धन्य अर्थात् प्रशंसा करिवेयोग्यहौ काहेते जोगुप्त रामतत्त्व है ताके जानिवेकी तुम इच्छा कीन्हेंउ ताते सबजगको कल्याण होई इति परस्वारथीहौ ताते धन्य हौ १५ (निगूढपरमरहस्यंवक्तुं) अत्यन्त गुप्त परमरहस्य यह जोहै ताहि कहिवेहेतु (अहंपुरानकेनापिअभिचोदितः) हमसों पूर्व समयमे किसी करिकै नहीं प्रेरणकिया गया (अद्यत्वयाभक्त्यानोदितः) हे पार्वती आजतुम भक्तिकरिकै पूछेउहै (रघूत्तमंनमस्कृत्यतेअहंवक्ष्ये) रघुनाथजीको नमस्कार करिकै तुम्हारे बोध अर्थ हमकहतेहैं अर्थात् शिवजी बोले कि अत्यन्त गुप्त परमरहस्य भाव विस्मय कारक एकांती रामचरित्र यहजोहै ताहि कहिवेहेतु हम सों पूर्व समय आजतक काहूने नहीं पूछा हेपार्वती आजतुमने भक्तिकरिकै पूछाहै भाव अभक्त जोपूछिबोकरै तबहू श्रीरघुनाथजीकी गुप्तरहस्य न कहना चाहिये काहेते वै वृथा कुतर्क करतेहैं अरु तुम भक्तिकरिकै पूछतीहौ ताते प्रथम श्रीरघुनाथजीको प्रणाम करि भाव शरणागतको भरोसा राखि तुम्हारे बोधहोने अर्थ अब हम गुप्त रामचरित्र वर्णन करतेहैं सावधान ह्वै सुनिये इतिशेपः १६ ॥

रामःपरात्माप्रकृतेरनादिरानंदएकःपुरुषोत्तमोहि ॥ स्वमाययाकृत्स्नमिदंहिसृष्ट्वा नभोवदंतर्बहिरस्थितोयः १७ ॥

(रामःप्रकृतेःपरमात्मा) प्रकृति कारण माया जाते ब्रह्मांड रचनाहै तेहितेपरे शुद्ध आत्मरूप श्री

राघुनाथजीहैं (अनादिःआनन्द) जिनकी आदि कोई नहीं जानिसक्ताहै अरु सदा एकरस अखंड आनन्द रूपहैं (पुरुषोत्तमोहिएकः) भरण पोषण रक्षा धर्म स्थापनादि पुरुपार्थ करनेवाले यावत् पुरुषहैं तिनमें उत्तम एकरघुनाथैजी हैं दूसरा नहीं है (इदंकृत्स्नंहि) यह जोदेखिपड़ताहै संसार सम्पूर्ण ताको कारण (स्वमाययासृष्ट्वा) अघटघटना रूप जोआपनी शक्तिहै तेहि करिकै सबकोरचिकै तामें (अन्तर्बहिःनभोवत्अन्तस्थितःयः) भीतर बाहेर आकाशवत् व्याप्तहै यःअर्थात् जो अविद्यामें भूलनेको पार्वतीजी कहे तापर शिवजी उत्तरदेतेहैं कि जो मादकपाने नहीं किया ताके कैसेनसा चढ़िसक्ताहै रघुनाथजी तौ प्रकृतिते परे शुद्ध आत्मरूपहैं तौ कैसे अविद्यामें भूलिगये पुनः जाके पूर्व परोक्ष कोई रचना रचिराखै ताकी अद्भुताई देखिभूलै रघुनाथजी तौ अनादिहैं इनते पूर्वकोई हुई नहीं मायाजीव ईश्वरकालादि सब इनहींको रचाहै तामें कैसे भूलिसकैहैं पुनः जो तुमने कहा कि वियोग दुःखमें दुःखीभये सोभी तुम्हारीभूलहै योग वियोग हर्ष विषाद रहित सदाएकरस अखंड आनंदरूप श्रीरघुनाथजी हैं पुनः जोतुमने कहा कि यथा जीव तैसेही रामहैं सेव्य कैसेभये यहवचन वृथाहै काहेते सेव्य भाववाले यावत् पुरुष हैं तिनमें उत्तम सुलभ उदार एक रघुनाथैजी स्वामी हैं जिनकी समताको दूसरा नहींहै पुनः यह जो देखिपड़ता संसार सम्पूर्ण ताको कारण अघटघटना रूपआपनी शक्तिहै तेहि करिकै सब ब्रह्माण्ड रचिकै तामेंभीतर बाहेर आकाशकी नाईं व्याप्तहैं जो सो श्रीरघुनाथजी हैं जिनके अंशकलासत्ताते समग्र रचनाहोत सबमें चैतन्यताहै ताते तुम्हारी संशय अज्ञवत् वृथाहै सो आगे सुनिये १७॥

सर्वान्तरस्थोपिनिगूढआत्मास्वमाययासृष्टमिदंविचष्टे ॥ जगंतिनित्यंपरितोभ्रमंतियत्सन्निधौचुम्बकलोहवद्धि १८ एतन्नजानंतिविमूढचेताःस्वाविद्ययासंवृतमानसाये ॥ स्वाज्ञानमप्यात्मनिशुद्धबुद्धेस्त्वारोपयन्तीहनिरस्तमाये १९ ॥

(सर्वअन्तरआत्माअस्थोअपिनिगूढ) सर्व भूतन के अन्तर आत्मरूप ते प्रभु बसे हैं निश्चयकरिकै परंतु अत्यन्त गुप्तहैं ढूँढ़े नहीं मिलते हैं (स्वमाययासृष्टंइदंविचष्टे) अपनी माया करिकै रचा यह जो संसार ताको देखि रहे हैं पुनः (यत्सन्निधौजगंति) जाके समीप जगत् जड़है सो भी जाके प्रभाव ते (नित्यंपरितोभ्रमंति) नित्यहीं परिभ्रमण करिरहा है कौन भांति (चुम्बकलोहवत्हि) यथा लोहाभी जड़है परन्तु चुम्बकपत्थर के निकट वाके प्रभाव ते लोहाभी निश्चयकरि वाके पीछे लाग घूमत फिरताहै अर्थात् शिवजी बोले कि कौन भांति सबको चैतन्य किहे हैं कि सर्व भूतन के अन्तर आत्मरूपते प्रभु निश्चय करिकै बसे हैं परन्तु अत्यन्त गुप्तहैं ताते ढूँढ़े नहीं मिलते हैं अरु अपनी माया करिकै रचाहुआ यह जो संसार है ताको देखि रहे हैं अरु जाके समीप ताते जगत्जड़ सोभी जा प्रभुके प्रभाव ते नित्यहीं परिभ्रमण करिरहा है भाव चलता फिरता है कौन भांति यथा लोहाभी जड़हैं परन्तु चुम्बकपत्थरके निकट वाके प्रभाव ते लोहाभी वाके पाछे लगा घूमता फिरता है इसी भांति प्रभुके सत्ताते सब जगत् चैतन्यहै १८ (एतत्नजानन्ति) जगत् को चैतन्यकरनेवाला प्रभुको आत्मरूप है इतना नहीं जानते हैं भाव ईश्वर ते विमुख पुनः (स्वमानसाअविद्ययासंवृत) अपने मनको अविद्यामाया में बन्द कीन्हे हैं भाव विषयाशक्त (विमूढचेताः) इस आचरण ते विशेषि मूढ़ चित्त हैं येते क्या करते हैं कि (स्वअज्ञानंअपि) अपना जो अज्ञान है ताहि निश्चय करिकै (आत्मानिशुद्धबुद्धेःतुनिरस्तमायेइहआरोपयंति) आत्मरूप शुद्धबुद्धी पुनः माया तेपर से जो श्री रघुनाथजी तिनमें आरोपते हैं भाव अपनी अज्ञानताते प्रभुको अज्ञान मानते हैं अर्थात् जे आत्मरूप

को नहीं जानते हैं देहै को सत्य माने मनको विषय में आशक्त कीन्हें जे मूढ़ चित्त हैं ते अपनी अज्ञानता प्रभु में आरोपते हैं भाव सीता बियोग दुःख ते रोवत फिरे ऐसा मूढ़ कहते हैं अरु रघुनाथजी प्रकृतिपार शुद्ध आत्म तत्त्व सदा एक रस ज्ञान अखण्ड आनन्द मूर्ति हैं लोकोद्धार हेतु कृपा करि नरवत् लीला करिरहे हैं तामें न भूलना चाहिये अरु जे भूलते हैं तिनको हाल आगे सुनिये १९ ॥

संसारमेवानुसरन्तितेवैपुत्रादिसक्ताःपुरुकर्मयुक्ताः ॥ जानंतिनैवंहृदयेस्थितंवैचामीकरंकण्ठगतंयथाज्ञाः २० यथाप्रकाशोनतुविद्यतेरवौज्योतिस्स्वभावेपरमेश्वरेतथा ॥ विशुद्धविज्ञानघनेरघूत्तमेविद्याकथंस्यात्परतःपरात्मनि २१ ॥

(यथाकंठगतंचामीकिरंएवंहृदयेस्थितंवैअज्ञाःनजानन्ति) जाभांति कंठमें धारणकिहे सोना इसी भांति हृदय में स्थित आत्मरूप निश्चयकरिहै ताको अज्ञान नहीं जानते हैं अरु (वैपुत्रादिसक्ताःपुरुकर्मयुक्ताः) निश्चयकरि पुत्रादि में आसक्त बहुत कर्मन सहित (तेसंसारंएवअनुसरंति) ते जन संसारमें निश्चयकरि जाते हैं अर्थात् जा भांति लोक में माता पितादिको वनवाय दिया कंठामालादि सोना कोऊ गरेमें पहिरे हैं अरु वाको मूल्य गुण नहीं जानता है तौ कंगाल बना अनेक दुःख सहताहै इसी भांति हृदय में बसा प्रभु को आत्मरूप ताके विनाजाने मोहवश स्त्री पुत्रन में आसक्त कामं क्रोध ते अनेक कर्मकरते हैं तिन सहित ते संसार में जन्म मरणादि अनेक दुःख सहते हैं २० (यथाअप्रकाशःरवौनतुविद्यते) जा भांति अंधकार सूर्यन में नहीं विद्यमान है सक्ताहै (तथापरमेश्वरेस्वभावेज्योतिः) ताही भांति परमेश्वरमें स्वाभाविकही ज्योति प्रकाश है भाव माया तमलेश नहीं है तो (परतःपरात्मनि विशुद्धविज्ञानघनेरघूत्तमेअविद्याकथंस्यात्) परात्पर परमात्मा विशेषि शुद्धविज्ञान समूहहै जिनमें ऐसे रघुनाथजीमें अविद्यामाया कैसे व्यापिसक्ती है अर्थात् जाभांति सूर्य स्वयंप्रकाशवंतहैं तहां अंधकारकी गतिनहींहै तथा परमेश्वरतत्त्वभी स्वयंविज्ञानप्रकाशहै तहां मायाकी गतिनहीं अरु रघुनाथजी तौ परात्पर परमात्माहैं जिनमें विशेषि शुद्धविज्ञान समूहहै तिनमें अविद्या कैसे व्यापि सक्ती है यह वृथाही भ्रमहै कौन भांति सो सुनों २१ ॥

यथाहिचाक्ष्णाभ्रमताग्रहादिकंविनष्टदृष्टेर्भ्रमतीवदृश्यते॥तथैवदेहेन्द्रियकर्तुरात्मा कृतंपरेध्यस्यजनोविमुह्यति २२ नहोनरात्रिःसवितुर्यथाभवेत्प्रकाशरूपाव्यभिचारतःक्वचित् ॥ ज्ञानंतथाज्ञानमिदंद्वयंहरौरामेकथंस्थास्यातिशुद्धचिद्घने २३ ॥

(यथाभ्रमताचअक्ष्णाहिविनष्टदृष्टेर्गृहादिकंभ्रमतिइवदृश्यते) जैसे कोऊ ठौरैपर चक्राकारवेगते देह घुमावनेलगा पुनः नेत्रभी देहके संगही घूमते हैं त्याहि कारण दृष्टिकी शुद्धताविशेषि नष्टभई तब गृहादि जो सदा स्थिरहैं सो भी घूमतसम देखिपरते हैं (तथाएवदेहइन्द्रियकर्तुः) ताही प्रकार निश्चय करिकै जो देह इन्द्रिनकी कर्तव्यताहै ताको (परेआत्माकृतंजनःध्यस्यविमुह्यति) प्रकृति परे जो आत्महै ताको कर्तव्यता मानिजन अभिमान करि मोहको प्राप्तहोते हैं अर्थात् यथा भ्रमणकरता हुआ पुरुष स्थिर मन्दिरादि भूधरादिकनको भी भ्रमतही देखताहै इसी भांति देहाभिमानी इन्द्री विषयनमें लगा यथा आपकर्म करताहै तथा परमात्मामें भी स्थापित करि जीव अभिमान वशमोहको प्राप्त होताहै भावअबरघुनाथजी स्त्री वियोग दुःखते विलापकरत फिरे तौ हम क्यों न करें २२ (यथासवितुःअहोरात्रिःनभवेत्प्रकाशरूपाक्वचित्व्यभिचारतः) या भांति सूर्यनमें दिन राति नहीं होतीहै काहेते जिनको रूपै प्रकाशवंतहै तामें कहौ कछु विशेषि अभिचारहै भाव कुछ भी विकार

नहीं (तथाज्ञानंअज्ञानंइदंद्वयंहरौ) ताही भांति ज्ञान अरु अज्ञान ये दोऊ हरिमात्रविषे नहीं ह्वै सके हैं भाव हरिरूपमें एकरस अखंड ज्ञानहै तब (.शुद्धचिद्घनेरामेकथंस्थास्यति) शुद्ध चैतन्यसमूह श्री रघुनाथजीमें कैसे अज्ञान स्थितह्वैसकी अर्थात् जा भांति सूर्यसदा एकरस स्वयं प्रकाशरूपहैं तिनमें दिन राति कैसे ह्वै सकी है तैसेहरिरूप मात्रमें सदास्वयं विज्ञान प्रकाशहै तहां ज्ञान नहीं है अरु रघुनाथजीमें तौ शुद्ध चैतन्यता समूहहै तहां कैसे अज्ञान स्थित ह्वै सकी २३ ॥

तस्मात्परानन्दमयेरघूत्तमेविज्ञानरूपेहिनविद्यतेतमः ॥ अज्ञानसाक्षिण्यरविन्द लोचनेमायाश्रयत्वान्नहिमोहकारणम् २४ अत्रतेकथयिष्यामिरहस्यमपिदुर्लभ म् ॥ सीताराममरुत्सूनुसंवादंमोक्षसाधनं २५ ॥

(तस्मात्परानन्दमयेविज्ञानरूपेरघूत्तमेतमःहिनविद्यते) तिहिते हे पार्वती परम आनन्दमय विज्ञान भाव निर्विकल्प अखंड ज्ञानरूप जो श्रीरघुनाथजी तिनविषे निश्चय करिकै अज्ञान नहीं है काहेते (अज्ञानसाक्षिणिमयाश्रयत्वात्अरविंदलोचनेमोहकारणंनहि) अज्ञानके साक्षीहैं मायाजाकी आश्रय ताते कमल नयनमें मोहको कारणे नहीं है अर्थात् शिवजीबोले कि हेपार्वती पूर्व जोहम कहि आये हैं त्यहिकारणते परम आनन्दमय विज्ञानरूप श्रीरघुनाथजीमें अज्ञान निश्चय करिकै नहीं है काहेते अज्ञानजाकी आज्ञाते व्यापत पुनः मायाजाके बलतेसर्वकार्य करत ताते कमलनयन में मोहकारण नहीं है भाव कमलवत् नेत्रनमें कृपारसभरे सुलभ लोक उद्धारहेतु मानुपवत् लीलाकीन्हें मोहबश ते नबिचारिये अर्थात् यथा लोक जननको प्रसन्नकरनेहेतु विदूपकलोग अनेकवेप बनावत ताही अनुकूल भावदेखावत तामें सत्यमानना अल्पज्ञताहै तैसेही प्रभुकी माधुर्य्य लीलाहै जाको देखि वा श्रवणकीर्तन करि रामसनेह बाढ़त ताते जीव शुभगति पावत सो तौ प्रयोजनहै अरु सॉचु मानि मोहवश होना सो महाअल्पज्ञताहै २४ (मोक्षसाधनंसीताराममरुत्सूनुसंवादंअपिदुर्लभंरहस्यं अत्रतेकथयिष्यामि) शिवजी बोले कि जो मुक्तिको साधनहै भावजाको सुनिमनमें धरे सुलभही मुक्तिप्राप्त होइगी ऐसा जो सीतारामजीको अरु हनुमान्जीको संवाद जो लोक जननको निश्चय करिकै दुर्लभहै सो रहस्यगुप्त रामतत्त्व जोहै ताहि या समयमें तुम्हारे बोध अर्थ हमको कहिवेकी इच्छा है भाव प्रभुकी प्रेरणाते श्रीजानकीजी जो गुप्तरामतत्त्वहनुमान्जीको सुनायाहै सो हम तुमको सुनावेंगे सुनिये २५ ॥

पुरारामायणेरामोरावणंदेवकण्टकम् ॥ हत्वारणेरणश्लाघीसपुत्रबलवाहनम् २६ सीतयासहसुग्रीवलक्ष्मणाभ्यांसमन्वितः ॥ अयोध्यामगमद्रामोहनुमत्प्रमुखैर्युतः २७ अभिषिक्तःपरिवृतोवशिष्ठाद्यैर्महात्मभिः ॥ सिंहासनेसमासीनःकोटिसूर्यसमप्रभः २८ दृष्ट्वातदाहनूमंतंप्रांजलिंपुरतःस्थितम् ॥ कृतकार्यंनिराकांक्षंज्ञानापेक्षंमहामतिः २९ ॥

(पुरा रामायणे रणश्लाघी देव कंटकं रावणं सपुत्र बलवाहनं रणे रामः हत्वा) पूर्व रामायण जो वाल्मीकि कृतहै तामें यह चरित्र वर्णन है कि रणक्रिया को प्रलाप करनेवाला देवनको शत्रु जो रावण है ताहि सेना पुत्र वाहन सहित रणभूमि विषे रघुनाथजी मारिकै विभीषणको राज्यदै तीनिहूँ लोकन को अभय करि पुनः २६ (सीतयासह) श्री जानकी जी सहित पुष्पक पर चढ़ि पुनः (सुग्रीव लक्ष्मणाभ्यां समन्वितः) सखा सुग्रीव बन्धु लक्ष्मण इन दोऊ करिकै सहित (हनुमत्प्र

मुखैर्युतः) हनुमान् मुखिया हैं जिनमें ऐसे वानर ऋक्ष-राक्षसादि यूथपन करिकै सहित (रामःअयोध्यां अगमत्) श्री रघुनाथजी अयोध्यहि आवत भये २७ (अभिषिक्तः सिंहासने समासीनः) अयोध्याजी में राजमंदिरविषे नवीन भूषण वसन सजे जानकी वामभाग समेत राज्याभिषेक को प्राप्त सम्पूर्ण ऐश्वर्य्य सहित रत्नसिंहासन पर प्रभुबैठे हैं (कोटिसूर्यसमप्रभः) करोरिन सूर्यनसम प्रभा तनमें प्रकाशमान है (वशिष्ठ आद्यैः महात्मभिः परिवृतः) वशिष्ठआदि महात्मा जननकरिकै परिवृत भाव सर्वदिशिमें घेरे खड़ेहैं २८ (तदाहनूमतं दृष्ट्वाप्रांजलिं पुरतःस्थितम्) ताही समयमें प्रभु हनुमान्‌जी को देखे कि हाथजोरे आगे खड़े हैं ते कैसे हैं (कृतकार्यं निराकांक्षम्) सुग्रीव मिलावन सिंधुनाघन लंकदाहन सीतासुधिलावन समरमें अनेक साहसकरन सजीवन लावन इत्यादि दुर्घटकार्य तौ प्रभुके अनेक कीन्हें हैं अरु अपना को पावने की कछु भी कांक्षा नहीं राखे हैं (ज्ञान अपेक्षंमहामतिः) एक ज्ञानप्राप्ति की अपेक्षा है ऐसे महाबुद्धिवन्त हैं २९ ॥

रामःसीतामुवाचेदंब्रूहितत्त्वंहनूमते ॥ निष्कल्मषोयंज्ञानस्यपात्रंनोनित्यभक्तिमान् ३० तथेतिजानकीप्राहतत्त्वंरामस्यनिश्चितम् ॥ हनूमतेप्रपन्नायसीतालोकविमोहनी ३१॥ सीतोवाच ॥ रामंविद्धिपरब्रह्मसच्चिदानन्दमद्वयम् ॥ सर्वोपाधिविनिर्मुक्तंसत्तामात्रमगोचरम् ३२ ॥

(सीतां रामः इदं उवाच) जानकी प्रति रघुनाथजी ऐसा बोलते भये (अयं निष्कल्मषः) ये निःपाप हैं (नित्यनो भक्तिमान्) नित्यही हमारी तुम्हारी भक्तियुत हैं ताते (ज्ञानस्यपात्रं हनूमते तत्त्वं ब्रूहि) ज्ञानके पात्र इन हनूमान्‌के बोध अर्थ तत्त्वकहो अर्थात् राज्याभिषेक समय विभव समाज सहित प्रभु सिंहासन पर बैठे सबपर दृष्टिकीन्हें निर्वासिक कोऊ न देखान तब हनुमान्‌जी को देखे कि दुर्घट कार्य तौ अनेकन कीन्हें हैं अरु अर्थ कामादि किसी बातकी इच्छा नहीं है केवल शुद्ध ज्ञान राखने की अपेक्षा है यह विचारि प्रभु जानकीजीसों बोले कि ये पवनपुत्रमें किसी भांति को पाप नहींहै ताते इनकीदेह पावनहै पुनः हमारी तुम्हारी सेवा आज्ञा पालनमें प्रीति श्रद्धा समेत नित्य लगेरहते हैं ताते जीवभी पावन इति बाहर भीतर शुद्धताते ज्ञान स्थापित करनेके शुद्ध पात्र हैं ऐसा विचारि हमारा गुप्ततत्त्व हनुमान्‌को सुनावो ३० (निश्चितं रामस्य तत्त्वं श्रोतुंइच्छा यथा तथा प्रपन्नाय हनुमते जानकी इति प्राह)कौन जानकी(सीतालोक विमोहनी) नाहीं चित्तचढ़ा है जो श्रीरघुनाथजी को गुप्ततत्त्व ताको सुनेकी इच्छा किहेहैं जाप्रकार ताहीप्रकार शरणागतमें प्राप्त जो हनुमान् तिनके बोध अर्थ श्री जानकीजी इसभांति के वचन बोलती भई कौन जानकी अर्थात् जब चतुर्भुज रामरूप धरे तब लक्ष्मी जानकी भई सो नहीं जो साकेत विहारीके वामभाग में सदा आसीन रहत सो सीता जिनकी आज्ञाते अविद्यामाया लोकजीवन को बद्धकीन्हें इति लोकाविमोहनी सो प्रभुकी आज्ञाते हनुमान् के बन्धन छुड़ावेंगी इति भावते लोक विमोहनी कहे ३१ श्रीसीता जी बोलीं हे हनुमन् (रामंपरब्रह्मविद्धि) रघुनाथजी जांहैं तिनहिं परंब्रह्म करि जानौ अर्थात् ब्रह्म जो आत्मरूप जाको सँभारि योगीजन जाको ध्यानकरते हैं सो परब्रह्म यथा रामतापिन्यां ॥ रमंते योगिनोनन्तेसत्यानन्देचिदात्मनि । इतिरामपदेनासौपरंब्रह्माभिधीयते (सच्चिदानन्दंअद्वयम्) सत् केवलधर्ममात्रजामें कछु बाध नहीं यथापाद्मेसत्यत्वंबाधराहित्यंजगद्बाधैवसाक्षिणः । बाधःकिंसाक्षिको ब्रूहिनत्वंसाक्षिकइष्यते ॥ पुनः चित्सदा चैतन्य अर्थात् अखंडज्ञानरूप पुनः आनन्द सदा एकरस

प्रसन्न रहना पुनः अद्वयं जाकी समताको दूसरा नहीं है केवल आपु एकही है यथा श्रुतिः ॥ एकमेवाद्वितीयं॥पुनः (सर्वोपाधिविनिर्मुक्तं) स्थूल सूक्ष्म कारणादि जो तीनिदेहैंहैं सोई आत्माविषे उपाधि है उपाधि क्या वस्तुहै यथा॥उपाधिर्नाधर्मचिन्ताइत्यमरः॥अर्थात् धर्म खंडितहोनेकी जो चिंताहै सो देहधारिनमें उपाधिहै सो जिनमें नहीं है (सत्तामात्रं) जाते स्थूल सूक्ष्म कारण इत्यादि सब चैतन्यहै शुद्ध आत्मरूपहै (अगोचरं) जो इन्द्रिनकी विषयमें नहीं आवत ३२ ॥

आनंदंनिर्मलंशांतंनिर्विकारंनिरंजनं॥सर्वव्यापिनमात्मानंस्वप्रकाशमकल्मषम् ३३ ॥

(आनंदंनिर्मलंशांतं) समूह आनन्द में सदा एक रस परिपूर्ण पुनः रजोगुणादि मल करिके रहित इति निर्मल पुनः प्रपञ्च रहित जीवनके कल्याणपर क्षमा दृष्टिराखे इति शांत यथा श्रुतिः ॥ प्रपंचोपशमंशांतंशिवंपुनः (निर्विकारंनिरंजनं) लघुदीर्घ अल्प पीन जन्म मरण इति षड्विकार वा कामादि वा शब्द स्पर्श रूप रस गंध मैथुन इत्यादि विकाररहित निर्विकारहैं पुनः अंजन जो कार्य कारणरूप अविद्यामायातम करिके रहित इतिनिरंजनहैं पुनः(सर्वव्यापिनमात्मानं) सर्व भूतमात्रमें व्यापक आत्मारूपहैं यथा श्रुतिः ॥ सर्व भूतांतरात्मा (स्वप्रकाशमकल्मषं) स्वयं प्रकाशवंतहैं जा प्रकाशते सब जगत् प्रकाशितहै जामें किसी भांतिको पाप नहीं इति अकल्मषहैं अर्थात् सब प्रकारके पाप कामादि विकार सर्व उपाधि कारण मायारजादिमल इत्यादि रहित शांतअगोचर सत्तामात्र सर्वव्यापी आत्मतत्त्व अद्वितीय स्वयं प्रकाश सच्चिदानन्द परब्रह्म श्रीरघुनाथजी को जानो भाव नैमित्यलीला प्राकृतरूप रघुनाथजीमें न आरोपित करो ३३ ॥

मांविद्धिमूलप्रकृतिंसर्गस्थित्यन्तकारिणीम् ॥ तस्यसन्निधिमात्रेणसृजामीदमतन्द्रिता ३४ ॥

श्रीरघुनाथजी तौ कार्य कारण रहितहैं तौ जगत् रचना कैसे होती है तापर कहत (मूलप्रकृतिं मांविद्धि) आदि शक्ति हमहिं जानो कौन मूलप्रकृति (सर्गस्थिति अंतकारिणीं) उत्पत्ति पालन प्रलयको करणहारी कौन बलते सब कार्य करतीहौं (तस्यसन्निधिमात्रेण) रघुनाथजी जो परब्रह्म हैं तिनके समीप वास मात्रते (इदंअतंद्रितासृजामि) यह जो संसार है ताहि आलसत्यागिसृजति हौं अर्थात् जानकीजी कहत कि हे हनुमन् यथा परब्रह्म रघुनाथजी को कारण रहित जानौ तथा उत्पत्ति पालन प्रलय करणहारी आदिशक्ति हमको जानौ श्रीरघुनाथजीके समीप रहेमात्रते आलस त्यागि याहि संसारकी सब रचना हमहीं करतीहैं तब रघुनाथजीको कछुकार्य करने ते क्याप्रयोजन है अर्थात् जाभांति लोक में युवतीजन आलस त्यागि भाव श्रद्धा समेत पतिके पासबसि रतिदान मात्र लैके गर्भ धारण करतीहैं ताको नवमास तक उदर में पालत पुनः जन्म भयेते वृद्धतक श्रद्धा समेत वाको लालन पालन पोषणादि सबकार्य मातै करतीहैं पिता के करनेते क्या प्रयोजन है अरु विना पुत्रभये सेवक सेव्यभाव कौन मानै ताहेतु पिताको अभिलाषामात्र है परिश्रम नहीं है केवल आनन्दमय भोग करताहै इसी भांति जीवन की अभिलाषा सहित परब्रह्म आदि शक्ति में आनन्द भोग करताहै तहां परब्रह्म को अंश आत्मबीजवत् चैतन्य प्रकृति को अंश मनरजवत् जड़ है दोऊ मिलि पुत्रवत् सब जीव उत्पन्न होते हैं तिनकरिके समग्र ब्रह्माण्ड भरिपूरहै तिनको लालन पालन पोषणादि समग्र व्यापार आदि शक्तिही करिकै होताहै इसभांति जगत्को उत्पन्न पालन प्रलयआदि आलस त्यागि श्रीजानकीजी करती हैं यथा रामतापिन्यां ॥ श्रीरामसान्निध्यवशाज्जगदानन्ददायि-

नी । उत्पत्तिस्थितिसंहारकारिणीसर्वदेहिनां ॥ सासीताभगवतीज्ञेयामूलप्रकृतिसंज्ञिता । प्रणवत्वात्प्रकृतिरितिवदन्तिब्रह्मवादिनः ३४ ॥

तत्सान्निध्यान्मयासृष्टंतस्मिन्नारोप्यतेऽबुधैः ॥ अयोध्यानगरेजन्मरघुवंशेतिनिर्मले ३५ विश्वामित्रसहायत्वंमखसंरक्षणंततः ॥ अहल्याशापशमनंचापभंगोमहेशितुः ३६ मत्पाणिग्रहणंपश्चाद्भार्गवस्यमदक्षयः ॥ अयोध्यानगरेवासोमया द्वादशवार्षिकः ३७ ॥

(तत्सान्निध्यात् मयासृष्टं तस्मिन् अयोध्यानगरे अतिनिर्मले रघुवंशे जन्म अबुधैः आरोप्यते) श्रीजानकीजी कहत कि हे हनुमन् तौने परब्रह्म श्रीरघुनाथजी के समीप रहेमात्रते हमकरिकै जो सब ब्रह्माण्ड रचनाहै त्यहिविषे अयोध्यानगरमें अत्यन्त निर्मल जो रघुवंशहै त्यहिविषे परब्रह्म को जन्मभया ऐसा अज्ञानिन करिकै आरोपित कियाजाताहै भाव नैमित्य लीला में संयोग वियोग विलापादि परब्रह्म में मानिलेना सो अज्ञानताहै काहेते नैमित्य लीला सब हमारी रचना है तामें प्रथम अयोध्याधाम भया तामें अमल रघुवंश कुलमें जन्म इति रूपभया पुनः नामकरणते नाम प्रसिद्ध भया आगे लीलाप्रबन्ध सुनिये ३५ (विश्वामित्र सहायत्वं) विश्वामित्र के सहाय कर्त्ता ह्वै (ततः मखसंरक्षणं) तदनन्तर यज्ञकी संपूर्ण रक्षाकरना (अहल्याशापशमनं) पदरज लगाय अहल्याको पवित्रकरना (तुःमहेशचापभंग) पुनः जनकपुर में जाय शिवधनुष तोरना अर्थात् राक्षस पीड़ित याचनाकीन्हें तिन विश्वामित्रकी सहायहेतु साथजाय ताड़का सुबाहु आदिकनकोमारि सर्वांग ते यज्ञपूर्णकरि चले राहमें पदरज लगाय शापते उद्धार करि अहल्या को पतिसंयोग कराय पुनः जनकपुर जाय शिवको धनुष तोरना ३६ (मत्पाणिग्रहणं) हमारा पाणिग्रहण होना (पश्चात् भार्गवस्य मदक्षयः) विवाहपीछे परशुरामको मद भंगकरना(मया द्वादशवार्षिकःअयोध्यानगरेवासः) हमकरिकै सहित बारहवर्ष तक अयोध्याजी में वास करना अर्थात् जानकीजी कहतीहैं कि हमारा विवाह होने पीछे परशुरामको बलवीरताको मदरहा ताको भंगकरि पुरको आय हम सहित बारहवर्ष तक अयोध्याजी में आनन्द विलास सहित वास करना इति सुखसंयोगी लीला ३७ ॥

दण्डकारण्यगमनंविराधवधएवच ॥ मायामारीचमरणंमायासीताहृतिस्तथा३८ जटायुषोमोक्षलाभःकबन्धस्यतथैवच ॥ शबर्याःपूजनंपश्चात्सुग्रीवेणसमागमः ३९ बालिनश्चवधःपश्चात्सीतान्वेषणमेवच ॥ सेतुबन्धश्चजलधौलंकायाश्चनिरोधनम् ४० ॥

(दंडक आरण्य गमनं) पितु आज्ञामानि दण्डकवनको जाना (चएव विराध व ध) पुनः निश्चय करि विराध राक्षस को मारना (मायामारीच मरणं तथा मायासीता हृतिः) मायाकृत कंचन मृग रूप मारीचको मरण ताहीभांति मायामय सीताकोहरण अर्थात् पितु आज्ञा मानि वनको जातसमय चित्रकूटके परिसर राहमें विराधको निश्चयकरि मारे भाव अस्त्रसे नहीं मरिसक्ता रहै ताते जीवते भूमिखोदि गाडिदिये तब जाय दंडकवनमें वास किये तहां मायामारीच को मारण मायासीता हरण भाव पूर्व सीता अग्निमें वास मायाते बनी सीता हरीगई ३८ (जटायुषो मोक्षलाभः च तथा एव कबन्धस्य) रावणते युद्धकरि घायल जटायूनामे गृद्धको मुक्तिमिली पुनः ताही भांति निश्चयकरि कबन्धनामे राक्षस को भी सुगति मिली (शबर्याःपूजनं) जलफलादि शबरी कृत पूजन अंगीकार

करि (पश्चात् सुग्रीवेण समागमः) पीछे सुग्रीव करिकै मिलन प्रीतिकरना अर्थात् जटायू गृद्धका मुक्तिदेना ताहीभांति कबन्धको गतिदेना शवरीकोपूजन अंगीकारकरि पीछे सुग्रीवते मित्रताकरना३६ (च बालिनः वधः पश्चात् च एव सीता अन्वेषणं) पुनः बालिको मारि पीछे पुनः निश्चयकरि सीताको ढूँढ़ि खबरि मँगावना (च जलधौ सेतुबन्धः) पुनः समुद्र बिषे सेतु बन्धन (चलंकायानिरोधनम्) पुनः लंकाको घेरिलेना अर्थात् सुग्रीवको शत्रुजानि बालिको मारि सुग्रीवको राज्यदै पीछे दूतपठै सीताकी खबरि मँगावना बानरी सेनालैजाय समुद्रबिषे सेतुबँधाय उतरि समूह बानर रीछन कीं सेनाते लंकापुरी को घेरिलेना ४० ॥

रावणस्यबधोयुद्धेसपुत्रस्यदुरात्मनः ॥ विभीषणेराज्यदानंपुष्पकेनमयासह ४१ अयोध्यागमनंपश्चाद्राज्येरामाभिषेचनं ॥ एवमादीनिकर्माणिमय्येवाचरितान्यपि ४२ आरोपयन्तिरामेस्मिन्निर्विकारेऽखिलात्मनि४३रामोनगच्छतिनतिष्ठतिनानुशोचत्याकांक्षते त्यजतिनोनकरोतिकिञ्चित् ॥ आनन्दमूर्त्तिरचलःपरिणामहीनो मायागुणाननुगतोहितथाविभांति ४४ ॥

(पुत्रस्यसदुरात्मनःरावणस्ययुद्धेबधः) पुत्रको सहित दुष्टात्मा रावणको युद्धमें बधहोना (राज्यदानंविभीषणे) लंकाकी राज्यको दान विभीषणके अर्थ दिये (मयासहपुष्पकेन) हम करिकै सहित पुष्पक बिमान पर चढ़िचले अर्थात् पुत्रमेघनादको सहित दुष्टरावणको युद्धमें मारि ताकी राज्य विभीषणको दै हम सहित पुष्पक बिमानपर चढ़ि चलना ४१ (अयोध्याआगमनम्) अयोध्याजीको आयकै भरतादि सब को मिलि (पश्चात्राज्येरामअभिषेचनं) सबको मिले पीछे अयोध्याकी राज्य बिषे रघुनाथजीको अभिषेक भया (एवंआदीनिकर्माणिअपिमयाएवआचरितानि) इसी भांति आदि दैकै यावत् कर्म भये तिनको निश्चय करिजानिये सब हमहीं करिकै आचरणभये ४२ (निर्विकारे निरात्मनिरामेस्मिन्आरोपयन्ति) जन्म कर्मादि विकार रहित परमात्मा श्रीरघुनाथजीके बिषे आरोपित करते हैं अर्थात् अयोध्यामें राज्याभिषेक इत्यादि यावत् कर्म हैं सब मेरे कियेहैं सो निर्विकार जो रघुनाथजी तिनकृतमानते हैं ४३ (रामःगच्छतिन) रघुनाथजी चलते नहीं हैं (तिष्ठतिन) ठाढ़े नहीं होतेहैं (अनुशोचतिन) कछु शोचते नहीं (अकांक्षते) काहू वस्तुकी इच्छा नहीं करतेहैं भाव अनिच्छितहैं (त्यजतिनो) कछु त्यागभी नहीं करते हैं (नकरोतिकिंचित्) कछु थोरहूकाम नहीं करतेहैं फिरि कैसेहैं (परिणामहीनःअचलःआनन्दमूर्त्तिः) विकाररहित अचल आनन्दमूर्त्तिहैं तब समग्र व्यापार कैसेहोते हैं तापर कहत (मायागुणान्अनुगतोहितथाविभांति) सृष्टि करणहारी जो मायाहै तामें सतरजतमादि जो गुणहैं तिनमें अनुगत व्याप्तहैं ताते मायागुणों करि यथा व्यापार होत तथा विभांति तैसेही परब्रह्ममें दर्शित होताहै अर्थात् जो जीव विषयासक्तहोत तब इन्द्री विषय द्वारा जीव चलायमानहोत प्रभुमें विषयको रिचैनहीं ताते चलते नहीं पुनः जा वस्तुमें लोभ होत ताके ढिगठाढ़होत इहां लोभै नहीं तौ काहेको ठाढ़होय पुनः जब किसी वस्तुमें मोहहोत ताकी हानिभये पर शोचत इहां किसी परमोहै नहीं तब शोच कहां है पुनः जापर क्रोधहोत ताको त्यागत इहां किसी परक्रोधै नहीं तौ त्यागैं किसको कार्य सो करै जाके किहेबिना कछु हानिहोइ इहां आज्ञा को रुखदेखि हम निमिषमात्रमें अनेक ब्रह्माण्ड रचिदेती हैं तौ क्याहानिहै ताते कछु भी नहीं करते हैं पुनः जो कहौ चलतैनहीं इति अचलहैं कामादि विकार नहीं इति परिणामहीनहैं जो कछु भी

नहीं करते इति आनन्द मूर्तिहैं अरु मायामें व्यापकहैं ताते मायागुणोंकरि जो व्यापारहोताहै सो परब्रह्ममें दर्शित होताहै अरु है कछु नहीं ४४ ॥

श्रीमहादेवउवाच ॥ ततोरामःस्वयंप्राहहनुमन्तमुपस्थितम्॥शृणुतत्त्वंप्रवक्ष्यामि ह्यात्मानात्मपरात्मनाम् ४५ आकाशस्ययथाभेदस्त्रिविधोदृश्यतेमहान् ॥ जला शयेमहाकाशस्तदवच्छिन्नएवहि ४६ ॥

(ततःहनुमंतंउपस्थितं राम.स्वयंप्राह) ताके पीछे हनुमान् जो हैं तिनहिं समीप बैठारि रघुनाथ जी आपही बोलतेभये (शृणुआत्मअनात्मपरमात्मनाम्तत्त्वंहिप्रवक्ष्यामि) हे हनुमान् सुनिये आत्म जो ईश्वर अनात्म जो जीव परमात्म जो शुद्ध चैतन्य परब्रह्म इत्यादिकनको तत्त्व भेद निश्चय करि हम कहते हैं अर्थात् गिरिजा प्रति शिवजी कहत कि जानकी जीके कहि भये पीछे हनुमान्को समीप बैठारि रघुनाथजी आपही बोलतेभये हे हनुमान् सुनिये ईश्वर जीव परब्रह्म इनको तत्त्वभेद हम निश्चयकरि कहते हैं ४५ (महान्आकाशस्ययथात्रिविधोभेदःदृश्यते) महा आकाशके जौन भांति तीनि विधिके भेद देखिपरतेहैं कौन तीनिहैं (महाआकाशःतत्अवच्छिन्न) महाकाश तौन अखंडहै (एवहि) निश्चय करिकै पुनः (जलाशये) जामें जलथँभिसकै यथा कुंभ माठतड़ाग समुद्र प्रयंतमें जो सावकाशहै सो दूसरा आकाश जानिये ४६ ॥

प्रतिविंबाख्यमपरंदृश्यतेत्रिविधंनभः ॥ बुद्ध्यवच्छिन्नचैतन्यमेकम्पूर्णमथापरम् ४७ आभासस्त्वपरंबिंबभूतमेवंत्रिधाचितिः ॥ साभासबुद्धेःकर्तृत्वमविच्छिन्ने ऽविकारिणि ४८ ॥

(अपरं प्रतिबिंबाख्यं त्रिविधं नभः दृश्यते)और तीसरा जो जलके भीतर प्रसिद्ध परछाहीं आकाश की देखात इत्यादि तीनि विधिके आकाश दिखाते हैं अर्थात् रघुनाथजी कहत कि हे हनुमान ईश्वर जीव परब्रह्म तत्त्वमें कैसा भेद है जैसे आकाशमें तीनि भेदहैं एक महाआकाश जामें सब ब्रह्माण्ड रचनाहै दूसरा जलाशयाकाश जामें जल रहिसक्ता है यथा कुम्भकलर सागरादि तीसरा प्रतिबिंबाकाश जो जलमें आकाशकी परछाहीं देखात इत्यादि तीनिभेद देखाते हैं तथा (बुद्धि अवच्छिन्न चैतन्य पूर्ण एकं) बुद्धि परिपूर्ण है जामें ऐसी आदिमाया तामें चैतन्य परिपूर्ण एक जो आत्मा सो ईश्वरहै॰ भाव जाभांति भूमिके आधार जल परिपूर्ण लोक हितहेत लघु विशाल अनेकन जलाशयमें खण्डित आकाश है ताहीभांति मायाके आधार अमल बुद्धि परिपूर्ण तामें परिपूर्ण एक आत्मा सो लोक उत्पत्ति पालनादि हितहेतु अंश कला गौणशक्ति आवेश पूर्णादि ईश्वर के अनेक रूप हैं (अथ अपरं) तदनन्तर और सुनिये जीवको ४७ (आभासः) परब्रह्मकी प्रतिबिंब सो जीवहै (तु अपरं बिंबभूतं) पुनः और जो शुद्ध चैतन्यरूप सो परब्रह्म है(एवंत्रिधाचितिः)इसभांति तीनप्रकारके चैतन्य हैं अर्थात् बिंब कहिये रूपको प्रतिबिंब कहिये परछाहीं को इहां कारणरहित शुद्ध चैतन्य अमूर्त्ति आकाशवत् सर्वत्र परिपूर्ण व्याप्त सो बिंब परब्रह्म है पुनः बिनास्वरूप धारणकिये कछु कार्य्य करते बनता नहीं बिना मायास्वरूप ह्वै नहीं सक्ताहै ताते लोक रक्षादि कार्यहेतु मायामय स्वरूपमात्र धारणकिहे परन्तु अमल बुद्धि सर्वांग में परिपूर्ण तामें एक आत्म व्यापक रूप परदृष्टिराखत अरु शब्दादि विकार छुइ नहीं जात सो ईश्वर है भाव जामें अखण्ड ज्ञान है पुनः बुद्धिमें जो परब्रह्म की आभास अर्थात् प्रतिबिंब है सो जीवहै आभास क्याहै सो कहत (बुद्धेः कर्तृत्वं स आभास) बुद्धि को करता
च

जाना सो आभास परब्रह्म की प्रतिबिंब है कौन भांति सो कहत (अवच्छिन्ने) नहीं खण्डित है जामें (अवि कारिणि) नही विकार है जामें ४८ ॥

साक्षिण्यारोप्यतेभ्रान्त्याजीवत्वञ्चतथाबुधैः ॥ आभासस्तुमृषाबुद्धिरविद्याकार्यमुच्यते ४९ अविच्छिन्नन्तुतद्ब्रह्मविच्छेदस्तुविकल्पितः ॥ अवच्छिन्नस्यपूर्णेनएकत्वंप्रतिपद्यते ५० ॥

(साक्षिणि) अखंड विकार रहित साक्षी जोहै आत्मा तेहिविषे (अबुधैःबुधैः कर्तृत्वं आरोप्यते) अज्ञानिन करिकै बुद्धिको जो कर्तृत्वहै ताहि आत्माविषे आरोपण कियाजाताहै यथा अज्ञजन भ्रमते जल में आकाशकी प्रतिबिंबै को आकाश मानते हैं (तथा भ्रान्त्या जीवत्वं) तैसेही बुद्धिके कर्तव्य में आत्माकीभ्रमकरना भाव देह सम्बन्धी यावत् व्यापार हैं सोई सत्यमानिलेना इति बुद्धि में आत्माकी भ्रमकरना सोई जीवत्वहै अर्थात् जब कारण मायावश आत्मदृष्टि भूलि जीवत्व बुद्धिने अपना को कर्तामाने कार्य मायावश इंद्रिनके विषयनमें आसक्तहै देहे को सत्यमाने यथा हम ब्राह्मण विद्वान् तपस्वी सबके पूज्य हैं सब वर्ण हमारे सेवक हैं हम क्षत्री राजा सब वर्ण हमारे प्रजाहैं हम वैश्य धनी महाजन सब हमारी असामी हैं तूमेरा शत्रुहै तुझको बिगारि देउँगो तूमेरा मित्रहै तुझ को बनाय देउँगो इत्यादि देहसंबंधी व्यवहार यद्यपि त्रिकालमें झूठाहै अरु एक आत्मरूप सांचाहै सोई सत्यता बुद्धि भ्रमते देह व्यवहारै को सांचु मानिलेना सोई परब्रह्मकी परछाहीं बुद्धिमें देखात सोई जीवहै इत्यादि तीनि भेदहैं तहां यथा आकाश सांचा तथा परब्रह्म सांचा पुनः जलाशय में जो खंडित आकाश सो सांचा तथा ईश्वर में आत्मदृष्टि सो सांचा पुनः जलमें आकाशकी प्रतिबिंब जो देखाती है सो झूठ है तथा) आभासस्तुमृषाबुद्धिः) आभास जो परब्रह्मकी प्रतिबिंब बुद्धिमें देखाती है भाव देह व्यवहार को सांचुमानना यह मिथ्या बुद्धि सर्वथा झूठे है काहेते (अविद्याकार्य्यउच्यते) अविद्या मायाके कियेकार्य सब झूठे कहेजाते हैं यथा दर्पण में मुखकी प्रतिबिंब देखनेमात्र तौ सत्य भासत परन्तु है झूठै तैसे अविद्या के व्यापार देखत सत्यहैं झूठ ४९ (तुततब्रह्मअविच्छिन्नं) पुनः तौन ब्रह्म अभेद है (तुविच्छेदःविकल्पितः) पुनः जो भेद देखातेहैं सो विकल्पित बनेहुये हैं सांचे नहीं है कौन भांति यथा देवशब्द प्रथमा के बहुबचन में देवाः देवासः इत्यादि दो रूपप्रसिद्ध देखाते हैं अरु अर्थ एकहीहै तहां वेद प्रयोग सुगम सिद्धार्थ आचार्योंने शब्द ब्रह्म में बिकल्प करिभेद कियाहै ताते अनादि कालते चले आवते हैं ऐसेही बनेरहैंगे तथा सेवक सेव्य भावादि प्रयोजन हेतु परब्रह्म की इच्छाते अविद्याने बिकल्पकरि ब्रह्ममें भेदकियाहै सोभी सनातनते इसीभांति चलेआवतेहैं ताहीते सब ब्रह्माण्ड रचनाहै अरु जोभेद न होवै तौ बिना सृष्टि ब्रह्मशून्यहै यथा कवित्त ॥ शून्य प्रजाबिन भूपवृथाहैयमालयहीनमहात्म्यनतारन । बन्दबिना किमिसुकप्रशंसबिनातमहोतप्रकाशपरारन॥ बाल बिनाकिमिरवालिससैरुदरिद्रविनाकिमिभागि अगारन । सोपिनशोभितजीवबिना परमेश्वरसृष्टिरच्या यहि कारन ॥ इत्यादि प्रयोजन मात्र बिकल्पित भेदहैं पुनः(अवच्छिन्नस्यपूर्णेन)जो भेदरहित ब्रह्महै ताको पूर्ण करि देखिये तौ (एकत्वंप्रतिपाद्यते) एकही पुष्टहोताहै कौन भांति यथा अखण्ड आकाश इहां पर दृष्टिकरिये तौ जलाशय प्रतिबिंबादि सब पदार्थ में वही एकआकाश सर्वत्र परिपूर्णहै कछु को सहीं है तथा ईश्वरजीवादि सबमें व्यापक एक परब्रह्म परि पूर्ण है कछु भी भेद नहीं है ५० ॥ है पुन.

तत्त्वमस्यादिवाक्यैश्चसाभासस्याहमस्तथा ॥ ऐक्यज्ञानंयदोत्पन्नंमहावाक्येन चात्मनः ५१ ॥

(तत्त्वमस्यादिवाक्यैः) तत्त्वं असि इत्यादि वाक्यन करिकै (चसाभासस्य) पुनः सहित आभासको (अहमस्तथा) अहं पदको ताही भांति (चआत्मनःमहावाक्येन)पुनः आत्माको तत्त्वमसि इति महावाक्य करिकै (यदाऐक्यज्ञानंउत्पन्नं) जो एक ज्ञान उपजै अर्थात् तत् कहे ब्रह्मत्वं कहे अमलजीव असि कहे ईश्वर यथा महारामायणे॥ब्रह्मेतितत्पदंविद्धित्वंपदोजीवनिर्मलः। ईश्वरोऽसि पदंप्रोक्तंततोमायाप्रवर्त्तते ॥ भाव जो ब्रह्महै सोई तत्त्वअमलजीवहै सोई तत्त्व ईश्वरहै इत्यादि वाक्य नको अर्थ विचार करिकै पुनः आभास परब्रह्मकी प्रतिबिंब जो बुद्धीमेंहै भाव देहाभिमान ताको विचार सहित भाव देह क्या चीजहै ताही भांति अहं पदको विचारै भावहमको है पुनः आत्माको है इति विचारेते देह अविद्याको व्यवहारहै सो तौ सर्वथा अनित्यहै अरु अमलरूप हम सोई तत्त्व हैं जो आत्माहै इत्यादि आत्माको तत्त्वमसि यहि महावाक्य करिकै भाव ब्रह्म अमल जीव ईश्वर ये आत्मरूप ते एकही तत्त्वहै इत्यादि आत्मामें जब एकज्ञान उपजै तब क्या होताहै सो कहत ५१॥

तदाविद्यास्वकार्यैश्चनश्यत्येवनसंशयः ॥ एतद्विज्ञायमद्भक्तोमद्भावायोपपद्यते ५२॥

(तदाअविद्यास्वकार्यैः) तब अविद्यामाया प्रपंचादि आपने कार्यन करिकै सहित (चनश्यतिएवनसंशयः)नाशहोतीहै निश्चय करिकै यामें संशय नहीं है (एतत्विज्ञायमद्भक्तः) यह तत्त्व भेद ज्ञान जानिकै मेरेभक्त (मद्भावायउपपद्यते) मेरे पद प्राप्ती के अर्थ इसीमार्ग पर चलतेहैं भावमहा वाक्यकरिकै आत्मामें एक ज्ञान आवत तब प्रपंचादि आपने कार्यन सहित अविद्या निश्चयकरि नाशहोत यामें संशय नहीं है यही तत्त्व ज्ञानको जानिकै हमारे भक्त हमारे पद प्राप्तीके अर्थ इसी मार्ग पर चलतेहैं अर्थात् रघुनाथजी कहत कि हे हनुमान् यथा प्रतिबिंबाकाश जलाशयाकाश भ्रम मात्रहैं विचारेते सर्वत्र महाकाशै परि पूर्ण है तथा अविद्याकृत भ्रमहै महावाक्य करिकै विचारते सबमें परब्रह्मै परि पूर्ण है ऐसा जानि हमारे पद प्राप्तीहेतु हमारे भक्त इसी महावाक्यकी रीति पर चलतेहैं अब भक्ति पक्षमें महावाक्यार्थ यथा (तत्त्वंअसि) तत्पद ईश्वर वाचकःत्वंपदजीववाचकः असिइतिक्रियापदंतेनतत्कोर्थःतस्यईश्वरस्यत्वंअसिभवसिइत्यर्थःतेनजीव ईश्वरयोरेवअनादिसम्बन्धः यथासेवकसेव्यपुत्रपिताअंशअंशीप्रकाशप्रकाशिशेषशेषी इत्यादि अथवाक्यानां विशेषार्थे माहतत्त्वं असइइति पंचपदानितत् पदस्वतन्त्रकर्तृईश्वरवाचकः त्वंपदंनित्यमुक्तजीववाचकः अकारमुमुक्षूजीव वाचकः सकारबद्धजीववाचकः इकारदेवीप्रकृतिवाचकः अथवातत्इतिपदेश्रीरामः तद्धामतन्नामतद्रूपतल्लीलातेषामधिकारीत्वंपदवाच्यौनित्यमुक्तौभवतः अकारस्तुकैवल्यजीववाचकः सकारस्तुमुमुक्षूजीववाचकः इकारःप्रकृतिबद्धजीववाचकः अथवा तत्पदे नाम रूप लीला धामपूर्वक परमात्मा-परब्रह्म बुद्धयते त्वं पदे नित्यमुक्ता पार्षदा दासीदास सखी सखारूपेण अकारः आह्लादिनी शक्ति वाचकः सकारः संधिनीशक्तिवाचकः इकारः संदीपिनी शक्तिवाचकः अथवा तत्शब्द सच्चिदानन्द विग्रह वाचकः त्वं पदधाम वाचकः अकार समस्त वैभव भोगोपकरण वाचकः सकार समस्तविहार वाचकः इकार माधुर्यानन्दशक्तिवाचकः अथवा तत्पद श्रीमद्दशरथादि गुरुजन वाचकः त्वंपद श्रीमद्रामचन्द्र वाचकः अकारो बाल्यादि अनन्तलीला वाचकः सकारः शक्ति नित्य अखंड एकरस वाचकः इकारः सर्व सुखानन्द वाचकः तत्वमसि इति वाक्ये मुख्यत्वेन जीवानां सम्बन्ध दर्शनंभवति तत् कोर्थःतस्यहेजीवत्वंअसि तस्य कस्य इति पूर्वामर्षत्वं वर्तते तेनतस्यकस्य परात्परब्रह्मणः श्रीरामच

न्द्रस्य मुख्यत्वेन ननु श्रीमद्रामचंद्रे एव जीवानां मुख्यसम्बन्धः इत्यादि सेवकसेव्यभाव मुख्य जीवन को कल्याण करताहै इत्यादि हेतुपूर्वकहे जो श्लोकन में है कि आभास अर्थात् देह सहित तथा अहमजो जीव तेहि सहित महावाक्य करि जब आत्मामें एकज्ञान आनत तब अविद्याकार्य सहित नाशहोत ताको भावयावत् देह बुद्धीतावत् श्रवण कीर्तनादिनवधा भक्तिकरै जब जीव बुद्धी आवै तब प्रेमा भक्तिकरै जब आत्मबुद्धि आवै तब अचल अनुराग पराभक्तिकरै इसमार्गपर आरूढ़भये संते अविद्या कार्य नाशहोत भक्तजन प्रभुके समीपीहोते हैं भावभक्ति सहित ज्ञान मोक्ष दायकहै रुच्छमें बाधा होतेहैं ५२ ॥

मद्भक्तिविमुखानांहिशास्त्रगर्तेषुमुह्यताम् ॥ नज्ञानंनचमोक्षःस्यात्तेषांजन्मशतैरपि५३॥

(मद्भक्तिविमुखानांहि) जेमेरी भक्तिसो बिमुखहैं निश्चय करिकै (शास्त्रगर्तेषुमुह्यताम्) जे शास्त्र रूपी गड़हामें मोहको प्राप्तहैं (तेषांजन्मशतैःअपि) तिनको सैकरन जन्मतक निश्चयकरिकै (नज्ञानं चनमोक्षःस्यात्) न ज्ञान प्राप्तहोवै न मुक्तिहोतीहै अर्थात् रघुनाथजी कहत कि हे हनुमान् जे प्राणी जाति बिद्या महत्त्व रूपयौवन धनादिमान बशं मेरी भक्तिते मनुफेरे हैं तथा न्याय वैशेषिक सांख्यादि शास्त्रनके पढ़नेते मतमतांत खंडन प्रतिपादनादि जोगहिरे गड़हे सम तामें मदांधपरेहैं ये आचरण करिकै सैकरन जन्मतक ज्ञाननहोइगो भाव प्रति दिन देहाभिमान बढ़ी तब ज्ञान कैसे ह्वै सक्ताहै जब भक्ति ज्ञाननहीं तबमोक्ष कहाँहै ५३ ॥

इदंरहस्यंहृदयंममात्मनोमयैवसाक्षात्कथितंतवानघ ॥ मद्भक्तिहीनायशठायनत्व यादातव्यमैंद्रादपिराज्यतोधिकम् ५४ श्रीमहादेवउवाच ॥ एतत्तेभिहितंदेविश्री रामहृदयंमया ॥ अतिगुह्यतमंहृद्यंपवित्रम्पापशोधनम् ५५ ॥

(इदंरहस्यंहृदयं) यहजो अत्यन्त गुप्ततत्त्व रामहृदयहै (ममआत्मनः) मेरी आत्माहै भावसामान्यजीवनके कहने योग्यनहींहै (हेअनघतवमयासाक्षात्एवकथितं) हे हनुमानतुमपापरहितहौ ताते तुमसो हमकरिकै प्रत्यक्ष निश्चयकरि कहागया परन्तु तुमयाको कैसे राखना (इंद्रात्अपिराज्यतः अधिकम्) इन्द्रते निश्चयकरि राज्यमें अधिकहोय तबहूं (मद्भक्तिहीनायशठायत्वयानदातव्यं) मेरी भक्ति ते हीन अरु अज्ञानी इत्यादिकनके अर्थ तुमकरिकै यह न दीनिजाय अर्थात् रघुनाथजी कहत कि यह जो गुप्त मेरा सिद्धांत तत्त्व राम हृदयहै सो मेरी आत्माहै अर्थात् मेरे चरित्र को सारांश है ताते विषयी बिमुख अल्पज्ञ जीवन सों कहने योग्य नहीं है हे हनुमान तुम पापरहित शुद्धहौ ऐसा जानि निश्चयकरि तुमको प्रत्यक्ष सुनावा तथा शुद्धतत्त्वज्ञ मेरा भक्त होइ ताको सुनावनाअरु मेरी भक्तिहीन अल्पज्ञ जो इन्द्रते अधिक राजाहोय ताहूको न सुनावना इसरीतिसे याको गुप्त राखना ५४ (हे देवि एतत्श्रीरामहृदयं) हे पार्वति यह जोश्रीरामहृदयहै सो (अतिगुह्यतमंहृद्यं) अत्यन्त गुप्ततेगुप्त हृदय को प्रियहै (पवित्रंपापशोधनम्) पवित्र है पापनको नाशकरताहै ताहि (मयाते अभिहितं) हमकरिकै तुम्हारेअर्थ कहागया अर्थात् पूर्व सम्वाद की समाप्ती करि शिवजी कहत हे पार्वति यह जो श्रीरामहृदय है सो अत्यन्त गुप्ततेगुप्त रघुनाथजीके हृदयको प्रियहै ताके जीव पावनहोत ऐसी पवित्र पापनको नाशकरता जानि याको हम तुमको सुनावाहै और सुनिये ५५ ॥

मेणकथितंसर्ववेदान्तसंग्रहम् ॥ यःपठेत्सततंभक्त्यासमुक्तोनात्रसंशयः५६॥

यहि ... ताको पूर्ण क... इहाँ पर दृष्टिकरि ... को नहीं है तथा ... है पुन.

ब्रह्महत्यादिपापानिबहुजन्मार्जितान्यपि ॥ नश्यंत्येवनसंदेहोरामस्यवचनंय
था ५७ जातिभ्रष्टोतिपापीपरधननिरतोब्रह्महामित्रहन्ता स्वर्णस्तेयीकुलघ्नः
कलुषशतयुतोयोगिवृन्दापकारी ॥ यःसम्पूज्याभिरामंपठतिचहृदयंरामचन्द्र
स्यभक्त्यायोगीन्द्रैरप्यलभ्यंपदमिहलभतेसर्वदेवैःसपूज्यम् ५८ ॥

इतिश्रीअध्यात्मरामायणेबालकाण्डेरामहृदयंप्रथमस्सर्गः १

(साक्षात् रामेणकथितं) प्रत्यक्ष श्रीरघुनाथजी करिकै कहाहुवा यह जो रामहृदय है (सर्ववे दांत संग्रहं) वेदांतशास्त्र में यावत् उपनिषद् हैं तिन सबको सारसंग्रहहै (यःभक्त्यासततंपठेत्) जो जन भक्तिकरिकै सदा पढ़ता है (समुक्तो अत्रसंशयः न) सो मुक्तहोताहै यामें संशय नहीं है अर्थात् शिवजी कहत कि प्रत्यक्ष श्रीरघुनाथजीके मुखकरिकै कहाहुवा यह जो रामहृदयहै सो वेदान्तशास्त्र मथि सारांश निकारि थोरेमें संग्रह करिदियागयाहै जो जन श्रीरामपद प्रीतिसहित याको कीर्तनक-रता है सो परमपद पावताहै यामें संशय नहींहै कि मुक्तहोय वा नहोयसोन बिचारै निश्चयमुक्तिहोई ५६ (बहुजन्म अर्जितानि अपि) बहुते जन्मनके उपजायेहुये (ब्रह्महत्या आदि पापानि) ब्राह्मण मारे जो हत्याहै इत्यादि यावत् पापहैं (नश्यन्ति एव न संदेहः रामस्य वचनं यथा) नाशहोते हैं निश्चयकरि संदेह नहीं है अर्थात् ब्रह्महत्या आदि पाप जो अनेकन जन्म के उपजाये बटुरेहैं तेसबे रामहृदयको पाठकरेते नाशह्वैजाते हैं यामें संदेह नहीं काहेते यह रघुनाथजी को बचन है जा भांति सो आगेकहत५७(जातिभ्रष्टो अतिपापी)अपनी जातिको धर्म कर्म रीतित्यागि म्लेच्छचांडालादिकी रीति करनेवाला तथा अत्यन्त पापकरनेवाला यथा परस्त्रीगमन पापहै ताहूमें गुरुजन स्त्री ताहू में जबरइन इत्यादि अतिपापी (परधन निरतो) जो परारधन हरिलेने के व्यापारमें सदा लगेरहतेहैं यथा ठग चोर बटपारादि (ब्रह्महा मित्रहंता) जो ब्राह्मण को मारा वा मित्रको घात किया (स्वर्णस्तेयी कुलघ्नः कलुष शतयुतः) सोना चोरानेवाला तथा अपने कुलको नाश करनेवाला इत्यादि पाप सैकरन युत पुनः (योगिवृन्द अपकारी) समूह योगिजनन को अनहित करनेवाला इत्यादि सो भी (यः अभिरामं सम्पूज्य) जो सुन्दरी रीति सम्पूर्ण प्रकारते रघुनाथजी को पूजन करि (च रामचन्द्रस्य हृदयं भक्त्या पठति) पुनः रामहृदय जो है ताहि भक्तिकरिकै पढ़ताहै (स सर्वदेवैः पूज्यं योगींद्रैः अपिअलभ्यं इहपदं लभते) सो सर्व देवनकरि पूजबेयोग्य अरु जोपद योगी-न्द्रनकरिकै निश्चयकरि अलभ्यहै यहि रामपद को पावता है अर्थात् अब रामहृदय को माहात्म्य कहते हैं कि जातिते भ्रष्ट अत्यन्त पापी परधनहर्त्ता ब्रह्महंता मित्रघाती सोना चोरानेवाला निज कुलघाती इत्यादि सैकरन पापयुत अरु समूह योगिनको अनहित करता ऐसहू जन जो रघुनाथजी को पूजनकरि पुनः भक्तिसहित रामहृदयको पाठ करता है सो जीवनपर्यंत देवन करिकै पूज्यरहत अंतकाल तेहि रामपदको जात जो योगीजनन को दुर्लभ है ५८ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतबैजनाथविरचितेअध्यात्मभूषणेश्रीराम
हृदयवर्णनोनामप्रथमःप्रकाशः १ ॥

पार्वत्युवाच । धन्यास्म्यनुगृहीतास्मिकृतार्थास्मिजगत्प्रभो ॥ विच्छिन्नमेतिसंदेह
ग्रंथिर्भवदनुग्रहात् १ ॥

स०। रावण पीड़ित देव धरामुनि गन्धब नाग नरादि सबाहीं। आरत जाय विरंचि समेत पुकार किये पयसागर पाहीं॥ भाषि धरौं तनहौं रघुबंशहि बानररूप धरौ तुम ताहीं। बैजसुनाथ नमामिस्वई परब्रह्म भये नर भूतल माहीं॥ (धन्यास्मि) मैं बड़ी पुण्यवंतभई (अनुग्रहीतास्मि कृतार्थास्मि) आपकी अनुग्रह सदा दयासहित मैं कृतार्थहौं काहेते (हे जगत्प्रभो भवत् अनुग्रहात्) हे जगत् के स्वामी आपकी अनुग्रहते (मेति संदेहग्रंथिः विच्छिन्नो) मेरे अत्यंत संदेहरूप हृदयमें ग्रंथीरहै सो बिशेषि खण्डितभई अर्थात् पार्वतीजी कहती हैं कि हे स्वामी जगत् को पालनहारे आप की सदा दया मोपर रहत ताते मैं धन्य अरु कृतार्थ भई काहेते पूर्व मेरे हृदय में अत्यन्त संदेह अर्थात् जो रघुनाथजी परब्रह्म हैं तो उनमें हर्ष शोक नहोना चाहिये अरु जो उनमें भी वियोग दुःखादि जीवनकी समान आपही दुःखितहैं तब और को दुःख क्या मिटावैंगे ताते उनकी उपासना न करना चाहिये इति संदेहरूप ग्रंथीरहै सो आपकी अनुग्रहते छूटि गई भाव जड़ता मिटी बुद्धिमें चैतन्यता आई शुद्ध रामरूप जानिपरो १॥

त्वन्मुखाद्गलितंरामतत्त्वामृतरसायनम्॥ पिवन्त्यामेमनोदेवनतृप्यतिभवापहम् २ श्रीरामस्यकथात्वत्तःश्रुतासंक्षेपतोमया॥ इदानींश्रोतुमिच्छामिविस्तरेण स्फुटाक्षरम् ३॥ श्रीमहादेवउवाच॥ शृणुदेविप्रवक्ष्यामिगुह्याद्गुह्यतरंमहत्॥ अध्यात्मरामचरितंरामेणोक्तंपुरामम ४॥

(देवभवापहंरामतत्त्वअमृतरसायनम्) हे देवभव रोगको नाशकरता जो श्रीरामतत्त्वरूप अमृत मय रसायनहै सो (त्वत्मुखात्गलितंपिवन्त्यामेमनोनतृप्यति) सोई अमृतरस आपके मुखते चुइ रहाहै ताहि पीवत्संते मेरामन अघाता नहीं है अर्थात् पुनः पार्वतीबोलीं कि हे देव यद्यपि संदेह नहीं है परन्तु यह जो श्रीरामतत्त्वहै सो एक तौ भवरोग जो संसार योनिनमें जन्म मरणादि ताको नाश करता पुनः अमृतमय रसायन भाव श्रवण मात्रजीवको अमर करता परम पद दायक पुनःपान करनेमें अपूर्व मीठास्वाद सोई अमृतरस आपके मुखते चुइरहाहै ताको पीवत भाव सुनतसंते मेरा मन अघाता नहीं है २ (श्रीरामस्यकथात्वत्तः) श्रीरघुनाथजी की कथा आपते (संक्षेपतःमयाश्रुता) संक्षेपते हम करि सुनागया ताते (इदानींविस्तरेणस्फुटाक्षरम्श्रोतुंइच्छामि) या समयमें विस्तार करिकै पुष्टाक्षर सुनबेको मोको इच्छाहै अर्थात् पार्वतीजीबोलीं कि पूर्व श्रीरघुनाथजीकी कथा आपके मुखते संक्षेप बिस्तार रहित मैंने सुना बोध नहीं भया यहिते या समयमें विस्तार बढ़ायकै पुष्ट अक्षर भाव प्रसिद्ध भावार्थ ऐसा समुझायकै कहिये जो बुद्धिमें आइजाय यहिरीति सुनवेकी इच्छाहै सो कृपाकरि कहिये ३ (पुराममरामेणउक्तं) पूर्व कालमें मोसोंरघुनाथैजी करिकै कहागयाहै (गुह्याद्गुह्यतरंमहत्) गुप्तते गुप्तमहागुप्त उत्तम (अध्यात्मरामचरितं) अध्यात्मनामे रामचरित जोहै ताहि (प्रवक्ष्यामिदेविशृणु) हम कहते हैं हे देविसुनो अर्थात् शिवजीबोले कि पूर्व समय श्रीरघुनाथजीने हम सों कहाहै भाव किसी और के जानबे योग्य नहीं है काहेते गुप्त जो बेदतत्त्व ताहूते गुप्त कूटस्थहै अरु उत्तम है ऐसा जो अध्यात्म रामचरितभाव आत्मरूपमें अधिकार जाको ताको कही अध्यात्म सोई सबकी आत्मामें अन्तर्यामीरूपते बसेहैं जो श्रीरघुनाथजी तिनको चरित वर्णन जो काव्यहै सो अध्यात्म राम चरित जो है ताहि हम कहते हैं हे देवि पार्वती सावधान ह्वै सुनिये ४॥

तदद्यकथयिष्यामिशृणुतापत्रयापहम्॥यच्छ्रुत्वामुच्यतेजंतुरज्ञानोत्थमहाभयात्॥

प्राप्नोतिपरमामृद्धिंदीर्घायुःपुत्रसंततिम् ५ भूमिर्भारेणमग्नादशवदनमुखाशेषर
क्षोगणानांधृत्वागोरूपमादौदिविजमुनिजनैःसाकमब्जासनस्य ॥ गत्वालोकंरु
दंतीव्यसनमुपगतंब्रह्मणेप्राहसर्वं ब्रह्माध्यात्वामुहूर्तंसकलमपिहृदावेदशेषात्म
तत्त्वात् ६ ॥

(तत्मयकथयिष्यामिशृणु) सोई जो राम चरितहै तौन या समयमें कहवेकी मोको इच्छा है सो सुनौ कैसाहै (तापत्रयभपहं) तीनिहू तापनको नाश करनहाराहै पुनः (यत्श्रुत्वाजन्तुः) जाको सुनिकै जन्तुदेहधारी जीव (अज्ञानोत्थमहाभयात्मुच्यते) अज्ञानते उत्पन्न जो महाभय जन्म मरणादि ताते छूटि जाताहै पुनः (परमांऋद्धिंदीर्घमायुःपुत्रसंततिम्प्राप्नोति) वड़ा ऐश्वर्य बड़ी उमिरि पुत्र पौत्रादि परिवार प्राप्त होताहै अर्थात् शिवजी कहत कि सोई जो अध्यात्म राम चरितहै तौन या समयमें कहवेकी मोको इच्छाहै ताहि हे पार्वति सुनिये कैसाहै ज्वरादि शूलदैहिक ताप चोरोआदि भौतिकहै ग्रहदशादि दैविक इतितीनहू तापनको नाशकरताहै पुनः जाको सुनिकै देह-धारीजीव अज्ञानते उत्पन्न जो जन्म मरणादि संसाररूप महाभय डरतासों छूटि जाता है पुनः धन धान्य भूषण वाहनादि वड़ा ऐश्वर्य वड़ी उमिरि पुत्र पौत्रादि परिवार इत्यादि लोक सुख प्राप्तहोता है ५ (दशवदनमुखःअशेषरक्षोगणानांभारेणमग्नाभूमिः) रावणहै मुखियाजामें ऐसे समग्रराक्षस गण कृतपाप भार करिकै बूड़ी हुई पृथ्वी (आदौ गोरूपं धृत्वादिविजमुनिजनैः साकम्) प्रथम पृथ्वी ने गायको रूपधारण किया पुनः देवता मुनिजन करिकै सहित (अब्जआसन स्यलोकं गत्वा) सब मिलि ब्रह्माके लोकको जातेभये (रुदंतीउपगतम्सर्वव्यसनम्ब्रह्मणेप्राह) रोवत समीप जाय सब अपने दुःखको हाल ब्रह्मासों कहती भई (सकलंअपिहृदअवेत्) सबवस्तु निश्चयकरि हृदय बिचारते न जानिसके तेहि कारण (अशेषआत्मतत्त्वात्ब्रह्मामुहूर्तंध्यात्वा) सबको आत्मतत्त्व एकहीहै इसविचारते ब्रह्मा मुहूर्त दुइदण्ड आत्मरूप ध्यानकरि सब हालजानिलीन्हें अर्थात् इस प्रसंगते रामचरित प्रारम्भकरत कि महापाप करनेवाला दुष्ट रावण जिनमें राजाहै इसीआचरण के समग्र राक्षसगण तिनके कीन्हें असंख्यन पाप तेहि भारकरिकै दुःखमें बूड़ीहुई पृथ्वीने प्रथम गाय को रूप धारणकरि आगेभई पुनः रावणके सताये हुये सबदेवता मुनिजन तिन सहित सब मिलि ब्रह्माके लोकको गये तहां आगे पृथ्वी रोवतीहुई ब्रह्माके समीपजाय सबअपनेदुःखको हाल ब्रह्मा सों कहतीभई सो सुनि विचारे कि कवतक इनको दुःखरही अरु कौनभांति रावण मरै इत्यादि सब वस्तु निश्चयकरि हृदय बुद्धि विचारते न जानिसके तेहिकारण अनुमान किये कि सबमें आत्मतत्त्व एकही व्यापक है ताके ध्यानते त्रिकालकी बात देखिपरैगी इसविचारते ब्रह्मा मुहूर्तभरि आत्म रूपको ध्यानकरि जानि लिये ६ ॥

तस्मात्क्षीरसमुद्रतीरमगमद्ब्रह्माथदेवैर्वृतो देव्याचाखिललोकहृत्स्थमजरंसर्वज्ञ
मीशंहरिम् ॥ अस्तौषीच्छ्रुतिसिद्धनिर्मलपदैःस्तोत्रैःपुराणोद्भवैर्भक्त्यागद्गदया
गिरातिविमलैरानन्दबाष्पैर्वृतः ७ ॥

(तस्मात्अथब्रह्माक्षीरसमुद्रतीरंअगमत्) ध्यानकरि जानिलिये तेहिते अनंतर ब्रह्माक्षीर समुद्र के तीर जातेभये कौनभांति (देवैःवृतःचदेव्या) देवनकरिकै सहित देवीभूमि तेहि सहित कौन हेतु उहांगये (अखिललोकहृत्स्थं) जोअंतर्यामी रूपते सबलोकके हृदयमें वसे हैं (अजरंसर्वज्ञंईशंहरिं

अस्तौषीत्) वृद्धावस्था रहित सबवस्तुके जाननेवाले परमेश्वर हरि तिनहिं स्तुति करतेभये कौन भांति (श्रुतिसिद्धनिर्मलपदैःपुराणोद्भवैःस्तोत्रैः) बेदनमें सिद्धभये परमेश्वर बोधक निर्मल पदन करिकै तथा पुराणन द्वाराउत्पन्न जोस्तोत्र तिनकरिकै पुनः (भक्त्यागद्गदया गिराच्यति विमलैः आनन्दवाष्पैर्वृतः) स्तुतिकरत समय भक्तिकरिकै जोप्रेम उमँगासो कंठको रूँधिलिया ताते गद्गद अपुष्टाक्षर उच्चारण कारिवाणी अत्यन्त अमलभाव छल चातुरी रहित शुद्ध भारत शब्दन करि पुनः सोई प्रेमानन्द नेत्रनमें आया ताते आँशुन सहित नेत्रहैं अर्थात् सदेवन भूमिकी वाणी सुनिध्यान करि ब्रह्मा जानि लिये कि परब्रह्म नर राजकुमार रूपधरैं तिनके हाथ रावणमरी सो कार्यपय निधितीर प्रार्थना करनेते मनोरथ पूर्णहोई यह बिचारिताते पुनः सहित भूमि देवतनयुत ब्रह्माक्षीर सागरतीर गये तहां अन्तर शुद्धकरि परब्रह्मकी चिन्तवन कीन्हें कौनरूप जोअन्तर्यामी रूपते सब के अन्तर व्यापक अजरसर्वज्ञ सर्वेश्वर यथाश्रुतिः॥सवाएष आत्मा हृदिएष महानात्माऽजरयःसर्वज्ञः सर्ववित्एषसर्वेश्वरइत्यादि॥हरियथास्मृतौ॥ हराम्यघंहिस्मर्तॄणांहविर्भागंक्रतौतथा। वर्णाश्रमेहरिर्यस्मात्तस्माद्धरिरहंस्मृतः ॥ ऐसे रूपमें मनलगाय स्तुति करनेलगे तहां अन्तर्यामी ऐश्वर्य रूपहै ताके हेतु वेदके सिद्धनिर्मल जामें काहूमूर्तिवन्तको लक्षणहोय यथा अजनिर्मल निरञ्जन ज्यायानवरेण्य अगुण परब्रह्मपरेश इत्यादि पदन करिकै पुनः हरिलोक रक्षक माधुर्यरूपते अपनी रक्षाचाहत ताते पुराणनते उत्पन्न जोस्तोत्रहैं जिनमें कृपासिंधु दयानिधि करुणाकरादि पदहैं तिनकरिकै भक्तिसहित स्तुति करत में गुण बिचारि हृदयते प्रेमउमँगा सो सर्वांगमें पुलकावली ह्वै कंठारोधन भया ताते गद्गदवाणी ह्वैगई पुनः प्रेमनेत्रनमें आया ताते नेत्रभी सजलह्वै आये ७ ॥

ततःस्फुरत्सहस्रांशुसहस्रसदृशप्रभः॥ आविरासीद्धरिःप्राच्यांदिशांव्यपनयन्स्तमः ८ कथंचिद्दृष्टवान्ब्रह्मादुर्दर्शमकृतात्मनाम्॥ इन्द्रनीलप्रतीकाशंस्मितास्यंपद्मलोचनम् ९ किरीटहारकेयूरकुण्डलैःकटकादिभिः॥ विभ्राजमानंश्रीवत्सकौस्तुभप्रभयान्वितम् १० स्तुवद्भिःसनकाद्यैश्चपार्षदैःपरिवेष्टितम् ॥ शंखचक्रगदापद्मवनमालाविराजितम् ११ ॥

(ततःप्राच्यांहरिःआविरासीत्) स्तुति किहे पीछे पूर्वदिशा बिषे हरि प्रकट विराजमान देखाने कैसे हैं (दिशां स्तमः व्यपनयन्) सब दिशन को अंधकार नाशकियेहैं काहेते (सहस्रांशुःसहस्रसदृशप्रभास्फुरत्) सूर्यनते हजारगुण अधिक समप्रभा जिनके रूपते प्रसिद्धहै अर्थात् जब ब्रह्माजी स्तुति कीन्हें ताके पीछे पूर्वदिशाबिषे हरि कैसे प्रकट विराजमान देखाने जो सब दिशन को अंधकार नाश करदिये काहेते सूर्यनते हजारगुण अधिक समान प्रभा जिनके रूपते छूटि सर्वत्र प्रकाशमान है ८ (अकृतात्मनां दुर्दर्शं) अज्ञानी पुरुषनको दुखौ करि दर्शन नहीं हैसक्ते हैं (ब्रह्माकथंचित् दृष्टवान्) तिन हरिरूप को ब्रह्मा कैसे देखे (इन्द्रनीलप्रतीकाशं) इन्द्रनीलमणिसम तनुकी आभा (स्मितास्यं) मुसकानि सहित मुख (पद्मलोचनम्) कमलसम नेत्र अर्थात् यथाउलूक अन्धकारैपर प्रीति सो सूर्यनको नहीं देखिसक्ता है तथा जे आत्मरूप जानिबे के कर्तव्यते रहितदेह सुखहेतु विषय में आसक्त हैं ऐसे अज्ञानिन को जाके दर्शन दुर्लभहैं तिन हरिको ब्रह्मा कौनभांतिके देखे कि इंद्रनील जो श्यामरंगकी मणिहै ताहीसम चिक्कन चमकदार श्यामतन मुसकानियुत प्रसन्नमुखरूपारस भरे कमलसम नेत्र ९ शीशपै किरीट गरेमें मणिनके हार भुजामें केयूर बहूटा कुण्डलन करिकै कान

कडा आदि करिकै करमूल भूषित हैपीतरोममें दहिनावर्त भ्रमरीइति श्रीवत्सचिह्न वामछातीपरविशेषि भ्राजमान शोभितहैंतहैं कौस्तुभमणि (प्रभयान्वितम्) प्रकाशकरिकै युक्तहै १० (स्तुवद्भिःसनकाद्यैः) स्तुति करि सनकादिकन करिकै (च पार्षदैः परिवेष्टितम्) पुनः पार्षदन करिकै घेरे हैं अर्थात् सनक सनन्दन सनातन सनत्कुमार इत्यादि महान मुनि स्तुति करिरहेहैं पुनः विष्वक्सेनादि पार्षद सेवामें तत्पर चारिउ दिशिघेरे खड़े हैं शंख चक्र गदा कमल चारिहु भुजनमें तथा तुलसीदल कुंदी मंदार पारिजात कमल इत्यादि ग्रंथित वनमाला उरपर विराजमान हैं ११ ॥

स्वर्णयज्ञोपवीतेनस्वर्णवर्णाम्बरेणच ॥ श्रियाभूत्याचसहितंगरुडोपरिसंस्थितम् १२हर्षगद्गदयावाचास्तोतुंसमुपचक्रमे॥ब्रह्मोवाच॥नतोस्मितेपदंदेवप्राणबुद्धीन्द्रियादिभिः १३ यच्चिन्त्यतेकर्मपाशाद्धृदिनित्यमुमुक्षुभिः॥ माययागुणमय्या त्वंसृजस्यवसिलुम्पसि १४ ॥

(स्वर्णयज्ञोपवीतेन) सोनेके जनेऊ करिकै भूषित (च स्वर्णवर्ण अम्बरेण) सोनेको रंग बसन करिकै भूषित (श्रियाच भूत्या सहितं) लक्ष्मी करिकै पुनः ऐश्वर्य करिकै सहित (गरुडोपरिसंस्थितम्) गरुड़पर सवार अर्थात् सोनेके जनेऊकरिकै वामकन्ध उरभूषित पुनःसोनेकैसो रंगजामें ऐसा पीताम्बर करिकै तन भूषित पुनः लक्ष्मी वामभागमें पुनः भूति जोअणिमादिक शक्ती तिन सहित गरुड़पर सवार हैं १२ (हर्ष गद्गदयावाचा) आनन्द सहित गद्गदवाणी करिकै (स्तोतुंसंउपचक्रमे) स्तुति करनेलगे ब्रह्माजी (देवते पदं) ब्रह्मा कहत हे देव आपके जो पद कमल हैं तिनहिं (प्राण बुद्धि इन्द्रिय आत्मभिः नतोस्मि) पांचो प्राण बुद्धि इन्द्री आत्मा इत्यादि करिकै नमस्कार करताहौं अर्थात् आरतहृदय प्रार्थना करतेही प्रभुको प्रकट देखि हर्ष प्रेम उमँगा ताही आनन्दसहित गद्गदवाणी करिकै स्तुति करनेलगे तहां प्रथम प्रणामचाहिये ताते ब्रह्मा बोले हे देव आपके जो पदकमल हैं तिनहिं हम प्राण बुद्धि इंद्री सहित आत्मा करिकै नमस्कार करते हैं भाव प्राण क्रिया शक्ति प्रधान अंशहै तेहिकरिकै कर्मइन्द्री हैं यथा हाथ पग मुख गुदा शिश्नादि तथा बुद्धिकी इंद्री हैं कान त्वचा नेत्र जीभ नासिका पुनः देह चित्त अरु ब्रह्म इनकी आत्मा संज्ञाहै इत्यादि सबकी वृत्ति एकत्रकरि प्रणाम करताहौं १३ (कर्मपाशात्मुमुक्षुभिः) कर्मनकी फँसरीते छूटने की इच्छा किहहैं जे तिन योगिन करिकै (यत् नित्यं हृदि चिन्त्यते) जौने पदनको नित्यही हृदय में चितवन किया-जाताहै (गुणं अय्यामायया) सत रज तमादि गुणनयुक्त जो अविद्यामाया तेहिकरिकै (त्वंसृजसि अवसिलुंपसि) आपही संसारको उपजावतेहौ पालतेहौ प्रलयकरतेहौअर्थात् ब्रह्माकहत कि जिनको हमप्रणाम करतेहैं तिन पदारबिंदनमें कैसा प्रभावहै किजे संसारबन्धनते छूटि मुक्तिकी इच्छाकिहेहैं ऐसे योगीजन जिन पदारविंदनको नित्यही हृदयमें ध्यान कियेरहत अरु आप कैसेहौ कि तीनिहुँ गुणनयुत अपनी मायाकरिकै संसारको उपजावत पालत संहार करतेहौ १४ ॥

जगत्तेननतेलेपआनन्दानुभवात्मनः॥ तथाशुद्धिर्नदुष्टानांदानाध्ययनकर्मभिः१५ शुद्धात्मतातेयशसिसदाभक्तिमतायथा ॥ अतस्तवाङ्घ्रिर्मेदृष्टिश्चित्तदोषापनुत्तये १६ सयोन्तरहृदयेदृष्टोमुनिभिःसात्वतैर्वृतः ॥ ब्रह्माद्यैःस्वार्थसिद्ध्यर्थमस्माभिः पूर्वसेवितः १७ ॥

(जगतेननतेलेपन) जगत् करिकै जो देहाभिमानादिसो आपमें लागि नहीं सकाहै काहेते (आ-

नन्दअनुभवमात्मनः) आनन्द साक्षात्कारहै आत्मरूपको अर्थात् उत्पत्ति पालनादि जगत्को करतेहौ परन्तु जगत् करिकै जो देहाभिमानादि व्यकारहै सो आपमें नहीं लागि सकाहै काहेते देहाभिमान तौ अल्पज्ञताते होताहै आपमें तौ अखण्ड आनन्द साक्षात्कारहै आत्मरूपको तहां जगत् कैसे लागिसकै श्लोकार्द्ध आगेके श्लोकमें अन्वयहै (दानअध्ययनकर्मभिःदुष्टानांतथाशुद्धिःन) दानशास्त्र पठन इत्यादि कर्म करि दुष्टनकी ता भांति अंतर्शुद्धी नहीं होतीहै १५ (यथाभक्तिमतासदातेयशसि शुद्धात्मता) जा भांति भक्तिवंत पुरुष सदा आपको यशकीर्तन करि शुद्धात्मताको प्राप्तहोताहै (अतः चित्तदोषअपनुत्तयेतवांघ्रिःमेदृष्टिः) इसी कारण अपने चित्तके दोषोंको मिटावनेहेतु आपके पद कमलोंके दर्शन किया अर्थात् विमुख विषयी दुष्टजन दान शास्त्राध्ययनादि कर्म करि तैसी शुद्धताको नहीं पावते हैं जैसे भक्तजन आपको यशगान करि शुद्धहोतेहैं इसीसे मैं भी अपने चित्तके असद्वासनादि दोष मिटावने भाव अन्तर शुद्धहोने हेतु आपके पद कमलोंके दर्शन किया १६ (मुनिभिः सयोअन्तरहृदयेदृष्टो) मुनिन करिकै सोई जो चरण सो भीतर हृदयके ध्यानमें देखे जातेहैं (सात्वतैर्वृतः) भक्तन करिकै परिवेष्टित है (अस्माभिःब्रह्माद्यैःस्वार्थसिद्ध्यर्थंपूर्वसेवितः) हम ब्रह्मादिक यावत् देवताहैं तिन्होंने भी आपने प्रयोजन सिद्धहोने अर्थ सब पूर्वकाल में आपहीकी सेवा कियाहै अर्थात् योगीजन अष्टांग योगते मनेन्द्रीजीति हृदयमें आपके पायँनको ध्यान करि सिद्धहोते हैं अरु भक्तजन श्रवण कीर्तनादि करि सेवकपद पाय नित्यसेवामें रहतेहैं तथा हम ब्रह्मादिक यावत्देवताते सब पूर्वमें आपके पद कमल सेवनकरि अपनी अपनी ऐश्वर्य्यको प्राप्तभये १७ ॥

अपरोक्षानुभूत्यर्थंज्ञानिभिर्हृदिभावितः ॥ तवांघ्रिपूतनिर्माल्यतुलसीमालयाविभो १८ स्पर्द्धतेवक्षसिपदंलब्ध्वापिश्रीःसपत्निवत् ॥ अतस्त्वत्पादभक्तेषुतवभक्तिःश्रियोधिका १९ भक्तिमेवाभिवांछंतित्वद्भक्ताःसारवेदिनः ॥ अतस्त्वत्पादकमलेभक्तिरेवसदास्तुमे २० ॥

(अपरोक्षअनुभूतिअर्थं) आत्मरूप साक्षात्सम प्राप्तीके अर्थ (ज्ञानिभिःहृदिभावितः) ज्ञानीजन सो भी हृदयमें पद कमलनको ध्यान किहे रहतेहैं भाव आपके पद कमलोंको ध्यान करि ज्ञानीजन भी आत्मरूपको प्राप्तहोतेहैं पुनः (हेविभोतवअंघ्रिपूतनिर्माल्यतुलसीमालया) हेसमर्थ आपके पद कमल ऐसे पवित्रहैं जिनमें चढ़ाहुआ तुलसीको माला करिकै १८ (श्रीःवक्षसिपदंअपिलब्ध्वासपत्निवत्स्पर्द्धते) लक्ष्मीजी आपकी छातीमें वास किहेहैं ऐसाहू ऊंचापद निश्चय करिपाय तबहूं सवतिकीनाई तुलसीको पराभव करिवेकी इच्छा करती हैं भाव तुलसीको पायँन पर चढ़ते देखि नहीं सहिसकी हैं ताते ऊंचापद त्यागि पायनकी सेवामें तत्पर रहती हैं जामें यहौपद हमहींलेलेंव (अतःत्वत्पादभक्तेषु) इसकारणते सूचित होताहै कि जे आपके पद सेवक भक्तहैं तिनविषे (श्रियोअधिकातवभक्तिः) लक्ष्मीते अधिक आपकी प्रीतिहै अर्थात् जो लक्ष्मी ऊंचापद त्यागि पद सेवाकी इच्छा राखती हैं याते सूचितहोत कि पद सेवक भक्तन पर लक्ष्मीते अधिक प्रीति राखतेहौ १९ (सारवेदिनःत्वद्भक्ताभक्तिंएवअभिवांछंति) सारवस्तुको जाननेवाले जे आपके अनुरागी भक्तहैं ते भक्ति प्राप्तीकी निश्चयकरि इच्छा राखतेहैं (अतःत्वत्पादकमलेभक्तिःएवमेसदाअस्तु) इसीते आपके पद कमलनमें भक्ति मेरेभी उरमें सदाहोय अर्थात् कर्म ज्ञान विराग योगादि सबको सारांश परमेश्वरमें प्रीतिहोना इत्यादि को जाननेवाले जे आपके अनुरागी भक्तहैं ते भक्ति प्राप्तीकी निश्चय

करि इच्छा राखतेहैं ऐसा विचारि मैं भी यही इच्छा किहेहौं कि आपके पद कमलनमें भक्ति मेरे उरमें सदा अविचलरहे २० ॥

संसारामयतप्तानांभेषजंभक्तिरेवते ॥ इतिब्रुवंतंब्रह्माणंबभाषेभगवान्हरिः २१ किंकरोमीतितंवेधाःप्रत्युवाचातिहर्षितः ॥ भगवन्रावणोनामपौलस्त्यतनयो महान् २२ ॥

(संसारआमयतप्तानांभेषजंतेभक्तिःएव) संसाररूप रोग करिकै तप्तभये जननको औषध आपकी भक्ति निश्चय करिकै है (इतिब्रह्माणंब्रुवंतंभगवान्हरिःबभाषे) इसप्रकारके स्तुतिवचन ब्रह्मावर्णन कीन्हे सो सुनि भगवान् हरि बोलते भये भावहानि वियोगरुज चोरशत्रु अग्नि दरिद्रतादि लौकिक जन्म मरण नर्कादि पारलौकिक इत्यादि संसारी रोगनकरिकै तप्त जननको औषध आपकी शरणागतीहै ऐसा जानि भूदेवादि महादुःख पीडित आपकी शरणहै दयादृष्टि रक्षाकीजे इत्यादि स्तुति पूर्वक आरत वचन जब ब्रह्माजी कहे सो सुनि भगवान् अर्थात् षडैश्वर्ययुत यथा महारामायणे ऐश्वर्येणचधर्मेणयशसाचश्रियैवचावैराग्यमोक्षपट्कोणैःसंजातोभगवान्हरिः ॥ऐसे भगवान् हरिबोलते भये २१ (किंकरोमि) ब्रह्माप्रति भगवान् बोले कि क्याकरौं सो कहिये (इतितंवेधाःअतिहर्षतःप्रत्युवाच) इत्यादि भगवान्के वचन सुनिकै तिन प्रतिब्रह्मा अत्यंतहर्ष सहित बोलते भये (हेभगवन् पौलस्त्यतनयःरावणोनाममहान्) पुलस्त्यके पुत्र विश्वेश्रवः ताको पुत्र रावणनामे महाबली वीर सब सो अजितहै अर्थात् भगवान् बोले कि कौन उपायकरौं जामें सबको दुःखमिटै सो कहिये इत्यादि सुनि हर्ष सहित ब्रह्माबोले हे भगवन् पौलस्त्य पुत्र सबको रोवावनेवाले रावण महाबलीबीर सब सों अजित हुएहैं २२ ॥

राक्षसानामधिपतिर्मद्दत्तवरदर्पितः ॥ त्रिलोकींलोकपालांश्चबाधतेलोकबाधकः २३ मानुषेणमृतिरतस्यमयाकल्याणकल्पिता ॥ अतस्त्वंमानुषोभूत्वाजहिदेवरिपुंप्रभो २४ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ कश्यपस्यवरोदत्तस्तपसातोपितेनमे ॥ याचितः पुत्रभावायतथेत्यंगीकृतंमया २५ ॥

(राक्षसानांअधिपतिः) राक्षसन को राजा (मत्दत्तवरदर्पितः) मेरा दियाबर अर्थात् नर बानर वराय अन्य किसीके मारे न मरैगो इत्यादि पाय बड़ेगर्व सहितहै (लोकबाधकःचत्रिलोकींलोकपालांबाधते) लोकभरेको पीड़ा करनेवाला पुनः तीनिहूलोकनके लोक पालनको पीड़ा देरहाहै अर्थात् ब्रह्मा कहत कि राक्षस तामसी सौभाविकहीं दुष्टहोते हैं तिनको राजा महादुष्टताहूपर मेरा दिया वरदान पाय अजित भया ताते बड़ेगर्वते लोकभरेको दुख दायक भया पुनः तीनिहू लोकनके लोक पाल इन्द्र वरुण कुबेरादि तिनको महा दुःख देरहाहै २३ (तस्यमृतिःमानुषेणमयाकल्याणकल्पिता) ताकी मृत्यु मनुष्य करिकै होवै इत्यादि मैंने वाके कल्याणमें रचिराखाहै (अतःप्रभोत्वंमानुषोभूत्वा देवरिपुंजहि) इससे हेप्रभो आप मनुष्यरूप ह्वैकै देवतनको शत्रु रावण ताहि वधकीजे अर्थात् ब्रह्मा कहत कि रावणकी भाग्यादि जीवनरेखा लिखतसंते यही लिखाहै कियाकी मृत्यु मनुष्यके हाथौं होई इस हेतु हेप्रभु आप मनुष्यरूप धरि देवनको शत्रु रावणको वधकरौ २४ (कश्यपस्यतपसातोपितेनमेवरोदत्तः) कश्यपकी तपस्या करि हम प्रसन्नभये त्यहि करिकै मैंने उनको वरदान दिया भाव जो इच्छाहोय सो मांगिये तापर उनमोसों (पुत्रभावाययाचितःइतितथामयाअंगीकृतं) पुत्र भावके

अर्थ यांचना किया इत्यादि उनको यथा मनोरथ तथा हमने अंगीकारकिया अर्थात् भगवान् बोले कि हम मनुष्यतन अवश्यधरैंगे काहेते पूर्वकाल में कश्यपमुनि अदिति मेरे हेत तपकीन्हें तिनको हम बरदीन्हें कि जो इच्छाहोइ सो मांगौ तब उनमांगा कि पुत्र ह्वै हमको मिलौ इत्यादि उनको बचन हम अंगीकारकीन तिनके पुत्र ह्वै तुम्हारा भी कार्य करैंगे २५ ॥

सइदानींदशरथोभूत्वातिष्ठतिभूतले॥तस्याहंपुत्रतामेत्यकौशल्यायांशुभेदिने२६ चतुर्द्धात्मानमेवाहंसृजामीतरयोःपृथक् ॥ योगमायापिसीतेतिजनकस्यगृहेत दा २७ उत्पत्स्यतेतयासार्द्धंसर्वंसम्पादयाम्यहं॥ इत्युक्त्वान्तर्दधेविष्णुर्ब्रह्मादेवानथाब्रवीत् २८॥

(सदशरथोभूत्वा इदानीं भूतले तिष्ठति) सोई कश्यप दशरथ भये हैं सो यासमयमें भूमितल विषे स्थितहैं (तस्य अहं पुत्रतामेत्य) ताको हम पुत्रह्वैकै प्राप्तहोयँगे कौनभांति (कौशल्यायांशुभे दिने) अदिति आय कौशल्या उनकी बड़ी रानी भई हैं तिनमें शुभदिन बिषे अवतीर्ण होयँगे २६ (इतरयोः पृथक् अहंचतुर्द्धा आत्मनां सृजामि) कौशल्याते इतर कैकेयीसुमित्रा जोदोऊरानीहैं तिन हूं में सहित अलग अलग चारि स्वरूपन को उत्पन्नकरब अर्थात् भगवान् कहत कि सोई कश्यप दशरथभये हैं कौशल्या कैकेयी सुमित्रादि रानिन सहित भूतल अयोध्याजीमें विराजमानहैं तिनके पुत्रह्वै हम चाररूपते प्राप्तहोयँगे तहां कौशल्यामें स्वयं हम रामरूपते होयँगे अंशनकरि कैकेयी में भरत सुमित्रामें लक्ष्मण शत्रुहन इति चारिरूपते इहां भविष्यकालहै सृक्ष्यामि चाहिये सो सृजामि कहे ताको भाव बर्तमान सामीपबिषे भूत भाविष्य दोऊ कालकी क्रिया विकल्पकरि वर्तमानौं क्रिया ह्वैसक्ती है यथा चंद्रिकायां वर्तमान सामीपे भूते भविष्यति चवर्तमानवद्वा (तदायोगमाया अपि सीताइति जनकस्यगृहे) जासमयमें मैं अवतीर्णहोउंगो ताही समय मेरी योगमायाभी सीता इतिनाम सो जनकके घरमें २७ (उत्पत्स्यतेतयासार्द्धं) उत्पन्नहोंइगी तिन करिकै सहित (अहंसंपादयामि) हम सम्पूर्ण कार्य सिद्धकरैंगे (इतिउक्तविष्णुःअंतर्दधे) ऐसा कहि भगवान् अंतर्ध्यानभये (अथब्रह्मा देवान्अब्रवीत्) ताके पीछे ब्रह्मा देवनप्रतिबोले अर्थात् जाको मेरासदा संयोग रहताहै मेरी इच्छाते उत्पत्ति पालन संहारादि सब कार्य करती है इतिमेरी योगमाया सीता ऐसा नाम सो भी ताही समयमें जनकजीके घरमें उत्पन्नहोइगी तिनकी सहायताते हम समाग्र देवनको कार्य पूराकरैंगे भावखल मारि भूभार उतारैंगे ऐसा कहि भगवान् अंतर्ध्यानभये ताके पीछे ब्रह्माजी देवताभूमि इत्यादि को धीर्यदैबोले सो आगे कहत २८॥

ब्रह्मोवाच॥ विष्णुर्मानुषरूपेणभविष्यतिरघोःकुले॥ यूयंसृजध्वंसर्वेपिवानरेष्वंशसंभवान् २९ विष्णोःसहायंकुरुतयावत्स्थास्यतिभूतले॥ इतिदेवान्समादिश्यसमाश्वास्यचमेदिनीम् ३० ययौब्रह्मास्त्रभवनंविज्वरःसुखमास्थितः ३१ देवाश्चसर्वेहरिरूपधारिणःस्थितास्सहायार्थमितस्ततोहरेः॥ महाबलाःपर्वतवृक्षयोधिनःप्रतीक्षमाणाभगवन्तमीश्वरम् ३२॥

इत्यध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेबालकांडेद्वितीयःसर्गः २॥

विष्णुःमानुषरूपेणरघोःकुलेभविष्यति) विष्णु भगवान् मानुषरूप करिकै रघुके कुलमें अवतीर्ण

होंयगे (यूयंसर्वेऽपिवानरेषुअंशसंभवान्सृजध्वं) हे देवतौ तुम सब बानरनविषे अपने अंश सों उत्पन्नभयं पुत्र उपजावौ अर्थात् देवतन प्रति ब्रह्मा कहत कि विष्णु मानुषरूप करिकै रघुकुलमें दशरथ महाराजके पुत्र ह्वै उत्पन्नहोंयगे तथा तुम सब बानरनविषे अपने अपने अंशन करिकै पुत्र उपजावौ २९ (तयाभूतलेयावत्स्थास्यति) तेहि करिकै भूतलमें वास किहेउ (विष्णोःसहायंकुरु) मनुष्यरूप विष्णुजबतकरहैं तब‌तक उनकी सहायकरौ (इति देवान्समादिश्य) इसप्रकार देवतनको आज्ञादेकै (चमेदिनीम्समाश्वास्य) पुनः पृथ्वीको समुझायधैर्यदै ३० (ब्रह्मा विज्वरः स्वभवनंययौसुखमास्थितः) ब्रह्मा संतापरहित अपने घरको गये सुख पूर्वक आसीनभये अर्थात् ब्रह्माकहे हेदेवतहु स्वअंशबानरतनु धरि त्यहि करिकै भूमितलमें बसउ मनुष्यरूप विष्णु जब तक रहैं तब तक उनकी सहायकरौ इस प्रकार देवतनको आज्ञादेकै पुनः पृथ्वीको समुझायधैर्य दै ब्रह्मासंताप रहित अपने घरकोगये सुख पूर्वक आसीनभये ३१ (देवाश्चसर्वेहरिरूपधारिणः) पुनः देवतासब बानरनको तनुधरि (ततःइतःहरेःसहायअर्थेस्थिताः) तदनंतर ये सब भगवान्के सहायता-अर्थवन पर्वतनमें स्थितहोतेभये कैसेहैं (महाबलाःपर्वतवृक्षयोधिनः) महाबलहै जिनमें पहाड़ वृक्षनकरि युद्धकरिसक्ते हैं (भगवान्ईश्वरंतंप्रतीक्षमाणः) भगवान् ईश्वर तिनहिं प्रतीक्षा करते हैं भावकब अवतीर्ण होंयगे अर्थात् ब्रह्माकी आज्ञापाय पुनः देवता सब बानरनको तनुधरि पीछे सब भगवान्के सहायता अर्थ वनपहाड़नमें बासकरते भये कैसेहैं महाबल है जिनमें जे बड़े पहाड़तथा वृक्षोंकरि युद्धकरिसक्ते हैं अर्थात् दुर्घटकार्य करनेमें श्रम न आवै ताको बली कही सो ऐसे बली हैं जो भारी पहाड़ उखारि ढेलासम बहायकै मारि सकेहैं ते सब भगवान् के अवतार होनेकी राह निहारते हैं ३२ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचितेअध्यात्मभूषणे देवप्रार्थनाअवतारहेतुवर्णनोनामद्वितियःप्रकाशः २ ॥

महादेवउवाच ॥ अथराजादशरथःश्रीमान्सत्यपरायणः॥ अयोध्याधिपतिर्वीरः सर्वलोकेषुविश्रुतः १ सोऽनपत्यत्वदुःखेनपीड़ितोगुरुमेकदा ॥ वशिष्ठंस्वकुलाचार्यमाहूयेदमथाब्रवीत् २ ॥

सवैया ॥ सुखपूर सबै बिन पुत्रदुखी कहि हाल गहे गुरुपांयकदा । ऋषिशृंगिहि बोलि वशिष्ठतवै कियंयज्ञ चरूदिय अग्नितदा ॥ दिय रानिनखाय सगर्भप्रसौ नररूपालिये तजिब्रह्मपदा । भरतानुज लक्ष्मण राघवभे नृपनन्दन चारि नमामिसदा ॥ (अथअयोध्याआधिपतिःराजादशरथः) तदनन्तर अयोध्यापुरी के चक्रवर्ती महाराज राजादशरथ (श्रीमान्सत्यपरायणःवीरः) राजश्रीयुक्त सत्यपर तत्पर वीरता परिपूर्ण (सर्वलोकेषुविश्रुतः) यशवंत करि सर्व लोकनमें प्रसिद्ध अर्थात् गिरिजाप्रति शिवबोले अब अवतार होनेको हाल सुनिये अयोध्याके महाराज राजादशरथ मंत्रीमित्र देशकोश सेना बाहनादि राज श्रीसर्वांग युक्त छल चातुरी त्यागि यथार्थ बोलना जो कहना सोई करना इति सत्य धर्म परायण लोकमें अरु परलोकमे देह व्यवहार त्यागि सत्य परमात्मरूपमें लगेरहना पुनः दया दान धर्म युद्धमें उत्साहराखे रहना इतिवीरता इत्यादि गुणनकरि लोकनमें प्रसिद्धहैं १ (सःअनपत्यत्वदुःखेनपीड़ितः) सोई दशरथ पुत्रहीनता दुःख करिकै दुखित ताते (एकदागुरुंवशिष्ठंस्वकुल आचार्यआहूयअथइदंअब्रवीत्) एक समयगुरु वशिष्ठ जो कुलके आचार्य हैं तिनहिं बुलायपुनः इस

प्रकारबोले अर्थात् सोई दशरथ पुत्रहीनहैं त्यहि दुःखते दुखित ताते एक समयगुरु वशिष्ठ जो अपने कुलके आचार्य हैं तिनहिं बुलाय पुनः इस प्रकार बोलतेभये २ ॥

स्वामिन्पुत्राःकथंमेस्युःसर्वलक्षणलक्षिताः ॥ पुत्रहीनस्यमेराज्यंसर्वंदुःखायकल्पते ३ ततोऽब्रवीद्वशिष्ठस्तंभविष्यन्तिसुतास्तव ॥ चत्वारःसत्वसम्पन्नालोकपाला इवापराः ४ ॥

(पुत्रहीनस्यराज्यंसर्वंमेदुःखायकल्पते) पुत्रहीन को राज तथा सब प्रकारके सुख तिनहिं मेरे दुःखैके अर्थ ब्रह्माने बनायाहै ताते (स्वामिन्सर्वलक्षणलक्षिताःपुत्राःमेकथंस्युः) हे स्वामिन् सब शुभ लक्षणनयुत ऐसे पुत्र मेरे कौन प्रकार करिकै होंइगे अर्थात् महाराजबोले कि हम पुत्रहीन हैं ताको राज्यहोना तथा धनधान्य भोजन वसन भूषण वाहनस्त्री इत्यादि यावत् सुखहैं तिनहिं मेरे दुःखैके अर्थ ब्रह्माने बनायाहै भाव पुत्रहीनता शोचमें सब सुख वृथा देखाताहै अरु आप इस कुलके सदा ते सुख दायकहौ ऐसा जानि आपते प्रार्थना करताहौं हे स्वामिन् स्वरूपता शीलधर्म्म नीति वीरता सुलभ उदारता ज्ञान नम्रता धैर्य विद्याशौर्य वीर्य तेज बल प्रताप यश कीर्ति इत्यादि सबलक्षण युत ऐसे पुत्र मेरे कौन उपाय करिकै होंयगे सो कृपाकरि कहिये ३ (ततःतंवशिष्ठःअब्रवीत्) तब दशरथ प्रतिवशिष्ठबोलते भये (तवचत्वारःसुताःभविष्यन्ति) तुम्हारे चारि पुत्रहोंयगे कैसे (सत्वसंपन्नाअपराःलोकपालाइव) सतोगुण परि पूर्ण और लोक पालनके समान अर्थात् महाराजकी प्रार्थना सुने तब महाराज प्रतिबशिष्ठजी बोले हेराजन् तुम्हारे चारि पुत्रहोयँगे कैसे गुणयुत कि तमोगुण रजोगुण रहित केवल सतोगुणते परि पूर्ण यह विशेषता होई और बलवीरता तेजप्रतापादि गुणनकरि लोकपालनके समान यथा वाल्मीकीये ॥ विष्णुनासदृशोवीर्य्ये सोमवत्प्रियदर्शनः । कालाग्निसदृशः क्रोधेक्षमयापृथिवीसमः ॥ धनदेनसमःत्यागेसत्यधर्मइवापरः ॥ इत्यादि ४ ॥

शांताभर्तारमानीयऋष्यशृंगंतपोधनं ॥ अस्माभिःसहितःपुत्रकामेष्टिंशीघ्रमाचर ५ तथेतिमुनिमानीयमंत्रिभिस्सहितःशुचिः ॥ यज्ञकर्मसमारेभेमुनिभिर्वीतकल्मषैः ६ श्रद्धयाहूयमानेग्नौतप्तांगकनकप्रभः ॥ पायसंस्वर्णपात्रस्थंगृहीत्वोवाचहव्यवाट् ७ ॥

(शान्ताभर्तारं ऋषिशृंगं तपोधनं आनीय) तुम्हारी कन्या शांता तिनके पति ऋषिशृंग तपोधनी तिनहिं लाइये मुख्य आचार्य बनाइये पुनः (अस्माभिः सहितः) हमलोग ऋषेश्वरन करिकै सहित (पुत्रकामेष्टिं शीघ्रमाचर) पुत्र कामना करिकै यज्ञ तुरतही प्रारम्भकीजै अर्थात् वशिष्ठजी बोले कि हे महाराज तुम्हारी कन्याशान्ता तिनके पति शृंगीऋषि तपोधनी भाव इसकार्यमें आचार्य करिबेयोग्य उनहीं हैं तिनहिं लाइये मुख्य आचार्य बनाइये पुनः हम वामदेवादि अन्य ऋषिनसहित पुत्रकामना करिकै यज्ञ तुरतही प्रारम्भ कीजै भाव समय आयगया विलम्ब न होवे ५ (इति तथा मंत्रिभिः सहितः मुनिं आनीय) मुनिके कहे इत्यादि तथा अंगीकार करि मंत्रिन करिकै सहित महाराज जायकै शृंग मुनिहिं लावतेभये पुनः (कल्मषैः वीतमुनिभिः) पापरहित वशिष्ठादि मुनिन करिकै सहित (शुचिः यज्ञकर्म समारेभे) अग्नि सो विनियोग घृत साकल्य स्वाहादि यज्ञकर्म प्रारम्भकीन्हें अर्थात् शृंगीऋषिको लावो इत्यादि वशिष्ठकी आज्ञा यथा तथा अंगीकारकरि मंत्रिन सहित महाराज जाय प्रार्थनाकरि शृंगी ऋषिको लाय आचार्य कीन्हें पुनः पापरहित वशिष्ठादि मुनिनकरिकै सहित

सरयूके उत्तर मनोरमातट शुभदिन वेदीवनाय समिधमें अग्नि प्रज्वलित करि विनियोग जलछाँड़ि घृत साकल्यादि यज्ञकर्म प्रारम्भ कीन्हें ६ (श्रद्धयाअग्नौ आहूयमाने तप्तांग कनकप्रभा) ऋषिलोग श्रद्धाकरिकै अग्निविषे आहुती देतसंतें तपाये सोनेकीऐसीप्रभा ऐसे दिव्यरूपते प्रकटह्वै (पायसंस्वर्ण पात्रस्थं गृहित्वा) जाउरि सोनेके पात्रमें किहेहाथेमें धरे (हव्यवाट् उवाच)अग्निदेव बोलतेभये अर्थात् ऋषिश्रृंग वशिष्ठादिकन अन्तरमें प्रीति बाह्य आदरसहित जब अग्निमें आहुती दीन्हें यज्ञ पूर्णहोतही कुंडते अग्नि मूर्तिवन्त प्रकटे तपाये सोनेकीऐसी प्रभा तनमें ऐसे दिव्यरूपते जाउरि सोनेके पात्रमें भरे हाथमें धरे महाराजके सन्मुख अग्निदेव बोले ७ ॥

गृह्णाणपायसंदिव्यंपुत्रीयंदेवनिर्मितं ॥ लप्स्यसेपरमात्मानंपुत्रत्वेननसंशयः ८ इत्युक्त्वापायसंदत्त्वाराज्ञेसोन्तर्दधेऽनलः ॥ ववन्देमुनिशार्दूलौराजालब्धमनोर थः ९ वशिष्ठऋषिश्रृंगाभ्यामनुज्ञातोददौहविः ॥ कौशल्यायैसकैकेय्यैअर्द्धमर्द्ध प्रयत्नतः १० ॥

(देव निर्मितंदिव्यं पायसं पुत्रीयं गृहाण)देवतनकी बनाईदिव्य जाउरि पुत्रप्राप्तीहेतु याको लीजिये (त्वेन परमात्मानं पुत्र लप्स्यसे संशयः न) ताके प्रभाव करिकै परमात्माको पुत्रकरि पावोगे याम संशय नहींहै अर्थात् अग्निदेव बोले हे महाराज यह देवतनकीबनाईहुई दिव्य जाउरि है सो पुत्रप्राप्ती हेतु याको लीजिये रानिनको खवाइये ताके प्रभावकरिकै परमात्माको पुत्रकरि पावोगे यामें संशय नहीं भाव निश्चयकरि जानो ८ (इति उक्त्वा राज्ञे पायसं दत्त्वा सः अनलः अन्तर्दधे) ऐसा कहि महाराज के अर्थ जाउरिदैकै सो अग्नि अन्तर्द्धानभये (मनोरथः लब्ध राजामुनि शार्दूलौ ववन्दे) अपना मनोरथ पूर्ण पायकै आनन्दह्वै राजा दशरथजी दोऊ मुनि जो श्रृंगीऋषि वशिष्ठ तिनहिं प्रणामकीन्हें अर्थात् याके प्रभावते परमात्माको पुत्रकरि पावोगे ऐसा कहि महाराज को जाउरिदैकै सो अग्नि अन्तर्द्धान भये अरु अपना मनोरथ पूर्णपाय दशरथ महाराज आनंदह्वै दोऊ मुनिवरन को प्रणाम कीन्हें ९ (वशिष्ठऋषिश्रृंगाभ्यां अनुज्ञातः कौशल्यायै सकैकेयै अर्द्धअर्द्ध हविः प्रयत्नतः ददौ) वशिष्ठ श्रृंगीऋषि दोऊकी आज्ञाते महाराज कौशल्याकेअर्थ सहित कैकेयीकेअर्थ आधीआधी * जाउरि यत्नते देतेभये यह अर्थ कीन्हेंते वाल्मीक्यादि रामायण तथा अन्य पुराणोंते बिरोध आवत अरु इसग्रंथते विरोध आवत काहेते वशिष्ठजी पूर्वही कहेहैं कि तुम्हारे चारिपुत्र होयँगे तब द्वैभाग कैसे करते पुनः सुमित्राजी सामान्यरानी नहीं हैं काहेते औरी सबमिलाय साढ़ेसातसै रानी रहीं हैं तिनतौ कोई न पुत्रइच्छाते पायसमें भाग हेतु आइसकीं अरु सुमित्राआईं ताको कारण यहहै कियै कौशल्याकी छोटी बहिनी हैं कारण यह कि लग्न तेलचढ़चुके पीछे मातृ पूजनकी रातिको कौशल्याजी को रावण हरिलेगया विवाह के दिन दशरथगये तब लाचारीते सुमित्राको विवाहिदिये जब उपाय करि कौशल्या मिलीं तब विधिवत् विवाह भया ताते राज्याभिषेकमें तो अधिकार मिला परन्तु दैव योग प्रथम पाणिग्रहण भयेते देवपूजन को अधिकार सुमित्रै को रहा यह रामरक्षाके तिलकमें मैंने देखाहै अरु कैकेयी को विवाह सबते पीछे भया है परंतु केकयराज करारपत्र मांगा सो महाराज लिखिदियाहै कि राजगद्दी इसीके पुत्रको देइंगे यह सत्योपाख्यानमें प्रसिद्धहै ताते इनको बड़ा पदह्वै- गया परंतु कुलवंती पतिव्रता सबहैं ताते कैकेयी पिताको करारपत्र नहीं माना सुमित्रा प्रथम पाणि- ग्रहण नहीं माना कुलरीतिते कौशल्यै को बड़ी माने तथा कौशल्या सपत्निभाव त्यागि छोटीबहिनी

करि दोऊको माना इत्यादि हेतु ये तीनिहूं विशेषि हैं ताते ऐसा अर्थ किया चाहिये यथा (वशिष्ठऋषिशृंगाभ्यांअनुज्ञातः) वशिष्ठ अरु शृंगीऋषि दोऊकी आज्ञाते (हविःअर्द्धंकौशल्यायैददौ) जाउरिको आधाभागताहि कौशल्याके अर्थ देतेभये (अर्द्धहविःप्रयत्नतःसकैकेय्यैकौशल्यायैददौ) जो आधाभाग जाउरिको रहा सो प्रकर्षयत्न समेत सहित कैकेयीके अर्थ अरु कौशल्याके अर्थ दीन्हें भावआधेको आधापूर्णको चतुर्थांश कैकेयीको दीन्हें अब जो चतुर्थांश शेषरहा ताके द्वैभागकीन्हें तामें एक कौशल्याको दीन्हें एक कैकेयीको दीन्हें भाव इन दोऊ रानिनके हाथन ये दोऊ भाग सुमित्राको देवावा चाहतेहैं ताते भिन्न भिन्न भागकरिदिये यह भाव प्रयत्नतः शब्दते निकलताहै अर्थात् वशिष्ठजी पूर्वही कहे हैं कि तुम्हारे चारि पुत्रहोइँगे सोई बात दोऊ मुनिकी आज्ञामें सगर्भितहैं इस हेतु यथा योग्य बिचारि जाउरिके चारि भागकीन्हें आधेको एक चौथाईको एक चौथाई में दो इत्यादि क्या यथा योग्यता बिचारि दीन्हें यथा कौशल्या पाटवंधनी हैं लोक वेद कुलादि सब रीतिते बड़ी हैं इनको पुत्र मुख्य राजपदको अधिकारी है ताते तेज प्रतापबल स्वरूपतादि सब गुणनमें भाइनते अधिक स्वामिपद योग्यहोय इस विचारते अर्द्धभाग पूर्वही कौशल्याको दीन्हें पुनः करारपत्रते विशेषि अधिकारहै परन्तु कैकेयीने कहा कि पिताके लिखानेते क्या होताहै हम अपने कुल धर्म परचलेंगी परन्तु महाराज अपने वचनको पुष्टराखने हेतु विचारे कि याको पुत्र कौशल्यानन्दनके नीचे राजकाजको अधिकारीहोवै इस विचारते कैकेयीको चतुर्थांश भागदिया पुनः सुमित्रा प्रथम पाणिग्रहीताहैं ताते अवशिभाग पावाचाहैं अरु अधिकार कछु है नहीं ताते हम अपने हाथते न देवैं कौशल्याकैकेयीके हाथों देवावैं जामें सुमित्राके पुत्र इनके पुत्रनकी सेवाके अधिकारी होवैं यह मनोरथ राखि चतुर्थांशके दोऊ भाग कौशल्याकैकेयीको दीन्हें अरु सुमित्राके बुलाये १० ॥

ततःसुमित्रासंप्राप्तासंगृध्नुःपौत्रिकंचरुम् ॥ कौशल्यातुस्वभागार्द्धंददौतस्यैमुदान्विता ११ कैकेयीचस्वभागार्द्धंददौप्रीतिसमन्विता ॥ उपभुज्यचरुंसर्वाःस्त्रियोगर्भसमन्विताः १२ देवताइवरेजुस्ताःस्वभासाराजमंदिरे ॥ दशमेमासिकौशल्यासुषुवेपुत्रमद्भुतम् १३ ॥

(ततःपौत्रिकंचरुंसंगृध्नुःसुमित्रासंप्राप्ता) ताके पीछे पुत्रदायक जाउरिकी इच्छा करिकै सुमित्रा आयप्राप्तभई (कौशल्यातुमुदान्वितास्वभागार्द्धंतस्यैददौ) प्रथम कौशल्याजी आनन्द समेतअपना जो आधाभागरहै पाछेको पावा सो त्यहि सुमित्राके अर्थ देतीभई ११ (चकैकेयीप्रीतिसमन्वितास्वभागार्द्धंददौ) पुनः कैकेयीभी प्रीति सहित अपना जो आधाभाग पीछे वाला रहा सो सुमित्राको दैदेती भई (चरुंउपभुज्यसर्वाःस्त्रियःगर्भसमन्विताः) जाउरिको भोजनकरि सबरानीगर्भ सहितभईं अर्थात् पूर्णभागदिहे पछि अर्द्धभागदिये ताहीसमय सुमित्रा आईं ताते महाराजको मनोरथ बिचारि अपनी बहिनि जानि कौशल्या आनन्दह्वै अपना अर्द्धभाग दिया तथा सपत्निभाव त्यागि बड़ी बहिनि सम प्रीति सहित कैकेयीभी अर्द्धभाग दिया सोई जाउरि खाय तीनिउ रानी गर्भधारण कीन्हें १२ (राजमन्दिरेताःदेवताइवस्वभासारेजुः) राजमन्दिरविषे तीनौ तीनिउरानी देवतनकी समान अपनी प्रभाते दीप्तिप्रकाश किहेहैं (दशमेमासिकौशल्याअद्भुतंपुत्रंसुषुवे) गर्भाधानते दशयें महीनाविषे कौशल्याअद्भुत गुणस्वरूपवन्त पुत्रताहि जन्मतीभई अर्थात् जबते गर्भवन्ती भई तबते राजमन्दिर बिषे तीनिहूँ रानी देवतन समान अपनी तनप्रभाते प्रकाश किहेहैं आनँद समेत दशमास पूर्णभये

पर अद्भुत गुण स्वरूपवन्त पुत्र जन्मी ॥ १३ ॥

मधुमासेसितेपक्षेनवम्यांकर्कटेशुभे ॥ पुनर्व स्वर्क्षसहितेउच्चस्थेग्रहपंचके ॥ १४ ॥ मेषं पूषणिसम्प्राप्तेपुष्पवृष्टिसमाकुले ॥ आविरासीज्जगन्नाथःपरमात्मासनातनः ॥ १५ ॥ नीलोत्पलदलश्यामः पीतवासाश्चतुर्भुजः॥ जलजारुणनेत्रांतःस्फुरत्कुंडलमंडितः १६॥
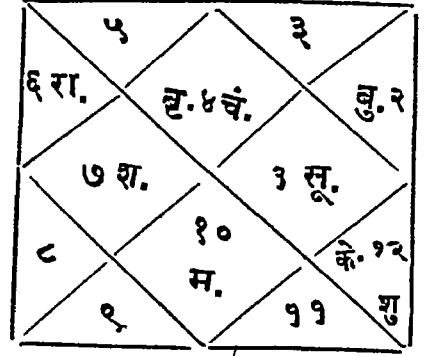
(मधुमासेसितेपक्षे) चैत महीना में शुक्लपक्ष विषे (पुनर्वसु ऋक्ष सहिते नवम्यां) पुनर्वसु नक्षत्र सहित नवमी तिथि विषे (कर्कटे शुभे उच्चस्थे ग्रहपंचके) कर्क शुभ लग्न विषे जन्म भया जन्मपत्री लिखे पांचग्रह उच्चके परे हैं अर्थात् चैतमास शुक्लपक्ष नवमी तिथि पुनर्वसु नक्षत्र कर्क लग्न शुभ पांच ग्रह उच्चके यथा मेषके सूर्य मकरके मंगल तुलाके शनैश्चर कर्कके बृहस्पति मीन के शुक्र इति पंच उच्चके पुनः स्वक्षेत्री चंद्रमा बृहस्पति सहित मूर्ति में इत्यादि समय जन्मपत्री यथा १४ (मेषपूषणिसंप्राप्ते) मेष राशि पर सूर्य प्राप्तसंते (पुष्पवृष्टि समाकुले) आकाश ते देव-कृत फूलन की वर्षा होतसंत (सनातनः परमात्मा जगन्नाथः आविरासीत्) अर्थात् मेषराशि उच्च स्थानपर सूर्य प्राप्तसंते अरु आकाशते देवता फूल वर्षतसंते ऐसे महामंगल कारक समयमें सनातन जो नित्य एकरस कारण रहित शुद्ध परमात्मरूप ऐसे जगन्नाथ जगत् को पालन करता रघुनन्दन महाराज आविर आसीत् प्रकट भये १५ (नील उत्पल दल श्यामः) नील कमल के दलवत् श्याम (पीतवासाश्चतुर्भुजः) पीतवसन चारि हैं भुजा (अरुण जलज नेत्र अन्तः)लालेकमल-वत् नेत्रनको समीप अंग (स्फुरत कुण्डल मंडितः) चलायमान कुंडल विराजमान अर्थात् श्याम कमलदल सम कोमल सचिक्कण चमकदार श्याम तनु है तामें पीताम्बर धारण चारि हैं भुजा लाले कमल सम कोमल अरुणता नेत्रनके आसपास दर्शत कान में कुंडल हालिरहे हैं १६ ॥

सहस्रार्कप्रतीकाशःकिरीटीकुञ्चितालकः॥ शङ्खचक्रगदापद्मवनमालाविराजितः॥ १७॥ अनुग्रहाख्यहृत्स्थेन्दुसूचितस्मितचन्द्रिकः ॥ करुणारसपूर्णविशालोत्पललोचनः॥ १८ ॥ श्रीवत्सहारकेयूरनूपुरादिविभूषणः ॥ दृष्ट्वातंपरमात्मानं कौशल्याविस्मयाकुला ॥ १९ ॥

(सहस्र अर्क प्रतीकाशः किरीटी) हजार सूर्यनकैसी प्रकाश जामें ऐसा रत्नजटित किरीट शीश पै धारण किहे (कुंचित अलकः) घुंघुवारे चिक्कण चमकदार श्याम केश कपोलनपर शोभित हाथों मे शंख चक्र गदा पद्म धारणकीन्हें उरपर वनमाला अर्थात् तुलसी कुंद मन्दार पारिजात कमल इत्यादि फूलनसों गुहाहुवा इति वनमाल शोभित १७ (अनुग्रह आख्य इन्दुहृत्स्थ) अनुग्रहगुण प्रसिद्ध हैं जिनमें सोई चन्द्रमा सम हृदय में स्थितहै जिनके (चन्द्रिकःस्मित सूचित) चांदनीसम मुसकानि सूचित है (विशाल उत्पल लोचनः) बड़े लम्बायमान कमलसम नेत्रते (करुणारस पूर्ण) करुणारस जिनमें भरिपूर है अर्थात् बिनास्वारथ परदुख हरना सो दयाहै अरु सदा एकरस

दया राखना भाव अपना करि माने रहना सो अनुग्रह है सो रघुनाथजीमें परिपूर्ण है यह लोकमें विदित है सोई अनुग्रह पूर्ण चन्द्रवत् हृदय में उदय है ताकी चांदनी मन्दमुसकानि प्रकाशमान है पुनः जो सेवकके दुखते स्वामी आपुदुखित ह्वै शीघ्रही सेवक को दुख मिटावै सो करुणाहै सोई करुणारस भरे बड़े लम्बायमान कमलसम नेत्र हैं १८ (श्रीवत्सहार केयूर) श्रीवत्स चिह्न मणिन के हार बहूटा (नूपुरादिविभूपण) पौंटा आदि विभूषण धारणकिहे (तं परमात्मानं दृष्ट्वा) तौने परमात्मा को देखिकै (कौशल्या विस्मय आकुला) आश्चर्य्य में अकुलाय उठी अर्थात् पीतरंग रोमनकी दहिनावर्त्त भ्रमरी इति श्रीवत्स चिह्न वामछाती में अनेक रंग मणिन के हार ग्रीव ते उरपर माणि कंचन मय बहूंटा भुजमें पौंटा पांवनमें इत्यादिविभूपणनतेसर्वांग भूपित ऐसा अद्भुत रूप तौने परमात्माको आविर्भाव प्रसूत समय देखिकै कौशल्याजी आश्चर्य्य के वश हृदयते अकुलायउठी भाव या समय ऐसा रूप देखि लोग हमारी उपहास करैंगे १९ ॥

हर्षाश्रुपूर्णनयनानत्वाप्राञ्जलिरब्रवीत् ॥ कौशल्योवाच ॥ देवदेवनमस्तेस्तुशङ्खचक्रगदाधर ॥ २० ॥ परमात्माच्युतोनंतःपूर्णस्त्वंपुरुषोत्तमः ॥ वदंत्यगोचरं वाचांबुद्ध्यादीनामतीन्द्रियम् ॥ २१ ॥ त्वांवेदवादिनःसत्तामात्रंज्ञानैकविग्रहम् ॥ त्वमेवमाययाविश्वंसृजस्यवसिहंसिच ॥ २२ ॥

(हर्षअश्रुपूर्णनयना) अद्भुतरूप देखिकौशल्याजीके हृदयते प्रेमानंद उमँगा त्यहि आनंद आसुन ते भरे नेत्र (नत्वाप्रांजलिःअब्रवीत्) माथनाय हाथजोरि कौशल्याजी बोलीं हे शंखचक्र गदाधर देवनके देव (तेनमःअस्तु)तुम्हारेअर्थ नमस्कार है २० (परमात्मा) आत्माके प्रकाशक परमात्म रूपशुद्धबुद्ध मुक्तस्वभाव (अच्युतः) अपनेरूपते कबहूं च्युतनहीं होते हौ सदाएकरसहौ (अनन्तः) आपको अंतकोऊनहीं पावत (पूर्णः) अखंडसर्वत्र परिपूर्णहौ (त्वंपुरुषोत्तमः) पुरुपारथ है जिनमें तिनपुरुषन में आप उत्तम पुरुपहौ (वाचांबुद्धिआदीनांअगोचरंअतीन्द्रियंवदन्ति) वचन अरु बुद्धि तिन के गोचर जो विषय तामें नहीं आवतेहौ इतिअगोचर अरु अतीन्द्रिय इन्द्रिनतेपरे ऐसा आपको सब कहते हैं अर्थात् गोनामहै इन्द्रिन को सो चरैं जाको ताको कही गोचर अर्थात् इन्द्रिन की विषय तहां कर्मइन्द्रिनमें प्रधान मुखैहै ताकी गोचर वचनहै अरु बुद्धिकी इन्द्रीहैं श्रवण त्वचानेत्र जिह्वा नासिका तिनकी विषय शब्द स्पर्श रूपरसगंध इत्यादि विपयनमें नहीं आवतयथा अन्तरते दीपक हंडीको प्रकाशित किहे आपुन्यारा रहततथा सबकी इन्द्रिनमें आपुप्रकाश किहेहौ अरुइन्द्रिन कीविषय में नहीं आवते हौ इसीते आपुको सब अतीन्द्रिय कहतेहैं २१ (वेदवादिनःत्वां सत्तामात्रं ज्ञानएकविग्रहं वदन्ति) वेदवादी आपुको सत्तामात्र एक ज्ञानैस्वरूप कहतेहैं (त्वंएवमाययाविश्वं) निश्चय करि आपुही अपनी मायाकरिकै संसार जोहै ताहि (सृजसिअवसिचहंसि) उत्पन्न करते हौ पालतेहौ पुनः संहार करतेहौ अर्थात् यथा दीपक के सत्ताते हंडी प्रकाशित अरु दीपक प्रकाश रूपीहै तथा आपकेवल ज्ञानस्वरूप अरु आपको तेज माया में व्याप्त ताहीते माया समग्र रचना करत सो आपके सत्ताते जड़माया भी सत्यवत् भासत ऐसा वेदवादी कहत २२ ॥

सत्त्वादिगुणसंयुक्तस्तूर्यएवामलाःसदा ॥ करोषीवमकर्त्तात्वंगच्छसीवनगच्छसि॥ २३ ॥ नशृणोषिशृणोषीव पश्यसीवनपश्यसि ॥ अप्राणोह्यमनाःशुद्धइत्यादि श्रुतिरब्रवीत् ॥ २४ ॥

(सत्त्वादि गुण संयुक्तः) सत रज तम इत्यादि गुण सहित हौ परन्तु (तूर्य एव अमलाःसदा) तुरीय अवस्था रूप निश्चयकरिकै अमलहौ अर्थात् रजोगुण करि संसारको उपजावतेहौ सतोगुण करि पालतेहो तमोगुण करि संहार करतेहो इत्यादि व्यापारते सत्त्वादि गुणसहित देखातेहो परन्तु ये गुण आपमें छुइ नहीं जाते हैं निश्चय करि तुरीय अवस्था सच्चिदानन्द रूप रज तमादि मल रहित सदा अमलहौ कौन भांति (करोपिइवत्वं कर्ता न) कर्म करनेवाले की समान देखते हौ अरु आप करता नहीं हौ (गच्छसीवनगच्छसि) चलनेवाले की समान देखातेहौ अरु चलते नहींहौ २३ (शृणोपि इव न शृणोषि) सुननेवाले के समान देखातेहौ अरु नहीं सुनतेहौ (पश्यसिइवनपश्यसि) देखनेवाले की समान देखातेहौ अरु नहीं देखनेवालेहौ (अप्राणोह्यमनःशुद्ध) इत्यादि श्रुतिः अब्रवीत् नहीं है प्राण निश्चयकरि नहींहै मनजामें केवल शुद्ध आत्मतत्त्व इत्यादि वेद कहत अर्थात् जब रजोगुणादि युक्तभी अमल हैं तौ मलको स्पर्शमें कैसे अमल रहते हैं तापर कहत कि कर्म करनेवाले चलनेवाले सुननेवाले देखनेवाले इत्यादिकी नाईं देखातेहौ अरु नकछु करतेहौ न कहूं जातेहौ न कछु सुनते हौ न कछु देखते हो सब कर्तव्य मायाकरिकै होता है आपु निर्विकारहौ भाव कर्म हाथोंकी विषय है गमन पांयन की विषय है सुनब कानों की विषयहै देखब नेत्रन की विषय है इत्यादि इन्द्रिन की विषय रहित तथा प्राण अपानउदान समान व्यान इत्यादि जोपांचौ प्राणवायुके अंशहैं तथामनजो प्रकृति को अंश जाके मिलेते आत्मरूप भूलिशब्द स्पर्श रूप रस गन्धादि विषयनमें आसक्तह्वै जीव विषयबद्ध होत इत्यादि प्राण रहित मनरहित शुद्धात्मरूप बाहर भीतर एक अर्थात् देही देह विभाग रहित शुद्ध सच्चिदानन्दहौ इत्यादि विशेषणदै वेद आप को वर्णन करतेहैं २४ ॥

समःसर्वेषुभूतेषुतिष्ठन्नपिनलक्ष्यसे ॥ अज्ञानध्वांतचित्तानांव्यक्तएवसुमेधसाम्॥ २५ ॥ जठरेतवदृश्यंतेब्रह्माण्डःपरमाणवः ॥ त्वंममोदरसंभूतइतिलोकान्विडंवसे ॥ २६ ॥ भक्तेस्तुपारवश्यंतेदृष्टंमेऽद्यरघूत्तम ॥ संसारसागरेमग्नापतिपुत्र धनादिषु ॥ २७ ॥

(सर्वभूतेपुसमःतिष्ठन्नपि) सब चराचरविषे बराबरि स्थित हौ निश्चय करि परंतु (अज्ञानध्वांत चित्तानांनलक्ष्यसे) अज्ञान रूप अन्धकार युक्त चित्त हैं जिनके तिनको नहींदेखिपरते हौ अरु (सुमेधसांव्यक्तएव) सुन्दरि बुद्धिहै जिनकी तिनको प्रकटहौ निश्चय करिकै अर्थात् भूत सब चराचर जीव मात्र विषे अन्तर्य्यामी रूपते बराबरि स्थितहौ निश्चयकरि परंतु जे देहै को सत्य माने ताके सुखहेत इन्द्री विषयन में आसक्त ऐसे अज्ञान रूप अन्धकारयुक्त चित्त हैं जिनके तिनको नहीं देखि परते हौ अरु विराग विवेक शम दमादि युक्त सुंदरि बुद्धिहै जिनकी तिनको प्रकट देखाते हौ निश्चय करिकै २५ (तवजठरेब्रह्माण्डःपरमाणवःदृश्यंते) आपके उदरमें अनेकन ब्रह्माण्ड स्वरूप रज कण की समान देखाते हैं (त्वंममउदरसम्भूतइतिलोकान्विडंवसे) सोई आपु मेरे उर ते उत्पन्न भयो यह लोकन में उपहास करते हौ २६ (हेरघूत्तमभक्तेःतुपारवश्यंअद्यमेदृष्टं) हे रघुवंश शिरोमणि आप को भक्त के परवश आजु हमने देखा अरु हम कैसी हैं (पतिपुत्रधनादिपुसंसारसागरेमग्ना) पति पुत्र धनादि विषे जो सनेह सोई है अगाध जल जामें ऐसे संसार रूप समुद्र में बूड़ी परीहैं अर्थात् आप के उदर में अनेकन ब्रह्मांड परम स्वरूप रज कणकी समान देखातेहैं ऐसी

जाकी महिमा सोई परब्रह्म आप मेरे तुच्छ उरते पुत्र ह्वै उत्पन्न भयो यह लोकन में अपनी उपहास करिरहेउ है परंतु इसमें भी आप की भक्तिवात्सल्यता दर्शित होती है काहे ते हे रघूत्तम भाव जो अपनी ऐश्वर्य त्यागि मेरेउदर द्वारा रघुवंश नाथ भयो इस आचरणतेआजु हम प्रसिद्ध देखा कि आप अपने भक्तनके आधीन हैं भाव जो भक्तकहैं सोईकरतेहो यहतो अनुग्रह मेरेऊपर अरु मैं कैसी अल्पज्ञहौं कि पतिपुत्र धनादि में सनेहरूप जल जामें ऐसे संसारसागरमें बूड़ी परी हौं २७ ॥

भ्रमामिमाययातेऽद्यपादमूलमुपागता ॥ देवत्वद्रूपमेतन्मेसदातिष्ठतुमानसे ॥ २८ ॥ आवृणोतुनमांमायातवविश्वविमोहिनी ॥ उपसंहरविश्वात्मन्नेतद्रूपमलौकिकम् ॥ २९ ॥ दर्शयस्वमहानंदबालभावंसुकोमलम् ॥ ललितालिङ्गनालापैस्तरिष्यंत्युत्कटंतमः ॥ ३० ॥

(तेमाययाभ्रमामि) आपकी माया करिकै भ्रमती हौं (अद्यपादमूलंउपागता) आजु आप के पद कमलों के समीप प्राप्त भई ताते जानती हौं कि पार पावेंगी इति शेषः (देवएतत् त्वद्रूपंमेमानसेसदातिष्ठतु) हे देव यह जो आप को रूप है सो मेरे मनमें सदा वसै अर्थात् पुत्रादि सनेहरूप जल संसार सागर में परी आपकी माया करिकै भ्रमत फिरती रहों ऐसी कछु पुण्य उदयभई जाते आजु आप के पद कमलों के समपि प्राप्तभई भा० पुत्र ह्वै प्राप्त भयो इति सम्बन्ध वलते विश्वास भयो कि भवसागरते पार जाउँगी सोई दृढ़ता हेत प्रार्थना करतीहौं हे देव यह जो ऐश्वर्य सहित आप को अद्भुतरूप है सो मेरे मनमें सदावसै २८ (विश्वविमोहिनीतवमायामांआवृणोतुन) संसार को मोह न करनहारी जो आपकी माया है सो मोको अब कभी आवरणन करै (विश्वात्मन्एतत् अलौकिकंरूपंउपसंहर) हे विश्वात्मन् यह अपना अलौकिकरूपको लोप कीजिये अर्थात् कौशल्या जी कहत कृपादृष्टि यह प्रार्थना सुनिये जो आपकी अविद्यामाया सब संसार को विशेषि मोह के वश करि आत्मरूप को भुलाय देती है सो मेरे आत्मरूप को अब आवरण कबहूँ न करिसकै भाव आपकी माधुर्य लीला देखि भूलौं न दूसरे इस रूप को तेज लोकजन नहीं सहिसकैहैं ताते यह अलौकिक रूप लोप कीजिये २९ (सुकोमलंबालभावंमहाआनन्दम्दर्शयस्व) सुन्दर कोमल स्वरूप ताहि धारण करि बाल भाव को जो आनन्द है ताहि देखाइये जाको (ललितआलिंगनआलापैःतमःउतकटंतरिष्यन्ति) सुन्दरी भांति उर में लगाय प्रीति समेत वार्ता करि लोग मोहांधकार महामत्त को भी तरि जायँगे अर्थात् कौशल्याजी कहत हे प्रभु यह जो चतुर्भुज रूप है ताको त्यागि यह जो प्रसूत काल की समय है ताकी अनुकूल जामें सर्वांग सुठौर बने कोमल इति सुकोमल शिशु स्वरूप धारण करि जो पुत्रभये पर माता पिता को सुखहोताहै इत्यादि बाल भावको आनंद देखाइये भाव ऐश्वर्य छिपाय माधुर्यरूपते शिशुकेलि कीजिये ज्यहिरूपको ललित आलिंगन अर्थात् सुन्दरी भांति प्रेम समेत उरमें लगाय पुनः आलाप अर्थात् लाड़ दुलारमय वार्ता करि इत्यादि आचरण आपके संग करिकै पुर परिजन संबंधीलोग मोहांधकार महामत्तको तरिजायँगे भाव अज्ञानता रहित शुद्ध आत्मरूपते आपके अनुरागी होइँगे ३० ॥

श्रीभगवानुवाच ॥ यद्यदिष्टंतवास्त्यम्बतत्तद्भवतुनान्यथा ॥ अहंतुब्राह्मणापूर्वंभूमेर्भारापनुत्तये ॥ ३१ ॥ प्रार्थितोरावणंहंतुंमानुषत्वमुपागतः ॥ त्वयादशरथेनाहं

तपसाराधितःपुरा ॥ ३२ ॥ मत्पुत्रत्वाभिकांक्षिण्यातथाकृतमनिंदिते ॥ रूपमे -तत्त्वयादृष्टंप्राक्तनंतपसःफलम् ॥ ३३ ॥

कौशल्याके वचन सुनि भगवान् बोले (हेअंबतवयत्यत्इष्टंअस्ति) हेमातः तुमको जो जो इच्छाहै (तत्तत्भवतुअन्यथान) तौनतौनहोई और कछु न होई पुनः मेरे अवतीर्ण होनेकोहेतुसुनिये (तुभूमेः भारअपनुत्तयेअहंपूर्वंब्रह्मणा) पुनः भूमिको भार उतारने अर्थ हम पूर्व ब्रह्माकरिकै ३१ (प्रार्थितः) प्रार्थना किये गये (रावणंहन्तुंमानुषत्वंउपागतः) रावणजो है ताहि मारिवे को मानुष तनुधरिबेको विचार किया पुनः (त्वयादशरथेनपुरातपसाअहंआराधितः) फिरितुमकरिकै सहित दशरथ ने पूर्व जन्म विषे तपस्या करिकै मेरा आराधन किया ताते हम प्रसन्न ह्वै वर दिया भावजो इच्छाहोय सो मांगौ ३२ (हेअनिन्दिते मत्पुत्रत्वंअभिकांक्षिण्यातथाकृतं) हे निंदारहित तुमने मोको पुत्र होनेकी इच्छा किया तैसेही मैंने किया भाव तुम्हारा पुत्रभया अर्थात् कौशल्याजीके वचनसुनि भगवान्बोले कि हेमातः तुमको जो जो इच्छाहै सो सो होई तुम्हारे मनोरथते बाहेर और कछुनहोईअबमेरे अव- तीर्ण होने को हेतु सुनिये प्रथमतौ तुम्हारा मनोरथ पूर्णकरिवे हेत पुनः भूमिको भारउतारनेअर्थ हम पूर्वहीं ब्रह्माकरिकै प्रार्थना कियेगये भावराक्षसोंका राजादुष्ट रावण महापाप करता ताते भूमि पै बडाभार है अरुरावण की मृत्यु मनुष्य के हाथ लिखीहै ताते आप मनुष्य तन धरि दुष्टको मारि भूभार उतारिये इत्यादि ब्रह्माकी प्रार्थनामानि रावणके मारिवेहेत मानुषतन धरिबेको विचार किया पुनः जो तुम्हारे पुत्रभये ताको हेतु यहहै कि पूर्व जन्ममे तुम अदिति कश्यप दशरथ दोऊ तपस्या पूर्वक मेरा आराधना किहेउ मैं प्रसन्नह्वै बरदिया कि जो इच्छाहोइ सो मांगो तब तुममांगा कि आप हमको पुत्रह्वैकै प्राप्तहोउ इति जो तुम को इच्छारही सो हम किया तुमको पुत्रह्वै मिले पुनः (एतत्रूपंत्वयादृष्टं) यह जो मेरा अपूर्वरूपहै ताहि तुमने देखा सो (प्राक्तनंतपसःफलं) पूर्व जन्ममें जो तपस्या कियाहै ताको फलहै मेरेरूपको दर्शन ३३ ॥

मद्दर्शनंविमोक्षायकल्पतेह्यन्यदुर्लभम् ॥ सम्वादमावयोर्यस्तुपठेद्वाशृणुयादपि॥ ३४ ॥ सयातिममसारूप्यंमरणेमत्स्मृतिंलभेत् ॥ इत्युक्त्वामातरंरामोबालंभूत्वा रुरोदह ॥ ३५ ॥ बालत्वेपीन्द्रनीलाभोविशालाक्षोतिसुन्दरः ॥ बालारुणप्रती काशोलालिताखिललोकपः ॥ ३६ ॥

(मद्दर्शनंविमोक्षायकल्पतेहि) मेरा जो दर्शन है सो विशेषि मोक्षके अर्थ जानो निश्चयकरि (अन्यदुर्लभम्) औरनको दुर्लभहै अर्थात् भगवान् कहत हे मातः जो पूर्व बरदान दिया ताते तुम्हारे पुत्रभये अरु यह जो मेरा अपूर्वरूप तुमने देखा सो पूर्व जन्ममें जो तपस्या किया ताको फल है काहेते मेरा जो दर्शनहै सो विशेषि मोक्षके अर्थ जानो भाव दर्शन होतही सब बिकारनाशह्वै जीव आत्मरूपको प्राप्तहोत ताते मेरे सनेहिनको दर्शन सुलभहै निश्चयकरि अरु अन्य जेशरणते विमुख हैं तिनको दुःखौकरि दर्शन लाभ नहीं है (तुआवयोःसंवादं) पुनः हमारा तुम्हारा जो यह संवादहै ताहि (यःपठेत्अपिवाशृणुयात्) जो पढ़ै निश्चयकरि वा सुनै ३४ (सममसारूप्यंयातिमरणेमत्स्मृ तिंलभेत्) सो मेरे सारूप्य मुक्तिको प्राप्तहोगा अरु मरणसमय सबकी सुधि त्यागि मेरी स्मृतिलाभ होगी (इतिउक्त्वामातरं) ऐसा कहि माताप्रति (रामःबालंभूत्वारुरोदह) रघुनाथजी बालकह्वैकै रोवनेलगे अर्थात् मेरा तुम्हारा संवाद जो पढ़ी वा सुनी सो मेरे सरूपवत्रूप पाइलोक बंधनते

छूटि अंतकालमें हमारही ध्यानरही इति मुक्तिको हेतुहै ऐसा माता सों कहि रघुनाथजी बालकह्वै रोवनेलगे ३५ (बालत्वेऽपिइन्द्रनीलाभो) बालरूपभये पर भी श्रीरघुनाथजी कैसेदेखाते हैं इन्द्र-नील जो श्याममणितद्वत् श्यामतनुमें प्रभा (विशालअक्षःअतिसुन्दरः) बड़े लंबायमाननेत्र अत्यंत सुन्दर (बालअरुणप्रतीकाशः) प्रातःकालके सूर्यनकी ऐसी प्रकाशतनुमें (अखिललोकपःलालिता) इन्द्रादि समग्रलोकपालन को लालन पालन करने वाले अर्थात् गिरिजाप्रति शिवजी कहत कि बालरूप भये पर भी श्रीरघुनाथजी कैसे देखाते हैं कि इन्द्रनील जो श्याममणि ताकी समान चिक्कन चमकदार कोमल श्यामतनुमें प्रभा बड़े लंबायमान नेत्र अत्यन्त सुन्दर प्रातःकालके सूर्यन कैसी प्रकाशतनु में इन्द्रादि समग्रलोकपालनको लालन पालन करनेवाले तेई प्रभुबालकह्वै लालन पालनकिये जायँगे इति शेषः ३६ ॥

अथ राजादशरथःश्रुत्वापुत्रोद्भवोत्सवम् ॥ आनन्दार्णवमग्नोऽसावाययौगुरुणा सह ॥ ३७ ॥ रामंराजीवपत्राक्षंदृष्ट्वाहर्षाश्रुसंप्लुतः ॥ गुरुणाजातकर्माणिकर्त व्यानिचकारसः ॥ ३८ ॥

(अथ राजा दशरथः पुत्रउद्भव उत्सवं श्रुत्वा) अब राजा दशरथ भी पुत्र उत्पन्न भयेको उत्सव सुने (आनन्द आर्णव मग्नः) आनन्द समुद्रमें बूड़े (गुरुणासह असौ आययौ) गुरु वशिष्ठ सहित महाराज वहां को आये जहां जन्म भया अर्थात् सेवकन द्वारा अब महाराज दशरथभी पुत्र कौशल्या-नन्दन उत्पन्न भये को उत्सव सुने, ताते आनन्द समुद्रवत् उमगा तामें बूड़े गुरुवशिष्ठ को बुलाय साथलैके महाराज वहां को आये जहां जन्म भयाहै ३७ (राजीव पत्र अक्षं रामं दृष्ट्वा हर्ष आश्रु संप्लुतः) कमलपत्र सम नेत्र जिनके ऐसे रामतिनहिं देखि आनन्द उमँगि नेत्रन में आंसु चले (गुरुणा) गुरुकरण है ताते तृतीयादिये भाव गुरुकी आज्ञा करिकै (जातकर्माणि) बहुबचन देने को भाव चारिहू पुत्रन के जातकर्म करना है अथवा आभ्युदयिक श्राद्ध जातकर्म पष्ठी नाम-करण पर्यंत यावत् कर्म करनाहै ते सब (कर्तव्यानि) जैसी कर्तव्यता करना चाहिये (सःचकार) सो करते भये अर्थात् रूपारस भरे कमल दल सम नेत्र जिनके ऐसे राम श्रीरघुनंदन तिनहिंदेखि प्रेमानंद उमँगि महाराज के नेत्रन में आँसु बहि चले पुनः गुरुकी आज्ञा करिकै अभ्युदयिक श्राद्ध जातकर्मादि जैसी कर्तव्यता करना चाहिये सो करते भये प्रथम अभ्युदयिक अर्थात् नांदीमुख श्राद्ध यथा पूर्व मुखंस्थित्वा सर्वत्र सव्येनैव कर्तव्यं गौर्य्यादिचतुर्दश मातारः पूजयित्वा गणेशवरुणौ पूजयित्वा पिष्टस्येबेदरा निरमाय तेषु तिलांदाधे हरिद्राकंच प्रतिक्षिप्य दुर्वासने नवधा विभज्य देवतीर्थे नैवकर्तव्य तामात्रादित्रय पित्रादित्रय महामात्रादित्रय गंधदूर्बाक्षत ताम्बूलैः संपूज्य संकल्प्य दक्षिणा इत्यादियाको नाम मूलमें नहीं है ताते गुप्त कहा अरु जातकर्म को नाम है सो प्रसिद्ध करि कहते हैं प्रथम आचार्य अरु पिता सूतिका गृहबिषे जाय सोने की बस्तुमें घृत सहत लगाय बारबार बालक के मुख में लगावत भूय इति मंत्र पढ़ि पुनः कुशसों जल बालकपर छिर-कत अग्नि इति मंत्र पढ़ि पुनः बालक के दहिने काने लगआठौ कंडिका पढ़त पुनःपंच विप्रान्स्था-पयाति श्रित इति मंत्र सों देशं अभिमंत्रयाति बालंअभिमंत्रयाति मातरं अभिमंत्रयति पुनः माता दोनी में जल लै आपन दक्षिण स्तन धोय बालक की नालपर डारत आपो इति मंत्र पढ़त वर्ण दक्षिणा दै पुनः भूमि पंच संस्कार करि बेदी बनाय तापर दोनी में अग्नि धरि गणेश गौरी बरुण

पूजि पीपरि सरसों घृत मिलाय सांडा इति मंत्र सों सात आहुतीदेत पुनः सो मूठी अन्न भरि, पूर्ण पात्रसद्रव्य विप्रको देत पुनः पुत्र पिता अभिषेक तिलदान दै शिवमंत्र सों सूत अरु छूराकी पूजाकरि सूतसों नाल बांधि छूरा सो छीनत तवते सूतक मानत सो कीन्हें ३८ ॥

कैकेय्यांचाथभरतमसूतकमलेक्षणः ॥ सुमित्रायांयमौजातौपूर्णेन्दुसदृशाननौ ॥ ३९ ॥ तदाग्रामसुवर्णानिवासांसिरत्नानिच। सुरभीश्शुभास्सहस्राणिब्राह्मणेभ्यो मुदाददौ ॥ ४० ॥

(चाथकैकेयीकमलेक्षणंभरतंअसूत) पुनः ताही समय में कैकेयी जी कमल समहैं नेत्र जिनके ऐसे जो हैं भरत तिनहिं उत्पन्न करती भईं पुनः सुमित्रायां पूर्णइन्दु सदृश आननौ यमौ जातौ पुनः सुमित्रा विषे पूर्णचंद्रमा सममुख है जिनको ऐसे द्वै पुत्र उत्पन्न भये यमौ यथा मूर्तिमान् यम है अर्थात् योगाभ्यास द्वाराजो शरीर साधन की अपेक्षा राखि जो नित्य कर्म करना तिनको यम कही यथा शरीर साधनापेक्षं नित्यं यत्कर्म तद्यमः इत्यमरः अर्थात् अहिंसा सत्यआचरण अस्तेय अर्थात् चोरी न करना ब्रह्मचर्य परिग्रह विषय पापादि को त्यागे रहना इति यम है यथा पातांजलि योगशास्त्रे अहिंसासत्यमस्तेयं ब्रह्मचर्यपरिग्रहा यमा इत्यादि जोयम हैं सोई यथा द्वै मूर्तिधरिप्रकट भये भाव सब विकार रहित अंतर बाहेर शुद्ध हैं ३९ (तदाग्रामसुवर्णानिचरत्नानिवासांसिसुरभी श्शुभाः) तासमयमें ग्राम अरु अशर्फी आदि सुवर्ण पुनः हीरा मोती आदि रत्न दुशालादि वसन गौवैं मंगलीक इत्यादि (सहस्राणिब्राह्मणेभ्योमुदाददौ) हजारन ब्राह्मणन के अर्थ आनंद पूर्वक देते भये अर्थात् जब चारि पुत्र भये तासमयमें ग्राम अशर्फीरत्न वसन गौवे इत्यादि हजारन ब्राह्मणके अर्थ आनन्द समेत महाराज दान दीन्हें ४० ॥

यस्मिन्रमंतेमुनयोविद्ययाऽज्ञानविप्लवे॥तंगुरुःप्राहरामेतिरमणाद्रामइत्यपि ४१

अवनाम करण कहते हैं यथा (अज्ञानविप्लवे) अज्ञान को तरिजाने निमित्त (विद्ययामुनयः यस्मिन्रमन्ति) विद्याकरिकै मुनि जन ज्यहि विषे रमते हैं (तंगुरुःरामेतिप्राह) ताहि गुरुवशिष्ठ राम इति नाम कहते भये अथवा (रमणात्रामइतिअपि) जाको सुंदररूप देखि सबरमै इतिरमणते राम इति निश्चय कही अर्थात् अविद्या के व्यापारकरि जो मोहरूप अज्ञानहै यथा अविद्याको व्यापारहै शब्द स्पर्शरूप रसगंध मैथुनादि जो इन्द्रियनकी विषय हैं तिनको सेवतसंते काम बढ़त कामना हानिते क्रोधहोत क्रोधवेगमें मनपरे मोहहोत अर्थात् आत्मरूप भूलिदेहको सत्यमानि ताके सुख उपायमें लगेरहना इत्यादि मोहरूप अज्ञान समुद्रतामें जीव बूड़ा पराहै ताकोविशेषि पारजानेहेत विद्याके व्यापार करिके जो ज्ञानहै यथा विद्याकोव्यापारहै विवेक अर्थात् देह व्यवहार असार जानित्यागि आत्मरूप सारांशजानि ग्रहण करना पुनःविरागलोक सुख त्यागना पुनः मुमुक्षुता मेरी मुक्ति निश्चयहोवे पुनः षट्संपत्ति यथाशम वासनात्याग दमइंद्रियनकी वृत्तिरोकना उपरामविषयको पीठिदेना तितीक्षा दुःख सुखसम जानना श्रद्धागुरुवेदांत वाक्यमें विश्वास राखना समाधानमन एकाग्रराखना इत्यादि करि जो आत्मज्ञानत्यहि करिके मुनिजन ज्यहिविषेरमतेहैं भावपरमात्मरूप की समाधि आनन्दमें मग्नरहते हैं सोई परमात्म रूप ये हैं अस विचारि गुरु वशिष्ठ राम ऐसा नाम कहा अथवा जो कौशल्या नंदन ह्वै अवतीर्ण भये तिनके स्वरूप में कोटिन कामदेवकी ऐसी शोभा है सो देखि मुक्त मुमुक्षु बद्ध विषयी विमुख सबजा रूप में रमते हैं भाव देखत ही आसक्त ह्वै

जाते ताते इनको निश्चय करि राम इति नामहै यथा॥ महारामायणेकोटिकन्दर्पशोभाढ्येसर्वाभरण भूषिते । रम्यरूपार्णवेरामरमंतिसनकादयः ॥ ब्रह्मज्ञानातिमग्नोयोजनकोयोगिनांवरः । हित्वारमंतितं रामेरमुक्रीडाततोऽनघे॥राक्षसीघोररूपाचदुष्टत्वंकर्तुमागता॥साप्यासीद्रमितारामेपतिवत्काममोहिता॥ चतुर्दशसहस्राश्चराक्षसाखरदूषणाः ।मोहितारामसद्रूपेरमुक्रीडातदुच्यते ॥ रमितारामसद्रूपेराक्षसारा वणादयः ।इत्यादि कहां तक कहै ४१ ॥

भरणाद्भरतोनामलक्ष्मणंलक्षणान्वितम् ॥ शत्रुघ्नंशत्रुहंतारमेवंगुरुरभाषत ॥ ४२ ॥ लक्ष्मणोरामचंद्रेणशत्रुघ्नोभरतेनच ॥ द्वंद्वीभूयचरंतौतौपायसांशानुसारतः ॥ ४३ ॥

(भरणात्भरतःनामलक्षणान्वितम् लक्ष्मणम्शत्रुहंतारंशत्रुघ्नएवंगुरुःअभाषत्) विश्वको भरण भाव जीव मात्र के परिश्रम के फलदाता धर्मरूप जो कैकेयी नन्दन ताको भरत ऐसा नाम पुनः शांति समता शील सन्तोष क्षमा दया धीर्य ज्ञान भक्ति इत्यादि शुभ लक्षणन युक्त भक्तिके आचार्य सुमित्राके बड़े पुत्र को लक्ष्मण ऐसा नाम है पुनः जाको नाम लेत शत्रु को नाश होत वा भक्तन के शत्रु कामादिकनके नाश करता भक्तनके रक्षक सुमित्राके छोटे पुत्र को शत्रुघ्न ऐसा नाम है इत्यादि चारौ पुत्रन के नाम गुरु वशिष्ठ कहत भये ४२ (तौपायसअंशअनुसारतः) तौन जो द्वौ सुमित्रा-नन्दन हैं ते जाउरिभाग अंश अनुसारते (द्वंद्वी) दूसरे के संग (भूयचरंतौ) बहुत प्रीति पूर्वक विचरते हैं कैसे दूसरे के संग (लक्ष्मणःरामचन्द्रेण) जो कौशल्याको दिया पायस भाग है ताहीअंश ते लक्ष्मण श्री रघुनाथ जी करि संग लिया (चशत्रुघ्नःभरतेन) जो कैकेयी जी को दिया भाग है ताही अंश ते शत्रुहन हैं ते भरत करि संग लिये भाव अनुचर भये ४३ ॥

रामस्तुलक्ष्मणेनाथविचरन्बाललीलया॥रमयामासपितरौचेष्टितैर्मुग्धभाषितैः॥ ४४ ॥ भालेस्वर्णमयाश्वत्थपर्णमुक्ताफलप्रभम् ॥ कण्ठेरत्नमणिव्रातमध्येद्वीपि नखाञ्चितम् ॥ ४५ ॥ कर्णयोस्स्वर्णसम्पन्नरत्नार्जुनसटालुकम् ॥ सिंजानमणिमं जीरकटिसूत्रांगदैर्वृतम् ॥ ४६ ॥

(अथरामःतुलक्ष्मणेनबाललीलयाविचरन्) अब रघुनाथजी पुनः लक्ष्मण सहित धावन गिरन उठन किलकनिआदि बाललीला करिकै विचरतेहैं (चेष्टितैःमुग्धभाषितैःपितरौरमयामास) मुस्कानि आदि अंग चेष्टा करिकै तो तरी बोलनि करि माता पिता जो हैं तिनहिं रमावते हैं भाव आसक्त ह्वै देखते हैं अर्थात् लषणलाल सहित रघुनाथ जी बाल केलि करत संते अंगचेष्टा तोतरी बोलनि करि माता पिताको मनहरे लेते हैं ४४ (अश्वत्थपर्णस्वर्णमयमुक्ताफलप्रभम्भाले)पीपर पत्रकी आकार सोने सों बना तामें मोती गुच्छन की प्रकाश ह्वै रही ऐसा छोटा किरीट माथे पर शोभित (रत्नमाणिव्रातमध्येद्वीपिनखाञ्चितम्कंठे) सोना मोती मूँगादि रत्नहीरामरकतादिमणि समूहताके बीच व्याघ्र नखगुहा ऐसा कठुला कंठमें शोभित४५ (अर्जुनसटालुकम्रत्नस्वर्णसंपन्नकर्णयोः) अर्जुन वृक्षके कच्चेफलकी आकार चौड़ा नोकदार टेढ़ामोतीआदि रत्नजटितसोनेसों परिपूर्णबने ऐसेकुण्डल दोऊकाननमें शोभित(मणिमञ्जीरसिंजान्)मणिजटित जातरूपमयबने नूपुर पांयनमेंशब्दकारिरहेहैं (कटिसूत्रअंगदैःवृतम्) कटि करधनीकरिकै भुजा बहूंटन करिकै घेरेहैं अर्थात् येद्वे श्लोकनमें सर्वांग भूषण कहे यथा पीपर दलाकार सोने सों बना मोतिनयुत किरीट शीशपर रत्नमणि समूह बघनहा

युत गुहा कठुला कण्ठ में अर्जुनवृक्ष के कच्चे फल के आकार सोने ते बने रत्नजटित कुण्डल दोऊ कानन में शोभित मणिजटित जातरूपमय घने नूपुर पायन में शब्द करि रहे हैं तथा मणि जटित कञ्चन मय करधनी कटिदेश को घेरे तथा मणिजटित सोने के बहूंटा भुजन में बांधे शोभा दै रहे हैं इत्यादि सर्वांग विभूषित कोमल सुन्दर श्यामतन इति शेषः ४६ ॥

स्मितवक्त्राल्पदशनमिन्द्रनीलमणिप्रभम् ॥ अङ्गणेरिङ्गमाणंतंतर्णकाननुसर्वतः ४७ दृष्ट्वादशरथोराजाकौशल्यामुमुदेतदा ॥ भोक्ष्यमाणोदशरथोराममेहीतिचास कृत४८ आह्वयत्यतिहार्देनप्रेम्णानायातिलीलया ॥ आनयेतिचकौशल्यामाहसा सस्मितासुतम् ४९ धावत्यपिनशक्नोतिस्प्रष्टुंयोगिमनोगतिम् ॥ प्रहसन्स्वयमा यातिकर्दमांकितपाणिना ५० ॥

(स्मितवक्त्रअल्पदशनंइन्द्रनीलमणिप्रभम्)मुस्कानियुत मुखमें छोटे छोटे दांत श्याममणि सम प्रभा जाके तनमें (तंतर्कान्अनुअंगणेसर्वतःरिंगमाणं) तौन श्रीरघुनाथजी गोवच्छन के पाछे पाछे अँगनामें सर्वत्र घूमिरहे हैं ४७ (तदाकौशल्याराजादशरथः दृष्ट्वामुमुदे) जब आंगनमें घूमतरहे ताहीसमय मे कौशल्याजी अरु दशरथ श्रीरघुनाथजी को देखिकै आनन्द भये (भोक्ष्यमाणोदशर थः) भोजन करत समय दशरथ महाराज (रामंएहिइतिचअसकृत्) राम हियांआवौ इत्यादि बार-म्बार पुकारते हैं ४८ (अतिहार्देनप्रेम्णाआह्वयतिलीलयाआयातिन) अत्यन्त स्नेहकरिके प्रेम सहित महाराज बुलावते हैं परन्तु खेल करिकै आवते नहीं हैं (कौशल्यांआनयइतिच) कौशल्या प्रति महाराज कहे कि तुम बुलायलावो इत्यादि सुनि पुनः (सासस्मितासुतंआह) सो कौशल्या सहित मुस्कानि वचन पुत्र प्रति आवनेको कहे तबहूं न आये अर्थात् भोजन हेत महाराज प्रीति पूर्वक बुलाये परन्तु खेलमे आसक्त ताते न आये तब कौशल्याको पठाये सोभी बुलाये तबहूं न आये आवते देखि भागि इतिशेषः ४९ (योगिस्प्रष्टुमनोगतिम् अपिनशक्नोति) योगिनकी पुष्ट थिर मनकी जो गति सोभी जहां नहीं जायसक्ती है ताही प्रभुको पकरने हेत (धावति) कौशल्याजी धाईं तबहूं न मिले (प्रहसन्स्वयंआयाति) हँसिकै प्रभु आपही आये कैसेहैं (कर्दमांकितपाणिना) कीचरके चिह्न हाथनमें सहित अर्थात् जिनको योगी ध्यानमें नहीं पावत तिनको भक्तिवशते कौशल्या पकरने धाईं माताको सनेह देखि आपही आये कीचड़ में जो खेले हैं सो हाथों में लगा है भाव सब देह माटी भरे आये ५० ॥

किंचिद्गृहीत्वाकवलंपुनरेवपलायते॥ कौशल्याजननीतस्यमासिमासिप्रकुर्वती५१ वायनानिविचित्राणिसमलंकृत्यराघवम्॥ अपूपान्मोदकान्कृत्वाकर्णशष्कुलिका स्तथा५२ कर्णपूरांश्चविविधान्वर्षवृद्धौचवायनम्॥गृहकृत्यंतयात्यक्तुंतस्यचापल्य कारणात् ५३ ॥

(किञ्चित्कवलंगृहीत्वापुनःएवपलायते) जब माताकेसाथआये तब महाराजहँसिकैभोजनहेत समीप बैठारिलिये तब थारते थोराकौर लैकै मुखमें डारे अवसर पाइपुनः भागिगये इति बालकेलि पुनः माताकृत उत्सव कहत (कौशल्याजननीतस्यरामस्य) कौशल्यामाता तिन रघुनाथजी को (मासिमासिप्रकुर्वती) महिनामहिनापर जब प्रभुके जन्मको नक्षत्र पुनर्वसु आवत तब ग्रह व्याधि इत्यादि अधिक भय होत ताके निवारण हेत उत्सव करतीहै ५१ क्या उत्सवमें करतीहै (राघवं

अलंकृत्य) उबटि स्नान कराय नवीन वसन भूषण पहिराय इति सम्पूर्ण प्रकार रघुनाथजीको अलंकृत करिकै पुनः (अपूपान्मोदकान्कृत्वा) चौरीठा भूजि घृत मिश्री मेवामिलाय लड्डूबनाये (तथाकर्ण शष्कुलिका) तैसेही पेराक सुहारीआदि (विचित्रबायनानि) बहुतभांतिके पकवान घरनमें बायनबांटती हैं अर्थात् रघुनाथजीको मंगल स्नानकराय नवीनभूषण बसन पहिराय पुनः लड्डू पेराक पूरी कचौरी पुवा इत्यादि बहुत भांति पकवान घरनमें बायन बांटे इत्यादि प्रतिमास उत्सव किये पुनः वर्ष पूर्ण भयेपर बर्ष उत्सव आगे कहत ५२ (कर्णपूराश्चविविधा) पेराक पूरीआदि पुनः अनेक भांति पकवान (वर्षवृद्धौचबायनम्) बर्ष बढ़त समय प्रतिसम्वत बायन बांटतीहैं भाववर्ष पूर्णभये दूसराबर्ष लाग त्यहि दिन वर्षगांठि उत्सव करतीहैं अर्थात् कुलमान्य बंधुवर्ग पुरोहित ब्राह्मणादि बुलाय मंगल स्नानकराय रघुनाथजी को नबीन भूषण बसन पहिराय बैठारि देवार्चन हवन रक्षा अभिषेक विप्रभोजन दक्षिणा पुनः सबको भोजन नेग निवछावरिदै नृत्य गान जागरण करि पीछे पेराक पूरी पुवा कचौरी आदि अनेक पकवान घर२ बायन बांटत इत्यादि प्रतिसम्वत् उत्सव होताहै (तस्यचापल्यकारणात्तयागृह कृत्यंत्यक्तम्) रघुनाथजी के चंचलता अधिकहै त्यहि कारण ते कौशल्या करके घरको काज त्याग रहत भाव कछुकार्य बिगारि न डारैं इसहेत देखतैरहतीहैं कैसी चापल्यता करतेहैं सोआगेकहत५३ ॥

एकदारघुनाथोऽसौगतोमातरमंतिके॥भोजनंदेहिमेमातर्नश्रुतंकार्य्यसक्तया५४॥ ततःक्रोधेनभांडानिलगुडेनाहनत्तदा ॥ शिक्यस्थंपातयामासगव्यंचनवनीतकं ५५ लक्ष्मणायददौरामोभरतायथाक्रमम् ॥ शत्रुघ्नायददौपश्चाद्दधिदुग्धं तथैवच ५६ ॥

(एकदा असौरघुनाथः) एक समयमें रघुनाथजी (मातरंअन्तिकेगतः) माताकेपासमें गये बोले (मातःमेभोजनंदेहि) हे मातः मोको भोजन देहु (कार्यसक्तयानश्रुतं) कार्य में लगीरहें त्यहि करिकै नहीं सुने अर्थात् एक समयमें रघुनाथजी माता कौशल्याके पास जायकहे कि हेमातः भूखलगी मोको शीघ्र भोजन देहु परन्तु कौशल्याजी घरके कछु कार्य में मन लगायेरहीं ताते रघुनाथजी को कहा नहीं सुने ५४ (ततःक्रोधेन) तब क्रोध करिकै (भांडानि) दधि दुग्धभरे पात्र तिनहि (लगुडेनअहनत्) लाठी करिकै फोरिडारे (तदाशिक्यस्थंगव्यंचनवनीतकंपातयामास) तासमय में शिकहरपर धराहुआ जो दधि दुग्ध पुनः माखन सो गिरिपरा अर्थात् जब भोजनमांगे अरु माता ने न सुना तब रघुनाथजी क्रोध करिकै दधि दुग्धके भरे पात्र तिनहिं लाठी करि फोरिडारे तासमय शिकहरपर धराहुआ जो दधि दुग्ध अरु माखन सोगिरिपरा ५५ (रामःयथाक्रमम्भरतायलक्ष्मणाय ददौ) रघुनाथजी यथाक्रम भरत के अर्थ दीन्हें लक्ष्मणके अर्थ दीन्हें (चतथाएवदधिदुग्धम्) पुनः ताही प्रकार निश्चय करि दधि दूध जोहै ताहि (पश्चात्शत्रुघ्नायददौ) पाछे शत्रुहनके अर्थ देते भये अर्थात् जा भांति छोटाई बड़ाई भाइनमेंहै ताही क्रमते रघुनाथजी प्रथम दधि दुग्ध माखनादि आप लिये तब भरत को दिये पुनः लक्ष्मणको दिये पुनः ताही भांति निश्चयकरि दधि दुग्धमाखन सबते पाछे शत्रुहन को दिये इस भांति सब भाई दधि दुग्ध माखनादि भोजनकिये ५६ ॥

सूदेनकथितंमात्रेहास्यंकृत्वाप्रधाविता ॥ आगतांतांविलोक्याथततःसर्वैःपलायितम् ५७ कौशल्याधावमानापिप्रस्खलंतीपदेपदे ॥ रघुनाथंकरेधृत्वाकिंचिन्नोवाचभामिनी ५८ बालभावंसमाश्रित्यमंदमंदंरुरोदह ॥ तेसर्वेलालितामात्रागाढ

मालिंग्ययत्नतः ५९ एवमानंदसंदोहजगदानंदकारकः ॥ मायाबालवपुर्धृत्वारम यामासदम्पती ६० ॥

(सूदेनमात्रेकथितं) रसोईदारने माताके अर्थ सबहाल कहा (हास्यंकृत्वाप्रधाविता) हँसिकरि माता पुत्रनको पकरने हेत दौरीं (अथतांआगतांविलोक्य) अब तामाता|आवतको देखि (ततःसर्वैः पलायितम्) तब सब करिकै सहित रघुनाथजी भागे अर्थात् पात्रफोरनेकोहाल रसोईदारने माताते कहा सो सुनि हँसिकरि कौशल्या धाई तिनको आवत देखि सब भागे ५७ (कौशल्याधावमानाञ्च पिपदेपदेप्रस्खलंती) कौशल्या दौरती हैं परन्तु निश्चय करि एक एक पदपर गिरि गिरि परती हैं (रघुनाथंकरेधृत्वाभामिनीकिंचित्नउवाच) रघुनाथ जो हैं तिनहिं हाथेमें पकरिलिया परंतु भामिनी कौशल्या स्नेहवश कछु न कहिसकीं अर्थात् कौशल्या दौरी परन्तु दीर्घायु सुकुमारी शैथल्यताते प्रति पद उठावत में निश्चय गिरि गिरि परत देखि श्रमता न सहिसके खड़े रहिगये तब रघुनाथजीको पकरि तौ लीन्हें परन्तु स्नेहते कछु कहिनसकीं५८(बालभावंसंआश्रित्य) लरिकाईस्वभावके अनुसार रोदन मुख्यहै ताते (मंदंमंदंरुरोदह) धीरा धीरा रोवनेलगे (तेसर्वेमात्रालालिता) तेसब बालक माता करिकै दुलारे गये कैसे (यत्नतःगाढंआलिंग्य) युक्ति सों उठाय अत्यंत उरमें लगाय लीन्हीं अर्थात् लरिकाई स्वभावते रघुनाथजी धीरा धीरा रोवनेलगे देखि भयभीत जानि माता वात्सल्य ताते दुलारपूर्वक उठाय उरमें लगाय लीन्हे ५९ (एवंजगत्आनन्दकारकः) इसी भांति जगत्में भक्तजनोंको आनंद करने हेत (आनन्दसंदोहमायाबालवपुर्धृत्वा) आनन्दहै समूह जामें सो सच्चिदानन्द घनमाया करिकै बालस्वरूप धारण करि (दंपतीरमयामास) दशरथ कौशल्याको रमावतेहैं अर्थात् जैसी बालकेलि पूर्वकहिआये इसीभांति जगत्में भक्तजनोंको आनन्दकरने हेत आनन्द समूह प्रभु माया करिकै अर्थात् शिशु बालकुमार पौगण्डादि अवस्था पूर्वक बालस्वरूप धारण करि बालकेलि आनंद देखाय माता पिता दोऊको मन अपने रूपमें आसक्त किहे हैं ६० ॥

अथकालेनतेसर्वेकौमारंप्रतिपेदिरे ॥ उपनीतावशिष्ठेनसर्वविद्याविशारदः ६१ धनुर्वेदेचनिरताःसर्वशास्त्रार्थवेदिनः ॥ बभूवुर्जगतांनाथालीलयानररूपिणः ६२ लक्ष्मणस्तुसदाराममनुगच्छतिसादरम्॥सेव्यसेवकभावेनशत्रुघ्नोभरतंतथा६३

(अथकालेनतेसर्वे) तदनन्तर बालकेलिमें कछु दिन बिताय करिते रामादि सबबालक (कौमारंप्रतिपेदिरे) कुमार अवस्थाको प्राप्तभये पुनः (वशिष्ठेनउपनीता सर्वविद्याविशारदः) वशिष्ठ करिकै सबको यज्ञोपवीत कियागया पढ़ावते भये ताते सब विद्यामें प्रवीनभये अर्थात् शिशुतागत पीछे बालक्रीड़ामें कछु दिन बिताय करि श्रीराम लषण भरत शत्रुघ्न चारिउ भाय कुमार अवस्था भये तब वशिष्ठजीने विधिवत् सबके यज्ञोपवीत किये पुनःअक्षरारंभ करि व्याकरणादि पढ़ावत संते वेद शास्त्र चौदहो विद्या उपविद्यादिमें सब प्रवीनभये ६१ (सर्वशास्त्रार्थवेदिन.चधनुर्वेदेनिरताः) सब शास्त्रनको अर्थ नीकीभांति जानते भये पुनः बाणविद्यामें प्रीति पूर्वक तत्परभये (जगतांनाथाः लीलयानररूपिणःबभूवुः) उत्पत्ति पालन संहार करनहारे जगत्केनाथ चारिहू स्वरूपहैं परन्तु लीला करिकै नररूपधारी होतेभये अर्थात्मीमांसान्यायवैशेषिकसांख्ययोगवेदांतइत्यादि सब शास्त्रनको अर्थ नीकीभांतिते जानिलिये पुनः स्वधर्मजा निवारणविद्यामें प्रीति पूर्वक तत्परभये इत्यादि करने को क्या प्रयोजनहै ये तौ चारिहू स्वरूप जगत्के नाथहैं परन्तु लीला करि नररूपधारी भये त्यहि

अनुकूल सब व्यवहार करतेहैं ६२ (तुलक्ष्मणःसादरमसदारामंअनुगच्छति) पुनः लक्ष्मणजी सहित आदर सदा रघुनन्दनको स्वामीमानि पीछे चलतेहैं (तथाशत्रुघ्नःसेवकभावेनभरतंसेव्य) ताहा भांति शत्रुहणजी सेवकभाव करिकै भरत जो हैं तिनहिं स्वामी करि मानते हैं अर्थात् लक्ष्मण जी अनुचरह्वै सदा रघुनाथजीकी सेवकाई आदर समेत करते हैं तथा शत्रुहण भरतकी सेवकाई करते हैं ६३ ॥

रामश्चापधरोनित्यंतूणीबाणान्वितःप्रभुः ॥ अश्वारूढोवनंयातिमृगयायैसलक्ष्मणः ६४ हत्वादुष्टमृगान्सर्वान्पित्रेसर्वंन्यवेदयत् ॥ प्रातरुत्थायसुस्नातःपितरावभिवाद्यच पौरकार्याणिसर्वाणिकरोतिविनयान्वितः ६५ ॥

(बाणान्वितःतूणीचापधरःरामःप्रभुः) बाणनयुत तरकस अरु धनुष धारण करि रघुनंदन प्रभु (सलक्ष्मणःअश्वारूढोमृगयायैनित्यंवनंयाति) सहित लक्ष्मण घोडेनपर सवार ह्वै शिकार खेलबे अर्थ नित्यहीं बनहिं जातेहैं अर्थात् भूषण वसन साजि बाणन को भराहुआ तरकस कटिमेंबांधि हाथ में धनुष लै रघुनन्दन प्रभु लक्ष्मण जी सहित घोडेनपर सवार ह्वै शिकार खेलबे अर्थ नित्यहीं वनहिं जातेहैं ६४ (दुष्टमृगान्सर्वान्हत्वापित्रेसर्वंन्यवेदयत्) वनमें जे दुष्ट मृगा हैं तिनहिं ढूंढ़ि सबनको रघुनाथजी मारतेहैं तिनको लाय पिताके अर्थ सब न्यवेदन करतेहैं भाव आगे धरि देतेहैं (प्रातः उत्थायसुस्नातः) प्रभातकाल उठि सुन्दरी प्रकार स्नान करिकै (चपितरौअभिवाद्य) पुनः माता पिताको प्रणाम करतेहैं अर्थात् जेपूर्व जन्ममें किसी ऋषीश्वरके संग कछु दुष्टता कीन्हें ताकी शापते पशु योनिपाये तिनको शापोद्धार प्रभुके हाथ कहाहुआ है तेई दुष्ट मृगायावत्वनमें रहे तिन सबको मारि रघुनाथजी शापोद्धार करि शुभगति दिये पीछे उनको मृतकतनलाय पिताके आगेधरे तामें आपनीबाण चलावनेकी प्रवीनता देखाय पिताको आनन्द दीन्हे पुनः प्रतिदिन बड़े प्रभात उठि प्रातकृत्य करि सरयूजीमें सुन्दरी प्रकार स्नानकरि विप्रनको दानदै पुनः संध्योपासन पूजापाठ हवनादि नित्य क्रिया करि भूषण वसन पहिरिजाय प्रथम माताको प्रणामकरि पुनः पिताको प्रणाम कीन्हे पुनःमहाराजकी आज्ञालै लौकिककार्य देखत सो आगे कहत (विनयान्वितःपौरकार्याणिसर्वाणिकरोति) नम्रतापूर्वक वार्तादिकरि रक्षा दण्डादिपुरको सब प्रकारको कार्य करतेहैं अर्थात् महाराजकी आज्ञालैकै राजसभामें वैठि श्रीरघुनाथजी धर्मनीति अनुकूल स्वाभाविक रक्षाअनीति करने वाले न कोदण्ड करतेहैं इत्यादि न्यायादि यावत् पुरकार्यहैं सो सब करतेहैं अरु आप क्रोध रहित नम्रता पूर्वक वार्ता करतेहैं यामें धर्म नीतिके आचरण प्रकट करि देखावतेहैं ६५ ॥

बंधुभिःसहितोनित्यंभुक्त्वामुनिभिरन्वहम् ॥ धर्मशास्त्ररहस्यानिशृणोतिव्याकरोतिच ६६ एवंपरात्मामनुजावतारोमनुष्यलोकाननुसृत्यसर्वम् ॥ चक्रेऽविकारीपरिणामहीनोविचार्यमाणेनकरोतिकिंचित् ६७ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेबालकांडेतृतीयस्सर्गः ॥ ३ ॥

(पुनःनित्यंबंधुभिःसहितःभुक्त्वा) सदा भाइनकरिकै सहित भोजनकरते हैं अर्थात् भरत लषण शत्रुघ्न तथा औरहु वंशज बंधुवर्ग जे सखाहैं इत्यादि सबनको साथै वैठारि एकैभांतिको भोजन करते हैं यह नित्य रीति करि कुटुम्बपालता प्रकट करतेहैं पुनः (मुनिभिःअन्वहंधर्मशास्त्ररहस्यानिशृणोतिच व्याकरोति) वशिष्ठादि मुनिन करिकै अन्वय पूर्वक धर्म शास्त्र की जो गुप्त आशयहै ताको सुनतेहैं

पुनः आपहू वाकी व्याख्या करतेहैं अर्थात् मनु याज्ञवल्क्य हारीत पराशर इत्यादि स्मृती जो धर्मशास्त्रहैं तिनकी जो गुप्तवात सो ऋषिनसों भखाय सुनतेहैं तामें भी जोगुप्त रहत ताको आप प्रकट करि सब समाज भरे को समुझाय देतेहैं यथा ऋषिने कहा कि जोपुरुष अनिश्चितहोय ताकोराजा मन्त्रीकरै तामें प्रभु कहे कि जोवस्तु धर्मनीति प्रतिकूलहैतामें अनिश्चितहोय ६६ (एवंपरात्मामनुजअवतारः) इसी भांति परमात्मा मनुजअवतार धरि (मनुष्यलोकान्अनुसृत्यसर्वंचक्रे) लोक के उत्तम मनुष्योंकी रीति अनुकूल सब कार्य करते हैं (विचार्यमाणेपरिणामहीनअविकारीकिञ्चित्न करोति) विचार करने ते सब विकाररहित अविकारी हैं कुछ भी नहीं करते हैं अर्थात् लोकोद्धारहेत परमात्मा भी मनुष्यरूप ह्वै विदूषक कौतुकवत् उत्तम मनुष्यों की नाईं धर्मनीतिमय सब कार्य करते हैं सो केवल भक्तों के आनन्द देने हेत है अरु विचार कीन्हेंते जाके कामादि विकार नहीं अविकारी हैं तो कछु नहीं करते हैं देखनमात्र है ६७ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतविरचितेअध्यात्मभूषणेबालकाण्डेश्रीरामअवतारबालकेलिवर्णनोनामतृतीयःप्रकाशः इतिपूर्वार्द्धः ॥

शिवउवाच ॥ कदाचित्कौशिकोऽभ्यागादयोध्यांज्वलनप्रभः ॥ द्रष्टुंरामंपरात्मानंजातंज्ञात्वास्वमायया ॥ १ ॥ दृष्ट्वादशरथोराजाप्रत्युत्थायाचिरेणतु ॥ वशिष्ठेनसमागम्यपूजयित्वायथाविधि ॥ २ ॥

सवैया ॥ खलपीडित गाधितनय मन व्यग्र सुयाचन में अवधेशडरे । दियसौंपि तनय उठि पांय गहेगुरु संमतलैथिर देहियरे ॥ मगजातलखे ऋषिआयसुपाय सुकेतसुता वधिएकशरे । पदवंदत वैजसुनाथसदा द्विजपालकसानुजरामहरे ॥ अब श्रीरघुनाथजी के लेवायले जानेहेत विश्वामित्र आगमन वर्णनकरत यथा (परत्मानंस्वमाययाजातंज्ञात्वा) परमात्मा अपनी मायाकरिकै मनुष्य रूपते उत्पन्नभये ऐसाजानिकै (तंरामंद्रष्टुंज्वलनप्रभःकौशिकः) तिन रघुनाथ जीको देखनहेत अग्नि की ऐसीप्रभा है जिनमें ऐसेविश्वामित्र (कदाचित्अयोध्यांअभ्यागात्) किसीसमय अयोध्याहि आये अर्थात् यज्ञादि करनेमें राक्षसोंनेविघ्नकिया ताहीशोचमें विचार कीन्हेकि भूभार उतारनेहेत परमात्मा अपनी मायाकरि दशरथ राजकुमाररूपते उत्पन्नभये ऐसाजानि तिनरघुनाथजी के दर्शनहेत पुनः लेवाय लावनेहेत तपोधनी अग्निसमतेजहै जिनमें ऐसेविश्वामित्र किसीसमय श्री अयोध्याजीको आये राजद्वारपर जायद्वारपाल द्वारामहाराजको खबरिजनाये महाराजभीतरको बुलाये इतिशेषः १ (राजादशरथोदृष्ट्वातुअचिरेणप्रतिउत्थाय) महाराज दशरथ देखिपुनः शीघ्रही उठिआय प्रणाम कीन्हें कौनभांति (वशिष्ठेनसमागम्ययथाविधिपूजयित्वा) वशिष्ठकरिकै सहितमिलि कुशल प्रश्नादि पूछि जाभांति चाहिये ताहीविधिते पूजनकीन्हे अर्थात् विश्वामित्र को आवतदेखि सुमंतादि मंत्रिन की समाज तथा वशिष्ठसहित महाराज दशरथ शीघ्रही उठिआगे आयप्रणाम करिमिलि परस्पर कुशल प्रश्न पूछिलेवायलाय सिंहासनपर बैठारि अर्घपाद्य आचमन गंधदलफूल धूपदीप नैवेद्य आरती प्रदक्षिणा प्रणामादि इत्यादि विधि समेत प्रीतिपूर्वक पूजनकीन्हे २ ॥

अभिवाद्यमुनिंराजाप्रांजलिर्भक्तिनम्रधीः ॥ कृतार्थोस्मिमुनीन्द्राहंत्वदागमनकारणात् ॥ ३ ॥ त्वद्विधायद्गृहंयान्तितत्रैवायान्तिसंपदः ॥ यदर्थमागतोसित्वंब्रूहि

सत्यंकरोमितत् ॥ ४ ॥ विश्वामित्रोपितंप्रीतःप्रत्युवाचमहामतिः ॥ अहंपर्वणिसं प्राप्तेदृष्ट्वायष्टुंसुरान्पितॄन् ॥ ५ ॥

(भक्तिनम्रधीःराजाप्रांजलिःमुनिंअभिवाद्य) भक्ति कोमल बुद्धिसहित राजाहाथ जोरि मुनिहि प्रणाम करिकैबोले (मुनीन्द्रत्वत्आगमनकारणात्अहंकृतार्थोस्मि) हेमुनींद्र आपको आवनरूप जो कारण है तेहिते हमकृतार्थभये अर्थात्सेवकतेत्र्यभावकी प्रीतितेकोमल बुद्धिकीचेष्टादर्शाय महाराज दशरथजी हाथजोरि मायनवाय कोमलवचनते बोले कि हे मुनीन्द्र विश्वामित्रजी आपकेपदकमल परे मेरामंदिर पावनभया दर्शनपायमें कृतार्थ महापुण्यवंत भया काहेते सो आगेकहत ३ (यत्गृहंत्व त्विधायान्तितत्रएवसंपदःआयान्ति) जोने घरहिआप सरीखेमहात्मा जातेहैं तहांसंपदः अर्थात् सब प्रकारको सुख निश्चय करिआवताहै (यत्अर्थेआगतोसितत्ब्रूहि) जौनप्रयोजन हेतआयेहैं आपसो कहिये (ततसत्यंकरोमि) तौनकार्यसत्यकरि हमकरेंगे अर्थात् महाराजबोले कि हे विश्वामित्रजी आपसरीखेतपोधनी महात्मा जोनेघर को जातेहैं ताघरविषे निश्चयकरि संपदा आवतीहै भावआप-के आवनेते मोकोनिश्चय विश्वासभई कि मेरेघर में सम्पति सबभांतिको सुखप्रस्थान करिचुकाअब वहबातकहिये जिसप्रयोजन हेतआपयहां आयेहै सो कार्यमैंकरौंगो यहमेरावचन सत्यजानिये ४ (महामतिविश्वामित्रःअपितंप्रीतः प्रत्युवाच) महामतिवंत विश्वामित्र निश्चयकरितौन जो दशरथहैं तिनहिंप्रीति पूर्वक बोले.(पर्वणिसंप्राप्तेदृष्ट्वाअहंसुरान्पितॄनयष्टुं) अमापूर्णिमादिपर्व प्राप्त देखिहम देवतापितृ जोहैं तिनहिंयज्ञ भागदेने की इच्छाकरते हैं अर्थात् महाबुद्धिवंत विश्वामित्रबड़ी प्रीतिसहित महाराजप्रति बोले कि जब अमावस वा पूर्णमासी वा संक्रांतिआवती है तादिन हम देवतनतथा पितृन को प्रसन्नकरने हेत यज्ञप्रारंभ करते हैं ५ ॥

यदारभेतदादैत्याविघ्नंकुर्वन्तिनित्यशः॥ मारीचश्चसुबाहुश्चपरेचानुचरास्तयोः॥ ६ ॥ अतस्तयोर्वधार्थायज्येष्ठंरामंप्रयच्छमे ॥ लक्ष्मणेनसहभ्रात्रातवश्रेयोभवि ष्यति ॥ ७ ॥वशिष्ठेनसहामंत्र्यदीयतांयदिरोचते ॥ पप्रच्छगुरुमेकांतेराजाचिं तापरायणः ॥ ८ ॥ किंकरोमिगुरोरामंत्यक्तुंनोत्सहतेमनः ॥ बहुवर्षसहस्रांतेकष्टे नोत्पादिताःसुताः ॥ ९ ॥

(यदारभेतदानित्यशःदैत्याविघ्नंकुर्वंति) जैसेही यज्ञप्रारंभ करते हैं तैसही नित्य राक्षस विघ्न करते हैं कौन राक्षस (मारीचःचसुबाहुःचतयोःअनुचराःअपरे) मारीचपुनःसुबाहु ये मुख्य हैं पुनः तिनदोऊ के आज्ञाकार और बहुत हैं अर्थात् जब जब यज्ञ आरंभ करता हौं तब तब मारीच सुबाहु सेना समेत आय यज्ञ विध्वंस करि देते हैं भाव विष्ठा रुधिरादि वर्षि भ्रष्ट करि देते हैं ६ (अतःतयोः वधार्थाय) इस कारण ते तिन दोऊ राक्षसों के मारने हेत (भ्रात्रालक्ष्मणेनसहज्येष्ठंरामंमेप्रयच्छ) छोटे भाई लक्ष्मण सहित जेठे पुत्र जो श्रीरामचंद्र हैं तिनहिं मेरे अर्थ दीजिये(तवश्रेयोभविष्यति) यामें आपहू को कल्याण होइगो अर्थात् विश्वामित्र बोले कि हे महाराज मारीच सुबाहु मेरी यज्ञ में विघ्न करते हैं इस कारण ते तिन दोऊ दुष्टन को मारिबे हेत लक्ष्मण सहित श्रीरघुनाथ जी तिनहिं मेरेसहाय हेत दीजे यामें आपहूको कल्याणहै ७(वशिष्ठेनसहआमंत्र्ययदिरोचतेदीयतां)वशिष्ठ करिकै सहित बैठि सलाह करि लीजे जो मन में रुचै तौदीजे (राजाचिंतापरायणःएकांतेगुरुंपप्रच्छ) राजा चिंता में बूड़े एकांत में बैठि गुरु वशिष्ठ प्रति पूछते भये अर्थात् विश्वामित्र कहे कि जो हम

मांगते हैं सो आपने गुरु वशिष्ठ सों सलाह लेके जो मन में रुचै भाव दुष्टन को मारने योग्य होंय तौ सानुज रामहिं दीजिये इत्यादि बिश्वामित्र के वचन सुनि बिचारे कि दीन्हें धर्म रहत परंतु पुत्र वियोग दुष्टन सों युद्ध अरु न दीन्हे धर्महानि मुनि शाप देंइगे इत्यादि चिंता में बूड़े अलग बुलाय वशिष्ठ से पूछे ८ (रामंत्यक्तंमनःउत्सहतेनगुरोकिंकरोमि) रघुनन्दनहि त्यागबे को मनमें उत्साह नहीं है हे गुरु अब मैं क्या करौं काहेते (बहुवर्पसहस्त्रअन्तेकष्टेनसुताःउत्पादिताः) बहुत हजारबर्प बीते पर बड़े कष्ट करिकै मेरे चारि पुत्र उत्पन्नभये अर्थात् वीर रस की अस्थायी है उत्साह यथा युद्ध वीरता में जब शूरता होत तब उत्साह आवत तथा दान बीरता में जब उदारता होत तब उत्साह आवत सो रघुनन्दनहि त्यागत मुनि को देनेमें उदारता नहीं है इसकारण मन में उत्साह नहीं है भाव रामहिं नहीं दे सक्ता हौं किस कारण कि बहुत हजार वर्ष बीते भाव चौथेपन में यज्ञादि क्रिया इत्यादि बड़े कष्टकरिकै चारि पुत्र मेरे उत्पन्न भये ताते प्राण समप्यारे तिनमें राम प्राणहूंतेअधिक तिनको वियोग मैं नहीं सहिसक्ता हौं तिन दोऊ भाइन को विश्वामित्र मांगते हैं पुनः बालक सुकुमार युद्ध देखे नहीं अरु महाबली कराल राक्षसों ते युद्ध हेत अरु मैं कहि चुका हौं कि जो कहौगे सो करौंगो इत्यादि धर्म संकट में पराहौं अरु हे गुरु आप इस कुल में सदा ते संकट निवारण हारेहौ ताते विचारि कै कहिये अब मैं क्या करौं जामें धर्म सहित कल्याण होवै ॥ ९ ॥

चत्वारोऽमरतुल्यास्तेतेषांरामोऽतिवल्लभः ॥ रामस्त्वितोगच्छतिचेन्नजीवामिकथंचन ॥ १० ॥ प्रत्याख्यातोयदिमुनिःशापंदास्यत्यसंशयः ॥ कथंश्रेयोभवेन्मह्यमसत्यंचापिनस्पृशेत् ॥ ११ ॥

(तेचत्वारःअमरतुल्याःतेषांरामःअतिवल्लभः) ते चारिहू पुत्र देवतन के तुल्य हैं तिनमें राममोको अत्यंत प्रिय हैं (तुचेत्रामःइतःगच्छति) पुनः जो राम इहांते जांयगे (कथंचननजीवामि) कौनिउ प्रकारमैं न जीवौं गो अर्थात् गुण क्रियास्वभावस्वरूपतादि सवप्रकार देवनतुल्य प्रियचारिहू पुत्र हैं तिन में राम मोको अत्यंत प्रिय हैं पुनः राम मेरे समीप ते मुनि के साथ जाँयगेतौ कौनिउ प्रकार मैं न जीवौं गो १० (यदिप्रतिआख्यातः) जो मुनि के वचन प्रति उत्तर वार्ता करौं तौ (मुनिःशापंदास्यतिअसंशयः) मुनि मोको शाप देंयगे यामें संशय नहीं है (चअसत्यंअपिनस्पृशेत्) पुनः असत्य जो है ताहि निश्चय करि मैं न स्पृश करौं (मह्यंकथंश्रेयोभवेत्) मेरे अर्थ कौन भांति कल्याण होवै अर्थात् वशिष्ठप्रति महाराज कहत कि जो रघुनंदन को मुनि संग पठावौं तौ मेरे प्राण जायँ अरु जो न देने हेत प्रति वचन उत्तर देउँ तौ मुनि अवश्य ही मो को शाप देवैं गे इस में भी संशय नहीं पुन. प्रथमही वचन दान दै चुके सोभी वृथा न होवैं इत्यादि उपाधिन में पराहौं सो अब मैं क्या करौं जामें मेरा कल्याण होवै सो बात विचारि कै कहिये ११ ॥

वशिष्ठउवाच ॥ शृणुराजन्देवगुह्यंगोपनीयंप्रयत्नतः ॥ रामोनमानुषोजातःपरमात्मासनातनः ॥ १२ ॥ भूमेर्भारावताराय ब्रह्मणाप्रार्थितःपुरा ॥ सएवजातोभवने कौशल्यायांतवानघ ॥ १३ ॥ त्वंतुप्रजापतिःपूर्वंकश्यपोब्रह्मणःसुतः ॥ कौशल्याचादितिर्देवमातापूर्वंयशस्विनी ॥ १४ ॥

(राजन्देवगुह्यंशृणु) हे राजन जो देवनको भी गुप्त है प्रसिद्ध नहीं जानिसक्के सो मत मैं आपके बोध होने हेत प्रसिद्ध कहत हौं सो सुनिये (प्रयत्नतःगोपनीयं) यत्नपूर्वक आपहू गुप्त राखिये-

भाव किसी सों कहिये न (रामःमानुषोन) राम मनुष्य नहीं हैं काहेते (सनातनःपरमात्माजातः) सनातन परमात्मा मानुष रूप उत्पन्न भये हैं अर्थात् महाराज के आरत बचन सुनि बशिष्ठजी बोले हे राजन् यह हाल देवनको भी गुप्त नहीं जानि सक्के सो मनुष्य कैसे जानै सोई गुप्त मत आप के बोध होने हेत हम प्रसिद्ध कहते हैं सो सुनिये परन्तु यत्नपूर्वक आपहू गुप्ते जाने रहिये और किसी ते न कहिये क्या गुप्त है कि रघुनाथजी मनुष्य नहीं हैं काहेते सनातन परमात्मा हैं सो तुम्हारी भक्तिते तथा भू भार उतारने हेत मनुष्यतन तुम्हारे पुत्र ह्वै अवतीर्ण भये १२ (भूमेःभारावताराय पुराब्रह्मणाप्रार्थितः) भूमिको भार उतार ने अर्थ पूर्वकाल में ब्रह्मा करिकै प्रार्थना किये गये ताही ते (हे अनघतवभवनेकौशल्यायांसएवजातः) हे निष्पाप दशरथ जी आप के घरमें कौशल्या विषे सोई परमात्मा निश्चय करि उत्पन्नभये अर्थात् भू भार उतारने हेत ब्रह्मा ने प्रार्थना किया सोई परमात्मा जो निश्चयकरि तुम्हारे घर में कौशल्या विषे अवतीर्ण भये ताको हेतु सुनिये १३ (तुत्वंपूर्वे प्रजापतिः ब्रह्मणसुतःकश्यपः) पुनः आपु प्रजापति सृष्टि बढ़ावनेवालेहौ ब्रह्मा के पौत्र कश्यप (चयशस्विनीकौशल्यापूर्वेदेवमाताअदितिः) पुनः यशवंती कौशल्या पूर्व देवमाता अदितिहैं अर्थात् तुम्हारे घर याते अवतीर्ण भये कि आपु पूर्व जन्म के कश्यप प्रजापति हौ तथा यशवंती कौशल्या पूर्वकी देवनकी उत्पन्न करने वाली अदिति हैं १४ ॥

भवन्तौतपउग्रंवैतेपाथेबहुवत्सरम् ॥ अग्राम्यविषयौविष्णुपूजाध्यानैकतत्परौ ॥ १५ ॥ तदाप्रसन्नोभगवान्वरदोभक्तिवत्सलः ॥ वृणीष्ववरमित्युक्तेत्वंमेपुत्रोभवामल ॥ १६ ॥ इतित्वयायाचितोसौभगवान्भूतभावनः ॥ तथेयुक्त्वायपुत्रस्ते जातोरामस्सएवहि ॥ १७ ॥

(भवन्तौबहुवत्सरंउग्रंतपवैतेपाथे) स्त्री पुरुष तुम दोऊ बहुतवर्षतक कठिन तप रीतिते निश्चय करि तपस्या कीन्हेउ कैसा उग्रतप (अग्राम्यविषयौ) ग्राम की विषय जो इन्द्रिनको सुख भोग त्यहि करिकै रहित दोऊ (विष्णुपूजाध्यानएकतत्परौ) विष्णु पूजन तथा ध्यान इसी एक वृत्तिपर लगे रहेउ अर्थात् बशिष्ठजी कहत हे दशरथ महाराज पूर्व कश्यप अदितितनमें तुम दोऊबहुतहजार बर्ष तक कठिन तप रीति तपस्या करतेरहे कौन कठिन रीति यथा, विषय वार्ता श्रवण कोमल शय्या स्त्री युत शयन नृत्य रंग कौतुक देखन षट्रस भोजन सुगन्ध भूषण बसन इत्यादि जो ग्रामकी विषय तिनको त्यागि सागादि भोजन महि शयन ब्रह्मचर्य्य ते वर्षा हिम आतप सहि पुनः राम तापिनी की रीति सबेदी यंत्र राज पर स्थापित करि षोड़शोपचार सांग देवन भगवान् की पूजा तथा आसन प्राणायाम रीति भगवान्को ध्यान इत्यादि एक कैंकर्यता रीति में लगेरहे १५ (तदाभक्तिवत्सलः भगवान्प्रसन्नःवरदः) ता समय में भक्तिवत्सल भगवान् प्रसन्न ह्वै वरदायक ह्वै बोले (वरंवृणीष्वइतिउक्ते) वर मांगौ ऐसा कहे सो सुनि तुम कहे (अमलत्वंमेपुत्रःभव) हे अमल परमात्म आप मेरे पुत्रहोउ अर्थात् तपस्या पूर्ण होतही तासमय गोबच्छवत् भक्तनपर प्रीति करनेवाले भगवान् प्रसन्नतायुत वरदायक बचन तुम प्रति बोले कि जो इच्छा होइ सो वर मांगौ ऐसा कहत सन्ते सो सुनि तुमने कहा हे अमल परमात्म आप मेरे पुत्रहोउ १६ (इतित्वयायाचितः) आप मेरे पुत्रहोउ ऐसा तुमने मांगा तब (भूतभावनःअसौ भगवान् तथा इति उक्त्वा) जो भूतमात्र को भावते हैं ऐसे वे भगवान् तथा ऐसा कहे भाव यथा तुम मांगा तथा होवै (सरामःएवहिअयतेपुत्रःजातः)

सोई रामनामे परमात्मा निश्चयकरि अब तुम्हारे पुत्रह्वै उत्पन्नभये अर्थात् वशिष्ठजीकहत कि जब तुमने पुत्रहोने की याचना किया तब भगवान् कहे कि जैसा तुम चाहते हो तैसाही होगा सोई पर मात्मा राम नामे निश्चय करि अब तुम्हारे पुत्रह्वै उत्पन्न भये १७ ॥

शेषस्तुलक्ष्मणोराजन्राममेवान्वपद्यत॥ जातौभरतशत्रुघ्नौसंखचक्रगदाभृतः ॥ १८ ॥ योगमायापिसीतेतिजाताजनकनान्दिनी ॥ विश्वामित्रोपिरामायतांयोजयितुमागतः ॥ १९ ॥ एतद्गुह्यतमंराजन्नवक्तव्यंकदाचन ॥ अतःप्रीतेनमनसा पूजयित्वाथकौशिकम् ॥ २० ॥

(राजन्तुशेषःलक्ष्मणःरामंएवंअन्वपद्यत) हेराजन्पुनः शेषलक्ष्मणह्वै रामजोहैं तिनहिंनिश्चय करिभजते हैं (गदाभृतःसंखचक्रभरतशत्रुघ्नौजातौ) गदाधरके संखचक्रजोहैं तेईभरतशत्रुघ्नहैं अर्थात् शेषआयलक्ष्मण भयेते निश्चय करिरघुनाथै जीकीसेवकाई करतेहैं पुनः गदाधरभगवान् को शंख सो भरतभये चक्रशत्रुघ्न हैं १८ (योगमायाअपिजनकनंदिनीसीताइतिजाता) भगवान्की योगमाया निश्चयकरि जनककी पुत्री सीताऐसा नामउत्पन्न भईसोजनक पुरमें हैं (तांयोजयितुंरामाय विश्वामित्रःअपिआगतः) ताही कोसंयोग रघुनाथजीके अर्थ करावनेहेत विश्वामित्र निश्चयकरि आये हैं अर्थात् यथाअंशन सहित भगवान् तुम्हारे घरमें अवतरे तथायोग मायासीता नामेंजनक पुत्रीह्वै जनकपुरमे अवतरी हैं तिनको रघुनाथजीके संगविवाहकरावने हेत निश्चयकरि विश्वामित्र आये हैं यहमुख्य जानिये असुराक्षस वधव्याज मात्रहै १९ (राजन्एततगुह्यतमंकदाचननवक्तव्यं,हेराजन् यहगुप्तते गुप्तरहस्यहै सोअन्य किसीसों कबहूंन कहियो (अतःमनसाप्रीतेनअथकौशिकम्पूजयित्वा) इसकारण मनमें प्रीतिकरिकै अबविश्वामित्रहि पूजनकीजे अर्थात् महाराजप्रति वशिष्ठजी कहत कि यथारघुनंदनपरब्रह्म तथा जनकनंदिनी योगमायागुप्तरूपअवतरे तिनके संयोगहेत विश्वामित्रआयेहैं यहगुप्तरहस्यमनमें राखना कबहूं किसीते प्रसिद्धनकरना पुनःसबसंशयत्यागि हर्षतेमनमेंप्रीतिसहित अबविश्वामित्र जीको पूजनकीजे भावमनो कामपूर्ण करिदीजिये २० ॥

प्रेषयस्वरमानाथंराघवंसहलक्ष्मणम् ॥ वशिष्ठेनैवमुक्तस्तुराजादशरथस्तदा ॥ २१ ॥ कृतकृत्यमिवात्मानंमेनेप्रमुदितान्तरः ॥ आहूयरामरामेतिलक्ष्मणेतिच सादरम् ॥ २२ ॥ आलिंग्यमूर्ध्न्यवघ्रायकौशिकायसमर्पयत् ॥ ततोऽतिहृष्टोभगवान्विश्वामित्रःप्रतापवान् ॥ २३ ॥

(लक्ष्मणम्सहरमानाथंराघवंप्रेषयस्व) लक्ष्मण सहित लक्ष्मीनाथराघवजोहैं तिनहिविश्वामित्र के साथ पठाइये (वशिष्ठेनएवंउक्तःतुतदाराजादशरथः) वशिष्ठकरिकै ऐसावचनकहागया पुनः ता समयमेराराजादशरथ प्रसन्नभये अर्थात् भगवान् भारावतारहैं तिनके सदानिकट वर्तीशेषहैं ऐसाविचारिलक्ष्मण सहित लक्ष्मीनाथजो रघुनंदन तिनहि विश्वामित्र के साथपठाइये भावइसमें महालाभ है यथाप्रथमतुम्है धर्म सुयशखलमारि यज्ञ रक्षाअहल्या तारणधनुभंग इत्यादि ते पुत्रन को सुयश पुनः चारिहु भाइ विवाहि उत्तम वधुनयुत सुख पूर्व्वक घरैऐहैं इत्यादि जब वशिष्ठ ने कहासो सुनेतबसब संदेहनाशभई महाराज प्रसन्नभये २१ (प्रमुदितान्तरःआत्मानंकृतकृत्यंइवमेने) प्रकर्षआनंदभये तदनंतर अपनाको कृतार्थसममाने (रामरामइतिचलक्ष्मणइतिसादरंआहूय) हे रामहेराम इत्यादि पुनःहेलक्ष्मण इत्यादि सहित आदरबोलाये अर्थात् वशिष्ठके वचनसुनिसंदेहमिटी परमआ-

नंद भयेतत्पश्चात्, अपना को पुन्यवंत मानेपुनः रघुनाथ जीको नामलै तथालक्ष्मण जीको नामलै वड़े आदर समेत महाराज अपने निकट बुलाये सादरबुलाववे को भावपरमात्मजानिकै २२ (आलिंग्य मूर्ध्न्यवघ्राय) हृदयमें लगाय शीश सूँघि दोउपुत्रनको (कौशिकायसमर्पयत्) बिश्वामित्रके अर्थ देदीन्हें (ततःप्रतापवान्विश्वामित्रभगवान्अतिहृष्टः) तदनन्तर प्रतापी विश्वामित्र भगवान् अत्यंत आनंदभये अर्थात् अत्यंत प्रीतितेदोऊपुत्रन को उरमें लगाय वियोगते संतोषकीन्हें तथापुत्रन की आयुर्बल वृद्धहेत वेद ऋचापढ़ि शशिसूँघेऋचायथा प्रजापते स्त्वांहिंकारेणावजिघ्रामि सहस्त्रायुषा सौ जीवशरदःशतंपुनः दोउ पुत्रनहि विश्वामित्रको सौंपिदिये तवविश्वामित्रअत्यंतआनंद भये ईश्वर प्राप्ती पाय २३ ॥

आशीर्भिरभिनंद्याथआगतौरामलक्ष्मणौ॥गृहीत्वाचापतूणीरबाणखड्गधरौययौ॥ २४ ॥ किंचिद्देशमतिक्रम्यराममाहूयभक्तितः॥ददौबलांचातिबलांविद्येद्वेदेवनिर्मिते ॥ २५ ॥ ययोर्ग्रहणमात्रेणक्षुत्क्षामादिनजायते ॥ ततउतीर्य्यगंगान्तेताटकाबनमागमत् ॥ २६ ॥

(चापतूणीरबाणखड्गधरौरामलक्ष्मणौआगतौ) धनुष तरकश बाण तरवारि धारण किहे श्रीराम लक्ष्मण आय समीप प्राप्त भये देखि विश्वामित्र (आशीःभिःअभिनंद्यअथगृहीत्वाययौ) आशीर्वाद न करिकै सराहना करि तब दोऊ कुमारन को संग लैचलेअर्थात् पिता की आज्ञा पाय दोऊ भाई मंदिर में जाय माता को प्रणाम करि आज्ञा मांगि भूषण वसन सजि कटिमें तरकश बांधि तत्रडाव में तरवारि बाम हाथे में धनुष दहिने में एक बाण लै आय लषण सहित रघुनन्दन प्रसन्न मन विश्वामित्र के समीप प्राप्त भये तिनको प्रसन्न देखि अत्यंत आनंद भये ताते विश्वामित्र जी आशीर्वादन करि सराहना करे यथा चिरंजीव ब्रह्मण्यदेव सदा कीर्ति अविचलरहै सत्य संध यशप्रताप प्रति दिन बढ़ै उदार धर्म धुरीण समूह गुण होवै शीलसागर इत्यादि प्रसन्नताकरि महाराजसों विदा ह्वै दोऊ कुमारन को संग लै विश्वामित्र जी अपने आश्रमैं चले २४ (किंचित्देशंअतिक्रम्यभक्तितःरामंआहूय) थोरा देश नांघिकै बिश्वामित्र भक्तिपूर्वक रघुनाथ जी जो हैं तिनहिं निकट बोलाय (देवनिर्मितेबलांचअतिबलांद्वेविद्येददौ) देवन की बनाई हुई बला पुनः अतिबला ये द्वै बाण विद्या देते भये अर्थात् अयोध्या ते कछु दूरि चलिकै विश्वामित्र प्रेमा भक्ति सहित रघुनाथ जी को निकट बुलाय शिवादि देवन की बनाई बलाजो समूह मंत्रन करि देहमें सब भांति की शक्ति बनी रहै पुनः अति बला जो दिव्य अस्त्रन सहित मंत्र हैं यथा पाशुपत ब्रह्मास्त्रादि ये दोऊ बाण विद्या रघुनन्दन को पढ़ाय देते भये २५ (ययोःग्रहणमात्रेण) जिन दोऊ बिद्यन के ग्रहण पढ़े मात्र करिकै (क्षुत क्षामादिनजायते) क्षुधादुर्बलतादि नही उत्पन्न होतीहै (ततगंगांतेउतीर्य्य) तत्पश्चात् गंगाजी के उसपार उतरि (ताटकावनंआगमत्)जहां ताड़का रहतीरहै ताही वनहि जातेभये अर्थात् विश्वामित्र कहत किजिनदोऊ बिद्यनको पढ़िलेनेमात्रजाके प्रभावतेभूषप्यास दुर्बलताश्रमादि नहींव्यापत सौभाविक अरुजदेहपुष्टरहत इत्यादि काहि विद्यापढ़ायपुनः गंगाउतरि उसपार जौनेबन में ताड़का रहतीरहै तहाँकोगये २६ ॥

विश्वामित्रस्तदाप्राहरामंसत्यपराक्रमम् ॥ अत्रास्तिताटकानामराक्षसीकामरूपिणी ॥ २७ ॥ बाधतेलोकमखिलंजहितामविचारयन् ॥ तथेतिधनुरादाय

सगुणंरघुनंदनः ॥ २८ ॥ टंकारमकरोत्तेनशब्देनापूरयद्वनम् ॥ तच्छ्रुत्वासहमाना साताटकाघोररूपिणी ॥ २९ ॥

(तदासत्य पराक्रमंरामं विश्वामित्रःप्राह) तासमयमें सत्यहै पराक्रम जिनके ऐसेरघुनंदनप्रति विश्वामित्रबोले (कामरूपिणी ताड़कानाम राक्षसी अत्रअस्ति) जैसीइच्छाकरैतैसेही रूपधरिलेनेवाली ताडकानामें राक्षसी इहैंरहतीहै २७ (अखिलंलोकंबाधतेतांअविचारयन्जहि) सबलोकनको वाधाकरतीहै ताहि बिनाबिचारही मारिये (इतितथारघुनंदनःसगुणंधनुःआदाय) इत्यादियथाऋषि कहेताहिभाँति मानिरघुनंदन रोदाचढ़ाय धनुष हाथमेंलिये २८ (टंकारअकरोत् तेनशब्देन वनंअपूरयत्) धनुषकी टंकोरकीन्हें त्यहिशब्द करिकै वनभरिगया (तन्श्रुत्वासाताड़का घोररूपिणी असहमाना) ताकोसुनि सोताड़का भयंकररूपहै जाकोसोनसहिसकी अर्थात् जहाँताड़कारहतीरहै तावनमें पहुंचे तबमनमेंभयलागि परंतुताके मारिबेयोग्य सत्यहैपराक्रम जामेंऐसे रघुनंदनप्रतितब विश्वामित्रकहे किस्वइच्छितरूपधरणहारी भावमायावी ताड़काराक्षसी इहैंरहतीहै सोपुत्रनसहित त्रिलोकवासिनको दुखदेतीहै इतिदुष्टाजानि स्त्रीअवद्ध इतिबिचाररहित याकोमारिये इत्यादि विश्वामित्रके कहतही रोदाचढ़ाय धनुषहाथमेंले रोदाखैंचिछांड़िदीन्हें इतिजोटंकारकीन्हें सो शब्दवनमें भरिगया भावऐसा कठोरशब्द भयाकि बहुतदूरितक सुनिपराताको सुनिवीरकृत जानि भयंकररूप ताड़कानसहिसकी भावजिस दिशाते धनुटंकारभया ताहीदिशाको बड़ेबेगतेधावतीभई २९ ॥

क्रोधसंमूर्च्छितारामममभिदुद्रावमेघवत् ॥ तामेकेनशरेणाशुताडयामासवक्षसि ॥ ३० ॥ पपातविपिनेघोरावमन्तीरुधिरंबहु ॥ ततोतिसुंदरीयक्षीसर्वाभरणभूषिता ॥ ३१ ॥ शापात्पिशाचतांप्राप्तामुक्तारामप्रसादतः ॥ नत्वारामंपरिक्रम्यगता रामाज्ञयादिवम् ॥ ३२ ॥

(क्रोधसंमूर्च्छितामेघवत्रामंअभिदुद्राव) अत्यन्त क्रोध ते देहकी सुधि रहित यथा मेघकी श्याम घटातद्वत्ताड़का रघुनाथ जीकी सन्मुख आकाश मार्गधाई (तांआशुएकेनशरेणवक्षसिताडयामास) ताड़का जोहै ताहिशीघ्रही एकबाणकरिकै छातीमें मारिगिरायदीन्हें अर्थात् धनुसकी टंकोर सुनतही अत्यंतक्रोधतेदेहकी संभारत्यागि यथामेघकी श्यामघटा तैसेहीताड़का मुनिकेसाथ देखिरघुनाथजीकी सन्मुख आकाशमार्गधाई ताहिआवत देखिरघुनाथजी शीघ्रहीएकबाण वाकीछाती में मारताकेलागतहीगिरी ३० (घोरावहुरुधिरंवमन्तीविपिनेपपात) महाभयकर है रूपजाको मुखद्वारा बहुतरक्तबहताहै मुर्छितह्वै ताड़का उसीवनमें गिरिपरी (ततःसर्वआभरणभूपिताअतिसुंदरीयक्षी) तदनंतरसर्वांग भूपणनते भूषितअत्यंत सुंदरस्वरूपवंतयक्षीह्वैगई अर्थात्बाणलागतही भयंकर रूपमुखते रक्तबहत मूर्च्छितवनमें भूमिपैगिरी तुरतही सो रूपत्यागि सर्वांगवसन भूपणभूषित अत्यंत सुंदरस्वरूप वंत यक्षीह्वैगई ३१ (शापात्पिशाचतांप्राप्ता) अगस्त्यऋषिकी शापतेराक्षसी तनपायारहै (रामप्रसादतःमुक्ता) रघुनाथ जीके प्रसाद ते मुक्तभई (रामंनत्वापरक्रम्यरामाज्ञयादिवंगता) श्रीरामहि प्रणाम प्रदक्षिणाकरि रघुनाथ जीकी आज्ञाकरिकै स्वर्गकोगई अर्थात् सुंदयक्षकीस्त्री ताड़का सुंदरसुभाव स्वरूपवंतरही किसीउपद्रौते अगस्त्यकीशापते सुंदमराताइप्रीते ताड़काअगस्त्यको खाइलेनहेतधाई तबऋषिने शापदिया कि तोंहूसपुत्रण राक्षसोहो पुनः रामकरउद्धार कहा यहबाल्मीकी बाल कांडे पचीसके सर्गमेंविस्तारहैयथा सुन्देतु निहतेरामअगस्त्य मृषिसत्तमंताड़कासहपुत्रेण प्रधर्षयितुमिच्छति

भक्षार्थंजातसरंभागर्जन्ती साभ्यधावत आपतंतीं तुतांदृष्ट्वा अगस्त्यो भगवानृषिः राक्षसत्वंभजस्वेति मारीचंव्याजहारसः अगस्त्यः परमामर्षस्ताटकामपिशप्तवान् पुरुषादी महायक्षी विरुता विकृतानना इदंरूपं विहायाशुदारुणं रूपमस्तुते इत्यादि अगस्त्य की शापतेराक्षसी भईपुनः रघुनाथजीके हाथसे मरी शापतेउद्धारभई सुंदरेतनते रघुनाथजीको प्रदक्षिणाकरि प्रणाम किया पुनःरघुनाथजीकी आज्ञा पायसुंदरेव्यवानपर चढ़िस्वर्ग कोगई ३२ ॥

ततोतिहृष्टःपरिरभ्यरामंमूर्द्धन्यवघ्रायविचिंत्यकिंचित् ॥ सर्वास्त्रजालंसरहस्यमं त्रंप्रीत्याभिरामायददौमुनीन्द्र ॥ ३३ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेबालकाण्डेचतुर्थस्सर्गः ४ ॥

(ततःअतिहृष्टः)तदनंतर विश्वामित्र अत्यंतआनंदहृवै (रामंपरिरंभ्यमूर्द्धनिअवघ्राय) रघुनंदन जोहैतिनहि उरमेंलगाय शशिसूंघि (किंचित्विचिंत्य) कछुमनमेंचिंतवनकरि (मुनीन्द्रःसरहस्यमंत्रं सर्वअस्त्रजालं) मुनिनमें इन्द्रजो विश्वामित्रसोसहित गुप्तमंत्रनजो सबअस्त्रसमूहसिद्धकिहेरहेतिनहिं (प्रीत्याअभिरामायददौ) उरमेप्रीतिकरिकै रघुनाथजीके अर्थदैदेतेभये अर्थात् ताडका की गतिदेखि ताकेपाछे विश्वामित्र अत्यंत आनंदहृवै रघुनंदन कोउरमें लगायशीशसूँघे इतिमाधुर्य में अर्थाधिभाव ते वात्सल्यताहै पुनःमनमेंकुछ विशेषिचिंतवन कीन्हेंभावइनको विद्यापढ़ाय गुरूहृवै सोभाविकराम सम्बन्धीहृवै अंतमेंसुलभमुक्ति लाभहोई इतिचिंतवन करिमंत्रन सहित जो अस्त्रसमूह सिद्धकियेहुये पासरहैं ते सबप्रीतिसहित अभिरामआनंदमूर्ति जो श्रीरघुनाथ जी तिनहिंदेतेभये शास्त्रमंत्रयथागरुड़ पुराणेबिंशोऽध्याये गरुडप्रति ॥ हरिरुवाच ॥ वक्ष्येतत्परमंगुह्यंशिवोक्तंमंत्रवृन्दकम् पाशंधनुश्चचक्रंच मुद्गरंशूलपट्टिशंएतैरेवायुधैर्युद्धे मंत्रैः शत्रुंजयन्नृपःमंत्रोद्धारंपद्मपत्रे भादि पूर्वादि के लिखेत्अष्टवर्गं चाष्टमंचख्यातमीशानपत्रके ओंकारो ब्रह्मबीजंस्याद्धींकारो विष्णुरेवच हूंकारश्च शिव शूले त्रिशा खेतु क्रमान्न्यसेत्इत्यादि ३३ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतबैजनाथविरचितेअध्यात्म भूषणेविश्वामित्रसंगरामगमनताडकावधवर्णनोनामचतुर्थःप्रकाशः ४ ॥

शिवउवाच ॥ तत्रकामाश्रमेरम्येकाननेमुनिसंकुले ॥ उषित्वारजनीमेकांप्रभाते प्रस्थिताःशनैः॥१॥सिद्धाश्रमंगतासर्वेसिद्धचारणसेवितं ॥ विश्वामित्रेणसंदिष्टामु नयस्तन्निवासिनः॥२॥पूजांचमहतींचक्रूरामलक्ष्मणयोर्द्रुतम् ॥ श्रीरामःकौशिकं प्राहमुनेदीक्षांप्रविश्यताम् ॥ ३ ॥

सवैया ॥ खल आवत खैंचि शरासन मुंच उड़े कछु पावक बाण जरे । प्रभुके बल ते भय त्यागि महा मुनि आनँद सों मख पूर्ण करे ॥ ऋषि नारि पुनीत भई बिनयी जिनके पद पंकज धूरि परे । यशगावत बैजनाथ उदार दयानिधि सानुज राम हरे ॥ (मुनिसंकुलेकानने) जहां बहुत मुनि बास किये हैं त्यहि वन विषे (कामाश्रमेरम्येतत्रएकांरजनीउषित्वा) कामदेव को जो आश्रम है सुंदर त्यहि विषे बास करि एक रात्री विताय (प्रभातेशनैःप्रस्थित) प्रभात भये कुमारन युतविश्वा-मित्र धीरे धीरे पयान कीन्हे अर्थात् ताड़का मरे पीछे जहांबहुत मुनि बास किहे हैं त्यहि वन में जो

कामदेव को आश्रम है सुंदर त्यहि विषे वासकरि एक रात्री बिताय प्रभातभये श्रीराम लषण सहित विश्वामित्र धीरा धीरा अपने आश्रम को चले १ (सिद्धचारणसेवितंसिद्धाश्रमंसर्वेगताः) अणिमादि प्राप्तिवाले सिद्ध हरि यश कीर्त्तन करने वाले चारण इत्यादि करि सेवित जो सिद्धाश्रम तहां विश्वामित्रादि सब गये (विश्वामित्रेणसंदिष्टाततूनिवासिनःमुनयः) विश्वामित्र करिके प्रेरित सम्पूर्ण अपनी भाग्य उदय मानि तहांके वासी जे मुनि रहे ते सब २ (द्रुतरामलक्ष्मणयोः महतीं पूजांचक्रः) शीघ्रही श्रीराम लक्ष्मण की बडीभारी पूजा करते भये (कौशिकंश्रीरामःप्राह) विश्वामित्र प्रति श्रीरघुनाथजी बोले (हेमुनेदीक्षांप्रविश्यताम्) हे मुनि यज्ञ शाला को जाइये अर्थात् जहां सिद्ध इष्ट जानि सिद्ध चारण वास किहे हैं ता सिद्धाश्रम को राम लषण विश्वामित्रादि सब गये अपने आश्रम में स्थित भये पुनः विश्वामित्र करि आज्ञा भई भाव नररूप परमात्मा हैं इनकी सेवा ते सब फल लाभ है इत्यादि जानि अपनी पूर्णभाग्य उदय मानि तहां के वासी जो मुनि रहें ते सब मिलि अर्घ पाद्य आचमन गंध दल फूल धूप दीप नैवेद्य आरती प्रदक्षिणा प्रणाम इत्यादि श्रीरघुनन्दन लषणलाल को बडे सत्कार ते पूजाकीन्हें तब विश्वामित्र प्रति रघुनंदन कहे कि अब यज्ञ शाला में जाय यज्ञ प्रारंभ कीजिये ३ ॥

दर्शयस्वमहाभागकुतस्तौराक्षसाधमौ ॥ तथेत्युक्त्वामुनिर्यष्टुमारेभेमुनिभिस्सह॥४॥मध्याह्नेददृशातेतौराक्षसौकामरूपिणौ ॥ मारीचश्चसुबाहुश्चवर्षंतौरुधिरास्थिनी॥ ५ ॥ रामोपिधनुरादायद्वौबाणौसंदधेसुधीः ॥ आकर्णांतंसमाकृष्यविससर्जतयोःपृथक् ॥ ६॥

(महाभागराक्षसाधमौकुतःतौदर्शयस्व) हे महाभाग मारीच सुबाहु राक्षस अधमकहांहैं तिनदोऊ को देखाइये इत्यादि सुनि विश्वामित्र बोले (तथाइतिउक्त्वामुनि.मुनिभिःसहयष्टुंआरेभे) जैसा आप कहते हैं तैसाही होगा ऐसा कहि मुनि अपर मुनिन करिके सहित यज्ञ प्रारंभ कीन्हें अर्थात् जब रघुनाथ जी कहे कि यज्ञ आरंभ कीजिये पुनः हे महाभाग्य वाले विश्वामित्र मारीच सुबाहु राक्षस अधम कहां हैं तिन दोऊ को देखाइये इत्यादि सुनि विश्वामित्र बोले हे राजकुमार यथा आप कहते हो तथा होगा ऐसा कहि मुनि अपर मुनिन सहित यज्ञ प्रारंभ कीन्हें ४ (मारीचःसुबाहुःचतौ राक्षसौकामरूपिणौरुधिरअस्थिनिवर्षंतौमध्याह्नेददृशाते) मारीच पुनः सुबाहु दोऊ राक्षस इच्छा रूप धारी रक्त हाड वर्षत संते दुपहर समय में देखि परे अर्थात् कार्यतौ प्रभातही प्रारंभ भया परंतु कुंड निर्माण साकल्य शोधन सर्वतोभद्रादि वेदी बनावत गौरि गणेश नवग्रह पूजन इत्यादि में देर लगी जब अग्नि बरी धूम उठा ताको देखि धाये यज्ञ विध्वंस हेतु रुधिर हाड वर्षने लगे ५ (सुधीः रामःअपिधनुःआदायद्वौबाणौसंदधे) सुंदरि है बुद्धि जिनकी ऐसे श्रीरघुनाथजी हाथ में धनुष लैकै द्वै वाण संधान ते भये (आकर्णान्तंसंआकृष्यतयोःपृथक्विससर्ज) कान पर्यंत धनुषको खैंचि तिन दोऊ वाणन को बिलग बिलग करि छांड़े अर्थात् मारीच ते आगे कामलेना है ताते अभी न मारैं इहां ते दूरि करि देवें इति पूर्व विचार वंत सुंदरि बुद्धि है जिनकी ऐसे श्रीरघुनाथजी हाथ में धनुषलै पवन अग्नि इति द्वै वाण संधानि श्रवण पर्यंत खैंचि अलग अलग दोऊ वाण छांड़े ६ ॥

तयोरेकस्तुमारीचंभ्रामयञ्छतयोजनम्॥पातयामासजलधौतदद्भुतमिवाभवत्७। द्वितीयोग्निमयोबाणःसुबाहुमजयत्क्षणात् ॥ अपरेलक्ष्मणेनाशुहतास्तदनुयायि

नः ॥ ८ ॥ पुष्पौघैराकिरन्देवाराघवंसहलक्ष्मणम् ॥ देवदुंदुभयोनेदुस्तुष्टुवुस्सि द्धचारणाः ॥ ९ ॥ विश्वामित्रस्तुसंपूज्यपूजार्हंरघुनन्दनम् ॥ अंकेनिवेश्यचालिं ग्यभक्त्यावाष्पाकुलेक्षणः ॥ १० ॥

(तत्अद्भुतं इवअभवत्) जोहैबाणछांड़ेतामें आश्चर्यतुल्यकौतुकभया क्याभया (तयोःएकस्तुमारीचंभ्रामयत् चाशतयोजनमूजलधौपातयामास) तेदोऊबाणनमेंएकजोबायु बाणरहासो मारीचको बेधलिया ताहिआकाशमें भ्रमावते सौयोजन अंतसमुद्रमें डारिदिया उसकिनारेके समीप ७ द्वितीयो अग्निमयःबाणः सुबाहुंक्षणात् अजयत्) दूसरा जो अग्निमयबाण रहा सो सुबाहुजोहै ताहिजीता भाववाको भस्मकरिदिया (तत्अनुयायिनः अपरे लक्ष्मणेन आशुहताः) तिनके आज्ञाकारऔरजो निशाचररहेते लक्ष्मणकरिकै शीघ्रहीमारेगये अर्थात् निशाचरोंको देखिरघुनाथजी चातुरीकरिदोबाण चलाये तामें आश्चर्यवत् कौतुकभया कि एकपवनवाण सोमारीचको उड़ायलै उसकिनारे समुद्रमे डारिदिया दूसराजो अग्निबाणसो सुबाहुको भस्मकरिदिया तिनके अनुचरजो और राक्षसरहे तिनहिं लक्ष्मणजीने क्षणभरेमें संहारकरि दिया ८ (सहलक्ष्मणं राघवंदेवा पुष्पओघैः आकिरन्) लक्ष्मणजी सहित रघुनाथजी परदेवगणफूलसमूह बर्षते हैं (देवदुंदुभयोनेदुःसिद्धचारणाःतुष्टुवुः) देवतानगारा वजावत सिद्धचारण आनंदहृवै स्तुति करतेहैं अर्थात् खलबध भयेतेदेवता प्रसन्नहृवै प्रभुपरफूलवर्षत नगारा बजावत सिद्धचारण जो वहां बास किहेरहे ते अभय पाय आनन्द हृवै स्तुति करते हैं ९ (तुविश्वामित्रःपूजार्हंरघुनदनंसंपूज्य)विश्वामित्रजी पूजा योग्य जो रघुनन्दनतिनहिंसम्पूर्ण प्रकारते पूज्यपुनः (भक्त्याअंकेनिवेश्यचआलिंग्यवाष्पआकुलइक्षणः) भक्तिकरिकै अकोरामें बैठारिपुनःहृदय में लगाये प्रेमानन्द उमगा ताते आंशुन की धाराते आकुल हैं नेत्र अर्थात् पूजवे योग्य परमात्मा जानि बिश्वामित्र पोड़शोपचार पूजन करि वात्सल्य भाव भक्ति करि रघुनन्दनको अकोरामें बैठारि हृदय में लगाये जो प्रेमानन्द उमगा ताते आंशुनकी धारते आकुल भयेनेत्र १० ॥

भोजयित्वासहभ्रात्रारामंपक्वफलादिभिः॥ पुराणवाक्यैर्मधुरैःनिनायदिवसत्रयम्॥ ११ ॥ चतुर्थेहनिसंप्राप्तेकौशिकोराममब्रवीत् ॥ रामराममहायज्ञंद्रष्टुंगच्छामहे वयम् ॥ १२ ॥ बिदेहराजनगरेजनकस्यमहात्मनः ॥ तत्रमाहेश्वरंचापमस्तिन्य स्तंपिनाकिना ॥ १३ ॥ द्रक्ष्यासित्वंमहासत्वंपूज्यसेजनकेनच ॥ इत्युक्त्वामुनि भिस्ताभ्यांययौगंगासमीपगम् ॥ १४ ॥

(सहभ्रात्रारामंपक्वफलादिभिःभोजयित्वा) सहित भाई रघुनन्दनहिं पाके फलादिकन करिकै भोजनकराये (पुराणवाक्यैःमधुरैःदिवसत्रयंनिनाय) पुराणवाकी मधुर करिकै दिवस तीनि बिताये अर्थात् स्नान पूजनादि किहे पीछे दोऊ भाइन को मीठे फलादि भोजन कराय पीछे पुराणन के ललित इतिहास मधुर बानी ते सुनावते हैं इसी भांति तीनि दिन आश्रम में रहे ११ (चतुर्थेअहनिप्राप्ते) जब चौथ दिन आय प्राप्त भया तब (कौशिकःरामंअब्रवीत्) विश्वामित्र रघुनन्दन प्रति बोलते भये (हे राममहायज्ञंद्रष्टुंवयंगच्छामहे) हे रघुनन्दन मिथिलापुर में महायज्ञ है ताहि देखने हेतु तुम सहित हम चलैंगे १२ (बिदेहराजनगरेमहात्मनःजनकस्य) राजा बिदेहके नगरमें महात्मा जनक के घर में (पिनाकिनान्यस्ततत्रमाहेश्वरंचापंअस्ति) शिवजी को स्थापित कियाहै सोई तहां शिव धनुष है १३ (महासत्वंत्वंद्रक्ष्यासिचजनकेनपूज्यसे) महागरू कठोर धनुष ताहि तुम

चलि देख्यो पुनः जनक करिकै पूज्य होउगे (इतिउक्त्वामुनिभिःताभ्यांययौ) ऐसाकहि मुनिसमाज दोऊ भाइन सहित चलते भये (गंगासमीपगम्) गंगा जी के समीप गये अर्थात् चौथे दिन बिश्वामित्रकहे कि हे रघुनन्दन महा यज्ञ देखने हेतु तुम सहित हम चलेंगे विदेहपुर में महात्मा जनक के घर में शिवको स्थापित किया शिवको धनू है ताके तोरनहार को कन्या बिवाहैंगे सो किसी बीर को उठावा नहीं उठा ऐसा गरू ताहि चलि देखिये जनक करि पूजे जाउगे ऐसाकहि दोऊभाइन को संग लै बिश्वामित्र जनकपुर को चले गंगा तट जाय प्राप्त भये १४ ॥

गौतमस्याश्रमंपुण्यंयत्राहल्यास्थितातपः ॥ दिव्यपुष्पफलोपेतंपादपैःपरिवेष्टितम्॥१५॥मृगपक्षिगणैर्हीनंनानाजन्तुविवर्जितम् ॥ दृष्ट्वोवाचमुनिंश्रीमान्रामोराजीवलोचनः ॥ १६ ॥ कस्यैतदाश्रमपदंभातिभास्वच्छुभंमहत् ॥ पत्रपुष्पफलैर्युक्तंजन्तुभिःपरिवर्ज्जितम् १७ ॥

(गौतमस्यआश्रमंपुण्यं) गंग तट जो गौतममुनिको आश्रम पुण्यमयहै (यत्रअहल्यास्थितातपः) जहां अहल्यापरी तपकरती है (दिव्यपुष्पफलोपेतंपादपैः) दिव्य फूल फल सहित वृक्षन करिकै (परिवेष्टितम्) सब दिशिते घेरमे है अर्थात् रघुनन्दन सहित बिश्वामित्र गंगातट गये जहां गौतम मुनिको पुण्यमय आश्रमहै जहां अहल्या पाखाणरूप हिमिवर्षा आतपसहती है जाके चारिउदिशि ऐसे ललित वृक्षलगे हैं जिनमें दिव्य फूल फल लगेहैं १५ (मृगपक्षिगणैःहीनंनानाजन्तुविवर्जितं दृष्ट्वाराजीवलोचनःश्रीमान्रामःमुनिंउवाच) मृगचौपदपक्षीगणइत्यादि करिकै हीन तथा अनेक भांतिके देहधारी मनुष्यादि तिन करिकै विशेषि वर्जित भावप्राणी मात्र उससीमामें नहीं जायसक्ता है क्योंकि मुनिशापके प्रभावते भस्महोने की भयहै ऐसा शून्यआश्रम देखिरूपारसभरे कमल नयन श्रीमान्रघुनाथजी मुनि बिश्वामित्र प्रति बोलतेभये १६ (जन्तुभिःपरिवर्जितम्) जीवजंतुन करिकै रहित (पत्रपुष्पफलैःयुक्तं) वृक्षदल फूल फलन करिकै युक्त (महत्शुभम्भातिभास्वत्) बड़ी मंगलिक शोभा प्रकाशमान् (एतत्आश्रमपदंकस्य)यहआश्रम किसका है १७ ॥

अह्लादेतिमेचेतोभगवन्ब्रूहितत्त्वत. ॥ विश्वामित्रउवाच ॥ शृणुरामपुरावृत्तंगौतमोलोकविश्रुतः॥१८॥सर्वधर्मभृतांश्रेष्ठस्तपसाराधयन्हरिम् ॥ तस्मैब्रह्माददौ कन्यामहल्यांलोकसुन्दरीम्॥ १९ ॥ब्रह्मचर्येणसंतुष्टःशुश्रूषणपरायणाम्॥ तया सार्द्धमिहावात्सीद्गौतमस्तपतांवरः॥२०॥शक्रस्तुतांधर्षयितुमंतरंप्रेप्सुरन्वहम्॥ कदाचिन्मुनिवेषेणनिर्गतेगौतमेगृहात्॥२१ ॥

(मेचेतोअह्लादेति) मेरे चित्तको आनन्द देताहै (भगवन्तत्त्वतःब्रूहि) हेभगवन्ता आश्रम को हाल आप कहिये अर्थात् बिश्वामित्र सो रघुनाथजी पूछते हैं कि याथलमें पशु पक्षी तथा मनुष्यादि तौ कोई नहीं देखाताहै विशेषि शून्यहै अरु नवीनदल रंगरंगके फूल फलन युत वृक्ष तथा भूमिकामें यतनी बड़ी मंगलीक शोभा प्रकाशमान्है जाको देखि मेरे चित्तमें बड़ी आनन्द उत्पन्न होताहै इसहेतु पूछताहौं हे भगवन् भाव आप सब भांति समर्थहो ताते दासजानि कृपाकरि यथार्थ हाल कहिये यह किसका आश्रमहै अरु ऐसी मंगलीक भूमि सो कौन कारण शून्यपरी है सो जाना चाहताहौं इति सुनि बिश्वामित्र बोलते भये यथा (हेरामपुरावृत्तंश्रृणुलोकविश्रुतःगौतमः) हेरघुनन्दन पूर्व समयको जो वृत्तान्तहै ताहि सुनिये .लोकमें विदित जो गौतम ऋषि हैं १८ (सर्वधर्म

भृतांश्रेष्ठःतपसाहरिम्आराधयत्) सो गौतमधर्मधारी ब्राह्मणोंमेंश्रेष्ठते इहां तपस्या करिकै हरि जो भगवान् तिनहि आराधतेरहैं ताही समय (लोकसुंदरींअहल्यांकन्यांतस्मैब्रह्मादंदौ) लोक विदित सुन्दरी अहल्यानामें कन्याताहि त्यहि गौतमके अर्थ ब्रह्मादेते भये अर्थात विश्वामित्र बोले हे रघुनन्दन यह स्थान शून्य होनेको हाल जैसा पूर्वभया सो सुनिये लोक विदित जो गौतमऋषिहैं ते धर्म धारी ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठभाव शुद्ध धर्म व्रतधारी तेई इहां तपस्या द्वारा भगवानको आराधतेरहे ताहीसमय एकलोक विदित परम सुन्दरी अहल्यानामें कन्यारचिकै ब्रह्माने गौतमको बिवाहकरि दिया १९ (ब्रह्मचर्येणरांतुष्टः) मुनिके ब्रह्मचर्य व्रतकरिकै प्रसन्नरहित (शुश्रूषणपरायणाम्) पति सेवामें तत्पररहतीरही (तपतांवरःगौतमःतयासार्द्धंइहअवात्सीत) तपकरनेवालेन में उत्तम गौतम त्यहि अहल्या करिकै सहित इहां बासकरतेरहे अर्थात् सबत्वलसेअहल्यारति भोगकी चाहरहित मुनिके ब्रह्मचर्यमें प्रसन्नरहैं तथा पतिव्रतते पतिकी सेवामें लगीरहैं इति स्वधर्म कर्ममें सहाय करता जानि तपस्विनमें उत्तम गौतम प्रसन्नमन अहल्या सहित इस आश्रममें वासकरतेरहे २० (सुतां धर्षयितुंशक्तः) पुनः तौनि जो अहल्याहै ताहि भोगकरबे हेतु इन्द्र (अन्तरंप्रेप्सुःअन्वहम्) शून्य बीचपावबेहेतु प्रकर्ष इच्छा किहे अहल्याके पीछे लगेरहैं गुप्तरूपते (कदाचित्गौतमगृहात्निर्गतेमुनिवेषेण) किसीसमय गौतम स्थानते बाहेरगये इति शून्य बीचपायकै गौतम मुनिको वेषकरि इन्द्र प्रकटभये अर्थात् अहल्याको अत्यंत सुन्दररूप देखि इन्द्र प्रथमहीं आशकहवै प्राप्ति चाहतेरहैं जब ब्रह्माने गौतमको दिया तब छल ते भोग करिबेकी पुष्ट इच्छा राखि शून्य बीच पावने हेतु गुप्तरूपते अहल्या के पाछे लगेरहे जब किसीसमय स्नानादि कछु कार्य हेतु गौतम आश्रमते बाहेरगये ताही समय इन्द्रगौतम को रूप धरि प्रकट भये २१ ॥

धर्षयित्वाथनिरगात्त्वरितंमुनिरप्यगात् ॥ दृष्ट्वायांतंस्वरूपेणमुनि·परमकोपनः ॥ २२ ॥ प्रपच्छकस्त्वंदुष्टात्मन्ममरूपधरोऽधमः ॥ सत्यंब्रूहिनचेद्भस्मकरिष्यामि नसंशयः ॥ २३ ॥ सोब्रवीद्देवराजोऽहंपाहिमांकामकिङ्करम् ॥ कृतंजुगुप्सितंकर्ममयाकुत्सितचेतसः ॥ २४ ॥

(धर्षयित्वाअथनिरगात्)अहल्याके संग भोग करिइंद्रबाहेरनिकरे (त्वरितंमुनिःअपिअगात्) तुरत हीं मुनि निश्चय करि आय परे (स्वरूपेणतंदृष्ट्वायांसुनिःपरमकोपनः) अपने रूप करिकै त्यहि इन्द्रहि देखिकै गौतम मुनि परम कोपवन्त ह्वै २२ (प्रप्रच्छममरूपधरःअधमःदुष्टात्मन्त्वंकः) मुनि पूछते भये कि मेरारूप धारण किहे अधम भाव कुत्सितकर्म करनेवाला हे दुष्टात्मन् तूको है (सत्यंब्रूहिनचेत्) सत्य कहु जोनहींसत्य कहताहै तौभस्मकरिष्यामिसंशयः नतोकोभस्मकरदेउँगोया मेंसंशय नहींहै अर्थात् अहल्याकेसंग भोगकरि उसरूपतेबाहेर निकरे कितुरतहीं मुनिआयपरे आपना सरीखेरूपधरेपुनः मन्दिरमें अकेली स्त्रियहिभीतरते सम्भ्रमबाहिरात देखिजानिलिये किव्यभिचार किये आवताहै तातें मुनि परमकोपवन्त ह्वै पूछतेभये कि मेरारूपधारण किहे अकेली स्त्रीके पासते आवता है तातेअवश्य कुकर्म करनेवाला अधमहै पुनः जो ऋषिपत्नी संग छलसों रति किया तौतेरे जीवात्मामें भी दुष्टता है ताते हे दुष्टात्मन् तू को है सत्यकहु नाहीं तौ तो को भस्म करि देउँगो या में संशय नही है २३ (सःब्रवीत्अहंदेवराजःकामकिंकरंमांपाहि) सो बोलते भये कि हम देवन के राजा भाव इंद्र हैं अरुकाम के किंकर भाव काम वश भए हैं ऐसा जानि मेरी रक्षा करौ काहेते

(कुत्सितचेतसःमयाजुगुप्सितंकर्मकृतं) अज्ञान ताते हम करिके निंदित कर्म कियागया अर्थात् क्रोधवंत मुनिहि देखि सापराध अपनाको विचारिके सो इन्द्र लडखोले कि मैं देवराजइन्द्रहौं जो सदा कामको चेरोस्यहि कामासक्ती में अज्ञान ताते निंदित कर्म मैंने किया है आप समर्थ हौ ताते मेरी रक्षा करौ भाव प्राण घात दंड न दीजिये २४ ॥

गौतमःक्रोधताम्राक्षःशशापदिविजाधिपम् ॥ योनिलंपटदुष्टात्मन्सहस्रभगवान्भव २५ शप्त्वातंदेवराजानंप्रविश्यस्वाश्रमंद्रुतम् ॥ दृष्ट्वाहल्यांवेपमानांप्रांजलिंगौतमोब्रवीत् २६ दुष्टेत्वंतिष्ठदुर्वृत्तेशिलायामाश्रमेमम ॥ निराहारादिवारात्रंतपःपरममास्थिता २७ ॥

(क्रोधताम्राक्षःगौतमःदिविजअधिपंशशाप) क्रोधते लालिहैं नेत्र जाके ऐसे गौतम देवराज जो इन्द्र ताहि शाप देतेभये (दुष्टात्मन्योनिलंपटसहस्रभगवान्भव । हेदुष्टात्मन् तू योनिको अत्यंत लोभीहै तौ तेरे तनमें हजार भगहोवे अर्थात् सत्य वचन सुनिके पूर्वको क्रोध तौ शांत भयाहै परंतु विचार कीन्हें कि एक तो याकी पत्नी स्वरूपवंत पतिव्रता दूसरे अनेकन दिव्य अप्सरा प्राप्त तिनमें तृप्त न भया अब छल करि ऋषि पत्नीमें भोग करने आया जो दंड न देवें तौ पुनः ऐसही काम करेगा इस विचारते पुन. गौतमके क्रोध भया ताते नेत्र लालि भये इन्द्रको शाप दिये कि अनेकन स्त्री पाय तबहूं तृप्त न भया तौ तू योनिको अत्यंत लोभीहै ताते अब सर्वांगमें हजार योनि तेरेहोवें जामें फिरि न ऐसा काम करु २५ (देवराजानंतंशप्त्वाद्रुतम्स्वआश्रमंप्रविश्य) देवराज जो इन्द्र ताहि शाप दैके तुरतहीं अपने आश्रममें प्रवेश करे (वेपमानांप्रांजलिंअहल्यांदृष्ट्वागौतमःअब्रवीत्) तनकम्पायमान हाथ जोरे खड़ी अहल्याजोहै ताहिदेखिकै गौतम बोलतेभये २६ (दुष्टेत्वंममआश्रमे शिलायांदुर्वृत्तेतिष्ट) हेदुष्टे तू मेरे आश्रममें शिलाके विषे दुखरूपजीविका करि परीरहु कौन भांति दिवारात्रंनिराहारापरमंतपःअस्थिता) दिनौं राति निराहार परमतपमें स्थितहो अर्थात् इन्द्रको शाप दैके मुनि शीघ्रही आश्रमके भीतर गये तहां देखें अहल्याको तन कांपि रहाहै भावपर पतिराति होनेते भयातुरहै पुनः हाथ जोरेखडीहै भाव आपको रूप ह्वै छलते इन्द्रने मेरा अंग स्पर्शकिया विना जाने का अपराध क्षमा कीजिये इतिभाव चेष्टा देखि गौतम बोले कि यद्यपि मेरे रूपते रहा तहां रति सुखमें पति तेरेको यह तौ संभार न रहा कि मेरा परि तो ब्रह्मचर्य तेरहतारहै सो अकारण कैसे व्रत त्याग किया ताते कछु छलहै परीक्षा लेना चाहिये इत्यादि विचार नहीं किया भोग सुख प्रिय लगा इसहेत तेरेभी जीवात्मामें दुष्टताहै ताते हेदुष्टे अबतू मेरेआश्रममें शिलाके विषे दिनौं राति निराहार परम तपमें स्थित भाव हिमि वात आतप वर्षा सहत स्थित इस भांति दुख रूप वृत्ति में परीरहु २७ ॥

आतपानिलवर्षादिसहिष्णुःपरमेश्वरं ॥ ध्यायन्तीराममेकाग्रमनसाहृदिसंस्थितम् २८ नानाजन्तुविहीनोऽयमाश्रमोमेभविष्यति ॥ एवंवर्षसहस्रेषुह्यनेकेषुगतेषु च २९ रामोदाशरथिःश्रीमानागमिष्यतिसानुजः ॥ यदात्वदाश्रमशिलांपादाभ्यामाक्रमिष्यति ३० ॥

(आतपअनिलवर्षादिसहिष्णुः) घाम बयारि वर्षा इत्यादि सहतरहु (एकाग्रमनसापरमेश्वरंरामंहृ-

दिस्थितंध्यायंती) एकाग्र मन करिकै परमेश्वर जो रामचंद्र तिनहि हृदयमें स्थितराखि इस भांति ध्यान किहे रहु २८ (अयंमेआश्रमःनानाजंतुबिहीनःभबिष्यति) यह मेरा आश्रम अनेक देहधारी जीवन करिकै बिशेषि हीनहोई भावजो इहां आई सो भस्म ह्वैजाई इतितेरे निर्विघ्नता हेत आश्रम शून्यरही (एवंहि अनेकेपुसहस्रेषुबर्षगतेषुच) इसी भांति अनेक हजार वर्ष बीते संते पुनः २६ (सानुजःदाशरथीश्रीमान्रामःआगमिष्यति) सहित अपने छोटे भाई दशरथके पुत्र श्रीमान् रामचंद्र आवहिंगे (तवआश्रमशिलायांयदापादाभ्यांआक्रमिष्यति) तेरआश्रमबिषे शिलापर जब पादारबिन्द धरि देवै अर्थात् अहल्या प्रति गौतम कहत कि देहते तो घाम बयारि वर्षा इत्यादि सहतरहु अरु अंतरमें एकाग्रमन करिकै परमेश्वर जो श्रीरामचंद्र तिनहि हृदय में स्थित राखि इस भांति सदा ध्यान किहेरहुपुनः यथा इन्द्रने छल किया तथा अकेली स्त्री जानि कोई और छलादि विघ्न करने आवै तिसहेत मेरा यहवचन है कि जो कोऊ देहधारी इस आश्रमकी सींवा नाघी सो भस्म ह्वै जाई इसभयते कोऊजंतुआइ न सकी ताते यह मेराआश्रम देहधारिनकरिके विशेषिहीन भाव शून्यरही इसी भांति अनेक हजार वर्ष बीतत संते जाभांति तेरा उद्धार होइगो सो सुनु जब दशरथनंदन श्रीरामचंद्र अरु अपने छोटेभाई लक्ष्मण सहित यहां आवेंगे तेरेआश्रम में शिला पर जब पांयधरेंगे ३० ॥

तदैवधूतपापात्वंरामंसम्पूज्यभक्तितः। परिक्रम्यनमस्कृत्यस्तुत्वाशापाद्विमोक्ष्यसे ३१ पूर्ववन्ममशुश्रूषांकरिष्यसियथासुखम् ॥ इत्युक्त्वागौतमःप्रागाद्धिमवन्तंनगोत्तमम् ३२ तदाद्यहल्याभूतानामदृश्यास्वाश्रमेशुभेतवपादरजःस्पर्शकांक्षन्ती पापनाशनम् ३३ ॥

(ततःएवत्वंपापात्धूतभक्तितःरामंसंपूज्य) तब निश्चयकरिकै तूपाप ते छूटिभक्तिते रामचंद्र जो हैं तिनहि सम्पूर्ण प्रकार पूजन करि (परिक्रम्यनमस्कृत्य) प्रदक्षिणा करि नमस्कारकरि (स्तुत्वा शापात्बिमोक्ष्यसे) स्तुतिकरि शापते छूटैगी ३१ (पूर्ववत्यथासुखंममशुश्रुषांकरिष्यसि) यथा पूर्व रहीताही रीतिसुख पूर्वक पुनः मेरी सेवकाई करैगी (इतिउक्त्वागौतमःनगोत्तमंहिमवंतंप्रागात्) ऐसा कहिगौतमपर्वतनमें उत्तम जो हिमाचल तहां को गये अर्थात् अहल्या प्रतिगौतम कहत कि जब रघुनाथजीके पांयलागैंगे तब निश्चयकरि पापते छूटैगी पुनः भक्तिते श्री रघुनाथजीको अर्घपाद्य आचमन गन्ध धूप दीप नैवेद्य आरती इत्यादि सम्पूर्ण प्रकार पूजनकरि पुनः प्रदक्षिणा करि साष्टांग दंडवत करि पुनः स्तुति करैगी तब मेरी शापते छूटैगी भाव पूर्ववत्पावन सुन्दर तनहोइगी तब तथा पूर्वमेरी पत्नीरहै ताहीरीति सुख पूर्वक पुनः उत्तम पतिव्रत मेरी सेवा में तत्पररहैगी ऐसा कहिपुनः गौतम मुनि इस आश्रम को त्यागि पर्वतनमें उत्तम जो हिमाचल तहां को चलेगये तपस्या हेत ३२ (ततआदिअहल्याभूतानांअदृश्या) तबते आदि दैकै बहुत काल व्यतीत भये अहल्या सबभूतन को अदृश्या भाव किसीजीवको देखिनहीं परती है अरु (स्वआश्रमेशुभेपापनाशनम् तवपादरजःस्पर्शकांक्षंती) अपने आश्रम पावन बिषेतपकरती हुई पापन को नाशकरण हारे जो आप के पद कमल तिनकी रजस्पर्श करणे की कांक्षा राखे है अर्थात् रघुनन्दन प्रति बिश्वामित्र कहत कि जासमै शापदै उद्धार बताय गौतम चलेगये तौनसमय आदिदै अबतक बहुत काल बीते अहल्या किसी जीवको देखितौ नहीं परती है परन्तु गंगातटपरमपावन अपने आश्रम में तपस्या

करती है अरुपापन को नाशकरण हारे जो आपके पद कमल तिनकी रज अपने तनमें लागिजाने की कांक्षाराखे है ३३ ॥

आस्तेद्यापिरघुश्रेष्ठतपोदुष्करमास्थिता ॥ पावयस्वमुनेर्भार्यामहल्यांब्रह्मणस्सुताम् ३४ इत्युक्त्वाराघवंहस्तेगृहीत्वामुनिपुंगवः ॥ दर्शयामासचाहल्यामुग्रेण तपसास्थिताम् ३५ रामोयदाशिलांस्पृष्ट्वातांचापश्यत्तपोधनाम् ॥ ननामराघवोऽहल्यांरामोऽहमितिचाब्रवीत् ३६ ततोदृष्ट्वारघुश्रेष्ठंपीतकौशेयवाससम् ॥ धनुर्बाणधरंरामंलक्ष्मणेनसमन्वितम् ३७ ॥

(रघुश्रेष्ठदुष्करंतपःआस्थिताअद्यअपिआस्ते) हेरघुवंशमे श्रेष्ठ महादुष्करतपमें स्थित आजहूं निश्चय करिकैहै (ब्रह्मणःसुताम्मुनेःभार्याम्अहल्यांपावयस्व) ब्रह्माकी पुत्री गौतम मुनिकी स्त्री ऐसी जो अहल्या ताहि पावन कीजिये ३४ (इतिउक्त्वामुनिपुंगवःराघवंहस्तेगृहीत्वा) ऐसाकहि विश्वामित्रराघव जोहैं तिनहि हाथपकरि (चउग्रेणतपसास्थिताम्अहल्यांदर्शयामास) पुनः उग्रतप करिकै स्थित जो अहल्या ताहि देखावतेभये अर्थात् विश्वामित्र कहत हे रघुवंशमे श्रेष्ठ महा उग्रतप करती हुइ निश्चय करि आजहूं स्थितहै अरुब्रह्माकी पुत्री गौतम मुनिकी पत्नीऐसी जो अहल्या ताहि पदरजदै पावनकीजिये ऐसाकहि विश्वामित्र अपनेहाथसे रघुनंदनकोहाथपकरि उग्रतपकरि स्थित जो अहल्याताहि देखावतेभये ३५ (शिलांयदारामःस्पृष्ट्वा) शिलाजोहै ताहिजब रघुनाथजीपांयतेछुइदीन्हे (चतांतपोधनाम्अपश्यत्)पुनः तौन जो तपोधन अहल्याहै ताहि देखे भावपूर्व गुप्तरहै सो प्रकटदेखिपरी (अहल्यांराघवःननामचअहंरामःइतिअब्रवीत्) अहल्या जो है ताहि रघुनन्दन नमस्कार करि पुनः हम रामहैं ऐसाकहे ३६ (ततःलक्ष्मणेनसमन्वितम्रघुश्रेष्ठंरामंदृष्ट्वा) तदनन्तरलक्ष्मण सहित रघुवंशमें श्रेष्ठ जो रामचन्द्र तिनहि अहल्या देखती भई कैसेहैं (पीतकौशेयवाससम्धनुर्बाणधरं) पीतरंगको रेशमीवसन तथा धनुषबाण धारणकिहेहैं अर्थात् प्रथम गुप्तरहै उसशिलाको जब रघुनाथजी पांयते छुइदीन्हे तब प्रकटभई त्यहि अहल्या तपोधनको देखि रघुनाथजी प्रणाम करि कहे कि हम रामहैं सो सुनि आनन्दहूवै पुनः लक्ष्मण सहित रघुबंश शिरोमणि रामचन्द्रको नेत्रणभरि अहल्या देखतीभई कैसेहैं रेशमी पीत वस्त्र तनमें धनुषबाण करमें धारण कीन्हें हैं ३७ ॥

स्मितवक्त्रंपद्मनेत्रंश्रीवत्सांकितवक्षसम् ॥ नीलमाणिक्यसंकाशंद्योतयंतंदिशोदश ३८ दृष्ट्वारामंरमानाथंहर्षविस्फुरितेक्षणा ॥ गौतमस्यवचःस्मृत्वाज्ञात्वानारायणंपरम् ३९ संपूज्यविधिवद्राममर्घ्यादिभिरनिन्दिता ॥ हर्षाश्रुजलनेत्रांता दण्डवत्प्रणिपत्यसा ४० उत्थायचपुनर्दृष्ट्वारामंराजीवलोचनम् ॥ पुलकांकित सर्वांगागिरागद्गदयैलत ४१ ॥

(स्मितवक्त्रंपद्मनेत्रं) मुसुकानियुतमुख कमल समनेत्र (श्रीवत्सवक्षसम्अंकित) श्रीवत्सपीत रोममयदहिना वर्तभ्रमरी वामछातीपर चिह्नित (नीलमाणिक्यसंकाशंदशदिशःद्योतयंतं) इन्द्रनील मणिकी सीज्योति श्यामतनते दशोंदिशनमे प्रकाशकिहेहै३८ (रमानाथंरामंदृष्ट्वाहर्षईक्षणाविस्फुरित) लक्ष्मीनाथ जो श्रीरामचंद्र तिनहि देखिकै नेत्रबिशेषि प्रफुल्लित भयेपुनः (गौतमस्यवचः स्मृत्वापरंनारायणंज्ञात्वा) गौतमके बचन सुधिकरिकै परमनारायण करिजाने अर्थात्मुसुकानि युत प्रसन्न

मुखचंद्र कृपारस भरे कमलसे नेत्र श्रीवत्सचिह्न छातीपर अंकित इन्द्रनील मणिकीसी ज्योति श्यामलनते दशौदिशनमेंप्रकाशितहै ऐसेलक्ष्मीनाथ रामचन्द्रकोदेखि नेत्रविशेषि आनन्दभये पुनःगौतमके वचन शापोद्धार सुधिकरि परमनारायण करिजाने ३९ (अनिंदिताअर्घ्यादिभिःविधिवत रामंसंपूज्य) प्रशंसा करिबे योग्य अर्घ्यपाद्यादिकरिकै विधिपूर्वक श्रीरामजी हैं तिनहि सम्पूर्ण प्रकारते पूजन करि (हर्षआसुजलनेत्रांता) आनन्द आसुजल नेत्रनसें भरा दण्डवत्प्रणिपत्यसा (दण्डवत्प्रणाम करती भई ४० (चउत्थायपराजीवलोचनंरामंपुनःदृष्ट्वा) फिरि उठिकै कमलनयन श्रीरघुनाथजी तिनहि पुनः देखिकै अन्तरते प्रेम उमंगा (सर्वांगाःपुलकांकितगद्गदयागिराऐलत) सब अंगनमें रोमांच उठि आये कण्ठ रूंधिगया गद्गद बानी करिकै स्तुति करनेलगी अर्थात् प्रथम माधुर्यरूप देखि आनन्द भई पुनः पतिके बचन सुधि करि परमात्मा जानि आसनदै बैठारि स्वागत पूंछि पांय धोय कुल्ला दतूनि कराय उबटि मज्जन कराय नवीन बसन पहिराय चन्दन दल फूल चढ़ाय धूप दीप नैवेद्य आरती करि पुनः परिक्रमा प्रणाम दण्डवत् इत्यादि श्रद्धाते बिधिपूर्वक सम्पूर्ण पूजनकरि फिर उठि सन्मुख खडीह्वै पुनः प्रभुको सर्वांगदेखि अन्तरते प्रेम उमगा सर्वांग भरिगया ताते रोमांच खडेह्वैगये कण्ठ रूंधिगया ताते अपुष्टाक्षर गद्गद बानी करिकै स्तुति करनेलगी ४१ ॥

अहल्योवाच ॥ अहोकृतार्थास्मिजगन्निवासतेपादाम्बुजेलग्नरजःकणादहम् ॥ स्पृशामियत्पद्मजशंकरादिभिर्विमृग्यतेराधितमानसैस्सदा ४२ अहोविचित्रंतव रामचेष्टितंमनुष्यभावेनविमोहयन्जगत् ॥ चलस्यजस्रंचरणादिवर्जितंसंपूर्णआनंदमयोतिमायिकः ४३ ॥

अहल्या बोली (हेजगन्निवासतेपादांबुजेलग्नरजःकणात्कृतार्थास्मिअहो) हेजगतभरे में अंतर्यामी रूपते वासकरणे वाले आपके पद कमलनमेंलगी हुईजोरजकणत्य हितेसें पापभरी स्त्री कृतार्थ भई यहसंयोगआश्चर्यहै काहेते (यत्पद्मजशंकरादिभिःसदाविमृग्यतेकैःआराधितमानसैःततअहंस्पृशामि) ऐसे पदकमलनकी रजलागि मैं कृतार्थ भई जो पदब्रह्मा शिवादिकन करिकै सदाढूंढेजातेहै कौनप्रकार आराधना पूर्वक मन करिकै तौनि पदकूं स्पर्श किहेंउइति मेरी अहोभाग्य है अर्थात अहल्या कहत कि हे अंतर्यामी रूपते जगतमें बास करने वाले प्रभु आपके पदकमलों में लगीहुई जोरजताकी किंचितकण लागेते मैं पाप राशि स्त्री सो कृतार्थ भई पाप शाप बिगत पावनभई परंतु ऐसा संयोग होना आश्चर्य है काहेते जिनको ब्रह्मा शिवादि आराधना पूर्वक थिरमन करि सदा ध्यानमें ढूढते हैं सो भी पावना अगम तिन पद कमलों की स्पर्श मैं सुगम पायों इति आपको दया गुण मेरी अहो भाग्यहै ४२ (हेरामतवचेष्टितंअहोविचित्रं) हे रघुनाथ जी आपकी चेष्टित जो देह व्यवहार की कर्तव्यताहै सो आश्चर्यमय बिचित्रहै किसी की समुझमें नहीं आवत काहेते (मनुष्यभावेनजगतद्विमोहयन्) प्राकृत मनुष्यवत भावदेखाय करिकै जगत जननको विशेषि मोहित करतेहो कौन भांति (चरणादिवर्जितंसंपूर्णआनंदमयःअजस्रंमायिकः चलसि) पदादि इंद्री रहित भाव अमूर्ति तथा शोकादि रहित परिपूर्ण आनंदमयहो अरु माया मयमनुष्यों के आचरण पर चलतेहो अर्थात अहल्या कहत कि हे रघुनाथ जी आपकी देह व्यवहार की यावतकर्तव्यताहै सो ऐसी अद्भुत बिचित्र है जो यथार्थ बात किसी की समुझमें नहीं आवत काहेते प्राकृत मानुष्य वतभावनर नाट्यदेखाय जगत जनन को मोहित करते हो कौन भांति पदहाथ मुख गुदाशिश्न इत्यादि रहित भावचल

नादि विषयकर्म कुछभी नहीं करतेहौ तथा श्रवणादि इन्द्रियद्वारा मनमें हर्ष विषाद इत्यादि रहित परिपूर्ण आनन्द मयभाव शुद्ध परमात्मरूप हौ यथार्थ अरुसब के देखनेको प्राकृत मनुष्योंके आचरण करते हौ सोई देखि लोगपरमेश्वरमें मनुष्य भाव आरोपित करतेहैं ४३ ॥

यत्पादपङ्कजपरागपवित्रगात्राभागीरथीभवविरिंचिमुखान्पुनाति ॥ साक्षात्सए वममदृग्विषयोयदास्तेकिंवर्ण्यतेममपुराकृतभागधेयम् ४४ ॥

(यत्पादपंकजपरागपवित्रगात्रा) आपके जिनपद कमलोंकीरजस्पर्शपाय पवित्रभयाहैगात जिनको ऐसी जो (भागीरथीभवविरिंचिमुखान्पुनाति) गंगा सो ब्रह्माशिवादि मुख्यजो देवताहैं तिनहिंपवित्र करतीहैं (सएवसा नात्यदास्तेममदृग्विषयः) सोई निश्चय करिकै साक्षात् जबआप मेरं नेत्रनकी विषयभयो भावमूर्त्तिमान्नेत्रनकेआगेखडेहैतौ अब(ममपुराकृतभागधेयम्किंवर्ण्यते)मेरेपूर्व जन्मनकी करीहुई जोसुकृति ताको फलवर्तमानमें जोमेरीअपूर्वभाग्यहै ताहिकैसेकोऊबखानकरै अर्थात् लोकना- पतसमय वामन नवऊंचेको पांवउठायेताके ठोकरते ब्रह्मांडभेदनह्वै गयात्यहि द्वारा ब्रह्मद्रवबहिआया भगवान्के पदस्पर्शते महापुनीत भयाजाकोब्रह्माशिवादिसब शशिपरराखे सोईगंगाकोभगीरथतपोबल भूमिकोलाये सोई अहल्या कहत कि जिनपद कमलोंकी रजस्पर्शपायपवित्रभयाहै गातजिनकोऐसी भागीरथीगंगा जो ब्रह्माशिवादि मुख्य देवता तिनहिंपवित्र करतीहै जाके पदरज के प्रभावते सोई निश्चयकरि साक्षात् जबआपही मेरेनेत्रनके आगेखडेहौ तौ मेरी भाग्यको कैसे कोऊप्रशंसाकरै ४४॥

मर्त्यावतारेमनुजाकृतिंहरिंरामाभिधेयंरमणीयदेहिनम् ॥ धनुर्धरंपद्मविशाललोचनंभजामिनित्यंपरमंपरायणम् ४५ यत्पादपङ्कजरजः श्रुतिभिर्विमृग्यंयन्नाभिपंकजभवःकमलासनश्च ॥यन्नामसाररसिकोभगवान्पुरारिस्तंरामचन्द्रमनिशंहृदि भावयामि ४६ ॥

(रामाभिधेयंहरिंतंअहंनित्यंभजामि) राम ऐसा नाम प्रसिद्धहै जिनको ऐसे जो हरि तिनहिं मैं नित्यही भजती हौं कथम्भूतं (मर्त्यावतारेमनुजाकृतिंरमणीयदेहिनम्) मनुष्य अवतार धरे संते मनुष्य कैसी आकृति द्विभुजस्वरूप परम सुंदरी देहैं चारि रूप ते अवतीर्ण भये इति बहु वचन को भाव है पुनः कथंभूतं (पद्मविशाललोचनं धनुर्धरंपरमंपरायणम्) कमलवत् सुंदर बड़े नेत्र धनुषधारण किहे उत्तम धर्म नीति पर तत्पर हैं अर्थात् अहल्या कहत कि जो मृतक समय एकबार उच्चारण ते महापात की जीव परम पद पावत ऐसा राम नाम जिनको लोक वेद में प्रसिद्ध है ऐसे जो हरि तिनहिं मैं नित्य भजती हौं भाव प्रथम ऋषिके उपदेश ते उद्धार हेतु भजत रही वर्त्तमान सेवा में तत्परहौं पुनः जिनकी दया ते उद्धार भई पति सयोग पावौंगी ताते जीवन पर्यंत भजौंगी ते कैसे हैं मनुष्य अवतार धरे संते मनुष्य कैसी आकृति द्विभुज परम सुंदरी देहैं चारि रूपते अवतीर्ण भये कमल सम सुंदरि बड़े नेत्र धनुष धारण किहे उत्तम धर्म नीति पर तत्पर हैं भाव स्वरूपवंत पर स्त्री आसक्त रहती हैं तो अवशि कामी होना चाहिये धनुष धरे तौ क्रोधी होना चाहिये सो नहीं सब भांति उत्तम हैं ४५ (यत्पादपंकजरजःश्रुतिभिर्विमृग्यम्) जिनके पद कमलों की रज श्रुतिन करिकै ढूंढ़ने योग्य है (चयत्नाभिपंकजकमलासनःभवः) पुनः जिनकी नाभी कमल ते ब्रह्मा उत्पन्न भये (यत्नामसाररसिकःभगवान्पुरारिः) जिनके नामन में सारांश जो राम नाम ताके रसिक भगवान् शिवहैं (तंरामचन्द्रंमनिशंहृदिभावयामि) तौन जो रामचन्द्रहैं तिनहिंमैं दिनौराति हृदयमें ध्यान

करतीहौं अर्थात् यथा कमलमें परागहोतीहै ताहीते सुगंध आवती है अरु पखुरी विकासकीन्हेंते देखि भी परती है इहां परमात्मपदरूप जोकमलहै ताकी पखुरिनसम अनेकन ब्रह्माण्डहैं महिमा सुगंधहै अंतर्यामीरूप सोई परागहै ताकी प्राप्ति जो चाहै तौ श्रुतिसिद्धान्त वाक्यन करिकै ढूँढ़ै यथा ऋक्पुरुषसूक्ते ॥ पुरुषएवेदंसर्वंयद्भूतंयच्चभव्यं उतामृतत्वस्येशानःयदन्नेनातिरोहति ॥ एतावानस्य महिमाअतोज्यायांश्चपुरुषःपादोस्याविश्वाभूतानित्रिपादस्यामृतंदिविअस्यार्थः (यत्भूतंचयत्भव्यं) जो पूर्व भया पुनः जो पीछे होइगो (इदंसर्वंएवपुरुषः) यह यावत् ब्रह्मांडरचनाहै सो सब उसी पुरुषको रूपहै (उतअमृतत्वस्यईशानः) संपूर्णमोक्षको स्वामीहैं (यद्अन्नेनअतिरोहति) आपनी अवस्थालोप करि यह संसाररूप भी होताहै (एतावानस्यमहिमा) ऐसी जाकी है महिमा (अतः ज्यायांश्चपुरुषः) इसीते श्रेष्ठ पुरुषभी कहावताहै (पादोऽस्यविश्वाभूतानि) एकपद विभूतिमें संसार में भूतमात्र सब रचनाहै उत्पत्ति पालन संहारादि (त्रिपादस्यअमृतंदिवि) तीनिपद जो नाशरहित विभूति सो आकाशमेंहै ताकी महिमा अगमहै इत्यादि वाक्यनकरिढूँढ़े प्राप्तहोतीहै जाके पदकमलों कीरजपुनः पखुरीकेशरि आदि कमलको स्थूलरूप होताहै तथाइहां जिनकीनाभी कमलते ब्रह्माभये तिनकरिकै चराचर मय जो ब्रह्माण्डरचनाहै सोई बिराट् जिनको स्थूलरूपहै पुनः कमलमें सारांश मकरंद रस होत ताके रसिक रस लोभी भ्रमर होत जो नित्यही पान करत में तृप्त नहीं होते हैं तथा इहां जाके पद कमल को सारांश रस राम नाम है ताके रसिक जे त्रिपुरासुर का नाश कीन्हे ऐसे समर्थ शिव भगवान् हैं भाव प्रीति समेत निरंतर जपत में तृप्त नहीं होते हैं भगवान् यथा ऐश्वर्य धर्म यश श्री वैराग्य मोक्ष इति षट् भग युक्त होय ताको भगवान् कही ऐसे समर्थ शिव जिनको नाम जपते हैं ताही बल ते मृत्युकाल रहित हैं अरुकाशीमें मरण काल राम नाम उपदेशकरि जीवमात्र को मुक्त करते हैं यह हाल इसी ग्रंथ में राज्याभिषेक समयस्तुति करत समय शिव आपही कहे इत्यादि जिनके नाम रसिक शिव भगवान् हैं ऐसे परमात्मा जो श्रीरघुनाथ जी तिनहिं दिनौ राति में अपने हृदय कमल में ध्यान करती हौं ४६ ॥

यस्यावतारचरितानिबिरंचिलोकेगायंतिनारदमुखाभवपद्मजाद्याः ॥ आनंदजाश्रुपरिषिक्तकुचाग्रसीमावागीश्वरीचतमहंशरणंप्रपद्ये ४७ सोयंपरात्मापुरुषःपुराणःएषःस्वयंज्योतिरनन्तआद्यः ॥ मायातनुंलोकविमोहिनींयाधत्तेपरानुग्रहएषरामः ४८ ॥

(विरंचिलोकेनारदमुखाभवपद्मजाद्याः यस्यअवतारचरितानिगायंति) ब्रह्मलोक विषे नारद हैं मुख्यजिन में ऐसेऋषीश्वर शिवब्रह्मादिदेवता सबजाके अवतार को चरित गावते हैं (चवागीश्वरी आनंदजअश्रुपरिषिक्तकुचाग्रसीमागायतितंशरणंअहंप्रपद्ये) पुनः सरस्वती आनंद उमँगतेबहेहुये आँसुनतेभीजताहै छातीको अग्रभाग इसदशाते गावतीहै जाकोचरिततिनकी शरणको मैं प्राप्तहौं अर्थात् अहल्याकहत कि नरनागस्वर्गकी कोकहै ब्रह्मलोक में जाको पावनयश प्रकाशमान है कौनभांति नारद पराशर लोमशसनकादिऋषीश्वर तथा शिवब्रह्मादि देवता इत्यादि सबजाके अवतारकोचरित भावबाल्मीककृतजो भविष्य रामचरितहै सोईगावतेहैं नित्यतथा प्रेमानंदउमँगतेजोआँसुबहतेहैंत्यहि जलतेसबछाती भीजिजातीहै ऐसप्रेम दशातेसरस्वती जाकोचरितगावतीहैं तिनश्रीरघुनाथजीकी मैं शरण में प्राप्तहौं ४७ (परात्मा पुराणः पुरुषःसःअयं) आत्मतेपरे शुद्ध परमात्मा पुनः सनातन

पुरुप सो इनहीं है (एपःस्वयंज्योतिःअनंतआद्यः) इनही स्वयं प्रकाशमान जिनको अंतकोऊ नहीं पावतसबते आदिहैं (एपरामःपरअनुग्रह मायातनुधत्ते याल्लोकविमोहिनी) इनहीरामपरारे ऊपर सदादयाराखि मायामयतनु धारणकिये कौन मायाजो लोकन को विशेषि मोहितकरती है अर्थात् अहल्याकहत कि जो शुद्ध परमात्म सनातन पुरुपजो सर्वोपरि कहावत सो इनही हैं जो मेरेनयन गोचर हैं अरुइनही स्वयंप्रकाशमान जिनकी महिमा को अंतकोऊ नहींपावत ऐसेअनन्त सबरूपते आदि इनहीरामसब जीवनपर सदादयाराखिभाव दर्शनमात्रसुलभजीव उद्धार हेतुजो लोकन को विशेषि मोहनहारी दिव्यमाया है त्यहिमयी परमअद्भुत स्वरूप धारण किये भावज्यहि रूपको देखत विमुख विषयीजीवभी सौभाग्यिकही प्रेमानंद ह्वै परमपद के अधिकारीहोते हैं ४८ ॥

अयंहिविश्वोद्भवसंयमानामेकंस्वमायागुणविम्बितोयः ॥ विरंचिविष्णवीश्वरनामभेदान्धत्तेस्वतंत्रःपरिपूर्णआत्मा ४९ नमोस्तुहेरामतवाङ्घ्रिपङ्कजंश्रिया धृतंवक्षसिलालितंप्रियात् ॥ आक्रांतमेकेनजगत्त्रयंपुराध्येयंमुनीन्द्रैरभिमानवर्जितैः ५० ॥

(परिपूर्णआत्मास्वतंत्र एकःअयंहि) भूतमात्र में परिपूर्ण व्याप्त जिनको आत्म रूपसोई स्वतंत्र एकइनही निश्चय करिसर्वोपरि हैं (यःविश्वउद्भवसंयमानांस्वमायागुण विम्बितः विरंचिविष्णु ईश्वर नामभेदान्धत्ते) जो प्रभुसंसार के उत्पत्ति पालन संहारादि व्यापारकरनेको अपनी मायाके गुणों में प्रतिविम्बित ह्वै ब्रह्माविष्णु शिवादिनाम भेदते धारणकीन्हे अर्थात् अहल्या कहत कि जो आत्मरूपते परिपूर्ण व्याप्त भूतमात्रको चैतन्य किहे हैं सोईसदास्वतंत्र जिनकी समता को दूसरा कोऊ नहीं एकइनही रघुनाथ जी निश्चयकरि सर्वोपरि हैं जो संसार के उत्पत्ति करनेको अपनी रजोगुणी माया में आपनी प्रतिविंबरूप प्रकटकरि तामें ब्रह्मानाम धारण कीन्हे तथा सतो गुणी मायामे प्रति विंबितह्वै तामें विष्णु नामधारण कीन्हें त्यहिरूपते जगत्को पालन करते हैं तथा तमोगुणी मायामें प्रतिविंबितह्वै तामें ईशनाम धारण करित्यहि रूपते जगत्को संहारकरतेहैं ४९ (हे रामतवअंघ्रिपंकजंश्रियावक्षसिधृतंप्रियात्लालितं) हे रघुनाथ जी आपके पदकमल लक्ष्मीजी अपनीछातीपरधरे प्यारते लाड़दुलारती हैं (पुराएकेनजगत्त्रयंआक्रांतं) पूर्वकालमें एकही पदकरिकै तीनिहूंलोकनकोनापे (अभिमानवर्जितैः मुनीन्द्रैः ध्येयंतस्मैनमोस्तु) अभिमानरहित मुनीन्द्रन करिके ध्यानकरिबे योग्य तिनपद कमलन के अर्थ नमस्कारहै अर्थात् अहल्याकहत कि हे श्री रघुनाथजी आपके पदकमलन की कैसी महिमा है जिनको लक्ष्मी जी अपनी छातीपर धरेप्यारते लाड़दुलार पूर्वक नित्य सेवन करतीहैं पुनः पूर्वकालमें बावनरूपते एकही पदकरिकै तीनिहूंलोकन को नापिलीन्हें क्षणमात्र में पुनः जिनके उरते अभिमानादि सब विकार जातरहे हैं ऐसे शुद्ध अंतसवाले मुनींद्रन करिके ध्यानकरिबे योग्यऐसे पदकमलनके अर्थमें नमस्कारकरती हौं ५० ॥

जगतामादिभूतस्त्वंजगत्त्वंजगदाश्रयः ॥ सर्वभूतेष्वसंसक्तएकोभातिभवान्परः ५१ ॐकारवाच्यस्त्वंरामवाचामविषयःपुमान् ॥ वाच्यवाचकभेदेनभवानेवजगन्मयः ५२ ॥

(जगतांआदिभूतःत्वं) जगत् के आदि कारण आपही हौ (जगत्त्वंजगत्आश्रयः) जगत्भी-आपही हौ काहेते जगत् आपही के आश्रय है (सर्वभूतेष्वसंसक्तोभवान्एकःपरःभाति) सर्वभूतनविषे

वास कीन्हे तौभी सबते अलग आप एक माया ते परे प्रकाश मान हौ अर्थात् अहल्या कहत कि हे प्रभु जगत् को उपजावन हारे आदि कारण आपही हौ पुनः जगत् आपही हौ भावजगत् मिथ्या ब्रह्म सत्य इत्यादि जगत् के आधार आपही हौ यद्यपि भूतमात्र विषे व्यापक तौभी सवते न्यारे हौ कौन भांति कारण मायाते परे अद्वितीय एक आपही स्वयं प्रकाशमान हौ (हेरामॐकारवाच्य.त्वं) हे रघुनाथ जी प्रणव रूप आपही हौ कौन भांति (अविषयःपुमान्‌वाचा)विषय रहित पुरुष वाचक हौ (वाच्यवाचकभेदेनजगत्मयःएवभवान्) स्वरूप नामभेद करिकै संसारमयी निश्चय करिकै आपहीहौ अर्थात् अहल्या कहत कि हे श्रीरघुनाथ जी पर ब्रह्म बोधक जो ॐकार शब्द है सो आपही हौ भाव आपको जो राम नाम है ताहीते ॐकार सिद्ध होत तहाँ वर्ण आगम वर्णविपर्यय वर्णविकार वर्ण नाश इति चारि रीति ते व्याकरण ते पद सिद्ध होत इहां रामशब्दमें रकार अकार मकार तीनि वर्ण हैं सो वर्ण विपर्यय करिकै अकार आदिमें आई रकार मध्यगई अरम ऐसा पदस्थित भया(रोर्विसर्गः) इतिरकारकी बिसर्ग भयी(हबे) इतिबिसर्गकोउकारभई(उओ)इति ओकारभई(मोनुस्वारः)इति ॐसिद्ध भया इत्यादि ॐकार वाच्य अर्थात् परब्रह्म परमात्म रूपआपहीहौ कैसे ॐकार रूपहौ तहां बिना प्रकृति पुरुष मिले स्वरूप किसी को नहीं है तैसा नहीं इहां शब्द स्पर्श रूप रस गंध मैथुनादि जो इन्द्रियन की बिषय है तिन करिके रहित भाव प्रकृति ते परे केवल पुरुष वाचकहौ पुनः वाच्यकहे यावत् रूप हैं अरु बाचक कहे यावत् नाम हैं ते सब भेद करिकै भाव प्रकृति में आपु प्रतिबिंबित भये सोई सब रूप हैं इत्यादि जगत् मयी निश्चयकरिकै आपही हौ दूसरा नहीं कछु है ५२ ॥

कार्यकारणकर्तृत्वफलसाधनभेदतः॥एकोविभासिरामत्वंमाययाबहुरूपया ५३ ॥

कर्तृत्व कर्ता यथा कुंभकारकारण जासों वस्तु बनाई जात यथा माटी साधन जाकी सहाय ते कार्य बनत यथा चक्र दण्ड डोरा ब्यौंडुथापीसांचा आदि कार्य सिद्ध वस्तु यथाकुंभ फल जो वस्तुते प्रयोजन होत यथा जल भरि लावना इत्यादि (भेदतःमाययाबहुरूपयारामत्वंएकोविभासि) पूर्व कहे हुये भेद ते माया करिकै बहुत रूप हैं तिन में हे रघुनाथ जी एक आपही प्रकाश किहेहौ अर्थात् अहल्या कहत कि ब्रह्मा बिष्णु शिवादि जो लोक करताहैं कारण जो माया है साधन जो पंचीकृत अर्थात् पंचभूतनमय व्यापार यथा (अथपंच के)प्रथम वाय्वा पाग्न्या काशा महीभिः पंच भौतिकाख्यं स्थूलंशरीरंतत्कथ्यते प्रथमंदशेंद्रियाणि श्रोत्रंचक्षुः स्पर्शनश्चरसनं घ्राणकंतथा॥हस्तपादपायुशिश्नमुख मे वेंद्रियाणिच (क्रमेणदश देवता यथा) दिक्सूर्य्यवायुवरुणआश्विनाविति ज्ञानदाः इन्द्रोविष्णुर्यमश्चैव प्रजेशोग्निश्च कर्मकाः ॥ आकाशतत्त्वतोज्ञेयंद्वयमास्यं श्रुतिद्वयं ॥ त्वक्‌ग्रहद्वयं बायोरग्ने नेत्रपदद्वयम्॥सलिलाद्रसनालिंगं गुदंघ्राणंक्षितेरापः॥एवंतत्त्वबिभागेन चेन्द्रियाणांसमुद्भवः शब्दोरूपंस्पर्शन श्चरसोगंधस्तथैवच ॥ क्रमेणविषयास्तेषांज्ञातव्याःसाधकोत्तमैः ॥ उत्क्षेपनादिहस्तस्यपादयोश्चलनं तथा॥ पायुशिश्नमुखादीनां बिसर्गो भक्षणंक्रमात्॥नभसोमस्तके बासो द्वारमस्यास्ति श्रोत्रकं ॥ आहारोप्यस्यविज्ञेयःश्रूयतेयच्छुभाशुभःम् ॥ वायो र्बासस्तु नाभौस्थान्नासिकाद्वार मुच्यते॥तस्याहारोहिगंधः स्यात्स्वासोत्स्वासक्रियास्मृताः॥पित्तेवह्निर्नेत्रद्वारमाहारोरूपदर्शनं ॥ ललाटेसलिलंतस्यलिंगजिह्वाचद्वारके॥ आहारोमैथुनंतस्याजिह्वाया षड्रसास्स्मृताः॥हृदयेतुक्षितंर्वासः स्याद्‌गुदं तस्यद्वारकं॥कामःक्रोधश्च लोभश्च मदमानावुभावपि॥पंचैतेगगनस्यांशाजानांतिपण्डिताः ज्ञनाः॥प्रकृतयः पंचबायोः धवनंचलनंतथा॥ संकोचनंप्रशारश्चतथैवोत्क्रमणंविदुः ॥ अग्नेरपिविदुः पंचनिद्राक्रांतिक्षुधातथा ॥ अप्यालस्यमुखापंच समयेसमये यथा जलस्यापि प्रकृतयोरक्तं स्वेदोमुखा

म्नुच ॥ रेतःपित्तंचपंचैताः शरीरेस्मिन्प्रवर्द्धकाः ॥ अस्थिमांसंत्वचानाड्योलोमान्येवेतिपंचधा ॥ पृथिव्यांशाशरीरेस्मिन्विज्ञेयाःसाधकोत्तमैः ॥ वायोस्का शाच्चित्तंचनभांसोपिप्रवर्तते ॥ सलिलान्मनएदस्यात् बुद्धिर्जाताक्षितेरपि ॥ अहंकारोग्निसंजातोरुद्रस्तस्यास्तिदेवता ॥ चित्तस्यदेवताजीवोमनसश्चंद्रमातथा ॥ ब्रह्माबुद्धेस्तथाज्ञेयावासुदेवादिकेपिच ॥ एवंचोत्पत्तिरेतेषांज्ञातव्यासाधकोत्तमैः ॥ हरिद्वायुररुणोऽग्निपृथिवीपीतासितंजलं ॥ कृष्णवर्णमथाकासमेवंतत्त्वोपलक्षणं ॥ योगोविरागःस्मरणंज्ञानविज्ञानमेवच ॥ उच्चाटनंतथाज्ञेयंचित्तस्यांशानिषद्यथा ॥ जपोयज्ञस्तपस्त्यागआचारोध्ययनंतथा ॥ बुद्धेश्चैवोपदंगानिज्ञातव्यानिमुमुक्षुभिः ॥ कर्माकर्मविकर्मादावनियमेनवर्तते ॥ संकल्पश्चविकल्पश्चमनाशोवहुशोयथा ॥ मानःक्रोधश्चदर्पाच पारुष्यमुपहिंसनं ॥ दृढवैराद्यहंकारेवर्ततेलक्षणानिषट् ॥ प्राणापानौसमानश्चोदानव्यानौचवायवः ॥ नाग.कूर्मःकृकिलश्चदेवदत्तोधनंजयः ॥ हृदिप्राणोगुदेपानःसमानोनाभिसंस्थितः ॥ उदानःकंठदेशेस्याद्व्यानःसर्वशरीरगः ॥ नागंकरोतिगुद्द्वारंकूर्मोनयनोन्मीलनं ॥ कृकिलस्तुक्षुधाकारोदेवदत्तोस्तुजृंभणं ॥ मृत्युगेहेवसत्येवंपंचमोवेधनंजयः ॥ नाभिहृत्कण्ठजिह्वोत्थाश्चतस्रःक्रमतोगिरः ॥ परातथाचपश्यंतीमध्यमावैखरीचताः ॥ श्रीसीतारामयोस्तत्त्ववर्णनंसापराभवेत् ॥ यथात्मजीवतत्त्वंचपश्यंतीकिथेयत्तदा ॥ स्वर्गादीन्धर्मकामार्थान्वर्णयेत्सातुमध्यमा ॥ व्यवहारवैपरीप्रोक्ताकेवलंयत्प्राकृतंइति ॥ पञ्चभौतिकंस्थूलशरीरंविश्वाभिमानप्रजापति देवता जाग्रदावस्था वैपरीवाणी अथसूक्ष्मशरीरं पंचप्राणमनोबुद्धि दशेंद्रियसमन्वितं अपंचीकृतमस्थूल सूक्ष्मांगंभोगसाधनम् ॥ इत्यादिसाधनहैं भूतचराचर ब्रह्मांडरचना सो कार्यहै पुनःगर्भवासजन्म हानि वियोगरुजजरामरणनरक इत्यादिदुःखकरफलहै तथा अरुजशरीरभोजन वसन स्त्री पुत्र धनधाम राज्यभूषण वाहन स्वर्गादि सुखमीठाफलहै इत्यादि आपुके प्रतिविम्बरूप भेदते मायाकरिकै अनेक रूप देखाते हैं तिनमें हे श्रीरघुनाथजी सर्वत्र एकआपही प्रकाशमानहौ यथा सजल अनेकन कुंभधरिदीजे तिनसब में सूर्यवत् प्रतिविंब देखाती है तिनमें एकसूर्यही प्रकाश किहे हैं तथा माया में प्रतिबिंबवत् चराचरमें एक आपही प्रकाशमानहौ यथा विष्णुपुराणे ॥ सएवमूलप्रकृतिर्व्यक्तिरूपीजगच्चसः ॥ तस्मिन्नेवलयंसर्वेया तितत्रचतिष्ठति ॥ कर्ताक्रियाणां सचइज्यते क्रतुसएवतत् कर्मफलंचतस्ययत् युगादि यत्साधनमप्यशेषतो हरेर्न किंचित् व्यतिरिक्तमस्ति ५३ ॥

त्वन्मायामोहितधियस्त्वांनजानंतितत्त्वतः ॥ मानुषत्वाभिमन्यन्तेमायिनंपरमेश्वरम् ५४ आकाशवत्त्वंसर्वत्रबहिरन्तर्गतोऽमलः ॥ असंगोह्यचलोनित्यःशुद्धोबुद्धः सदाद्वयः ५५ ॥

(त्वन्मायामोहितधियः त्वांतत्त्वत नजानंति) आपकी माया करिकै मोहित है बुद्धि जिनकी ते जन आपको यथार्थ तत्त्व नहींजानते हैं काहेते (परमेश्वरम्मायिनंमानुषत्वअभिमन्यंते) परमेश्वर परातत्त्व जो आपहौ तिनहि मायिक मनुष्य करि मानते हैं अर्थात् अहल्या कहत कि हेश्रीरघुनाथ जी यद्यपि आप परात्पर परब्रह्महौ सब जीवनपर कृपाकरि सुलभ उद्धार हेत राजकुमार रूपते अवतीर्ण भये परंतु आपकी कारण मायाने त्रिगुणात्म अहंकाररूपते भूतमात्रमें प्रवेशह्वै आत्मदृष्टि खैंचि जीवबुद्धी करिदिया ताते देहधरि सुख भोगकी इच्छाकीन्ही जबदेहपाये तब कार्यमायाने शब्दस्पर्श रूप रस गन्ध मैथुनादि विषय रूपते प्रवेशह्वै जीवको इंद्री सुख भोगमें लगाय देह बुद्धी करिदिया तब ज्ञान विचार रहित जो देखतेहैं सोई मानिलेते हैं इत्यादि आपकी माया करिकै मो-

हितहै बुद्धि जिनकी ते विषयीजन आपको यथार्थ तत्त्व नहीं जानते हैं काहेते परमेश्वर परातत्त्व जो आपहौ तिनहिं नरनाट्य देखि मायामय मनुष्य विषयासक्त मानते हैं ५४ (त्वंअमलःआकाशवत्बहिःअन्तस्सर्वत्रगतः) आप निर्मल आकाशकी नाईं बाहिर भीतर सर्वत्र व्यापकहौ (नित्यःअसंगोहिअचलः) सनातन संग रहित निश्चय करि स्थिर रहतेहौ (सदाशुद्धःबुद्धःअद्वयः) सदा एक रस ज्ञान अद्वयहौ अर्थात् अहल्या कहत कि हे श्रीरघुनाथजी आप कामादि मल रहित अमल आकाशकी नाईं भूतमात्रन के बाहेर भीतर व्यापक नित्य अर्थात् सनातनहौ किसीको संग नहीं राखतेहौ निश्चय करि अचल भाव कछुभी क्रिया नहीं करतेहौ सदा शुद्ध ज्ञानरूप एक आपहीहौ दूसरा नहीं ५५ ॥

योषिन्मूढाहमज्ञातेतत्त्वंजानेकथंविभो ॥ तस्मात्तेशतशोरामनमस्कुर्य्यामनन्य धीः ५६ देवमेयत्रकुत्रापिस्थितायाअपिसर्वदा ॥ त्वत्पादकमलेऽसक्ताभक्तिरेव सदास्तुमे ५७ ॥

(अहंयोपित्मूढाअज्ञातेविभोतेतत्त्वंकथंजाने) मैं स्त्रीजाति मूढ़ाभाव विचारहीन मोहवश अज्ञानहौं हे समर्थ प्रभु आपको यथार्थतत्त्व कैसे जानिसकौं (तस्मात्अनन्यधीःहेरामतेशतशोनमःकुर्य्यां) ताते अनन्य बुद्धि सो हे रघुनाथजी आपको सैकरौं नमस्कार करतीहौं अर्थात् अहल्या कहत कि जो तत्त्व ज्ञानवन्त योगी जननको जानिवो दुर्घटहै तहां मैंतौ स्त्रीजाति सहज स्वभावही मूढ़भाव हानिलाभ दुखको विचार नहीं मोहवश जो भावै सोई करिडारना ऐसी अज्ञानहौं हेविभो सबभांति समर्थ आपको यथार्थ तत्त्व कैसे जानिसकौं ताते सबको आस भरोसा त्यागि निसोत शरणागतीको भरोसा राखि इति अनन्य बुद्धि सो हे रघुनाथजी आपको सैकरौं नमस्कार करतीहौं ५६ (देवयत्रकुत्रापिमेस्थितायाः) हे देवस्वयंप्रकाशरूप जहां कहौं मैं रहौं तहां (सर्वदाअपित्वत्पादकमलेअसक्ता) सब कालमें निश्चय करिकै आपके पद कमलनमें मेरामन आसक्त बनारहै इत्यादि (भक्तिः एवमेसदाअस्तु) आपकी भक्ति निश्चय करिकै मेरे उरमें सदा वसीरहै अर्थात् अहल्या प्रार्थना करत कि स्वयंप्रकाशमान हेश्रीरघुनाथजी यह कृपा कीजिये कि अपने कर्मन वश ज्यहिलोक में जौनी योनिमें जन्मपाय जहां कहीं रहौं तहां निरन्तर मेरामन निश्चय करिकै आपके पदकमलनमें बसा रहै कबहूं बिलग न होवै इसी प्रेमापरादशाते आपकी उत्तम भक्ति निश्चय करिकै मेरे उरमें सदा वसीरहै भाव जन्म जन्मांतर आपहीकी भक्ति सदाकरौं यह कृपा करि दीजिये ५७ ॥

नमस्तेपुरुषाध्यक्षनमस्तेभक्तवत्सल ॥ नमस्तेस्तुहृषीकेशनारायणनमोस्तुते५८ भवभयहरमेकंभानुकोटिप्रकाशंकरधृतशरचापंकालमेघावभासम्॥कनकरुचिर वस्त्रंरत्नवत्कुंडलाढ्यं कमलविशदनेत्रंसानुजंराममीडे ५९ ॥

(पुरुषाध्यक्षतेनमःभक्तवत्सलतेनमः) हे पुरुषमात्रके साक्षीरूप आपके अर्थ नमस्कारहै यथा गाय लघुबछवा पर प्रीति राखत तथा भक्तनपर प्रीति राखनेवाले हे भक्तवत्सल आपके अर्थ नमस्कारहै (हृषीकेशतेनमःअस्तुनारायणतेनमःअस्तु) हे इन्द्रियनके स्वामी आपके अर्थ नमस्कार है जीवनके अन्तरवास करनेवाले अंतर्यामीरूप हे नारायण आपके अर्थ नमस्कारहै ५८ (भवभयहरं एकं) संसारकी भयजन्म मरणादि हरिलेनेको एक आपही समर्थहौ (कोटिभानुप्रकाशं) करोरिन सूर्यनको ऐसो प्रकाश तनुमें है (शरचापंकरधृत) बाण धनुष हाथमें धारण किहे (कालमेघावभा

सम्) नील मेघवत् तनुकी प्रभाहै (कनकरुचिरवस्त्रंरत्नवत्कुण्डलाढ्यं) सोनेकैसो वर्ण सुन्दरपीत पट धारण किहे रत्नजटित कुंडल कानन में शोभित (कमलविशदनेत्रंसानुजंराममीडे) कमलसम अमल नेत्र तिनहिं सहित लक्ष्मण श्रीरघुनाथजीकी मैं स्तुति करतीहौं अर्थात् अहल्या कहत कि आपके ऐश्वर्यरूपमें करोरिन सूर्यनकी ऐसी प्रकाशहै अरु संसारकी भयजन्ममरणादि हरिवेको एक आपही समर्थहौ पुनः माधुर्यरूपमें नील मेघनकैसी तनुमें शोभाहै वामकरमें धनुप दहिने में बाण धारण किहें कटिमें कनक वर्ण पीतपट शोभित कनकमय रत्नजटित कुंडल कानोंमें विराजमानहैं कमलसम अमल विशाल नेत्र जिनके तिनहिं लक्ष्मण सहित श्रीरघुनाथजीकी मैं स्तुतिकरतीहौं भावप्रसिद्ध सन्मुख दर्शन पायों इति अहोभाग्यहै ५६ ॥

स्तुत्वैवंपुरुषंसाक्षाद्राघवंपुरतःस्थितम्॥ परिक्रम्यप्रणम्याशुसानुज्ञाताययौपति ६० अहल्यायाकृतंस्तोत्रंयःपठेद्भक्तिसंयुतः ॥ समुच्यतेऽखिलैःपापैःपरंब्रह्माधिगच्छति ६१ पुत्राद्यर्थेपठेद्भक्त्यारामंहृदिनिधायच ॥ संवत्सरेणलभतेवंध्या अपिसुपुत्रकम् ६२ ॥

(पुरुषंराघवंसाक्षात्पुरतःस्थितं) पुरुष जो रघुनाथजी तिनहिं प्रसिद्ध आगे खड़े देखि अहल्या (एवंस्तुत्वापरिक्रम्यप्रणम्य) इस प्रकारते स्तुति परिक्रमा प्रणाम करिकै (सानुज्ञाताआशुपतिंययौ) प्रभुकी आज्ञाते शीघ्रही पति समीप जातीभई अर्थात् शिवजी कहत कि पुरुषार्थ करनेवाले भावपदरजदै अहल्याको पापशापते उद्धार करिदीन्हे ऐसे पुरुष श्रीरघुनाथजी तिनहिं प्रसिद्ध सन्मुख खड़े देखि अहल्या इस प्रकारते स्तुति कीन्ही पुनः परिक्रमा करि प्रणाम कीन्ही पुनः प्रभुकी आज्ञापाय शीघ्रही पतिके समीपको जातीभई ६० (अहल्यायाःकृतंस्तोत्रंभक्तिसंयुतःयःपठेत्) अहल्याको कियाहुआ यह जो स्तोत्रहै ताहि भक्ति सहित जो निष्काम पाठ करताहै (सअखिलैःपापैःमुच्यतेपरंब्रह्माधिगच्छति) सो सम्पूर्ण पाप न करिकै छूटि परब्रह्मके समीप ताको प्राप्त होत अर्थात् शिवजी माहात्म्य कहत कि अहल्याको कियाहुआ यह जो रघुनाथजीको स्तोत्र है ताहिप्रेमाभक्तिसहित जो जन पाठ करताहै सो सब प्रकारके पापनते छूटि परब्रह्मकी समीप ताको प्राप्त होताहै ६१ (पुत्रादिअर्थेरामंहृदिनिधायचभक्त्यापठेत्) पुत्रादि प्राप्ती अर्थ जो जन रघुनाथजीको ध्यान हृदयमें राखि पुनः भक्ति करिकै पाठ करताहै (संवत्सरेणवंध्याअपिसुपुत्रकंलभते) एक वर्ष पाठ करिकै वंध्याभी निश्चयकरिकै सुंदर पुत्रलाभपावै अर्थात् सकामह्वै पुत्रादि प्राप्ती अर्थ शुद्धह्वै आसन पर बैठि मंत्रराज की रीति अंगन्या सादि करि षोड़शोपचार पूजन करि श्रीरघुनाथजी को ध्यान हृदयमें राखि भक्ति करिकै भाव प्रभुमें प्रीति राखें जो जन नित्य पाठकरै तो एक वर्षमात्र में प्रसूता की कौनबात जो स्त्री वंध्याभी होवै सोभी निश्चयकरि सुन्दर स्वरूपवंत सुधर्मीपुत्र लाभपावै ६२॥

सर्वान्कामानवाप्नोतिरामचंद्रप्रसादतः ६३ ब्रह्मघ्नोगुरुतल्पगोपिपुरुषःस्तेयी सुरापीपिवा ॥ मातृभ्रातृविहिंसकोपिसततंभोगैकबद्धातुरः ॥ नित्यंस्तोत्रमिदंजपन्रघुपतिंभक्त्याहृदिस्थंस्मरन्॥ध्यायन्मुक्तिमुपैतिकिंपुनरसौस्वाचारयुक्तोनरः ६४

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसम्वादेपञ्चमःसर्गः ५ ॥

(रामचन्द्रप्रसादतःसर्वान्कामान्अवाप्नोति) यथा एकपुत्र प्राप्ती हेतु कहे इसीविधि पाठ करने ते श्रीरघुनाथजी की कृपाते अर्थ धर्मादि सब प्रकारकी कामना प्राप्तहोती है ६३ (ब्रह्मघ्नःअपिपुरुषःगुरुतल्पगः) जो ब्राह्मणको घात कियाहोय अथवा निश्चयकरि जो पुरुष गुरूकी शय्यापर पांव धराहोय (स्तेयीवाअपिसुरापी) सोना आदिको चोरावने वाला अथवा निश्चय करि नित्य मद पीनेवाला (मातृभ्रातृविहिंसकः) माता अथवा भाईको मारनेवाला (सततंअपिभ्आतरःभोगैकबद्धः) नित्यही निश्चय करि जे आतुरतासहित परस्त्री आदि विषय भोगमें असक्त रहतेहैं सोऊजो (इदंस्तोत्रंनित्यंजपन्भक्त्यारघुपतिंहृदिस्थंस्मरन्ध्यायन्मुक्तिंउपैति) इसस्तोत्रकोनित्यनेमते पाठ करै अरुभक्ति करिकै श्रीरघुनाथजी को हृदय विपेस्थित नामस्मरण रूपको ध्यानराखते मुक्तिपदको प्राप्तहोत (पुनः स्वाचारयुक्तःनरः असौकिं) पुनः जो आपने धर्मआचार युक्त मनुष्य ह्वैपाठकरि मुनि पावै ऐसा कहना क्या है अर्थात् शिवजी कहत किजो ब्रह्मदोषी गुरुशय्यापर पाँवधरनेवाला सोना आदि चोरावनेवाला मदपीनेवाला माता भाईको घातक आतुर ह्वै नित्य स्त्री भोगमें असक्त ऐसे पापी जनभी नामस्मरण नामरूप को ध्यान हृदय में राखिभक्ति सहित जो नित्य इस स्तोत्र को पाठकरै तौ सब पापनाश ह्वै मुक्ति पदको जाइपुनः जो आपने धर्म आचार सहित पाठकरै ताकीमुक्ति होना यहकौन बात है वह तौमुक्तिको अधिकारिन है ६४ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियबल्लभपदशरणागतबैजनाथविरचिते
अध्यात्मभूषणेअहल्यास्तुतिवर्णनोनामपंचमःप्रकाशः ५ ॥

सूतउवाच ॥ विश्वामित्रोथतंप्राहराघवंसहलक्ष्मणं ॥ वयंगच्छाममिथिलांजनकेनाभिपालितं ॥ १ ॥ दृष्ट्वाक्रतुवरंपश्चादयोध्यांगन्तुमर्हसि ॥ इत्युक्त्वाप्रययौ गंगामुत्तर्तुंसहराघवः ॥ तस्मिन्कालेनाविकेननिषिद्धोरघुनन्दनः ॥ २ ॥

सवैया ॥ पद धोवत केवट धन्य भयो मिथिलाहि गये तरि गंग यदा । जनकाय मिले नृप मंडल हारत भंग किये शिव चाप तदा ॥ लखि पत्र चले अवधेश लिये रथ बाजि गजादिक भूरि पदा । सब व्याहि बधूटिन धाम चले सिय सानुजराम नमामि सदा ॥ (अथ सहलक्ष्मणंराघवन्तंविश्वामित्रःप्राह) सूतजी बोले कि अब लक्ष्मण सहित जो रघुनाथ जी तिन प्रति विश्वामित्र कहते हैं (वयंमिथिलांगच्छामजनकेनअभिपालितां) हम तुम सब जनकपुर को चलते हैं जो राजा जनक करिकै पालित हैं अर्थात् शौनकादिप्रति सूतजी बोले कि अहल्या उद्धार भये पर अब लषण सहित रघुनन्दन प्रति बिश्वामित्र कहत कि अब समाज सहित हम जनक पालित मिथिलापुर को चलते हैं १ (क्रतुवरंदृष्ट्वापश्चात् अयोध्यांगन्तुंअर्हसि) यज्ञ उत्तम देखिकै पाछे अयोध्याजी जो जाना (इतिउक्त्वासहराघवः गंगांउत्तर्तुंप्रययौ) ऐसा कहि सहित रघुनन्दन मुनि गंगा उतरने हेतु तट समीप गये (तस्मिन्कालेनाविकेनरघुनन्दनः निषिद्धः) नावपर सब चढ़ने लगे त्यहि समय में केवट करिकै रघुनन्दन रोके गये अर्थात् विश्वामित्र कहत कि हे रघुनन्दन जनक जी ने प्रतिज्ञा की है कि जोधनुभंगकरै ताकोकन्याव्याहब इतिउचमधनुषयज्ञहै ताकोदेखिकैतब अयोध्याजीको चलिये इत्यादि कहिपुनः विश्वामित्र रघुनंदन सहित पारउतरने हेतु गंगा तीरजाय नावपर चढ़नेलगे ता समय केवट ने रघुनंदन को न चढ़ने दिया २ ॥

नाविकउवाच ॥ क्षालयामितवपादपंकजंनाथदारुदृषदा.किमन्तरम् ॥ मानुषीकरणचूर्णमस्तितेपादयोरितिकथाप्रथीयसी ३ पादांबुजंतेविमलंहिकृत्वापश्चात्परंतीरमहंनयामि॥नोचेत्तरीसद्युवतीमलेनस्याच्चेद्विभोविद्धिकुटुंबहानिः ४ ॥

(नाथतवपादपंकजंक्षालयामि) हे नाथ आपके पदकमल मैंधोइकै नावपर चढ़ाइहौं काहेते(ते पादयोःमानुपीकरणचूर्णअस्ति) आपके पायनविषे पापाणते मनुष्य करणहारा कछु चूर्णरहता है (इतिकथा प्रथीयसी) आपके पदनकी कथा अहल्याद्वारा प्रसिद्ध है (दारुदृपदाः किंअंतरम्)काठ पत्थरते क्याभेद है अर्थात् केवट कहत कि हेरघुनाथजी आपके पदकमल धोइलेउँ तब नावपर चढ़िये अरुविना धोये किसीभांति न चढ़ाइहौं काहेते आपके पायन विषे पापाणते मनुष्य करणहारा कछु चूर्णरहता है जो शिलारूप में लागिगये ते अहल्या दिव्यदेह स्त्री ह्वैगई सो कथा प्रसिद्ध है जो पापाण ते स्त्री भईतौ काठ पापाणते क्याभेद है पदरेणु लागे काठकी नावभी स्त्री ह्वै जाइगी ३ (ते पादांवुजंहिविमलंकृत्वा) आपके पदकमल निश्चय करिधोय अमल करिनावपर चढ़ाय (पश्चात् अहंपरंतीरनयामि) त्यहि पाछे मैं गंगापार तीरको लैजाइहौं (नोचेत्तरीसत्युवतीअलेन) नाहीं तौ नावउत्तम स्त्री भूपितह्वै करि (चेद्विभोकुटुंवहानिःविद्धि) तामेंतौ हेसमर्थप्रभु मेरे कुटुम्वकी हानि जानिये अर्थात् केवट कहत कि हे श्रीरघुनाथजी प्रथमतौ आपके पदकमल निश्चय करि रजधोय अमल करि त्यहि पाछे नावपर चढ़ाय गंगापार तीर को लैजाइहौं नाहींतौ जो बिनापद धोये चढ़िजैहौ तौ पदकी रजलागे ते मेरीनाव उत्तम स्त्री भूपणह्वै जाइगी भावजो नीचस्त्री होती तौ मेरे कामकी होती अरुउत्तम तौ किसी महाऋषीश्वर के योग्य होइगी सोऊमेरे हाथते गई तामें तौ हे समर्थ प्रभुमेरे कुटुंव की हानि जानिये भावइसी नावकी कमाई सवखातेहैं जव नाव न रही तवसव परिवारै भूखोंमरिजाईतामेंआपको क्यालाभहै यहविचारि पदधोनेदीजिये संवोधनमें विभो कहवे को भावआप समर्थ हौ मोकोभी भवसागर पारकरौ ४ ॥

इत्युक्त्वाक्षालितौपादौपरतीरंततोगताः ॥ कौशिकोरघुनाथेनसहितोमिथिलांययौ ॥ ५ ॥ विदेहस्यपुरप्रान्तऋषिवाटंसमाविशत् ॥ प्राप्तंकौशिकमाकर्ण्यजनकोऽतिमुदान्वितः ॥ ६ ॥

इतिउक्त्वा पादौ क्षालितौततः परतीरंगताः)ऐसाकहि प्रभुकी आज्ञापाय केवटप्रभुके दोऊपद धोय तदनंतर उसपार तीरलैगया तव (रघुनाथेन सहितः कौशिकः मिथिलांययौ) रघुनंदन करिकै सहित विश्वामित्र मिथिलापुर को जाते भये अर्थात् विना पांयधोय चढ़ोगे तौ पदरजलागे मेरी नाव दिव्यस्त्री ह्वै काहूऋषीश्वर को वरैगी अरुविना नाव मेरापरिवार भूखनमरि जाइगो ताते पद रजधोय नावपर चढ़ाइ हौं ऐसाकहि प्रभुकी आज्ञाते वड़भाग्य वाला केवट कठौता में जललाय प्रभुके दोऊपांय धोयपान करि परिवारसहित कृतार्थ ह्वै तवसवको चढ़ाय खेयनाव गंगापारलैगया नावते उतारि रघुनंदन करिकै सहित विश्वामित्र मिथिलापुरको गये ५ (विदेहस्यपुरप्रान्त) विदेहकेपुर ते विलग (ऋषिवाटंसमाविशत्) जहांऋषिन को वासहै तिसमार्ग में सम्पूर्ण समाज सहित प्रवेश कीन्हें चले जाय सुथल देखिउतरे (कौशिकं प्राप्तं आकर्ण्य) विश्वामित्रहि आयेसुनि (जनकःअतिमुदान्वितः) जनकजी अतिआनंद सहित ६ ॥

पूजाद्रव्याणिसंग्रह्यसोपाध्यायःसमाययौ ॥ दण्डवत्प्रणिपत्याथपूजयामासकौशि

कम् ७ पप्रच्छराघवौदृष्ट्वासर्वलक्षणलक्षितौ ॥ द्योतयंतौदिशःसर्वाश्चंद्रसूर्याविवापरौ ८ कस्यैतौनरशार्दूलौपुत्रौदेवसुतोपमौ ॥ मनःप्रीतिकरौमेद्यनरनारायणाविव ९ ॥

(पूजाद्रव्याणिसंगृह्य) पूजन करने की सब वस्तु लैकै (सउपाध्यायःसंआययौ) सहित कुल गुरू अन्य मंत्री आदि सम्पूर्ण समाज युत समीप आयकै (दण्डवत्प्रणिपत्यअथकौशिकंपूजयामास) जनकजी दण्ड प्रणाम करि तब विश्वामित्र जी को पूजन कीन्हें अर्थात् विश्वामित्र आय यह सुनि जनकजी अत्यन्त आनन्द ह्वै जल गन्धदल फूल फल धूप दीपादि पूजन की सामग्री लै गुरूसतानन्द सहित मन्त्री आदि समाज सहित समीप जाय प्रथम दण्डप्रणाम करि सब अर्घ पाद्यादि षोडशोपचार विश्वामित्र जी को पूजन कीन्हें ७ (अपरौचन्द्रसूर्यौइवसर्वाःदिशःद्योतयन्तौ) दूसरे चंद्र सूर्यनकी सम सब दिशनको प्रकाश करनेवाले तथा (सर्वलक्षणलक्षितौराघवौदृष्ट्वापप्रच्छ) स्वरूपता स्वभावादि सब शुभ लक्षण सहित श्रीरघुनन्दन लषणको देखि मुनि ते जनकजी पूँछते भये ८ (देवसुतउपमौनरशार्दूलौएतौकस्यपुत्रौ) देवपुत्रन की उपमा देने योग्य मनुष्यन में उत्तम ये दोऊ किसके पुत्र हैं (नरनारायणौइवअद्यमेमनःप्रीतिकरौ) नर नारायण की सम अबतो मेरेमन में प्रीति उत्पन्न करि रहे हैं अर्थात् शीतल स्वभाव गौर वर्ण दूसरे चंद्र सम लषणलाल तथा परम प्रतापवन्त दूसरे सूर्य सम रघुनाथजी ते दशौदिशि प्रकाश कीन्हें पुनः सामुद्रिककी रीति सब उत्तम लक्षण स्वरूपमें देखात तथा शील संकोच नम्रतादि स्वभावमें देखाते हैं ऐसे दोऊ भाइन को देखि मुनि सों जनकजी पूँछते हैं हे मुनि देवन के ऐसे पुत्र मनुष्यन में उत्तम ये दोऊ किसके पुत्रहैं किस कारण पूँछताहौं कि या समय हमारे मन में ऐसी प्रीति उत्पन्न करते हैं यथा ये नरनारायणहैं ९ ॥

प्रत्युवाचमुनिःप्रीतोहर्षयन्जनकंतदा ॥ पुत्रौदशरथस्यैतौभ्रातरौरामलक्ष्मणौ ॥ १० ॥मखसंरक्षणार्थायमयानीतौपितुःपुरात् ॥ आगच्छन्राघवोमार्गेताटकांविश्वघातिनीम् ११ शरेणैकेनहतवान्नोदितोऽमितविक्रमः ॥ ततोममाश्रमंगत्वाममयज्ञविहिंसकान् १२ ॥

(ततोप्रीतिःमुनिःहर्षयन्जनकंप्रतिउवाच) राजा के वचन सुनि प्रीतिपूर्वक मुनि विश्वामित्र हर्ष उपजावने वाले वचन जनक सों बोलते भये (दशरथस्यपुत्रौएतौरामलक्ष्मणौभ्रातरौ) दशरथ के पुत्र ये राम लक्ष्मण नाम दोऊ भाय हैं १० (मखसंरक्षणार्थायपितुःपुरात्मयानीतौ) अपनी यज्ञ के रक्षा करिबे अर्थ इनके पिताको पुर जो अयोध्या जी तहां ते हम लै आये (मार्गेआगच्छन् राघवः विश्वघातिनिम्ताटकाम्) राहमें आवत समय रघुनन्दन संसारको घात करनेवाली ताड़का को ११ (नोदितःअमितविक्रमः एकेनशरेणहतवान) मेरी प्रेरणा ते बड़े पराक्रमी रघुनन्दन एकही बाण करिकै मारे अर्थात् रघुनन्दन की प्रशंसा पूर्वक जनक जी के वचन सुनि मुनि के मनमें प्रीति उपजी त्यहि सहित विश्वामित्र जी बल वीरता प्रताप में रघुनन्दन के चरित कहि धनुर्भंगको बोध करवावा चाहते हैं इति हर्ष उपजावने वाले वचन जनक प्रति बोलतेभये कि श्याम बड़े रामनाम गौर छोटे लक्ष्मणनाम दोऊ भाई अवधेश महाराज दशरथ के पुत्र हैं यहां आवने को हेतु यह है कि मैं अपनी यज्ञ के रक्षा करिबे अर्थ मैं जाय यांचना करि दशरथ जी ते मांगि अयोध्या ते लै चलेउँ राहमें आवत समय संसार को नाशकरनेवाली ताड़का देखि परी ताके वध करने को मैंने आज्ञा

दिया ताको अंगीकार करि रघुनन्दन ऐसे महा पराक्रमी हैं कि एकही बाण प्रहार करि ताड़का को बध किया (ततःममआश्रमंगत्वा) तदनन्तर रघुनन्दन मेरे आश्रम को गये (ममयज्ञविहंसकान्) तहां जे मेरी यज्ञ के विशेषि विध्वंस करनेवाले रहे तिनहिं १२ ॥

सुबाहुप्रमुखान्हत्वामारीचंसागरेऽक्षिपत् ॥ ततोगंगातटेपुण्यगौतमस्याश्रमे शुभे १३ गत्वातत्रशिलारूपागौतमस्यबधूस्थिता ॥ पादपंकजसंस्पर्शाज्जाता मानुषरूपिणी १४ दृष्ट्वाहल्यांनमस्कृत्यतयासम्यक्प्रपूजितः+॥ इदानींद्रष्टुकामस्तेगृहेमाहेश्वरंधनुः १५ ॥

(सुबाहुप्रमुखान्हत्वा) सुबाहु सेनापति रहा जिनमें त्यहि सहित राक्षसी सेना को नाशकिये अरु(मारीचसागरेअक्षिपत्) मारीचहि बाण बे गते उड़ाय दिये सो उस किनारे जाय समुद्र में गिरा अर्थात् मार्गमें ताड़का मारि पुनः मेरे आश्रम में आये तहां यावत् मेरी यज्ञ के विध्वंस करता राक्षस रहे तिनमें मुखिया सुबाहु सहित सब राक्षसन को सन्मुख समर में नाशकरिडारे अरु मारिच को बाण बेग ते उड़ाय दिये सो जाय उसकिनारे समुद्रमें गिरा इस भांति मेरी यज्ञ पूर्ण करिकै इधरको चले (ततःपुण्यगंगातटे) तदनंतर पुण्य मय गंगातटमें (गौतमस्यशुभेआश्रमे)१३ (गत्वा) गौतम ऋषिके मंगलीक आश्रम में पहुँचे (तत्रगौतमस्यबधूशिलारूपास्थिता) तहां गौतमकी स्त्री अहल्या शिलारूपास्थित रहे सो (पादपंकजसंस्पर्शात्मानुषरूपिणीजाता) रघुनन्दन के पद कमल छुइ जात ही शिला ते मनुष्यरूप ह्वै गई अर्थात् विश्वामित्र कहत कि खलमारि यज्ञ पूर्णकरि मेरे संग रघुनन्दन इधरको चले पीछे पुण्यमय गंगातट में जो गौतम ऋषिको मंगलीक आश्रम रहै तामें आय पहुँचे तहां गौतम की स्त्री अहल्या पति शाप ते शिलारूप परी रहै सो रघुनन्दन के पद कमल की रज छुइजातही शिलारूप ते मनुष्य रूप ह्वै गई १४ (अहल्यांदृष्ट्वानमस्कृत्य) अहल्याजो रहै ताहि देखि रघुनन्दन नमस्कार कीन्हे (तयासम्यक्प्रपूजितः) त्यहिकरिकै रघुनन्दन सम्पूर्ण प्रकार पूजे गये अर्थात् अहल्या को प्रसिद्ध देखि रघुनन्दन प्रणाम कीन्हे पुनः अहल्या ने षोडशोपचार पूजन किया पुनः स्तुति करिपति समीपगई हेजनकजी (इदानींतेगृहेमाहेश्वरंधनुःद्रष्टुकामः) अब यासमयमें तुम्हारे घरमें जो महादेवजी को धनुष है ताको देखने की कामना रघुनन्दनकोहै अर्थात् विश्वामित्र जी सब बातनते भाव दर्शाये यथा मेरे हित हेतुमाता पिताके वियोगदुख न माने प्रसन्न रहै भाव त्याग वीरता सहित धर्मवंत है पुनः ताड़का सुबाहु आदि सबलवीरन को देखि शंका न आई प्रसन्नता सहित सन्मुख समरमें क्षणैभरेमें सबको नाश करि दीन्हे भाव युद्धवीरता सहित तेज प्रतापवंत हैं जिनकी पद रज लागे अहल्या पाप शाप ते छूटि पावन भई भाव दया वीरता सहित शक्तिवंत है इत्यादि सबकार्य करि अब या समयमें हेजनक जी तुम्हारे घरमें जोशिवजीको धनुष है सो देखा चाहते हैं भाव बल भी प्रसिद्ध किया चाहते हैं १५ ॥

पूजितंराजभिस्सर्वैर्दृष्टमित्यनुशुश्रुम॥अतोदर्शयराजेंद्रशैवंचापमनुत्तमम् १६ दृष्ट्वायोध्यांजिगमिषुःपितरंद्रष्टुमिच्छति ॥ इत्युक्तामुनिनाराजापूजार्हावितिपूजया१७॥

(सर्वैःराजभिःदृष्टंपूजितंइतिअनुशुश्रुम) सबराजन करिकैदेखा गयाअरु पूजागयाहै (अतःराजेंद्र अनुत्तमंशैवंचापंदर्शय) इसकारण हेराजेंद्र जनकजी उत्तमशिवको धनुपदेखाइये अर्थात् विश्वामित्र

+ पादावुरजस्पर्शात्सा[?]विशापाद्विमोचिता ॥ यह अर्द्धश्लोक किसी प्रतिमें है किसीमें नहीं जरु प्रसंगसमास के पीछे होता है ताते क्षेपक से देखाता है ॥

कहत कि लोकन के यावत् राजा आये तिन करिकै उठाय देखागया जब न उठा तबमनतेहारि मानि पूजागया भाव अचल अतुट जानि घूमि जाय बैठिगये इसकारण हे राजन् मैं उत्तम जनक जी उत्तम शिवको धनुष रघुनन्दन को देखाइये १६ (दृष्ट्वापितरंद्रष्टुंइच्छातिअयोध्यांजिगमिषुः) धनुष को देखि रघुनन्दन पिताके देखने की इच्छा किहे अयोध्याको जावा चाहतेहैं (मुनिनाइतिउक्त्वा) मुनि करिकै ऐसे वचन कहे गये (पूजार्हौइतिराजापूजया) पूजन करिवे योग्य दोऊ राजकुमार हैं इत्यादि विचारि राजा विधिवत् दोऊ राजकुमारन को पूजे अर्थात् विश्वामित्र कहत कि हे जनकजी आतुरता याते है कि धामत्यागेबीसदिन भये अरुसव कार्यभी ह्वै चुका ताते धनुष देखि पिताके देखने की इच्छाहै ताते शीघ्रही अयोध्याजीको जावाचाहते हैं तातेउत्तम शिव धनुष रघुनंदन को देखाइये ऐसा वचनजब विश्वामित्रने कहा तब दोऊराजकुमारन को पूजवे योग्यपरब्रह्म अवतीर्ण जानि षोड़शोपचार पूजनकीन्हे १७ ॥

पूजयामासधर्मज्ञोविधिदृष्टेनकर्मणा ॥ ततःसंप्रेषयामासमंत्रिणंबुद्धिमत्तरम् ॥ १८ ॥ जनकउवाच ॥ शीघ्रमानयविश्वेशचापंरामायदर्शय ॥ ततोगतेमंत्रिवरे राजाकौशिकमब्रवीत् ॥ १९ ॥ यदिरामोधनुर्धृत्वाकोट्यमारोपयद्गुणं ॥ तदामया त्मजासीतादीयतेराघवायहि ॥ २० ॥

(विधि दृष्टेन कर्मणा धर्मज्ञः पूजयामास) वेदविधान देखि त्यहि कर्मन करिकै राजकुमारन को पूजन करि (ततःबुद्धि मत्तरंमंत्रिणंसंप्रेषयामास) तदनंतरवड़े बुद्धिवंतमंत्रीजो हैं ताहिजनक जी पठावतेभये अर्थात् स्वरूप देखि प्रभाव सुनि जानिलिये कि परब्रह्म अवतीर्ण भये धनुष भी तोरैंगे इत्यादि पूजवे योग्य विचारि जनकजी प्रथम वेदविधान कर्म नकरि राजकुमारन को पूजि पुनः बुद्धिवंत मन्त्रीको पठाये १८ (विश्वेशचापंशीघ्रं आनयरामायदर्शय) जनकजी बोले कि शिव धनुष जल्दी उठवाइ लाय रघुनंदनकेअर्थ देखावौ (ततःमंत्रिवरेगतेकौशिकंराजाअब्रवीत्)मंत्रीगये संते विश्वामित्रप्रतिराजा बोलते भये १९ (यदिरामःधनुःधृत्वाकोट्यांगुणंआरोपयत्) जो रामधनुष को उठावैंगो सामेंरोदा चढ़ावैं (तदासीताआत्मजामयाराघवायहिदीयते) तौसीताकन्याहम करकै राघवके अर्थ निश्चयकरि दीजाय अर्थात् बुद्धिमान्मंत्री सों जनकजीवोले कि समूहसुभटन को लै जाय शिव धनुषशीघ्रहीं लाय रघुनंदन को देखावौ जबमंत्री गये तब विश्वामित्र सों जनक जी कहे कि जो रघुनंदन धनुषउठायगोसानवाय रोदा चढ़ायलेवैं तौ सीतानामे कन्यामैं रघुनंदनके साथ निश्चय करिविवाहौं यह सुनाय धनुभंग व्यापार में उद्दीपनकराये २० ॥

तथेतिकौशिकःप्राहरामंसंवीक्ष्यसस्मितम् ॥ शीघ्रंदर्शयचापाग्र्यंरामायामिततेजसे २१ एवंब्रुवतिमौनीशआगताश्चापवाहकाः ॥ चापंगृहीत्वाबलिनःपंचसाहस्रसंख्यकाः २२ घंटाशतसमायुक्तंमणिवज्रैर्विभूषितं ॥ दर्शयामासरामायमंत्रीमंत्रवतांवरः २३ ॥

सस्मितम्रामंसंवीक्ष्यकौशिकः प्राहतथाइति) मुस्कान सहित रघुनंदनकी दिशिदेखिकै विश्वामित्र बोले कि हेराजन् जैसा आपकहतेहौ तैसाही होइगो (अमिततेजसेरामायचापाग्र्यंशीघ्रंदर्शय) अमितहै तेजजिनमें ऐसेरघुनंदन के अर्थ धनुषनमें श्रेष्ठजो पिनाक ताहि शीघ्रदेखाइये २१ एवं ब्रुवति मौनीशेचाप वाहकाःआगताः) इसप्रकार मुनिवरकहतहीरहे तैसेही धनुषकेलावने वालेआय

गये (पंचसाहस्रसंख्यकाः बलिनःचापंगृहीत्वा) पांचहजार गनती में बलीजन धनुपकोमकूसा परधरे ले आये अर्थात् राजाके वचनसुनि मुसकाय रघुनंदन की दिशिदेखि भावप्रभुको रुख लैंके विश्वामित्र बोले हे राजन् जैसाकहते हो तैसाही होइगो भाव धनुटूटी विवाहहोई परन्तु श्रेष्ठ धनुप को समूह तेजवंत रघुनंदनको शीघ्र देखाइये इसप्रकार मुनिवर कहतैरहे तैसेही धनुपके लावने वाले आयगये गनती में पांचहजार बली जन धनुप को लिहे आवते हे २२ (शतघंटासमायुक्तं) सौघंटा संयुक्त (मणिवस्त्रैर्विभूषितं) मणिजटित वसनमें गोपित इतिमणिवसन करिकैविशेषविभूषित जोधनुष ताहि (मंत्रवतांवरःमंत्रीरामायदर्शयामास) उत्तममंत्र देनेवाला जो मंत्रीसो रघुनंदनके अर्थदेखाता भया अर्थात् जामें सौघंटालगं मणिजटित वसनमें गोपित ऐसा जो धनुप ताहि जनकको श्रेष्ठ मंत्री लवाय लायश्री रघुनंदन को देखावताभया २३ ॥

दृष्ट्वारामःप्रहृष्टात्माबध्वापरिकरदृढम् ॥ गृहीत्वावामहस्तेनलीलयातोलगन्ध नुः २४ आरोपयामासगुणंपश्यत्स्वखिलराजसु ॥ ईषदाकर्षयामासपाणिनादक्षि णेनसः २५ बभंजाखिलहृत्सारोदिशःशब्देनपूरयन् ॥ दिशश्चविदिशश्चैवस्वर्ग मर्त्यरसातलम् २६ ॥

(रामःदृष्ट्वाप्रहृष्टआत्मापरिकरंदृढमुबध्वा) रघुनाथ जी धनुपको देखिकै परम आनन्दहूवै कटि में फेट पुष्ट करि बांधि (वामहस्तेनधनुः गृहीत्वालीलयातोलयत्) वाम हाथे करिकै धनुप पकरि खेलवार मात्रही उठाय लिये अर्थात् मन्त्री लाय आगे धराय दिये तब रघुनाथ जी शिव धनुष को देखि परम आनन्द हूवै उठि खड़े हूवे पीताम्बर को कटि में फेट पुष्टकरि बांधि बायेंहाथे धनुपपकरि सहजहीं उठाय लिये २४ (अखिलराजसुपश्यत्सुगुणंआरोपयामास) सब राजन् के देखत सन्ते रोदा चढ़ाय दिये पुनः (सःदक्षिणेनपाणिनाईषदाकर्षयामास) सो धनुप दहिने हाथ करिकै थोरेही श्रमते खैंचिलिये अर्थात् समाज के राजा सब देखते रहे यथा सहजही बाम हाथे धनुप उठाय लीन्हें नवाय रोदा चढ़ाय सो रोदा दहिने हाथ गहि सहजहीं में खैंचि ताने भाव उठावत चढ़ावत खैंचत में परिश्रम किसी ने न देखा २५ (अखिलहृत्सारःबभंजशब्देनदिशःपूरयन्) सब के हृदय के सारांश श्रीरघुनाथ जी धनुप को तोरिडारे ताके शब्द करिकै सब दिशा भरि पूरिगईं (दिशःचविदिशःच एवपूर्वदक्षिणादिदिशापुनःईशानअग्नेयादि विदिशःपुनःनिश्चयकरिकै (स्वर्गमर्त्यरसातलम्) स्वर्ग भूतल रसातलादि सब लोकन में अर्थात भूतमात्र के हृदय में सारांश जो अंतर्यामी रूपते बसे हैं ऐसे श्रीरघुनाथ जी बीचते धनुप तोरिडारे ताकी शब्दकरिकै सबदिशा पूरिगईं तहांपूर्व दक्षिण पश्चि- म उत्तर दिशा हैं ईशान अग्नेय नैर्ऋत्य वायव्य विदिशा इत्यादि स्वर्ग भू रसातलादि तीनि हूं लोक शब्दते भरिजाते भये २६ ॥

तदद्भुतमभूत्तत्रदेवानांदिविपश्यताम् ॥ आच्छादयन्तःकुसुमैर्देवास्तुतिभिरीडिरे २७ देवादुंदुभयोनेदुर्नन्तृतुश्चाप्सरोगणाः ॥ द्विधाभग्नंधनुर्दृष्ट्वाराजालिंग्यरघूद्वह २८ विस्मयंलेभिरेसीतामातरोन्तःपुराजिरे ॥ सीतास्वर्णमयीमालांगृहीत्वादक्षिणेक रे २९ ॥

(तत्अद्भुतंअभूत्)जो शब्द सुना ताते सबको आश्चर्य होता भया(तत्रदेवानांदिविपश्यताम्) तहां देवतन के वृंद आकाश ते देखि रहे हैं (देवाःकुसुमैःआच्छादयंतःस्तुतिभिःईडिरे) देवता फूलन

करिकै रंगभूमि को तोपि दिये पुनः स्तुति वचनन करिकै प्रभुकी प्रसंशा करि रहे हैं २७ (देवाःदुंदुभयोनेदुःचअप्सरोगणाःननृतुः) देव गण नगारा बजावते हैं पुनः अप्सरा समूह नाचिरहीहैं (धनुःद्वियाभग्नंदृष्ट्वाराजारघूद्वहंआलिंग्य) धनुष द्वै खंड टूटो देखि राजा जनक रघुनन्दनहिं उरमें लगाय लिये अर्थात् जो धनुष भंग को घोर शब्द सुनिपरो ताते सब लोक वासिन को आश्चर्य भया भाव किस कारण ऐसा शब्द भया तासमयदेवगण आकाशते प्रभुको देखि रहे हैं अरु फूलन की वर्षाकरि रंगभूमि मूंदिदिये पुनः वेद वाक्यन ते प्रभुकी स्तुति प्रसंशा करतेहैंपुनः देवगण नगारा बजावत विमानन पर अप्सरा नाचि रही हैं द्वै खंड टूटो धनुष देखि जनकजी अत्यन्त वात्सल्य सनेहते रघुनन्दन को उरमें लगाय लिये २८ (अन्तःपुरआजिरेसीतामातरःविस्मयंलेभिरे) राजमंदिर के आंगन में जानकी जी की माता विस्मय को प्राप्त भईं (स्वर्णमयीमालांसीतादक्षिणेकरेगृहीत्वा) सोने सों रचित जयमाला ताहि श्रीजानकी जी दहिने हाथ में लेती भईं अर्थात् श्यामसुंदर राजकुमार के कोमल कर कमलों ते धनुष भंग भया इत्यादि सुनि राजमंदिर के आंगनमें सीतामातु सुनयना जी के मनमें बड़ा आश्चर्य भया तब जानकी जी आनंद ह्वै कंचन मय रचित जयमाला दहिने हाथमें लैकै सखिन सहित मंदिर ते चलती भईं २९ ॥

स्मितवक्त्रास्वर्णवर्णसर्वाभरणभूषिता ॥ मुक्ताहारैःकर्णपत्रैःक्वणच्चलितनूपुरा ३० दुकूलपरिसंवीतावस्त्रांतर्व्यंजितस्तनी ॥ रामस्योरसिनिक्षिप्य स्मयमानामुदंययौ ३१ ततोमुमुदिरेसर्वे राजदाराःस्वलंकृता ॥ गवाक्षजालरंध्रेभ्योदृष्ट्वालोकविमोहनम् ३२ ॥

स्मितवक्त्रास्वर्णवर्णा) मुसकानि युत मुखसोने कैसीकांति तनको वर्ण (सर्वाभरणभूषिता) हंसक आदिचूड़ामणि पर्यंतसर्वांगभूषणन ते भूषित (मुक्ताहारैःकर्णपत्रैःक्वणत्चलितनूपुरा) मोतिनकेहारन करिकै ग्रीवाउर नाभी पर्यंत भूषित कर्णफूलन करिकै कानकपोल भूषित मधुर शब्द युत चलायमाननूपुरन ते पदभूषित ३०(दुकूलपरिसंवीता) जरतारीरे शमीवसनपहिरे (वस्त्रांतर्व्यंजितस्तनी) वसनके भीतर गुप्तउन्नताप्रकट होती है स्तनौ की जिनके (रामस्यउरसिनिक्षिप्य) रघुनाथ जीके गरेमें पहिराय छातीपर शोभित करि (स्मयमानामुदंययौ) मुसकनियुत आनन्दको प्राप्तभईं अर्थात् कैसीहैं जानकी जी मुसकानि युत प्रसन्न मुखचंद्रसोने की ऐसीकांति गौरतन वर्ण नखशिखतक सर्वांग भूषणन ते भूषित ते औरतौ वसन में गुप्त अरुमोतिन के हारउरपर कर्णफूल कपोलन पर शब्दयुत चलायमाननूपुर पांयनमें प्रसिद्धहैं जरतारी रेशमी विचित्र वसन पहिरे वसनके भीतर ते उन्नता प्रसिद्ध है उरोजों की जिनके ऐसी श्रीजानकी जी समीप आयदोऊहाथौंते उठाय जयमाला रघुनाथ जीके उरपरभूषित करि मुसकानियुत आनंद कोप्राप्तभईं भावमनोरथ सफलभया ३१(ततोसर्वेराजदारामुमुदिरे) तदनंतर राजाकी यावत्रानी रहीं ते आनंद पाय (स्वलंकृता) अपने तनमें नवीन भूषण बसनपहिरि (गवाक्षजालरंध्रेभ्योलोकविमोहनंदृष्ट्वा) खिरकिनमेंजो जाललगेहैं तिनके छेदन ते लोक मोहन हारे जो रघुनंदन तिनहिदेखती हैं अर्थात् जबप्रभु धनुभंग किये जानकी जी जयमाल पहिराये इतिमनभायो भयो तबसुनयना आदियावत् निमिवंशकी रानी रहें ते सब आनंद सहित तन में भूषण वसन नवीन पहिरि झरोखन मार्ग रघुनंदन को लोक मोहन रूप देखने लगीं ३२ ॥

ततोऽब्रवीन्मुनिंराजासर्वशास्त्रविशारदः॥भोकौशिकमुनिश्रेष्ठपत्रंप्रेषयसत्वरम्३३
राजादशरथःशीघ्रमागच्छतुसपुत्रकः॥विवाहार्थंकुमाराणांसदारास्सहमंत्रिभिः३४
तथेतिप्रेषयामासदूतांस्त्वरितविक्रमान् ॥ तेगत्वाराजशार्दूलंरामश्रेयोन्यवेदयन् ३५॥

(तत.राजासर्वशास्त्रविशारदःमुनिंमब्रवीत्)तदनंतरराजाजनक सर्वशास्त्रनके जाननेवाले मुनिविश्वामित्रप्रतिबोले(मुनिश्रेष्ठभोकौशिकसत्वरपत्रंप्रेषय) मुनिनमेंश्रेष्ठहे विश्वामित्रजी शीघ्रहीपत्रिका अयोध्याजीको पठाइये३३(कुमाराणांविवाहअर्थंराजादशरथःशीघ्रमागच्छतु)राजकुमारनके विवाहकरने अर्थराजादशरथ शीघ्रहींआवहिं कौनभांतितेआवें (सपुत्रकःसदारःसहमंत्रिभिः) सहितपुत्र सहित रानिन सहित मंत्रिन अर्थात् धनुभंग पीछे जनकजी सबशास्त्र जानने वाले मुनि विश्वामित्र सों कहेकि मुनिवर हे विश्वामित्र जी अबविलंबनकरौ शीघ्रही दूतद्वारालग्नपत्री अयोध्याजीको पठाइये जामें रामादिकुमारन के विवाह करने हेतु सहित पुत्र भरतशत्रुहन कुलरीति करने हेतु रानिन सहित सबकार्य करने हेतु मंत्रिन सहित बरातसजि दशरथ महाराज इहांआवहिं शीघ्रही ३४ (इति तथास्त्वरितविक्रमानदूतांप्रेषयामास) जो पूर्ववार्ताइत्यादियथा कहेतथा कीन्हें वेगचलने को पराक्रम है जिनके ऐसेदूतों को सपत्रिका तुरतही पठाये (ते गत्वारामश्रेय.राजशार्दूलंन्यवेदयत्) ते दूत अयोध्याजीको गये रघुनंदन को मंगलमयहाल राजन में उत्तम जो दशरथ तिनहिं सुनावते भये अर्थात् जैसे वार्त्ताकीन्हें तैसेही करतेभये लग्नपत्रिका लिखिपुनः वेगचलनेवाले विक्रमी दूतन को बुलाय पत्रिका दे तुरतही पठाये तेदूत अयोध्याजीकोगये धनुभंग विवाहादि रघुनंदन को मंगल मय हाल महाराज दशरथ जी सों सुनावते भये ३५ ॥

श्रुत्वारामकृतंराजाहर्षेणमहताप्लुतः ॥ मिथिलागमनार्थायत्वरयामासमंत्रिणः
३६ गच्छंतुमिथिलांसर्वेगजाश्वरथपत्तयः ॥ रथमानयमेशीघ्रंगच्छाम्यद्यैवमाचिरम्३७वशिष्ठस्त्वग्रतोयातुसदारःसहितोऽग्निभिः॥ राममातृसमादायमुनिर्मे भगवान्गुरुः ३८ ॥

(रामकृतंश्रुत्वाराजामहताहर्षेणप्लुत·) रघुनाथजीको कियाहुआ सबचरित्र सुनि के महाराज दशरथ बड़ेआनंद सहित ह्वैकै (मिथिलागमनार्थायमंत्रिणःत्वरयामास) मिथिलापुरको जाने अर्थ मंत्रिन को शीघ्रसाज साजने को कहे अर्थात् ताड़का सुबाहु आदि दुष्टनको मारियज्ञपूर्णकरे पदरज ते अहल्या पावन करि राजसभाको निदरि शिवधनु तोरे अबजनक सुताके संगविवाह होई इत्यादि रघुनंदन को चरित सुनि महाराज बड़े आनंदयुक्त मिथिलापुरचलबे अर्थमंत्री सुमंत्रादि को शीघ्रसाज सजिबे कहे ३६ (गजअश्वरथपत्तयः सर्वेमिथिलांगच्छतु) हाथीघोड़े रथपैदर सेना सब मिथिलाकोचलें (मेरथंशीघ्रंमानयअचिरं अद्यएवंगच्छामि) मेरारथशीघ्र लावौदेर न करौहम इसीसमय ऐसेही चलते हैं ३७ (मुनिःभगवान्मेगुरुःरामातृसंआदायसदारःअग्निभिःसहितवशिष्ठ तुअग्रतःयातु) मुनि समर्थ जो हमारे गुरूसो कौशल्याको साथलै सहितअपनीस्त्री हवनकी सामग्री अग्नि करिकै सहित वशिष्ठ जी पुनः आगेही चलें अर्थात् मंत्रिन सों महाराज कहेकि हाथी सजौ घोड़े सजौ रथसजौ पैदरसेनासजौ सबमिथिला पुरकोचलेंअरुमेरा रथशीघ्र सजिलावौ अबेरनकरौ

इसीसमय ऐसेहि हमचलतेहैं पुनः मुनि भगवान् जोहमारे गुरूहैंते अपनी स्त्रीसहित घृतसाकल्यादि हवनकी सामग्री अग्निसहितकौशल्याके साथ बशिष्ठ जी सबते आगेचलैं ३८ ॥

एवंप्रस्थाप्यसकलंराजर्षिर्विपुलंरथम् ॥ महत्यासेनयासार्द्धमारुह्यत्वरितोययौ ३९ आगतंराघवंश्रुत्वाराजाहर्षसमाकुलः॥ प्रत्युज्जगामजनकःसतानंदपुरोधसा ४० यथोक्तपूजयापूज्यंपूजयामाससत्कृतम् ॥ रामस्तुलक्ष्मणेनाशुववंदेचरणौ पितुः ४१ ॥

(एवंसकलंप्रस्थाप्य) इसीभांतिसब को आगे चलाय (महत्यासेनयासार्द्धमहर्षि विपुलंरथं आरुह्यत्वारितोययौ) बड़ीसेना साथमें लैके दशरथ महाऋषि बहुते रथनपर यथायोग्य समाजभरि सवारह्वै त्वरितही चले अर्थात्यथापूर्वकहे इसीभांति वशिष्ठादि ब्राह्मण सबवर्ण पुरबासीसेवकसचि वादि सबकोआगे चलायपुनःमहर्षिजोदशरथ जी सबरघुवंशी सेनपगजरथ तुरंगपैदरादि बड़ी सेना साथलै यथायोग्य बहुतेरथनपर सवारह्वै तुरतही चलते भये ३९ (राघवंआगतंश्रुत्वा राजाजनकः हर्षसमाकुलः) दशरथहिआवत सुनिराजा जनक आनंद ते परिपूर्ण (सतानंदपुरोधसाप्रत्युजगाम) सतानंद प्रोहित सहितआगे लेनेहेतचले ४० (यथोक्तपूजयापूज्यं) जैसावेदमेंलिखाहै तैसीपूजन विधि करिकै पूज्यजो दशरथ जी तिनहि (पूजयामाससत्कृतम्) पूजनकरिसन्मानकीन्हें (रामस्तु लक्ष्मणेन आशुपितुःचरणौववंदे) रघुनंदनपुनः लक्ष्मणशीघ्रही पिताके पायन को प्रणाम कीन्हें अर्थात् दशरथ महाराजको आवत सुनि राजा जनक परम आनन्दभरे सतानंद प्रोहितअन्यसमाज साथलै आगेलेनेहेत चलेमिलिप्रणामकरि स्वागत पूंछि आसनदैवेद विधानकरि महाराजको पूजन कीन्हें अरुसत्कारकीन्हेंपुनःलषणसंहितरघुनंदन शीघ्रहीआय पिताकेदोऊपायनकोप्रणाम कीन्हें ४१ ॥

ततोहृष्टोदशरथोरामंवचनमब्रवीत् ॥ दिष्ट्यापश्यामितेराममुखंफुल्लाम्बुजोपमम् ४२ मुनेरनुग्रहात्सर्वंसम्पन्नम्ममशोभनम्॥इत्युक्त्वाघ्रायमूर्द्धानमालिंग्यचपुनः पुनः ४३ हर्षेणमहताविष्टोब्रह्मानन्दंगतोयथा ॥ ततोजनकराजेनमन्दिरेसन्निवेशितः ॥ शोभनेसवशोभाढ्येसदारःससुतःसुखी ४४ ॥

(ततोहृष्टोदशरथो) तब आनन्द ह्वै दशरथ जी (रामंवचनमब्रवीत्) रघुनन्दन प्रति बोलते भये (हे रामफुल्लअम्बुजउपमंतेमुखंदृष्ट्यापश्यामि) हे राम फूले कमल की उपमा देने योग्य तुम्हारा मुख मैं अपनी दृष्टि करिकै देखता हौं अर्थात् जब प्रणाम कीन्हें तब परम आनन्द ह्वै दशरथ जी रघुनन्दन प्रति बोले कि हे राम प्रफुल्लित कमलसम तुम्हारा मुख हम नेत्रन भरि देखतेहैं सोई हम को जन्म को फल है ४२ (मुनेःअनुग्रहात् ममशोभनंसर्वंसम्पन्न) विश्वामित्र की सदा दयाते मेरे मंगल सब परिपूर्ण भये (इतिउक्त्वामूर्द्धानंआघ्रायचपुनः पुनःआलिंग्य) इत्यादि कहि शीश सूंघि पुनः बारम्बार उर में लगाय लिये ४३ (महताहर्षेणविष्टोयथाब्रह्मानन्दगतः) ऐसे बड़े आनन्द युक्त भये जैसे ब्रह्मानन्द को प्राप्तभये (ततःजनकराजेन) तदनन्तर राजा जनक ने (मन्दिरे सन्निवेशितः) सुन्दर मन्दिर में बास दिया अर्थात् दशरथ महाराज कहे कि हे रघुनन्दन तुम्हारा मुख कञ्ज देखतेही मोको परम आनन्द है अरु विश्वामित्र की अनुग्रह ते मेरे मंगल कार्य सब परिपूर्ण भये ऐसा कहि शीश सूंघि रघुनन्दन को बार बार उर में लगाय ऐसे बड़े आनन्द युक्त भये यथा समाधिस्थ ब्रह्मानन्द को प्राप्त भये इत्यादि तात्कालिक सब व्यवहार ह्वै गया त्याहि पीछे

जनकजीने ऐसे सुन्दरे मन्दिरो में बरात को वास दीन्हे जहां सब भांतिको सुपास है (सर्वशोभाढ्येशोभनेसदारःसपुत्रःसुखी) सब शोभायुत अरु भोजन सामग्री सहित शोभामय मन्दिर में वास पाय स्त्री पुत्रन सहित महाराज सुखी भये ४४ ॥

ततःशुभेदिनेलग्नेसुमुहूर्त्तेरघूत्तमम् ॥ आनयामासधर्म्मज्ञोरामंसभ्रातृकंतदा ४५ रत्नस्तंभसुविस्तारेसुवितानेसुतोरणे ॥ मण्डपेसर्वशोभाढ्येमुक्तापुष्पफलान्विते ४६ ॥

(ततःशुभेदिनेसुमुहूर्त्तेलग्नेतदाधर्मज्ञः) तदनन्तर शुभ दिन में सुन्दरी मुहूर्त्त में शुद्ध लग्न में तासमय धर्मको जाननेवाले जनकजी (सभ्रातृकंरघूत्तमंरामंआनयामास) भाइन सहित रघुवंश शिरोमणि जो रघुनन्दन तिनहिं स्वमन्दिरको लावते भये अर्थात् बरात कछु दिन रहे पीछे हेमन्त ऋतु उत्तम मार्गमास शुक्लपञ्चिमी उत्तरापाढ़ नक्षत्र वृद्ध योग शुभ भृगुदिने सूर्योदयादिष्टते तिस पन्द्रह बुध को होरा इति शुभ मुहूर्त्तपर शुद्धकर्क लग्न रघुनन्दन के रवि दूसरे चन्द्र तीसरे गुरु नवयें भौम दूसरे तथा जानकी जी के रवि दशयें चन्द्रगेरहें भौमदशयें गुरुपचयें इत्यादि समय में धर्मज्ञ राजा जनक भरत लक्ष्मण शत्रुहनादि भाइन सहित रघुकुलमणि श्री रघुनाथ जीको अपने मन्दिर में मढ़ये तरको लाये ४५ (रत्नस्तम्भसुविस्तारे) रत्नजटित सुन्दरिखम्भा बड़े विस्तार में गड़े तिनमें (सुवितानेसुतोरणे) सुन्दर सामियाना तना तोरण नाम बहिरी द्वारपर यथा तोरणोऽस्त्रीवहिर्द्वारंपुरद्वारंतुगोपुरम्इत्यमरः (मण्डपेसर्वशोभाढये) भीतर मड़येमें सब शोभा शोभित है कौन भांति (मुक्तापुष्पफलान्विते) मोतिनमय फूल फलयुक्त अर्थात् द्वारपर विचित्र भूमि पै कालीन चादरि बिछी चारिहु दिशि कनक रत्न जटित खम्भ तिनपर विस्तार सहित दिव्य सामियाना तना तथा भीतर मणिमय खम्भ कञ्चन मुक्ता मणिमय फूल फलाकार गुच्छा लटकत वन्दनवारादि शोभामय माड़व शोभित है ४६ ॥

वेदविद्भिःसुसंबाधेब्राह्मणैःस्वर्णभूषितैः॥ सुवासिनीभिःपरितोनिष्ककंठीभिरावृते ४७ भेरीदुंदुभिनिर्घोषैर्गीतनृत्यैःसमाकुले ॥ दिव्यरत्नांचितेस्वर्णपीठेरामंन्यवेशयत् ४८ वशिष्ठंकौशिकंचैवशतानंदःपुरोहितः ॥ यथाक्रमंपूजयित्वारामस्योभयपार्श्वयोः ४९ ॥

(स्वर्णभूषितैः वेदविद्भिः ब्राह्मणैः सुसंबाधे) सोनेके भूषणोंते भूषित वेदके जाननेवाले ब्राह्मणों करिके संकीर्णता आँगनभराहै (निष्ककंठीभिःसुवासिनीभिः परितः आवृते) हीराजटित भूषण कंठमें धारण किहे युवावस्था वाली निमिवंश जकन्यन करिकै सबमाँडवघेराहै अर्थात् किरीट कुंडल मालाकेयूर मुद्रिकादि सोनेके भूषणपहिरे वेदपढ़े ब्राह्मण समूह वेदीके चारिहु दिशि सघन बैठे हैं तिनके चारिहु दिशि जरी रेशमी वसन हीराजटित हेमके भूषण धारण किहे वीसवर्ष वयवाली निमिवंशिनकी कन्या समूह बैठी हैं ४७ (भेरीदुंदुभि निर्घोषैः) तुरही नगरिया नगारादिको समूह शब्द ह्वै रहाहै (गीतनृत्यैः समाकुलैः) गाननाच करिकै शब्द भराहै तासमय (दिव्यरत्नां चितेस्वर्ण पीठे) हीरापन्ना मरकत पोपराजादि दिव्यरत्न जटित सोनेके पढ़ापर (रामंन्यवेशयत्) रघुनंदनहिं बैठावते भये अर्थात् सब बाजा युवतिनके मंगलगीत वारवधुनकोनृत्य गानबाजा इत्यादि शब्द भरि रहाहै तासमय जनकजी दिव्यरत्न जटित सोनेके पीढ़ापर रघुनंदनको बैठाये ४८ (रामस्य उभय

पाइर्वयोः) रघुनंदनके दोऊ दिशि (वशिष्ठंच कौशिकं एव) वशिष्ठ तथा विश्वामित्रहि निश्चय करि (शतानंदः पुरोहितः यथाक्रमं पूजयित्वा) शतानंद जनकके प्रोहित जैसाचाही ताहिक्रमपूजन किये अर्थात् रघुनंदन के दहिने सिंहासनदै वशिष्ठको बैठाये बामदिशिसिंहासन पर विश्वामित्रको बैठाय शतानंद वेदविधि दोउनकी पूजाकीन्हे ४९ ॥

स्थापयित्वासतत्राग्निंज्वालयित्वायथाविधि ॥ सीतामानीयशोभाढ्यांनानारत्नविभूषितां ५० सभार्योजनकःप्रायाद्रामंराजीवलोचनं ॥ पादौप्रक्षाल्यविधिवत्तदपोमूर्ध्न्यधारयत् ५१ याधृतामूर्ध्निशर्वेणब्रह्मणामुनिभिःसदा ॥ ततःसीताकरेधृत्वा साक्षादुदकपूर्वकं ५२ ॥

(सतत्र यथाविधि अग्निस्थाप यित्वा ज्वालयित्वा) सो शतानंद तहँ वेदी बनाय यथावेदमें लिखाहै ताही विधि अग्नि स्थापित करि प्रज्वलित कीन्हे (नानारत्न विभूषितां शोभा आढ्यां सीतां आनीय) अनेक रत्न जटित भूषणनते विभूपित बसन रूपादि शोभायुक्त जो सीता तिनहिं उहाँको लावते भये अर्थात् सोई शतानंद तहँ वेदी बनाय पंच संस्कारादि जो वेदमें लिखाहै ताहीविधि अग्नि स्थापित करि बारि हवनकरि पुनः हीरामाणिक मर्कतादिरत्न जटित भूषणनते भूषित सर्वांग सुठौरबने गौरवर्ण दिव्यबसन धारण इत्यादि शोभायुक्त सीताको ताही ठौरलाय रघुनंदनके सामने बैठारे ५० (सभार्यःजनकःप्रायात्) सहितरानी जनकजी बहुत भाँतिते (राजीवलोचनं रामंविधिवत् पादौप्रक्षाल्य) कमल नयन रघुनाथ जीके बिधि पूर्वक पायंधोय (तत् अपः मूर्द्ध्निअधारयत्) तौने जलको शीशपर धरिलिये ५१ (याब्राह्मणा सर्वेमुनिभिः सदा मूर्द्ध्नि धृता) जाको ब्रह्मादि देवता सब मुनिजनसदा शिशपर धरते हैं सोशिर धरि (ततःसअक्षत उदक पूर्वकं सीताकरेधृत्वा) तदनन्तर सहित अक्षत जल पूर्वक जानकी जीको हाथ आपने हाथेपर धरि अर्थात् सुनयना सहित जनक जी बडेभावते कृपारस भरे कमल नयन रघुनाथ जीके पदकमल विधिपूर्वक धोय सोई पादोदक शीशपर धरिलिये जो पादोदक गंगा रूप सबमुनि ब्रह्माशिवादि देवता शीशपर धरते हैं सोशिर धरि पुनः हाथेमें कुशअक्षत जल सहित जानकीजीको हाथधरिलिये तासमय आचार्य संकल्प पढनेलगे ५२॥

रामायप्रददौप्रीत्यापाणिग्रहविधानतः ॥ सीताकमलपत्राक्षीस्वर्णमुक्तादिभूषिता ५३ दीयतेमेसुतातुभ्यंप्रीतोभवरघूत्तम ॥ इतिप्रीतेनमनसासीतांरामकरेऽर्पयन् ५४ मुमोदजनकोलक्ष्मींक्षीराब्धिरिवविष्णवे ॥ उर्मिलांचौरसींकन्यांलक्ष्मणायददौमुदा ५५ ॥

(स्वर्णमुक्तादिभूषिताकमलपत्राक्षीसीता) कंचन मुक्तादि के भूषणों ते भूपित कमल दलसम नेत्र ऐसी जो सीता ताहि (पाणिग्रहविधानतःप्रीत्यारामायप्रददौ) पाणिग्रहण की रीति वेद विधान ते प्रीति सहित रघुनन्दन के अर्थ कन्यादान देते भये ५३ (सीतामेसुतातुभ्यंदीयतेहेरघूत्तमप्रीतोभव) सीता नामे पुत्री बामांगी करि तुम्हारे अर्थ दीजाती है हे रघुवंश शिरोमणि यापर प्रीतिवंत होहु (इतिमनसाप्रीतेनरामकरेसीतांअर्पयन्) इत्यादि कहि जनकजी मनसों प्रीति करि सीता जोहैं तिनहि रघुनन्दन के हाथ में दै दीन ५४ (विष्णवेलक्ष्मींक्षीराब्धिःइवजनकःमुमोद) यथा विष्णु के अर्थ लक्ष्मी दै के क्षीर समुद्र आनन्द भया इसी भांति जनकजी आनंद भये अर्थात् हँसक नूपुर जे

हरि रसनामुद्रिका कंकण केयूरमाल कर्णफूल वेसरि टीका चूडामणि इत्यादि कंचन रचित मुक्तादि मणि जटित भूषण ते भूषित कंचनवर्ण कमल दल नयन ऐसी सीता नामे मेरी पुत्री वामांगी करि आपके अर्थ दीजाती है हेरघुवंशशिरोमणि अपनी परिचारिका जानि यापर प्रीतिकरहु इत्यादि कहि जनकजीमनमें प्रीति सहित जानकीको हाथकुशजलाक्षतसहित रघुनाथजीके हाथमें धरिकै जनकजी कैसे आनंदभये यथा विष्णुके हाथमें लक्ष्मीजीकोदिकै क्षीरसिंधु आनन्दभयो भाव किसीसमय दुर्वासाने इन्द्रकोशाप दिया कितेरी राज श्रीनष्टहोइ तापर उदासीनह्वै लक्ष्मीजी क्षीरसागरमें लोपभईं पुनः मथेतेकढ़ीं सिंधुसुता कहाईं सिंधुमूर्त्तिमान आइविष्णुको अर्पण किया आनन्दभया भावलक्ष्मी पुत्री विष्णु जामातृ अलभ्य लाभ विनाश्रम घर बैठे पाये यहब्रह्म वैवर्त प्रकृति खंड छत्तिस के अध्याय में लिखा है तथा भूमि शोधत आदि शक्ति को पुत्री करि पाये तथा घर बैठे परब्रह्म को जामातृ करि पाये इति उपमाको भाव (चऔरसकिन्यांउर्मिलां मुदालक्ष्मणायददौ) पुनः जोसुनयना जीके उर ते उत्पन्न भई कन्या उर्मिला नामें रही ताहि आनंद सहित जनक जी लक्ष्मणजी को वामांगीहोने अर्थ देते भये विवाह करिदिये ५५ ॥

तथैवश्रुतिकीर्तिश्चमाण्डवीभ्रातृकन्यके॥भरतायददावेकांशत्रुघ्नायापरांददौ५६
चत्वारोदारसंपन्नाःभ्रातरःशुभलक्षणाः॥विरेजुःप्रभयासर्वेलोकपालाइवापरे५७॥

(तथाएवभ्रातृकन्यकेश्रुतिकीर्त्तिचमाण्डवीं) ताहीभांति निश्चय करिकै जनकके छोटे भाई की जो दो कन्या रहीं श्रुति कीर्ति पुनः माण्डवी तिनमें (एकांभरतायददौ) एक माण्डवी ताहि भरत के अर्थ देते भये (अपरांशत्रुघ्नायददौ) और जो श्रुति कीर्त्ति रही ताहि शत्रुहन के अर्थ देते भये ५६ (चत्वारोभ्रातरःशुभलक्षणाःदारसंपन्नाः) चारिहु भाई शुभलक्षण युत स्त्रिन सहित (सर्वेप्रभयाअ परेलोकपालाइवविरेजुः) सब प्रभा करिकै औरे लोकपाल सम विशेषि प्रकाश मान हैं अर्थात् यथा किशोरी जी को रघुनन्दन के साथ विवाहे उर्मिलाको लक्ष्मण जीके साथ ताही भांति जनक जी के जो छोटे भाई कुशध्वज हैं तिन के भी दो कन्या हैं बडी माण्डवी जी तिन को भरतजी केसाथ विवाहे छोटी श्रुतिकीर्त्ति तिन को शत्रुहन के साथ विवाहे इत्यादि बर वेष चारिउ भाय स्वरूपता वय गुण वे पादि शुभलक्षण युत तथा यथा योग्य शुभलक्षण युत चारिहु की दुलहिनी ते एक मौंढ़व में चारिहु जोड़ी अपनी प्रभा करिकै कैसे प्रकाशमान हैं यथा अपर लोकपाल इंद्रादि सम हैं ५७ ॥

ततोऽब्रवीद्वशिष्ठायविश्वामित्रायमैथिलः ॥ जनकःस्वसुतोदंतंनारदेनाभिभाषितम् ५८ यज्ञभूमिविशुद्ध्यर्थंकर्षतोलांगलेनमे ॥ सीतामुखात्समुत्पन्नाकन्यकाशुभलक्षणा ५९ ॥ तामद्राक्षमहंप्रीत्यापुत्रिकाभावभावितां ॥ अर्पिताप्रियभार्यायै शरच्चंद्रनिभानना ६० ॥

(ततः मैथिलः जनकः नारदेन अभिभाषितं स्वसुता उदंतं) तदनन्तर मिथिलापुरके राजाजनक नारदको कहाहुआहाल आपनीकन्या सीताको वृत्तांत (वशिष्ठाय विश्वामित्राय ब्रवीत्) वशिष्ठ विश्वामित्रके अर्थ कहते भये ५८ (यज्ञभूमि विशुद्ध्यर्थंमेलांगलेनकर्षतः) यज्ञहेतु भूमिको विशेषि शुद्धकरने अर्थ मैं हल करिकै जोतने लगा (सीतामुखात् शुभलक्षणाकन्यका समुत्पन्ना) हलते जो चिन्हहोताहै ताकेमुखते शुभलक्षण युत कन्या उत्पन्नभई ५९ (शरच्चन्द्र- निभाननातां पुत्रिकाभा

भावितां) शरदचंद्रमा समसुख ताहि पुत्रीभाव मानि (अहंप्रीत्या अद्राक्षं प्रियभार्यायै अर्पिता) मैं प्रीति करिकै सजल नयन उठायलैके आपनी प्यारी रानी को दैदिया अर्थात् विवाह भये पीछे मिथिलेश जनक अपनी कन्या सीता के उत्पन्न होने को वृत्तांत अरु नारद को कहा हुआ हाल वशिष्ठ अरु विश्वामित्र सों कहने लगे कि यज्ञ करने हेत भूमिशुद्ध करने अर्थ मैं हेम के हलते जोतने लगा हलकी नशी ते भूमि फूट तहीं शुभलक्षण युत कन्या उत्पन्न भई जाको शरद पूर्ण चंद्रमा सम मुख देखि ताहि पुत्री भाव मानि वात्सल्य प्रीति करि सजल नेत्र उठाय लिया पुनः अपनी प्रिय पत्नी को दिया ६० ॥

एकदानारदोभ्यागाद्विविक्तेमयिसंस्थिते ॥ रणयन्महतींवीणांगायन्नारायणंवि भुम् ६१ ॥

(एकदाविविक्तेमयिसंस्थितेनारदःअभ्यगात्) एकसमय निर्जन स्थान में मैं बैठा रहौं तहां नारद आये कौन भांति (महतींवीणांरणयन्नारायणंविभुंगायन्) भारी बीणा बजावत नारायण समर्थ को जो यश ताहि गावत अर्थात् जनक जी कहत कि कन्या प्राप्त भये पीछे एक समय एकांत स्थान में हम बैठे रहे ताही समय वीणाबजावत नारायण को पावन यश गावते हुये नारद मुनि मेरे पास आये ६१ ॥

पूजितःसुखमासीनोमामुवाचसुखान्वितः ॥ शृणुष्ववचनंगुह्यंतवाभ्युदयकारणम् ६२ परमात्माहृषीकेशोभक्तानुग्रहकाम्यया ॥ देवकार्यार्थसिद्ध्यर्थंरावणस्यव धायच ६३ जातोरामइतिख्यातोमायामानुषवेषधृक् ॥ आस्तेदाशरथिर्भूत्वाच तुर्धापरमेश्वरः ६४ ॥

(पूजितःसुखं आसीनः सुखान्वितःमांउवाच) नारदको मैंने पूजनकिया सुखमय आसनपर बैठाये तब प्रसन्नता युक्त मोप्रतिबोलते भये (तवअभिउदय कारणम् गुह्यंवचनं शृणुष्व) तुम्हारी भाग्य उदयको कारणके गुप्तवचन प्रकट कहतेहैं तिनहिं सुनिये अर्थात् नारदको आवतदेखि मैं उठि दण्डप्रणामकरि आसनपरबैठारि अर्घपाद्यादि षोडशोपचार पूजनकिया तबप्रसन्नतापूर्वक मोप्रतिबोले हे जनक तुम्हारी उत्तम भाग्य उदय को कारण गुप्त है सो बचन प्रसिद्ध हम कहते हैं सावधान ह्वै सुनिये ६२ (हृषीकईशःपरमात्माभक्तानुग्रहकाम्यया) सब इंद्रिन के प्रकाशक परमात्मा भक्तनपर सदा दया करिबे की कामना करिकै (देवकार्यार्थसिध्यर्थंचरावणस्यवधाय) देवन के कार्य को जो स्वारथ है ताके सिध्यर्थ पुनः रावण के बध के अर्थ ६३ (रामइतिख्यातोमायामानुषवेषधृक्जातः) राम ऐसा नाम प्रसिद्ध माया करि मनुष्य वेष धरि उत्पन्न भये (परमेश्वरःचतुर्धादाशरथिःभूत्वाआस्ते) परमेश्वर चारि रूप ते दशरथ पुत्र ह्वै वर्तमान हैं अर्थात् जो अंतर्यामी रूपते सब इंद्री चैतन्य किहे हैं ऐसे शुद्धपरमात्मा सो आपने भक्तन परसदा दया राखने की कामना करिकै पुनः जामे देवन को हित सुख पूर्वक घरन में बास ताको अर्थ स्वार्थ अभय यज्ञादि को भागपावना ताके सिद्ध अर्थ भाव भूतल पर धर्मस्थापन करने हेत पुनः सकुल रावण के नाश करने हेत अपनी दिव्य माया करि मनुष्य वेष धरि उत्पन्न भये राम ऐसा नाम लोक में प्रसिद्ध है इस भांति परमेश्वर राम भरत लषण शत्रुघ्न इति चारि रूप ते दशरथ के पुत्र ह्वै अयोध्या में बर्तमान हैं ६४ ॥

योगमायापिसीतेतिजातावेतववेश्मनि ॥ अतस्त्वंराघवायैवदेहिसीतांप्रयत्नतः ६५
नान्यस्यपूर्वभार्यैषारामस्यपरमात्मनः ॥ इत्युक्त्वाप्रययौदेवगतिंदेवमुनिस्तदा ६६
तदारभ्यमयासीताविष्णोर्लक्ष्मीर्विभाव्यते ॥ कथंमयाराघवायदीयतेजानकीशुभा६७

(योगमायाअपितववेश्मनिसीताइतिवैजाता) प्रभु की योग माया सोऊ तुम्हारे घरमें सीता ऐसा नाम निश्चय करि उत्पन्न भई (अतःत्वंप्रयत्नतःसीतांराघवायएवदेहि) इस कारण तुम बड़ी यत्न ते सीता को रघुनन्दन के अर्थ निश्चय करि दीजिये ६५ (परमात्मनः रामस्य पूर्व भार्या एषाअन्यस्यन) परमात्मा जो रघुनाथ जी तिनहीं की पूर्व पत्नी है यह और की नहीं है (इतिउक्त्वातदादेवमुनिःदेवगतिंप्रययौ) ऐसा कहि त्यहि समय में देवमुनि आकाश मार्ग ह्वै चलेजाते भये ६६ (तदारभ्य मया सीतालक्ष्मी विष्णोः विभाव्यते) ताही समयते लगाय अब तक सीता लक्ष्मी जी सो विष्णुको मिलावा चाहत रहेउ (मयाजानकी शुभाकथं राघवाय दीयते) हमकरिकै जानकी मंगलमूर्त्ति कौनप्रकार रघुनन्दनके अर्थ दीजाय अर्थात् नारद कहे जनक यथा परमेश्वर दशरथनन्दनभये तथा निश्चय करि जाको सदा संयोगरहताहै सोई प्रभुकी योगमाया सो तुम्हारे घरमें सीतानामें निश्चय करि उत्पन्न भई इसकारण वाको तुम यत्नपूर्वक निश्चय करि रघुनन्दनैके साथ विवाहकरना काहेते परमात्मा जो रामचंद्र तिनहींकी पूर्वपत्नी सीताहैं दूसरेकी नहीं हैं यह निश्चय राखना ऐसा कहि देवमुनि नारद देवगति जो आकाश मार्ग तहां ह्वैके ब्रह्म लोक को गये ताही समय ते हम सीता रूप लक्ष्मी को बिष्णु रूप रामहीको मिलावने की इच्छा राखे रहे परंतु हम अरु दशरथ महाराज दोऊ सूर्यवंशी एकही कुल ठहरे इहकारण मेरे मन में संदेह रही कि एकही कुलमें सीताको रघुनन्दनके साथ मैं कौन उपायते बिवाहकरों ६७ ॥

इतिचिंतासमाविष्टःकार्यमेकमचिंतयम्॥ मत्पितामहगेहेषुन्यासभूतमिदंधनुः६८
ईश्वरेणपुराक्षिप्तंपुरदाहादनंतरम् ॥ धनुरेतत्पणंकार्य्यमितिचिंत्यकृतंतथा ६९
सीतापाणिग्रहार्थायसर्वेषांमाननाशनम्॥ त्वत्प्रसादान्मुनिश्रेष्ठरामोराजीवलोच
नः ७० आगतोत्रधनुर्द्रष्टुंफलितोमेमनोरथः ७१॥

(इतिचिंतासमाविष्टःएकंकार्यंअचिंतयम्) इसचिंतामें संपूर्णप्रकार बूड़ेरहेपुनःबिचारकरएककार्य करनेको चिंतवन कीन्ह्यो (मत्पितामहगेहेषुइदंधनुःन्यासभूतं)हमारे पितामहके घरमें यहधनुष स्थितर है ६८ (पुरदाहात्अनंतरंईश्वरेणपुराक्षिप्तम्) त्रिपुरासुरको भस्मकरि तत्पश्चात् शिवजीने पूर्वहीं इहां धरि दिया रहै (एतत्धनुःपणंकार्यइतिचिंत्य तथाकृतं)इसधनुषको जोतूरै ताहीको कन्याब्याहों ऐसा मनमें यथाचिंतवम किया तथा प्रण प्रसिद्ध किया ६९ (सीता पाणिग्रहार्थाय) सीता विवाहनहेततथा (सर्वेषांमाननाशनम्) सबराजनके अभिमान नाशकरने हेतप्रणकिया (हेमुनिश्रेष्ठत्वत्प्रसादात् राजीव लोचनः रामः ७० धनुःद्रष्टुं अत्रआगतः मे मनोरथः फलितः) हेमुनिवर आपके प्रसादते कमलनेत्र रघुनन्दन धनुषदेखने हेत इहाँआये मेरामनोरथ सफलभया अर्थात् जनक जी कहत कि एक वंशमें कौनयुक्तिसों कन्याब्याहों इसचिंतामेंबूड़ा पुनः विचारकरिएककार्य करनेको चिंतवन कीन्हेउ किहमारे पूर्व पुरिषादेवरातके समयते यह जो शिवजी को धनुषधराहै कवते जब त्रिपुरासुरको भस्म किये ताके पाछे शिवजी सेवकजानि पूजनहेत देवरातके मन्दिरमें धरिदिये इत्यादि पूर्वकालते धराहै सोई धनुष जो उठावै चढ़ावै तोरै ताको कन्या ब्याहौं इत्यादि यथा मनमें चिंतवन किया तथा

प्रसिद्धपण किया कि यह शिव धनुष किसी और को तोरा तौ टूटैगो नहीं ताते सब राजोंको मान भंगहोइगो इस व्याहकी फिरि कोऊ इच्छा न करैगो अरु रघुनन्दनै आइतोरैंगे तौ सीताको पाणिग्रहणभी सुलभै होइगो इसहेत पणकिया है मुनिवर वशिष्ठ विश्वामित्र आपके प्रसादते कमलनेत्र रघुनन्दन धनुष देखनेहेत इहां आयधनुर्भंग करि पाणिग्रहण किये अब मेरा मनोरथ पूर्ण भया ७१ ॥

अद्यमेसफलंजन्मरामत्वांसहसीतया ॥ एकासनस्थंपश्यामिभ्राजमानंरविंयथा ७२त्वत्पादांबुधरोब्रह्मासृष्टिचक्रप्रवर्तकः ॥ बलिस्त्वत्पादसलिलंधृत्वाभूद्दिविजाधिपः ७३ ॥

(अद्यमे जन्मसफलं) आजुमेरा जन्म सुफलभया काहेते (यथारविं एकासनस्थं भ्राजमानं सीतया सह रामत्वां पश्यामि) यथा प्रभासह सूर्यतथा एक आसन पर विराजमान सीताकरिकै सहित हेरघुनन्दन आपको मैंदेखताहौं अर्थात् रघुनन्दन प्रति जनकजी कहत कि जैसेप्रभायुत सूर्य तथाहेरघुनंदन सीतासहित आपको एकसिंहासन परवैठदेखिआजुमोको जन्मधरेको फलप्राप्तभया७२ (ब्रह्मात्वत्पाद अंबुधरः सृष्टिचक्र प्रवर्तकः) ब्रह्मा आपको पादोदक शिरधरि सृष्टिकरतेहैं (त्वत्पाद सलिलं धृत्वा बलिः दिविजाधिपः अभूत्) आपके पायँको जलधारण करि बलिदेवनके राजाभये अर्थात् आपके पदकमलोंमें ऐसा प्रभावहै जाको प्रक्षालित गंगाजल ब्रह्माशीशपर धरे ताहीप्रतापते सम्पूर्ण सृष्टिबढ़ाववेको समर्थभये तथा बलिआपके पायनको जलशीशपरधरि देवनकेराजाभये७३ ॥

त्वत्पादपांशुसंस्पर्शादहल्याभर्तृशापतः ॥ सद्यएवविनिर्मुक्ताकोऽन्यस्त्वत्तोधिरक्षिता ७४ यत्पादपंकजपरागसुरागयोगिवृंदैर्जितंभवभयंजितकालचक्रैः ॥ यन्नामकीर्त्तनपराजितदुःखशोकादेवास्तमेवशरणंसततंप्रपद्ये ७५ ॥

(त्वत्पादपांशुसंस्पर्शात्) आपके पायँनकी रजछुइगयेते (अहल्याभर्तृशापतःसद्यएवविनिर्मुक्ता) अहल्यापतिके शापते तुरतही छूटिगई (त्वत्तोधिरक्षिताकःअन्यः) आपके सिवायरक्षकको और है अर्थात् जनकजी कहत हेरघुनन्दन वर्त्तमानमें आपके पायँनकी रजलागतही अहल्यापतिकी शापते छूटि पाषाणते दिव्य पावनस्त्रीभई इस प्रमाणते यह निश्चयहोत कि जीवनके रक्षक एक आपही हौ दूसरा कोई नहीं है ७४ (कालचक्रैःजितयोगिवृंदैः) कालवेगन करिकै जितयोगिनके वृन्दन करिकै (यत्पादपंकजपरागसुरागभवभयंजितं) जिनके पद कमलोंकी रजमें सुन्दरि प्रीति करिकै जन्म मरणादि भवकी भय जीतिलीगई है (यत्नामकीर्त्तनएवदुःखशोकापराजितदेवो)जाको नाम कीर्तन करि दुःख शोकादिकोंको जीतिकै नरदेवत्वंपदलेतेहैं (तंएवशरणंसततंप्रपद्ये) तिनकी निश्चयकरि शरणमें मैं सदा प्राप्तरहौं अर्थात् लग्न मुहूर्त्त तिथिवार नक्षत्रयोग करणपक्षमास अयनसंवत युगकल्प इत्यादि सदाघूमिरहेहैं इति कालचक्र ताको जीते भावकालके प्रभावमें सुभाव सावधान राखत वा घामशीत वर्षा कछु नहीं मानत यम नियम आसन प्रत्याहार प्राणायाम धारणा ध्यानसमाधि इत्यष्टौअंगयोग करि देहेन्द्रीअन्तरमनादि स्वाधीन किहे ऐसे समूहयोगीजन जिनरघुनाथजीके पदरजमें सुन्दरि प्रीतिकरि भवभय जो चौरासी भ्रमणताकोजीति जीवनमुक्तहोते हैं तथा सुजन जिनको नाम भावकीर्त्ति सुयशप्रताप उदारत्वादि गुण इत्यादिमय जो चरितहै ताको कीर्त्तनकरि व्याधिशूलादि जो दुःखहानि वियोगादि जो शोक तिनको जीति मृत्युलोकहीमें अमरपद पावते हैं जिनके प्रभावते ऐसे प्रभुकी शरणमें निश्चयकरि मैं सदा प्राप्तरहौं इति प्रार्थना कीन्हे ७५ ॥

इतिस्तुत्वान्नृपःप्रादाद्राघवायमहात्मने॥दीनाराणांकोटिशतंरथानामयुतंतथा ७६ अश्वानांनियुतंप्रादाद्गजानांषट्शतंतथा ॥ पत्तीनांलक्षमेकंतुदासीनांत्रिशतंददौ ७७ दिव्यांवराणिहारांश्चमुक्तारत्नमयोज्वलान् ॥ सीतायैजनकःप्रादात्प्रीत्यादुहितृवत्सलः ७८ ॥

(इतिस्तुत्वानृपःमहात्मनेराघवायप्रादात्) इस भांति स्तुति करि पुनः राजा जनक महात्मा रघुनाथ जीके अर्थ भारी दायजु देत भये कौन कौन वस्तु (शतंकोटिदीनाराणां) सौ करोरि असरफी (तथाअयुतंरथानां) ताही प्रकार दश हजार रथ ७६ (नियुतंअश्वानांप्रादात्) एकलाख घोड़े दिये (तथाषट्शतंगजानां) ताही भांति छासै हार्थीदिये (एकंलक्षपत्तीनांतुत्रिशतं दासीनांददौ) एकलाख पैदरसेना पुनः तीनिसै दासीदेतेभये ७७ (दिव्य अम्बराणि मुक्तारत्नमय उज्वलान्हारश्च) दिव्यदेव निर्मित वसन अरुमोतीहिरादिरत्नमय उज्वलहारइत्यादि (दुहितृवत्सलः जनकः प्रीत्या सीतायै प्रदात्) कन्यापरममत्वहै जिनकेऐसे जनक प्रीति पूर्वकसीताके अर्थ देतेभये अर्थात् प्रथम केवल ऐश्वर्य रूपमानि स्तुतिकीन्हें पुनःजनक जी ऐश्वर्य माधुर्य मिश्रित रूपजानि भावमहान् पुरुष ऐश्वर्य छपायेराजकुमार रूपतेहमारेजामातृभये इस विचारते रघुनाथ जीके अर्थ दायजु दिये सो कहत कि सौकरोरिअसर्फी दशहजाररथ लाखघोड़ेछासैहाथी एकलाख पैदरसेना तीनिसै दासी इत्यादि रघुनाथ जी को दिये अरु बात्सल्य ताते पुत्रीपर अधिक ममत्व है जिन के ऐसे जनक जी जरतारी रेशमी देवन् के बनाये जो सदा नवीन रहते हैं ऐसे दिव्य बसन तथा मुक्ता रत्नन मय हारादि अनेक भूषणप्रीति सहित जानकी जी को दीन्हे ७८ ॥

वशिष्ठादीन्सुसंपूज्यभरतंलक्ष्मणंतथा॥पूजयित्वायथान्यायंतथादशरथंनृपं७९ प्रस्थापयामासनृपोराजानंरघुसत्तमम् ॥ सीतामालिंग्यरुदतीमातरःसाश्रुलोचनाः ८० श्वश्रूशुश्रूषणपरानित्यंराममनुव्रता॥पातिव्रत्यमुपालंव्यतिष्ठवत्सेयथासुखम् ८१ ॥

(वशिष्ठादीनसुसंपूज्य) वशिष्ठ आदि ऋषेश्वरन को संपूर्ण प्रकार पूजे (भरतंलक्ष्मणंतथानृपं दशरथंयथान्यायंतथापूजयित्वा) भरत लक्ष्मण शत्रुघ्न तथा राजा दशरथ इत्यादिकन को धन दान सन्मानादि जाको जैसा उचित रहै ताको ताही भांति पूजे बिदा किये ७९ (रघुसत्तमम्राजानंनृपः प्रस्थापयामास) रघुवंश में उत्तम राजा दशरथ तिनहि नृप जनक बिदा किये (मातरःरुदंतीसाश्रुलोचनःसीतांआलिंग्य) माता सुनयना आदि रोवत सहित आँसुनननेत्र जानकी जीकोहृदयमेंलगाय लेतीहैं ८० (श्वश्रूशुश्रूषणपरा) सासुकी सेवामें तत्पररहेउ (पातिव्रत्यं उपालंव्यरामंअनुव्रतानित्यंवत्से यथा सुखंतिष्ठ) पतिव्रतधर्मके आलंव्यते रघुनन्दनकी आज्ञाकार रहेउ हेपुत्री जौनप्रकारपतिको सुखहोवै त्यहिआचरण परस्थिररहेउ अर्थात्समाज सहित दशरथ महाराज को बिदाकरि जनक लौटेघरमें सुनयनादि सबमाता रोदन करत नेत्रआँसुन सहित जानकी जीको हृदयमें लगाय सिखावती हैं किहेसीतेसासु की सेवकाई किहेउ भावरघुनन्दनको लालन पालन करि तुम्हारे संयोग योग्यकीन्हें पुनः पातिव्रत यथा शिवपुराणे गिरिजा विदाप्रसंगे ॥ भुंज्यात् भुक्ते प्रिये पत्यौपतिव्रतपरायणा । स्वप्यात्स्वपितिसा नित्यंबुद्ध्यातुप्रथमंसुधीः ॥ सर्वदातद्धितंकुर्यादकैतवगतिःप्रियाआहूता गृहकार्याणित्यक्त्वागच्छेत्तंइतिक्रम् ॥ सत्वरंसांजलिःप्रीत्यासुप्रणम्यवदेदिति ॥ किमर्थंव्याहृतानाथ

स्वप्रसादोविधीयतां ॥ तदादिष्टाचरेत्कर्मसुप्रसन्नेनचेतसास्वप्नेपियन्मनोनित्यंस्वपतिंपश्यतिध्रुवम् ॥ नान्यंपरपतिंभद्रेउत्तमासाप्रकीर्त्तितायापितृभ्रातृसुतवत्परंपश्यतिसद्धिया ॥ मध्यमासाहिकथिताशेलजेवैपतिव्रताबुध्वास्वधर्मंमनसाव्यभिचारंकरोतिन ॥ निकृष्टाकथितासाहिसुचारित्राचपार्वतिपत्युः कुलस्यचभयात्व्यभिचारंकरोतिन ॥ पतिव्रताधमासाहिकथितापूर्वसूरिभिःउक्ताप्रत्युत्तरंदद्यायानारीक्रोधतत्पराशरभाजायतेग्रामेश्रृगालीनिर्ज्जने बनेउच्चासनंनसेवेतनगच्छेद्दुष्टसन्निधौनचत्रपाकरवाक्यानिवदे न्नारीपतिंक्वचित् इत्यादिपतिव्रतधर्मकी रीतितेरघुनन्दन की आज्ञाकार रहेउ अरु हेपुत्री जौन उपाय कीन्हें पतिको सुखहोय ताहीआचरणपर सदा स्थितरहेउ ८१ ॥

प्रयाणकालेरघुनंदनस्यभेरीमृदंगानकतूर्यघोषः ॥ स्वर्लोकभेरीघनतूर्यशब्दैःसंमूर्छिताभूतभयंकरोभूत् ८२ ॥

इतिश्रीअध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसम्वादेबालकाण्डेषष्ठःसर्गः ६ ॥

(रघुनन्दनस्यप्रयाणकाले) रघुनाथ जीके चलतसमय में (भेरीमृदंगआनकतूर्यघोषः) नगारा मृदंग पटह तुरही इत्यादि को शब्द (स्वर्लोकभेरीघनतूर्यशब्दैः) देवलोक के नगारा समूह तुरही आदि को शब्द करिकै (भयंकरोभूतसंमूर्छिताभूत) ऐसाभयंकर शब्द भया जाको सुनि संपूर्ण जन मूर्च्छित भये अर्थात् बरात सहित जातसमय रघुनंदन अयोध्या जी को चले तब नगारा मृदंग डंका तुरही गज घंटादि बरातमें महा शब्द भया तथा स्वर्ग में देवन के नगारादि बाजे दोऊ एकमें मिले अत्यंत भारी शब्द भया ताही समय में परशुराम आकाश मार्ग आवते हैं तिनके वेगते अंधाधुंध सहित महा हाहाकार होता भया इत्यादि सब एक में मिलि कै ऐसा भयंकर शब्द भया जाको सुनि सब लोग भय मान मूर्च्छित भये भाव किसी को धीर्य थिर न रहा ८२ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियबल्लभपदशरणागतबैजनाथविरचिते
अध्यात्मभूषणेबालकाण्डेश्रीरामविवाह वर्णनोनामषष्ठःप्रकाशः ६ ॥

श्रीमहादेवउवाच ॥ अथगच्छतिश्रीरामेमैथिलाद्योजनत्रयं ॥ निमित्तान्यतिघोराणिददर्शनृपसत्तमः १नत्वावशिष्ठंपप्रच्छकिमिदंमुनिपुंगव ॥ निमित्तानीहदृश्यंतेविषमाणिसमंततः २ ॥

सवैया ॥ मारग में भृगुनन्द मिले धनुखैंचत देखि प्रभाव सभीता । कै बिनती पद बंदिगये लखि लोगनको तबहीं डरबीता ॥ सानुज ब्याहि स्वधामगये नरनारि अनन्दसुगावतगीता । मातुलधाम पठैभरतादि नमामि सदा प्रभु राघव सीता ॥ (अथश्रीरामेमिथिलात्योजनत्रयंगच्छति) गिरिजापति शिवजी कहत कि अब श्रीरघुनाथ जी मिथिला पुरते तीनि योजन गये संते (घोराणिनिमित्तानिनृपसत्तमःददर्श)भयंकर उत्पात कारण दशरथ जीको देखपरे१ (नत्वावशिष्ठंप्रपच्छमुनिपुंगव इदंकिं) नमस्कारकरि बशिष्ठ प्रति महाराज पूंछते भये हे मुनि वर यह क्याकारणहै (समंततः बिषमाणिनिमित्तानिइहदृश्यंते) प्रथम सम तदनंतर बिषम उत्पात कारण ये देखि परते हैं अर्थात् बरात सहित श्री रघुनाथ जी चले जनक पुरते बारह कोस पर आये तब हाहाकार आंधी अंधकार इत्यादि भयंकर उत्पात् होनेके कारण दशरथ महाराज को देखि परे तब नमस्कार करि

भाव शरणा गत है वशिष्ठ जीसों दशरथ जी पूछें कि हे मुनि वर यामें क्याकारण होनहार है कि पूर्व सम आचरण अर्थात् आकाश अमल सानुकूल त्रिविधि पवन शुभ सगुण इत्यादि अब तक देखाते रहे ताके पीछे अब कराल अंधकार आंधी हाहाकार इत्यादि टेढ़े उत्पात होनेके येजोकारण देखाते हैं तामें क्या होन हारहै सो कहिये २ ॥

वशिष्ठस्तमथाप्राहभयमागामिसूच्यते ॥ पुनरप्यभयंतेद्यशीघ्रमेवभविष्यति ३ मृगाःप्रदक्षिणंयान्तिपश्यत्वांशुभसूचकाः ॥ इत्येवंवदतस्मस्यववौघोरतरोऽनिलः ४ मुष्णंश्चक्षूंषिसर्वेषांपांशुवृष्टिभिरर्दयन् ॥ ततोव्रजन्ददर्शाग्रेतेजोराशिमुपस्थितम् ५ ॥

('अथवशिष्ठःतंप्राहभयंआगामिसूच्यते) तब वशिष्ठ जी श्री दशरथ प्रति बोले कि तुमपर कुछ भय आवती है ऐसा सूचित होता है परंतु (पुनःतेअद्यशीघ्रंएवअभयंभविष्यति) पुनः तुमको इसी समय शीघ्रही निश्चय करि अभय होइगी काहेते ३ (शुभसूचकात्वांपश्यमृगाःप्रदक्षिणंयान्ति) मंगलकारी सगुण आप देखिये मृग समूह तुम्हारे दहिने जाते हैं (इतिएवंतस्यवदतःघोरतरःअनिलःववौ) ऐसा वशिष्ठ के कहत ही महाभयंकर पवन चलो अर्थात् दशरथ जी को प्रश्न सुनि तब वशिष्ठ जी बोले कि हे महाराज यह जो आपत्काल देखाताहै तामेंयह सूचित होताहै कि कछुकराल बाधा तुम्हारेऊपर आवतीहै सो थायेपर पुनः तुमको इसी समय शीघ्रही निश्चय करि अभय होइगी काहेते मंगल कारी सगुन आप आगे देखिये मृगसमूह आपके वामदिशिते दहिनी दिशिकोजातेहैंऐसे वचन वशिष्ठजीके कहतही सांधकारहाहाकारवृक्षतोरत ऐसेमिहा भयंकर पवनआइगई ४ (पांशुवृष्टिभिःअर्दयन्सर्वेषांचक्षूंषिमुष्णं)धूरिकी वर्षा करिकैपीड़ितसबके नेत्र झांपिगये (ततःव्रजन्अग्रेतेजोराशिउपस्थितंददर्श) तदनंतर चलत में आगे तेज की ढेरीसी समीपही स्थित देखते भये अर्थात् वायू वेगते जो गर्द उड़ि उड़ि गिरत त्याहि करिकै चोट खाय सब के नेत्र बंद भये पुनः चलत में आगे प्रचंड अग्निवत् तेज की ढेरी सी निकट ही स्थित सबको देखि परी ५ ॥

कोटिसूर्यप्रतीकाशंविद्युत्पुंजसमप्रभम्॥ तेजोराशिंददर्शाथजामदग्न्यंप्रतापवान् ६ नीलमेघनिभंप्रांशुंजटामण्डलमंडितम् ॥ धनुःपरशुपाणिंचसाक्षात्कालमिवांतकं ७ कार्तवीर्यांतकंरामंदृप्तक्षत्रियमर्दनम् ॥ प्राप्तंदशरथस्याग्रेकालमृत्युमिवापरम् ८ ॥

(सूर्यकोटिप्रतीकाशंपुंजविद्युत्समप्रभम्) सूर्यते करोरि गुण अधिक उपमा कहवे योग्य प्रताप तेज मय समूह बिजुली की सम प्रभावंत ऐसे (प्रतापवान्तेजोराशिंजामदग्न्यंददर्श) प्रतापवंत तेज समूह जिनमें ऐसे जामदग्न्य जोपरशुराम तिनहिं दशरथ जी देखतेभये ६ (नीलमेघनिभंजटामंडलमंडितम्प्रांशु) श्याम मेघन की ऐसी प्रभा जटाको मंडल शरीर पर शोभित ताके बीचमें शरीर की प्रभारवि किरणवत् दर्शत (धनुःचपरशुपाणिंअंतकम्साक्षात्कालइव) धनुपपुनःपरशु हाथन में धारण किहे नाश करता साक्षात् काल सम है ७ (कार्त्तवीर्यअंतकंदृप्तक्षत्रियमर्दनम्,) सहस्रबाहुके नाशकरता अभिमानी क्षत्रिन के मर्दन हारे अपरम्कालमृत्युंइवरामंदशरथस्यअग्रेप्राप्तं)दूसरे काल मृत्यु समान परशुराम आय दशरथ जीके आगे प्राप्त भये अर्थात् सूर्यन ते करोरि गुणअधिक प्रतापवंत समूह बिजुली सम तेजवंत ऐसे जो परशुराम तिनहि दशरथ जी आवत देखे कैस।

रूप है शीशते छूटा हुवा जो जटामंडल सो देह पर बिथरा सो श्याम मेघ की प्रभासम शोभित ताके बीच देह की प्रभा सूर्यकिरण सम प्रकाशित है बामहाथे धनुष तथा दहिने में कुठार धारण कैसे देखात यथा जगत् के नाश कर्त्ता साक्षात्मूर्तिमान् काल है काहे ते महाबली सहस बाहु के नाश कर्त्ता तथा यावत् अभिमानी क्षत्री रण सन्मुख भये तिन सबको मर्दन हारे इति बिचारते दूसरे मृत्यु काल के समान प्राणहरता परशुराम आय श्री दशरथजी के आगे खड़े भये ८ ॥

तंदृष्ट्वाभयसंत्रस्तोराजादशरथस्तदा॥अर्घ्यादिपूजांविस्मृत्यत्राहित्राहीतिचाब्रवीत् ९ दण्डवत्प्रणिपत्याहपुत्रप्राणान्प्रयच्छमे॥ इतिब्रुवंतंराजानमनादृत्यरघूत्तमम् १० उवाचनिष्ठुरंवाक्यंक्रोधात्प्रचलितेंद्रियः ॥ त्वंरामइतिनाम्नामेचरसिक्षत्रियाधमः ११ ॥

(तंदृष्ट्वा तदाराजा दशरथः भयसंत्रस्तअर्घ्यआदि पूजां विस्स्मृत्य त्राहित्राहि इतिच अब्रवीत्) परशुराम जोहैं तिनहिं देखि तासमयमें राजादशरथ डरायकै ऐसे अधीरभयेजातेअर्घ्यपाद्यादि पूजा करना सोतौ बिसरि गये अरुरक्षा करौ २ इत्यादि बारम्बार बोले ९ (दण्डवत्प्रणिपत्यहिमें पुत्र प्राणान् प्रयच्छ) दण्डकीनाई भूमि परगिरि प्रणामकरि महाराज बोले किहेमुने मेरे पुत्रोंके जो प्राण हैं तिनहिं छांड़ि दीजे (इतिब्रुवंतंराजानंरघूत्तमंअनादृत्य) ऐसे बचन कहत राजा दशरथ तिनहिं अनादरि भाव उन बचन पर कान न दिये अर्थात् मृत्यु कालवत् जो परशुराम तिनहिं देखि राजा दशरथ डरायकै भाव शिव चाप भंग ते क्रोध करि आये निश्चय मेरे पुत्रों को घात करेंगे इत्यादि बिचारि ऐसाअधीरभये कि यासमयमें अर्घ्यादिषोडशोपचार परशुरामको पूजनकरना उचित रहै सो तौ भूलि गये अरु रक्षा करौ रक्षा करौ इत्यादि वचन बारम्बार बोले अरु पुनः दण्डप्रणाम करि बोले हे मुने मेरे पुत्र प्राणों को रक्षा दान मोहिं दीजे ऐसे बचन कहत जो महाराज दशरथ तिनहिं अनादरि भाव नहीं अंगीकार किये अरु रघुनन्दन के सन्मुख ह्वै बोले १० (क्रोधात्इन्द्रियः प्रचलितनिष्ठुरंवाक्यंउवाच) क्रोधते इंद्री चञ्चल हैं ऐसे परशुराम रघुनन्दन प्रति निठुर बचन बोलते भये (क्षत्रियःअधमःरा मइतिमेनाम्नाचरसि) हे क्षत्री अधम राम ऐसा नाम मेरा लोक में प्रसिद्ध है ताको धारण किहे तूं भूतल पर बिचरताहै अर्थात् दीन अधीनता पूर्वक शरण ह्वै यद्यपि महाराज आरत बचन कहे तिन पर कान न दिये काहे ते क्षत्री वंश पै निर्दयी है अरु गुरु को धनु भंग करता जानि रघुनन्दन के सन्मुख बोले क्रोधबश ते नेत्र अरुण भृकुटी चढ़ीं मुख अरुण ओष्ठ फरकत इति इंद्री चलायमान् ऐसे जो परशुराम सो निष्ठुर अर्थात् निर्दयता धारण किहे प्राणघात सूचक कठोर बचन बोले हे क्षत्री अधम यह राम ऐसा नाम मेरा लोक में प्रसिद्ध है भाव इसनाम द्वारा मेरा यश लोक में प्रकाशमान है सोई राम नाम धारण किहे अब तू इस लोक में प्रसिद्ध करता बिचरता है भाव ऋषि मखरक्षण सुबाहु आदि बध अहल्या तारण शिव धनुभंग इत्यादि आचरण द्वारा अपना यश फैलाय मेरा यश मिटाय दीन चाहता है ११ ॥

द्वंद्वयुद्धंप्रयच्छाशुयदित्वंक्षत्रियोसिवै॥पुराणंजर्जरंचापंभंक्त्वात्वंकत्थसेमुधा १२ अस्मिंस्तुवैष्णवेचापेआरोपयसिचेद्गुणम्॥तदायुद्धंत्वयासार्द्धंकरोमिरघुनंदन १३ नोचेत्सर्वान्हनिष्यामिक्षत्रियान्तकरोह्यहम्॥ इतिब्रुवतिवैतस्मिन्चचालवसुधाभृशम् १४ ॥

यदिवैत्वंक्षत्रियोसिआशुद्वंद्वयुद्धंप्रयच्छ) जो निश्चय करि तुम क्षत्री हो तो शीघ्रही मोकों द्वन्द्व युद्ध देउ (पुराणंजर्जरंचापंत्वमुथाकस्थसेभंक्त्वा) बहुत कालको बना पुरान जर्जरघुना सरा जो शिव धनुष ताहि वृथा काहे को तोरि डारेउ १२ (अस्मिंस्तुवैष्णवेचापेचेद्गुणंआरोपयसि) यह जो मेरे पास है विष्णुको धनुष तामें जो कदाचित् रोदा चढ़ाय सको (तदारघुनन्दनत्वयासार्द्धंयुद्धंक रोमि) तवहे रघुनन्दन तुम्हारे साथयुद्ध करब, १३ (नाचेत्अहंक्षत्रियअन्तःकरःहिसर्वान्हनिष्यामि) जो न चढ़ी तो मैं क्षत्रिन का नाश करता हौं निश्चय करि तुम सब को मारिहौं (इतिब्रुवतिवैत स्मिन्वसुधाभृशम्चचाल) ऐसा कहत ही तासमयमें पृथ्वीअत्यन्त हालिउठीअर्थात् परशुराम बोले कि मेरे वर्त्तमान तुम्हारा नाम न चलने पावैगो ताते तुम जो क्षत्री वीर हौ तो मेरे साथ द्वन्द्व युद्ध करौ भाव मोको जीति तब अपना नाम प्रकाशित करौ किस हेत मोसे युद्ध करौ कि केवल धनुषके उठाय लेने ते भूपकी प्रतिज्ञा पूर्ण होती रहै सो मेरे गुरु को धनुष वृथाही क्यों तोरि डारेउ ताते मेरे शत्रु सम हौ अरु जो धनु तोरे ते बड़ा अभिमान राखे होउ तो शिव धनुषपुरान जर्जररहा ताकेतोरनेते तोबलीवीर मानतानहीं हौं यहजो मेरेपासहै विष्णुको धनुष तामें जो कदाचित् रोदा चढ़ायसकौ हेरघुनन्दन तबहम तुम्हारेसाथ युद्धकरैंगे कदाचित् यहधनुष न चढ़ैगो तौ तुमसबको नाशकरिदेउँगो क्योंकि क्षत्रिनको नाशकरतामैंहौं इत्यादि कहतहीसबपृथ्वीअतिशय हालिउठी१४॥

अंधकारोबभूवाथसर्वेषामपिचक्षुषाम्॥रामोदाशरथिर्वीरोवीक्ष्यतंभार्गवंरुषा१५ धनुराच्छिद्यतद्धस्तादारोप्यगुणमंजसा ॥ तूणीराद्बाणमादायसंधायाकृष्यवीर्य्य वान्१६उवाचभार्गवरामंशृणुब्रह्मन्वचोमम॥ लक्ष्यंदर्शयबाणस्यह्यमोघोममशा यकः १७॥

(अथसर्वेषां चक्षुषाम् अपि अंधकारो बभूव) अरुसबके नेत्रोंके आगे अंधकार छायजाता भया (रामः दाशरथिः वीरः भार्गवंतं रुषावीक्ष्य) रामदशरथ नंदन वीरपरशुराम जो हैं तिनहि क्रोध सहितदेखि १५ तत्हस्तात् धनुः आच्छिद्य अंजसा गुणं आरोप्य) तिनपरशुराम के हाथ ते धनुष छीनिलै शीघ्रही रोदाचढ़ाय (तूणीरात् वाणं आदाय संधाय वीर्य्यवान् आकृष्य) तरकसते बाण जोहै ताहिलैके संधानि पराक्रमी रघुनंदन सबाण रोदाखैंचे १६ (भार्गवं रामंउवाचब्रह्मन्मम वचः शृणु) भृगुवर परशुराम प्रतिरघुनंदनबोले हेब्रह्मन्मेरे वचनसुनु (बाणस्यलक्ष्यं दर्शयहिममशायकः अमोघः) बाणको निशाना देखाइये निश्चयकरि मेराबाण वृथानहींजाताहै अर्थात् क्रोधसहित पर- शुरामके बोलतही पृथ्वी हालिउठी अरुत्रासते दशरथादि सबकी आँखिनके आगे अंधकार छायगया तासमय रामजो दशरथनंदन वीरसो परशुरामको क्रोध सहितदेखि जो विष्णुको धनुष लिहेरहैं सो हाथते छीनिलिये शीघ्रही रोदाचढ़ाय अपनेतरकसते बाणलै संधानि रोदाखैंचि परशुराम प्रतिबोले हे विप्रबाण प्रहार हेतनिशाना देखाइये क्योंकि मेराबाण वृथानहींजाताहै १७॥

लोकान्पादयुगंवापिवदशीघ्रंममाज्ञया ॥ अयंलोकःपरोवाथत्वयागंतुंनशक्य ते १८ एवंहित्वांप्रकर्तव्यंवदशीघ्रंममाज्ञया ॥ एवंवदतिश्रीरामेभार्गवोविकृता ननः १९ संस्मरन्पूर्ववृत्तांतमिदंवचनमब्रवीत्॥ रामराममहाबाहोजानेत्वांपरमे श्वरम् २०॥

(लोकान् वा अपिपाद युगंमम आज्ञयाशीघ्रंवद) कितौ सबलोक वा निश्चय करि तुम्हारेपॉय

दोऊये द्वैनिशाना हैं तिनमें एकमेरी आज्ञाकरिकै शीघ्रकहिये (अयंलोकः अथवापरः त्वयागंतुंन शक्यते) यहलोक अथवा परलोक स्वर्गलोक पातालादि इनमें तुमको जानेकी शक्ति न रहेगी १८ (एवंहित्वांकर्तव्यं मम आज्ञया शीघ्रंवद) ऐसेही निश्चयकरि तुम्हैंकरौंगो ताते मेरीआज्ञाकरि आप शीघ्रबताइये (एवंश्रीरामे वदति भार्गवः विकृताननः) इसभाँति श्रीरामके कहत संते परशुरामको मुखसूखिगया अर्थात् रघुनंदन कहत हे विप्र मेराबाण वृथान जायगो ताते कहिये तौ सबलोकनाश करिदेउँ नातरुतुम्हारे पायँनमें जो सबलोकनको जानेकी गतिहै ताको नाशकरिदेउँ जामें इस लोकमें अथवा स्वर्गादि अपर लोकनमें जानेकी तुमको गतिनरहै ऐसा निश्चय करि तुमहिं वेशक्ति करिदेउँगो तातेमेरी आज्ञाते शीघ्रबताइये लोकनाशकरौं कि तुम्हारी गतिनाशकरौं इत्यादि रघुनन्दन के कहतही शंकाते परशुरामको मुखसूखिगया १९ (पूर्ववृत्तांतं संस्मर इदं वचन अब्रवीत्) पूर्व समयको हाल सुधिकरि इसप्रकार वचनबोले (रामराम महाबाहो परमेश्वरं त्वांजाने) हे राजकुमार रामआप महाबाहु राम परमेश्वर हौ अबतुमहिं हमजाना अर्थात् धनुष चढ़ाये सहित रघुनन्दनके वचनसुनतही परशुरामको पूर्वसमयको हालसुधि ह्वै आवाभाव अबतक अभिमानते भूलेरहे प्रभाव देखिसुधि करि इसप्रकार वचन बोले हेरामभाव राजकुमार रूप देखि अबतक भूले रहे जब विष्णुको धनुष चढ़ाये बाहुनमें महाबल देखेउँ ताते अबजानेउ कि आप परमेश्वर रामहौ २० ॥

पुराणंपुरुषंविष्णुंजगत्सर्गलयोद्भवम्॥बाल्येऽहंतपसाविष्णुमाराधयितुमंजसा२१
चक्रतीर्थंशुभंगत्वातपसाविष्णुमन्वहम्॥ अतोषयंमहात्माननंनारायणमनन्यधीः२२
ततःप्रसन्नोदेवेशःशंखचक्रगदाधरः ॥ उवाचमांरघुश्रेष्ठप्रसन्नमुखपंकजः २३ ॥

(जगत्सर्गलयोद्भवंपुराणंपुरुषंविष्णुं) जगत् के उत्पत्ति पालन संहार करण हारे पुराण पुरुष विष्णु हैं (अहंबालेतपसाविष्णुंमाराधयितुं) मैं बाल अवस्था में तपस्या करि विष्णु आराधन हेत (अंजसा२३शुभंचक्रतीर्थंगत्वा) शीघ्रही मंगलीक जो चक्रतीर्थ तहांगयों (अनन्यधीःविष्णुंअनुअहम् तपसामहात्माननंनारायणंअतोषयम्) अनन्यता बुद्धिकरि विष्णुको अनुचर ह्वैमैं तपस्याकरिकै महात्माजो नारायण तिनहिं प्रसन्न किहेउँ २२ (ततःरघुश्रेष्ठ तदनंतर हे रघुबंश मणि (शंखचक्रगदाधरः देवेशप्रसन्नःमुखपंकजःमांप्रसन्नःउवाच) शंख चक्र गदाधारण किये हे देवन के स्वामी प्रसन्न मुख कमल मोपर प्रसन्न ह्वै बोले अर्थात् परशुराम कहत हे रघुनन्दन जगके उत्पत्ति पालन संहार करणहारे आप पुराण पुरुष विष्णु हौ काहेते मैं जानेउ कि मैं बालअवस्था में तपस्या करि विष्णुके आराधन हेत शीघ्रहीं मंगलीक जो चक्रतीर्थ है तहां जाय सबको आस भरोसा त्यागि एकैआस इति अनन्य बुद्धि करि विष्णु को अनुचर ह्वै मैं तपस्या करिकै महान् परमात्मा जो नारायण तिनहि संतुष्ट कीन्हेउ हे रघुवंश मणि ताही समय में भगवान् प्रकट भये कौन भांति किशंख चक्र गदा पद्म धारण किहे किरीट कुंडल केयूर बनमाला,पीतपट विभूषित प्रसन्न मुख कमल ऐसे देवन के स्वामी मोपर प्रसन्न ह्वै बोले २३ ॥

श्रीभगवानुवाच ॥ उत्तिष्ठतपसोब्रह्मन्फलितंतेतपोमहत् ॥ मच्चिदंशेनयुक्तस्त्वं जहिहैहयपुंगवम् २४ कार्तवीर्यंपितृहणंयदर्थंतपसःश्रमः ॥ ततस्त्रिःसप्तकृत्वस्त्वं हत्वाक्षत्रियमंडलम् २५ कृत्स्नांभूमिंकश्यपायदत्वाशांतिमुपावह ॥ त्रेतामुखे दाशरथिर्भूत्वारामोऽहमव्ययः २६ ॥

(ब्रह्मन्तपसाउत्तिष्ठतेमहत्तपःफलितं) भगवान् बोले कि हे ब्रह्मन् तप क्रिया त्यागि अब उठु तेरी बड़ाभारी तपस्या सफल भई (मत्चित्अशेनयुक्तःत्वंहैहयपुंगवंजहि) मेरे चैतन्य अंश में मिलि के तुम अपने शत्रु सहस्रबाहु को मारौ २४ (पितृहणंकार्त्तवीर्यं) जो तुम्हारे पिता को मारने वाला कार्त्तवीर्य सहस्रबाँहु है ताहि मारौ पुनः (यदर्थंतपसःश्रमः) जिस बाल हेत तपस्या में बड़ी परिश्रम कीन्हेउ है (ततःत्वंक्षत्रियमंडलत्रिःसप्तहत्वाकृत्वः) सहस्रवाहु मारे पीछे तुमक्षत्री मंडल भरि एकविंसवार नाश करि देहौ २५ (कृत्स्नांभूमिं) राजाहीनरही जो संपूर्ण भूमि ताहि (कश्यपायदत्त्वाशांतिंउपावह) कश्यप के अर्थ दान दैकै शांति को प्राप्त होयहु (अव्ययःअहंत्रेतामुखेदाशरथिः रामःभूत्वा) नाश रहित हम त्रेता के चौथे चरण में दशरथ नन्दन रामनामे उत्पन्न होंइगे अर्थात् परशुराम कहत कि भगवान् मोसों बोले हे ब्रह्मन् तप क्रिया त्यागि उठु जो बडा भारी तप किहे सो सफल भया अब मेरा चैतन्य अंश तेरे शरीर में व्यापक रहै गो त्यहिशक्ति सहित जो तुम्हारे पिता को बध कियाहै कार्त्तवीर्य सहस्रबाँहु ताको बधकरौ अरु जोमनोर्थ राखि तपमें बड़ी परिश्रम किहेउ सो भी सफल भया भूमण्डल में यावत् क्षत्री राजाहैं तिन को मारि मारि एकइसबार निःक्षत्र करि दिहेउ तिसके उद्धार हेत सबभूमि कश्यप को संकल्पि दिहेउ तब चित्त शांति को प्राप्त होई अरु जब मेरा तेज तुम्हारे शरीर ते निसरि जायगो सो कारण सुनौ त्रेतायुगके चौथेचरणमें नाश रहित हम रामनामे दशरथ के पुत्र ह्वै उत्पन्न होंइगे २६ ॥

उत्पत्स्येपरयाशक्त्यातदाद्रक्ष्यासिमांततः ॥ मत्तेजःपुनरादास्येत्वयिदत्तंमया पुरा २७ तदातपश्चरंल्लोकेतिष्ठत्वंब्रह्मणोदिनम् ॥ इत्युक्त्वांतर्दधेदेवस्तथासर्वं कृतंमया २८ सएवविष्णुस्त्वंरामजातोऽसिब्रह्मणार्थितः ॥ मयिस्थितन्तुत्वत्तेज स्त्वयैवपुनराहृतम् २९ ॥

(परयाशक्त्याउत्पत्स्येतदामांद्रक्ष्यसिततः) मेरीपराशक्ति सीता नामें जनकपुरमें उत्पत्ति होइगी त्यहिसहित जब मोको देखोगे तदनंतर (त्वयिपुरामयादत्तंमत्तेजःपुनःआदास्ये) तुमविषेपूर्व हमकरि के दियाहुआ मेरातेज सो पुनः लैलेउँगो २७ (तदात्वंतपश्चरन्ब्रह्मणोदिनंलोकेतिष्ठ) तबतुम तपस्या करते हुये ब्रह्माको दिन कल्पभरि लोकमें रहेउ (इतिउक्त्वादेवःअंतर्दधेतथामयासर्वंकृतं) इत्यादि कहि देवनारायण अंतर्द्धान भये पीछे उनका कहाहुआ वचन जैसा रहै तैसाही मैंने सब किया अर्थात् नारायण ने कहा कि यथा हमअयोध्यामें रामनामे दशरथ नंदनहोंइगे तथाहमारी पराशक्ति जनक पुरमें सीतानामे जनकपुत्री होइगी ताहि बिवाहि सँगलै हमलौटैंगे ता समय तुम आयसक्रोध दृष्टि हमको देखोगे तब पूर्वको दिया हुआ आपना तेज सो पुनः हम खैंचि लेइँगे इत्यादि कहि नारायण देव अंतर्द्धान ह्वै गये २८ (सएवत्वंविष्णुःरामब्रह्मणाअर्थितःजातःअसि) सोई निश्चय करि तुम विष्णुहौ हे रघुनाथजी ब्रह्मा की प्रार्थनाते भूतल में अवतीर्णभयउहै (त्वत्तेजःमयिस्थितंपुनःत्वयाएवआहृतम्) आपहीको तेज मेरेविषे स्थित रहै पुनः आपहीने निश्चय करि अब हरि लिहेउ अर्थात् परशुराम कहत जो पूर्व वरदायक सोई निश्चय करि आप विष्णुहौ हे श्रीरघुनाथजी ब्रह्माकी प्रार्थनाते भूभारहरने हेत राजकुमार रूपते अवतर्णि भयउ अरु आपही को तेज मेरे तनमें व्यापक रहै ताही बलते मैं लोकमें प्रतापवंत रहेउँ अब आपहीने निश्चय करि आपना तेज हरि लिहेउ खाली बिप्र रहि गयेउँ २९ ॥

अद्यमेसफलंजन्मप्रतीतोसिमयाप्रभो॥ब्रह्मादिभिरलभ्यस्त्वंप्रकृतेःपारगोमतः३० त्वयिजन्मादिषड्भावानसन्त्यज्ञानसंभवाः ॥ निर्विकारोसिपूर्णस्त्वंगमनादिविव र्जितः३१यथाजलेफेनजालंधूमोवह्नौतथात्वयि॥ त्वदाधारात्वद्विषयामायाकार्यं सृजत्यहो ३२॥

(प्रकृतेःपारगोमतः) प्रकृति ते पारगामी यह वेद को मत है (ब्रह्मादिभिःअलभ्यःप्रभोत्वंमया प्रतीतोसि) ब्रह्मादिकन करिकै अलभ्य हे प्रभो सोई आप हम करिकै जाने गयो ताते (अद्यमेज न्मसफलं) अब मेरा जन्म सफल भया अर्थात् परशुराम कहत कि जो माया ते पार शुद्ध चैत- न्य है ऐसा वेदनको सिद्धांत मत पुनः ब्रह्मादिकन को दर्शन दुर्लभ हे प्रभु सोई आपको परमात्मा जानि प्रसिद्ध अवलोकन करता हौं ताते या समय में मेरा जन्मसफल भया भाव मानवश ते लोक साधन में लगा रहा ताते जन्म वृथारहा अब दर्शन पाय मान गया शुद्ध शरणह्वै परलोक साधौंगो इति जन्म सफल भया ३० (अज्ञानसंभवाः जन्मादिषड्भावाःत्वयिनसन्ति) अज्ञान ते उत्पन्न जन्मादि जो पड्भाव सो तुम विषे नहींहैं (गमनादिवर्जितःत्वंपूर्णःनिर्विकारःअसि) गमनादि इन्द्रिय विषय रहित आप पूर्ण परमात्मा निर्विकारहौ अर्थात् जन्म होना नाम होना अवस्था वढ़न युवा वृद्ध मरण इत्यादि षड्भाव जो अज्ञान ते उत्पन्न होते हैं ते आप विषे नहीं हैं तथा शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध मैथुन चलन इत्यादि इन्द्रिन की विषय अरु कामादि मनके विकार इत्यादि रहित पूर्ण परमात्म हौ ३१ (जलेयथाफेनजालंवह्नौयथाधूमः) जल विषे ज्यहिप्रकार फेनासमूहअरु अग्निविषे ज्यहि प्रकार धूम समूह (तथात्वयित्वत्आधारात्त्वतविषयामायाअहोकार्यंसृजति) ताहीप्रकार आपु विषे आप की आधार ते आप की विषय माया सो आश्चर्य मय कार्य रचती है अर्थात् जौनी भांति अग्नि निर्विकार ताके आधार जोधूम्र विकार कढ़ताहै सो विषयहै सोनेत्रको करूलागत बसन मंदि- रादि मलिन करत अधिकमें परे प्राणघातक इतिदुःखद पुनः मसकदंसादिते रक्षक अगरादि सुगंध युत नासिकाको सुखद मेघनमें मिलिजग जीवन दाता इत्यादि सुखद पुनः जलशुद्ध ताकी आधार फेन विकार विषय सो भी अनेक कार्य करत ताही भांति हे रघुनन्दन आप निर्विकार शुद्ध हौ आप के विषे आपके आधार आपकी विषय मायाहै सो आश्चर्य मय ब्रह्माण्ड रचनादि अनेक कार्य करत आप कछु नहीं करते हौ ३२ ॥

यावन्मायावृतालोकास्तावत्त्वांनविजानते ॥ अविचारितसिद्धैषाऽविद्याविद्यावि रोधिनी ३३ अविद्याकृतदेहादिसंघातेप्रतिबिम्बिता॥ चिच्छक्तिर्जीवलोकेस्मिन् जीवइत्यभिधीयते ३४ ॥

(यावत्लोकाः मायाआवृता) जब तक लोकजन माया के घेर में पड़ेहैं (तावत्त्वांनविजानते) तबतक आप को नहीं विशेषि जानि सकेहैं काहेते (विद्याविरोधिनी एषाअविद्याअविचारितसिद्धा) विद्याकी विरोधिनी यह जो अविद्या माया है सो अविचारही ते सिद्धि है विचार करनेते नाशहोती है अर्थात् परशुराम कहत हे रघुनन्दन जबतक लोकजन अविद्या माया के घेर में परे हैं भाव विषय वश देहै को आत्मामाने तबतक आपको विशेषि नहीं जानि सकेहैं काहेते विद्या जो ब्रह्मज्ञान ताकी विरोधिनी देहाभिमान यह जो अविद्या है सो अविचारै ते सिद्ध है भाव असद्वासना उठी विचार न किया ताते मिथ्या दृष्टि भई देहै को सत्य मानि इन्द्रिय शब्दादि विषय के वश मनकामादिके

वश ते विपर्यी जीवँ भया अरु विचार करने ते देह व्यवहार मिथ्यादेखात सोई अविद्या नाशहै ३३ (देहआदिसंघातेअविद्याकृत) देह आदिक जो समूह लोक व्यवहार है सो अविद्या को किया है (चितशक्तिःप्रतिविम्बिताजीवअस्मिन्लोके) चेतन्य शक्ति सों मायामे प्रतिविम्बित भया सोईजीव इस लोक में है (जीवइतिअविधीयते) जीव नाम इस विधिते भया अर्थात तन धन धाम स्त्री पुत्र मित्र इत्यादि यावत् देह व्यवहार समूह है सो सव अविद्या मायाकी रचनाहै ताही मायामें जो परमात्माकी चैतन्यशक्ति प्रति विम्बितहै भाव जड़माया भी चैतन्यसी देखाती है सोईजीव इस लोकमें है भावनिर्विकार स्वतंत्र अखण्ड आनन्दमय जो आत्मरूप सो कारण वशभुलाय कामादि विकारयुत लौकिक सुख चाहते देहधारी भया इसविधिते जीवभया ३४ ॥

यावद्देहमनःप्राणबुद्ध्यादिष्वभिमानवान् ॥ तावत्कर्तृत्वभोक्तृत्वसुखदुःखादिभा
ग्भवेत् ३५ ॥

(देहमनःप्राणबुद्धिआदिषुयावत् अभिमानवान्) देह मन प्राण बुद्धि इत्यादि विषे जबतक जीव अभिमानी है (तावत्कर्तृत्वसुखदुःखादिभोक्तृत्वभाग्भवेत्) तबतक शुभाशुभ कर्म करिबेको अरु सुख दुःख भोगबेको भागी होताहै अर्थात् भूमि जल अग्नि पवन आकाश इनपञ्च तत्त्वमय रचित विश्वा भिमानी जाग्रत्अवस्था वेषरी वानी इति स्थूल शरीर तामें अभिमान यथा हम ब्राह्मण विद्वान् हम क्षत्रीराजा हम वैश्यधनी पुनः मन जोजीवको मुख्य अन्तःकरणहै तामें षडंश जिज्ञागापञ्चकेयथा॥ कर्माकर्मविकर्मादावनियमेनवर्त्तते ॥ संकल्पश्चविकल्पश्चमनसोवहुशो यथा ॥ अर्थात् कर्म अकर्म विकर्म अनियम संकल्प विकल्प इत्यादि द्वारा मनोरथकी संकल्प रखनामनको अभिमानहै पुनः प्राण यथा ॥ हृदिप्राणोगुदेऽपानःसमानोनाभिसंस्थितः॥ उदानःकण्ठदेशेस्याद्व्यानःसर्वशरीरगः ॥ इत्यादि प्रत्यंग जो वायु वसत तिन में अपनपो राखना प्राण को अभिमान है पुनः बुद्धि जीव को अंतष्क-रण ताके षडंश यथा जपोयज्ञस्तपस्त्यागःआचारोध्ययनतथा ॥ बुद्धेश्चैवषडंगानिज्ञातव्यानिमुमुक्षु भिः ॥ भाव जप यज्ञ तप त्याग आचार विद्याध्ययन इत्यादि में करता हौं इति बुद्धि को अहंकार है इत्यादि देह मन प्राण बुद्धि इत्यादि में जबतक जीव अभिमानी बनाहै तबतक कर्त्ता बना शुभाशुभ कर्मकरत ताको फल सुखदुःख भोगबेको भागी बना चौरासी में परा जीव भोगता है ३५ ॥

आत्मनःसंसृतिर्नास्तिबुद्धेर्ज्ञानंनजात्वति ॥ अविवेकात्द्वयंयुक्त्वासंसारीतिप्रवर्त्त
ते ३६ जड़स्यचित्समायोगाच्चित्त्वंभूयाच्चितेस्तथा ॥ जड़संगाज्जड़त्वंहिजला
ग्न्योर्मेलनंयथा ३७ ॥

(संसृतिःआत्मनःनअस्ति) जन्म मरणादि संसार बंधन आत्माको नहीं होताहै (इतिबुद्धेःज्ञानं नजातु) इसीभाति बुद्धी को ज्ञान नहीं होता है (द्वयंयुक्त्वाअविवेकात्इतिसंसारीप्रवर्त्तते) चैतन्य आत्म अरु जड़बुद्धि ये दोऊ एक मे मिले अविवेक ते इसभाति जीव संसारी रीति पर चलता है अर्थात् सूर्य घामवत् परमात्मको अंश आत्म स्वयं प्रकाश अखंड आनन्द रूप है तामें अज्ञान को सं-भव नहीं ताते जन्म मरण दुख सुखादि संसारी व्यवहार नहीं ह्वै सकत यथा शुक सनकादि पैदा होतहीं आत्में रूपको दृढ़ गहि लिये तिन देह व्यवहार में नहीं परे इत्यादि आत्म रूप में संसृति नहीं पुनः यथा जल में अमल लावण्यता है तथा प्रकृति में बुद्धी है तामें स्वयं प्रकाश रूप ज्ञान नहीं ताते भक्ति मुक्ति आदि परमार्थ व्यवहार नहीं ह्वै सकत यथा देहे व्यवहार में परे असंख्यन विषयी जीव

वर्त्तमान हैं इत्यादि बुद्धिमें ज्ञान नहीं अरु परमात्मा की इच्छाहै कि संसारौ बनी रहै ताही में पर-मार्थी होवै ताते आत्म अरु बुद्धि दोऊ एक में मिले ते जीव भया तिन में किंचित् विवेक दिया जो सत्संग बलते बिवेक पकरि लिया सो निवृत्त पथमें परमार्थमें लगा अरु अविवेक सबल करिदिया सो कुसंग बलते अविवेक पकरि प्रवृत्त मारग में संसारी व्यवहार में लगा ३६ (चित्समायोगात्जडस्य चित्वंभूयात् चैतन्य जो आत्मा ताके संयोगते जड़बुद्धी को चैतन्यता होती है (तथाजड़संगात्चितेः हिजडत्वं तथा जड़बुद्धी के संग ते चैतन्य आत्माको निश्चय करि जड़त्व आवताहै कौन भांति (यथा जलअग्न्योःमेलनं) जौनी प्रकार जल अग्नि को मिलन होता है अर्थात् आत्मा अरु बुद्धी दोऊ मिलिकै जीव भया इसी ते संसार में अज्ञान अरु ज्ञान दोऊ हैं ताको कारण कहत कि चैतन्य आत्मापरिपूर्ण ज्ञानरूप तामें मिलेते जड़अज्ञान जो बुद्धीतामें चैतन्यता भाव अज्ञानमें ज्ञानव्यापि गया तैसेही जड़बुद्धी अज्ञानमें मिले चैतन्यज्ञानवंत आत्मा ताहूमें जड़ता भाव ज्ञानमें अज्ञान व्यापि गया कौनभाँति यथाजलको संगपाय अग्निशीतल ह्वै जात अरु अग्निको संगपाय जलतप्त ह्वै जात परंतुस्वयं रूपते दोऊ मिलिनहीं सके हैं काहेते अधिक जलपरै तौ अग्निको बुझाय देवै तथाअधिक अग्नि होइतौ जलको भस्मकरिदेवै ताते तीसरा आधार चाहिये यथा चूल्हे में अग्नि बारितापर बटुई मेंभरि जल धरिदियो तब अग्निके संगते जल तप्तहोई अस जलके संगते बटुई में व्याप्त जो अग्नि सो शीतलरही भाव अग्निवर्ण बटुई न ह्वै सकी इत्यादि कारणते भोजनआदि अनेक व्यापार होते हैं इसीभांति आत्म अरुबुद्धी स्वयंरूपते नहींमिलिसकेहैं ताते पंचभौतिक तनकारण पाय तामें आत्मबुद्धी मिलि संसारी व्यवहार होताहै कुसंगते बद्धहै ३७ ॥

यावत्त्वत्पादभक्तानांसंगसौख्यंनविंदति ॥ तावत्संसारदुःखौघान्ननिवर्त्तेन्नरःसदा३८॥

(त्वत्पाद भक्तानां संगसौख्यं यावत न विंदति) आपके पादसेवक भक्तन को संगको सुख जब तकनहीं देखना है (तावत् नरःसदासंसार दुःखऔघात् न निवर्त्तेत्) तबतक मनुष्य सदा संसारके दुःख समूहते नहीं छूटताहै अर्थात् परशुराम कहत हे रघुनाथ जी आपके पायँन की सेवकाई करने वाले जे अनुरागी भक्तहैं तिनके संगको सुख जबतक जननहीं देखता है कुसंगते इन्द्रिय विषयासक्त देहै सुखमें पराहै कर्माधीन चौरासी में जन्मत मरत दुखसुख भोगत सदा तबतक मनुष्य संसारको समूहदुःख जन्म मरणादि तिहि बंधनते छूटता नहीं है इहांजीवको नहींकहे नरनको कहेताको भाव और तनमें तरिबेकी गतिनहीं है अरुनर तनमें है ताते मनुष्य तनपाय भक्तनको संगकरि भक्तिपर आरूढ़ ह्वै सुगम भव तरिजाय ३८ ॥

सत्संगलब्धयाभक्त्यायदात्वांसमुपासते ॥ तदामायाशनैर्यातितानवंप्रतिपद्यते ३९ ततस्त्वज्ज्ञानसम्पन्नस्सद्गुरुस्तेनलभ्यते ॥ वाक्यज्ञानंगुरोर्लब्ध्वात्वत्प्रसादाद्विमुच्यते ४० तस्मात्त्वद्भक्तिहीनानांकल्पकोटिशतैरपि ॥ नमुक्तिशङ्काविज्ञानशङ्कानैवसुखंतथा ४१ ॥

(सत्संगभक्त्यालब्धया) सत्संगते भक्ति लाभ होती है त्यहि करिकै (यदात्वांसउपासतेतदामायाशनैःयाति) जब आप को उपासत तब धीराधीरा माया मिटतजाती है ताते (तानवंप्रतिपद्यते) सो माया क्षीण ताको प्राप्त होती है अर्थात् हरिभक्तन के दर्श स्पर्श ते पाप नाश भया संगरहे उनहीं को ऐसो स्वभाव आवा कथा उपदेश सुने हरि सनेह उपजा इति सत्संग ते भक्ति लाभ भई त्यहि

करिकै श्रवण कीर्त्तन स्मरण सेवन अर्चन वन्दनादि अहर्निशि आप की उपासना ज्यों ज्यों करता है त्यों त्यों ज्ञान बढ़ते बढ़ते आत्मरूप सबलपरो अरु ज्यों ज्यों ज्ञान बढ़तगयो त्यों त्यों इन्द्रिनकी विषयकामादि विकार मिटते मिटते मायाक्षीण परिगई भाव देह व्यवहार मिथ्यादेखिपरा ३९ (ततः त्वत्ज्ञानसंपन्नःतेनसद्गुरुःलभ्यते) तदनन्तर आपके रूपको ज्ञान परिपूर्ण भया त्यहि करिकै सद्गुरुलाभ भया (गुरोःवाक्यज्ञानंलब्ध्वात्वत्प्रसादात्विमुच्यते) गुरुके बचनते ज्ञानलाभ भया तब आपके प्रसादते भवते छूटिगया अर्थात् परशुराम कहत हे रघुनाथजी जब मायाक्षीण परी तब आप के रूपको जानवेको ज्ञानभया तब सद्गुरुते उपदेशलिया तिनके वचन सुनतसंते परिपूर्ण ज्ञान नीकी भांति आपको जाना तब आपकी कृपाते जीवभव बंधनते छूटिगया ४० (तस्मात्त्वत्भक्तिहीनानाशतैःकोटिकल्पअपिमुक्तिन) ताते आपकी भक्ति हीन जननको लउकरोरि कल्पतक निश्चय करि मुक्ति नहीं होती है (तथाविज्ञानशंकाशंकाएवसुखंन) तैसेही विज्ञानमें शंकालगी रहत अरु जब शंकाबनीहै तब निश्चय करिकै सुख नहीं है अर्थात् हे रघुनाथजी केवल भक्ति करि आपकी कृपाते मुक्ति होती है ताते जे आपकी भक्ति नहीं करते हैं भावशरणागतको भरोसा नहीं राखै अन्य साधनादि करि मुक्तहू न चाहैं तौ लउकरोरि कल्पतक लगेरहैं तबहूं मुक्ति न होई कदाचित् मुमुक्षू ह्वै शमदम उपराम तितीक्षा श्रद्धासमाधान विराग विवेकादिमें श्रमकरि जो विज्ञानभी होवै तामें माया प्रेरित कामादिकोंके बाधाकी शंकाबनी रहती है इसी हेत संन्यासिनको चाहिये कि सब व्यवहार रहित असंग उदासीन वृक्षतररहै यह मनुस्मृति छठे अध्याय पैतालिस श्लोकके ऊपर लिखा है ताते शंका अवश्यही रहत अरु जब शंका बनी है तौ निश्चय सुख नहीं है ताते भक्ति हीन मुक्ति हेत अन्य साधन करनाश्रम वृथा है यथामहारामायणे ये ब्रह्मास्मीतिनित्यंवदंतिह्यदिविनाराम चंद्राङ्घ्रिपद्ममृतेऽबुध्यास्त्यक्तपोतास्तृणपरिनिचयेसिंधुमुग्रंतरंति॥पुनःरुद्रयामले॥येनराधमलोकेपुरा मभक्तिपरांमुखः जपंतपंदयाशौचंशास्त्रानामवगाहनं सर्वंवृथाविनायेनशृणुध्वंपार्वतिप्रिये॥सत्योपाख्याने॥विनाभक्तिंनमुक्तिश्चभुजमुत्थायचोच्यते ४१॥

अतस्त्वत्पादयुगुलेभक्तिर्मेजन्मजन्मनि ॥ स्यात्त्वद्भक्तिमतांसंगोऽविद्यायाभ्यांविनश्यति ४२॥

(अतःमेजन्मजन्मनित्वत्पादयुगलेभक्तिःस्यात्) इस कारणते मेरे अन्तरमें जन्मजन्मान्तर आपके पद दोउनमें भक्ति होइ तथा देहते (त्वत्भक्तिमतांसंगः) आपके भक्तनको संगरहै (याभ्यांअविद्याविनश्यति) जिन दोउ करिकै अविद्यामाया विशेषि नाशको प्राप्तहोइ अर्थात् परशुराम कहत कि हे श्रीरघुनाथजी बिना आपकी भक्ति अन्य उपायते जीवकी मुक्ति नहीं ह्वै सक्ती है इस कारणते आपके दोऊ पद कमलोंविषेकी जो प्रेमापराभक्तिहै सो मेरे उर अन्तरमें ऐसी दृढ होवै जो जन्म जन्मान्तर अधिकातजाय पुनः विना सत्संग भक्ति पुष्टता नहीं पावत ताते जेश्रवण कीर्त्तनस्मरण सेवन अर्चनादि आपकी भक्ति करनेवाले जेसज्जनहैं तिनको संगरहै इति भक्ति सत्संग इन दोऊ करिकै अविद्या अर्थात् देहाभिमान नाशको प्राप्तहोइ ४२॥

लोकेत्वद्भक्तिनिरतास्त्वद्धर्मामृतवर्षिणः ॥ पुनन्तिलोकमखिलंकिंपुनःस्वकुलोद्भवान् ४३ नमोस्तुजगतांनाथनमस्तेभक्तिभावन ॥ नमःकारुणिकानन्तराम

चन्द्रनमोस्तुते ४४ देवयद्यत्कृतम्पुण्यंमयालोकजिगीषया ॥ तत्सर्वंतववाणा यभूयाद्रामनमोस्तुते ४५ ॥

(त्वत्भक्ति निरताः लोके त्वत् धर्म अमृत वर्षिणः) आपकी भक्तिमार्ग पर चलते हैं अथवा जे लोकविषे आपको धर्मरूप अमृतकी वर्षा करते हैं ते (अखिलं लोकं पुनंति पुनः स्वकुल उद्भवान किं) समग्र जे लोक हैं तिनको पवित्र करते हैं पुनः जे आपने कुलमें उत्पन्न भये तिनको क्या कहिये अर्थात् परशुराम कहत हे श्री रघुनाथ जी नउधा प्रेमापरादि जो आपकी भक्ति है तापर जे तत्पर हैं भाव हृदय में रूप को ध्यान नाम स्मरण चरित गान श्रवण हाथोंते कैंकर्यता इत्यादि तथा कर्म ज्ञान उपासना इत्यादि जो आपको धर्म अमृतरूप है ताको जे संसारमें वर्षते हैं भाव लोक जननको उपदेश करते फिरते हैं ते सव लोकनको पावन करतेहैं पुनः जहां उत्पन्नभये तेहि कुलकी कहांतक प्रशंसाकरैं सो तौ परम धन्यहै ४३ (जगतांनाथ नमः अस्तु भक्ति भावन ते नमः) हे जगतकेनाथ आपके अर्थ नमस्कारहै भक्तन को विभव वढ़ना सदा भावताहै इति हे भक्तिभावन आपकेअर्थ नम स्कार है (कारुणीक नमः अनन्त रामचन्द्र ते नमः अस्तु) जो सेवक को दुखित देखि स्वामी दुखित ह्वै शीघ्रही दुखहरै सो करुणागुण है ताको करनेवाले हे कारुणीक आपके अर्थ नमस्कार है जाको अन्त कोऊ नहीं पावत इति हे अनन्त रामचन्द्र आपके अर्थ नमस्कार है ४४ (लोकः जिगीषया मयायत्यत् पुण्यंकृतं) स्वर्गादि लोक प्राप्तीकी इच्छा करिकै मैंने जोजो पुण्यक्रियाहोय (तत्सर्वं देव तव वाणाय भूयात् रामते नमः अस्तु) तौनि सव हे देव आपके वाण के अर्थ होय हे राम आपके अर्थ नमस्कार है अर्थात् जो श्री रघुनाथजी आपने वाणको निशाना पूछे तापर परशु राम कहत कि न किसी लोकको नाशकरौ न मेरी गतिको नाशकरौ जो स्वर्गादि लोक प्राप्ती अर्थ मैंने पुण्य कियाहै सोई आपके वाणके अर्थ निशाना है सो वाणते हरिलीजे जामें अव किसी लोक को जाना न परै केवल शरणमें राखिये इसीहेत हे रघुनाथजी आपकेअर्थ वारम्वार नमस्कारहै ४५॥

ततःप्रसन्नोभगवान्श्रीरामःकरुणामयः ॥ प्रसन्नोस्मितवब्रह्मन्यत्तेमनसिवर्त्त ते ४६ दास्येतदखिलंकामंमाकुरुष्वात्रसंशयम् ॥ ततःप्रीतेनमनसाभार्गवोरा ममब्रवीत् ४७ यदिमेनुग्रहोरामतवास्तिमधुसूदन ॥ त्वद्भक्तसंगस्त्वत्पादेदृढ़ा भक्तिःसदास्तुमे ४८ ॥

(ततः करुणामयः श्रीरामः भगवान् प्रसन्नः) तव करुणामय श्रीराम भगवान् परशुराम पर प्रसन्नह्वै वोले (हे ब्रह्मणतवप्रसन्नोस्मितेमनसियत्वर्त्तते) हे ब्राह्मण तुम्हारे ऊपर हम प्रसन्न हैं अव तुम्हारे मनमें जो आवै सो मांगो ४६ (तत अखिलंकामं दास्ये अत्रसंशयं माकुरुपु) जो मांगौ गे तौन सम्पूर्ण कामना हम देइंगे इसमें संशय न करौ (ततः भार्गवः मनसा प्रीतेन रामं अब्रवी त्) तव परशुराममनमें प्रीति सहित रघुनन्दन प्रति वोलतेभये ४७ (हे राम मधुसूदन यदि मे तव अनुग्रह अस्ति) हे राम मधुदैत्यको नाश करनेवाले जो मेरे ऊपर आपकी अनुग्रह सदा दया होय तौ (त्वत् भक्त संगः त्वत् पादे भक्तिः दृढ़ा मे सदा अस्तु) आपके भक्तन को संग अरु आपके पायँनविषे भक्ति पुष्ट मोको सदाहोय अर्थात् शिवजी कहत हे गिरिजा जव मान रहित परशुराम दीन अधीनह्वै स्तुति कीन्हे तब रघुनाथजी प्रसन्नभये काहेते करुणामय हैं भाव सेवकके दुख में आप दुखित ह्वै शीघ्रही वाको दुख हरिलेते हैं पुनः भगवान् अर्थात् सबको पालन पोषण करने को

समर्थ हैं ताते परशुराम प्रति बोले हे ब्रह्मन् तुमपर हम प्रसन्न हैं तुम्हारे मनते जो भावै सो मांगो जो मँगिहौ सो सम्पूर्ण कामना हम पूर्ण करिदेइंगे यामें संशय न करौ इति प्रभुके वचनसुनि मनमें प्रीति करि परशुराम बोले हेराम मधुसूदन जो मेरे ऊपर अनुग्रह करतेहौ तौ आपके उत्तम भक्तनको संग तथा आपके पद कमलों में पुष्ट भक्ति सदा मोको रहै ४८ ॥

स्तोत्रमेतत्पठेद्यस्तुभक्तिहीनोपिसर्वदा ॥ त्वद्भक्तिस्तस्यविज्ञानंभूयादन्तेस्मृतिस्तव ४९ तथेतिराघवेणोक्तःपरिक्रम्यप्रणम्यतम् ॥ पूजितस्तदनुज्ञातोमहेन्द्राचलमन्वगात् ५० राजादशरथोहृष्टोरामंमृतमिवागतम् ॥ आलिंग्यालिंग्यहर्षेणनेत्राभ्यांजलमुत्सृजत् ५१ ॥

(एतत् स्तोत्रं यस्तु भक्तिहीनः अपि सर्वदा पठेत्) मेरा किया यह स्तोत्र जो है ताहि जोजन भक्तिहीनौ होइ निश्चय करि सदा पाठ करै (तस्य त्वद्भक्तिः विज्ञानं भूयात् अंते तवस्मृतिः) ताको आपकी भक्ति अरु विज्ञानहोवै अंतकाल में आपहीकी स्मरण रहै अर्थात् परशुराम कहत है श्री रघुनाथजी सत्संग सहित भक्ति मोकोहोइ अरु यह जो मेरा किया स्तोत्रहै सो भी लोक उपकारी होइ कौन भांति कि जो भक्तिहीनौ जन जो नित्य याको पढ़ै सो विज्ञानसहित आपकी उत्तम भक्ति पावै अंतमें आपहीकी समीपता पावै भवबंधनमें न परै ४९ (तथाइतिराघवेणउक्तः) यथा माँगेउ तथा होइगा इति रघुनन्दन ने कहा तब (तम् पूजितः परिक्रम्य प्रणम्य तत् अनुज्ञातः महेंद्राचलं अनुअगात्) वरपाइ पुनः तिन रघुनन्दन को पूजन परिक्रमा प्रणामकरि तिन प्रभुकी आज्ञापाइ परशुराम महेंद्राचल पर्वत परको चलेगये ५० (रामं मृतंइवआगतं राजादशरथः हृष्टः) मानौ रघुनाथजी मृत्युको प्राप्तह्वैके जीआये ऐसा राजा दशरथ आनन्दको प्राप्तभये (नेत्राभ्यां जलं उत्सृजत् हर्षेण आलिंग्यालिंग्य) नेत्रन ते जल त्यागत वारम्वार उरमें लगावत अर्थात् क्षत्रिन के नाश करता सक्रोध आये देखि भयातुर भये जब चलेगये तब मानौ मरेहुये रघुनन्दन पुनः जीआये ऐसे आनन्दको प्राप्तह्वै महाराज आसु जल बहावत हर्ष करिके वारम्वार रघुनन्दन को हृदय में लगाये इहां महाराजमें करुणारस रहा तामें सहायक रघुनन्दन में वीररस भया ५१ ॥

ततःप्रीतेनमनसास्वस्थचित्तःपुरंययौ॥रामलक्ष्मणशत्रुघ्नभरतादेवसंमिताः५२ स्वांस्वांभार्यामुपादायरेमिरेस्वस्वमन्दिरे ॥ मातापितृभ्यांसंहृष्टोरामःसीतासमन्वितः ५३ रेमेवैकुण्ठभवनेश्रियासहयथाहरिः ॥ युधाजिन्नामकैकेयीभ्राताभरतमातुलः ५४ ॥

(ततः स्वस्थचित्तः मनसा प्रीतेन पुरंययौ) तदनंतर थिरचित्त मनमें प्रीति करि पुर जो अयोध्या तहांको जातेभये (रामलक्ष्मणः शत्रुघ्न भरतादेव संमिताः) चारिउ देवनकी समान५२(स्व स्वमंदिरे स्वांस्वां भार्यां उपादाय रेमिरे) अपने २ मंदिरनविषे अपनी बामांगिन को अंगीकार किहे रमण करते हैं(माता पितृभ्यां संहृष्टो सीता समन्वितःरामः) मातापिता करि सब भांतिको आनन्द प्राप्त पुनः सीतासहित रघुनाथजी कैसे भोग करते हैं ५३ (वैकुंठ भवने श्रियासह यथा हरिःरेमे) वैकुंठधामविषे लक्ष्मी सहित जैसे विष्णु भोग करते हैं अर्थात् परशुराम के आये पर महाराजके चित्त में खँभार ह्वैगया रहै सो मिटा इति स्वस्थचित्त मनमें रघुनाथजी की प्रीति लिहे पुत्र वधुन सहित

दशरथ महाराज अयोध्याजी को आये तहां सीतासहित रामचंद्र उर्मिलासहित लक्ष्मण श्रुतिकीर्त्ति सहित शत्रुघ्न माराडवी सहित भरत इति चारिहु जोडी रानी परिछन करि मंदिर में लाय लोक वेद रीति करि विलग विलग मन्दिरनमें वास दीन्हें अवस्था स्वरूप तेज गुणादिकरि देवन की तुल्य विराजमान हैं भरतादि तीनिहू बन्धु अपने अपने मन्दिरन में अपनी अपनी वामांगिन को अंगीकार कि हे भोग विलास करते हैं अरु श्री रघुनाथजी को परिपूर्ण आनन्द वर्णन करते हैं काहे ते दासी दास मन्दिर उपवन वाहन भूषण वसन पान गंध भोजनादि यावत् भोग की सामग्री है सो तौ माता पिता करिकै परिपूर्ण अरु स्त्री जनकनन्दिनी ऐसी लोकस्वरूपता गुण स्वभाव पतिव्रत इत्यादि लोकोत्तर अद्वितीय तिन सहित कैसा भोग विलास करतेहैं जैसे वैकुण्ठ धाम विषे लक्ष्मी सहित विष्णु स्वतन्त्र आनन्द भोग विलास करते हैं इसी भांति वारह वर्ष तक रघुनाथ जी स्वतन्त्र आनन्द युत भोग विलास कीन्हें ताकेपाछे कैकेयी द्वारा वनको जावा चाहते हैं तामें विघ्न करता जानि भरत को अनत पठावा चाहते हैं ताको कारण शिवजी कहत (कैकेयीभ्राताभरतमातुलःयुधाजित्नाम) केकयी के छोटे भाय भरत के मामा काश्मीर के राजा जिनको युधाजित नाम है ५४ ॥

भरतंनेतुमागच्छत्स्वराज्यंप्रीतिसंयुतः॥ प्रेषयामासभरतंराजास्नेहसमन्वितः॥
शत्रुघ्नंचापिसम्पूज्ययुधाजितमरिन्दमः ५५ ॥

(प्रीतिसंयुतःभरतंस्वराज्यंनेतुंआगच्छत्) प्रीति सहित भरतहि अपनी राज्य को लवायलय जाने हेतु अयोध्याजी को आये (स्नेहसमन्वितः राजाभरतंप्रेषयामास) युधाजित् के स्नेह सहित राजा दशरथ भरतहिं पठावते भये (अरिंदमःयुधाजित्सम्पूज्यचशत्रुघ्नंअपि) शत्रुन को नाश करन हारे राजा दशरथ जी युधाजित् को बड़ा सत्कार करि पुनः शत्रुहन को भी निश्चय करि पठाये अर्थात् काश्मीर के राजा केकय के पुत्र कैकेयी के भाय भरत के मामा युधाजित् तिनकी राज्य के समीप सवल दुष्ट वसते रहैं ते इनकी राज्य में बाधा करतेरहैं तिनके नाश करिवे हेत भरतजीको आदर सहित आपनी राज्य की लवाय लय जाने की इच्छा करि अयोध्याजी को आये महाराज ते आपनाहाल सुनाये प्रिय पत्नी के बन्धुहैं ताते शत्रुनाश कर्त्ता महाराज दशरथ प्रीति पूर्वक युधाजित् को बड़ा सत्कार कीन्हें पुनः शत्रुहन सहित भरत को पठाये ५५ ॥

कौशल्याशुशुभेदेवीरामेणसहसीतया॥ देवमातेवपौलोम्याशच्याशक्रेणशोभना ५६ ॥

(सीतयासहरामेणकौशल्यादेवीशुशुभे) सीता करिकै सहित रघुनन्दन करिकै कौशल्या देवी कौन भांति शोभा को प्राप्त हैं यथा (पौलोम्याशच्याशक्रेणदेवमाताइवशोभना) पुलोम की पुत्री शची करिकै सहित इन्द्र करिकै देवन की माता अदिति सम शोभित अर्थात् भरत के गये ते कैकेयी को पुत्र सुख समय मिटि गया तथा शत्रुहन के जाने ते सुमित्रा को आधा सुख गया भाव दुष्टन ते युद्ध हेत गये ताकी शंका है अरु जनकनन्दिनी सहित रघुनन्दन को स्वतन्त्र भोग विलास करते देखि कौशल्या कैसे आनन्द सहित शोभित हैं जैसे शची सहित इन्द्र को स्वतन्त्र भोग करते देखि अदिति आनन्द सहित शोभित होत ५६ ॥

साकेतेलोकनाथप्रथितगुणगणोलोकसंगीतकीर्त्तिः॥ श्रीरामःसीतयास्तेऽखिल

जननिकरानन्दसन्दोहमूर्त्तिः ॥ नित्यश्रीर्निर्विकारोनिरवधिविभवोनित्यमायानिराशोमायाकार्य्यानुसारीमनुजइवसदाभातिदेवोखिलेशः ५७ ॥

इतिश्रीअध्यात्मरामायणेबालकाण्डेसप्तमः सर्गः ७ समाप्तः ॥

(अखिलेशः देवः श्रीरामःसीतया) सब देवन के स्वामी स्वयं प्रकाशरूप श्रीरामचन्द्र सीता सहित (शाकेतेआस्तेसदामनुजइवभाति) अयोध्याजीमें विराजमान सदा मनुष्यकी नाईं प्रकाशमान हैं कैसे देवन के देव हैं (लोकनाथप्रथितगुणगणः) ब्रह्मादिक जे लोकनाथ हैं तिन विषे जिन के गुण समूह विदित हैं पुनः (लोकसंगीतकीर्तिः) सब लोकन में गाई जात है कीर्ति जिनकी पुनः (अखिलजननिकरानन्दसंदोहमूर्तिः) सम्पूर्ण मनुष्यन में जे हरिजनन के वृंद हैं तिनके हेत आनंद समूहदायक स्वरूप है जिनको पुनः (श्रीनित्यनिर्विकारः) पराशक्ति जिनकी नित्य एकरस है कामादि विकार रहित हैं (विभवःनिःअवधिनित्यमायानिराशः) जिनकी ऐश्वर्यकी हद्दनहींहै अरु मायाते निराश भाव अविद्याजिनको आवरण नहीं करिसकत (मायाकार्यानुसारी) मायाके कार्यो में अनुसरण करतेहैं अर्थात् शौर्य्य वीर्य तेजबलशक्ति क्षमा दया कृपाशील सुलभ उदारतादि समूह जिनके गुण लोकपालनमें प्रसिद्ध हैं भाव ब्रह्मा विष्णु शिवादि जिनके गुण गावते हैं पुनः स्तुति कीन्हे वा दानदीन्हे जो प्रशंसा होत ताको कीर्तिकही इत्यादि जिनकीकीर्ति सबलोक जनन करिके नित्य गाई जाती है पुनः सब मनुष्यन में जे जन रामसनेहिनके वृंद हैं तिनके हेत समूह आनंद देन हारा जिनको स्वरूप है पुनः श्री जिनकी शोभा वा पराशक्ति नित्य एकरसहै पुनः कामादि वा रजतमादि विकार रहित हैं पुनः जिनकी ऐश्वर्यकी हद्दनहीं है अरु अविद्या माया जिनमें आवरण नहीं करिसकत अरु मायाके कार्यन में आपनी सत्ता प्रवेश किहे रहत ताहीते लोकरचनादि सब व्यापार होताहै ऐसे सब ईश्वरन के ईश्वर स्वयं प्रकाश रूप श्रीरघुनन्दन जनकनंदिनी सहित अयोध्या जी में बिराजमान सदा मनुष्यों की नाईं प्रतापवंत प्रकाशमान हैं ५७ ॥

(पद) मैं बलिहारि सीयवर हेरी । सुंदर सुभग सुढँग श्यामरँग अंग अनंग वारनेगेरी ॥ माथे पुरट किरीट जटित मणि कुण्डल मण्डि गंड थल नेरी । मुक्ताधर मुखचन्द कुटिल भ्रूचाप नयन शरमैन गहेरी ॥ अँगुली यक पँहुची वलयांगद कंठा वलि कुंजर मणिकेरी । कंचन हीरपदिक पन्नन-मय कटि पटपीत किंकिणी घेरी ॥ चितवनि चलनि हसनि बोलन छवि प्रेमउमँगि सरिधार बहेरी । धीरज धर्मकानि कुल समुझानि लोकलाज तरु मूलढहेरी ॥ कलगत हीय विकलद्दउ लोचन मोचत वारि निमेषन फेरी । बैजनाथ मिलिहौं रघुनाथहि विरह ज्वाल नहिंजात सहेरी ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतबैजनाथविरचिते अध्यात्मभूषणेबालकाण्डेसप्तमःप्रकाशः७समाप्तः ॥

अध्यात्मरामायण अयोध्याकाण्ड सटीक ॥

श्रीमहादेवउवाच ॥ एकदासुखमासीनंरामंस्वांतःपुराजिरे ॥ सर्वाभरणसम्पन्नं रत्नसिंहासनेस्थितम् १ नीलोत्पलदलश्यामंकौस्तुभामुक्तकंधरं॥ सीतयारत्नदंडेन चामरेणाथवीजितम् २ ॥

श्रीजानकीबल्लभोजयति ॥ दो० ॥ उर धरि सीतानाथ पद सुमिरि गुरूके पांय। तिलक अयोध्याकाण्ड को कहौं यथा मतिगाय ॥ सवैया ॥ सुर साधु धराहित नारद आय जहां सियसाप्रभु बैठि रहे। गुण गाय बिनय सुख पाय पुनः बिधि प्रेरितहाल सबै सु कहे ॥ प्रभु धीर्य दिये न विलम्ब अबै सुनि लौटि चले दिवि मार्ग गहे। पद बन्दत बैजसुनाथ सदा सिय सानुज जो बन जान चहे ॥ (एकदारामंस्वअन्तःपुरअजिरेसुखंआसीनं) एक समय में रघुनाथजी अपने मन्दिर के आंगन में सुख पूर्वक बैठे रहैं कौन भांति (सर्वआभरणसम्पन्नं) सब प्रकार के भूषण बसन धारण किहे (रत्न सिंहासनेस्थितं) रत्न जटित सिंहासन पर बैठे हैं अर्थात् विवाह भये पीछे बारह वर्ष तक परम आनन्द भोग में रहे अब बन जाने को समय आयो सो कारण शिवजी कहत कि एक समयमें श्री रघुनाथजी किरीट कुण्डल माल केयूर मुद्रिकादि भूषण बसन धारण किहे अपने मन्दिर के आंगनमें रत्न सिंहासन पर सुख पूर्वक बैठे रहे १ (नीलउत्पलदलश्यामं) नील कमल दल सम श्याम तन (कौस्तुभामुक्तकंधरं) कौस्तुभ मणि मुक्ता गले में धारण किहे (अथ रत्नदंडेनचामरेणसीतयावीजितं) अरु रत्न जटित दंड है जामें ऐसा चामर जानकीजी करिकै हांका जात है अर्थात् नील कमल फूल के दलसम सचिक्कन कोमल सुगन्धित सुन्दर श्यामतन अरु कौस्तुभ मणि तथा गजमुक्तन को कंठा ग्रीवा में शोभित अरु कञ्चन सों रचित हीरा नीलक आदि अनेक रत्न जटित दंड जामें ऐसा चामर हाथ में लिहे श्रीजानकी जी प्रभु के हांकि रही हैं २ ॥

विनोदयंतंतांबूलचर्बणादिभिरादरात् ॥ नारदोऽवतरद्द्रष्टुमंबराद्यत्रराघवः ३ शुद्धस्फटिकसंकाशःशरच्चंद्रइवामलः ॥ अतर्कितमुपायातोनारदोदिव्यदर्शनः ४ तंदृष्ट्वासहसोत्थायरामःप्रीत्याकृतांजलिः ॥ ननामशिरसाभूमौसीतयासहभक्तिमान् ५ ॥

(तांबूल चर्वणादिभिः आदरात् विनोदयन्तं) पुनः जानकीजी पानखवावनादि सेवासाज करिकै आदरते श्रीरघुनाथजीको अनेक आनंददै रही हैं ताहिसमय (द्रष्टुंराघवः यत्रनारदः अंबरात् अवतरत्) दर्शन करिबे हेत रघुनाथजी जहांरहैं तहँनारद आकाशते उतरतभये भाव संसारी व्यवहार छुड़ाय वनको पठावेकी कलामें प्रवीन जानि ब्रह्माने नारदैको पठाये पुनः प्रभुके दर्शनकी अभिलाप है ताते हर्ष सहित आकाश मार्गआय नारद तहँ उतरे जहाँ रघुनाथजी बैठेरहैं ३ (स्फटिक संकाशः शुद्धःशरत् चंद्रइव अमलः) स्फटिक मणिकी उपमादेवे योग्य शुद्ध हृदयहै जिनको शरदऋतुके

चंद्रमा समअमल तनहैंजिनको ऐसे (दिव्य दर्शनः नारदः अतर्कितं उपायातः) दिव्यदर्शन नारदसहसा समीप आयगये यथा अतर्कितंतु सहसास्यात् इत्यमरः ४ (तं दृष्ट्वा भक्तिमान् रामः सीतयासहसहसा उत्थाय) तिन नारदहि देखि भक्तिवंत जो श्रीरघुनाथजी सीता सहित तुरतही उठे (प्रीत्या कृतांजलिः शिरसा भूमौ ननाम) प्रीतिकरिकै हाथ जोरि शीशभूमिमें धरिकै प्रणाम कीन्हें अर्थात् कामादि विकार रहित कैसाशुद्ध हृदयहै जैसे स्फटिकमणि तथा विषय मलरहित शरीर कैसा अमल है जैसे शरदपूर्ण चंद्रमा ऐसे दिव्य दर्शन नारद सहसाआये तिनहिं देखि भक्तिमान् भाव भक्तनपर प्रीतिहै जिनकेऐसे रघुनन्दन जनकनन्दनी सहित शीघ्रही आसनते उठिप्रीति करिकै हाथजोरिभूमि में शीशधरि नारदजी के अर्थ प्रणाम कीन्हें भाव भक्ति को प्रभाव दर्शाये वा ऐश्वर्य छपाये ५ ॥

उवाचनारदंरामःप्रीत्यापरमयायुतः ॥ संसारिणांमुनिश्रेष्ठदुर्लभंतवदर्शनं ६ अस्माकंविषयासक्तचेतसांनितरांमुने॥अवाप्तंमेपूर्वजन्मकृतपुण्यमहोदयैः ७ संसारिणाऽपिहिमुनेलभ्यतेसत्समागमः॥अतस्त्वद्दर्शनादेवकृतार्थोऽस्मिमुनीश्वर ८॥

(परमया प्रीत्यायुतः रामः नारदं उवाच) परम प्रीतिसहित रघुनाथजी नारद प्रति बोलतेभये (मुनिश्रेष्ठ तवदर्शन संसारिणां दुर्लभम्) मुनिनमें श्रेष्ठ हेनारद आपके दर्शन संसारी मनुष्योंको दुर्लभहै ६ (अस्माकं चेतसां नितरां विषयासक्त मुने अवाप्तम्) हमलोगन के चित्त नित्यही विषयमें आसक्तहैं तिनको हेमुने जो आपके दर्शन प्राप्तभये तो (मे पूर्वजन्मकृत महापुण्य उदयैः) मेरे पूर्व जन्मकी कीन्ही महापुण्य उदय भई त्यहिकरिकै दर्शनभया अर्थात् आसनपर बैठारि परमप्रीति सहित रघुनाथ जी नारद प्रतिबोले कि हेमुनिवर नारद आपलोगनके दर्शन संसारी मनुष्यों को दुःखोंकरि नहींलाभ होतीहै जिनके चित्त नित्यही विषयमें आसक्त ऐसे हम लोगनको हेमुनि जो आपके दर्शन प्राप्तभये तौमेरे पूर्वजन्मकी कीन्ही महापुण्य उदयभई ताहीकरिकै आपदर्शन दिया ७ (मुने संसारिणा अपिहि सत्समागमः लभ्यते) हेमुने संसारी मनुष्योंको जब निश्चय करिकै पूर्वकी पुण्य उदय होतीहै तबहीं महात्मन को समागम लाभ होताहै (अतः हेमुनीश्वर त्वत् दर्शनात् एव कृतार्थोस्मि) इसकारणते हेमुनीश नारद आपके दर्शन पायेते मैं कृतार्थ भयो ८ ॥

किंकार्यंतेमयाकार्यंब्रूहितत्करवाणिभो ॥ अथतन्नारदोऽप्याहराघवंभक्तवत्सलम् ९ किंमोहयसिमांरामवाक्यैर्लोकानुसारिभिः ॥ संसार्यहमितिप्रोक्तंसत्यमेतत्त्वयाविभो १० जगतामादिभूतायासामायागृहिणीतव ॥त्वत्सन्निकर्षाज्जायंते तस्यांब्रह्मादय प्रजाः ११ त्वदाश्रयातदाभातिमायायात्रिगुणात्मिका॥ सूतेऽजस्रंशुक्लकृष्णलोहिताःसर्वदाप्रजाः १२॥

(भोमुने ब्रूहिते किंकार्यं तत्कार्यंमयाकरवाणि) हे मुने कहिये आपको क्याकार्य्यहै तौनकार्य हमकरिकै कियाजाय अर्थात् रघुनाथजी कहत किसंसारी जनकी जब निश्चय पूर्वकी पुण्य उदय होती है तबै महात्मों को समागम होता है ताते आपके दर्शन पाय मैं तो कृतार्थ भयो हे मुनि आप किस कार्य हेत आयेहै सो कहिये त्यहि कार्यको मैं शीघ्रही करौं इत्यादि प्रभुके वचनसुनि (अथभक्तवत्सलराघवंनारदःअपिआह) अबभक्तवत्सल रघुनंदनप्रति नारद निश्चयकरिबोले ९ (रामलोकेअनुसारिभिःवाक्यैःमांकिंमोहयसि) हेरघुनंदन संसारी मनुष्यों की ऐसी वाक्यन करिकै

मोकोक्यों मोहित करतेहौ (हेविभोसंसारीअहंइतित्वयाप्रोक्तंएतत्सत्यं)हे समर्थप्रभु संसारी मनुष्य हमहैं इत्यादि जो आपने कहा येवचन सत्यहैं १० (जगतांआदिभूतायामायासातवगृहिणी) जगत् की आदि कारण भूतजो माया सो आपकी घरणी है (त्वत्सन्निकर्षात्तस्यांब्रह्मादयःप्रजाजायंते) आपके समीप वासहोनेते त्यहि माया विषेते ब्रह्मादिक पुत्र उत्पन्नहोते हैं ११ त्वत्आश्रयातदामाया त्रिगुणात्मिकाभाति)आपके आश्रयभये तबमाया सत्त्वरजतमइति त्रिगुणात्मक प्रकाशमान होती है (शुक्लकृष्णलोहिताः प्रजाःसर्वदाअजस्रंसूते) उज्ज्वलकरियालालिपुत्र सबकालमें नित्यहीं उपजावती है अर्थात् प्राकृत मनुष्यवत् प्रभु के वचन सुनि मोहवशहोनेकी भयमानि कछुनकहिसके तब भक्तवत्सलविचारि धैर्यकरि रघुनंदन प्रतिनारद निश्चयकरि बोले कि हे रघुनंदन संसारी विषयासक्तमनुष्यों की ऐसी वार्ताकरिकै मोको क्यों मोहित करतेहौ पुनः हेसमर्थ प्रभु अपनाको जो कहेउ कि हम संसारी मनुष्य हैं येभी आपके वचन सत्यहैं कौन भांति सो सुनिये जगत्की आदि कारण भूतजो मायाहै सो आपकी घरणी है सो आपके समीप वासहोनेते त्यहि मायाविषे ब्रह्मा विष्णु शिवादि पुत्र उत्पन्नहोतेहैं कौन भांति कि आपके आश्रय समीप ताते मायासत्त्व रजतम इतित्रिगुणात्मक प्रकाशमान होतीहै ताकारण ते श्वेत अरुण श्यामरंग के पुत्र सब कालमें नित्यहीं उपजावती हैं भावजो सतोगुणी मायाहै सो श्वेत है त्यहि में जो जीव उत्पन्न होतेहैं ते शुक्लवर्ण सतो गुणी होतेहैं यथा दो०शांतचित्तबुधिविमलमन सकलवस्तुकोज्ञान । निर्वासिकसत्कर्मजो तवैसतोगुणजान॥ तथा रजोगुणी माया अरुण है त्यहि ते उत्पन्न जीव अरुण वर्ण रजोगुणी होते हैं यथा दो० लोभीचितबुद्धिकामलय ज्ञानसहितअज्ञान । विषयीमनतनकर्मसुख सोराजसगुणजान ।। तथा तमोगुणी माया श्याम है ताते उत्पन्न जीव श्यामवर्ण तमोगुणी होते हैं यथा दो० तिच्छण चित्तकठोरबुधि मनक्रोधीअज्ञान। अहंकारमयकर्मरत सोतामसगुणजान ॥ तिन गुणनके मिलानते अनेक भांतिके स्वभाव वाले जीव होते जाते हैं १२ ॥

लोकत्रयमहागेहेगृहस्थस्त्वमुदाहृतः ॥ त्वंविष्णुर्जानकीलक्ष्मीःशिवस्त्वंजानकीशिवा १३ ब्रह्मात्वंजानकीवाणीसूर्यस्त्वंजानकीप्रभा ॥ भवान्शशांकःसीतातुरोहिणीशुभलक्षणा १४ शक्रस्त्वमेवपौलोमीसीतास्वाहानलोभवान् ॥ यमस्त्वंकालरूपश्चसीतासंयमनीप्रभो १५॥

(त्रयलोकमहागेहेत्वंगृहस्थः उदाहृतः)तीनिहूंलोक भावब्रह्माण्डमंडलसोईमहामंदिरहैतामेंआपगृहस्थ सर्वत्रपरिपूर्णवासकिहेहौ (त्वंविष्णुःजानकीलक्ष्मीःत्वंशिवःजानकीशिवा)हेरघुनंदनआपविष्णुहौ तथा जानकीलक्ष्मीहैं आपशिवहौ जानकीपार्वती हैं१३(त्वंब्रह्माजानकीवाणीत्वंसूर्यःजानकीप्रभा)आप ब्रह्माहौ जानकीसरस्वतीहैं आपसूर्यहौ जानकी प्रभाहैं (भवान्शशांकःतुसीताशुभलक्षणारोहिणी) आप चंद्रमाहौपुनः सीता शुभलक्षण युतरोहिणीहैं १४ (त्वंएवशक्रःसीतापौलोमीभवान्अनलः सीतास्वाहा) आपनिश्चय करि इंद्रहौ सीता इंद्राणीहैं आपअग्निहौ सीता स्वाहा हैं (त्वंकालरूपःयमःप्रभोचसीतासंयमनी)हे प्रभुआपकाल रूपयमराजहौ पुनः सीतासंयमनीहैं १५ ॥

निर्ऋतिस्त्वंजगन्नाथतामसीजानकीशुभा ॥ रामत्वमेववरुणोभार्गवीजानकीशुभा १६ वायुस्त्वंरामसीतातुसदागतिरितीरिता ॥ कुबेरस्त्वंरामसीतासर्वसम्पत्

प्रकीर्तिता १७ रुद्राणीजानकीप्रोक्तारुद्रस्त्वंलोकनाशकृत् ॥ लोकेस्त्रीवाचकं यावत्तत्सर्वंजानकीशुभा १८ पुन्नामवाचकंयावत्तत्सर्वंत्वंहिराघव ॥ तस्माल्लोक त्रयेदेवयुवाभ्यांनास्तिकिञ्चन १९ ॥

(जगन्नाथत्वंनिर्ऋतिःजानकीशुभातामसी) हे जगन्नाथ आप निर्ऋति अर्थात् नैर्ऋत्यके दिग्पाल हौ तथा जानकी मंगल रूप तामसी हैं (रामत्वंएववरुणःजानकीशुभाभार्गवी) हे रघुनाथजी आप निश्चय करि वरुण हैं जानकी मंगलरूप भार्गवी हैं १६ (रामत्वंवायुःतुसीतासदागतिःइतिईरिता) हे रघुनन्दन आप पवन हौ पुनः सीता सदागति प्रेरण करनहारी हैं (रामत्वंकुवेरः सीतासर्वसम्पत्प्रकीर्तिता) हे रघुनन्दन आप कुवेर हौ सीता सर्व सम्पत्ति रूपहैं १७ (त्वंलोकनाशकृत्रुद्रः जानकीरुद्राणीप्रोक्ता) आप लोक नाशकर्त्ता रुद्र हौ जानकी रुद्राणी कहने योग्य हैं (स्त्रीवाचकंयावत् लोके) केवल देवीमात्र नहीं स्त्रीवाचक यावत् देहधारी संसार में हैं (तत्सर्वंजानकीशुभा) तिन सबको जानकी मंगलरूप जाना चाहिये १८ (यावत्पुन्नामवाचकंतत्सर्वंराघवत्वंहि) जहां तकपुरुप वाचक नाम हैं तौन सब हे रघुनाथजी आपही निश्चय करिकै हौ (तस्मात्देवलोकत्रये युवाभ्यां नास्तिकिंचन) ताते हे देवलोक तीनिहूं विपे आप दोउन करिकै विना कोई वस्तु नहीं है अर्थात् लक्ष्मी पार्वती सरस्वती प्रभा रोहिणी शची संयमनी तामसी भार्गवी सदागति सर्व सम्पत्ति रुद्राणी इत्यादि भूतमात्रमें स्त्री वाचक यावत् नाम हैं ते सब जानकीजी हैं तथा विष्णु ब्रह्मा शिव इंद्रादि यावत् पुरुप वाचक नाम हैं ते सब हे रघुनाथजी निश्चय करिकै आपही हौ ताते हे देव रघुनाथजी आप परब्रह्म जानकी आदि शक्ति दोऊ मिलि सब लोक रचना है आप दोऊ विना तीनिहूं लोकनमें कुछ भी वस्तु नहीं है १९ ॥

त्वदाभासोदिताज्ञानमव्याकृतमितीर्यते ॥ तस्मान्महांस्ततःसूक्ष्मलिंगंसर्वात्मकं ततः २० अहङ्कारश्चवुद्धिश्चपंचप्राणेन्द्रियाणिच ॥ लिंगमित्युच्यतेप्राज्ञैर्जन्म मृत्युसुखादिमत् २१ सएवजीवसंज्ञश्चलोकेभातिजगन्मयः ॥ अवाच्यानाद्यवि द्यैवकारणोपाधिरुच्यते २२ ॥

(त्वत्आभासउदितअज्ञानंअव्याकृतंइतिईर्यते) आपकी आभास जो प्रतिविम्व सो आदि माया में उदित है सोई अज्ञान अव्याकृत अर्थात् नाम रूप इत्यादि कहाया (तस्मात्महांस्ततः सूक्ष्मलिंगंततः सर्वात्मकं) तिहिते महातत्त्व भया तदनन्तर सूक्ष्म शरीर भया तदनन्तर सर्व देहाभिमानी आत्मा भया २० (अहंकारःचवुद्धिः चपञ्चप्राणचइंद्रियाणि) अहंकार पुनः वुद्धि पुनः पाँचौ प्राण पुनः दश इंद्रिय (जन्ममृत्युसुखादिमत् इतिलिंगंप्राज्ञैःउच्यते) जन्म होना मरना सुख दुःख भोग इत्यादि युत यही लिंग शरीर वुद्धिमानों करिकै कहा जाता है २१ (सएवजीवसंज्ञःजगत्मयःच लोकेभाति) सोई निश्चय करिकै जीव संज्ञक है जो जगत्मयी है पुनः लोक में प्रकाशमान है (अवाच्यिअनादिअविद्याएवउपाधिःकारणउच्यते) जाकी गति कहते नहीं वनत ऐसी अनादि अविद्या माया निश्चय करिकै चैतन्य में उपाधि कारण कही जात अर्थात् जो पूर्व कहिआये कि राम जानकी सिवाय जग में तीसरा कुछ नहीं है सोई जगको कारण नारद कहत हैं रघुनाथजी आप के समीप आदि माया प्राप्त भई तामें जब आपकी आभास प्रभा परी सोई प्रतिविम्व उदय भई सो अज्ञान अव्याकृत नामरूप संज्ञकभई भाव आपकी आभास सोई नित्य चैतन्य आत्मा है सो जड़

मायामें मिलेते अज्ञान भई अरु जड़ माया चैतन्य आत्मामेंमिले चैतन्यह्वैगई इति जड़चैतन्यमिलि ताही ते महातत्त्व भया सोईकारण शरीरहै तामें जब बुद्धी भई त्रिगुणात्मअहंकारते सूक्ष्म इंद्री विषय भईताते सूक्ष्मशरीरभया तब अज्ञान ते सब देहनमें आत्मा देहाभिमानी भययथा अहंकारबुद्धि अरु प्राण अपान उदान समान व्यानइति पांचौप्राण अरु पांचौ तत्त्व मिले दशइन्द्री भई यथा आकाशते मुख अरु श्रवण बायूते बाहु अरु त्वचा अग्नि ते पदअरुनेत्र जल ते लिंग अरु रसना पृथ्वीते गुदा अरु नासिका इति दशेंद्री अहंकार बुद्धि पंचप्राणै सहित लिंगशरीर भया जोजन्ममरण सुख दुःखादिको भोग करताहै ऐसेविद्वानोंने कहाहै भाव मैं देवताहौं मैं ब्राह्मणहौं मैं राजाहौं यही अभिमानहै पुनः जपयज्ञ तपत्यागअध्ययन मैं करिसक्ताहौं यहीबुद्धिहै देहमें जोपवन श्वासादितेप्राणनपरअपनपौराखनापुनः शब्द स्पर्शरूप रस गंध मैथुनादि बिषयन में इंद्री आसक्त राखना इत्यादि आत्मामें देहाभिमानहै पुनः धरणी धनधामस्त्री पुत्रपरिवारादिसब मेरा है अरु मैं इनकी आधारहौं इत्यादि जगत्मयी प्रभाव जो लोकमेंप्रकाशितहै सोई निश्चय करिकै जीवसंज्ञकहै काहेते जाकी गतिकोऊ कहिनहीं सक्ता ऐसी अबाच्य जो अनादि कालते अविद्या माया कारणहै त्यहि करिकै दशइंद्री पंच प्राणअहंकार बुद्धि इति सत्रहतत्त्व को जो लिंग अर्थात् सूक्ष्म शरीरहै सोई आत्मामें उपाधिहै २२ ॥

स्थूलंसूक्ष्मंकारणाख्यमुपाधित्रितयंचितेः ॥ एतैर्विशिष्टोजीवःस्याद्वियुक्तःपरमेश्वरः २३ ॥

लोभमदमान कामक्रोध इति आकाशकी प्रकृतीहै धावन चलन सकोरण पसारण उत्क्रमण बायूकी है निद्राकांति क्षुधा आलस जृंभा अग्निकी तथा रक्त पसीना वीजलार जलकी अस्थिमांस त्वचा नाड़ीरोमा पृथ्वीकी प्रकृती इतिपचीसप्रकृतिन सहितपांचौतत्त्व देवता विषयिन सहित दशौ इंद्रीपंच प्राणपाँचौकोश मनचित बुद्धि अहंकारादि अंतःकरण सहित जीवात्मा विश्वाभिमानी जाग्रत्अवस्था वैखरी बाणीइति स्थूल शरीरतथा पूर्वकहिआये सत्रहतत्त्वकोसूक्ष्म शरीर चैतनमें जोमाया मिलीसो कारणये तीनिहूशरीरचैतन्य आत्मामें उपाधिहैं इनकरिकै युक्तरहेजीवहैं इनते भिन्नपरमेश्वरहै २३॥

जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्याख्यासंसृतिर्याप्रवर्तते ॥ तस्याविलक्षणःसाक्षीचिन्मात्रस्त्वंरघूत्तम २४ त्वत्तएवजगज्जातंत्वयिसर्वंप्रतिष्ठितम् ॥ त्वय्येवलीयतेकृत्स्नंतस्मात्त्वं सर्वकारणम् २५ ॥

(संसृतिःप्रवर्ततेयाजाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिआख्या) संसार को बढ़ावने वाली जो जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति प्रसिद्ध तीनिहू अवस्था हैं (तस्याविलक्षणःसाक्षीरघूत्तमःत्वंचिन्मात्रः) तिनके बिलक्षण साक्षी हे रघुनाथजी आप चैतन्यमात्र हौ जाग्रत् अवस्था यथा तत्त्वबोध प्रकरणे ॥ श्रोत्रादि ज्ञानेंद्रियैः शब्दादि बिषयै र्ज्ञायते इति जाग्रदवस्था स्थूल शरीराभिमानी विश्वात्मा उच्यते स्वप्न यथाजाग्रद वस्थायां यद्दृष्टं यच्छ्रुतंच तत्तज्जनितवासनया निद्रा समये यः प्रपंचः प्रतीयते सा स्वप्नावस्था सूक्ष्म शरीराभिमानी तैजसात्माउच्यते सुषुप्ति अवस्था यथा अहं किमपि न जानामि सुखेन मया निद्रा अनुभूयते इति कारण शरीराभिमानी आत्मा प्राज्ञ इत्युच्यते सोई नारद कहत हे रघुनाथजी संसार को बढ़ावने वाली तीनिहूं शरीरन में जो तीनिहू अवस्था हैं तिनके विलक्षण यथा हेतु शून्य त्वास्या बिलक्षणामत्यमरः अर्थात् कारण रहित स्वयं स्थितहौ इति विलक्षण साक्षी भाव तीनिहू अवस्थन की सब बात नीकी भांति जानने वाले आपहौ २४(त्वत्तएवजगत्जातं) आपहीते निश्चय

करिकै सब संसार उत्पन्न भया (त्वयिसर्वंप्रतिष्ठितम्) आपही विषे सब स्थित है (त्वयिएवकृत्स्नं लीयते) आपही विषे निश्चय करि संपूर्ण लय होता है (तस्मात्सर्वकारणंत्वं) तिहिते सबके आदि कारण आपही हौ अर्थात् नारद कहत हेरघुनाथजी माया मिलि सब जगत् आपहीते उत्पन्न भया आपही में स्थित है पुनः अंतमें संपूर्ण चराचर आपहीमें लीन ह्वै जाता है इत्यादि में जानकी अरु आपकी सिवाय तीसरा नहीं है ताते संसार के आदि कारण आपही हौ २५ ॥

रज्जावहिमिवात्मानंजीवंज्ञात्वाभयंभवेत् ॥ परात्माहमितिज्ञात्वाभयदुःखैर्विमुच्यते २६ चिन्मात्रज्योतिषासर्वाःसर्वदेहेषुबुद्धयः॥त्वयायस्मात्प्रकाश्यंतेसर्वस्यात्मा ततोभवान् २७ ॥

(रज्जौअहिंइव) रसरी विषे सर्पकी समान (आत्मानंजीवंज्ञात्वाभयंभवेत्) आत्मामें जीवत्व जानना ताही ते भय होती है (अहपरात्माइतिज्ञात्वा भयदुःखैःविमुच्यते) हम परात्माहैं इत्यादि जाने तो भय दुःख करिकै छूटिजाय अर्थात् जैसे अँधेरेमें रसरी देखि सर्प मानि डराताहै बिनाजाने भ्रममात्र डर है तथा अँधेरे में सर्प है रसरी जानि गहि लिये उसने काटि खाया मरि गये सो भी बिना यथार्थ ज्ञानहानि भई तैसेही मोहरूप अन्धकारमें रसरी सम झूठी देहताहीको आत्मा सम सत्यमानि तन धन धाम स्त्री पुत्रादिकी हानि रूप अनेकभयमाने हैं सो विनाज्ञान भ्रममात्र भय है तथा मोह रूप अन्धकार में विषय रूप बिष भरा संसार रूप सर्प है सोऊ आत्मा में जीव बुद्धी राखे ते दुःखद को सुखद मानि ग्रहण करि जीव नाश भया इत्यादि आत्मा में जीवत्व मानि भय होती है भाव जीवबना विषयन वशदेह सुख हेतशुभाशुभ अनेक कर्म करत ताकोफल अनेक योनिन में दुखसुख भोगत अरुजब जानै कि मैं परात्म हौं भावनिर्वासिक तपादिक करि पूर्वपापनको नशाय शमदमादि करिइंद्री मनादिस्वाधीन करि विवेकते देहव्यवहार मिथ्यात्यागि सत्य आत्मरूपके अनुभव आनंद में अखंडसमाधि लगाये रहै तबभय दुःखनतेछूटि मुक्तहोय२६ (सर्वदेहेषुसर्वाःबुद्धयःचिन्मात्रज्योतिषा) सबदेहन विषे सबबुद्धिकी वृत्तीचैतन्यमात्र करिकै प्रकाशितहैं (त्वयायस्मात्प्रकाश्यंतेततोभवान्सर्वस्यआत्मा) आपही करिकै जाते सबप्रकाशमानहैं ताते सबकी आत्मा आपहीहौ अर्थात् सबदेहन में इंद्रीद्वारा बुद्धि की वृत्ति चैतन्य रूप आपही करिकै प्रकाशित है ताते अन्तर्यामी सबके आत्मा आपही हौ २७ ॥

अज्ञानान्न्यस्यतेसर्वंत्वयिरज्जौभुजंगवत् ॥ त्वज्ज्ञानाल्लीयतेसर्वंतस्माज्ज्ञानंसदाभ्यसेत् २८ त्वत्पादभक्तियुक्तानांविज्ञानंभवतिक्रमात् ॥ तस्मात्त्वद्भक्तियुक्तायेमुक्तिभाजस्तएवहि २९ अहंत्वद्भक्तभक्तानांतद्भक्तानांचकिंकरः ॥ अतोमामनुगृह्णीष्वमोहयस्वनमांप्रभो ३० ॥

(अज्ञानात्रज्जौसर्पवत् त्वयिसर्वंन्यस्यते) अज्ञान ते यथा रसरी में सर्प तैसेहीआप विषे सब संसार आरोपण किया जाता है ताते भवबन्धन है (त्वत्ज्ञानात्सर्वंलीयते तस्मात्सदाज्ञानंअभ्यसेत्) आप के रूपको यथार्थ ज्ञान भयेते सब आपही में लीन होत ताते सदा ज्ञानको अभ्यास करना चाहिये अर्थात् नारद कहत हेरघुनाथजी यथा अँधेरे में झूठी रसरी को सांचा सांप मानि भय करतेहैं तथा यहां अज्ञानते झूठे लोक व्यवहार को ईश्वरवत् सांचुमानि भव बन्धन में परतेहैं अरु जब ज्ञान ते लोक व्यवहार झूठा मानि त्याग करि आप को रूप यथार्थ जानि, ताहीमें प्रीति

करै तो आपही में लीन होय ताते ज्ञान उत्पन्न होने की उपाय में नित्यही लागना चाहिये २८ (त्वत्पादभक्ति युक्तानांक्रमात् विज्ञानं भवति) आपके पांयन की भक्ति सहित जे हैं तिनके धीरा धीरा विज्ञान होता है (तस्मात्येत्वत्भक्तियुक्तातेएवहिमुक्तिभाजः) ताते जेजन आपकी श्रवणादि भक्ति सहित हैं तेई निश्चय करि मुक्तिके भागी हैं २९ (त्वत्भक्तभक्तानां चभुक्तानां अहंकिंकरः) आपके भक्तनके भक्तनके पुनः जेभक्तहैं तिनके हमसेवकहैं(अतःप्रभोमांअनुगृहणीष्वमांमोहयस्वन) इसकारण हेप्रभो मोपर अनुग्रहकरौ मोहिंमोहितनकरौ अर्थात् नारदकहत हेरघुनाथजी श्रवणकीर्तन स्मरण अर्चन वंदन सेवन दास्यतादि जो आपकी नवधाभक्ति है तिनको जे जन करते हैं ज्यों ज्यों त्योंत्यों उरमें विज्ञान बढ़ताजाताहै ताते जे आपकी श्रवणादिभक्तिमे लगेहैं तेई निश्चयकरिकै मुक्त होते हैं अरु आपके जे भक्तहैं तिनके भक्तनके भक्तनको मैं सेवकहौं ऐसाजानि हे प्रभो मोपर अनुग्रह सदा दयाराखौ मोको मोहित न करौ यहनीचानुसंधान है ३० ॥

त्वन्नाभिकमलोत्पन्नोब्रह्मामेजनकःप्रभो ॥ अतस्तवाहंपौत्रोस्मिभक्तंमांपाहिराघव ३१ इत्युक्त्वाबहुशोनत्वास्वानंदाश्रुपरिप्लुतः ॥उवाचवचनंरामब्रह्मणानोदितोऽस्म्यहम् ३२ रावणस्यवधार्थायजातोसिरघुसत्तम॥इदानींराज्यरक्षार्थंपितात्वामभिषेक्ष्यति ३३ ॥

(प्रभोत्वत्नाभिकमलब्रह्माउत्पन्नःमेजनकः) हे प्रभोआपकी नाभी कमलते ब्रह्मा उत्पन्न भये सो हमारे पिता हैं (अतःतवपौत्रोस्मिअहंभक्तंराघवमांपाहि) याते आपको पौत्रमैं सेवकहौं हे रघुनंदन मेरीरक्षाकरौ ३१ (इतिउक्त्वास्वआनंद अश्रुपरि प्लुतःबहुशोनत्वा वचनंउवाच) ऐसाकहि आपने आनंद आंशुबहावत बहुत प्रणामकरि वचनबोले (हेरामब्रह्मणानोदितोऽस्म्यहम्)हेरघुनंदन ब्रह्माने पठावाहै मोको अर्थात् नारद कहत हेप्रभु मेरे पिता ब्रह्मा आपकी नाभी कमलते उत्पन्न भये तौ मैं आपको पौत्रसेवकहौंतातेहेरघुनाथजी मेरी रक्षाकरौऐसाकहिप्रेमानंद उमँगिआंशुबहावत वारंवार प्रणामकरिपुनः वचन बोले हेरघुनाथजी आपके पासको ब्रह्माने मो को पठावाहै सो हाल सुनिये ३२ (हेरघुसत्तमरावणस्यवधार्थायजातोसि) हेरघुबंश में उत्तम आपतौ रावणके बधकरने हेत अवतीर्ण भयो है (इदानींपिताराज्यरक्षणार्थंत्वअभिषेक्ष्यति) यहि समय में तुम्हारे पिता राज्य के रक्षाकरिबेहेत तुम्हारा अभिषेक किया चाहते हैं अर्थात् नारद कहत कि हे रघुबंश शिरोमणि ब्रह्माने इस हेत पठावा है कि आपतौ रावण के नाश करिबे हेत भूतल में अवतीर्ण भयो अरु या समयमें आप के पिता आपनी राज्य के रक्षा करने हेत आपही को राज्याभिषेक किया चाहते हैं तिसमें आपकी क्याइच्छा है ३३ ॥

यदिराज्याभिसंसक्तोरावणंनहनिष्यसि ॥ प्रतिज्ञातेकृतारामभूभारहरणायवै ३४ तत्सत्यंकुरुराजेंद्रसत्यसंधस्त्वमेवहि ॥ श्रुत्वैतद्गदितंरामोनारदंप्राहसस्मितम् ३५ शृणुनारदमेकिंचिद्विद्यतेऽविदितंक्वचित् ॥ प्रतिज्ञातंचयत्पूर्वंकरिष्येतन्नसंशयः ३६ ॥

(यदिराज्यअभिसंसक्तो) जो कदाचित्राज्यमें आसक्त भये अरु (रावणंहनिष्यसिन) रावण को नाशनकरिहेउ (रामतेभूभारहरणाय वैप्रतिज्ञाकृता) हे रघुनाथजी आपभूमिको भार हरिवे अर्थ निश्चय प्रतिज्ञा किया है ३४ (तत्सत्यंकुरुराजेन्द्र त्वंसत्य संधःएवहि) ताको सत्यकरौ हेराजेन्द्रे आप

सत्यसंधनिश्चय करिकै हौ (एतत्गादितंश्रुत्वारामःसास्मितंनारदंप्राह) यहमुनिकी कहासुनि रघुनाथजी मुसुकाय नारद प्रतिबोले ३५ (नारदश्शृणुकिंचित्विद्यतेमेक्वचित्अविदितं) हेनारद सुनियेकुछ सुधिहै मोकोअरुकछु भूलि गया ऐसा ब्रह्माविचारितुम्हे पठाये सोनहीं(पूर्वंयत्प्रतिज्ञातंचतत्करिष्ये संशयःन) पूर्वजो प्रतिज्ञाहै ताहींविधि सवकार्य करिहौ तामें संशयनहींहै अर्थात् नारदकहत हे रघुनाथ जी जो पितु आज्ञाते राज्याभिषेकग्रहण करिराज काज में परिभूलिगये अरुरावण को पूर्व ही न मारे तौ जो भूमि भार हरने हेत आपने प्रतिज्ञा कियारहे भाव प्रथम भू भार हरि पीछेराज्य करेंगे यह प्रतिज्ञा भंग ह्वै जायगी ताते हे राजा धिराज आप निश्चयकरि सत्यसंध जो कहते हौ सोई करतेहौ ताते पूर्व प्रतिज्ञा सत्य करौ इत्यादि नारद के कहे वचन सुनि मुसुकायकै रघुनाथजी नारद प्रति बोले हे नारद अपने वचनों का उत्तर सुनिये ब्रह्मा को तथा आप को क्या यह सूचित होता है कि मोकोकुछ सुधि है कुछ भूलिगया भाव राज्य करने की सुधि है अरु भू भार उतारना भूलिगयो ऐसा समुझना वृथा है काहे ते मैंने पूर्व जिस भांति प्रतिज्ञा किया है उसी क्रम सब कार्य करिहौं अर्थात् प्रथम भू भार उतारि पीछे राज्य करिहौं यामें कुछ संशय नहीं है ३६ ॥

किंतुकालानुरोधेनतत्तत्प्रारब्धसंक्षयात्॥ हरिष्येसर्वभूभारंक्रमेणासुरमंडलम् ३७
रावणस्यविनाशार्थंश्वोगंतादण्डकाननं॥चतुर्दशसमास्तत्रह्युषित्वामुनिवेषधृक्
३८सीतामिषेणतंदुष्टंसकुलनाशयाम्यहम्॥ एवंरामेप्रतिज्ञातेनारदःप्रमुमोदह३९॥

(किंतुकालअनुरोधेनअसुरमण्डलेप्रारब्धसंक्षयात्) प्रतिज्ञा पूरी करिहौं परंतु समय आये पर राक्षस मंडलकी प्रारब्ध नाश भये ते (तत्तत्क्रमेणसर्वभूभारंहरिष्ये) जसजस जाको काल आई ताहीक्रम करिकै सब भूमि को भार हरिहौं अर्थात् रघुनाथ जी कहत कि हे नारद हम आपनी प्रतिज्ञा पूरीकरेंगे परंतु जब जिसकी प्रारब्ध नाश होई मरण काल आई तब तिसको बध करेंगे इसी भांति क्रम क्रम सबराक्षसों को मारि भूमि को सबभार हरेंगे ३७ (रावणस्यविनाशार्थंश्वःदंडकाननंगंता) रावण के नाश करिबे हेत काल्हि प्रातहीं हम दण्डक वनको जांयगे (मुनिवेषधृकतत्रचतुर्दशसमाःहिउषित्वा) मुनिको बेषधरि तहाँवास करि चौदह वर्ष बिताइहौं ३८ (सीतामिषेणअहंसकुलंतंदुष्टंनाशयामि) सीता के वहाने करिकै हम सहित कुल त्यहि दुष्टहि नाश करेंगे (एवंप्रतिज्ञातेरामेनारदःप्रमुमोदह) इस भांति की प्रतिज्ञा रघुनाथ जी के करत संते नारद मनमें आनंद भये अर्थात् रघुनाथ जी कहत कि हे मुनि रावण के नाश करिबे हेत पिता को वचन ग्रहण करि काल्हि प्रातहीं हम सीता लषण सहित दण्डक वनको गमन करेंगे मुनि को ऐसो बेष धारण करि तहाँ बन में वासकरि निश्चय करि चौदह वर्ष वितावेंगे तहाँते रावण सीता को हरि लैजायगो ताही वहाने ते हम दुष्ट रावण को सेना परिवार सहित नाश करि देंइगे शिवजीकहत कि हे गिरिजा जब रावण के वध करने की प्रतिज्ञा रघुनाथ जी को करत सुने तब नारद मनमें आनंद को प्राप्त ह्वै चलने इच्छाकरि बिदा मांगे ३९ ॥

प्रदक्षिणत्रयंकृत्वादण्डवत्प्रणिपत्यतम्॥अनुज्ञातश्चरामेणययौदेवगतिंमुनिः४०
संवादंपठतिशृणोतिसंस्मरेद्वायोनित्यंमुनिवररामयोःसभक्त्या॥ संप्राप्नोत्यमरसुदुर्लभंविमोक्षंकैवल्यंविरतिपुरःसरंक्रमेण ४१ ॥

इतिश्रीअध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसम्वादेअयोध्याकाण्डेप्रथमःसर्गः १ ॥

(तंरामंत्रयंप्रदक्षिणकृत्वादण्डवतप्रणिपत्य) तिन रघुनंदनहिं तीनि प्रदक्षिणा कीन्हे दण्डवत प्रणाम करि (चरामेणअनुज्ञातामुनिःखेचमार्तिचयौ) पुनः रघुनाथ जी की आज्ञा पाय मुनि आकाश मार्ग ह्वै चले गये ४० (मुनिवररामयोःसंवादंयःसभक्त्यानित्यंपठतिशृणोतिवातंस्मरेद्) नारद रघुनाथ जी को जो संवाद है ताहि जो जन भक्ति करिकै नित्यहीं पढ़त सुनत वा सुमिरण करता है (सविरातिपुरःसरंक्रमेणअमरदुर्लभंकैवल्यंमोक्षंतंप्राप्नोति) सो पूर्व वैराग्य पीछे शम दम विवेकादि क्रम क्रम होत पुनः जो अमर देवतनको दुर्लभहै ताहि कैवल्यमोक्ष को प्राप्त होइ अर्थात् शिवजी कहत हे गिरिजा आनंद ते नारदजी औरघुनाथ जी को तीनि प्रदक्षिणा करि दंडवत प्रणाम करि प्रभु की आज्ञा पाय पुनः मुनि आकाश मार्ग ह्वै ब्रह्मलोकै गये यह जो मुनिवर नारद अरु रघुनाथजी को सम्वाद है ताहि जो जन सहित भक्ति नित्यही पढ़ै सुनै अथवा सुमिरण करै सो प्रथम वैराग्य पुनः इंद्री मनादि स्वाधीन विवेक ते सारा सार जानै इत्यादि क्रम क्रम जो देवन को दुर्लभ सो कैवल्य मुक्ति ब्रह्म रूप की प्राप्ति होवै ४१ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतबैजनाथविरचितेअध्यात्मभूषणेअयोध्याकाण्डेनारदअयोध्याऽऽगमनवर्णनोनामप्रथमःप्रकाशः १ ॥

श्री महादेवउवाच ॥ अथराजादशरथःकदाचिद्रहसिस्थितः ॥ वशिष्ठंस्वकुलाचार्यमाहूयेदमभाषत १ भगवन्रामसखिलाःप्रशंसंतिमुहुर्मुहुः ॥ पौराश्चनैगमावृद्धामंत्रिणश्चविशेषतः २ ततःसर्वगुणोपेतंरामंराजीवलोचनं ॥ ज्येष्ठंराज्येऽभिषेक्ष्यामिवृद्धोऽहंमुनिपुंगव ३ ॥

सवैया ॥ गुरुपूछि सु मंत्रिन बोलिलबै अभिषेकलबै नृपमोदभरे । पुरमंगलसाज पताक ध्वजा घट कंचनपे मणिदीपधरे ॥ मिलिशारद सो न तहीं कुबरी त्यहिकैकय जाहिलरोषकरे । सुररक्षक बंदतबैजनाथ लिया युतसानुज रामहरे ॥ (अथकदा चित्रहसिस्थितः राजादशरथः स्वकुल आचार्य्यं वशिष्ठं आहूयइदं अभाषत्) शिवजी बोले हे पार्वति अवकिसी समय में एकांत स्थान में बैठे हुये राजा दशरथ आपने कुलके आचार्य्य जो वशिष्ठ तिनहि बुलाय यहि प्रकार बोले १ (भगवन पौराःचनैगमावृद्धाचविशेषतः मंत्रिणःअखिलाः मुहुः मुहुः रामंप्रशंसंति) हे भगवन् समर्थ पुरवासी सबपुनः वेद ज्ञाताब्राह्मणिग्जन तथा वृद्धबड़ी अवस्था वाले पुनः विशेषिकै मंत्रीलोग इत्यादि सब बारं बाररामजो हैं तिनहि प्रशंसा करते हैं भावधर्म नीति शील सुलभ उदारतादि अनेक गुणोंजिन के वर्णन करते हैं २ (ततःमुनिपुंगवसर्वगुणोपेतंज्येष्ठं राजीव लोचनं रामंराज्ये अभिषेक्ष्यामिअहंवृद्धः) ताते हे मुनिवर एकतौ सबगुण युक्त दूसरे सबभाइन में ज्येठे तीसरे कमल सम जिनके नेत्र भावस्वरूपवान ताते रामजोहैं तिनहि राज्य विषे अभिषेक करिहौं काहेतेअबमें वृद्धभयो अर्थात् एकांत स्थानमें महाराज वशिष्ठजी सो कहेकि हेमुनिवर पुरवासी विद्वान वृद्धमंत्री आदि सबरघुनंदन की प्रशंसा करते हैं ते गुणन युत सबभाइन में बड़े कमल सम नेत्र ऐसे स्वरूपवंत इत्यादि सब उत्तमता विचारि रघुनंदन को राज्याभिषेकदीन चाहतहौं किसकारण कि मैं वृद्धभयों यही उत्सव देखिलेउं ३ ॥

भरतोमातुलंद्रष्टुंगतःशत्रुघ्नसंयुतः ॥ अभिषेक्ष्येऽद्यएवाशुभवांस्तत्रानुमोदताम् ४

संभाराःसंभ्रियंतांचगच्छमंत्रयराघवम् ॥ उच्छ्रीयंतांपताकाश्चनानावर्णाःसमं ततः ५ तोरणानिविचित्राणिस्वर्णमुक्तामयानिवै ॥ आहूयमंत्रिणंराजासुमंत्रंमं त्रिसत्तमम् ६ ॥

(शत्रुघ्नसंयुतःभरतःमातुलंद्रष्टुंगतः) शत्रुहन सहितभरत आपने मामाके देखने हेत नन्हिहाल को गयेहैं (आशुएवश्वअभिषेक्ष्येतत्चभवान्अनुमोदताम्) अरुमैंशीघ्रही निश्चयकरिकै काल्हिही राज्याभिषेक करिहौंतामें पुनः आपहू आनंद सहित संमत दीजिये कारण यहकि कैकेईके पिताने प्रथमहीं करारपत्रलिखायाकि मेरी कन्याके पुत्रको राज्याभिषेक देउतौमैं विवाहकरिहौं सोईदशरथ जी लिखिदिये तापरगर्गाचार्य वो वशिष्टगवाह रहे हैं यह सत्योपाख्यानमें लिखाहै इसीहेत भय राखि महाराज कहत कि शत्रुहन सहित भरत आपने मामाको देखनेहेत नन्हिहालको गये तिनके सूने शीघ्रनिश्चय करिकै काल्हिहीं राज्याभिषेक कीन चाहतहौं तामें पुनः आपहू आनंद सहित संमत दीजिये ४ (संभाराःतांसंभ्रियं) राज्याभिषेक की सामग्री इकट्ठाकरौ (गच्छराघवम्मंत्रय) जायरघुनंदन प्रति सलाहकीजिये (ततःनानावर्णाः समंचपताका उच्छ्रीयतां) तदनंतर अनेक रंगन सहित पुनः पताका खड़े करुवावौ ५(स्वर्णमुक्तामयानितोरणानि विचित्राणि) सोनामोतिन की झालरि बंदनवारन ते भूपित करितोरण जो वहिरी द्वारतिनहिनिश्चय करि विचित्रवनुवावौ (मंत्रिसत्तमंसुमंत्रंमंत्रिणंराजाआहूय) सव मंत्रिन में उत्तम जो सुमंत्र नामे मंत्री ताहि राजा बु- लाये अर्थात् वशिष्ठ सों सम्मत लै पुनः महाराज कहे कि राज्याभिषेककी यावत्सामग्री हैं तिनहिं इकट्ठा करावौ अरु आप जाय रघुनन्दन ते सलाह करौ पुनः तोरण यथा तोरणोऽस्त्रीवहिर्द्वारंइत्य मरः अर्थात् वाहेर के द्वार सोना मोतिनमय झालरि बन्दनवार आदि भूषित करि विचित्र सजौ ऐसा कहि पुनः महाराज उत्तम मंत्री जो सुमंत्र तिनहिं बुलाये ६ ॥

आज्ञापयतियद्यत्त्वांमुनिस्तत्तत्समानय ॥ यौवराज्येऽभिषेक्ष्यामिश्वोभूतेरघुनंद नम् ७ तथेतिहर्षात्समुनिंकिंकरोमीत्यभाषत ॥ तमुवाचमहातेजावशिष्ठोज्ञानि नांवरः ८ श्वःप्रभातेमध्यकक्ष्येकन्यकाःस्वर्णभूषिताः ॥ तिष्ठंतुषोडशगजःस्वर्ण रत्नादिभूषितः ९ ॥

(मुनिःत्वांयत्यत्आज्ञापयतितत्तत्संआनय) हेसुमंत वशिष्ठ मुनि जौनी जौनी वस्तुको आज्ञा देंइतौन तौन वस्तुलाइये (श्वःभूतेरघुनंदनम्यौवराज्येअभिषेक्ष्यामि) काल्हिप्रातहोत संतेरघुनंदन हि राज्याभिषेक करिहौं ७ (तथाइतिहर्षात्समुनिंइतिअभाषतकिंकरोमि) सुमंत बोले कि यथाक- हतेहौ सोई करिहौं पुनः आनंद ते सोई सुमंत मुनि प्रति ऐसावचनबोले कि क्या कामकरौंसो मुनि (ज्ञानिनांवरःमहातेजावशिष्ठःतंउवाच) ज्ञानिनमे उत्तममहातेजवंत वशिष्ठ सुमंत प्रति बोलते भये अर्थात् जवमहाराज सुमंत को बुलाय आज्ञादिये कि वशिष्ट मुनि तुमको जो जो आज्ञाकरैं सो सो कार्य शीघ्रही करौ सो सुनि सुमंत्र वोले कि हेमहाराज जैसा आपकहतेहौ तैसाही करौंगो ऐसा कहिपुनः सुमंत्र आनंदते जायवशिष्ठ प्रति इसभांति वचनबोले कि क्या कार्य करौं सोआज्ञा दीजिये इति सुनि तवज्ञानिन में उत्तमतपोवलमहातेजवंत वशिष्ट जी सुमंत्र प्रति बोलते भये ८(श्वःप्रभा तेमध्यकक्ष्येस्वर्णभूषिता षोडशकन्यकातिष्ठंतुस्वर्णरत्नादिभूषितःगजः) काल्हिप्रभात होतहीं राज मंदिर केमध्य में सोनेके भूषणजरी केवसनादि करिकै विभूषित सोरह उत्तमकन्या स्थित रहैं तथा

सोना रत्नादि भूषित अर्थात् लदाऊ कामदार झूल मोतिन की लरै किनारिनमें लगी मणि जटित सोने अंबारी खैंची सर्बांग भूषित ऐसासजाहाथी तयारखड़ारहै ९ ॥

चतुर्दन्तःसमायातुऐरावतकुलोद्भवः ॥ नानातीर्थोदकैःपूर्णाःस्वर्णकुंभाःसहस्रशः १० स्थाप्यंतांनववैव्याघ्रचर्माणित्रीणिचानय ॥ श्वेतछत्रंरत्नदण्डंमुक्तामणिविराजितम् ११ दिव्यमाल्यानिवस्त्राणिदिव्यान्याभरणानिच ॥ मुनयःसत्कृतास्तत्रतिष्ठंतुकुशपाणयः १२ ॥

(ऐरावतकुलउद्भवःचतुर्दंतःसमायातु) जो ऐरावतके कुलमें उत्पन्न अरुजाके चारिदांत होंइ ऐसा हाथी संपूर्ण प्रकार ते साजि कै आवै (०नानातीर्थ उदकैः पूर्णाः सहस्रशः स्वर्णकुंभाः स्थाप्यतां) अनेक तीर्थों के जल करिकै परिपूर्ण हजारन सोनेके कलश स्थापितकरौ १०(चव्याघ्रचर्माणिवै नवत्रीणिआनय) पुनः व्याघ्रके चर्मनिश्चयकरिकै नवीन तीनिआनिये (मुक्तामणिविराजितंरत्नदण्ड श्वेतछत्रं)जामे मोतिनकी झालरि मणिजटित बिराजमान हेम रत्नजटित जामे दण्डऐसाश्वेत छत्र उपस्थित राखौ ११(दिव्यमाल्यानिवस्त्राणिचअन्यदिव्यआभरणानि)दिव्यमालादिव्यवसनपुनः और किरीट कुंडलादि दिव्य भूषण उपस्थितरहैं (सत्कृताकुशपाणयःमुनयःतंत्रतिष्ठंतु) दक्षिणादिते सत्कार कियेहुये कुशहाथ में लिहे मुनि समूह तहां परस्थितरहैं अर्थात् वशिष्ठ कहत कि ऐरावत के कुल में उत्पन्न भया चौदंता हाथी सजाठाढ़रहै पुनः पुष्कर प्राग नैमिषारण्य गंगोत्री गंगासागर इत्यादि अनेक तीर्थोंके जलकरिकै परिपूर्ण भरे हजारनसोनेके कुंभ स्थापित करौ पुनः नवीन तीनि व्याघ्र के चर्म आनिये पुनः कनक मणि जटित किनारिन में मोतिन की झालरि लगीकनक रत्न जटितदण्ड सोनेके सलाका ऐसाश्वेत छत्रउहां धरारहै तथा मोती गजमुक्ता बिद्रुम सोना औरौ मणीफूल इत्यादि के अनेक दिव्य माला तथा रेशमी जरतारी ऊनी इत्यादि अनेक दिव्य बसन तथा किरीट कुण्डल केयूर बलय मुद्रिकादि औरभी अनेक भूषणधरेराखौ पुनः भोजन बसनदक्षिणादि देसत्कारकिये हुये अनेकन मुनिहाथे में कुशलिहे तहांपरबैठेरहैं १२ ॥

नर्तक्योवारमुख्याश्चगायकावेणुकास्तथा ॥ नानावादित्रकुशलावादयंतुनृपांगणे १३ हस्त्यश्वरथपादाताबहिस्तिष्ठंतुसायुधाः ॥ नगरेयानितिष्ठांतिदेवतायतनानिच १४ तेषुप्रवर्ततांपूजानानाबलिभिरावृता ॥ राजानःशीघ्रमायांतुनानोपायनपाणयः १५ इत्यादिश्यमुनिःश्रीमान्सुमंत्रंनृपमंत्रिणं ॥ स्वयंजगामभवनंराघवस्यातिशोभनम् १६ ॥

(गायकाचवारमुख्याःनर्तक्यःवेणुकाः तथानानावादित्रकुशलानृपांगणेवादयंतु) गावनेवाले पुनः वेश्या समूह नाचनेवाली अरु वेणु वजावनेवाले तथा मृदंग रवाव मजीरा ढोलतासाझांझ इत्यादि अनेक बाजा बजावने वाले राजमन्दिर के आंगन बिषे बजावैं १३ (हस्तिअश्वरथपादातासआयुधाव हिःतिष्ठतु) हाथी घोड़ा रथ तिनपर सवार तथा पैदर सेना ते सब सहित हथियार भाव चतुरंगिनी सेना सजी बाहेर खड़ी रहैं (चदेवताआयतनानियानिनगरेतिष्ठंति) पुनः देवतन के मन्दिर जेते अयोध्यानगर में स्थापितहैं १४ (तेषुबलिभिःआवृतानानापूजाप्रवर्ततां) तिन मन्दिरन विषे वलिदान सहित गंधाक्षत फल धूप दीपादि अनेक सामग्री करिकै पूजा किया जाय (नानाउपायनपाणयः राजानःशीघ्रंआयान्तु) अनेक भांति भेंटकी सामग्री हाथ में लिहे देशन के राजा लोग आवैं १५

(इतिनृपमंत्रिणंसुमंत्रंआदिश्य श्रीमान्मुनिःस्वयंअतिशोभनं राघवस्यभवनंजगाम) इस भांति राज मंत्री जो सुमंत्र तिनहिं आज्ञा दै श्रीवन्त वशिष्ठ मुनि आपु अत्यन्त शोभायमान जो श्री रघुनन्दन को मन्दिर तहां को जाते भये अर्थात् मंगल गावनेवाले पुनः वेश्या नटादि नाचने योग्य वेनु बजावनेवाले तथा रबाब मृदंग तबला शारंगी सितार मंजीरा ढोल तासा झांझ इत्यादि अनेक बाजा बजावनेवाले राजमन्दिर के आंगनमें बजावैं अरु हाथी घोड़ा रथ पैदरादि सेना चतुरंगिनी उरदी हथियार सजे बाहेर खड़ी रहैं पुनः गणेश देवी सूर्य शिव विष्णु इत्यादि देव प्रतिष्ठित यावत् मंदिर पुर में हैं तिनमें बलिदान चन्दन फूलादि सामान लै सब को पूजा कियाजाय भेटकी सामग्री मणि सोनादि हाथ में लिहे देशन के राजा लोग शीघ्रही आवैं इत्यादि राजमंत्री जो सुमंत्र तिनहिं आज्ञा देकै श्रीवशिष्ठजी आप शोभायमान हेम रत्नमय रचित जो रघुनन्दनको मन्दिरतहांको जातेभये १६ ॥

रथमारुह्यभगवान्वशिष्ठोमुनिसत्तमः ॥ त्रीणिकक्षाण्यतिक्रम्य रथात्क्षितिमवातरत् १७ अंतःप्रविश्यभवनंस्वाचार्यत्वादवारितः ॥ गुरुमागतमाज्ञायरामस्तूर्णंकृतांजलिः १८ प्रत्युद्गम्यनमस्कृत्य दण्डवद्भक्तिसंयुतः ॥ स्वर्णपात्रेणपानीयमानिनायाशुजानकी १९ रत्नासनेसमावेश्यपादौप्रक्षाल्यभक्तितः ॥ तदापःशिरसाधृत्वासीतयासहराघवः २० ॥

(भगवान्मुनिसत्तमः वशिष्ठःरथंआरुह्यत्रीणिकक्षाणि अतिक्रम्यरथात्क्षिति अतरतभव) सब वस्तुको समर्थ मुनिनमें उत्तम वशिष्ठ रथपर चढ़े रघुनन्दनके मन्दिरके तीनिआवरण नांघि चौथेमें रथते भूमिपर उतरतभये १७ (भवनंअन्तः प्रविश्यस्वआचार्यत्वात् अवारितः) मन्दिरके भीतर पैठे चलेगये तहां आपने कुलके आचार्य विचारि ताते किसी द्वारपालने रोकानहीं परन्तु भीतर खबरि पहुंचायदिये (गुरुंआगतं आज्ञायरामः) गुरुवशिष्ठ तिनहिं आवत जानि रघुनन्दन (तूर्णंकृतांजलिः) १८ प्रत्युद्गम्यभक्तिसंयुतः दण्डवत्नमस्कृत्य) शीघ्रही उठि हाथजोरि आगे आय भक्ति सहित दण्डवत् प्रणाम कीन्हे (स्वर्णपात्रेणजानकी आशु पानीयंआनिनाय) सोनेके पात्र करिकै जानकी जी शीघ्रही जललाईं १९ (रत्नआसनेसमावेश्य भक्तितःपादौप्रक्षाल्य) रत्नजटित चौकीपर बैठाय भक्तिते दोऊ पांय धोवतेभये (तत्आपःसीतयासहराघवः शिरसाधृत्वा) तौनजल सीता सहित रघुनन्दन शीशपर धरिलिये अर्थात् रघुनाथजी के मन्दिरमें सात आवरण हैं तहां तीनिआवरण तक वशिष्ठजी रथपर चढ़े चलेगये भाव ऐश्वर्य धर्म यश श्री वैराग्य मोक्ष युत इतिभगवान्हैं पुनः मनन शीलनमें उत्तम पुनः कुलके आचार्य ताते तीनि कक्षातक रथपर गये पुनः रथते उतरि भूमिपरचले अंतःपुरमें पैठे जहांकोऊ जायनहीं सकत परन्तु इक्ष्वाकु कुलके आचार्य विचारि द्वारपाल रोकि न सके परन्तु भीतर खबरि जनायदिये तब गुरुहि आवत जानि रघुनन्दन तुरतही उठे आगे आय भक्ति सहित हाथजोरि दण्ड प्रणाम करि भीतर लैगये तब सोनेकी झारीमें जानकीजी शीघ्रही जल लाईं तब रत्नजटित चौकीपर मुनिको बैठारि जानकीजी के लायेहुये जलते भक्ति सहित प्रभु दोऊ पांयधोये बसनते पोंछि सिंहासनपर बैठाये पुनः पगधोवन जललैकै जनकनन्दनी सहित रघुनन्दन शीशपर धरिलिये २० ॥

धन्योऽस्मीत्यब्रवीद्रामस्तवपादांबुधारणात् ॥ श्रीरामेणैवमुक्तस्तुप्रहसन्मुनिरब्रवीत् २१ त्वत्पादसलिलंधृत्वाधन्योऽभूद्गिरिजापतिः ॥ ब्रह्मापिमत्पितातेहिपाद

तीर्थैर्हताशुभः २२ इदानीमाषसे यत्त्वं लोकानामुपदेशकृत् ॥ जानामि त्वां परात्मा नं लक्ष्म्या मं जानमीश्वरम् २३ देवकार्य्यार्थसिद्ध्यर्थं भक्तानां भक्तिसिद्धये ॥ रावण स्यवधार्थाय जातं जानामि राघव २४ ॥

(तवपादाम्बुधारणात् धन्योऽस्मि इति रामः अब्रवीत्) हे मुने आपको पादोदक शीशपर धारण करने ते मैं धन्य भयों इत्यादि रघुनाथजी कहे (एवं रामेण उक्तः तं मुनिः प्रहसन् अब्रवीत्) मैं धन्य भयों ऐसा वचन जब रघुनन्दन करिके कहा गया तब पुनः मुनि हँसिके बोलते भये २१ (त्वत्पादसलिलं धृत्वा गिरिजापतिः धन्यः अभूत्) आपके पद धोवन गंगाजल शीशपर धारण करि गिरिजापति शिवजी धन्य भये (मत्पिता ब्रह्मा अपि ते पादतीर्थैः हि अशुभः हता) मेरे पिता ब्रह्मा तोऊ निश्चय करि आपके पदरूप तीर्थ स्पर्श करि निश्चय करि अशुभ कर्मोंको नाश किया २२ (इदानीं यत् त्वं भाषसे लोकानां उपदेशकृत्) या समयमें जो आप कहतहो सो लोकजननको उपदेश करतहो (लक्ष्म्यायुतं ईश्वरं जातं त्वां परात्मानं जानामि) लक्ष्मी सहित ईश्वर अवतीर्ण भयोहै आपको मैं परमात्मा जानताहौं २३ (भक्तानां भक्तिसिद्धये देवकार्य्यार्थसिद्ध्यर्थम्) भक्तनकी भक्ति पूर्ण करिवेहेत देवतनके कार्य सिद्ध करिवेहेत (रावणस्य वधार्थाय जातं राघव जानामि) रावणके वध हेत अवतीर्ण भयो हे राघव मैं जानताहौं अर्थात् मुनि प्रति प्रभु कहे कि आपको पादोदक शीशपर धरेते मैं धन्य भयों इति माधुर्य वचन रघुनन्दन करि कहेगये सो सुनि पुनः ऐश्वर्य विचारि हँसिके मुनि बोले हे रघुनन्दन आपके पायँनको धोवन गंगाजल शीशपर धारण करि शिव धन्य भये तथा आपके पदरूप तीर्थको स्पर्श करि हमारे पिता ब्रह्मा अशुभ कर्मोंको नाश किये ऐसे समर्थ आप या समय मोको गुरु मानि सेवक के ऐसे वचन कहतहो सो लोकजननों को उपदेश करतेहो अरु लक्ष्मी सहित ईश्वर आप अवतीर्ण भयेहै आपको जानताहौं कि परमात्माहौ सो भक्तनकी भक्ति सिद्धभाव दर्शन देनेहेत देवनकी विपत्ति हरनेहेत रावणके वधहेत अवतीर्ण भयो हे राघव आपको ऐश्वर्यरूप जानताहौं २४ ॥

तथापि देवकार्य्यार्थं गुह्यं नोद्घाटयाम्यहं ॥ यथा त्वं मायया सर्वं करोषि रघुनन्दन २५ तथैवानुविधास्येऽहं शिष्यस्त्वं गुरुरप्यहं ॥ गुरुर्गुरूणां त्वं देव पितॄणां त्वं पितामहः २६ अन्तर्यामी जगद्यन्त्रवाहकस्त्वमगोचरः ॥ शुद्धसत्त्वमयं देहं धृत्वा स्वाधीनसंभवम् २७ मनुष्य इव लोकेऽस्मिन्भासि त्वं योगमायया ॥ पौरोहित्यमहं जाने विगर्ह्यं दुष्य जीवनम् २८ ॥

(तथापि देवकार्य्यार्थं गुह्यं अहं न उद्घाटयामि) आपको जानताहौं तोभी देवतनके कार्यहोने हेत जो ऐश्वर्य गुप्त राखेहौ सो मैं न प्रकट करिहौं (हे रघुनन्दन यथा त्वं सर्वं मायया करोषि) हे रघुनाथ जी जैसे आप सब कार्य माया करिके करिरहेहौ २५ (तथा अहं एव अनुविधास्ये त्वं शिष्यः अहं अपि गुरुः) तैसेही मैं भी निश्चय करिके अनुविधान करोंगो तामें आप शिष्यहो मैं निश्चय करिके गुरु हौं (देव त्वं गुरूणां गुरुः त्वं पितॄणां पितामहः) हे देव आप गुरुनके गुरु अरु आप पितरनके पितामह आजा हो २६ (जगद्यंत्रवाहकः त्वं अगोचरः अंतर्यामी) जगत्रूप कोल्हू के चलावनेवाले आप विषय रहित अन्तर्यामीहो (शुद्धसत्त्वमयं स्वाधीनसंभवं देहं धृत्वा) शुद्ध सतोगुणमयी आपनी इच्छाते उत्पन्नहै देहधरि २७ (योगमायया मनुष्य इव अस्मिन् लोके भासि त्वं) योगमाया करिके मनुष्योंकी

नाईं इस लोकमें प्रकाशमानहौ अर्थात् वशिष्ठजी कहत कि यद्यपि आपको प्रभाव जानताहौं तौ भी जो देवनको कार्य भाव मनुष्य तनते रावणको वधहै ताते ऐश्वर्य रूप गुप्तराखेहौ सो मैं भी न प्रकट करिहौं हे रघुनंदन जैसे आप मायामय सबकार्य करिरहेउहै ताही तुल्य मैं भी सब लौकिक विधान करिहौं तिस रीतिमें आप शिष्यहौ मैं निश्चय करिकै गुरूहौं अरु यथार्थ रीति में हेदेव आप गुरुनके गुरु पितनके पिताहौ भाव जन्मांतर में जेते पिताभये तिनके पिता जेते गुरुभये तिनके गुरुहौ जगत्रूप कोल्हूके प्रेरक विषय रहित अंतर्यामीहौ आपनी इच्छाते शुद्ध सतोगुणी देहधरि उत्पन्नभयो योगमाया करिकै मनुष्योंकी नाईं इस मृत्युलोकमें प्रकाशमानहौ (अहंजानेपौरोहित्यंविगर्ह्यंदुष्यजीवनम्) मैं जानतारहा कि उपुरोहिती कर्म निंदितहै दोषनमय जीविका श्रुति स्मृति कहतहैं परंतु २८ ॥

इक्ष्वाकूणांकुलेरामःपरमात्माजनिष्यते ॥ इतिज्ञातंमयापूर्वंब्रह्मणाकथितपुरा२९ ततोऽहमाशयारामतवसम्बन्धकांक्षया ॥ अकार्षंगर्हितमपितवाचार्यत्वसिद्धये ३० ततोमनोरथोमेऽद्यफलितोरघुनन्दन ॥ त्वदाधीनामहामायासर्वलोकैकमोहिनी ३१ मांयथामोहयन्नैवतथाकुरुरघूद्वह ॥ गुरुनिष्कृतिकामस्त्वंयदिदेह्येतदेवमे ३२ ॥

(इक्ष्वाकूणांकुलेपरमात्मारामःजनिष्यते इतिमयापूर्वंज्ञातं पुराब्रह्मणाकथितम्) इक्ष्वाकुवंशिनके कुलमें परमात्मा रामनामे उत्पन्न ह्वैहैं यह मैंने पूर्वही जानारहै कौनभांति पूर्व समय ब्रह्माने कहाहै २९ (ततःआशयाअहंरामतव सम्बन्धकांक्षया) तबते बड़ी आशा सहित मैं हेरघुनन्दन आपके सम्बन्धकी कांक्षा करिकै (तवआचार्यत्वसिद्धये अकार्षंअपिगर्हितम्) आपके आचार्यत्व सिद्धीके अर्थ निंदित उपरोहिती कर्मभी ग्रहण किया ३० (ततःमेमनोरथः अद्यफलितः रामसर्वलोकैकमोहिनी महामायात्वत्अधीना) तबते मेरा मनोरथ अब सफलभया हेरघुनन्दन सब लोकनको मोहित करनहारी एकजो महामाया है सो आपहीके अधीन है ३१ (यदित्वंगुरुनिष्कृतिकामः एवमेएतत् देहि) जो आपको गुरुदक्षिणा देनेकी कामना होयतौ निश्चय मेरे अर्थ यह दान दीजिये (रघूद्वहयथामांएवनमोहयत्तथाकुरु) हे रघुवंशिनको कृतार्थ करनेवाले जौन प्रकार मायामोहिं निश्चय करि न मोहित करिसकै सो कीजिये अर्थात् वशिष्ठजी कहत हेरघुनन्दन उपरोहिती निंदित कर्म मैं न ग्रहण करता परन्तु ब्रह्माजीने आपकी प्राप्तीको हाल पूर्वही कहाहै तिनते सुनि मैं प्रथमहीते जानतारहौं कि इक्ष्वाकुवंशमें परमात्मा रामनामे उत्पन्न ह्वैहैं हेरघुनन्दन तबते बड़ी आशासहित आपके सम्बन्धकी कांक्षा करिकै विशेषि आपके आचार्य होने हेत मैं उपरोहिती कर्मभी ग्रहण किया तबते मेरा मनोरथ अब सफलभया अब यह प्रार्थनाहै हेरघुनन्दन सब लोकनको मोहित करनहारी एक जो महामाया है सो आपहीके अधीनहै अब जो आपको गुरुदक्षिणा देनेकी कामना होयतौ निश्चय करिकै मेरे अर्थ यहदान दीजिये हेरघुवंशिनके कृतार्थ करनेवाले जौनप्रकार मायामोहिं निश्चय करि न मोहित करिसकै सो उपाय कीजिये इत्यादिकहि जाहेत आये सो कहते हैं ३२ ॥

प्रसंगात्सर्वमप्युक्तंनवाच्यंकुत्रचिन्मया ॥ राज्ञादशरथेनाहंप्रेषितोऽस्मिरघूद्वह ३३ त्वामामंत्रयितुंराज्येश्वोऽभिषेक्ष्यतिराघव । अद्यत्वंसीतयासार्द्धमुपवासंयथाविधि ३४ कृत्वाशुचिर्भूमिशायीभवरामजितेन्द्रियः॥ गच्छामिराजसान्निध्यंत्वं

तुप्रातर्गमिष्यसि ३५ इत्युक्त्वारथमारुह्ययौराजगुरुर्द्रुतं ॥ रामोऽपिलक्ष्मणं दृष्ट्वाप्रहसन्निदमब्रवीत् ३६ ॥

(प्रसंगात्मयासर्वंअपिउक्तंकुत्रचित्नवाच्यं) प्रसंग परेते मैंने सब हाल निश्चय करि कहा परन्तु यह रहस्य कबहूं किसीते कहने योग्य नहींहै (रघूद्वहअस्मिन्अहंदशरथेनप्रेपितः) हे रघुवंश कृतार्थकरता या समयमें मोको दशरथने पठावाहै३३ (राघवत्वांआमंत्रयितुंश्वः राज्येअभिपेक्ष्यति) हे राघव आप प्रति कछु वार्ता करिबेहेत किसकारण कि काल्हिराज्य विपे आपको अभिपेक करैंगे (अद्यसीतयासार्द्धंत्वंयथाविधिउपवासं ३४ कृत्वा) आजु सीताकरिकै सहितआप जैसी वेदकीआज्ञाहै ताही विधिते व्रतकरो (हेरामजितेंद्रियःशुचिःभूमिशायीभव) हे रघुनन्दन मनते जीतेहुवे इन्द्रियोंको तनते पवित्रतासहित भूमिपै शयनकरो (राजसान्निध्यंगच्छामितुत्वंप्रातर्गमिष्यसि मैं राजाके पासको जाताहौं पुनः आप प्रातःकाल आयो ३५ (इतिउक्त्वाराजगुरुःरथंआरुह्यद्रुतंययौ)ऐसाकहि राजगुरु वशिष्ठ रथपरचढ़ि तुरतही जातेभये (लक्ष्मणंदृष्ट्वारामः अपिप्रहसन्इदंअब्रवीत्) लक्ष्मणजी आये तिनहिं देखि रघुनन्दन हँसिकै ऐसा बोले अर्थात् वशिष्ठजी कहत हेरघुनन्दन आप प्राकृत मनुष्योंकी ऐसी वार्ताकिया इति प्रसंगते पुनः एकांतमें पाय मैं ऐश्वर्य रूपकी सबवार्ता किया परन्तु जो आप ऐश्वर्य गुप्तराखेहौ तौ यह रहस्य किसीते कबहूं कहबेयोग्य नहीं है अब या समयमें मोको दशरथ ने पठावाहै हेराघव आप प्रति कछु वार्ता करिबे हेत कौन कारण कि काल्हि आपको राज्याभिपेक करैंगे ताते हे राघव सीता सहित आप वेद विधानते व्रत करौ कौन विधि ते कि मनते सब इंद्री जीते तनते पवित्रता सहित भूमिमें कुशासन पर शयन करौ अब मैं महाराजके पासको जाताहौं पुनः आप काल्हि प्रात भये महाराजके पास आयो ऐसा कहि राजगुरु वशिष्ठ प्रभुते विदा ह्वै रथ पर चढ़ि तुरतही जाते भये ताही समय लक्ष्मण जी आये तिनहिं देखि रघुनन्दन निश्चय करि हँसिकै इस प्रकारके वचन बोलते भये सो आगे कहत ३६ ॥

सौमित्रेयौवराज्येमेश्वोऽभिषेकोभविष्यति ॥ निमित्तमात्रमेवाहंकर्ताभोक्तात्वमेवहि ३७ ममत्वंहिबहिःप्राणोनात्रकार्याविचारणा ॥ ततोवशिष्ठेनयथाभाषितंतत्तथाकरोत् ३८ वशिष्ठोपिनृपंगत्वाकृतंसर्वंन्यवेदयत् ॥ वशिष्ठस्यपुरोराज्ञाह्युक्तंरामाभिषेचनं ३९ यदातदेवनगरेश्रुत्वाकश्चित्पुमान्जगौ ॥ कौशल्यायैराममात्रे सुमित्रायैतथैवच ४० ॥

(सौमित्रेश्वःमे यौवराज्येअभिषेकोभविष्यति) हेसुमित्रानंदन काल्हि मेरायुवराज विपे अभिपेक होई (निमित्तमात्रंएवअहंकर्ताभोक्ताएवहित्वं) निमित्तमात्र सबको कहिबेमात्र हमराजा होयँगे अरु राजकाज करता राज्यसुख भोक्ता निश्चयकरिकै तुमहोउगे काहेते ३७ (त्वंहिममबहिःप्राणःअत्रविचारणानकार्या) तुमनिश्चयकरिकै मेरेबाहेरके प्राणहौ यामेंकछु विचारनेते कार्यनहींहै (ततःयथावशिष्ठेनभाषितंतत्तथाकरोत्) तब जो बात वशिष्ठने कहारहै तौन ताहीभांति ब्रह्मचर्य व्रतादि करते भये ३८ (नृपंगत्वावशिष्ठःअपिसर्वंन्यवेदयत्कृतं) राजाकेपास जाय वशिष्ठ निश्चयकरि सब प्रभुके पासको हाल निवेदनकरतेभये हालकहे (वशिष्ठस्यपुरोराज्ञारामअभिषेचनंहिउक्तं) जासमय वशिष्ठकेआगे महाराजने रघुनंदनके राज्याभिपेककरनेको कहे ३९ (यदातत्एवनगरेकश्चित्पुमानश्रुत्वा

जगी) जब वार्ताकरतेरहें तब नगरवासी कोई पुरुष सुनिकै रनवासनको गया (राममात्रेकौशल्यायैचतथासुमित्रायै) राममातु कौशल्याके अर्थ पुनः तैसेही सुमित्राके अर्थ सुनावताभया अर्थात् वशिष्ठ गये पीछे लक्ष्मण आये तिनहिं देखि प्रभु हँसिकै बोले हेसुमित्रानंदन काल्हि मेरा युवराज पदको अभिषेकहोई तामें सबको कहने मात्र हम राजा अरु राजकाजके करता राज्य सुखके भोक्ता तुमहोउगे काहेते तुम निश्चयकरिकै मेरे बाहेरके प्राणहौ यामें कुछ विचार करनेते कार्य नहीं है पुनः जो बात वशिष्ठने कहारहै तौन ताही भांति ब्रह्मचर्य व्रतादि प्रभु करतेभये अरु महाराज के पास जाय वशिष्ठजी रघुनंदनको सब हाल कहे अरु जा समय वशिष्ठ प्रति महाराजने रघुनन्दन को राज्याभिषेक करनेको कहे तब नगरवासी कोउपुरुषबैठा सुनता रहै सो हर्ष सहित रनवासमेंजाय कौशल्याजी सों कहा तथा सुमित्राजी सों कहा ४० ॥

श्रुत्वातेहर्षसंपूर्णेददतुर्हारमुत्तमं ॥ तस्मैततःप्रीतमनाःकौशल्यापुत्रवत्सला ४१ लक्ष्मींपर्यचरद्देवीरामस्यार्थप्रसिद्धये॥ सत्यवादीदशरथःकरोत्येवप्रतिश्रुतम्४२ कैकेयीवशगःकिन्तुकामुकःकिंकरिष्यति ॥ इतिव्याकुलचित्तासादुर्गादेवीमपूज यत् ४३ एतस्मिन्नन्तरेदेवादेवींवाणीमचोदयत् ॥ गच्छदेविभुवोलोकमयोध्या यांप्रयत्नतः ४४ ॥

(तेश्रुत्वाहर्षसम्पूर्णउत्तमंहारंददतुः) ते रानी सुनिकै आनन्द परिपूर्ण उत्तम हार देतीभई (ततः तस्मैपुत्रवत्सलाकौशल्याप्रीतिमनाः) तदनन्तर ता समयमें गोवत्सवत्पुत्रपर स्नेह राखनेवाली कौशल्या रघुनन्दनकी प्रीति मनमें राखि ४१ (रामस्यअर्थप्रसिद्धयेदेवीलक्ष्मींपर्यचरत्) रघुनन्दनको स्वार्थप्रसिद्धपूर्ण होने अर्थ देवी कौशल्या लक्ष्मीजो हैं तिनहिं पूजतीभई अरु विचारतीहैं(दशरथःसत्यवादी श्रुतंप्रतिएवकरोति) महाराज सत्यही बोलतेहैं तो जो उत्सव सुनिपराहै सो अपना कहा अवश्य करेंगे ४२ (किंतुकामुकःकैकेयीवशगः किंकरिष्यति) परन्तु जो कामासक्तीते कैकेयीके वश हैं सो जो प्रतिकूलता करै तो क्या करैंगे भाववाको कहे तो करैंगे (इतिव्याकुलचित्तासादेवींदुर्गां अपूजयत्) इत्यादि विचारि व्याकुल चित्त जाको सो कौशल्या विघ्न निवारण हेत देवी दुर्गा जो हैं तिनहि पूजती भई ४३ (एतस्मिन् अन्तरे देवाः) ताही समयके विषे इंद्रादि देवता (देवीं वाणीं अचोदयत्) देवी सरस्वती जो है ताहि पठावते भये (देवि भुवः लोकं अयोध्यां गच्छ प्रयत्नतः) हे देवि भूलोक में अयोध्याजीको जाउ तहां यत्न पूर्वक यह कार्य करौ अर्थात् जब वह पुरुष कहा कल्हि रघुनन्दन को राज्याभिषेक होई तब कौशल्या सुमित्रा ते दोऊ रानी सुनि कै आनन्द परिपूर्ण उत्तमहार वाकोदिये तदनंतर गोवत्सवत्पुत्र परस्नेह राखनेवाली कौशल्या मनमेंप्रीति राखि रघुनन्दन को राज्याभिषेक परिपूर्ण सिद्ध होने हेत लक्ष्मीजीको पूजती भई पुनः विचार कीन्हें कि महाराज सत्यही बोलतेहैं तो जो राज्याभिषेक सुनि पराहै सो अपना कहा निश्चयकरि करैंगे परंतु जो कामासक्तीते कैकेयी के वशहैं वह जो प्रतिकूलता करै तो क्याकरैंगे वाको कहा न त्यागिहैं इत्यादि विचारि व्याकुल चित्त कौशल्या विघ्न निवारण हेतदुर्गा देवी को पूजतीभई ताही समयविषे देवतन सरस्वती को पठाये,यह कहे कि हेदेवि भूलोक अयोध्या को जाउ यत्नपूर्वक हमाराकार्यकरौ ४४ ॥

रामाभिषेकविघ्नार्थंयतस्वब्रह्मवाक्यतः ॥ मंथरांप्रविशस्वादौकैकेयींचततःपर म्४५ ततोविघ्नेसमुत्पन्नेपुनरेहिदिवंशुभे ॥ तथेत्युक्त्वातथाचक्रेप्राविवेशाथमंथ

राम्४६ सापिकुब्जात्रिवक्रातुप्रासादाग्रमथारुहत् ॥ नगरंपरितोदृष्ट्वासर्वतःस मलंकृतम् ४७ नानातोरणसंबाधंपताकाभिरलंकृतम् ॥ सर्वोत्सवसमायुक्तंवि स्मितापुनरागमत् ४८ ॥

(ब्रह्मवाक्यतःरामअभिषेकविघ्नंअर्थयतस्व) ब्रह्माकी आज्ञाते रामचंद्रको अभिषेकमें विघ्नकरिवे हेत जाउ (आदौमंथरांप्रविशस्वचततःपरम्कैकेयीं) प्रथम मंथरामें प्रवेशहोउ पुनः ताके पीछे कैके-यीमें प्रवेशह्वै वाकी वुद्धि फेरिदेउ ४५ (विघ्नेसमुत्पन्नेततःदिवंशुभेपुनःएहि) विघ्न उत्पन्न करि तदनंतर स्वर्गको पुनः आवौ (तथाइतिउक्त्वातथाचक्रेअथमंथराम्प्रविवेश) जैसा कहतेहौ तैसाही होई इत्यादिकहि सरस्वती तैसाहीकीन्हीं प्रथम मंथरामें प्रवेशभई अर्थात् देवता कहेकि हेदेवि ब्रह्मा की आज्ञाते रघुनंदनके राज्याभिषेकमें विघ्न करिवे हेत जाउ प्रथम मंथरामें प्रवेश होउ पुनः पीछे कैकेयीमें प्रवेशह्वै वाकी वुद्धि फेरिदेउ इति विघ्न उत्पन्नकरि तदनंतर स्वर्गको पुनः लौटि आवौ इति सुनि सरस्वती बोली हेदेवतो जैसा कहतेहौ तैसाही होई इत्यादि कहि तैसाही कीन्ही जाय प्रथम मंथरा में प्रवेशह्वै वुद्धि फेरि दीन्ही ४६ (साअपिकुब्जातु त्रिवक्रा अथ प्रासादाग्रं अरुहत्) सो मंथरा निश्चय करिके कुवरी पुनः तीनि अंगनको टेढ़ि सो मन्दिर द्वारके ऊपर चढ़ी (परितःनगरंदृष्ट्वासर्वतःसमलंकृतम्) सम्पूर्ण अयोध्या नगरको देखा मंगल साजते सर्वत्र भूपितहै ४७ (नानातोरणसंबाधं) तोरणोऽस्त्रीवहिर्द्वारंइत्यमरः संकटंसंबाधः अल्पावकाशे इत्यमर विवेके अर्थात् अनेक वहिरी द्वारनपरसघन (पताकाभिःअलंकृतम्) केतुध्वजा पताकादिकन करि-के भूपितहै (सर्वउत्सवसमायुक्तंविस्मितापुनःआगमत्) सबउत्सव सहित देखि विस्मय सहित पुनः उतरिआई अर्थात् सो मंथरा निश्चय करिकैकूवरी पुनः तीनि अंगनको टेढ़ि सो मन्दिर द्वारकेऊपर चढ़ी सम्पूर्ण नगरको देखा सर्वत्र भूपितहै कौनभांति कि अनेकन वहिरी द्वारनपर सघनकेतु ध्वजा पताकादिकन करिके भूपितहै तथा वंदनवार चित्रामसदीप कलश चौके इत्यादि सब उत्सव सहित देखि विस्मय सहित पुनः उतरिआई ४८ ॥

धात्रींपप्रच्छमातःकिंनगरंसमलंकृतं ॥ नानोत्सवसमायुक्ताकौशल्याचातिहर्षि ता ४९ ददातिविप्रमुख्येभ्योवस्त्राणिविविधानिच ॥ तामुवाचनदाधात्रीरामचं द्राभिषेचनं ५० श्वोभविष्यातितेनाद्यसर्वतोऽलंकृतंपुरं ॥ तच्छ्रुत्वात्वरितंगत्वा कैकेयींवाक्यमब्रवीत् ५१ पर्यंकस्थांविशालाक्षीमेकांतेपर्यवस्थिताम् ॥ किंशेषेदु र्भगेमूढेमहद्भयमुपस्थितम् ५२ ॥

(धात्रींपप्रच्छमातःनगरंकिंअलंकृतम्) धात्यानामे रघुनंदनकी धावी ताहि मंथरा पूछती भई हेमाता अयोध्यानगर कौनेकारण भूपितहै (नानाउत्सवसमायुक्ताचकौशल्याअतिहर्षिता) अनेक उ-त्सव सहित नगर पुनःकौशल्या अत्यंत आनंदहै ४९ (चविप्रमुख्येभ्योविविधानिवस्त्राणिददाति)पुनः मुख्य ब्राह्मणोंके अर्थ अनेकविधिके वसन देती हैं (तदाधात्रीतांउवाचरामचंद्राभिषेचनम्)तब धायी त्यहि मंथरा प्रति बोलती भई कि रामचंद्रको राज्याभिषेकहै ५० (श्वःभविष्यतितेनअद्यपुरंसर्वतः अलंकृतम्) काल्हि राज्याभिषेक होई तिहि करिकै आजु पुर सब भूपितहै (तत्श्रुत्वात्वरितंगत्वाकैके यींवाक्यंअब्रवीत्)तान सुनि तुरतही जाय कैकेयी प्रति मंथरा बोली५१ (एकांतेपर्यंकस्थाम्विशाला

क्षीम्)एकांतमें पलँगपर बैठी हुई बड़े हैं नेत्रजाके त्यहि कैकेयी प्रति मंथराकहत(मूढ़ेदुर्भगेकिंशेषेपर्य वास्थितांहे) मूढ़े कुभागिनी काहे सोवतीहै विरोधपर आरूढ़हो काहेते तेरेहेत (महत्भयंउपस्थितम्) बड़ी भारी भय प्राप्तभई अर्थात् धान्यानामे रघुनन्दनकी धायीतासों मंथरा पूछतीभई कि हे माता अयोध्या नगर कौनकारण मंगल साजते भूषितहै ध्वजपताक वंदनवार कलशचौकादि अनेक उत्सव सहित नगर सजा पुनः कौशल्या अत्यंत आनन्दहैं पुनः मुख्य ब्राह्मणोंके अर्थ अनेक द्रव्य वसनादि दान देती हैं तब धायीत्यहि मंथरा प्रति बोलतीभई कि रामचन्द्रको राज्याभिषेकहै काल्हि राज्याभि-षेक होई तेहि कारण आजुपुर सब भूषित कियागया इतिधायीने कहा ताहि सुनि तुरतही जाय कैकेयी प्रति मंथरा बोली एकांत स्थानमें पलंगपर बैठी बड़ेहैं नेत्र जाके भावसुखी सुभगा स्वरूप-वंतत्यहि कैकेयी प्रति मंथरा कहत हे मूढ़े भावतोको हानि लाभ नहीं सूझत हेदुर्भगे भावतेरी अभा-ग्य आई क्यों सोवतीहै विरोधपर आरूढ़हो तोको बड़ी भय प्राप्तभई ५२ ॥

नजानीषेऽतिसौन्दर्यमानिनीमत्तगामिनी ५३ रामस्यराज्ञोनुग्रहात्श्वोभिषेकोभ विष्यति ॥ तच्छ्रुत्वासहसोत्थायकैकेयीप्रियवादिनी ५४ तस्यैदिव्यंददौस्वर्णनू पुरंरत्नभूषितम् ॥ हर्षस्थानेकिमितिमेकथ्यतेभयमागतम् ५५ भरतादधिकोरा मःप्रियकृन्मेप्रियंवदः ॥ कौशल्यांमांसमंपश्यन्सदाशुश्रूषतेहिमाम् ५६ ॥

(मत्तगामिनीअतिसौंदर्यमानिनीनजानीषे) हेमत्तगजगामिनि तोको अपनी अत्यन्त सुन्दरता को मानहै ताते शिरपर भयप्राप्त भई ताको नहीं जानेउ अवसुनु ५३ (राज्ञोअनुग्रहात्श्वःरामस्य अभिषेकःभविष्यति) राजाकी अनुग्रहते काल्हि रामको राज्याभिषेक होई (तत्श्रुत्वाकैकेयी सहसा उत्थाय) तौन सुनिकै कैकेयी शीघ्रही उठी (प्रियवादिनी ५४ तस्यैरत्नभूषितम् दिव्यंस्वर्णनूपुरंद-दौ) प्रियवचन सुनावने वाली मन्थरा ताके अर्थ रत्नजटित दिव्य सोनेके नूपुर देतीभई (हर्षस्था नेभयंआगतम् इतिमेकिंकथ्यते) हर्षके स्थानमें भयको आगमन ऐसामो प्रति क्यों कहिरही है ५५ (प्रियंवदःरामःभरतात् अधिकःमेप्रियकृत्) प्रियवचन बोलने वाले राम भरतते अधिक मेरा प्यार करते हैं (कौशल्यांसमंमांपश्यन् मां हि सदाशुश्रूषते) कौशल्याकी बराबरि मोको देखतेहैं मेरी सदा सेवा करते हैं ५६ ॥

रामाद्भयंकिमापन्नंतवमूढेवदस्वमे ॥ तच्छ्रुत्वाविषसादाथकुब्जाकारणवैरिणी५७ शृणुमद्वचनंदेवियथार्थंतेमहद्भयम् ॥ त्वांतोषयन्सदाराजाप्रियवाक्यानिभाष ते ५८ कामुकोऽतथ्यवादीचत्वांवाचापरितोषयन् ॥ कार्यंकरोतितस्यावैराम मातुःसुपुष्कलम् ५९ मनस्येतन्निधायैवप्रेषयामासतेसुतम् ॥ भरतंमातुल कुलेप्रेषयामाससानुजम् ६० ॥

(रामात्किंभयंआपन्नं मूढेतवमेवदस्व) रघुनन्दनते कौनभय प्राप्तभई हेमूढ़े तू मोप्रति कहु अर्थात् कैकेयी प्रति मन्थरा कहत हे मत्तगजगामिनी तोको अत्यन्त सुन्दरताको अभिमान है भाव पतिको स्वाधीन जानती है ताते नहीं जानेउ शिरपर भय प्राप्तभई सो सुनु महाराजकी अनुग्रहते काल्हि रामको राज्याभिषेक होई इति मंगल बानीसुनि हर्षते कैकेयी तुरतहीं उठी प्रियवचन सुना वने वाली मंथरा ताके अर्थ रत्नजटित दिव्य सोनेके नूपुर देतभई पुनः कैकेयी बोली हे मन्थरा

आनन्दको स्थान राम राज्याभिषेक तामें भयको आगमन ऐसा प्रतिकूल वचन मो प्रति क्यों कहि रही है काहेते प्रियबचन बोलनेवाले राम भाव जाको शीलमय सुभाव अरु भरतते अधिक मेरेमें प्रीति राखते हैं अरु कौशल्याकी बराबरि मोको देखते हैं अरु निश्चय करि मेरी सदा सेवा करतेहैं तिन रघुनन्दनते मोको कौनभय प्राप्तभई हे मूढे मन्थरा जो भय होइ सो मोप्रति कहु (ततश्रुत्वाअथकुब्जाकारण वैरिणीविषसाद) तौन कैकेयीके वचन सुनि प्रथम तौ कुबरी सौभाविक कुचाली पुनः पूर्वजन्म कारणते रघुनन्दन प्रति वैरराखे भुवंगिनि समहै पुनः सरस्वती प्रेरणा विष सहित ते अधिक सबलभई अर्थात् पूर्वजन्म मन्थरा वैरोचनकी कन्याहै किसी समय युद्धमें यह अपनी मायाते देवतोंको बांधिलिया कन्या विचारि इन्द्र नहीं मारतेरहैं भगवान्के कहेते इन्द्र मारा वज्र शीग फाटिगया सोई भगवान्ते वैर मानेहै इति कारण वैरिणी है यह सत्योपाख्यानमें लिखा है ५७ (मत्वचनंशृणुदेवि यथार्थतेमहत्भयम्) मन्थरा कहत कि मेरे वचन सुनिये देवि सत्यही तेरे हेत बड़ीभय प्राप्तभई (त्वांतोपयन्राजाप्रियवाक्यानिसदाभापते) तेरे सन्तोष करिवेको राजा मीठे वचन सदा कहते हैं ५८ (कामुकःवअतथ्यवादी वाचात्वांपरितोपयन्) कामके वशते पुनः असत्य बोलने वाले महाराज झूठीबातोंते तेरा परितोष करिदेते हैं (राममातुःतस्यावैपुष्कलंकार्यंक रोति) रामकी माता तिनका निश्चय करिउत्तम कार्य करते हैं ५९ (एतत्एवमनसिनिधायतेसुतं प्रेषयामास) यही निश्चय मनसे विचारि महाराज तुम्हारे पुत्रको पठाय देतेभये (सानुजंभरतं मातुलकुलेप्रेषयामास) सहित शत्रुहन भरतहि मामा के कुलमें भाव ननिहालको पठाय दिये ज्ञाततुमको भी न होई अर्थात् कैकेई प्रति मंथरा बोली कि मेरे वचन सुनिये हेदेवि सत्यही तेरे हेत महाभय प्राप्तभई काहेते पेटते महाराज कौशल्या को हितराखे हैं अरु तेरे संतोष करिवेको मुहँते प्रियवचन कहते हैं काहेते इधरकामासक्तीते तुम्हें प्रसन्न राखा चाहैं अरु उधर कौशल्याको हित कीन चाहत ताते महाराज झूँठी बातोंते तुम्हारा परितोष करिदेते हैं अरु रामकी मातु जो है तिनको निश्चय करि उत्तम कार्य करतेहैं यही निश्चय मन में विचारि शत्रुहन सहित भरततुम्हारे पुत्रहि नन्हिहालको पठायदिये तब कार्य ठाने ६० ॥

सुमित्रायाःसमीचीनंभविष्यतिनसंशयः ॥ लक्ष्मणोराममन्वेतिराज्यांशोऽनुभवि
ष्यति ६१ भरतोराघवस्याग्रेकिंकरोवाभविष्यति ॥ विवास्यतेवानगरात्प्राणैर्वा
हार्य्यतेऽचिरात् ६२ त्वंतुदासीवकौशल्यांनित्यंपरिचरिष्यसि॥ ततोऽपिमरणंश्रे
योयत्सपत्न्याःपराभवः ६३ अतःशीघ्रंयतस्वाद्यभरतस्याभिषेचने॥ रामस्यवन
वासार्थंवर्षाणिनवपंचच ६४ ॥

(रामंअनुलक्ष्मणःइतिराज्यअंशःअनुभविष्यति) रामके अनुगामी लक्ष्मणहैं याते राज्य सुख भाग भी प्राप्तहोई ताते (समीचीनंसुमित्रायाःभविष्यतिसंशयःन)पूर्ववत् सुख सुमित्राको होई यामें संशय नहीं ६१ (रामस्यअग्रेभरतःवाकिंकरःभविष्यति) रामके आगे भरत यातौ सेवकहोयँगे (वा नगरात्विवास्यतेवाअचिरात्प्राणैःहार्य्यते) अथवा नगरते निकारिबाहेर करि दियेजायँगे वा थोरेही दिनमें प्राणन करिकै रहित होइँगे ६२ (तुत्वंदासीइवनित्यंकौशल्यांपरिचरिष्यसि)पुनः तुम दासी सम नित्यही कौशल्याकी सेवाकरोगी(यत्सपत्न्याःपराभवःततःअपिमरणंश्रेयो) जोसउतिनतेहारिकै रहनापरा ताते निश्चय करि मरिजानेही में कल्यान है६३ (अतःशीघ्रंभरतस्यअभिषेचने अद्ययतस्व

इसकारण शीघ्रही भरतके राज्याभिषेक होने को आजुही यत्नकरौ (नवचपंचवर्षाणिरामस्यव नवासार्थं) नउ पुनः पंच अर्थात् चौदह वर्ष रामको वनवास होने अर्थ यत्नकरौ अर्थात् कैकेयी प्रति मन्थरा कहत कि रामके अनुगामी लक्ष्मण हैं याते राज्य सुखको भागभी प्राप्त होई ताते सुमित्राको पूर्ववत् सुख प्राप्तरही यामें संशय नहीं अरु जो राम राजाभये तिनके आगे भरत यातौ सेवकाई करेंगे तौ घरमें रहने पावेंगे नाहींतो नगरते वाहेर करिदिये जायँगे कितौ थोरेही दिनमें प्राणन करिकै रहित होंइगे भाव जो वरावरी करेंगे तो थोरेही दिनोंमें मारिडारेजायँगे पुनः हे कैकेयी तुम दासी की समान निश्चही कौशल्याकी सेवा करौगी तव रहने पावोगी ताते जो सउतिन के तावेदार रहना परा तौ निश्चय मरिजानेहींमें कल्याण है शत्रुवशरहि जीवन वृथाहै इस कारण शीघ्रही भरतके राज्याभिषेक होनेकी आजुही यत्न करो पुनः चौदह वर्ष रामको वनवास होनेकी यत्न आजुही करो भाव रामके रहे उपद्रौ ठाढ़ होई अरु जो चौदह वर्ष वनमें रहेंगे तवतक भरत देशकोश मंत्री मित्र सेनासेनपस्वाधीन करिलेंइगे ६४ ॥

ततोरूढोभवेत्पुत्रःतव राज्ञिभविष्यति ॥ उपायं ते प्रवक्ष्यामिपूर्वमेवसुनिश्चितम्६५पुरादेवासुरेयुद्धेराजादशरथःस्वयम् ॥ इन्द्रेणयाचितोधन्वीसहायार्थंमहारथः ६६ जगामसेनयासार्द्धंत्वयासहशुभानने ॥ युद्धप्रकुर्वतस्तस्यराक्षसैःसहधन्विनः ६७ तदाक्षकीलोन्यपतच्छिन्नस्तत्रयनवेदसः ॥ त्वंतुहस्तंसमावेश्यकीलरंध्रेतिधैर्यतः ६८ ॥

(ततःअरूढ भवेत्तवपुत्रःराज्ञिभविष्यति) तव राज पदपर आरूढ़ रहेते तुम्हारे पुत्रकी राज्य पुष्ट होई (तेउपायंप्रवक्ष्यामिपूर्वंएवसुनिश्चितम्) तुमते उपाय मैं कहतीहौं जो पूर्वहींते निश्चय करिकै सुन्दरि निश्चिन्त वनी तयारहै सो सुनिये ६५ (पुरादेवासुरेयुद्धेसहायअर्थंइंद्रेणयाचितः) पूर्वकालमें देवासुर संग्राम विषे अपनी सहायता हेतु महाराजते इन्द्रने याचना किया वुलाये तव (महारथःधन्वीराजादशरथःस्वयम् ६६ जगाम) महारथी धनुष धारी राजा दशरथ आपु जातेभये कौन भांति (शुभाननेत्वयासहसेनयासार्द्धं) हे सुमुखी तुम सहित सेनासहित गये (तस्यराक्षसैः सहधन्विनःयुद्धंप्रकुर्वतः) तिन राक्षसन करिकै सहित धनुधारी महाराज युद्धकरते भये ६७ (तदा अक्षकीलःछिन्नःन्यपततत्तस्यसःनवेद) ता समय रथके धुराकी कील खियायकै गिरिपरी ताको सो राजा दशरथ नहीं जाने पाये (तुत्वंअतिधैर्यतःकीलरंध्रेहस्तंसमावेश्य) पुनः तुम वड़े धैर्यते कील के छिद्रमें अपना हाथ प्रवेश करिदिया अर्थात् कैकेयी प्रति मंथरा कहत कि जो चौदह वर्ष राम वनमें रहैं तव अकंटक राज्य पदपर आरूढ़ रहेते तुम्हारे पुत्रकी राज्य पुष्ट ह्वैजाई ताते रामको वन भरत को राज्य येदोऊ ह्वैजानेकी उपाय जो निश्चय करिकै निश्चिन्त सुन्दरि पूर्वहींते वनी तयारहै सो तुम प्रति मैं कहतीहौं सुनिये पूर्वकालमें देवता दैत्योंके युद्धमें इन्द्रने दशरथ महाराजते सहायता मांगी तव सेना लैकै तुमको संग लिहे महारथी धनुधारी महाराज दशरथ आपही जातेभये तहां धनुषवाणादि अस्त्र धारण कि हे महाराज तुम सहित रथपर आरूढ़ राक्षसनके साथ युद्ध करने लगे ता समय रथके धुराकी कील जो चक्रके वाहेर रहतीहै सो पूर्वते खियाय ढीलिपरिगई रहै सो गिरि परी ताको महाराजने नहीं जाना अरु तुम अत्यन्त धैर्यकरि कीलवाले धुराके छिद्रमों आपना हाथ प्रवेश करिदियो ताके आधार चक्र थँभा ६८ ॥

स्थितवत्यसितापांगीपतिप्राणपरीप्सया ॥ ततोहत्वाऽसुरान्सर्वान्ददर्शत्वामरिं दमः ६९ आश्चर्यंपरमंलेभेत्वामालिंग्यमुदान्वितः ॥ वृणीष्वयत्तेमनसिवांछि तंवरदोस्म्यहम् ७० वरद्वयंवृणीष्वत्वमेवंराजावदत्स्वयम् ॥ त्वयोक्तोवरदोराज न्यदिदत्तंवरद्वयम् ७१ त्वय्येवतिष्ठतुचिरंन्यासभूतंममानघ ॥ यदामेऽवस रोभूयात्तदादेहिवरद्वयम् ७२ ॥

(हेअसितअपांगीपतिप्राणपरीप्सयास्थितवति) हे श्यामनयनी अपने पतिके प्राणोंकी रक्षा हेत धुराके छिद्रमें हाथडारे स्थितरही (ततःअसुरान्सर्वान्हत्वाअरिंदमःत्वांददर्श) तब असुरनको सबको मारि शत्रुनको नाश करनेवाले महाराज तुमहिं देखतेभये ६९ (परमंआश्चर्यंलेभेमुदान्वितःत्वांआ लिंग्य) छिद्रमें हाथडारे देखि परम आश्चर्य मानि आनन्दसहित तुमहिं हृदयमें लगाय बोले (अ- स्म्यहंवांछितंवरदःयत्तेमनसिवृणीष्व) मैं तोको मनभावतवरदेउँगा जो तेरेमनभावै सोमांगु७० (त्वं द्वयंवरंवृणीष्वएवंराजास्वयंअवदत्) तुम दुइ वर मांगौ इसभांति महाराज आपही कहे(त्वयाउक्तःहे राजन्यदिद्वयंवरदत्तंवरदः) तुमने कहा हेमहाराज जो दुइ वर देनेके बरदायकहौ ७१ (हेअनघम मन्यासंभूतंत्वयिएवचिरंतिष्ठतु) हे निःपाप मेरेधरोहरि धरेहुये आपके पास वहुतकाल रहैंगे (मेय दाअवसरोभूयात्तदावरद्वयंदेहि) मोको जब अवसरहोई तब बर दोऊ दिहेउ अर्थात् कैकेयी प्रति मंथरा कहत कि हेश्यामनयनी तुम अपने पतिके प्राण बचाइबे हेत धुराके छिद्रमें हाथडारे स्थिर रही तब सब असुरनको मारि दशरथ महाराज तुमहिं देखे धुराछिद्रमें हाथडारेदेखि परम आश्चर्य माने भाव स्त्रीमें ऐसा धैर्य साहस जो रणसंकटमें सहायता दिये इति बिचारि प्रसन्नह्वै तुमहिं हृ- दयमें लगाय बोले कि हम तुमहिं मनभावत वर देइंगे जो तुम्हारे मनभावै सो दो वर मांगो इस भांति महाराज आपही कहे तब तुमने कहाकि हे राजन् जो दुइबरदेनेके वरदायकहौ तौ हे निःपाप मेरे धरोहरि धरेहुये आपके पास बहुतकाल रहैंगे भाव जबतक मैं न मांगों तबतक थाती राखेरहिये जब मोको अवसरहोई भाव जब मेरा कार्यलगी तब मांगोंगी तब दोऊ बरदान दीजिये ७२ ॥

तथेत्युक्त्वास्वयंराजामन्दिरंव्रजसुव्रते ॥ त्वत्तःश्रुतंमयापूर्वमिदानींस्मृतिराग गमत् ७३ अतःशीघ्रंप्रविश्याद्यक्रोधागारंरुषान्विता॥विमुच्यसर्वाभरणंसर्वतो पिविकीर्यच ७४ भूमावेवशयानात्वंतूष्णीमातिष्ठभामिनी ॥ यावत्सत्यंप्रतिज्ञाय राजाऽभीष्टंकरोतिते ७५ श्रुत्वात्रिवक्रयोक्तंतत्तदाकेकयनंदिनी॥तथ्यमेवाखिलं मेनेदुःसंगाहितविभ्रमा ७६ ॥

(सुव्रतेमंदिरंव्रजतथाइतिराजास्वयंउक्त्वा) तुम्हारे बचन सुनि महाराजबोले हे शुभव्रत धारण करनेवाली अब मंदिरहि चलौ जैसा कह्योहै तैसाही होई इस भांति राजा आपही कहे यह इति- हास (पूर्वंत्वत्तःमयाश्रुतंइदानींस्मृतिंआगतम्) पूर्वकालमें तुमहींते मैंने सुनारहै सोई यासमय मो को सुधि आइगई ७३ (अतःरुपान्विताअद्यशीघ्रंक्रोधागारंप्रविश्य) इससे क्रोधयुत आजु शीघ्रही कोपभवनमें पैठो (सर्वाभरणंविमुच्यचसर्वतःअपिविकीर्य) सब आभूषण उतारि पुनः सबभांति नि- श्चयकरि कुरूपह्वै ७४ (त्वंभूमौएवशयानाभामिनीतूष्णीमातिष्ठ) तुम भूमिपै निश्चयकरि शयन कीन्हेउ पुनः हेभामिनी मौन परीरह्यो कबतक (यावत्राजासत्यंप्रतिज्ञायतेअभीष्टंकरोति) जबतक

महराज सत्य प्रतिज्ञा करि तेरेमनोरथको पूर्ण न करें७५ (त्रिवक्रयाउक्तंतत्श्रुत्वातदाकेकयनंदिनी) तानि अंगनकी कुवरीके कहे वचन तिनहिं सुनि तब कैकेयी (अखिलंएवतथ्यंमेनेदुःसंगअहितविभ्रमा)सब बातोंको निश्चयकरि सत्यमानिलिये यह कुसंगको प्रभावहै जो अहितको विभ्रम वशहै हित माने अर्थात् केकेयी प्रति मंथरा कहत कि तुम्हारे वचन सुनि महाराज बोले कि हेसुव्रते जैसा कह्यो है तैसाही होई भाव देऊवर धातीहैं जब चहयो तब मांगिलिह्यो यह वचन राजा आपही कहे यह इतिहास पूर्वकालमें तुम्हारेही मुखते मैंने सुनारहै सोई या समयमें मोको सुधि आइगई इस से क्रोध सहित आजुही की राति शीघ्रही कोपभवन में पैठो भावप्रातहोतही रामको राज्याभिषेक हुवैजाई तब कुछु न बनिपरी ताते अबही कोपभवन में जाउ सब भूषण वसन उतारि मलिन वसन पहिरि शिर उघारि बिना बिछौना भूमिपै शयन किहे मौनह्वै तबतक परीरह्यो जबतक महाराज सत्य प्रतिज्ञाकरि तुम्हारे मनोरथको पूरा न करैं इत्यादि कुबरीने कहा तिनको सुनि तब केकेयीने सब सत्य मानिलिया यह कुसंगको प्रभाव है कि विभ्रम बशते अहितको हितमाने ७६ ॥

तामाहकैकयीदुष्टाकुतस्तेबुद्धिरीदृशी॥ एवंत्वांबुद्धिसम्पन्नांनजानेवक्रसुन्दरि७७
भरतोयदिराजासेभविष्यतिसुतःप्रियः ॥ ग्रामान्शतम्प्रदास्यामिममत्वंप्राणवल्लभा ७८ इत्युक्त्वाकोपभवनंप्रविश्यसहसारुषा॥ विमुच्यसर्वाभरणंपरिकीर्य समंततः ॥ भूमौशयानामलिनामलिनाम्बरधारिणी ७९ प्रोवाचशृणुमेकुब्जेयावद्रामोवनंव्रजेत् ॥ प्राणांस्त्यक्ष्येऽथवावक्रेशयिष्येतावदेवहि ८० ॥

(तां दुष्टाकैकेयीआह ईदृशी बुद्धिः तेकुतः) त्यहि मंथरा प्रति दुष्टा कैकेयी बोली हे मंथरा इस प्रकार की बुद्धि तेरे कहां ते भई (वक्रसुन्दरीत्वां एवंबुद्धिसम्पन्नां न जाने) हे कुबरी सुन्दरी तोहिं ऐसी बुद्धिवन्त मैं नहीं जानती रहीं ७७ (मे प्रियसुतः भरत. यदि राजा भविष्यति) मेरे प्रियपुत्र भरत जो राजा होयँगे तौ तोको (शतंग्रामान्प्रदास्यामि त्वं ममप्राणवल्लभा) सौ गांव देउँगी तू मोको प्राणसम प्रिया है ७८ (इतिउक्त्वा रुषा सहसा कोपभवनंप्रविश्य) ऐसा कहि क्रोधित ह्वै तुरतहीं कोपभवन में गई (सर्वाभरणंविमुच्यसमंततःपरिकीर्य) सर्वांग भूषण वसन उतारि सम्पूर्ण कुरूपता बनाय (मलिनाम्बर धारिणी मलिनाभूमौ शयाना) मैले वस्त्र पहिरि मैली ह्वै भूमि पै पड़ी ७९ (प्रोवाचकुब्जेमेशृणुयावत्राम.वनंव्रजेत्) केकेयी बोली हे कुब्जे मेरे वचन सुन जबतक राम वनहिं न जायँगे (तावत्एवहि शयिष्ये अथवा वक्रेप्राणांस्त्यक्ष्ये)तबतक निश्चय करि भूमिपै परी रहोंगी अथवा हे कुबरी प्राणै त्यागोंगी अर्थात् त्यहि मन्थराप्रति दुष्टा केकेयी बोली हे मंथरे इसप्रकार आगम जानिलेनेवाली बुद्धि तेरे कहाँते भई हे कुबिजा सुन्दरी तोहिं ऐसी बुद्धिवन्त मैं नहीं जानती रहों अब मेरे प्रिय पुत्र भरत जो राज्य पदपर आरूढ़ होइँगे तब तोको सो गांव माफी देदेउँगी काहेते हेमंथरा तू मोको प्राणनसम प्रियहै ऐसा कहि केकेयी क्रोधितह्वै तुरतहीं कोपभवनमें गई सर्वांगके भूषण उत्तम वसन उतारि डारिदिया केश छोरि अंजन सिंदूर पोछि देहमें धूरि लगाय सर्वांग कुरूपता बनाय इति मैलीह्वै मैले वस्त्र पहिरि भूमिपै परी पुनः केकेयी बोली हे कुब्जे मेरे दृढ़ वचन सुनु अब जबतक मुनि वेष बनाय राम वनवासको न जायँगे तबतक इसी प्रकार भूतलमें परीरहौंगी अथवा हे कुब्जे जो मेरा मनोरथ न भया तो प्राणै त्यागिदेउँगी भाव विना वरदानपाये किसीभांति काहूके समुझाये न मानोंगी इति पुष्टजानु ८० ॥

निश्चयंकुरुकल्याणिकल्याणंतेभविष्यति ॥ इत्युक्त्वाप्रययौकुब्जागृहंसाऽपि तथाकरोत् ८१ धीरोत्यन्तदयान्वितोऽपिसुगुणाचारान्वितोवाऽथवा नीतिज्ञो विधिवाददेशिकपरोविद्याविवेकोऽथवा दुष्टानामतिपापभावितधियांसंगंसदाचे द्भजेत् तद्बुद्ध्यापरिभावितोव्रजतितत्साम्यंक्रमेणस्फुटम् ८२ ॥

(कल्याणि निश्चयंकुरु ते कल्याणं भविष्यति) हेकल्याणि निश्चय कोपकरु इसीमें तेराकल्याण होयगो (इति उक्त्वा कुब्जागृहंययौ सा तथा अपि अकरोत्) ऐसा कहि कुवरी घरको गई अरु सो कैकेयी तैसेही निश्चयकरि करती भई ८१ (धीरःअत्यन्त दयान्वितः) धीर्यवन्त अत्यन्त दयासहित होइ (अपिगुणाःवा आचारान्वितः) निश्चयकरि शीलादि गुण होइ वा वर्णाश्रमके धर्म कर्म परिपूर्ण आरूढ रहनेवाला (नीतिज्ञः अथवा विधिवाददेशिकपरो) नीति जाननेवाला अथवा शास्त्र जानने वाला तथा गुरुभक्त (अथवा विद्याविवेकः) अथवा सब विद्यापढ़े सारासारको जाननेवाला ऐसेह जन ह्वै के जो (अतिपापभावित धियां दुष्टानां संगं चेत्सदा भजेत्) अत्यन्त पाप मिलीहुई बुद्धि जिनकी ऐसे दुष्टनको संग जो सदा सेवनकरै तौ (तत्परिभावितः बुद्ध्या क्रमेण स्फुटम् तत्साम्यं व्रजति) तिन सुमार्गिनकी उत्तम संस्कार मिली भी बुद्धि क्रम करिकै धीरा धीरा पुष्ट तिन दुष्टनैकी समान ह्वैजातीहै अर्थात् समुझाय पुष्टकरि कोपभवनमें पठै पुनः कैकेयी प्रति मंथरा कहत हे कल्याण स्वरूपे निश्चय हठकरु इसी में तेरा कल्याण होयगो ऐसा कहि घरको गई अरु जैसे मंथरा कहा तैसेही कैकेयी करती भई इस कुसंगको प्रभाव शिवजी कहत हे गिरिजाधीर यथा भगवद्गुणदर्पणे ॥ वेगेनावध्यमाने स्वं मितेकामक्रोधयोः । गदितंधीमतांधैर्यंवलेभूयसि ते- जसि ॥ अर्थात् कामक्रोधादिको वेग मनमें न व्यापै तथा हानि वियोग शूल शत्रु संघादि संकटको वेगमनमें न व्यापै ताको धीर्य कही इति धैर्यवंत पुनः दया दयावतांज्ञेयंस्वार्थे यत्रन कारणम् अर्थात् वे स्वारथ जीवनकी रक्षा करना सोई दयाहै इति अत्यन्त दया युतहोइ पुनः शीलक्षमा शांति संतोष सौलभ्य उदारतादि निश्चय करिकै जामें अनेक गुणहोय अथवा अपने वर्णाश्रमके धर्म कर्मनपर सदा तत्पर होइ पुनः नीतिलोकमत वेदमत साधुमत इनकी अनुकूल कार्यकरना इति नीति जान नेवाला अथवा शास्त्र जाननेवाला भाव धर्म शास्त्रमें प्रवीण तथा गुरुभक्त अथवा व्याकरणादि सब विद्या पढ़े सारासार जाननेवाला ऐसाहूजन ह्वैकै जो अत्यन्त पापनकी सानीहुई बुद्धि जिनकी ऐसे दुष्टनको संग जो सदा सेवन करै भावलगे वैठे उनकी वातें सदा सुना करै तो तिन सुमार्गिन की नीति धर्म धीर्य विद्या विवेक दयादि उत्तम संस्कार मिली भी बुद्धि क्रम करिकै धीरा धीरा वढ़त संते कछु कालमें तिन दुष्टनैकी ऐसी पापमय पुष्टबुद्धि ह्वैजाती है ८२ ॥

अतःसंगःपरित्याज्योदुष्टानांसर्वदैवहि ॥ दुःसंगीच्यवतेस्वार्थाद्यथेयंराजकन्यका ८३ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसम्वादेअयोध्याकाण्डेद्वितीयःसर्गः २ ॥

(अतःदुष्टानांसंगःसर्वदाएवहिपरित्याज्यः) इस कारणते दुष्टनको संग सर्वकालमें निश्चय करिकै परि त्यागकीजे काहेते (दुःसंगःस्वार्थात्च्यवतेयथाइयंराजकन्यका) दुस्संग के प्रभावते सु- जनभी अपने परमारथ पथतेच्युत होते हैं यथा यह राजकन्यादुष्ट भई अर्थात् शिवजी कहते हैं हे गिरिजा कैसेहू उत्तम जनहोइ जो दुष्टन को संगकरै तो सोभी दुष्टवत ह्वै जाय इस कारण सर्व

समय निश्चयकरि दुष्टनको संगत्यागेरहै भाव न उनके लगे बैठै न उनकी वार्त्ता सुनै न उनते आ-
पना हित कहै काहेते दुःसंग के प्रभावते सुजन भी अपने परमारथ पथते गिरि दुष्टवत् ह्वै जाते हैं
यथा केकय राजकन्या कैकेयी शीलवन्त सहज सुभाव कुलवन्ती उत्तम पतिव्रता सोऊ मंथरा दुष्टा
के संगते दुष्टा ह्वै गई ८३ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतबैजनाथविरचितेअध्यात्मभूषणेअयोध्या
काण्डेशारदाप्रेरितमन्थराउपदेशात्कैकेयीकोपभवनप्राप्तवर्णनोनामद्वितीयःप्रकाशः २ ॥

श्रीमहादेवउवाच ॥ ततोदशरथोराजारामाभ्युदयकारणात् ॥ आदिश्यमंत्रिप्रकृ
तीःसानन्दोगृहमाविशत् १ तत्रादृष्ट्वाप्रियांराजाकिमेतदितिविह्वलः ॥ यापुरामं
दिरंतस्याःप्रविष्टेमयिशोभना २ हसंतीमामुपायातिसाकिंनैवाद्यदृश्यते ॥ इत्या
त्मन्येवसंचिंत्यमनसाऽतिविदूयता ३ ॥

सवैया ॥ नृपसों वर केकयि मांगि लिये युवराजकरौ ममनन्दनको।बनवासकरैं तिमि राघव सो
सुनि शोक भयो दशस्यन्दनको ॥ प्रभु आय पितै समुझाय पुनःगमने जननीपद बन्दनको । कृतबंदन
बैजसुनाथ सदा सिय सानुज श्रीरघुनन्दनको १ (ततःराजादशरथःरामाभिउदयकारणात्मंत्रिप्रकृती
आदिश्यसआनन्दःगृहंअविशत्)तदनन्तर राजादशरथ महाराज रघुनन्दनके विभव उदयहोने कारण
ते सुमंत्रादि सब मंत्रिनको तथा सबप्रजालोगनको यथायोग्य कार्यकरिबेको आज्ञादैकै सहितआनन्द
कैकेयीके मंदिरमें पैठे १(तत्रराजाप्रियांअदृष्ट्वाएतत्किंइतिविह्वलः) तहां राजा अपनी प्रिया जो
कैकेयी ताहि सन्मुख न देखे तब विचारे कि यह क्या कारणहै इति विचारि शोचते, बिकल ह्वै पुनः
विचारने लगे (तस्यामंदिरंमयिप्रविष्टेयाशोभनापुरा) ताके मंदिरमें मेरे पैठतसंते जो शोभामय
पूर्वहीं आगे आवती रहै२ (हसंतीमांउपायातिसाअद्यएवकिंनदृश्यते) हँसत मेरेसमीप आवती
रहै सो आजु निश्चयकरिकै काहे नहीं देखि परती है (इतिआत्मनिएवसंचिंत्यमनसाअतिविदूयता)
ऐसा आत्माबिषे निश्चय चिंतवन करि मन अत्यंत संतप्तभया अर्थात् रघुनन्दनके राज्याभिषेक में
विभव साजके व्यापार करनेको मंत्री पुरवासिनको आज्ञादै प्रसन्न कैकेयी के मंदिरको गये भीतर
पैठतहीं प्रियपत्नी कैकेयीको नदेखे तैसेही शंका करिकै विकलह्वैगये कि यह क्या कारणहै कि जब
मैं इसके मंदिरको आवतारहौं द्वारमें पैठतही सर्वांग शृंगारकीन्हे शोभामय पूर्वहीं आय हँसिकै मेरे
को मिलतीरहै सो आजु निश्चय करिकै काहे नहीं देखि परतीहै इत्यादि आत्माविषे निश्चय चिंत-
वन करि भाव मंगल काजमें जो उदासीनताहै तौ कराल बाधाहै तौ ईश्वर कैसे कुशल निबाही
इत्यादि चिंतवन करि मनमें महासंताप भया ३ ॥

पप्रच्छदासीनिकरंकुतोवःस्वामिनीशुभा ॥ नयातिमांयथापूर्वंमत्प्रियाप्रियदर्श
ना ४ ताऊचुःक्रोधभवनंप्रविष्टानैवविद्महे ॥ कारणंतत्रदेवत्वंगत्वानिश्चेतुमर्ह
सि ५ इत्युक्तोभयसंत्रस्तोराजातस्याःसमीपगः ॥ उपविश्यशनैर्देहंस्पृशन्पाणि
नाब्रवीत् ६ किंशेषेवसुधापृष्ठेपर्यङ्कादीन्विहायच ॥ मांत्वंखेदयसेभीरुयतोमां
नाभिभाषसे ७ ॥

(दासीनिकरंपप्रच्छवःस्वामिनीशुभाकुतः) दासी जो समूहहैं तिनते महाराज पूछे कि तुम्हारी स्वामिनी मंगलीक कहाँ हैं (प्रियदर्शनामत्प्रियापूर्ववैयथामांनआयाति) प्रियहै दर्शन जाको सो मेरी प्रिया पूर्व जैसे मेरे पास आवती रहै तैसे नहीं आई तो कौन कारणहै अर्थात् जब कैकेयीको न देखे तब जो दासी समूह रहैं तिनते महाराज पूछे कि आजु तुम्हारी स्वामिनी मंगल मूर्त्ति कहां हैं जो देखतहीं प्रिय लागत सो मेरी प्राण प्रिया पूर्व सदा जैसे मेरे पासको आवती रहै तैसे या समय नहीं आई तो कौन कारणहै सो कहौ ४ (ताःऊचुःक्रोधभवनंप्रविष्टाकारणंएवनविद्महे) तौनी सब दासी बोलीं कि कोपभवनमें प्रवेश भई हैं ताको कारण निश्चय करिहम नहीं जानतीहैं (देवतत्र गत्वात्वंनिश्चेतुमर्हसि) हे देव तहां जाइये कारण निश्चय करिबेको आपही समर्थहौ ५ (इति उक्तःभयसंत्रस्तः) इत्यादि दासियोंने कहा तब भयकरिकै अधीर (राजातस्यसमीपगः) महाराज त्यहि कैकेयीके पास गये (उपविश्यपाणिनाशनैःदेहंस्पृशन्अब्रवीत्) तहां बैठि हाथ करिकै धीरे ताकी देह छुइ महाराज बोलते भये ६ (पर्यंकआदीन्विहायचवसुधापृष्ठेकिंशेषे) पलंगादि बिछौना त्यागि पुनः भूमिपर काहे पौढ़ीहौ (भीरुत्वंमांखेदयसेयतःमांनवभाषसे) हे भीरु तू मोहिं खेद करावती है जो मोहिं प्रति प्रसन्नह्वै बोलती नहीं है अर्थात् जब महाराज पूछे तब दासी गण बोलीं कि रानीजी कोपभवनमें गई हैं परन्तु याको कारण निश्चय करि हम नहीं जानतीहैं हे महाराज उहां जाइये कोपको कारण निश्चय करि जानबेको आपही योग्यहौ इति दासियोंने कहा तैसे डरकरिकै अधीर महाराज त्यहि कैकेयीके पास जाय बैठि हाथन करिकै धीराते ताकी देह पकरि महाराज बोले कि तकिया तोसक पलंगादि त्यागि क्यों भूमिपर परीहौ हे भीरुभाव तेरासदा स्वभाव रहै अब तूसक्रोधित ह्वै मोको खेदमानसी दुःख करावती है जो प्रसन्न मन मोसों बोलती नहींहै ७॥

अलंकारंपरित्यज्यभूमौमलिनवाससा॥ किमर्थंब्रूहिसंकल्पंविधास्येतववाञ्छितम् ८ कोवातवाहितंकर्त्तानारीवापुरुषोऽपिवा॥ समेदण्ड्यश्चवध्यश्चभविष्यति नसंशयः ९ ब्रूहिदेवियथाप्रीतिस्तदवश्यंममाग्रतः॥ तदिदानींसाधयिष्येसुदुर्लभमपिक्षणात् १० जानासित्वंममस्वान्तंप्रियेमांस्ववशेस्थितम्॥ तथापिमांखेदयसेवृथातवपरिश्रमः ११ ब्रूहिकंधनिनंकुर्यान्दरिद्रंतेप्रियंकरम्॥ धनिनंक्षणमात्रेणनिर्द्धनंचतवाहितम् १२ ब्रूहिकंवावधिष्यामिवधार्होवाविमोक्ष्यसे॥ किमत्रबहुनोक्तेनप्राणान्दास्यामितेप्रिये १३॥

(अलंकारंपरित्यज्यमलिनबाससाभूमौकिंअर्थंसकल्पंब्रूहितववांछितम्विधास्ये) कैकेयी प्रति महाराज कहत हैं प्रिया भूषण बसन परित्याग करि मलीन बसन सहित भूमि बिषे कौने कार्य अर्थ परीहौ सो सब हाल कहौ तुम्हारा मनोर्थ पूर्ण करिहौं ८ (तवअहितंकर्त्ताकःवानारीवाअपिपुरुषःवासमेदण्ड्यःचवध्यःचभविष्यतिसंशयःन)हे प्रियातेरा अहित करनेवाला कौन वहहै चहै नारिहोइ अथवा निश्चय करिकै पुरुषहोय सो मेरेदण्डमें परी बावाकी मृत्यु होई यामें संशय नहीं है सत्य जानु९ (देवियथाप्रीतिःतत्ममअग्रतः अवश्यंब्रूहिदुर्लभंअपितत्इदानींक्षणात्साधयिष्ये) हे देवि जैसी तेरी रुचि होइ तौन बात हमारे आगे अवश्य कहु जो निश्चय करि दुर्लभभी बस्तु होई तौन अबहीं क्षण भरेमें कार्य पूरा करिसकाहौं १० (प्रियेमांस्ववशेस्थितम्ममस्वअन्तंत्वंजानासितथापिमांखेदयसेतवपरिश्रमःवृथा) हे प्रिये मोहिं अपनी बशकरि राखे मेरेआपने अन्तरकी अभिप्राय जानती है

कि मैं तेरेही वशहों ताहूपर मोहिं खेद करावती है तो तेरा परिश्रम करना मिथ्याहै भाव आपना मनोर्थ क्यों न कहै ११ (ब्रूहितेप्रियंकरमूकंदरिद्रंधनिनंकुर्यात्तवअहितंधनिनंक्षणमात्रेणनिर्द्धनं) कहु तेरे हितकार कौने दरिद्रीको धनी करिदेंउ कहु तेरे अहित करनेवाले कौने धनीको क्षणमात्रमें निर्द्धन करिदेंउ१२ (वाब्रूहिकंवधिष्यामिवावधार्हःविमोक्ष्यसेअत्रवहुनाउक्तेनकिंप्रियेप्राणंतेदास्यामि) अथवा कहु किसको वध करौं अथवा जो वध करबे योग्य होय ताको कहु छांड़िदेंउ इहां बहुत कहने ते क्याहै हेप्रिये परमप्यारे जो आपने प्राणहैं सोभी तेरेअर्थ दैसक्ताहों १३ ॥

ममप्राणात्प्रियतरोरामोराजीवलोचनः ॥ तस्योपरिशपेब्रूहित्वद्धितंतत्करोम्यह
म् १४ इतिब्रुवाणंराजानंशपन्तंराघवोपरि ॥ शनैर्विमृज्यनेत्रेसाराजानप्रत्यभा
षत १५ यदिसत्यप्रतिज्ञोसिशपथंकुरुषेयदि ॥ याच्ञामेसफलीकर्तुंशीघ्रमेवत्व
मर्हसि १६ पूर्वंदेवासुरेयुद्धेमयात्वंपरिरक्षितः ॥ तदावरद्वयंदत्तंत्वयामेतुष्टचेत
सा १७ तद्द्वयंन्यासभूतंमेस्थापितंत्वयिसुव्रत ॥ तत्रैकेनवरेणाशुभरतंमेप्रियं
सुतम् १८ एभिःसम्भूतसम्भारैर्यौवराज्येऽभिषेचय ॥ अपरेणवरेणाशुरामोग
च्छतुदण्डकान् १९ ॥

(ममप्राणात्प्रियतरःराजीवलोचनःरामःतस्यउपरिशपेब्रूहित्वत्हितंतत्अहंकरोमि) मेरे प्राणते अधिक प्रिय कमलनयन रामहैं तिनके ऊपर शपथ करताहों हे प्रिये कहु जामें तेरा हितहोइ तौन मैंकरौं१४ (राघवःउपरिशपंतंइतिराजानंब्रुवाणंसाशनैःनेत्रेविमृज्यराजानंप्रतिअभाषत) रघुनंदनके ऊपर शपथहै इत्यादि राजा कहे तब सो कैकेयी धीरा धीरा नेत्रमें आंशुपोछि राजा प्रति बोलती भई १५ (यदिसत्यप्रतिज्ञोसियदिशपथंकुरुषेमेयाच्ञाशीघ्रंएवसफलःकर्तुंत्वंअर्हसि) कैकेयी बोली हेमहाराज जो सत्यप्रतिज्ञहौ जो रामकी शपथ करतेहौ तौ मेरे मांगनको शीघ्रही निश्चय करि कै सफल करिबेको आप योग्यहौ १६ (पूर्वदेवासुरेयुद्धेत्वंमयापरिरक्षितःतदातुष्टचेतसात्वयावरद्वयंमेदत्तं) पूर्व समय देवता दैत्योंके युद्धमें आपकी मैंने रक्षा कीन्ही भावकठिन युद्धसमय रथके धुराकी कील गिरि गई आपने नहींजाना अरु मैंउस छेदमेंहाथडारे रही सोदेखि प्रसन्नचित्त सहित आपनेवरद्वय मोको दिया १७ (तत्द्वयंमेस्थापितं त्वयिन्यासभूतं हेसुव्रत तत्रएकेनवरेण मे प्रियंसुतं भरतं आशु) तौनिबर दोउ मेरे धरो हरि धरेहुये आपकेपास थातीहैं हेसुधर्मव्रतधारी तामें एक वरदान करिकै मेरे प्रियपुत्र जो भरत हैं ताहि शीघ्रही१८ (सम्भूतसम्भारैःएभिःराज्यःअभिषेचय अपरेणवरेण रामःआशुदण्डकान् गच्छतु) रामराज्यहित उपार्जन किई हुई जो सब सामग्री है इसी करिकै. मेरेपुत्रको युवराजपदपर राज्याभिषेक करौ तथा अपर दूसरे वरदान करिकै राम शीघ्रही भाव प्रात होतहीं दण्डकवन जो है तहां को गमन करैं कौनभांति सो आचरण आगे कहतीहै १९ ॥

मुनिवेषधरःश्रीमान्जटावल्कलभूषणः ॥ चतुर्दशसमास्तत्रकंदमूलफलाश
नः२० पुनरायातुतस्यांतेवनेवातिष्ठतुस्वयम् ॥ प्रभातेगच्छतुवनंरामोराजीवलो
चनः२१ यदिकिंचिद्विलंबेतप्राणांस्त्यक्ष्येतवाग्रतः ॥भवसत्यप्रतिज्ञस्त्वमेतदेवम
मप्रियम् २२ श्रुत्वैतद्दारुणंवाक्यंकैकेय्यारोमहर्षणम् ॥ निपपातमहीपालोवज्रा
हतइवाचलः २३ शनैरुन्मील्यनयनेविमृज्यपरयाभिया ॥ दुस्स्वप्नोवामयादृष्टो

ह्यथवाचित्तविभ्रमः २४ इत्यालोक्यपुरःपत्नींव्याघ्रीमिवपुरःस्थितां ॥ किमिदं भाषसेभद्रेममप्राणहरंवचः २५ ॥

(श्रीमान्जटावल्कलभूषणःमुनिवेषधरःतत्रचतुर्दशसमाःकंदमूलफलअशनः) श्रीमान् जोरामसो शीशमें जटा वृक्षके बकला इत्यादि बसन तनमें भूषितकरि इस भांति मुनिको ऐसो वेष धरि तहां दण्डकवनमें चौदह वर्ष तक बराबरि कंदमूल फल भोजन करैं २० (तस्यअंतेपुनःआयातुवास्वयंब नेतिष्ठतुरामराजीवलोचनःप्रभातेवनंगच्छतु) तिस चौदह वर्षके अंतभये पुनः घरको आवहिं वा अपनी इच्छाते बनैमें बास किहेरहैं अब राम कमलनयन प्रातहोत संते बनहिं जाहिं २१ (यदिकिंचित्विलंबेततवअग्रतःप्राणांस्त्यक्ष्येएततूएवममप्रियंत्वंसत्यप्रतिज्ञभव) कैकेयी कहत हेमहाराज रघुनन्दनको बनजानेमें जो नेकहू बिलंब भई तौ आपके आगे प्राणै त्यागदेवोंगी यही निश्चय करिके मोको प्रियहै ताते आप सत्य प्रतिज्ञ हूजिये भाव अपनाकहा पूराकरो २२ (रोमहर्षणंदारुणंएतत्कैकेय्यावाक्यंश्रुत्वावज्राहतअचलःइव महीपालः निपपात) जिनकोसुनतै रोमखड़े होत ऐसे भयानक ये कैकेयी के वचन सुनि क्यादशा भई यथा इन्द्रके वज्र मारेते अपक्ष ह्वै पर्वत गिरे इसीभांति महाराज भूमिपैगिरे २३ (शनैःउन्मील्य नयने विमृज्यपरयासिग्रा वा दुःस्वप्नोदृष्टा हि अथवाचित्तविभ्रमः) महाराज किंचिच्चैतन्यह्वै धीराते पलक खोलि नेत्रमें आंशुपोछि बडेभय करिके विचारत किं या मैंने दुष्टस्वप्न देखा निश्चयकरि तातेसभीत हौं अथवा मोको चित्तभ्रमभया ताते बदहोशहौं २४ (इतिपुरःआलोक्य पत्नीव्याघ्रींइव पुरःस्थिताम् ममप्राणहरंवचःभद्रे किं इदंभाषसे) इति बिचारि आगेदेखे आपनी स्त्री बाघिनी असि आगे बैठिहै तब महाराज बोले कि मेरेप्राणहरणहारे वचन हे कल्याणरूपे ऐसा क्यों कहती है कि राम वनजाहिं २५ ॥

रामःकमपराधंतेकृतवान्कमलेक्षणः॥ममाग्रेराघवगुणान्वर्णयस्यनिशंशुभान्२६ कौशल्यांमांसमंपश्यन्शुश्रूषांकुरुतेसदा ॥ इतिब्रुवंतीत्वंपूर्वमिदानींभाषसेऽन्यथा २७ राज्यंगृहाणपुत्रायरामस्तिष्ठतुमंदिरे ॥ अनुगृह्णीष्वमांवामेरामान्नास्तिभयंतव २८ इत्युक्त्वाऽश्रुपरीताक्षःपादयोर्निपपातह ॥ कैकेयीप्रत्युवाचेदंसापिरक्तांतलोचना २९ राजेंद्रकिंत्वंभ्रांतोऽसिउक्तंतद्भाषसेन्यथा॥ मिथ्याकरोषिचेत्स्वीयंभाषितंनरकंभवेत् ३० वनंनगच्छेद्यदिरामचंद्रःप्रभातकालेऽजिनचीरयुक्तः॥ उद्बंधनंवाविषभक्षणंवाकृत्वामरिष्येपुरतस्तवाहम् ३१ ॥

(कमलेक्षणःरामःतेकिंअपराधंकृतवान्अनिशंममअग्रेराघवगुणान्शुभांवर्णयसि) कमल नयन राम तेरा क्या अपराध किया दिनोराति तो तू मेरे आगे रघुनन्दनके गुण मंगलीक बर्णन करती रहै २६ (मांकौशल्यांसमंपश्यन्सदाशुश्रूषांकुरुतेपूर्वंत्वंइतिब्रूवंतीइदानींअन्यथाभाषसे) मोहिं राम कौशल्याकी बराबर देखतेहैं सदा मेरी सेवा करतेहैं पहिले तो तू इसभांति कहतीरही अब औरै कछु कहतीहै भाव बनैजायँ २७ (पुत्रायराज्यंगृहाणरामःमंदिरेतिष्ठतुवामेमांअनुगृहणीष्वरामात्तवभयं नास्ति) अपने पुत्रके अर्थ राज्यले परन्तु राम मन्दिरमें रहैं हे बामे मोहिं पर अनुग्रह करु भाव अंगीकार करु अरु रामते तोको कछु भय डर नहीं है भाव तेरा कछु न बिगारैंगे २८ (अश्रुपरीताक्षः इतिउक्त्वापादयोः निपपातहसाकैकेयीरक्तांतलोचनःइदंप्रतिउवाच) आँशु बहत नेत्र इस प्रकार

आरतवचन कहि पायँन परे तब सो कैकेयी लाले नेत्र भाव सक्रोधित इसप्रकार राजासों बोली २९ (राजेंद्रत्वंकिंभ्रांतःअसिउक्तंतत्अन्यथाभापसेस्वीयंभापितंचेत्मिथ्याकरोपिनरकंभवेत्) हे राजेंद्र आपको क्या चित्त भ्रम प्राप्त भया जो पहिले कहि ताको अब कछु और कहतेहौ जोअपने कहेवचन को झूँठ करोगे तो तुमको नरक होई अरु मेरी अभिप्राय सुनिये ३० (अजिनचीरयुक्तःरामचन्द्रः प्रभातकालेयदिवनंनगच्छेत्वाउद्बंधनंवाविपभक्षणंकृत्वातवपुरतः अहंमरिष्ये) मृगचर्म वसन युक्त रामचन्द्र प्रभात होतसंते जोवनहिं न गये तौ कितौ गलबन्धन वा विप भक्षणकरि भाव फँसरी बांधि वाजहरखाइ तुम्हारे आगे मैं मरिजैहौं यह सत्य जानो ३१ ॥

सत्यप्रतिज्ञोऽहमितीहलोकेविडंबसेसर्वसभांतरेषु ॥ रामोपरित्वंशपथंचकृत्वामिथ्याप्रतिज्ञोनरकंप्रयाहि ३२ इत्युक्तःप्रिययादीनोमग्नेदुःखार्णवेनृपः ॥ मूर्च्छितः पतितो भूमौविसंज्ञोमृतकोयथा ३३ एवंरात्रिर्गतातस्यदुःखात्संवत्सरोपमा॥ अरुणोदयकालेतुवंदिनोगायकाजगुः ३४ निवारयित्वातान्सर्वान्कैकेयीरोषमास्थिता॥ततःप्रभातसमये मध्यकक्षमुपस्थिताः ३५ ब्राह्मणाःक्षत्रियावैश्याऋषयः कन्यकास्तथा ॥ क्षत्रंच चामरंदिव्यंगजोवाजीतथैवच ३६ ॥

(अहंसत्यप्रतिज्ञ:इतिइहलोकेसर्वसभाअंतरेपुविडंवसेचत्वंरामोपरिशपथंकृत्वामिथ्याप्रतिज्ञःनरकं प्रयाहि) हम सत्यप्रतिज्ञहैं भावजो कहतेहैं सोईकरतेहैं इत्यादिवचन इहिलोक विपेसवसभनकेवीचमें विडंवना करतेरहेउभाव क्या झूठही सत्यवादी वनेरहेउहै ताहूपर आप रघुनंदनकेऊपरशपथकिहेउहै अव जो मिथ्या प्रतिज्ञाभावजो कहेउ सोई न करौगे तो नरकहिजाउगे३२ (प्रियया इतिउक्तःनृपःदीनः दुःखअर्णवेमग्नःविसंज्ञःयथामृतकःमूर्च्छितःभूमौपतितः) राम वनहिं न जैहें तौमैं प्राण त्यागिहौं इत्यादि वचन प्राणप्रिया ने कहा अरुरघुनन्दन प्राणनते अधिक प्रियदोऊ असमंजसते महाराज दीन पुरुपारथ हीन दुःखरूप समुद्र में बूड़िगये कैसे वेसुधियथा मृतक मूर्च्छित ह्वै भूमिपर गिरि परे ३३ (एवंदुःखात्तस्यरात्रिःसंवत्सरउपमागतातुअरुणोदयकालेवंदिनःगायकःजगुः) इसीभांति महाराजको दुःखतेतौनिराति वर्पके समानवीती सूर्य उदयकाल विपेवंदीजन विरुदावलीवोले ढाढ़ी कलाउतादि गायक जन गावने लगे ३४ (रोषआस्थिताकैकेयीतान्सर्वान्निवारयित्वाततःप्रभात समयेमध्यकक्षंउपस्थिताः) क्रोधमें वसी ऐसी कैकेयी गायकादि सबको रोकि देतीभई तदनन्तर प्रभातसमय विपे मध्यकक्षा अर्थात् जनाने मर्दाने के वीचकी अंगनाईमें सहित साज सब समाज आय प्राप्तभई सो आगे कहत ३५ ब्राह्मण विद्यावंत क्षत्री देशीराजा लोग वैश्य महाजन लोग ऋषि वशिष्ठादि कन्यापोढशसभूपित तथा राज्याभिपेक योग्य दिव्य छत्रचामर तथागज सर्वांग सजा हुआ हाथी तैसेही निश्चय करि सजेहुये उत्तमघोड़े ३६ ॥

अन्याश्चवारमुख्यायाःपौरजानपदास्तथा ॥ वशिष्ठेनयथाज्ञप्तंतत्सर्वंतत्रसंस्थितम् ३७ स्त्रियोवालाश्चवृद्धाश्चरात्रौनिद्रांनलेभिरे ॥ कदाद्रक्ष्यामहेरामंपीतकौशेयवाससम् ३८ सर्वाभरणसम्पन्नंकिरीटकटकोज्वलम् ॥ कौस्तुभाभरणंश्यामंकन्दर्पशतसुन्दरम्३९ अभिषिक्तंसमायांतंगजारूढंस्मितान्नम्॥श्वेतछत्रधरं तत्रलक्ष्मणलक्षणान्वितम् ४० रामंकदावाद्रक्ष्यामःप्रभातंवाकदाभवेत् ॥ इत्यु

त्सुकधियःसर्वेबभूवुःपुरवासिनः ४१ नेदानीमुत्थितोराजाकिमर्थंचेतिचिंतयन् ॥
सुमंत्रःशनकैःप्रायाद्यत्रराजावतिष्ठते ४२ ॥

(अन्यावारमुख्यायाःचपौरतथाजानपदाःयथावशिष्ठेनअज्ञप्तंतत्सर्वंतत्रसंस्थितम्) औरहूँ वेश्या आदिक पुनः पुरवासी तैसे राज्यके वासी इत्यादि यथा वशिष्ठजीने आज्ञादियारहै तौन सवतहांपर प्राप्त भया ३७ (बालाःचवृद्धाःस्त्रियःचरात्रौनिद्रांनलेभिरेपीतकौशेयवाससम्रामंकदाद्रक्ष्यामहे) बाल तथा वृद्ध स्त्री पुरुप राति विपे नींद किसीने न लिया जागतैरहे किसहेत कि पीत रेशमी बसन धारण किहे रघुनन्दनको कब देखैंगे भाव राज्याभिषेक देखनेकी हर्पते पुरवासी लोगनको राति भरि नींद नहीं परी ३८ (किरीटकटकोज्वलम्सर्वआभरणसम्पन्नंकौस्तुभआभरणश्यामंशतकंदर्पसुंदरम्) किरीट कुंडल हार केयूर कड़ा मुद्रिकादि स्वर्ण हीरादि जटित उज्वले भूषणों तेसर्वांग भूपित कौस्तुभ मणि भूषण कंठमें भूषित श्याम तन सैकड़ों कामसम सुन्दर ३९ (अभिपिक्तंसंआयातंस्मितानन मृगजारूढंलक्षणान्वितम्लक्ष्मणम्तत्रश्वेतछत्र धरम्) अभिपेक भये पीछे आवते हैं मंद मुसुकानि युत प्रसन्न मुख सजे हाथीपर चढ़े उत्तम लक्षण युत लक्ष्मणजी तहाँ उज्वल दिव्य छत्र धारण किहेहैं ४० (प्रभातंवाकदाभवेत्रामंकदावाद्रक्ष्यामःइतिउत्सुकधियःपुरवासिनःसर्वेबभूवुः) प्रभात कबहोई कब इसी भांति रघुनन्दनहिं देखब ऐसी अभिलापयुत बुद्धि अवधपुर वासी जन सवह्वैरहे हैं तावत भोरभया ४१ (राजाकिंअर्थंइदानींनउत्थितःइतिचिंतयत्चयत्रराजावतिष्ठतेसुमंत्रःशनकैः प्रायात्) बशिष्ठादि सब समाज बिचार करतेहैं कि महाराज अबहीं नहींउठे तो क्या कारण ऐसा मनमें चिंतवन करि पुनः सबके पठायेते जहां महाराज रहैं तहांको सुमंत धीरा धीरा जातेभये४२॥

वर्द्धयन्जयशब्देनप्रणमञ्छिरसानृपम् ॥ अतिखिन्नंनृपंदृष्ट्वा कैकेयींसमपृच्छत्४३ देविकैकेयिवर्द्धस्वाकिंराजादृश्यतेऽन्यथा॥तमाहकैकेयीराजारात्रौनिद्रांनलब्धवान् ४४ रामरामेतिरामेतिराममेवानुचिंतयन् ॥ प्रजागरेणवैराजाह्यस्वस्थइवलक्ष्यते ४५ सुमंत्रबुद्धिसंपन्ननीतिशास्त्रविशारद ॥ राममानयशीघ्रंत्वं राजाद्रष्टुमिहेच्छति ४६ सुमंत्रउवाच ॥ अश्रुत्वाराजवचनंकथंगच्छामिभामिनि ॥ तच्छ्रुत्वामंत्रिणोवाक्यंराजामंत्रिणमब्रवीत् ४७ सुमंत्ररामंद्रक्ष्यामिशीघ्रमानयसुंदरम् ॥ इत्युक्तस्त्वरितंगत्वासुमंत्रोराममंदिरम् ४८ अवारितःप्रविष्टोऽयं त्वरितंराममब्रवीत् ॥ शीघ्रमागच्छभद्रंतेरामराजीवलोचन ४९ ॥

(जयशब्देनवर्द्धयन्नृपंशिरसाप्रणमत्नृपंअतिखिन्नंदृष्ट्वाकैकेयीसंअपृच्छत्) जय शब्द करि बढ़ती मनाय महाराज जो हैं तिनहिं शीश नवाय प्रणाम कीन्हे पुनः महाराजको अत्यंत दुःख सहित देखि सुमंत कैकेयीसों पूछतेभये४३(देविकैकेयिबर्द्धस्वराजाअन्यथाकिंदृश्यतेकैकेयीतंआहरात्रौ राजानिद्रांनलब्धवान्) सुमंत बोले हेदेवि कैकेयि आपकी बढ़तीहोवै बताइये महाराज और भांति क्यहि कारण देखाते हैं भाव ऐसा दुःख क्यहि कारणभया तब कैकेयी तिन प्रति बोली कि राति विषे राजा नींद नहीं लीन्हे ४४ (रामरामइतिरामइतिएवरामंअनुचिंतयन्प्रजागरेणवैराजाहिअस्वस्थइवलक्ष्यते) राम राम राम इसी भांति निश्चयकरि रामहिंको चिंतवन करतेरहे ताते प्रकर्षकरि जागनेमें महाराज असावधान ऐसे देखाते हैं ४५ ॥

नीति शास्त्र विशारद बुद्धिसंपन्नसुमंत्रइहराजाद्रष्टुंइच्छतित्वंशीघ्रंरामंआनय) नीति शास्त्रमें प्रवीन बुद्धिवंत हे सुमंत्र यहिसमय राजा देखनेकी इच्छाकिहे हैं ताते तुम शीघ्रही रामहिं लवायलावो ४६ (भामिनीराजवचनंअश्रुत्वाकथंगच्छामिमंत्रिणोवाक्यंतत्श्रुत्वामंत्रिणंराजाअब्रवीत्) सुमंत्र बोले कि हे भामिनी विना राजाके वचन भाव विना महाराजकी आज्ञापाये रघुनन्दनको बुलावै कैसे मैं जाउँ इति मंत्रीके वचन तिनको सुनि मंत्री प्रति महाराज बोलते भये ४७ (सुमंत्रद्रक्ष्यामिरामसुन्दरम् शीघ्रंआनयइतिउक्तःसुमंत्रःराममन्दिरम्त्वरितंगत्वा)महाराज बोले हे सुमंत्र मोको देखनेकीइच्छा है सुन्दर रघुनन्दनको शीघ्रही लवायलावो इत्यादि जब महाराज कहे तब सुमंत्र तुरतही रघुनन्दन के मन्दिरको गये ४८ (अवारितःअयंप्रविष्टत्वरितंरामंअब्रवीत्रामराजीवलोचनतेभद्रंशीघ्रंआगच्छ) किसी ने रोका नहीं ये सुमंत मन्दिरके भीतर चलेगये तुरतही रघुनन्दन प्रति बोले हे राम कमल नयन आपको कल्याण होइ शीघ्रही चलिये किसहेत सो आगे कहत ४९ ॥

पितुर्गेहंमयासार्द्धंराजात्वांद्रष्टुमिच्छति ॥ इत्युक्तोरथमारुह्यसम्भ्रमात्त्वरितोययौ ५० रामःसारथिनासार्द्धंलक्ष्मणेनसमन्वितः ॥ मध्यकक्षेवशिष्ठादीन्पश्यन्नेवत्वरान्वितः ५१ पितुःसमीपंसंगम्यननामचरणौपितुः ॥ राममालिंगितुंराजा समुत्थायससम्भ्रमः ५२ बाहूप्रसार्यरामेतिदुःखान्मध्येपपातह ॥ हाहेतिरामस्तंशीघ्रमालिंग्यांकेन्यवेशयत् ५३ राजानंमूर्च्छितंदृष्ट्वाचुक्रुशुःसर्वयोषितः ॥ किमर्थंरोदनमितिवशिष्ठोऽपिसमाविशत् ५४ रामःपप्रच्छकिमिदंराज्ञोदुःखस्य कारणम् ॥ एवंपृच्छतिरामेसाकैकेयीराममब्रवीत् ५५ ॥

(मयासार्द्धंपितुःगेहंत्वांद्रष्टुंराजाइच्छतिइतिउक्तः संभ्रमारथंआरुह्यत्वरितोययौ) सुमंतबोले हे रघुनन्दन मेरे साथै पिताके घरको चलौ आपको देखनेकी महाराज इच्छा किहेहैं ऐसा कहि तब संभ्रम रथपर चढ़ि तुरतहीं चले ५० (सारथिनासार्द्धंलक्ष्मणेनसमन्वितःरामःमध्यकक्षेवशिष्ठादीन्पश्यत्त्वरान्विताएव) सुमंत्र सहित लक्ष्मणसाथ युक्त रघुनन्दन बीचके आंगनमें वशिष्ठ आदि गुरु जननकी समाज देखतहू थँभे नहीं आतुरता युत निश्चय करि भीतरहीको चलेगये ५१ (पितु समीपंसंगम्यचपितुःचरणौननामरामंआलिंगितुंससंभ्रमःराजासमुत्थाय) पिताके समीप जाय पुनः रघुनन्दन पिताके दोऊ पायँ जो हैं तिनहिंप्रणाम कीन्हे तब रघुनन्दनहिं उरमें लगावने हेत संभ्रमता सहित महाराज उठे ५२ (रामइतिबाहूप्रसार्यदुःखात्मध्येपपातःरामःहाहाइतिशीघ्रंतंआलिंग्य अंकेन्यवेशयत्) राम ऐसा कहि रघुनन्दनको उरमें लगावने हेत महाराज दोऊ हाथ पसारे परन्तु उहांतक अटेनहीं दुःखते शिथिलह्वै बीचहीमें गिरिपरे देखि रघुनन्दन हां हां ऐसाकहि शीघ्रही तिन महाराजको उठाय उरमें लगाय अकोरामें बैठारि लिये ५३ (मूर्च्छितंराजानंदृष्ट्वासर्वयोषितःचुक्रुशुः रोदनंकिंअर्थंइतिवशिष्ठःअपिसंआविशत्) महाराजको मूर्च्छित देखि स्त्रीलोग विलाप करने लगीं सो सुनि बाहेरके लोग विचारने लगे कि राजमंदिर में रोदन किसकारण होताहै इतिदेखने हेत वशिष्ठजी निश्चयकरिकै तहांपरगये ५४ (रामःपप्रच्छराज्ञःइदंदुः खस्यकिंकारणंएवंरामेपृच्छतिसा कैकेयीराममब्रवीत्) रघुनन्दन पूंछे कि महाराजके इस दुःखको क्या कारणहै इस प्रकार रघुनन्दन के पूछतसंते सो कैकेयी रघुनन्दन प्रति बोलतीभई ५५ ॥

त्वमेवकारणंह्यत्रराज्ञोदुःखोपशान्तये ॥ किंचित्कार्यंत्वयारामकर्त्तव्यंनृपतेर्हित म् ५६ कुरुसत्यप्रतिज्ञस्त्वंराजानंसत्यवादिनम् ॥ राज्ञावरद्वयंदत्तम्ममसंतुष्ट चेतसा ५७ त्वदधीनन्तुतत्सर्ववक्तुंत्वांलज्जतेनृपः ॥ सत्यपाशेनसंबद्धंपितरंत्रा तुमर्हसि ५८ पुत्रशब्देनचैतद्धिनरकात्त्रायतेपिता ॥ रामस्तयोदितंश्रुत्वाशूलेना भिहतोयथा ५९ व्यथितःकैकेयींप्राहकिंमामेवंप्रभाषसे ॥ पित्रर्थेजीवितंदा स्येपिबेयंविषमुल्वणम् ६० सीतांत्यक्षेऽथकौशल्यांराज्यंचापित्यजाम्यहम ॥ अ नाज्ञप्तोऽपिकुरुतेपितुःकार्यंसउत्तमः ६१ ॥

(राज्ञःदुःखोपशांतयेअत्रत्वंएवकारणंहिनृपतेःहितम्रामत्वयाकिंचित्कार्यंकर्त्तव्यं) रघुनन्दन प्रति कैकेयी कहतराजाको दुःखशान्त होनेहेत इहांतुमहीं निश्चय करि कारणहो ताते जामेंराजाको हित है तामें हे राम तुम करिकै कुछु कार्यकी न होई ५६ (राजानंसत्यवादिनंत्वंसत्यप्रतिज्ञःकुरुसंतुष्ट चेतसाराज्ञाममवरद्वयंदत्तम्) राजा सत्यवादी जा हैं तिनहिं तुम सत्यप्रतिज्ञाकरो भाव जो तुमचहिहो तौ राजा सत्यबादी रहते हैं काहेते प्रसन्न चित्तह्वैकै महाराज मोको द्वै वरदेनेको कहेहैं ५७ (नृपः त्वांवक्तुंलज्जतेतुतत्सर्वंत्वत्अधीनंपितरंसत्यपाशेनसंबद्धंत्रातुंअर्हसि) राजा तुम प्रति कहतलजातेहैं पुनः तौन सबबात तुम्हारेही आधीनहै अरु तुम्हारे पितासत्यपाश करिकै बँधेहैं तिनहिं रक्षाकरिबे के योग्य तुमहींहो ५८ (पुत्रशब्देनचएतत्हिपितानरकात्त्रायतेतयाउदितंरामःश्रुत्वायथाशूलेनअभि हतः) पुत्र शब्दकरिकै यही अर्थ निश्चय करिकैहै कि पिता नरकते रक्षाकिया जावै भावपुत्र जो नरक त्यहिते पिताकीत्रानाम रक्षाकरै ताको कहीपुत्रउक्तंच॥पुन्नाम्नोनरकाद्यस्मात्पितरंत्रायतेसुतः। तस्मात्पुत्रइतिप्रोक्तःस्वयमेवस्वयंभुवः ॥ अर्थात् जो तुम नरकते पिताकी रक्षा करौ तबतौ पुत्रहौ नातरुपुत्र नहीं इत्यादि बचन त्यहि कैकेयीने कहासो रघुनाथजी सुनिकै कैसे व्यथितभये जैसे शूल उरमें मारिदिया५९ (व्यथितःकैकेयींप्राहमांएवंकिंप्रभाषसेपितृअर्थेउल्वणम्विषंपिबेयंजीवितंदास्ये) वचन शूलतेव्यथित रघुनन्दन कैकेयी प्रतिबोले कि मोप्रति इसप्रकारके वचनक्यों कहतीहौ पिताके हेत पुष्टकरि बिप पानकरि प्राणदै सक्ताहौं ६० (कौशल्यांअथसीतांत्यक्षेचअपिअहंराज्यंत्यजामि अनाज्ञप्तःअपिपितुःकार्यंकुरुतेसउत्तमः) कौशल्याअरु सीता तिनहि त्यागि सक्ताहौं पुनः निश्चयकरि कै मैं राज्य त्यागकरौंगो काहेते जो बिना आज्ञापाये पिताको कार्य करै सोउत्तम पुत्रकहाताहै ६१ ॥

उक्तःकरोतियःपुत्रः समध्यमउदाहृतः ॥ उक्तोऽपिकुरुतेनैवसपुत्रोमलउच्य ते६२अतःकरोमितत्सर्वंयन्मामाहपिताभम ॥ सत्यंसत्यंकरोम्येवरामोद्विर्नाभिभा षते६३इतिरामप्रतिज्ञांसाश्रुत्वावक्तुंप्रचक्रमे ॥ रामत्वदभिषेकार्थंसंभाराःसंभृता श्चये ६४ तैरेवभरतोऽवश्यमभिषेच्यःप्रियोमम ॥ अपरेणवरेणाशुचीरवासाज टाधरः ६५ वनंप्रयाहिशीघ्रंत्वमद्यैवपितुराज्ञया ॥ चतुर्दशसमास्तत्रवससुन्यन्न भोजनः ६६ एतदेवपितुस्तेद्यकार्यंत्वंकर्तुमर्हसि ॥ राजातुलज्जतेवक्तुंत्वामेवं रघुनन्दन ६७ ॥

(यःपुत्रःउक्तःकरोतिसमध्यमउदाहृतःउक्तःअपिनएवकुरुतेसपुत्रःमलउच्यते) जो पुत्र पिताकेकहेते कार्य करताहै सो मध्यम कहावताहै अरुजो पिताके कहेपर निश्चय करिनहीं करताहै सो पुत्र पिता को पाप कहाताहै ६२ (अतःममपितामांयत्आहतत्सर्वंकरोमिसत्यंसत्यंएवकरोमिरामःद्विर्नाभिभापते) याते मेरे पिता मोप्रतिजो कहें तौन सब करिहौं सत्यसत्य निश्चयकरिकै करिहौं राम दूसरी भांति नहीं कहतेहैं भाव मैं जो कहताहौं सोई करताहौं ताते पिता की प्रतिज्ञा निश्चय करि सत्य करिहौं ६३ (इतिरामप्रतिज्ञांश्रुत्वासावकुंप्रचक्रमेरामत्वत्अभिषेकअर्थेयेसंभाराःसंभृताःच)पिताको वचन सत्य करिहौं इत्यादि रघुनन्दनकी प्रतिज्ञा ताहि सुनि तवसो कैकेयी आपना मनोर्थ कहनेको प्रारम्भ किया हे राम तुम्हारे अभिषेकके अर्थ जो सामग्री बटोरीगईहै ६४ (तैःएवममप्रियःभरतः अवश्यंअभिषेच्यःअपरेणवरेणआशुचीरवासाजटाधरः) ताही सामग्री करिकै मेरे प्यारे पुत्र भरतको अवश्यही राज्याभिषेक होवै और जो दूसर वरहै त्यहि करिकै शीघ्रही मुनिनको ऐसो बसन जटा धारण करि ६५ (पितुःआज्ञयात्वंअद्यएवशीघ्रंवनंप्रयाहितत्रचतुर्दशसमाःमुनिअन्नभोजनःवस)पिता की आज्ञा करिके तुम आजु निश्चय करि शीघ्रही बनहिं जाउ तहां चौदह वर्षतक मुनिन कैसोअन्न फल मूलादि भोजन करि वास करौ ६६ (एतत्एवतेपितुःअद्यकार्य्यंत्वंकर्तुंअर्हसितुरघुनन्दनत्वांएव वक्तुंराजालज्जते) यही निश्चय करिकै तुम्हारे पिताको आजु कार्यहै अरु तुमसो कार्य करिवे योग्यहो पुनः हे रघुनन्दन जो कहो कि पिता हमते क्यों नहीं कहतेहैं तो काल्हि राजदेनेको कहे आजु वनवास इत्यादि तुम प्रति कहते राजा लजातेहैं ताते नहीं कहतेहैं ६७॥

श्रीरामउवाच ॥ भरतस्यैवराज्यःस्यादहंगच्छामिदण्डकान्॥ किंतुराजानवक्तीह मांनजानेऽत्रकारणम् ६८ श्रुत्वैतद्रामवचनंदृष्ट्वारामंपुरःस्थितम्॥ प्राहराजादशरथोदुःखितोदुखितंवचः ६९ स्त्रीजितंभ्रांतहृदयमुन्मार्गपरिवर्त्तिनम् ॥ निगृह्य मांगृहाणेदंराज्यंपापंनतद्भवेत् ७० ॥

(भरतस्यएवराज्यंस्यात्अहंदण्डकान्गच्छामिकिंतुराजामांनवक्तीहअत्रकारणंनजाने) रघुनन्दन बोले कि भरतको निश्चय करिकै राज्य होवै मैं दण्डक वनको अभी जाताहौं परन्तु महाराज मों प्रति कुछ नहीं बोलतेहैं इसका क्या कारणहै सो नहीं जानिसकाहौं ६८ (एतत्रामवचनंश्रुत्वारामंपुरः स्थितंदृष्ट्वाराजादशरथःदुखितःअदुःखितंवचःप्राह) ये रघुनन्दनके वचन सुने रघुनन्दनको आगेखड़े देखि राजा दशरथ दुखितह्वैकै अदुखित जो रघुनन्दन तिन प्रति वचन बोले भाव नहींहै दुखको लेश जिनमें अखंड आनँदरूप तिन रघुनन्दन प्रति महाराज दुःखित ह्वै बोले इहां एदोतोतः सूत्र लागेते ऐश्वर्यरूपमें यह अर्थ भया अरु जब सूत्र न लगाइये तो माधुर्यरूपमें ऐसा अर्थ ह्वैसकाहै यथा (दुःखितःराजादशरथःदुःखितंरामंवचःप्राह) दुखित जो राजा दशरथ तिन दुखित जो रघुनन्दन तिन प्रति वचन बोले अर्थात् एक तो पिताको दुखित देखि करुणागुणते आपहू दुखित भये ताहूपर कैकेयीको वचन शूलसम लाग ताते अधिक दुखित भये इति दुखित रघुनन्दन प्रति महाराज बोले अथवा ऐश्वर्य माधुर्य मिश्रित लीलामें यद्यपि प्रभुमें दुःख नहींहै परन्तु सुकुमार पुत्र विषम वनको कैसे जायँगे इति वात्सल्य सनेहते महाराज दुखित मानिलिये ताते करालकालकी दुसह बाधाते वचिबे योगसमय अनुकूल नीति धर्म सहित स्वार्थमय वचन महाराज कहतेहैं ६९ (स्त्रीजितंभ्रांत हृदयंउन्मार्गपरिवर्त्तिनंमांनिगृह्यइदंराज्यंगृहाणतत्पापंनभवेत्)हे रघुनन्दन मोको स्त्रीने जीति लिया

भाव कैकेयीके परवश ताते भ्रांत हृदयभाव हृदयमें यथार्थ ज्ञान नहींहै ताते अधर्म मार्गपर चलता हौं भावलोक वेद रीति कुलको धर्म पाट महिषीके पुत्र भाइनमें बड़े तुम तिनको राज्य देनेको साज साजि अब वनको पठावताहौं अरु छोटे पुत्रको राज्य देताहौं इति अधर्मपर चलताहौं ताते दण्डके योग्यहौं अरु तुम नीति धर्मपर आरूढ समर्थ हौ अरु मंत्री मित्र सेना सेनप सब तुम्हारे अधीन हैं ताते मां निगृह्य अर्थात् मोको बांधि कारागारमें बन्दराखि इस राज्यको स्वाधीन करौ तौ यामें तुमकोपाप न होइ यह नीतिहै जो गुरु जन भी अनीति करैं तौ वाको भी दण्ड देना चाहिये यथा ॥ भारते ॥ गुरोरप्यवलिप्तस्यकार्याकार्यमजानतः। उत्पथंप्रतिपन्नस्यदण्डएवविधीयते ७० ॥

एवंचेदनृतंनैवमांस्पृशेद्रघुनन्दन ॥ इत्युक्त्वादुःखसंतप्तोविललापनृपस्तदा ७१ हारामहाजगन्नाथहाममप्राणवल्लभ ॥ मांविसृज्यकथंघोरंविपिनंगन्तुमर्हसि ७२ इतिरामंसमालिंग्यमुक्तकण्ठोरुरोदह ॥ विमृज्यनयनेरामःपितुःसजलपाणिना ७३ आश्वासयामासनृपंशनैःसनयकोविदः ॥ किमत्रदुःखेनविभोराज्यंशासतुमेऽनुजः ७४ ॥

(रघुनन्दनएवंचेत् मां अनृतं न एवस्पृशेत्इतिउक्त्वातदानृपःदुःखसन्तप्तःविललाप) महाराजकहत हे रघुनन्दन इसीभांति कदाचित् करौ भाव जोमोको वन्धनकरि राज्य ग्रहणकरिलेउ तौ मोको भी झूंठ वचन को पाप निश्चयकरि न छुइजाई भाव झूठको पाप तवैतकहै जबतक मैं स्वाधीनहौं जब बन्धन में परवश भयों तब कैसे पाप लागी इत्यादि कहि पुनः विचारे कि रघुनन्दन उत्तम पिता भक्त धर्म धुरीण ऐसा क्यों करेंगे निश्चय वनको चले जायँगे यह विचारे तब महाराज दुःखते संतप्त है रोदन करनेलगे ७१ (हाममप्राणवल्लभहारामहाजगन्नाथमांविसृज्यघोरंविपिनंगन्तुंकथंअर्हसि) हा मेरेप्राणप्रिय हा रघुनन्दन हा जगत् के स्वामी भाव यद्यपि जगके रक्षकहौ तौ भी मेरेप्राणप्रिय पुत्र ह्वै अवतीर्ण भयो तौ अब मोको त्यागि भयंकर वनहिं जानेको कैसे योग्यहौ भाव आपकेसंगही प्राण जॉयगे ७२ (इतिरामंसंआलिंग्यमुक्तकण्ठःरुरोदहरामःपाणिनापितुःनयनेसजलविसृज्य)ऐसा कहि महाराज रघुनन्दनहिं उरमें लगाय कण्ठस्वर त्यागि ऊंचेस्वरते विलाप करनेलगे तबरघुनन्दन हाथ करिकै पिताके नेत्रनकोजल पोछतेभये ७३ (सनयकोविदःनृपंशनैःआश्वासयामासविभो अत्र दुःखेन किं मेअनुजःराज्यंशासतु) सो रघुनन्दन नीतिमें प्रवीन नृप दशरथ जो तिनहिं धीरा धीरा अर्थात् प्रिय वचन कहि कहि समुझावतेभये हे विभो भाव सौर्य धीरता वीरता आदि सब भांति आप समर्थहौ इहां धर्मके कार्य में दुःख करने में क्या लाभहै हमारे छोटेभाई भरत ते तौ इहां राज्यकाज सब सँभारि लेइँगे ७४ ॥

अहंप्रतिज्ञांनिस्तीर्यपुनर्यास्यामितेपुरम् ॥ राज्यात्कोटिगुणंसौख्यंममराजन्वनेसतः ७५ त्वत्सत्यपालनंदेवकार्यञ्चापिभविष्यति ॥ कैकेय्याश्चप्रियोराजन्वनवासोमहागुणः ७६ इदानींगन्तुमिच्छामिव्येतुमातुश्चहृज्ज्वरः ॥ सम्भाराश्चोपह्रीयंतामभिषेकार्थमागताः ७७ मातरञ्चसमाश्वास्यअनुनीयचजानकीम् ॥ आगत्यपादौवंदित्वातवयास्येसुखंवनम् ७८ इत्युक्त्वातुपरिक्रम्यमातरंद्रष्टुमा

ययौ ॥ कौशल्यापिहरेःपूजांकुरुतेरामकारणात् ७९ होमंचकारयामासब्राह्मणे भ्योदद्दौधनम् ॥ ध्यायतेविष्णुमेकाग्रमनसामौनमास्थिता ८० ॥

(अहंप्रतिज्ञानिस्तीर्यपुनःतेपुरंयास्यामिराजन्वनेरातःराज्यात्कोटिगुणंममसौख्यम्) मैं आप की प्रतिज्ञा पूर्णकरि भाव चौदहवर्ष वनवासकरि पुनः आपकेपुर अयोध्याजीको आवहुंगो अरु हे राजन् वनमें वसतमें राज्यते सौगुण अधिक मोको सुख होईं ७५ (चदेनत्वत्सत्यपालनंकार्थेणपिभविष्यति चराजन्कैकेय्यःप्रियःवनवासःमहागुणः)पुनः हे देव आपको सत्यव्रत पालन कार्थे निश्चयकरिके होई पुनः हेराजन् मातु कैकेयीको यहीप्रियहै ताते वनवासमें महागुणहै भाव इसीमें देवनको कार्यहोई ७६ (मातुश्चहृज्ज्वरःक्षेतुइदानीगन्तुंइच्छामिचअभिषेकार्थसंभाराःआगताःउपहूर्यंताः) मातु कैकेयी के हृदयको ज्वर दूरि होने हेत पुनः इसीसमय वन जाने की इच्छा करताहों पुनः मेरे राज्याभिषेक हेत जो सामग्री आई है सो दूरि करीजाय ७७ (चमातरंसंआश्वनार्थचजानकीमनुनी यआगत्यतवपादौवंदित्वासुखंवनंयास्ये) पुनः माता कौशल्या तिनहि सावधान करि पुनःजानकी जोहै ताहि समुझाय धैर्यदे पुनः इहां आय आपके दोऊ पद कमलोंको प्रणाम करिसुख पूर्वक वनहि जैहों ७८ (इतिउक्त्वातुपरिक्रम्यमातरंद्रष्टुंआययौकौशल्याअपिरामकारणात्हरेःपूजांकुरुते) इत्यादि कहिपुनः रघुनन्दन पिताके परिक्रमाकरि माताकौशल्या तिनहिं देखने हेत जातभये उहां देखे कौशल्या जी निश्चयकरि रघुनन्दनको हितहोने कारणते हरिको पूजनकरती रहैं ७९ (होमंचकारयामासब्राह्मणेभ्यःधनमददौएकाग्रमन सामौनंआस्थिताविष्णुंध्यायते) पूर्वहोमकरि ब्राह्मणोंके अर्थ स्वर्णरत्नादि धनदान देतीभई पुनः एकाग्रमन कि हे आसनपर मौनता युत बैठी हृदयमें विष्णु भगवानजोहैं तिनहिं ध्यान चिंतवनकरतीहैं ८० ॥

अन्तस्थमेकंघनचित्प्रकाशंनिरस्तसर्वातिशयस्वरूपम् ॥विष्णुंसदानन्दमयंहृद ब्जेराभावयंतीनददर्शरामम् ८१ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसम्वादेअयोध्याकांडेतृतीयस्सर्गः ३ ॥

(सारामंनददर्श) सो कौशल्या रघुनन्दनहिं न देखे काहेते (हृत्पङ्कजे विष्णुंभावयन्ती) उर कमल विषे विष्णु भगवान् जोहैं तिनहिं ध्यान करतीहैं कैसे विष्णुहैं(सर्वनिरस्तचित्घनप्रकाशंएकं अंतस्थम्) सतरजतमादि सब कारण माया दूरि किये चैतन्य समूह प्रकाशमान एक अंतर्यामीरूप सो सबके अन्तरमें बसेहैं पुनः कैसेहैं(सदाअतिशयआनन्दस्वरूपम्)सदा अत्यंत करिकै आनन्द स्वरूपहैं अर्थात् रघुनाथजी जाय आगे खड़ेभये परन्तु कौशल्याजी नहीं देखे काहेते कि सब इंद्री मनादिकी वृत्ति खैंचे हृदय कमलमें विष्णु भगवान्को ध्यान कियेहैं कैसे विष्णुहैं जो सब विकार रहित चैतन्य समूह प्रकाशमान एकअंतर्यामीरूप सो सबके अन्तरमें बसे सदा अत्यन्त आनंदस्वरूपहैं८१॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतबैजनाथविरचितेअध्यात्मभूषणे कैकेयीवरमांगनवर्णनोनामतृतीयःप्रकाशः ३ ॥

ततःसुमित्राद्दृष्टेनेरामंराज्ञीससंभ्रमा ॥ कौशल्यांबोधयामासरामोऽग्रेसमुपस्थि

तः १ श्रुत्वैवरामनामैषाबहिर्दृष्टिप्रवाहिता ॥ रामंदृष्ट्वाविशालाक्षमालिंग्यांकेन्य वेशयत् २ ॥

सवैया ॥ जननी मृदुबैन बतावतहीं बनजानसुने अति दुःख किये । लघुबन्धु विलोकि सशोक जहीं समुझाय तबै प्रभु बोधदिये ॥ पितु पास गये पुनि आनँदसों सप्रिया प्रियबन्धुहि संग लिये । बसिये ससियानुज राघवजी शरणागत बैजसुनाथहिये ॥ (ततः सुमित्राएनंरामंदृष्ट्वासंभ्रमाराज्ञींकौशल्यांबोधयामासअयंरामःसंउपस्थितः) तदनन्तर रानी सुमित्राजी खड़ेहुये जो राम तिनहिं देखि सहित संभ्रमता रानी कौशल्या जो हैं तिनहिं जनावतीभई कि ये रघुनन्दन तुम्हारे आगे खड़ेहैं क्यों नहीं देखतीहौ भाव ध्यान त्यागि इनपर दृष्टिकरो १ (रामनामएषाएवश्रुत्वाबहिःदृष्टिप्रवाहिताविशालाक्षंरामंदृष्ट्वाआलिंग्यअंकेन्यबेशयत्) राम ऐसा नाम यह निश्चय करि सुनती भई तब कौशल्याजी ध्यान त्यागि बाहेरको दृष्टि करतीभई बड़ेहैं नेत्र जिनके ऐसे जो रघुनन्दन तिनहिं खड़े देखि कौशल्याजी हृदयमें लगाय अकोरामें बैठायलेतीभई २ ॥

मूर्ध्न्यवघ्रायपस्पर्शगात्रंनीलोत्पलच्छवि ॥ भुंक्ष्वपुत्रेतिचप्राहमिष्टमन्नंक्षुधार्दितः ३ रामःप्राहनमेमातर्भोजनावसरःकृतः ॥ दण्डकागमनेशीघ्रंममकालोऽद्यनिश्चितः ४ कैकेयीबरदानेनसत्यसंधःपितामम॥भरतायददौराज्यंममाप्यारण्यमुत्तमम् ५ चतुर्दशसमास्तत्रह्युषित्वामुनिवेषधृक्॥ आगमिष्येपुनःशीघ्रंनचिंतांकर्तुमर्हसि ६ तच्छ्रुत्वासहसोद्विग्नामूर्च्छितापुनरुत्थिता ॥ आहरामंसुदुःखार्तादुःखसागरसंप्लुता ७ यदिरामवनंसत्यंयासिचेन्नयमामपि॥त्वद्विहीनाक्षणार्द्धंवाजीवितंधारयेकथम् ८ ॥

(मूर्धिनअवघ्रायनीलउत्पलच्छविगात्रंपस्पर्शचइतिप्राहपुत्रक्षुधार्दितःमिष्टंअन्नंभुंक्ष्व) रघुनन्दनकोशीशसूँघि नीलकमलवत् छबि जोगात्रताहि उरमें लगाय पुनः कौशल्याजी इस प्रकार बचनबोलीं हे पुत्र तुम्हारे भूख लागिहोई ताते मिष्टअन्न जोहै ताहि भोजन करौ ३ (रामःप्राहमातःमेभोजनकृतःअवसरःनअद्यनिश्चितःशीघ्रंममदण्डकागमनेकालः) रघुनन्दन बोले कि हेमातः मेरेभोजन करनेको समयनहीं है भाव राज्याभिषेक न होइगो कौन कारण कि आजु निश्चयकरिकै शीघ्रही मेरा दण्डक बन जानेको समय आयाहै ४ (सत्यसंधःममपिताकैकेयीबरदानेनभरतायराज्यंददौममअपिउत्तमम्आरण्यम्) सत्यप्रतिज्ञाहै जिनकी ऐसे हमारे पिताकैकेयीके वरदान करिकै भरतके अर्थराज्य दिये अरु मोको निश्चयकरिके उत्तमबनमें बास दिये ५ (मुनिबेषधृक्तत्रहिचतुर्दशसमाःउषित्वापुनःशीघ्रंआगमिष्ये चिंतांकर्तुंनअर्हसि) मुनिनको ऐसो बेष धारण करि बनजो है तहांनिश्चयकरि चौदह वर्ष बासकरि बिताय पुनःशीघ्रहीं तुम्हारे पास ऐहौं ताते चिंता करिबे को नहीं योग्यहौ भाव मन में खेद न किहेउ ६ (तत्श्रुत्वासहसाउद्विग्नामूर्च्छितापुनःउत्थितासुदुःखआरतादुःखसागरसंप्लुतारामंआह) हमबनको जातेहैं इति रघुनन्दनके बचनतौनि सुनिकै सहसि सूखिमूर्च्छित ह्वै भूमिपरगिरिपरी पुनः उठिकै दुःखपीडितदुःखसमुद्रमें बूडीहुई कौशल्या रघुनन्दन प्रतिबोलतीभई ७ (रामयदिसत्यंबनंयासिमांअपिनयचेत्त्वत्बिहीनाक्षणार्द्धंवाजीवितंकथम्धारये) कौशल्याजी कहतहें रघुनन्दन जो सत्यहीबनहि जातेहौ तौ मोकोभी साथै लैचलौ नाहीं तौ तुम बिनाक्षणको आधा पांचपलामें अपना जीवन कौने प्रकारते राखिसकिहौं ८ ॥

यथागौर्बालकंवत्संत्यक्त्वातिष्ठेन्नकुत्रचित् ॥ तथैवत्वांनशक्नोमित्यक्तुंप्राणात्प्रियं सुतं ९ भरतायप्रसन्नश्चेद्राज्यंराजाप्रयच्छतु ॥ किमर्थंवनवासायत्वामाज्ञापयतिप्रियं १० कैकेय्यावरदोराजासर्वस्वञ्चप्रयच्छतु ॥ त्वयाकिमपराधंहिकैकेय्यावानृपस्यवा ११ पितागुरुर्यथारामतवाहमधिकाततः ॥ पित्राज्ञप्तोवनंगंतुंवारयेयमहंसुतम् १२ यदिगच्छसिमद्वाक्यमुल्लंघ्यनृपवाक्यतः ॥ तदाप्राणान्परित्यज्यगच्छामियमसादनम् १३ लक्ष्मणोपिततःश्रुत्वाकौशल्यावचनंरुषा ॥ उवाच राघवंवीक्ष्यदहन्निवजगत्रयम् १४ ॥

(यथाबालकंवत्संत्यक्त्वागौःकुत्रचित्नतिष्ठेत्तथाएवप्राणात्प्रियंसुतंत्वांत्यक्तुंनशक्नोमि) जैसे छोटे बछवा को त्यागि गौ कहीं नहीं स्थितहोती है तैसेही निश्चय करिकै प्राण ते अधिक प्रियपुत्र तुमहि त्या।गिबे को मैं नहीं समर्थ हौं ९ (राजाप्रसन्नःचेत्राज्यंभरतायप्रयच्छतुप्रियंत्वांवनवासायकिंअर्थं आज्ञा पयति)महाराज प्रसन्न मन राज्य भरत के अर्थ खुसी ते देवैं परन्तु प्रियपुत्र तुमहिं बनवास के अर्थ कि सहेत आज्ञा देते हैं १० (वाराजाकैकेय्यावरदःसर्वस्वंप्रयच्छतुत्वयानृपस्यवाकैकेय्याकिंअपराधंहि) अथवा महाराज कैकेयी को वरदान देते हैं तौ अपना सर्वस्व देदेवैं परन्तु हे पुत्र तुमने राजाको वा कैकेयी को क्या अपराध किया है जो वनै पठावते हैं ११ (यथापितागुरुःरामतवअहंततःअधिकःपित्राज्ञप्तःवनंगंतुंअहंसुतंवारयेयम्) जैसे तुम्हारे पिता गुरू हैं हे रघुनन्दन तुमको मानिवे को मैं तिनते अधिक हौं भाव वेदरीति पिताते अधिक माताको पद होता है ॥ यथा वशिष्ठ स्मृतौ ॥ उपाध्यायाद्दशाचार्यआचार्याणांशतंपिता ॥ पितुर्दश शतंमातागौरवेणातिरिच्यते ॥ तौ जोपिता आज्ञा करते हैं वनजाने को तौ मैं अपने पुत्रहि रोकती हौं भाव मेरी आज्ञा मानि घरमें रहौ १२ (मत्वाक्यंउलंघ्यनृपवाक्यंतःयदिगच्छसितदाप्राणान्परित्यज्ययमसादनम्गच्छामि] अरु मेरे बचन त्यागि जो राजा के वचन मानि बनको चले जातेहौ तौ मैं अपने प्राण जो हैं तिनहिं परित्यागकरि यमराज के मंदिरहि जाती हौं १३ (कौशल्यावचनंश्रुत्वाततःलक्ष्मणःअपिराघवंवीक्ष्यजगत्रयंदहनइवरुषाउवाच) कौशल्याजीकोकहा जोवचन ताहिसुनि तदनन्तर लक्ष्मणजी निश्चयकरि रघुनन्दन की दिशि देखि कैसे क्रोध युक्त भये मानहुँ तीनिहुं लोकन को भस्म करि देवेंगे ऐसे रोष करिकै वचन बोले १४ ॥

उन्मत्तंभ्रांतमनसंकैकेयीवशवर्त्तिनम्॥वध्वानिहन्मिभरतंतद्बंधून्मातुलानपि १५ अद्यपश्यंतुमेशौर्यंलोकान्प्रदहतःपुरा ॥ रामत्वमभिषेकायकुरुयत्नमरिंदम १६ धनुःपाणिरहंतत्रनिहन्म्यांविघ्नकारिणः॥इतिब्रुवंतंसौमित्रिमालिंग्यरघुनन्दनः १७ शूरोसिरघुशार्दूलममात्यंतांहितेरतः ॥ जानामिसर्वंतेसत्यंकिंतुतेसमयोनहि १८ यादिदंदृश्यतेसर्वंराज्यंदेहादिकंचयत् ॥ यदिसत्यंभवेत्तत्रआयासःसफलश्च ते १९ भोगोमेघवितानस्थविद्युल्लेखेवचंचलः ॥ आयुरप्यग्निसंतप्तलोहस्थजलविन्दुवत् २० ॥

(कैकेयीवशवर्त्तिनम्भ्रांतमनसंउन्मत्तंवध्वानिभरतंतत्बंधून्मातुलान्अपिहन्मि) कैकेयी के वशी
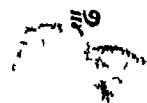
भूत भ्रांत है मन जिनको भाव यथार्थ ज्ञान नहीं है उन्मत्त भाव सिद्धी है गये जो राजा तिनहिं बांधि कारागार में बंदराखें अरु भरतहि तथा उनके बंधु वर्ग यावत् सहायक तथा उनके मामा तिनहिं हम मारिडारैंगे १५ (अरिन्दमरामत्वंअभिषेकाययत्नंकुरुपुरालोकान्प्रदहतःअद्यमेशौर्यंपश्यन्तु) हे शत्रु-नाशक रघुनाथ जी आप राज्याभिषेक हेत यत्न करिये पूर्वकाल में यथालोकन को भस्म करता हौं तथा आजु मेरी शूरता को सब संसार देखै १६ (तत्रअहंधनुःपाणिविघ्नकारिणःनिहन्यांइतिब्रुवंतं सौमित्रिंरघुनन्दनःआलिंग्य) जहां राज्याभिषेक होई तहां हम धनुष बाण हाथमें लिहे खड़े रहैं गे जो उहां विघ्न करता आई ताको हम नाश करिदेंइ गे इत्यादि कहत ही सुमित्रा नन्दन जो लक्ष्मण तिनहिं उरमें लगाय रघुनन्दन बोले इतिशेषः १७ (रघुशार्दूलशूरोअसिममहितेअत्यंतरतःतेसर्वंस त्यंजानामिकिंतुतेसमयोनहि) लक्ष्मण प्रति रघुनन्दन कहत हे रघुवंशिन में सिंह तुम शूरहौ अरु मेरे हित करिबेमें अत्यंत प्रीति किहे हौ अरु जो तुम कहते हौ सो सब सत्य है यह मैं जानता हौं परंतु तुम्हारे पराक्रम करने को यह समय नहीं है १८ (राज्यंचदेहादिकंयत्इदंसर्वंयत्दृश्यतेयदिस त्यंभवेत्तत्रचतेआयासःसफलः) राज्यादि यावत् ऐश्वर्य पुनः देहादि यावत् संबंध स्त्री पुत्रादि यह सब जो देखि परताहै सो जो सत्य होय तहाँ पुनः तुम्हार परिश्रम भी सफलहोय १६ (मेघवितान नस्थविद्युत्लेखेवभोगचंचलःअग्निसंतप्तलोहस्थजलबिंदुवत्आयुःअपि) मेघ मंडल में जैसे बिजुली चमकि तुरतै मिटि जातीहै तैसे वाहन भूषण वसन भोजनादि भोग भी चलायमान थिर नहीं रहि सके हैं पुनः अग्निमें संपूर्ण तप्त हुआ लोहापर डारे जैसेजल बुंद लोप होताहै तैसे आयुर्बलनिश्चय करि क्षणभंगीहै २० ॥

यथाव्यालगलस्थोऽपिभेकोदंशानपेक्षते ॥ तथाकालाहिनाग्रस्तोलोकोभोगान शाश्वतान् २१ करोतिदुःखेनहिकर्मतंत्रंशरीरभोगार्थमहर्निशंनरः ॥देहस्तुभिन्नः पुरुषात्समीक्ष्यतेकोवात्रभोगःपुरुषेणभुज्यते २२ पितृमातृसुतभ्रातृदारबंध्वादि संगमः ॥ प्रपायामिवजंतूनांनद्यांकाष्ठौघवच्चलः २३ ॥

(व्यालगलस्थः भेकः अपियथा दंशान्अपेक्षते तथा लोकःकाल अहिनाग्रस्तःशाश्वतान्भोगान्) सर्पके लीलिये गलेमें स्थित जोमेढक निश्चयकरि जैसेसर्प के गलेको मांसखाने की इच्छाकरता है अरुनिकट प्राप्तजो आपनी मृत्युताको नहीं विचारताहै तैसेही लोकको कालरूप सर्पने ग्रास किया भावकाल के मुखमें परेताकी सुधिनहीं है अरुनित्यही सबलोग विषय भोगमें परेहैं २१ (शरीरभोग अर्थंनरः अहः निशंहि दुःखेन कर्मतंत्रं करोति) देहभोग केअर्थ मनुष्यादि नौराति निश्चय दुखःकरि कैकर्मप्रधान करताहै (तुदेहःपुरषात्भिन्नःसमीक्ष्यतेअत्रकोवाभोगःपुरुषेणभुज्यते) पुनः जिस देहके सुखके हेत शुभाशुभ कर्म करताहै सोपंचभौतिक देह पुरुषते अर्थात् आत्माते भिन्न देखिपरतहै तौ इहाँ कौनऐसासुखहै जोपुरुष करिकै भोगभोगाजावै अर्थात् रघुनन्दन कहत हेलक्ष्मणजी इसीदेहके सुख भोगके अर्थखेती वणिज चाकरी भीषचोरी ठगीआदि अनेक व्यापार मनुष्यकर्म करिधन बटोरि भोजन वसनादि सुखभोग करताहै तथा यज्ञपूजा तपतीर्थ दान व्रतादि स्वर्गभोग के अर्थ सबासिक कर्म करताहै इति दिनौराति श्रमकरिकैजिस देहकेभोगहेत कर्म करताहै सोदेहआत्मपुरुषते अलगहै अरु आत्मपुरुष तौ स्वयं आनन्द रूपहै ताकेहेत इसलोकमें कौनऐसाअपूर्व सुखहै जाको आत्म पुरुष भोगकरै भाव तुच्छहै केवल अज्ञानताते सुखमानेहै देहैंको आतममाननायही अज्ञानताहै २२

(प्रपायांजंतूनांइवनद्यांचलः काष्ठओघवत्बंधु आदिसंगमः) देह सम्बंधिन को मिलन कैसा है जैसे जलशालामें जलपीने हेत अनेक जीव आवतेहैं तिनको क्षणभरि मिलान ह्वै पुनः अपनी राह न लगे अथवा नदी विषे बहेजात काष्ठजो समूह तिनको जैसे मिलान ह्वै पुनः भिन्न ह्वैजाते हैं ताही भांति पितामाता पुत्रभाई स्त्री बंधु वर्गादि देह संबंधिन् को मिलान जन्म जन्मांतर होताहै छूटता जाताहै तामें कहां सत्यताहै २३ ॥

छायेवलक्ष्मीश्चपलाप्रतीतातारुण्यमंबूर्मिवदध्रुवंच ॥ स्वप्नोपमंस्त्रीसुखमायुरल्पं तथापिजंतोरभिमानएषः २४ संसृतिःस्वप्नसदृशीसदारोगादिसंकुला ॥ गंधर्वनगरप्रख्यामूढस्तामनुवर्त्तते २५ आयुर्व्यक्षीयतेयस्मादादित्यस्यगतागतैः ॥ दृष्ट्वाऽन्येषांजरामृत्युकथंचिन्नैवबुध्यते २६ सएवदिवसःसैवरात्रिरित्येवमूढधीः ॥ भोगाननुपतत्येवकालवेगान्नपश्यति २७ प्रतिक्षणंक्षरत्येतदायुरामघटांबुवत् ॥ सपत्नाइवरोगौघाःशरीरंप्रहरन्त्यहो २८ ॥

(लक्ष्मीःछायाइवचपलाप्रतीताचअंबुउर्मिवत्तारुण्यंअध्रुवंस्त्रिसुखंस्वप्नउपमंअल्पंआयुःतथापिजंतोःएषाअभिमान) राज्य धनादि जो लक्ष्मीहै सो छायाकी समान चंचलहै ताकेरहनेका विश्वास नहीं पुनः जलकी लहरीकी समान युवा अवस्था की निश्चय नहीं तथा युवतीसंग भोगसो स्वप्नेकैसो सुखझूठा है अल्पकाल जीवन ताहूपर देहधारी ऐसा अभिमान करतेहैं कि हमकभी मरेंगे नहीं हमारा सुख अचलहै २४ (संसृतिःस्वप्नसदृशीरोगादिसदासंकुलातांमूढः गंधर्वनगरप्रख्याअनुवर्त्तते) संसार स्वप्नेकी समान झूठा सुखहै काहेते रोगादि दुःखनते सदा परिपूर्णहै ताहिमूढ अज्ञानी गंधर्व नगर अर्थात् स्वर्गलोक सम अचल सुख मानतेहैं २५ (आदित्यस्यगतआगतैः यस्मात्आयुर्व्यक्षीयते अन्येषांजरामृत्युदृष्ट्वाकथंचितनएवबुध्यते) सूर्यनके उदयअस्त करिकै जोकाल बीतता जाताआयुर्वेल घटत जातीहै तथा औरनकी वृद्धा अवस्था अरु मृत्यु देखतेहैं तो काहेनहीं मनमें ज्ञान लावते हैं भाव इसी भाँति मैंभी बुढ्ढाहकै एकदिन मरिजाँउगो इसभाँति क्योंनहीं ज्ञान लावतेहैं २६ (सएव दिवसःसाएवरात्रिःइतिएवमूढधीःकालवेगान्नपश्यतिभोगान्एवअनुपतति) जोदुख सुखमय बीतत जात सोई निश्चय करिकै दिनहै सोई निश्चय करिकै रात्रीहै इत्यादि जैसे पूर्वबीते तैसे निश्चय करिकै आगेके बीत जाँयगे यही कालको वेगहै इसीमें सब बहेजातेहैं परंतु मूढबुद्धी अज्ञानी कालके वेगको नहीं देखतेहैं कि एक दिन मरिजाउँगो सबइंद्री भोगेमें आसक्त पर रहतेहैं २७ (आमघटअंबुवत्एतत्आयुःप्रतिक्षणंक्षरतिरोगओघाःसपत्नाइवशरीरंप्रहरंतिअहो) माटीको कच्चाघट जल भरते जैसे गलिजाताहै इसीभाँति यह उमिरि क्षण प्रति घटत जाती है तथा ज्वरातीसारशूल वायु कफादि रोग समूह शत्रुनकी नाईं शरीर जोहै ताहि चोटमारतेहैं इत्यादि देखत हूं नहीं सूझि परत तो बड़े आश्चर्य की बातहै २८ ॥

जराव्याघ्रीवपुरतस्तर्जयंत्यवतिष्ठते ॥ मृत्युःसहैवयात्येषासमयंसंप्रतीक्षते २९ देहेऽहंभावमापन्नोराजाऽहंलोकविश्रुतः ॥ इत्यस्मिन्मनुतेजन्तुःकृमिविट्भस्मसंज्ञिते ३० त्वगस्थिमांसविण्मूत्ररेतोरक्तादिसंयुतः ॥ विकारीपरिणामीचदेहआत्माकथंवद ३१ यमास्थायभवांल्लोकंदग्धुमिच्छतिलक्ष्मण ॥ देहाभिमानिनः

सर्वेदोषाःप्रादुर्भवंतिहि ३२ देहोऽहमितियाबुद्धिरविद्यासाप्रकीर्त्तिता ॥ नाहंदेह श्चिदात्मेतिबुद्धिर्विद्येतिभण्यते ३३ अविद्यासंसृतेर्हेतुर्विद्यातस्यानिवर्त्तिका ॥ तस्माद्यत्नःसदाकार्योविद्याभ्यासेमुमुक्षुभिः ३४ ॥

(व्याघ्रीइवजरातर्जयंतिपुरतःअवतिष्ठतेएषसमयंप्रतीक्षते मृत्युःसहएवयाति) बाघिनि असि बुढ़ापा अवस्था भय देखाती हुई मनुष्यनके आगे खड़ी है तथा या जीवको अन्तसमयकी प्रतीक्षाकरती हुई मृत्यु सदा निश्चय करिकै साथही बनी रहती है भाव कब काल आवै तब मैं याको घात करौं २९ (कृमिविट्भस्मसंज्ञितेदेहेअहंभावंआपन्नः अस्मिन्जन्तुः इतिमनु ते अहंलोकविश्रुतःराजा) मृतकपरी रहै तो कृमिपरि जायँ जीव खाय जायँ तो विष्ठा है जाय फूँकि दिहे पर राख ह्वै जाती है ऐसी देह में अभिमान भाव मेंबँधे इसी में देह धारी ऐसा मानते हैं कि हम लोक प्रसिद्ध राजा हैं ३० (त्वक्अस्थिमांसविण्मूत्ररेतःरक्तादिसंयुतःपरिणामः विकारदिहकथं आत्मावद) रघुनन्दन कहत कि हे लषण जो त्वचा हाड़ मांस विष्ठा मूत्र वीर्य रक्तादि सहित बाल युवा वृद्ध मरणान्त है जाको कामादि विकार भरी देह को कैसे आत्मा कहतेहौ भाव सत्यमानतेहौ वृथा देहको ३१ (लक्ष्मणयंआस्थायभवान्लोकंदग्धुंइच्छाति देहअभिमानिनःदोषाः सर्वेहिप्रादुर्भवंति) हे लक्ष्मण जिस झूठे देह व्यवहार को साँचा स्थापित करि तुम लोक जो है ताहि क्रोधित ह्वै भस्म करने की इच्छा करते हौ सोई जीव को बंधन है काहेते देहाभिमानी यावत् दोष करतेहैं तिन सबको फल निश्चय करि प्रसिद्ध होताहै बिना भोगे छुट्टी नहींपावतेहैं३२(अहंदेहःइतिजाबुद्धिःसा अविद्याप्रकीर्त्तिताअहंदेहःनचित्आत्माइतिबुद्धिइतिविद्याभण्यते) मैं देहहौं ऐसीजोबुद्धिसोईअविद्या भवबंधन कहावता है अरु मैं देह नहीं सदा चैतन्यआत्मा हौं ऐसी बुद्धि यही विद्या ब्रह्मज्ञान है ३३ (संसृतेःहेतुःअविद्यातस्याःनिवर्त्तिकाविद्यातस्मात्मुमुक्षुभिःविद्याअभ्यासेयत्नःसदाकार्य्यः) जन्म मरणादि संसार को कारण अविद्या है ताको निवृत्त करने वाली विद्या है ताते उचित है कि मुक्तिकी इच्छा करने वालेन करिकै विद्याअभ्याससे सदा यत्न करै ३४ ॥

कामक्रोधादयस्तत्रशत्रवःशत्रुसूदन॥तत्रापिक्रोधएवालंमोक्षविघ्नायसर्वदा॥ये नाविष्टःपुमान्हंतिपितृभ्रातृसुहृत्सखीन् ३५क्रोधमूलोमनस्तापःक्रोधःसंसारबंधनं॥धर्मक्षयकरःक्रोधस्तस्मात्क्रोधंपरित्यज ३६ क्रोधएषमहाञ्छत्रुस्तृष्णावैतरणीनदी॥संतोषोनन्दनवनंशांतिरेवहिकामधुक्३७तस्माच्छांतिंभजस्वाद्यशत्रुरेवंभवेन्नते॥ देहेन्द्रियमनःप्राणबुद्ध्यादिभ्योविलक्षणः ॥ आत्माशुद्धःस्वयंज्योतिरविकारीनिराकृतिः ३८॥

(शत्रुसूदनतत्रकामक्रोधादयःशत्रवःतत्रापिमोक्षविघ्नायक्रोधसर्वदाएवअलंयेनआविष्टःपुमान्पितृभ्रातृसुहृत्सखीनहन्ति) हेशत्रुनाशनजहां अविद्याहै तहां कामक्रोधादि शत्रुहैं तिनमेंभी मुक्तिमार्गमें विघ्नकरने के अर्थ क्रोध सब कालमें निश्चयकरिकै सबल समर्थ शत्रुहै जिसक्रोध करिकै भराहुआ पुरुष पिताभाई मित्रसखा इत्यादि जोहैं तिनहिं मारिडारताहै ३५ (मनःतापःमूलःक्रोधःसंसार बंधनंक्रोधःधर्मक्षयकरःक्रोधःतस्मात्क्रोधंपरित्यज)मनमें तापहोनेका मूलक्रोधहै भावजब क्रोध आवत तबै मनतप्त ह्वैजात पुनः संसारमें बंधन क्रोधहै भाव क्रोधभये विचार हीनह्वै अनुचित कार्यकरि

पापवँधन में परत पुनः धर्मको नाशकरने वाला क्रोधहै भाव क्रोधभये धर्मको त्यागि अधर्मी जीव ह्वैजात ताते क्रोध जोहै ताहि परित्यागकरौ३६ (महाशत्रुःएपक्रोधःवैतरणिनदीतृष्णानंदनवनंसंतोषः एवहिकामधुक्शांतिः) काहेते त्यागकरौ हे लक्ष्मण वड़भारी शत्रुकीतुल्य घात करता क्रोधहीहै तथा वैतरणी नदी जो यमपुरीको परिपा अशुद्ध वस्तुमिला नष्टजल अगाधहै जाको तरणादुर्घट है तिहिकी तुल्य इहाँ तृष्णा अर्थात् जोराज्य धनादि पावनेकी अत्यंत प्याससो संसारमें वैतरणीहै तथा जामेंसमूह कलपवृक्षलगे ऐसाजो नंदन वनस्वर्गमें लगाहै ताकी तुल्य इहां संतोषहै जाकेभये सव फल प्राप्तहोत ऐसेही निश्चय करि कामधेनुकी समान इहां शांतिहै ३७ (तस्मात्अद्यशांतिंभजस्वएवंतेशत्रुःनभवेत् देहइंद्रियमनःप्राणबुद्धिआदिभ्यःविलक्षणःआत्मास्वयंज्योतिःअविकारीशुद्धःनिराकृतिः) तिसकारण हे लक्ष्मण आजुशांति सेवन करौ इसप्रकार तुम्हाराशत्रु कोई न होई पुनः देह श्रवणादि इंद्रीमन प्राणादि वायु वुद्धि इत्यादिकन ते विलक्षण अर्थात् कारण रहित आत्मा स्वयंप्रकाशमान विकारहीन शुद्ध आकार रहितहै ३८॥

यावद्देहेंद्रियप्राणैर्भिन्नत्वंनात्मनोविदुः॥ तावत्संसारदुःखौघैःपीड्यंतेमृत्युसंयुताः ३९ तस्मात्त्वंसर्वदाभिन्नमात्मानंहृदिभावय॥ बुद्ध्यादिभ्योवहिःसर्वमनुवर्तस्वमाखिद् ४० भुंजन्प्रारब्धमखिलंसुखंवादुःखमेववा॥ प्रवाहपतितःकार्य्यंकुर्वन्नपिनलिप्यते ४१ वाह्येसर्वत्रकर्तृत्वमावहन्नपिराघव॥अंतःशुद्धस्वभावस्त्वंलिप्यतेनचकर्मभिः ४२ एतन्मयोदितंकृत्स्नंहृदिभावयसर्वदा॥संसारदुःखैरखिलैर्वाध्यसेनकदाचन ४३॥

(देहइन्द्रियप्राणैःभिन्नत्वंआत्मनःयावत्नविदुःतावन्मृत्युसंयुताःसंसारदुःखओघैःपीड्यन्ते) देह श्रवणादि इंद्रीप्राण वायू इत्यादिक न करिकै विलग आत्माको जवतक नहीं जानताहै तवतक मृत्यु सहित संसारमें दुख समूह करिकै जीवपीड़ित रहताहै भाव जवतक देह व्यवहारको सत्य मानताहै तवेतक शुभाशुभ कर्म करि सुख दुःख भोगताहै अरु जो देहते भिन्न आत्माको जानी तो स्वयं आनंदरूपहै वाते कर्म नह्वैसकैंगे ३९ (तस्मात्त्वंआत्मानंसर्वदाभिन्नंहृदिभावयवहिःबुद्धिआदिभ्यःसर्वं अनुवर्तस्वखिदःमा) तिसकारण हे लक्ष्मण तुम आत्मा जो है ताहि सर्वकालमें देहते भिन्न हृदयमें जाने रहो अरु वाहेरते देह इंद्री वुद्धि आदिकनते लोकके सव कार्य करो अरु खेदमति मनमें करो ४० (सुखंवाएवदुःखंवाप्रारब्धंअखिलंभुंजन्प्रवाहपतितःकार्य्यंअपिकुर्वन्नलिप्यते) सुख वानिश्चय करिकै दुःख प्रारब्धमें जो आवै सो सव भोग करो संसार प्रवाहमें पतितभी होकै भाव संसारमेंरहो परंतु संसारी कार्य निश्चयकरिकै कियेभी तुममें न लागेंगे ४१ (राघव अंतश्शुद्धस्वभाव वाह्येसर्वत्र कर्तृत्वंआवहन्अपिचकर्मभिःत्वंनलिप्यते)हेरघुवंशज लक्ष्मण जो अंतसमय आत्मदृष्टिते शुद्धस्वभाव वने रहौ तौ वाहेर देह इंद्रिनद्वारा सव कालमें कर्ताभावको प्राप्त निश्चयकरि भाव सदाकर्म किया करौ तोभी पुनः कर्म न करिकै तुम न लिप्त होउगे ४२ (एतत्कृत्स्नंमयाउदितंसर्वदाहृदिभावयअखिलैःसंसारदुखैःकदाचननवाध्यसे)रघुनन्दन कहत हे लक्ष्मण यह जो सम्पूर्ण मेरा कहाहुआ ज्ञानहै ताहि सव कालमें हृदय में धारण किहेरहौ तो सम्पूर्ण संसारके दुःख न करिकै कवहूं न वाधितह्वै हौ भाव संसारके दुःख जन्म मरणादि तुमको कवहूं न वाधाकरिसकि हैं ४३॥

त्वमप्यम्बमयादृष्टंहृदिभावयनित्यदा ॥ समागमप्रतीक्षस्वनदुःखेःपीड्यसेऽचिरम् ४४ नसदैकत्रसंवासःकर्ममार्गानुवर्तिनाम् ॥ यथाप्रवाहपतितप्लवानांसरितां तथा ४५ चतुर्दशसमासंख्याक्षणार्द्धमिवजायते ॥ अनुमन्यस्वमामंबदुःखंसंत्यजदूरतः ४६ एवंचेत्सुखसंवासोभविष्यतिवनेमम ॥ इत्युक्त्वादण्डवन्मातुःपादयोरपतच्चिरम् ४७ उत्थाप्यांकेसमावेश्यआशीभिरभिनन्दयत् ॥ सर्वेदेवाःसगंधर्वाब्रह्मविष्णुशिवादयः ४८ रक्षंतुत्वांसदायांतंतिष्ठंतंनिद्रयायुतम् ॥ इतिप्रस्थापयामाससमालिंग्यपुनःपुनः ४९ ॥

(अम्बत्वंअपिमयादृष्टंनित्यदाहृदिभावयसमागमंप्रतीक्षस्वअचिरमदुःखैःनपीड्यसे) अब कौशल्या प्रति रघुनंदन कहतहे माता तुमहूँ निश्चयकरिकै मेरा कहा हुवा जो ज्ञान है ताहि नित्यही हृदयमें धारण किहे उतौ थोरे दिनोंको जो वियोगहै त्यहि दुःखकरिकै न दुःखित ह्वैहौ ४४ (कर्ममार्गअनुवर्तिनाम्सदाएकत्रसम्वासःन) हे माता यही लोकरीतिहै कि कर्ममार्ग परजे चलनेवाले हैं तिनको सब कालमें एकठौर सम्पूर्ण प्रकारते वास नहीं रहिसक्ताहै कौन भांति (यथासरितांप्रवाहपतितप्लवानांतथा) जैसे नदीके प्रवाह वेगवंत धारामें परेते नौका नहीं थिररहती है ताहीभांति४५ (अन्बदुःखंदूरतःसंत्यज्यचतुर्दशसमासंख्यामांक्षणार्द्धइवजायतेअनुमन्यस्व) हे माता दुःख जोहै ताहिं दूर होंते त्याग करो चौदह वर्ष गनती जो दिनहैं ते मोको आधे क्षणके समानवीति जानो अनुमानकिहेउ ४६ (एवंचेत्वनेममसुखसंवासोभविष्यतिइतिउक्त्वामातुःपादयो.दण्डवत्अपतत्चिरम्)हेमाता मेरा वनवास पांचपलभरि मानि प्रसन्नरहेउ ऐसा जो करौगी तो वनविषे मेरासुख पूर्वकवासहोई ऐसा कहि रघुनंदनमाताके पॉयनविषे दंड की नाईं गिरे बहुतवारपेररहे४७ (उत्थाप्यअंकेसंआवेश्य आशीभिःअभिनंदयत्ब्रह्माविष्णुशिवादयःसर्वेदेवाःसगंधर्वाः)कौशल्याजी रघुनंदनकोउठाय अकोरामें बैठाय आशीर्वादनकरिकै आनंदित करतीभई पुनःबोली कि ब्रह्मा विष्णु शिवादिक सवदेवता सहित गंधर्व ४८ (यांतंतिष्ठंतंनिद्रयायुतंत्वांसदारक्षंतुइतिपुनःपुन.आलिंग्याप्रस्थापयामास) राह जात बैठत शयन करत तुम्हारी सदा देवता रक्षाकरैं ऐसाकहि रघुनंदनको वारम्वार हृदयमें लगाय कौशल्याजी जानेकी आज्ञा देतीभई ४९ ॥

लक्ष्मणोपितदारामंनत्वाहर्षाश्रुगद्गदः ५० आहराममम्मांतस्थःसंशयोऽयंत्वयाहृतः ॥ यास्यामिपृष्ठतोराममसेवांकर्तुंतदादिश ५१ अनुगृह्णीष्वमांरामनोचेत्प्राणांस्त्यजाम्यहम् ॥ तथेतिराघवोऽप्याहलक्ष्मणंयाहिमाचिरम् ५२ प्रतस्थेतांत्समाधातुंगतःसीतापतिर्विभुः ॥ आगतंपतिमालोक्यसीतासुस्मितभाषिणी ५३ स्वर्णपात्रस्थसलिलैःपादौप्रक्षाल्यभक्तितः ॥ पप्रच्छपतिमालोक्यदेवकिंसेनयाविना ५४ आगतोसिगतःकुत्रश्वेतछत्रंचतेकुतः ॥ वादित्राणिनवाद्यंतेकिरीटादिविवर्जितः ५५ ॥

(तदालक्ष्मणःअपिहर्षअश्रुगद्गदःरामंनत्वा) ताही समयमें लक्ष्मणजी निश्चय करि प्रेमानंदके आँसू गिरावत गद्गद वानी सहित रघुनन्दन जोहैं तिनहिं प्रणाम कीन्हे ५० (रामंआहममअंत

स्थःअयंसंशयःत्वयाहृतःसेवांकर्तुंप्रस्तुतःयास्यामिरामतत्आदिश) रघुनन्दन प्रति लक्ष्मणजी बोले कि मेरे अंतरमें स्थित यह जो संशयरहै सो तो आपने नाश किया अब आपकीसेवा करनेहेत मैंभी पीछे पीछे चला चाहताहौं हे रघुनाथजी ताकी आज्ञादीजे ५१ (राममांअनुगृहणीष्वनोचेत्अहंप्रा णांस्त्यजामिलक्ष्मणंराघवःअपिआहतथाइतिमाचिरम्याहि) हे रघुनाथजी मोपर अनुग्रह करो साथ लै चलो नाहीं तो मैं प्राणै त्याग करोंगो तब लक्ष्मण प्रति रघुनन्दन निश्चय करिकै बोले कि जैसा कहतेहौ तैसाही होय ऐसा कहि पुनः कहे विलंब न करो शीघ्रही चलो ५२ (प्रतस्थेसीतातांसमा धातुंपतिःविभुःगतःपतिंआगतंआलोक्यसुस्मितभाषिणीसीता) लक्ष्मणजीको आज्ञा दैकै रघुनन्दन प्रतस्थे अर्थात् माताके घरते चले सीता जोहैं तिनहिं समुझावने हेत सीतापति समर्थ घरैगये पतिहि आवत देखि मंद मुसकाय बोलनेवाली सीता उठी ५३ (स्वर्णपात्रस्थसलिलैःभक्तितःपा दौप्रक्षाल्यपतिंआलोक्यपप्रच्छदेवसेनयाविनाकिं) जानकीजी उठिकै सोनेके पात्रमें भराहुआ जल लैकै त्यहि करिकै भक्ति पूर्वक दोउ पांय धोय पुनः पतिहि एकाकी देखि पूछती भई हे देव राज्या- भिषेक समयहै तो चतुरंगिनी सेना विना अकेले किस कारण आयो ५४ (किरीटादिविवर्जितःवा दित्राणिनवाद्यंतेचतेश्वेतछत्रंकुतःकुत्रगतःआगतोसि) किरीटादि भूषण रहित बाजाभी नहीं बाजते हैं पुनः आपको श्वेत छत्र कहाँहै अरु या समयमें सुमंत्रके बुलाय लयजानेते कहाँ गयोरहे जहांते साधारण चले आवतेहौ ५५ ॥

सामंतराजसहितःसंभ्रमान्नागतोऽसिकिम् ॥ इतिस्मसीतयापृष्टोरामःसस्मितम ब्रवीत् ५६ राज्ञामेदण्डकारण्येराज्यंदत्तंशुभेऽखिलम् ॥ अतस्तत्पालनार्थाय शीघ्रंयास्यामिभामिनि५७अद्यैवयास्यामिवनंत्वंतुश्वश्रूसमीपगा ॥ शुश्रूषांकुरु मेमातुर्नमिथ्यावादिनोवयम् ५८ इतिब्रुवंतंश्रीरामंसीताभीताऽब्रवीद्वचः ॥ किम र्थंवनराज्यंतेपित्रादत्तंमहात्मना ५९ तामाहरामःकैकेय्यैराजाप्रीतोवरंददौ ॥ भरतायददौराज्यंवनवासंममानघे ६० चतुर्दशसमास्तत्रवासोमेकिलयाचितः॥ तयादेव्याददौराजासत्यवादीदयापरः ६१ ॥

(सामंतराजसंभ्रमानसहितःकिनआगतोसिइतिस्मसीतयापृष्टःसस्मितंरामःअब्रवीत्) सामंत जो मिले हुये देशनकेराजासंभ्रम तिनको साथ सहित क्यों नहीं आयो भाव आज राज्याभिषेक समयहै ता अनुकूल राज साज विभव आपके साथ किस कारण नहीं है इस भांति जानकीजी ने पूछा तब मुसकायकै रघुनाथजी बोले ५६ (राज्ञामेशुभेदण्डकारण्येखिलंराज्यंदत्तंअतःभामिनितत्पा लनार्थायशीघ्रंयास्यामि) महाराजने मोको मंगलीक दण्डक वनकी समग्र राज्य दिया है इसते हे भामिनि तिनकी आज्ञा पालन हेत शीघ्रही वनहि जाउँगो ५७ (वनंअद्यएवयास्यामित्वंश्वश्रूस मीपगामेमातुःशुश्रूषांकुरुवयम्मिथ्यानवादिनः)मैं वनहि इससमय जाताहौं पुनःहेप्रिया तुम अपनी सासुके समीप जाय मेरी माताकी सेवा करो यह सत्यही कहताहौं मैं झूँठ नहीं बोलताहौं यही निश्चयहै ५८ (इतिब्रुवंतंश्रीरामंभीतासीतावचःअब्रवीत्महात्मनापित्रातेकिंअर्थवनराज्यंदत्तम्) मो को पिता वनकी राज्य दिया इत्यादि कहे श्रीरघुनन्दन तिन प्रति भयभीत श्रीजानकीजी वचन बोलीं कि महात्मा पिताने तुम्हारे अर्थ किस हेत वनकी राज्य दिया ५९ (तांरामःआहराजा प्रीतःकैकेय्यैवरंददौअनघेभरतायराज्यंददौममवनवासं) तिन सीता प्रति रघुनन्दन बोले कि पिता

प्रसन्न ह्वैकै कैकेयीके अर्थ दो वरदान देतेभये हे अनघे पाप रहित तिनमें एक वरदानमें भरतके अर्थ राज्य दिये तथा दूसरे वरदानमें मोको वनवास दिये ६०(तत्रचतुर्दशसमामेकिलवासःतयादेव्यायाचितःराजासत्यवादीदयापरःददौ) तहां चौदह बर्षमेरा वनवास निश्चय करिकै तिस देवी कैकेयी ने वरमांगा अरु महाराज सत्यवादीहैं अरु मोपर दया राखतेहैं तहां सत्यव्रतके प्रभावते वरदानदेते भये कदाचित् दयाते उरमें कादरतान धारण करिलेवै यह शंका मेरे मनमें आवतीहै ऐसी उपाय करें जामें सत्यव्रत वनारहै ६१ ॥

अतःशीघ्रङ्गमिष्यामिमाविघ्नंकुरुभामिनि ॥ श्रुत्वातद्रामवचनंजानकीप्रीतिसंयुता ६२ अहमग्रेगमिष्यामिवनंपश्चात्त्वमेष्यसि ॥ इत्याहमांविनागंतुंतवराघवनोचितम् ६३ तामाहराघवःप्रीतःस्वप्रियांप्रियवादिनीम् ॥ कथंवनंत्वांनेष्येऽहंबहुव्याघ्रमृगाकुलम् ६४ राक्षसाघोररूपाश्चसंतिमानुषभोजिनः ॥ सिंहव्याघ्रवराहश्चसंचरंतिसमंततः ६५ कट्वम्लफलमूलानिभोजनार्थंसुमध्यमे ॥ अपूपानिव्यंजनानिविद्यन्तेनकदाचन ६६ कालेकालेफलंवाऽपिविद्यतेकुत्रसुन्दरि ॥ मार्गोनदृश्यतेक्वापिशर्कराकण्टकान्वितः ६७ ॥

(अतःशीघ्रंगमिष्यामिभामिनिविघ्नंमाकुरुततूरामवचनंश्रुत्वाजनकीप्रीतिसंयुता) रघुनंदन बोले कि जामें पिताको सत्यव्रतवनारहै इसते शीघ्रहीबनहि जावाचाहतहौं तामें हेभामिनि विघ्न नकिहेउ भाव प्रसन्नता सहित जानेको कहौ तौन रघुनाथजीको जो वचनहै ताहि सुनि जानकीजी प्रीति सहित बोलीं इति शेषः ६२ (अहंवनंअग्रेगमिष्यामित्वंपश्चातुएष्यसिइतिआहराघवमांविनातवगंतुं नउचितम्) जानकीजी बोलीं कि मैं वनहिं आपके आगे चलौंगी आप पीछे चलौंगे इत्यादि कहि पुनः बोलीं हेराघव मोहिं विना आपको वन जाना उचित नहीं अनुचितहै भाव विवाह समय स्त्री पतिसों मांगिलेती है कि जो सत्कर्म करौ सो हम सहितकरौ ताते पितुआज्ञा धर्मपालन हम विना वनबास अनुचितहै ताते संग लैचलिये ६३॥(प्रियवादिनीमूस्वाप्रियांतांराघवःप्रीतःआहबहुव्याघ्रमृगाकुलंवनंत्वांकथंअहंनेष्ये) प्रियवचन बोलनेवाली जो आपनी प्राणप्रिय जानकी तिनप्रति रघुनन्दन प्रीतिपूर्वक बोले कि जहां व्याघ्रादि मृगा परिपूर्ण वनतहां तुमहिं कैसे मैं लैचलौं ६४ (चमानुषभोजिनःघोररूपाःराक्षसाःसंतिचसमंततःसिंहव्याघ्रवराहाःसंचरंति) पुनः मनुष्योंको खाइजानेवाले भयंकर राक्षस जहां वसते हैं पुनः वनमें सबठौर सिंह व्याघ्र शूकर बिचरतेहैं ६५ (सुमध्यमेभोजनार्थंकटुअम्लफलमूलानिअपूपानिव्यंजनानिकदाचननविद्यंते) सुन्दर कटि इति हे सुमध्यमे वनमें भोजनके हेत करू खट्टे फल मूलादिहैं अरु लाडू मालपुवा दिव्यव्यंजन कभी देखनेको न मिलैंगे ६६ (सुन्दरिकालेवाअकालेफलंअपिकुत्रविद्यतेमार्गःनदृश्यतेक्वापिशर्कराकंटकान्वितः) समयपर वा असमयपर फलभी निश्चयकरि कहीं मिले कहीं न मिले अरु राह नहीं मिलतीहै कहीं देखिपरती है सो कंकरी कांटायुक्त राहहै तहां कैसे तुम चलिसकौगी ६७ ॥

गुहागह्वरसंबाधम्झिल्लीदंशादिभिर्युतम् ॥ एवंबहुविधंदोषंवनंदण्डकसंज्ञितम् ६८ पादचारेणगन्तव्यंशीतवातातपादिकम् ॥ राक्षसादीन्वनेदृष्ट्वाजीवितंहास्यसेचिरात् ६९ तस्माद्गच्छगृहेतिष्ठशीघ्रंद्रक्ष्यसिमांपुनः॥रामस्यवचनंश्रुत्वा

सीतादुःखसमन्विता ७० प्रत्युवाचस्फुरद्वक्त्राकिञ्चित्कोपसमन्विता ॥ कथं मामिच्छसेत्यक्तुंधर्मपत्नींपतिव्रताम् ७१ त्वदनन्यामदोषांमांधर्मज्ञोसिदयापरः ॥ त्वत्समीपेस्थितांरामकोवामांधर्षयेद्वने ७२ फलमूलादिकंयद्यत्तवभुक्तावशेषितम् ॥ तदेवामृततुल्यंमेतेनतुष्टारमाम्यहम् ७३ ॥

(झिल्लीदंशादिभिःयुतम्गुहागह्वरसंबाधंएवंवहुविधंदोषंदण्डकसंज्ञितंवनम्) झींगुरादि कीट भूमि ते काटत डांस मसादि उडिकै काटत इत्यादि युतस्वयं वनेहुये पहारनमें गुहामें रहना तहां संपूर्ण वाधाहै ऐसे बहुत विधिके दोपमय दंडकनामे वनहै ६८ शीतवातआतपादिकम्पादचारेणगंतव्यंवनेराक्षसादीन्दृष्ट्वाग्रचिरात्जीवितम्हास्यसे) जाड बयारि घामेआदिक दुःखसहत पैदर चलनापरी अरु वनमें राक्षसआदि भयानक जीवनको देखतहीं तुम प्राणत्यागकरौगी भाव एकतौ राहैमें न जीवनरही कदाचित् बची तौ वनमें राक्षसादि देखिडरते प्राणत्यागकरौगी ६९ (तस्मात्गृहेतिष्ठभद्रेशीघ्रंमांपुनःद्रक्ष्यसि) ताते घरहींमें रहौ हेकल्याणरूपेशीघ्रही मोहिं पुनः देखौगी भाव चौदहवर्ष वादि तुरतही आइहौं (रामस्यवचनंश्रुत्वादुःखसमन्वितासीता) वियोगकारक रघुनंदनके वचन सुनि दुःखसहित सीता सन्मुखभई ७० (किंचित्कोपसमन्वितवक्त्रास्फुरत्प्रतिउवाचधर्मपत्नींपतिव्रताम्मांकथंत्वंत्यक्तुंइच्छसे) जानकीजी थोरेकोप सहित ओष्ठ फरकत रघुनंदन प्रति बोलीं मैंपाणिगृहीता आपकी पत्नी पुनः पतिव्रताहौं तौ मोहिं क्यों त्यागेकी इच्छा करतेहौ ७१ (अदोषात्वत्अनन्यांमांदयापरःधर्मज्ञःअसिरामत्वत्समीपेस्थितांमांवनेकोवाधर्षयेत्) दोपनते रहित आपकीअनन्य भाव आपके सिवाय दूसरासंबंध नहीं मानती हौंमें अरु आप दयावंत धर्मके जाननेवालेहौ हेरघुनंदन आपके समीपरहे मोहिं वनमें कौन ऐसाहै जो तिरस्कार करिसकी ७२ (तवभुक्तःअवशेषितंयत्यत्फलमूलादिकंतत्एवअमृततुल्यंतेनमेतुष्टाअहंरमामि) आपके भोजनते वाकी रहिगये जो जो फल मूलादि तिनहिं निश्चयकरि अमृतके तुल्य भोजन करि तेहि करिके तुष्टरहि आपके संग रमन क्रीड़ा करिहौं ७३ ॥

त्वयासहचरन्त्यामेकुशाःकाशाश्चकंटकाः ॥ पुष्पास्तरणतुल्यामेभविष्यंतिनसंशयः ७४ अहंत्वांक्लेशयेनैवभवेयंकार्यसाधिनी ॥ वालेमांवीक्ष्यकश्चिद्दैव्ज्योतिःशास्त्रविशारद ७५ प्राहतेविपिनेवासःपत्यासहभविष्यति ॥ सत्यवादीद्विजोभूयाद्गमिष्यामित्वयासह ७६ अन्यत्किंञ्चित्प्रवक्ष्यामिश्रुत्वामांनयकाननम् ॥ रामायणानिवहुशःश्रुतानिवहुभिर्द्विजैः ७७ सीतांविनावनंरामोगतःकिंकुत्रचिद्वद ॥ अतस्त्वयागमिष्यामिसर्वथात्वत्सहायिनी ७८ यदिगच्छसिमांत्यक्त्वाप्राणांस्त्यक्ष्यामितेग्रतः ॥ इतितंनिश्चयंज्ञात्वासीतायाःरघुनन्दनः ७९ ॥

(त्वयासहमेचरंत्याःकुशाःकाशाःचकंटकाःमेपुष्पास्तरणतुल्याभविष्यंतिसंशयःन) आपके साथ जो मैं वनको चलौंगी तौ राहमें कुश काशपुनः कांटा मोको फूलन के विछौना तुल्यहोंयगे यामें संशय नहीं है ७४ (अहंक्लेशयेनत्वांकार्यसाधिनीएवभवेयं) मैं क्लेशउपजावने वाली नहीं हौं आप को जो वनमें कार्य है ताको साधन सिद्ध करावनेवाली निश्चयकरिकै होउंगी (वालेकश्चिद्दैव्ज्योतिपशास्त्रविशारदःमांवीक्ष्य) मेरी वाल अवस्थामें कोऊ निश्चय करि ज्योतिप विद्यामें प्रवीन ब्राह्मण मोहिं

देखि भाव जन्मपत्रिका वा हस्तरेखादि देखि७५(ब्राह्पत्यासहतेविपिनेवासःभविष्यतित्वयासहगमिष्यामिद्विजःसत्यवादीभूयात्)उसने मोसो कहा कि पतिकरिकै सहित तेरा वनमेंवासहोई ताते आप केसाथै वनकोजाऊंगी तब वह ब्राह्मण सत्यवादीहोइगो७६(किंचित्अन्यत्अवक्ष्यामिश्रुत्वासांज्ञाननंनयबहुभिःद्विजैःबहुशःरामाणानिश्रुतानि) हे प्राणनाथ कुछ औरहू कहतीहों ताहिसुनिकैमोहिं वनहिंले चलिये बहुतेब्राह्मणन करिकै बहुती रामायणथ जोहैं तिनहीं सुनेउहैं तिनकी अनुकूल आजतककोसव चरित आपको है७७(सीतांविनारामःगतःकिंकुत्रचित्वदसर्वथात्वत्सहायनीअतःत्वयागमिष्यामि)अब क्या आपनई करोगे काहेते किसी रामायणमें जो सीता विनारामवनको गयेहोंय सो कुछकहीं लिखा होइ सो आपही कहिये नातरु सबकालमें आपकी सहाय करताहों इसकारण आपके साथही चलोंगी ७८ (यदिमांत्यक्त्वागच्छसितेअग्रतःप्राणांस्त्यक्ष्यामिइतितंसीतायाःनिश्चयंरघुनंदनःज्ञात्वा)जो मोहित्यागि कै चलिहौ तुम्हारे आगे प्राणै त्यागि देउँगी इति तिन सीताकी निश्चय प्रतिज्ञा रघुनंदन जाने भावजो इनको साथनलेउँगो तौ जावत न रहि सकिहैं निश्चय प्राण त्यागिदेहैं ७९ ॥

अब्रवीद्देविगच्छत्वंवनंशीघ्रंमयासह ॥ अरुन्धत्यैप्रयच्छाशुहारानाभरणानि च ८० ब्राह्मणेभ्योधनंसर्वंदत्त्वागच्छामहेवनम् ॥ इत्युक्त्वालक्ष्मणेनाशुद्विजानाहूयभक्तितः ८१ ददौगवांवृन्दशतंधनानिवस्त्राणिदिव्यानिविभूषणानि ॥ कुटुम्बवद्भ्यःश्रुतशीलवद्भ्योमुदाद्विजेभ्योरघुवंशकेतुः ८२ अरुन्धत्यैददौसीतामुख्यान्याभरणानिच ॥ रामोमातुस्सेवकेभ्योददौधनमनेकधा ८३ स्वकान्तःपुरवासिभ्यःसेवकेभ्यस्तथैवच ॥ पौरजानपदेभ्यश्चब्राह्मणेभ्यस्सहस्रशः ८४ लक्ष्मणोपिसुमित्रांतुकौशल्यायैसमर्पयत् ॥ धनुःपाणिःसमागत्यरामस्याग्रेव्यवस्थितः ८५ ॥

(अब्रवीत्देविस्त्वंशीघ्रंमयासहवनंगच्छहारान्चआभरणानिआशुअरुन्धत्यैप्रयच्छ) रघुनन्दन बोले हे देविसीते तुमशीघ्रही मेरे साथ वनहि चलौ और आपने हार पुनः और हूं भूषण उतारि शीघ्रही बाशिष्ठ की स्त्री अरुंधती के अर्थ दै देउ८० (सर्वधनंब्राह्मणेभ्यःदत्त्वावनम्गच्छामहेइतिउक्त्वाआशुलक्ष्मणेनद्विजान्आहूयभक्तितः) मैं भी सब धन ब्राह्मणों के अर्थदैकै वनहि चलताहों ऐसा कहि रघुनन्दन शीघ्रही लक्ष्मण करिकै ब्राह्मणों को बुलाय भक्ति ते सन्माने ८१ (गवांवृन्दशतंधनानिवस्त्राणि दिव्यानिविभूषणानिरघुवंशकेतुःमुदाब्राह्मणेभ्यःददौकथंभूतेभ्यःकुटुंबवद्भ्यःश्रुतशीलवद्भ्यः) गैयन के वृन्द सैकरन सोन माणि आदि समूह धनरेशमी जरतारी ऊनी आदि समूहवसन किरीट कुण्डल मालाकेयूरादि दिव्य भूपण इत्यादि सब वस्तु मंगाय रघुवंश केतु श्रीरघुनन्दन आनन्दते ब्राह्मणोंके अर्थ देते भयेकसनकोजे कुटुंब वंत विद्वान् सुशीलहैं८२(सीतामुख्यानिआभरणानिअरुंधत्यैददौचराममातुःसेवकेभ्यःअनेकधाधनंददौ)जानकीजी अपने मुख्य भूपण अरुंधतीके अर्थ देतीभई पुनः रघुनाथ जी आपनी माताके सेवकनके अर्थ अनेक प्रकारको धन देतेभये८३ (स्वकांतःपुरवासिभ्यःसेवकेभ्यःचतथाएवपौरजानपदेभ्यःसहस्रशःब्राह्मणेभ्यः) आपने महल के दासीदास पुरकेवासी सेवक तैसे निश्चय करि पुरके अरुराज्यके जे हजारन ब्राह्मण आये इत्यादि सबके अर्थ रघुनाथजी धनदिये ८४ (लक्ष्मणःअपिसुमित्रांकौशल्यायैसमर्पयत्धनुःपाणिःसंआगत्यरामस्यअग्रेव्यवस्थितः) लक्ष्मणजी

निश्चयकरि माता सुमित्रा तिनहिं कौशल्याके अर्थ अर्पन किये भावसौंपि दिये आप धनुष बाणहाथ में लैकै आय रघुनाथजीके आगे खड़ेभये ८५ ॥

रामःसीतालक्ष्मणश्चजग्मुःसर्वेनृपालयम् ८६ श्रीरामःसहसीतयानृपपथेगच्छन्शनैःसानुजः पौरान्जानपदान्कुतूहलदृशःसानन्दमुद्वीक्षयन् ॥ श्यामःकामसहस्रसुन्दरवपुःकान्त्यादिशोभासयन् पादन्यासपवित्रिताऽखिलजगत्प्रापालयन्तत्पितुः ८७ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसम्वादेअयोध्याकाण्डेचतुर्थस्सर्गः ४ ॥

(रामःसीताचलक्ष्मणःसर्वेनृपालयम्जग्मुः) रघुनंदन जानकीपुनः लक्ष्मण इतिसव जन साथ ह्वै महाराज दशरथके मंदिरहि चलते भये ८६ (सानुजसीतयासहश्रीरामः श्यामः सहस्रकामसुन्दरःवपुःकांत्यादिशःभासयन्) सहित लक्ष्मण सीता करिकै सहित श्रीराम श्याम वरण हजारों काम सम सुन्दर तन आपने तनकी प्रभा करिकै सब दिशनको प्रकाशित करते हुये (पादन्यासअखिलजगत्पवित्रित) पिताकी प्रतज्ञा ताको पालत ताते भूमि में पायँ धरत ताते सम्पूर्ण जगत्को पावन करते हुये (कुतूहलदृशःपौरान्जानपदान्सानदंउद्वीक्षयन्शनैर्नृपपथेगच्छन्पितुःआलयंतत्प्राप) कौतुक देखनेवाले पुरवासी तथा राज्यवासी जो राहके दोऊ दिशिखड़ेहैं तिनहिं आनन्द सहित देखते हुये धीरा धीरा नृपपथ जो सड़क तामें चलेजाते हुये पिताके मंदिरमें प्राप्तभये अर्थात् पिताके मन्दिरको चलेजात समयकी शोभाको वर्णन करताकि लक्ष्मण जानकी सहित श्रीरघुनन्दन श्यामवर्ण हजारन कौम समसुन्दर तनताकी प्रभाकरिकै सबदिशा प्रकाशित करतेहु ये पिताकी प्रतिज्ञा पालतताते भूमिपै पायँधरत सब जगको पावन करते हुये पुनः राज्याभिषेक समय वनगमन इत्यादि अद्भुत तमाशा देखने वाले पुरवासी राज्यके लोग जो खड़ेहैं तिनको आनन्द सहित देखते हुये धीरा धीरा राजमार्गमे चले जातेहुये पिताके धाममें पहुँचे ८७ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचितेकौशल्यालपणजानकीप्रभुसंवादवर्णनोनामचतुर्थःप्रकाशः ॥ ४ ॥

श्रीमहादेवउवाच ॥ आयान्तंनागराहृष्ट्वामार्गेरामंसजानकीम् ॥ लक्ष्मणेनसमंवीक्ष्यऊचुःसर्वेपरस्परम् १ कैकेय्यावरदानादिश्रुत्वादुःखसमावृताः॥ वतराजादशरथःसत्यसन्धम्प्रियंसुतम् २ स्त्रीहेतोरत्यजत्कामीतस्यसत्यव्रतःकुतः ॥ कैकेयीवाकथंदुष्टारामंसत्यंप्रियङ्करम् ३ विवासयामासकथंक्रूरकर्माऽतिमूढधीः ॥ हेजनानात्रवस्तव्यंगच्छामोऽद्यैवकाननम् ४ यत्ररामःसभार्यश्चसानुजोगन्तुमिच्छति ॥ पश्यन्तुजानकीसर्वेपादचारेणगच्छतीम् ५ पुंभिःकदाचिद्दृष्टाजानकीलोकसुन्दरी ॥ सापिपदेनगच्छन्तीजनसङ्घेष्वनावृता ६ ॥

सवैया ॥ निज मंदिरते पितुधाम चले निरखै पुरलोग विषादभरो । पितुवन्दिवसे तमसातटगंग मिले सुनि पादहि लायगरो॥ सजटामहिसोवत देखि दुखी गुहलक्ष्मण तासु विषाद हरो । सिय सानुज राघव वैजलुनाथहिये विचनित्य निवास करो १ (लक्ष्मणेनसमंसजानकीम्रामंमार्गेआयांतं

दृष्ट्वानागराःसर्वेवीक्ष्यपरस्परंऊचुः) लक्ष्मण करिके समेत सहित जानकी रघुनन्दन जोहैं तिनहिं राहमें आवत देखि नगरवासी सब सुकुमारता देखि आपुसमें वार्ता करते भये १ (कैकेय्या) कैकेयी को महाराज वरदान दिये ताते रघुनन्दन बनहि जातेहैं इत्यादिकथा सुनिके दुःखपीड़ित सब कहत कि (वत) अर्थात् बड़े खेदकी बातहै कि राजादशरथ कैसे ह्वै गये जो सत्यव्रत धारी प्रियपुत्र रघुनन्दन तिनहिं २ (कामीस्त्रीहेतोःअत्यजत्तस्यसत्यवतःकुतः) जो कामबशस्त्रीके प्रियत्वहेत रघुनन्दन को त्यागततौ महाराज की सत्यता कहांहै (वाकैकेयीदुष्टाकथंरामंसत्यंप्रियंकरं) वाकै केयी दुष्टा पूर्व कैसे रघुनन्दन सत्यसंधातिनहिं प्यार करती रही जो प्रिय पुत्रहि ३(अतिमूढधीःक्रूरकर्माकथंविवास यामास) जाकोहानि लाभनहीं सूझत अत्यंतमूढ बुद्धी कुटिल कर्मकरने वाली कैसे रघुनन्दन को वनहिपठाई (हेजनाअत्रनवस्तव्यंअद्यैवकाननंगच्छामः) हे पुरजनौ इहां नबसौ कैकेयी के नगरमें रहना उचित नहीं है अबहीं उसी बनहिं चलते हैं ४ (सानुजःवसभार्यःरामःयत्रगंतुंइच्छति) सहित छोटेभाई पुनःसहित जानकी रघुनन्दन जिस वनहिं जानेकीइच्छाकरते हैं तहैं चलब(सर्वेपश्यं तुजानकींपादचारेणगच्छतीम्) सबजने देखौ जानकी ऐसी सुकुमारी पैदरचली जाती हैं ५ (कदा चिदपुंभिःदृष्टालोकसुन्दरीजानकीसाअपिअनावृताजनसंघेपुपादेनगच्छन्ती) जाको कबहूं पुरुषोंने देखा नहीं पुनः लोकमें एकही सुन्दरी सुकुमारी जानकी सोऊ निश्चय करि परदारहित जननके विषे पावन करिके चलती हैं ६॥

रामोऽपिपादचारेणगजाश्वादिविवर्जितः ॥ गच्छतिद्रक्ष्यथविभुंसर्वलोकैकसुन्दरम् ७ राक्षसीकैकयीनाम्नीजातासर्वविनाशिनी ॥ रामस्यापिभवेद्दुःखंसीतायाः पादयानतः ८ बलवान्विधिरेवात्रपुंप्रयत्नोहिदुर्बलः ॥ इतिदुःखाकुलेवृंदेसाधूनांमुनिपुंगवः ९ अब्रवीद्वामदेवोऽथसाधूनांसंघमध्यगः ॥ मानुशोचथरामंवा सीतांवावच्मितत्त्वतः १० एषरामःपरोविष्णुरादिनारायणःस्मृतः ॥ एषासा जानकी लक्ष्मीर्योगमायेतिविश्रुतः ११ असौशेषस्तमन्वेतिलक्ष्मणाख्यश्च सांप्रतम् ॥ एषमायागुणैर्युक्तस्तत्तदाकारवानिव १२ ॥

(सर्वलोकैकसुन्दरम्विभुंद्रक्ष्यथरामःअपिगजाश्वादिविवर्जितःपादचारेणगच्छति) जो सब लोकनमें एकही सुन्दर समर्थ स्वामी हैं तिनहिं देखिये रघुनन्दन निश्चयकरि हाथी घोड़ादि वाहनबिना पायँन की चाल करिकैचले जाते हैं तब हमको कौन दुर्घटताहै इतिभावः७ (सर्वविनाशिनीकैकेयीना म्नीराक्षसीजातासीतायाःपादयानतःरामस्यअपिदुःखंभवेत्) हम सबको नाशकरिवे हेत कैकेयी नामे कोऊराक्षसी उत्पन्न भईहै काहेते इसीकी दुष्टताते ऐसीदशाभई कि सीताको पायँन चलनेतें रघुनन्दनको भी निश्चय करिकै दुःख होई८ (अत्रविधिःएवबलवान्पुंप्रयत्नोहिदुर्बलःइतिदुःखाकुले साधूनांवृंदेमुनिपुंगवः) इहां बिधाताकी गति निश्चयकरिकै बलवान् है अरुसंसारी पुरुषोंकी प्रकर्ष यत्ननिश्चय करिकै निर्बलहै भाव भाग्य उदयभयेपर किसी की उपाय नहीं चलतीहै जो होनहार है सोई होताहै इत्यादि दुःख करिकै व्याकुल साधुनके वृन्दमें मुनिश्रेष्ठ ९ (साधूनांसंघमध्यगःवामदेवःअथअब्रवीत्रामंवासीतांवामाअनुशोचथतत्त्वतःवच्मि) साधुनके संघ मध्य स्थित जो बाम देवसो बोलते भये कि राम अथवा सीता वा लक्ष्मण तिनहिं मति शोच करौ इनको सत्य तत्त्व मैं कहता हौं

सोसुनहु १० (आदिनारायणःस्मृतःपरोविष्णुःएपरामःयोगमायाइतिविश्रुतःलक्ष्मीःसाएषाजानकी) जो आदि नारायण सुनि परतेहैं प्रकृतितेपरे विष्णुलोकनके पालनहारे येरामहैं तथा योगमाया ऐसा जो सुनि परताहै लक्ष्मी सोई ये जानकी हैं ११ (तंअनुलक्ष्मणइतिआख्याअसौशेपःचसांप्रतम्मायागुणैःयुक्तःएपतत्तत्आकारवान्इव)तिस रघुनन्दनके पीछे जाने वाले जो लक्ष्मण ऐसा नाम प्रसिद्ध सो शेपहैं ते सब यासमयमें माया गुणों करिकै युक्तहैं त्यहि माया की जो जो चेष्टा होती है तब एभी ताही ताही आकार वंत सम दिखातेहैं १२ ॥

एषएवरजोयुक्तोब्रह्माऽभूद्विश्वभावनः ॥ सत्वाविष्टस्तथाविष्णुस्त्रिजगत्प्रतिपालकः १३ एषरुद्रस्तामसोंतेजगत्प्रलयकारणम् ॥ एषमत्स्यःपुराभूत्वाभक्तंवैवस्वतंमनुम् १४ नाव्यारोप्यलयस्यांतंपालयामासराघवः॥समुद्रमथनेपूर्वंमंदरेसुतलंगते १५ अधारयत्स्वयपृष्ठेऽद्रिंकूर्मरूपीरघूत्तमः ॥ महीरसातलंयाताप्रलयेसूकरोऽभवत् १६ तोलयामासदंष्ट्राग्रेतांक्षोणींरघुनन्दनः ॥ नारसिंहंवपुःकृत्वा प्रह्लादवरदःपुरा १७ त्रिलोककंटकंरक्षःपाटयामासतन्नखैः॥ पुत्रराज्यंहृतंदृष्ट्वा ह्यदित्यायाचितःपुरा १८ ॥

(एपरजःयुक्तःविश्वभावनःएवब्रह्माअभूततथासत्वाविष्टःत्रिगजत्प्रतिपालकःविष्णुः) इनहीं रघुनन्दन रजोगुण युक्त ह्वै संसार को उत्पन्न करण हारे निश्चय करि ब्रह्मा होतेहैं ताही भांति सतोगुण युक्तह्वै तीनहूं लोकन के पालन हार विष्णु होतेहैं १३ (अंतेजगत्प्रलयकारणम्एपतामसोरुद्रः) अंत काल में जगतके प्रलय करणे कारण इनही राम तमोगुण युक्त रुद्र होतेहैं (वैवस्वतंमनुंभक्तं एपपुरामत्स्यःभूत्वा) वैवस्वत नामे जो मनु भक्त तिनके हेत इनही पूर्व काल में मत्स्य रूपभये १४ (नाव्यारोप्यराघवःलयस्यअंतंपालयामास) नावपर बैठारि मत्स्य रूपते राघव प्रलयकाल पर्यंत प्रजन सहित मनुकी रक्षा किये (पूर्वसमुद्रमथनेमन्दरेसुतलंगते) पूर्वकाल समुद्र मथत समय मन्दराचल पतालहि चलोजात संते १५ (कूर्मरूपीरघूत्तमःस्वपृष्ठेअद्रिंअधारयत्) कूर्म रूपधरि रघुनन्दन अपनी पीठिपर पहार धारण किये तब सिन्धु मथा गया (प्रलयेमहीरसातलंयातासूकरः अभवत्) प्रलय काल के जल में भूमि रसातल को जातीरहै तब शूकर रूप भये (रघुनन्दनःतांक्षोणींदंष्ट्राग्रेतोलयामास) सूकर रूपते रघुनन्दन पृथ्वी जो है ताहि अपने दांतेकी नोकपरधारणकिये १६ (पुराप्रह्लादवरदःनारसिंहवपुःकृत्वा) पूर्वकालमें प्रह्लादकोबरदेनहारे नृसिंहरूपधरे १७(रक्षःत्रिलोककंटकंतंनखैःपाटयामास) नृसिंह रूपते रघुनन्दन प्रह्लादकी रक्षाकिये अरू तीनिहूं लोकनको कंट भावदुःखदायक हिरण्यकशिपु ताहि आपने नखोंकरिकै पेटफारि मारिडारे (पुत्रराज्यंहिहृतंदृष्ट्वाअदित्यापुरायाचितः)पुत्र जो इंद्र तिनकी राज्य निश्चय करिहरिजात देखि अर्थात् वलिने छीनि लिया तब इंद्रकीमाता अदितिने पूर्वकालमें रघुनन्दनते प्रार्थनाकरि अपनापुत्र होनेको वरमाँगा१८ ॥

वामनत्वमुपागम्ययाञ्चयाचाहरत्पुनः ॥ दुष्टक्षत्रियभूभारनिवृत्त्यैभार्गवोऽभवत् १९ सएवजगतांनाथइदानींरामतांगतः ॥ रावणादीनिरक्षांसिकोटिशोनिहनिष्यति २० मानुषेणैवमरणंतस्यदृष्टंदुरात्मनः॥ राज्ञादशरथेनापितपसाराधितो हरिः २१ पुत्रत्वाकांक्षयाविष्णोस्तदापुत्रोभवद्धरिः ॥ सएवविष्णुःश्रीरामोराव

णायवधायहि २२ गताद्यैववनंरामोलक्ष्मणेनसहायवान् ॥ एषासीताहरेर्माया सृष्टिस्थित्यंतकारिणी २३ राजावाकैकयीवाऽपिनात्रकारणमण्वपि ॥ पूर्वेद्युर्नारदःप्राहभूभारहरणायच २४ ॥

(वामनत्वंउपागम्यवयाञ्चयाअहरत्पुनःक्षत्रियदुष्टभूभारनिवृत्त्यैभार्गवःअभवत्)वामन रूपधरि के रघुनन्दन भिक्षाको वहाना करिकै वलिते छीनि पुनःराज्य इंद्रको दिये जव सहस्रबाहु आदि क्षत्री दुष्टभये तिनको भूमिपै भार भया ताको नाशकरणे हेत भृगुवरपरशुरामभये १९ (सजगतांनाथइदानींएवरामतांगतःरावणादीनिकोटिशःरक्षांसिनिहनिष्यति)सोई जगत्केनाथ अवरामनामे अवतीर्ण भये सोवनको जायकारण लगाय रावण इत्यादि करोरिनरक्षस जो त्रिलोक दुःख दायक भूमिपै भारहैं तिनहिं नाशकरि हैं २० (दुरात्मनःतस्यएवमानुषेणमरणमृद्दष्टंराज्ञादशरथेनअतितपसाहरिःआराधितः) दुष्टात्मा रावणताकी निश्चय करि मनुष्यही के हाथोंकरिकै मरण देखागया ताते मनुष्य रूपधरे अरु महाराज दशरथने निश्चय करि पुत्रहोने हेत पूर्वजन्ममें तपस्याकरि भगवान्को आराधन किये २१ (विष्णोःपुत्रत्वाकांक्षयातदाहरिःपुत्रःअभवत्सविष्णुःएवश्रीरामःहिरावणादिवधाय) विष्णुही को पुत्र होने की कांक्षा करिकै आराधन किये तात हरि आपही आय दशरथ के पुत्र भये सो ई विष्णु निश्चय करि श्रीराम हैं सो निश्चय करि रावणादिक राक्षसों के मारणे हेत २२ (सहायवान्लक्ष्मणेनरामःअद्यएववनंगतःसृष्टिस्थितिअंतकारिणीहरेःमायाएषासीता) सहाय वंत लक्ष्मण करिकै सहित रघुनन्दन आजु निश्चय करि वनहिं जायँगे अरु सृष्टिकी उत्पत्ति पालन संहार करण हारी हरिकी माया ये सीता हैं २३ (राजावाअपिकैकेयीवाअत्रकारणमण्वपिनचभूभारहरणायपूर्वेद्युःनारदःप्राह) राजा विना विचारे वर दिया अथवा निश्चयकरि कैकेयीने वनवासदिया इत्यादि कारण इहां न मानो स्वइच्छित वनहि जातेहैं पुनः भूमिको भार हरनेहेत वन जानेको कल्हिही नारद कहिगयेहैं २४ ॥

रामोऽप्याहस्वयंसाक्षात्श्वोगमिष्याम्यहंवनम् ॥ अतोरामंसमुद्दिश्यचिंतांत्यजतबालिशाः २५ रामरामेतियेनित्यंजपन्तिमनुजाभुवि ॥ तेषांमृत्युभयादीनिनभवंतिकदाचन २६ कापुनस्तस्यरामस्यदुःखशङ्कामहात्मनः ॥ रामनाम्नैवमुक्तिःस्यात्कलौनान्येनकेनचित् २७ मायामानुषरूपेणविडंवयतिलोककृत् ॥ भक्तानांभजनार्थायरावणस्यवधायच २८ राज्ञश्चाभीष्टसिध्यर्थंमानुषंवपुराश्रितः ॥ इत्युक्त्वाविररामाथवामदेवोमहामुनिः २९ श्रुत्वातेऽपिद्विजाःसर्वेरामंज्ञात्वाहरिंविभुम् ॥ जहुर्हृत्संशयंग्रंथिंराममेवान्वचिंतयन् ३० ॥

(रामःसाक्षात्स्वयंअपिआहअहंवनंश्वःगमिष्यामिअतःबालिशाःरामंसमुद्दिश्यचिंतांत्यजत) रघुनन्दन साक्षात् आपही निश्चय करि नारद सों कहेरहैं कि मैं वनहि कल्हि प्रभातही जाउँगो इस कारणते हेमूढ़ो रघुनन्दनहि वनजानो देखि जो चिन्ता करतेहो कि इनको दुःख होइगो यह त्याग करो ये अखंड आनन्दरूपहैं २५ (भुवियेमनुजानित्यंरामरामइतिजपंतितेषांमृत्युभयादीनिकदाचन नभवंति)भूमिपै जे मनुष्य नित्यहीं रामराम ऐसा जपतेहैं तिनको मृत्यु आदिक भय कवहूं नहींहोतेहैं भाव जन्म मरणादि भव दुःखोंते छूटि जातेहैं २६ (कलौरामनाम्नाएवमुक्तिःस्यात्अन्येनकेन

चितनपुनःतस्यमहात्मनःरामस्यकादुःखशङ्का) कलियुगमें राम नामही करिकै निश्चय मुक्तिहोती है और काहू साधन करि नहीं होतीहै तब फिरि तिन महात्मा रघुनन्दनको क्या दुःख होनेकी शङ्का करतेहौ २७ (रावणस्यबधायचभक्तानांभजनार्थायमायामानुपरूपेणलोकरुत्विडंवयति)रावणको वध करने अर्थ पुनः भक्तनको स्वतन्त्र भजन करावने अर्थ दिव्य मायामय मनुष्य रूप करिकै लोकको आपने उत्तम कर्म दर्शाय शीक्षा करतेहैं उत्तम धर्म उपदेशतेहैं २८ (चराज्ञःअभीष्टसिध्यर्थमानुषं वपुः आश्रितःइतिउक्त्वाअथमहामुनिःवामदेवःविरराम) पुनः राजा दशरथ ईश्वरको पुत्र करि पावनेको आराधन किया तिनको मनोरथ पूर्ण करिवेहेत मनुष्य तन ग्रहण किये ऐसा करि तब महामुनि वामदेव चुपायरहे २९ (तेसर्वेद्विजा.अपिश्रुत्वाहरिंविभुंरामंज्ञात्वाहृत्संशयग्रंथिंजहुःरामंएवअनुअचिन्तयन्) ते सब ब्राह्मण निश्चय ऐश्वर्यमय वामदेवके वचन सुनिकै हृदयमें जो संशयग्रंथीरहै भाव रघुनन्दनको मनुष्य मानेरहैं सो ग्रन्थीभेदन करि भावसंशय त्यागि हरि समर्थ जानि रघुनन्दन जोहैं तिनहिं चिंतवन करनेलगे ३० ॥

यइदंचिंतयेन्नित्यंरहस्यंरामसीतयो. ॥ तस्यरामेदृढाभक्तिर्भवेद्विज्ञानपूर्विका: ३१ रहस्यंगोपनीयंवोयूयंवैराघवप्रियाः ॥ इत्युक्त्वाप्रययौविप्रस्तेऽपिरामंपरंविदुः ३२ ततोरामःसमाविश्यपितृगेहमवारितः ॥ सानुजःसीतयागत्वाकैकेयीमिदमब्रवीत् ३३ आगतास्मोवयंमातस्त्रयस्तेसंमतंवनम् ॥गतुंकृतधियःशीघ्रमाज्ञापयतुनःपिता ३४ इत्युक्तासहसोत्थायचीराणिप्रददौस्वयम् ॥ रामायलक्ष्मणायाथसीतायैचपृथक्पृथक् ३५ रामस्तुवस्त्राण्युत्सृज्यवन्यचीराणिपर्यधात् ॥ लक्ष्मणोपित्तथाचक्रेसीतातन्नविजानती ३६ ॥

(रामसीतयोःइदंरहस्यंय नित्यंचिंतयत्तस्यविज्ञानपूर्विकारामेदृढाभक्तिःभवेत्)श्रीरघुनन्दन जनक नंदिनी की यह जो रहस्य भाव माधुर्यमें ऐश्वर्य गुप्त चरित्र ताहिजो पुरुष नित्यहीं चिन्तवन ध्यान करैगो ताको उत्तम ज्ञान सहित रघुनन्दन विषेपुष्ट भक्तिहोयगी ३१ (वःयूयंवैराघवप्रियाःरहस्यंगोपनीयंइतिउक्त्वाप्रययौतेविप्राअपिरामंपरंविदुः) वामदेव कहत हे ब्राह्मणो तुम को रघुनन्दन परमप्रिय हैं ताते इस रहस्य को गुप्त राखेउ भाववाहेर राजकुमारवत् व्यवहार किहेउ अंतरते परब्रह्मजाने रहेउ ऐसा कहि वामदेव चले गये अरु सुनने वाले ते सब ब्राह्मण रघुनन्दन को परब्रह्मकरिजाने ३२ (ततोरामःसीतयासानुजःअवारितः पितृगेहंसमाविश्यगत्वाकैकेयींइदंअब्रवीत्) तदनन्तर रघुनन्दन सीता लक्ष्मण सहित द्वार पर बिनारुके पिता को जो मन्दिर है तामें प्रवेश करि भीतर जाय कैकेयी प्रति ऐसा वचन बोले ३३ (मात.ते सम्मतंवनंगंतुंकृतधियःवयंत्रयःआगतास्म.नः पिता शीघ्रंआज्ञापयतु) हे मातः तुम्हारा सम्मत जो वन तहां को जाने की बुद्धि करि हम तीनि हूं जने तयार ह्वै आये हैं अव ऐसी उपाय करौ जामें हमको पिता शीघ्रही वन जाने की आज्ञा देवैं भाव जाने में जो पिता को दुःख है ताको दोष हम परन आवै ३४ (इतिउक्तास्वयंसहसाउत्थायअथ रामायलक्ष्मणायचसीतायैपृथक्पृथक्चीराणिप्रददौ)ऐसा रघुनन्दन कहे तव कैकेयी आपही शीघ्र उठी तव रघुनन्दन के अर्थ लक्ष्मण के अर्थ पुनः जानकी के अर्थ अलग अलग मुनि वसन लाइ देती भई ३५ (तुरामःवस्त्राणिउत्सृज्यवन्यचीराणिपर्यधात्तथाअपिलक्ष्मणःचक्रेतत्सीतानविजानती)

पुनः रघुनन्दन पूर्व के बसन उतारि कैकेयी के दिये वन योग्य वसन पहिरे ताही प्रकार लक्ष्मणौ जी कीन्हे तिन बनचीर पहिरनेकी रीति जानकीजी नहीं विशेषि जानतीं हैं ताते न पहिरि सकीं ३६॥

हस्तेगृहीत्वारामस्यलज्जयामुखमैक्षत ॥ रामोगृहीत्वातच्चीरमंशुकेपर्यवेष्टय त् ३७ तद्दृष्ट्वारुरुदुःसर्वेराजदाराःसमंततः ॥ वशिष्ठस्तुतदाकर्ण्यरुदितंभर्त्सं यन्रुषा ३८ कैकेयींप्राहदुर्वृत्तेरामएवत्वयाव्रतः॥ वनवासायदुष्टेत्वंसीतायैकिंप्र यच्छसि ३९ यदिरामंसमन्वेतिसीताभक्त्यापतिव्रता ॥ दिव्यांबरधरानित्यंस र्वाभरणभूषिता ४० रमयत्वनिशंरामंवनदुःखनिवारिणी ॥ राजादशरथोप्याह सुमंत्ररथमानय ४१ रथमारुह्यगच्छन्तुवनंवनचरप्रियाः ॥ इत्युक्त्वाराममालो क्यसीतांचैवसलक्ष्मणम् ४२ ॥

(हस्तेगृहीत्वालज्जयारामस्यमुखंऐक्षततत्चीरंरामःगृहीत्वाअंशुकेपर्यवेष्टयत्) मुनिचीरको जान· कीजी हाथेमें लैलिया पहिरत नबना अरुसंग जानाहठिकै कहेरहीताते लज्जाकरिकै रघुनन्दनकेमुख कीदेशि देखने लगीभाव सौभागिनीको पतिसंयोगमें भूषणवसन उतारना उचितनहीं तामेंस्वामी की आज्ञाप्रधानहै इतिजानि तौन जो मुनि चीरहाथमें लिहेरहीं तिनहिं रघुनन्दन आपनेहाथमेंलैकेपू र्वकेवसन जो पहिरेरहीं तिनकेऊपर मुनि चीरलपेटिदिये भावभीतर पूर्ववत् राखौ बाहेरभेरे वेषसम राखौ ३७ (तत्दृष्ट्वाराजदारास्सर्वेरुरुदुःसमंततःरुदितंआकर्ण्यतदातुवशिष्टःरुषाभर्त्सयन्) जब यह चरित्र भयाताको देखि राजादशरथकी यावतरानीरहींते सब रोयउठीं सोसमयरोदन सुनितब पुनः वशिष्ठजी रिसायकै कैकेयीको घुरुके ३८ (कैकेयींप्राहदुर्वृत्तेत्वयारामएववनवासायवृतःदुष्टेत्वंसीता यैकिंप्रयच्छसि) कैकेयी प्रति वशिष्ठ बोले हे खोटे कर्म करणे वाली तूने रघुनन्दन को निश्चय करि बनबासके अर्थ बरदान मांगा तौदुष्टे तू सीता के अर्थ क्यों बन वसन देती है ३९ (सीतापतिव्रता यदिभक्त्यारामंसंअन्वेतिनित्यंदिव्यअंबरधरासर्वआभरणभूषिता)सीता पति व्रताहैं जो भाक्ति करिकै रघुनन्दन के संग जाती हैं तो नित्यहीं दिव्य वसन धरे सब भूषण ते भूषितरहे ४० (वनदुःखनिवा रिणीअनिशंरामंरमयतुराजादशरथःसुमंत्रंअपिआहरथंआनय) वन में जो रघुनन्दन को दुःख होई ताको से वाते मिटावने वाली हैं दिनौराति रघुनन्दनहि रमावहिंगी ता समय राजा दशरथ सुमंत्र प्रति निश्चयकरि कहे कि रथ सजिलावो४१ (वनचरप्रियाःरथंआरूह्यवनंगच्छंतुइतिउक्त्वसलक्ष्मणं चएवसीतांरामंआलोक्य)वनचर वानर अथवा मुनि प्रिय हैं जिनको ऐसे रघुनन्दन रथपर सवार ह्वै बनहि जायँ ऐसा कहि सहित लक्ष्मण पुनः निश्चय करि सीता रघुनन्दन तिनहिं देखि कै मह राज कैसी दशा को प्राप्त भये सो आगे कहत ४२ ॥

दुःखान्निपतितोभूमौरुरोदाश्रुपरिप्लुतः ॥ आरुरोहरथंसीताशीघ्रंरामस्यपश्यतः ४३ रामःप्रदक्षिणंकृत्वापितरंरथमारुहत् ॥ लक्ष्मणःखड्गयुगलंधनुस्तूणीयुगं तथा ४४ गृहीत्वारथमारुह्यनोदयामाससारथिम् ॥ तिष्ठतिष्ठसुमंत्रेतिराजा दशरथोऽब्रवीत्४५गच्छगच्छेतिरामेणनोदितोऽचोदयद्रथम् ॥ रामेदूरंगतेराजा मूर्च्छितःप्रापतद्भुवि ४६ पौरास्तुबालवृद्धाश्चवृद्धाब्राह्मणसत्तमाः॥ तिष्ठतिष्ठेति

रामेतिक्रोशन्तोरथमन्वयुः ४७ राजारुदित्वासुचिरंमांनयंतुगृहंप्रति ॥ कौशल्या यारामुमातुरित्याहपरिचारकान् ४८ ॥

(रुरोदअश्रुपरिप्लुतःदुःखाद्भूमौनिपतितःरामस्यपश्यतःसीताशीघ्रंरथंआरुरोह) रोवतनेत्रन ते आंशु बहावत दुःखते महाराज भूमिमें गिरिपरे अरु रघुनन्दनके देखतही जानकीजी शीघ्रहीं रथपर चढ़ीं भाव पूर्वकहेरहीं कि मैं आपके आगे वनहि चलौंगी ताते पूर्वही चढ़ीं ४३ (पितरंप्रदक्षिणंकृत्वा रामःरथंआरुहत्लक्ष्मणःखड्गयुगलंतथाधनुःतूणीयुगम्) पिता जोहैं तिनहिं प्रदक्षिणाप्रणाम करि रघुनन्दन रथपै चढ़े अरु लक्ष्मण जी आपनी अरु रघुनन्दनकी ये दोऊ तरवारी तैसे धनुप तरकस दोऊ ४४ (गृहीत्वारथंआरुह्यसारथिम्नोदयामासतिष्ठतिष्ठइतिराजादशरथःसुमंत्रमब्रवीत्)सबअस्त्र लैके लक्ष्मणो जी रथपर चढ़े तब सारथी जो सुमंत्र तिनहिं प्रभु आज्ञा दिये कि रथ चलावो रथ हा के तब ठाढ़होउ ठाढ़होउ ऐसा वचन दशरथ जी सुमंत्र प्रति कहते हैं ४५ (गच्छंगच्छ इतिरामे णनोदितःरथंअचोदयत्रामेदूरंगतेमूर्च्छित.राजाभुविप्रापतत्) गच्छगच्छ चलो चलो ऐसा रघुनन्दके आज्ञा देतसंते सुमंत्ररथहिहांकि दिये रघुनन्दन दूरिगये संतेनिराशताते मूर्च्छित ह्वै महाराजभूमिपर गिरिपरे ४६ (तुपौराबालवृद्धाःचवृद्धब्राह्मणसत्तमाःरामतिष्ठतिष्ठइतिक्रोशन्तोरथंअन्वयुः)पुरवासी सबलरिका बूढ़ेतक पुनः वृद्ध ब्राह्मणजे उत्तम रहेते सब गोहरावत कि हे रामठाढ़िहोउठाढ़िहोउ इत्या दि वेगते पुकारत रथके पाछे धाये चले जातेहैं ४७ (राजासुचिरंरुदित्वापरिचारकानइतिआहराम मातुःकौशल्यायाःगृहंप्रति मां नयंतु) महारज दशरथ वहुत वारतकरोवत परेरहे पुनः सेवकन प्रति यह कहोकि रघुनन्दनकी माताजो कौशल्या तिनके मन्दिरहि मोहि लवायलयचलौ भावजीवन पर्य्यंत केकेयी मेरी दृष्टिमें नपरै इसहेत शीघ्रलै चलो ४८ ॥

किञ्चित्कालंभवेत्तत्रजीवनंदुःखितस्यमे ॥ अतऊर्ध्वंनजीवामिचिरंरामंविनाकृतः४९ततोगृहंप्रविश्यैवकौशल्यायाःपपातह॥ मूर्च्छितश्चचिराद्बुध्वातूष्णीमेवावतस्थिवान् ५० रामस्तुतमसातीरंगत्वातत्राबसत्सुखी॥जलंप्राश्यनिराहारो वृक्षमूलेऽस्वपद्विभुः ५१ सीतयासहधर्म्मात्माधनुःपाणिस्तुलक्ष्मणः ॥ पालयामासधर्मज्ञःसुमंत्रेणसमन्वित५२पौरास्सर्वेसमागत्यस्थितास्तस्याविदूरतः॥शक्ताराम्पुरंनेतुंनोचेद्गच्छामहेवनम्‌ःप्‌५३इतिनिश्चयमाज्ञायतेषांरामोतिविरिमतः ॥ नाहंगच्छामिनगरमेतेवैक्लेशभागिनः ५४ ॥

(दुःखितस्यमेतत्रकिंचित्कालंजीवनंभवेत्अतऊर्ध्वंरामंविनाकृतःचिरंनजीवामि) वियोगते दुःखित जो मैं तहां कौशल्याके मंदिरमें गये ते कछुकाल जीवन होई भाव यावत् सुमंत्र नहीं आवते हैं अरु सुमंत्रके लौटि आये तिसके उपरान्त रघुनन्दन जो हैं तिनहिं विना देखे बहुतकाल न जीहौं ४९ (ततःकौशल्याया.गृहंप्रविश्यएवपपातहचमूर्च्छितः चिराद्बुध्वातूष्णींएवअवतस्थिवान्) तदनन्तर महाराज कौशल्याजी के मंदिरमें प्रवेश करि निश्चय करि भूमिमें गिरिपरे पुनः मूर्च्छित परेरहे बहु-त बारमें चेत भया निश्चय करि मौन ह्वै बैठेरहे ५० (तुरामःविभु.तमसातीरंगत्वातत्रसुखीअवस तनिराहारःजलंप्राश्यवृक्षमूलेअस्वपत्) पुन' रघुनन्दन प्रभु तमसा नदीं तीरगये तहां सुखपूर्वक वास.कीन्हे विना.भोजन कीन्हे जलपान करि वृक्षकी मूल समीप शयन कीन्हे ५१ (सीतयास

हधर्मात्मातसुमंत्रेणसमन्वितःधर्मज्ञःलक्ष्मणःधनुःपाणिःपालयामास)सीता करिकै स हित धर्मात्मा रघुनन्दन भूमिमें समय कीन्हे पुनःसुमंत्र सहित धर्मको जाननेवाले जो लक्ष्मणते धनुप बाणहाथन में लिहे रघुनन्दनकी रक्षाहेत बैठेरहे ५२ (पौरास्सर्वेसंआगत्यतस्यअविदूरतः स्थिताःरामंपुरनेतुंशक्ता नोचेत्वनंगच्छामहे) ताही समय पुर वासी लोगसब आय तिन रघुनन्दन के अविदूरतः नगी चहीं स्थित भये यह निश्चय करि कि कितौ रघुनन्दनको लौटारिलै चलैंगे जो रघुनन्दनहि पुरहि न लौ टारिसकैंगे तौ वनहि साथै सब चलैंगे ५३ (इतिनिश्चयंआज्ञायअतिविस्मितः रामः अहंनगरंनग च्छामिएतेवैक्लेशभागिनः) हमहूं साथै चलैंगे यह पुरवासिन की निश्चय जानि अत्यन्त विस्मययुत रघुनन्दन बिचारे कि हम पुरहि तौ लौटि जायँगे नहीं तौ येपुरबासी निश्चय करि साथ चलि वन में दुःख पावहिंगे ५४ ॥

भविष्यंतीतिनिश्चित्यसुमंत्रमिदमब्रवीत् ॥ इदानीमेवगच्छामःसुमंत्ररथमान य ५५ इत्याज्ञप्तःसुमंत्रोपिरथंवाहैरयोजयत् ॥ आरुह्यरामःसीताचलक्ष्मणोपि ययुर्द्रुतम् ५६ अयोध्याभिमुखंगत्वाकिंचिद्दूरंततोययुः ॥ तेऽपिराममदृष्ट्वैवप्रा तरुत्थादुःखिताः५७रथनेमिगतंमार्गंपश्यंतस्तेपुरंययुः॥ हृदिरामंससीतंतेध्याय न्तस्तस्थुरन्वहम् ५८ सुमंत्रोऽपिरथंशीघ्रंनोदयामाससादरम् ॥ स्फीतान्जनप दान्पश्यन्रामःसीतासमन्वितः ५९ गंगातीरंसमागच्छच्छृंगिवेराद्विदूरतः ॥ गंगांदृष्ट्वा नमस्कृत्यस्नात्वासानंदमानसः ६० ॥

(भविष्यंतिइतिनिःचित्यसमंत्रंइदंअब्रवीत्सुमंत्ररथंआनयइदानींएवगच्छामः)संगगये पुरवासिनको दुःखहोई ताते छोड़ि जाने ठीकहै ऐसा निश्चय करि रघुनन्दन सुमंत्र प्रति ऐसा वचन बोले हे सुमंत्र रथआनि ये इसीसमय निश्चयकरि हमचलैंगे५५(इतिआज्ञप्तःसुमंत्रःअपिवाहैःरथंअयोजयत्रामःसीतालक्ष्मणःअपिआरुह्यद्रुतम्ययुः)रथलावौ ऐसीआज्ञापाय सुमंत्र निश्चय करिकै घोड़ेन करिकै रथयुक्त कीन्हे तब रघुनन्दन जानकी लक्ष्मण निश्चय करि रथपर चढ़ि तुरतहीं चले गये ५६ (किंचिद्दूरंअयोध्याअभिमुखंगत्वाततःययुःतेअपिप्रातःउत्थायरामंअदृष्ट्वाएवदुःखिताः)कुछदूरि अयोध्याकी सन्मुख रथहांके तदनन्तर बनहि गये अरुते सब पुरबासी प्रातउठे रघुनन्दन जो हैं तिनहिंन देखे तब निश्चय करि दुःखित भये ५७(तेरथनेमिगतंमार्गंपश्यंतःपुरंययुःतेससीतंरामंहृदिध्यायन्तः अनुअहम्तस्थुः)ते अयोध्यावासी सबरथकी पहिया जिधरगईहैं सोई राहदेखत२ अयोध्यापुरहि चले गये जबलीककी पता नपायेतबहारि मानि घरनकोगये तहां सहित जानकी रघुनन्दन जो हैं तिनहिं हृदयमें ध्यानकरतेही एक एक दिन बितावतेहुये अवधि आशबसेरहे ५८ (सुमंत्रः अपि सादरंशीघ्रंरथंनोदयामाससीतासमन्वितःरामःस्फीतान्जनपदान्पश्यन्) सुमंत्रभी सहित आदर घोड़ेनको चुचुकारते हुये शीघ्रताते रथहि हांकेचले जातेहैं अरु सीता सहित रघुनन्दन रथते ऐश्वर्यते परि पूर्ण राज्य ताहि ग्रामग्राम देखते जातेहैं५९(शृंगिवेरात्विदूरतःगंगातीरंसमागच्छत्गंगांदृष्ट्वावैनमस्कृत्य सानन्दमानसः स्नात्वा) शृंगबेर पुरते थोरी दूरि पूर्व गंगातीरहिगये गंगाजीको देखि सीता लक्ष्मण सहित रघुनन्दन रथते उतरि नमस्कार कीन्हे पुनः सहित आनन्दमन गंगाजीमें स्नान कीन्हे ६०॥

शिंशपावृक्षमूलेसनिषसादरघूत्तमः ॥ ततोगुहोजनैःश्रुत्वारामागममहोत्सव

म् ६१ सखायंस्वामिनंद्रष्टुंहर्षात्तूर्णंसमापतत् ॥ फलानिमधुपुष्पादिगृहीत्वाभक्तिसंयुतः ६२ रामस्याग्रेविनिक्षिप्यदंडवत्प्रापतद्भुवि॥गुहमुत्थाप्यतंतूर्णंराघवः परिषस्वजे ६३ संपृष्टकुशलंरामंगुहःप्रांजलिरब्रवीत् ॥ धन्योऽहमद्यमेजन्मनैषादंलोकपावन ६४ बभूवपरमानंदःस्पृष्ट्वातेंऽगंरघूत्तम ॥ नैषादराज्यमेतत्तेकिंकरस्यरघूत्तम ६५ त्वदधीनंवसन्नत्रपालयास्मान्रघूद्वह ॥ आगच्छयामो नगरंपावनंकुरुमेगृहम् ६६ ॥

(रघूत्तमःशिंशपावृक्षमूलेनिषसादततोरामागमजनैःश्रुत्वागुहःमहाउत्सवम्) सो रघुवंशमें उत्तम रघुनन्दन शिरसा वृक्षतरे बैठते भये तदनंतर रघुनन्दनको आवन आपने सेवक जनन करिकै सुनिकै गुहा निषादराज महाउत्सव करता भया मंगल साज साजने लगा ६१ (भक्तिसंयुतःफलानिमधुपुष्पादिगृहीत्वासखायंस्वामिनंद्रष्टुंहर्षात्तूर्णंसमापतत्) भक्तिसहित सुन्दर फलमधु सहत वारस भरे फूलादि भेंट सामग्री लेकै सखास्वामी जो रघुनन्दन तिनहिं देखने हेत निषादराज हर्षते तुरतही आवत भयो ६२ (रामस्यअग्रेविनिक्षिप्यदंडवत्भुविप्रापततततंगुहंतूर्णंउत्थाप्यराघवःपरिषस्वजे) रघुनन्दनके आगे भेट सामग्री धरिदंडकी नाईं पृथ्वी परगिरो देखितोन जो गुहाहैताहि तुरतहीं उठाय रघुनन्दन उरमें लगाय लिये ६३ (कुशलःसंपृष्टगुहःप्रांजलिःरामंअब्रवीत्लोकपावननैषादंमेजन्मअद्यअहंधन्यः) निषादराजको भेटि निकट बैठारि रघुनन्दन कुशल पूँछे तब गुहाहाथ जोरि रघुनन्दन प्रति वचन बोला हे लोकपावन करण हारे निषाद कुलमें मेराजन्म भाव अधम जाति सोऊ आपकी अनुग्रहते आजु में धन्य भया ६४(रघूत्तमतेअंगस्पृष्ट्वापरमानंदःबभूवरघूत्तमतेकिंकरस्यएतत्नैषादंराज्यं) हे रघुवंश नाथ आपको अंगस्पर्श भये ते मोको परम आनन्द प्राप्तभयो पुनः हे रघुवंश शिरोमणि आपको सेवक जो में ताकी यह जो निषाद कुलकी राज्य है ६५ (त्वत्अधीनं अत्रवसनअस्मान्पालयनगरंआगच्छयामःरघूद्वहमेगृहंपावनंकुरु) सब राज्य आपही के आधीनहै यहांपर वास करिये हम लोगों को पालन कीजिये यह नगरजोहै तहां पर आपको संगलै हम चलें हे रघुवंशनाथ मेरा जो घरहै ताहि पावन कीजिये भाव उहें वासकीजिये ६६ ॥

गृहाणफलमूलानित्वदर्थंसंचितानिमे ॥ अनुगृह्णीष्वभगवन्दासस्तेऽहंसुरोत्तम ६७ रामस्तमाहसुप्रीतोवचनंशृणुमेसखे ॥ नवेक्ष्यामिगृहंग्रामंनववर्षाणिपंच च ६८ दत्तमन्येननोभुंजेफलमूलादिकंचन ॥राज्यंममैतत्तेसर्वंत्वंसखामेऽतिवल्लभः ६९ वटक्षीरंसमानाय्यजटामुकुटमादरात् ॥ बबंधलक्ष्मणेनाथसहितोरघुनन्दनः ७० जलमात्रंतुसंप्राश्यसीतयासहराघवः ॥ आस्तृतंकुशपर्णाद्यैःशयनंलक्ष्मणेनहि ७१ उवासतत्रनगरप्रासादाग्रेयथापुरा ॥ सुष्वापतत्रवैदेह्यापर्य्यंकइवसंस्कृते ७२ ॥

(सुरोत्तमअहंतेदासःभगवन्अनुगृह्णीष्वत्वत्अर्थंमेसंचितानिफलमूलानिगृहाण) हेसुरोत्तम ब्रह्मादि देवतों में श्रेष्ठ में आपको दासहौं हे भगवन् सर्व ऐश्वर्य परिपूर्ण लोकपालन हारे मोपर अनुग्रह करौ भाव अंगीकार करो आपके भोजन के अर्थ मेरे संचित किये जो फल मूलादि तिनहिं ग्रहणकरौ ६७ (सुप्रीतःरामःतंआहसखेमेवचनंशृणुनववर्षपंचवर्षाणिग्रामंगृहंनवेक्ष्यामि) प्रीति पूर्वक

रघुनन्दन त्यहि गुह प्रति बोले हे सखे मेरो जो वचन ताहि सुनो नव पुनः पांच अर्थात् चौदह बर्ष तक किसी गाउँ काहू घर मों न प्रवेश करोंगो ६८ (अन्येनदत्तंफलमूलादिकंचनोभुंजेएतत्तत्सर्वं राज्यंममत्वंसखामेअतिवल्लभः) सिवाय आपने हाथों के लाये और न करिके दिये हुये फल मूला दि हम नहीं भोजन करेंगे अरु यह जो तुम्हारी राज्य है सो मेरी है काहेते तुम सखा मोको अत्यन्त प्रियहौ ६९ (वटक्षीरंसंआनाय्यअथलक्ष्मणेनसहितःरघुनन्दनःआदरात्जटामुकुटंबबंध) गुहाते क हि वरगदको दूध मँगाय अब लक्ष्मण करिकै सहित रघुनन्दन आदर ते भाव प्रसन्न मनते बारन में दूध लगाय जटा के मुकुट बांधत भये ७० (तुसीतयासहराघवःजलमात्रंसंप्राश्यलक्ष्मणेनहिकुशप र्णाद्यैःशयनंआस्तृतं) पुनः सीता करिके सहित रघुनन्दन भोजनरहित जलमात्र पान कीन्हे अरु लक्ष्मण जीने कुश पत्ता आदिकं न करिकै शय्या बिछाये ७१ (तत्रउवासयथापुरानगरप्रासादाग्रेसंस्तृ तेपर्यंकइवतत्रवैदेह्यासुष्वाप) तहां वृक्ष तर वास करते भये कोन भांति जैसे पूर्व अयोध्यानगर विषे मन्दिर में रहते रहे तथा सुखपूर्वक जैसे बिछाये हुये पलंग पर ताही भांति कुश पत्तोंकी करीजो शय्या है तापर जानकी करिके सहित रघुनन्दन सुखपूर्वक सोवते भये ७२ ॥

ततोविदूरेपरिगृह्य चापंसबाणतूणीरधनुःसलक्ष्मणः॥ररक्षरामंपरितोविपश्यन्गु हेनसार्द्धंसशरासनेन ७३॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसम्वादेअयो ध्याकाण्डेपंचमःसर्गः ५ ॥

(ततोसशरासनेनगुहेनसार्द्धंलक्ष्मणःसधनुःसबाणतूणीरचापंपरिगृह्यविदूरेपरितःपश्यन्रामंररक्ष) तदनन्तर सहित धनुष बाण जो निषादराज त्यहि करिके सहित लक्ष्मणजी धनुष सहित बाण तरक सकटिमें बांधि बाम हाथमें धनुष चढ़ाय दहिनेमें बाणलिहे रघुनन्दनकी विश्राम भूमि ते थोरा बीच दिहे चारिहु दिशि देखत-राति भरि खड़े रघुनन्दनकी रक्षा करत रहे भाव पहरा देत रहे ७३इतिश्री रसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतबैजनाथविरचितेअध्यात्मभूषणे रघुनन्दनशृंगवेरपुर प्राप्तवर्णनोनामपंचमःप्रकाशः ५ ॥

सुप्तंरामंसमालोक्यगुहःसाऽश्रुपरिप्लुतः ॥ लक्ष्मणंप्राहविनयाद्भ्रातःपश्यसिरा घवम् १ शयानंकुशपात्रौघसंस्तरेसीतयासह ॥ यःशेतेस्वर्णपर्य्यंकेस्वास्तीर्णेभ वनोत्तमे २॥

सवैया ॥ लखि भूपरि सोवत रामसिया कछु भाषि निषाद विषाद भरो । नयभक्तिविवेक भरेवचनं कहि लक्ष्मण तासु प्रबोध करो॥चलिप्रात महामुनि भेंटि भली विधि पूजि देखावत धामपरोवलि येसियलानुजराघवजीउरबैजसुनाथवनायवरो १॥ (रामंसुप्तंसंआलोक्यसाऽश्रुपरिप्लुतःगुहःविनयात् लक्ष्मणंप्राहभ्रातःराघवंपश्यसि) सहित जानकी रघुनन्दन जो भूमिपै सोवतहैं तिनहिं देखिकै करु णारस उत्पन्न भयो शोकस्थाई लय उरते प्रेम उमँगासवांग विह्वल होगया ताते सहित आंशुवहत निषाद राज विनय पूर्वक लक्ष्मण प्रति बोला हे भाइ रघुनन्दन जोहैं तिनहिं देखिये भावपुरमें कैसे सुख में रहें अब कैसे दुख में परेहैं १ (उत्तमेभवनेस्वर्णपर्य्यंकेसुआस्तीर्णेयःशेतेसीतयासहकुशपत्रौ घसंस्तरेशयानं) कनक मणि जटित सतखंडा जाल झरोखा चौवारी चन्दोवा झाड़ै मणि दीपादि दिव्य इत्यादि उत्तम मन्दिर में सोने के पलंग पर तोसक फूलचादरि बिछी डोरी कसी ऐसे सुन्दर

बिछौना परजे रघुनन्दन सदा शयन करते रहैं सोई अब जानकी करिकै सहित रघुनन्दन कुश अरु पाता समूह बिछेहुयेबिछौने पर शयन किंहहैं २ ॥

कैकेयीरामदुःखस्यकारणंविधिनाकृता ॥ मंथराबुद्धिमास्थायकैकेयीपापमाचरत् ३ तच्छ्रुत्वालक्ष्मणःप्राहसखेशृणुवचोमम॥कःकस्यहेतुर्दुःखस्यकश्चहेतुःसुखस्यवा ४ स्वपूर्वार्जितकर्मैवकारणंसुखदुःखयोः ५ सुखस्यदुःखस्यनकोऽपिदाता परोददातीतिकुबुद्धिरेषा ॥ अहंकरोमीतिवृथाऽभिमानःस्वकर्मसूत्रग्रथितोहिलोकः ६ सुहृन्मित्रार्युदासीनद्वेष्यमध्यस्थबांधवाः ॥ स्वयमेवाचरन्कर्मतथातत्र विभाव्यते ७ सुखंवायदिवादुःखंस्वकर्मवशगोनरः ॥ यद्यद्यथागतंतत्तद्भुक्त्वा स्वस्थमनाभवेत् ८ ॥

(विधिनारामदुःखस्यकारणंकैकेयीकृता कैकेयीमंथराबुद्धिमास्थायपापंआचरत्) विधाताने रघुनन्दन के दुःखको कारण कैकेयी को किया जो कैकेयी मंथराकी जो कुबुद्धी ताहि धारण करि महापाप कर्मकरती भई ३ (तत् श्रुत्वालक्ष्मण.प्राहसखेममवचःशृणुकस्यदुःखस्यकःहेतुः वासुखस्यहेतु.कश्च) तौन निषाद राजके वचन सुनिकै लक्ष्मणबोले हे सखे मेरा वचनसुनौ किसके दुःख को कौनकारण है अथवा किसकेसुखको कारण कौन है भाव अपने दुःख सुखको कारण आपही है दूसरा कोई नहीं है ४ (पूर्वार्जितस्वकर्मएवसुखदुःखयो.कारणं)पूर्व जन्मों को किया हुआ जो शुभाशुभ कर्म है सोई निश्चय करिकै सुख दुःखको कारण है ५ (सुखस्यदुःखस्यदाताकःअपिनपरःददातिइतिएषाकुबुद्धि अहंकरोमिइतिअभिमान.वृथालोक.स्वकर्मसूत्रग्रथितोहि)सुखवा दुःख देनेवालाकोऊ निश्चय करिकै नहीं है अरु और कोऊ दूसरा सुख दुःख देता है इत्यादि जो कहतेहैं तो यही कुबुद्धि है अरु जो कहै कि मैं ऐसा करता हौं इत्यादि अभिमान सो भी वृथा है काहेते लोकजन आपने कर्मरूप धागामें गुहे हैं निश्चय करिकै भाव जो अनेकन जन्म को किया शुभाशुभकर्म संचित है ताही मेंते कुछ देहके साथ प्रारब्ध धागाइवजीव में व्याप्त है सोई स्वभाव होततांही अनुकूलकर्म पुन.करत ६ वस्वारथ सहज सनेही सुहृदहै स प्रयोजन सनेही मित्र है सहजै वैरी अरिहै शत्रुता मित्रता रहित उदासीन है प्रयोजनते वैर द्वेष्य है मिलाप करानेवाला मध्यस्थहै देह सम्बन्धी बांधवहै इत्यादि (स्वयंएवकर्मआचरत्तत्रतथाविभाव्यते) जामें आपु निश्चय करिकै जैसे कर्म करताहै तामें तैसेहि शत्रु मित्रादि भाव देखि परताहै भाव जाके साथ जैसा कर्म करो सो तैसाही ह्वै जाताहै ७ ॥ (स्वकर्मवशग.नरःसुखंवायदिदुःखंवायत्यत्यथागतंतत्तत्भुक्त्वास्वस्थमनाभवेत्) अपने कर्मन के वश ह्वै मनुष्य सुख अथवा दुःख ज्यों ज्यों जैसा प्राप्त होताजाताहै त्यों त्यों भोग करिकै तब मनुष्य स्वस्थमन होताहै भाव जबतक प्रारब्धी दुःख सुख भोगिनहीं लेताहै तबतक रागद्वेषमय व्यापारमें धावा धावा फिरताहै जब सब भोगि भया तब किसी व्यापारमें मननहीं लागताहै ८ ॥

नमेभोगागमेवांछानमेभोगविवर्जने ॥ आगच्छत्वथमागच्छत्वभोगवशगोभवेत् ९ यस्मिन्देशेचकालेचयस्माद्वायनकेनवा॥ कृतंशुभाशुभंकर्मभोज्यंतत्तत्रनान्यथा १० अलंहर्षविषादाभ्यांशुभाशुभफलोदये ॥ विधात्राविहितंयद्यत्तदलंघ्यं

सुरासुरैः॥११ सर्वदासुखदुःखाभ्यांनरःप्रत्यवरुध्यते ॥ शरीरंपुण्यपापाभ्यामुत्पन्नं सुखदुःखवत् १२ ॥

(भोगआगमेवांछामेनभोगवर्जनेवांछामेनआगच्छतुअथमागच्छतुभोगवशगःअभवे) हे निषाद राज सुख भोग प्राप्तीकी इच्छा हमको नहींहै तथा दुःख भोग अप्राप्तीकी इच्छा हमको नहीं है प्रारब्ध बशते सुख प्राप्त होइ अरु चहै दुःख न प्राप्त होइ भाव सदा सुखै भोग प्राप्त रहै तबहूँ हमभोग के वश नहीं होतेहैं अर्थात् रघुनन्दन अंगी हैं हम उनको एक अंगहैं जो हमहींको दुःख सुख नहीं व्यापत तो रघुनाथजीमें दुःख सुख कैसे व्यापि सक्तेहैं ९ (यस्मिन्देशेचयस्मिन्कालेचयस्मात्वा येनकेनवाशुभाशुभंकर्मकृतंतत्ततत्रभोज्यंअन्यथा न) जिस दशेमें पुनः जिस कालमें पुनः जौनेकारण ते जिस किसीने शुभ यथा यज्ञ तीर्थव्रत दान तप पूजापाठ परोपकारादि अशुभ यथा हिंसा चोरी पर स्त्री गमन झूँठपर अपकारादि इत्यादि कर्म कियाहै ताको फल सुख दुःख सो जहैं वह जीवरही तहां निश्चय करि भोगना परी अन्यथा न होई यथा मिताक्षरायां ॥ नोऽभुक्तंक्षीयतेकर्म्मकल्पकोटिशतैरपि।अवश्यमेवभोक्तव्यंकृतंकर्मशुभाशुभम् १० (शुभाशुभफलोदयेहर्षविषादास्यांअलंविधात्रविहितंयत्यत्ततसुरासुरैःअलंघ्यं) शुभ कर्मको फल उदय भये सुख तामें हर्ष अशुभ को फल उदय भये दुःख तामें विषादइति हर्ष विषादकरि कै क्या ह्वैसक्ताहै काहेते शुभाशुभ कर्मनको फल विधाताने जो जो रचि राखाहै सो देव दैत्यादि कोंकरिकै उल्लंघन नहींह्वैसक्ताहै ११ (पुण्यपापाभ्यां सुखदुःखवत्उत्पन्नंशरीरंसर्वदानरःसुखदुःखाभ्यांप्रत्यवरुध्यते) पुण्य पापों करिकै सुखदुःख युक्त उत्पन्न शरीर सब कालमें मनुष्यको सुखदुःखों करिकै युक्तरहताहै भाव दुःख सुखमय शरीर है१२ ॥

सुखस्यानन्तरंदुःखंदुःखस्यानन्तरंसुखम् ॥ द्वयमेतद्धिजन्तूनामलंघ्यंदिनरात्रिवत् १३ सुखमध्येस्थितंदुःखंदुःखमध्येस्थितंसुखम् ॥ द्वयमन्योन्यसंयुक्तंप्रोच्यते जलपङ्कवत् १४ तस्माद्धैर्येणविद्वांसइष्टानिष्टोपपत्तिषुनहृष्यन्तिनमुह्यंतिसर्वंमायेतिभावनात् १५ ॥

(सुखस्यअनन्तरंदुःखंदुःखस्यअनन्तरंसुखंएतद्दिनरात्रिवत्द्वयंहिजन्तूनांअलंघ्यं) कैसा दुःख सुख मय शरीरहै सो लक्ष्मण जी कहत है निषादराज जब सुख होताहै ताके पाछे दुःख होता है अरु जब दुःख होताहै ताके पाछे सुख होताहै ये दिनौराति सम दोऊ निश्चय करिकै आते जातेहैं ते देह धारी को अलंघ्यहैं किसी के मिटाये मिटते नहींहैं १३ (सुखमध्येदुःखंस्थितंदुःखमध्येसुखंस्थितंअन्योन्यजलपंकवत्द्वयंसंयुक्तंप्रोच्यते)काहेते सुखके पाछे दुःख दुःखके पाछे सुख होता है तापरकहत कि जहां प्रसिद्ध देखने में सुखहै ताके बीचमें दुःख स्थितहै अरु जहां प्रसिद्ध दुःखदेखात ताके बीच सुख स्थितहै इत्यादि परस्पर जल कीचर की नाईं दोऊ मिले रहतेहैं ऐसा आचार्य कहत अर्थात् षट्रस भोजन पान गन्ध राग नृत्य भूषण बसन बाहन मन्दिर धन युवती इत्यादि भोगकरनासुख है जब जीव रजोगुणते विषयाशक्त ह्वै सुखभोगमें परा तब पूर्वकी सुकृत तौ घटतजात अरु अनीति अधर्मते असत्कर्म करते रहे जब सुकृति चुकी अरु पाप बढ़े तबै दुःख अर्थात् हानि बियोग रुज बन्धन दरिद्र संकटादि परनेलगे तब बिलखाते हैं तथा तपस्या तीर्थगमन दान व्रत साधु ब्राह्मण गुरुजनों की सेवा परोपकार इत्यादि को में श्रम करना दुःखहै जब जीव सतोगुणते श्रद्धासहित तपादिकों में श्रम करनेलगा तबपूर्वकेपाप कटतेगये अरु सुकृति बढ़ती गई ताके प्रभावते सब भांतिके सुखहोने

लगे इति दुःखमें सुख सुखमें दुःखको मूल कारणहै तथा कार्यरूपमें भी जब सुख मिला तब विषया सक्ती ते काम क्रोध राग द्वेषादि अनेक विषमता जीवमें होत सोई दुःखहै अरु दुःखपरेपर विषमता जातरहत शुद्ध ह्वै ईश्वर को यादि करत सोई सुखहे यथा जलमें बोदा बोदामें जल मिला ताही मय भूमिहै तथा दुःख सुखमय देहहै १४ (सर्वं मायाइतिभावनात्तस्मात् विद्वांस धैर्येण इष्ट उपपत्तिपुहृष्यंति न अनिष्टउपपत्तिपुमुह्यन्तिन) संसार में दुःखसुख यह सब माया अर्थात् झूंठाव्यापार है ऐसा विचारते असारसार जानि तिस कारणते ज्ञानवन्त पुरुष धीर्य करिकै मनोरथ प्राप्ति में हर्ष नहीं करतेहैं तथा मनोरथ हानि प्राप्तीमें मोह नहीं करते हैं सदा एकरस रहतेहैं १५ ॥

गुहलक्ष्मणयोरेवंभाषतोविमलंनभः ॥ बभूवरामःसलिलंस्पृष्ट्वाप्रातःसमाहितः १६ उवाचशीघ्रसुदृढांनावमानयमेसखे ॥ श्रुत्वारामस्यवचनंनिषादाधिपतिर्गुहः १७ स्वयमेवदृढांनावमानिनायसुलक्षणाम् ॥ स्वामिन्नारुह्यतान्नौकासीतयालक्ष्मणेनच १८ वाहयेज्ज्ञातिभिःसार्द्धमहमेवसमाहितः ॥ तथेतिराघवःसीतामारोप्यशुभलक्षणाम् १९ गुहस्यहस्तावालम्ब्यस्वयञ्चारुहदच्युतः ॥ आयुधादीनूसमारोप्यलक्ष्मणोऽप्यारुरोहच २० गुहस्तान्वाहयामासज्ञातिभिःसहितःस्वयम् । गङ्गामध्येगतागङ्गांप्रार्थयामासजानकी २१ ॥

(एवंगुहलक्ष्मणयोःभाषतोःनभः विमलम्बभूवप्रातः रामःसलिलंस्पृष्ट्वासमाहितः) इसीभांति निषादराज लक्ष्मणके वार्ता करतहीं राति बीति गई आकाश अमलभया प्रात उठि रघुनाथजीजल स्पर्श भाव प्रातःक्रिया करि सावधान भये १६ (उवाचहेसखेमेसुदृढांनावंशीघ्रंआनयरामस्यवचनं श्रुत्वानिषादाधिपतिःगुहः) निषादराज प्रति रघुनन्दन बोले कि हे सखे हमारे उतरने हेत सुन्दरि पुष्ट नाव शीघ्रही आनिये इत्यादि जो रघुनाथजी के वचन तिनहिं सुनिकै निषादोंको राजा गुहानाम है जाको १७ (स्वयंएवसुलक्षणाम्दृढांनावंआनिनायस्वामिन्सीतयाचलक्ष्मणेननौकाआरुह्यताम्) निषादराज आपही जाय विचित्र बनी पुष्ट नाव आनि बोला हे रघुनन्दन स्वामी जानकी करिकै लक्ष्मण करिकै सहित आप इस नावपर चढ़िये १८ (ज्ञातिभिःसार्द्धंअहंएवसमाहितःवाहयेतथा इतिराघव शुभलक्षणाम्सीतांआरोप्य) निषाद राज बोले कि जब आप नावपर चढ़ो तो परिवार सहित हम निश्चय करि सावधानह्वै नाव चलाई हे निषादराज जो कहतेहो तैसाही होय ऐसा कहि रघुनन्दन शुभ लक्षणयुत जो सीता तिनहिं प्रथमै नावपर चढ़ाये १९ (चगुहस्यहस्तौआलम्ब्यअच्युतःस्वयंआरुहत्आयुधादीन्संआरोप्यचलक्ष्मणःअपिआरुरोह) पुन गुहाके दोऊहाथपकरि अच्युत रघुनाथजी आपहू चढ़े सब हथियारोंको नावपर धरि पुनः लक्ष्मणो चढ़े २० (ज्ञातिभिःसहितःगुहःस्वयंतान्वाहयामासगंगामध्येगताजानकीगंगांप्रार्थयामास) जानकी रघुनन्दन लक्ष्मण सवार भये तब परिवार सहित गुहा आपही तिस नावको चलावता भया जब गंगाजीके बीचधारा मे नावगई तब श्रीजानकीजी करजोरि गंगाजी प्रति प्रार्थना पूर्वक वचन बोलतीभई २१ ॥

देविगंगेनमस्तुभ्यंनिवृत्तावनवासतः ॥ रामेणसहिताऽहंत्वांलक्ष्मणेनचपूजये २२ सुरामांसोपहारैश्चनानाबलिभिरादृता ॥ इत्युक्त्वापरकूलांतशनैरुत्तायजग्मतुः २३ गुहोऽपिराघवंप्राहगमिष्यामित्वयासह ॥ अनुज्ञांदेहिराजेंद्रनोचेत्प्राणांस्त्य

जाम्यहम् २४ श्रुत्वानैषादिबचनंश्रीरामस्तमथाब्रवीत् ॥ चतुर्दशसमाःस्थित्वा दण्डकेपुनरप्यहम् २५ आयास्याम्युदितंसत्यंनासत्यंरामभाषितम् ॥ इत्युक्त्वा लिंग्यतंभक्तंसमाश्वास्यपुनःपुनः २६ निवर्त्तयामासगुहंसोऽपिकृच्छ्राद्ययौगृहं ॥ तत्रमेध्यंमृगंहत्वापक्त्वाहुत्वाचतेत्रयः २७॥

(देविगंगेतुभ्यंनमःवनवासतःनिवृत्ता लक्ष्मणेनचरामेणसहिता अहंत्वांपूजये) जानकीजी बोली कि हेदेविगंगे तुम्हारे अर्थ नमस्कारहै मेरायहमनोरथ सफलकीजे वनवासते कुशल पूर्वक लौटि लक्ष्मण पुनः रघुनन्दन करिकै सहित मैं तुम्हारी पूजन करोंगी २२(सुरामांसउपहारैःचनानाबलिभिःआद्दताइतिउक्त्वापरकूलांतशनैःउतीर्यजग्मतुः) सुरामांस पूजाकी सामग्री वलिदानादिक अनेक उपचारों करिकै आदरसहित पूजन करोंगी इत्यादि कहि पुनः दूसरे किनारे पहुँचि धीरेते उतरिलक्ष्मण जानकी रघुनन्दन आगे चले गुहाको लौटनेको कहे २३(राघवंगुहःअपिआहत्वयासहगमिष्यामिराजेन्द्रअनुज्ञांदेहिनोचेत्अहंप्राणांस्त्यजामि) रघुनन्दन प्रतिगुहा निश्चय करिके बोला कि आप करिके सहित महूंवनहि चालिहौं हे राजेन्द्र चलनेकी आज्ञादीजे कदाचित् न संग लैचलोगे तो मैं प्राणे त्याग करोंगो २४ (नैषादिबचनंश्रुत्वाअथश्रीराम तंब्रवीत्चतुर्दशसमादण्डकेस्थित्वापुनःअपिअहम्) निषादके बचन सुनिकै तब श्रीरघुनन्दन त्यहि निषाद प्रति बोले कि चौदहै बर्ष दण्डक वनमें रहि पुनः निश्चय करिकै हम उहांते लौटैंगे २५ (आयास्यमिसत्यंउदितंरामभाषितम्असत्यंन) इति उक्त्वातंभक्तंआलिंग्यपुनःपुनःसमाश्वास्य) तब पुनः तुम्हारे इहां आवौंगो यह सत्यही कहताहौं क्योंकि राम अर्थात् हम असत्य वचन कभी नहीं भाषते हैं ऐसा कहि तौन जो भक्तहै ताहि उरमें लगाय बारम्बार वाको समुझायकै २६ (गुहंनिवर्तयामाससःअपिकृच्छ्रात्गृहंययौतेत्रयःतत्रमेध्यंमृगं हत्वापक्त्वाचहुत्वा) गुहा जो है ताहि लौटारे सो निश्चय करि वड़े क्लेशते घरहि लौटि जाता भया लक्ष्मण जानकी रघुनन्दनते तीनिहुं जने तहां वनमें पावन मृग मारि पकाय बेद रीतिते वलिवैश्वदेवादि हवनादि कीन्हे २७ ॥

भुक्त्वावृक्षदलेसुप्त्वासुखमासततांनिशाम् ॥ ततोरामस्तुवैदेह्यालक्ष्मणेनसमन्वितः २८ भरद्वाजाश्रमपदंगत्वाबहिरुपस्थिता ॥ तत्रैकंबटुकंदृष्ट्वारामःप्राह चहेबटो २९ रामोदाशरथिःसीतालक्ष्मणाभ्यांसमन्वितः॥ आस्तेबहिर्बनस्येति ह्युच्यतांमुनिसन्निधौ ३० तच्छ्रुत्वासहसागत्वापादयोःपतितोमुनेः॥ स्वामिन्रामःसमागत्यवनाद्बाहिरवस्थितः ३१ सभार्य्यःसानुजःश्रीमानाहमांदेवसन्निभः॥ भरद्वाजायमुनयेज्ञापयस्वयथोचितम् ३२ तच्छ्रुत्वासहसोत्थायभरद्वाजोमुनीश्वरः॥ गृहीत्वार्घ्यंचपाद्यंचरामसामीप्यमाययौ ३३ ॥

(भुक्त्वावृक्षदलेसुप्त्वातांनिशांसुखंआसतततोवैदेह्यालक्ष्मणेनसमन्वितःतुरामः) भोजन करिकै वृक्षके नये पत्तोंकी शय्या बिछाय तापर शयन करि उस रातिमें सुख पूर्वक बासकीन्हे भोर भये तदनन्तर जानकी लक्ष्मण सहित पुनः रघुनन्दन चले २८ (भरद्वाजस्यआश्रमपदंगत्वाबहिःउपस्थिता तत्रएकंबटुकंदृष्ट्वाचरामःप्राहहेबटो) जाय प्रयागमें पहुँचि भरद्वाज ऋषिके आश्रमको गये द्वारपर बाहेर खड़ेभये तहां एक ऋषि बालकको देखि पुनः रघुनन्दन बोले हे बटो २९ (मुनिसन्निधौइति

हिउच्यतांसीतालक्ष्मणाभ्यांसमन्वितःदाशरथीरामःवनस्यबहिःआस्ते)भरद्वाज मुनिके समीपमेंजाय ऐसा कहो कि सीता लक्ष्मण सहित दशरथके पुत्र राम वनके बाहेर खड़ेहैं ३० (तत्श्रुत्वासहसाग त्वामुनेःपादयोःपतितःस्वामिन्रामःसंआगत्यवनात्वहिःअवस्थितः) सो रघुनाथजीको वचन सुनि मुनि बालक तुरतही जाय मुनि भरद्वाजके पाँयन परि बोला हे स्वामिन् रामचन्द्र आयेहैं सो वनते बाहेर खड़ेहैं ३१ (सभार्यासःअनुजःदेवसन्निभःश्रीमान्सांआहभरद्वाजायमुनयेयथोचितमूज्ञापयस्व) सहित स्त्री सहित छोटे भाई देवतुल्य प्रकाशवन्त श्रीमान् रघुनाथजी मो प्रति कहे कि भरद्वाजमुनि के अर्थ यथा उचित होइ ता भांति हमारे आवनेको हाल कहोजाय३२(तत्श्रुत्वामुनीश्वरःभरद्वाजः सहसाउत्थायअर्घ्यंचपाद्यगृहीत्वाचरामसामीप्यंआययौ) ऋषि बालकको कहा हुआ वचन सो सुनि कै मुनिनमें श्रेष्ठ भरद्वाज तुरतहीं उठे अर्घ्यपाद्य अर्थात् हाथ पग धोवन आचमनादि करनेहेत न्यारे न्यारे पात्रनमें जल पुनः गन्धअक्षत फूल धूप दीप नैवेद्यादि पूजनकी सामग्री लैकै पुनः रघुनाथजीके समीपको मुनि आनन्द सहित जातेभये ३३ ॥

दृष्ट्वारामंयथान्यायंपूजयित्वासलक्ष्मणम् ॥ आहमेपर्णशालांभोरामराजीवलोच न३४आगच्छपादरजसापुनीहिरघुनन्दन ॥ इत्युक्त्वोटजमानीयसीतयासहराघ वो ३५ भक्त्यापुनःपूजयित्वाचकारातिथ्यमुत्तमम् ॥ अद्याहंतपसःपारंगतो स्मितवसंगमात् ३६ ज्ञातंरामतवोदंतंभूतंचागामिकंचयत् ॥ जानामित्वांपरा त्मानंमाययाकार्यमानुषम् ३७ यदर्थमवतीर्णोऽसिप्रार्थितब्रह्मणापुरा ॥ यदर्थं वनवासस्तेयत्करिष्यसिवैपुनः३८ जानामिज्ञानदृष्ट्याऽहंजातयात्वदुपासनात् ॥ इतःपरंत्वांकिंवक्ष्येकृतार्थोऽहंरघूत्तम ३९ ॥

(सलक्ष्मणंरामंदृष्ट्वायथान्यायंपूजयित्वाआहभोरामराजीवलोचनमेपर्णशालां) सहितलक्ष्मण रघुनन्दन तिनहिं देखि जैसा चाहिये ताही विधिते पूजनकरि भरद्वाज बोले हेराम कमलनयन मेरा जो पत्तनरचित आश्रमहै तहां को ३४ (आगच्छरघुनन्दनपादरजसापुनीहिइतिउक्त्वासीतयास हराघवौउटजंआनीय) मेरे आश्रममें आइये हे रघुनन्दन आपने पायँनकी धूरिकरिकै आश्रम पवित्र कीजिये इत्यादि कहि सीता करिकै सहित लक्ष्मण सहित रघुनन्दन तिनहिं पर्णशालको लवाय लाये ३५ (पुनःभक्त्यापूजयित्वाउत्तमंआतिथ्यंचकारतवसंगमात्अद्यअहंतपसःपारंगतोस्मि-) आ- श्रम आयेपर पुनः भक्ति करिकै रघुनन्दनको पूजि उत्तम पाहुनकी रीति कंदमूल फलादि भोजन कराय मुनि बोले हे रघुनन्दन आपके दर्शनते आजु हम तपस्याके पारगयन भाव तपस्या करने को पूर्ण फल पावा ३६ (रामतवउदंतंयत्भूतंचयत्आगामिकंतत्ज्ञातंत्वांपरात्मानंजानामिमाययाकार्यं मानुषं) हे रघुनन्दन आपको वृत्तान्त जो पूर्वहोचुका है पुनः जो आगे होनेवालाहै सोसब में जानता हौं अरु आपको परमात्मा जानताहौं सोईपर रूप माया करिकै जगत्के कार्य करिवेहेत भाव राव- णादि खल मारनहेत भूभार उतारि धर्म स्थापन हेत मनुष्य तनु धारण किहेउहै ३७ (पुराब्रह्मणा प्रार्थितंयत्अर्थअवतीर्णःअसियत्अर्थंतेवनवासःपुनःयत्वैकरिष्यसि) क्या जानताहौं सो सुनिये पूर्व ब्रह्माने प्रार्थना किया तिस कारण जौने अर्थ अवतार धरेउ जौनेअर्थ आपको वनवास भया पुनः जो कार्य आगे करोगे सो सब ३८ (त्वत्उपासनात्जातज्ञानदृष्ट्याअहंजानामिइतःपरं रघूत्तम

त्वांकिंवक्ष्येअहंकृतार्थः) आपकी उपासनाते उत्पन्न जो ज्ञानदृष्टि त्यहिकरिकै मैं सबजानताहौं याते अधिक हे रघुनन्दन और क्या कहौं दर्शनपाइ मैं धन्यभया ३९ ॥

यस्त्वांपश्यामिकाकुत्स्थंपुरुषंप्रकृतेःपरं ॥ रामस्तमभिवाद्याहसीतालक्ष्मणसंयुतः ४० अनुग्राह्यास्त्वयाब्रह्मन्वयंक्षत्रियबांधवाः ॥ इतिसंभाष्यतेऽन्योऽन्यमुषित्वामुनिसन्निधौ४१ प्रातरुत्थाययमुनामुत्तीर्य्यमुनिदारकैः ॥ कृताप्लवेनमुनिनादृष्टमार्गेणराघवः ४२ प्रययौचित्रकूटाद्रिंवाल्मीकेर्यत्रचाश्रमम् ॥ गत्वारामोथवाल्मीकेराश्रमंऋषिसंकुलम् ४३ नानामृगद्विजाकीर्णंनित्यपुष्पफलाकुलम् ॥ तत्रदृष्ट्वासमासीनंवाल्मीकिंमुनिसत्तमम् ४४ ननामशिरसारामोलक्ष्मणेनचसीतया ॥ दृष्ट्वारामंरमानाथंवाल्मीकिर्लोकसुंदरम् ४५ ॥

(प्रकृतेःपरंपुरुषंकाकुत्स्थंत्वांयःपश्यामिसीतालक्ष्मणसंयुतःरामःतंअभिवाद्यआह) काहे मैं धन्यभयों कि प्रकृतिमायाताते परे आप परमात्मा पुरुपसोई ककुत्स्थवंशमें अवतीर्ण जो आप तिनहिं जो नेत्रन भरि देख्यों ताते धन्यभयों इति सुनि तब जानकी लक्ष्मण सहित रघुनन्दन भरद्वाज जो हैं तिनहिं प्रणामकरि बोले ४० (वयंक्षत्रियबान्धवाःब्रह्मन्त्वयाअनुग्राह्याः इतितेअन्योन्यंसंभाष्यमुनिसन्निधौउपित्वा) रघुनन्दन कहे कि हम तौ क्षत्रीकुल में उत्पन्न भये हैं हे ब्रह्मन् आप करिकै अनुग्रह करिबे योग्यहैं इत्यादि परस्पर वार्ता करतेहुये रातिभरि मुनिके समीपमें वास कीन्हे ४१ (प्रातःउत्थायराघवःमुनिदारकैःयमुनांउत्तीर्य्य)प्रातःकाल उठिकै रघुनन्दन मुनि बालकोंकी सहायता करिकै यमुना उतरे कौन भांति (कृताप्लवेनमुनिनादृष्टमार्गेण) कियाहै स्नान जिन्हों ने भाव यमुनामें अवगाहन करि थाहाथाह जानेहैं तिन मुनियोंने दिखाई तिस मार्ग करिकै उतरे ४२ (चित्रकूटअद्रिंचयत्रवाल्मीकेःआश्रमंययौअथरामःऋषिसंकुलंवाल्मीकेःआश्रमंगत्वा) चित्रकूट पर्वत पुनः जहां वाल्मीकिजीको आश्रमहै तहांगये तब रघुनन्दन जो ऋषिन करिकै परिपूर्ण भराहै वाल्मीकिजी को आश्रम तहां गये ४३ (नित्यपुष्पफलाकुलम्नानामृगद्विजाकीर्णंतत्रमुनिसत्तमंवाल्मीकिंसंआशीनंदृष्ट्वा) जहां नित्यही फूल फलनते परिपूर्ण वृक्षहैं भूमिमें अनेक रंगके मृग वृक्षनपर अनेकपक्षी भरे हैं तहां मुनिनमें उत्तम जो वाल्मीकि तिनहिं बैठे देखिकै ४४ (लक्ष्मणेनचसीतयारामः शिरसाननामलोकसुंदरंरमानाथंरामंवाल्मीकिःदृष्ट्वा) लक्ष्मण जानकी सहित रघुनन्दन शीश नवाइ प्रणाम कीन्हे जो लोकमें एक इनहीं सुन्दरहैं दूसरा नहीं ऐसे रमालक्ष्मी तिनके नाथ जो श्रीरघुनन्दन तिनहिं प्रणाम करते वाल्मीकि मुनि सन्मुख देखे ४५ ॥

जानकीलक्ष्मणोपेतंजटामुकुटमण्डितम् ॥ कंदर्पसदृशाकारंकमनीयांबुजेक्षणम्४६दृष्ट्वैवंसहसोत्तस्थौविस्मयानिमिषेक्षणः ॥ आलिंग्यपरमानन्दंरामंहर्षाश्रुलोचनः४७पूजयित्वाजगत्पूज्यंभक्त्याऽर्घ्यादिभिरादृतः॥ फलमूलैःसमधुरैर्भोजयित्वाचलालितः ४८ राघवःप्रांजलिःप्राहवाल्मीकिंविनयान्वितः ॥ पितुराज्ञांपुरस्कृत्यदण्डकानागतावयम् ४९ भवंतोयदिजानंतिकिंवक्ष्यामोऽत्रकारणम् ॥ यत्रमेसुखवासायभवेत्स्थानंवदस्वतत् ५० सीतयासहितःकालंकिंचित्तत्रनयाम्यहम् ॥ इत्युक्तोराघवेणासौमुनिःसस्मितमब्रवीत् ५१ ॥

(जानकीलक्ष्मणोपेतंजटामुकुटमंडितमग्रेवुजईक्षणंकंदर्पसदृशःआकारंकमनीयम्) कैसे रघुनन्दनहैं जानकी लक्ष्मण सहित हैं जटाको मुकुट शीशपर विराजमान कमलसम नेत्र कामदेव सम तनकी आकार सर्वांग सुन्दर ४६ (एवंदृष्ट्वाविस्मयाअनिमेपइक्षणः सहसाउत्तस्थौरामंआलिंग्यपरमानन्दं हर्षअश्रुलोचनः) इस प्रकार सुन्दर स्वरूप जो रघुनन्दन तिनहिं देखि आश्चर्य करिकै पला चलन रहित एक टक नेत्र भये जिनके ऐसे वाल्मीक शीघ्रही उठि रघुनन्दन जो हैं तिनहिं उरमें लगाय परम आनन्दको प्राप्त भये प्रेमानन्द उमगि आँशुनेत्रमें वहिआये ४७ (अर्घ्यआदिभिःआदृतःजगत्पूज्यंभक्त्यापूजयित्वासमधुरैःफलमूलैःभोजयित्वाचलालितः) अर्घ्यपाद्यादिषोड़शोपचारण करिकै आदरते जगतके पूज्य जो रघुनन्दन तिनहिं भक्ति भाव करिकै पूजे तथा सहित मधुरता फल मूलादि भोजन कराय पुनः लाड़ लड़ायेदुलारे ४८ (राघवः प्रांजलिःविनयान्वितःवाल्मीकिंप्राहपितुःआज्ञांपुरस्कृत्यवयम्दण्डकान्आगता) रघुनाथजी हाथ जोरि नम्रता सहित वाल्मीकि प्रति बोले हे मुने पिताकी आज्ञा करि हम दण्डक वनहिं आयेहैं ४९ (अत्रकारणंयद्भिवंतःजानंतितदिकिंवक्ष्यामः यत्रमेसुखंभवेत्तत्वासायस्थानंवदस्व) इहां आवनेको कारण जोहै ताहि जो आप जानते हौ तौ क्या प्रयोजनहै जो हम कहैं ताते जहां के रहे हम को सुख होय तौन वास करिवे अर्थ उत्तम स्थान जोहै ताहि कहिये ५० (तत्रकिंचित्कालंसीतयासहितःअहंनयामिराघवेणइतिउक्तःअसौमुनिःसस्मितंअब्रवीत्) सुखदस्थान बताइये तहां कछु काल सीताकरिकै सहित हम वासकरि व्यतीत करें श्रीरघुनाथजी करिकै जब ऐसा वचन कहागया तब ये मुनि वाल्मीकिजीसहित मुसुकानि वचन बोले भाव प्रभु ऐश्वर्य छपाय कैसी माधुर्य देखावतेहैं ५१ ॥

त्वमेवसर्वलोकानांनिवासस्थानमुत्तमम् ॥ तवापिसर्वभूतानिनिवाससदनानि हि ५२ एवंसाधारणंस्थानमुक्तंतेरघुनन्दन ॥ सीतयासहितस्येतिविशेषपृच्छत स्तव ५३ तद्वक्ष्यामिरघुश्रेष्ठयत्तेनियतमंदिरम् ॥ शांतानांसमदृष्टीनामद्वेष्टाणां चजंतुषु॥त्वामेवभजतांनित्यंहृदयंतेऽधिमंदिरम् ५४ धर्म्माधर्मान्परित्यज्यत्वामे वभजतोऽनिशम् ॥ सीतयासहतेरामतस्यहृत्सुखमंदिरम् ५५ त्वन्मंत्रजापकोय स्तुत्वामेवशरणगतः ॥ निर्द्वंद्वोनिस्पृहस्तस्यहृदयंतेसुमंदिरम् ५६ ॥

(सर्वलोकानांउत्तमंनिवासस्थानंत्वंएवतवअपिनिवाससदनानिहिसर्वभूतानि) हे रघुनन्दन सब लोकनको उत्तम वासस्थान अर्थात् सुखदवास मन्दिर आपही निश्चय करिकैहौ भाव जो जन आप के विषे वास करत सोई सुखी रहत तथा आपको भी निश्चय करि निवास करिवे हेत मन्दिर सब भूत चराचरहैं भाव सबमें बसेहौ ५२ (रघुनन्दनएवंतेसाधारणस्थानउक्तंसीतयासहितस्यइतिविशेषंतवपृच्छतः) हे रघुनन्दन इस प्रकार आप प्रति मैं साधारण केवल आपके वसिवे योग्य मन्दिर कहाहै अरु सीता करिकै सहित आपने वसिवेको मंदिर इत्यादिते विशेषि मन्दिर आप पूछतेहौ ५३ (रघुश्रेष्ठयत्तेनियतमंदिरम्तत्वक्ष्यामिसमदृष्टीनांशांतानांचजंतुषुअद्वेष्टानांनित्यंत्वांएवभजतांहृदयतेअधिमंदिरम्) हे रघुवंशनाथ जो आपके नियत मन्दिरहैं भाव जहां दिव्य गुणनयुक्त सुन्दर स्वरूप ते जहां वास करतेहौ जो ज्ञान विराग भक्तिमय दिव्य मन्दिरहैं तौन अब मैं कहताहौं सो सुनिये जे भूत मात्रमें समदृष्टि राखतेहैं जिनको चित्त शांतहै पुनः सबमें ईश्वरको व्यापकमानि किसी जीवनमें विरोध नहीं करतेहैं इति शुद्ध ह्वै नित्यही आपहीको निश्चय करि भजते आपकी परिचर्या

में लगेरहतेहैं तिनको हृदय आपको उत्तम मन्दिरहै तामें बसो ५४ (धर्मअधर्मान्परित्यज्यअनिशंत्वांएवभजतःतस्यहृत्रामसीतयासहतेसुखमन्दिरम्) धर्म यथा सत्य शौचयुत यज्ञ तप संध्या पूजा व्रत पाठ मन्त्र जप तीर्थवास गुरुजन सेवादानादि पुनः अधर्म यथा झूठ अपावनता हिंसा परस्त्री वेश्यागमन परहानि चोरी इत्यादि धर्म अधर्म जो हैं तिनहिं परित्याग करि जेदिनो राति आपहींको भजतेहैं निश्चयकरि दूसर काम नहीं तिनको जो हृदयहै हे श्रीरघुनाथजी सीताकरिकै सहित आपके बसने योग्य सोई मन्दिरहै ५५ (निर्द्वंद्वःनिस्पृहःतुत्वांएवशरणंगतःयःत्वत्मन्त्रजापकःतस्यहृदयंते सुमन्दिरम्) हर्ष विषादराग द्वेषादि द्वंद्वरहित अरु स्त्री पुत्र धन धाम राज्य स्वर्गादि सुख सिद्धी इत्यादि किसीबातकी कांक्षा नहींहै पुनः आपकी निश्चयकरि शरणागतह्वै जो आपको मन्त्र जाप करता है ताको हृदय आपको सुन्दर मन्दिरहै ५६॥

निरहंकारिणः शांता येरागद्वेषवर्जिताः ॥ समलोष्टाश्मकनकास्तेषांतेहृदयंगृहम्५७त्वयिदत्तमनोबुद्धिर्यःसंतुष्टःसदाभवेत्॥त्वयिसंत्यक्तकर्माथस्तन्मनस्तेशुभंगृहम्५८ योनद्वेष्ट्यप्रियंप्राप्यप्रियंप्राप्यनहृष्यति॥सर्वंमायेतिनिश्चित्यत्वांभजेत्तन्मनोगृहम् ५९ षड्भावादिविकारान्योदेहेपश्यतिनात्मनि ॥ क्षुत्तृट्सुखंभयंदुःखंप्राणबुद्ध्योर्निरीक्ष्यते ६० संसारधर्मैर्निर्मुक्तस्तस्यतेमानसंगृहम् ६१ पश्यन्तियेसर्वगुहाशयस्थंत्वांचिद्घनंसत्यमनंतमेकम् ॥ अलेपकंसर्वगतंवरेण्यन्तेषांहृदब्जेसहसीतयावस ६२ ॥

(येरागद्वेषवर्जिताःनिःअहंकारिणाःशांताःलोष्टाश्मकनकाःसमःतेषांहृदयंतेगृहम्) जे पुरुष प्रीति विरोध रहित सबसों साधारण प्रीति राखे अहंकार त्यागे शांत चित्त पुनः ढेला पत्थर सोना इत्यादि बराबरि मानेहैं तिनके हृदय आपके मंदिरहैं ५७ (यःमनःबुद्धिःत्वयिदत्तःसदासंतुष्टःभवेत्कर्माथःत्वयिसंत्यक्तःतन्मनःतेशुभंगृहम्) जे जन मन बुद्धि आपके नाम रूप लीलादिमें लगाये सदा संतोष राखते हैं अरु कर्म जो शुभदायक करतेहैं तेसब आप विषे समर्पण करते हैं तिनको मन आप को मंगलीक मंदिरहै ५८ (प्रियंप्राप्यहृष्यतिनअप्रियंप्राप्ययःद्वेष्टिनसर्वंमायाइतिनिश्चित्यत्वांभजेत्तत् मनःगृहम्) प्रिय पदार्थ पाय हर्षते नहीं तथा अप्रियपदार्थ प्राप्तभये तामें विरोध नहींकरतेहैं संसार में हानि लाभ मै यावत् व्यापारहैं यह सब माया झूठा कौतुक देखने मात्रहै सत्यता नहींहै इति निश्चय करि सबसों मन खैंचि आपकी सेवामें तत्पर रहते हैं तिनको मन आपको मंदिर है ५९ (षड्भाव यथा जन्म, सत्ता, परिणाम, तनवृद्धि, क्षीणता, नाश इत्यादि (अन्यःविकाराः) और जो छःविकारहैं यथा काम,क्रोध,मद,लोभ,मोह,मात्सर्य्य अथवा शब्द स्पर्शरूप रस गंध मैथुन इति (देहे पश्यतिआत्मनिन) ये षड्भाव विकारादिकोंको देहै विषे जे देखतेहैं अरु आत्मामें नहीं देखतेहैं तथा (क्षुत्तृट्सुखंभयदुःखंप्राणबुद्ध्योर्निरीक्ष्यते)भूख प्यास प्राणोंमें अरु सुख दुःख डर बुद्धिमें देखतेहैं६० (संसारधर्मैःनिर्मुक्तःतस्यमानसंतेगृहम्) यज्ञ तपस्या तीर्थ व्रत दान गुरुजन मान्यता देवपूजन इत्यादि जो संसारमें धर्महैं तिनकी वासना करिकै छूटिगये होयँ जे तिनको मन आपको मंदिरहै ६१ (अलेपकंसर्वगतंवरेण्यंचिद्घनंसत्यंअनंतंएकंत्वांसर्वगुहाशयस्थंपश्यन्तितेषांहृत्अब्जेसीतयासहवस) माया लेपरहित सबमें व्यापक सबसों श्रेष्ठ चैतन्य समूह सत्य जाकी महिमाको अंत कोऊ नहीं

पावत ऐसे जो एक आपहौ तिनहिं सब भूत मात्रके अंतःकरण रूप गुहामें जे जन देखतेहैं तिनके हृदयरूप कमलमें सीता करिकै सहित वासकरौ ६२ ॥

निरंतराभ्यासदृढीकृतात्मनांत्वत्पादसेवापरिनिष्ठितानां ॥ त्वन्नामकीर्त्याहतक लमषाणांसीतासमेतस्यगृहंहृदब्जे ६३ रामत्वन्नाममहिमावर्ण्यतेकेनवाकथम्॥य त्प्रभावादहंरामब्रह्मर्षित्वमवाप्तवान् ६४ अहंपुराकिरातेषुकिरातैःसहवर्द्धितः ॥ जन्ममात्रद्विजत्वंमेशूद्राचाररतःसदा ६५ शूद्रायांबहव.पुत्राउत्पन्नामेऽजितात्म नः॥ ततश्चोरैश्चसंगम्यचोरोऽहमभवन्पुरा ६६ धनुर्बाणधरोनित्यंजीवानामंत कोपमः॥ एकदामुनयःसप्तदृष्टामहतिकानने ६७ ॥

त्वन्नामकीर्त्याकिल्मषाणांहतःनिरंतरंअभ्यासेनदृढीकृतः आत्मनांत्वत्पादसेवापरिनिष्ठितानांतस्य हृत्अब्जेसीतासमेगृहम्)हेरघुनंदन आपको नामकीर्तन करि पापोंको नाश करिदियाहै जिन्होंने अरु श्रवण कीर्तन स्मरण अर्चन सेवनादि अभ्यास अर्थात् इसीआचरणमें सदा लगेरहिकै इति अभ्यास करिकै आपकी प्रीतिमें पुष्टकरिलियाहै आत्माको जिन्होने अरुआपके पायँनकी सेवामें निष्ठाकियाहै जिन्होंने तिनको हृदयरूप जो कमलहै तामें सीतासहित वास करनेको आपको मंदिरहै६३(रामत्व न्नाममहिमाकथंकेनवर्ण्यतेरामयत्प्रभावात्अहंब्रह्मऋषित्वंप्राप्तवान्)हेरघुनंदन आपके नामकी जो महिमाहै सो कौन प्रकार किसी करिकै वर्णन कीजाय भाव किसीभांति कोई नहीं वर्णन करिसक्ता है काहेते हे रघुनन्दन जिस नामके प्रभावते मैंव्याधते ब्रह्मऋषित्व पदको प्राप्त भयों ६४ (पुराअ हंकिरातेषुकिरातैःसहवर्द्धितःजन्ममात्रमेद्विजत्वंशूद्राचारसदारतः)हे रघुनन्दन पूर्वकालमें में किरात देशमें बालपनते रहा किरातन करिकै मेरा पालन पोषण भयो उनहींके संगशरीर बढ़त युवा भयों जन्ममात्र तौमें विप्र प्रचेता ऋषिको पुत्रहौं अरुकर्म शूद्रोंके करने लगा शूद्रीको पत्नी किया इति शूद्रोंके आचारमें सदा रतरहा ६५ (अजितात्मनःमेशूद्रायांबहवःपुत्राःउत्पन्नाःततःचोरैःचसंगम्यपु राअहंचोरःअभवत्)नहीं जीति सक्यों आत्माभाव विषया सक्त जोमें शूद्र जाति स्त्री में रतरहा तामें बहुत पुत्र पैदा भये तदनंतर पुनः चोरोंको संग भया ताके प्रभावते पूर्व समयमैंभी चोर भया ६६ (नित्यंधनुर्बाणधरःजीवानांअंतक.उपमःएकदामहतिकाननेसप्तमुनयःदृष्टा) नित्यही धनुष बाण धारण किहे जीवनको घात करनहारा यमकी समान भया एकसमय महाभारी वनमें आवत सात मुनिनको देखा भाव जो सप्त ऋषि प्रसिद्ध हैं ६७ ॥

साक्षान्मयाप्रकाशांतोज्वलनार्कसमप्रभाः॥तानन्वधावल्लोभेनतेषांसर्वपरिच्छदा न्६८गृहीतुकामस्तत्राहंतिष्ठतिष्ठेतिचाब्रवम्॥ दृष्ट्वामांमुनयोपृच्छन्किमायासि द्विजाधम ६९ अहंतानब्रुवंकिंचिदादातुंमुनिसत्तमाः॥ पुत्रदारादयःसंतिबहवोमे बुभुक्षिताः ७० तेषांसंरक्षणार्थायचरामिगिरिकानने॥ ततोमामूचुरव्यग्राःपृच्छ गत्वाकुटुंबकम् ७१ योयोमयाप्रतिदिनंक्रियतेपापसंचयः ॥ यूयंतद्भागिनःकिंवा नेतिवेतिपृथक्पृथक् ७२ वयंस्थास्यामहेतावदागमिष्यसिनिश्चयः ॥ तथेत्यु क्त्वागृहंगत्वामुनिभिर्यदुदीरितम् ७३ ॥

६(ज्वलनःअर्कःसमःप्रभाःप्रकाशांतःसाक्षान्मयालोभेनतेषांसर्वपरिच्छदान्तांअनुअधावत्) अग्नि सूर्यसम प्रभा प्रकाश करतेहुये साक्षात् देखि मैंने लोभ करिके तिन मुनिनकी सब वस्तु हरिलेने को तिनके पाछे धायों ६८ (तत्रअहंगृहीतुकामःचतिष्ठतिष्ठइतिअब्रुवन्मांदृष्ट्वामुनयःपप्रच्छन्द्विजाधमकिंआयासि) तहां मैं उनकी बस्तु लेनेकी कामनाते पुनः खड़ेहोउ खड़े होउ ऐसा कहा तब मोहिं देखि मुनि लोगोंने पूछा कि हे द्विज अधम किसहेतु आवताहै ६९(तान्अहंऽब्रुवन्मुनिसत्तमाः किंचित्आदातुंमेपुत्रदारादयःबहवःबुभुक्षिताःसंति) तिन प्रति मैं बोल्यो हे मुनि उत्तमो आपके वसनादि कछु लेने हेतु आताहौं क्योंकि मेरेपुत्र स्त्री आदि बहुत भूँखेहैं ७० (तेषांसंरक्षणार्थायगिरिकाननेचरामिततःअव्यग्राःमांऊचुःगत्वाकुटुंबकमृपृच्छ) तिन पुत्रादिकोंके रक्षा करने अर्थ पहाड़ वनमें पथिक लूटता हुआ घूमताहौं इत्यादि सुनिकै नहीं बिकल भये प्रसन्न मन मुनि मों प्रति बोले कि तू घरको जाय परिवारके लोगों प्रति पूछु तौ ७१ (प्रतिदिनंमयाद्यःयःपापसंचयःक्रियतेतत्भागिनः यूयंकिंवानइतिपृथक्पृथक्वेत्ति) घरके लोगों प्रति पूछौ कि तुम लोगोंकी जीविका हेतु रोज रोज हम करिकै जीव हिंसा परधन हरणादि जो जो पापोंको बटोर किया जाताहै तामें हिस्सेदार तुमहो तेहौ अथवा नहीं यही वचन स्त्री पुत्रादि सब सों एक एक प्रति पूछि सबको उत्तर जानिलेउ ७२ (यावत्आगमिष्यसितावत्वयंनिश्चयःस्थास्यामहेतथाइतिउक्त्वागृहंगत्वायत्मुनिभिःउदीरितम्) मुनि लोग कहे कि जबतक तुम घरते लौटिकै ऐहौ तबतक हम सब निश्चय करतेहैं कि इहांपर बैठि रहैंगे तब मैं मुनिन प्रति कहा कि जो आप कहतेहौ तैसाही करौंगो ऐसाकहि घरको गयों उहांक्या किया कि जो बात मुनिलोगों करिकै मोसों कहीगईरहै ताहेतु सबको बुलाया ७३ ॥

आपृच्छम्पुत्रदारादीन्तैरुक्तोऽहंरघूत्तम॥पापंतवैवतत्सर्वंवयंतुफलभागिनः७४ तच्छ्रुत्वाजातनिर्वेदोविचार्यपुनरागमम्॥मुनयोयत्रतिष्ठंतिकरुणापूर्णमानसः ७५ मुनीनांदर्शनादेवशुद्धांतःकरणोऽभवम् ॥ धनुरादीन्परित्यज्यदण्डवत्पतितो स्म्यहम् ७६ रक्षध्वंमांमुनिश्रेष्ठाःगच्छंतंनिरयार्णवम् ॥ इत्यग्रेपतितंदृष्ट्वामामूचुर्मुनिसत्तमाः ७७ ॥

(रघुसत्तमपुत्रदारादीन्आपृच्छन्अहंतैःउक्तःतत्सर्वंपापंतवएवतुवयंफलभागिनः) हे रघुनाथजी पुत्र स्त्री आदि सबन सों पूछा कि जो पाप करि धन लावते हैं सो तुम सब खाते हौ तौ उन पापोंमें तुम हिस्सेदारहौ कि नहीं यह सुनि तब मो प्रति तिन सबों ने कहा कि ऐसा काम करने को हम लोग कब कहा है जो पाप भागी होयँ यह हिंसकी क्रिया तुम अपनीइच्छाते करतेहौ तौन सब पाप तुमको निश्चय करि होंगे पुनः हम लोग तौ इस कर्तव्यता को जो फल धन लाभ ताकेहिस्से दार हैं भाव जोधन लावोगे तामें भोजन वसनको निर्वाह करैंगे७४(तत्श्रुत्वानिर्वेदःजातविचार्य्यपुनःआगमम्यत्रकरुणापूर्णमानसाःमुनयःतिष्ठंति) स्त्री पुत्रादिकोंके कहे उदासीन वचन सो सुनिकै मेरे मनमें निर्वेद उपजा यथा काव्य रस तरंगे ॥ दोहा ॥ करि अपनोई निदरिबो करि करि मन मेंखेद। जगु तजिबेकी बुद्धिकै यहि है बिधि निर्वेद॥भाव संसारमें कोउ किसीको नहीं इति मनमें वैराग्य उपज्योकि लोकसुख वृथा है परलोक सुख साँचा देखा चाहिये ऐसा बिचारि पुनः लौटि आयों जहां करुणारस पूर्ण भरे मन मुनि लोग बैठेरहैं ७५ (मुनीनांदर्शनात्एवअंतःकरणाःशुद्धाःअभवत्धनुःआदीन्परित्यज्यदण्डवत्पतितःअस्म्यहम्) मुनि लोगनके दर्शनते निश्चय करि मेरेअन्तः करण

अर्थात् अहंकार मनचित बुद्धि इत्यादि शुद्ध ह्वैगये विषमता विकारजातरहा तब धनुषबाणादि अत्र परित्याग करि मुनिके पायँन समीप दण्डकीनाईं भूमिपै गिरिपरेउँ अरुदीन अधीनह्वै बचन बोल्यो ७६ (मुनिश्रेष्ठाःनिरयःअर्णवंआगच्छंतंमांरक्षध्वंइतिमांअग्रेपतितंदृष्ट्वामुनिसत्तमाःमांऊचुः) क्या बोल्यों कि हे मुनि श्रेष्ठ भाव आप पतित जीवनको उद्धार करनहारेहो अरु मैं नरकरूप समुद्रहि जाताहौं भाव असंख्य पाप कीन्हेउँहै ताको फल भोग हेतु अवश्य नरकहि जाउँगो ताते दया दृष्टि ते मेरी रक्षा करो इत्यादि सुनि मोहिं आगे परा देखि मुनिनमें श्रेष्ठ जो सातो मुनिते दया करि मैं जो पतितता प्रति उपदेश वचन बोलतेभये ७७ ॥

उत्तिष्ठोत्तिष्ठभद्रंतेसफलःसत्समागमः॥उपदेक्ष्यामहेतुभ्यंकिंचित्तेनैवमोक्ष्यसे७८
परस्परंसमालोच्यदुर्वृत्तोऽयंद्विजाधमः॥उपेक्ष्यएवसद्वृत्तैस्तथापिशरणंगतः॥रक्ष
णीयःप्रयत्नेनमोक्षमार्गोपदेशतः ७९ इत्युक्त्वारामतेनामव्यत्यस्ताक्षरपूर्वकम् ॥
एकाग्रमनसात्रैवमरेतिजपसर्वदा ८० आगच्छामःपुनर्यावत्तावदुक्तंसदाजप ॥
इत्युक्त्वाप्रययुःसर्वेमुनयोदिव्यदर्शनाः८१अहंयथोपदिष्टंतैस्तथाकरवमंजसा ॥
जपन्नेकाग्रमनसाबाह्यंविस्मृतवानहम् ८२ ॥

(तेभद्रंउत्तिष्ठउत्तिष्ठसत्समागमःसफलःतुभ्यंकिंचित्उपदेक्ष्यामहेतेनएवमोक्ष्यसे) मुनि बोले हे विप्र तेरा कल्याणहोय उठु उठु सज्जननको मिलन सफलभया काहेते अब तेरेअर्थ हमकछु उपदेश करतेहैं त्यहि करिकै तू निश्चय करिकै भवबंधनते छूटि हरिपदको प्राप्तहोइगो ७८ (परस्परंसमालोच्यअयंद्विजःअधमःसद्वृत्तैःउपेक्ष्यएवतथापिशरणंगतःप्रयत्नेनमोक्षमार्गउपदेशत.रक्षणीयः) पुनः मुनिलोग आपुसमें विचार पूर्वक वार्ता करनेलगे कि यह विप्र अधम यद्यपि दुष्ट आचरणमें रतहै संभाषण करने योग्य नहींरहे संतन करिकै त्यागबे योग्य निश्चय करिकै है तबहूं जो हम लोगोंकी शरणमें आया तौ किसी यत्न करिकै भाव सुगम रीतिते मुक्तिकी मार्ग-उपदेशते याकी रक्षा कि या चाहिये ७९ (इतिउक्त्वारामतेनामव्यत्यस्ताक्षरपूर्वकम्मराइतिअत्रएवएकाग्रमनसासर्वदाजप) ऐसा कहि पुनः मुनिलोग क्या किया हेरघुनन्दन आपको जो राम इति नामहै ताको प्रतिकूल अक्षर पूर्वक अर्थात् मकार आदि राकार अंत इति अक्षरोंको उलटी रीति यथा मरा इत्यादि उपदेश दै पुनः कहे कि इसी ठौर निश्चय करि स्थितरहु एकाग्र मन करिकै मरा मरा इति सब कालमें जपाकरु८०(यावत्पुनःआगच्छामःतावत्उक्तंसदाजपइतिउक्त्वादिव्यदर्शनाःसर्वेमुनयःप्रययुः)पुनः कहेकि जब तक हम लोग लौटिकै पुनः इहांको आई तब तक तू हमारा कहा हुवा जो नामहै ताहि सदाजपु इत्यादि कहिपुनः दिव्यहैं दर्शन जिनके ऐसे सब मुनिलोग चले जातेभये ८१ (तैःयथाउपदिष्टंतथाअहंअंजसाकरवम्एकाग्रमनसाजपन्अहंबाह्यंविस्मृतवान्) तिन मुनिनकरिकै जिस प्रकार उपदेश दियागया ताही प्रकार हमशीघ्रता सहित करतेभये अरु एकाग्रमन करिकै नामजपत संते हम देहके बाहेर इंद्रिनकी सुधि भूलि जातेभये भाव कानकोसुनब नेत्रकोदेखब त्वचा स्पर्शादि सुधि न रही ८२ ॥

एवंबहुतिथेकालेगतेनिश्चलरूपिणः ॥ सर्वसंगविहीनस्यवल्मीकोऽभवन्ममो
परि ८३ ततोयुगसहस्रांतेऋषयःपुनरागमन् ॥ मामूचुर्निष्क्रमस्वेतितच्छ्रुत्वा

तूर्णमुत्थितः ८४ वल्मीकान्निर्गतश्चाहंनीहाराद्दिवभास्करः ॥ ममाप्याहुर्मुनिग णावाल्मीकिस्त्वंमुनीश्वरः ८५ वल्मीकात्संभवोयस्मात्द्वितीयंजन्मतेऽभवत् ॥ इत्युक्त्वातेययुर्दिव्यगतिंरघुकुलोत्तम८६ अहंतेरामनाम्नश्चप्रभावादीदृशोऽभव म् ॥ अद्यसाक्षात्प्रपश्यामिससीतंलक्ष्मणेनच ८७ रामंराजीवपत्राक्षंत्वांमुक्तोना त्रसंशयः ॥ आगच्छरामभद्रंतेस्थलंवैदर्शयाम्यहम् ८८ ॥

(एवंनिश्चलरूपिणःबहुतिथेकालेगतेसर्वसंगविहीनस्यममोपरिवल्मीकःअभवत्) इसी प्रकार नाम जपत में इंद्री मनादि वृत्ति एकत्रह्वै आत्मरूपमें लयभई ताते उठन बैठन गमनादि क्रिया हीन निश्चल तन जब तिथि पक्ष मास वर्ष युगादि बहुत काल वीति गये अरु दूसरा कोऊसंग मैंनहीं जो देहकी रक्षाराखै इति सबको संग बिशेषि हीन जोमैं ताके ऊपर देवारने समूह माटी लगाय दिया ताते बाँवी ह्वै जाती भई ८३ (ततःसहस्रयुगअंतेपुनःऋषयःआगमन्निष्क्रमस्वइतिमांऊचुःतत्श्रुत्वा तूर्णउत्थितः) तदनंतर हजार युगबीते पीछे पुनः ऋषि लोग आयकहे कि हे विप्र बाँवीते निकसु इत्यादि मो प्रति बोले सो वचन सुनि तुरतही उठेउँ ८४ (वल्मीकात्अहंनीहारात्भास्करःइवनिर्गतः मुनिगणाःममअपिआहुःत्वंवाल्मीकिःमुनीश्वरः) बाँवी ते मैं कैसा प्रकाशवंतभयों यथा कुहिराते सूर्यकढैं इसी भांति मैं बांवीते निसरेउँ तब मुनिलोग मोको निश्चयकरि कहे कि तू वाल्मीकि नामे मुनीश्वरहै ८५ (यस्मात्वल्मीकात्सम्भवःतेद्वितीयंजन्मअभवत्इतिउक्त्वाःरघुकुलोत्तमतेदिव्यगतिं ययुः) काहेते जिसकारण बांबी ते उत्पन्न तुम्हारा दूसरा जन्मभया ताते वाल्मीकि नाम भया ऐसा कहि हेरघुवंशनाथ ते मुनि देवलोकको जातेभये ८६ (रामतेनाम्नःप्रभावात्अहंचईदृशःअभवत्ससी तंचलक्ष्मणेनअद्यसाक्षात्पश्यामि) हे रघुनंदन आपके नामके प्रभावते मैं ऐसा भया कि सहित जानकी पुनः लक्ष्मण सहित या समय साक्षात् सन्मुख देखताहौं ८७ (राजीवपत्रअक्षंरामंत्वां मुक्तःनात्रसंशयःतेभद्रंरामआगच्छअहंवैस्थलंदर्शयामि) कमलदल नेत्र रघुनन्दन आपजोहौ तिनहिं देखताहौं ताते मैं मुक्तभया यामें संशय नहीं है आपकोकल्याणहोय हे रघुनन्दन आइये मैं निश्चय करिकै आपके वास हेतु स्थान बतावताहौं ८८ ॥

एवमुक्त्वामुनिःश्रीमाल्लक्ष्मणेनसमन्वितः ॥ शिष्यैःपरिवृतोगत्वामध्येपर्वतगं गयोः ८९ तत्रशालांसुविस्तीर्णांकारयामासवासभूः ॥ प्राक्पश्चिमंदक्षिणोदक् शोभनंमंदिरद्वयं ९० जानक्यासहितोरामोलक्ष्मणेनसमन्वितः ॥ तत्रदेवसदृशा ह्यवसन्भवनोत्तमे ९१ वाल्मीकिनातत्रसुपूजितोयंरामःससीतःसहलक्ष्मणेन ॥ देवैर्मुनीन्द्रैःसहितोमुदाऽऽस्तेस्वर्गेयथादेवपतिःसशच्या ९२ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेअयोध्याकांडेषष्ठःसर्गः ६ ॥

(एवंउक्त्वाश्रीमान्मुनिःलक्ष्मणेनसमन्वितःशिष्यैःपरिवृतःपर्वतगंगयोःमध्येगत्वा) इस प्रकार कहिकै तपोधन ऐश्वर्यवंत मुनि वाल्मीकि लक्ष्मण करिकै सहित अपने शिष्यनको साथलै कामद पर्वत मन्दाकिनी गंगा दोऊ के मध्य में गये ८९ (तत्रवासभूःसुविस्तीर्णांशालांकारयामासदक्षिण उदक्प्राक्पश्चिमद्वयंशोभनंमंदिरम्) तहां बासकरिवेयोग्य भूमि देखि सुन्दर बड़े फैलावसहित शाला

अर्थात् समाज बैठने योग्य भूमिका बनाय द्वार शेष चारिहु दिशि सकण्ट वृक्षों की वारी घेरि दिये तामें किनारे एक दक्षिण उत्तर को लम्बा एक पूर्व पश्चिम को लम्बा इति द्वय शोभामय मन्दिर बनाये ९० (तत्रभवनोत्तमेलक्ष्मणेनसमन्वितःजानक्यासहितः रामः तेदेवसदृशाःहिअवसन्) तहां मंदिर उत्तम विषेलक्ष्मण करिकै युक्त जानकी करिकै सहित श्रीरघुनाथजी देवनकी समतादेवे योग्य निश्चय करिकै वासकीन्हे भाव यथा देवलोकमें देवताताही समान आनंदपूर्वक वासकीन्हे ९१ (तत्रवाल्मीकिनासुपूजितःससीतालक्ष्मणेनसहअयंरामःदेवैःमुनींद्रैस्सहितः मुदाआस्तेयथास्वर्गेसशच्या देवपतिः) तहां त्यहि आश्रम विषे वाल्मीक करिकै सुन्दरी भांति पूजेगये सहित जानकी लक्ष्मण करिकै सहित ऐसे जो श्रीरघुनाथजीते देवतन मुनीन्द्रन करिकै सहित आनन्द पूर्वक चित्रकूट में वास कीन्हे कौन भांति जैसे स्वर्गलोकमें इन्द्राणी सहित देवनके पति इन्द्र वसतेहैं ९२ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचितेअध्यात्म भूषणेअयोध्याकाण्डेश्रीरघुनन्दनचित्रकूटप्राप्तवर्णनोनामषष्ठःप्रकाशः ६ ॥

सुमंत्रोपितदाऽयोध्यांदिनांतेप्रविवेशह ॥ वस्त्रेणमुखमाच्छाद्यबाष्पाकुलितलोचनः १ बहिरेवरथंस्थाप्यराजानंद्रष्टुमाययौ॥जयशब्देनराजानंस्तुत्वातंप्रणनामह २ ततोराजानमंतंतंसुमंत्रंविह्वलोब्रवीत् ॥ सुमंत्ररामःकुत्रास्तेसीतयालक्ष्मणेनच ३ कुत्रत्यक्तस्त्वयारामःकिंमांपापिनमब्रवीत् ॥ सीतावालक्ष्मणोवाऽपिनिर्दयंमांकिमब्रवीत् ४ हारामहागुणनिधेहासीतेप्रियवादिनि ॥ दुःखार्णवेनिमग्नंमांम्रियमाणंनपश्यसि ५ विलप्यैवंचिरंराजानिमग्नोदुःखसागरे ॥ एवंमन्त्रीरुदंतंतंप्रांजलिर्वाक्यमब्रवीत् ६ ॥

सवैया ॥ बनगे सुतलौटि सुमंतकहे कहि शाप दिये न्वहिं अन्धकदा । नृपप्राण तजे मुनि दूत पठैभरताय लखे पुर दाहयदा ॥ धिगमातु दिये गुरु आयसुते विधि वेदकिये सक्रियादि तदा । ज्यहि दर्शचहैं भरतादि सबै त्यहि बैजसुनाथ नमामिसदा १॥ (तदासुमंत्रःअपिबाष्पआकुलितलोचनःवस्त्रेणमुखंआच्छाद्यदिनांतेअयोध्यांप्रविवेशह)जब रघुनन्दन बनकोगये तबसुमन्त्र लौटे प्रभुवियोग दुःखते आँसुभरे नेत्र सकोच वश वस्त्रकरिकै मुखढाँकि सांझभये पैर अयोध्या विषे पैठे भावकोऊ देखै न पावा राजद्वारपर पहुंचे १ (रथंएवबहिःस्थाप्यराजानंद्रष्टुंआययौराजानंजयशब्देनस्तुत्वातंप्रणनामह) रथ जोरहा ताहि निश्चय करि द्वारके बाहेर राखि भीतर जो महाराजहैं तिनके देखने हेत सुमन्त मंदिरके भीतर जातेभये तहां दशरथजीको देखि जयजीव इति शब्दकरिकै स्तुति करि तिनहिं प्रणाम कीन्हे २ (ततःसुमंत्रंनमंतंतंराजाविह्वलःअब्रवीत् सुमंत्रलक्ष्मणेनचसीतयारामःकुत्रआस्ते) तब सुमंत जोप्रणाम करतेहैं तिनहिं देखि राजादशरथ दुःखते विकलह्वै बोले हे सुमंत लक्ष्मणपुनः सीता करिकै सहित रामकहाँ हैं ३ (त्वयारामःकुत्रत्यक्तःपापिनंमांकिंअब्रवीत् वासीतावालक्ष्मणः अपिनिर्दयंमांकिंअब्रवीत्) हे सुमंत्र तुमने रामको कहां त्यागा अरु बिन अपराध बनको पठावने वाला ऐसा पापी जोमैंहौं ताप्रतिरामने क्या संदेशकहा है अथवा सीता वा लक्ष्मण निश्चयकरिकै दयाहीन जोमैं ता प्रति क्याकहा है ४ (गुणनिधेरामहाप्रियवादिनिसीतेहादुःखअर्णवेमग्नंम्रियमाणं मांनपश्यसि)कृपा दया करुणादि गुणनके भरे हेरघुनन्दन हा प्रिय वचनवोलने वाली भावशीलक्षमा-

वन्त स्वभाव हे सीते भाव जगत्के पालनपोषण हारे दोऊ प्रणतपालहौ अरु आपके वियोग जनित दुःखरूप समुद्रमें बूडताहुआ मरणकालको प्राप्त जो में हौं ताहि दयादृष्टि नहीं देखतेहौ इति हामो पर क्यों निर्दयी ह्वै गयो ५ (एवंराजाविलप्यचिरंदुःखसागरेमग्नःएवंरुदंतंतमंत्रीप्रांजलिः वाक्यमब्र-वीत्) इसीप्रकार वार्ता करि रोवतेहुये महाराज दुःखरूप समुद्रमें बहुत बीच बूडेरहे इसप्रकार रो-दनकरतेहुये जोमहाराज तिन प्रति मंत्री सुमंत्र दोऊ हाथ जोरि दुखित ह्वै वचन बोलतेभये ६ ॥

रामःसीताचसौमित्रिर्मयानीतारथेनते ॥ शृङ्गिवेरपुराभ्याशेगंगाकूलेव्यवस्थि ताः ७ गुहेनकिञ्चिदानीतंफलमूलादिकंचयत् ॥ स्पृष्ट्वाहस्तेनसंप्रीत्यानाग्रहीद्वि ससर्जतत् ८ बटक्षीरंसमानाय्यगुहेनरघुनन्दनः॥ जटामुकुटमाबध्यमामाहनृपते स्वयम् ९ सुमंत्रब्रूहिराजानंशोकस्तेऽस्तुनमत्कृते॥ साकेतादधिकंसौख्यंविपिनं नोभविष्यति १० मातुर्मेवंदनंब्रूहिशोकंत्यजतुमत्कृते॥ आश्वासयतुराजानंवृद्धं शोकपरिप्लुतम् ११ सीताचाश्रुपरीताक्षीमामाहनृपसत्तम ॥ दुःखगद्गदयावाचा रामंकिञ्चिदवेक्षती १२ ॥

(सीतारामःचसौमित्रिःतेरथेनमयानीता गंगाकूलेशृंगिवेरपुराभ्याशेव्यवस्थिताः) सुमन्त्र बोले हे महाराज जानकी रघुनन्दन पुनः लक्ष्मण ये तीनिहुन को सवार कराय मैंने रथ चलाया जब पहुँचे गंगा तट में तहां शृंगिबेरपुर के समीप एक वृक्षतर स्थित भये रात्री बसे ७ (गुहेनफलंचमू-लादिकंयत्किञ्चित्आनीतं तत्संप्रीत्याहस्तेनस्पृष्ट्वाग्रहीत्नाबिससर्ज) तहां निषादराजगुहा ने भो-जन हेत फल पुनःमूलादि जो कछु लाय आगे धरा सो देखि रघुनन्दन प्रीति से हाथे करिकै छुँइ लिया अरु ग्रहण नहीं किये सब लौटारि दिये भाव जलमात्र पान किये ८ (गुहेनवटक्षीरंसंआना-य्यरघुनन्दनः जटामुकुटंआबध्यनृपतेमांस्वयम्आह) गुहा करिकै बरगद को दूध मँगाय रघुनन्दन जटा के मुकुट बांधे पुनः हे महाराज मो प्रति आपही रघुनन्दन बोले ९ (सुमन्त्रराजानंब्रूहिमत्कृते शोकःतेनअस्तुविपिनेनःसाकेतात्अधिकंसौख्यंभविष्यति) रघुनन्दन कहे कि हे सुमन्त्र महाराज ते ऐसा कहेउ कि मेरे बियोग को अथवा वनबास को दुःख सो आपन करिहैं क्योंकि बन में मोंको अयोध्याते अधिक सुख होइगो १० (मेमातुःवंदनंब्रूहिमत्कृतेशोकंत्यजतुशोकपरिप्लुतंवृद्धंराजानं आश्वासय) पुनः रघुनन्दन कहे कि हमारी माता सों प्रणाम कहि पुनः सन्देश कहेउ कि मेरे अर्थ जो दुःख है ताहि त्याग करिहैं भाव क्षत्री धर्मवन्त की माता को हृदय कठोर राखना चाहिये इति बिचारि शोक न करिहैं पुनः दुःखमें बूडे हुये वृद्ध जो महाराज हैं तिनहिं अनेक उपचार करि साव-धान करिहैं भाव यही पतिव्रत धर्म है ११ (नृपसत्तमचसीताकिंचित्रामंअवेक्षती आश्रुपरीताक्षी गद्गदयावाचामांआह) सुमन्त्र बोले हे महाराज पुनः सीता जी किंचित् रघुनन्दनकी दिशि देखती हुई आंशु भरे नेत्र जिनके मुखते अपुष्टाक्षर इति गद्गदबानी करिकै मो प्रति बोलती भई १२ ॥

साष्टांगप्रणिपातंमेब्रूहिश्वश्रोःपदांबुजे॥ इतिप्ररुदतीसीतागताकिञ्चिदवाङ्मु खी १३ ततस्तेऽश्रुपरीताक्षानावमारुरुहुस्तदा॥ यावद्गंगांसमुत्तीर्य्यगतास्ता वदहंस्थितः १४ ततोदुःखेनमहतापुनरेवाहमागतः ॥ ततोरुदंतीकौशल्याराजा नमिदमब्रवीत् १५ कैकेय्यैप्रियभार्यायैप्रसन्नोदत्तवान्वरम् ॥ त्वंराज्यंदेहितस्यै

वमत्पुत्रःकिंविवासितः १६ कृत्वात्वमेवतत्सर्वमिदानींकिंनुरोदिषि ॥ कौशल्याव चनंश्रुत्वाक्षतेस्पृष्टइवाग्निना १७ पुनःशोकाश्रुपूर्णाक्षःकौशल्यामिदमब्रवीत् ॥ दुःखेनम्रियमाणंमांकिंपुनर्दुःखयस्यलम् १८ ॥

(इवश्रो·पदांवुजेमेसाष्टांगंप्रणिपातंब्रूहि इतिसीताप्ररुदतीकिंचित्अवाङ्मुखीगता) सासुके पद कमल में मेरा साष्टांग प्रणाम कहियो ऐसा काहे सीता प्रकर्ष रोदन करती रही ताते कछु दूरि अ-वाक्मुखी गई कण्ठारोधन ते मुख ते वचन न कढ़ि सका रोवते चलीगई १३ (ततःतेअश्रुपरीता क्षाःतदानावंचारुरुहुः यावत्गंगांमउतीर्यतावतअहंस्थितः) तदनन्तर तीनिहु जने आंशु भरे नेत्र ताही समय नाव पर चढ़े जब तक गंगा उतरि पार गये तबतक मे खड़ा देखा किया १४ (ततो महतादुःखेनपुनःएवअहंमागतः तत्रकौशल्यारुदंतीराजानंइदंमब्रवीत) जब रघुनन्दन चले गये तब बड़े दुःख करिके व्यकल पुनः निश्चय करि मैं इहां चला आयो इत्यादि सुमन्त्र के वचन सुनि तब कौशल्या रोवती हुई महाराज प्रति इस प्रकार बोलती भई १५ (प्रियभार्यायैकैकेय्यैप्रसन्नःत्वंवरम् दत्तवान्तस्यएवराज्यंदेहिमत्पुत्र·किंविवासितः) कौशल्या कहत हैं महाराज आप की प्रिय पत्नी जो कैकेयी है ताके अर्थ प्रसन्न ह्वै आप जो चाहते सो वरदान देते अरु ताको राज्य निश्चय करि देते अरु मेरे पुत्र को किस हेत वनको पठाय दिया १६ (तत्सर्वंत्वंएवकृत्वाइदानींकिन्नुरोदिषिक्षते अग्नि-नास्पृष्टइवकौशल्यावचनंश्रुत्वा) हे महाराज यावत् उपद्रवभया तौन सब कर्म तुमहीं निश्चय करि-के किहेउ भाव बिना भरत के आये बिना कैकेयी को जनाये राज्याभिषेक ठानेउ जब वाने कोप किया तब अधीन ह्वै वर दिया इत्यादि सब हर्ष ते किया तो अब क्यों रोते हो इत्यादि यथा पाके घाव में आगि को अँगार लागे तैसे ही कौशल्या के जो वचन हैं तिनहिं सुनिके १७ (पुनःशोकस्य अश्रुभिः पूर्ण·अक्षःकौशल्यांइदंमब्रवीत् दुःखेनम्रियमाणंपुनःमांकिंअलम्दुःखयसि) रानी के वचन सुनि पुनः नवीन दुःख भया ताके आँशुन करिके भरे नेत्र महाराज कौशल्या प्रति इस प्रकार वचन बोले कि दुःख करिके मरता जो मैंहौं ताहि पुनः क्यों अत्यन्त दुःख करती है १८ ॥

इदानीमेवमेप्राणाउत्क्रमिष्यंतिनिश्चयः ॥ शप्तोहंबाल्यभावेनकेनाचिन्मुनिनापु रा१९पुराहंयौवनेदृप्तश्चापबाणधरोनिशि ॥ अचरंमृगयासक्तोनद्यास्तीरेमहाव ने२० तत्रार्द्धरात्रसमयेमुनिःकश्चित्तृषार्दितः ॥ पिपासार्दितयोःपित्रोर्जलमानेतु मुद्यतः ॥ अपूरयज्जलेकुम्भंतदाशब्दोऽभवन्महान् २१ गजःपिबतिपानीयमि तिमत्वामहानिशि ॥ बाणंधनुषसंधायशब्देवेधिनमाक्षिपम् २२ हाहतोस्मीति तत्राभूच्छब्दोमानुषसूचकः ॥ कस्यापिनकृतोदोषोमयाकेनहतोविधे २३ प्रती क्षतेमाम्माताच पिताचजलकांक्षया ॥ तच्छ्रुत्वाभयसंत्रस्त स्ततोऽहंपौरुषं वचः २४ ॥

(मे प्राणाः इदानीं एव उत्क्रमिष्यंति निश्चयः पुराबाल्य भावेन अहंकेनचित् मुनिना शप्तः) मेरे प्राण इसी समय तनते निश्चय करि निसरि जान चाहते हैं यहै निश्चय होतीहै काहेते पूर्व समय अज्ञान दशा में मोहिं किसी मुनिने शाप दियाहै १९ (पुरा यौवने दृप्तः अहं चाप बाणधर. मृगया सक्तः नद्याः तीरे महावने निशि अचरम्) किस कारण शाप दिया सो सुनिये पूर्वकाल मे

युवा अवस्थामें वल वीरता के गर्वभरा धनुष वाण धारण किहे शिकार खेलने में आसक्त सरयूनदी के तीर महावन में रात्री विषे विचरते रहे २० (अर्द्धरात्र समये तत्र कश्चित् मुनिःतृषा अर्दितः पित्रोः पिपासार्दितयोः जलं आनेतुं उद्यतः) आधीराति के समय तिसी वनमें तहां कोऊ एक मुनि जलकी प्यासते पीड़ित तथा उनके माता पिता प्यासते पीडित तिनके हेत जललेने कार्य कुम्भ लिये नदी तीर आया (जले कुम्भं अपूरयत् तदा महान् शब्दः अभवत्) जल में घट भरने लगा तासमय भारी शब्द होताभया जल भरत घट भभका २१ (गजः पानीयं पिवति इति मत्वा महा निशि शब्द वेधिनं वाणं धनुषि संधाय अक्षिपम्) कोई हाथी पानी पीताहै यह विचारि महा अँधेरी रातिमें शब्दवेधी वाण धनुष में चढ़ाय मारि दिये उसी मुनि के लागिगया २२ (हाहतोस्मि इति मानुप सूचकः तत्र शब्दः अभूत् मया कस्यापि नदोषः कृतः विधे केन हतः) हाय मारेसि मोको भाव काहूने मेरे वाण मारा हाय इत्यादि मानुष वोधक तहां पर पूर्व शब्द भया पुनः वोला कि मैंने तौ किसीका दोष नहीं किया हे विधाता विन अपराध किसने मोंकोमारा २३ (माताच पिताच जलकांक्षया मां प्रतीक्षते पौरुषंवचः तत् श्रुत्वा ततः अहं भयसंत्रस्तः) पुनः वोला कि मेरीमाता पुनः पिता प्यासते जल की कांक्षा करिकै मेरी प्रतीक्षा करते होयँगे भाव कव हमारा पुत्र जललावे पावैं इति पुरुष के कहे वचन सो सुनिकै तव मैं दोष लागने की भयते त्रसित भयों डरेउं २४ ॥

शनैर्गत्वाऽथतत्पार्श्वंस्वामिंदशरथोस्म्यहम्॥अजानतामयाविद्धस्त्रातुमर्हसिमां मुने २५ इत्युक्त्वापादयोस्तस्यपतितोगद्गदाक्षरः ॥ तदामामाहसमुनिर्माभैषीर्नृपसत्तम २६ ब्रह्महत्यास्पृशेन्नत्वांवैश्योऽहंतपसिस्थितः ॥ पितरौमांप्रतीक्षेतेक्षुत्तृड्भ्यांपरिपीडितौ २७ तयोस्त्वमुदकंदेहिशीघ्रमेवाविचारयन् ॥ नचेत्त्वां भस्मसात्कुर्यात्पितामेयदिकुप्यति २८ जलंदत्वातुतौनत्वाकृतंसर्वंनिवेदय ॥ शल्यमुद्धरमेदेहात्प्राणांस्त्यक्ष्यामिपीडितः २९ इत्युक्तोमुनिनाशीघ्रम्वाणमुत्साथ्यदेहतः ॥ सजलंकलशंधृत्वागतोऽहंयत्रदम्पती ३० ॥

(अथशनैः तत्पार्श्वं गत्वा स्वामिन् अहं दशरथः अस्मि अज्ञानता मया विद्धः मुने मांत्रातुं अर्हसि) अब धीराधीरा करिकै ताके पास जाय वोल्यों हे स्वामिन् मैं दशरथहौं अनजानत भाव पशुकी भ्रमते मैंने वाण चलावा सो आपके वेधिगया ताते हे मुने आप मेरी रक्षाकरिवे योग्यहौ २५ (इति गद्गदाक्षरं उक्त्वा तस्य पादयोः पतितः तदासमुनिः मां आह नृपसत्तम माभैषीः) इस भांति गद्गद अक्षर विलाप युक्त अपुष्टाक्षर कहिकै तिनके पॉयन में गिरपरेउँ तासमयसो मुनिमोप्रति वोले कि हे नृपसत्तम राजों में उत्तम न डरासि २६ (त्वां ब्रह्महत्यान स्पृशेत्अहं वैश्यःतपसिस्थितःपितरौ क्षुत्तृड्भ्यां परिपीडितौ मांप्रतीक्षेते) हे राजन् तुमहिं ब्रह्महत्यादि न लागी काहेते हम वैश्य वर्णहैं तपस्या व्यापारमें स्थित ताते तापस वेष कियेहैं पुनः हमारे माता पिता भूँख प्यास करिकै पीडित दोऊ मेरा आगमन देखते होयँगे२७(त्वं अविचारयन् शीघ्रं एव तयोः उदकंदेहि नोचेत् यदि मे पिता कुप्यति त्वांभस्मसात् कुर्यात्) ताते हे राजन् अब तुम कछु विचार नकरौ शीघ्रही निश्चय करिजाय मेरे माता पिता दोउन को जल पियायदेउ नाहीं तौ जो मेरा पिता कोपकरी तो तुमहिं भस्म करिदेइगो ताते जललै शीघ्रही जाउ २८ (जलंदत्वा ततौ नत्वा सर्वं कृतं निवेदय मेदेहात् शल्यं उद्धर पीड़ितः प्राणांस्त्यक्ष्यामि) प्रथम जल दैकै पुनः दोऊ जोहैं तिनहिं प्रणाम करि सर्व जो

अपना कियाकर्म है ताहि नम्रता पूर्वक कहि सुनायो अरु मेरी देहते इस बाणको निकारो इसकी व्यथाते मैं प्राण त्यागताहों २६ (मुनिना इति उक्त्वा शीघ्रं देहतः बाणं उत्पाट्य अहं सजलं कलशं धृत्वायत्र दम्पती तत्र गतः) जब मुनिने ऐसा कहा तब शीघ्रही उनकी देहते बाण निकारि पुनः मैं सहित जल कलश लैकै चला जहां वै दोऊ स्त्री पुरुष रहैं तहां को गया ३० ॥

अतिवृद्धावंधदृशौक्षुत्पिपासार्दितौनिशि ॥ नायातिसलिलंगृह्यपुत्रःकिंवाऽत्रकारणम् ३१ अनन्यगतिकौवृद्धौशोच्यौतृट्परिपीडितौ ॥ आवामुपेक्षतेकिंवाभक्तिमानावयोःसुतः ३२ इतिचिंताव्याकुलौतौमत्पादन्यासजंध्वनिम् ॥ श्रुत्वाप्राहपितापुत्रकिंविलंबःकृतस्त्वया ३३ देह्यावयोःसुपानीयंपिवत्वमपिपुत्रक ॥ इत्येवंलपतोर्भीत्यासकाशमगमंशनैः ३४ पादयोःप्रणिपत्याहमाब्रुवंविनयान्वितः ॥ नाहंपुत्रस्त्वयोध्यायाराजादशरथोऽस्म्यहम् ३५ पापोऽहंमृगयासक्तोरात्रौमृगविहिंसकः ॥ जलावताराद्दूरेऽहंस्थित्वाजलगतंध्वनिम् ३६ ॥

(अंधदृशौअतिवृद्धौक्षुत्पिपासाअर्दितौनिशिसलिलंगृह्यपुत्रः नआयातिअत्रकिंवाकारणम्) अंधहैं आंखी जिनकी वृद्ध दोऊ भूख प्यास करिकै पीडित पश्चात्ताप करतेहैं कि रात्रीमें जल लैकै पुत्रन आया तौ यामें क्या कारणहै ३१ (वृद्धौतृट्परिपीड़ितौअनन्यगतिकौशोच्यौआवयोसुतःभक्तिमान्किंवाआवांउपेक्षते) एक तौ वृद्ध दोऊहैं पुनः प्यास करिकै पीड़ित अरु पुत्रकी सिवाय औरकी हमको गति नहीं ताते शोच करिबे योग्य हैं क्योंकि हमारा पुत्र भक्तिमान् कहूंहम अंधनको त्यागि तौनहीं गयाभाव देरभई तौ हमैं त्यागि कहूं चला तौ नहीं गया नहीं धर्मवंतहै न त्यागि जाई३२ (इतिचिंताव्याकुलौमत्पादन्यासजंध्वनिंतौश्रुत्वापिताप्राहपुत्रत्वयाकिंविलंबःकृतः) इसीभांति पश्चात्तापकरिं चिंतामें व्याकुलता समयमेरे पॉय भूमिपै परेते उपजी जो ध्वनिताहि दोऊ सुनिकै पिताबोला हेपुत्र तुमने क्यों जललानेमें देरकिया ३३ (आवयोःसुपानीयंदेहिपुत्रकत्वंअपिपिवइतिएवंलपतोःभीत्या शनैःसकाशंअगमम्) हम दोउनको सुन्दर पानी देहु हे पुत्र तुमहूं निश्चय करिजल पीवहु इसभांति के बचन कहिते दोऊ वृद्धताही समय हम डर करिकै धीराधीरा उनके पासगये ३४ (पादयोःप्रणिपत्यअहंविनयान्वितःअब्रुवन्अहंत्वयापुत्रःनअयोध्याराजादशरथःअस्मिअहम्) दोऊके पांयन परिकै हम विनय युक्त वचनबोले कि मैं तुम्हारा पुत्र नहींहौं अयोध्याको राजादशरथहौं मैं ३५ (मृगविहिंसकःपापःअहंमृगयाआसक्तःअहंरात्रौदूरेस्थित्वाजलावतारात्जलगतंध्वनिम्) मृगनको विशेपिवध करनेवाला मैं पापयुक्त शिकार खेलनेमें आसक्त मैं रात्रीविषे घाटतेदूरि बैठारहौं भावजलपीने हेत मृगाघाटपर आवैं तिनके मारने हेत दूरि बैठारहा रात्रिते कछु देखि परै नहीं ताही समय तुम्हारे पुत्र जल भरनेहेत जलमें पैठे घटबोरे तामें जल पैठत समय शब्दभया ३६ ॥

श्रुत्वाऽहंशब्दवेधित्वादेकंबाणमथात्यजम् ॥ हतोऽस्मीतिध्वनिंश्रुत्वाभयात्तत्राहमागतः ३७ जटाविकीर्यपतितंदृष्ट्वाऽहंमुनिदारकम् ॥ भीतोगृहीत्वातत्पादौरक्षरक्षेतिचाब्रुवम् ३८ माभैषीरितिमांप्राहब्रह्महत्याभयंनते ॥ मत्पित्रोःसलिलंदत्त्वानत्वाप्रार्थयजीवितम् ३९ इत्युक्तोमुनिनातेनह्यागतामुनिहिंसकः ॥ रक्षेतांमांदयायुक्तौयुवांहिशरणागतम् ४० इतिश्रुत्वातुदुःखार्तौविलप्यबहुशोच्यतम् ॥ पति

तोनौसुतोयत्रनयतत्राविलम्बयेन् ४१ ततोनीतौसुतोयत्रमयातौवृद्धदंपती ॥ स्पृष्ट्वासुतंतौहस्ताभ्यांबहुशोऽथविलेपतुः ४२ ॥

(श्रुत्वाअथअहंशब्दवेधित्वात्एकंबाणंअत्यजम्अस्मिहतःइतिध्वनिंश्रुत्वाभयात्तत्रअहंआगतः) जलमें ध्वनिभई ताहि सुनिकै बिचारेउँ कि गजादि पशु कोई जल पीताहै इति निश्चयकरि तब मैं शब्द वेधीरीतिते संधानि एकबाण छांड़ि दिया सो तुम्हारे पुत्रके लागिगया सो बोला कि मैं मारागया इत्यादि ध्वनि सुनिकै अपराध लागनेकी भयते तहांको मैं चलागया ३७ (जटाविकीर्यमुनिदारकंपतितंदृष्ट्वाभीतःअहंतत्पादौगृहीत्वाचरक्षरक्षइतिअब्रुवम्)जा के शीशमें जटा बिथरी हैं ऐसा मुनिबालक ताहि परादेखिकै मैं तिनके पांयपकरि पुनः मेरी रक्षाकरौ रक्षाकरौ इसभांति दीनबचन बोलेउँ ३८ (माभैषीःतेब्रह्महत्याभयंनइतिमांप्राहसलिलंमतिपत्रोःदत्त्वानत्वाजीवितंप्रार्थय) तब तुम्हारे पुत्रबोले कि नडरासि तुमको ब्रह्महत्याकी भयनहीं है इत्यादि मोप्रतिकहि पुनः बोले कि जल जो है ताहि लैजाउ हमारे माता पिताकोदैकै नमस्कारकरि अपने जीवनरक्षाहेतउनते प्रार्थनाकरेउ ३९ (इतिमुनिनाउक्तःतेनमुनिहिंसकःहिआगताशरणागतम्हिमांयुवांदयायुक्तौरक्षेतां) मेरे पिताके ढिगजाउ इत्यादि मुनिने कहा त्यहि करिकै भाव उनको पठवाहुवा मैं मुनिको वधकरने वाला हियां आयाहौं भाव निश्चयकरि उनको पठाया आयाहौं इति आपकी शरणागत जो मैंहौं ताहि आप दोऊदयावंत रक्षाकरौ ४० (इतिश्रुत्वादुःखार्तौतुबहुशोव्यतंविलप्यनौसुतःयत्रपतितःअविलंवतत्रनय) इत्यादि मेरे बचन सुनिकै अंधी अंधकिस दशाको प्राप्तभये कि एक तौ भूखे प्यासे दूसरे पुत्रके आवने में विलंबताही दुःखमें दोऊ पीड़ितरहैं पुनः पुत्रको बधसुने तब बड़े शोचते रोदनकरि बोले कि जहां हमारा पुत्रपराहै सो बिना विलंब शीघ्रही तहां पर हमको लैचलो ४१ (ततःतौवृद्धदंपतीमयानीतौयत्रसुतःतौहस्ताभ्यांसुतंस्पृष्ट्वाअथबहुशःविलेपतुः) तदनंतर दोऊ स्त्री पुरुषोंको मैं लैआया जहां उनको पुत्ररहै ते दोऊ हाथन करिकै पुत्रहि स्पर्शकरि तब बहुतसा विलापरोदन करतेभये ४२॥

हाहेतिक्रंदमानौतौपुत्रपुत्रेत्यवोचताम् ॥ जलंदेहीतिपुत्रेतिकिमर्थंनददास्यलम्४३ ततोमामूचतुःशीघ्रंचितिंरचयभूपते॥मयातदेवरचितासाचितिस्तत्रनिवेशिताः ॥ त्रयस्तत्राग्निरुत्सृष्टोदग्धास्तेत्रिदिवंययुः ४४ तत्रवृद्धःपिताआहत्वमप्येवंभविष्यसि ॥ पुत्रशोकेनमरणंप्राप्स्यसेवचनान्मम ४५ सइदानींममप्राप्तशापकालोनिवारितः ॥ इत्युक्त्वाविललापाथराजाशोकसमाकुलः ४६ हाराम पुत्रहासीतेहालक्ष्मणगुणाकर ॥ त्वद्वियोगादहंप्राप्तोमृत्युंकैकेयिसंभवम् ४७ वदन्नेवंदशरथःप्राणांस्त्यक्त्वादिवंगतः॥कौशल्याचसुमित्राचतथान्याराजयोषितः४८॥

(तौहाहाइतिक्रन्दमानौपुत्रपुत्रइतिअवोचताम् जलंदेहिइतिपुत्रअलम्किंअर्थंनददासिइति) महाराज कहत हे कौशल्ये मृतक पुत्र को देखि अन्धी अन्ध दोऊ हाय हाय ऐसा कहि बिलाप करते पुत्र पुत्र ऐसा पुकारे हे पुत्र जल देहु ऐसा कहें हे पुत्र समर्थ कौने अर्थ जल नहीं देते हौ इत्यादि कहे ४३ (ततोमांऊचतुःभूपतेशीघ्रंचितिंरचयतदामयाएवचितिः रचितातत्रत्रयःनिवेशिताः तत्रअग्निंउत्सृष्टःदग्धाःतेत्रिदिवंययुः) शोक बिलाप करि तदनन्तर अन्धी अन्ध दोऊमो प्रति बोले कि हे भूपते शीघ्रही चितारचौ इति सुनितव मैंने निश्चय करि चितारचि दिया तापर तीनिहूँको बैठाय

अग्नि लगाय दिया भस्म ह्वैके तेतीनिहूँ स्वर्गहि जातेभये ४४ (तत्रवृद्धःपिताऽऽहममवचनात्त्वंअपिएवंभविष्यसिपुत्रशोकेनमरणंप्राप्स्यसे) तवमरणकाल वृद्ध पिता बोला कि हे राजन् मेरे वचनते तुम्हारीभी निश्चय करिकै ऐसेही दशाहोइगी भावमेरी तुल्यतुमहूँ पुत्र दुःखकरिकै मृत्युको प्राप्त होउगे ४५ (सशापकालःअनिवारितःइदानींममप्राप्तः इतिउक्त्वाअथराजाशोकसंभ्राकुलः विललाप) सोई शापकाल जोकिसीको रोकानहीं रुकिसक्ताहै सोई या समयमें मोको प्राप्तभया इसीसमय प्राण जातेहैं ऐसाकहि महाराज दुःखमें व्याकुल विलाप करनेलगे ४६ (पुत्ररामहासीतेहालक्ष्मण गुणाकरहाकैकेयीसंभवम्त्वत्वियोगात्अहंमृत्युंप्राप्तः) हे पुत्र राम सबको रमावनहारे हा हे सीते सबको शीतल करणहारीहाहे लक्ष्मण सब लक्षणयुत तुम तीनिहुँ दिव्य गुणनके खानिहाभाव तुम समर्थ बनेहौ अरु तुच्छ स्त्री कैकेयी त्याहि करिकै उत्पन्न जोतुम्हारा वियोग ताहीते मैं मृत्युको प्राप्त होताहौं क्योंनहीं रक्षाकरतेहौ ४७ (एवंवदन्दशरथःप्राणांस्त्यक्त्वादिवंगतः)इसीप्रकार कहत महाराज प्राण त्यागि स्वर्गहिगये तव कौशल्यापुनः सुमित्राः पुनः ताही प्रकार अन्य औरौ यावत् महाराज की रानीरहैं ते सब ४८॥

चुक्रुशुश्चविलेपुश्चउरस्ताडनपूर्वकम् ॥ वशिष्ठःप्रययौतत्रप्रातर्मंत्रिभिरावृतः ४९ तैलद्रोण्यांदशरथंक्षिप्त्वादूतानथाब्रवीत् ॥ गच्छतत्वरितंसाश्वायुधाजिन्नगरंप्रति ५० तत्रास्तेभरतःश्रीमांच्छत्रुघ्नसहितःप्रभुः ॥ उच्यतांभरतःशीघ्रमागच्छेतिममाज्ञया ५१ अयोध्यांप्रतिराजानंकैकेयींचापिपश्यतु ॥ इत्युक्त्वा त्वरितंदूतागत्वाभरतमातुलम् ५२ युधाजितंप्रणम्योचुर्भरतंसानुजंप्रति ॥ वशिष्ठस्त्वाब्रवीद्राजन्भरतःसानुजःप्रभुः ५३ शीघ्रमागच्छतुपुरीमयोध्यामविचारयन् ॥ इत्याज्ञप्तोऽथभरतस्त्वरितोभयविक्लवः ५४॥

(उरताडनपूर्वकम्चुक्रुशुःचविलेपुःचप्रातःमंत्रिभिःआवृतःवशिष्ठस्तत्रप्रययौ)छाती पीटन सहित गुण प्रताप वर्णन करि प्राणपति इत्यादि कहि पुकारती हैं पुनः रोदन करतीहैं जव भोरभया तव सुमंत्रादि सव मंत्रिनको संगले वशिष्ठजी तहां जातेभये जहां महाराज मृतकहैं ४९ (दशरथंतैलद्रोण्यांक्षिप्त्वाअथदूतानअब्रवीत् युधाजित्नगरंप्रतितत्सअश्वात्वरितंगच्छ) दशरथजीको तनतेल नावमें भरितामें धरि तव दूतन प्रति वशिष्ठजी वोले कि युधाजितके नगरमें जहां भरतहैं तहांको सहित अश्वभाव घोडेनपर सवार ह्वै शीघ्रहीजाउ ५० (शत्रुघ्नसहितःश्रीमान्भरतःप्रभुःतत्रआस्ते ममआज्ञयाभरतःशीघ्रंआगच्छइतिउच्यतां) शत्रुहनसहित श्रीमान् राजाभरत तहां हैं सोमेरी आज्ञा करिकै भरत शीघ्रही अयोध्याको आवैं ऐसा जायकहेउ ५१ (अयोध्यांप्रतिराजानंचअपिकैकेयींपश्यतुइतिउक्तःदूतात्वरितंगत्वाभरतमातुलम्) अयोध्यामें आयकै राजादशरथहि पुनः निश्चय करि कैकेयी जोहैताहिदेखैं भाव राजाको मृतककर्म कैकेयीकी कुबुद्धि इतिदोऊ सँभारिवे योग्य भरतैहैं इत्यादि वचन जव वशिष्ठजी कहा तव दूत ऐसे वेगतेचले जो शीघ्रहीं पहुँचे तहांके राजा जो भरत के मामाहैं ५२ (युधाजितंप्रणम्यऊचुःराजन्सानुजंभरतंप्रतिवशिष्ठःतुअब्रवीत्सानुजःभरतःप्रभुः ५३ अविचारयन्अयोध्यांपुरींशीघ्रंआगच्छतुइतिआज्ञप्तःभरतःभयविह्वलःत्वरितः) युधाजित्भरतके मामा तिनहिं प्रणामकरि दूतवोले हेराजन् सहित शत्रुहनभरत प्रति यह संदेश वशिष्ठजी कहाहै कि सहित

शत्रुहन भरत प्रभु बिना बिचारकिहे अयोध्यापुरीको शीघ्रही आवैं इत्यादि वशिष्ठकी आज्ञासुनि भरत भयकरिकै अत्यंत डरतें बिकल शीघ्रही चले ५४ ॥

आययौगुरुणादिष्टःसहदूतैस्तुसानुजः ॥ राज्ञोवाराघवस्यापिदुःखंकिंचिदुपस्थितम् ५५ इतिचिंतापरोमार्गेचिन्तयन्नगरंययौ ५६ नगरंभ्रष्टलक्ष्मीकंजनसंबाधवर्जितं ॥ उत्सवैश्चपरित्यक्तंदृष्ट्वाचिन्तापरोभवत् ५७ प्रविश्यराजभवनंराजलक्ष्मीविवर्जितम् ॥ अपश्यत्कैकेयीतत्रएकामेवासनोस्थिताम् ॥ ननामशिरसापादौमातुर्भक्तिसमन्वितः ५८ आगतंभरतंदृष्ट्वाकैकेयीप्रेमसंभ्रमात् ॥ उत्थायालिंग्यरभसास्वाङ्कमारोप्यसंस्थिता ५९ मूर्ध्निवघ्रायपप्रच्छकुशलंस्वकुशलस्यसा ॥ पितामेकुशलीभ्रातामाताचशुभलक्षणा ६० ॥

(गुरुणादिष्टः दूतैः सहतु सअनुजः आययौ राज्ञः वाराघवस्य अपि किंचित् दुःखं उपस्थितम्) गुरुकी आज्ञामानि दूतन करिकै सहित पुनः सहित शत्रुहन रथपर सवारह्वै भरत चले राह में विचार करते हैं कि महाराज को वा रघुनाथजी को निश्चय करिकै कछु दुःख प्राप्तभयाहै ५५ (इति मार्गे चिन्ता परः चिन्तयन् नगरं ययौ) इसी भांति चिंतामें बूड़ेहुये चिन्तवन करते भरतअयोध्यामें पहुँचे ५६ (भ्रष्ट लक्ष्मीकं जन सम्बाधवर्जितम् च उत्सवैः परित्यक्तं नगरं दृष्ट्वा चिन्तापरः अभवत्)नष्ट ह्वैगई है शोभाजामें समूहजन बटुरे कहूँनहीं देखातेहैं पुनः जो कोई देखात सोउत्साह त्यागे उदासीन अकेला बैठाहै इति उदासीन जो नगर ताहि देखि भरतजी चिन्तापरायण भये ५७ (राजभवनं प्रविश्य राजलक्ष्मी विवर्जितम् अपश्यत् तत्र एकां एव कैकेयी आसने स्थिताम् भक्ति समन्वितः मातुः पादौ शिरसाननाम) पुनः राजमंदिर में पैठे सो राजश्री करिकै रहित शून्य देखते भये तहां राजानहीं अकेले निश्चय करि एक कैकेयी आसनपर बैठी है ताहि देखिकै भरतजी भक्ति संयुक्त माताके पांयनविषे शीश नवाय करि प्रणाम कीन्हें ५८ (भरतं आगतं दृष्ट्वा कैकेयी प्रेम संभ्रमात् उत्थाय रभसा आलिंग्य स्वअंकं आरोप्य संस्थिता) भरतहि आवत देखि कैकेयी प्रेमके संभ्रमताते उठिकै शीघ्रही उर में लगाय परमानन्द युत भेंटि पुनः अकोरा में लैकै आसन पर बैठिजाती भई ५९ (मूर्ध्नि अवघ्राय सास्वकुशलस्य कुशलं पप्रच्छ मे पिता भ्राता च शुभ लक्षणा माता कुशली) अकोरा में बैठाये भरतजीको शीश सूँघि पुनः सो कैकेयी आपनेबाप के कुलकी कुशल जोहै ताहि पूँछतीभई कि हमारे पिता तथा भाई पुनःमंगलीक लक्षण न युक्त जो हमारी माता इत्यादि यावत् परिवार सो सब कुशल क्षेमसहित है ६० ॥

दृष्ट्यात्वमद्यकुशलीमयादृष्टोऽसिपुत्रक ॥ इतिपृष्टःसभरतोमात्राचिन्ताकुलेन्द्रियः ६१ दूयमानेनमनसामातरंसमपृच्छत ॥ मातःपितामेकुत्रास्तेएकात्वमिहसंस्थिता ६२ त्वयाविनानमेतातःकदाचिद्रहसिस्थितः ॥ इदानींदृश्यतेनैवकुत्रतिष्ठतिमेवद ६३ अदृष्ट्वापितरंमेऽद्यभयंदुःखञ्चजायते ॥ अथाहकैकेयीपुत्रंकिंदुःखेनतवानघ ६४ यागतिर्धर्मशीलानांअश्वमेधादिवाजिनाम् ॥ तांगतिङ्गत

वानघपितातेपितृवत्सल ६५ तच्छ्रुत्वानिपपातोर्व्यांभरतःशोकविह्वलः ॥ हा तातक्कगतोसित्वंत्यक्त्वामांवृजिनार्णवे ६६ ॥

(पुत्रकत्वं कुशली अद्य मया दृष्ट्याद्दष्टःअसि इति मात्राप्टष्टः भरतः स चिन्ता आकुलः इन्द्रियः) कैकेयी कहत हेपुत्र तुमहिं कुशल सहित आजु मैं दृष्टि करिकै देखतहौं सोई परम आनन्द है इत्यादि प्रसन्नमन यद्यपि मातानेपूँछा तदपि नगरउदासीनदेखेते भरत सहितचिन्ता व्याकुलहैं सब इन्द्रीजाकी ६१ (मनसादूयमानेन मातरं संप्रपृच्छत मातःत्वं एकाइह संस्थिता मेपिता कुत्रास्ते) मनकरिकै सन्तापयुक्त भरत माता प्रति पूँछे कि हे मातः तुमहीं एक इहां बैठीहौ अरु हमारे पिता कहांहैं ६२ (मेमातः त्वयाविना कदाचिन्न रहसि स्थितः इदानीं एव न दृश्यते मेवदकुत्र तिष्ठति) भरत कहत हे माता हमारा पिता तुम बिना अकेला कवहूँ नहीं एकान्त स्थानमें बैठता रहा अरु या समय में निश्चय करिकै नहीं देखि परतेहैं सो मोंप्रति कहु कहां बैठे हैं ६३ (पितरं अदृष्ट्वा अद्य मे भयंच दुःखं जायते अथकैकेयी पुत्रं आह अनघ तव दुःखेन किं) किस हेत पूँछताहौं कि पिता जोहैं ताहि विनादेखे यासमय में मोंको डर पुनः दुःख उत्पन्न होताहै तव कैकेयी पुत्रप्रति बोलती भई हे अनघ निःपाप तुमको दुःख करिकै क्याहै भाव वृथाही दुःख करतेहौ ६४ (पितृव त्सल धर्मशीलानां अश्वमेधादि याजिनां यागतिः) हे पितृवत्सल माता पितापर परम प्रीति करने वाले धर्म मार्ग में आरूढ होनेवालेनको जो गति प्राप्तहोती है तथा अश्वमेध यज्ञ करनेवालेन को जो गति होतीहै (तांगतिं अद्यते पिता गतवान्) ताही गतिको आज तुम्हारा पिता गयाहै तव दुःख करनेते क्या प्रयोजनहै ६५ (तत्श्रुत्वा भरतः शोक विह्वलः उर्व्यां निपपात वृजिन अर्णवे मांत्यक्त्वा तातहा त्वं क्वगतोसि) कैकेयीके मुखते पितामरण सो सुनिकै भरत दुःखकरिकै बिकल ह्वैगये मूर्च्छित पृथ्वीपर गिरपरे पुनः बोले कि दुःखरूपसमुद्रमें मोहिंत्यागि हेतात तुमकहांगयो ६६॥

असमर्प्यैवरामायराज्ञेमांक्कगतोसिभो ॥ इतिविलपितंपुत्रंपतितंमुक्तमूर्द्धजम्६७ उत्थाप्यामृज्यनयनेकैकेयीपुत्रमब्रवीत् ॥ समाश्वसिहिभद्रंतेसर्वंसंपादितंमया६८ तामाहभरतस्तातोम्रियमाणःकिमब्रवीत् ॥तमाहकैकेयीदेवीभरतंभयवर्जिता६९ हारामरामसीतेतिलक्ष्मणेतिपुनःपुनः ॥ विलपन्नेवसुचिरंदेहंत्यक्त्वादिवंययौ७० तामाहभरतोहैंवरामःसन्निहितोनकिम्॥तदानींलक्ष्मणोवाऽपिसीतावाकुत्रतेगताः ७१ कैकेय्युवाच ॥रामस्ययौवराज्यार्थंपित्रातेसंभ्रमःकृतः ॥ तवराज्यप्रदानाय तदाऽहंविघ्नमाचरन् ७२ ॥

(राज्ञेरामायमांएवअसमर्प्यभोक्कगतोसिइतिविलापितंमुक्तमूर्द्धजम्पतितंपुत्रं) राजारामके अर्थ मोहिं निश्चयकरि बिना सौंपिगये हे पिता तुम कहांगये इस भांति विलापकरतेहुये शीश में बारछूटे भूमि में परे पुत्र जो भरत तिनहिंकैकेयी ६७ (उत्थाप्यनयनेअमृज्यकैकेयीपुत्रंअब्रवीत्तेहिभद्रंसंआश्वसि मयासर्वंसंपादितं) उठाय नेत्रोंते आंशुपोंछि कैकेयी पुत्रप्रतिबोलती भई कि तुम्हारा निश्चयकरि कल्याणहोय अपने मनको सावधान करौ मैंने तुम्हारा सबकार्य सिद्धकरि राखाहै ६८ (भरतःतां आहम्रियमाणःतातःकिंअब्रवीत्भयवर्जिताकैकेयीदेवीभरतंतंआह) तव भरतजी त्यहिकैकेयी प्रतिबोले कि मरणसमय पिता क्या कहतेभये तव भयत्यागि कैकेयीदेवी भरत प्रतिबोलती भई६९(हारामराम सीताइतिलक्ष्मणइतिपुनःपुनःसुचिरंविलपन्तएवदेहंत्यक्त्वादिवंययौ) हेपुत्र तुम्हारे पिता मरणसमय

यही कहतेरहे कि हारामराम सीता इत्यादि हालक्ष्मण इत्यादि बारम्बार पुकारत बहुतबारतक विलापकरतेही निश्चयकरिदेह त्यागि स्वर्गको गये ७० (भरतःतांआहहेअंबरामःकिंनसन्निहितःलक्ष्मणःवाअपिसीतावातेतदानींकुत्रगताः) भरतजी त्यहि कैकेयी प्रतिबोले हेमाता रघुनन्दन क्या नहीं पिताके पास बैठेरहे अरु लक्ष्मण वा निश्चयकरि जानकी वा रघुनंदनते सबतासमय में कहांगयेरहें जो हासहित उनको नामलै प्राणत्यागे सो कहु ७१ (तेपित्रागमस्यदौवराज्यार्थेसंभ्रमःकृतःतदाअहंतवराज्यप्रदानायविघ्नंआचरन्) कैकेयीबोली कि हे पुत्र तुम्हारे पिताने रामको युवराज पद देने हेत सामग्री मुहूर्तादि सब काजमें शीघ्रता किया भाव भरतनआवैंबीचही कार्यकरिलेवें इति जानिता समयमें मैं तुमको राज्यप्राप्तीहेत रामराज्यहोनेमें विघ्न परनेके आचरण किया ७२ ॥

> राज्ञादत्तंहिमेपूर्वंवरदेनवरद्वयम् ७३ याचितंतदिदानींमेतयोरेकेनतेऽखिलम् ॥
> राज्यंरामस्यचैकेनवनवासोमुनिव्रतम् ॥ततःसत्यपरोराजाराज्यंदत्वातवैवहि ७४
> रामंसंप्रेषयामासवनमेवपितातव ॥ सीताऽप्यनुगतारामंपातिव्रत्यमुपाश्रिता ७५
> सौभ्रात्रंदर्शयन्राममनुयातोऽपिलक्ष्मणः ॥ वनंगतेषुसर्वेषुराजातानेवचिन्तयन्
> ७६ प्रलपन्रामरामेतिममारनृपसत्तमः ॥इतिमातुर्वचःश्रुत्वावज्राहतइवद्रुमः ७७
> पपातभूमौनिःसंज्ञस्तंदृष्ट्वादुःखितातदा ॥ कैकेयीपुनरप्याहवत्सशोकेनकिंतव
> ७८ राज्येमहतिसंप्राप्तेदुःखस्यावसरःकृतः ॥ इतिब्रुवंतीमालोक्यमातरंप्र
> दहन्निव ७९ ॥

(राज्ञापूर्वंवरदेनवरद्वयंमेहिदत्तं) राजाने पूर्व समय प्रसन्न ह्वैके वरदान द्वैमोंको देराखे रहें ७३ (तत्इदानींमेयाचितःतयोःएकेनतेअखिलंराज्यंचएकेनरामस्यअमुनिव्रतम्वनवासःराजासत्यपरःततःतवएवहिराज्यंदत्तं) सोई वर दोऊ या समयमें मैं याचा तिन दोउनमें एक वर करिकै तुम्हारे अर्थ संपूर्ण राज्य माँगा पुनः एक वर करिकै रामको मुनिव्रत सहित वनमें वास माँगा तब राजा जो सत्य परायण ताते तुम्हारे अर्थ निश्चयकरि सब राज्य दिये ७४ (रामंतवपितावनंएवसंप्रेषयामाससीतापातिव्रत्यंउपाश्रितारामंअनुअपिगता) अरु राम जो हैं तिनहिं तुम्हारे पिता वनहि निश्चय करि पठाये सीतापाति व्रतके आश्रयण करिकै रामके पीछे निश्चयकरि चलीगईं ७५ (सौभ्रात्रंदर्शयन्लक्ष्मणःअपिरामंअनुयातःसर्वेषुवनंगतेषुतान्एवचिंतयन्राजा) उत्तमभाई को धर्म देखावतसंते लक्ष्मण भी निश्चय करिकै रामके पाछे चलेगये इस भांति तीनिहू जनेनको वनमें जातसंते तिनहीं निश्चयकरि चिंतवन करतेहुये महाराज ७६ (रामरामइतिप्रलपन्नृपसत्तमःममारइतिमातुःवचःश्रुत्वावज्राहतद्रुमःइव) राम राम इत्यादि प्रलापकरतसंते महाराज प्राणत्यागिदिये इत्यादिमाताके वचन सुनि यथावज्रको माराहुआ वृक्षगिरै.ताहीसम मूर्च्छितह्वै ७७ (भूमौपपाततंनिःसंज्ञःदृष्ट्वातदादुःखिताकैकेयीपुनःअपिआहवत्सतवशोकेनकिं) भूमिपै गिरेपरे भरत तिनहिं मूर्च्छितदेखि तब दुखित जो कैकेयी सो पुनः निश्चयकरि बोलतीभई हे वत्सतुमको दुःखकरिकै क्या प्रयोजनहै ७८ (महतिराज्येसंप्राप्तेदुःखस्यकुतःअवसरःइतिब्रुवंतींप्रदहन्निवमातरंआलोक्य) क्योंकि भारी राज्य संपूर्ण प्राप्त भयेसंते तब तुमको दुःख करनेको कहां समयहै इस भांतिके वचन कहती यथा उरको भस्म किहे देतीहै ऐसी कराल शत्रुवत्.जो माता कैकेयी ताहि देखिकै भरत सक्रोध बोले ७९ ॥

असंभाष्यासिपापेमेघोरेत्वंभर्तृघातिनि ॥ पापेत्वद्गर्भजातोऽहंपापवानस्मिसांप्र
तम् ८० अहमग्निंप्रवेक्ष्यामिविषंवाभक्षयाम्यहम्॥खड्गेनवाऽथचात्मानंहत्वा
यामियमक्षयम् ८१ भर्तृघातिनिदुष्टेत्वंकुंभीपाकंगमिष्यसि ॥ इतिनिर्भर्त्स्यकैकेई
श्रींकौशल्याभवनंययौ ८२ सापितंभरतंदृष्ट्वामुक्तकण्ठारुरोदह ॥ पादयोःपति
तंरुतस्याभरतोऽपितदारुदन् ८३ आलिंग्यभरतंसाध्वीराममातायशस्विनी ॥
कृशातिदीनवदनासाश्रुनेत्रेदमब्रवीत् ८४ पुत्रत्वयिगतेदूरमेवंसर्वमभूदिदम् ॥
उक्तंमात्राश्रुतंसर्वंत्वयातेमातृचेष्टितम् ८५ पुत्रःसभार्योवनमेवयातःसलक्ष्मणोमेर
घुरामचंद्रः ॥ चीराम्बरोबद्धजटाकलापःसंत्यज्यमांदुःखसमुद्रमग्नाम् ८६ ॥

• (भर्तृघातिनिघोरेपापेत्वंमेअसंभाष्यसिपापेत्वत्गर्भजातःअहंसांप्रतम्अस्मिपापवान्) पतिकोघात करनेवाली हेभयंकर पापमूर्ति तू मेरे सन्मुख न बार्ताकरु हेपापिनि तेरेगर्भते उत्पन्नमैं भयाहौं ताते या समयमैंभी पापवन्तहौं ८० (अहंअग्निप्रवेक्ष्यामिवाअहंविषंभक्षयामिअथवाखड्गेनचआत्मानंहत्वायमक्षयम्यामि) मैं अग्निमें पैठिजैहौं वा मैं बिषखाइहौं अथवा तरवारिसे शिरकाटिकै मरिजैहौं तूराज्य किसको देइगी ८१ (दुष्टेभर्तृघातिनित्वंकुम्भीपाकंगमिष्यसिइतिकैकेयींनिर्भर्त्स्यकौशल्याभवनंययौ) हे दुष्टे पतिको घातकरनेवाली तू कुम्भीपाक नरकहि जायगी इत्यादि कैकेयीको अनादर करि भरत कौशल्याके मंदिरको चलेगये ८२ (तंभरतंदृष्ट्वासाअपिमुक्तकंठारुरोदहतस्यापादयोःपतितःभरतःअपितदारुदन्) तिन भरतहि आवत देखिकै सो कौशल्या निश्चय करि खोलिकै कण्ठ रोदन करनेलगी तिनके पायँनमें गिरिकै भरतभी निश्चय करि ता समय रोदन करनेलगे ८३ (भरतंआलिंग्यसाध्वीयशस्विनरामामाताकृशाअतिदीनवदनासअश्रुनेत्रइदंअब्रवीत्) भरतहि हृदय में लगाय पतिव्रता यशवन्ती रामकी माता दुर्बल तन अत्यन्त दुखितमुख करिकै सहितऑंशुनेत्र इसप्रकार बचन बोली ८४ (पुत्रत्वयिदूरंएवगतेइदंसर्वंअभूत्मात्राउक्तंतेमातृचेष्टितंसर्वंत्वयाश्रुतं) हे पुत्र तुम्हारे दूरि जातसंते निश्चय करि यहसर्व उत्पातभया तुम्हारी माताने कहाहोगा तुम्हारी माताके कीन्हें यावत् कर्मते सब तुमने सुनाहोगा ८५ (मेपुत्रःरघुरामचंद्रःचीराम्बरःजटाकलापःबद्धदुःखसमुद्रमग्नाम्मांसंत्यज्यसभार्यःसलक्ष्मणःवनंएवजातः) हे पुत्र भरत मेरा जो पुत्र रघुकुल कुमुद प्रकाशक रामचंद्र मुनि बसन धारण करि जटा समूहको बाँधि तयारभये वियोग जनित दुःख रूप समुद्रमें बूडी जोमैं ताहि त्यागि जानकी लक्ष्मण सहित वनहि निश्चय करि चले गये ८६ ॥

हारामहामेरघुवंशनाथजातोऽसिमेत्वंपरतःपरात्मा ॥ तथापिदुःखंनजहातिमांवै
विधिर्बलीयानितिमेमनीषा ८७सएवंभरतोवीक्ष्यविलपंतीभृशंशुचा॥पादौगृही
त्वाप्राहेदंशृणुमातर्वचोमम ८८ कैकेय्यायत्कृतंकर्मरामराज्याभिषेचने ॥ अन्य
द्वायदियानामिसामयानोदितायदि॥पापंमेऽस्तुतदामातर्ब्रह्महत्याशतोद्भवम् ८९
हत्वावशिष्ठंखड्गेनअरुंधत्यासमान्वितम् ॥ भूयात्तत्पापमखिलममजानामियद्य
हम्॥इत्येवंशपथंकृत्वारुरोदभरतस्तदा ९० कौशल्यातमथालिंग्यपुत्रजानामि
माशुचः ॥ एतस्मिन्नंतरेश्रुत्वाभरतस्यसमागमम् ९१ ॥

(हामेरघुवंशनाथ हाराम परतः परात्मा त्वं मे जातोसि तथापि मां वैदुःखंनजहाति मे मनीषा

इति विधिःबलीयान्) हामेरे पुत्र रघुवंशनाथ भावमोंको त्यागि कहांगयो हाराम परात्पर परमात्मा तुम मेरे उरते उत्पन्न भयो भाव परब्रह्म पुत्र ह्वै प्राप्तभयो ताहूपर जोमोहिं निश्चय करि दुःखनहीं त्यागता है तौ अब मेरी बुद्धि विचारकर यही निश्चय होताहै कि विधि जो कर्म सोई बलवान्है८७ (एवंशुचापभृशं विलपंतीं वीक्ष्य सभरतः पादौ गृहीत्वा इदंप्राह मातः ममवचः शृणु) इसप्रकार शोचपूर्वक अत्यन्त रोदन करती हुई कौशल्याको देखि सो भरत पांय पकरि इसप्रकार बोले कि हे माता मेरे वचनसुनु ८८ (रामं राज्य अभिषेचने कैकेय्या यत्कर्मकृतं तत्यदि मया नोदितावायदि अन्यत् यानामि तदा मातः ब्रह्महत्या शतोद्भवम् पापंमे अस्तु) रघुनन्दन के राज्याभिषेकमें कैकेयी ने जो कर्म कियाहै सो कैकेयीको जोमैंने प्रेरणा कियाहोय वा और किसीने सिखवाहोयसोऊ जोमैं जानताहोउँ तौहेमातः ब्रह्महत्या सेकरौंकरिकै जोपाप सोईपाप मोंकोलागै८९ (अरुंधत्यासमन्वितं वशिष्ठं खड्गेन हत्वातत् अखिलं पापं ममभूयात् यदिअहं जानामि इति एवंशपथंकृत्वा तदा भरतः रुरोद) अरुन्धती करिकै सहित वशिष्ठ जो हैं तिनहिं तरवारिकरिकै मारे जो पापहोय तौन संपूर्ण पाप मोंको होंय जो मैं कुछभी हालजानताहोउँ इसप्रकार शपथकरि तब भरतजी रोदन करनेलगे ९० (अथकौशल्यातं आलिंग्य जानामि पुत्रमाशुच एतस्मिन्अन्तरे भरतस्यसमागमं श्रुत्वा) तब कौशल्या तिन भरतहि उरमें लगायबोलीं कि मैंजानतीहौं तुम कुछ नहीं जानतेहौ हेपुत्र न शोच करौ ताहीसमयके बीचमें भरतके आवने को हाल पुरवासी लोगोंने सुनिकै तब ९१ ॥

वशिष्ठोमंत्रिभिःसार्द्धंप्रययौराजमंदिरम् ॥ रुदंतम्भरतंदृष्ट्वावशिष्ठःप्राहसादरम् ९२ वृद्धोराजादशरथोज्ञानीसत्यपराक्रमः ॥ भुक्त्वामर्त्यसुखंसर्वमिष्ट्वाविपुलदक्षिणैः ९३ अश्वमेधादिभिर्यज्ञैर्लब्ध्वारामंसुतंहरिम् ॥ अंतेजगामत्रिदिवंदेवेन्द्रार्द्धासनंप्रभुः ९४ तंशोचसिवृथैवत्वमशोच्यंमोक्षभाजनम् ॥ आत्मानित्योऽव्ययःशुद्धोजन्मनाशादिवर्जितः ९५ शरीरंजडमत्यर्थमपवित्रंविनश्वरम् ॥ विचार्यमाणेशोकस्यनावकाशःकथंचन९६पितावातनयोवापियदिमृत्युवशंगतः ॥ मूढास्तमनुशोचंतिस्वात्मताडनपूर्वकम् ९७ ॥

(मंत्रिभिःसार्द्धं वशिष्ठः राजमंदिरं प्रययौ भरतं रुदंतंदृष्ट्वा वशिष्ठः सादरं प्राह)सुमंत्रादि मंत्रिन करिकै सहित वशिष्ठजी राजमंदिरहि जातेभये तहां भरतहि रोदनकरते देखि वशिष्ठजी सहित आदर बोलते भये ९२ (राजा दशरथः वृद्धः ज्ञानी सत्य पराक्रमः मर्त्ये सुखंसर्वं भुक्त्वा विपुलदक्षिणैः इष्ट्वा) हे भरत राजा दशरथ वृद्ध रहैं ताते लोक में कछु हानि नहीं पुनः ज्ञानी रहे ताते परलोक में कछु हानि नहीं पुनः सत्य पराक्रम रहा ताते मृत्युलोक में यावत् सुख हैं ते सब भोग कीन्हें पुनः बहु दक्षिणाकरके अभीष्ट पूर्ण करि लिये ९३ (अश्वमेधादिभिः यज्ञैःहरिंरामंसुतंलब्ध्वा अन्ते प्रभुःत्रिदिवंजगामदेवेंद्रस्यअर्द्धआसनं) अश्वमेधादिकन करिकै हरि जो राम तिनहिं पुत्र करि पाये इत्यादि सब वाञ्छा पूर्ण करि अन्त समय स्वर्ग लोकहि गये तहां राजा देवराज इन्द्र के आधे सिंहासन पर आसन पाये ९४ (मोक्षभाजनम् अशोच्यम् तंत्वंवृथाएव शोचसि आत्माजन्मनाशादिवर्जितः नित्यःअव्ययः शुद्धः) मोक्ष के पात्र पुनः नहीं है जो शोचवे योग्य ऐसे जो महाराज दशरथ तिनहिं तुम वृथाही निश्चय करि शोच करते हो अरु आत्मा तौ जन्म मरणादि रहित नित्य एक रस अखण्ड शुद्ध निर्विकार है ९५ (शरीरं जडं विनश्वरं अत्यर्थं अपवित्रं विचार्यमाणेकथंचन शोक

स्यभवकाशःन) शरीर जड़ है बिना आत्माकी प्रकाश देह में चैतन्यता नहीं है विशेषिनश्वर भाव निश्चय एक दिन नाश ह्वै जाइगी पुनः अत्यन्त अपवित्र भाव रोम त्वचा हाड़ मांस रक्त बिष्ठा मूत्रादि अपावन वस्तु भरा इत्यादि बिचार किहे ते किसी भांति दुःख करने को अवकाश ठौर नहीं हैं ६६ (पिता वात्तनयः अपिवायदि मृत्युवशंगतः तंमूढ़ः स्वआत्मताड़न पूर्वकम् अनुशोचन्ति) पिता अथवा पुत्र निश्चय करि वा कोऊ देह सम्बन्धी होइ जो मृत्युवश गया भाव, मरि गया ताहि अज्ञानी अपनी आत्मा को ताड़न पूर्वक भाव शिर छाती पीटनादि दण्ड देत सन्ते शोच करते हैं भाव ज्ञानी नहीं शोचते हैं ९७ ॥

निःसारेखलुसंसारेवियोगोज्ञानिनांयदा॥भवेद्वैराग्यहेतुःसशांतिंसौख्यंतनोतिच ९८ जन्मवान्यदिलोकेस्मिन्तर्हितंमृत्युरन्वगात् ॥ तस्मादपरिहार्योऽयंमृत्युर्जन्मवतांसदा९९ स्वकर्मवशतःसर्वजंतूनांप्रभवाप्ययौ ॥ विजानन्नप्यअविद्वान्यः कथंशोचतिबांधवान्१००ब्रह्माण्डकोटयोनष्टाःसृष्टयोबहुशोगताः॥ शुष्यंतिसागराःसर्वेकैवास्थाक्षणजीविते १०१ चलपत्रांतलग्नाम्बुबिंदुवत्क्षणभंगुरम् ॥ आयुस्त्यजत्यवेलायांकस्तत्रप्रत्ययस्तव १०२ देहीप्राक्तनदेहोत्थकर्मणादेहवान्पुनः ॥ तद्देहोत्थेनचपुनरेवंदेहःसदात्मनः १०३ ॥

(खलुनिःसारेसंसारेज्ञानिनांयदावियोगःसःवैराग्यहेतुःभवेत्शांतिंचसौख्यंतनोति) निश्चयकरि असार संसारविषे ज्ञानी पुरुषनको जब किसी प्रियजनको वियोग होताहै सोई बैराग्य उपजनेको कारण ह्वै जाताहै भाव विनात्यागही त्याग ह्वै जाताहै अरु शांति पुनः सुखको उत्पन्न करत भाव वियोग दुःख विषमता हरिचित्त शांतकरत असंगते सुखीरहत ९८ (अस्मिन्लोकेयदिजन्मवान्तर्हि तंमृत्युःअनुअगात्तस्मात्जन्मवतांअयंमृत्युःसदाअपरिहार्यः) इसमृत्युलोकमें जब जीव जन्म धरता है तब ते ताकी मृत्यु वाके पाछेही फिरा करती है तिस कारणते जन्म धारिणको यह मृत्यु अपरिहार्यभाव किसीके रोकने योग्य नहीं है ९९ (जंतूनांस्वकर्मवशतः प्रभवअपिअयौविजानन्यःअपिअविद्वान्बांधवान्कथंशोचति) देहधारी मनुष्योंको आपने कर्मनके वशतेलोकमें उत्पन्नहोना निश्चय करि मरिजाना होता है यह लोक प्रसिद्ध विशेषि करि सब जानते हैं तौ जो पुरुष निश्चय करि अविद्वान् नहीं तत्त्व ज्ञाता हैं तबहूं पिता बन्धु आदि के मरे कैसे शोच करैं १०० (कोटयःब्रह्माण्डानष्टाः बहुशःसृष्टयः गताः सर्वेसागराः शुष्यंतिक्षणजीवेकैवास्था) जब करोरिन ब्रह्माण्ड प्रलयते नाश ह्वै गये तथा बहुत प्रकार की सृष्टि भई बीति गई तथा सब समुद्र उत्पन्न भये भरे रहे पुनः सोखि जायँगे इत्यादि दीर्घायु तौ रहत ही नहीं तब मनुष्यदेह क्षणें में जीवन नाश होने योग्य ताको किसकी समान जीवन को विश्वास कियाजाय १०१ (चलपत्रांतलग्नः अम्बुबिन्दुवत् आयुः क्षण भंगुरम् अवेलायांत्यजतितत्रतवकः प्रत्ययः) पीपर के पत्ता में नीचे जो सूक्ष्म फुनगी में लगाहुवा जल बुन्द ताके गिरते बार नहीं ताही तुल्य मनुष्य की आयुः क्षणभंगी जो बिना वृद्धान्त काल आये बाल युवादि अवस्था में बीचही प्राण देह को त्यागि देते हैं तामें भरत जी तुमको किसकी प्रतीति है १०२ (देहीप्राक्तनदेहोत्थकर्मणापुनः देहवान् चतत्देहोत्थेनपुनः देहः एवंसदात्मनः) देह धरनहार देही जो जीव सो पूर्व देहनसों उत्पन्न जो कर्म तिन करिकै पुनः देह धरता है तिस देहते

उत्पन्न कर्मन करि पुनः देह धरत इसी भांति जब तक देहै में आत्म बुद्धी बनी है तबतक कर्मबश आत्म सदा देहधारी बना है १०३ ॥

यथात्यजतिवैजीर्णंबासोगृह्णातिनूतनम् ॥ तथाजीर्णंपरित्यज्यदेहीदेहंपुनर्नवम् १०४ भजत्येवसदातत्रशोकस्यावसरःकुतः ॥ आत्मानम्रियतेजातुजायतेनचवर्द्धते १०५ षड्भावरहितोऽनन्तःसत्यप्रज्ञानविग्रहः ॥ आनन्दरूपोबुद्ध्यादिसाक्षीलयविवर्जितः १०६ एकएवपरोह्यात्माह्यद्वितीयःसमस्थितः ॥ इत्यात्मानंदृढंज्ञात्वात्यक्त्वाशोकंकुरुक्रियाम् १०७ तैलद्रोण्याःपितुर्देहमुद्धृत्यसचिवैस्सह ॥ कृत्यंकुरुयथान्यायमस्माभिःकुलनंदन १०८ इतिसम्बोधितःसाक्षाद्गुरुणाभरतस्तदा ॥ विसृज्याज्ञानजंशोकंचक्रेसविधिवत्क्रियाम् १०९ ॥

(यथाजीर्णंबासःवैत्यजतिनूतनंगृह्णाति तथादेहीजीर्णंपरित्यज्यनवंदेहंपुनः) यथामनुष्यपुराना बसन निश्चय करि त्याग नवा पहिरताहै तैसेही जीवात्मा पुरानी देह को त्याग करि नई देह पुनः धरता है १०४ (सदाभजति एवतत्रकुतः शोकस्यअवसरः आत्मानजायतेचनवर्द्धते नाम्रियतेजातु) जो देह को सदा सेवन करता है निश्चय करि जीवन मरण हुवै करता है तिस देह के मरने में कहा दुःख को अवसर है भाव दुःख को समय नहीं है क्योंकि जो आत्मा है सो तौ न उत्पन्न होय न वृद्धहोय न मरिजाय १०५ (षड्भाव रहितः) जन्म वृद्ध पुष्ट क्षीन कामादि विकार मरण इत्यादि षड्भाव जामें नहीं है (अनन्तः सत्यः प्रज्ञान विग्रहः) जाको अन्त नहीं सत्य पदार्थ है पुष्ट ज्ञानमय स्वरूप भाव इंद्री विषय रहित (लयविवर्जितः बुद्ध्यादि साक्षी आनन्द रूपः) नाशरहित बुद्धि चित्त मन अहंकारादि अन्तःकरण को साक्षात् देखनेवाला अखंड आनन्दरूप आत्माहै १०६ (एकएवहि परः हिअद्वितियः आत्मा समस्थितः इति आत्मानं दृढंज्ञात्वा शोकं त्यक्त्वा क्रियांकुरु) एकही निश्चयकरिहै निश्चयकरि प्रकृतितेपरे निश्चय करि अद्वितीय आत्मा एकसम सब भूतमात्र में स्थित है इस भांति आत्मा जोहै ताहि दृढजानि देहभावको जो दुःखहै ताहि त्यागि महाराज को परलोक बनिबेहेत मृतक क्रिया करौ १०७ (कुलनंदनअस्माभिस्सचिवैःसहतैलद्रोण्याःपितुःदेहंउद्धृत्ययथान्यायंकृत्यंकुरु) हे रघुकुलनंदनभरत हमलोग अरु मंत्रिनकरिकै सहित तेलभरी नावते पिताकी देह निकारि जैसी बेदकी आज्ञाहै ताहीरीति ते दाहादि क्रियाकरौ १०८ (इति साक्षात् गुरुणा बोधितः तदा भरतः अज्ञानजं शोकं विसृज्य सविधिवत् क्रियां चक्रे) इसभांति साक्षात् गुरु बशिष्ठ ने बोधकराया तब भरत अज्ञानते उत्पन्न जो दुःखरहै ताहि त्यागि सावधान ह्वै जैसे वेदकी आज्ञाते उचितरहै ताही विधि सहित महाराज की मृतकक्रिया करतेभये १०९ ॥

गुरुणोक्तप्रकारेणआहिताग्नेर्यथाविधिः॥संस्कृत्यसपितुर्देहंविधिदृष्टेनकर्म्मणा ११०॥

(गुरुणा उक्त प्रकारेण यथा आहिताग्नेः विधिः बिधि दृष्टेन कर्मणा सपितुः देहं संस्कृत्य) गुरु वशिष्ठ ने जो कहा ताहीप्रकार करिकै जाभांति मृतक अग्निदाह की बिधिहै सो जैसी वेदकी आज्ञा है ताही रीति सब कर्म करिकै सो भरतजी पिताकी देहको सब संस्कार कीन्हें अर्थात् उसी मृतक स्थानपर अन्न बस्त्र गोधनादि युत एक पिंडदान कीन्हें शवनाम वाक्ययुक्त तेहिते गृहमें वास्तुदेवता तृप्तभये तब बिचित्र विमान पर स्थितकरि द्वारपर आय पूर्ववत् एक पिण्ड दान कीन्हें त्यहिकरिकै

द्वारस्थ देवता तृप्तभये पुनः पुरनांघि रामघाटपर पूर्ववत् एक पिण्डदानकीन्हें ताते देवयोनि भूतादि तृप्तभयेपुनः दुइकोस जाइ तहां पूर्ववत् एकपिण्डदानकीन्हें ताते पिशाच यक्ष राक्षस दिशिवासी तृप्त भये पुनः सरयूतट बिल्वहरि घाटपर गये तहां एक पिण्डदान करि प्रेतत्वउपजाये पुनः मृतक तन क्षौर कराय सरयू में स्नानकराय केशरि कर्पूर अगर चन्दन सघृत तनमें लेपकरि उत्तमवसन वेष्ठित करि पुनः आम्र चंदन अगर तुलसी इत्यादि काष्ठको संचय करि अदग्धभूमि शोधि तापै चितारोपि तापै मृतकतन स्थापित करि ताके समीप भूमिलीपि वेदीवनाय अग्निजराय पुष्पाक्षतादिके क्रव्याद देव की पूजनकरि घृतसे हवन करि एक गऊदान करि तब चितामें अग्नि लगाये जब शरीर अर्द्ध दग्धभया तब घृतकी समूह आहुती दिये सब दग्धभये पर संचयन क्रिया भाव अस्थि भस्म बटोरि दिये तब दाह दुःख निवारण हेत एक पिण्डदान कीन्हें पुनः भरत स्नान करि तिलांजलि दीन्हें पुनः चिताभस्म पर दुग्धनाये अरु सरयू में प्रवाहि धामहिआये पुनः जलांजलियुत एक पिंडदान प्रतिदिन दशदिनतक कीन्हें यथा गरुड़पुराणे प्रेतखंडे षोडशे अध्याये एक विंश श्लोकात् गरुड़प्रति भगवानुवाच मृतस्योत्क्रांतिसमयात् षट्पिण्डान्क्रमशोददेत् । मृतस्थानेतथाद्वारे चत्वरेताक्ष्र्य कारणात् ॥ विश्रामेकाष्ठचयने तथासंचयनेचषट् । शृणुतत्कारणंताक्ष्र्य षट्पिण्डान्परिकल्पते ॥ मृत स्थानेशवोनामतेननाम्नाप्रदीयते । तेनदत्तेनतृप्यंतिगृहेवास्त्वधिदेवताः ॥ द्वारेतुपिण्डंदेयंचपान्थ मित्यविधायतु । तेनदत्तेनपीडंतिद्वारस्थागृहदेवताः ॥ चत्वरेखेचरोनामतमुद्दिश्यप्रदापयत् । नचो पघातंकुर्वन्तिभूताद्यादेवयोनयः ॥ विश्रामेभूतसंज्ञोऽयंतेनतत्रप्रदापयेत् । पिशाचाराक्षसायक्षायेचान्ये दिशिवासिनः ॥ तस्यहोतव्यदेहस्यनैवायोग्यत्वकारकाः । चितापिण्डप्रभृतितःप्रेतत्वमुपजायते ॥ चितायांसाधकंनामवदन्तेकेखगेश्वर । केचित्तंप्रेतमेवाहुर्यथाकल्पविदोबुधैः ॥ तदादितत्रतत्रापि प्रेतना म्नाप्रदीयते । इत्येवंपंचभिःपिण्डैः शवस्याहुतियोग्यता ॥ अन्यथाचोपघातायपूर्वोक्तास्तेभवन्तिहि । संमृज्यचोपलिप्याथ उल्लिख्योद्धृत्यवेदिकाम् ॥ अभ्युक्ष्योपसमाधाय वह्निंतत्रविधानतः । पुष्पाक्ष तैश्चसम्पूज्य देवंक्रव्यादसंज्ञकम् ॥ त्वंभूतकृज्जगद्योनेत्वंलोकपरिपालकः । उपसंहारकस्तस्मादेनं स्वर्गंमृतंनय ॥ इतिक्रव्यादमभ्यर्च्य एवंतस्यसुखंभवेत् । अर्द्धदग्धेतथादेहेदद्यादाज्याहुतिंततः ॥ दग्ध स्यानंतरंतत्र कृत्वासंचयनक्रियाम् । प्रेतपिण्डंप्रदद्याच्चदाहार्तिशमनंखग ॥ तावद्भूताःप्रतीक्षन्तेतंप्रेत वान्धवार्थिनम् । दहनानन्तरंकार्य्यंपुत्रैःस्नानंसचैलकम् ॥ तिलोदकंततोदद्यान्नामगोत्रेणतिष्ठतु । केचिद्दुग्धेनसिंचंतिचितास्थानंखगेश्वर ॥ दुग्धेचमृण्मयेपात्रेतोयंदद्याद्दिनत्रयम् । सूर्येचास्तंगतेताक्ष्र्य वलभ्यांचत्वरेऽपिवा ॥ वद्ध.संमूढहृदयोदेहमिच्छन्कृतानुग । श्मशानंचत्वरंगेहंवीक्षन्याम्यःसनीयते ॥ गर्तेपिण्डादशाहंचदातव्याश्चदिनेदिने । तावद्वृद्धिश्चकर्तव्यायावत्पिण्डदशाहिकम् ११० ॥

एकादशेऽहनिप्राप्तेब्राह्मणान्वेदपारगान् ॥ भोजयामासविधिवच्छतशोऽथसहस्र शः १११ उद्दिश्यपितरंतत्रब्राह्मणेभ्योधनंबहु ॥ ददौगवांसहस्राणिग्रामान्रत्नाम्वराणिच ११२ ॥

(एकादशे अहनिप्राप्तेशतशः अथसहस्रशः वेदपारगान् ब्राह्मणान् विधिवत् भोजयामास) गेरहों दिन प्राप्त भये सन्ते सैकरन अथवा हजारन वेद पारगामी समग्र वेद पढ़े हुये आपने धर्म कर्मपर तत्पर जो ब्राह्मण तिनहिं विधिवत् भाव नवीन भूषण वसन पहिराय नवीन पात्र दै घृत शर्करादि युक्त रचित उत्तम अन्न भोजन कराये १११ (तत्रपितरंउद्दिश्यसहस्राणि गवांग्रामान् रत्नान् अम्बरा-

णिच बहुधनं ब्राह्मणेभ्योददौ) तहां पिता के अर्थ हजारन गाईं तथा ग्राम मणी वसन बहुत सोनादि धन बाह्मणों के अर्थ देते भये यद्यपि बिप्र को गेरहें दिन क्षत्री बरहें वैश्य पन्द्रहें शूद्र मास में श्राद्ध चाही तथापि गेरहें दिन सामान्य चारिहू वर्ण को उचित है काहे ते दश दिन में दशौ अंग पूर्ण ह्वै भुखाता है गेरहें बरहें दिन भोजन करत तेरहें दिन यमपुर को पथ गहत इन समयमें दान वाको सहायकहोत यथा गरुडपुराणेएकादशाहेदातव्यं तेनशुद्धोद्विजोत्तमः। क्षत्रियोद्वादशाहेतु वैश्यः पञ्चदशेतथा॥ शुद्धिःशूद्रस्यमासेन मृतकेजातसूतके। एकादशाहेयच्छ्राद्धं तत्सामान्यमुदाहृतम्॥ चतुर्णामेकवर्णानां शुद्ध्यर्थंस्नानमुच्यते। एकादशद्वादशाहे प्रेतोभुंक्ते दिनद्वयम्॥ दीपमन्नंजलंवस्त्रंयत् किंचिद्वस्तुदीयते। प्रेतशब्देनतद्दयंमृतस्यानंददायकम्॥ त्रयोदशेऽह्निसप्रेतोनीयते चमहापथे। क्षुत्पिपासार्हितोनित्यंप्रेतोमार्गेप्रयातिहि ११२॥

अवसत्स्वगृहेतत्ररामामेवानुचिंतयन्॥ वशिष्ठेनसहभ्रातामंत्रिभिःपरिवारितः ११३ रामेऽरण्यंप्रयातेसहजनकसुतालक्ष्मणाभ्यांसुघोरं मातामेराक्षसीवप्रदहतिहृदयंदर्शनादेवसद्यः॥गच्छाम्यारण्यमद्यस्थिरमतिमखिलंदूरतोऽपास्यराज्यं रामंसीतासमेतंस्मितरुचिरमुखंनित्यमेवानुसेव्यम् ११४॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसम्वादेअयोध्याकाण्डेसप्तमस्सर्गः ७॥

(मंत्रिभिः परिवारितःवशिष्ठेनसहभ्राताराममेवअनुचिन्तयन्स्वगृहेअवसत्)सुमंत्रादि मंत्रिनसहित आपन सब परिवार वशिष्ठादि मुनिन सहित अपने छोटेभाई शत्रुहन सहित भरतजी राम जो हैं तिनहिं चिन्तवन करत संते अपने मन्दिर में वासकरते भये ११३ (सहजनकसुत लक्ष्मणाभ्यांरामेसुघोरंअरण्यंप्रयाते) जनकसुता लक्ष्मण करिकै सहित रघुनन्दन घोरवनहिं जातसंते (राक्षसीइवमेमातादर्शनात्एवसद्यः हृदयंप्रदहति) राक्षसी तुल्य हमारी माता अपने दर्शनते निश्चयकरि तुरतही मेरे हृदयको प्रकर्षकरि दाहकरती है (राज्यंअखिलंदूरतःअपास्यअद्यअरण्यंगच्छामि) राज्य संपूर्ण दूरहीते त्यागकरि इसी समयवनहिं जाउँगो (स्मितरुचिरसुखंरामंसीतासमेतंस्थिरमतिंनित्यं एवअनुसेव्यं) मुसुकानियुत सुन्दर मुखहै जिनको ऐसे रघुनन्दन जानकी समेत तिनहिं स्थिरबुद्धि करि नित्यही निश्चयकरि सेवनकरिहौं अर्थात् गिरिजा प्रति शिवजी कहत कि घरमें बैठे भरत क्या चिंतवन करते हैं कि मैं तो मन बचन कर्मते सेवक अरु रघुनंदन सुस्वामी परम सुकुमार तिनको मेरी राज्यहेत कैकेयीने तहां पठावा जहां व्याघ्र सिंह राक्षस रहतेहैं घाम जाड़ बयारि कांटा कंकरादि दुसहदुःख इति जानकी लक्ष्मण करिकै सहित रघुनन्दन घोरवनहिं जातसंते सूचितहोताहै कि रघुनन्दनते विमुखता राक्षसोंको कामहै इति राक्षसी तुल्य हमारी माता आंखितर परतही निश्चयकरिमेरे उरमें आगिसी लागि जाती है ताहि शीतलकरिवेहेत संपूर्ण राज्य दूरिहीते त्यागि इसी समय वनहिं स्वामीकी शरणजाउँगो तहां मुसकानि युत सुन्दर सदाप्रसन्न मुखहै जिनको ऐसे रघुनन्दन जानकी समेत तिनहिं मैं आपनी बुद्धि स्थिरकरि निश्चयकरि नित्यही सेवनकरिहौं ११४॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभशरणागतबैजनाथविरचितेअध्यात्मभूषणेअयोध्याकाण्डेभरतपुरआगमपितृक्रियकृतवर्णनोनामसप्तमःप्रकाशः॥ ७॥

महादेवउवाच ॥ वशिष्ठोमुनिभिःसार्द्धंमंत्रिभिःपरिवारितः ॥ राज्ञःसभांदेवसभासन्निभामविशद्विभुः १ तत्रासनेसमासीनश्चतुर्मुखइवापरः ॥ आनीयभरतंतत्रउपवेश्यसहानुजम् २ अब्रवीद्वचनंदेशकालोचितमरिंदमम् ॥ वत्सराज्येऽभिषेक्ष्यामस्त्वामद्यपितृशासनात् ३ कैकेय्यायाचितंराज्यंत्वदर्थेपुरुषर्षभ ॥ सत्यसंधोदशरथःप्रतिज्ञायददौकिल ४ ॥

सवैया । ऋषि आय सुराज्य सुत्यागि चले भरताय मिलो गुहशंक धरे । प्रभु वास बिलोकि सशोक चले ऋषि भेटि प्रयाग सुवास करे ॥ उठि भोर चले बन पूँछत सो प्रभु आश्रम देखि अनन्द भरे । पद बन्दत बैज सुनाथ सदा सिय सानुज राम बसौ हियरे ॥ (मंत्रिभिः परिवारितः मुनिभिः सार्द्धंविभुर्वशिष्ठः देवसभासन्निभांराज्ञः सभांअविशत्) सुमंत्रादि मन्त्रिन करिकै सहित परिवार के रघुवंशी लोग तथा बामदेवादि मुनिन करिकै सहित समर्थ जो वशिष्ठ जी इत्यादि सब आय देवसभा की तुल्य प्रकाशमान जो महाराज की सभा है तामें प्रवेशभये अर्थात् शिवजी कहत हे गिरिजा दशरथ जी की क्रिया भये पीछे भरत को राज्याभिषेक करिवे हेत बैशाख शुक्ल पञ्चमी मृगशिरा चन्द्र बार इति शुभ मुहूर्त्त शोधि सब मंत्री परिवार के लोग मुनिनसहित बशिष्ठजी राजसभा में आये १ (अपरःचतुर्मुखःइवतत्रआसनेसंमासीनःसहअनुजंभरतंआनीयतत्रउपवेश्य) यथा दूसरेब्रह्माहैं ताही सम बशिष्ठ मुनि तहा आसन पर बैठे तब सहित शत्रुहन जो भरत हैं तिनहिं बोलाय ताही समाज में बशिष्ठ जी आपने समीप बैठारे २ (देशकालउचितंवचनं अरिन्दमम्अब्रवीत् वत्सपितृशासनात् अद्यत्वांराजेअभिषेक्ष्यामः) देश अवध मण्डल बिना राजा है काल आजु अभिषेक योग्य उत्तम दिन है यहि समय में जैसा उचित है तैसा वचन अरिन्दम शत्रुनाशन जो भरत तिन प्रति बशिष्ठ जी बोले हे वत्स पिता की आज्ञा ते आजु तुमहिं अयोध्या की राज्य विषे अभिषेक युक्त करेंगे ३ (पुरुषर्षभत्वत्अर्थे कैकेय्याराज्यंयाचते सत्यसंधः दशरथः किलप्रतिज्ञायददौ) सब पुरुषन में उत्तम इति हे पुरुषर्षभ भरत तुम्हारे अर्थ कैकेयी ने महाराज ते राज्य की याचना किया है भाव पूर्व बरदान द्वारा तुम्हारे हेतु राज्य मांगा अरु सत्यसन्ध अर्थात् सत्य प्रतिज्ञा को धारण करनहारे जो राजादशरथ तिन निश्चय प्रतिज्ञाकरि भाव रघुनन्दनकी शपथकरिकै बरदान देतेभये सो अंगीकार करौ ४ ॥

अभिषेकोभवत्वद्यमुनिभिर्मंत्रपूर्वकम्॥तच्छ्रुत्वाभरतोऽप्याहममराज्येनकिंमुने५ रामोराजाधिराजश्चवयंतस्यैवकिंकराः ॥ श्वःप्रभातेगमिष्यामोराममानेतुमंजसा ६ अहंयूयंमातरश्चकैकेयींराक्षसींविना ७ हनिष्याम्यधुनैवाहंकैकेयींमातृगर्त्रिनीम् ॥ किन्तुमांनोरघुश्रेष्ठःस्त्रीहंतारंसहिष्यते ॥ तच्छ्रीभूतेगमिष्यामिपादचारेणदण्डकान् ८ शत्रुघ्नसहितस्तूर्णंयूयमायातवानवा ॥ रामोयथावनेयातस्तथाऽहंवल्कलांवरः ९ फलमूलकृताहारःशत्रुघ्नसहितोमुने ॥ भूमिशायीजटाधारी यावद्रामोनिवर्त्तते १० ॥

(मुनिभिः मंत्रपूर्वकम् अद्यअभिषेकः भवतुतत्श्रुत्वा अपिभरतः आह मुनेममराज्येनकिं) बशिष्ठ बोले हे भरत मुनिन करिकै मंत्र पूर्वक आजु तुम्हारा राज्याभिषेक होय भाव सब व्यापार करनेकी आज्ञा देउ इति बशिष्ठ के वचन सो सुनिकै निश्चय करिकै भरत बोले कि हे मुने मोको राज्य करि-

के क्या प्रयोजन है भाव सेवक राज्य के अधिकारी नहीं हैं ५ (राजाधिराजःरामःचतस्यएवकिंकराः वयंरामंआनेतुंअंजसाइवः प्रभातेगमिष्यामः) राजाधिराज श्री रघुनाथजी हैं पुनः तिनको निश्चय करिकै सेवक हम सब भाई हैं ताते राम जो हैं तिनहिं आनिबे हेतु शीघ्रता ते काल्हि प्रात होतही समय हम चित्र कूटहि जायँगे ६ (राक्षसींकैकेयीं विनाअहंयूयंचमातरः) एकराक्षसी कैकयी वराय भाव यह न जाइगी अरु हम तुम सब पुनः कौशल्यादि माता सब इत्यादि सब चित्रकूट को चलैंगे ७ (मातृगंधिनीं कैकेयीं अधुनाएवअहंहनिष्यामि किन्तुस्त्रीहंतारं मांरघुश्रेष्ठः न सहिष्यते ततःवः भूतेपादचारेणदंडकान् गमिष्यामि) कैकेयी की माता भी पति के प्राणघातक हठ किया है सोई वासना इसमें भी है इति मातृगंधिनी कैकेयी जो है ताहि इसी समय निश्चय करि मैं मारि डारता भाव याके मारिडारे मोको लोक कलङ्क न देत परन्तु स्त्री को मारनेवाला जो मैं होउँ ताहि रघुवंशनाथ न सहि सकैंगे ताते भोर होतहीं पांयन करिकै दण्डक वन जाइहौं भाव स्त्री पुनः माताघातक जानि धर्मात्मा रघुनन्दन मेरा मुखै न देखैंगे ताते राजश्री त्यागि जैहौं ८ (तूर्णंशत्रुघ्नसहितःयूयंआयातु वानवायथारामः वनेयातः तथा अहंवल्कलांबरः) शीघ्रहीं शत्रुहन सहित मैं तौ जैहौं अरु आप लोग चलौ अथवा न चलौ अरु हम निश्चय करि जायँगे कौन भांति जिसप्रकार रघुनाथ जी वनमें गये ताही प्रकार मैं भी वल्कल वसन धारण करिहौं ९ (शत्रुघ्नसहितः फलमूलआहारः कृतभूमिशायी जटाधारी मुने यावत्रामःनिवर्त्तते) शत्रुहन समेत फल मूल अहार करत भूमिमें शयन जटा धारण किहे यह रीति कबतक हे मुनि जब तक रघुनाथ जी न लौटि आइहैं तबतक यही नेम है १० ॥

इतिनिश्चित्यभरतस्तूष्णीमेवावतस्थिवान् ॥ साधुसाध्वितितंसर्वेप्रशशंसुर्मुदान्विताः ११ ततःप्रभातेभरतंगच्छंतंसर्वसैनिकाः ॥ अनुजग्मुःसुमंत्रेणनोदिताः साश्वकुंजराः १२ कौशल्याद्याराजदारावशिष्ठप्रमुखाद्विजाः ॥ छादयंतोभुवंसर्वेपृष्ठतःपार्श्वतोग्रतः १३ शृंगवेरपुरंगत्वागंगाकूलेसमंततः ॥ उवासमहतीसेनाशत्रुघ्नपरिचोदिता १४ आगतंभरतंश्रुत्वागुहःशंकितमानसः ॥ महत्या सेनयासार्द्धमागतोभरतःकिल १५ पापंकर्तुंनवायातिरामस्याविदितात्मनः ॥ ज्ञात्वातद्धृदयंज्ञेयंयदिशुद्धस्तारिष्यति १६ ॥

(इतिभरतः निश्चित्यएवतूष्णीं अवतस्थिवान्सर्वेमुदान्विताःतंसाधुसाधुइतिप्रशशंसुः) इसभांति भरत निश्चयकरिकै बात कहि चुपाइकै बैठतभये सो सुनि वशिष्ठादि सब सभाजन आनन्द युक्त तिन भरतहि साधुहौ साधुहौ इत्यादि प्रशंसाकीन्हे ११ (प्रभातेभरतंगच्छंतं ततःसुमंत्रेणनोदिताः सअश्वकुंजराःसर्वसैनिकाःअनुजग्मुः) प्रात भये जब भरत चले तदनन्तर सुमंत्रने आज्ञा दिया ताते सहित घोड़ा हाथी रथादि सब सेना पीछे पीछे चलती भई १२ (राजदारा कौशल्या आद्या वशिष्ठ प्रमुखा द्विजाः सर्वेभुवं छादयंतः पृष्ठतः पार्श्वतः अग्रतः) महाराज की यावत रानी कौशल्या आदि वशिष्ठहैं मुखिया जिनमें ऐसे सब ब्राह्मण इत्यादि सब पृथ्वी को आच्छादन किये कोऊ पाछे कोऊ भरत के दोऊ दिशि कोऊ आगे इसभांति सब चलेजातेहैं १३ (गंगाकूले शृंगवेरपुरं समंततः गत्वाशत्रुघ्न परिचोदिता महती सेनाउवास) गंगाजी के किनारे शृंगवेर पुरहि गये ताके समीप शत्रुहनकी आज्ञाकरिकै बड़ीभारी जो सेनाहै सो वास करतीभई भाव जल थलतृन छायादि सुपास तकिताकि लोग उतरे १४ (भरतं आगतं श्रुत्वा गुहः शंकित मानसः भरतः महत्या सेनया सार्द्ध

आगतः किल) भरत जोहैं तिनहिं आवन सुनिकै गुह निषाद राजा शंका युत मनमें विचार करता भया कि भरतजी बड़ी सेनासहित आयेहैं तामें यह निश्चय होनीहै १५ (अविदित आत्मनः रामस्य पापं कर्त्तुं याति वानगत्वा तत् हृदयज्ञेयं यदि शुद्धः तरिष्यति) नहीं है विदित हाल आत्मा को भाव अन्तरमें प्रीति है वा विरोध है सो हाल प्रसिद्ध नहीं है अरु राम विरोधी केकयी के पुत्र सेना सहित हैं इस अनुमानते निश्चय होत कि रघुनाथजीके मारनेहेतु जाते हैं अथवा नहीं भाव भरत धर्मवन्त रामभक्त प्रेमीरहे त्यहि भावते कदाचित् मनावने जातेहोयँ इत्यादि जानिवेहेतु भरतकेपास जाताहौं बैर प्रीति उनके हृदय की बात जानलेउँगो जो शुद्ध हृदय राम मे प्रीति राखे होयँगे तो तो सुखपूर्वक उतरने पावैंगे १६ ॥

गंगांनोचेत्समाकृष्यनावस्तिष्ठन्तसायुधाः ॥ ज्ञातयोमेसमायत्ताःपश्यन्तःसर्वतो दिशम् १७ इतिसर्वान्समादिश्यगुहोभरतमागतः ॥ उपायनानिसंगृह्यविविधा निबहून्यपि १८ प्रययौज्ञातिभिःसार्द्धंबहुभिर्विविधायुधैः ॥ निवेद्योपायनान्यग्रे भरतस्यसमंततः १९ दृष्ट्वाभरतमासीनंसानुजंसहमंत्रिभिः ॥ चीराम्बरंघन श्यामंजटामुकुटधारिणम् २० राममेवानुशोचंतंरामरामेतिवादिनम् ॥ ननामशि रसाभूमौगुहोहमितिचाब्रवीत् २१ शीघ्रमुत्थाप्यभरतोगाढमालिंग्यसादरम् ॥ पृष्ट्वानामयमव्यग्रःसखायमिदमब्रवीत् २२ ॥

(गंगा नोचेत् नावः समाकृष्य स आयुधाः तिष्ठंतु मे ज्ञातयःसंआयत् ता.सर्वतः दिशं पश्यन्तः) गंगा जोहैं तिनहिं उतरि सुखपूर्वक जायँ नहीं तो सब घाटनकी नावै खींचि बीचधारा में राखौ अरु सहित हथियारन सजे युद्धहेतु सजग बैठे रहैं सब लोग इस हेतु मेरे बन्धुवर्ग यावत् हैं सब आवैं ते सब दिशन को देखतरहैं १७ (इति गुहः सर्वान् सं आदिश्य आगतः भरतं उपाय नानि विविधानि बहूनि अपि संगृह्य) इसप्रकार निषादराज यावत आपने बन्धुवर्ग रहैं तिनहिं आज्ञा देकै तब आये हुये जो भरत तिनहिं देनेहेतु जो भेटकी सामग्री अनेक प्रकार की वस्तु बहुत निश्चयकरिलैकै १८ (विविधायुधैः ज्ञातिभिः बहुभिः सार्द्धं प्रययौ उपायनानि समंततः भरतस्य अग्रेनिवेद्य) अनेक प्रकारके हथियारन करिकै सजेहुये बन्धुवर्ग बहुत साथमें लैकै जातभयो भेट सामग्री सम्पूर्ण भरत के आगे निवेदन कियो १९ (घनश्याम चीराम्बरं जटा मुकुट धारिणम् भरतं मंत्रिभिः सह सअनुजं आसीनं दृष्ट्वा) मेघसम श्यामतनु मुनि बसन जटाके मुकुट धारण किहे ऐसे जो भरत तिनहिं मंत्रिन करिकै सहित तथा सहित शत्रुहन बैठे देखा २० (रामं एव अनुशोचंतं राम राम इतिवादिनम् भूमौशिरसाननामच अहंगुहःइतिअब्रवीत्) रघुनन्दन जो बनवासी तिनहिं शोचते राम राम ऐसा उच्चारण करते जो भरत तिनहिं देखि भूमिविषे शीशलगाय करि प्रणामकरि पुनः मैं गुहहौं ऐसाबोलता भया २१ (भरतःशीघ्रंउत्थाप्यसादरम् गाढंआलिंग्यअव्यग्रःसखायंअनामयंपृष्ट्वाइदं अब्रवीत्) प्रणाम करतेदेखि भरत तुरतही उठायकै सहित आदर दृढ़करि हृदयमें लगाय मिलि सावधान ह्वै सखा जो निषादराज ताहि कुशल क्षेम पूछिकै भरतजी पुनः इसप्रकार वचन बोले २२ ॥

भ्रातस्त्वंराघवेणात्रसमेतःसमवस्थितः ॥ रामेणालिंगितःसार्द्रनयनेनामलात्मना २३ धन्योऽसिकृतकृत्योऽसियत्त्वयापरिभाषितः ॥ रामोराजीवपत्राक्षोलक्ष्मणेनच

सीतया २४ यत्ररामस्त्वयादृष्टस्तत्रमांनयसुव्रत ॥ सीतयासहितोयत्रसुप्तस्तद्दर्शयस्वमे २५ त्वंरामस्यप्रियतमोभक्तिमानसिभाग्यवान् ॥ इतिसंस्मृत्यसंस्मृत्यरामंसाश्रुविलोचनः २६ गुहेनसहितस्तत्रयत्रराम स्थितोनिशि ॥ ययौददर्शशयनस्थलं कुशसमास्तृतम् २७ सीताभरणसंलग्नस्वर्णविंदुभिरंचितम् ॥ दुःखसंतप्तहृदयोभरतःपर्यदेवयत् २८ ॥

(भ्रातःत्वंराघवेणसमेतः अत्रसंअवस्थितः सबाष्पनयनेनअमलः अत्मनारामेणआलिंगितः) हे भाई निषादराज तुम रघुनन्दन करिकै समेत इहां अवस्थित रहेउ है भाव एकत्र रहेउ है अरु सहित आंसुन भींजे हुये नेत्रन करिकै अमल निर्विकार है आत्मा जिनकी ऐसे राम ने तुमहिं उर में लगाय मिले हैं २३ (सीतयाचलक्ष्मणेनराजीव पत्राक्षः रामःयत्त्वयापरिभाषितः धन्यः असिकृत कृत्यः असि) सीता करिकै लक्ष्मण करिकै सहित कमल नयन श्री रघुनन्दन जो तुम करिकै वार्त्ता कीन्हें तौ हे निषाद राज तुम धन्य बडे सुकृती कृतार्थ रूप हौ २४ (सुव्रतत्वयायत्ररामः दृष्टःतत्रमांनय सीतयासहितः यत्रसुप्तःतत्मेदर्शयस्व) हे सुव्रत निषादराज तुमने जहां रघुनन्दन को बैठे देखा है भाव जहां आय उतरि बैठे हैं तहां मोहिं ले चलो पुनः सीता करिकै सहित रघुनन्दन जहां रातिको सोये हैं सो ठौर मोहिं देखावो २५ (रामस्यप्रियतमःत्वंभाग्यवानभक्तिमान् असिइतिरामंसंस्मृत्य संस्मृत्यसभाश्रुविलोचनः) भरतबोले हे निषादराज रघुनन्दनको अत्यन्त प्रिय तुमबड़े भाग्यवाले रघुनाथजीके भक्तहो इत्यादि रघुनन्दन जो हैं तिनहिं स्मरणकरिकरि सहित आंसुननेत्र शोभितभाव प्रेम उमगि आंसुनेत्रनते बहते हैं २६ (यत्ररामः निशिस्थितः तत्रगुहेनसहितःययौकुशसंआस्तृतम्शयनस्थलंददर्श) जहां पर रघुनाथजी रात्रीमें स्थितरहे तहाको गुहकरिकै सहित भरतजी जाते भये तहां कुश बिछेहुये स्थलको देखतेभये २७ (सीताआभरणसंलग्नस्वर्णविंदुभिःआंचितम् भरतःदुःख संतप्तहृदयःपर्यदेवयत्) कुश पर जो कोमल पत्र विछे रहेहैं तिनमें शयन करनेते जानकीजीके भूषणकी रगरलागेते सोनेके बिंदुन करिकै चिन्हित पल्लवदल तथा जरीबसनके गिरेहुये सितारादेखि भरत दुःखते संतप्तहृदय बिलाप करनेलगे २८ ॥

अहोऽतिसुकुमारीयासीताजनकनंदिनी॥प्रासादेरत्नपर्यंकेकोमलास्तरणेशुभे२९ रामेणसहिताशेतेसाकथंकुशविष्टरे ॥ सीतारामेणसहितादुःखेनाममदोषतः ३० धिङ्मांजातोऽस्मिकैकेय्यांपापराशिसमानतः ॥ मन्निमित्तमिदंक्लेशंरामस्यपरमात्मनः ३१ अहोऽतिसफलंजन्मलक्ष्मणस्यमहात्मनः॥ राममेवसदान्वेतिवनस्थमपिहृष्टधीः ३२ अहंरामस्यदासायेतेषांदासस्यकिंकरः ॥ यदिस्यांसफलंजन्ममभूयान्नसंशयः ३३ भ्रातर्जानासियदितत्कथयस्वममाखिलम् ॥ यत्रतिष्ठति तत्राहंगच्छाम्यानेतुमंजसा ३४ ॥

(अहोयाजनकनन्दिनी सीताअतिसुकुमारी रामेणसहिताप्रसादे रत्नपर्यंके शुभेकोमलस्तरणेशेते साकुशविष्टरेकथं) बडी आश्चर्य की बात है जो जनकनन्दिनी सीता अत्यन्त सुकुमारी रघुनन्दन करिकै सहित कनक भवन में रत्न जटित पलँग पर मंगलीक कोमल्ल बिछावने पर सोवती रहीं सो सीता कुशके आसनपर भूमि में कैसे सोई हैहै २९(ममदोषतः रामेणसहितासीतादुःखेन) मेरे दोष

ते भाव मेरी राज्य हेत बनबास भया ताते रघुनन्दन सहित सीता दुःख करिकै युक्तभई ३० (पापराशिसमानलः कैकेय्यांजातः अस्मि मत्निमित्तंपरमात्मनः रामस्यइदंक्लेशधिङ्मां) पापों की ढेरी सम कैकेयी विषे उत्पन्न भयों अरु मेरे निमित्त परमात्मा रघुनन्दनको इस प्रकार को क्लेश भया कि भूमि में शयन करते हैं तौ धिक्कार है मोहिं वृथाही जन्म भया ३१ (महात्मनः लक्ष्मणस्यअतिभ्होजन्मसफलं वनस्थंएवरामंअन्वेति सदाअपिहृष्टधीः) महात्मा लक्ष्मण जी को अत्यन्त आश्चर्य मय जन्म सफल भया काहे ते वनबासी जो निश्चयकरि रघुनाथ जी तिनके अनुगामी सदा निश्चय करि प्रसन्न मन रहते हैं ३२ (रामस्ययेदासातेषांदासस्यअहंकिंकरः यदिस्यान् ममजन्म सफलं भूयात् संशयःन) रघुनन्दन के जे दास तिनके दासन को मैं सेवक होउँ तो मेरा जन्म सफल होय यामें संशय नहीं है भाव सेवक मैं ताको कैकेयी ने स्वामीपद'यह दूषण करि दिया ताते जन्म वृथा भया अब जो राम सेवकन के सेवकनको सेवक होउँ तौ जन्म सफल होइ ३३ (भ्रातःयदिजानासितत् अखिलंममकथयस्वयत्रतिष्ठति तत्रअहंआनेतुं अञ्जसागच्छामि) भरत कहत हे भाई निषाद राज रघुनन्दन के रहने को हाल जो तुम जानते होउ सो सब हाल मोसों कहौ जहां रघुनन्दन वास किहे होयँ तहां को मैं लवाय लाने हेत शीघ्रही जाउँगो ३४ ॥

गुहस्तंशुद्धहृदयंज्ञात्वासस्नेहमब्रवीत् ॥ देवत्वमेवधन्योऽसियस्यतेभक्तिरीदृशी३५रामेराजीवपत्राक्षेसीतायांलक्ष्मणेतथा३६चित्रकूटाद्रिनिकटेमन्दाकिन्याविदूरतः ॥ मुनीनामाश्रमपदेरामास्तिष्ठतिसानुजः३७जानक्यासहितोनन्दात्सुखमास्तेकिलप्रभुः॥ तत्रगच्छामहेशीघ्रंगगांतर्तुमिहार्हसि३८इत्युक्त्वात्वरितंगत्वा नावःपचशतानिह ॥ समानयत्ससैन्यस्यतर्तुंगंगांमहानदीम्३९स्वयमेवानिनायैकांराजनावंगुहस्तदा ॥ आरोप्यभरतंतत्रशत्रुघ्नंराममातरम्४० वशिष्ठंचतथाऽन्यत्रकैकेयींचान्ययोषितः ॥ तीर्त्वागंगांययौशीघ्रंभरद्वाजाश्रमंप्रति ४१ ॥

(त शुद्धहृदयं ज्ञात्वा गुहः सस्नेहं अब्रवीत् ते यस्य ईदृसी भक्तिः देवत्वं एवधन्यःअसि) तिन भरतहि शुद्ध हृदय जानिकै गुहः सहित स्नेह बोलताभया तुम जाकी इसप्रकार भक्ति रामपदनमें है तौ हे देव भरत तुम निश्चयकरिकै धन्य बड़े भाग्यवालेहौ३५(राजीवपत्राक्षेरामेसीतायांतथालक्ष्मणे)कमल नयन रघुनन्दन विषे जनक नन्दिनी विषे जैसी भक्ति है तैसीही भक्ति लक्ष्मणजीमें राखे हौ ३६ (चित्रकूट अद्रि निकटे मन्दाकिन्या अविदूरतः मुनीनां आश्रम पदे सानुजः रामः तिष्ठति) चित्रकूट पहाड़के समीपही मन्दाकिनी नदीते थोरीदूरि मुनिनके आश्रम जहां हैं तहां सहितलक्ष्मण रघुनाथजी बास किहेहैं ३७ (जानक्या सहितः प्रभुः किल नन्दात् सुखं आस्ते तत्र शीघ्रं गच्छामहे इह गंगां तर्तुं अर्हसि) जानकी करिकै सहित प्रभु श्रीरघुनाथजी निश्चय करि आनन्दते भाव वनफलादि ऐश्वर्य युक्त सुखपूर्वक बसतेहैं तहां तुम हम सबै चलैंगे परन्तु हे भरतजी या समयमें तौ गंगा जो हैं तिनहिं तरिबे योग्यहौ ३८ (इति उक्त्वा त्वरितंगत्वा पंचशतानिह नावः समानय ससैन्यस्य महानदीम् गंगां तर्तुं) चलना तौ अवश्यही है प्रथम गंगा तौ उतरौ इत्यादिकहि गुह तुरतही जाय सेवकनद्वारा पांचसयनावैं मँगावताभया सो तौ सब सेनाको महानदी गंगा उतरने हेतु ३९ (तदा गुहः स्वयं एव एकां राजनावं आनिनाय तत्र भरतं शत्रुघ्नं राममातरम् आरोप्य) तासमय गुह आपही निश्चय करि एक नाव राजोंके चढ़िबे योग्य लावा तामें भरत जो हैं शत्रुहन

जोहैं कौशल्या जोहैं तिनहिं चढ़ावतभया ४० (तथा अन्यत्र वशिष्ठंच कैकेयींच अन्य योषितः गंगां तीर्त्वा भरद्वाज आश्रमंप्रति शीघ्रं ययौ) ताही भांति की और उत्तम नाव पर वशिष्ठ पुनः कैकेयी पुनः सुमित्राआदि औरी यावत् स्त्री रहीं तिन सबको चढ़ाय गंगा उतरि चले प्रयागजीमें पहुँचि भरद्वाजमुनिके आश्रमहि तुरतहीगये ॥

दूरेस्थाप्यमहासैन्यंभरतःसानुजोययौ ४१ आश्रमेमुनिमासीनंज्वलन्तमिवपावकम् ॥ दृष्ट्वाननामभरतःसाष्टांगमतिभक्तितः ४२ ज्ञात्वादाशरथिंप्रीत्यापूजयामासमौनिराट् ॥ पप्रच्छकुशलंदृष्ट्वाजटावल्कलधारिणम् ४३ राज्यंप्रशासतस्तेऽद्य किमेतद्वल्कलादिकम् ॥ आगतोऽसिकिमर्थंत्वंविपिनंमुनिसेवितम् ४४ भरद्वाजवचःश्रुत्वाभरतःसाश्रुलोचनः ॥ सर्वंजानासिभगवन्सर्वभूताशयस्थितः ४५ तथापिपृच्छसेकिंचित्तदनुग्रहएवमे ॥ कैकेय्यायत्कृतंकर्मरामराज्यविघातनम् ४६ वनवासादिकंवापिनहिजानामिकिंचन॥भवत्पादयुगंमेऽद्यप्रमाणंमुनिसत्तम४७॥

(महासैन्यं दूरे स्थाप्य सअनुजः भरतः ययौ) बड़ीभारी जो सेना रही ताहि दूरिहीराखि सहित शत्रुहन भरत आश्रम के भीतर जाते भये ४१ (आश्रमे पावकम्इव ज्वलन्तं मुनिं आसीनं दृष्ट्वा भरतः अति भक्तितः साष्टांगं ननाम) आश्रममें अग्निसम ज्वलत तपतेजयुक्त मुनिभरद्वाज तिनहिं बैठे देखि भरत अत्यन्त भक्तिते साष्टांग प्रणाम कीन्हे ४२ (दाशरथिंज्ञात्वा मौनिराट् प्रीत्या पूजयामास कुशलं पप्रच्छ वल्कल धारिणंदृष्ट्वा) दशरथके पुत्र भरतहैं ऐसाजानि मुनिराज भरद्वाज प्रीति करिकै पूजाकरते भये भाव आसनते उठि आदरते मिलि आसनपर बैठारे अरु कुशल पूँछे क्योंकि वल्कलादि वसन धारण किहे मुनिको वेषदेखि संदेह भई ४३ (राज्यं प्रशासतःतेअद्य एतत्वल्कलादिकम्किम्मुनिसेवितंविपिनंकिंअर्थंत्वंआगतोसि) महाराजकी आज्ञाते राज्यकाज को शिक्षाकरने वाले तुम या समय में ये वल्कलादि वसन जो हैं तिनहि क्यों धारण किहे हौ अरु मुनिन के बसबे योग्य जो बन है तहाँ को कौने प्रयोजन अर्थ तुम आये हौ ४४ (भरद्वाजवच श्रुत्वासआश्रुलोचनः भरतःभगवन्सर्वभूताशयस्थितःसर्वंजानासि) भरद्वाज के वचन सुनि करुणा ते सहित आँशुनेत्र भरत बोले हे भगवन् भाव आपतत्त्वज्ञ हौ सव भूतमात्र में स्थित जो अंतर्यामी ताकी आश्रयह्वै आप भूत भविष्य वर्त्तमानादि सब जानते हौ ४५ (तथापिकिंचित्पृच्छसेतत्मेएवअनुग्रहंरामराज्यविघातनम्कैकेय्यायत्कर्मकृतं) मुनि प्रति भरत बोले कि यद्यपि आप सब जानते हौ ताहू पर जो कुछ पूछते हौ सो मोपर निश्चय करि अनुग्रह किहेउ अब सुनिये रामराज्य भंग हेत कैकेयी ने जो कर्म किया है भाव हठिकरि मोको राज्यमाँगा अरु ४६ (वाअपिवनवासादिकंकिंचननजानामिमेमुनिसत्तमअद्यभवत्पादयुगंप्रमाणम्) वा निश्चय करि रघुनन्दन को बनवास भया इत्यादि कुछभी हाल नहीं जानता हौं मैं हे मुनिराज या समय में आप के दोऊ पाँय इसबात की प्रमाण हैं भाव पाँयन की सौंगंद करि कहता हौं ४७ ॥

इत्युक्त्वापादयुगलंमुनेःस्पृष्ट्वाऽर्त्तमानसः॥ ज्ञातुमर्हसिमांदेवशुद्धोवाशुद्धएववा ४८ ममराज्येनकिंस्वामिन्रामेतिष्ठतिराजनि ॥ किङ्करोऽहंमुनिश्रेष्ठरामचंद्रस्यशाश्वतः ४९ अतोगत्वामुनिश्रेष्ठरामस्यचरणांतिके ॥ पतित्वाराज्यसम्भारान्समर्प्या

नेष्येऽयोध्यांरमानाथंवराघवम् ५० अभिषेक्ष्येवशिष्ठाद्यैःपौरजानपदैःसह ॥ आलिंग्य
थदासःसेवेऽतिनीचवत् ५१ इत्युदीरितमाकर्ण्यभरतस्यवचोमुनिः ॥ मा
मूर्द्धन्यवघ्रायप्रशशंससविस्मयः ५२ वत्सज्ञातंपुरैवैतद्भविष्यंज्ञानचक्षुषा ॥
शुचस्त्वंपरोभक्तःश्रीरामेलक्ष्मणादपि ५३ ॥

इतिउक्त्वाभार्तमानसः मुनेः पादयुगलंस्पृष्ट्वा देवशुद्धःवाएवअशुद्धःवामांज्ञातुंअर्हसि) ऐसा कहि दुःखित मन भरत मुनि के पायँ दोऊ छुइके पुनः बोले हे देव शुद्ध राम सनेही अथवा निश्चयकरि अशुद्ध राम विरोधी हौंसो मोहिं जानि लेव योग्यहौ आप४८ (स्वामिन् राजनिरामेतिष्ठति ममराज्ये नकिंमुनिश्रेष्ठशाश्वतः रामचन्द्रस्य अहं किंकरः) हे स्वामिन् भाव आप तत्त्वज्ञ हौ विचार करि देखिये राज्य में रघुनाथ जी को आसीन होत सन्ते मोको राज्य करिके क्या प्रयोजन है क्योंकि हे मुनिन में श्रेष्ठ सदा सर्वदा रघुनाथ जी को मैं किंकर हौं रघुनन्दन अंशी में अंश हौं इति भाव सूचित किये ४९ (अतःमुनिश्रेष्ठरामस्यचरणांतिके गत्वापतित्वाअत्रएवराघवम् राज्यसम्भारान् समर्प्य) इस ते हे मुनिराज रघुनाथ जी के चरण कमलों के समीप जाय गिरिकै भाव साष्टाङ्ग प्रणाम करि इहैं निश्चय करि चित्रकूट में रघुनन्दन जो हैं तिनहिं राज्याभिषेक की सामग्री समर्पण करिहौं ५० (वशिष्ठाद्यैःपौरजानपदैः सहअभिषेक्ष्येरमानाथं अयोध्यांनेष्येदासः अतिनीचवत्सेवे) वशिष्ठ आदि देकै यावत् पुरवासी हैं अरु राज्य के बासी इत्यादि करिकै सहित स्वामी को राज्याभिषेक करिहौं रमानाथ जो रघुनन्दन तिनहिं अयोध्या में लैजायकै मैं दास नीच की नाईं सेवा करिहौं ५१ (इतिउदीरितंभरतस्यवचः आकर्ण्यमुनिःसविस्मयः आलिंग्यमूर्द्धिअवघ्रायप्रशशंस) इस भांति कहते हुये भरत के वचन सुनि मुनि भरद्वाज स विस्मय भाव पिताकी दई राज्य त्यागि नीच दास बना चाहत ऐसे उत्तम राम भक्त हैं इति आश्चर्य मानि उरमें लगाय शिर सूंघि प्रशंसा करते भये ५२ (वत्सएतत्भविष्यंज्ञानचक्षुषापुराज्ञातं माशुचश्रीरामेलक्ष्मणात् परःअपित्वंभक्तः) हे वत्स यह वनवासादि लीला यावत् होनहार रहै सो सत्र ज्ञान दृष्टि करिके हम पूर्वही जानिलिये रहैं, तातें जनि शोच करौ श्री रघुनाथ जी में लक्ष्मण ते अधिक निश्चयकरि तुम भक्त हौ ५३ ॥

आतिथ्यंकर्तुमिच्छामिससैन्यस्यतवानघ ॥ अद्यभुक्त्वाससैन्यस्त्वंश्वोगंताराससान्निधिं ५४ यथाज्ञापयतिभवान्तथेतिभरतोऽब्रवीत् ॥ भरद्वाजस्त्वपःस्पृष्ट्वा मौनीहोमगृहेस्थितः५५दध्यौकामदुघांकामवर्षिणींकामदोमुनिः ॥ असृजत्कामधुक्सर्वंयथाकाममलौकिकम् ५६ भरतस्यससैन्यस्ययथेष्टंचमनोरथम् ॥ तथा ववर्षसकलंतृप्तास्तेसर्वसैनिकाः ५७ वशिष्ठंपूजयित्वाग्रेशास्त्रदृष्टेनकर्मणा ॥ पश्चात्ससैन्यंभरतंतर्पयामासयोगिराट् ५८ उषित्वादिनमेकंतुआश्रमेस्वर्गसन्निभे ॥ अभिवाद्यपुनःप्रातर्भरद्वाजंसहानुजः ५९ ॥

(अनघतवससैन्यस्यआतिथ्यंकर्तुंइच्छामिससैन्यःत्वंअद्यभुक्त्वाश्वःरामसन्निधिंगंता) हेनिःपाप भरत तुमका सहित सेनाका पाहुन करिवेकी इच्छाहै हमारे ताते सहित सैन्य तुम आजुइहाँ भोजन करो काल्हि रघुनन्दन के समीप को जायहु ५४ (भवान्यथाआज्ञापयतितथाइतिभरतःअब्रवीत्तुभरद्वाजःअपःस्पृष्ट्वामौनीहोमगृहेस्थितः) आप जैसी आज्ञा करते हैं तैसाही होगा भाव आपही

आज्ञा करैंगे ऐसा जब भरत बोले तब पुनः भरद्वाज जल लैके आचमनकरि मौन ह्वै होमके मन्दिर में बैठे ५५(कामदःकामवर्षिणींकामदुघां मुनिःदध्यौयथाकामंसर्वं अलौकिकम्कामधुक्असृजत्)काम को देने वाली सम्पूर्ण मनोकामना को बर्षने वाली ऐसी जो कामधेनु ताहि मुनि ध्यान करते भये सोप्रसिद्ध भई तब जाके मनमें जैसी कामना रहै सो सब अलौकिक पदार्थ कामधेनु उत्पन्न किया ५६ (भरतस्यच ससैन्यस्य मनोरथम्यथा इष्टम् तथा सकलं ववर्षतेसर्वेसैनिकाःतृप्ताः) भरतका पुनः सहित सेना का मनोरथ में जैसे इच्छा रही तैसेही सकल पदार्थ कामधेनु बर्षती भई ताको पाइ ते सब सेना के लोग तृप्त भये ५७ (शास्त्रदृष्टेणकर्मणाअग्रेवशिष्ठंपूजयित्वापश्चात्योगिराट्स सैन्यंभरतंतर्प्पयामास) धर्मशास्त्रमें जैसा लिखा है ताको देखि सोई कर्मन करिकै यथा आसन स्वागत पाद्य अर्घ आचमन स्नान बस्त्रभूषण गंधदल फूल धूप दीप नैवेद्य आरती प्रदक्षिणा प्रणाम स्तुति इत्यादि कर्मन करि प्रथम मुनिराज जो बशिष्ठ हैं तिनहिं पूजते भये ताके पाछे योगिराज भरद्वाज सहित सेन जो भरतहैं तिनहिं पूजि तृप्तकीन्हे ५८ (स्वर्ग संनिभे आश्रमेतु एकं दिनं उषित्वा पुनः प्रातः सहअनुजः भरद्वाजं अभिवाद्य) स्वर्गकीसमान ऐश्वर्य प्रकाशवंत जो भरद्वाज को आश्रम तामें एकदिन राति बासकीन्हे पुनः प्रातभये पर सहित शत्रुहन भरतजी भरद्वाज मुनिहिं प्रणामकरिकै

भरतस्तुकृतानुज्ञःप्रययौरामसन्निधिम् ५९ चित्रकूटमनुप्राप्यदूरेसंस्थाप्यसैनिकान् ॥ रामसंदर्शनाकांक्षीप्रययौभरतःस्वयम् ६० शत्रुघ्नेनसुमंत्रेणगुहेनचपरंतपः॥ तपस्विमण्डलंसर्वंविचिन्वानोन्यवर्वतत् ६१ अदृष्ट्वारामभवनमपृच्छदृषिमण्डलम् ॥ कुत्रास्तेसीतयासार्द्धंलक्ष्मणेनरघूत्तमः ६२ ऊचुरग्रेगिरेःपश्चात् गंगायाउत्तरेतटे ॥ विविक्तंरामभवनंरम्यंकाननमंडितम् ६३ सफलैराम्रपनसैः कदलीखण्डमंडितम् ॥ चम्पकैःकोविदारैश्चपुन्नागैर्विपुलैस्तथा ६४ एवंदर्शितमालोक्यमुनिभिर्भरतोग्रतः ॥ हर्षाद्ययौरघुश्रेष्ठभवनंमंत्रिणासह ६५ ॥

(तुभरतःअनुज्ञःकृतरामसन्निधिंप्रययौ) पुनः भरत जी मुनिकी आज्ञा लैकै रघुनाथजी के पास को चले ५९ (चित्रकूटंअनुप्राप्यसैनिकान्दूरेसंस्थाप्यरामदर्शनाकांक्षीभरतःस्वयंप्रययौ) चित्रकूट समीप पहुँचि सेनाको दूरिही थँभाय रघुनन्दन के दर्शन की इच्छाहै जिनके ऐसे भरत आपही जाते भये ६० (शत्रुघ्नेनसुमंत्रेणचगुहेन) शत्रुहन सुमंत्र पुनः निषादराजगुह इनकरिकै सहित भरत जाय (परंतपःतपस्विमंडलंसर्वंविचिन्वानःन्यवर्तत्) परम तप करने वाले तपस्विनको जो मंडल समूह बासस्थान तिन सबमें ढूढ़िकै न्यवर्त्त भये प्रभुको न पाये ६१ (रामभवनंअदृष्ट्वाऋषिमंडलंअपृच्छतलक्ष्मणेनसीतयासार्द्धंरघूत्तमःकुत्रास्ते) रघुनन्दन को जो बासस्थान है ताहि जब न देखिपाये तब ऋषि मंडल में पूछे कि लक्ष्मण सीताकरिकै सहित रघुनाथजी कहाँपर रहते हैं ६२ (ऊचुःअग्रेगिरेपश्चात्गंगायाउत्तरेतटेरम्यंकाननमंडितम्विविक्तम्रामभवनम्) भरत प्रति ऋषि लोग बोले की आगे जाउ पर्वतके पाछे मंदाकिनी गंगा के किनारे में जहाँ सुन्दर बन शोभित है तहाँ एकांत स्थान में रघुनन्दनको मंदिर है ६३ (पनसैःआम्रसफलैःकदलीखण्डमंडितम्चम्पकैःचकोविदारैतथा विपुलैःपुन्नागैः) कटहर आम्र के वृक्ष फलन करिकै युक्त हैं केलाके वृक्ष सघन समूह शोभित हैं चंपा कचनार तैसे बहुत नागकेशरि इत्यादि वृक्षन करिकै शोभित है ६४(एवंमुनिभिःदर्शितंअग्रतः आलोक्य भरतः मंत्रिणासह रघुश्रेष्ठ भवनं हर्षात् ययौ) इसप्रकार सब लक्ष मुनिन करिकै देखा दा

हुआ स्थान आगे देखि भरत मंत्रिनसहित रघुनाथजीको मंदिरहै तहां को आनन्दते जातेभये ६५॥

दर्शदूरादतिभासुरंशुभंरामस्यगेहंमुनिवृंदसेवितम् ॥ वृक्षाग्रसल्लग्नसुवल्कलाजिनंरामाभिराममंभरतःसहानुजः ६६ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेऽयोध्याकांडेअष्टमःसर्गः ८ ॥

(सह अनुजः भरतः दूरात् रामस्य गेहंददर्श) सहित शत्रुहन भरतजी दूरिते रघुनन्दनको मंदिर जो है ताहि देखतेभये(कथंभूतं मदिरम् भासुरंशुभं मुनिवृन्द सेवितम्) कैसाहै मन्दिर दिव्यप्रकाशमान मंगलीक अरु मुनिन करिकै सेवितहै (पुनः वृक्षस्य अग्र सलग्न सुवल्कलाजिनं) अरु वृक्ष की डारनपर धरे लटकते हैं वल्कल वन मृगचर्मादि (पुनः रामाभिरामम्) अरु रघुनाथजी को आनन्द देनहाराहै इसभांतिको रघुनाथजी को आश्रम है ६६ ॥

इतिश्रीरसिकजनताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतजैजनाथविरचितेअध्यात्मभूषणेअयोध्याकाण्डेश्रीभरतचित्रकूटप्राप्तवर्णनोनामअष्टमःप्रकाशः ८ ॥

श्रीमहादेवउवाच ॥ अथगत्वाऽऽश्रमपदसमीपंभरतोमुदा ॥ सीतारामपदैर्युक्तंपवित्रमतिशोभनम् १ सतत्रवज्रांकुशवारिजांचितध्वजादिचिह्नानिपदानिसर्वतः ॥ ददर्शरामस्यभुवोतिमंगलान्यचेष्टयत्पादरजःसमानुजः २ ॥

सवैया ॥ भरतांघ्रि परे कहिजान पुरै न फिरे प्रभुदै ध्रुव धर्म चिन्हैं। हठि प्राण तजौ गुरु बोध दिये खलहा हरिना नर जानु इन्हैं ॥ पद वन्दि चले पद पीठलिये पुरपूजि नितै हरि जानिजिन्हैं। चलि अत्रिमिले अनुसूयतहां सिय सानुज राम नमामि तिन्हैं ॥ (सीताराम पदैः युक्तं पवित्रं अति शोभनम् आश्रम पद समीपं अथ भरतः मुदागत्वा) श्रीजनकनन्दिनी रघुनन्दनके पद कमलोंकरिकै युक्त ताते पवित्र अत्यन्त शोभायमान जो प्रभुको आश्रमपदहै ताके समीपको अब भरतजी आनन्द पूर्वक जातेभये १ (सतत्र वज्रअंकुश वारिज ध्वजादि रामस्य पदानि चिह्नानि अंचित अतिमंगलानि भुवः ददर्श सअनुजः सपाद रजः अचेष्टयत्) सो भरत तहां क्या देखा कि जो रघुनाथजी विचरे हैं तिनके पॉयनके चिह्न धूरिमे बनेहैं कौन चिह्न यथा वज्र अंकुश कमल ध्वजा इत्यादि रघुनाथजी के पॉयनके चिह्नन करिकै अंकित जो मंगलीक भूमि है ताहि देखतेभये तब सहित शत्रुहन सो भरत रघुनन्दनके पायनकी स्पर्शित जो धूरिहै तामें दोऊजने लोटतेभये २ ॥

अहोसुधन्योऽहममूनिरामपादारविंदांकितभूतलानि॥पश्यामियत्पादरजोविमृग्यं ब्रह्मादिदेवैःश्रुतिभिश्चनित्यम् ३ इत्यद्भुतप्रेमरसाप्लुताशयोविगाढचेतारघुनाथभावने ॥ आनंदजाश्रुस्नापितस्तनांतरःशनैरवापाश्रमसन्निधिंहरेः ४ सतत्रदृष्ट्वा रघुनाथमास्थितंदूर्वादलश्यामलमायतेक्षणम्॥ जटाकिरीटंनववल्कलांबरंप्रसन्नवक्त्रंतरुणारुणद्युतिं ५ विलोकयंतंजनकात्मजांशुभांसौमित्रिणासेवितपादपंकजम्॥ तदाभिदुद्रावरघूत्तमंशुचाहर्षाच्चतत्पादयुगंत्वराग्रहीत् ६ ॥

(यत्पादरजः ब्रह्मादिदेवैःचश्रुतिभिः नित्यंविमृग्यं अमूनिरामपादारविंदैः अंकितभूतलानि पश्यामि अहंअहोसुधन्यः) जिन पाँयन की रज कैसी अगम्य है जो ब्रह्मादिक देवतन करिकै पुनः श्रुतिन करिकै नित्यही ढूढ़िबे योग्य है सोई ये राम पद कमलों करिके चिह्नित भूमितल ताहि प्रसिद्ध देखताहौं ताते मैं आश्चर्य मय सुन्दर धन्य हौं अपूर्व भाग्यवन्तहौं ३(इतिअद्भुतः प्रेमरसः अद्भुतःआशयः रघुनाथ भावनेविगाढचेताआनंदजः आश्रुस्तनांतरःस्नपितः शनैःहरेःआश्रमसन्निधिंअवाप) यद्यपि प्रभु के छोटे भाई हैं सदा संगही रहे प्रयोजन मात्र किंचित् वियोग भया तामें प्रभु पदांकित रज स्पर्श पाय अपनी अहोभाग्य सराहत वह प्रेमकी विक्रान्त दशा है इत्यादि आश्चर्य मय जो प्रेम रस उमंगिकै व्याप्तहैसर्वांगमें इतिअन्तःकरणकी अभिप्राय कि रघुनाथजीके ध्यानमें मगन ताते देहकी सुधिनहीं प्रेमानन्द करिकै बहे जो आँशुजल त्यहि करिकै स्तनको मध्य देश भीजिरहा है इति प्रेम दशाते भरत धीराधीरा करि जाय रघनाथ जी के आश्रम के समीप प्राप्त भये ४ (तत्रआस्थितंरघुनाथंसदृष्ट्वा) त्यहि आश्रम में बैठे जो रघुनाथ जी तिनहिं सो भरत देखा कैसे हैं (दुर्वादलश्यामलंआयतइक्षणंजटाकिरीटंनववल्कलअम्बरंप्रसन्नवक्रंतरुणअरुणद्युतिं) दूवके दल तुल्यश्यामल वरण तन बड़े लंबे नेत्र जटाको मुकुट बांधे नवीन वल्कल बसन धारण कीन्हे प्रसन्नमुख प्रभात के सूर्यन की ऐसी प्रभा है जिनमें ५ (जनकात्मजांविलोकयंतंसौमित्रिणासेवितपादपंकजंतदारघूत्तमंअभिदुद्रावचशुचाहर्षात्तत्पादयुगंत्वराग्रहीत्) जनकनन्दिनी जो हैं तिनहिं विलोकते हैं तथा लक्ष्मण करिकै सेवित हैं पद कमल जिन के इसभांति देखि ता समयमें भरत रघुनन्दन के सन्मुख धाये पुनः पूर्वशोच युत रहे दर्शन पाय आनन्दते तिन रघुनन्दन के दोऊपद जोहैं तिनहिं शीघ्रहीं पकरि लिये भाव आगेपरि हाथौं ते पद गहि लिये ६ ॥

रामस्तमाकृष्यसुदीर्घवाहुर्दोर्भ्यांपरिष्वज्यसिषिंचनेत्रजैः॥ जलैरथांकोपरिसंन्यवेशयत्पुनःपुनःसंपरिषस्वजेविभुः७अथतामातरःसर्वाःसमाजग्मुस्त्वरान्विताः॥ राघवंद्रष्टुकामास्तास्तृषार्तागौर्यथाजलं ८ रामःस्वमातरंवीक्ष्यद्रुतमुत्थायपादयोः ॥ ववंदेसाश्रुसापुत्रमालिंग्यातीवदुःखिता ९ इतराश्चतथानत्वाजननीरघुनन्दनः॥ ततःसमागतंदृष्ट्वावशिष्ठंमुनिपुंगवं १० साष्टांगंप्रणिपत्याहधन्योऽस्मीतिपुनःपुनः ॥ यथाऽहमुपवेश्याहसर्वानिवरघूद्वहः ११पितामेकुशलीकिंमामांकिमाहातिदुःखितः ॥ बशिष्ठस्तमुवाचेदंपितातेरघुनन्दन १२ ॥

(रामःसुदीर्घवाहुः दोर्भ्यांतं आकृष्यपरिष्वज्यनेत्रजैःजलैः सिषिंच अथअंकउपरिसंन्यवेशयत् विभुः पुनः संपरिषस्वजे) भरतहिं देखि रघुनन्दन सुन्दरी लम्बायमान भुजा हैं जिनकी सो दोऊ भुजन करिकै भरत जो हैं तिनहिं उठाय करि हृदय में लगाय नेत्रन ते बहा जो आंशु जल त्यहि करिकै भिजैदिये अरु फिर गोदी पर भरत को बैठारि समर्थ प्रभु पुनः उर में लगाय राखे ७ (अथ मातरःताःसर्वाः राघवन्द्रष्टुंकामाः त्वरान्विताःसंआजग्मुः यथा तृषआर्त्ताः गौःताःजलम्) अब कौशल्या आदि यावत् माता हैं ते सब रघुनन्दन जो हैं तिनहिं देखने की अभिलाष राखे कैसे शीघ्रता युत सम्पूर्ण आवती भई जैसे प्यासकरिकै दुःखित गाईते जल जो है ताहि देख धावती हैं ८ (स्वमातरंवीक्ष्यरामःद्रुतं उत्थायपादयोःववन्देसा अतीवदुःखितासआश्रुपुत्रंआलिंग्य) आपनी माता जो हैं कौशल्या तिनहिं देखि रघुनन्दन शीघ्रहीं उठि पाँयन में परि प्रणाम कीन्हें सो कौशल्या अत्यन्त

दुःखित सहित आँशुन नेत्र पुत्रजो रघुनन्दन तिनहि उरमें लगाय लिये ९ (चइतराजननीतथारघुनन्दनःनरवाततःमुनिपुंगवम्वशिष्ठंआगतंदृष्ट्वा) पुनः सुमित्राआदि औरी जो माता रहीं तिनहिं उसी प्रकार रघुनन्दन प्रणामकीन्हे तब मुनिनमेंश्रेष्ठ जो वशिष्ठ तिनहि आवतदेखे१० (साष्टांगं प्रणिपति अस्मिधन्यःइतिपुनःपुन. आहपुनः सर्वान्एवयथाअर्हंउपवेश्यरघूद्वहआह) वशिष्ठहि साष्टांग प्रणाम करि मैं धन्य हुआ इति वारम्वार कहि पुनः सबहिन को निश्चय करि यथायोग्य सत्कार पूर्वक आसन पर बैठारि रघुवंश नाथ बोले ११ (मेपिता कुशली किंवा अति दुःखितःमांकिंआहतंवशिष्ठःइदं उवाच रघुनन्दन ते पिता) मेरा पिता कुशल पूर्वक है अथवा अत्यंत दुःखित मो प्रति क्या कहा है तिन प्रति वशिष्ठ इसप्रकार बोले कि हे रघुनन्दन तुम्हारा पिता १२॥

त्वद्वियोगाभितप्तात्मात्वामेवपरिचिंतयन् ॥ रामरामेतिसीतेतिलक्ष्मणेतिममार ह १३ श्रुत्वातत्कर्णशूलाभम्गुरोर्वचनमञ्जसा ॥ हाहतोस्मीतिपतितोरुदन् रामःसलक्ष्मणः १४ ततोनुरुरुदुःसर्वामातरश्चतथाऽपरे॥ हाहाताततमांपरित्यज्यक्वगतोसिघृणाकर १५ अनाथोऽस्मिमहावाहोमांकोवालालयदितः॥ सीताच लक्ष्मणश्चैवविलेपतुरतोभृशम् १६ वशिष्ठःशांतवचनैःशमयामासतांशुचम् ॥ ततोमंदाकिनींगत्वास्नात्वातेवीतकल्मषाः १७ राज्ञेददुर्जलंतत्रसर्वेतेजलकांक्षिणे ॥ पिण्डान्निर्वापयामासरामोलक्ष्मणसंयुतः १८॥

(त्वत्वियोगात्अभितप्तआत्मात्वांएवपरिचिन्तयन् रामरामइतिसीताइति लक्ष्मणइतिममारह) हे रघुनन्दन तुम्हारे वियोग ते सन्तप्त आत्मा तुम जो हौ तिनहिं चिन्तवन करते हुये हे राम हे राम ऐसा हे सीता ऐसा हे लक्ष्मण ऐसा पुकारते हुये प्राण त्याग किये १३ (कर्णशूलाभंगुरोर्वचनंतत् श्रुत्वाअंजसारामः सलक्ष्मणःहाहतोस्मिइतिरुदनपतितः) कानों को शूल रोग के तुल्य जो गुरू के वचन तिनहिं सुनि शीघ्रही रघुनन्दन सहित लक्ष्मण पुकारे कि हा मैं हत भया इस प्रकार रोदन करत भूमि पै गिरे १४ (ततःसर्वमातरः चअपरे तथा अनुरुरुदुःहाताताघृणाकरमां परित्यज्यक्वगतः असि) तदनन्तर सब माता पुनः औरहू जन ताही प्रकार सब पाछे रोवने लगे रघुनन्दन कहत हा पिता दया सागर मोहिं परित्याग करि कहां गयो १५ (महावाहोअनाथःअस्मिइतः मांकोवालालयतु सीताचलक्ष्मणः चएवभृशम् विलेपतुः) हे महावाहु मैं अनाथ भया विना पिता अवमोहिं कौन लाड़ दुलार करी इत्यादि प्रभुको विलाप देखि सीता पुनः लक्ष्मण ते भी निश्चय करि अत्यंत विलाप करने लगे १६ (शांतवचनैःवशिष्ठःतांशुचम्शमयामासततो मंदाकिनींगत्वास्नात्वातेवीतकल्मषः) एकदिन अवश्य मरना पुनः जाके उत्तम चारि पुत्र तिन वृद्ध महाराज के मरनेको कौन शोच इत्यादि शांत वचनन करिकै वशिष्ठ जी शोच जो रहा ताहि शांत किये तब मंदाकिनी में जाय स्नान करि सब शुद्धभये १७ (तत्रजलकांक्षिणे राज्ञेसर्वे जलंददुःरामोलक्ष्मणसंयुत. पिण्डांनिर्वापयाम) तहाँ मंदाकिनीमें रघुनन्दनके हाथ जलकीकांक्षाहै जिनको ऐसे राजादशरथके अर्थ राम जानकी लक्ष्मण ये सब तिलांजलि देते भये पुनः रघुनन्दन लक्ष्मण सहित पिण्डदान करते भये १८॥

इंगुदीफलपिण्याकरचितान्मधुसंप्लुतान् ॥ वयंयदन्नाःपितरस्तदन्नाःस्मृतिनोदिताः१९इतिदुःखाश्रुपूर्णाक्षःपुनःस्नात्वागृहंययौ॥ सर्वेरुदित्वासुचिरंस्नात्वाजग्मु

स्तथाश्रमम् २० तस्मिंस्तुदिवसेसर्वेंउपवासंप्रचक्रिरे॥ ततःपरेद्युर्विमलेस्नात्वामं दाकिनिजले २१ उपविष्टंसमागम्यभरतोराममब्रवीत् ॥ रामराममहाभाग स्वात्मानमभिषेचय २२ राज्यम्पालयपित्र्यंतेज्येष्ठस्त्वम्मेपितातथा ॥क्षत्त्रिया णामयंधर्मोयत्प्रजापरिपालनम् २३ ॥

(इंगुदीफलपिण्याकमधुसंप्लुतान्रचितान्यत् अन्नाःवयंस्मृतिनोदिताः तत्अन्नाःपितरः) इंगुदी के फल तिलन को चूर्ण मधु अर्थात् सहत डारि ताके पिण्ड बनाय रघुनाथ जी बोले कि यद्यपि हविष्य अन्न घृत दुग्ध शर्करायुत पिण्डमहाराजके देने योग्यरहैं परन्तु बनमें जो अन्न हम भोजन करतेहैं सो धर्म शास्त्रके कहेहुये वचनौंके प्रमाणते सोई अन्न पितरोंको देतेहैं इंगुदीको प्रसिद्धनाम एक निश्चय नहीं होती क्योंकि अमरमें लिखाहै ॥ इंगुदीतापसतरुर्भूर्जे चर्मिमृदुत्वचौअस्यार्थः इंगु दीतापसतरुः तापसस्यतरुः तपस्विनउपयुक्ततरुत्वात्द्वेइंगुद्याः हिंगणबेटइतिख्यातायाः द्वयोरित्युक्त त्वात्पुंसितुइंगुदः भूर्जाचर्मीमृदुत्वक्त्रीणिभूर्जवृक्षस्यपुनः महेशदत्त अमरमें भाषा तिलक किया तामें इंगुदी पांखी नाम कहा अध्यात्म भाषा तिलकमें उमादत्तगोदनी लिखा तब किसकी बात प्रमाणकरैं १९ (इतिदुःखाश्रुपूर्णअक्षःपुनःस्नात्वागृहंययौतथासर्वेसुचिरंरुदित्वास्नात्वाआश्रममजग्मुः) जो अन्न हम खातेहैं सोई पितरोंको देतेहैं इतिकहत दुःख करि आंशुभरेनेत्र पुनः स्नानकरि आश्रमहि जाते भये तैसेहीं सर्वजन बहुत बारतक रोदनकरि स्नानकरि सबै आश्रमहि जातेभये २० (तस्मिंस्तु दिवसेसर्वेंउपवासंप्रचक्रिरेततःपरेद्युःमन्दाकिनीविमलेजलेस्नात्वा) जादिन क्रिया कीन्हे तौने दिन तौ सबै जनव्रत कीन्हे दूसरे दिन मन्दाकिनी के अमल जलमें सब स्नान कीन्हे २१ (उपविष्टंरामं संआगम्यभरतःअब्रवीत्रामराममहाभागस्वआत्मानंअभिषेचय) आसनपर बैठेहुये जो रघुनन्दन तिन प्रतिजायकै भरतबोलते भये हे राम हे राम हे महाभाग आपनी जो देहहै ताहि राज्याभिषेक युत कीजिये भाव तापसवेष उतारि राज साजकरि अभिषेक कराइये २२ (यथामेपितातथाज्येष्ठःत्वं पित्र्यंराज्यंतेपालययत्प्रजाप्रतिपालनम्अयंक्षत्रियानांधर्म्मः) जैसे मेरे पिता तैसे सब भाइनमें बडे तुमहौ तातें उचितहै कि पिताकी जो राज्यहै ताहि पालन करौ अरु प्रजाको प्रतिपाल करना यही क्षत्रियोंको धर्म्म है २३ ॥

इष्ट्वायज्ञैर्बहुविधैःपुत्रानुत्पाद्यतंतवे ॥ राज्येपुत्रंसमारोप्यगमिष्यसिततोवनम् २४ इदानीवनवासस्यकालोनैवप्रसीदमे ॥ मातुर्मेदुष्कृतंकिंचित्स्मर्तुन्नार्हसिपा हिनः २५ इत्युक्त्वाचरणौभ्रातुःशिरस्याधायभक्तितः ॥ रामस्यपुरतःसाक्षाद्दण्ड वत्पतितोभुवि २६ उत्थाप्यराघवःशीघ्रमारोप्यांकेतिभक्तितः॥ उवाचभरतंरामः स्नेहार्द्रनयनःशनैः २७ शृणुवत्सप्रवक्ष्यामित्वयोक्तंयत्तथैवतत् ॥ किन्तुमामब्र वीत्तातोनववर्षाणिपंचच २८ उषित्वादण्डकारण्येपुरंपश्चात्समाविश ॥ इदानीं भरतायेदंराज्यंदत्तंमयाऽखिलम् २९ ॥

(बहुविधैः यज्ञैः इष्ट्वा तंतवे पुत्रान् उत्पाद्य पुत्रं राज्ये संआरोप्य ततः वनंगमिष्यसि) राज्यपद पर आ... राजसूय बाजपेय अश्वमेध इत्यादि बहुविधि यज्ञैकरिकै देवनको पूज्य वंशवृद्ध्यार्थंपुत्र ... न करि जब समर्थहोयँ तब ज्येष्ठ पुत्र जो होइ ताहि राज्य विषे स्थापितकरि तब

आप बनहिं जावो २४ (बनबासस्यकालः इदानीं नएवमे प्रसीदमे मातुः दुष्कृतं किंचित् स्मर्तुं न अर्हसि नः पाहि) युवावस्थामें पुत्र रहित ताते बनबास को समय अबहीं नहीं है निश्चय करिकै ताते मोपर प्रसन्नहोहु अरु मेरी माता ने जो दुष्टकर्म किया है ताहि किंचित् स्मरण करिबेके नहीं योग्यहो मेरी रक्षाकरो भाव कैकेयी विमुखहै ताके बचन प्रमाणनकरो शरणागत सेवकजानि मोहिं अपयशते बचावो २५ (इतिउक्त्वारामस्यपुरतःसाक्षात्दंडवत्भुविपतितःभक्तितःभ्रातुःचरणौशिरस्य आधाय) मेरीरक्षाकरो ऐसा कहि भरत रघुनाथजी के आगे साक्षात् दंडकी नाईं भूमिपै गिरिपरे अरु भक्तिते बड़े भाई जो रघुनाथजी तिनके दोऊ चरण शीशके ऊपर धरिलिये २६ (राघवःशीघ्रंउत्थाप्यअतिभक्तितःअंकेआरोप्यस्नेहअ.द्रनयन.राम.शनैःभरतंउवाच) रघुनाथजी शीघ्रही उठाय अत्यन्तप्रीतिते गोदमें बैठारि स्नेहकरि जलभरे नेत्र रघुनन्दन धीरा धीराकरि भरत प्रतिबोले २७ (वत्स शृणुप्रवक्ष्यामित्वयायत्उक्तंतत्तथाएवकिंतुमांतात.अब्रवीत्नवचपचवर्षाणि) हे वत्स भरत सुनौ कछु मैं भी कहताहौं तुमने जो कहा सो यथार्थ है निश्चय करिकै परन्तु मोप्रति पिता ऐसा बचन कहाहै कि नवपुनः पांच वर्षतक २९ (दण्डकारण्येउषित्वापश्चात्पुरंसमाविशइदानींमयाअखिलंराज्यभरतायदत्तः) पिताने कहा कि चौदह वर्ष तुम दण्डकबनमें बास करि पीछे अवधपुरहि आयो अरु या समयमें मैंने सम्पूर्ण आयोध्याकी राज्य भरतके अर्थ दै दियाहै यह पिताको बचनहै २६ ॥

ततःपित्रैवसुव्यक्तंराज्यंदत्तंतवैवहि ॥ दण्डकारण्यराज्यंमेदत्तंपित्रातथैवच ३० अतःपितुर्वचःकार्यं मावाभ्यामतियत्नतः ॥ पितुर्वचनमुल्लंघ्य स्वतंत्रोयस्तुवर्त्तते ३१ सजीवन्नेवमृतकोदेहांतेनिरयंव्रजेत् ॥ तस्माद्राज्यंप्रशाधित्वंवयंदंडकपालकाः३२भरतस्त्वब्रवीद्रामंकामुकोमूढ़धीःपिता॥स्त्रीजितोभ्रांतहृदयउन्मत्तोयदि वक्ष्यति ॥ तत्सत्यमितिनग्राह्यंभ्रांतवाक्यंयथासुधीः ३३ ॥ रामउवाच ॥ नस्त्रीजितःपिताब्रूयान्नकामीनैवमूढ़धीः ॥ पूर्वंसेतिश्रुततस्यैसत्यवादीददौभयात्३४॥

(ततःपित्राएवतवएवहिसुव्यक्तंराज्यंदत्तंचतथाएवपित्रादण्डकारण्यराज्यंमेदत्तं) तौ जब पिताने निश्चय करि तुमहीं को प्रसिद्ध में राज्य दिया पुनः ताहीप्रकार निश्चयकरि पिताने दण्डकबन की राज्य जोहै ताहि मोको दिया ३० (अतः आवाभ्यां अति यत्नतः पितुः वचः कार्यन्तु पितुः बचनं उल्लंघ्य य. स्वतन्त्रः वर्त्तते) इसकारणते हम तुम दोऊजने अत्यन्त यत्नपूर्वक पिताको बचनजोहै ताहि प्रतिपालकरौ पुनः पिताको बचन जो है ताहि उल्लंघ्य अनादरि जो आपनी इच्छा अनुकूल कार्य करताहै३१ (सजीवन एव मृतकः देह अंते निरयंव्रजेत् तस्मात् त्वं राज्यं प्रशाधि वयं दंडकपालकाः) हे भरत जो पितु बचन त्यागि स्वइच्छित कार्य करता है सो जीवतही निश्चय करि मरेकी तुल्यहै अरु देह त्यागे पर नरक को जाताहै ताते तुम तौ राज्य जो है ताहि पालन करौ अरु हम दडकबन को पालन करी भाव पितु आज्ञानुकूल तुम राज्य करौ हम चौदहबर्ष बन में रही ३२ (तु भरतः रामंअब्रवीत् पिता मूढ़धीः कामुकः स्त्रीजितः भ्रांत हृदय उन्मत्तः यदि वक्ष्यति तत् सत्यं इति न ग्राह्यं यथा भ्रांत वाक्यं सुधीः) पुनः भरत रघुनन्दन प्रति बोले कि पिता मूढबुद्धी कामबश स्त्री करि जीतिलियागया ताते भ्रान्त हृदय उन्मत्त नसासे खाये जो कहाहै सो सत्यहै ऐसा नग्रहण करिये जैसे भ्रान्तचित्तवाले की बातको सुबुद्धी नहींग्रहण करते हैं तथा पितुबचन नप्रमाण करौ३३ रघुनन्दन कहत (नकामी न एवमूढ़धी न स्त्रीजितः पिता ब्रूयात् सपूर्वं तस्यै इति श्रुतं सत्यवादी

भयात् ददौ) न कामी रहे न मूढबुद्धी रहें न स्त्रीके बशह्वैकै पिताने बरदेने को कहा भाव जो इसी समय बरदान नये देते तौ स्त्रीजित सूचित रहे येजो वरदान हैं सो तौ पूर्वही काल में प्रसन्नह्वैकै कैकेयी जोहै ताके अर्थ दैराखे थातीरहैं यह हम सुनाहै ताते पिता सत्यबादी रहैं आपनी प्रतिज्ञा के भंगहोनेकी भयते वरदान देतेभये ते कैसे असत्यहैं ३४ ॥

असत्याद्भीतिरधिकामहतान्नरकादपि ॥ करोमीत्यहमप्येतत्सत्यंतस्यैप्रतिश्रुतम् ॥ कथंवाक्यमहंकुर्यामसत्यंराघवोहिसन् ३५ इत्युदीरितमाकर्ण्यरामस्यभरतोऽब्रवीत् ३६ तथैवचीरवसनोवनेवत्स्यामिसुव्रत ॥ चतुर्दशसमास्त्वंतुराज्यं कुरुयथासुखम् ३७ ॥ रामउवाच ॥ पित्रादत्तंतवैवैतद्राज्यंमह्यंवनंददौ ॥ व्यत्ययंयद्यहंकुर्यामसत्यंपूर्ववत्स्थितम् ३८ ॥ भरतउवाच ॥ अहमप्यागमिष्यामि सेवेत्वांलक्ष्मणोयथा ॥ नोचेत्प्रायोपवेशेनत्यजाम्येतत्कलेवरम् ३९ इत्येवंनिश्चयंकृत्वादर्भानास्तीर्यचातपे॥मनसापिविनिश्चित्यप्राङ्मुखोपविवेशसः ४० ॥

(महतान्नरकात्अधिकां अपिअसत्यात्भीतिः एतत्अपिअहंसत्यंकरोमि इतितस्यैप्रतिश्रुतंराघवः हिसन् अहंवाक्यंकथं असत्यंकुर्याम्) प्रभु कहत हे भरत महात्मा जनन को नरकते अधिक निश्चय करिकै असत्य ते भय होती है यह दृढ़ जानो पुनः मैं जो सुना कि ये वरदान महाराज ने पूर्वही दै राखा है तब मैं ने कहा कि ये जो महाराज के दिये बचन हैं तिनहिं निश्चय करिकै मैं सत्य करौंगो भाव बन को जाउँगो इत्यादि बचन त्यहि कैकेयी के प्रसन्नतार्थ ताही प्रति सुनाय कै कहा है तौ सत्यबादी रघुबंश में उत्पन्न ह्वै कै हम अपना जो बचनहै ताहि कैसे झूठकरि सके हैं३५(इतिरामस्य उदीरितंभरतः अब्रवीत्) इत्यादि रघुनाथ जी के कहे बचन तिनहिं सुनि भरत बोले ३६ (सुव्रत तथाएवचीरवसनः चतुर्दशसमाः वनेवत्स्यामितुत्वं यथा सुखंराज्यंकुरु) भरत कहत हे सुव्रतधारी यथा आपको व्रत है तथा निश्चय करि सांचु करिबे हेत सुनि बसन धारण करि चौदहवर्ष तक बन में मैं वास करिहौं पुनः आप यथा सुखपूर्वक राज्य करो ३७ (पित्रा तव एव राज्यं दत्तं मह्यं वनं ददौ यदि अहं व्यत्ययं कुर्याम् पूर्ववत् असत्यं स्थितम्) रघुनन्दन बोले कि हे भरत पिताने तुमको निश्चय करि राज्य दियाहै अरु मेरे अर्थ बन दियाहै तामें जो बिपर्यय भाव बदलिकै रीति बन तुम्हेंदै मैं राज्य करौं तौ पूर्वकी नाईं असत्यपथपै स्थित होताहौं यह अयोग्य कैसे करौं ३८ (अहंअपिगमिष्यामि यथा लक्ष्मणः त्वां सेवे नोचेत् प्रायः उपवेशेन एतत्कलेवरंत्यजामि) भरत बोले कि जो वह न करौ तौ हमहूँ बनहिं चलैंगे जैसे लक्ष्मण तैसे मैंभी आपकी सेवा करौंगो अरु जो न साथरखिहौ तौ बहुत उपबास करिकै यह कलंकी देहैं त्यागि करिहौं ३९ (इति एवं निश्चयं कृत्वा मनसा अपि विनिश्चित्यच आतपे कुशान् आस्तीर्य सः प्रांमुखः उपविवेश) कितौ साथलेउ नाहीं तौ बिना अन्नजल रहि प्राणत्यागि हौं इत्यादिकहि यही निश्चयकरि मनकरिकै भी यही निश्चय राखि घाम में कुश बिछाय तापर सो भरत पूर्वमुख बैठे ४० ॥

भरतस्यापिनिर्बन्धंदृष्ट्वारामोऽतिविस्मितः ॥ नेत्रांतसंज्ञांगुरवेचकाररघुनन्दनः ४१ एकांतेभरतंप्राहवशिष्ठोज्ञानिनाम्वरः ॥ वत्सगुह्यंशृणुष्वेदंममवाक्यात्सुनिश्चितम् ४२ रामोनारायणःसाक्षाद्ब्रह्मणायाचितःपुरा ॥ रावणस्यवधा

र्थायजातोदशरथात्मजः ४३ योगमायापिसीतेतिजाताजनकनन्दिनी ॥ शेषो पिलक्ष्मणोजातोराममन्वेतिसर्वदा ४४ रावणंहंतुकामास्तेगमिष्यंतिनसंशयः ॥ कैकेय्यावरदानादियद्यन्निष्ठुरभाषणम् ४५ सर्वंदेवकृतंनोचेदेवंसाभाषयत्कथम् ॥

(अपिनिर्बंधंभरतस्यदृष्ट्वा रामःअतिविस्मितः रघुनन्दनः नेत्रांतसंज्ञांगुरवेचकार) निश्चय हठ कीन्हे भरत को देखि रघुनाथजी अत्यन्त विस्मित भये भाव प्रेम सत्व साहस आश्चर्यवत् भरत में जानि कछु कहि न सके तब रघुनन्दन माधुर्य चरित में हारि मानि ऐश्वर्य दर्शायवे हेत नेत्र कोरकी सज्ञा गुरु के अर्थ करते भये भाव वशिष्ठ को सनकारे कि अन्य उपाय न चली मेरी ऐश्वर्य सुनाय भरत को सावधान करौ ४० (ज्ञानिनांवरः वशिष्ठः एकांतेभरतं प्राहवत्सइदं सुनिश्चितं गुह्यममवाक्यात् शृणुष्व) ज्ञानिनमें श्रेष्ठ वशिष्ठ एकान्त में जाय भरत प्रति बोले हे वत्स यह जो निश्चय कियाहुवा भाव याकी सेवाय दूसरी भांति नहीं ह्वै सक्ता है सो गुप्त सिद्धान्त मेरे वचन ते सुनो ४१ (रामःसाक्षात् नारायणः रावणस्यवधार्थायपुराब्रह्मणायाचितः दशरथआत्मजःजातः) वशिष्ठ बोले हे भरत राम साक्षात् नारायणहैं सो रावणके वध करिवेहेत पूर्वही ब्रह्माने यांचना किया ताते दशरथ नन्दनह्वै अवतीर्ण भये भाव पूर्व ब्रह्माकी याचना पूरीकरि तब पुरको काज देखैंगे ४३ (योगमाया अपि जनकनन्दिनी सीता इति जाता शेषः अपि लक्ष्मणः जातः सर्वदा रामं अन्वेति) जिस शक्तिको नारायण को सदा संयोग रहताहै सो योगमाया जनक नन्दिनी सीता इति नाम उत्पन्नभई पुनः शेष सोई लक्ष्मण उत्पन्न भये जो सर्वदा अर्थात् सबकाल में श्री रघुनन्दन के अनुगामी भाव शुद्ध हृदय श्रद्धा प्रेमयुत स्वामी की सेवा में तत्पर रहते हैं ४४ (रावणंहन्तु कामास्ते गमिष्यंति संशयः न कैकेय्या वरदानादि निष्ठुर भाषणं यत्यत्) रावण जो है ताहि वध करिवेकी कामनाकरिकै ते तीनिहूँ जने जायँगे यामें संशय नहीं है अरु कैकेयी को वरदान माँगन आदि निठुर वचन कहन इत्यादि जोजो कार्य भया ४५ (सर्वं देवकृतं नोचेत् साएवं कथं अभापयत्) ॥

तस्मात्त्यजाग्रहंतातरामस्यविनिवर्त्तने ४६ निवर्त्तस्वमहासैन्यैर्भ्रातृभिःसहितः पुरम्॥रावणंसकुलंहत्वाशीघ्रमेवागमिष्यति४७ इतिश्रुत्वागुरोर्वाक्यंभरतोविस्मयान्वितः ॥ गत्वासमीपंरामस्यविस्मयोत्फुल्ललोचनः४८ पादुकेदेहिराजेंद्रराज्यायतवपूजिते ॥ तयोःसेवांकरोम्येवयावदागमनंतव ४९ उत्युक्त्वापादुकेदिव्येयोजयामासपादयोः ॥ रामस्यतेददौरामोभरतायातिभक्तितः ५० गृहीत्वापादुके दिव्येभरतोरत्नभूषिते ॥ रामःपुनःपरिक्रम्यप्रणनामपुनःपुनः ५१ ॥

(तस्मात्तातरामस्यनिवर्त्तनेआग्रहंत्यज) तिसकारण ते हे तात भरत श्रीरघुनाथ जीके लौटारने की जो प्रतिज्ञा दृढ़किहेहौ ताहि त्यागकरौ ४६ (भ्रातृभिःसहितःमहासैन्यैःपुरंनिवर्त्तस्वसकुलं-रावणंहत्वाशीघ्रंएवआगमिष्यति) प्रभुसों बिदामांगि भाइनकरिकैसहित महासैन्यकरिकैसहित तुमतौ अवध पुरहि लौटिजाउ अरुरघुनन्दनवनमेंरहि सहित कुल रावणहिं मारिकै शीघ्रही निश्चय करि पुरहि लौटिआवैंहिगे ४७ (इतिगुरोःवाक्यंश्रुत्वाविस्मयान्वितःविस्मयाउत्फुल्ललोचनःभरत रामस्य समीपंगत्वा) हे भरत तुम घरको जाउ रघुनन्दन ईश्वर सत्यप्रतिज्ञ रावणको मारिकै घरहिआवैंहिग इत्यादि गुरुके वचन सुनि आश्चर्ययुक्त भावमाधुर्यमें भूलेरहे ऐश्वर्यजानि प्रभावविचारि विस्मय

करिकै हर्षते नेत्र कमलवत् प्रफुल्लित जिनके ऐसे भरत रघुनाथ जीके समीपगये ४८ (राजेन्द्र राज्यायपूजितेतवपादुकेदेहियावत्तवआगमनंतावत्एवतयोःसेवांकरोमि) रघुनन्दनप्रति भरत बोले कि हे राजेंद्र राज्यकरबेके अर्थ पूजित जो आपके दोऊखड़ाऊँ हैं तिनहिं दीजिये जबतक आपको आवन होई तबतक निश्चयकरि पादुकौंकी सेवाकरिहौं ४९ (इतिउक्तःरामस्यपादयोयोजयामासते पादुकेदिव्येरामःअतिभक्तितःभरतायददौ) ऐसा कहिकै भरत जी रघुनाथ जीके पाँयन में पहिराय देतेभये ते दोऊपादुका दिव्य रघुनाथ जी अत्यन्त प्रीतिते भरतके अर्थ देदेतेभये ५० (रत्नभूषिते दिव्येपादुकेभरतःगृहीत्वापुनःरामःपरिक्रम्यपुनःपुनःप्रणनाम) रत्नजटितदेवलोकके बनेहुये अलौकिक शोभाहै जिनमें ऐसे दोऊ खड़ाऊँ भरतलैलेते भयेपुनः रघुनन्दनकी परिक्रमाकरिकै भरतजी बारम्बार साष्टांग प्रणामकरि कै ५१ ॥

भरतःपुनराहेदंभक्त्यागद्गदयागिरा ॥ नवपंचसमांतेतुप्रथमेदिवसेयदि ५२ नागमिष्यसिचेद्रामप्रविशामिमहानलम् ॥ बाढ़मित्येवतंरामोभरतंसंन्यवर्त्तय त्५३ससैन्यःसबशिष्ठश्चशत्रुघ्नसहितःसुधीःमातृभिर्मंत्रिभिःसार्द्धंगमनायोपच क्रमे ५४ कैकेयीराममेकांतेस्रवन्नेत्रजलाकुला ॥ प्रांजलिःप्राहहेरामतवराज्यवि घातनम् ५५ कृतंमयादुष्टधियामायामोहितचेतसा ॥ क्षमस्वममदौरात्म्यंक्ष मासाराहिसाधवः ५६ त्वंसाक्षाद्विष्णुरव्यक्तःपरमात्मासनातनः ॥ मायामानुष रूपेणमोहयस्यखिलंजगत् ५७ ॥

(भरतःभक्त्यागद्गदया गिरापुनःइदंआहनवपंचसमांतेतुप्रथमे दिवसेयदि) भरत भक्ति करिकै गद्गद अर्थात् प्रेम उमंगि कण्ठारोधन ह्वै अपुष्टाक्षर बानी इसप्रकार बोले कि अबतौ मैं जाताहौं परंतु चौदहबर्ष बीतेपरपुनः पहिलेही दिनजो ५२ (रामनआगमिष्यसिचेत्महाअनलम्प्रविशामि इतिएवबाढ़ंरामःतंभरतंसंन्यवर्त्तयत्) हे रघुनन्दन उसदिन न आइहौ कदाचित् तौ मैं महाप्रचंड अग्निमें पैठिजॉउगो मै उसीदिन आवोंगो यह निश्चयकरि दृढ़जानो ऐसा रघुनाथजी कहिके तिन भरतहि लौटारते भये ५३ (ससैन्यःसवशिष्ठःचशत्रुघ्नसहितःमातृभिःमंत्रिभिःसार्द्धंसुधीः गमनाय उपचक्रमे) सहित सेना सहित बशिष्ठ पुनः शत्रुहन सहित सबमाता मंत्रिन सहित सुबुद्धी भरत अयोध्यहि चलिबेहेत व्यापार प्रारम्भ करतेभये ५४ (स्रवन्नेत्रजलाकुलाकैकेयी एकांतेरामंप्रांजलिः प्राहहेरामतवराज्यविघातनम्) बहिरहाहै नेत्रोंमे आंशु जलस्व अपराध बिचारि नर्कभयते आकुल कैकेयी एकांत स्थान में बुलाय रघुनन्दन प्रतिहाथ जोरिबोलीहे रामतुम्हारी राज्यकोभंग५५ (मया कृतं मायामोहित चेतसा दुष्ट धिया ममदौरात्म्यं क्षमस्व साधवः क्षमा साराहि) मैंने आपकीराज्य भंग किया सो आपकी मायाकरिकै मोहित भया चित ताते दुष्ट भई बुद्धि सो मेरी दुष्टता क्षमाकरौ काहेते आप साधुहौ साधुन में क्षमा सार होती है ५६ (त्वंअव्यक्तः परमात्मा सनातनः साक्षात् विष्णुः माया मानुष रूपेण अखिलंजगत् मोहयसि) आप अव्यक्तभावगुप्त सबमें व्यापक परमात्मा सनातन साक्षात् बिष्णु हैं दिव्य मायामय मानुष रूप करिकै आव राजकुमार रूपबने नरनाट्यकरि सम्पूर्ण जग सुरासुर नर नागादि सबको मोहित करते हौ आव माधुर्य लीला में भूले ऐश्वर्य कोऊ नहीं जानि पावत ५७ ॥

त्वयैवप्रेरितोलोकःकुरुतेसाध्वसाधुवा ॥ त्वदधीनमिदंविश्वमस्वतंत्रंकरोतिकि म् ५८ यथाकृत्रिमनर्तक्योनृत्यतिकुहकेच्छया ॥ त्वदधीनातथामायानर्तकीवहु रूपिणी ५९ त्वयैवप्रेरिताऽहञ्चदेवकार्य्यंकरिष्यता ॥ पापिष्ठंपापमनसाकर्माच रमरिंदम ६० अद्यप्रतीतोऽसिममदेवानामप्यगोचरः॥ पाहिविश्वेश्वरानन्तज गन्नाथनमोस्तुते ६१ छिंधिस्नेहमयंपाशंपुत्रवित्तादिगोचरम् ॥ त्वत्ज्ञानामल खड्गेनत्वामहंशरणंगता ६२ कैकेय्यावचनंश्रुत्वारामःसस्मितमब्रवीत् ॥ यदा हमांमहाभागेनानृतंसत्यमेवतत् ६३ ॥

(लोकःएवत्वयाप्रेरितः साधुअसाधुवाकुरुते इदंविश्वंत्वत्अधीनंअस्वतंत्रंकिम्करोति) लोक निश्चय करिकै तुमहीं करिकै प्रेरित साधु ह्वै सुकृत करता है पुनः तुमहीं करिकै प्रेरित असाधुह्वै पाप कर्म करताहै क्योंकि यह संसार तुम्हारेही आधार है तो परबश जीव क्या करै ५८ (यथाकुहकस्य इच्छयाकृत्रिमनर्तक्यः नृत्यंतितथात्वत् अधीनामायानर्तकीबहुरूपिणी) जौनी भांति नचावनेवाले सूत्रधार की इच्छा करिकै कठपुतरी नाचती है ताही भांति तुम्हारे आधीन माया नाचनेवाली बहु ते रूपन ते नाचती है ५९ (देवकार्य्यंकरिष्यताचअरिंदमत्वयाप्रेरिता एवअहंपापिष्ठंमनसापापक र्माचरम्) देवतों को कार्य करने को पुनः हे शत्रु नाशन तुम करिकै प्रेरित निश्चय करिकै मैं पापी मन करिकै पाप कर्म करती भई ६० (देवानांअपिअगोचरः अद्यममप्रतीतः असिविश्वेश्वरअनन्त जगन्नाथतेनमोस्तुपाहि) कैकेयी कहत कि देवन को भी निश्चय करिकै अगोचर भाव नहीं जानि सकै ऐसे गूढ़तत्त्व जो आपसो आजु मैंने जाना ऐश्वर्य रूप में विश्वास भई है विश्वेश्वर हे अनंत हे जगन्नाथ तुम्हारे अर्थ नमस्कार है मेरी रक्षा करो ६१ (पुत्रवित्तादि गोचरम्स्नेहमयम्पाशंअमलज्ञा नखड्गेनछिंधिअहंत्वांशरणंगता) कैकेयी कहत हे रघुनन्दन पुत्र धनादि विषयमें लगा हुआ जो स्नेहरूप फांसहै ताहि अमल ज्ञानरूप तरवारि करिकै काटिये क्योंकि अब मैं सब भरोसाहीन केवल आपही की शरण आई हौं ६२ (कैकेय्यावचनंश्रुत्वासस्मितंरामः अब्रवीत् महाभागेयत्मांआहतत् एवसत्यन्न अनृतं) कैकेयी कहा जो वचन है ताहि सुनि सहित मुसुकानि रघुनन्दन बोले हे महा भागे जो मो प्रति तुमने कहा सो निश्चय करिकै सत्यहै नहीं झूठ है भाव सब कार्य मेरी इच्छा ते भया तुम्हारा दोष नहीं है ६३ ॥

मयैवप्रेरितावाणीतववक्त्राद्विनिर्गता ॥ देवकार्यार्थसिद्ध्यर्थमत्रदोषःकुतस्तव६४ गच्छत्वंहृदिमांनित्यंभावयंतीदिवानिशम् ॥ सर्वत्रविगतस्नेहामद्भक्त्यामोक्ष्यसे ऽचिरात् ६५ अहंसर्वत्रसमदृक्द्वेष्योवाप्रियएववा ॥ नास्तिमेकल्पकस्येवभ जतोऽनुभजाम्यहम्६६ मन्मायामोहितधियोमामम्बमनुजाकृतिम् ॥ सुखदुःखा द्यनुगतंजानन्तिनतुतत्त्वतः ६७ ॥

(देवकार्य्यार्थसिद्धिअर्थमयाप्रेरितवाणीएवतवबक्त्रात्विनिर्गताअत्रतवकुतःदोषः) कैकेयी प्रति प्रभु कहत कि देवनको कार्यके सिद्धकरने हेत भाव रावणादि खलनको नाश करनेहेत बनको अवश्य आवनारहै उधर पिता राज्याभिषेक साजा तामें विघ्न करनेहेत हम करिकै प्रेरितशारदा निश्चय करि तुम्हारे मुखते कढ़ीवरमाँगनादि कठोरवाणी तामें तुम्हारा क्या दोषहै ६४ (त्वंगच्छसर्वत्रविग

तस्नेहा दिवानिशंनित्यंहृदिमांभावयंतीमत्भक्त्याअचिरात्मोक्षसे) तुम जाउ सब सों प्रीति त्यागि दिनों राति नित्यहीं हृदयमें मेरा ध्यानकरतीरहौ इतिमेरी भक्ति करिकै थोरेही कालमें भवबंधनते छूटि परमपद पावहुगी ६५ (द्वेष्यःवाएवप्रियवामेनअस्तिकल्पकस्यइवअहंसर्वत्रसमदृक्भजतःअनु अहंभजामि) किसामें विरोध वा निश्चयकरि किसीमें प्रीति यह मेरे नहीं है कल्पंककी नाईं सर्बत्र समदृष्टि राखताहौं तामें जो कोऊ मोहिं भजताहै ताहि में भी भजाताहौं अर्थात् कैकेयी प्रति रघुनाथजी आपनी रीति कहते हैं कि काहूजीव सो विरोध काहूजीवसों प्रीति यह रीतिमेरी द्विगिते नहीं है कौन भांति जैसेमाटी काठ वसनयातु इत्यादिकनकी वस्तुनके बनावनेवालेको आपनी बनाई हुई वस्तुनमें किसीपर प्रीति किसी पर विरोध नहीं होताहै सबपर बराबरि प्रीति होती है ताहीभांति पिपीलिकाते ब्रह्मापर्यन्त भूतमात्रमेराबनाया है तिन सबपर मेरी बराबरिही प्रीतिहै तिनमें जोजीव मेरी सन्मुख है जैसी प्रीति करताहै ताके हेत तैसेही प्रीतिवंत मैं भी देखातहौं ६६ (अम्बमत्माया मोहितधियःमांसुखदुःखादिअनुगतम्मनुजाकृतिम्जानंतितुतत्त्वतःन) हे मातः मेरी माया करिकै मोहितहै बुद्धिजिनकी ऐसे मनुष्य मोहिं सुख दुःखादि लौकिक धर्मोंमें प्राप्त मनुष्यही जानते हैं पुनः मेरा तत्व नहीं जानते हैं भाव इन्द्रीमनादि प्रकृति कारण रहित स्वयंप्रकाशवंत अखंड आनन्द सदा एकरस ऐसा तत्त्व करि नहीं जानतेहैं नरनाट्यमें भूलेपरे हैं ६७ ॥

दिष्ट्यामद्गोचरंज्ञानमुत्पन्नंतेभवापहम् ॥ स्मरंतीतिष्ठभवनेलिप्यसेनचकर्मभिः ६८ इत्युक्तासापरिक्रम्यरामंसानंदविस्मया ॥ प्रणम्यशतशोभूमौययौगेहंमुदान्विता ६९ भरतस्तुसहामात्यैर्मातृभिर्गुरुणासह ॥ अयोध्यामगमच्छीघ्रंराममेवानुचिंतयन् ७० पौरजानपदान्सर्वानयोध्यायामुदारधीः॥स्थापयित्वायथान्यायंनन्दीग्रामंययौस्वयम् ७१ तत्रसिंहासनेनित्यंपादुकेस्थाप्यभक्तितः ॥ पूजयित्वायथा रामंगंधपुष्पाक्षतादिभिः ॥ राजोपचारैरखिलैःप्रत्यहंनियतव्रतः ७२ ॥

(भवापहम्मद्ज्ञानंतेदिष्ट्यागोचरंउत्पन्नंस्मरंतीभवनेतिष्ठवकर्म्मभिःनलिप्यसे) संसार रूप रुज को नाशक दिव्य औषध सम मेराज्ञान तुम्हारी दृष्टि विषय ह्वै उत्पन्न भया भाव मेरा तत्त्व देखि परा इसी भांति मोहिं स्मरण करती हुई घर में वास करु तौ कर्मन करिकै न बन्धन में परैगी भाव कर्मतोकों न लागैंगे ६८ (इति उक्तासाविस्मया सानन्दरामं परिक्रम्यभूमौशतशो प्रणम्यमुदान्विता गेहंययौ) मोहिं स्मरत रहेउ तुमको कर्म न लागैंगे इति रघुनन्दन कहे तब सो कैकेयी आश्चर्यमाना भाव कुलवन्ती पतिव्रता राम सनेही ह्वै कुल धर्म त्यागि हठ करि पतिके प्राण हरि राम ते विमुखता इति मेरे महा पाप शरण मात्रते माफ कीन्हें ऐसे शरणपाल क्षमावन्त कृपा सिन्धु हैं इति विस्मय करि सहित आनन्द रघुनन्दनहिं परिक्रमा करि भूमि में सैकड़ों प्रणाम करिकै आनन्दयुत घरै जाती भई ६९ (तुमातृभिः अमात्यैः सहगुरुणासहभरतः रामंएवअनुचिन्तयन् शीघ्रंअयोध्यांअगमत्) पुनः मातन करिकै मंत्रिनकरिकै सहित गुरु वशिष्ठ करिकै सहित भरतजी रघुनन्दन जो हैं तिनहिं निश्चयकरि चिन्तवन करते हुये शीघ्रही अयोध्यहि जाते भये ७० (अयोध्यायांउदारधीःपौर जानपदान्सर्वान्यथान्यायंस्थापयित्वास्वयंनन्दीग्रामंययौ) अयोध्याविषे आयउदारधी अर्थात् सरलहै बुद्धि जिनकी ऐसे भरतजी पुरवासी अरु राज्यके वासी सब तिनहिं जो जिमकार्यके योग्य रहै ताको ताही कार्यपरस्थापित करि पुनः आपु भरत नन्दीग्रामहिगये ७१ (तत्रभक्तितःसिंहासने पादुकेस्था

प्यप्रतिअहंनियतव्रतःनित्यंअखिलैःराजोपचारैःगंधपुष्पअक्षतादिभिःयथारामंपूजयित्वा) तहांनन्दी ग्राममें भरतजी भक्तिते अर्थात् प्रीतिते सिंहासनके ऊपरखड़ाउनको स्थापित करिप्रति दिन नेम ब्रत से नित्यही सम्पूर्ण राजसी उपचार यथाछत्र चमर ब्यजनादि करिकै अरुचंदनफूल अक्षत इत्यादि करिकै जैसे रघुनाथजी तैसेही मानि खड़ाउन को पूजते हैं ७२ ॥

फलमूलाशनोदांतोजटावल्कलधारकः ॥ अधःशायीब्रह्मचारीशत्रुघ्नसहितस्त दा ७३ राजकार्याणिसर्वाणियावंतिपृथिवीतले ॥ तानिपादुकयोःसम्यक्निवेदय तिराघवः ७४ गणयन्दिवसान्येवरामागमनकांक्षया ॥ स्थितोरामार्पितमनाःसा क्षात्ब्रह्ममुनिर्यथा ७५ रामस्तुचित्रकूटाद्रौवसन्मुनिभिरावृतः ॥ सीतयालक्ष्म णेनापिकिंचित्कालमुपावसन् ७६ नागराश्चसदायांतिरामदर्शनलालसाः ॥ चि त्रकूटस्थितंज्ञात्वासीतयालक्ष्मणेनच ७७ दृष्ट्वातज्जनसंवाधंरामस्तत्याजतंगिरि म् ॥ दण्डकारण्यगमनेकार्यमप्यनुचिंतयन् ७८ ॥

(तदाशत्रुघ्नसहितः जटावल्कलधारकः फलमूलअशनः दांतः ब्रह्मचारीअधःशायी) तब शत्रु- घ्न सहित भरत शीश में जटा तनमें बल्कल बसन धारण करि फल मूलादि भोजन करि इन्द्रियों को दमन करते हुये ब्रह्मचर्य व्रत ते भूमि में शयन करने लगे ७३ (पृथिवीतलेयावंतिराजकार्याणि तानिसर्वाणिराघवः पादुकयोः सम्यक्निवेदयति) आमदि खर्च रक्षा दण्ड सेना सुभट बाहनादि सार सँभार देशों की खबरि इत्यादि पृथिवी तल बिषे जहां तक राज काज हैं तोन सब भरत जी पादुकन के आगे सत्य सत्य सुनाय देते हैं ७४ (रामअर्पितमनः यथासाक्षात् ब्रह्ममुनिः स्थितःराम आगमनकांक्षयादिवसानिएवगणयन्) रघुनंदन बिषेमन अर्पित किहे जैसे साक्षात् ब्रह्मवेत्तामुनिबैठे हैं रघुनन्दन के आवने की कांक्षाकरिकै ज्योंज्यों दिनबीततेहैं त्योंत्यों शेषदिन निश्चय करि गनाकर ते हैं ७५ (तुरामःसीतयालक्ष्मणेन मुनिभिःआवृतःचित्रकूटाद्रौवसनअपिकिंचित्कालंउपावसन्) पुनः रघुनन्दन जानकी लक्ष्मण सहित मुनिन करिकै युक्त चित्रकूट पर्वतमें वासकरतसंते निश्चय करि कछुकाल इहैंरहे गेरहबर्ष गेरहमास बीसदिन अग्निवेशकोमत७६ (चित्रकूटस्थितंज्ञात्वासीतया चलक्ष्मणेनरामदर्शनलालसानागरश्चसदायांति) चित्रकट में वासकिहे जानिकै जानकी पुनः लक्ष्मण करिकै सहित रघुनन्दन के दर्शन की लालसाकरिकै अवधवासी पुनः देशवासी सदाजातेहैं चित्रकूटहि ७७ (जनसंवाधंतत्दृष्ट्वाकार्यंअनुचिंतयन्दण्डकारण्यगमनेरामःतत्याजतंगिरिम्) जन आवनकी भीरसो देखिपुनः रावणादि बधसोकार्य चिंतवनकरि दण्डक वनमें जानेहेत रघुनाथजी सो वास चित्रकूट को त्यागि आगे को चले ७८ ॥

अन्वगात्सीतयाभ्रात्राह्यत्रेराश्रममुत्तमम्॥सर्वत्रसुखसंवासंजनसंवाधवर्जितम् ७९ गत्वामुनिमुपासीनंभासयंतंतपोवनम् ॥ दण्डवत्प्रणिपत्याहरामोहमभिवादये ८० पितुराज्ञांपुरस्कृत्यदण्डकानहमागतः ॥ वनवासमिषेणापिधन्योहंदर्शनात्तव ८१ श्रुत्वारामस्यवचनंरामंज्ञात्वाहरिंपरम् ॥ पूजयामासविधिवद्भक्त्याप्परमयामुनिः ८२ वन्यैःफलैःकृतातिथ्यमुपविष्टंरघूत्तमम्॥सीतांचलक्ष्मणंचैवसंतुष्टोवाक्यमब्रवीत् ८३ भार्य्यामतीवसंवृद्धाह्यनुसूयेतिविश्रुता ॥ तपश्चरंतीसुचिरंधर्म्मज्ञाधर्म्मवत्सला ८४॥

(जनसंवाधवर्जितंसर्वत्रसुखवासंउत्तमंहिअत्रेः आश्रमंसीतयाभ्रात्राअन्वगात्) जनोंकी भीर रहित एकांत जगहबन नदी पहारके बीचमें जहां सर्वत्र सुख पूर्वक वासकरिबे योग्य उत्तम निश्चयकरि अत्रिमुनिको जो आश्रमहै तहांको जानकी लक्ष्मण सहित रघुनन्दनगये ७९ (गत्वातपोवनंभासयंतंउपासीनंमुनिंदण्डवत्प्रणिपत्याहअहंरामःअभिवादये) आश्रमहि गये देखे कि तपोवन जो है ताहि प्रकाशमानकरि रहेहैं आसन पर बैठे जो अत्रिमुनि तिनहिंदण्ड प्रणामकरि बोले कि मैं रामहौं प्रणाम करने अर्थ आयाहौं ८० (पितुःआज्ञांपुरस्कृत्यअहंदण्डकान्आगतःवनवासंइपेणअपितवदर्शनात्अहंधन्यः) पिताकी आज्ञा करिकै हम दण्डकवनहिं आयेहैं वनवासके वहाने निश्चय करिकै आपके दर्शनते हम धन्य भये ८१ (रामस्यवचनंश्रुत्वापरंहरिंरामंज्ञात्वापरमयाभक्त्यामुनिःविधिवत्पूजयामास) रघुनाथजी के वचन सुनिकै परमहरि रघुनन्दनहिं जानिकै परम भक्ति करिकै अत्रिमुनि विधिवत् षोडशोपचार यथावेदमें लिखाहै ताहीविधिते पूजतेभये ८२ (वन्यैःफलैःआतिथ्यंकृत्वासीतांचलक्ष्मणंचएवरघूत्तमंउपविष्टंसंतुष्टःवाक्यंअब्रवीत्) वनकरिकै उपजेहुये फलोंकरिकै आतिथ्यकिये भोजन कराये पुनः सीतालक्ष्मण पुनः निश्चय रघुनन्दनहि बैठेदेखि अत्रिमुनि प्रसन्न ह्वै बचनबोले ८३ (अनसूयाइतिविश्रुताभार्य्याअतीवसंवृद्धाहिधर्म्मज्ञाधर्म्मवत्सलासुचिरतपश्चरंती) रघुनन्दन प्रति अत्रिमुनिबोले कि अनसूया ऐसा प्रसिद्धहै नाम जाको यहमेरी भार्य्या अत्यन्त वृद्धहै निश्चयकरि धर्म्मको जाननेवाली धर्म्ममें प्रीतिहै जाकी सो वहुत कालसे तपकरती हुई आंवस्त्री धर्ममें प्रवीनहै ८४ ॥

अंतस्तिष्ठतितांसीतापश्यत्वरिनिषूदन ॥ तथेतिजानकींप्राहरामोराजीवलोचनः ८५ गच्छदेवींनमस्कृत्यशीघ्रमेहिपुनःशुभे ॥ तथेतिरामवचनंसीताचापितथाकरोत् ८६ दण्डवत्पतितामग्रेसीतांदृष्ट्वाऽतिहृष्टधीः ॥ अनसूयासमालिंग्यवत्से सीतेतिसादरम् ८७ दिव्येददौकुण्डलेद्वेनिर्मितेविश्वकर्मणा ॥ दुकूलेद्वेददौतस्यै निर्मलेभक्तिसंयुता ८८ अंगरागंचसीतायैददौदिव्यंशुभानना ॥ नत्यक्ष्यतेऽङ्गरागेणशोभात्वांकमलानने ८९ पातिव्रत्यंपुरस्कृत्यराममन्वेहिजानकि ॥ कुशली राघवोयातुत्वयासहपुनर्गृहम् ९० ॥

(अरिनिषूदनअंतःतिष्ठंतितांसीतापश्यतुतथाइतिराजीवलोचनःरामःजानकींप्राह) अत्रि कहत हे शत्रुनाशन रघुनन्दन सो अनसूया आश्रमके भीतर बैठी है ताहि सीताजाय दर्शनकरैं तब प्रभुबोले कि यथा आपकहेउ तैसाहीहोय इति कहि कमल नयन रघुनन्दन जानकी प्रतिबोले ८५ (शुभेगच्छदेवींनमस्कृत्यपुनःशीघ्रंएहितथाइतिचसीताअपिरामवचनंतथाअकरोत्) प्रभु कहे कि हेमंगलरूपे देवी जो अनसूया ताहि प्रणामकरि पुनः शीघ्रही मेरेढिग आवौ तैसाहीहोय इति कहि पुनः सीता जैसे रघुनन्दनके बचनरहैं तैसाही करती भई भावजाय प्रमाण कीन्ही ८६ (अग्रेदण्डवत्पतितांसीतांदृष्ट्वाअनसूयाअतिहृष्टधीवत्सेसीताइतिसादरम्संआलिंग्य) आगेदंडकी नाईं प्रणामकरती परीजो सीता तिनहिं देखि अनसूया अत्यन्त आनन्द बुद्धितेबोलीं हे वत्से सीता उठो इति कहि सहित आदर हृदयमें लगायलिये८७(विश्वकर्मणानिर्मितेदिव्येद्वेकुण्डलेददौतस्यैभक्तिसंयुताद्वेदुकूलेनिर्मले ददौ)विश्वकर्मा करिकै बनायेहुये द्वैदिव्य देवलोकके ऐसे कुंडलदिये तथा अनसूयाजी तिन जानकी

के अर्थ प्रीति सहित है वस्त्र अमलदेतीभई भाव जो सदानवीन रहैं मलीनकबहूंनहोयँ ८८ (चक्षु भाननादिव्यंअंगरागंसीतायैददौकमलाननेअंगरागेणत्वांशोभानत्यक्षते) पुनः मंगलीक मुखहै जिन को ऐसी अनसूया दिव्य अंगराग अर्थात् केशरि कस्तूरी अगर कंकोल कर्पूर चन्दनमें उताराहुआ अंगमें लगावनेहेत ताहि सीताके अर्थ देतीभई ताको गुण कहत हे मंगलबदने सीते जो याको अंग में लगावौगी तौ इसअंगराग करिके तुमहिं शोभाकबहूंन परि त्यागकरैगी सदाबनीरहैगी ८९ (जान किपातिव्रत्यंपुरस्कृत्यरामंअन्वेहित्वयासहराघवःकुशलीपुनःगृहमूयात्) भूषण वसन पहिराय अंग रागलगाय अनसूयाजी बोलीं हे जानकि पातिव्रत धर्म की जो उत्तमरीतिं है यथा शिवपुराणे स्वप्नेपियन्मनोनित्यंस्वपतिंपश्यतिध्रुवम् ॥ नान्यंपरपतिंभद्रेउत्तमासापतिव्रता ।। अर्थात् सेवाय अपना पति दूसरे पतिको स्वप्नेहूमें न देखना इति जोउत्तम पातिव्रत है ताही रीतिते रघुनन्दनकी सेवाकरौ अर्थात् सर्वांग भूषण बसन अंगराग युत तन शुद्ध मनप्रेम सहितप्रिय बचनयुत दिनौ राति निरालस श्रद्धा सहित रघुनन्दनकी सेवाकरौ हेजानकीजी तुम करिकै सहित रघुवंशनाथ चौदहबर्ष बादि कुशल सहित पुनः घरहि लौटि आवहिंगे ९० ॥

भोजयित्वायथान्यायंरामंसीतासमन्वितं ।। लक्ष्मणंचतथारामंपुनःप्राहकृतांज लिः ९१ रामत्वमेवभुवनानिविधायतेषांसंरक्षणायसुरमानुषतिर्यगादीन् ॥ देहान्बिभर्षिनचदेहगुणैर्विलिप्तस्त्वत्तोविभेत्यखिलमोहकरीचमाया ९२ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसम्वादेअयोध्याकांडेनवमःसर्गः ९ ॥

(सीतासमन्वितं रामंच तथा लक्ष्मणं यथान्यायं भोजयित्वा पुनः कृतांजलिःरामंप्राह) जनक नन्दिनी सहित रघुनन्दन जो हैं तिनहिं पुनः ताहीप्रकार लक्ष्मण जो हैं तिनहिं यथा न्याय अर्थात् जैसा वेदमें लिखाहै ताही रीतिते उत्तम फल मूलादि भोजन कराये जब अचवन करिबैठे तब पुनः अनसूया हाथ जोरि रघुनन्दन प्रति बोलीं ९१ (रामत्वं एव भुवनानि विधाय तेषां रक्षणाय सुर मानुष तिर्यक् आदीन् देहान्बिभर्षिच देहगुणैःन विलिप्तःच अखिल मोहकरी माया त्वत्तोबिभेति) अनसूया कहत हे रघुनन्दन आपही निश्चय करि सब भुवन जोहैं तिनहिं रचेउ पुनः तिनकी रक्षा करने हेत सुर यथा हरि सनकादि वामन तथा मानुप यथा कपिल मनु पृथु परशुराम रघुबीरादि तिर्य्यक् मत्स्य कमठ बाराह इत्यादि देहैं धरि लोकन की रक्षा करतेहौ अरु इन्द्री विषय कामादि तम रज सत्वादि देहके गुणन करिकै लिप्त नहीं होतेहौ क्योंकि सम्पूर्ण संसारको मोहित करनहारी जो मायाहै सो आपको डराती है ताते सदा एकरस ज्ञान अखंड आनन्द रूपहौ ९२ पद ॥ पिय के मिलने करु चाह नई जुवृथा लरिकाई गई सुगई १ जग मोह पिता ममता जननी तजु लोभ कुबन्धु इषा भगनी अलिइन्द्रिय संगति शोकलई विषयासकुखेल कई सुकई २ जल प्रेम सुमज्जन शुद्ध घटै धरि धर्म दयादिक शीलपटै बुधि लोचन अंजन ज्ञानमई सिंदुरा अँग राग चई सुचई ३ श्रवणादि विभूषित अंग किये नथशांति सबै गुणमाल हिये शरणागत चादर ओढ़ि नई चलुयों ध्रुव आतम दईसुदई ४ करु घूँघुट ध्यान सुभक्तिपरे तुरिया पति सेज सु अंक भरे पतिको प्रिय बैज सु नाथ भई बिलसौ बय नित्य नई सुनई ५ ॥

इतिश्री रसिक लताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतबैजनाथविरचितेअध्यात्मभूषणे अयोध्याकांडेनवमःप्रकाशः ९ ॥

अथ आरण्यकाण्ड सटीक ॥

श्रीमहादेवउवाच ॥ अथतत्रदिनंस्थित्वाप्रभातेरघुनन्दनः॥ स्नात्वामुनिंसमामंत्र्यप्रयाणायोपचक्रमे १ मुनेगच्छामहेसर्वेमुनिमण्डलमण्डितम् ॥ विपिनंदण्डकंयत्रत्वमाज्ञातुमिहार्हसि २ मार्गप्रदर्शनार्थायशिष्यानाज्ञप्तुमर्हसि ॥ श्रुत्वारामस्यवचनंप्रहस्यात्रिर्महायशाः३ सर्वस्यमार्गद्रष्टात्वंतवकोमार्गदर्शकः॥ तथापिदर्शयिष्यंतितवलोकानुसारिणः४इतिशिष्यान्समादिश्यस्वयंकिञ्चित्तमन्वगात् ॥ रामेणवारितःप्रीत्याअत्रिःस्वभवनंययौ ५ ॥

सवैया ॥ ऋषि आयसु बंदि सशिष्य चले बन घोर बिराध मिलो सुतदा। यह गंध्रव राक्षस रूप भयो दुर्बास जु शाप दिये सकदा॥ त्यहिमारि उधारि स्वभक्तिदिये बिनती करिगो निज आसपदा। सिय सानुज राघव हीय बसो मम बैजनाथ नमामि सदा॥ (तत्रदिनंस्थित्वाअथप्रभातेरघुनन्दनः स्नात्वाप्रयाणायमुनिंसंआमंत्र्यउपचक्रमे) शिवजी कहत हेगिरिजा जिस दिन चित्रकूट ते चले ता दिन अत्रि मुनि के आश्रम में बास कीन्हे रात्री बिगत जब भोर भया ता समय में रघुनन्दन मंदाकिनी में स्नान करि पुनः आगे चलिबे हेत मुनि प्रति मंत्र किये सलाह पूँछे १ (मुनेयत्रमुनिमण्डलमंडितंदंडकंविपिनं सर्वेगच्छामहेइहआज्ञातुंत्वंअर्हसि) अत्रि प्रति रघुनन्दनबोले हे मुने जहां मुनि वृन्द करिके शोभित ऐसा जो दंडक बन तहां को हम सब जने जावा चाहते हैं सो या समय में हमहिं आज्ञा देने को आपही योग्य हौ २ (मार्गप्रदर्शनार्थायशिष्यान् आज्ञप्तुंअर्हसि रामस्यवचनंश्रुत्वामहायशःअत्रिःप्रहस्य) बन में राह देखावने हेत शिष्य जो हैं तिनहिं आज्ञा देने के योग्य हौ भाव शिष्यनको पठावो हमको राह बताय आवैं ऐसे माधुर्य रघुनन्दनके बचन सुनि महा यशी अत्रि हँसि के बोले ३ (त्वंसर्वस्यमार्गद्रष्टातवमार्गदर्शकः कः तथापि लोक अनुसारिणः तवदर्शयिष्यंति) अत्रि बोले कि हे रघुनाथ जी आप सबन को मार्ग देखावने वाले हौ भाव सुधर्म मार्ग चलावने हेत अवतीर्ण भयो तौ आप को सुमार्ग दर्शावने वाला संसार में कौन है ताहू पर जो आप राजकुमार बने लोक रीति चलते हौ ताते शिष्य लोग आप को मार्ग देखाय आवहिंगे ४ (इति शिष्यान् सं आदिश्यकिञ्चित्स्वयंमन्वगात् प्रीत्यारामेण वारितः अत्रिः स्वभवनंययौ) इत्यादि कहि शिष्य जो

रहे तिनहिं आज्ञा दै साथ कीन्हें पठावने हेत कुछ दूरि आपहू गये जब बड़ी प्रीति करिकै रघुनाथ जी ने लौटारा तब अत्रि आपने मन्दिर गये ५ ॥

क्रोशमात्रंततोगत्वाददर्शमहतींनदीम् ॥ अत्रेःशिष्यानुवाचेदंरामोराजीवलोचनः ६ नद्याःसंतरणेकश्चिदुपायोविद्यतेनवा ॥ ऊचुस्तेविद्यतेनौकासुदृढ़ारघुनन्दन ७ तारयिष्यामहेयुष्मान्वयमेवक्षणादिह ॥ ततोनाविसमारोप्यसीतांराघवलक्ष्मणौ ८ क्षणात्संतारयामासुर्नदींमुनिकुमारकाः ॥ रामाभिनंदिताःसर्वेजग्मुरत्रेरथाश्रमम् ९ तावेत्यविपिनंघोरंझिल्लीझंकारनादितम् ॥ नानामृगगणाकीर्णसिंहव्याघ्रादिभीषणम् १० राक्षसैर्घोररूपैश्चसेवितंरोमहर्षणं ॥ प्रविश्यविपिनंघोरंरामोलक्ष्मणमब्रवीत् ११ ॥

(ततः क्रोशमात्रं गत्वा महतीं नदीम् ददर्श राजीव लोचनः रामः अत्रेः शिष्यान् इदं उवाच) तदनन्तर कोश भरि गयो तहां एक बड़ी भारी अगाध नदी देखतेभये तब कमल नयन रघुनन्दन अत्रिके शिष्यन प्रति इसप्रकार बचन बोलतेभये ६ (नद्याःसंतरणे उपायः कश्चित् विद्यते वानते ऊचुः रघुनन्दन सुदृढा नौका विद्यते) रघुनन्दन पूछे कि नदी उतरनेकी उपाय पुल नाव घन्नई इत्यादि में कछु है वा नहीं है सो सुनि मुनि शिष्य बोले हे रघुनन्दन सुंदर पुष्ट नावहै ७ (वयं इहक्षणात् एव युष्मान् तारयिष्यामहे ततः सीतां राघव लक्ष्मणौ नावि समारोप्य) शिष्य लोग कहे कि नावपर बैठारि हमलोग इसी क्षणमें निश्चय करि तुमहिं नदीपार उतारि देइँगे तदनन्तर सीता जोहैं तिनहिं रघुनन्दन लक्ष्मण जोहैं तिनहिं नावमें बैठारे ८ (मुनिकुमारकाःक्षणात् नदीः संतारयामासुः रामाभि नंदिताः सर्वे अथ अत्रेः आश्रमं जग्मुः) मुनिबालक नाव को खेइ क्षणभरे में नदी के पार उतारि दिये तब रघुनन्दन आनन्दह्वै प्रशंसा करि बिदाकिये तब सब अत्रिके आश्रमहि जातेभये ९ (तौ विपिनं घोरं एत्य झिल्लीझंकार नादितं नानामृगगणाः आकीर्ण सिंहव्याघ्रादि भीषणम्) श्री रामलक्ष्मण दोऊ बन जो भयंकर है तहां प्राप्त भये कैसा भयङ्कर है जहां झिल्ली पतंगसरीखे मैलोकीटसो झींगुर कैसो झंकार शब्दकारिरहेहैं अनेक भांति मृगनकेझुंडभरे हैं सिंह व्याघ्र आदि भयंकर जीव बहुतहैं १० (च घोर रूपैः राक्षसैः सेवितं रोम हर्षणम् घोरंविपिनं प्रविश्य रामः लक्ष्मणम् अब्रवीत्) पुनः भयंकररूप राक्षसों करिकै सेवित जिसकोदेखे रोमखड़े होत ऐसा भयंकर जो वन है तामें पैठे तब रघुनन्दन लक्ष्मण प्रति बोलतेभये ११ ॥

इतःपरंप्रयत्नेनगंतव्यंसहितेनमे ॥ धनुर्गुणेनसंसज्यशरानपिकरेदधत् १२ अग्रेयास्याम्यहंपश्चात्त्वमन्वेहिधनुर्धरः ॥ आवयोर्मध्यगासीतामायेवात्मपरात्मनोः १३ चक्षुश्चारयसर्वत्रदृष्टरक्षोभयंमहत् ॥ विद्यतेदण्डकारण्येश्रुतपूर्वमरिंदम १४ इत्येवंभाषमाणौतौजग्मतुःसार्द्धयोजनम् ॥ तत्रैकापुष्करिण्यास्तेकह्लारकुमुदोत्पलैः १५ ॥

(इतः परंमे संगेन प्रयत्नेन गन्तव्यं गुणेन धनुः संयोज्य करेशरान् अपि दधत्) रघुनन्दन बोले हे लक्ष्मण इहांते आगे मेरे साथ यत्नकरिकै चलना चाहिये कौन यत्न सो करिकै धनुष युक्त करौ भाव धनुष चढ़ाय बामहाथ में राखौ अरु दक्षिण हाथमें बाण जो हैं तिनहिं निश्चय करि धारण

किहेरहौ १२ अग्रे अहं यास्यामि पश्चात् धनुःधरः त्वं अन्वेहि आत्म परात्मनोः मायाइव सीता आवयो र्मध्यगा) रघुनन्दन वोले हे लक्ष्मण आगे तौ हमचलें अरु पाछे धनुपवाण धरे तुम चलो पुनः यथा आत्मा परात्माके वीच माया रहती है ताही भांति सीता हमारे तुम्हारेमध्यमें चलें यह प्रभुको बचन लोक शिक्षात्मक उपदेशहै अर्थात् माया तीनि हैं एक अविद्या जो वीच परि जीव परत्माते भेद करावत ताते देह बुद्धीते विपयासक्त रहत दूसरी विद्या माया जो वीच परि जीव परमात्मते सम्वन्ध करावत ते जीव बुद्धीते परमात्मके प्राप्तिहेत उपाय अर्थात् विवेक विरागादि ज्ञानके साधन करत तीसरी आह्लादिनी माया जो वीचपरि जीवके अन्तर परब्रह्मकी दीप्ति प्रकाशत तव आत्मबुद्धिते परमात्म की भक्ति करत इत्यादि आत्म परात्म के वीच आह्लादिनी माया अर्थात् भक्तिरहत सोजाभांति भक्तजन भक्ति परदृष्टि राखत तैसेजानकीपर दृष्टिराखौ १३ (अरिंदमपूर्वं श्रुतं दंडकारण्ये रक्षो महत् भयं विद्यते दृष्टं सर्वत्र चक्षुः चारय) प्रभु वोले हे शत्रुनको नाशकरने वाले लक्ष्मण ऋषिलोगनके मुखते हम पूर्वेही सुनाहै कि दंडक वनविषे राक्षसोंते वड़ी भयहै सोई प्रसिद्ध अनेकप्रकारके अशकुन देखिपरते हैं भाव कछुभय आगम देखाताहै ताते सव दिशों में दृष्टि करते सजग चलो १४ (इतिएवं भापमाणौ तौ सअर्द्ध योजनं जग्मतुः तत्र एका पुष्करिण्या आस्ते कल्हार कुमुद उत्पलैः) इसी भांति वार्ता करत दोऊ डेढ़ योजन गये तहां एक भीलमिली जिसमें श्वेत कमल कोकी पुनः कोकीके तुल्य साधारण कमल इत्यादि करिकै शोभितहै १५ ॥

अम्बुजैःशीतलोदेनशोभमानाव्यदृश्यत॥तत्समीपमथोगत्वापीत्वातत्सलिलंशुभम् १६ ऊषुस्तेसलिलाभ्यासेक्षणंछायामुपाश्रिताः ॥ ततोददृशुरायांतंमहासत्वंभयानकम् १७ करालदंष्ट्रवदनंभीषयंतंस्वगर्जितैः ॥ वामांसेन्यस्तशूलाग्रग्रथितानेकमानुषम् १८ भक्षयंतंगजव्याघ्रमहिषंवनगोचरम् ॥ ज्यारोपितंधनुर्धृत्वा रामोलक्ष्मणमब्रवीत् १९ पश्यभ्रात्तर्महाकायोराक्षसोऽयमुपागतः ॥ आयात्यभिमुखंनोऽग्रेभीरूणांभयमावहन् २० सज्जीकृतधनुस्तिष्ठमाभैर्जनकनन्दिनि ॥ इत्युक्त्वाबाणमादायस्थितोरामइवाचलः २१ ॥

(शीतलोदेनअम्बुजैःशोभमानाव्यदृश्यतअथःतत्समीपंगत्वातत्शुभम्तलिलंपीत्वा) शीतलजलकरिकै तथा कमलन करिकै विशेषि शोभायमान देखातीहै अवताहि समीपजाय लक्ष्मण जानकी रघुनंदन ताको मंगलमै जो जलहै ताहि पानकरते भये १६ (सलिलाभ्यासे छायां उपाश्रिताःतेक्षणंऊषुःततःमहासत्वंभयानकंआयांतंददृशुः)जलके समीपमें वृक्षकी छाया जो है ताहि सुखदविचारि तामें लक्ष्मण जानकी रघुनंदन तेक्षण भरि विश्राम करतेभये तवतक एक महावली भयानक राक्षस आवता हुआ देखते भये १७ (करालदंष्ट्रवदनंस्वगर्जितैःभीषयंतंशूलाग्रेअनेकमानुषंग्रथितःवामांसेन्यस्त) वड़े भयंकर दाँत हैं जामें ऐसा मुख अरुआपनी गर्जनि शब्द करिकै सवको डरपाय रहाहै पुनः त्रिशूल की नोकमें अनेक मनुष्यों को गुहेसो वाम काँधेपर धरेहै १८ (गजव्याघ्रमहिषंवन गोचरम्भक्षयंतंरामःज्यारोपितंधनुःधृत्वालक्ष्मणम्अब्रवीत्) हाथी व्याघ्रभैंसातथा और जो वन पशुहैं तिनहिं भक्षण करता है ताहिदेखि रघुनंदन रोदाचढ़ायधनुप हाथमें लैकै लक्ष्मण प्रतिवोलते भये १९ (भ्रातःपश्यमहाकायःअयंराक्षसःअभिमुखंआयातिनःअग्रेउपागतः) प्रभु वोले हे भाई देखिये वड़ीभारी देहको यह राक्षस सन्मुख आवता है हमलोगोंके आगे समीप आय प्राप्तभयापुनः

जे डरनेवाले पुरुष हैं तिनको डरउपजायरहाहै भाव हमनहीं डरते हैं जो पूर्व कहारहै कि भयहोन हारहै इसहेतु तुमतेकहा २० (धनुःसज्जीकृततिष्ठजनकनंदिनिमाभैःइतिउक्त्वाबाणंआदायअचलः इवरामस्थितः) हे लक्ष्मण धनुष बाण साजिकै स्थितरहो हे जनक नंदिनि तुम नडरेउ ऐसाकहि बाण धनुषमें चढ़ाय पर्वत की नाईं अचल ह्वै रघुनंदन खडेभये २१ ॥

सतुदृष्ट्वारमानाथंलक्ष्मणंजानकींतथा ॥ अट्टहासंततःकृत्वाभीषयन्निदमब्रवीत्२२ कौयुवांबाणतूणीरजटावल्कलधारिणौ ॥ मुनिवेषधरौबालौस्त्रीसहायौसुदुर्मदौ२३ सुंदरौवतमेवक्त्रप्रविष्टकवलोपमौ ॥ किमर्थमागतौघोरंवनंव्यालनिषेवितं२४ श्रुत्वारक्षोवचोरामःस्मयमानउवाचतं ॥ अहंरामस्त्वयंभ्रातालक्ष्मणोममसम्मतः २५ एषासीताममप्राणवल्लभावयमागता ॥ पितृवाक्यंपुरस्कृत्यशिक्षणार्थंभवादृशाम् २६श्रुत्वातद्रामवचनमट्टहासमथाकरोत् ॥व्यादायवक्त्रंवाहुभ्यांशूलमादायसत्वरः २७ ॥

(तुरमानाथंलक्ष्मणंतथाजानकीं दृष्ट्वासअट्टहासंकृत्वा ततःभीषयन्इदंअब्रवीत्) पुनः रघुनंदन लक्ष्मण तैसे जानकी इनहिं देखिकै माधुर्य में उत्तम मनुष्यभोजन दिव्यस्त्री प्राप्त विचारि अथवा ऐश्वर्य में अपने उद्धारको समयविचारि मनमें आनंद ह्वै ठट्टायकै हास्यकरि तदनंतर डरपावत संते ऐसा वचन बोलता भया २२ (बाणतूणीरजटावल्कलधारिणौमुनिवेषधरौस्त्री सहायौबालौसुदुर्मदौयुवांकौ) विराधबोलाकि बाणोंते भरे तरकस धनुष लिहेजटा के मुकुटवल्कलचीरतनमें धारौ मुनिन कैसो वेष धारण किहे स्त्रीभी साथलिहे होतौ बालअवस्था परंतुवीरताते बढ़ेमद युक्त भाव धनुषबाण साजे निशंक खड़ेहौ तुमदोऊ काहो २३ (वतसुंदरौमेवक्त्रप्रविष्टकवलउपमौव्यालनिषेवितंघोरंवनंकिंमर्थंआगतौ) ईश्वर हैं वा मानुष इतिभ्रम निवारणार्थ पुनः पूछत कि वत अर्थात् बडेखेदकी बातहै कि तुमसुन्दर दोऊ मेरे मुखमेंप्रवेश करने वाले ग्राससम प्राप्तभये पुनः सर्पादिहिं सकजन्तुनकरिकै सेवित जोभयंकर वनतहाँकौने हेतआयेहौ भावतुमको तौमैंअभी खाइजाउंगोपरंतु भयंकर वनमें कौन कार्यहेत आयो है सो कहो २४ (रक्षोवचःश्रुत्वास्मयमानरामःतंउवाचअहं रामः तुअयंलक्ष्मणःममसम्मतःभ्राता) राक्षसके वचन सुनिकै मुसुकाय कै रघुनंदन त्यहि राक्षस प्रतिबोलतेभये कि हमरामहैं पुनः ये लक्ष्मण हमारे प्रियभाई हैं २५ (एषासीताममप्राण वल्लभा पितृवाक्यंपुरस्कृत्यभवादृशांशिक्षणार्थंवयंआगताः) येसीता मेरी प्राणप्यारीपत्नी है अरुपिता की आज्ञाते तुम सरीखेदुष्टोंको सिखावन देनेहेतहमतीनहूँ जनेवनहिंआये हैं २६ (तत्रामवचनंश्रुत्वा अथअट्टहासंअकरोत्वक्त्रंव्यादायबाहुभ्यांसत्वरःशूलंआदाय) सोरघुनंदन के वचन सुनिकै ठट्टायकै हासकरि मुख पसारि शीघ्र हाथमें त्रिशूललै कै बोलताभया २७ ॥

मांनजानासिरामत्वंविराधंलोकविश्रुतम् ॥ मद्भयान्मुनयःसर्व्वेत्यक्त्वावनमितोगताः २८ यदिजीवितुमिच्छाऽस्तित्यक्त्वासीतांनिरायुधौ ॥ पलायतंनचेच्छीघ्रंभक्षयामियुवावहम् २९ इत्युक्त्वाराक्षसःसीतामादातुमभिदुद्रुवे ॥ रामश्चिच्छेदतद्बाहूशरेणप्रहसन्निव ३० ततःक्रोधपरीतात्माव्यादायविकटंमुखम् ॥ राममभ्यद्रवद्रामश्चिच्छेदपरिधावतः ३१ पदद्वयंविराधस्यतदद्भुतमिवाभवत् ३२ ततः

सर्पइवास्येनग्रसितुंराममापतत् ॥ ततोर्द्धचन्द्राकारेणबाणेनास्यमहच्छिरः ॥ चिच्छेदरुधिरौघेणपपातधरणीतले३३ततःसीतांसमालिंग्यप्रशशंसरघूत्तमम्३४

(मत्भयात्सर्वे मुनयःवनं त्यक्त्वा इतःगताः लोकविश्रुतंविराधंमांरामत्वंनजानासि) राक्षस बोला कि मेरे डर ते सब मुनि वन त्यागि इहां ते चले गये लोक में प्रसिद्ध विराध नाम जो में हौं ताहि हे राम तुम नहीं जानते हो २८ (यदिजीवितुंइच्छाअस्तिसीतांत्यक्त्वानिरायुधौ शीघ्रंपलायतं नचेत् अहं युवां भक्षयामि) विराध बोला कि जो तुमको जीवने की इच्छा हो तौ सीता जो हैं तिनहिं त्यागि हथियार डारि शीघ्रही भागि जाउ नाहीं तौ मैं तुम दोऊ जोहौ तिनहिं खायलेउँगो २९ (इतिउक्त्वाराक्षसः सीतां आदातुं अभिदुद्रुवेप्रहसन् इवरामः शरेणतत् बाहूचिच्छेद) ऐसा कहिके राक्षस सीतहि गहि लेने को दौरता भया तब हास क्रिया की तुल्य रघुनंदन बाण करिकै ताकी दोऊ बाहु काटि डारे भाव लीलामात्र बाण चलाय बाहु काटि डारे ३० (ततःक्रोधपरीतात्माविकटं मुखं व्यादायरामं अभ्यद्रवत् धावतः परिरामः विराधस्यपदद्वयंचिच्छेदतत् अद्भुतंइवअभवत्) बाँहु कटे पर तब क्रोध ते परिपूर्ण भयंकर मुख पसारि रघुनन्दन को निगलने हेत आवा धावते समय रघुनन्दन विराध के दोऊ पांय बाण करिकै काटि डारे तब कर पद रहित अद्भुत कुरूप भया ३१ । ३२ (ततःआस्येनरामंग्रसितुंसर्पइवअपतत्ततःअर्द्धचन्द्राकारेणबाणेनास्यमहत्शिरः चिच्छेदरुधिरओघेणधरणीतलेपपात) तब मुख करिकै रघुनन्दनहिं निगलने हेत सर्प की नाईं लोटत चला तब रघुनंदन अर्द्धचन्द्राकार गाँसी है जामें ऐसे बाण करिकै वाको मुख युत जो बड़ाभारी शिर है सो ग्रीवा ते काटि डारे तब रक्त बहुत बहता हुआ भूमि पर गिरि पड़ा ३३ (ततःसीतारघूत्तमम् समालिंग्यप्रशशंस) राक्षस मरा तब सीता रघुनन्दन जो हैं तिनहिं उर में लगाय बड़ी प्रशंसा करती भईं ३४ ॥

ततोदुन्दुभयोनेदुर्दिविदेवगणेरिताः ॥ ननृतुश्चाप्सरोहृष्टाजगुर्गंधर्वकिन्नराः ३५ विराधकायादतिसुंदराकृतिर्विभ्राजमानोविमलांबरावृतः ॥ प्रतप्तचामीकरचारुभूषणोऽव्यदृश्यताग्रेगगनेरविर्यथा ३६ प्रणम्यरामंप्रणतार्त्तिहारिणंभवप्रवाहोपरमंघृणाकरम् ॥ प्रणम्यभूयःप्रणनामदण्डवत्प्रपन्नसर्वार्त्तिहरंप्रसन्नधीः ३७ ॥ विराधउवाच ॥ श्रीरामराजीवदलायताक्षविद्याधरोऽहंविमलप्रकाशः ॥ दुर्वाससाकारणकोपमूर्त्तिनाशप्तःपुरासोऽद्यविमोचितस्त्वया ३८ ॥

(ततःदेवगणइरिताः दिविदुंदुभयोनेदुःबहृष्टाअप्सरः ननृतुः गंधर्व किन्नराःजगुः) तदनंतर देवगणों के बजाये हुये आकाश में नगारादि बाजा बाजते भये पुनः बड़ी आनंद ह्वै अप्सरा नाचने लगीं गंधर्व किन्नर गान करते भये ३५ (विराधकायात् अतिसुन्दरआकृतिः विभ्राजमानः प्रतप्तचामीकरचारुभूषणः विमलः अम्बरः आवृतः अग्रेव्यदृश्यत यथागगनेरविः) विराध की देह ते निसरि अत्यन्त सुंदर आकृत विशेषि भ्राजमान अर्थात् सर्वांग सुठौर बने देवाकार स्वरूप बिशेषि विराजमान तप्त सोना सीकांतिमान सुन्दर भूषण तथा अमल वस्त्र धारण किहे रघुनंदनके आगे कैसा प्रकाशमान देखि परा जैसे आकाश में सूर्य ३६ (रामंप्रणम्य) रघुनंदन जो हैं तिनहिं प्रणाम करता भया (कथंभूतं) कैसे हैं राम (प्रणतार्त्तिहारिणम्) प्रणत जो शरणागत ताके आर्त्ति जो दुःख तिनको हरि लेनेवाले हैं पुनः कैसे हैं (भवप्रवाहस्यउपरमम् घृणायाःआकरम्) संसार सागर प्रवाह

को उपरामं अर्थात् नाश है जामें ऐसी घृणा दया ताके आकर खानि हैं पुनः कैसे हैं (सर्वार्त्तिहारिणम्) सब प्रकार के आर्त्ति दुःख ताके हरणहार हैं ऐसे जो रघुनन्दन तिनहिं (दण्डवत्प्रणनामभूयः प्रणम्यप्रसन्नधीः) दण्डकी समानगिरिके जोप्रणाम इति अनेकवार प्रणामकरि आनंदमन बोलताभया३७(राजीवदलायताक्ष श्रीरामअहंविमलप्रकाशः विद्याधरः अकारणकोपमूर्त्तिनादुर्वाससा पुराशप्तःअद्यत्वयाविमोचितः) विराध बोला हे कमल दलवत् विशाल नयन श्री रघुनाथजी मैं विमल प्रकाशवन्त विद्याधर हौं अरु विना कारणे कोपमूर्त्ति दुर्वासा ऋषि ने पूर्व कालमें शाप दिया ताते राक्षस भयों सो आपने आजु शाप ते छुड़ाय दिया ३८ ॥

इतःपरंत्वच्चरणारविंदयोःस्मृतिःसदामेऽस्तुभवोपशांतये ॥ त्वन्नामसंकीर्त्तनमेववाणीकरोतुमेकर्णपुटंत्वदीयम् ३९ कथामृतंपातुकरद्वयंतेपादारविंदार्चनमेवकुर्य्यात् ॥ शिरश्चतेपादयुगप्रणामंकरोतुनित्यंभवदीयमेवम् ४० नमस्तुभ्यं भगवतेविशुद्धज्ञानमूर्त्तये ॥ आत्मारामायरामायसीतारामायवेधसे ४१ प्रपन्नपाहिमांरामयास्यामित्वदनुज्ञया ॥ देवलोकंरघुश्रेष्ठमायामांमावृणोतुते ४२ इतिविज्ञापितस्तेनप्रसन्नोरघुनन्दनः ॥ ददौवरंतदाप्रीतोविराधायमहामतिः४३॥

(इतःपरंभवउपशांतयेत्वत्चरणारविंदयोःस्मृतिमेसदा अस्तुवाणीत्वत्नामसकीर्त्तनंएवकरोतुमे कर्णपुटंत्वदीयं) शापतें तो आपउद्धार किया इसके उपरात भवदुःखशांतहोनेहेत आपके पद कमलोंको स्मरण मेरे अन्तसमें सदारहै मेरी वाणी आपके नामको कीर्त्तन किया करे तथामेरे श्रवण रूपदोना सो आपके ३९ (कथामृतंपातु) कथा रूप अमृत को पान करें (करद्वयंतेपादारविन्दयोः अर्चनंएवकुर्य्यात्चशिरः तेपादयुगप्रणामंकरोतुएवम्नित्यंभवदीयं) हाथदोऊ आपके पद कमलों की पूजन निश्चय करिके कियाकरें पुनः शिर आपके पददोउनको प्रणाम कियाकरै इसी भाँति नित्यही आपकी कैंकर्यता में लगारहौं ४० (विशुद्धज्ञानमूर्त्तये भगवते तुभ्यंनमः रामायआत्मारामायसीतारामायवेधसे) विशेपि शुद्धज्ञानसोई मूर्त्तिजाकी ऐश्वर्य रूपआप के अर्थ नमस्कार है परात्परसाकेत विहारी रामके अर्थ आत्म रूपमें क्रीड़ाकरने वाले अंतर्यामी रूप रामके अर्थ माधुर्य रूपसीता सहित रामके अर्थ नमस्कार है ४१ (रामप्रपन्नमांपाहित्वत्अनुज्ञया देवलोकंयास्यामिरघुश्रेष्ठतेमायामांमावृणोतु) स्तुति प्रणामकरि विराधप्रार्थना करत है श्रीरघुनाथ जी भवकी भयते मैं आपकी शरणहौं मोहिं रक्षाकरौ कैसेरक्षाकरौकि अब आपकी आज्ञाकरिकै मैं देवलोकहि जावा चाहताहौं तहाँ रहे पर हेरघुश्रेष्ठ भावउत्तम उदार रघुवंश में आप उत्तम परम उदारहौ मेरी याचना पूर्ण करौ यहकि आपकी मायामेरी आत्म दृष्टिमें आवरणनकरै ४२ (इतितेनविज्ञापितःरघुनंदनःप्रसन्नःतदामहामतिःप्रीतःविराधायवरंददौ) शिवजी कहतइस प्रकार विराधने अपना दुःख सुनावा ताते रघुनन्दन प्रसन्न ह्वै तब महा बुद्धिवन्त प्रभु प्रीतिपूर्वक विराध के अर्थ वरदान देते भये ४३ ॥

गच्छविद्याधराशेषमायादोषगुणाजिताः ॥ त्वयामद्दर्शनात्सद्योमुक्तोज्ञानवतांवरः ४४ मद्भक्तिर्दुर्लभालोकेजाताचेन्मुक्तिदायतः ॥ अतस्त्वंभक्तिसम्पन्नःपरंया

हिममाज्ञया ४५ रामेणरक्षोनिधनंसुघोरंशापाद्विमुक्तिर्वरदानमेवम् ॥ विद्याधर त्वंपुनरेवलब्धंशमंगृणन्नेतिनरोऽखिलार्थान् ४६ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसम्वादेआरण्यकाण्डेप्रथमःसर्गः १ ॥

(विद्याधरगच्छमत्दर्शनात्त्वयाअशेषमायादोषगुणा जिताः ज्ञानवतांवरःसद्यःमुक्तः) रघुनन्दन बोले कि हेविद्याधर सबबातसे अभयह्वै आपने धामहिं जाउमेरेदर्शनके प्रभावते तुमने सम्पूर्ण माया के दोष मय जो गुण हैं जीति लिया अब ज्ञानवंतन में श्रेष्ठ ह्वै शीघ्रही मुक्त होउगे ४४ (मत्भक्ति लोकेदुर्लभाचेत्जाता मुक्ति दायतःत्वंभक्तिसम्पन्नः अतःममआज्ञयापरंयाहि) हे विद्याधर मेरी भक्ति प्राप्त होना लोक में दुर्लभ है-साधारण नहीं होती कदाचित् जो किसी में उत्पन्न होइ तौ मुक्ति की देनहारी है सोई तुमको परिपूर्ण भक्ति प्राप्त भई इस कारण मेरी आज्ञा करिकै परम्पदहिं प्राप्त हो-उगे ४५ (रामेणरक्षः निधनं सुघोरं शापात् विमुक्तिः एवंवरदानं पुनः एवविद्याधरत्वं लब्धंरामं गृणन्नरः अखिलार्थानएति) शिव जी कहत कि श्री राम ने राक्षस को बध किया ताते घोर दुष्टहिं शाप ते छुड़ाया अरु ऐसा बरदान दिया जाते यम शासति ते बचि पुनःनिश्चयकरि विद्याधर पदको प्राप्त भया इत्यादि जो रामचरितहैं ताहि गानकरता है सो मनुष्य सम्पूर्ण जो अर्थहैं तिनहिं पावताहै ४६॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमासियवल्लभपदशरणागतबैजनाथविरचिते अध्यात्मभूषणआरण्यकाण्डेप्रथमःप्रकाशः १ ॥

विराधेस्वर्गतेरामोलक्ष्मणेनचसीतया ॥ जगामशरभंगस्यवनंसर्वसुखावहम् १॥

सवैया ॥ शरभंग मिले स्तुति पूजि लही गति रोपि चितानल सोपि जले । ऋषि वृन्दन भेटत अस्थि लखे सब दुष्ट बधौं प्रण कीन भले ॥ चलि भेटि सुतीक्षण पूजि कहै अब धन्य भयो मम भाग फले । तिन राम नमामि सुतीक्षण लै सिय सानुज कुम्भज धाम चले ॥ (विराधेस्वर्गतेलक्ष्मणेनचसीतयारामः शरभंगस्यवनं जगामसर्वसुखावहम्) शिव जी कहत हे गिरिजा विराध स्वर्ग लोक जात सन्ते लक्ष्मण जानकी करिकै सहित रघुनन्दन शरभंग के बनहिं जाते भये जो वन सब सुख को देनहारा सदा रहत १ ॥

शरभंगस्ततोदृष्ट्वारामंसौमित्रिणासह ॥ आयातंसीतयासार्द्धंसम्भ्रमादुत्थितःसुधीः २ अभिगम्यसुसम्पूज्यविष्टरेषूपवेशयत् ॥ आतिथ्यमकरोत्तेषांकन्दमूलफलादिभिः ३ प्रीत्याहशरभंगोऽपिरामंभक्तपरायणम् ॥ बहुकालमिहैवासंतपसेकृतनिश्चयः ४ तवसंदर्शनाकांक्षीरामत्वंपरमेश्वरः ॥ अद्यमत्तपसासिद्धंयत्पुण्यंबहुविद्यते ॥ तत्सर्वंतवदास्यामिततोमुक्तिंव्रजाम्यहम् ५ समर्प्यरामस्यमहत्सुपुण्यं फलंविरक्तःशरभंगयोगी ॥ चितिंसमारोहयदप्रमेयं रामंससीतंसहसाप्रणम्य ६ ॥

(सौमित्रिणासह सीतया सार्द्धं रामंआयातं दृष्ट्वा ततःसुधीःशरभंगः संभ्रमात्उत्थितः) लक्ष्मण जानकी करिकै सहित रघुनन्दन जोहैं तिनहिं आवतदेखि तव सुबुद्धी शरभंग शीघ्रताते उठे आगे

आय मिले २ (अभिगम्य विष्टरेपु उपवेशयत् सम्पूज्य कन्दमूलफलादिभिः तेषां आतिथ्यंअकरोत्) सन्मुखजाय मिलि आदर सहित आश्रममें आनि आसनके ऊपर बैठारि सुन्दरी प्रकार षोड़शोपचार पूजनकरि कन्दमूल फलादिकन करिकै तिनकी आतिथ्य किये, भाव तीनिहूँ जनेनको भोजन कराये ३ (भक्तपरायणंरामंशरभंगःअपि प्रीत्या आह बहुकालं इहैवतपसे निश्चयःकृतवासं) भक्तन को निरन्तर सेवन सुमिरण अर्चन बन्दनादि करिबे योग्य जो श्री रघुनाथ जी तिनप्रति शरभंग निश्चय प्रीति करिकै बोले कि बहुतकाल भये इसी आश्रम में तपस्या करतसंते यह निश्चयकरि बास किया ४ (तवसंदर्शनाकांक्षी रामत्वं परमेश्वरः मत् तपसा अद्य सिद्धं बहु पुण्यं यत् विद्यते तत् सर्वं तव दास्यामि ततः अहं मुक्तिं व्रजामि) क्यानिश्चय किहेरहौं हे रघुनन्दन आपके दर्शन की कांक्षाकिहे इहां बास करतारहौं हे रघुनाथजी आप परमेश्वरहौ आपके दर्शन पायेते आज मेरा तप सिद्धभया अरु बहुत मेरी पुण्य जो प्रसिद्धहै सो सब आपको देकै मुक्तिको प्राप्त होताहौं ५ (महत्पुण्यं रामस्य समर्प्य फलं विरक्तः शरभंग योगी ससीतं अप्रमेय रामं प्रणम्य सहसाचितिसं आरोहयत्) बड़ी भारी जो पुण्य रही ताहि रघुनाथ जीको समर्प्य दैकै पुण्यके फलसों विरक्त कांक्षारहित शरभंग योगी अर्थात् अन्तरवृत्ति परमेश्वर में मिलाय बाह्य भावते सहित सीता जो प्रमाण रहित श्रीरघुनाथजी तिनहि प्रणाम करि शीघ्रही चिताके ऊपर बैठिजाते भये ६ ॥

ध्यायञ्चिरंराममशेषहृत्स्थंदूर्वादलश्यामलमम्बुजाक्षम् ॥ चीराम्बरंस्निग्धजटाकलापंसीतासहायंसहलक्ष्मणंतम् ७ कोवादयालुस्स्मृतिकामधेनुरन्योजगत्यांरघुनायकादहो ॥ स्मृतोमयानित्यमनन्यभाजाज्ञात्वास्मृतिंमेस्वयमेवयातः ८ पश्यत्विदानींदेवेशोरामोदाशरथिःप्रभुः ॥ दग्ध्वास्वदेहंगच्छामिब्रह्मलोकमकल्मषः ९ अयोध्याऽधिपतिर्मेऽस्तुहृदयेराघवस्सदा ॥ यद्वामांकेस्थितासीतामेघस्येवतड़िल्लता १० इतिरामंचिरंध्यात्वादृष्ट्वाचपुरतःस्थितम् ॥ प्रज्वाल्यसहसावह्निंदग्ध्वापञ्चात्मकम्वपुः ११ ॥

(अशेष हृत्स्थं अम्बुज अक्षं दूर्वादलश्यामलं चीर अम्बरं स्निग्ध जटाकलापं सहलक्ष्मणं सीता सह अयं रामं तंचिरं ध्यायन्) जो अन्तर्यामी रूपते सबके हृदय में बास किहे हैं सांई लोकोद्धार हेत कृपारस भरे कमलवत् नयन भाव कृपादृष्टि लोकमें अवतीर्ण भये तेकैसेहैं दूबके दलसम श्यामल अंगहै जिनको तनमें वल्कलादि मुनिनके ऐसे बसन धारण किहे अरु कोमल जटासमूह शीश में शोभित सहित लक्ष्मण सीतासहित इनहीं राम जो आगेखड़ेहैं तिनहिं बहुतवार तक ध्यानकिहे रहे पुनः शरभंग बोले ७ (अहो जगत्यां स्मृति कामधेनुः रघुनायकात् अन्यः कोवादयालुः अनन्य भाजा मया नित्यंस्मृतः मेस्मृतिंज्ञात्वा स्वयंएवयातः) शरभंग बोले कि आश्चर्य मय प्रशंसाकरने की बातहै देखिये पृथ्वीके विषे स्मरण करतसंते कामधेनु तुल्य सब फल दायक एक रघुनाथ जी सेवाय और ऐसा को दयालु है काहेते अनन्यभाव करिके मैंने नित्यही स्मरण किया सो मेरा जानि प्रभु आपही निश्चयकरि आय दर्शन दीन्हें ८ (देवेशः प्रभुःदाशरथिः रामः पश्यतु स्मरण इदानीं स्वदेहं दग्ध्वा अकल्मषः ब्रह्मलोकं गच्छामि) देवन के ईश सबके स्वामी दशरथपुत्र श्रीराम देखें इसी समयमें आपनी देह भस्मकरि पापरहितह्वै ब्रह्मलोकहि जाताहौं ९ (अयोध्याऽधिपतिः राघवः मे हृदये सदा अस्तु यत् वामअंके सीता स्थिता, मेघस्य तड़ित लताइव) अयोध्या के

महाराज रघुवंशनाथ मेरे हृदयमें सदा वास करैं जिनके वाम अंक में सीता शोभित हैं कौन भांति जैसे मेघके समीप विजुली बिराजत १० (इति रामं चिरं ध्यात्वाच पुरतः स्थितम् दृष्ट्वा वह्निंप्रज्वाल्य पञ्चात्मकं वपुः सहसादग्ध्वा) इसप्रकार रघुनन्दन जो हैं तिनहिं बहुतवार तक ध्यानकरि पुनः आगे स्थित देखि अग्नि प्रज्वलितकै पंच भौतिक तन शीघ्रही भस्म करिदिये ११॥

दिव्यदेहधरःसाक्षाद्ययौलोकपतेःपदं॥ततोमुनिगणाःसर्वेदण्डकारण्यवासिनः॥ आजग्मूराघवंद्रष्टुंशरभंगनिवेशनम् १२दृष्ट्वामुनिसमूहंतंजानकीरामलक्ष्मणाः॥ प्रणेमुःसहसाभूमौमायामानुषरूपिणः १३ आशीर्भिरभिनंद्याथरामंसर्वहृदिस्थितम्॥ ऊचुःप्रांजलयःसर्वेधनुर्बाणधरंहरिम् १४ भूमेर्भारावताराययजातोसिब्रह्मणाऽर्थितः॥ जानीमस्त्वांहरिंलक्ष्मींजानकींलक्ष्मणंतथा १५ शेषांशंशंखचक्रेद्वे भरतंसानुजंतथा॥ अतश्चादौऋषीणांत्वंदुःखंभोक्तुमिहार्हसि १६॥

(दिव्यदेहधरःसाक्षात् लोकपतेःपदंययौततः दंडकारण्यवासिनः मुनिगणाः सर्वेराघवंद्रष्टुंशरभंगनिवेशनम्आजग्मू) दिव्य देह धरि शरभंग साक्षात् लोकपति ब्रह्मा तिनको पद सत्यलोक ताको जाते भये तब दंडक वन के वासी मुनि समूह सब रघुनन्दन जो हैं तिनहिं देखने हेत शरभंग के आश्रमहिं आवते भये १२ (मायामानुषरूपिणः जानकी राम लक्ष्मणाः मुनिसमूहंदृष्ट्वातं सहसाभूमौ प्रणेमुः) दिव्य माया करि मानुप रूप धारण किहे जानकी रघुनन्दन लक्ष्मण ते सब मुनिन को वृंद आवत देखि तिनहिं शीघ्रही भूमि में गिरि प्रणाम कीन्हें १३ (आशीर्भिः अभिनन्द्यअथसर्व हृदिस्थितम्हरिंधनुर्बाणधरंरामंसर्वेप्रांजलयः ऊचुः माधुर्य में राजकुमार रूपते प्रणाम करतेदेखि आशीर्वादन करिकै आनंद दै तब जो अन्तर्यामी रूप ते सब के उर में वास किहे ऐसे हरि लोकोद्धार हेत राजकुमार भये इति ऐश्वर्य विचारि तब धनुष बाण धारण किहे जो श्री रघुनाथ जी हैं तिन प्रति सब ऋषिलोगहाथजोरि बोलतेभये १४ (ब्रह्मणाअर्थितःभूमेःभारावतारायजातःअसित्वांहरिंजानीमः जानकी लक्ष्मीं तथा लक्ष्मणं) ऋषि लोग बोले हे श्री रघुनाथ जी सुर नर नागादि सबको दुखित देखि तब ब्रह्मा ने आप ते प्रार्थना किया ताते भूमि को भार उतारिवे हेत अवतीर्ण भयो आप साक्षात् हरि परमात्मा हौ यह हम जानते हैं अरु जानकी लक्ष्मी हैं तैसे ही लक्ष्मण १५ (शेषांशंतथाशंखचक्रेद्वेसानुजंभरतंअतः चआदौइहंऋषीणांदुःखंभोक्तुंत्वंअर्हसि) शेष को अंश लक्ष्मण हैं तैसे शंख चक्र दोऊ सहित अनुज भरत अर्थात् शंख भरत हैं चक्र शत्रुहन हैं भू भार उतारने आयो है इस कारण प्रथम इहां ऋषिन को जो दुःख है ताहि भोग करिबे योग्य हौ भाव श्रम करि खरादिकों को वध करौ १६॥

आगच्छयामोमुनिसेवितानिबनानिसर्वाणिरघूत्तमक्रमात्॥ द्रष्टुंसुमित्रासुतजानकीभ्यांतदादयास्मासुदृढाभविष्यति१७ इतिविज्ञापितोरामःकृतांजलिपुटैर्विभुः॥ जगाममुनिभिःसार्द्धंद्रष्टुंमुनिवनानिसः १८ ददर्शतत्रपतितान्यनेकानिशिरांसिसः॥ अस्थिभूतानिसर्वत्ररामोवचनमब्रवीत् १९ अस्थीनिकेषामेतानिकिमर्थंपतितानिवै॥ तमूचुर्मुनयोरामऋषीणांमस्तकानिहि२० राक्षसैर्भक्षितानीशप्रमत्तानांसमाधिनः॥ अन्तरायंमुनीनांतेपश्यंतोऽनुचरंतिहि २१॥

(रघूत्तमसुमित्रासुतजानकीभ्यांआगच्छयामःमुनिसेवितानिवनानिसर्वाणिक्रमात् द्रष्टुंतदाअस्मासु दृढादयाभविष्यति) ऋषि लोग बोले हे रघुवंश शिरोमणि सुमित्रा के पुत्र लक्ष्मण जानकी करिकै सहित आप हमारे साथ आवो मुनिन करिकै सेवित भाव जहां जहां मुनि लोग वास किहे रहे हैं सो वन सब क्रम ते भाव एक एक आश्रम हम देखावैंगे तब हम लोगन पर आप को सुंदर पुष्ट दया होयगी भाव ऋषिन को राक्षस खाय लीन्हें हैं तिनके अस्थि देखि दया आवैगी १७ (इतिकृतांजलि. विज्ञापितः विभु.रामः मुनिवनानिस. द्रष्टुंमुनिभिःसार्द्धंजगाम) इस प्रकार हाथ जोरि जब ऋषिलोगन प्रार्थना किया तब समर्थ श्री रघुनाथ जी मुनि सेवित जो वन सो देखने हेत मुनिन करिकै सहित चलतेभये १८ (तत्रअस्थिभूतानि अनेकानि शिरांसिसर्वत्रपतितानिसः ददर्शरामः बचनंअब्रवीत्) तहां वन में हाड़ पुराने अनेक मनुष्यों की खोपड़ी सूखी सब ठौर पड़ी हैं सो देखि रघुनन्दन ऋषिन प्रति वचन बोले १९ (एतानिअस्थीनिकेषांवैकिंअर्थंपतितानितं मुनयःऊचुःरामऋषीणांमस्तकानिहि) रघुनाथ जी पूँछे कि समूह परे हुये ये हाड़ किनके हैं निश्चय करि किसप्रयोजन अर्थ परे हैं तिन प्रति मुनि लोग बोले कि हे श्री रघुनाथ जी ये ऋषिन की खोपड़ी हैं आप के देखने हेत निश्चय करि परी हैं इति भाव २० (ईशसमाधितःअंतरायंपश्यंत. अनुचरंतिहितेराक्षसै. प्रमत्तानामुनीनांभक्षितानि) परमेश्वरकी समाधि ते अनर परिजाना ताहि देखत बिचरते हुये राक्षसों ने विषयासक्त मुनि को खाय लिया भाव परमार्थ साधन में अंतर परना ढूंढ़तेहुये राक्षस घूमा करते हैं तेई जिन मुनिनको विषय में मत्त देखे तिनको खाइ लिये २१ ॥

श्रुत्वावाक्यंमुनीनांसभयदैन्यसमन्वितम् ॥ प्रतिज्ञामकरोद्रामोवधायाशेषरक्षसाम् २२ पूज्यमानःसदातत्रमुनिभिर्वनवासिभिः ॥ जानक्यासहितोरामोलक्ष्मणेनसमन्वितः २३ उवासकतिचित्तत्रवर्षाणिरघुनंदनः ॥ एवंक्रमेणसंपश्यन्नृषीणामाश्रमान्विभुः २४ सुतीक्ष्णस्याश्रमंप्रागात्प्रख्यातमृषिसंकुलम् ॥ सर्वर्तुगुणसम्पन्नंसर्वकालसुखावहं २५ राममागतमाकर्ण्यसुतीक्ष्णःस्वयमागतः अगस्तिशिष्योरामस्यमंत्रोपासनतत्परः ॥ विधिवत्पूजयामासभक्त्युत्कण्ठितलोचनः २६ ॥

(सभयदैन्यसमन्वितम्मुनीनांवाक्यंसश्रुत्वारामः अशेषरक्षसाम्वधायप्रतिज्ञां अकरोत्) राक्षसों के खायजाने की भयमानिदीनह्वै प्रार्थना कीन्हें इतिसभय दीनतायुत मुनिन की वाक्य ताहि सुनि कै रघुनाथ जी संपूर्ण राक्षसों के मारने हेतप्रतिज्ञा कीन्हे भाव भूतल राक्षसहीन करिदेउंगो २२ (लक्ष्मणेनसमन्वितःजानक्यासहितःरामःतत्रवनवासिभिःमुनिभिःसदापूज्यमान.) लक्ष्मणकरिकै युक्त जानकी सहित रघुनाथजी तहाँ वनवासी मुनिन करिकै सदापूज्यमानभये भावआपने आश्रम मेंले जायषोड़शो पचारपूजनकरि मूल फलादि भोजन करावते हैं इसीप्रकार सबमुनिलोग करते रहे २३ (एवंक्रमेणऋषीणांआश्रमान् संपश्यन्विभुःरघुनंदनः कतिचित्वर्षाणितत्रउवास) एकएक दिन सबके रहे इसीक्रमकरिकै ऋषिनके यावत् आश्रम दण्डक वनमें रहेतिनहिं देखतसंते समर्थ रघुनंदन कई वर्षतकतिसी वनमें वासकीन्हे २४ (सर्वकालसुखावहम्सर्वऋतुगुणसंपन्नऋषिसंकुलम् प्रख्यातंसुतीक्ष्णस्यआश्रमम्प्रागात्) जहाँवर्षाजाड़ आतपादि सबकालमें सुखदायक अरुग्रीषम पावस शरद हेमंत शिशिर वसंतादि सबऋतुन में गुणनकरिकै परिपूर्ण जहाँ ऋषिलोग बहुत वास

किहैहैं लोकमें प्रसिद्ध ऐसा जो सुतीक्ष्ण मुनि को आश्रम तहाँ रघुनंदनजाते भये २५ (अगस्ति शिष्यःरामस्यमंत्रउपासनतत्परः सुतीक्ष्णःरामंआगतंआकर्ण्यस्वयंआगतः भक्तिउत्कंठितलोचनः विधिवत्पूजयामास) अगस्तिमुनि को शिष्य रघुनाथ जीके मंत्र उपासनामें निचलगा रहने वाला सुतीक्ष्ण है नामजाको सो रघुनाथजीको आवनसुनि आपही आगेआय आपने आश्रमको लवाय लयगयातहाँभक्तिकरिकैदर्शनके प्यासेहैं नेत्रजाकेऐसेसुतीक्ष्णविधिसेतरघुनंदनकोपूजनकिया२६ ॥

सुतीक्ष्णउवाच ॥ त्वन्मंत्रजाप्यहमनंतगुणाप्रमेयसीतापतेशिवविरंचिसमाश्रितांघ्रे ॥ संसारसिंधुतरणामलपोतपादरामाभिरामसततंतवदासदासः २७ नमाद्यसर्वजगतामविगोचरस्त्वंत्वन्माययासुतकलत्रगृहांधकूपे ॥मग्नंनिरीक्ष्यमलमुद्गलपिण्डमोहपाशानुबद्धहृदयःस्वयमागतोऽसि २८ त्वंसर्वभूतहृदयेषुकृतालयोऽपित्वन्मंत्रजाप्यविमुखेषुतनोषिमायाम् ॥ त्वन्मंत्रसाधनपरेष्वपयातिमायासेवानुरूपफलदोऽसियथामहीपः २९ ॥

(सीतापतेअप्रमेयअनंतगुणशिवविरंचि समाश्रितअंघ्रेसंसारसिंधुतरण अमलपोतपादअभिराम रामत्वत्मंत्रजापीअहंसततंतवदासदासः) सुतीक्ष्णबोले हे सीतापते संख्यातौलादि प्रमाण रहित इतिहे अप्रमेय जाके दिव्य गुणन को अंत कोऊ नहींपावत इतिहे अनंतगुण शिव ब्रह्मादिकों करिकै सेवित चरणजाके संसार रूपसमुद्र उतरने हेत अमल नावसम चरणजाके अभिराम सबको आनंद दायक परम सुंदर हे रघुनाथ जी आपके मंत्रको जाप करने वाला मैं सदा आपके दासों को दासहौं २७ (मलमुद्गल पिंडमोहपाशानुबद्ध हृदयत्वत् माययासुत कलत्र गृह अंध कूपे मग्नं मम निरीक्ष्यत्वं सर्व जगतां अविगोचरः अद्यस्वयं आगतः असि) सुतीक्ष्ण बोले हे रघुनाथजी मैं कैसाहौं कि रजवीजादि मलको मोगदरसरिखे पिंडभावकाठ कै सोकुंदा जो जड़ शरीर है सो मोहरूपपाशमें बँधाहृदय आपकी माया करिकै पुत्रस्त्री आदि जल अगाधहै जामें ऐसागृहरूप जो अंधकूप है तामें वूड़ता हुवा मोको देखिआपके दयाआई काहेते यद्यपिआप अगत्जनजोहैं तिनहिं अविगोचर भाव किसीकी दृष्टि में नहीं आवतेहो सोऊदया करि आज आपही आय मोहिं दर्शन दीन्हेउ २८ (सर्व भूतहृदयेषु त्वं आलयः कृत अपित्वत्मंत्रजाप्य विमुखेषु मायास्तनोपि त्वत् मंत्रसाधनपरेषु माया अपयाति सेवा अनुरूप फलदः असि यथा महीपः) सुतीक्ष्ण कहत हे रघुनंदन सब भूत जीव मात्र के हृदय विषे आप मंदिर किहे अंतरयामी रूपते निश्चय करि बास किहेहौ तौभी जे आपके मंत्र जापते विमुख हैं तिनके उर में माया को विस्तार करतेहौ ताते विषयासक्त ह्वै अनेक कर्म करि दुख भोगते हैं पुनः जे आपके मंत्र साधन में लगे हैं तिनमें मायानहीं व्यापती है तिनको सेवा अनुरूपजैसी सेवाकरतेहैं तैसाफल देतेहौ जैसे लोक में राजालोग सेवकन को कामदेखि नउकरीघटाते बढ़ाते हैं २९ ॥

विश्वस्यसृष्टिलयसंस्थितिहेतुरेकस्त्वंमाययात्रिगुणयाविधिरीशविष्णू ॥ भासीशमोहितधियांविविधाकृतिस्त्वंयद्वद्रविःसलिलपात्रगतोह्यनेकः ३० प्रत्यक्षतोऽद्यभवतश्चरणारविंदंपश्यामिराम तमसःपरतःस्थितस्य ॥ दृग्रूपतस्त्वमसतामविगोचरोऽपित्वन्मंत्रपूतहृदयेषुसदाप्रसन्नः ३१ पश्यामिरामतवरूपमरूपिणोऽपि

मायाविडंबनकृतंसुमनुष्यवेषम् ॥ कंदर्पकोटिसुभगंकमनीयचापवाणंदयार्द्रह दयंस्मितचारुवक्त्रम् ३२ ॥

(विश्वस्यसृष्टिसंस्थितिलयहेतुःएकःत्वंईशत्रिगुणयामाययामोहितधियांविधिः ईशविष्णूत्वंबिविधआकृतिःभासियद्वत्सलिलपात्रगतःहिरविःअनेकः) हे रघुनाथजी संसार की उत्पत्ति पालन प्रलयइत्यादिके कारणएक आपही परमेश्वरहौ अरुआपकी त्रिगुणात्ममाया करिकै मोहित है बुद्धि जिनकी तिनहिं ब्रह्माशिव बिष्णु इत्यादि आपअनेक रूपकरिकै न्यारे न्यारे प्रकाशित होतेहौ कौन भांति जैसे जल भरे पात्रन में प्रास भये ते निश्चय करिकै एकही सूर्य अनेक रूप देखि परते हैं इसी भांति एक आप माया में प्रभा परि अनेक रूप देखाते हौ ३० (रामतमसः परतः स्थितस्यभवतः चरणारविंदमद्यप्रत्यक्षतः पश्यामिअसतांअविगोचरः अपित्वत्मंत्रपूतहृदयेपुसदाप्रसन्नःत्वंदृग्पतः) हे रघुनाथ जी कारणमायाते परेजो आपहौ तिनके चरण कमल आजु प्रत्यक्ष में देखताहौं अरुअसत पुरुषोंको अगोचर भाव नहीं देखिपरतेहौ अरुआपको मंत्रजापकरिकै पवित्र भयाहै हृदय जिनको तिन जननपै सदा प्रसन्न ह्वै आपउनके नेत्रन को विषय होतेहैं देखिपरतेहौ ३१ (रामअरूपिणःअपि दया आर्द्रहृदयंमायाबिडंबनकृतंसुमनुष्यवेषंकदर्पकोटिसुभगंस्मितचारुवक्त्रंकमनीयचापवाणंतवरूपं पश्यामि) हे रघुनन्दन यद्यपि आप रूप रहित हौ तौ भी दया रस करिकै भीजा हुवा हृदय माया विडंबनकृतं भाव लोक जननको दुःखित देखि उर में दया आई ताते लोकोद्धार हेत मायामय तन धरि आपना उपहास अंगीकार करि सुन्दर मनुष्य को ऐसो भेप किहेउ जामें कामदेव ते करोरिन गुण अधिक शोभा है मन्द मुसुकानि युत सुन्दर मुख हाथों में सुन्दर धनुषबाण शोभित ऐसा जो आप को रूप ताहि मैं प्रत्यक्ष देखता हौं ३२ ॥

सीतासमेतमजिनांवरमप्रधृष्यंसौमित्रिणानियतसेवितपादपद्मम् ॥ नीलोत्पल द्युतिमनंतगुणंप्रशांतंमद्भागधेयमनिशंप्रणमामिरामं ३३ जानन्तुरामतवरूपम शेषदेशकालाद्युपाधिरहितंघनचित्प्रकाशम्॥ प्रत्यक्षतोऽद्यममगोचरमेतदेवरूपं विभातुहृदयेनपरंविकांक्षे ३४ इत्येवंस्तुवतस्तस्यरामःसस्मितमब्रवीत् ॥ मुने जानामितेचित्तंनिर्मलंमदुपासनात्३५ अतोऽहमागतोद्रष्टुंमदृतेनान्यसाधनम्॥ मन्मंत्रोपासकालोकेमामेवशरणंगताः ३६ ॥

(मत्भागधेयंरामंअनिशंप्रणमामि) कथंभूतं (नीलउत्पलद्युतिंअजिनअम्बरंअप्रधृष्यंअनंतगुणं प्रशांतं सीतासमेतंसौमित्रिणा नियतसेवितपादपद्मम्) सुतीक्ष्ण कहत कि मेरी महोभाग उदितरूप जो श्रीराम हैं तिनहिं दिनौ राति मैं प्रणाम करता हौं कैसे हैं राम नील कमल सम तनमें है दीप्ति जिनके मृग चर्मादि बसन धारण किहे जिनको अनादर कोऊ करैया नहीं कृपा दया सौलभ्य उदा-रत्तादि परम कल्याण गुणन को अन्त नहींहै जिनके प्रकर्षकरि सतोगुणी वृत्ति जिनकी सीता समेत विराजमान लक्ष्मण करिकै नियम सहित सेवन किये जाते हैं पद कमल जिनके ३३ (रामअशेप देशकालादि उपाधिरहितं चित्धनप्रकाशं तवरूपंजानन्तु अद्यप्रत्यक्षतः ममगोचरंएतत् एवरूपंहृदये विभातु परंविकांक्षेन) हे रघुनाथ जी सम्पूर्ण देश में परिपूर्ण सब काल में एक रस उपाधि रहित सदा चैतन्य समूह प्रकाशमय ऐसा जो अगुण आप को रूप ताहि जो ध्यावते हैं ते जानै अरु मोकों

तौ जो आजु प्रत्यक्ष मेरे नेत्रन की विषय आगे खड़े हौ यही निश्चय करि राज कुमार रूपह ताहि हृदय में बास चाहता हौं अपर रूप की बिशेषि कांक्षा नहीं है ३४ (इतिएवंतरयस्तुवतःसस्मितंराम अब्रवीत्‌मुनेमत्‌ उपासनात्‌ तेचित्तंनिर्मलंजानामि) इसप्रकार तेहि सुतीक्षणके स्तुति करने ते प्रसन्न ह्वै मुसुकाय कै रघुनाथ जी बोले कि हे मुने मेरी उपासना करने ते तुम्हारा चित्त अमल है ताहि मैं जानता हौं ३५ (मत्‌ऋतेअन्यसाधनंनअतः अहंद्रष्टुंआगतःलोकेमत्मंत्रउपासकाःमां एवशरण गताः) सुतीक्ष्ण प्रति प्रभु बोले कि मेरी भक्ति बिना तुम्हारे अन्य साधननहीं है इसीते मैं तुमहिं देखने आया हौं क्योंकि लोक में जे मेरे मंत्र के उपासकहैं ते मेरी निश्चयकरि शरणागत रहते हैं ३६॥

निरपेक्षानान्यगतास्तेषांदृश्योऽहमन्वहम्‌ ॥ स्तोत्रमेतत्पठेद्यस्तुत्वत्कृतंमत्प्रियं सदा ३७ सद्भक्तिर्मेभवेत्तस्यज्ञानंचविमलंभवेत्‌॥त्वंममोपासनादेवविमुक्तोऽसी हसर्वतः३८देहांतेममसायुज्यंलप्स्यसेनात्रसंशयः॥गुरुंतेद्रष्टुमिच्छामिह्यगस्त्यं मुनिनायकम्‌॥किंचित्कालंतत्रवस्तुंमनोमेत्वरयत्यलम्‌ ३९ सुतीक्ष्णोऽपितथेत्या हश्वोगमिष्यासिराघव ॥ अहमप्यागमिष्यामिचिराद्‌दृष्टोमहामुनिः४० अथप्र भातेमुनिनासमेतोरामःससीतःसहलक्ष्मणेन ॥ अगस्त्यसंभाषणलोलमानसः शनैरगस्त्यानुजमंदिरंययौ ४१ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेआरण्यकाण्डेद्वितीयःसर्गः २॥

(निरअपेक्षाअन्यगताः नतेषांअन्वहंदृश्यः अहंतुत्वत्‌ कृतंएतत्‌ स्तोत्रंसदामत्‌ प्रियंयः पठेत्‌) नहीं है कछुइच्छा जिनके सेवाय मेरी और गतिनहींहै जिनके तिनकेसाथ रहि तिनहींको देखिपरता हौं में पुनः हे सुतीक्ष्ण तुम्हारा कियाहुआ यह जो स्तोत्रहै ताहि जो सदा मोकोप्रिय ऐसो जोजन पाठ करैगा३७(तस्य विमलंज्ञानंभवेत्‌ चमेसत्‌ भक्तिःभवेत्‌ त्वं मम उपासनात्‌ इहसर्वतःएवविमुक्तः असि) यह स्तोत्र जोपढ़ैगा ताके विमलज्ञान उत्पन्नहोई पुनःमेरीउत्तम भक्तिहोगी पुनःहेमुने तुमतो मेरी उपासनाते इसी देहमें सब बंधनोंते निश्चय करिके छूटिजाउगे३८ (देहांतेममसायुज्यंलप्स्यसे अत्रसंशयः नमुनिनायकम्‌ तेगुरुंहिअगस्त्यम्‌ द्रष्टुं इच्छामि तत्र किंचित्कालं वस्तुंमे मनः त्वरयतिअलम्‌) देहके अंतभये पर मेरी सायुज्य मुक्ति को प्राप्त होउगे यामें संशय नहीं है अब मुनिन में श्रेष्ठ तुम्हारे गुरुनिश्चय करि अगस्त्य जो हैं तिनहिंदेखने की मोको इच्छा है तहां कछुकालबास करिबे की इच्छा है तहां जावेहेत मेरेमनमें संभ्रमता परिपूर्ण है ३९ (तथासुतीक्ष्णः अपि इति आहराघव श्वःगमिष्यसिअहंअपिआगमिष्यामिचिरमहामुनिःअदृष्टः) जैसे रघुनाथजी जानेको कहै तैसे सुतीक्ष्ण यह कहैकि हे राघवकाल्हिप्रातही चल्यो हमहूं निश्चयकरिकै साथही चलैंगे क्योंकि बहुत कालते महामुनि को नहीं देख्यो आपको साथलै दर्शन करिहौं ४० (अथप्रभातेरामःअगस्त्य संभाषणलोलमानसःससीतःलक्ष्मणेनसहमुनिनासमेतःशनैःअगस्त्यअनुजमंदिरंययौ) अब प्रातहीं रघुनन्दन अगस्त्यसों बार्त्ता करने-हेत उत्कंठितचित्तहै जिनको ताते सहित जानकी लक्ष्मण करिकै सहित सुतीक्ष्णसमेत प्रभु अगस्त्य केछोटे भाई अग्निजिह्वऋपितिनके मंदिरहि प्रथमजातेभये ४१॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतबैजनाथ विरचितेअध्यात्मभूषणेआरण्यकाण्डेद्वितीयःप्रकाशः२ ॥

अथरामःसुतीक्ष्णेनजानक्यालक्ष्मणेनच ॥ अगस्त्यस्यानुजस्थानंमध्याह्नेसमप द्यत १ तेनसंपूजितःसम्यक्भुक्त्वामूलफलादिकं ॥ परेद्युःप्रातरुत्थायजग्मुस्तेऽ गस्त्यमण्डलं २ सर्वर्तुफलपुष्पाढ्यनानामृगगणैर्युतम् ॥ पक्षिसंघैश्चविविधैर्ना दितनन्दनोपमम् ३ ब्रह्मर्षिभिर्देवर्षिभिःसेवितंमुनिमंदिरैः ॥ सर्वतोऽलंकृतंसाक्षा द्ब्रह्मलोकमिवापरम् ४ वहिरेवाश्रमस्याथस्थित्वारामोब्रवीन्मुनिम् ॥ सुतीक्ष्णग च्छत्वंशीघ्रमागतंमांनिवेदय ॥ अगस्त्यमुनिवर्यायसीतयालक्ष्मणेनच ५ ॥

सवैया ॥ घटजानुज भेंटिबसे निशिमें उठि प्रातगये सुमहामुनि धामहिं । सहसा उठि आय अगस्त्य मिले विधिपूजि सुआसन दै अभिरामहिं ॥ बहुभाँति बिनय करि आनिदिये धनुखड्ग सुतूण अछैशरजामहिं । कृत बंदन बैजसुनाथ सदा करुणाकर श्रीसियसानुजरामहिं ॥ (अथजानक्या लक्ष्मणेन च सुतीक्ष्णेन राम. मध्याह्ने अगस्त्यस्य अनुजस्थानं समपद्यत) शिवजी बोले हेगिरिजा अब जानकी लक्ष्मण करिकै सहित पुनः सुतीक्ष्ण सहित चलते हुये रघुनाथ जी दुपहरके समयमें जो अगस्त्यके छोटे भाई अग्निजिह्व ऋषि तिनके आश्रममें जाय प्राप्तभये १ (तेन सम्यक् संपूजितः मूल फलादिकं भुक्त्वा परेद्युः प्रातः उत्थायते अगस्त्य मंडलं जग्मुः) तिनऋषि करिकै सांचे भावते संपूर्ण प्रकार पूजे गये मूल फलादि भोजन करि राति भरि रहे दूसरे दिन प्रातभये उठि रघुनन्दन जानकी लक्ष्मण सुतीक्ष्ण इत्यादिते सब अगस्त्य के आश्रमके बाह्य सींवाँ के भीतर जाते भये २(फलपुष्पैःआढ्यंसर्वर्तुनानामृगगणैःयुतम्चप क्षिसंघैःविविधैःनादितम्नंदनःउपम्)फलफूलन करिकै शोभित सबठौर बनहै अनेक प्रकारके मृगझुंडन करिकै युतहै पुनः पक्षीसमूह अनेक बोली बोलि रहेहैं इत्यादि यथानंदन बनहै मुनिको आश्रम ३ (ब्रह्मऋषिभिःदेवऋषिभिःसेवितंसर्वतः मुनिमंदिरैःअलंकृतंसाक्षात्अपरंब्रह्मलोकंइव) ब्राह्मणोंमें स्वधर्मव्रतीदेवतों में ऋषिधर्म व्रतीतिनकरि कै सेवित चारिहुदिशि सबठौर मुनिन के मदिरन करिकै भूपित कैसा शोभित यथा साक्षात् दूसरा ब्रह्मलोकही है ४ (अथआश्रमस्यबहिःएवस्थित्वारामःमुनिम्अब्रवीत्सुतीक्ष्णत्वंशीघ्रंगच्छलक्ष्मणेन चसीतयामांआगतंअगस्त्य मुनिवर्यायनिवेदय) अबआश्रमके बाहेर निश्चय करिठाढ़ह्वै रघुनन्दन मुनिप्रतिबोले कि हे सुतीक्ष्णआश्रमके भीतरतुम शीघ्रही जाउ लक्ष्मण सीता सहित मेरा आवन अगस्त्यमुनिवरके अर्थ निवेदनकरो भावलक्ष्मण सीता सहित रामआपके दर्शनहेत द्वारपरखड़ेहैं ५ ॥

महाप्रसादइत्युक्त्वासुतीक्ष्णःप्रययौगुरोः ॥ आश्रमंत्वरयातत्रऋषिसंघसमावृत म् ६ उपविष्टंरामभक्तैर्विशेषेणसमायुतम् ॥ व्याख्यातराममंत्रार्थंशिष्येभ्यश्चा तिभक्तितः ७ दृष्ट्वागस्त्यंमुनिश्रेष्ठंसुतीक्ष्णःप्रययौमुने ॥ दण्डवत्प्रणिपत्याहवि नयावनतःसुधीः ८ रामोदाशरथिर्ब्रह्मन्सीतयालक्ष्मणेनच ॥ आगतोदर्शनार्थं तेबहिस्तिष्ठतिसांजलिः ९ ॥ अगस्त्यउवाच ॥ शीघ्रमानयभद्रंतेरामंममहृदि स्थितम् ॥ तमेवध्यायमानोहंकांक्षमाणोऽत्रसंस्थितः १० इत्युक्त्वास्वयमुत्था यमुनिभिःसहितोद्रुतम् ॥ अभ्ययात्परयाभक्त्यागत्वाराममथाब्रवीत् ११ ॥

(महाप्रसादइतिउक्त्वासुतीक्ष्णःगुरोः आश्रमंत्वरयाप्रययौ तत्रऋषिसंघसंआवृतम्) आप की

महा अनुग्रह है ऐसा कहि सुतीक्ष्ण गुरु को जो आश्रम है ताके भीतर शीघ्रही जातेभये तहां ऋषि समूह बैठे हैं और पास ६(विशेषेणरामभक्तैः समायुतंउपविष्टंचशिष्येभ्यः अतिभक्तितःराममंत्रार्थंव्याख्यात) विशेष करिकै ये राम भक्तहैं ऐसे ऋषिन करिकै सहितबैठे अगस्त्यऋषि पुनःशिष्यलोगनते अत्यन्त भक्तिते राम मंत्र के अर्थ की व्याख्या करि रहे हैं ७ (सुतीक्ष्णःप्रययौमुनिश्रेष्ठंअगस्त्यंमुने दृष्ट्वासुधीः दण्डवत्प्रणिपत्यविनयावनतःआह) सुतीक्ष्ण आश्रम में जाय तहां मुनिनमें श्रेष्ठ अगस्त्य मुनि को देखि बुद्धि सुंदरि है जिनकी ऐसे सुतीक्ष्ण दण्डप्रणाम करि नम्रता से प्रिय वचन बोले ८ (ब्रह्मनसीतयालक्ष्मणेनचदाशरथिःरामः तेदर्शनार्थंआगतः सांजलिःवहिःतिष्ठति) सुतीक्ष्ण बोले हे ब्रह्मन् सीता लक्ष्मण करिकै सहित दशरथनंदन राम आप के दर्शन हेत आये हैं हाथ जोड़े बाहेर खड़े हैं ९ (भद्रंममहृदिस्थितम् रामंशीघ्रंआनयतं एवध्यायमानः अहंअत्रसंस्थितः) अगस्त्य बोले हे सुतीक्ष्ण तुम्हार कल्याण होय मेरे हृदय में सदा बास किहे हुये जो राम हैं तिनहिं शीघ्र ही लवाय लावो तिनहींको ध्यान करता हुवा प्राप्तीकी कांक्षा राखे मैं इहां स्थितहौं १० (इतिउक्त्वा स्वयंउत्थायमुनिभिः अभ्ययात् द्रुतंगत्वाअथपरयाभक्त्यारामं अब्रवीत्) रघुनन्दनहिं शीघ्रही लावो ऐसा कहि अगस्त्य आपही उठे मुनिन सहित चले शीघ्रही प्रभु समीप प्राप्त भये तब परामक्ति करिकै भाव अनुराग सहित अगस्त्य रघुनन्दन प्रति बोले ११ ॥

आगच्छारामभद्रंतेदिष्ट्यातेऽद्यसमागतः ॥ प्रियातिथिर्ममप्राप्तोस्यद्यमेसफलं दिनम् १२ रामोऽपिमुनिमायान्तंदृष्ट्वाहर्षसमाकुलः ॥ सीतयालक्ष्मणेनापिदण्डवत्पतितोभुवि १३ द्रुतमुत्थाप्यमुनिराट्राममालिंग्यभक्तितः ॥ तद्गात्रस्पर्शजाह्लादश्रवन्नेत्रजलाकुलः १४ गृहीत्वाकरमेकेनकरेणरघुनन्दनम् ॥ जगामस्वाश्रमं हृष्टोमनसामुनिपुंगवः १५ सुखोपविष्टंसंपूज्यपूजयाबहुविस्तरम् ॥ भोजयित्वाय थान्यायंभोजैर्वन्यैरनेकधा १६ सुखोपविष्टमेकांतेरामंशशिनिभाननम् ॥ कृतांजलिरुवाचेदमगस्त्योभगवानृषिः १७ ॥

(तेभद्रंरामआगच्छदिष्ट्याअद्यतेसमागमःममप्रियअतिथिःप्राप्तोसिअद्यमेदिनंसफलम्) अगस्त्य बोले कि आप को कल्याण होय हे रघुनंदन आइये मेरी बड़ी भाग्य करिकै या समय में आप को समागम भया मेरे प्रिय पाहुन आप प्राप्त भयो आजु मेरा दिन सफल भया १२ (मुनिंअपिआयांतंदृष्ट्वारामः हर्षसंआकुलः सीतयालक्ष्मणेनअपिदण्डवद्भुविपतितः) मुनि जो अगस्त्य तिनहिं निश्चय करि आवते देखि रघुनन्दन आनन्द ते परिपूर्ण सीता लक्ष्मण करिकै सहित दण्ड की नाईं भूमि में गिरि प्रणाम कीन्हें १३ (मुनिराट्रामंद्रुतं उत्थाप्यभक्तितः आलिंग्यतत्गात्रस्पर्शजआह्लादनेत्रश्रवत् जलाकुलः) मुनि राज अगस्त्य रघुनन्दन जो हैं तिनहिं शीघ्रहीं उठाय भक्ति ते हृदय में लगाय लिये तिन प्रभु के तन स्पर्श ते उत्पन्न जो प्रेमानन्द ताकी उमंग सो नेत्रन में बहिरहा है आंशु जल समूह १४ (मुनिपुंगवःएकेनकरेणरघुनन्दनम् करंगृहीत्वामनसाहृष्टः स्वआश्रमंजगाम) मुनिन में श्रेष्ठ अगस्त्य अपने एक हाथे करिकै रघुनन्दन को हाथ पकरि मन करिकै आनन्द ह्वै अपने आश्रमहिं लै गये १५ (सुखोपविष्टंबहुविस्तरम् पूजयासंपूज्यअनेकधावन्यै भोज्यैर्यथान्यायैः भोजयित्वा) सुख पूर्वक आसन पर बैठारि बहुत विस्तार पूर्वक पूजा की सामग्री जो गंध फूलादि करि

के षोड़शोचार पूजि वन में भये मूल फलादि भोजनकी सामग्री करिके जैसा उचित रहै ताही रीति भोजनकराये १६ (एकांतेसुखोपविष्टंशशिनिभाननंरामंअगस्त्यः भगवान्ऋषिःकृतांजलिरूंउवाच) एकान्त में सुख पूर्वक बैठे चन्द्रमा सम प्रकाशमान मुख जिनको ऐसे जो रघुनन्दन तिन प्रति अगस्त्य भगवान् समर्थ ऋषि हाथ जोरि ऐसा वचन बोले १७ ॥

त्वदागमनमेवाहंप्रतीक्षन्समवस्थितः॥यदाक्षीरसमुद्रांते ब्रह्मणाप्रार्थितःपुरा॥भूमेर्भारापनुत्त्यर्थंरावणस्यवधायच १८ तदादिदर्शनाकांक्षीतवरामतपश्चरन् ॥ वसामिमुनिभिःसार्द्धंत्वामेवपरिचिंतयन् १६ सृष्टेःप्रागेकएवासीन्निर्विकल्पोऽनुपाधिकः ॥ त्वदाश्रयात्वद्विषयामायातेशक्तिरुच्यते २० त्वामेवनिर्गुणशक्तिरावृणोतियदातदा ॥ अव्याकृतमितिप्राहुर्वेदांतपरिनिष्ठिताः २१ ॥

(त्वत् आगमनं प्रतीक्षन् एव अहंसं अवस्थितः पुरा रावणस्य वधाय च भूमेः भाराप नुत्त्यर्थं यदाक्षीरसमुद्रांते ब्रह्मणा प्रार्थितः) अगस्त्य बोले हे रघुनन्दन आपके आगमन की प्रतीक्षा भाव दर्शनकी अभिलाष करता हुआ निश्चय करि मैं स्थितरहा जब पूर्वकालमें रावणके वधहेत पुनः भूमि को भार उतारन हेत जा समयमें ब्रह्माने आपसो प्रार्थना किया भावनर राजतन धरि रावणादि दुष्टोंको मारि भूभार दूरिकरौ १८ (तदादि रामतव दर्शनाकांक्षीत्वां एवपरिचिंतयन तपश्चरन् मुनिभिस्साईं वसामि) जब ब्रह्माकी प्रार्थना आपने अंगीकार किया तबते हे श्रीरघुनाथजी आपके दर्शनकी इच्छाते अंतरमें आपको चितवन देहते तपस्या करता हुआ बहुत मुनिन करिके सहित इस आश्रम में वास करताहौं १६ (सृष्टेः प्राक्अन् उपाधिकः निर्विकल्पः एक एव आसीत् मायात्वत् आश्रया त्वत् विषयाते शक्तिः उच्यते) माधुर्यमें लोप परब्रह्मरूपकी ऐश्वर्य प्रसिद्धकरि समाजको बोध कराने हेत अगस्त्यबोले हे रघुनाथ जी सृष्टिके पूर्व आपकैसे रहेहौ अन् उपाधिकः अर्थात् नहींहै उपाधि धर्म चिंता जामें पुनः निर्विकल्प नहींहै विकल्प कारण रूपजामें ऐसे एकही निश्चय करि आपही रहेहौ अरुमाया जो है सो तुम्हारे आश्रित भाव तुम्हारे बलते बलीहै पुनः तुमहींहौ जाकी विषय भाव तुमहीको सेवन करतीहै ताते तुम्हारी शक्ति कहातीहै यथा सूर्यकी शक्तिप्रभा सूर्यते न्यारी नहीं अरु प्रभाको सब व्यापार सूर्यहीके बलतेहै तथामायाको व्यापार आपहीके बलते है ताते माया आपकी शक्ति है ताते आदि एक आपही हौ २० (त्वं निर्गुणं एव यदाशक्ति आवृणोति तदा वेदांत परिनिष्ठिताः अव्याकृतं इति प्राहुः) आप निर्गुण निश्चय करि तीनि गुणनते परेहौ तिनको जब शक्ति आवरण करतीहै भाव दिव्य माया सहित मूर्तिमान् होतेहौ तब वेदांतीलोग आपको अव्याकृत भाव नाश रहित आत्मरूप कहतेहैं २१॥

मूलप्रकृतिरित्येकेप्राहुर्मायेतिकेचन॥अविद्यासंसृतिर्बन्धइत्यादिबहुधोच्यते२२ त्वयासंक्षोभ्यमानासामहत्तत्वंप्रसूयते ॥ महत्तत्त्वादहंकारस्त्वयासंचोदितादभूत् २३ अहंकारोमहत्तत्त्वसंवृतस्त्रिविधोभवत् ॥ सात्विकोराजसश्चैवतामसश्चेतिभण्यते २४ ॥

(एकेमूलप्रकृतिःइतिप्राहुःकेचनमायाइतिबहुधाअविद्यासंसृतिःबंधइत्यादिउच्यते) एककोऊ अर्थात् कपिलादि सांख्यमतवाले उसीशक्ति को मूल आदि कारण प्रकृति है ऐसा कहतेहैं कोऊ वाको मायाझूठाव्यवहार ऐसाकहते हैं बहुधा अर्थात् बहुत आचार्यउसी शक्तिको अविद्यासंसारबंधन

इत्यादि कहते हैं भावजे समग्ररूप आपही करिकै नहीं जानतेहैं ते आपने मतअनकूल अनेक तर्कनाकरते हैं २२ (सात्वयाक्षोभमाणामहत् तत्त्वंप्रसूयतेत्वयासंचोदितात्महतत्त्वात्अहंकारःअभूत्) हे रघुनन्दन सोई शक्ति आप करिके क्षोभमान चञ्चल जड़ ते चैतन्य लघुदीर्घादि विस्तार ह्वै महत् तत्त्व को उत्पन्न किया अर्थात् यथा पुरुष को बीज स्त्री के रजमों मिलि पिण्डभयो ताके अन्तर गत अनेक गुण होते हैं ताही भांति परमेश्वर को अंश प्रकृति में मिलि महा तत्त्व भयो ताके अन्तरगत पांचौ तत्त्व तीनों गुण चारिहु अन्तःकरणादि सब हैं परन्तु सतोगुण बुद्धि प्रधान होती है इति महत् तत्त्व प्रथम भयो पुनः आप करिकै प्रेरणा करने ते सोई जो महत् तत्त्व है ताते रजतम सत्वादि त्रिगुणात्म अहंकार उत्पन्नभयो २३ (महत्तत्त्वत्रिविधः अहङ्कारः संवृतःअभवत् सात्त्विकः चएवराजसः चतामसः इतिभण्यते) अगस्त्य बोले हे रघुनाथजी सो अहंकार कैसा भया कि महत् तत्त्व जो है तामें तीनि बिधिको अहंकार सम्पूर्ण प्रकारते आवृतघेरेहुये होता भया कौन तीनिप्रकार एक सात्त्विक अहंकार पुनः निश्चयकरि राजस पुनःतामस इत्यादि तीनिप्रकार कहेजातेहैं भाव जो महातत्त्व है सोई कारण शरीर है तामें केवल कारणमाया पिण्डमें आत्मा व्याप्त ताहीके प्रभाव ते सतोगुणी बुद्धि होती है भाव मैं जप तपादि सुख साधन करि सक्ता हौं इति सतोगुणी बुद्धिहै पुनः ताही महातत्त्व में ईश्वर की प्रेरणा ते कार्य भया प्रवेश भई जामें शब्द स्पर्श रूप रस गन्धादि सूक्ष्म रूप ते पांचौ तत्त्व गर्भित हैं तीनों गुणनमें अहंकार उत्पन्नभया यथा ॥ दोहा ॥ सकल वस्तु को ज्ञान अरु बुद्धि बिमल जब होय । तवै सतोगुण जानिये कहत सयाने लोय ॥ लोभ लिये व्यवहार जो सोई रज गुण ज्ञान । आलस निद्रा विकल मन मोह तमोगुण मान ॥ इति त्रिगुणात्म अहंकार युत कार्य मायामय सूक्ष्म तन भया २४ ॥

तामसात्सूक्ष्मतन्मात्राण्यासन्भूतान्यतःपरम् ॥ स्थूलानिक्रमशोरामक्रमोत्तरगुणानिहि २५ राजसानींद्रियाण्येवसात्त्विकादेवतामनः ॥ तेभ्योऽभवत्सूत्ररूपंलिंगं सर्वगतंमहत् २६ ॥

(तामसात् सूक्ष्मतन्मात्राणि आसन् अतः परं रामक्रमशः स्थूलानि भूतानि क्रमोत्तर गुणानिहि) तिनमें तामस अहंकार ते शब्द स्पर्श रूप रस गंध इत्यादि तत्त्वनके सूक्ष्मरूप तन्मात्रा आसन् अर्थात् होते भये अतःपरं अर्थात् इस्के उपरांत हे रघुनाथ जी इनही तन्मात्रनते क्रमशः स्थूलानि भूतानि अर्थात् क्रम सहित स्थूल रूपजो आकाशादि भूतन के हैंते होते भये तब क्रमेण उत्तर गुणानिहि तिनमें क्रमकरिकै एकएक गुण अधिक होते गया यथा तामस को प्रसिद्ध रूपहै क्रोधतामें पांच अंग प्रथम पारुष्यता ते शब्दभया दूसरा हिंसाताते स्पर्शभया तीसरा वैर ताते रूपभया चौथामान ताते रसभया पांचौ ईर्षा ताते गंध इति तन्मात्रा सूक्ष्मरूप है तिनमें शब्दते आकाश भया शब्दसहित स्पर्शते पवन भया शब्दस्पर्श सहित रूप तन्मात्राते अग्निभया शब्द स्पर्श रूपसहित रसतें जल भया शब्दस्पर्श रूपरस सहित गंधते पृथिवी उत्पन्न भई अरुजिस शब्दादि सूक्ष्मरूपन ते आकाशादि स्थूलरूपहोते गये ताही क्रमस्थूल रूपन में एकएक गुण अधिक होतागया यथा आकाश में शब्द एकै गुण पवन में शब्दस्पर्श दो गुण अग्नि में शब्दस्पर्श रूपतीनि गुणजल में शब्दस्पर्श रूपरस चारिगुण पृथ्वी में शब्दस्पर्श रूपरस गंधपांचौ गुणहैं २५ (राजासात्इन्द्रियाणिएवसात्विकात्देवतामनः तेभ्यःसर्वगतंलिंगंसूत्ररूपंमहत्अभवत्) राजस अहंकार ते श्रवणादि दशौ इन्द्री भई सात्त्विक अहंकार ते इन्द्रिनके देवता अरु मनभया अर्थात्

राजस के प्रसिद्धरूपकाम अरुलोभ है काममें पांच अंशहैं प्रथम आशा ताते श्रवण इन्द्री भई शब्दविषय दूसरि तृष्णा ताते त्वचा इन्द्री स्पर्शविषय तीसरि ममता ताते नेत्र इन्द्ररूप विषय चौथि लोलुपताताते जिह्वा इन्द्री रस विषय पांचौ असत्वासनाताते नासिका इन्द्रीभयी गन्ध विषय इति कामके पांचौअंशन ते सहितविषयन पांचौ ज्ञानइन्द्रीभई पुनः राजसको दुसरारूप लोभहैताहू में पाच अंश प्रथम चाहताते हाथ इन्द्री भई व्यवहार विषयहै दूसर अविचार ताते पगइन्द्री चलन विषय तीसर तन पोपता ताते मुख इन्द्री भईभक्षण विषय है चौथिकुमति ताते गुदाइन्द्री मलत्याग विषय पाचौंरतिताते लिंग इन्द्री मैथुन विषय इति कर्म इन्द्री पांच इत्यादि दशोंइन्द्रीराजस अहंकारते भई पुनः सात्विक अहंकार को प्रसिद्धरूप सांति है तामें गेरह अंशहैं प्रथमसुदिताहै ताते दिशा भयो जो श्रवनकोदेवता है दूसरशतवासना ताते पवन भयो जो त्वचा को देवताहै तीसरप्रकाश ताते सूर्य भये जो नेत्रके देवता हैं चौथनम्रता ताते वरुण भये जो जिह्वाके देवता हैं पंचम थिरता ताते अश्वनी कुमार भये जो नासिकाके देवताहैं छठौं उदासीनता ताते अग्निभयो जो मुखके देवताहैं सातौ श्रद्धाताते इन्द्रभये जो हाथके देवताहैं आठौंकरुणा ताते यश विष्णुभये जो पगके देवताहैं नवमलज्जा ताते यम भये जो गुदा के देवताहैं दशमअभ्यास ताते ब्रह्माभये जो लिंगके देवताहैं गेरहौं प्रवृत्तताते मनभया जो अंतर की इन्द्रीहै सबइन्द्रिन को स्वामी है ताको देवता चन्द्रमाहै इत्यादि सबमिलि एकत्रभयेते तेभ्यः सर्वं गतं अर्थात् तिनसब सूक्ष्म तत्त्वन ते सबमें जो व्यापक है लिंगसूत्ररूपं महत् अभवत् लिंग जोसब कार्य को करनेवाला सूत्ररूपहिरण्यगर्भ सबको प्रकाशकरता महान् पुरुपभाव सेंद्री देहको अभिमानी भया २६॥

ततोविराट्समुत्पन्नःस्थूलाद्भूतकर्दवकात् ॥ विराजःपुरुषात्सर्वंजगत्स्थावरजंगमम् ॥ देवतिर्यङ्मनुष्याश्चकालकर्मक्रमेणतु २७ त्वंरजोगुणतोब्रह्माजगतःसर्वकारणम् ॥ सत्त्वाद्विष्णुस्त्वमेवास्यपालक.सद्भिरुच्यते ॥ लयेरुद्रस्त्वमेवास्य त्वन्मायागुणभेदतः २८॥

(ततःविराट्समुत्पन्नः) तदनन्तर हिरण्यगर्भ ते विराट् अर्थात् स्थूल ब्रह्मांड सम्पूर्ण उत्पन्न भयो (स्थूलात्कदम्बकात् विराजःअभूत्) स्थूल जो भूमि गिरिसरि सागर भुवनादि कर्दवकहे समूह तिनते विराजः ब्रह्मांड भरेको स्वामी महाविष्णुभये (विराजःपुरुपात्स्थावरजंगमम् देवतिर्यङ्मनुष्याः सर्वंजगत्) विराज पुरुष ते स्थावर वृक्षादि जंगम यथा देवता सर्पादि पुनः मनुष्य इत्यादि सब जगत् भया (तुक्रमेणकालकर्म) पुनः क्रम करिकै तिथि पक्ष मास वर्ष युगादि काल अरु शुभाशुभ कर्म होता भया २७(त्वंरजोगुणतः ब्रह्मासर्वजगतः कारणम् अस्यपालकः त्वंएवसत्त्वात्विष्णुः सद्भिःउच्यते अस्यलयेत्वंरुद्रः एवत्वत् मायागुणभेदतः) अगस्त्य बोले हे रघुनाथ जी आप रजोगुण ते ब्रह्मारूप ते सब जगत् के कारण भाव सृष्टि करते हौ पुनः इसी संसार के पालन कर्त्ता आप निश्चयकरि सतोगुणते विष्णु होतेहौ ऐसा सन्तन करिकै कहा जात तथा इस संसार के प्रलयसमय आपु तमोगुण ते रुद्र ह्वै निश्चय करि संहार करते हौ इत्यादि आप मायागुणों ते भेद ते रूप देखाते हौ २८॥

जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्याख्यवृत्तयोबुद्धिजैर्गुणैः॥तासांविलक्षणोरामस्त्वंसाक्षीचिन्मयो

व्ययः २९ सृष्टिलीलांयदाकर्तुमीहसेरघुनन्दन ॥ अंगीकरोषिमायांत्वंतदावैगु णवानिव ३० रामायाद्विधाभातिविद्याविद्येतितेसदा ॥ प्रवृत्तिमार्गनिरताअवि द्यावशवर्तिनः ३१ निवृत्तिमार्गनिरतावेदांतार्थविचारकाः ॥ त्वद्भक्तिनिरतायेच तेवैविद्यामयाःस्मृताः ३२ अविद्यावशगायेतुनित्यंसंसारिणश्चते ॥ विद्याभ्यास रतायेतुनित्यमुक्तास्तएवहि ३३ ॥

(बुद्धिजैःगुणैः जाग्रत्स्वप्नसुषुप्ति आख्यावृत्तयः तासांसाक्षीविलक्षणः रामत्वंचिन्मयःअव्ययः) बुद्धिकरिकै उत्पन्न तमरज सत्त्वादि गुणन करिकै जाग्रत्स्वप्न सुषुप्ति आदिप्रसिद्ध वृत्तीजीवके व्यापर जो तीनिहू अवस्थाहैं तिनको प्रसिद्ध जाननेवाले साक्षी विलक्षण अर्थात् किसी कारणते बनाये नहीं स्वयं हेरघुनाथ जी आपसदा चैतन्य अविनाशिहौ २९ (रघुनन्दन यदासृष्टिलीलांकर्तुं ईहसे तदात्वं वैगुणवान् इवमायां अंगीकरोषि) हेरघुनन्दन जासमैमें संसार रचना रूपलीला करवेकी इच्छा करते हौ ता समैमें आप निश्चयकरि गुणवान् की नाईं मायाजोहै ताहि अंगीकार करतेहौ भावमाया मयरूप धारण करि मायिक व्यापार करतेहौ ताते सतोगुणी रजोगुणी तमोगुणी से भासित होतेहौ ३० (रामतेमायाविद्या अविद्याइति द्विधासदाभाति अविद्यावशवर्तिनःप्रवृत्तिमार्ग निरताः) हेरघुनाथजी आपकी माया एक विद्या दूजी अविद्या इत्यादि दोभाँति सदालोकमें प्रकाशितहैं तहां जे जीव अविद्या के आधीनहैं ते प्रवृत्ति मार्गमें निरतभाव संसारही व्यवहार में आसक्त रहतेहैं ३१ (ये त्वद्भक्तिनिरताच वेदांतस्यअर्थविचारकाः निवृत्तिमार्ग निरताते वैविद्यामयाःस्मृताः) हेरघुनन्दन येजन श्रवणादि आपकी भक्तिमें लगेहैं पुनः वेदांतको अर्थ आत्मरूप बिचारतेहैं इत्यादि प्रवृति भाव परलोक मार्गमें लगेहैं ते निश्चयकरि विद्यामयहैं ऐसाजाना चाहिये ३२ (तुयेअविद्या बशगातेच नित्यंसंसारिणः तुयेविद्याभ्यासरतास्त एवहिनित्यमुक्ताः) पुनः जे अविद्याकेवशमें प्राप्तहैं तेजन पुनः नित्यही संसारी जीवहैं पुनः जे विद्याके अभ्यासमें लगेहैं वेनित्यही मुक्त जीवहैं ३३ ॥

लोकेत्वद्भक्तिनिरतास्त्वन्मन्त्रोपासकाश्चये ॥विद्याप्रादुर्भवेत्तेषांनेतरेषांकदाच न ३४ अतस्त्वद्भक्तिसम्पन्नामुक्ताएवनसंशयः ॥ त्वद्भक्त्यामृतहीनानांमोक्षः स्वप्नेऽपिनोऽभवत् ३५ किंरामबहुनोक्तेनसारंकिञ्चिद्ब्रवीम्यहं ॥ साधुसंगतिरेवात्र मोक्षहेतुरुदाहृतः ३६ साधवःसमचित्तायेनिस्पृहाविगतैषिणः ॥ दांताःप्रशांता स्त्वद्भक्तानिवृत्ताखिलकामतः ३७ इष्टप्राप्तिविपत्योश्चसमाःसंगविवर्जिताः ॥ संन्यस्ताखिलकर्माणःसर्वदाब्रह्मतत्पराः ३८ ॥

(लोकेयेत्वत्भक्तिनिरताः चत्वत्मंत्रस्यउपासकाः तेषांविद्याप्रादुर्भवेत् इतरेषांकदाचनन)हेरघुनाथ जी लोक में जे जन श्रवण कीर्तनादि आप की भक्ति में लगे हैं पुनः आप के षडक्षर मंत्र के उपासक भाव बिधि समेत नित्य जाप करते हैं तिनको विद्या आप ही आप प्रकट होती है पुनः इत रेषां भाव जे भक्ति ते बिलग विषयी विमुखन को कबहूं नहीं विद्या होती है ३४ (अन्तःत्वत् भक्तिसम्पन्नाःएवमुक्ताः संशयःनत्वत् भक्तिअमृतहीनानांस्वप्नेअपिमोक्षःनअभवत्) इस कारण ते हे रघुनन्दन आप की भक्ति में आरूढ़ है भाव सेवन स्मरणादि जिन में परिपूर्ण हैं ते निश्चयकरिकै मुक्त हैं यामें संशय नहीं है अरु जे आप की भक्तिरूप अमृत करिकै हीन हैं तिनको स्वप्न में भी

मोक्ष नहीं प्राप्त ह्वै सक्ती है ३५ (रामबहुनाउक्तेन किंसारंकिञ्चित् तेब्रवीमिभत्रमोक्षहेतुः साधु संगतिः एवउदाहृता) हे रघुनन्दन बहुत कहने से क्या प्रयोजन है जो सारांश वस्तुहै सो कछु थोरा आपुप्रति कहताहौं यामें मोक्षहोने को कारण साधुजनन की संगति निश्चयकरि कहीगई है ३६ (ये साधवःएपिणः विगतनिस्पृहाः समचित्ताः अखिलकामतः निवृत्तादांताः प्रशांताःत्वत्भक्ताः) जिनकी संगति मुक्तिको कारण ऐसे जे साधुहैं तिनकेसुत बित्तनारि इत्यादि सबभाँतिकी इच्छा विशेषजात रहीहै हानिलाभादिकी नहींहै इच्छाराग द्वेपरहित समसबपर बराबरि चित्तराखे देहसुखमान स्वर्गादि सबकामना निवृत्त त्यागि किहे दांत अर्थात् इंद्रिनको दमन किहेशांत स्वभावते आपके भक्तहैं ३७ (इष्टप्राप्तिचविपत्त्योः समाःअखिलकर्माणः संन्यस्तसंगविवर्जिताः सर्वदाब्रह्मतत्पराः) मनोरथ सुख प्राप्तभये पर पुनः विपत्ति परेपर समाः बराबरिही आनंद बने रहतेहैं शुभाशुभादि सम्पूर्ण कर्मन को त्यागि दूसरे को संग रहित अकेले एकांत स्थानमें बैठे ब्रह्मतत्पर सर्व समय ब्रह्म विचार में लगेरहते हैं ३८॥

यमादिगुणसंपन्नाःसंतुष्टायेनकेनचित्।सत्संगमोभवेद्यर्हित्वत्कथाश्रवणेरतिः३९
समुदेतिततोभक्तिस्त्वयिरामसनातने॥ त्वद्भक्तावुपपन्नायांविज्ञानंविपुलंस्फुटम्
उदेतिमुक्तिमार्गोऽयमाद्यश्चतुरसेवितः ४० तस्माद्राघवसद्भक्तिस्त्वयिमेप्रेमल
क्षणा॥ सदाभूयाद्धरेःसंगस्त्वद्भक्तेषुविशेषतः४१ अद्यमेसफलंजन्मभवत्संदर्श
नादभूत्॥ अद्यमेक्रतवःसर्वेबभूवुःसफलाःप्रभो४२ दीर्घकालंमयातप्तमनन्यम
तिनातपः॥ तस्येहतपसोरामफलंतवयदर्चनम् ४३॥

(येनकेनचित् संतुष्टायमादिगुणसम्पन्नाः सत्संगमोयर्हिभवेत् त्वत्कथाश्रवणेरतिः भवेत्) निरूपाय जो कछु प्राप्त भया ताही में सन्तोप राखते हैं यमादि यथा जीवन पर दया सत्य बोलना चोरी न करना ब्रह्मचर्य इन्द्री स्वाधीन इति यम हैं पुनः शौच सन्तोप तप सद्ग्रंथ ईश्वर प्रीति इति नियम कमलादि आसन मनस्वाधीन इति प्रत्याहार स्वास रोकना प्राणायामहै चित एकाग्र धारणा ध्यान समाधि इति योगके यम नियम आसन प्रत्याहार प्राणायाम धारणा ध्यान समाधि इनगुणन करिकै परिपूर्ण हैं ऐसे सन्तन को सत्संग जब होताहै तब आपकी कथा श्रवणमें प्रीति होती है ३९ (ततःरामत्वयिसनातनेभक्तिः संउदेतित्वत्भक्तौ उपपन्नायां विपुलंविज्ञानं स्फुटमुदेति अयंमुक्ति मार्गः आद्यचतुरैः सेवितः) हेरघुनन्दन आपविपे सनातन भक्ति परिपूर्ण उदय होती है भाव सन्तन तेकथासुनि आपमें प्रेमहोताहै श्रवण कीर्तनादि भक्तिमें उत्पन्न बहुत प्रकार को विज्ञान प्रकाशमान उदय होताहै यह मुक्तिमार्ग आदि कालते चतुरन करिकै सेवितहै ४० (तस्मात् राघव त्वयिप्रेम लक्षणा सत्भक्ति हरे विशेपतः त्वद्भक्तेपु संगःमे सदाभूयात्) तिस कारण हे राघव आप विषे प्रेम लक्षणा उत्तमभक्ति अरु हे हरि विशेपतो आपके भक्तोंमें संग मोंको सदाहोय ४१ (प्रभोभवत् संदर्शनात् अद्यमे जन्म सफलम् अभूत् अद्यमेक्रतवः सर्वेसफलाःबभूवुः) हेप्रभो आपके दर्शनते अब मेराजन्म सफलभया आजमेरेकियेयज्ञादि सर्वसत्कर्म सफल होतेभये ४२ (अनन्यमतिनामयादीर्घ कालंतपः तप्तंतस्यतपसः इहफलंरामयत्तव अर्चनम्) सबको भरोसात्यागि सर्वोपरि जानिएक आपही में मन वचन कर्म ते लगारहा इति अनन्यमति करिकै मैंने बहुत काल तप किया तिस

तपको यहफलहै हे रघुनाथजी जो आप को अर्चन किया भाव कृपा करि आप ही आयदर्शन दै कृतार्थ कीन्हेउ ४३ ॥

सदामेसीतयासार्द्धंहृदयेबसराघव ॥ गच्छतस्तिष्ठतोवाऽपिस्मृतिःस्यान्मेसदा त्वयि ४४ इतिस्तुत्वारमानाथमगस्त्योमुनिसत्तमः ॥ ददौचापंमहेन्द्रेणरामार्थे स्थापितंपुरा ४५ अक्षयौबाणतूणीरौयःखड्गोरत्नभूषितः॥ जहिराघवभूभारभूतं राक्षसमण्डलम् ४६ यदर्थमवतीर्णोसिमायामानुषजाकृतिः ॥ इतोयोजनयुग्मे तुपुण्यकाननमण्डितः ४७ अस्तिपंचवटीनाम्नाआश्रमोगौतमीतटे ॥ नेत व्यस्तत्रतेकालःशेषोरघुकुलोद्वह ॥ तत्रैवबहुकार्याणिदेवानांकुरुसत्पते ४८ श्रु त्वातदागस्त्यसुभाषितंवचःस्तोत्रंचतत्त्वार्थसमन्वितंविभुः ॥मुनिंसमाभाष्यमुदा न्वितोययौप्रदर्शितंमार्गमशेषविद्धरिः ४९ ॥

इतिश्रीअध्यात्मरामायणेआरण्यकाण्डेतृतीयःसर्गः ३ ॥

(राघवसीतयासार्द्धंमेहृदयेसदावस गच्छतःवातिष्ठतःअपित्वयिस्मृतिःमेसदास्यात्) अगस्त्य बोले हेराघव सीतासहितमेरे हृदयमें सदा बासकरौ चलते अथवा बैठे निश्चय करिकै आपकी स्मरण मोको सदा बनीरहै ४४ (मुनिसत्तमःअगस्त्यःइतिरमानाथंस्तुत्वारामार्थे पुरामहेन्द्रेणस्था पितंचापंददौ) शिवजी कहत कि मुनिन में उत्तम अगस्त्य इसभांति रघुनन्दनप्रति स्तुतिकरि पुनः जो रघुनाथ जी को देने हेत इन्द्र ने इहां स्थापित किया रहै सो धनुष देते भये ४५ (अक्षयौबाण तूणीरौरत्नभूषितः खड्गःराघवभूभारभूतंराक्षसमंडलम्जहि) जिनमें बाण कभी चुकि न सकैं ऐसे दो तरकस तथा रत्न जटित तरवारि दिये पुनः अगस्त्यजी बोले हे राघव भूमिपर पापभारह्वै गया है सो उतारने हेत रावणादि जो राक्षसोंको वृन्दहै ताहिनाश करौ इन अस्त्रों करिकै इतिशेषः ४६ (यत्अर्थंमायामानुषजाकृतिःअवतीर्णोसितुइतःयोजनयुग्मेपुण्यकाननमण्डितः) हे रघुनन्दन जिस हेत मायाकरिकै मनुजाकाररूपते अवतीर्ण भयो है सो कार्य करिवे योग्य बास स्थान इहांते योजन दो आंठकोश पर पुण्यमय वन शोभितहै ४७ (गौतमीतटेपंचवटीनाम्नाआश्रमःतत्रतेशेषःकालःने तव्यःतत्रएवरघुकुलोद्वहसत्पतेदेवानांबहुकार्याणिकुरु) गौतमीनदी किनारेपर पंचबटीनामें आश्र- महै तहां बसि आपके बनवासके जो दिन बाकी हैं सो व्यतीतकरौ भरुतहैं निश्चय करि हेरघुवंश नाथ सज्जननको पालनेवाले देवतनको जो बहुतकार्य है खलबधादि सोकरौ४८ (तत्त्वार्थसमन्वि तंस्तोत्रंचअगस्त्यभाषितंसुवचःश्रुत्वाविभुः मुनिंसंभाष्यअशेषविद्हरिः प्रदर्शितंमार्गंमुदान्वितःययौ) सब तत्त्वनको अर्थ सहित जो स्तोत्रहै पुनः अगस्त्यके कहेहुये और हू जो सुन्दर वचनहैं सो सुनि प्रभु मुनि प्रति वार्ता करि पुनः संपूर्ण बस्तुके जानन हारे हरि मुनिकी देखाई हुई जो पंचवटीको मार्गहै तामें आनन्द सहित जाते भये ४९ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचितेअध्यात्मभूषणेआरण्यकाण्डे रघुनन्दनअगस्त्याश्रमप्राप्तवर्णनोनामतृतीयःप्रकाशः ३ ॥

मार्गेव्रजन्ददर्शाथशैलशृंगमिवस्थितम् ॥ वृद्धंजटायुषंरामःकिमेतदितिविस्मितः १ धनुरानयसौमित्रेराक्षसोऽयंपुरःस्थितः ॥ इत्याहलक्ष्मणंरामोहनिष्याम्यृषिभक्षकम् २ तच्छ्रुत्वारामवचनंगृद्धराट्भयपीडितः ॥ वधार्होऽहंनतेरामपितुस्तेहंप्रियः सखा ३ जटायुर्नामभद्रंतेगृद्धोऽहंप्रियकृत्तव ॥ पंचवट्यामहंवत्स्येतवैवप्रियकाम्यया ४ मृगयायांकदाचित्तुप्रयातेलक्ष्मणेपिच ॥ सीताजनककन्यामेरक्षितव्या प्रयत्नतः ५ ॥

सवैया ॥ वासि भेटि जटायु सुपंचवटी वरप्रश्न कियो लघु बंधु कदा । विप या वशजीव भवार्णवते क्यहि भांति लहैं ध्रुवमुक्ति पदा ॥ कहि मायहि ईश्वर जीवन भेद विरागहु ज्ञान सुभक्ति तदा । इति बोध कियो सिय सानुज सो करुणा कर राम नमामि सदा (अथ मार्गे व्रजन्शैल शृंगइवस्थितं वृद्धं जटायुषं ददर्श रामः इति विस्मितः एतत् किं) शिवजी बोले हे गिरिजा अब राहमें जात समय पर्वत के कंगूरा सम बैठाहुआ जो वृद्ध जटायू ताहि देखते भये रघुनाथ जी तव इसप्रकार विस्मय किये कि ऐसाभारी यह कौनजीवहै इति विचारि लक्ष्मण प्रति बोले १ (लक्ष्मणम्रामः इतिआह सौमित्रेधनुः आनयपुरः स्थितः अयंराक्षसः ऋषिभक्षकम् हनिष्यामि) लक्ष्मण प्रति रघुनन्दन इसप्रकार बोले किहे सुमित्रानंदन मेरा धनुष लावो तो आगेबैठा हुआ यह राक्षस ऋषियों को खाइ जानेवाला ताहि वधकरों २ (रामवचनंतत् श्रुत्वा गृद्धराट् भय पीडितः रामतेवध अर्हः अहंनअहंतेपितुः प्रियःसखा) मुनिन को भक्षण करने वाला राक्षसहै या को मारों इति भ्रमयुत रघुनन्दन को जो वचनताहि सुनि गृद्धराज विचारेउकि वेप्रयोजन मेरा बध रघुनन्दनको अयश पश्चात्ताप होयगो इति हानि की भयमानि दुखितह्वै गृद्धबोला हेराम आपकेबध करिबे योग्यमैं नहींहों काहेते किमैं आपके पिता को प्रिय सखाहों ३ (तेभद्रंतवप्रियकृत् अहंजटायु- नामगृद्धः तवएव प्रियकाम्ययाअहं पंचवट्यांवत्स्ये) हे रघुनन्दन आपका कल्याण होय आपको प्रिय कार्य करने वाला मे जटायु. नाम गृद्ध भाव राक्षस विमुख नहीं हों आप की प्रीति की कामनाकरि कै मे पचवटी में वास करि रहाहों ४ (तुकदाचित् मृगयायां प्रयातेचलक्ष्मणे अपिजनककन्यासीता मे प्रयत्नतः रक्षितव्या) पुनः किसी समय आप मृगया में जाउ पुनः जो लक्ष्मण भी चले जायंगे तब जनक पुत्री जो सीता तिनकी में यत्नपूर्वक रक्षा करोंगो भाव कछु बाधा न होने पावैगी ५ ॥

श्रुत्वातद्गृद्धवचनंरामःसस्नेहमब्रवीत् ॥ साधुगृद्धमहाराजतथैवकुरुमेप्रियम् ६ अत्रैवमेसमीपस्थोनातिदूरेवनेवसन् ॥ इत्यामंत्रितमालिंग्ययय्योपंचवटींप्रभुः ॥ लक्ष्मणेनसहभ्रात्रासीतयारघुनन्दनः ७ गत्वातेगौतमीतीरंपंचवट्यांसुविस्तरम् ॥ मंदिरंकारयामासलक्ष्मणेनसुबुद्धिना ८ तत्रतेन्यवसन्सर्वेगंगायाउत्तरेतटे ॥ कदंबपनसाम्रादिफलवृक्षसमाकुले ९ विविक्तेजनसंबाधवर्जितेनिरुजस्थले ॥ विनोदयंजनकजांलक्ष्मणेनविपश्चिता १० अध्युवाससुखंरामोदेवलोकइवामरः ॥ कंदमूलफलादीनिलक्ष्मणोनुदिनंतयोः ११ ॥

(ततगृद्धवचनं श्रुत्वारामः सस्नेहं अब्रवीत् महाराजसाधु गृद्धमे प्रियंतथा एवकुरु) सो गृद्धके

बचन तिनहिं सुनि रघुनन्दन सहित स्नेह बोले हे महाराज साधुवृद्ध जो कार्य मोको प्रियहै ताही भांति निश्चय करि करौ ६ (मेसमीपस्थो न अतिदूरे अत्रबने एववसन् इति आमंत्रितं प्रभुःआलिंग्य सीतयाभ्रात्रा लक्ष्मणेन सह रघुनन्दनः पंचवटींययौ) आपगुरुजनहौ ताते मेरे अत्यंत समीप न वसौ पुनः सहायकहौ तौ न अत्यंत दूरवसौ ऐसावास विचारि इसीवनमें निश्चयकरि बसौ इत्यादि सल्लाह पूर्वक बोध करि प्रभुजटायु को हृदयमें लगाय सिता करिकै अरुबंधु लक्ष्मण करिकै सहित रघुनन्दन पंचवटी को जातेभये ७ (गौतमी तीरं सुविस्तरं पंचवटयांते गत्वा लक्ष्मणेन सुबुद्धिना मंदिरंकारयामास) गौतमीनदीके समीपबड़े विस्तारयुत जो पंचवटीहै तहांको सीतालक्ष्मणरघुनन्दन ते सब जाते भये सुथल में लक्ष्मण जीने बुद्धि करिकै सुंदर मंदिर रचते भये ८ (कदंबपनसआम्रा दिवृक्षफलसमाकुले गंगायाउत्तरेतटे तत्रतेसर्वेन्यवसन्) कदंब कटहर आम्रादि के वृक्ष फलन करि परि पूर्ण लगे गौतमी गंगाके उत्तर किनारे पर तहां आश्रम करि लक्ष्मण जानकी रघुनन्दनतै सब वास कीन्हे ९ (जनबिविक्तेसंबाध वर्जितेनिरुजस्थले विपश्चितालक्ष्मणेन जनकजां विनोदये) मनुष्य रहित सब बाधा रहित रोगादि जहां नहीं होताहै त्यहि स्थल बिषे पुनः सब कार्य के करने वाले सेवक बीर परम ज्ञानी लक्ष्मणसहित बासकीन्हे रघुनन्दन सो अनेकभांति क्रीड़ाकरि जनक नंदिनी जोहैं तिनहिं आनन्ददै रहेहैं १० (देवलोकेअमरः इवरामःसुखंअधिउवा सतयोःअनुदिनं कंद मूल फलादीनिलक्ष्मणः) देवलोक में यथा देवता ताहीभांति जानकी सहित रघुनन्दनसुख समेत बास करते हैं तिनके भोजन हेत अनुदिन रोज रोज लक्ष्मण जी साधन करते हैं ११ ॥

आनीयप्रददौरामसेवातत्परमानसः ॥ धनुर्बाणधरोनित्यंरात्रौजागर्तिसर्वतः १२ स्नानंकुर्वन्त्यनुदिनंत्रयस्तेगौतमीजले ॥ उभयोर्मध्यगासीताकुरुतेचगमागमौ १३ आनीयसलिलंनित्यंलक्ष्मणःप्रीतिमानसः ॥ सेवतेऽहरहःप्रीत्याएवमासन्सुखत्रयः १४ एकदालक्ष्मणोरामंएकांतेसमुपस्थितम् ॥ विनयावनतोभूत्वापप्रच्छपरमेश्वरम् १५ भगवन्श्रोतुमिच्छामिमोक्षस्यैकांतिकींगतिम् ॥ त्वत्तःकमलपत्राक्षसंक्षेपाद्वक्तुमर्हसि १६ ज्ञानंविज्ञानसहितंभक्तिवैराग्यबृंहितम् ॥ आचक्ष्वमेरघुश्रेष्ठवक्तानान्योस्तिभूतले १७ ॥

(आनीय प्रददौ मनसः राम सेवा तत्पर नित्यं धनुः बाण धरः सर्वतः रात्रौ जागर्त्ति) लक्ष्मण जी कन्दमूलफलादि बनते आनि रघुनन्दन को देदेते हैं अरु मन रघुनन्दन की सेवा में तत्पर है ताते नित्यही धनुष बाण हाथ में धारण कीन्हे सब राति भरि बैठे जागा करते हैं १२ (तेत्रयः अनु दिनं गौतमी जले स्नानं कुर्वंति च सीता उभयोः मध्यगागमागमौ कुरुते) लक्ष्मण जानकी रघुनंदन ते तीनिहूँ जने प्रतिदिन गौतमी नदीके जल में स्नान करते हैं पुनः जानकी जी दोऊजनेनके बीच में जाती आवती हैं १३ (प्रीति मानसः लक्ष्मणः नित्यं सलिलं आनीय अहरहः प्रीत्या सेवते एवं त्रयः सुख आसन्) प्रीतिवंत मन सहित लक्ष्मणजी नित्यही जल भरि लावते हैं अरु प्रीति करिकै जानकी रघुनन्दन को सेवते हैं इसीप्रकार तीनिहूँजने सुखपूर्वक बास करतेहैं १४ (एकदा एकांते संउपस्थितम् परमेश्वरं रामं लक्ष्मणः बिनयावनतो भूत्वा पप्रच्छ) एक समय एकांत स्थानमें बैठे हुये परमेश्वर रघुनाथ जी तिनप्रति लक्ष्मणजी बिनती करिकै नम्र ह्वै पूछते भये अर्थात् लोक सिक्षा हेत जीव कल्याण होनेकी उपाय पूछे १५ (भगवन् मोक्षस्य एकांतिकीं गतिं त्वत्तः श्रोतुं इच्छामि

कमलपत्राक्ष संक्षेपात् वक्तुं अर्हसि) लक्ष्मणजी बोले कि हे भगवन् जीवन को भव बन्धनते मोक्ष होनेकी एकांतिकी गति निश्चय मुक्तहोने योग्य मार्ग सो आपके मुखते सुनवेकी इच्छा है हे कमल दल नयन आप संक्षेप थोरेमें कहवेयोग्यहौ १६ (रघुश्रेष्ठ भक्ति वैराग्य वृंहितं विज्ञान सहितं ज्ञानं मे आचक्ष्व अन्यः वक्ता भूतले न अस्ति) हे रघुश्रेष्ठ जामें प्रेमा भक्ति अरु वैराग्य गर्जता होय अरु विज्ञान सहित ऐसा जो ज्ञानहै ताहि वर्णन करिये इसवात के कहने वाले सेवाय आपके और वक्ता पृथ्वीतल में नहीं है १७ ॥

श्रीरामउवाच ॥ शृणुवक्ष्यामितेवत्सगुह्याद्गुह्यतरंपरम् ॥ यद्विज्ञायनरोजह्या त्सद्योवैकल्पिकंभ्रमम् १८ आदौमायास्वरूपंतेवक्ष्यामितदनन्तरम् ॥ ज्ञानस्य साधनंपश्चात्ज्ञानंविज्ञानसंयुतम् १९ ज्ञेयञ्चपरमात्मानंयज्ज्ञात्वामुच्यतेभया त् २० अनात्मनिशरीरादावात्मबुद्धिस्तुयाभवेत् ॥ सैवमायातयैवासौसंसारः परिकल्पते २१ रूपेद्वेनिश्चितेपूर्वंमायायाःकुलनन्दन २२ विक्षेपावरणेतत्रप्रथ मंकल्पयेज्जगत् ॥ लिंगाद्याब्रह्मपर्यंतंस्थूलसूक्ष्मविभेदतः २३ अपरंत्वखिलं ज्ञानरूपमावृत्यतिष्ठति ॥ माययाकल्पितंविश्वंपरमात्मनिकेवले २४ ॥

(वत्सशृणुगुह्याद्गुह्यतरंपरम्तेवक्ष्यामि यत्विज्ञायनर. वैकल्पिकंभ्रमम्सद्यःजह्यात्) रघुनन्दनवोले हे वत्स सावधान है सुनो जो गुप्तते गुप्त अत्यन्त परम गुप्त तत्त्व है सो तुम प्रतिमैं कहताहौं जाको जानि के मनुष्य वैकल्पिक भाव संसार सांचाहै वाझूंठा इत्यादि जो भ्रम है भाव पदार्थकी निश्चय नहीं ऐसा जो अज्ञान ताहि शीघ्रही त्यागि देता है भाव देह व्यवहार त्यागि आत्मरूप ग्रहण कर ताहै १८ (आदौतेमाया स्वरूपम्वक्ष्यामितत्अनतरम्ज्ञानस्यसाधनंपश्चात् विज्ञानसंयुतंज्ञानम्) हेलक्ष्मण प्रथम तो तुम प्रति माया को स्वरूप कहता हौं ताके पाछे ज्ञानके साधन भाव जिनके कीन्हे ज्ञान होताहै ताके पाछे विज्ञान सहित ज्ञान कहताहौं १९ (चज्ञेयंपरमात्मानंयत्ज्ञात्वाभयात् मुच्यते) पुनः जानिवे योग्य जो परमात्मा है ताहि कहता हौं जाको जानि कै जीव भव भयते छूटि जाता है २० (शरीरादौअनात्मनितुयाआत्मबुद्धिःभवेत् साएवमायातयाएव असौसंसारःपरि कल्पते) देह आदि जो आत्मरहित असार ताहीमें आत्म वुद्धि होती है यथा मैं ब्राह्मण पूज्यहौं मैं क्षत्रियराजाहौं इत्यादि देहकोसत्यमानना सोईनिश्चय करिकै मायाहै ताही करिकै सत्यताकी निश्चय यह संसार कल्पित किया जाताहै भाव झूठेको सत्यकरि लिया जाताहै २१ (कुलनंदनमायायाःपूर्वं द्वेरूपे निश्चिते) हे लक्ष्मण तिस माया के पूर्व दो रूप निश्चित किये गये हैं २२ (विक्षेप आवरणे तत्रप्रथमं लिंगाद्या ब्रह्मपर्यंतंस्थूलसूक्ष्म विभेदतः जगत्कल्पयेत्) एक विक्षेप अर्थात् कार्य माया दूसरी आवरणकारण माया ये दो रूप हैं तामें प्रथम जो विक्षेप करणहारी कार्यमाया है ताको यह व्यापारहै कि लिंग जोजड़ चैतन्य मिलि कारण शरीरहै सो आदि देकै ब्रह्मातक स्थूल आकाश वायु अग्नि जल भूम्यादि अरुसूक्ष्म शब्द स्पर्शरूप रस गंधादि भेदते जगत् की रचना करतीहै २३ (तुअप रंमाययाकेवलेपरमात्मनिअखिलंज्ञानरूपं आवृत्यतिष्ठति विश्वंकल्पित) पुनःदूसरी जोआवरणकरने वाली कारण माया है त्यहि करिकै केवल परमात्मामें जो संपूर्ण ज्ञानरूप जो है ताहिआवरण करि वैठती है संसार जो है ताहि कल्पित करती है भाव आत्मरूपको ज्ञान ढांकि संसार ही को सांच करि देखावती २४ ॥

रज्जौभुजंगवद्भ्रांत्याविचारेनास्तिकिंचन ॥ श्रूयतेदृश्यतेयद्यत्स्मर्यतेवानरैःस दा॥ असदेवहितत्सर्वंयथास्वप्नमनोरथौ २५ देहएवहिसंसारवृक्षमूलंदृढंस्मृतम्॥ तन्मूलःपुत्रदारादिबंधःकिंतेऽन्यथाऽत्मनः २६ ॥

(भुजंगवत्रज्जौभ्रांत्या विचारे न किंचन अस्तियत् श्रूयते दृश्यते वा यत्नरैःसदास्मर्यते तत्सर्वं असत् एवहि यथा स्वप्नमनोरथौ) कारण माया आत्मरूप में आवरण करि कैसे संसार को सांचा देखावती है जैसे सर्पकी सत्यता रसरीविषे भ्रांति करिकै होती है अर्थात् यथा अँधेरे में रसरी परी है सो भ्रांति करिकै सर्प सूचित होताहै तथा मायाकृत मोहरूप अंधकार में देह व्यवहार आत्मवत् सांचेकी भ्रांति होतीहै अरु विचार करिकै देखिये तौ कछुभी सत्यता नहीं है काहेते जो सुनाजाताहै यथामेरे पिता पितामहादि धनी विद्वान् स्वरूवानरहेहैं पुनःजोदेखा जात यथा तनस्त्री पुत्रधन धामादि अथवा जो मनुष्यों करिकै स्मरण कियाजात यथा अधिकधन उत्तम पुत्र पौत्र बड़ाई ऋद्धि सिद्धि अचल सुख इत्यादि यावत् सुनब देखब स्मरण करनाहै (तत्सर्वअसत् एवहि) तौनसब झूँठाहै निश्चय करिकै कौन भांति यथा स्वप्ने विषे मनोरथ सत्य देखातेहैं जागेपर वृथाहैं तथा विचारे लोक व्यवहार झूँठाहै २५ (संसारवृक्षस्य दृढंमूलं देह एवहि स्मृतम् तत्मूलः पुत्रदारादिबंधः अन्यथा आत्मनः तेकिं) प्रभु कहत हे लक्ष्मण संसार रूपवृक्ष अनादिहै जामें सत्त्व रजतम महातत्त्वये चारि त्वचा षट् उर्मीस्कंध पचीस प्रकृती शाखा मनोरथ दल वासना फूल दुःख सुख फल इति संसार वृक्षकी पोढीजर देहै को निश्चय करि जानिये तत्मूल अर्थात् तिस देहकी मूल पुत्रदारा धनधाम धराभोजन बसन भूषण बाहन शय्या गान गंधपानादि यावत् देह सुखसाजके मनोरथहैं सोई बंधनहै अर्थात् संसार वृक्षकी मुख्यजर देहहै ताके सुखहेत जो अनेक मनोरथ की वस्तुहैं सो उस जरमें अनेक जरैंलगीं जिनते वृक्षपुष्टहै अरुजोदेह व्यवहार न होता तौ अन्यथा कहे और कछु आत्मामें तेरी पुत्रादि कहां हैं जो बंध न होता तौ संसार की दृढमूल देहैहै २६ ॥

देहस्तुस्थूलभूतानांपंचतन्मात्रपंचकम् ॥ अहंकारश्चबुद्धिश्चइंद्रियाणितथाद श २७ चिदाभासोमनश्चैवमूलप्रकृतिरेवच ॥ एतत्क्षेत्रमितिज्ञेयंदेहइत्यभिधीय ते २८ एतैर्विलक्षणोजीवःपरमात्मानिरामयः॥तस्यजीवस्यविज्ञानेसाधनान्यपिमे शृणु २९ जीवश्चपरमात्माचपर्यायोनात्रभेदधीः ॥ मानाभावस्तथादंभहिंसादि परिवर्जनम् ३० पराक्षेपादिसहनंसर्वत्रावक्रतस्तथा ॥ मनोवाक्कायसद्भक्त्यासद् गुरोःपरिसेवनम् ३१ ॥

(स्थूलदेहः पंचभूतानां तुतन्मात्रपंचकम् अहंकारःचबुद्धिः चतथा दश इंद्रियाणि) पशुपक्षी मनुष्यादि देह जो प्रसिद्ध देखिपरतीहै स्थूल देह सो आकाश वायु अग्नि जल पृथ्वी इन पांचौ भूतनकी है पुनः शब्द स्पर्शरूप रस गंधइति तन्मात्रा पांचौ अरु अहंकार पुनः बुद्धि पुनः तथा दश इंद्री यथा कानत्वचा नेत्र जिह्वा नासिका इति पंचज्ञान इंद्री हैं हाथ पद मुख गुदालिंग ये पंचकर्म इंद्री २७ (चएव मनःमूलप्रकृतिः एवचचित्आभासः एतत्क्षेत्रं इतिज्ञेयंदेहइतिअभिधीयते) पुनः निश्चय करिकै मन इत्यादि अठारह तत्त्व की सूक्ष्म देह है तिन स्थूल सूक्ष्म दोऊ को बनावने वाली मूल प्रकृति निश्चय करिकै है जो कारण देह कहावती इसको चैतन्य करने वाला चित्

आभासः अर्थात् चैतन्य जोपरमात्मा ताकी आभास नामप्रकाश है ताहिके प्रकाश ते देह प्रकाशित है यह सब जो कहि आये यही क्षेत्र है ऐसा जानिये देह भी इसी को कहते हैं २८ (जीवः एतैः विलक्षणः निरामय.परमात्मातस्य जीवस्यअपिविज्ञानेसाधनानिमेशृणु) अरु जीव कैसाहै कि स्थूल सूक्ष्म कारणादि देहन करि विलक्षण हेतु रहित स्वइच्छित है नहीं है रोग दोषादि जामें ऐसा परमात्माही है सोई कारण माया ग्रहण करि आत्मदृष्टि भूलि प्राकृत ह्वै कार्य माया वश देह व्यवहार में परा ताहीजीव को निश्चय विज्ञान होने के साधन हमसों सुनौ २६ (परमात्माचजीवः पर्यायः अत्र भेदधी·नमानअभावः तथा दंभ हिंसाआदिपरिवर्जनम्) प्रभु बोले हेलक्ष्मण परमात्मा पुनः जीवात्मा दोऊ की पर्याय अर्थात् परिपाटी रीति में भेद बुद्धी यहां नहीं है भाव यथा पिता को अंशमाता में परि पुत्र होत तामे स्वरूपता जाति पद स्वभावादि पितैके गुण होने ते प्रशंसा पूर्वक पितै को पद पावत अरु प्रतिकूलते सब जात तथा परमात्माको अंश आदि प्रकृति में परि जीवात्मा भयो सोऊ परमात्मा की रीति पर चलै तो भेद बुद्धी नहीं है अभेद बुद्धी विज्ञान धाम है कब जब मान को अभाव देहाभिमान न राखै तथा दंभ हिंसादि त्याग करै भाव सांचे आचरण करै जीवन पर दया राखै ३० (सर्वत्रअवक्रतः पराक्षेपादिसहनंतथामनः वाक्कायसद्भक्या सत् गुरोः परिसेवनं) सबठौर टेढ़ाई त्यागि सीधे स्वभाव ते रहै कौन भांति (परआक्षेप आदिसहनं) अर्थात् कोऊ निंदादि करै ताको सहिलेना ताही भांति अमान ह्वै मन लगाय के प्रिय वचन बोलिकै श्रद्धायुत देहकरि इत्यादि भक्ति अर्थात् प्रीतिसहित सद्गुरु की सेवा करना ३१ ॥

बाह्याभ्यंतरसंशुद्धिःस्थिरतासत्क्रियादिषु ॥ मनोवाक्कायदण्डश्चविषयेषुनिरीहता ३२ निरहंकारताजन्मजराद्यालोचनंतथा ॥ असक्तिःस्नेहशून्यत्वंपुत्रदारधनादिषु३३ इष्टानिष्टागमेनित्यंचित्तस्यसमतातथा ॥ मयिसर्वात्मकेरामेह्यनन्यविषयामतिः ३४ जनसंबाधरहितशुद्धदेशनिषेवणम् ॥ प्राकृतैर्जनसंघैश्चह्यरतिः सर्वदाभवेत् ३५ ॥

(बहिअभिअंतरयोः संशुद्धिः) बाहेर दिशादि मे अनेक वार माटी लगाय स्नानादिते शुद्ध रहै भीतर कामादि विकार त्यागि शुद्ध रहे (सत्क्रियादिषुस्थिरता) संध्या तर्पण पूजा पाठादि जो सत् क्रिया हैं तिन के करने में मन तन मे थिरता राखै (मन·वाक्कायदण्डः) मनमें परधन परस्त्री हरणादि न आवै पावै वचन ते काहूको अपवादनकरै देहतेअसत्कर्म न होनेपावै इति दण्ड राखै (चविषयेषुनिरीहता) शब्द स्पर्श रूप रस गंध मैथुनादि विषयनमें इन्द्री द्वारा इच्छान उठने पावै ३२ (निर् अहंकारता तथा जन्मजरादिआलोचनंपुत्रदारधनादिषु असक्तिःशून्यत्वं) जातिविद्या महत्त्व रूप यौवनादि देहाभिमान न होनेपावै ताही प्रकार जन्म वृद्धाअवस्था मरण नरकसांसति गर्भवास इत्यादि दुःखों पर दृष्टि राखै भाव संसार बन्धनके साज न करै पुनः स्त्रीविषे असक्ती पुत्र में सनेह इत्यादि करिकै शून्यभाव देहके सनेहिन ते उदासीन रहै धनपर लोभ न राखै ३३ (इष्ट अनिष्ट आगमे नित्यं चित्तस्यसमता) इष्ट जो प्रियवस्तु यथा धरणी धन पुत्रादि की लाभ तथा अनिष्ट अप्रियवस्तु यथा पुत्रादि वियोग हानि रुजादि इत्यादि के आये पर हर्ष विषाद रहित नित्यही चित्तको बराबरि राखै पुनः (तथा सर्वात्मके मयि रामेहि अनन्याविषयामतिः) तैसेही सर्वात्म

जो मैं रामहौं त्यहिबिषे निश्चयकरि अनन्य भक्तिकी विषयमें बुद्धिराखै भाव सबमें व्यापकजानि केवल मोंही में प्रीतिराखै ३४ (जनसंबाधरहित) मनुष्यों की भीर जहां न होतीहो (शुद्धदेशनिषेवणम्) जो तीर्थादि पावन देशहोइ तहां बासकरै (चप्राकृतैःजनसंघैःसर्बदाहि अरतिः भवेत्) पुनः प्राकृत विषयी मनुष्यों को साथहू रहिकै सर्वकालमें निश्चय करिकै उनसो प्रीति न करै उदासीनै बनारहै मनु न मिलावै ३५ ॥

आत्मज्ञानेसदोद्योगोवेदान्तार्थावलोकनम् ॥ उक्तैरेतैर्भवेज्ज्ञानंविपरीतैर्विपर्ययः३६बुद्धिप्राणमनोदेहाऽहंकृतिभ्योविलक्षणः॥चिदात्माऽहंनित्यशुद्धोबुद्धएवेतिनिश्चयम्॥येनज्ञानेनसंवित्तेतज्ज्ञानंनिश्चितंचमे ३७विज्ञानंचतदैवैतत्साक्षादनुभवद्यदा ॥ आत्मासर्वत्रपूर्णःस्याच्चिदानंदात्मकोऽव्ययः ३८ ॥

(आत्मज्ञानेसदाउद्योगः) आत्मज्ञान होनेमें सदा उद्योग अर्थात् उत्साह राखै अरु (वेदांतस्य अर्थअवलोकनम्) आत्मरूप सांचा लोक व्यवहार मिथ्या इत्यादि जो वेदांतशास्त्रको अर्थ है ताही को सदा देखना (उक्तैःएतैःज्ञानं भवेत् विपरीतैः विपर्ययः) हे लक्ष्मण जो हमकहि आये हैं इसी व्यापार करिकै ज्ञान होताहै अरु इस व्यापार ते विपरीत भाव देहादि सांचा मानि ताही सुखकी उपाय में लगे रहने ते विपर्यय अर्थात् उलटा अज्ञानकरि भव बंधन होताहै ३६ (बुद्धि प्राण मनः देह अहंकृतिभ्यः विलक्षणः नित्यशुद्ध बुद्धः अहंचित् आत्मा इति एवयेन ज्ञानेन निश्चयं संवित्ते तत् ज्ञानंचमे निश्चितं) पदार्थ निरूपण करनेवाला अंतःकरण बुद्धि है श्वासादि वायु प्राण हैं संकल्प विकल्प करने वाला अंतःकरण मन है सूक्ष्म स्थूल कारणादि देह पदार्थ निश्चय करने वाला जो अहंकार है इत्यादि ते विलक्षण न्यारा कारण रहित नित्यही शुद्ध बुद्ध मैं जो चैतन्य आत्माहौं इति सत्यता (येन ज्ञानेन निश्चयं संवित्ते) अर्थात् जौने ज्ञान करिकै निश्चयको प्राप्त होय भाव देह प्राण मनादि ते भिन्न आत्मासदा एकरस चैतन्यहै इति सत्यता जब आवै (तत्ज्ञानंच मे निश्चितं) अर्थात् सोई ज्ञान मेरा निश्चय है भाव देह व्यवहार झूंठामानि आत्महीको सत्यमानना यही मेरो कहा हुआ ज्ञानहै ३७ (अव्ययः चित्आनंद आत्मकः सर्वत्र आत्मापूर्णः स्यात् एतत्साक्षात् अनुभवत् यदा तदा एवच विज्ञानं) अव्यय नाशरहित चित्त सदा चैतन्य आनंदरूप आत्मा जो है सो सर्वत्र भूतमात्र में एक आत्माही परिपूर्ण है एतत् अर्थात् यही विचार साक्षात् अनुभवत् प्रसिद्ध तदाकारहोत यदा जौने समय में (तदा एवच विज्ञानं) ताही समय में निश्चय विज्ञानहै भाव देह व्यवहार असार आत्मसार सत्य विचारना ज्ञान है अरु जब देहसुधि भूलि आत्मरूपही में तदाकार बने रहना सो विज्ञान है ३८ ॥

बुद्ध्याद्युपाधिरहितःपरिणामादिवर्जितः ॥ स्वप्रकाशेनदेहादीन्भासयन्ननपावृतः ३९ एकएवाद्वितीयश्चसत्यज्ञानादिलक्षणः ॥ असंगःस्वप्रभोद्रष्टाविज्ञानेनावगम्यते ४० आचार्यशास्त्रोपदेशादैक्यज्ञानंयदाभवेत् ॥ आत्मनोर्जीवपरयोर्मूलाविद्यातदैवहि ॥ लीयतेकार्यकरणैःसहैवपरमात्मनि ४१ सावस्थामुक्तिरित्युक्ताह्युपचारोयमात्मनि ४२ इदंमोक्षस्वरूपंतेकथितंरघुनंदन ॥ ज्ञानविज्ञानवैराग्यसहितंमेपरात्मनः ४३ ॥

(बुद्धिआदिउपाधिरहितः) आत्मा कैसा है कि अहंकारकी निश्चय मनकी विकल्प चित्तकी चिंतवन बुद्धिको विचार इत्यादि उपाधि जामें नहीं है (परिणामआदिवर्जितः) काम क्रोधादि विकार जामें नहीं हैं (अनपावृतःस्वप्रकाशेनदेहादीनभासयन्) आप आवरण रहित स्वयं प्रकाश रूप अपनीप्रकाश करिकै मन इंद्री देहादि को प्रकाशमान चैतन्य किहे हैं ३९ (सत्यज्ञानादिलक्षणः अद्वितीयःएकएव) सत्य ज्ञान आनंद इत्यादि लक्षणयुत जाकी समताको दूसरा नहीं है एकही निश्चय करिके है (असंगः) जाके संग कोऊ नहीं है (स्वप्रभोद्रष्टा) स्वयं प्रकाशमान सब को देखने वाला है (विज्ञानेनअवगम्यते) विज्ञान करिकै जानिबे की गम्य है ४० (आचार्यशास्त्रउपदेशात्यदा जीवात्मनःपरयोःऐक्यज्ञानं भवेत्) आचार्यों के उपदेश वा वेदांत अवलोकनरूप उपदेशते जब जीवात्मा परमात्मा की एकता ज्ञान होत (तदाएवहिमूल अविद्याकार्यकारणैः सहएव परमात्मनिलीयिते) तासमै में निश्चयकरि मूल अविद्या माया जोहै सो कार्य कारण माया करिकै सहित निश्चयकरि परमात्मा विषे लीन है जात ४१ (साअवस्थामुक्तिः सो अवस्था मुक्ति है (अयंआत्मनि उपचारः) यही आत्मरूप में उपायहै अर्थात् जीवात्मा परमात्माकी एकता ज्ञानहोना सोई अवस्था मुक्ति इत्यादि कही जाती है निश्चय करि हे लक्ष्मण जो पूर्व कहि आये यही आत्म रूप विषे सत्यता लावने की उपाय है सो विचार करने समय में वह कैसी रीतिहै यथा किसी राजा को स्वप्न में सर्वस हरिगया शत्रु बंधन में परा यद्यपि न कछु गया न दुःखहै परंतु विना जागे मिटी न तथा जीव विषय निद्रा वश मोह रात्री में सोवत स्वप्नवत् चिदानंद घन रहित भव बंधन में परा सोहानि दुख वृथाहीहै परंतु विना ज्ञान भये मिटै गो नहीं ज्ञान भये हानि दुःख वृथाही है ४२ (रघुनन्दनज्ञान विज्ञान वैराग्यसहितं परमात्मनिइदं मोक्षस्वरूपंमेते कथितं) हे लक्ष्मण ज्ञान विज्ञान वैराग्य सहित परमात्म संबंधी यह जो मोक्ष को स्वरूप है सो तौ हम परिपूर्ण तुम प्रति कहा है ४३ ॥

किंत्वेतद्दुर्लभंमन्येमद्भक्तिविमुखात्मनाम् ॥ चक्षुष्मतामपियथारात्रौसम्यक्नदृश्यते ४४ पदंदीपसमेतानांदृश्यतेसम्यगेवहि ॥ एवंमद्भक्तियुक्तानामात्मासम्यक्प्रकाशते ४५ मद्भक्तेःकारणंकिंचिद्वक्ष्यामिशृणुतत्त्वतः ॥ मद्भक्तसंगोमत्सेवा मद्भक्तानांनिरंतरम् ४६ एकादश्युपवासादि ममपर्वानुमोदनम् ॥ मत्कथाश्रवणेपाठेव्याख्यानेसर्वदारतिः ४७ ॥

(किंतुमद्भक्तिविमुखात्मनाम् एतद्दुर्लभंमन्ये) प्रभु बोले हे लक्ष्मण यह जो साधन सहित मुक्ति को स्वरूप कहा सो मेरी भक्ति सहित सुलभ है परंतु मेरी भक्ति ते विमुख जिन की आत्मा हैं तिनको यह साधन युत मुक्ति दुर्लभही होताहै भाव रूखाज्ञान श्रम वृथा है यथा भागवते ॥ श्रेयः सृतिं भक्ति मुदस्यतेविभोक्लिश्यंतिये केवल बोधलब्धये ॥ तेषामसौ क्लेशलएवशिष्यते नान्यद्यथास्थूलतुपावघातिनाम् ॥ महारामायणे ॥ येरामभक्तिममलांसुविहायरम्यांज्ञानेरताः प्रतिदिनंपरिक्लिष्टमार्गे ॥ आरान्महेंद्रसुरभींपरित्यज्यमूर्खाःअर्कंभजंतिसुभगेसुखदुग्धहेतुम् ॥ इत्यादि विना भक्ति आत्म रूप की प्राप्ती नहीं है सकीहै कौन भांति (यथाचक्षुष्मतामपिरात्रौ सम्यक्नदृश्यते) जैसे नेत्रवंत को भी निश्चय करि रात्रीमें संपूर्ण यथार्थ बस्तु नहीं देख परती है ४४ (दीपसमेतानांसम्यक्पदंएवहिदृश्यते एवं मद्भक्ति युक्तानां सम्यक् आत्माप्रकाशते) जे जन दीपक समेत हैं

तिनको सम्यक् एवं संपूर्ण स्थान जो है सो सब निश्चयकरि देखिपरता है इसी प्रकार जे जन मेरी भक्ति युक्त हैं तिनको संपूर्ण आत्मा प्रकाश करता है ४५ (मत्भक्तेःकिंचित्कारणंतत्वतःवक्ष्यामिशृणुमत्भक्तसंगः मत्सेवा निरंतरंमत्भक्तानांसेवा) हेलक्ष्मणमेरी भक्तिको जो कछुकारणहै ताहि तत्व करि मैं वर्णन करता हों सो सुनो मेरे भक्तन को संग करै अरु मेरी सेवा अरु सदा मेरे भक्तन की सेवा करै ४६ (एकादशीआदिउपवासममपर्वणि अनुमोदनम्सर्वदा मत्कथाश्रवणेपाठे व्याख्यानेरतिः) एकादशी बरहो महीना की अरु भाद्र कृष्ण अष्टमी रामनवमी बावन द्वादशी अनत चतुर्दशी इति व्रत करै पुनः मेरे पर्व नवमी आदि आदिकों में उत्साह करै अरु सब काल में मेरी कथा रामायणादि श्रवण करने में तथापाठ करनेमें ताको व्याख्यान अर्थात् विधि पूर्वक अर्थ प्रसिद्ध करने में रति अर्थात् प्रीति राखै ४७ ॥

मत्पूजापरिनिष्ठाचममनामानुकीर्तनम् ॥ एवंसततयुक्तानांभक्तिरव्यभिचारिणी मयिसंजायतेनित्यंततःकिमवशिष्यते ४८ अतोमद्भक्तियुक्तस्यज्ञानंविज्ञानमेव च ॥ वैराग्यंचभवेच्छीघ्रंततोमुक्तिमवाप्नुयात् ४९ कथितसर्वमेतत्तेतवप्रश्नानु सारतः ॥ अस्मिन्मनःसमाधाययस्तिष्ठेत्सतुमुक्तिभाक् ५० नवक्तव्यमिदंयत्ना न्मद्भक्तिविमुखायहि ॥ मद्भक्तायप्रदातव्यमाहूयापिप्रयत्नतः ५१ यइदंतुपठेन्नित्यं श्रद्धाभक्तिसमन्वितःअज्ञानपटलध्वांतंविधूयपरिमुच्यते ५२ ॥

(ममनामानुकीर्तनम्चमत्पूजा परिनिष्ठा एवं सतत युक्तानां अव्यभिचारिणी भक्तिः मयि संजायते नित्यं ततःअवशिष्यते किं) मेरे नाम को सदाजाप करना पुनः मेरी पूजा करने में विश्वास राखना इसी प्रकार सदा इन साधन युक्तरहने वालेन के उरमें अव्यभिचारिणी भाव जो किसी समय जो छूटि नहीं सकी है अचल प्रेमाभक्ति मेरे बिषे उत्पन्न ह्वै नित्यहीं बनी रहती है तब फिरि बिराग ज्ञान विज्ञानादि बाकी क्या रहिगया ४८ (अतःमत्भक्ति युक्तस्य ज्ञानंच विज्ञानंच वैराग्यं एव शीघ्रं भवेत् ततः मुक्तिं अवाप्नुयात् ताते हे लक्ष्मण मेरी प्रेमाभक्ति युक्त पुरुषके ज्ञान पुनः बिज्ञान पुनः बैराग्य निश्चय करिकै शीघ्रहीं होते हैं ताते मुक्ति पदको प्राप्त होताहै ४९ (तवप्रश्नानुसारतः एतत् सर्वैते कथितं अस्मिन् मनः समाधायतुयः तिष्ठेत् समुक्तिभाक्) हे लक्ष्मण तुम्हारी प्रश्नअनुसार अर्थात् जे बातें पूंछेउ तिनकी योग्य प्रति उत्तर जैसाचाहिये सो सब तुमप्रति कहा इनसाधन बिषे मनको लगाय पुनः जो स्थिर बनारही सो मुक्तिको भागी होई ५० इदंयत्नात् मत्भक्ति बिमुखायहि न वक्तव्यं मत्भक्तायप्रयत्नतः अपि आहूय प्रदातव्यं)हे लक्ष्मण यहजो मेरा सिद्धांतहै ताहि यत्नते गुप्त राखना काहेते जो मेरी भक्ति ते बिमुख हैं तिनके अर्थ निश्चय करि न कहि देना अरुमेरे भक्तके अर्थ यत्नपूर्वक निश्चय करि बुलायकै कहिदेना भाव भक्तनको प्रियहै ते हर्षयुत ग्रहण करैंगे अरु बिमुख अनादर करैंगे तिनसो कहना अपराध है ५१ (तुयश्रद्धाभक्ति समन्वितः इदंनित्यं पठेत् अज्ञान पटल कृतंध्वांतं बिधाय परिमुच्यते) पुनः जो मनुष्य श्रद्धा अर्थात् मनकी चाह समेत पुनः भक्ति अर्थात् प्रीति सहित यह जो प्रसंग है ताहि नित्यहीपढ़ी सो भक्ति ज्ञान प्रकाश करिकै अज्ञान की पंक्तियों को किया हुवा जो मोहांधकारहै ताहि नाशकरि मुक्तहोजायगा ५२ ॥

भक्तानांममयोगिनांसुविमलस्वांतातिशांतात्मनांमत्सेवाभिरतात्मनांचविमलज्ञा

नात्मनांसर्वदासंगंयःकुरुतेसदोद्यतमतिःसत्सेवनानन्यधीर्मोक्षस्तस्यकरेस्थितोऽहमनिशंदृश्योभवेनान्यथा ५३ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसम्वादेआरण्यकाण्डेचतुर्थस्सर्गः ४ ॥

(सुविमलस्वांतंअतिशांतात्मनांयोगिनांविमलज्ञानात्मनांचमत्सेवाभिरतात्मनाममभक्तानांसंगम्सर्वदाकुरुतेसदाउद्यतमतिःसत्सेवनानन्यधीस्तस्यकरेमोक्षःस्थितःअनिशंअहदृश्योभवेअन्यथान) प्रभु बोले हे लक्ष्मण यम नियम आसन प्रत्याहार प्राणायामादिकरि सुंदर विमल काम क्रोध लोभादि मलरहित हृदयहै जिनको अरुधारणा ध्यान समाधि आदिकरि विषमता रहित अत्यंत शांत आत्माहै जिनको ऐसे योगिनकी अरु शमदम उपराम तितीक्षा श्रद्धा समाधान विराग विवेक मुमुक्षुता करि विमल ज्ञान आत्मामें है जिनके पुनःमेरीसेवामें प्रीतिसहितलगी रहती है आत्मा जिनकी ऐसे उत्तम मेरे भक्तन को संग जो सबकालमे करता है अरु ज्ञान भक्ति उत्पन्न हेत सदा उद्यम में बुद्धि लगी रहती है जिनको साधुजन जो हैं तिनहि सेवनमें अनन्य एकांगी बुद्धिहै जिनकी तस्यकरे मोक्षः स्थितः अनिशंतिनके हाथहीमें मोक्ष बसी है दिनौराति अन्यथा न और उपायते नहीं अर्थात् परिपूर्ण योग ज्ञान युत जे हमारे भक्त हैं तिनको संग सेवन युतज्ञान युतमेरी भक्ति करते हैं तिनहीं को सदा मोक्ष प्राप्त है औरी उपायते नहीं ५३ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचितेअध्यात्मभूषणे आरण्यकाण्डेलक्ष्मणप्रश्नरघुनंदनज्ञानभक्तिवर्णनोनामचतुर्थः प्रकाशः ४ ॥

तस्मिन्कालेमहारण्येराक्षसीकामरूपिणी ॥ विचचारमहासत्वाजनस्थाननिवासिनी १ एकदागौतमीतीरेपंचवट्याःसमीपतः ॥ पद्मवज्रांकुशांकानिपदानिजगतीपतेः २ दृष्ट्वाकामपरीतात्मापादसौंदर्यमोहिता ॥ पश्यंतीसाशनैरायाद्राघवस्य निवेशनम् ३ तत्रसातंरमानाथंसीतयासहसंस्थितम् ॥ कंदर्पसदृशंरामंदृष्ट्वाकामविमोहिता ४ राक्षसीराघवंप्राहकस्यत्वंकःकिमाश्रमे ॥ युक्तोजटावल्कलाद्यैःसाध्यंकिंतेऽत्रमेवद ५ ॥

सवैया ॥ शूर्पणखादिकुरूपकियेखरजूझ्तगैवहरावणपाही । हालसुनेभयशोचतहींसुविचारिकियो तवहींत्यहिताहीं ॥ भारहरेविधिअर्थितयेजगदीशअहैंखलुमानुपनाहीं । सानुजराघवसीयनमोअवतार धरेजिनभूतलमाहीं ॥ (तस्मिनकालेजनस्थाननिवासिनीराक्षसीमहासत्वाकामरूपिणीमहारण्येविचचार) शिवजी बोले हे गिरिजा जा समय में लक्ष्मण प्रतिरघुनंदन वार्ताकरतेरहे ताही समय में कछु और चरित भया सो सुनो जहाँ खरदूषणादि रहतेरहैं सोई जन स्थान में रहनेवाली शूर्पणखा नामे राक्षसीवडापराक्रम है जाके जैसाचहै तैसास्वरूप धरिलेनेवाली महावनमें विचरती हुई १ (एकदापंचवट्याःसमीपतःगौतमीतीरेजगतीपतेः पदानिपद्मवज्रअंकुशादिभिःअकानि) एकसमय पंचवटीके समीपगौतमीनदी के तीर आयवालुकामें क्या देखती है कि पृथवीके पतिजो रघुनंदन तिनके पाँयन के जो कमल वज्रअंकुश इत्यादि सहित पाँयन के चिह्नवने हैं २ (दृष्ट्वापादसौंदर्य

मोहिताकामपरीतात्मापश्यंतीसाशनैः राघवस्यनिवेशनंआयात्) देखतीभई पाँयन की सुंदरता तातेमोहितहै कामपीडित आत्माचिन्हौंको देखती हुई सो शूर्पणखा धीराधीरा रघुनंदनके आश्रमहि भ ई ३ (तत्रसाकामविमोहिताकंदर्पसदृशंरमानाथंरामंतंसीतयासहसंस्थितंदृष्ट्वा) तहाँआश्रमविषे सो काम मोहित शूर्पणखा कामतुल्य सुंदरलक्ष्मीनाथजो रघुनंदनतिनहिंसीताकरिकै सहितबैठे हुये देखिकै तबजानिवेकीइच्छाकरिबोली ४ (राक्षसीराघवंप्राहत्वंकःकस्यजटावल्कलाद्यैः युक्तःकिंआश्रमेअत्रतेकिंसाध्यंमेवद) शूर्पणखा राक्षसी रघुनंदन प्रतिबोली कि तुम कोहौ भाव कौनवरणहौ क्या नामहै किसके पुत्र हौ शीशमें जटा तनमें वल्कलादि मुनिवसन युक्त क्यों इसआश्रममेंवास किहे अरुइहाँ तुम क्याप्रयोजनसाधतेहौ सो मो प्रतिकहौ ५ ॥

अहंशूर्पणखानामराक्षसीकामरूपिणी ॥ भगिनीराक्षसेंद्रस्यरावणस्यमहात्मनः ६ खरेणसहिताभ्रात्रावसाम्यत्रैवकानने ॥ राज्ञादत्तंचमेसर्वंमुनिभक्षावसाम्यहम् ७ त्वांतुवेदितुमिच्छामिवदमेवदतांवर ॥ नाम्नाहरामनामाहमयोध्याधिपतेःसुतः ८ एषामेसुंदरीभार्यासीताजनकनंदिनी ॥ सतुभ्राताकनीयान्मेलक्ष्मणोऽतीवसुंदरः ९ किंकृत्यंतेमयाब्रूहिकार्यंभुवनसुंदरि ॥ इतिरामवचःश्रुत्वाकामार्तासाऽब्रवीदिदम् १० एहिराममयासार्द्धंरमस्वगिरिकानने ॥ कामार्ताऽहंनशक्नोमित्यक्तुंत्वांकमलेक्षणम् ११ ॥

(राक्षसेंद्रस्यमहात्मनःरावणस्यभगिनीअहंशूर्पणखानामककामरूपिणीराक्षसी) मोकोजाना चाहौ तौ राक्षसों के राजामहानपुरुष रावणकी बहिन मैं शूर्पणखा नामे इच्छापूर्वक रूपधरने वालीराक्षसी हौं ६ (भ्रात्राखरेणसहिताअत्रकाननेएववसामिचराज्ञामेसर्वंदत्तंअहंमुनिभक्षावसामि) अपने भाई खरकरिकै सहित इसी वनमें निश्चय करिवसतीहौं पुनः राजा रावणने मोको इहाँकी सबराज्य दे दियाहै ताते मैं मुनिनको भक्षण करती हुई इहाँ बास करतीहौं ७ (तुत्वांवेदितुंइच्छामिवदतांवरमेवदतांआहअहंरामनामअयोध्याधिपतेःसुतः) पुनः जातिकुल पिताधामादि आपको जानाचाहतीहौं हे बोलने वालेन में उत्तम मो प्रतिआपना हालकहिये त्याहि शूर्पणखा प्रतिप्रभु बोले हमारारामनाम है अयोध्याके राजा दशरथके पुत्रहैं ८ (एषासुंदरीजनकनंदिनीसीतामेभार्यातुसअतीवसुंदरःलक्ष्मणःमेकनीयान्भ्राता) यहजो सुंदरीहै सो जनक की पुत्री सीतानाम मेरी पत्नीहै पुनः सो जो अत्यंत सुंदर हैं ये लक्ष्मण नामे हमारे छोटे भाई हैं ९ (भुवनसुंदरिमयाकृत्यतेकिंकार्यंब्रूहिइतिरामवचः श्रुत्वासाकामार्ताइदम्अब्रवीत्) प्रभुबोले हे भुवन भरमें प्रसिद्ध परम सुंदरी हम करिकै करिबे योग्य तेरा क्याकार्य है सो कहु यामें रावणसों विरोधको कारण है ऐसाजानिअनुकूलता जनाय बचनकहे इत्यादि रघुनंदन के बचन सुनि सो शूर्पणखा काम बाधाकरि दुखित ऐसावचन बोली १० (राम एहिगिरिकाननेमयासार्द्धंरमस्वअहं कामार्ताकमलेक्षणम्त्वांत्यक्तुंशक्नोमिन) हेराम इहाँ आवौ पर्वत बनविषेमेरेसाथ सुखपूर्वक बिहारकरौ क्योंकि तुमहिंदेखि मैं कामकरिकै पीडितहौं अरुकमलवत्नयन परम सुंदर जो आप तिनहिं त्यागिबे योग्य मैं नहींहौं भावअसक्त हौं ताते ११ ॥

रामःसीताकटाक्षेणपश्यन्सस्मितमब्रवीत् ॥ भार्याममैषाकल्याणीविद्यतेह्यनपायिनी १२ त्वंतुसापत्न्यदुःखेनकथंस्थास्यसिसुंदरि ॥ बहिरास्तेममभ्रातालक्ष्मणोऽ

तीवसुंदरः १३ तवानुरूपोभवितापतिस्तेनैवसचर ॥ इत्युक्तालक्ष्मणंप्राहपति र्मेभवसुंदर १४ भ्रातुराज्ञांपुरस्कृत्यसंगच्छावोऽद्यमाचिरम् ॥ इत्याहराक्षसीघो रालक्ष्मणंकाममोहिता १५ तामाहलक्ष्मणःसाध्विदासोऽहंतस्यधीमतः ॥ दासी भविष्यसित्वंतुनतोदुःखतरंनुकिम् १६ तमेवगच्छभद्रंतेसतुराजाऽखिलेश्वरः ॥ तच्छ्रुत्वापुनरप्यागाद्राघवंदुष्टमानसा १७ ॥

(कटाक्षेणसीतांपश्यन्रामःसस्मितंअब्रवीत्एषाकल्याणीममभार्याअनपायनी विद्यतेहि) कटाक्ष करि के सीतहि देखतसंते रघुनन्दन सहित मुसुकानि वचन बोले कि मैं कैसे तुम्हारे पास आवों देखिये यह कल्याणी भाव स्वरूपवंत मुग्धा पद्मिनी प्रियभाषिणी शील क्षमावंत पतिव्रता इत्यादि, कल्याण गुण भरी मेरी वामाङ्गी जो किसी समय में छूटने वाली नहीं सो प्रसिद्धमेरे पासही बैठी है १२ (तुसुंदरित्वंसापत्न्यदुःखेनकथस्थास्यसि अतीवसुंदरःममभ्रातालक्ष्मणः बहिःआस्ते) पुनः हे सुंदरि तुम जो दूसरी पत्नी ह्वै रहाचाहत हौ तौ सवांत जनित महा दुःख करिकै पीड़ित कौन भांति मेरे पास रहि सकौगी ताते मेरा कहा करौ निश्चिंत विहरौ अत्यंत सुंदर मेरे भाई लक्ष्मण बाहेर बैठे हैं पत्नी हीन हैं १३ (तवअनुरूपःपतिः भविता तेन एव संचरइति उक्ता लक्ष्मणं प्राह सुंदरमेपतिःभव) भो लक्ष्मण तेरी योग्य पति होयँगे ताके संगनिश्चय करि वन में विहार करु ऐसा रघुनाथ जी कहे तब शूर्पणखा जाय लक्ष्मण प्रति बोली हेसुंदर राजकुमार मेरे पति होउ १४ (भ्रातुःआज्ञांपुरस्कृत्य अद्यसंगच्छावःमाचिरम् इतिकाममोहिताघोरा राक्षसीलक्ष्मणंप्राह) कैसे मेरे पतिहोउ आपने बड़े भाई की आज्ञा लैकै आवो तुम हम विहार हेत इसी समय वनमें चली मति विलम्ब करौ इत्यादि वचन काम मोहित ह्वै भयंकर राक्षसी लक्ष्मण प्रति बोली १५ (लक्ष्मणः तांआहसाध्विअहंधीमतः तस्यदासःतुत्वदासी भविष्यसिततः नुदुःखतरंकिम्) लक्ष्मण जी त्यहिशूर्पणखा प्रति बोले हेसाध्वि भाव तुम पति सेवामें तत्पर रहने योग्य बुद्धिवंत हौ तौ मेरी अनुकूल अवश्यही रहौ गी अरु मैं बुद्धिवंत आज्ञानुकूल कार्य करने वाला तिन रघुनन्दन को दास हौं पुनः तुमहूं दासी ह्वैहौ तब फिरि याते अधिक दुःख क्याहै ताते मेरी पत्नी नहो १६ (तेभद्रंतंएवगच्छ तुसअखिलेश्वरःराजातत्श्रुत्वादुष्टमानसा राघवंपुनःअपिआगात्) तेरा कल्याण होय उनहींके पास निश्चयकरि जासोरघुनाथजी सबकेस्वामीराजाहैं भावउनको अनेकन रानी करनायोग्य इतिलक्ष्मण जीको कहा पुरुषवचन सो सुनि दुष्टहै मनजाको सो शूर्पणखा रघुनन्दनके पास पुनःनिश्चय करिगई १७॥

क्रोधाद्रामकिमर्थंमांभ्रामयस्यनवस्थितः ॥ इदानीमेवतांसीतांभक्षयामितवाग्रतः १८ इत्युक्त्वाविकटाकाराजानकीमनुधावती ॥ ततोरामाज्ञयाखड्गमादायपरिगृह्यताम् १९ चिच्छेदनासाकर्णौचलक्ष्मणोलघुविक्रमः ॥ ततोघोरध्वनिंकृत्वा रुधिराक्तवपुर्द्रुतम्२०क्रंदमानापपाताग्रेखरस्यपरुषाक्षरा ॥ किमेतदितितामाह खरःखरतराक्षरः २१ केनैवंकारितासित्वंमृत्योर्वक्त्रानुवर्तिना ॥ वदमेतंवधिष्या मिकालकल्पमपिक्षणात् २२ ॥

(क्रोधात् राम अनवस्थितः किं अर्थं मां भ्रामयसि सीतां तां इदानीं एवतव अग्रतः भक्षयामि) क्रोधते बोली इति शेषः हे राम सत्यवात पर नहीं स्थितहोते हौ किस हेत मोहिं इधर उधर भ्रमा-

वते हौ जो प्रीति बश सीता की भयमानते हौ तिनहिं इसी समय निश्चय करि तुम्हारे आगे खाये लेती हौं १८ (इति उक्त्वा बिकटाकारा जानकीं अनुधावती) सीता को खाय लेउँगी ऐसा कहि शूर्पणखा भयंकर रूप करि जानकी जीकी दिशि धावती भई १९ (ततः रामाज्ञया लक्ष्मणः लघुबिक्रमः तां परिगृह्य खङ्गं आदाय नासांच कर्णौ चिच्छेद ततः घोरध्वनिं कृत्वाबपुःरुधिराक्तद्रुतम्) तब रघुनन्दनकी आज्ञा करिके लक्ष्मणजी थोरेही बलसों शूर्पणखा जोहै ताहिपकरि तरवारिलैके नाक पुनः कानदोऊ काटि डारतेभये तब घोरध्वनि करती भई भावमेरे सहायक निकटहोंय तौ धावैं जब कोऊ न देखिपरा तबदेह रक्तसे बूड़ी दशाते शीघ्रहींजाय जनस्थानमें पहुंची २० (क्रंदमाना परुषाक्षरा खरस्य अग्रे पपात खरः खरतराक्षरः तां आह एतत् इति किम्) बड़े बेगते रोवती हुई अरु कठोर बचन कहती हुई शूर्पणखा अपने भाई खरकेआगे गिरि परती भई ताकी दशा देखि खर क्रोधवश खरतर अत्यंत तीक्ष्ण अक्षर मैं बानीते त्याहि शूर्पणखा प्रति बोला कि तेरी इसदशाको कारण क्या है २१ (मृत्योःबक्त्रेअनुवर्तिना केन एवं त्वंकारितासि मे बद तं कालकल्पं अपिक्षणात् वधिष्यामि) मृत्युके मुखमे जाने वाला किसने इसप्रकार की दशा तेरी करी है सो मो प्रति कहु ताहि जो कल्पांत में काल होने वाला होई तबहूं क्षणै भरे में बध करिहौं २२ ॥

तमाहराक्षसीरामःसीतालक्ष्मणसंयुतः॥दण्डकंनिर्भयंकुर्वन्नास्तेगोदावरीतटे २३ मामेवंकृतवांस्तस्यभ्रातातेनैवचोदितः ॥ यदित्वंकुलजातोऽसिवीरोसिजहितौरिपू २४ तयोस्तुरुधिरंपास्येभक्षयेतौसुदुर्मदौ ॥ नोचेत्प्राणान्परित्यज्ययास्यामियमसादनम् २५ तच्छ्रुत्वात्वरितंप्रागात्खरःक्रोधेनमूर्च्छितः ॥ चतुर्दशसहस्राणि रक्षसांभीमकर्मणाम् २६ चोदयामासरामस्यसमीपंबधकांक्षया ॥ खरश्चत्रिशिराश्चैवदूषणश्चैवराक्षसः २७ सर्वेरामंययुःशीघ्रंनानाप्रहरणोद्यताः ॥ श्रुत्वाकोलाहलंतेषांरामःसौमित्रिमब्रवीत् २८ ॥

(राक्षसीतंआह सीतालक्ष्मण संयुतःरामःदण्डकं निर्भयंकुर्वन् गोदावरीतटे आस्ते) राक्षसी शूर्पणखा खर जोहै ताप्रति बोली कि सीताभार्या लक्ष्मणबंधु सहित राम जो हैं अवधेश दशरथ के पुत्र सो दण्डक बनवासी मुनिनको निर्भय करतसंते गोदावरीके समीप पंचवटीमें बास करतेहैं २३ (तेनएवचोदितः तस्यभ्रातामां एवंकृतवान् यदित्वंकुलजातः असिवीरः असितौरिपूजहि) तिसराम की आज्ञा करिकै ताहीको भाई लक्ष्मण मेरी यह दशाकरी ताते जो तू राक्षस कुल में उत्पन्नभयेहोय बीरहोय तौ दोऊ शत्रुनको मारु २४ (तुतयोःरुधिरंपास्ये एतौदुर्मदौ भक्षय नोचेत्प्राणान् परित्यज्य यमसादनम् यास्यामि) पुनः उनदोऊ को रक्तजो है ताहिमैं पानकरिहौं अरु तेदोऊ बलबीर ताको गर्वभरे तिनहिं तुम भक्षण करौ नाहीं तौ मैं प्राणत्यागि यमधामहिं जाउँगी २५ (तत्श्रुत्वाखरः क्रोधेन मूर्च्छितः त्वरितंप्रागात् भीमकर्मणाम् चतुर्दशसहस्राणि रक्षसां) शूर्पणखा को कहा वचन सो सुनिके खरक्रोधकरिके बेसुधि तुरतही चलताभया अरु युद्धमें भयंकर कर्म करनेवाले चौदा हजार राक्षस सजिकै २६ (वधकांक्षया रामस्य समीपं चोदयामास खरःचएवदूषण त्रिशिरः चएवराक्षसः) मारि डारने की इच्छाकरिकै रघुनन्दनके पास चलने की आज्ञादिया तथा खरदूषण त्रिशिरादि राक्षस सब भस्त्रसजि बाहनन पर सवारभये २७ (नानाप्रहरणउद्यताः सर्वे शीघ्रंरामंययुः तेषांकोलाहलं श्रुत्वा

रामःसौमित्रिं अब्रवीत्) चतुरंगिनी सेनासजे खरादि सब राक्षस अनेक भाँतिके प्रहरण जो हैं हथियार यथा धनुर्बाण खड्ग त्रिशूल शक्तिगदा तोमरादि लिहे सब शीघ्रही रघुनाथ जी के सन्मुख जातेभये तिनके अनेकनशब्द एकमेंमिलिभारी शब्दभया ताहिसुनि रघुनन्दन लक्ष्मणप्रतिबोले २८॥

श्रूयतेविपुलःशब्दोनूनमायांतिराक्षसाः॥ भविष्यतिमहद्युद्धंनूनमद्यमयासह २९ सीतांनीत्वागुहांगत्वातत्रतिष्ठमहाबल ॥ हंतुमिच्छाम्यहंसर्वान्राक्षसान्घोररूपिणः ३० अत्रकिंचिन्नवक्तव्यंशापितोऽसिममोपरि ॥ तथेतिसीतामादायलक्ष्मणोगह्वरंययौ ३१ रामःपरिकरंबध्वाधनुरादायनिष्ठुरम्॥ तूणीरावक्षयशरौबध्वायत्तोऽभवत्प्रभुः ३२ ततआगत्यरक्षांसिरामस्योपरिचिक्षिपुः ॥ आयुधानिविचित्राणिपाषाणान्पादपानपि ३३ तानिचिच्छेदरामोऽपिलीलयातिलशःक्षणात् ॥ ततोबाणसहस्रेणहत्वातान्सर्वराक्षसान् ३४ ॥

(विपुलःशब्दः श्रूयतेनूनंराक्षसाः आयान्ति अद्यमयासह नूनं महत्युद्धंभविष्यति) प्रभुबोले हे लक्ष्मण बडाभारी शब्दसुनि परताहै तो निश्चय करि राक्षस आवते हैं ताते या समयमें राक्षसों ते हमकरिके अवश्यही महाभयंकर युद्धहोइगो २९ (महाबल सीतानीत्वा गुहांगत्वातत्रतिष्ठ घोर रूपिणः राक्षसान् सर्वान्हंतुंअहंइच्छामि) हे महाबल लक्ष्मण सीता जो हैं तिनहिं साथलै पहारके गुहाको जाउ तहांबैठो काहेते भयंकर रूपराक्षस यावत् आवेंगे तिनहिं सबनको मारिडारिबेको मोको इच्छाहै ३० (ममोपरि शापितः असिअत्र किंचित् न वक्तव्यं तथाइति लक्ष्मणःसीतां आदाय गह्वरं ययौ) हे लक्ष्मण कदाचित् कहो तुमगुहाको जाउ हम युद्ध करेंगे इसहेत आपनी शपथदे कहताहों मेरीबातमें कछुभी प्रतिकूल न कहना तब लक्ष्मण बोले कि जैसा आप कहतेहौ तैसाही करोंगा ऐसा कहि लक्ष्मण सीता जो हैं तिनहिं साथलैके पहारकी गुप्त गुहामें जातेभये ३१ (रामःपरिकरंबध्वा निष्ठुरंधनुः आदायअक्षयशरौतूणीरौबध्वाप्रभुः यत्तः अभवत्) रघुनंदन उठि बसनते फेट बाँधि कठोर धनुपहाथमें ले जिनमें कबहूं बाणचुकैंन ऐसेदोतरकसकटिमें बाँधि इत्यादि युद्धकरिबे योग्य प्रभुवीर ताको बानापहिरते भये ३२ (ततरक्षांसिआगत्यविचित्राणिआयुधानिपाषाणानपादपान्अपिरामस्य उपरिचिक्षिपुः) ताके पाछे राक्षसभी आय बाण शक्तिशूलादि अनेक भाँतिके हथियारपत्थर वृक्षादि निश्चयकरि रघुनंदन के ऊपरचलावतेभये ३३ (तानिरामःअपिलीलयाक्षणात्तिलशःचिच्छेदततः सर्वराक्षसान्तान्बाणसहस्रेणहत्वा) राक्षसौंके चलायेजो हथियारहैं तिनहिं रघुनंदन लीलाकरि क्षणे में तिलसम काटि गिराये तब फिरि सब राक्षस जो हैं तिनहिं आपने बाण हजारन चलाय करि मारते भये ३४ ॥

खरंत्रिशिरसंचैवदूषणंचैवराक्षसम् ॥ जघानप्रहरार्द्धेनसर्वानेवरघूत्तमः ३५ लक्ष्मणोऽपिगुहामध्यात्सीतामादायराघवे ॥ समर्प्यराक्षसान्दृष्ट्वाहतान्विस्मयमाययौ ३६ सीतारामंसमालिंग्यप्रसन्नमुखपंकजम् ॥ शस्त्रव्रणानिचांगेषुममार्जजनकात्मजा ३७ सापिद्रुद्रावदृष्ट्वातान्हतान्राक्षसपुंगवान् ३८ लंकांगत्वासभामध्येक्रोशंतीपादसन्निधौ ॥ रावणस्यपपातोर्व्यांभगिनीतस्यरक्षसःदृष्ट्वातांरावणः

प्राहभगिनींभयविह्वलाम् ३९ उत्तिष्ठोत्तिष्ठवत्सेत्वंविरूपकरणंतव ॥ कृतंशक्रेण वाभद्रेयमेनवरुणेनवा ४० ॥

(खरंचएवत्रिशिरसंदूषणम् चएवराक्षसंप्रहरार्द्धेनरघूत्तमःसर्वान्एवजघान) खर पुनः त्रिशिरदूषण पुनः यावत् राक्षस रहे तिनहिं रघुनन्दन आधे पहरमें सबनको संहार करि दीन्हे ३५ (गुहामध्यात्लक्ष्मणः अपिसीतांआदायराघवेसमर्प्य राक्षसान्हतान् दृष्ट्वाविस्मयंआययौ) गुहा मध्यते लक्ष्मण भी सीता जो हैं तिनहिं लाय रघुनन्दन के अर्थ समर्प्य सौंपि पुनः राक्षस मरेदेखि विस्मय को प्राप्त भये भाव चौदह हज़ार चारिदण्ड में अकेले बध किये इति आश्चर्य भया ३६ (प्रसन्नमुखपंकजम्रामंसीतासंआलिंग्यचअंगेषुशस्त्रव्रणानिजनकात्मजा ममार्ज) प्रसन्नहैं मुख जिन को ऐसे जो रघुनन्दन तिनहिं जानकी जी हृदय में लगाइ लीन्ही पुनः अंगन में जो शस्त्रव्रण अर्थात् हथियारन की चोटै तिनहिं जानकी जी मींजती हैं ३७ (राक्षसपुंगवान्हतान् दृष्ट्वासाअपिदुद्राव) राक्षसों में श्रेष्ठ खरादि तिनहिं मरे देखि सो शूर्पणखा निश्चय करि लंका को धाई ३८ (लंकांगत्वा सभामध्येरावणस्यभगिनी तस्यपादसन्निधौ क्रोशंतीउर्व्यांपपात राक्षसः रावणःभगिनींविह्वलां दृष्ट्वातांप्राह) लंका को गई सभा के बीच में रावण की बहिनि शूर्पणखा तिसरावण के पाँयन के समीप रोदन करती हुई भूमि में गिरि परी तब राक्षस रावण बहिनि जो है ताहि अंग भंग बिकल देखि त्यहिप्रति बोला ३९ (वत्सेत्वंउत्तिष्ठउत्तिष्ठ तवविरूपकरणंशक्रेणवाभद्रेयमेन वावरुणेनकृतं) शूर्पणखा प्रति रावण बोला हे वत्से भाव हे बच्ची तू उठु उठु तेरारूप विरूप होना ताहि कहु इंद्र नें किया अथवा हे कल्याणरूपे तेरा कुरूप यमराजनें किया अथवा वरुण ने किया ४० ॥

कुबेरेणाथवाब्रूहिभस्मीकुर्यांक्षणेनतम्॥राक्षसीतमुवाचेदंत्वंप्रमत्तोविमूढधीः४१ पानासक्तःस्त्रीविजितःषंढःसर्वत्रलक्ष्यसे ॥ चारचक्षुर्विहीनस्त्वंकथंराजाभविष्यसि ४२ खरश्चनिहतःसंख्येदूषणस्त्रिशिरास्तथा ॥ चतुर्दशसहस्राणिराक्षसानां महात्मनाम् ४३ निहतानिक्षणेनैवरामेणासुरशत्रुणा ॥ जनस्थानमशेषेणमुनीनांनिर्भयंकृतम्॥ नजानासिविमूढस्त्वमतएवमयोच्यते४४॥रावणउवाच॥कोवा रामःकिमर्थंवाकथंतेनासुराहताः ॥ सम्यक्कथयमेतेषांमूलघातंकरोम्यहम्४५ ॥

(अथवाकुवेरेणब्रूहितंक्षणेन भस्मीकुर्यांतं राक्षसीइदंउवाचप्रमत्तः त्वंविमूढधीः) अथवा कुवेर ने तोहिं कुरूपकिया सो हाल कहु भावजाको बताउ ताहि क्षणे में भस्म करि देउँ इति कहता हुआ त्यहि रावण प्राति राक्षसी शूर्पणखा इसप्रकार बोली कि मदिरा पान करि प्रमत्त तू मूढ बुद्धी है ४१ (स्त्रीविजितःपानासक्तःसर्वत्रषंढः लक्ष्यसेत्वंचारचक्षुःविहीनःकथंराजाभविष्यसि) स्त्री करिकै जीति लिया गया भाव काम वश है तथा मदिरा पान में असक्त मदांध इति मूढ बुद्धी सर्वत्र पृथ्वी भरे के बीर तोको नपुंसकै देखाते हैं हरकारा रूप नेत्रन करिकै हीन किसप्रकार राजा होइ गो भाव सर्वत्र को हाल जानता नहीं शत्रु प्रबल भये तू कैसे बच सक्ता है ४२ (खरःचदूषणः तथा त्रिशिराःसंख्येनिहतः चतुर्दशसहस्राणिमहात्मनाम् राक्षसानाम्) खर पुनः दूषण तैसे त्रिशिरा इत्यादि संग्राम में मारेगये अरु चौदह हजार बडे बलीबीर राक्षसनको ४३ (असुरशत्रुणारामेणएव क्षणेन निहतानिजनस्थानं अशेषम्मुनीनां निर्भयंकृतं त्वंविमूढः नजानासिअतएवमयाउच्यते) असु-

रराक्षसोंको शत्रु अकेले राम ने निश्चय करि क्षणे में सब राक्षसों को मारि जनस्थानवासी सब मुनिन को अभय डर हीन करि दिये ऐसा हाल है चुका अरु तू ऐसा विशेपि मूढ़ है कि अबहीं तक न जाने ताते मदांधहै निश्चय करि ताते मैंने कहा ४४ (रामःकःवाकिंअर्थंवाकथं तेनअसुरा हताःमेसम्यक्कथयतेषां अहंमूलघातंकरोमि) रावण बोला हेशूर्पणखे राम कौन है अरु किस अर्थ अरु कौन प्रकार अकेलेही सब असुरोंको मारा सो हाल सम्पूर्ण सत्य मो प्रति कहु तौ ताको मैं मूलघात करौं भाव परिवार सहित वाको नाश करौं ४५ ॥

शूर्पणखोवाच ॥ जनस्थानादहंयाताकदाचिद्गौतमीतटे ॥ तत्रपंचवटीनामपुरामुनिजनाश्रया ४६ तत्राश्रमेमयादृष्टोरामोराजीवलोचनः ॥ धनुर्बाणधरः श्रीमान् जटावल्कलमंडितः ४७ कनीयाननुजस्तस्यलक्ष्मणोऽपितथाविधः ॥ तस्यभार्या विशालाक्षीरूपिणीश्रीरिवापरा४८देवगंधर्वनागानांमनुष्याणांतथाविधा॥नदृष्टा नश्रुताराजन्द्योतयंतीवनंशुभा ४९ आनेतुमहमुद्युक्तातांभार्यार्थंतवानघ ॥ लक्ष्मणोनामतद्भ्राताचिच्छेदममनासिकाम्५०कर्णौचनोदितस्तेनरामेणचमहाबलः ततोहमतिदुःखेनरुदन्तीखरमन्वगात् ५१ ॥

(कदाचित्अहंजनस्थानात् याता गौतमीतटे पंचवटीनाम तत्रपुरामुनिजनाश्रया) शूर्पणखा बोली हेरावण एकसमय खरादिके वासस्थल जनस्थानते जातीहुई गौतमीनदीके तटमें पंचवटीनामे स्थल तहां पूर्व मुनिजन बहुत रहते रहें ४६ (तत्राश्रमेश्रीमान् रामः राजीवलोचनः जटावल्कल मण्डितः धनुर्बाणधरः मया दृष्टः) तिस आश्रममें अपूर्व शोभायुक्त रामकमल नयन शीशमें जटा मुनि वसन तनमें शोभित धनुषबाण धारण किहे बैठे मैंने देखा ४७ (तथाविध. तस्यकनीयान्अनुजः लक्ष्मणः अपितस्यभार्या अपराश्रीः इवरूपिणी विशालाक्षी) ताही विधि स्वरूपवंत तिन रामके छोटेभाई लक्ष्मणभी हैं अरु तिनरामकी पत्नी कैसी है जो दूसरी लक्ष्मी के तुल्य स्वरूपवंत सुंदर बड़ेहैं नेत्र जाके ४८ (देवगंधर्व नागानांमनुष्याणां तथाविधा न श्रुता न दृष्टा राजन् शुभा वनं द्योतयंती) इंद्रादि देवता तुंबुरादि गंधर्ववासुकी आदि नागभूमिपर यावत् मनुष्यहैं तिनकी स्त्रिनिमें वाकी तुल्य न मैंने देखाहै न सुनाहै हेराजन् वह मंगलमूर्ति रामकीपत्नी आपनी दीप्तिकरि वनहि प्रकाश करतीहै४९ है श्लोकएकान्वयहै (अनघतवभार्यार्थं तांआनेतुं अहंउद्युक्ता) सूर्पणखाबोली हे निष्पाप रावण तुम्हारी स्त्री बनावे के अर्थ सीता जो है ताहि इहां आनिबे को मै यत्न करती रहौं सो जानि (महाबलः रामेणनोदितःतत्भ्रातालक्ष्मणःनामतेनममनासिकाम्चकर्णौचिच्छेद) महाबलवंत रामने आज्ञा दिया तिन रामके भाई लक्ष्मण नाम ताने मेरी नाक पुनःकान दोऊ काटिडारे (ततःदुःखेनरुदंती अहंखरंअन्वगात्) तदनंतरदुःख करिकै रोवती हुई मैं खरके समीप जाती भई ५०।५१ ॥

सोऽपिरामंसमासाद्ययुद्धंराक्षसयूथपैः ५२ ततःक्षणेनरामेणतेनैवबलशालिना ॥ सर्वेतेनविनष्टावैराक्षसाभीमविक्रमाः ५३ यदिरामोमनःकुर्यात्त्रैलोक्यंनिमिषार्द्धतः ॥ भस्मीकुर्यान्नसंदेहइतिभातिममप्रभो ५४ यदिसातवभार्यास्यात्सफलं तवजीवितम्॥अतोयतस्वराजेंद्रयथातेवल्लभाभवेत्५५सीताराजीवपत्राक्षीसर्वलोकैकसुंदरी ॥ साक्षाद्रामस्यपुरतःस्थातुंत्वंनक्षमःप्रभो ५६ माययामोहयित्वातु

प्राप्स्यसेतांरघूत्तमम् ॥ श्रुत्वातत्सूक्तवाक्यैश्चदानमानादिभिस्तथा ५७ आश्वा
स्यभगिनींराजाप्रविवेशस्वकंगृहं॥तत्रचिंतापरोभूत्वारात्रौनिद्रांनलब्धवान् ५८ ॥

(सःअपिराक्षसयूथपैःतंभ्रातायरामंयुद्धं) सोखर निश्चयकरि राक्षसोंके यूथपों को साथलै करि के सन्मुख प्राप्त भयारामप्रति युद्धकिया ५२ (ततःबलशालिनारामेण तेन एव राक्षसा भीम विक्रमा सर्वेक्षणेन तेन विनष्टावे) तदनंतर बलशाली रामकेसंग युद्धकरिकै निश्चयकरि सब राक्षस बड़ेपराक्रमी युद्धमेंतत्क्षणे भरेमें रामने नाशकरि दिया ५३ (प्रभोममइतिभातियदिरामःमनःकुर्यात्निमिषार्द्धतःत्रैलोक्यं भस्मीकुर्यात्तत्संदेहःन) हेप्रभु उनको विक्रम देखि मेरेमनमें ऐसा भासत कि जो राम मन करेंतो निमेषके आधेकालमें तीनिहूंलोक भस्मकरिदेइं यामेंसंशय नहीं है ५४ (सायदितवभार्या स्यात्तवजीवितम्सफलम्अतःराजेंद्रयतस्वयथातेवल्लभाभवेत्) सो सीताजो तेरीभार्या होवै तोतेरा जीवनसफलहोवे इसकारण हेराजेंद्र सोयत्न करु जिसप्रकारतेरी वल्लभा अर्थात् प्रियापत्नीहोइ ५५ (राजीवपत्राक्षसिर्वलोकेषुएकसुंदरीसीतासाक्षात्रामस्यपुरतःस्थातुंप्रभोत्वंक्षमःन) कमलदलसमनेत्र जाके सबलोकनविषे एकही सुंदरि जोसीता सो साक्षात् रामके आगे बैठी है तिनको जीतिके हरिलेनि चहौ तौहेप्रभो तुमऐसे समर्थ नहीं हौ भावमारेजाउगे ५६ (रघूत्तमंमाययामोहयित्वातुतांप्राप्स्यसे तत्श्रुत्वासूक्तवाक्यैःतथादानमानादिभिः) प्रथममाया करिके रघुवर जो हैं तिनहिं मोहित करोतब पुनः युक्ति करितोसीता जो है ताहि प्राप्तहोउगे इति ताके वचन सुनि रावण समुझावन योग्य बातौं करि तथा दानआदर करिकै ५७(भगिनींआश्वास्यराजास्वकंगृहंप्रविवेशतत्रचिंतापरोभूत्वारात्रौनिद्रां नलब्धवान्) वहिनजो शूर्पणखा ताहि समुझाय राजा रावण आपने घरमें प्रवेशकरता भया तहां चिंताके परवश भया चिंताकरतेही रातिमें नींद न परी शोचविचार करता रहा ५८ ॥

एकेनरामेणकथंमनुष्यमात्रेणनष्टःसबलःखरोमे ॥ भ्राताकथंमेबलवीर्यदर्पयुतो विनष्टोवतराघवेण ५९ यद्वानरामोमनुजःपरेशोमांहंतुकामःसबलंबलौघैः॥ संप्रार्थितोयंद्रुहिणेनपूर्वंमनुष्यरूपोऽद्यरघोःकुलेऽभूत ६० वध्योयदिस्यांपरमात्मनाहं वैकुण्ठराज्यंपरिपालयेऽहं ॥ नोचेदिदंराक्षसराज्यमेवभोक्ष्येचिरंराममतोव्रजामि ६१ इत्थंविचिंत्याखिलराक्षसेंद्रोरामंविदित्वापरमेश्वरंहरिम् ॥ विरोधबुद्ध्यैवहरिंप्रयामिद्रुतंनभक्त्याभगवान्प्रसीदेत् ६२ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेआरण्यकाण्डेपंचमःसर्गः ५ ॥

(मे सबलः खरः मनुष्यमात्रेण एकेन रामेण कथं नष्टः वत में भ्राता बलवीर्यदर्प युक्तः राघवेण कथं विनष्टः) रावण चिंतापूर्वक विचार करता है कि मेरी समान बली खर रहा अरु देवता दैत्यादि कोई नहीं मनुष्यमात्र सोऊ सेना रहित अकेले राम ने कौन प्रकार वाको मारा वत अर्थात् बड़े आश्चर्य की बात है मेरे भाई बलशक्ति अभिमान युक्त ते सेना सहित राघव करिकै कैसे नाश भये ५९ (यद्वारामः मनुजः न परेशः पूर्वंद्रुहिणेन संप्रार्थितः मां हंतु कामःसबलं बलौघैः अयं मनुष्य रूपः अद्य रघोः कुले अभूत) अथवा राम मनुष्य नहीं हैं सब ईशन ते परे ईश परमेश्वर हैं काहेते पूर्वहीं ब्रह्माने प्रार्थना किया है मोहि मारिबे की इच्छा राखि ता हेत सेनाकली वानर समूह

सहित ये मनुष्य रूपया समय रघुके कुलमें अवतीर्ण भये हैं ६० (यदि परमात्मना अहं वध्यःस्यां तदा अहं वैकुण्ठराज्यं परिपालये नोचेत् इदं राक्षसराज्यं एव चिरंभोक्ष्ये अतः रामं व्रजामि) रावण विचारे कि जो परमात्मा करिकै मेरा बध होई तौ मैं वैकुण्ठ की अविचल राज्य जोहै ताहि पालन करिहौं नाहीं तौ यह दुष्ट राक्षसौं की जो नष्टराज्यहै पापरूप ताहि निश्चय करि बहुत काल भोगि हौं इसकारण रामही के समीप जाँउ ६१ (इत्थ विचिंत्यरामं परमेश्वरं हरिं विदित्वा अखिलराक्षसानां इंद्रः विरोध बुद्ध्या एवहरिं प्रयामि भगवान् भक्त्याद्रुतं न प्रसीदेत्) इसप्रकार चिंतवन करि रामहि परमेश्वर हरिजानि कै सबराक्षसौं को राजा रावण बिचारा कि विरोधबुद्धि करि हरिको प्राप्त है सक्ताहौं क्योंकि भगवान् भक्ति करि शीघ्र नहीं प्रसन्न होते हैं ६२ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतबैजनाथविरचितेअध्यात्मभूषणे आरण्यकाण्डेशूर्पणखाकुरूपखरादिबधरावणबिचारवर्णनोनामपंचमःप्रकाशः ५ ॥

विचिंत्यैवंनिशायांसःप्रभातेरथमास्थितः ॥ रावणोमनसाकार्यमेकंनिश्चित्यबुद्धिमान् १ ययौमारीचसदनंपरम्पारमुदन्वतः॥ मारीचस्तत्रमुनिवज्जटावल्कलधारकः २ ध्यायन्हृदिपरात्मानंनिर्गुणंगुणभासकम् ॥ समाधिविरमेपश्यद्रावणंगृहमागतम् ३ द्रुतमुत्थायचालिंग्यपूजयित्वायथाविधि ॥ कृतातिथ्यंसुखासीनंमारीचोवाक्यमब्रवीत् ४ समागमनमेतत्तेरथेनैकेनरावण ॥ चिन्तापरइवाभासिहृदिकार्यंविचिन्तयन् ५ ॥

सवैया॥हरिहाथ मरौं ध्रुवमुक्ति लहौं गतमारिच पै तिनमंत्र दिया। जनि मानुष जानहु भूलि तिन्हें परमात्म अहैं जिन जन्म दिया ॥ लखि रावण कोप मृगा वनिगो परधाम लहौ दृढ़ राखि हिया। पदवंदत बैजनाथ सदा करुणानिधि सानुज राम सिया ॥ (एवं निशायां विचिंत्यसः रावणः बुद्धिमान् मनसा एकं कार्यं निश्चित्य प्रभाते रथं आस्थितः) शिवजी कहत हे गिरिजा इसीप्रकार रात्री में चिंतवन करि सो रावण बुद्धिमान् मनकरिकै सीताहरण इति एकही कार्य निश्चय राखि प्रात होतहीं रथपर सवार भया १ (परम्पारमारीच सदनं मुदन्वतः ययौ तत्रमारीचःमुनिवत् जटाबल्कल धारकः) समुद्रपार जो मारीच को मंदिर रहा तहाँ को आनंद युक्त रावण जाता भया तहाँ मारिच मुनिकी नाईं शीशमें जटा तनमें बल्कल बसन धारण किहे बैठा है २ (गुणभासकम् निर्गुणं परात्मानम् हृदिध्यायन् समाधि बिरमें रावणं गृहं आगतम् अपश्यत्)रजतम सत्वादि प्रकृति गुणों को प्रकाश करणे वाला निर्गुण जो परमात्माहै ताहि हृदयमें ध्यान करि रहाहै मारीच पुनः समाधिते सावकाश भये पर रावण घरमेंआया ताहि देखता भया३(द्रुतंउत्थायच आलिंग्य यथाबिधि पूजयित्वा आतिथ्यंकृतासुखासीनं मारीचः वाक्यं अब्रवीत्) मारीच शीघ्रहीं उठि मिला पुनः जैसा चाहिये ताहीबिधि षोडशोपचार पूजनकरि भोजनकराया जब सुख पूर्वक आसन पर बैठा तब रावण प्राते मारीच वचन बोला ४ (रावण एकेन रथेन एतत् ते समागमनं हृदि कार्यं विचिंतयन् चिंतापरइव आभासि) मारीच बोला हे रावण एकरथ करिकै अकेले यहजो तुम्हारा आगमनहै तामें चेष्टा ऐसा है कि आपने हृदय में कछु विशेषि कार्य करने को चिंतवनकरि रहेउ है ऐसा मेरे मन में भासतहै कि चिंतामें परायण हौ ५ ॥

ब्रूहिमेनाहिगोप्यंचेत्करवाणितवाप्रियम् ॥ न्यायंचेद्ब्रूहिराजेंद्रब्जिनंमांस्पृशेन्नहि ६ ॥ रावणउवाच ॥ अस्तिराजादशरथःसाकेताधिपतिःकिल ॥ रामनामासुत स्तस्यज्येष्ठःसत्यपराक्रमः७विवासयामाससुतंबनंबनजनप्रियम् ॥भार्ययासहितं भ्रातालक्ष्मणेनसमन्वितम् ८ सआस्तेविपिनेघोरेपंचवट्याश्रमेशुभे ॥ तस्यभा र्याविशालाक्षीसीतालोकविमोहिनी९रामोनिरपराधान्मेराक्षसान्भीमविक्रमान् ॥ खरंचहत्वाविपिनेसुखमास्तेतिनिर्भयः १० भगिन्यामेशूर्पणख्यानिर्दोषायाश्च नासिकाम् ॥ कर्णौचिच्छेदद्दुष्टात्मावनेतिष्ठतिनिर्भयः ११ ॥

(मेब्रूहिगोप्यंचेत् नहितवप्रियम् करवाणिराजेंद्र न्यायं चेत् ब्रूहिमांवृजिनं नहि स्पृशेत्) मारीच बोला कि जोमेरे करनेयोग्य होयतो मोप्रति कहिये अरुगुप्त राखनेवाला कदाचित् होइतो न कहिये क्योंकि जो आपको प्रियकार्य सोईमैं करिहौं पुनः हेराजेंद्र जो न्यायपूर्वक होइतो कहिये जामेंमोहिं पाप न छुइजाइ ६ (साकेताधिपतिः किलराजादशरथः अस्तितस्य ज्येष्ठःसुतः रामनामासत्यंपराक्रमः) रावण बोला हेमारीच अयोध्यापुरी को पति निश्चयकरि राजा दशरथ भयाहै ताको जेठापुत्र राम ऐसानामहै जाको सो सत्यव्रतधारी पराक्रमवंत है ७ (भ्रातालक्ष्मणेन समन्वितम् भार्यया सहितंबनजनप्रियं सुतंबनं विवासयामास) वाको छोटाभाई लक्ष्मण सहित वाकी स्त्री सहित बन वासी मुनिजन प्रियहैं जाको ऐसे पुत्रहि राजा बनको वास देदिया८(सविपिनेघोरेशुभे पञ्चवट्याश्रमे आस्तेतस्यभार्यासीता विशालाक्षी लोकविमोहिनी) सोराम अब दण्डकवन भयंकरमें मंगलीक पंचवटी आश्रममें वास किहेहैं तिनकी स्त्री सीता बड़े सुंदरहैं नेत्रजाके लोकको मोहन करणहारी परम सुंदरिहै ताको हरा चाहताहौं इतिमन की आशयहै ९ (खरंचमेराक्षसान् भीमविक्रमान् निःअपराधान्रामःहत्वा अतिनिर्भयः विपिनेसुखंआस्ते) मेराभाई खरजोहै ताहि अरु त्रिशिरादि मेरे राक्षस चौदह हजार जो बड़े पराक्रमी रहे तिनहिं विना अपराधै राम मारिडारे अरु अत्यंत निर्भय बनमें सुख पूर्वक बसेहैं १० (शूर्पणख्यामे भगिन्यानिर्दोषायाः नासिकाम् च कर्णौचिच्छेद दुष्टात्मानिर्भयः वनेतिष्ठति) शूर्पणखा मेरी बहिनि निर्दोष ताकी नाक पुनः कानदोऊ काटिडारे ऐसे दुष्टात्माहैं पुनःमेरी भयत्यागे निर्भय बनमें वास किहेहैं इतिमेरी अपराध चुकहैं ११ ॥

अतस्त्वयासहायेनगत्वातत्प्राणवल्लभाम् ॥आनयिष्यामिविपिनेरहितेराघवेणता म्१२त्वंतुमायामृगोभूत्वाह्याश्रमादपनेष्यसि ॥ रामंचलक्ष्मणंचैवतदासीताहरा म्यहं१३त्वंतुतावत्सहायंमेकृत्वास्थास्यसिपूर्ववत् ॥ इत्येवंभाषमाणंतंरावणंवीक्ष्य विस्मितः १४ केनेदमुपदिष्टंतेमूलघातकरंवचः ॥ सएवशत्रुर्बध्यश्चयस्त्वन्नाशंप्र तीक्षते १५ रामस्यपौरुषंस्मृत्वाचित्तमद्यापिरावण ॥ बालोपिमांकौशिकस्ययज्ञ संरक्षणायसः १६ आगतस्त्विषुणैकेनपातयामाससागरे ॥ योजनानांशतंरामस्त दादिभयविह्वलः १७ ॥

(अतःत्वयासहायेन बिपिनेगत्वा राघवेणरहिते तत्प्राणवल्लभाम् ताम्आनयिष्यामि)इस कारणते हेमारीच तुम्हारी सहायकरिकै बनमें जाँउगो जब राघव करिकै रहित शून्य आश्रम होई ता समय

में ताकी प्राणप्रिय जो सीताहैं ताहि हरिलाइहौं १२ (तुत्वं मायामृगोभूत्वारामंचएवलक्ष्मणमृहिआश्रमात् अपनेष्यसि तदासीतां अहंहरामि) पुनः हेमारीच तुममाया करिकै मृगाहोउ कंचनमणिमय विचित्र·उनके निकट जाय राम जो हैं पुनः विशेषि करि लक्ष्मण जो हैं तिनहिं निश्चयकरि आश्रमते निकारि लैजाउ ता समयमें सीता जो हैं तिनहिं मैं हरिलेंउ १३ (तुत्वंतावन्मे सहायं कृत्वा पूर्ववत्स्थास्यासि इतिएवंभाषमाणं रावणंतं वीक्ष्यविस्मितः) पुनः जबतक मैं सीता न हरिलेंउ तब तक तुम मेरी सहायताकरौ जब मेराकार्य ह्वैजाय तब पुनःपूर्ववत् इहांवासकरौ इत्यादि कहता हुआ जो रावण ताहि देखि मारीच विस्मय वशभया भाव सबल सो वैर नाशकी मूलहै १४ (मूलघात करंवचःइदंकेनते उपदिष्टं च यः स्वन्नाशं प्रतीक्षते सएवशत्रु·वध्यः) मारीच बोला हे रावण कुल सहित नाश करने वाला वचन यह किसने तोहि उपदेश दियाहै पुनः जो तेरे नाश होनेकी सलाह देताहै सोई निश्चयकरि शत्रु बधकरबे योग्यहै १५ द्वै श्लोक एकमें अन्वय (रावण रामस्य पौरुषं अद्यापि चित्तंस्मृत्वा) हे रावण रामको जैसा पौरुषहै ताहि अवहूं मेरा चित्त स्मरण करताहै कैसाहै सोसुनिये (कौशिकस्ययज्ञसंरक्षणाय आगतःबालःअपिसःरामःतुएकेनइपुणाशतं योजनानां सागरेमां पातयामास तदादिभयविह्वलः) विश्वामित्रकी यज्ञरक्षा करनेहेत चरित वनमें आये तब वालै अबस्थारहै निश्चय करि सोराम सुबाहुको मारि पुनः एकही बाण करिकै उडाय दिये सौयोजनके पार समुद्रमें मोहिं गिराये तबते आजुतक उनके डरते मैं व्यकल बनाहौं १६।१७ ॥

स्मृत्वास्मृत्वातदेवाहंरामंपश्यामिसर्वतः १८ दंडकेऽपिपुनरण्यहंवनेपूर्ववैरमनुचिंतयन् ॥ हदितीक्ष्णशृंगमृगरूपमेकदामादृशैर्बहुभिरावृतोऽभ्ययाम् १९ राघवंजनकजासमन्वितंलक्ष्मणेनसहितंत्वरान्वितः ॥ आगतोऽहमथहंतुमुद्यतोमां विलोक्यशरमेकमक्षिपत् २० तेनविद्धहृदयोऽहमुद्भ्रमन्राक्षसेंद्रपतितोस्मि सागरे ॥ तत्प्रभृत्यहमिदंश्रमाश्रितःस्थानमूर्जितमिदंभयार्दितः २१ राममेवसततंविभावयेभीतभीतइवभोगराशितः ॥ राजरत्नरमणीरथादिकंश्रोत्रयोर्यदिगतंभयंभवेत् २२ ॥

(तदाएवस्मृत्वास्मृत्वा सर्वतःरामंपश्यामि) हे रावण जबते मेरे बाण लगा तब ते उनहीं को स्मरण करता हुआ सर्वत्र रामही मोको देखाते १८ (पूर्ववैरंहृदिअनुचिंतयन्एकदातीक्ष्णशृंगमृग रूपंमादृशैः बहुभिः आवृतः अहंदण्डके वने अपिपुनः अभिअयाम्) पूर्व कौशिक मख को वैर हृदय में चिंतवन करि एक समय पैने शृंगन युत मृगा को रूप धरेउँ अरु मेरिही तुल्य बहुत राक्षस मृगरूप चारिहु दिशि घेरे झुंड के वीच में हम रामहि मारिबे हेत दण्डक वन में पुनः निश्चय करि गयेंउ १९ (लक्ष्मणेनसहितंजनकजासमन्वितम् राघवंहंतुउद्यतःअहंत्वरान्वितः आगतः अथ मांविलोक्यएकंशरं अक्षिपत) लक्ष्मण जानकी करिकै सहित राघव जो हैं तिनहिं मारिबे कीयत्न किहे मैं बड़े वेग ते आवतारहौं तब राम मोंहि देखि एक बाण मारे २० (राक्षसेंद्रतेनविद्धहृदयःअहंउद्भ्रमनसागरेपतितास्मितत्प्रभृतिअहंइदंस्थानंश्रमाश्रितःइदंऊर्जितंभयार्दितः) मारीच बोला हे राक्षसों के राजा रावण जो बाण रामने मारा उसी बाण करिकै बेधाहुवा हृदय में अकाशमें भ्रमण करता हुवा समुद्रमें आइ गिरउँ तबते बहुत दिनभये मुनिबेषते मैं इसी स्थान में बासकरताहौं इहां

भी उनके आवने की भयकरिकै पीड़ित रहताहौं २१ (भोगराशितः भीतभीतइवरामंएवसततंविभावयेराजरत्नरमणीरथादिकंयदिश्रोत्रयोःगतंभयंभवेत्) रकारहै आदि जिनमें ऐसे नामजो सुख भोग के समूह पदार्थ हैं तिनको भी सुनि भीतभीत अर्थात् भययुक्तनमें अत्यंतभययुक्त सम रामजो हैं तिनहींको निश्चय करिसदा ध्यानकरताहौं यथा राजरत्नरमणी रथ इत्यादि शब्दजो कानौंमे परते हैं तबै भयहोत डरलागता है २२ ॥

रामआगतइहेतिशंकयाबाह्यकार्यमपिसर्वमत्यजम् ॥ निद्रयापरिहृतोयदास्वपेरामेमेवमनसाऽनुचिन्तयन् २३ स्वप्नदृष्टिगतराघवंतदाबोधितोविगतनिद्रआस्थितः ॥ तद्भवानपिविमुच्यचाग्रहंराघवंप्रतिगृहंप्रयाहिभो २४ रक्षराक्षसकुलंचिरागतंतत्स्मृतौसकलमेवनश्यति ॥ तवहितंवदतोममभाषितंपरिगृहाणपरात्मनिराघवे २५ त्यजविरोधमतिंभजभक्तितःपरमकारुणिकोरघुनन्दनः ॥ अहमशेषमिदंमुनिवाक्यतोऽशृणुवमादियुगेपरमेश्वरः २६ ॥

(रामइहआगतंइतिशंकयाबाह्यकार्यंतर्वंअपिअत्यजम्यदानिद्रयापरिवृतःस्वपेरामंएवमनसाअनुचिंतयन्) राम इहां आवतेहैं इत्यादि शंकाकरिकै बाहेरके देह व्यवहारके यावत् कार्य हैं तेसब निश्चय करिकै त्यागकिहे रहौं जबनिद्राकरिकै घेराहुवा स्वप्नेमें भी रामही को मन करिकै चिंतवन करता रहौं २३ (स्वप्नदृष्टिगतराघवंतदानिद्रविगतबोधितःअस्थितःतत्भोभवान्अपिराघवंअग्रहंविमुच्यचगृहंप्रतिप्रयाहि) जो स्वप्ने की दृष्टिमें आयगये राघव तब नींदगये जागि आसनपर बैठेपर भी रामहीं की भयबनी रहती है ऐसे सबल हैं ताते भो रावण आपहू निश्चय करिराघव जो हैं तिनहिं अग्रह अर्थात् बैर भाव जो गहेहौ सो बिशेषि छाड़िके पुनः आपने घरहि चलेजाउ २४ (चिरागतंराक्षसकुलंरक्षततस्मृतौसकलंएवनश्यतितवहितंवदतःममभाषितंपरिगृहाण) हेरावण बहुत कालते बढ़ता चला आताहै जो राक्षस कुल ताहि रक्षाकरौ अरुजो बिरोध बुद्धि करि तिन राघवको स्मरण करौगे तौ सबकुल भरि निश्चय करिनाशहोई ताते तुम्हारे हितको कहने वालामैंहौं ताको भाषित वचन ग्रहणकरौ (परात्मनिराघवे २५ विरोधमतिंत्यजभक्तितःभजरघुनंदनःपरमकारुणिकःपरमेश्वरः इदंअशेषंमुनिवाक्यतःआदियुगेअहंअशृणवम्) परमात्माराघुनंदन बिषेविरोधबुद्धिते भजौ क्योंकि रघुनंदन परम कारुणीक परमेश्वर हैं भावसेवक को दुःखनहीं सहिसक्ते हैं शीघ्रही सुखीकरते हैं यह सम्पूर्ण हाल नारद मुनिकी बाक्य ते मैं शतयुगमें सुनिराखेउ है ताते तुमप्रति कहताहौं २६ ॥

ब्रह्मणाऽर्थितउवाचतंहरिःकिंतवेप्सितमहंकरवाणितत् ॥ ब्रह्मणोक्तमरविंदलोचनत्वंप्रयाहिभुविमानुषंवपुः ॥ दशरथात्मजभावमंजसाजहिरिपुंदशकंधरंहरे २७ अतोनमानुषोरामःसाक्षान्नारायणोऽव्ययः ॥ मायामानुषवेषेणवनंयातोऽतिनिर्भयः २८ भूमाहरणार्थायगच्छतातगृहंसुखम् ॥ श्रुत्वामारीचवचनंरावणःप्रत्यभाषत २९ परमात्मायदारामःप्रार्थितोब्रह्मणाकिल ॥ मांहंतुमानुषोभूत्वायत्नादिहसमागतः ३० करिष्यत्यचिरादेवसत्यसंकल्पईश्वरः ॥ अतोऽहंयत्नतःसीतामानेष्याम्येवराघवात् ३१ ॥

(ब्रह्मणाप्रार्थितंहरिः उवाच तवईप्सितं किंतत्अहंकरवाणिब्रह्मणाउक्तंअरविंदलोचनत्वं मानुषं वपुः भुविप्रयाहिदशरथस्य आत्मजभावहरेदशकंधरंरिपुंभंजताजहि) मारीच बोला हेरावण जो नारद ने कहा सो सुनु किसी समय भगवान् सो ब्रह्माने प्रार्थना किया त्यहि ब्रह्मा प्रति हरि बोले कि तुम्हारा क्या मनोरथ है कहिये सोई हमकरें तव ब्रह्मा ने कहा हे कमलनयन आप मनुष्य तन धरि भूतल में जाहु अवधेश दशरथ के पुत्र भाव ह्वै हे हरि दशकंधर रावण जो देवतन को शत्रु है ताहि शीघ्रही मारो २७ (अतः रामः मानुषः नअव्ययः साक्षात्नारायणः मायामानुषवेषेण अतिनिर्भयःवनंयातः) इस कारण ते राम मनुष्य नहीं हैं नाशरहित साक्षात् नारायण हैं माया करि कै मानुष वेष कि हे अत्यंत निर्भय वनहि आयेहैं किस हेत २८ (भूभारहरणार्थाय तातसुखंगृहंगच्छमारीचवचनंश्रुत्वारावणःप्रतिभभाषत्) भूमिको पाप भारउतारने हेत आये हैं भाव कुल सहित तोको संहार करैंगे इस हेत हे तात रावण सुख पूर्वक घरहि लौटि जाउ इत्यादि मारीचके वचनसुनि रावण प्रति उत्तर बोला २९ (यदारामःपरमात्माब्रह्मणाप्रार्थितःकिल मांहंतुंमानुषोभूत्वा यत्नात्इहसमागतः) हे मारीच जब राम परमात्मा हैं ब्रह्मा करि कै प्रार्थना किये गये निश्चय मोंहि मारने को मानुष भये यत्न ते इहाँ दण्डक वन मेंआय प्राप्त भये ३० (सत्यसंकल्पईश्वरः अचिरात्एवकरिष्यति अतःअहंयत्नतः राघवात्एवसीतां आनेष्यामि) सत्य प्रतिज्ञा है जिनकी ऐसे ईश्वर राम हैं तो शीघ्रही निश्चय करि मेरा वध करि हैं इस कारण मैं भी यत्न ते राघवके समीप ते निश्चय करि सीता जो हैं तिनहिं हरि लैहों ३१ ॥

वधेप्राप्तेरणेवीरप्राप्स्यामिपरमम्पदम् ॥ यद्वारामंरणेहत्वासीतांप्राप्स्यामिनिर्भयः ३२ अतोत्तिष्ठमहाभागविचित्रमृगरूपधृक् ॥ रामंचलक्ष्मणंशीघ्रमाश्रमादतिदूरतः ।। आकृष्यगच्छत्वंशीघ्रंसुखंतिष्ठयथापुरा३३अतःपरंचेद्यत्किंचिद्भाषसेमद्विभीषणम्॥हनिष्याम्यसिनाऽनेनत्वामत्रैवनसंशयः३४मारीचस्तद्वचःश्रुत्वा स्वात्मन्येवानुचिंतयत् ॥ यदिमांराघवोहन्यात्तदामुक्तोभवार्णवात् ३५ मांहन्याद्यदिचेद्दुष्टस्तदामेनिरयोध्रुवम् ॥ इतिनिश्चित्यमरणंरामादुत्थायवेगतः ३६ ॥

(वीररणेवधेप्राप्तेपरमंपदम् प्राप्स्यामियद्वारणेरामंहत्वानिर्भयः सीतांप्राप्स्यामि) रावण बोला हे वीर मारीच राम करि कै रण भूमि में वध प्राप्त भये संते परम पदको प्राप्त ह्वैहों अथवा रण में रामहि मैं वध करि होंतो निर्भयसीता जो हैं तिनहिं पाइ हौं ३२ (अतमहाभागउत्तिष्ठ विचित्रमृगरूपधृक् रामंलक्ष्मणंआश्रमात् अतिदूरतः शीघ्रंआकृष्यत्वंशीघ्रंगच्छ यथापुरासुखंतिष्ठ) इस हेत हे महाभाग मारीच उठु कंचन मणिमय विचित्र मृग रूप धरु वन में जाय राम लक्ष्मण जो हैं तिनहिं आश्रम ते अत्यंत दूरि शीघ्रही खैंचि लैजाउ जब मेराकार्य ह्वै जाय तब तुम तुरत हीं चले आवो जैसे पूर्व रह ते रहौ तैसे सुख पूर्वक यहाँ वास करो ३३ (अतःपरंचेत्मत् विभीषणम् यत्किंचित् भाषसे अनेनअसिनात्वांअत्रएव हनिष्यामिसंशय.न) रावण बोला हे मारीच इस के उपरांत कदाचित् मोहि डर पावने योग्य वचन जो किंचित् थोरिहू वात कहौगे तो इसी तरवारि करिकै तोहि इहैं निश्चय करि मारि डरि हौं यामें संशय नहीं है ३४ (तत्वच.श्रुत्वामारीचः स्वआत्मनिएवअनुचिंतयत्यदिराघवःमांहन्यात् तदाभवार्णवान्मुक्तः) सो रावण को वचन सुनि मारीच आपने मन

में निश्चय विचार किया कि जो राघव मोहिं मारेंगे तौ भव सागर ते मुक्तै हौं ३५ (यदिचेत्दुष्टः मांहन्यात् तदामेनिरयोध्रुवम्इतिरामात् मरणम् निश्चित्यवेगतःउत्थाय) जो कदाचित् दुष्ट रावण मोहि मारी तौ मोको नरक निश्चय होई ऐसा विचारि रामते मरण निश्चय राखि मारीच हर्ष सहित शीघ्र ही उठा ३६ ॥

अब्रवीद्रावणंराजन्करोम्याज्ञांतवप्रभो ॥ इत्युक्त्वारथमास्थायगतोरामाश्रमंप्रति ३७ शुद्धजांबूनदप्रख्योमृगोभूद्रौप्यविन्दुकः ॥ रत्नशृंगोमणिखुरोनीलरत्नविलोचनः ३८ विद्युत्प्रभोविमुग्धास्योविचचारवनांतरे ॥ रामाश्रमपदस्यान्तेसीता दृष्टिपथेचरन् ३९ क्षणंचध्यावत्यवतिष्ठतेक्षणंसमीपमागत्यपुनर्भयावृतः ॥ एवं समायामृगवेषरूपधृक्चचारसीतांपरिमोहयन्खलः ४० ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसम्वादेआरण्यकाण्डेषष्ठःसर्गः ६ ॥

(रावणम् अब्रवीत् राजन् प्रभो तव आज्ञां करोमि इति उक्त्वा रथं आस्थाय रामाश्रमंप्रति गतः) रावण प्रति मारीच बोला हे राजन् हे प्रभो आपकी आज्ञाकरिहौं ऐसा कहि दोऊ रथपर चढ़ि रघुनन्दन के आश्रमहिचले ३७ शुद्धजाम्बूनद प्रख्यः रौप्यविन्दुकः मृगः अभूत्मणिखुरः रत्नशृंगः नीलरत्नविलोचनः) शुद्ध कंचन वर्ण तामें चांदीसमबिंन्दु ऐसा मृगाबना श्याम मणिमय खुर रत्नमय शृंग नीलरत्नमय नेत्र दोऊ ३८ (विमुग्ध आस्यः विद्युत् प्रभः वनांतरे विचचार रामाश्रमपदस्य अन्तेसीता दृष्टिपथेचरन्)बिशेषि नवीन सुहावन मुखहै बिजुली की समान जाके तनमें प्रभा प्रकाशमान ऐसा बिचित्र अद्भुत मृगा दण्डकबन के अंतर बिचरता हुवा रघुनाथ जी को आश्रम जो पंचबटी ताके समीप जानकी जी की दृष्टि के आगे मार्ग में बिचरने लगा ३९ (क्षणंधावतिच क्षणं अवतिष्ठते समीपं आगत्य पुनः भयावृतः एवं समृगरूप धृक् मायावेष खलः सीतांपरि मोहयन् चचार) क्षणभरि दौरता है पुनः क्षणमें खड़ा हैजाता है आश्रम के समीप आवत पुनः डरायकै भागत इसी प्रकार सो मारीच मृगरूप धरे तामें मायाकरि अद्भुत बेष किहे दुष्ट जानकी जी जो हैं तिनहिं मोहित करता हुवा बिचरता है ४० ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतबैजनाथबिरचितेअध्यात्मभूषणे आरण्यकाण्डेमायामृगपंचबटीआगमनबर्णनोनामषष्ठःप्रकाशः ६ ॥

अथरामोऽपितत्सर्वंज्ञात्वारावणचेष्टितम् ॥ उवाचसीतामेकांतेशृणुजानकिमेवचः १ रावणोभिक्षुरूपेणआगमिष्यतितेऽन्तिकम् ॥ त्वंतुछायांत्वदाकारांस्थापयित्वोटजेविश २ अग्नावदृश्यरूपेणवर्षंतिष्ठममाज्ञया ॥ रावणस्यबधांतेमांपूर्ववत्प्राप्स्यसे शुभे ३ श्रुत्वारामोदितंवाक्यंसाऽपितत्रतथाऽकरोत् ॥ मायासीतांबहिःस्थाप्यस्वयमंतर्दधेऽनले ४ मायासीतातदापश्यन्मृगंमायाविनिर्मितं ॥ हसन्तीराममभ्येत्यप्रोवाचाविनयान्वितः ५ ॥

सवैया ॥ क्षितिजाग्निवसी प्रति बिंब प्रिया मृगआनिय पीप्रति बात कही । शरचाप गहे चलि दूरिह ते भ्रमपाय गये लघुबंधुतही ॥ खलसीय हरी लरिगीध गिरो कपि भूषण दै गतलंकमही । नरनाट्य कलाबसि बैजसुनाथ सदानुज राघव सीय सही ॥ (अथ रावण चेष्टितम् तत्सर्वं अपि ज्ञात्वा रामः एकांते सीतां उवाच जानकि मेवचः शृणु) शिवजी बोले हे गिरिजा अब रावण को किया व्यापार सो सब निश्चय करि जानि रघुनन्दन एकांत स्थान में सीता प्रति बोले हे जनकनंदिनी मेरे बचन सुनो १ (भिक्षुरूपेण रावणः ते अंतिकम् आगमिष्यति त्वदाकारां छायां ऊटजेस्थापयित्वातु मम आज्ञयात्वं अग्नौ विश अदृश्यरूपेण वर्षंतिष्ठ) रघुनन्दन बोले हे प्राण प्रिय यतीरूप करिकै रावण तुम्हारे समीप आवै गो हरिलैजाने हेत ताते तुम्हारिहीं आकार जो तुम्हारी छाया है ताहि मूर्तिमान आश्रम में स्थापित करि पुनः मेरी आज्ञा करिकै तुम अग्नि बिषे प्रबेश करि जामे किसी को देखि न परौ ऐसे अदृश्य रूपकरिकै बर्षभरि तहाँ बास करौ२(शुभे रावणस्य वधांते पूर्ववत् मां प्राप्स्यसे) हे मंगलरूपे रावण के बध भये पछि पूर्वकी नाईं पुनः मोहि फेरि प्राप्त होउगी ३ (रामस्य उदितं वाक्यं श्रुत्वा सा अपि तत्र तथा अकरोत् मायायाः सीतां वहिः स्थाप्य स्वयं अनले अंतर्दधे) रघुनन्दन को कहा बचन सुनि सो जानकी निश्चय करि तहाँ पर तैसाही करती भई मायाकी सीता तिनहिं बाहेर राखि आप अग्नि में प्रवेश करि अंतर्द्धान भईं ४ (मायानिर्मितंमृगं पश्यत तदा मायासीता हसंती बिनयान्वितः रामं अभ्येत्य प्रोवाच) मायाकरिकै बना हुवा मृग ताहि देखि ता समय में माया की सीता हसीं भाव जो जैसा भाव राखत ताको तैसाही प्रभु प्राप्त होतेहैं पुनः नम्रता पूर्बक रघुनन्दन के सन्मुख ह्वै बोलती भई ५ ॥

पश्यराममृगंचित्रंकानकंरत्नभूषितम् ॥ विचित्रबिन्दुभिर्युक्तंचरंतमकुतोभयम्६ बध्वादेहिममक्रीड़ामृगोभवतुसुंदरः ॥ तथेतिधनुरादायगच्छन्लक्ष्मणमब्रवीत्७ रक्षत्वमतियत्नेनसीतांमत्प्राणवल्लभाम् ॥ मायिनःसंतिविपिनेराक्षसाघोरदर्शनाः॥अतोत्रावहितःसाध्वींरक्षसीतामनिन्दिताम् ८ लक्ष्मणोराममाहेदंदेवायंमृगरूपधृक् ॥ मारीचोत्रनसंदेहएवंभूतोमृगःकुतः ९ श्रीरामउवाच ॥ यदिमारीच एवायंतदाहन्मिनसंशयः ॥ मृगश्चेदानयिष्यामिसीताविश्रामहेतवे १० ॥

(रामकानकंचित्रं रत्नभूषितं विचित्रबिंदुभिःयुक्तं अकुतोभयंचरंतं मृगंपश्य) हे रघुनन्दन हेरघुनाथजी कनकमय चित्र रत्नन करिकै भूषित चांदीके बिन्दुन करिकै युक्त अभय विचरता हुआ जो अद्भुतमृगहै ताहि देखिये ६ (सुंदरःमृगःबध्वा देहिममक्रीड़ाभवतु तथाइतिधनुः आदायगच्छन्लक्ष्मणं अब्रवीत्) हे प्राणनाथ यह सुंदर मृगा पकरिदीजिये मेरा खेलौना होइगो तब प्रभुबोले कि जो कहती हौ सोई करिहौं ऐसा कहि धनुषबाणले रघुनाथ जी चले तब लक्ष्मण प्रतिबोले ७ (मत्प्राणबल्लभाम् सीतांअतियत्नेन त्वंरक्ष घोरदर्शनाःमायिनः राक्षसाः विपिनेसंति) प्रभुबोले हेलक्ष्मण मेरी प्राणप्रिया जो सीताहै ताहि अत्यंत यत्न करिकै तुमरक्षा किहेउ क्योंकि भयंकर तन देखतमें छलकारी राक्षस वहुत वनमें हैं (अतःअत्रअवहितः अनिंदिताम् साध्वीं सीतांरक्ष) राक्षस वहुत फिरतेहैं इसकारण इहां सावधान ह्वै स्थितरहि निंदारहित पतिव्रता जो सीताहै ताहि रक्षाकरो ८ (रामंलक्ष्मणः इदं आह देवमृगरूपधृक् अयंमारीचः अत्रसंदेहनमृगः एवंकुतःभूतः) रघुनन्दन प्रति लक्ष्मण ऐसाबोले कि हे देवमृगाको रूपधारण किहे यह मारीच राक्षसहै इसमें संदेह नहींहै निश्चय यही सत्य मानिये

क्योंकि मृगा इसप्रकार को कहांहोताहै ९(यदिअयंमारीच एवतदाहन्मिसंसयः नचेत्मृगःसीता विश्राम हेतवे आनयिष्यामि) रघुनन्दन बोले हेलक्ष्मण दोऊ भांति कछुहानि नहीं है योयह मृगपमारीच निश्चय करिहै तब याको बधकरिहौं यामें संशय नहींहै अरु कदाचित् मृगाहै तो जानकी के आनंद देने हेत यहांको पकरिलाइहौं इतिद्वउदिशि लाभहीहै १० ॥

गमिष्यामिमृगंबध्वाह्यानयिष्यामिसत्वरः ॥ त्वंप्रयत्नेनसंतिष्ठसीतासंरक्षणोद्यतः ११ इत्युक्त्वाप्रययौरामोमायामृगमनुद्रुतः ॥ मायायदाश्रयालोकमोहिनीजगदाकृतिः १२ निर्विकारश्चिदात्माऽपिपूर्णोऽपिमृगमन्वगात् ॥ भक्तानुकंपीभगवानितिसत्यंबचोहरिः १३ कर्तुंसीताप्रियार्थायजानन्नपिमृगंययौ ॥ अन्यथापूर्णकामस्यरामस्यविदितात्मनः १४ ॥

मृगंबध्वाहि आनिष्यामिसत्वरः गमिष्यामि त्वंप्रयत्नेन सीतासंरक्षणेउद्यतःसंतिष्ठ) मृगा जो है ताहि बांधि निश्चय करि लिहे आवताहौं शीघ्रही ता हेत मैं जाताहौं अरु हेलक्ष्मणतुम युक्ति करिकै सीताकी रक्षामें उद्यत अर्थात् धनुषबाण सजे सजगास्थित रहो ११ (इतिउक्त्वारामः मायामृगं अनुद्रुतः प्रययौ जगदाकृतिः लोकमोहिनी मायायत् आश्रया) ऐसाकहि रघुनन्दन मायामृगके पाछे शीघ्रधावत भये इतिमाधुर्यमें नरनाट्यहै अरु ऐश्वर्य ऐसी है कि सम्पूर्ण जगत् सोई है स्वरूप जिनको अरु लोकको मोहित करण हारी माया जिनके आश्रितहै सोई लोकहेत नरनाट्य करतेहैं १२ (निर्विकारःचित्त आत्मा अपिपूर्णः अपिमृगंअन्वगात् भगवान् भक्तानुकंपी इतिबचः सत्यंकर्तुं हरिः) अब ऐश्वर्य माधुर्य मिश्रित लीलादेखावते हैं कि राग द्वेष हर्ष विषाद रजतमादि विकार रहित सदा एकरस चैतन्य आत्म तत्वहैं निश्चय करि सबमें व्याप्त परिपूर्ण हैं निश्चय करि सोप्रभु मृगाके पाछे धाये ताको हेतु एकतौ भगवान षड़ैश्वर्य युक्त यथा पोषणं भरणाधारं शरण्यं सर्वव्यापकं कारुण्यं षड्भिः पूर्णो रामस्तु भगवान्स्वयम् पुनः अनुकंपा गुणयथा भगवद्गुण दर्पणे रक्षिताश्रितभक्ता नामनुरागसुखेच्छया। भूयोभीष्ट प्रदानाय यश्चताननुधावति अनुकंपा गुणोह्येषा प्रपन्न प्रियगोचरः अर्थात् भक्तन को सदासुख देनेकी उपायमें लगे रहतेहैं इत्यादि बचन सत्य करतेहैं अर्थात् जब किशोरी जी की प्रार्थनाते नररूपते अवतीर्ण होनेलगे तब प्रतिज्ञाकीन्हे कि सौभाविक भक्तन को सुखदेइंगे विशेषि जीवन को उद्धार करैंगे यथा भगवद्गुण दर्पणे सर्बान् जीवानंभोविंतारयेय मिति प्रभुः चिंतयन्नवतारस्यकार्थंतस्थौमहीतले इत्यादि बचन सत्य करते हैं १३ (सीताप्रियार्थाय जानन् अपिमृगंययौ पूर्व जानकी जीने प्रार्थना कियाहै कि सुंदर मनुष्य रूपते नरनाट्य करि सुलभ जीवन को उद्धार करी सोई जानकी जीकी प्रीति के अर्थ जानतेभी माया मृगके पाछे धाये (अन्यथाबिदितात्मनः पूर्णकामस्य रामस्य) जो किशोरी जीकी प्रार्थना न होती तौ प्रसिद्ध परमात्मा पूरणकाम जो राम हैं तिनको १४ ॥

मृगेणवास्त्रियावापिकिंकार्यंपरमात्मनः ॥ कदाचिद्दृश्यतेऽभ्यासेक्षणंधावतिलीयते १५ दृश्यतेचततोदूरादेवंराममपाहरत् ॥ ततोरामोऽपिविज्ञायराक्षसोऽयमितिस्फुटम् १६ विव्याधशरमादायराक्षसंमृगरूपिणम् ॥ पपातरुधिराक्तास्योमारीचःपूर्वरूपधृक् १७ हाहतोऽस्मिमहाबाहोत्राहिलक्ष्मणमांद्रुतम् ॥ इत्युक्त्वारामव-

द्राचीपपातरुधिराशनः १८ यन्नामाज्ञोऽपिमरणेस्मृत्वातत्साम्यमाप्नुयात् ॥ किमुताग्रेहरिंपश्यन्तेनैवनिहतोऽसुरः १९ ॥

(मृगेणवास्त्रियावाअपिपरमात्मनःकिंकार्यं) भक्तन को सुखजीवन को उद्धार करना न होता तो मृगामारि वा पकरिके अथवा स्त्री को सुख साधन निश्चय करिकै इनवातों में परमात्माको क्या प्रयोजनरहै भावये कामके व्यापारहैं परंतु मृगद्वारा मारीचको उद्धार जानकी हरण द्वारापरिवार युतरावण को उद्धारि लोक मे सुरनरादि सबको सुख है (कदाचिदभ्यासेदृश्यतेधावतिक्षणंलीयते) कबहुं प्रभुके निकटै मृगदेखिपरता है पुनः भागतहीं क्षणमें लोप है जाता है १५ (चततोदूरात् दृश्यतेएवंराममअपाहरत्ततःरामःअपिअयंराक्षसःइतिस्फुटंविज्ञाय) पुनः अंतर्द्धानभये पीछे दूरिते देखि परताहै इसी प्रकार मृगारघुनंदन जो हैं तिनहि आपने पीछे लगाये दूरिनिकारि लै गया तब रघुनंदन भी विचारि लिये कि यह राक्षसहै ऐसा पुष्टजानि कै पकरने की आशा त्यागि दिये १६ (शरंआदायमृगरूपिणंराक्षसंविव्याधरुधिराक्तास्यःमारीचःपपातपूर्वरूपधृक्) बाणलै धनुषमें संधानि मृगरूपबना जो राक्षस है ताहि मारते भये रक्तबहिरहाहै मुखमें जाके सो मारीच भूमिपै गिरिपरा मृगरूप त्यागि पूर्ववत् रूपधरता भया १७ (महाबाहोहाहतोस्मिलक्ष्मणमांत्रातंत्राहिइतिरामवत्वाचाउक्त्वारुधिराशनःपपात) हे महाबाहु हायमै माराजाताहौं हे लक्ष्मण मेरी शीघ्रही रक्षा करौ इत्यादि रामके ऐसे वचनकहि रक्तवमतगिरिपरा १८ (अज्ञःअपियत्नाममरणेस्मृत्वातत्साम्यंआप्नुयात्हरिंअग्रेपश्यन्तेनएवानिहतःअसुरःकिंउत) शिवबोले हेगिरिजा अज्ञान पुरुषभी निश्चय करि जिनको नाममरण समय स्मरणकरै तौ प्रभुके समान रूपको प्राप्तहोय सोई हरि आगे खडे तिनहिं देखताहै अरु तिनहीं प्रभुने निश्चय करिमारा सो राक्षस प्रभुको प्राप्तभया इसमें क्या तर्क है १९ ॥

तद्देहादुत्थितंतेजःसर्वलोकस्यपश्यतः ॥ राममेवाविशद्देवाविस्मयंपरमंययुः २० किंकर्मकृत्वाकिंप्राप्तःपातकीमुनिहिंसकः ॥ अथवाराघवस्यायंमहिमानात्रसंशयः२१रामवाणेनसंविद्धःपूर्वंराममनुस्मरन् ॥ भयात्सर्वंपरित्यज्यगृहवित्तादिकंच यत् २२ हृदिरामसदाध्यात्वानिर्धूताशेषकल्मषः ॥ अंतेरामेणनिहतःपश्यन्राममवाप्तः २३ द्विजोवाराक्षसोवाऽपिपापीवाधर्मकोपिवा ॥ त्यजन्कलेवरंरामंस्मृत्वायातिपरंपदम् २४ ॥

(तत्देहात्तेजःउत्थितंसर्वलोकस्यपश्यत.रामंएवअविशत्देवापरमंविस्मयंययुः) उसमारीचकी देहते अग्नि ज्वाला इवतेज उठा सो सबलोकके देखतही रघुनंदनमें निश्चय करि प्रवेश भया सो कौतुक देखि देवता परम आश्चर्य को प्राप्तभये भावज्ञान भक्ति विना दुष्टको प्रभुसायुज्यमुक्तिये २० (मुनिहिंसकःपातकीकिंकर्मकृत्वाकिंप्राप्तःअथवा अयंराघवस्यमहिमाअत्रसंशयःन) देवता यह विस्मय कियेकि मुनिनको घातकरने वाला पापी मारीच कौन तौ कर्म करतारहा भाव नरक योग्य अरु किस गति को प्राप्त भया जो मुनिनको दुर्लभ इतिवेदरीति प्रति कूल आचरण होना आश्चर्य है अथवा यह रघुनंदन की महिमा है यामे संशय नहीं है २१ (पूर्वरामवाणेनसंविद्धःभयात्रामंअनुस्मरन्गृहवित्तादिकंचयत्सर्वंपरित्यज्य) पूर्व विश्वामित्र की यज्ञरक्षण में रघुनंदन के बाणकरिकै बेधा हुवा मारीच सिंधुपारजाय गिरा तेहिभय ते रघुनंदन जो हैं तिनहि स्मरण करता रहा भाव यहांभी आय

मोको बधकरैंगे इस डरते घर स्त्री वित्तादिजो कुछ रहा सो सब त्यागि दिया विराग मान भया २२ (हृदिसदा रामंध्यात्वाअशेषकल्मषःनिर्धूतःअंतेरामेणनिहतःरामंपश्यन्अवाप्तः) विरागयुतहृदय मे रघुनंदनजो हैं तिनहिं ध्यान करता रहाताके प्रभाव ते यावत् पाप रहे ते सम्पूर्ण नाश है गये पर अन्तसमय रामही करिकै मारागया रामही को देखतसंते प्राण त्यागि रामही को प्राप्त भया २३ (द्विजोवाअपिराक्षसःवापापीवाअपिधर्मकःवाकलेवरंत्यजन्रामंस्मृत्वापरंयाति) शिवजी कहत कि चहै ब्राह्मणहोइ अथवा निश्चय करि राक्षस होइ चहै पापीहोइ अथवा निश्चयकरि धर्मात्माहोइ जो देह त्यागतमें रामको स्मरण करी सोई परमपद को जाई इतिनिश्चय है २४ ॥

इतितेऽन्योन्यमाभाष्यततोदेवादिवंययुः २५ रामस्तच्चिंतयामासम्रियमाणोऽसु राधमः॥ हालक्ष्मणेतिमद्वाक्यमनुकुर्वन्ममारकिम् २६ श्रुत्वामद्वाक्यसदृशंवाक्यं सीताऽपिकिंभवेत्। इतिचिंतापरीतात्मारामोदूरान्न्यवर्तत् २७ सीतातद्भाषितंश्रु त्वामारीचस्यदुरात्मनः॥ भीताऽतिदुःखसंविग्नालक्ष्मणंत्विदमब्रवीत् २८ गच्छ लक्ष्मणवेगेनभ्रातातेऽसुरपीडितः ॥ हालक्ष्मणेऽतिवचनंभ्रातुस्तेनशृणोषिकि म् २९ तामाहलक्ष्मणोदेविरामवाक्यंनतद्भवेत् ॥ यःकश्चिद्राक्षसोदेविम्रियमाणो ऽब्रवीद्वचः ३० ॥

(इतिअन्योन्यं आभाष्य ततः ते देवादिवं ययुः) इसप्रकार परस्पर बार्ता करि तदनंतर ते सब देवता स्वर्गहि जाते भये २५ (रामः तत् चिन्तयामास असुरः अधमः म्रियमाणः हा लक्ष्मण इति मद्वाक्यं अनुकुर्वन् किं ममार) जब राक्षस हा लक्ष्मण कहि मरा तब रघुनन्दन तिसबात पर मन में चिंता करते भये कि राक्षस अधम मरत समय हा लक्ष्मण ऐसी मेरी वाक्य समान पुकार करि क्यों मरा २६ (मत्वाक्य शदृशं वाक्यं श्रुत्वा सीता अपि किं भवेत् इति चिंता परीतात्मा रामः दूरात् न्यवर्तत्) मेरीवाक्य सम राक्षस की वाक्य सुनि सीता निश्चय करि कौन दशाको प्राप्त भई होइगी इसी चिंता सो व्याकुल रघुनन्दन दूरिते लौटते भये २७ (दुरात्मनः मारीचस्य भाषितं तत्श्रुत्वा सीता भीता अतिदुःखसंविग्ना तुलक्ष्मणं इदं अब्रवीत् दुष्टात्मा मारीच को कहा हुवा आ-रत बचन सो सुनि सीता सभीत अत्यंत दुखित है पुनः लक्ष्मण प्रति ऐसा बचन बोलतीभई २८ (लक्ष्मण बेगेन गच्छते भ्राता असुरेण पीडितः हा लक्ष्मण इतिते भ्रातुः वचनं किम् न शृणोषि) जानकीजी बोलीं कि हेलक्ष्मण शीघ्रता करिकैजाउ क्योंकि तुम्हाराभाई असुरकरिकै पीडितहै भाव कठिन रण संकट में परे हैं जो हा लक्ष्मण ऐसा तुम्हारे भाई का वचन उच्चारण भया ताहि क्या तुम नहीं सुनते हो २९ (लक्ष्मणः तां आह देवितत् रामवाक्यं न भवेत् देवि यः कश्चित् राक्षसः म्रियमाणः वचः अब्रवीत् भाई को रण संकट है सहायता हेत तुम शीघ्रहीं जाउ इत्यादि वचन सुनि लक्ष्मण तिन सीता प्रति बोले हे देवि सो राम को बचन नहीं है फिरि किसको है हे देवि जो कोऊ राक्षस मरा है सोई ऐसे वचन बोला है ३० ॥

रामस्त्रैलोक्यमपियःक्रुद्धोनाशयतिक्षणात् ॥ सकथंदीनवचनंभाष्यतेऽमरपूजि तः ३१ क्रुद्धःलक्ष्मणमालोक्यसीताबाष्पविलोचना ॥ प्राहलक्ष्मणदुर्बुद्धेभ्रा तुर्व्यसनमिच्छसि ३२ प्रेषितोभरतेनैवरामनाशाभिकांक्षिणा॥ मान्नेतुमागतो-

सित्वंरामनाशउपस्थिते ३३नाप्राप्स्यसेत्वंमामद्यपश्यप्राणांस्त्यजाम्यहम्॥नजा
नातीदृशंरामोत्वांभार्याहरणोद्यतम् ३४ रामादन्यंनस्पृशामित्वांवाभरतमेववा ॥
इत्युक्त्वावध्यमानासास्ववाहुभ्यांरुरोदह ३५ तच्छ्रुत्वालक्ष्मणःकर्णौपिधायातीव
दुःखतः ॥ मामेवंभाषसेचंडिधिकृत्वांनाशमुपेष्यसि ३६ ॥

(यःरामःक्रुद्धः क्षणात् त्रैलोक्यंअपिनाशयति सअमरपूजितः कथंदीनवचनंभाषते) लक्ष्मण बोले कि जोरघुनन्दन क्रोधकरें तौ क्षणे मे तीनिहू लोक निश्चय करि नाश ह्वै जाय सोईप्रभु देवन करिकै पूज्य कैसे दीनवचन भाषि सक्ते हैं इस अनुमान ते रघुनन्दन को वचन नहीं है ३१ (लक्ष्मणं आलोक्यसीता वाष्पविलोचना क्रुद्धाप्राह दुर्बुद्धेलक्ष्मणभ्रातुः व्यसनंइच्छसि) लक्ष्मण जोहैं तिनहिं स्वइच्छा प्रतिकूल देखि सीता आंसु भरेनेत्र क्रोधकरि बोली हे दुर्बुद्धे लक्ष्मण तू अपने भाई के सुख भोग विलास प्राप्ती की इच्छा करता है ३२ (रामस्यनाशंअभिकांक्षिणा भरतेनएवप्रेपितःराम स्यनाशउपस्थिते मांनेतुंत्वंआगतःअसि) रघुनन्दन के नाश की इच्छा राखने वाले भरतने निश्चय करि तुमहि पठावा है सो राम को नाश प्राप्त भये संते मोहि आनिवे हेत तुम आये हौ ३३ (अद्य मांत्वंनप्राप्स्यसे पश्यअहंप्राणांस्त्यजामि भार्याहरणोद्यतम्ईदृश त्वांरामःन जानाति) अब मैं जो हों ताहि तू नहीं प्राप्त ह्वै सक्ता है देखु मैं अभी प्राण त्यागती हों अरु स्त्री हरणे में तत्पर रहे ऐसा तोहि रघुनन्दननहीं जानते हैं ३४ (रामात्अन्यंत्वांवाएवभरतं वानस्पृशामिइति उक्त्वास्ववाहुभ्यांवध्य मानासारुरोदह) राम की सेवाय और तुमहि वा निश्चय करि भरतहि किसी भांति मैंन अंग स्पर्श करोंगी ऐसा कहि बाहुन करि कै आपनी देह पीटती हुई सो सीतारोवने लगी ३५ (तत्श्रुत्वाअती वदुःखतः कर्णौपिधायलक्ष्मणः चंडित्वांधिक्मांएवंभाषसनाशंउपेष्यसि) जानकीजी के कठोर वचन सो सुनि अत्यंत दुःख ते कानों को मूंदि लक्ष्मण बोले हे चंडि तीक्ष्णदेवि तोहि धिक्कार है मो प्रति इस प्रकार अयोग्य वचन कहती जो सुनत पापरूप हैं ताते तू नाश दशा को प्राप्त होनहार है ३६ ॥

इत्युक्त्वावनदेवीभ्यःसमर्प्यजनकात्मजाम् ॥ ययौदुःखातिसंविग्नोराममेवशनैः
शनैः ३७ ततोंतरंसमालोक्यरावणोभिक्षुवेषधृक् ॥ सीतासमीपमगमत्स्फुरद्दंड
कमंडलुः ३८ सीतातमवलोक्याशुनत्वासंपूज्यभक्तितः ॥ कंदमूलफलादीनिद
त्वास्वागतमब्रवीत् ३९ मुनेभुंक्ष्वफलादीनिविश्रमस्वयथासुखम् ॥ इदानीमेवभ
र्तामेह्यागमिष्यतितेप्रियम्॥करिष्यतिविशेषेणतिष्ठत्वंयदिरोचते ४० भिक्षुरुवा
चकात्वंकमलपत्राक्षिकोवाभर्तातवानघे ॥ किमर्थमत्रतेवासोवनेराक्षससेविते ॥
ब्रूहिभद्रेततःसर्वंस्ववृत्तांतंनिवेदय ४१ ॥

(इतिउक्त्वाजनकात्मजां वनदेवीभ्यःसमर्प्यअतिदुःखेन संविग्नःशनैःशनैः रामंएवययौ)ऐसाकहि लक्ष्मण जनकनंदिनी जोहैं तिनहिं वन देविनके अर्थ समर्प्य सौंपि अत्यंत दुःख करिकै व्यकुल धीरा धीरा रघुनन्दन के पास निश्चय करि जाते भये ३७ (ततःरावणःअंतरं संआलोक्य भिक्षुवेष धृक् दण्डकमंडलुः स्फुरत्सीतासमीपंअगमत्) तदनंतर रावण शून्य वीचि देखि रावण संन्यासी वेष धरि प्रकाशमान है दण्ड कमण्डलु जाके सो सीता के समीपहि आवता भया ३८ (तंअवलो क्यसीता आशुनत्वाभक्तितः संपूज्यस्वागतंअब्रवीत् कंदमूलफलादीनिदत्त्वा) अभ्यागत आया ताहि

देखि सीता शीघ्रही प्रणामकरि भक्ति ते पूज्य स्वागत पूछि कंदमूल फलादि भोजन हेत देतीभई ३९ (मुनेफलादीनिभुंक्ष्वयथासुखंविश्रमस्व मेभर्ताएवइदानींहि आगमिष्यति विशेषणतोप्रियम्करिष्यतियदिरोचतेत्वंतिष्ठ) हेमुने फलादि भोजन करौ जो इच्छाहोइतौ सुखपूर्वक विश्रामकरौ मेरेपति निश्चय करि इसी समय अवश्यही आवैंगे सो विशेषि करि कै तुम्हारा प्रिय करेंगे जो उन के समागम की रुचि होय तौ तुम बैठौ ४० (कमलपत्राक्षित्वंकातवभर्ताकः वांअनघेराक्षससेवितेवनेअत्रार्किंअर्थंतेवासः भद्रेब्रूहिततः स्ववृत्तांतंसर्वंनिवेदये) सन्यासी बोला कि हे कमल दलवत् नयने तुमकोहौ अरु तुम्हारा पति को है पाप रहित इति हे अनघे राक्षस भरे हुये बन में इहां किस कार्य हेत तुम्हारा वासहै हेभद्रे कल्याण स्वरूपे आपनाहाल कहौ सो सुनि तदनंतर हम अपना जो वृत्तांत अर्थात् नाम जाति गुण विभव आवने कारण इत्यादि सब आपके अर्थ निवेदन करिहौं भावप्रसिद्ध कहि सुनाइ हौं ४१ ॥

सीतोवाच॥अयोध्याधिपतिःश्रीमान्राजादशरथोमहान् ॥ तस्यज्येष्ठःसुतोरामः सर्वलक्षणलक्षितः ४२ तस्याहंधर्मतःपत्नीसीताजनकनंदिनी ॥ तस्यभ्राताकनीयांश्चलक्ष्मणोभ्रातृवत्सलः ४३ पितुराज्ञांपुरस्कृत्यदण्डकेवस्तुमागतः ॥ चतुर्दशसमास्त्वांतुज्ञातुमिच्छामिमेवद ४४ भिक्षुरुवाच॥ पौलस्त्यतनयोऽहंतुरावणोराक्षसाधिपः ॥ त्वत्कामपरितप्तोहंत्वांनेतुंपुरमागतः ४५ ॥ मुनिवेषेणरामेण किंकरिष्यसिमांभज ॥ भुंक्ष्वभोगान्मयासार्द्धंत्यजदुःखंवनोद्भवम् ४६ श्रुत्वातद्वचनंसीताभीताकिंचिदुवाचतम् ॥ यद्येवंभाषसेमांत्वनाशमेष्यसिराघवात् ४७ ॥

(अयोध्यायांआधिपतिःश्रीमान्महान् राजादशरथःतस्यज्येष्ठःसुतः सर्वलक्षणलक्षितःरामः) जानकीजी बोली कि अयोध्यापुरी के पति ऐश्वर्यमान महान् पुरुष जो राजा दशरथ तिन के जेठे पुत्र जो रूप शील तेज वीर्य बल सुभाव उदार इत्यादि शुभ लक्षण युक्त जो श्रीराम है ४२ (तस्यधर्मतः पत्नीअहंसीता जनकनंदिनीतस्यकनीयांश्चभ्राताभ्रातृवत्सलःलक्ष्मणः) तिनकी धर्म पत्नी मैं हौं सीता नाम जनक की पुत्री हौं तिन रघुनन्दन के छोटे भाई जो बड़े भाई को परम प्रिय तिन को लक्ष्मण नामहै ४३ (पितुःआज्ञांपुरस्कृत्यचतुर्दशसमाः दण्डकेवस्तुंआगतः तुत्वांज्ञातुंइच्छामिवद) सबंधुभार्या रघुनन्दन पिता की आज्ञा मानि चौदह वर्ष दण्डक वन में वास करने हेत आयेहैं पुनः हे मुने तुमहि जाना चाहौं को हौ सो मो प्राति कहिये ४४ (पौलस्त्यतनयःराक्षसानां अधिपःतुअहं रावणः त्वत्कामपरितप्तः त्वांपुरंनेतुअहंआगतः) पुलस्तिको पुत्र बिश्वेश्रवः ताको पुत्र राक्षसों को राजा पुनः मै रावण हौं तुम्हारे हेत कामाग्नि करि परितप्त हौं तुमहि आप ने पुर लंकहि लै जाने हेत मैं आया हौं ४५ (मांभजमुनिवेषेण रामेणकिंकरिष्यसिवनोद्भवंदुःखं त्यजमयासार्द्धंभोगानभुंक्ष्व) तेरे हेत आया हौं ताते हे राज कुमारि मोहि मैं प्रीति करु जो लोकोत्तर राजा हौं अरु मुनि वेष धारी राम करि कै क्या करै गी यहां साक पात खाना घासपर सोना शीत बात आतप कंटकाकर सहना राक्षस व्याघ्रादि की भय इत्यादि बन ते उत्पन्न दुःख ताहि त्यागि मेरे साथ भूषण बसन भोजन पान गंध बिचित्र मंदिर शय्यादि भोग पदार्थ तिनहि भोगौ ४६ (तत्वचनंश्रुत्वासीताकिंचित्भीतातम्उवाच यदिमांएवंभाषसे त्वंराघवात्नाशंएष्यसि) रावण भाषित सो वचन ताहि

सुनि सीता कछु डर सहित ता प्रति बोलती भई कि जो मो प्रति इस प्रकार वार्ता करताहैतौतू रघुनन्दन ते आपनी नाश चाहता हे ४७॥

आगमिष्यतिरामोऽपिक्षणंतिष्ठसहानुजः ॥ मांकोधर्षयितुंशक्तोहरेर्भार्यांशशोयथा ४८ रामबाणैर्विभिन्नस्त्वंपतिष्यासिमहीतले॥ इतिसीतावचःश्रुत्वारावणःक्रोधमूर्च्छितः ४९ स्वरूपंदर्शयामासमहापर्वतसन्निभम् ॥ दशास्यंविंशतिभुजंकालमेघसमद्युतिम् ५० तद्दृष्ट्वावनदेव्यश्चभूतानिचवितत्रसुः ॥ ततोविदार्यधरणींनखैरुद्धृत्यबाहुभि. ५१ तोलयित्वारथेक्षिप्त्वाययौक्षिप्रंविहायसा ॥ हाराम हालक्ष्मणेतिरुदंतीजनकात्मजा ५२ भयोद्विग्नमनादीनापश्यंतीभुवमेवसा ॥ श्रुत्वातत्क्रंदितंदीनंसीतायाःपक्षिसत्तमः ५३ ॥

(क्षणंतिष्ठसहअनुजःरामःअपिआगमिष्यतिमांधर्षयितुंकःशक्तःयथाहरेःभार्यांशशः) क्षणमात्रठाढ रहु छोटे भाई सहित रघुनाथजी निश्चय करि आते हैं तिनके आगे मोहि हरिले जानेमें कोसमर्थ है जैसे सिंहकी स्त्री को हरिलेने को शशाचौगड़ाक्या है ४८ (त्वंरामस्यबाणैः विभिन्नः महीतलेपतिष्यसिइतिसीतावचःश्रुत्वाक्रोधमूर्च्छितःरावणः) तू रघुनंदन के बाणों करिकै विभिन्न भाव शिरकर पदादि खंडित ह्वै भूमिपै गिरिहै इत्यादि सीता के अनादर वचन सुनि क्रोधभरारावण ४९ (महापर्वतसन्निभंस्वरूपंदर्शयामासकालमेघसमद्युतिम्दशआस्यंविंशतिभुजं) भारी पर्वताकारस्वरूपदेखावता भया जो काले मेघसमतन की द्युति दशमुख बीसभुजाहैं ऐसा भयकारी है ५० (तत् दृष्ट्वावनस्यदेव्यःचभूतानिचवितत्रसुःततोनखैःधरणींविदार्यबाहुभिःउद्धृत्य) तिसरावणको स्वरूप देखिवनकी देवीपुन. चराचर भूतमात्र सब विशेषि करिकै डरिगये भाव रक्षाकोन करै अरुभूमिकी पुत्रीहैं माता की चलत पुत्री को कैसे कोऊहरि सका है इति भूमिसीता को गहिलेइगी तब मेरी उठाई न उठैं गी इसविचार ते रावण अपने नखोंकरिकै आसन के नीचेकी भूमि फारि विवर करि तिसमें डारि बाहुन करिकै सीता को उठाइ लिया ५१ (तोलयित्वारथेक्षिप्त्वाविहायसाक्षिप्रंययौ हारामहालक्ष्मणइतिजनकात्मजारुदन्ती) सीता तनको भार बाहुनपर तौलिभाव मैं उठायले जायसका हों इति विचारि रथमें डारि आकाश मार्गकरिकै वेगताते चलताभया तबहाराम हालक्ष्मण इत्यादि जानकी रोदनकरती भई ५२ (भयउद्विग्नदीनामनासाभुवंएवपश्यंती सीतायाःदीनंक्रंदितंतत्श्रुत्वापक्षिसत्तमः) परवश भयकरिकै व्यकल दुखित है मनजिनको सोसीताभूमिपै निश्चय करिदेखती हैं भाव प्रभु आवते हैं तब सीता को दीनरोदनजो है ताहि सुनिकै पक्षिन में उत्तम जो गीध राज है ५३॥

जटायुरुत्थितःशीघ्रंनगाग्रात्तीक्ष्णतुण्डकः ॥ तिष्ठतिष्ठेतितंप्राहकोगच्छतिममाग्रतः ५४ मुषित्वालोकनाथस्यभार्यांशून्याद्वनालयात् ॥ शुनकोमन्त्रपूतंत्वंपुरोडाशइवाध्वरे ५५ इत्युक्त्वातीक्ष्णतुण्डेनचूर्णयामासतद्रथम् ॥ बाहान्विभेदपादाभ्यांचूर्णयामासतद्धनुः ५६ ततःसीतांपरित्यज्यरावणःखड्गमाददे ॥ चिच्छेदपक्षौसामर्षःपक्षिराजस्यधीमतः ५७ पपातकिंचिच्छेषेणप्राणेनभुविपक्षिराट् ॥

पुनरन्यरथेनाशुसीतामादायरावणः ५८ क्रोशंतीरामरामेतित्रातारंनाधिगच्छ तीाहारामहाजगन्नाथमांनपश्यसिदुःखिताम् ५९ ॥

(तीक्ष्णतुण्डकःजटायुःनगाग्रात्शीघ्रंउत्थितः तिष्ठतिष्ठममअग्रतःकःगच्छतितंइतिप्राह) अत्यंत पैनी है चोंच जाकी सो जटायुःवृक्षपरते शीघ्रहीउठा पुकारा कि खड़ाहो२ मेरे आगेते ऐसी अनीति करितू कौनहै निर्भय चलाजाताहै इत्यादि त्यहि रावण प्रति कहे ५४ (मंत्रपूतंपुरोडाशंअध्वरेश्व नकःइवत्वंशून्यात्वनालयात्लोकनाथस्यभार्यांमुषित्वा) मंत्रोंकरिकै पवित्र यज्ञको भागताहि यज्ञते जैसे कुत्ताले भागै तैसेहीं तू शूने बनके आश्रम ते लोकनाथ रघुनन्दनकी जो धर्मपत्नी है ताहिहर लिहे जाताहै भावमोसों न जाने पावैगा ५५ (इति उक्त्वातीक्ष्णतुंडेनतत्रथं चूर्णयामासपादाभ्यां वाहान्विभेदतत्धनुःचूर्णयामास) ऐसाकहि जटायु पैनी चोंचकरिकै ताकोरथतोरि दोऊपायनकरि कै घोड़े मारि डारे अरुरावणको धनुपतोरिडारे ५६ (ततःरावणःसीतां परित्यज्यखड्गंआद दे धीमतःसामर्षःपक्षिराजस्यपक्षौचिच्छेद) तदनंतर रावणसीतहि त्यागि तरवारिलैकै बुद्धिमान्भाव पक्षीपक्षन सो बली है ये नरहैं तब कछु न करिसकैगो इति विचारिसक्रोधित रावणने पक्षिराज जटायुके पक्ष काटि डारिस ५७ (प्राणेनकिंचित्शेषेणपक्षिराट्भुविपपातरावणःपुनःआशुअन्यरथेन सीतांआदाय) मृतक तुल्यहोगया परंतु प्रभु सों हालकहबे हेत प्राणकछुवाकी राखिकरि पक्षिन को राजाजटायु भूमिपै गिरिपरा तब रावणपुनः शीघ्रहीं औररथकरि सीताको लेकै चला ५८ (रामराम इतिक्रोशंतीत्रातारंनअधिगच्छतीहाजगन्नाथहाराम दुःखितामुमांनपश्यसि) रामरामऐसा पुकारत सीतारोदन करती हैं रक्षाकरने वाले कोनहीं पावती हैं तबकहतहा जगत् के नाथहा रघुनंदन दुखित जो मैं ताहि नहीं देखतेहो ५९ ॥

राक्षसानीयमानांस्वांभार्यांमोचयराघव॥ हालक्ष्मणमहाभागत्राहिमामपराधिनी म् ६० वाक्शरेणहतस्त्वंमेक्षन्तुमर्हसिदेवर ॥ इत्येवंक्रोशमानांतांरामागमनशं कया६१जगामवायुवेगेनसीतामादायसत्वरः ॥ विहायसानीयमानासीतापश्यद धोमुखी६२पर्वताग्रस्थितान्पंचवानरान्वारिजानना॥उत्तरीयार्द्धखण्डेनाविमुच्या भरणादिकम् ६३ बध्वाचिक्षेपरामायकथयंत्वितिपर्वते ॥ ततःसमुद्रमुल्लंघ्यलं कांगत्वासरावणः ६४ ॥

(राघवराक्षसेन आनीयमानां स्वांभार्यांमोचय हालक्ष्मण महाभाग अपराधिनीम् मां त्राहि) हे राघव राक्षस करिकै हरीगई परवश ताको प्राप्त अपनी भार्या ताहि छुड़ाइये हालक्ष्मण महाभाग तुम शुद्ध सेवक तिनहिं अनादर इति अपराध को करने वाली जोमैं हौं ताहि रक्षाकरौ ६० (देवर वाक्शरेणहतः त्वंमेक्षंतुंअर्हसि इतिएवंतांक्रोशमानां रामस्यआगमनशंकया) जानकी कहत हे देवर लक्ष्मण मैं तुम्हें बचन रूपबाण करिकै माराहै सो मेरा अपराध तुम क्षमा करिबे योग्यहौ इत्यादि निश्चय करि सीता जो है ताहि विलाप करते देखि ताके द्वारा रघुनन्दन के आवने की शंकाकरिकै रावण६१(सीतां आदाय वायुवेगेन सत्वरः जगामविहायसानीयमानासीताअधोमुखीअपश्यत्) सीता जो हैं तिनहिं लैकै रथको पवन समवेग करिकै शीघ्र चलाजात आकाशमार्ग करिकै ताहि रथमें जो हरी जाती हुई सीता सो तरेको मुखकिहे देखती भई ६२(पर्वतस्यअग्रे पचंवानरान् स्थितान् वारि

जानना आभरणादिकं विमुच्य) कथा देखती भई कि पर्वतके शिखरपर पाँचवानर बैठे हैं तिनहिं राम रामस शोक उच्चारण करते देखि रामसनेही जानि कमल समसुखहै जाको सो जानकी जी अपने भूषणादिक जो पहिरे रही तिनहिं अंगनते छोरि अरु ओढ़नेको जो वस्त्ररहा तामेंते एक टुकरा फारि त्यहि करिके भूषण जो हैं तिनहिं ६३ (बध्वारामायकथयंतु इतिपर्वते चिक्षेपततः सरावणः समुद्रं उल्लंघ्यलंकांगत्वा) बांधतीभई जामें जवरघुनन्दनयहांआवें तिनकेअर्थ वानरमेराहालकहें इतिबिचारि वह गठरी पर्वतपर डारिदियें तदनंतर रावण समुद्रनांघि लंकहि गया ६४ ॥

स्वांत.पुरेरहस्येतामशोकविपिनेऽत्यपत ॥ राक्षसीभिःपरिवृतांमातृबुद्ध्याऽनुपालयत ६५. कृशाऽतिदीनापरिकर्मवर्जितादुःखेनशुष्यद्वदनाऽतिविह्वला ॥ हाराम रामेतिविलप्यमानासीतास्थिताराक्षसवृंदमध्ये ६६ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसम्वादेआरण्यकांडेसप्तमःसर्गः ७ ॥

(स्वअंतःपुरं अशोकविपिनं रहस्येराक्षसीभिः परिवृतांतां अत्यपत् मातृबुद्ध्या अनुपालयत) लंकामें अपने मंदिर में जो अशोक वाटिकाहै तामें एकांतस्थानमें समूह राक्षसीघेरे हैं तहां सीता जो हैं तिनहिं गुप्तवास देताभया अरुमातु बुद्धिकरि रावण सेवताहै तामें हेतु जोदेह बुद्धिते विवेक रहित तमोगुणी राक्षसहै तामेंयहकारणहै कि एक समयमें दिग्विजय समय कहूँरावण मुक़ाम किहे रहे चांदनी रातिमें उर्वशी अप्सरा शृंगार किहे कुवेरके पुत्र जोनलकूवर तिनके पासकोजातीरहै तिस को रावण पकरि लिया तब अप्सरा बोली कि नलकूवर तुम्हारेभतीजे हैं तिनके हेतु मेराशृंगारहै ताते आजमें तुम्हारी पुत्रवधू हों मोको छांड़िदेउ सो न माना वाकेसंग वरवस भोग किया सो हाल मुनि नलकूवर शाप दिया कि आजुते जो किसी स्त्री को बरबस भोग करी तो रावण के शीशकेसौ खंड ह्वै जाँयगे एकतो यह भयहै दूसरे पूर्व को भगवत् को पार्षदहै हरिइच्छाते राक्षस भया विरोध भावते उद्धार भया चाहत ताते माता भावते सेवत ६५. (परिकर्मवर्जिता अतिदीनाकृशादुःखेन शुष्यत् वदनाअतिविह्वला हारामरामइति विलप्यमाना सीता राक्षसवृंदमध्येस्थिता) अभ्यंग मज्जन केशसवाँरनादि शृंगार के संस्कार रहित दीनमन शरीर दुर्बल दुःख करिके सूखिरहाहै मुख अत्यंत विह्वल भावसर्वांग शिथिलहारामराम इत्यादि पुकारि रोदनकरतीहुई सीताराक्षसीवृंदमें स्थितहै६६॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतबैजनाथविरचितेअध्यात्मभूषणेआरण्य कांडेसीताहरणवर्णनंनामसप्तमःप्रकाशः ७ ॥

रामोमायाविनंहत्वाराक्षसंकामरूपिणम् ॥प्रतस्थेस्वाश्रमंगंतुंततोदूराद्ददर्शतम् १ आयांतंलक्ष्मणंदीनंमुखेनपरिशुष्यता॥राघवश्चिंतयामासस्वात्मन्येवमहामतिः २ लक्ष्मणस्तन्नजानातिमायासीतांमयाकृताम्॥ज्ञात्वाप्येनंवंचयित्वाशोचामिप्राकृतो यथा ३ यद्यहंविरतोभूत्वातूष्णींस्थास्यामिमंदिरे ॥ तदाराक्षसकोटीनांवधोपायःकथंभवेत् ४ यदिशोचामितांदुःखसंतप्तःकामुकोयथा ॥ तदाक्रमेणानुचिन्वन्सीतां यास्येऽसुरालयम ५ ॥

सवैया ॥ लखिआश्रम शोचत जातलखे रथबाण शरासन टूटिपरे । खगघायल सो सब हालकहे ताजिदेह सुचौभुजरूपधरे ॥ बिनती करि बंदि बिमानचढे प्रभुप्रेरितगो हरिधाम परे । पठबदत बैज सुनाथ सदा करुणानिधि सानुज रामहरे ॥ (सार्यांविनंकामरूपिणम् राक्षसंहत्वारामः स्वआश्रमं गंतुंप्रतस्थे ततोमुखेन परिशुष्यता दीनंलक्ष्मणं आयांतंतम् दूरातुददर्श) मायामेंप्रवीण इच्छापूर्वक रूप धरनेवाला राक्षस जो मारीच ताहिमारि रघुनन्दन अपने आश्रमहिं आवतेहैं ता समय मुख सूखिगयाहै जिनको ऐसे दीन दुःखभरे लक्ष्मण आवतेहैं तिनहिं दूरिहीते देखते भये १ (महामतिः राघवःस्वआत्मनिएवचिंतयामास)महाबुद्धि वाले रघुनन्दन लक्ष्मणको देखतही अपने उरमें निश्चय करि चिंताकरते भये २ (मयामायासीताकृताम् तत्लक्ष्मणः नजानाति ज्ञात्वापिएनंवंच यित्वायथा प्राकृतःशोचामि)मैंनेमाया करिकै सीता बनाय आश्रममें राखा मुख्य सीताअग्निमेंहै सोहाल लक्ष्मण नहीं जानतेहैं ताते जानिकैभी इन लक्ष्मण को ठगनेहेत जैसेप्राकृत विषयी मनुष्य ताही भांतिशोच करिहौं ३ (यदिअहंविरतःभूत्वा तूष्णींमंदिरेस्थास्यामि तदाकोटीनां राक्षसानां वधस्यउपायः कथंभवेत्) जो मैं शांतचित्तह्वै चुपह्वै मंदिरमें बैठरहौं तौ करोरिन राक्षसोंको मारनेकी उपाय कैसे होइगी भाव अन्यउपायतेनमारते बनी४(यदितांदुःखसंतप्तःयथाकामुकःशोचामि तदासीतां अनुचिन्वन्क्रमेण असुरालयम्यास्ये)जो ता सीताके वियोग दुःखमें सतप्तह्वै जैसे कामीपुरुष तैसेशोच करिहौं तौ सीता जो हैं तिनहिं ढूंढतसंते क्रमक्रम धीराधीरा राक्षसोंको घर जो लंकाहै तहांको चलाजाउँगो ५ ॥

रावणंसकुलंहत्वासीतामग्नौस्थितांपुनः ॥ मयैवस्थापितांनीत्वायाताऽयोध्यामतंद्रितः ६ अहंमनुष्यभावेनजातोऽस्मिब्रह्मणाऽर्थितः ॥ मनुष्यभावमापन्नःकिंचित्कालंवसामिकौ ७ततोमायामनुष्यस्यचरितंमेनुशृण्वताम् ॥ मुक्तिःस्यादप्रयासेन भक्तिमार्गानुवर्तिनाम् ८निश्चित्यैवंतदादृष्ट्वालक्ष्मणंवाक्यमब्रवीत् ॥ किमर्थमागतोऽसित्वंसीतांत्यक्त्वाममप्रियाम् ९ नीतावाभक्षितावाऽपिराक्षसैर्जनकात्मजा ॥ लक्ष्मणःप्रांजलिःप्राहसीतायाद्दुर्वचोरुदन् १० हालक्ष्मणेतिवचनंराक्षसोक्तंश्रुतंतया । त्वद्वाक्यसदृशंश्रुत्वामांगच्छेतित्वराब्रवीत् ११ ॥

(सकुलंरावणंहत्वामया एवंस्थापितां अग्नौस्थितां सीतांपुनः नीत्वाअतंद्रितः अयोध्यांयाता) लंकामें सहित कुल रावण को मारि पुनः जो हमने निश्चयकरि स्थापित कियाहै अग्निबिषे स्थित जो सीताहैं तिनहिं प्रसिद्धकरि पुनः साथलै निरालस्य अयोध्या जो है तहांको जैहौं ६ (ब्रह्मणा अर्थितःअहंमनुष्यभावेनजातः अस्मिमनुष्य भावंआपन्नः किंचित्कालं कौवसामि) ब्रह्माकरिकै प्रार्थना कियागया मैं मनुष्य भावकरिकै उत्पन्न भयाहौं सो मनुष्यही भावि को प्राप्त ह्वै कुछकाल पृथ्वी में वास करिहौं ७ (ततोमायामनुष्यस्यमे अनुचरितंशृण्वताम् भक्तिमार्गानुवर्तिनाम् अप्रयासेन मुक्तिः स्यात्) तदनंतर माया मनुष्य रूपको मेरा कियाहुआ जो चरितहै ताहि सुनिकै भक्ति पथमें चलने वाले जन बिना परिश्रम करिकै मुक्ति होइगी ८ (एवंनिश्चित्य तदालक्ष्मणंदृष्ट्वा वाक्यंअब्रवीत् मम प्रियाम् सीतांत्यक्त्वा किंअर्थंआगतःअसि) इसप्रकार निश्चय करि रघुनन्दन लक्ष्मण जो हैं तिनहिं आवत देखि बचन बोले हेलक्ष्मण हमारी प्राणप्रिया जो सीताहैं तिनहिं त्यागि किस हेत इहां आये हौ ९ (जनकात्मजा अपिराक्षसैःभक्षिता वानीता वा प्रांजलिःलक्ष्मणः रुदन् सीतायाद्दुर्वचःप्राह) जनकनंदिनी को निश्चय करि राक्षसों ने खायलिया अथवा हरिलिया इति सुनि हाथजोरिलक्ष्मण

रोवतसंते सीताके कहेहुये दुर्वचन को कहने लगे १० (हालक्ष्मणइतिराक्षसस्यउक्तंवचनंश्रुतं तथा स्वहाक्यसदृशं श्रुत्वात्वरागच्छ इतिमांअब्रवीत्) हालक्ष्मण इत्यादि राक्षस को कहा बचन सुनिपरा तिहि करिकै आपके वचन समसुनि मानिसडर बोली कि रघुनन्दन को संकटहै तुम शीघ्रजाउ इति मोप्रति कहतीभई ११ ॥

रुदंतीसामयाप्रोक्तादेविराक्षसभाषितम् ॥ नेदंरामस्यवचनंस्वस्थाभवशुचिस्मि ते १२ इत्येवंशांत्वितासाध्वीमयाप्रोवाचमांपुनः ॥ यद्दुक्तंदुर्वचोरामनवाच्यंपुर तस्तव १३ कर्णौपिधायनिर्गत्यजातोऽहंत्वांसमीक्षितुम् ॥ रामस्तुलक्ष्मणंप्राहतथा प्यनुचितंकृतम् १४ त्वयास्त्रीभाषितंसत्यंकृत्वात्यक्त्वाशुभाननाम् ॥ नीतावाभक्षि तावाऽपिराक्षसैर्नात्रसंशयः १५ इतिचिंतापरोरामःस्वाश्रमंत्वरितोययौ ॥ तत्रादृष्ट्वा जनकजांविललापातिदुःखितः १६ हाप्रियेक्कगताऽसित्वंनासिपूर्ववदाश्रमे ॥ अथवामद्विमोहार्थंलीलयाक्कविलीयसे १७ ॥

(सारुदंतीमयाप्रोक्तादेविराक्षसभाषितम्इदंरामस्यवचनंनशुचिस्मितेस्वस्थाभव) सो सीतारोदन करनेलगी तबमैंने कहा किहे देवि यहकिसी राक्षसको कहा बचन है यहरघुनंदन को वचन नहीं है पावनहै मुसकानि जाकी इति हे शुचिस्मिते चित्तको सावधानराखौ १२ (इतिएवंमयासाध्वीशांत्वि तापुनःमांप्रोवाचयत्दुर्वचःउक्तंरामतवपुरतःनवाच्यं) इसप्रकार मैंने पतिव्रता महारानी को समु झावातब पुनः मो प्रति बोली तामें जो दुर्वचन कहिनिहै हे रघुनाथजी सो आपकेआगे कहिबे योग्य नहीं है १३ (कर्णौपिधायअहंनिर्गत्यत्वांसमीक्षितुं यातःतुरामःलक्ष्मणंप्राहतथापिअनुचितंकृतम्) महारानी के अयोग्य वचन सुनिकानों को मूंदि आश्रमसोंनिकरि आपके दर्शन करने को भाव कहां किसव्यापारमें हैं सो देखने हेत इहां प्राप्त भयाहौं पुनः रघुनंदन लक्ष्मण प्रतिबोले जो कुवचन सुनि चले आये तौभी अनुचित किया १४ (स्त्रीभाषितंसत्यंकृत्वात्वयाशुभाननाम्त्यक्त्वाराक्षसैः भक्षितावाअपिनीतावाअत्रसंशयःन)स्त्री को कहा सत्यकिया तुमने मंगल मुखी जो सीता ताहि अकेले त्यागि चले आयेतौ वाको राक्षसों ने खायलिया अथवा निश्चय करि हरीलिया यामें संशय नहीं है १५ (इतिचिंतापरःरामःत्वरितःस्वआश्रमंययौतत्रजनकजांअदृष्ट्वाअतिदुःखितःविललाप) इत्यादि चितायुतरघुनंदन तुरतही अपने आश्रमहि जातेभये तहां जानकी को न देखेतबअत्यंत दुखित ह्वै विलापरोदन करने लगे १६ (पूर्ववत्आश्रमेनअसिहाप्रियेत्वंक्कगतासिअथवामत् विमोहि नार्थंलीलयाक्कविलीयसे)आश्रममें सीता न देखिरघुनंदन विलापयुतबोले कि प्रथम की नाईं आ श्रममें नहीं हो तौ हे प्रिये कहांगइउ अथवा मोको विशेषि मोहित करने हेत लीला करिकै कहीं छपितौ नहीं रही तौ प्रकटहोउ १७ ॥

इत्याचिन्वन्वनंसर्वंनापश्यज्जानकींतदा ॥ वनदेव्यःकुतःसीतांब्रुवन्तुममवल्लभा म् १८ मृगाश्चपक्षिणोवृक्षादर्शयंतुममप्रियाम् ॥ इत्येवंविलपन्नेवरामःसीतांनकु त्रचित् १९ सर्वज्ञःसर्वथाक्कापिनापश्यद्रघुनंदनः ॥ आनंदोऽप्यन्वशोचत्तामच लोऽप्यनुधावति २० निर्ममोनिरहंकारोऽप्यखंडानन्दरूपवान् ॥ ममजायेतिसीते

तिविललापातिदुःखितः २१ एवंमायामनुचरन्नसक्तोऽपिरघूत्तमः ॥ आसक्तइव मूढानांभातितत्त्वविदान्नहि २२एवंविचिन्वन्सकलंवनंरामःसलक्ष्मणः।भग्नंरथंछ त्रचापंकूवरंपतितंभुवि २३ ॥

(इतिसर्वंवनंअचिन्वन्जानकींनअपश्यत्ततदावनदेव्यःममवल्लभाम्सीतांकुतःब्रुवन्तु) इसप्रकार सबबन जो हैं ताहि ढूंढति में जानकी जो हैं तिनहिं न देखे तब वन देविनते पूछनेलगे हेवनदेवियो हमारीप्राणप्रियासीताकहाँहै बतावो १८ (मृगाःचपक्षिणावृक्षाःममप्रियाम्दर्शयंतुइतिएवंरामः विलप नएवकुत्रचित्सीतान).हे मृगोपुनः हे पक्षियो हे वृक्षों हमारी प्रिया जो है ताहिदेखावो इसप्रकार रघुनंदन विलापकरतेफिरते हैं निश्चयकरिकहौ सीता नहीं देखिपरती है १६ (रघुनंदनःसर्वज्ञःसर्वं थाक्वापिनअपश्यत्आनंदःअपितांअन्वशोचत्अचलःअपिअनुधावति) अबमाधुर्यमेंऐश्वर्य देखात कि रघुनंदन सर्वज्ञ सर्ववस्तुके जानने वाले सर्वथा सबदेश सबकाल में सबको देखने वाले सोई माधुर्य लीलाहेत सीता को कहू नहीं देखते हैं आनंदरूप निश्चयकरि सो सीता जो हैं तिनहिं अप्राप्तीको शोचकरते हैं अचलहैं निश्चय करि सोऊ ढूंढतमें धावते फिरते हैं २० (निर्ममःनिःअहंकारःअपिअखं डआनंदरूपवान्ममजायाइतिसीताइतिअतिदुःखितःविललाप)नहींहैममता किसीकीन अहंकारहै कि सीवात को निश्चय अखंड आनंदरूपवंत सोऊ माधुर्य में विषयीसम है मेरी स्त्री इत्यादि हे सीता इत्यादि पुकारत अत्यंत दुःखितरोदन करते हैं २१ (एवंमायांअनुचरन्अपिअसक्तःनरघूत्तमःमूढानां आसक्तःइवभातितत्त्वविदांनहि) इसीभांति मायामनुष्योंके आचरण करते हैं अरुनिश्चय करि माया में आसक्त नहीं हैं रघुनाथ जी सो अज्ञानिनको विषयासक्त मनुष्यों कीनाई स्त्रीमें आसक्तदेखिपरते हैं परन्तु तत्त्ववेत्तनको नहीं भावज्ञानी नहीं भूलते हैं २२ (एवंसलक्ष्मणःरामःसकलंवनंविचिन्वन् छत्रचापंकूवरंभग्नंरथंभुविपतितं) इसी प्रकारसहित लक्ष्मण रघुनंदन सबै वनढूंढते हुये तहाँ गये जहाँछत्रधनुष युवा टूटा हुआ रथ भूमिमें पराहै भाव जहाँ रावण जटायुतेयुद्धभईरहै २३ ॥

दृष्ट्वालक्ष्मणमाहेदंपश्यलक्ष्मणकेनचित् ॥ नीयमानांजनकजांतांजित्वाऽन्योजहा रताम्२४ ततःकिंचिद्भुवोभागंगत्वापर्वतसन्निभम् ॥ रुधिराक्तवपुर्दृष्ट्वारामोवाक्य मथाब्रवीत् २५ एषवैभक्षयित्वातांजानकींशुभदर्शनाम् ॥ शेतेविविक्तेऽतितृप्तः पश्यहन्मिनिशाचरम् २६ चापमानयशीघ्रंमेबाणंचरघुनन्दन ॥ तच्छ्रुत्वा रामवचनंजटायुःप्राहभीतवत् २७ मांनमारयभद्रंतेम्रियमाणंस्वकर्मणा ॥ अहं जटायुस्तेभार्याहारिणंसमनुद्रुतः २८ रावणंतत्रयुद्धमेवभूवारिविमर्दन ॥ तस्यवा हान्रथंचापंछित्वाऽहंतेनघातितः २९ ॥

(दृष्ट्वालक्ष्मणंइदंआह लक्ष्मणपश्य केनचित्जनकजांनीयमानांतंजित्वा अन्यःतांजहार) धनुष रथादिटूटेपरे तिनहिं देखि रघुनन्दनलक्ष्मण प्रति बोले हे लक्ष्मण देखिये कोऊ राक्षस जानकी जो है ताहि हरें लिहे जाता रहा ताहि जीति अन्य राक्षस ने सीतहि हरि लैगया २४ (ततःकिंचित्भु वःभागंगत्वारुधिराक्तपर्वतसन्निभम्वपुः दृष्ट्वाअथरामःवाक्यं अब्रवीत्) तदनंतर कछु भूमि को भाग नाँघि आगे गये तहां रक्त सों भरा पर्वताकार तन परागीध को देखि तब रघुनन्दन वचन बोले २५ (जानकींशुभदर्शनाम् ताम्एषवैभक्षयित्वा अतितृप्तःविविक्तेशेते पश्यनिशाचरम्हन्मि) रघुनन्दनकहे

कि हे लक्ष्मण जानकी मंगलीक दर्शन हैं जाके ताहि इसी ने निश्चय करि के खाय लिया है अ-त्यंत अघाय एकांत देश में सोवता है देखिये यह निशाचरहै ताहिमारो २६ (रघुनन्दनमेचापंचबाणंशीघ्रंआनय रामवचनंतत्श्रुत्वाजटायुः भीतवत्प्राह) हे लक्ष्मण मेरा धनुष पुनः बाण शीघ्रही लावो इत्यादि रघुनन्दन को बचन ताहि सुनिकै जटायु लडर की नाईं वचन बोला इहां अपने मरने की भय नहीं है रघुनन्दनके अपयश की भयहै २७ (ते भद्रंमांनमारयस्वकर्मणा म्रियमाण अहंजटायुः तेभार्याहारिणंसंअनुद्रुतः) तुम्हारा कल्याण होय मोहिं न मारो मैंतो अपने कर्म करिकै आपही मरापराहौं मैं जटायु हौं आपकी पत्नी को हरिलैजाने वाला जोरावणताके पाछे मैं प्रचारि धावता भया २८ (अरिविमर्दनतत्ररावणमेयुद्धंबभूवतस्यवाहान्रथंचापं छित्वातेनअहंघातितः) हे अरिमर्दन रघुनन्दन तहां रावण प्रति मोसों युद्ध होती भई ताके बाहन घोड़े रथ धनुष तिनहिं मैं मारि तोरि डारा तिस रावण ने मोहिं मारा भाव पक्ष काटिडारा २९ ॥

पतितोऽस्मिजगन्नाथप्राणांस्त्यक्ष्यामिपश्यमाम्॥ तच्छ्रुत्वाराघवोदीनंकंठप्राणंददर्शसः ३० हस्ताभ्यांसंस्पृशन्रामोदुःखाश्रुवृतलोचनः ॥ जटायोब्रूहिमेभार्याकेननीताशुभानना ॥ मत्कार्यार्थंहतोऽसित्वमतोमेप्रियऽबांधवः ३१ जटायुःसन्नयावाचावक्त्राद्रक्तंसमुद्वमन् ॥ उवाचरावणोरामराक्षसोभीमविक्रमः ३२ आदायमैथिलींसीतांदक्षिणाभिमुखोययौ ॥ इतोवक्तुंनमेशक्तिःप्राणांस्त्यक्ष्यामितेऽग्रतः ३३ दिष्ट्याद्दृष्टोऽसिरामत्वंम्रियमाणेनमेऽनघ ॥ परमात्माऽसिविष्णुस्त्वंमायामनुजरूपधृक् ३४ अंतकालेपिदृष्ट्वात्वांमुक्तोऽहंरघुसत्तम ॥ हस्ताभ्यांस्पृशमांरामपुनर्यास्यामितेपदम् ३५॥

(पतितःअस्मिप्राणांस्त्यक्ष्यामिजगन्नाथ माम्पश्यकंठप्राणंदीनंतत्श्रुत्वाराघवः ददर्श) जटायु बोला कि पतित अधम पक्षी मैं अब प्राण त्याग कीन चाहत हौं हे जगन्नाथ दयादृष्टि मोहिं देखो कंठ गत प्राण दीन जटायू ताके बचन सुनि रघुनन्दन दया दृष्टि देखते भये ३० (दुःखेनआश्रुवृत लोचनःरामःहस्ताभ्यांस्पृशन् जटायोब्रूहिशुभानना मेभार्याकेननीता त्वंमत्कार्यार्थंहतः असिअतःमे प्रियबांधवः) दुःख करिकै आंशु भरे नेत्र भाव करुणाकर रघुनन्दन हाथों करि स्पर्श करत संते बोले हे जटायो कहु मंगल मय मुख है जाको ऐसी मेरी भार्या को किस ने हरा है अरु तुम मेरे कार्य हेत मारे गयो है इसकारण मेरे प्रिय बंधु हौ ३१ (वक्त्रात्रक्तं संउद्वमन्जटायुः सन्नयावाचा उवाच रामभीमविक्रमः राक्षसःरावणः) मुखते रक्त बमनकरताहुआ जटायूमधुरवचन करिकै बोला हे राम भयंकर है पराक्रम जाके ऐसा जो राक्षस रावण है ३२ (मैथिलींसीतांआदाय दक्षिणाभिमुखःययौ इतःवक्तुंमेनशक्तिः तेअग्रतःप्राणांस्त्यक्ष्यामि) मिथिलेश की पुत्री जो सीता हैं तिनहिं लैकै रावण दक्षिण दिशा के सम्मुख जाता भया इससे आगे मोहिं कहिबे की शक्ति नहीं है आप के आगे प्राण त्यागता हौं ३३ (दिष्ट्याम्रियमाणेनमेरामत्वंदृष्टः असिअनघविष्णुः त्वंपरमात्माअसिमायामनुज रूप धृक्) यह बड़े आनंद की बात भई कि मरण काल करिकै हे राम आप को साक्षात् मैं देखता हौं मेरी भाग्य रूप आप आगे खड़े हौ हे निष्पाप विष्णु आप परमात्मा हौ माया करिकै मनुष्य रूप धरेहौ ३४ (रघुसत्तमअंतकाले अपित्वांदृष्ट्वाअहंमुक्तः रामहस्ताभ्यां मांस्पृशपुनःते

पदंयास्यामि) हेरघुबंशमें उत्तम अंत समय में निश्चय करि आपकोदेखाताते मैं मुक्तहोउंगोहेराम अबहाथों करिकै मोहिं स्पर्श करौ पुनः अब आप के परम् पद को जाता हौं ३५ ॥

तथेतिरामःपस्पर्शतदंगंपाणिनास्मयन् ॥ ततःप्राणान्परित्यज्यजटायुःपतितोभुवि ३६ रामस्तमनुशोचित्वाबन्धुवत्साश्रुलोचनः ॥ लक्ष्मणेनसमानाप्यकाष्ठानिप्रददाहतम् ३७ स्नात्वादुःखेनरामोऽपिलक्ष्मणेनसमन्वितः ॥ हत्वावनेमृगंतत्रमांसखंडान्समन्ततः ३८ शाड्वलेप्राक्षिपद्रामःपृथक्पृथगनेकधा॥भक्षन्तुपक्षिणःसर्वेतृप्तोभवतुपक्षिराट् ३९ इत्युक्त्वाराघवःप्राहजटायोगच्छमत्पदम् ॥ मत्सारूप्यंभजस्वाद्यसर्वलोकस्यपश्यतः ४० ततोऽनन्तरमेवासौदिव्यरूपधरःशुभः ॥ विमानवरमारुह्यभास्वरंभानुसन्निभम् ४१ ॥

(स्मयन् राम तथा इति पाणिना तत् अंगंपस्पर्श ततः जटायुः प्राणान् परित्यज्यभुविपतितः) पक्षी में ऐसा साहस इसप्रकार की बुद्धि ऐसा बिचारि मुसुकायकै रघुनन्दन बोले हे गीधराज जैसा कहते हौ तैसाही करौंगो ऐसा कहि हाथकरिकै वाको अंग स्पर्श कीन्हे तब जटायू प्राणत्यागि भूमि पै गिरिपरा ३६ (बंधुवत् तं अनुशोचित्वा साश्रुलोचनः रामः लक्ष्मणेन काष्ठानि सं आनाप्यतम् प्रददाह) बंधुकी नाईं ताहि मरे पीछे शोच करते भये आँशु बहते हैं नेत्रनमें ऐसे करुणासिंधु रघुनन्दन लक्ष्मण करिकै काठ मँगाय गीध मृतक तन ताहि दाह करते भये ३७ (लक्ष्मणेन समन्वितः रामः अपि दुःखेन स्नात्वावने मृगंहत्वा तत्र मांसखंडान् समंततः) लक्ष्मण करिकै सहित रघुनन्दन दुख सहित स्नान करि बनमें एक मृग मारि ताके मांस केजो खंड हैं तिनहिं चारिहु दिशि ३८ (रामः पृथक् पृथक् अनेकधाशाड्वले प्राक्षिपत् सर्वे पक्षिणःभक्षन्तुपक्षिराट् तृप्तोभवतु) रघुनन्दन उनमांस खंडन को अलग अलग अनेक भाग करि हरी नवीनघास पर धरिबोले सब पक्षियो इस मांस को भोजन करौ जामें पक्षिन को राजा गीध तृप्तहोय ३९ (इतिउक्त्वा राघवः प्राह जटायोमत्पदं गच्छ अद्य सर्व लोकस्य पश्यतः मत्सारूप्यं भजस्व) सजाती के खाये गीधराज तृप्त होय ऐसा कहि पुनः रघुनन्दन बोले हे जटायो मेरे पदको जाउ आज सबलोक के देखते हुये मेरी सारूप्य मुक्ति को प्राप्त होउ भाव मेरासा रूपधरि मेरे लोकहि जाउ ४० (ततः अंतरं असौ एव दिव्यरूप धरः शुभः भानुसन्निभम् भास्वरं विमान वरं आरुह्य) रघुनन्दन के बचन कहतै ताही समय में सो गीध दिव्य रूप धरि मंगलकि सूर्यन के तुल्य प्रकाशवंत जो बिमान उत्तम तापर प्रसन्न मन सवार है कै ४१ ॥

शंखचक्रगदापद्मकिरीटवरभूषणैः॥ द्योतयत्स्वप्रकाशेनपीताम्बरधरोऽमलः४२चतुर्भिःपार्षदैर्विष्णोस्तादृशैरभिपूजितः॥स्तूयमानोयोगिगणैःराममाभाष्यसत्वरः॥कृतांजलिपुटोभूत्वातुष्टावरघुनन्दनम् ४३ जटायुरुवाच॥ अगणितगुणमप्रमेयमाद्यंसकलजगत्स्थितिसंयमादिहेतुं ॥ उपरमपरमंपरात्मभूतंसततमहंप्रणतोऽस्मिरामचन्द्रम्४४निरवधिसुखमिंदिराकटाक्षंक्षपितसुरेन्द्रचतुर्मुखादिदुःखम्॥नरवरमनिशंनतोस्मिरामंवरदमहंवरचापबाणहस्तं ४५ ॥

(अमलः पीताम्बर धरः शंख चक्र गदा पद्म किरीटवर भूषणैः स्वप्रकाशेन द्योतयत्) अमल तन में पीत वस्त्र धारण किहे चारि भुजन में शंख चक्र गदा पद्म लिहे किरीट कुंडल माल केयूर कांची मुद्रिकादि भूषणों करिकै भूषित अपनी प्रकाश करिकै सब दिशा प्रकाशित किहे हैं ४२ (विष्णोः चतुर्भिः पार्षदैः तादृशैः अभि पूजितः योगि गणैः स्तूयमानः सत्वरः रामं आभाष्य) विष्णुके चारि पार्षद ताही तुल्य तिन करिकै पूजागया अरु योगि वृंदों करिकै स्तुति किया गया ऐसा जटायू शीघ्रही रघुनन्दन प्रति बोला (कृतांजलि पुटो भूत्वा रघुनन्दनम् तुष्टाव) हाथजोरि सन्मुख ह्वै रघुनन्दन प्रति स्तुति करने लगा ४३ (अगणित गुणं अप्रमेयं आद्यं स्थिति संयमादि सकल जगत् हेतुम् उपरमपरमं परात्म भूतं रामचन्द्रम् सततम् अह प्रणतोस्मि) शक्ति प्रेरक तेज बीर्य रूपा दया शील सुलभ उदारतादि नहीं गणबे योग्य हैं कल्याण गुण जिन के पुनः प्रमाण रहित महिमा है जिनकी सबके आदि है रूपजिनको उत्पत्ति पालन संहारादि सब जगत् को कारण है जो कारण रहित अखंड ज्ञान शुद्ध परमात्म रूप जो ऐसे सुयश प्रकाशक रामचंद्र हैं तिनहिं निरंतर सदा में प्रणाम करताहौं ४४ (निः अवधि सुखं इंदिराकटाक्षं सुरेंद्र चतुः मुखादि दुःखं क्षयित वरदंवर चाप बाण हस्तं नरवरं रामं अनिशं अहंनतोस्मि) नहीं है अवधि जिन के सुखकी भाव अखंड आनन्द रूप सदाहैंअरु लक्ष्मीकी कटाक्ष जिनपर सदापरतहै भावशक्तिअनुकूलसदासेवामें तत्पररहती हैं पुनः इन्द्र ब्रह्मादि के दुःख को सदा नाश करते हैं सबन को वरदायक हैं उत्तम धनुष बाण हाथों में धारण ऐसे मनुष्यों में उत्तम जो राम हैं तिनहिं दिनौराति मैं प्रणाम करताहौं ४५ ॥

त्रिभुवनकमनियिरूपमीड्यंरविशतभासुरमोहितप्रदानम् ॥ शरणदमनिशंसुराग मूलेकृतानिलयंरघुनंदनंप्रपद्ये ४६ भवविपिनिदवाग्निनामधेयंभवमुखदैवतदैव तंदयालुं ॥ दनुजपतिसहस्रकोटिनाशंरवितनयासदृशंहरिंप्रपद्ये ४७ अविरत भवभावनातिदूरंभवविमुखैर्मुनिभिःसदैवदृश्यम् ॥ भवजलधिसुतारणांघ्रिपोतं शरणमहंरघुनंदनंप्रपद्ये ४८ ॥

(त्रिभुवनकमनीयरूपंईड्यं) तीनिहूलोकन में परम सुंदर एकही रूप है पुनःसबके स्तुति करिबेयोग्य हैं (रविशतभासुरमोहितप्रदानम्) सूर्यनके तेज ते सैकरन गुण अधिक प्रकाशहै जिन मेंसो ऐश्वर्य छपाये माधुर्यमें नरनाट्य करि लोक जनन को मोहित करते हैं (शरणदंसुरागमूलेनि लयंकृत रघुनंदनंअनिशंप्रपद्ये) शरणागत जनन को अभय सुख देन हारे सुंदर प्रीति उत्पन्न होती है जिन के मन में तिन के उर में मंदिर करि सदा वास करने वाले जो रघुनन्दनहैं तिनकी शरण में मैं दिनौ राति प्राप्त रहौं ४६ (भवविपिनिदवाग्निनामधेयं) संसार रूप जो वनहै ताको भस्म करि देबे को दावानल सम जिनको नाम है (भवमुखदैवतदैवतंदयालुं) महादेव ब्रह्मादिजो मुख्यदेव तिनके देवहैं पुनः बिन स्वारथपरदुःख हरण दयाहै ताकेभरे मांदिरहैंसोईदया दृष्टिते (दनुजपतिसहस्र कोटिनाशं) जीवन को दुःख दायक राक्षसों को राजा रावणादि सैकरों करोरि राक्षसनको नाश करने वाले हैं (रवितनयासदृशंहरिंप्रपद्ये) सूर्यपुत्री जो यमुना जीतिन के जल सम अमल श्याम तनहै जिन को ऐसे हरि जो श्री रघुनाथ जी तिनकी शरण में मैंप्राप्त हौं ४७ सदासंसारही भावतहै जिनको भाव देहै सुख में भूले हैं तिन विषया सक्तों को अत्यंत दूरहै (भवविमुखैः मुनिभिःसदाएवदृश्यम्) पुनः संसार ते विमुख भाव जे देह को वृथा माने इंद्री विषय त्यागे शुद्ध

मन परमेश्वर में लगा ये हैं ऐसे जे मुनिहैं तिन करि के सदा निश्चय करि दृश्यमान हैं समीपही देखि परते हैं (भवजलधेःतारणेअंघ्रिपोतं) संसार रूप जो समुद्र है ताके पार उतारने हेत जिन के चरण जहाज हैं भाव जिनमें आरूढ़ रहे जीव सहजही भवपारजात (रघुनंदनं शरणंअहंप्रपद्ये) विपयिन ते दूरि भक्तन के समीप भव तारक चरण जहाज जिनके ऐसे जो रघुनन्दन तिनकी शरण में मैं प्राप्त हौं ४८ ॥

गिरिशगिरिसुतामनोनिवासंगिरिवरधारिणमीहिताभिरामम् ॥ सुरवरदनुजेंद्र सेवितांघ्रिंसुरवरदंरघुनायकंप्रपद्ये ४९ परधनपरदारवर्जितानांपरगुणभूतिषुतु ष्टमानसानां ॥ परहितनिरतात्मनांसुसेव्यंरघुवरमम्बुजलोचनंप्रपद्ये ५० स्मि तरुचिरविकासिताननाब्जमतिसुलभंसुरराजनीलनीलम् ॥ सितजलरुहचारु नेत्रशोभंरघुपतिमीशगुरोर्गुरुंप्रपद्ये ५१ ॥

(गिरिशगिरिसुतामनोनिवासं) शिवपार्वतीके मन रूपमानसरमेंहंसवत्जो वासकिहेहैं (गिरि वरधारिणंइहिताभिरामम्) पर्वतउत्तम धारण में जो चेष्टा सो सबको आनंददायक है प्रथमसिंधुम- थतमेंपर्वत कच्छप रूपते धारे जबदेवता थके तब मंदराचलको पकरिमथने लगे ब्रजबूड़त कृष्ण रूपते गोवर्द्धनधरे इत्यादि चेष्टासवसुखदायक हैं जिनकी (सुरवरदनुजेंद्रसेवितअंघ्रिं) देवतनमें श्रेष्ठ इंद्रब्रह्माशिवादिदैत्यन में इन्द्रप्रह्लादबलि इत्यादि करिकै सेवितहैंचरण जिनके (सुरवरदंरघुनायकं प्रपद्ये) तुम्हारे हेत नरतनुधरि दुष्टन को नाशकरिहौं इत्यादि देवनको वरदेन हारे जो रघुनायक तिनकी शरण में मैं प्राप्तहौं ४९ (परधनपरदारवर्जितानां) परारधन परनारी त्यागकिहे हैं जे(पर गुणभूतिषुतुष्टमानसानां) परारगुण सुनि अथवा परारी ऐश्वर्य देखिप्रसन्न होत मनजिनको(परहित निरतात्मनां) परारहित करने में तत्परहता है मन जिनको (सुसेव्यंरघुवरंअंबुजलोचनंप्रपद्ये) अनीतित्यागि सहजै सबसों प्रीतिकिहे परोपकारी ऐसे सुमार्गीपुरुषनके सेवाकरिवे योग्यरघुवरकृपा रसभरेकमल समनेत्र तिनकी शरण में मैं प्राप्तहौं ५० (स्मितरुचिरविकासितआननअब्जम्) मन्द मुसकानि सुन्दर प्रकाशमान् जामें ऐसा मुखकमलवत् है जिनको (अतिसुलभमसुरराजनीलनील म्) नीच ऊँच सबसों प्रीतिपूर्वक वार्ताकरिवे में अत्यंत सुलभ शीलमय स्वभावहै जिनको इन्द्र नील मणि सम श्याम तनहै जिनको (सितजलरुहचारुनेत्रशोभम्) श्वेत कमल सम सुंदर नेत्रों की शोभा है जिनके (ईशगुरोःगुरुंरघुपतिंशरणंप्रपद्ये) ईश शिवादितिनके गुरुब्रह्मा तिनके गुरुजो रघुपति हैं तिनकी शरणागत में मैं प्राप्त होताहौं ५१ ॥

हरिकमलजशम्भुरूपभेदात्वमिहविभासिगुणत्रयानुवृत्तः ॥ रविरिवजलपूरितोद पात्रेष्वमरपतिस्तुतिपात्रमीशमीडे ५२ रतिपतिशतकोटिसुंदरांगंशतपथगोचर भावनाविदूरं ॥ यतिपतिहृदयेसदाविभातंरघुपतिमार्तिहरंप्रभुंप्रपद्ये ५३ इत्येवं स्तुवतस्तस्यप्रसन्नोऽभूद्रघूत्तमः ॥ उवाचगच्छभद्रंतेममविष्णोःपरम्पदम् ५४ ॥

(जलपूरितउदपात्रेपुरविःइवत्रयगुणअनुवृत्तः हरिकमलजशंभुरूप भेदात्वंइहविभासि अमरपति स्तुतिपात्रंईशंईडे) जलभरे हुये जलपात्रोंमें यथा सूर्यन की प्रतिविंब अनेक देखात इसीभांति आप मायाके तीनोंगुण यथा सतोगुण आवृत भये ते विष्णु रजोगुण आवृत भये ते ब्रह्मा तमोगुण आवृत भये ते शंभु इत्यादि रूपभेदते इहां देखाते हो सोई देवन के पति जो ब्रह्मादि तिनके स्तुतिके पात्र

जो ईशआप हौ तिनहिं मैं स्तुति करताहौं ५२ (रतिपति शतकोटि सुंदरअंगं) कामदेव ते सौ करोरि गुण अधिक सुदर अंगहै जिनको (शतपथगोचर भावनाविदूरं) शतपथ ब्राह्मण वेदांगहै तिनकी विषय अनुकूल जे भावना अर्थात् अंतरमें आपने सूक्ष्मरूपते परमात्मरूपके सेवनमें लगेरहते हैं देहव्यवहार को वृथाजानते हैं तिनते अविदूर भाव सदा समीपही रहते हैं (यतिपति हृदयेसदा विभातं) सन्यास मार्गिनमें जे उत्तम अर्थात् देहाध्यास रहित जे ब्रह्मवेनाहैं तिनके हृदयमें सदा प्रकाशमान (रघुपति मार्तिहरंप्रभुंप्रपद्ये) आर्ति जो दुःख जन्ममरण त्रितापादि ताके हरणहारे जो रघुपतिहैं सुरनर नागादि सबके पति तिनकी शरणमें मैं सदाप्राप्तहौं५३ (इतिएवंतस्यस्तुवतः रघूत्तमःप्रसन्नःअभूत् तेभद्रंममवि ष्णोःपरमम्पदम्गच्छ) शिवजी बोले हे गिरिजा इसप्रकारतिसजटायूकी स्तुतिसुनि रघुनाथजीप्रसन्न भयेपुन.बोले हेजटायू तुम्हाराकल्याणहोइ अब तुम इसी विमानपर आरूढ पार्षदनसहित प्रसन्न है मेरा जो विष्णु परमपद वैकुण्ठ है तहांको जाउ ५४ ॥

शृणोतियइदंस्तोत्रंलिखेद्वानियतःपठेत् ॥ सयातिममसारूप्यंमरणेमत्स्मृतिंलभेत् ५५ इतिराघवभाषितंतदाश्रुतवान्हर्षसमाकुलोद्विजः ॥ रघुनन्दनसाम्यमास्थितःप्रययौब्रह्मसुपूजितंपदम् ५६ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसम्वादेआरण्यकांडेअष्टमःसर्गः ८ ॥

(इदंस्तोत्रंयःश्रणोति लिखेतवानियतःपठेत् सममसारूप्यं यातिमरणेमत्स्मृतिंलभेत्)इस स्तोत्रहि जो मनुष्य सुनहिगो वा लिखैगो अथवा नित्य नेमते पाठकरैगो सो मेरे समान रूपको प्राप्तहोइगो पुनः मरण समय सब वासना त्यागि वाको केवल एक मेरिही स्मरण रहैगी भाव सारूप्य मुक्तिको यही कारणहै ५५ (इतिराघवभाषितं श्रुतवान् तदाद्विजःहर्षसमाकुलः रघुनन्दनसाम्यंआस्थितः ब्रह्म सुपूजितं पदम्प्रययौ) इत्यादि रघुनन्दन को कहा वचन सुनि तासमयमें पक्षी जटायू हर्षते परिपूर्ण रघुनन्दनके समान रूपको प्राप्तह्वै पुनःब्रह्माके सुंदर पूजिवेयोग्य जो पदवैकुण्ठ तहांकोजाताभया ५६ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमप्रियवल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचितेअध्यात्मभूषणेआर-ण्यकांडेजटायुस्तुतिवर्णनोनामअष्टमःप्रकाशः ८ ॥

ततोरामोलक्ष्मणेनजगामविपिनांतरं॥पुनर्दुःखंसमाश्रित्यसीतान्वेषणतत्परः१तत्राद्भुतसमाकारोराक्षसःप्रत्यदृश्यत ॥ वक्षस्येवमहावक्त्रश्चक्षुरादिविवर्जितः २ ॥

सवैया ॥ मगजात कुरूपकबंध मिलो तुरतै बधिखण्डि दुवौ करको । धरिदिव्य तनै कहिगाप पुनः लखि आनन पूर्ण सुधाधर को ॥ पदवंदि उदार बिनै करते बरनै हरिरूप चराचर को । त्यहि जान कहे निजधाम तिन्हें प्रणमामि सदा करुणा करको ॥ (ततोलक्ष्मणेनरामः विपिनांतरं जगामपुनः दुःखंसंआश्रित्य सीतान्वेषणतत्परः) तदनंतर लक्ष्मण सहित रघुनन्दन दूसरे बनहिं जातेभये पुनः दुःखभरे सीताके ढूढ़नेमें, तत्पर भये १ (तत्रराक्षसअद्भुत संआकारः प्रत्यदृश्यतचक्षुः आदिविवर्जितः महावक्त्रःवक्षसिएव) तहां वनमें एकराक्षस सम्पूर्ण अंगकरिकै आश्चर्य मय आकार संमुखदेखे जाके काननासा नेत्रादि कुछनहीं अरु बड़ाभारी मुख छातीविषे निश्चय करिकै बनाहै २ ॥

बाहुयोजनमात्रेणव्याप्तौतस्यरक्षसः॥ कवंधोनामदैत्येंद्रःसर्वसत्वविहिंसकः ३ तद्वाह्वोर्मध्यदेशेतौचरंतौरामलक्ष्मणौ ॥ ददर्शतुर्महासत्वंतद्बाहुपरिवेष्टितौ ४ रामःप्रोवाचविहसन्पश्यलक्ष्मणराक्षसम्॥शिरपादविहीनोऽयंयस्यवक्षसिचानन म् ५ बाहुभ्यांलभ्यतेयद्यत्तत्तद्भक्षन्स्थितोध्रुवम् ॥ आवामप्येतयोर्बाह्वोर्मध्यसं कलितौध्रुवम् ६ गंतुमभ्यत्रमार्गोनदृश्यतेरघुनन्दन॥ किंकर्तव्यमितोऽस्माभिरि दानींभक्षयेत्सनौ ७ लक्ष्मणस्तमुवाचेदंकिंविचारेणराघव ॥ आवामेकैकमव्य ग्रौछिंद्यांरक्षोभुजौध्रुवम् ८ ॥

(रक्षसः तस्य बाहू योजनमात्रेण व्याप्तौ सर्व सत्व विहिंसकः कवंधः नाम दैत्येंद्रः) राक्षस जो है ताकी बाहु दोऊ ऐसी लंबी कि चारि कोश तक हाथों ते व्यापार करि सक्ताहै तिस द्वारा सब बनके जीवन को गहि खाय जाता रहा कवंध नाम दैत्यन में उत्तम है ३ (तत् बाह्वोः मध्य देशे रामलक्ष्मणौ तौचरंतौ तत् बाहुपरिवेष्टितौ महासत्वं ददर्शतुः) तिस राक्षस की बाहुन के मध्यदेश में रामलक्ष्मण दोऊ जने आय परे उसने पकरि लिया उसकी बाहुन में बँधे हुये दोऊ जने बड़ाभा री तन उसको देखते भये ४ (विहसन् रामः प्रोवाच लक्ष्मण राक्षसं पश्य अयं शिरः पाद विहीनः चयस्य वक्षसि आननः) विहसत संते रघुनन्दन बोले कि हे लक्ष्मण यह राक्षस जो है ताहि देखि ये यह शीश पायन करिकै हीन है पुनः जाके छाती विषे मुख है ५ (बाहुभ्यां यत् यत् लभ्यते तत् तत् ध्रुवम् भक्षन् स्थितः एतयोः बाह्वोः मध्ये आवां अपि ध्रुवं संकलितः) बाहुन करिकै जिस जिस जीवनको पावताहै ताको ताको निश्चयकरि खाता हुवा बैठाहै अब इसीकी बाहुनके बीचमें हेलक्ष्मण तुम हम दोऊ जने निश्चय करि बँधे परे हैं ६ रघुनन्दन अत्र अभि गंतुं मार्गः न दृश्यते इतः अस्मा भिः किं कर्तव्यं इदानीं सनौ भक्षयेत् हे लक्ष्मण इहाँ बाहेर जानेकी राह नहीं देखि परती है इस समय में हमकरिकै क्या उपाय करना चाहिये काहेते जो उपाय न करैं गे तौ इसी समय में सो रा- क्षस तुमहम दोउन को खाइ लेइगो ७ (लक्ष्मणः तं इदं उवाच राघव विचारेण किं रक्षः भुजौ आवां अव्यग्रौ एकएकं ध्रुवंछिंद्यां) लक्ष्मण तिन रघुनन्दन प्रति बोले हे राघव अब विचार करिकै क्या प्रयोजनहै राक्षस के जो दोऊ भुजाहैं तिनहिं तुमहम व्याकुलता रहित एक एकको निश्चयकरि काटे डारते हैं ८ ॥

तथेतिरामःखड्गेनभुजंदक्षिणमच्छिनत्॥तथैवलक्ष्मणोवामंचिच्छेदभुजमंजसा९ ततोऽतिविस्मितोदैत्यःकौयुवांसुरपुंगवौ ॥ मद्बाहुच्छेदकौलोकेदिविदेवेषुवाकु तः१०ततोब्रवीद्धसन्नेवरामोराजीवलोचनः॥ अयोध्याधिपतिःश्रीमान्राजादशर थोमहान् ११ रामोऽहंतस्यपुत्रोऽसौभ्रातामेलक्ष्मणःसुधीः॥ ममभार्याजनकजा सीतात्रैलोक्यसुंदरी १२ आवांमृगययायातौतदाकेनापिरक्षसा॥ नीतांसीतांवि चिन्वंतौचागतौघोरकानने १३ बाहुभ्यांवेष्टितावत्रतवप्राणरिरक्षया॥ छिन्नौ तवभुजौत्वंचकोवाविकटरूपधृक् १४ ॥

(तथाइति रामः खड्गेन दक्षिणं भुजं अच्छिनत् तथाएव लक्ष्मणः अंजसावामं भुजं चिच्छेद) हे

लक्ष्मण जो कह ते हौ सोई होउ ऐसा कहि रघुनन्दन तरवारिकरिकै दाहिन जो भुजा है ताहि काटि डारे तैसेही निश्चय करि लक्ष्मण भी शीघ्रहीं वामजो भुजा है ताहि काटि डारे ६ (ततः दैत्यःअति बिस्मितः मत् बाहुच्छेदकौ लोके कुतः दिवि देवेषु वासुरपुंगवौ युवांकौ) तदनन्तर दैत्य कवंध अत्यंत बिस्मय करि पूछा कि मेरी वाहुन को काटने वाला इस नरलोक में कोऊ कहाँ है भाव नहीं है ताते देवलोकमें कोऊ देवतन बिषे कोऊ हौ अथवा देवतन मे श्रेष्ठ तुम दोऊ को हौ १० (ततःराजीव लोचनःरामःहसन्नेवाब्रवीत् अयोध्याधिपतिःश्रीमान्महान्राजादशरथः) तदनन्तर कमल नयन रघुनन्दन हसतसंते निश्चय करि बोले कि अयोध्या पुरी के पति ऐश्वर्य वंत महान् पुरुष जो राजा दशरथहैं ११ (तस्यपुत्रःअहंरामःअसौमेभ्राता लक्ष्मणःसुधीः जनकजा त्रयलोक्य सुन्दरी सीता मम भार्या) तिन दशरथ के पुत्र हम हैं रामनाम है वे हमारे छोटे भाई लक्ष्मण नाम बड़े बुद्धिमान हैं अरु जनक की पुत्री जो तीनिहू लोकनमें एकै सुन्दरी सीता नाम हमारी भार्या रही १२ (मृगयाया- आवांयातौ तदाकेन रक्षसः अपिनीतां बिचिन्वन्तौच घोरकानने आगतौ) शिकार खेलने हमदोऊ आय गये तासमय किसीराक्षस ने हरिलिया सो हरीहुई जो सीता ताहि ढूंढते हुये पुनः भयंकर बन में दोऊ आय प्राप्त भये १३ (अत्रतववाहुभ्यां वेष्टितौ प्राणरिरक्षयातव भुजौ छिन्नौच त्वं कोवा बिकट रूपधृक्) इहाँ तुम्हारी बाहुन करिकै बँधिगये अपने प्राणों की रक्षा के हेत तुम्हारी भुजा काटि डारा पुनः कहौ तुमको हौ भयंकर रूपधरे वनमें रहते हौ १४ ॥

कवंधउवाच धन्योऽहंयदिरामस्त्वमागतोऽसिममांतिकम् ॥ पुरागंधर्बराजोऽहं रूपयौवनदर्पितः १५ बिचरल्लोकमखिलंवरनारीमनोहरःतपसाब्रह्मणोलब्ध मवध्यत्वंरघूत्तम १६ अष्टावक्रंमुनिंदृष्ट्वाकदाचिदहसन्पुरा ॥ क्रुद्धोसावाहदुष्ट त्वराक्षसोभवदुर्मते १७अष्टावक्रःपुनःप्राहवंदितोमेदयापरः॥शापस्यांतंचमेप्राह तपसाद्योतितप्रभः १८ त्रेतायुगेदाशरथिर्भूत्वानारायणःस्वयम्॥आगमिष्यति तेबाहूछिंद्येतेयोजनायतौ १९ तेनशापाद्विनिर्मुक्तोभविष्यसियथापुरा॥इतिशप्तोऽहमद्राक्षंराक्षसींतनुमात्मनः २० ॥

यदित्वंरामःममअंतिकंआगतःअसिअहंधन्यःअहंपूर्वंगंधर्वराजारूपयौवनदर्पितः) कवंधबोला कि जो तुमरामहौ कृपाकरि मेरे पासआय प्राप्तभयो है तौ मैं धन्यभया हे कृपासिन्धु मैं पूर्ब गंधर्बो को राजाहौं सुन्दरस्वरूप अरुयुवावस्था के गर्व युक्तरहा १५ (रघूत्तमब्रह्मणःतपसाअवध्यत्वंलब्धंव रनारीमनःहरःअखिलंलोकंविचरन्) हे रघुवंशोत्तमब्रह्माको तपकरिकै अवध्यत्व भाव किसी को मारा नमरौं ऐसा बरपायों स्वरूपता करि उत्तमयुवतिन को मनहरने वाला मैं सबलोकन मे घूमा करता रहौं १६ (पुराकाचित्अष्टावक्रंमुनिंदृष्ट्वाअहसन्क्रुद्धःसावाहदुर्मतेदुष्टत्वंराक्षसःभव) पूर्ब किसी समय अष्टावक्र जो मुनिहैं तिनहिं देखि मैं हस्यों भावइनकी देहमें आठकूवर हैं सो देखिक्रोध करिकै मुनि वोले हे दुर्मते दुष्टतूराक्षस हो १७ (मेवंदितःतपसाद्योतितप्रभःअष्टावक्रःदयापरःपुनःप्राहचमे शापस्यअंतंप्राह)यद्यपिक्रोधित रहे जबमैं प्रणाम करि बिनती कीन्हेउ तवतपस्या करि प्रकाशमानहै प्रभाजिनकीऐसेअष्टावक्रदयाकारि पुनःबोलेभावअभय मतिकरुइतिकहि पुनःमेरी शापकोउद्धारकहे१८ (त्रेतायुगेनारायणः स्वयम्दाशरथिः भूत्वाआगमिष्यतियोजनायतौतेवाहूछिद्येतेत्रेतायुगमेंनारायण

आपही दशरथ के पुत्रहोंइगे ते वनमें आवहिंगे ते योजनभरि लंबीतेरी दोऊ बाहुँइकाटिडारहिंगे१६ (तेनशापात्विनिर्मुक्तः यथापुराभविष्यसिइति अहंशप्तःआत्मनः राक्षसींतनुंमद्राक्षं) तिन रघुनन्दन करि के शाप ते छूटि जैसे पूर्व रहे तैसे फिरि ह्वै जायगा इस प्रकार मैं शाप को प्राप्त भयासो अपनोराक्षसी तनु जो है ताहि देखता भया भाव उसी देह ते राक्षस भया २० ॥

कदाचिद्देवराजानमभ्यद्रवमहंरुषा ॥ सोपिवज्रेणमांराममशिरोदेशेऽभ्यताड्यत् २१ तदाशिरोगतंकुक्षिंपादौचरघुनन्दन ॥ ब्रह्मदत्तवरान्मृत्युर्नाभून्मेवज्रताड्नात्२२ मुखाभावेकथंजीवेदयामित्यमराधिपम् ॥ ऊचुस्सर्वेदयाविष्टांमांविलोक्यास्यवर्जितम् २३ ततोमांप्राहमघवाजठरेतेमुखंभवेत् ॥ बाहूतेयोजनायामौभविष्यतइतोव्रज २४ इत्युक्तोऽत्रवसन्नित्यंबाहुभ्यांवनगोचरान् ॥ भक्षयाम्यधुनाबाहूखण्डितौमेत्वयाऽनघ२५इतःपरंमांश्वभ्रास्येनिक्षिप्याग्नींधनावृते ॥ अग्निनादह्यमानोऽहंत्वयारघुकुलोत्तम २६ ॥

(रामकदाचित्अहं रुषा देवराजानंअभ्यद्रवम्सः अपिवज्रेणमांशिरो देशेअभ्यताडयत्) हे रघुनाथजी सोई राक्षसी स्वभाव ते किसी समय में मैं क्रोध करि इंद्र के संमुख धावा तब सो इंद्रने वज्र मेरे शीश में मारा २१ (तदारघुनन्दनशिरः चपादौकुक्षिंगतंब्रह्मदत्तवरात् वज्रताडनात्मेंमृत्युःनअभूत्) ता समय में हेरघुनन्दन वज्र की प्रहार ते मेरा शीश पुनः दोऊ पाव कोखि मे घुसि गये परंतु ब्रह्मा के दिये वरदान के प्रभाव तेवज्र लागेते मेरी मृत्युन भई २२ (आस्यवर्जितम् मांविलोक्य दया विष्टासर्वेअमराधिपम् इतिऊचुःमुखाभावेअयंकथंजीवेत्) मुख रहित मोहिं देखि दया युक्त सब देवता इंद्र प्रति ऐसा बोले कि मुख विना इहु कैसे जीवत रहैगो २३ (ततोमघवामांप्राह जठरेतेमुखंभवेत् तेवाहूयोजनायामौ भविष्यत इतःव्रज) तब इंद्र मो प्रति बोले कि हे राक्षस अब मेरे वचन प्रभाव ते तेरे पेट में मुख होइ गो अरु तेरी बाहु दोऊ योजन अर्थात् चारि कोश की लंबी-होंइ गी अरु ऊरू के बल धीरा चलै गो २४ (इतिउक्तःअत्रवसन् वाहुभ्यांवनगोचरान् नित्यंभक्षयामि अधुनाअनघमे बाहूत्वयाखंडितौ) इत्यादि इंद्र कहे तब ते इहां वास करता हौं अरु बाहुन करि कै पकरि खैंचि मृग महिष व्याघ्र बाराहादि वन चर जीव जोहैं तिनहिं खाता रहौं अत्र या समय में हेअनघ पाप रहित रघुनन्दन मेरी जो बाहुइ तिनहिं तुमने काटि डारा २५ (इतःपरंरघुकुलोत्तम श्वभ्रास्येइंधनावृतेअग्निं निक्षिप्यत्वयाअग्निना दह्यमानःअहं) इस के उपरांत हे रघुकुल में उत्तम भूमि में गढ़ा खोदि तामें समूह ईंधन अग्नि लगाय तामें मो को डारि देउ आपकी लगाई अग्नि करि कै भस्म ह्वैकै तब मैं २६ ॥

पूर्वरूपमनुप्राप्यभार्यामार्गेवदामिते ॥ इत्युक्तेलक्ष्मणेनाशुश्वभ्रेग्निर्मायतत्रतम् २७ निक्षिप्यप्रादहत्काष्ठैस्ततोदेहात्समुत्थितः ॥ कंदर्पसदृशाकारःसर्वाभरणभूषितः २८ रामंप्रदक्षिणंकृत्वासाष्टांगंप्रणिपत्यच ॥ कृतांजलिरुवाचेदंभक्तिगद्गदयागिरा२९ गंधर्वउवाच ॥ स्तोतुमुत्सहतेमेऽद्यमनोरामातिसंभ्रमात् ॥ त्वामनंतमनाद्यंतंमनोवाचामगोचरम् ३० सूक्ष्मंतेरूपमव्यक्तंदेहद्वयविलक्षणम् ॥ दृग्

पमितरत्सर्वंदृश्यंजडमनात्मकम् ॥ तत्कथंत्वांविजानीयाद्व्यतिरिक्तंमनःप्रभो ३१ ॥

(पूर्वरूपंअनुप्राप्यतेभार्यामार्गेवदामिइतिउक्तेआशुलक्ष्मणेनश्वभ्रंनिर्मायतत्रतम्) भस्मभये पर में पूर्व रूपको प्राप्त ह्वै तवआपकी भार्याकी राहबतावोंगो इत्यादि उसके कहतही शीघ्रलक्ष्मण करिकै भूमिगढ़ाखोदाय तामें वाको जोशरीरहै ताहि २७ (निक्षिप्यकाष्ठैःप्रादहत्ततोदेहात्कंदर्पसदृशाआकारःगंउत्थितःसर्वाभरणभूषितः) वाको शरीर गढ़ामें डारिसमूह काष्ठकरिकै अग्नि लगाय दियेतदनन्तर जरतेहुये शरीर ते कामदेवके तुल्यसुंदर स्वरूप निसरा जो किरीट कुंडल मालादिसब आभूषण धारण किहेहै २८ (रामंप्रदक्षिणंकृत्वाचसाष्टांगंप्रणिपत्यकृतांजलिःभक्तिगद्गदयागिराइदंउवाच) रघुनंदन जो हैं तिनहि प्रदक्षिणाकरि पुनः साष्टांग प्रणामकरि सन्मुख हाथ जोरि प्रेमते कंठरुंधिगया ताते गद्गदबानी करिकै गंधर्व ऐसा वचनबोला २९ (राममनःवाचांअगोचरम्अनआदिअंतअनंतम्त्वांस्तोतुंअद्यमेमनःअतिसंभ्रमात्उत्सहते) गंधर्वबोला हे रघुनंदन आपमनकरिकै जाने नहीं जाते हैं बानी बखान नहीं करिसकी है इति मनबानी सों अगोचरहोनहीं है आदि अंतभावकवते हौ कवतक रहौगे यहकोऊनहीं जानत महिमा को अतनहीं ताते अनंत ऐसे जो आपतिनकी स्तुति करबे में या समय मेरामन अत्यंत आदर ते उत्साह को प्राप्त होता है ३० (देहद्वयविलक्षणम् दृश्यसर्वंजड अनात्मकम् दृगरूपंइतरत् तेसूक्ष्मंरूपंअव्यक्तम्मनः व्यतिरिक्तंप्रभो तत्त्वांकथंविजानीयात्) हे रघुनन्दन आपकी देहै द्वय हैं स्थूल विराट्है सूक्ष्म अंतर्यामी है सो विलक्षण भाव जिनको कोई कारण नहीं है स्वयं है तामें विराट् रूप दृश्य अर्थात् देखि परता है ताके यावत् अंग हैं तेसब जड़ हैं अनात्मक अर्थात् मायामय देहवत व्यवहार है अरु दृग रूपं इतरत् नेत्र विषय भिन्न जो आप को सूक्ष्म रूप है सो अव्यक्त अर्थात् प्रसिद्ध नहीं है मनादिते बिलग है प्रभु सो जो आप अंतर्यामी रूप हौ तिनहि कोऊ कैसे जानि सकै ३१ ॥

बुद्ध्यात्माभासयोरैक्यंजीवइत्यभिधीयते ॥ बुद्ध्यादिसाक्षीब्रह्मैवतस्मिन्निर्विषयेऽखिलम् ३२ आरोप्यतेऽज्ञानवशान्निर्विकारेऽखिलात्मनि ॥ हिरण्यगर्भस्तेसूक्ष्मदेहंस्थूलंविराट्स्मृतम् ३३ भावनाविषयोरामसूक्ष्मंतेध्यातृमंगलम् ॥ भूतंभव्यमविष्यच्चयत्रेदंदृश्यतेजगत् ३४ स्थूलेंडकोशेदेहेतेमहदादिभिरावृते ॥ सप्तभिरुत्तरगुणैर्वैराजोधारणाश्रयः ३५ ॥

(बुद्धिआत्माभासयोःऐक्यंइत्यभिधीयतेजीवः बुद्ध्यादिसाक्षीब्रह्मएव तस्मिन्निर्विषयेअखिलं) बुद्धि अरु आत्मा की प्रति विंब दोऊ की एकता माने ते भाव आत्म दृष्टि त्यागि बुद्धिद्वारा देह सुख के व्यापार में लगा इस प्रकार आत्म प्रतिविम्ब बुद्धि की आधार रहेते जीव भया अरु बुद्धि आदिकोंको साक्षी अर्थात् मन अहंकार चित्त बुद्धि इत्यादि को स्वरूप स्वभावनकीप्रकार जाने रहै अरु इनके अंश विषय व्यापार में न भूलै सदा आत्म रूप में दृष्टि राखै तौ वही ब्रह्म है निश्चय करिकै त्याहिनिर्विकार विषे संपूर्ण जो लोक व्यवहार है ताहि ३२ (अज्ञानवशात्अखिलात्मनिनिर्विकारे आरोप्यते ते सूक्ष्मंदेहंहिरण्यगर्भःस्थूलं विराट्स्मृतम्) अज्ञानता वश ते लोग जो जगत्को व्यापार है ताहि सब की आत्मा जो विकार रहित है त्याहि विषे आरोपित करते हैं हे रघुनन्दन बिचार करि देखे आपकी सूक्ष्म देह हिरण्य गर्भहै अरु स्थूल देह बिराट्है ३३ (रामतेसूक्ष्मंभावनाविषयः ध्यान

मंगलमूइदंजगत् यत्रभूतंभविष्यत्चभव्यंदृश्यते) हेरघुनन्दन आपको जो सूक्ष्म रूपहै सो भावना विषय अर्थात् हृदय कमल में ध्यान करि ध्यानी को मंगल कारी है पुनः उसी के प्रभावते इस जग में जो कछु पूर्व भया जो आगे होनहारहै अब जो होताहै इत्यादि सब वाको देखि परता है ३४ (तेस्थूलेदेहेअंडकोशेमहत आदिभिःसप्तभिः उत्तरगुणैः आवृतेवैराजः धारणाश्रयः) हेरघुनन्दन आप की स्थूल देह जो ब्रह्माण्ड कोश है तामें महातत्त्वादि जो सात आवरण हैं ते उत्तर गुणैः कहे एक ते दूसरा दशगुण आवृत कहे घेरेहैंअर्थात् जो सावकाश में चौदहौ भुवनहैं ताको दशगुणा पृथ्वी तत्त्व घेरेहै पृथ्वी के बाहेर पृथ्वी ते दशगुणा मोटा जल तत्त्व घेरेहैजलते दशगुणा अग्नि तत्त्व अग्नि ते दश गुणा वायु तत्त्व बायु ते दश गुणा आकाश तत्त्व आकाशते दश गुणा अहंकार तत्त्व अहंकार के बाहेर दशगुणा महातत्त्व घेरेसोसोनेकैसो अंडा गोलाकार ब्रह्माण्डहै इत्यादि आवृत के मध्य जो सावकाश में चौदहौ भुवनहैं इत्यादि सब आपको स्थूल शरीरहै ताको अभिमानी जो वैराज पुरुषहैसो धारणा श्रय एकाग्र चित्त ध्यान करने योग्यहै ३५ ॥

त्वमेवसर्वकैवल्यंलोकास्तेऽवयवाःस्मृताः ॥ पातालंतेपादमूलंपार्ष्णिस्तवमहातलम् ३६ रसातलंतेगुल्फौतुतलातलमितीर्यते ॥ जानुनीसुतलंरामऊरूतेवितलंतथा ३७ अतलंचमहीरामजघनंनाभिगंनभः ॥ उरःस्थलंतेज्योतींषिग्रीवातेमहउच्यते ३८ बदनंजनलोकस्तेतपस्तेशंखदेशगम् ॥ सत्यलोकोरघुश्रेष्ठशीर्षण्यास्तेसदाप्रभो ३९ इंद्रादयोलोकपालाबाहवस्तेदिशःश्रुती ॥ अश्विनौनासिकेरामवक्त्रंतेऽग्निरुदाहृतः ४० ॥

(सर्वस्य कैवल्यंत्वं एवलोकाः ते अवयवाःस्मृताः ते पादमूलं पातालं महातलं तव पार्ष्णिः) हे रघुनन्दन सबके कैवल्य मुक्ति स्थान आपही निश्चय करिकै हौ अरु सबलोक आपही के अंगहैं यथा आपके तरवा सो पाताल लोक है महातल आपकी एँड़ी है ३६ (ते गुल्फौ रसातलंतु तलातलं इतीर्यते सुतलं जानुनी तथा बितलं रामते ऊरू) आपके गुल्फ रसातल है पुनः तलातल सो नि-रोह है सुतल टिहुनी है तैसे बितल लोक हे राम आपकी ऊरू अर्थात् फीली हैं ३७ (रामअतलंच महीजघनं नभः नाभिगम् ज्योतिषीते उरः स्थलम् महते ग्रीवाउच्यते) हे रघुनन्दन अतल लोक अरु भूमिलोक आपको जघन अर्थात् गलहरी अरु पेडू प्रयंत है औ गगन आपकी नाभी है पुनः न-क्षत्र लोक छाती है पुनः महर्लोक आपकी ग्रीवाहै ३८ (जन लोकः ते बदनंतपः ते शंखदेशगम् रघुश्रेष्ठ प्रभो सत्यलोकःते सदाशीर्षण्याः) जन लोक आपको मुखहै तपलोक आपको ललाट देशहै हे रघुवंशोत्तम प्रभु सत्यलोक आपको सदाशीश है ३९ (इंद्रआदयः लोकपालाः ते बाहवःदिशः श्रुतीराम अश्विनौ नासिके अग्निः ते अक्क्रं उदाहृतः) इंद्रवरुण यम कुवेर इत्यादि जो लोक पाल हैं ते आपकी बाँहुइ हैं सब दिशा सोई कान हैं आश्विनी कुमार नासिकाहैं हेरघुनन्दन अग्नि आपको मुखहै इत्यादि बेदादि कहते हैं ४० ॥

चक्षुस्तेसविताराममनश्चंद्रउदाहृतः ॥ भ्रूभंगएवकालस्तेबुद्धिस्तेवाक्पतिर्भवेत् ४१ रुद्रोऽहंकाररूपस्तेवाचश्छंदांसितेऽव्ययः ॥ यमस्तेदंष्ट्रदेशस्थोनक्षत्राणि

द्विजालयः ४२ हासोमोहकरीमायासृष्टिस्तेपांगमोक्षणं ॥ धर्मःपुरस्तेऽधर्मश्चपृष्ठभागउदीरितः ४३ निमिषोन्मेषणेरात्रिर्दिवाचैवरघूत्तम ॥ समुद्राःसप्तकुक्षिर्नाड्योनद्यस्तवप्रभो ४४ रोमाणिवृक्षौषधयोरेतोवृष्टिस्तवप्रभो ॥ महिमाज्ञानशक्तिस्तेएवंस्थूलंवपुस्तव ४५ यदस्मिन्स्थूलरूपेतेमनःसंधार्यतेनरैः ॥ अनायासेनमुक्तिःस्यादतोन्यन्नहिकिंचन ४६ ॥

(राम ते चक्षुः सविता मनः चंद्र उदाहृतः ते भ्रूभंग एवकालः वाक्पतिः ते बुद्धिः भवेत्) हे रघुनन्दन आपके नेत्र सूर्य हैं मन चंद्रमाहै आपकी भृकुटी भंग सोई कालहै निश्चय करि ब्रह्मा आप की बुद्धिहैं ४१ (रुद्रःतेअहंकार रूपः छदांसि ते अव्यय वाचः ते दंष्ट्र देशस्थानं यमः नक्षत्राणि द्विजालयः) रुद्र आपको अहंकार रूपहैं वेद अविचल आपकी वानी हैं आपकी दाढ़ै यमराज हैं नक्षत्र दांतन की पाँती हैं ४२ (मोहकरी माया हासः ते अपांगमोक्षणम् सृष्टिः ते पुरतः धर्मः च अधर्म पृष्ठभाग उदीरितः) लोकमोहित करन हारी माया आपकी हास्यहै आपकी कटाक्ष चलना सृष्टि उत्पन्न होनाहै कटाक्ष बंदहोना प्रलय है छाती आदि आगेको अंग धर्म है पुनः अधर्म आपको पाछे को भाग कहा गया ४३ (रघूत्तम निमिष उन्मिषणे रात्रिः चएव दिवा सप्त समुद्राः ते कुक्षिः प्रभो नद्यः तवनाड्यः)हेरघुबंश में उत्तम आपकी निमिष पलक बंदहोना सो रात्रीहै उन्मेषणे पलकखुलना दिन है सातों समुद्र आपकी कोखिहैं हे प्रभो नदी सब आपकी नाड़ीहैं ४४ (वृक्षऔषधयः रोमाणि वृष्टिः तवरेतः प्रभो ते महिमा ज्ञान शक्तिः एवं तव स्थूलवपुः) वृक्ष औषधी सब आप के रोमहैं अरुजल वृष्टि सोई आपको वीर्य है हे प्रभु आपकी महिमा ज्ञानशक्ति है इसीप्रकार यह बिराट आप को स्थूल तन है अर्थात् ब्रह्माण्ड रचना ४५ (यत्अस्मिन् स्थूलरूपे नरैः मनः धार्यते अनायासेन मुक्तिः स्यात् अतः अन्यत् किंचननहि) कबंध कहत हे रघुनाथ जी जो इस आपके स्थूलरूप बिषे मनुष्यों करिकै मन धारण किया जाय तो अनायास योगतापादि परिश्रम रहित सोभाविकही मुक्ति होतीहै इसते परे और कछु सुगम उपाय नहीं है ४६ ॥

अतोऽहंरामरूपंतेस्थूलमेवानुभावये ॥ यस्मिन्ध्यातेप्रेमरसःसरोमपुलकोभवेत४७तदेवमुक्तिःस्याद्रामयदातेस्थूलभावकः॥तदप्यास्तांनवैवाहमेतद्रूपंविचिंतये४८धनुर्बाणधरंश्यामंजटावल्कलभूषितम् ॥अपीच्यवयसंसीतांविचिन्वंतंसलक्ष्मणम्४९इदमेवसदामेस्यान्मानसेरघुनन्दन॥सर्वज्ञःशंकरःसाक्षात्पार्वत्यासहितःसदा ५० त्वद्रूपमेवंसततंध्यायन्नास्तेरघूत्तम॥ मुमूर्षूणांसदाकाश्यांतारकंब्रह्मवाचकम् ५१ रामरामेत्युपदिशन्सदासंतुष्टमानसः ॥ अतस्त्वंजानकीनाथपरमात्मासुनिश्चितः ५२ ॥

(अतःरामतेस्थूलंरूपं एवअहंअनुभावये यस्मिन्ध्याते सरोमपुलकः प्रेमरसःभवेत्) इसकारण हेरघुनाथ जी आपको जो स्थूलरूप बिराटहै ताहीको निश्चय करि मैं ध्यानकरताहौं जिसमें ध्यान राखेते सहित रोम पुलक प्रेमरस उत्पन्न होताहै ४७ (रामयदातेस्थूलभावकः तत्एवमुक्तिःस्यात् तत्अप्यास्तांतनएततरूपं एवअहंविचिंतये) हेरघुनाथजी जब आपके स्थूल रूपको जो जन ध्यान करता

है ताकी निश्चय करि मुक्ति होतीहै अरु जो त्यहि स्थूलरूपको ध्याननहै सकैतौ आपको यही जो राजकुमार रूपहै ताहीको निश्चय करि मैं चिंतवन करताहौं भाव जो सुलभ लोकोद्धारहित अवतीर्ण भयो ४८ (अपीच्यवयसंश्यामं जटावल्कलभूषितम् धनुर्बाणधरं सलक्ष्मणम् सीतांविचिन्वंतं) तरुण अवस्था सुंदरश्याम स्वरूप शीशमें जटा तनमें वल्कल वसन भूषित करमें धनुषबाण धारण किहे सहित लक्ष्मण सीता जो हैं तिनहिं ढूंढतेहुये ४९ (रघुनन्दनइदंएवमे मानसेसदास्यात् पार्वत्यासहितःसाक्षात्शंकरःसर्वज्ञःसदा) हेरघुनन्दन यही राजकुमाररूप निश्चय करिकैमेरे मनमेंसदारहैकाहेते पार्वती सहित साक्षात् महादेव सर्वतत्त्व ज्ञाता सोऊसदा ५० (रघूत्तमएवंत्वत्रूपं सततंध्यायन् आस्ते सदाकाश्यांसुमूर्षूणां तारकंब्रह्मवाचकम् ५१ (रामरामइतिउपदिशन् सदासंतुष्टमानसः अतःजानकीनाथत्वंपरमासुनिश्चितः) हेरघु वंशमें उत्तम इसीप्रकार शंकरभी आपको यही जोरूपहै ताहि निरंतर ध्यान करते हुये वास करते हैं सदा काशीजीमें मरणकाल मूर्षण को भी तारक ब्रह्मवाचक रामराम इत्यादि उपदेश दै वाकोमुक्त करि आपसदा संतुष्ट प्रसन्न मन रहते हैं भाव आपको ध्यानकरि शंकर आनंद पावत अरु आपको नाम उपदेशदै मूर्षनको मुक्तिदेत इसकारणहेजानकीनाथ आप परमात्मा हौ निश्चयकरि ५२ ॥

सर्वेतेमाययामूढास्त्वांनजानंतितत्त्वतः ॥ नमस्तेरामभद्रायवेधसेपरमात्मने ५३
अयोध्याधिपतेतुभ्यंनमःसौमित्रिसेवित ॥त्राहित्राहिजगन्नाथमांमायानावृणोतुते
५४ रामउवाच ॥ तुष्टोऽहंदेवगंधर्वभक्त्यास्तुत्याचतेऽनघ ॥ याहिमेपरमंस्थानं योगिगम्यंसनातनम् ५५ जयंतियेनित्यमनन्यबुद्ध्याभक्त्यात्वदुक्तंस्तवमागमोक्तम् ॥ तेऽज्ञानसंभूतभवंविहायमांयांतिनित्यानुभवानुमेयम् ५६ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसम्वादेआरण्यकाण्डेनवमःसर्गः ९ ॥

(त्वन्माययासर्वेमूढास्त्वांतत्त्वतःनजानंतिरामभद्रायनमस्तेपरमात्मनेवेधसे) हेरघुनन्दनआपकीमाया करिकै सबलोकजनमूढअल्पज्ञते आपकोतत्त्वनहीं जानतेहैं अर्थात् मनुष्यकरि मानैहैंराम कल्याणरूप तिनके अर्थ नमस्कारहै परमात्म जो आप तिनकेअर्थ प्रणामहै ५३ (सौमित्रिसेवित अयोध्याधिपते तुभ्यंनमः जगन्नाथत्राहित्राहिते मायामांनआवृणोतु) सुमित्रा नन्दन करिकै सेवित अयोध्यानाथ आप के अर्थ नमस्कारहै हेजगन्नाथ रक्षरक्ष आपकी मायामोहिं नघेरै ५४ (देवगंधर्वतेभक्त्याच स्तुत्याअहं तुष्टः योगिगम्यं सनातनंमे परमंस्थानं अनघयाहि) रघुनन्दनबोले हे देवगंधर्व तेरी भक्तिकरिकै पुनः स्तुति करिकै हम प्रसन्नहैं योगिनको जहांजानेकी गम्यहै ऐसा जो सनातन मेरापरम उत्तमस्थानहै तहांको हे निःपाप जाउ परमपद को प्राप्तहोउ ५५ (आगमउक्तम्त्वत् उक्तम्स्तवम् येअनन्यबुद्ध्या भक्त्यानित्यं जपंतिते अज्ञानसंभूतभवं विहाय नित्यअनुभव अनुमेयम् मांयांति) पुनः रघुनन्दन बोले हेगंधर्व सब शास्त्रनको सम्मतयुत तुम्हारा कहा जो यह स्तोत्रहै ताहि जेजन एकाग्र बुद्धियुक्त भक्ति करिकै नित्य पढ़ैंगे तेजन अज्ञान सो उत्पन्न भया जो भव अर्थात् संसार बंधन ताहि विहाय त्यागि अर्थात् संसार बंधन ते छूटि अनुभव ज्ञान करिकै जानिबे योग्य जो मैं परमात्मा हौं ताहि प्राप्त होंइगे ५६ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचितेअध्यात्मभूषणेआरण्यकाण्डेकबंधस्तुतिवर्णनोनामनवमःप्रकाशः ९ ॥

लब्ध्वावरंसगंधर्वःप्रयास्यन्राममब्रवीत् ॥ शवर्य्यास्तेपुरोभागेआश्रमेरघुनन्दन १ भक्त्यात्वत्पादकमलेभक्तिमार्गविशारदा ॥ तांप्रयाहिमहाभागसर्वंतेकथयिष्यति २ इत्युक्ताप्रययौसोऽपिविमानेनार्कवर्चसा॥ विष्णोःपदंरामनामस्मरणेफलमीदृशम् ३ त्यक्तातद्विपिनंघोरंसिंहव्याघ्रादिदूषितम् ॥ शनैरथाश्रमपदंशबर्यारघुनन्दनः ४ शबरीराममालोक्यलक्ष्मणेनसमन्वितम् ॥ आयान्तमाराद्धर्षेणप्रत्युत्थायाचिरेणसा ५ ॥

सवैया ॥ लिखपाय कवंध स्वधाम पठे वनमारग अग्र पयान किये । शवरी मिलि पूजि खवाय फले विनतीकरि भक्ति सुदान लिये ॥ सियशोध कहे कपिसों मिलनो त्यहिको प्रभुनेनिजधामदिये। करुणाकर सानुज रामपथी वसियेनिज वैजसुनाथ हिये ॥ (सगंधर्वः वरं लब्ध्वा प्रयास्यन्राममब्रवीत् रघुनन्दन ते पुरो भागे आश्रमे शवर्य्याः) श्रीमहादेव जी कहत हे गिरिजा तदनंतर सो गंधर्व वरपाय कै जात समय श्रीराम प्रति बोला हे रघुनन्दन आप ते पूर्व दिशि जो देखि परताहै तिस आश्रम में शवरी रहती है १ (त्वत्पाद कमले भक्त्या भक्ति मार्ग विशारदा महाभाग तां प्रयाहि ते सर्वंकथयिष्यति) सो शवरी आपके पद कमल विषे भक्ति करिकै भक्तिमार्ग में वड़ीप्रवीणहै हे महाभाग रघुनन्दन ताके पास जाउ वह आपते सीता प्राप्ती को सव हाल कहैगी २ (इत्युक्त्वा सः अपि अर्क वर्चसा विमानेन विष्णोः पदं प्रययौ रामनाम स्मरणे ईदृशम्फलम्) इसप्रकार कहिकैसो गंधर्व निश्चय करि जो सूर्य सम प्रकाशमान विमान है तापर आरूढ़ह्वैकै विष्णुको पद जोवैकुण्ठ तहाँ को जाताभया सो रामनाम स्मरण करत संते इसप्रकार को फल है ३ (सिंहव्याघ्रादि दूषितम् तत्घोरं विपिनं त्यक्त्वा अथ रघुनन्दनः शनैः शवर्या आश्रम पदं) सिंहव्याघ्र आदि जीव घातक हैं जहाँ सो भयंकर वन जोहै ताहि त्यागि अत्र रघुनन्दन धीरा धीरा शवरी के आश्रमहि जाते भये ४ (लक्ष्मणेन समन्वितम् रामं आयांतं सा शवरी आरात् आलोक्य हर्षेण अचिरेण सा प्रत्युत्थाय) लक्ष्मण करिकै समेत रघुनन्दन जोहैं तिनहिं आवते हुये शवरी दूरिहीं ते देखि वड़ी भारी हर्षकरिकै भाव अपनी अहोभाग्य मानि अचिरेण अर्थात् शीघ्रता करिकै सो शवरी आसन ते उठिकै आगे चलि जाय कै रघुनन्दन के समीप ५ ॥

पतित्वापादयोरग्रेहर्षपूर्णाश्रुलोचना॥ स्वागतेनाभिनंद्याथस्वासनेसंन्यवेशयत्द रामलक्ष्मणयोःसम्यक्पादौप्रक्षाल्यभक्तितः ॥ तज्जलेनाभिषिच्यांगमथार्घ्यादिभिरादृतः ७ संपूज्यविधिवद्रामंससौमित्रिंसपर्यया ॥ संगृहीतानिदिव्यानिरामार्थंशवरीमुदा ८ फलान्यमृतकल्पानिददौरामायभक्तितः ॥ पादौसंपूज्यकुसुमैःसुगंधैःसानुलेपनैः ९ कृतातिथ्यंरघुश्रेष्ठमुपविष्टंसहानुजम् ॥ शवरीभक्तिसंपन्नाप्रांजलिर्वाक्यमब्रवीत् १० ॥

(पादयोः अग्रे पतित्वा हर्षेण अश्रुपूर्णलोचना स्वागतेन अभिनंद्य अथस्वआसने संन्यवेशयत्) प्रभुके पायँन के आगे शवरी दंडकी नाईं गिरि प्रणाम कीन्ही पुनः उठी हर्षेण अर्थात् प्रेमानंदउमग करिकै अश्रु जलभरेनेत्र युत कुशल प्रश्नपूछिकै आनंद ह्वै तवलवायलाय अपने आसन पर वैठावती भई ६ (रामलक्ष्मणयोः पादौ भक्तितः सम्यक् प्रक्षाल्य तत् जलेन अंगं अभिषिच्य

अथ अर्घ्यादिभिः आदृतः) श्रीराम के तथा लक्ष्मण के जो दोऊ पाँय हैं तिनहिं शवरीभक्तिते भली भांति धोयकैसो जल करिकै अपना सर्वांग सींचती भई तब अर्घ्यादि पूजनकी सामग्री करिकै आदर सहित ७ (सपर्यया ससौमित्रिं रामं विधिवत् संपूज्य रामार्थं संगृहीतानि दिव्यानि मुदाशवरी) पूजाकी सामग्री करिकै सहित लक्ष्मण रघुनन्दन जो हैं तिनहिं विधि पूर्वक पूजन करि पुनः जो रघुनन्दन के भोजन हेत जो पूर्वही ते संग्रह करि राखी रहै दिव्य फलादि सामग्री तिनहिं लाय आनंद समेत शवरी ८ (अमृतकल्पानि फलानि भक्तितः रामाय ददौ सुगंधैः सानुलेपनैः कुसुमैः पादौ संपूज्य) अमृत के तुल्य स्वाद है जिनमें ऐसे फल प्रेमाभक्ति ते रघुनाथ जी के भोजन हेत देती भई चंदनादि सुगंध लेपन करिकै फूलादि करिकै पायँन को पूजन करती भई षोडशोंपचार यथा । आसनंस्वागतंपाद्यमर्घ्यमाचमनीयकं । मधुपर्काचमनंस्नानंवस्त्रंचाभरणानिच ॥ सुगंधंसुमनो धूपंदीपंनैवेद्यवंदनम् ॥ रीति यह है सो प्रेम ते शवरी आगे पाछे को नेम भूलि गई ९ (आतिथ्यं कृत सहानुजम् रघुश्रेष्ठम् उपविष्टं भक्तिसंपन्ना प्रांजलिः शवरी वाक्यं अब्रवीत्) प्रेम पूर्वक सत्कार किया जब लक्ष्मण सहित रघुनाथ जी आसन पर बैठे तिनहिं देखि भक्ति युक्त हाथ जोरि शवरी वचन बोली १० ॥

अत्राश्रमेरघुश्रेष्ठगुरवोमेमहर्षयः ॥ स्थिताःशुश्रूषणंतेषांकुर्वतीसमुपस्थिता ११ बहुवर्षसहस्राणिगतास्तेब्रह्मणःपदम् ॥ गमिष्यंतोऽब्रुवन्मांत्वंवसात्रैवससाहिता १२ रामोदाशरथिर्जातःपरमात्मासनातनः ॥ राक्षसानांवधार्थायऋषीणां रक्षणायच १३ आगमिष्यतिचैकाग्रध्याननिष्ठास्थिराभव ॥ इदानींचित्रकूटाद्रौ वाश्रमेवसतिप्रभुः १४ यावदागमनंतस्यतावद्रक्षकलेवरम् ॥ दृष्ट्वैवराघवंदग्ध्वादेहंयास्यसितत्पदम् १५ तथैवाकरवंरामत्वद्ध्यानैकपरायणा ॥ प्रतीक्ष्यागमनंतेऽद्यसफलंगुरुभाषितम् १६ ॥

(रघुश्रेष्ठअत्रआश्रमेमे गुरवःमहर्षयः स्थिताःतेषांशुश्रूषण कुर्वन्तीसंउपस्थिता) शवरीकहै कि हे रघुनाथ जी इस आश्रम में मेरे गुरु महाऋषि मतंग वास करते रहैं तिन की सेवा करती हुई मैंहूं उनके समीप रहती रहौं ११ (बहुसहस्राणिवर्षाणिगताः तेब्रह्मणःपदंगमिष्यंतःमांब्रुवन्त्वंअत्रएववससाहितावस) इहां पर वास कर ते हुये बहुत हजार वर्ष बीति गये कछु काल भये ते मेरे गुरु जब ब्रह्मलोक को जाने लगे तब मो प्रति बोले कि तू इस आश्रम को निश्चय करि अंगीकार करि इहैं वास करु १२ (ऋषीणांरक्षणार्थायच राक्षसानांवधार्थायसनातनः परमात्मारामःदाशरथिःजातः) ऋषि साधुन के रक्षा हेत रावणादि राक्षसों के वध करने अर्थ जो आदि सनातन परमात्मा हैं सोई राम नामे दशरथ के पुत्र ह्वै उत्पन्न भयेहैं १३ (इदानींप्रभुःचित्रकूटाद्रौ आश्रमेवसतिएकाग्र ध्यान निष्ठाचस्थिराभव आगमिष्यति) हे शवरी या समय में रघुनन्दन प्रभु चित्रकूट पर्वत पै आश्रम में वास करते हैं तू एकाग्र चित्त ह्वै ध्यान निष्ठा ध्यान में तत्पर पुनः स्थिर ह्वै इसी आश्रम में वास किहे-रहु इहैं रघुनन्दन आवहिंगे १४ (यावत्तस्यआगमनंतावत्कलेवरं रक्षराघवंदृष्ट्वा एवदेहंदग्ध्वा तत्पदंयास्यसि) जब तक तिन रघुनन्दन को आगमन न होय तब तक देह की रक्षा करु आये पर रघुनन्दन के दर्शन करि पुनः देह अग्नि में जराय तब उन के पद को प्राप्त ह्वैहै इति कहि गुरु विधि धानकोगये १५ (रामतथाएवकरवं तेप्रतीक्ष्यआगमनंत्वद्ध्यानैकपरायणागुरुभाषितम् अद्यसफलम्)

हे रघुनन्दन जैसे गुरु कहि गये तैसाही किहेउँ आप के प्रसिद्ध आव ने की अभिलाष किहे आपहीके ध्यान में लगी रही गुरु को कहा वचन आज सफल भया ध्यान को फल मिला १६ ॥

तवसंदर्शनंरामगुरूणामपिमेनहि॥योषिन्मूढाऽप्रमेयात्मन्हीनजातिसमुद्भवा १७ तवदासस्यदासानांशतसंख्योत्तरस्यवा ॥ दासीत्वेनाधिकारोऽस्तिकुतःसाक्षात्तवैवहि १८ कथंरामाद्यमेदृष्टस्त्वंमनोवागगोचरः ॥ स्तोतुंनजानेदेवेशाकिंकरोमिप्रसीदमे १९ श्रीरामउवाच ॥ पुंस्त्वेस्त्रीत्वेविशेषोवाजातिनामाश्रमादयः ॥ नकारणंमद्भजनेभक्तिरेवहिकारणं २० यज्ञदानतपोभिर्वावेदाध्ययनकर्मभिः ॥ नैवद्रष्टुमहंशक्योमद्भक्तिविमुखैःसदा २१ तस्माद्भामिनिसंक्षेपाद्वक्ष्येऽहंभक्तिसाधनम् ॥ सतांसंगतिरेवात्रसाधनंप्रथमंस्मृतम् २२ ॥

(रामतवसंदर्शनम्मेगुरूणांअपिनहि अप्रमेयआत्मन्योषिन्मूढाहीनजातिसमुद्भवा) हेरघुनन्दन आप के दर्शन मेरे गुरुन को निश्चय करिकै नहीं भये प्रमाण रहित असंख्य महिमा शुद्ध परमात्मा रूप इति हे अप्रमेय आत्मन् मैं स्त्री अज्ञान पुनः नीच जाति में उत्पन्न उत्तम क्रिया रहित सहजै अपावन १७ (तवदासस्यदासानां शतसंख्याउत्तरस्य वादासीत्वेअधिकारः नअस्तिसाक्षात्तवएवहिकुतः) हे रघुनन्दन आप को दास एक ताको दास दो ताको दास तीनि ताको दास चारि इसी क्रम सौ के ऊपर जो दास हैं तिनकी दासी होने को मोको अधिकार नहीं है तौ साक्षात् आपहीकी निश्चय करि दासी होउँ यह कैसे योग्य है १८ (मनःवाक्अगोचरः रामत्वंमेअद्यकथंदृष्टः स्तोतुंन जाने किंकरोमि देवेशमेप्रसीद) मन वचन सों अगोचर भाव मन बचन की विषयमें नहीं आवतेहौ हे रघुनन्दन आप जोहैं तिनहिं आजु मैं कैसे दर्शन किया सो नहीं जानि सक्ती हौं अरु आप की स्तुति करना भी नहीं जानती हौं कैसे करौं हे देवनके ईश प्रसन्न होउ १९ (पुंस्त्वेस्त्रीत्वेवाजातिनां आश्रमादयः विशेषःमद्भजने कारणंनभक्तिःएवहिकारणं)रघुनन्दनबोले पुरुष त्व स्त्री त्व अथवा जातिनके आश्रम इत्यादि विशेषता मेरे भजनमें कारण नहीं है भजनमें भक्तिही निश्चय करिकै कारण है २० (सदामत्भक्तिविमुखैः यज्ञदानतपोभिः वा वेदाध्ययनकर्मभिः अहंद्रष्टुंशक्यःनएव) जे सदा मेरी भक्ति सों विमुख हैं तिन पुरुषों करि कै जो यज्ञदान तपस्या वा वेद पढ़ना इत्यादि कर्म करि कै मोको देखिवे को शक्य नहीं है निश्चय करि नहीं पाय सक्ते हैं २१ (तस्मात्भामिनि भक्ति साधनम् संक्षेपात्अहंवक्ष्ये सतांसंगतिःएव प्रथमम्साधनम्स्मृतम्) तिसकारण हे भामिनि अपनी भक्तिके जो साधन हैं तिनहिं संक्षेप थोरे विस्तार में हम कहते हैं संतन की जो संगतिहै सोई निश्चय करि प्रथम साधन जानिये २२ ॥

द्वितीयंमत्कथालापस्तृतीयंमद्गुणेरणम् ॥ व्याख्यातृत्वंमद्वचसांचतुर्थंसाधनंभवेत् २३ आचार्योपासनंभद्रेमद्बुद्ध्यामाययासदा ॥ पंचमंपुण्यशीलत्वंयमादिनियमादिच २४ निष्ठामत्पूजनेनित्यंषष्ठंसाधनमीरितम् ॥ ममंमंत्रोपासकत्वंसांगंसप्तममुच्यते २५ ॥

(मत्कथाआलापःद्वितीयं मद्गुणेरणम्तृतीयं मत्वचसांव्याख्यातृत्वं चतुर्थंसाधनंभवेत्) मेरी कथाको श्रवणगान करना दूसरा साधन करुणा कृपादयाशील सुलभ उदारतादि मेरे गुणनको कीर्तन

करना तीसरा साधनहै मेरेनाम रूपको प्रतिपादनकरनेवाले वचनहैं जामें ऐसे उपनिषदोंको व्याख्यान अर्थ प्रसिद्ध करना चतुर्थ साधनहै २३ (भद्रेऽमाययासदा मत्बुद्ध्या भाचार्यस्य उपासनम्पंचमम्) हे कल्याणरूपे निश्छल ह्वै सदा मेरीबुद्धि करिकै भावमेरी समान मानि गुरुकी सेवा करना पंचम साधन है (पुण्यशीलत्वं यमादिचनियमादि) पुण्यकार्यमें सदा लगेरहना पुनः यमयथा योगशास्त्रे तत्राहिंसासत्यास्तेय ब्रह्मचर्या परिग्रहायमाः । जीवनपरदया अहिंसाहै सत्यबोलना चोरी न करना अस्तेय है स्त्री संग्रह न करना सो ब्रह्मचर्य है सविषय पापवार्ता अंगीकार न करना सो अपरिग्रह है इति यमहै पुनः शौच संतोष तपःस्वाध्यायेश्वर प्रणिधाना नियमः । बाहर स्नानादि भीतर कुवासनात्याग सो शौचहै यथालाभ तामें तुष्टरहना संतोपहै कायक्लेशतपहै सद्ग्रंथ अवलोकन स्वाध्याय है ईश्वरमें प्रीति राखना इत्यादि नियमहै पुनः आदि पदते आसन प्रत्याहार प्राणायाम धारणाध्यान समाधि इत्यादि करना २४ (नित्यंमत्पूजने निष्ठाषष्ठं साधनंईरितं) रामतापिनी आदिरीतिते विधि पूर्वक नित्य मेरे पूजामें निष्ठा अर्थात् विश्वास राखि नित्य नियमते करना छठा साधन कहागयाहै किष्किंधा के चौथे सर्गमें पूजाकी विधि विस्तार ते लिखव ताते इहां नहींलिखा (सांगंममंमंत्रउपासकत्वं सप्तममुच्यते) अंग सहित मंत्र यथा अकडम चक्रते सुसिद्ध शोधि सो बीज आदिदै पुनः बीज चतुर्थ्यंत नाम अंतमें नमः इति राजमंत्र पुनःजीवन जनन ताडन बिमलीकरणादि संस्कार करि पुनः मार्गशीर्ष फाल्गुन ज्येष्ठ भाद्रादि मास शुक्लपक्ष सप्तमी आदि तिथि रविगुरुवार अश्विनी रोहिणी पुष्यादि नक्षत्र सिद्धादि योग वालवादि करण चंद्र ताराशुद्ध मीनादि वलीलग्नचन्द्र सन्मुख योगिनी पीछे इति मुहूर्त में प्रारंभ पुनः कूर्मचक्रते भूमिशोधि लीपि कूर्मचक्र लिखि ताके शीशपर कुशासन डसाय दिनते दिशा शोधि वैठि पुनः मुखते मुख पुच्छते पुच्छ मिला तुलसी माल मंत्रित गुहा गोमुखीमें किया अंगन्यास ध्यान करि गोमुखी उरके लग राखि अंगुष्ठ मध्यमाते गुरिया गहि मंत्रमें मन लगाय प्रत्यक्षर सहस्र वा अधिक जहांतक ह्वैसकै नित्य नेमते रोज उतनैजपै हविष्य स्वल्पान्न भोजन शुद्ध ब्रह्मचर्य रहै ताके निर्विघ्नहेत राम सहस्रनाम स्तवराज रामरक्षा रामकवच पाठकरै इत्यादि अंगन सहित मेरेमंत्रकी उपासना करना भाव श्रद्धासमेत मनलगाय मंत्रजाप करना भक्ति को सतवांसाधन कहागयाहै २५ ॥

मद्भक्तेष्वधिकापूजासर्वभूतेषुमन्मतिः ॥ वाह्यार्थेषुविरागित्वंशमादिसहितंतथा २६ अष्टमंनवमंतत्त्वविचारोममभामिनि ॥ एवंनवविधाभक्तिसाधनंयस्यकस्य वा २७ स्त्रियोवापुरुषस्यापितिर्यग्योनिगतस्यवा ॥ भक्तिःसंजायतेप्रेमलक्षणाशुभलक्षणे २८ भक्तौसंजातमात्रायांमत्तत्त्वानुभवस्तदा ॥ ममानुभवसिद्धस्यमुक्तिस्तत्रैवजन्मनि २९ ॥

(सर्वभूतेषुमन्मतिः मत्भक्तेषु अधिकापूजाशमादिसहितंतथावाह्यार्थेपु विरागित्वं अष्टमं) सब भूतन विषे मेरीबुद्धि करना भावमेरा अंतर्यामी रूप सबमेंव्यापक मानि चराचर ईश्वरमयजानै अरु मेरे भक्तन में अधिक प्रीतिराखिं उनकी सेवा पूजाकरै अंतर मनादि की वासना त्याग इति शमादि सहित तैसे बाहेर इंद्री विषय त्यागेरहै इति विरागयुत रहना अष्टमसाधनहै २६ (ममतत्त्वविचारः नवमम्भामिनिएवंनवविधाभक्तिसाधनंयस्यकस्यवा) लोक व्यवहार असार त्यागि ईश्वर सारांशमें प्रीतिकरना इतिमेरा तत्त्व विचारना नवम साधन हेभामिनि शवरी इसप्रकार नवबिधिके जोभक्ति

के साधनहैं तिनहिं जो कोऊकरे २७ (शुभलक्षणे स्त्रियःवापुरुषस्यवा अपितिर्यग्योनिगतस्य प्रेम लक्षणाभक्तिःसंजायते) हेशुभलक्षणे स्त्रीकेवापुरुषके वातिर्यग्योनि पशुपक्षीआदिकोंके जो नवसाधन होय तौवाके प्रेमलक्षणा भक्ति उत्पन्न होय भाव प्रेम सहित मेरे रूपमें मनलगा रहै और कछुन सुहाय २८(भक्तौसंजातमात्रायां मत्तत्त्वअनुभवः मांअनुभवसिद्धस्य तदातत्रजन्मनिएवमुक्ति) प्रेमा भक्ति उत्पन्नहोतमात्र तामें मेरा तत्त्व अनुभव अर्थात् साक्षात् मेरारूप देखि परत अरु मेरेतत्त्वको अनुभव होनेवालेको तबै तिसी जन्ममें निश्चय करि मुक्ति होती है २९॥

स्यात्तस्मात्कारणंभक्तिर्मोक्षस्येतिसुनिश्चितम् ॥ प्रथमंसाधनंयस्यभवेत्तस्यक्रमे णतु ३० भवेत्सर्वंततोभक्तिर्मुक्तिरेवसुनिश्चितम्॥ यस्मान्मद्भक्तियुक्तात्वंततोऽहं त्वामुपस्थितः ३१ इतोमद्दर्शनान्मुक्तिस्तवनास्त्यत्रसंशयः॥यदिजानासिमेब्रूहि सीताकमललोचना ३२ कुत्रास्तेकेनवानीताप्रिया मेप्रियदर्शना३३शबर्य्युवाच॥ देवजानासिसर्वज्ञसर्वंत्वंविश्वभावन॥तथापिपृच्छसेयन्मांलोकाननुसृतःप्रभो३४ ततोऽहमभिधास्यामिसीतायत्राधुनास्थिता॥रावणेनहृतासीतालंकायांवर्ततेधुना ३५

(तस्मान्मोक्षस्यकारणम्भक्तिःस्यात् इतिसुनिश्चितम् यस्य प्रथमं साधनंभवेत्तस्यतुक्रमेण) ताते मोक्ष होनेको कारण एक भक्तिहीहै दूसरा नहीं यही निश्चयजानौ अरुजाके प्रथम साधन संतनको संग होताहै ताको क्रमकरिकै दूसरा तीसरा चौथा इसी भांति होतेहोते ३० (सर्वं भवेत् ततःभक्तिः एवमुक्तिः सुनिश्चतम् यस्मात् त्वं मत् भक्ति युक्ता अहंत्वां उपस्थितः) सबसाधन होते हैं तदनं तर प्रेमाभक्ति निश्चयकरि होती है सोई मुक्तिको निश्चय कारहै हे शवरी जिसकारण तू मेरीप्रेमा भक्ति युक्तहै इसी कारण हमतेरे समीप प्राप्तभये३१(इतः मत्दर्शनात् तवमुक्तिः अत्रसंशयःन अस्ति कमल लोचना सीता यदि जानासि मे ब्रूहि) इसमेरे दर्शनते तेरी मुक्ति होई यामें संशय नहींहै हे शवरी कमल नयनी सीताको जानती होउ तौ कहौ ३२ (प्रिय दर्शनामे प्रियाकुत्र आस्ते वाकेननीता) अबमाधुर्य लीला दर्शाय रघुनंदन कहत हे शवरी प्रियदर्शन हैं जाके ऐसी मेरी प्रिया जनक नंदिनी कहांहै अरुकिसने हरिलिया ३३ (विश्वभावन सर्वज्ञ देवत्वं सर्वंजानासि तथापिलो काननुसृतः प्रभोयत्मां पृच्छसे) शवरी बोली हे विश्वभावन संसार को बनावनेवाले हे सर्वज्ञसब बात जानने वाले हेराम देव आप सब जानते हो ताहूपर लोक अनुसार प्राकृत मनुष्योंकी नाईं हे प्रभो जोबात मोप्रति पूछतेहो३४(ततः अधुनायत्र सीता स्थिता अहं अभिधास्यीमि रावणेन हृताअधु नालंकायां सीतावर्तते) जो आप पूछतेहौतौ या समयमें जहां सीता स्थितहैं जो हरिलैगया सो सब हाल मैं अभी कहतीहौं राक्षसों को राजा रावण करिकै हरीगई अरुयासमय लंका विषे सीता वर्तमान अशोकवाटिकामें हैं ३५॥

इतःसमीपेरामास्तेपंपानामसरोवरम् ॥ ऋष्यमूकगिरिर्नामतत्समीपेमहान्नगः ३६ चतुर्भिर्मंत्रिभिःसार्द्धंसुग्रीवोवानराधिपः॥भीतभीतःसदातत्रातिष्ठत्यतुलविक्र मः३७वालिनश्चभयाद्भ्रातुस्तदागम्यमृषेर्भयात्॥वालिनस्तत्रगच्छत्वंतेनसख्यं कुरुप्रभो ३८ सुग्रीवेणससर्वंतेकार्य्यंसंपादयिष्यति॥अहमग्निंप्रवेक्ष्यामितवाग्रे रघुनंदन ३९ मुहूर्तंतिष्ठराजेंद्रयावद्दग्ध्वाकलेवरम् ॥ यास्यामिभगवन्रामतव

विष्णोःपरम्पदम् ४० इतिरामंसमामंत्र्यप्रविवेशहुतासनम् ॥ क्षणान्निर्दूयसकलमविद्याकृतबन्धनम् ४१ ॥

(राम इतः समीपे पंपानाम सरोवरम् आस्ते तत्समीपे ऋष्यमूकगिरिः नाम महानगः) हे रघुनंदन इसी आश्रम के समीप थोरिही दूरिपर पंपानाम तड़ाग उत्तम है ताहीके समीप ऋष्यमूक गिरि नाम महानग बड़ाभारी पर्वत है ३६ (वानराणां अधिपः अतुल बिक्रमः सुग्रीवः भीत भीतः चतुर्भिः मंत्रिभिः सार्द्धंतत्रसदा तिष्ठति) वानरोंको राजा अतुलहै पराक्रम जाके सो सुग्रीव भी तनमे भीत अर्थात् डरे हुयेनमेंभी महाडरवंत अरु चारि मंत्रिन सहित त्यहि पहार पर वासकरता है ३७ भ्रातुः वालिनः भयात्च ऋषेः भयात् तत्वालिनः अगम्यं प्रभो तत्र त्वं गच्छ तेन सख्यंकुरु) अपने भाईबालिके डरते उहां सुग्रीव वास करताहै पुनः ऋषिकी शापके डरते सोपर्बत बालिको अगमहै भाव उहां जायतौ भस्म ह्वैजाइ हे प्रभु तहां जाउ तिस सुग्रीव करिकै मित्रता करौ ३८ (ससुग्रीवेणते सर्वं कार्यं संपादयिष्यति रघुनंदन तवअग्रे अहं अग्नि प्रवेक्ष्यामि) सो सुग्रीव करिकै आपको सबकार्य सिद्धहोय हे रघुनंदन अबआपके आगे मैं अग्नि में प्रवेश करोंगी भावपंच भौतिक देहभस्मकरि देउँगी ३९ (यावत् कलेवरम् दग्ध्वा राजेंद्र मुहूर्तं तिष्ठ भगवन् रामतव विष्णोः परं पदम् यास्यामि) जवतक मैं आपनी देहजोहै ताहि भस्मकरौं तवतक हेराजेंद्र मुहूर्तदुइ दण्ड भरि इहांठँभौ देह भस्म करि दिव्यदेहते हे भगवन् रामआप जो विष्णुहौ तिनके परमपद बैकुण्ठ को जांउगी ४०(इति रामं संआमंत्र्य हुताशनम् प्राविवेश अविद्याकृतसकलं बंधनम् क्षणात् निर्द्धूय)इसप्रकार रघुनंदन प्रतिबार्ता करि आज्ञापाय शवरी अग्निमें प्रवेश करती भई अविद्यामाया को किया हुआ तनधन गेहादि सबबंधन क्षणमें नाशकरिकै ४१ ॥

रामप्रसादाच्छबरीमोक्षंप्राप्तातिदुर्लभम् ॥ किंदुर्लभंजगन्नाथेश्रीरामेभक्तवत्सले॥प्रसन्नेऽधमजन्मापिशवरीमुक्तिमापसा४२किंपुनर्ब्राह्मणामुख्याःपुण्याःश्रीरामचिन्तकाः ॥ मुक्तियांतीतितद्भक्तिर्मुक्तिरेवनसंशयः ४३ भक्तिर्मुक्तिविधायिनीभगवतःश्रीरामचंद्रस्यहेलोकाःकामदुघांघ्रिपद्मयुगलंसेवध्वमत्युत्सुकाः ॥ नानाज्ञानविशेषमंत्रबिततिंत्यक्त्वासुदूरेभृशं ॥ रामंश्यामतनुंस्मरारिहृदयेभांतंभजध्वंबुधाः ४४ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसम्बादेआरण्यकाण्डेदशमःसर्गःसमाप्तः १० ॥

(रामप्रसादात्शवरी अतिदुर्लभम् मोक्षंप्राप्ताजगन्नाथे भक्तवत्सलेश्रीरामेप्रसन्नेकिंदुर्लभम् अधम जन्मा शवरी अपि मुक्तिं आपसा) रघुनन्दन के प्रसाद भाव कृपाकरनेते शवरी कैसी भई शिवजी कहत कि जो मुनिन को अत्यंत दुर्लभ भाव दुखौंकरिकै नहीं पावते हैं त्यहि मोक्ष पदको प्राप्त भई तौ जगत् के पालन हारे भक्तन पर अधिक प्रीति राखन हारे श्रीरघुनाथ जीके प्रसन्नहोत संते कौन पदार्थ दुर्लभ है काहे ते अधम जीव हिंसक कुलमें जन्मी जो शवरी सोऊ राम कृपाते मुक्तिको प्राप्त भई ४२ (पुनःश्रीरामचिंतकाः पुण्याः ब्राह्मणामुख्याःमुक्तिंयान्ति इति किंतत्भक्तिः मुक्तिः एवसंशयः न) जो नीचन को मुक्ति दायक भक्ति है तौफिरि श्रीरघुनन्दन को चिन्तवन करने वाले पुण्यात्मा ब्राह्मण मुख्य जो मुक्ति पदको जाँय यह क्या कहना है ताते रघुनन्दन की भक्ति निश्चयकरि मुक्तिहै

यामें संशय नहींहै ४३ (भगवतः भक्ति मुक्ति विधायिनी अतः हे लोकाः कामदुघां श्रीरामचंद्रस्यअंघ्रि पद्म युगलंभाति उत्सुकाः सेवध्वं नाना अज्ञान विशेष मंत्र विदितं भृशं सुदूरे त्यक्त्वा बुधाः स्मरारि हृदये भांतं श्याम तनुं रामं भजध्वम्) भगवत की भक्ति सबको मुक्तिदेन हारी है इसकारण हे लोक जनौ कामधेनु सम सब कामना को देन हारे श्रीरघुनाथ जी के चरण कमल दोऊ जोहैं तिनहिं अत्यंत अभिलाख सहित सेवन करौ अरु अनेक प्रकार को जो अज्ञान विशेष मंत्रभाव देवसाधनादि गुप्त मनोरथ की वितति जो समूहता ताहि भृशं अत्यंत दूरि त्याग करौ हे बुधजनौ कामके शत्रुजो महादेव तिनके हृदय में प्रकाश मान श्याम तनु श्रीरघुनाथ जी तिनहिं भजौ ४४ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतबैजनाथविरचितेअध्यात्मभूषणे आरण्यकाण्डेदशमःप्रकाशःसमाप्तः १० ॥

अथ अध्यात्मरामायण किष्किन्धाकाण्ड सटीक ॥

श्रीमहादेवउवाच ॥ ततःसलक्ष्मणोरामःशनैःपंपासरस्तटम् ॥ आगत्यसरसांश्रेष्ठंदृष्ट्वाविस्मयमाययौ १ क्रोशमात्रंसुविस्तीर्णमगाधामलशम्वरम्॥ उत्फुल्लाम्बुजकह्लारकुमुदोत्पलमंडितम् २ हंसकारंडवाकीर्णंचक्रवाकादिशोभितम् ॥ जलकुक्कुटकोयष्टिक्रौंचनादोपनादितम् ३ नानापुष्पलताकीर्णंनानाफलसमावृतम् ॥ सतांमनःस्वच्छजलंपद्मकिंजल्कवासितम् ४ ॥

सवैया ॥ तकि पंथचले मिलि बात जलै कपिराज मिले करुणा करको । किय सख्य सवै कहि हाल तवै दिय सो सियभूषण अंबरको ॥ वध बंधु सभीत वसौं वनमें दुखसेवक जानि भुजा फरको। हनि बालि तुम्हैं कपिराज करौं सुनि बंदत सो सीता वरको ॥ (ततःरामःसलक्ष्मणः शनैःपंपासरः तटम्आगत्य श्रेष्ठंसरसांदृष्ट्वा विस्मयंआययौ) शिव जी बोले हे गिरिजा तदनंतर रघुनन्दन सहित लक्ष्मण धीरा धीरा चलत पंपासर के किनारे पर आय उत्तम जो तडाग है ताहि देखि आश्चर्यको प्राप्त होतेभये १ (क्रोशमात्रंसुविस्तीर्णं) जाको देखि विस्मय आइ तौकैसा पंपा सरहै जाको कोश भरे को फैलावहै (अमलअगाधशंवरम्) निर्मल अथाह जल भराहै जामें (अम्बुजकह्लारकुमुदउत्पलउत्फुल्लमंडितम्) जलै में उत्पन्न भये कमलादि कह्लार शुक्ल कमल कुमुद कोकी उत्पल अरुणादि साधारण कमल इत्यादि फूले हुये जामें शोभितहैं २ (हंसकारंडवआकीर्णं) हंस अरु कारंडव जो करक्कालै ये पक्षी झुंड के झुंड एकत्र रहते हैं ताते आकीर्ण नाम वहुत भरेहैं (चक्रवाकादिशोभितम्) चक्र वाकी जोडाके जोडा एकत्र शोभा युत हैं (जलकुक्कुटाःकोयष्टयः क्रौंचाःनादःउपनादितम्) जलमुरगा अरु कोयष्टि जो टिटिहरी अरु क्रौंच जो कुरकुंचा इत्यादि अपनी अपनी बोली बोलि रहेहैं३ (नानापुष्पलताःआकीर्णं) कुंदो निवारी चँवेली बेला यूथी इस्कपेंचा इत्यादि अनेक फूलौंते परिपूर्ण लता वृक्षौं पर सघन फैलीहैं तथा आम्र अमरूत पनस नाशपाती जामुनि निंबूआदि अनेक फलन युत सघन वृक्ष चारिहुदिशि घेरे हैं (सतांमनःइवस्वच्छजलम् पद्मकिंजल्कवासितम्) यथा संतन को मन तैसे अमल जल भराहै सो कमल की केसरि करिकै मिली हुई सुगंध ताते जल सुगंधितहै ४ ॥

तत्रोपस्पृश्यसलिलंपीत्वाश्रमहरंविभुः ॥ सानुजःसरसस्तीरेशीतलेनपथाययौ५ ऋष्यमूकगिरेःपार्श्वेगच्छंतौरामलक्ष्मणौ ॥ धनुर्बाणकरौदांतौजटावल्कलमंडितौ ६

पश्यंतौविविधान्वृक्षान्गिरेःशोभांसुविक्रमौ ६सुग्रीवस्तुगिरेर्मूर्ध्निचतुर्भिःसहवान रैः ॥ स्थित्वाददर्शतौयांतौआरुरोहगिरेःशिरः ७ भयादाहहनूमंतंकौतौवीरवरौ सखे ॥ गच्छजानीहिभद्रंतेवटुर्भूत्वाद्विजाकृतिः ८ वालिनाप्रेषितौकिंवामांहन्तुंस मुपागतौ ॥ ताभ्यांसभाषणंकृत्वाजानीहिहृदयंतयोः ९ ॥

(तत्रउपस्पृश्यश्रमहरंसलिलं पीत्वासानुजः विभुःसरसःतीरे शीतलेनपथाययौ) तिस तड़ागमें स्नानकरिकै पुनःपरिश्रमको हरिलेनेवाला शीतल अमल उत्तम जो जलहै ताहिपानकरि पुनः सहित लक्ष्मण रघुनन्दन तड़ागके तीरतीर वृक्षोंकीछायामें ठंढीमार्ग करिके चलतेभये५(धनुःवाणकरौदांतौ जटावल्कलसहितौ रामलक्ष्मणौ ऋष्यमूकगिरेःपार्श्वेगच्छंतौ) धनुष वाण हाथोंमें धारण किहे शीश जटा तनमें वल्कलादि मुनि वसन शोभित ऐसे श्री रामलक्ष्मण दोऊ ऋष्यमूक पर्वतके समीपगये (सुविक्रमौ विविधान् वृक्षान्गिरेः शोभापश्यंतौ) बड़े तेजवंत पराक्रमी चेष्टाते दर्शित होतेहैं पुन. अनेक प्रकारके वृक्ष अरु पर्वतकी जो शोभाहै ताहि देखिरहहैं ६ (चतुर्भिःवानरैः सहितःसुग्रीवःगिरेः मूर्ध्निस्थित्वायांतौ ददर्श.गिरेः शिरःआरुरोह) नलनील सुखेन हनुमान् इनचारि वानरों करिके सहित पुनः सुग्रीव पहारके शिखर पर बैठरहै सो आवतेहुये श्रीरामलक्ष्मण तिनहि देखिकै सभीत ह्वै अधिक पहारके शिखरपर चढ़िगयो ७ (भयात्हनूमंतं आहसखेते भद्रंद्विजस्य आकृतीवटुभूत्वागच्छ जानीहिं वीरवरौतौकौ)डरवशते सुग्रीव हनुमान् प्रतिबोले हेसखे तुम्हारा कल्याण होय कपि आकृति त्यागि ब्राह्मणकी ऐसीआकृति करि विद्यार्थी बनिजाउ वार्ताकरि जानिलेउ ये बीर उत्तम दोऊकौनहैं कहांते आवते कहांको जातेहैं ८ (किंवामांहंतु वालिनाप्रेषितौसंउपागतौ ताभ्यांसंभाषणं कृत्वातयोः हृदयजानीहि) अथवा मेरे मारनेको वालिने तौ नहीं पठावाहै जो मेरेसमीप आय प्राप्तभयेहैं ताते जाय दोनोंते सनेह पूर्वक वार्ता करिकै तिनदोऊ के हृदयकी बात जानिलेउ ९ ॥

यदितौदुष्टहृदयौसंज्ञांकुरुकराग्रतः॥साधुत्वेस्मितवक्त्रोभूरेवंजानीहिनिश्चयं१० तथेतिवटुरूपेणहनुमान्समुपागतः ॥ विनयावनतोभूत्वारामंनत्वेदमब्रवीत् ११ कौयुवांपुरुषव्याघ्रौयुवानौवीरसंमतौ ॥ द्योतयंतौदिशःसर्वाःप्रभयाभास्कराविव १२ युवांत्रैलोक्यकर्तारावितिभातिमनोमम ॥ युवांप्रधानपुरुषौजगद्धेतूजगन्म यौ १३ माययामानुषाकारौचरंताविवलीलया ॥ भूभारहरणार्थायभक्तानांपाल नायच १४ अवतीर्णाविहपरौचरंतौक्षत्रियाकृती ॥ जगत्स्थितिलयौसर्गंलील याकर्तुमुद्यतौ १५ ॥

(साधुत्वेस्मितवक्त्रोभूः एवंनिश्चयं जानीहि यदितौ दुष्टहृदयः कराग्रतः संज्ञांकुरु) जो उरमें साधुता होइगी तौ मुस्कानियुत प्रसन्न मुख होई अरु जो वालिके पठाये मेरे बधहेत आवते हैं तौ मुखपर मलीनता होई इन चेष्टोंते निश्चय जानिलेना जो दोऊदुष्टता हृदय में राखेहोंइ तौ मेरी दिशिदेखि हाथ हलायदेना भावमें भागिजाँउ १० (तथाइतिहनुमान् वटुरूपेणसमुपागतः रामंनत्वा विनयावनतः भूत्वाइदंअब्रवीत्) जैसा आपकहे तैसाही करोंगो इत्यादि कहि हनुमान् ब्रह्मचारी रूप करिकै समीप जायकै रघुनन्दन जो हैं तिनहिं प्रणामकरि विनय पूर्वक नम्रह्वैकै यह बचन बोले११ (पुरुषव्याघ्रौ युवानौवीरसंमतौ भास्करौ इवप्रभयासर्वाः दिशःद्योतयंतौयुवांकौ) हेपुरुषोंमें व्याघ्रवत

सबल अशंक युवा वैसवीरता भरे सूर्यन की तुल्य अपनी प्रभा करिसब दिशों को प्रकाश करने वाले आप दोऊ कोहौ १२ (मममनःइतिभातियुवां त्रैलोक्यकर्तारौजगत्हेतूजगत् मयौयुवांप्रधानपुरुषौ) आपकी चेष्टा तेज बलवंत देखि अनुमान ते मेरे मन में ऐसाभासत कि आप दोऊ स्वर्गभूपाता लादि तीनौ लोकके करता जगत्के आदि कारण जगत्मय आपप्रधान पुरुष नर नारायण हौ १३ (भूभारहरणार्थायचभक्तानां पालनाय माययामानुषःइव आकारौलीलयाचरंतौ) वा भूमिकोभार उतारने हेत पुनः अपने भक्तोंको पालन हेत माया करिकैमानुष की नाई आकार बनाये माधुर्य लीला करि के पृथ्वी पर बिचरते हौ १४ (परौइहअवतीर्णौक्षत्रियाकृतिःचरंतौजगत्सर्गस्थितिलयौ कर्तुंलीलयाउद्यतौ) मायाते पर इहां भूतल में अवतीर्णभयो क्षत्री की ऐसी आकृति देहै बनाये बिचरतेहौ जगत के धर्म की उत्पत्तिभक्तौंकी रक्षा राक्षसों की प्रलय इत्यादि करनेको माधुर्यरूप ते उत्तम लीला करिकै उद्यत सजे तयार हौ १५ ॥

स्वतंत्रौप्रेरकौसर्वहृदस्थाविहेश्वरौ ॥ नरनारायणौलोकेचरंतावितिमेमतिः १६
श्रीरामोलक्ष्मणंप्राहपश्यैनंवटुरूपिणम्॥शब्दशास्त्रमशेषेणश्रुतंनूनमनेकधा १७
अनेनभाषितंकृत्स्नंनकिंचिदपशब्दितम्॥ततःप्राहहनूमंतंराघवोज्ञानविग्रहः १८
अहंदाशरथीरामस्त्वयंमेलक्ष्मणोऽनुजः ॥ सीतयाभार्ययासार्द्धंपितुर्वचनगौर
वात्१९आगतस्तत्रबिपिनेस्थितोहंदंडकेद्विज॥तत्रभार्याहृतासीतारक्षसाकेनचि
न्मम ॥ तामन्वेष्टुमिहायातौत्वंकोवाकस्यवावद २० ॥

(प्रेरकौसर्व हृदयस्थौ इहस्वतंत्रौ ईश्वरौ इतिमेमतिःनरनारायणौ लोके चरंतौ) जैसी इच्छा करौ तैसेही जीवोंकी बुद्धि ह्वैजाय इति प्रेरक अंतर्यामी रूपते सब भूतमात्रके हृदयमें बसेहौ इसी ते स्वतंत्र इच्छाचारी ईश्वरहौ ऐसामेरी बुद्धिमें भासत भावमाधुर्यरूपमें ऐश्वर्यछिपायेहौ इस अनु मान ते मेरी बुद्धिमें आवत कि नरनारायण हौ मानुष रूप लोकमें बिचरतेहौ १६ (श्रीरामः लक्ष्मणं प्राहएनं बटुरूपिणम् पश्य अशेषेण शब्द शास्त्र अनेकधा नूनं श्रुतं) न्याय सम्मतयुत शुद्ध वाक्य हनुमान के बचन सुनि श्री रघुनाथ जी लक्ष्मण प्रतिबोले किहे लक्ष्मण इस ब्रह्मचारी रूप किये हुये पुरुषको देखिये इसने संपूर्ण व्याकरण शास्त्र जोहै ताहि अनेक वार निश्चय करिकै सुनि स्पष्टकरि राखाहै १७ (अनेन भाषितं कृत्स्नं किंचित् अपशब्दितंन) काहेते जाना कि व्याकरण भली भांति स्पष्ट कियेहै कि इन करिकै यावत् बचन कहेगये सो संपूर्ण शुद्धहैं कहूं कछु भी अशुद्ध नहीं भया इत्यादिकहि पुनः (ततः ज्ञान विग्रहः राघवः हनूमंतंप्राह) हनुमानकी विद्वानता लक्ष्म णप्रति कहितदनंतरज्ञान स्वरूप रघुनंदन हनुमान प्रतिबोले १८ (अहंदाशरथीरामः तुअयंमे अनु जःलक्ष्मणः पितुः बचन गौरवात् भार्यया सीतयासार्द्धं) हमतौ अवधेश दशरथके पुत्रराम हैं पुनः ये हमारे छोटे भाईलक्ष्मणहैं अरुइस वेषते यहां आवने को कारण यहहै कि हमारी दूसरी माताने थातीदो वरदानते अपने पुत्रको राज्य अरुहमको तापस वेषते चौदह वर्ष बनवास मांगा इतिसत्य संध पिताको वचन गरूमानि ताते अपनी भार्या सीताकरिकै १९ (अहं दण्डके बिपिनेआगतःतत्र स्थितः द्विजतत्रममभार्या सीताकेनचित् रक्षसाहृता) भार्याबंधुसहितहमदंडक बनमेंआये तहां वास किये पुनः हेद्विजतहैं हमारी भार्या सीतासो किसी राक्षसकरि कै हरिली गई भाव किसी राक्षस ने

हरलिया (तां अन्वेष्टुं इह आयातौत्वंकःवाकस्यवद सोहरीहुई जो सीताहै ताहि ढूढ़वेहेत हम इहां प्राप्तभये अरुतुम कोहौ अरु किसकेपुत्र वा सेवक हौ सो कहौ २० ॥

बटुरुवाच ॥ सुग्रीवोनामराजायोबानराणांमहामतिः॥ चतुर्भिर्मंत्रिभिःसार्द्धंगिरिमूर्द्धनितिष्ठति२१भ्राताकनीयान्सुग्रीवोवालिनःपापचेतसः ॥ तेननिष्काशितोभार्याहृतातस्येहवालिना २२ तद्भयादृष्यमूकाख्यंगिरिमाश्रित्यसंस्थितः ॥ अहंसुग्रीवसचिवोवायुपुत्रोमहामते२३हनूमान्नामविख्यातोह्यंजनीगर्भसंभवः॥ तेनसख्यंत्वयायुक्तंसुग्रीवेणरघूत्तम २४ भार्यापहारिणंहंतुंसहायस्तेभविष्यति इदानीमेवगच्छामआगच्छयदिरोचते २५ ॥

(सुग्रीवोनाममहामतिः यः वानराणां राजा चतुर्भिः मंत्रिभिःसार्द्धं गिरिमूर्द्धनितिष्ठति) बटुरूप हनुमान बोलेकि सुग्रीव है नामजाको महाबुद्धिवंतजो वानरोंको राजाहैसो बड़ेभाईकी भयते चारि मंत्रिन करिकै सहित पहारपर वासकिहेहै २१ (पापचेतसः बालिनः तस्य इहकनीयान् भ्राता सुग्रीवः तेनबालिना निष्का शितः भार्या हृता) पापकर्ममें रतचित्त जिस्को वालिनाम वानरोंको राजाहै तिस्को यह छोटाभाई सुग्रीवहै तिसी बालिने इस्को घरते निकारिदिया सर्वशसहित याकी भार्याको हरिलिया २२ तत्भयात् ऋष्यमूक आख्यं गिरिं आश्रित्यसंस्थितः महामते अहं वायु पुत्रः सुग्रीव सचिवः) तिसवालिकी भयते ऋष्य मूक नाम प्रसिद्ध जो पर्वत है ताकी आश्रित्य अर्थात्मतंग ऋषिकी शापहै जो इहां बालि आवै तौ भस्म ह्वै जाय इति सहायता ते सुग्रीव वास किहे हैं पुनः हे महामते हम पवनके पुत्र सुग्रीवके मंत्री हैं २३ हिअंजनी गर्भसंभवः हनूमान्नाम विख्यातः रघूत्तम त्वयामुक्तं तेन सुग्रीवेण सख्यं) निश्चय करिकै अंजनी के गर्भ ते उत्पन्न भयो हनूमान् नाम प्रसिद्ध हौं हे रघुबंश में उत्तम तुम करिकै युक्त त्यहि सुग्रीव करिकै मित्रता उत्तम है भाव आपको कार्य सुग्रीव करैगा सुग्रीव को कार्य करिबे योग्य आपहौ इति उत्तम सख्यता है २४ (भार्या पहारिणं हंतुं ते सहायः भविष्यति आगच्छ यदि रोचते इदानीं एवगच्छामः) आपकी भार्या को जो हरि लेने वाला है ताहि मारिवे में सुग्रीव करिकै आपकी सहायता होगी ताते वाके पास जाना जो रुचै तौ आप हम अभी उहाँ को चलैं २५ ॥

श्रीरामउवाच ॥ अहमप्यागतस्तेनसख्यंकर्तुंकपीश्वर ॥ सख्युस्तस्यापियत्कार्यंतत्करिष्याम्यसंशयम् २६ हनूमान्स्वस्वरूपेणस्थितोराममथाब्रवीत् ॥ आरोहतांममस्कंधौगच्छामःपर्वतोपरि २७ यत्रतिष्ठतिसुग्रीवोमंत्रिभिर्वालिनोभयात् ॥ तथेतितस्यारुरोहस्कंधंरामोथलक्ष्मणः२८ उत्पपातगिरेर्मूर्द्ध्निक्षणादेवमहाकपिःवृक्षछायांसमाश्रित्यस्थितौतौरामलक्ष्मणौ २९ हनूमानपिसुग्रीवमुपागम्यकृतांजलिः ॥ व्येतुतेभयमायातौराजन्श्रीरामलक्ष्मणौ ३० शीघ्रमुत्तिष्ठरामेणसख्यंतेयोजितंमया ॥ अग्निसाक्षिणमारोप्यतेनसख्यंद्रुतंकुरु ३१ ॥

(कपीश्वर तेन सख्यं कर्तुं अहं अपि आगतः तस्यसख्युः यत्कार्यं तत् अपि असंशयं करिष्यामि) रघुनन्दन बोले कि हे कपीश्वर तिन सुग्रीव करिकै सख्यता करिवे को हम निश्चय करिकै इहाँ आये हैं अरु तिन सुग्रीव सखा को कार्य होई सो निश्चय करिकै बिना संशय करहिंगे २६ (स्वस्वरूपेण

स्थितः हनूमान् अथरामंअब्रवीत् ममस्कंधौ आरोहतां पर्वतस्य उपरिगच्छामः) अपनो वानर स्वरूप प्रकट करिकै बैठिकै हनुमान् अब रघुनन्दन प्रति बोले कि पैदर चलने में परिश्रम है ताते मेरे कांधौं पर दोऊ जने सवार होहु आपको सहित मैं पर्वत के ऊपर चलता हौं २७ (बालिनःभयात् यत्रमं त्रिभिः सुग्रीवः तिष्ठति तथाइतिरामः लक्ष्मणः अथ तस्यस्कंधं आरुरोह) बालिकी भयते जहाँ मंत्रे न सहित सुग्रीव बैठे हैं तहाँ लै चालि हौं हे कपि जैसा कह ते हौ तैसाही करैं गे ऐसा कहि रघुनन्दन लक्ष्मण अब हनुमान् जो हैं तिनके कांधे पर चढ़े २८ (महाकपिः उत्पपात क्षणात् एवगिरेः मूर्द्धिन वृक्षछायां सं आश्रित्य रामलक्ष्मणौ तौस्थितौ) महावली कपि हनूमान् बेगते कूदि क्षणैभरे में पहार के शशिपर पहुँचि तहाँ वृक्ष की छाया के आश्रित्य भाव आतप के रक्षा हेत छायाकी सहायता में राम लक्ष्मण जो हैं तिनहिं बैठारि दिये २९ (हनूमान् अपि सुग्रीवं उपआगम्य कृतांजलिः राजन् ते भयं व्येतु श्रीरामलक्ष्मणौ आयातौ) हनूमान् निश्चय करि सुग्रीव समीप जाय हाथजोरि बोले हे राजन् बालिकी जो तुमको भय रहै सो दूरिभई क्योंकि श्रीराम लक्ष्मण आय तुम्हारे समीप प्राप्त भये ३० (रामेण ते सख्यं मयायोजितं शीघ्रं उतिष्ठ अग्निं साक्षिणं आरोप्य द्रुतंतेन सख्यं कुरु) राम करिकै तुम्हारी जो सख्यता है ताहि मैंने मिलाया है अर्थात् वार्ता करि अंगीकार करा लिया है ताते शीघ्रहीं उठौ अग्नि साक्षी स्थापित करि शीघ्रहीं तिन के संग मित्रता कीजिये ३१ ॥

ततोऽतिहर्षात्सुग्रीवःसमागम्यरघूत्तमं ॥ वृक्षसाखांस्वयंछित्वाविष्टरायददौसुदा ३२ हनूमान्लक्ष्मणायादात्सुग्रीवायचलक्ष्मणः ॥ हर्षेणमहताविष्टाःसर्वएवावतस्थिरे ३३ लक्ष्मणस्त्वब्रवीत्सर्वंरामवृत्तांतमादितः ॥ वनवासाभिगमनंसीताहरणमेवच ३४ लक्ष्मणोक्तंवचःश्रुत्वासुग्रीवोराममब्रवीत् ॥ अहंकरिष्येराजेंद्र सीतायाःपरिमार्गणम् ३५ साहाय्यमपितेरामकरिष्येशत्रुघातिनः ॥ शृणुरामम याद्दष्टंकिंचित्तेकथयाम्यहम् ३६ एकदामंत्रिभिःसार्द्धंस्थितोऽहंगिरिमूर्द्धनि ॥ विहायसानीयमानांकेनचित्प्रमदोत्तमाम् ३७ ॥

(ततःसुग्रीवःअतिहर्षात्रघूत्तमम् संआगम्यस्वयंवृक्ष शाखांछित्वामुदाविष्टरायददौ) तदनंतर सुग्रीव अत्यन्त हर्षते उठि रघुनाथ जीके समीप आय प्रणामकरि कुशल प्रश्नकीन्हे इति शेषः पुनः अपने हाथ ते वृक्षकी शाखा काटि ताके नवीन पल्लव दल तूरि आनंद सहित बिछावने हेत देते भये लक्ष्मणायहनूमान् अदात्च सुग्रीवाय लक्ष्मणः अदात् सर्वएव हर्षेण महता विष्टाः अवतास्थिरे) तथा लक्ष्मण के आसन हेत नवीन दल हनूमान् दीन्हे पुनः सुग्रीव के हेत लक्ष्मण दीन्हे तब सबै निश्चय करि बड़े आनंद सहित पल्लव दलन पर बैठते भये ३३ (तुवनवासाभिगमनंच एव सीता हरणं रामवृत्तांतं सर्वं आदितः लक्ष्मणः अब्रवीत् पुनः माता पिता की आज्ञाते जो बन बास को आवन पुनः निश्चय करिकै सीता को हरण इत्यादि यावत् रघुनाथ जी को हाल है ताहि सब आदिही ते लक्ष्मण जी कहते भये ३४ (लक्ष्मणस्य उक्तवचः श्रुत्वा सुग्रीवः रामं अब्रवीत् राजेंद्र सीतायाः परि मार्गणम् अहंकरिष्ये) लक्ष्मण के कहे हुये बचन सुनि सुग्रीव रघुनन्दन प्रति बोले कि हे राजेंद्र सीता को ढूढनादि सबकार्य मैं करिहौं ३५ (रामशत्रुघातिनः ते सहायं अपिकरिष्ये राममया किंचित्द्दष्टंते अहं कथयामि श्रुणु (हे रघुनाथ जी जब आप शत्रको मारने पर तत्परहोहुगे तब आपकी सहायता निश्चय करिकै करिहौं हे रघुनाथ जी मैंने कछु देखा है

ताहि आपसों कहता हौं आप सुनिये ३६ (एकदा अहं मंत्रिभिः सार्द्धं गिरि मूर्द्धनि स्थितः केन चित् विहायसा उत्तमाम् प्रमदाम् नीयमानाम्) एकसमय में में मंत्रिन करिकै सहित पहार के शीश पर बैठारहों तासमय कोई राक्षस अकाश मार्ग करिकै विमानमें एक उत्तमस्त्री जो है ताहि हरे लिहेजाता रहे सो मै देखा ३७ ॥

क्रोशंतीरामरामेतिदृष्ट्वास्मान्पर्वतोपरि ॥ आमुच्याभरणान्याशुस्वोत्तरीयेणभामिनी ३८ निरीक्ष्याधःपरित्यज्यक्रोशंतीतेनरक्षसा ॥ नीताहंभूषणान्याशुगुहायामक्षिपंप्रभो ३९ इदानीमपिपश्यत्वंजानीहितववानवा ॥ इत्युक्त्वानीयरामाय दर्शयामासवानरः४० विमुच्यरामस्तदृष्ट्वाहासीतेतिमुहुर्मुहुः॥ हृदिनिक्षिप्यतत्सर्वं रुरोदप्राकृतोयथा ४१ आश्वास्यराघवंभ्रातालक्ष्मणोवाक्यमब्रवीत् ॥ अचिरेणैवतेरामप्राप्यतेजानकीशुभा॥ वानरेंद्रसहायेनहत्वारावणमाहवे ४२ ॥

(रामराम इति क्रोशंती पर्वतोपरि अस्मान् दृष्ट्वाभामिनी आभरणानि आशुआमुच्यस्व उत्तरीयेण) रामराम ऐसापुकारि रोवती हुई तासमय पर्वत परबैठे हुये जो हमलोग तिनहिं देखि सो भामिनी सर्वांग भूषण शीघ्रही उतारि आपने ओढ़ने के वसन करिकै वांधि ३८ (अधः निरीक्ष्य परित्यज्यतेनरक्षसा क्रोशंती नीता प्रभो भूषणानि अहंआशु गुहायां आक्षिपं) नीचे हमदिशि देखि वसनमेंबंधे भूषण डारि देती भई तिसराक्षसने रोवती हुईको लिहे चलागया हेप्रभो सो भूषण जो रहैं तिनहिं मैं शीघ्रही उठायके आनि पर्वत गुहामें धरि दिया ३९ (इदानी अपित्वं पश्य जानीहि तववानवाइति उक्त्वा वानरः आनीय रामाय दर्शयामास) इसीसमय निश्चयकरि आपदेखि जानिलीजिये आपकी पत्नीके भूषणहैं वानहीं ऐसाकहि वानर सुग्रीव भूषणोंको आनि रघुनाथजीके अर्थ देखावतेभये४० (रामःविमुच्यतत्दृष्ट्वाहासीताइतिमुहुःमुहुः तत्सर्वंहृदिनिक्षिप्यथा प्राकृत.रुरोद) रघुनाथजी उसगठरी कोछोरि भूषणो कोदेखि विरह शोकते हासीता इत्यादि वारवार कहते हुये उनसब भूषणों को हृदय में लगाय जैसे विषयासक्त प्राकृत संसारी मनुष्य वियोग हानिमें रोवते हैं तैसेही रघुनंदन रोदन करते भये ४१ (भ्रातालक्ष्मणः राघवं आश्वास्य वाक्यं अब्रवीत् वानरेंद्रसहायेन आहवे रावणं हत्वा राम अचिरेण एवते जानकी शुभाप्राप्यते) छोटे भाई जो लक्ष्मण सो विलाप करते देखि रघुनंदन जोहैं तिनहि धीरज दायक वचन बोलते भये कि वानरों के राजा जो सुग्रीव तिनकी सहायता करिकै संग्राम विषे रावण जो है ताहि मारिकै हे रघुनंदन थोरेही काल में निश्चय करि जानकी मंगल रूप आपको प्राप्तहोहिगी ४२ ॥

सुग्रीवोप्याहहेरामप्रतिज्ञांकरवाणिते॥समरेरावणंहत्वातवदास्यामिजानकीम् ४३ ततोहनूमान्प्रज्वाल्यतयोरग्निंसमीपतः ॥ तावुभौरामसुग्रीवावग्नौसाक्षिणितिष्ठति ४४ बाहूप्रसार्यचालिंग्यपरस्परमकल्मषौ ॥ समीपेरघुनाथस्यसुग्रीवःसमुपाविशत् ४५ स्वोदंतंकथयामासप्रणयाद्रघुनायके ॥ सखेश्रृणुममोदंतंवालिनायत्कृतंपुरा ४६ मयपुत्रोथमायावीनाम्नापरमदुर्मदः ॥ किष्किंधांसमुपागत्य वालिनंसमुपाह्वयत् ४७ सिंहनादेनमहतावालीतुतदमर्षणः ॥ निर्ययौक्रोधतामाक्षोजघानदृढमुष्टिना ४८ ॥

(सुग्रीवःअपिआहहे राम प्रतिज्ञां करवाणिते रावणं समरे हत्वा जानकीम् तव दास्यामि) सुग्रीव भी निश्चय करि बोले हेरघुनाथजी मैं प्रतिज्ञा करता हौं कि रावणजोहै ताहि समरमें मारिकैजानकी जीजो हैं तिनहिं आपको मिलायदेहौं ४३(ततःहनूमान्तयोःसमीपतःअग्निंप्रज्वाल्यतौउभौरामसुग्रीवौ अग्नौसाक्षिणि तिष्ठति)तदनंतर हनुमान् तिनदोऊके समीपही अग्निबारि बोले कि मित्रताकरौ इति शेषःतब दोऊ जोराम अरु सुग्रीवते अग्निको साक्षीकरिकै ४४ (अकल्मषौपरस्परंबाहू प्रसार्यच आलिंग्यरघुनाथस्यसमीपेसुग्रीवःसंउपाविशत्) नहीं है छलरूपी पाप जिनमें शुद्धहृदयते परस्पर दोऊहाथ पसारि पुनः हृदयमें लगाय मिलि पुनः रघुनंदनके समीप में सुग्रीव बैठतेभये ४५ (प्रणयात्स्वउदंतंरघुनायकेकथयामाससखेपुरायत्वालिनाकृतंममउदंतंशृणु)प्रीतिपूर्वक सुग्रीव अपना वृत्तान्तरघुनाथजी सों कहतेभये हे सखे पूर्व जो बालिने कियाहै सो मेरा वृत्तान्त बिरोध होनेको हाल सुनिये ४६ (मयपुत्रःमायावीनाम्नापरमदुर्मदः अथकिष्किन्धांसमुपागत्यबालिनंसंउपाह्वयत्) मयदानवको पुत्र माया वी जाको नाम परम दुर्मद अर्थात् बलबीर ताको बड़ाअभिमानी सो एकसमय किष्किंधा में आय बालि जो है ताहि प्रचारिकै बुलावता भया ४७ (महता सिंहनादेनतु बालीतत् अमर्षणः क्रोध ताम्र अक्षः निर्ययौ दृढमुष्टिनाजघान) बड़ाभारी सिंहवत् नादकरि गर्जा सो सुनि पुनः बालि ताको प्रचार न सहिसका ताते कोपवंत भया क्रोध नेत्र लाल भये वाके सन्मुख जाय मुष्टमूका करिकै वाके मारा ४८ ॥

दुद्रावतेनसंविग्नोजगामस्वगुहांप्रति ॥ अनुदुद्रावतंबालीमायाविनमहंतथा ४९ ततःप्रविष्टमालोक्यगुहांमायाविनंरुषा ॥ बालीमामाहतिष्ठत्वंबहिर्गच्छाम्यहंगुहाम् ५० इत्युक्त्वाविश्यगुहांमासमेकंननिर्ययौ ॥ मासादूर्ध्वंगुहाद्वारान्निर्गतंरुधिरंबहु ॥ ५१ तद्दृष्ट्वापरितप्तांगोमृतोबालीतिदुःखितः॥ गुहाद्वारिशिलामेकांनिधायगृहमागतः ५२ ततोऽब्रवंमृतोबालीगुहायांरक्षसाहतः ॥ तच्छ्रुत्वादुःखिताःसर्वेमामनिच्छंतमप्युत॥राज्येऽभिषेचनंचक्रुःसर्वेवानरमंत्रिणः ५३ शिष्टंतदामयाराज्यंकिंचित्कालमरिंदम ॥ ततःसमागतोबालीमामाहपरुषंरुषा ५४ ॥

(तेनसंविग्नःदुद्रावस्वगुहां प्रतिजगामतं मायाविनं अनुदुद्राववाली तथाअहं) तिस मुष्टिककी चोट करिकै व्यकल है सभीत भागताहुआ आपने गुहाप्रति जाताभया ताहि मायावी के पीछे धावा बालि तैसे महूँदौरा ४९ (मायाविनंगुहां प्रविष्टंआलोक्य ततःरुषावाली मांआहत्वंवहिःतिष्ठ अहंगुहां गच्छामि) मायावी जो है ताहि गुहामें पैठत देखि तब क्रोधवंत बालि मो प्रतिबोला कि तू बाहरै रहु मैं गुहामें जाताहौं ५० (इतिउक्त्वासगुहांप्रविश्यएकंमासंननिर्ययौ मासात् ऊर्ध्वंगुहाद्वारात् बहु रुधिरंनिर्गतं) मैं गुहामें जाताहौं ऐसा कहि सो बालि गुहामें पैठिगया एक महीना तक न निसरा महीना ते ऊपर गुहद्वारते बहुत रक्त बाहि निकरा ५१ (तत्दृष्ट्वाबालिमृतः इतिदुःखितः परितप्तांगः गुहाद्वारि एकांशिलां निधायगृहंआगतः) सो रुधिर देखि जानेउ कि बालि मारागया इत्यादि दुःखित तथाआपने मारनेकी भयकरि संतापभरा सबंग तब गुहाके द्वारमें एकशिला लगाय गृहमें आयौं ५२ (ततःअब्रुवत् बालीमृतः गुहायांरक्षसाहतः तत्श्रुत्वा सर्वेदुःखिताः मांअनिच्छंतंअपि उतसर्वेवानर मंत्रिणः राज्येअभिषेचनंचक्रुः) तदनंतर मैं कहताभया कि बालिमराकैसे कि अकेले चलागया गुहामें राक्षसने मारिडारा सो सुनि सबैजन दुखित भये पुनः मोहिं अनिच्छित भाव मोहिं राज्यकी इच्छा

नहींरहे निश्चय करिके तौभी वरवस सव वानर मंत्रीलोग मेरा राज्यमें अभिषेक करिदिया५३ (अरिंदमतदामया किंचित्कालं राज्यशिष्टंततः वालीसमागतः रुषामांपरुषंमाह) हे शत्रुदमन रघुनन्दन ता समयमें मैंने कछुकाल राज्य पालन किया तदनंतर राक्षसको मारि वाली घरको आया मोहिं राजपद पर देखि क्रोधकरि शत्रुवत मानि मोहिं अनेक भांति के कठोर वचन कहा ५४ ॥

वहुधाभर्त्सयित्वामांनिजघानचमुष्टिभि.॥ततोनिर्गत्यनगरादधावंपरयाभिया५५ लोकान्सर्वान्परिक्रम्यऋष्यमूकंसमाश्रितः ॥ ऋषेःशापभयात्सोपिनायातीमं गिरिंप्रभो ५६ तदादिममभार्यांसस्वयंभुंक्तेविमूढधीः॥ अतोदुःखेनसंतप्तोहृतदा रोहृताश्रयः ५७ वसाम्यद्यभवत्पादसंस्पर्शात्सुखितोस्म्यहं ॥ मित्रदुःखेनसंत प्तोरामोराजीवलोचनः ५८ हनिष्यामितवद्वेष्यंशीघ्रंभार्यापहारिणम्॥ इतिप्रतिज्ञा मकरोत्सुग्रीवस्यपुरस्तदा ५९ सुग्रीवोप्याहराजेंद्रवालीवलवतांवली ॥ कथंह निष्यतिभवान्देवैरपिदुरासदम् ६० ॥

(मांवहुधाभर्त्सयित्वामुष्टिभिः निजघानततोनगरात् निर्गत्यपरयाभियाधावं) मोहिं वहुत भांति तावाग्दण्ड करि तर्जन किया पुनः मुष्टिकन करिकै मारा तव मैं नगरते निकरि मारिडारनेकी वड़ी भय करिके भागता फिरा ५५ (सर्वान्लोकान परिक्रम्यऋष्यमूकं संआश्रितः प्रभोऋषेःशापभयात् सः अपिइमंगिरिंनआयाति) स्वर्ग भू पातालादि सव लोकहैं तिनहिं परिक्रमा करि इस ऋष्यमूक गिरिके भरोसे स्थितभयों किस कारण हे प्रभो मतंग ऋषिकी शापकी भयते सो वालीनिश्चय करिकै इस पर्वत पर नहीं भावता है ५६ (तदादिममभार्यां सविमूढधी स्वयंभुंक्ते हृतदारः हृतआश्रयः अतःदुःखेनसंतप्तः) तवते अवतक मेरी जो स्त्री ताहि वह विशेषि मूढवुद्धी वाली आपही भोग करताहै इति हरिगई स्त्री हरिगया घर इसकारण दुःख करिकैसंतप्तहौं ५७ (वसामिअद्यभवत्पादसंस्पर्शात् स्म्यहं सुखितःमित्रदुःखेन राजविलोचन. रामःसंतप्तः) दुखित इहां वास किहेरहेउँ अव आपके पद कमलों में लागेते मैं सुखीभयों इति सुनि मित्रके दुःख करिकै कमल नयन रघुनाथ जी संतप्त भये यही करुणा गुणहै (भगवद्गुणदर्पणेपरदुः खानुसंधानाद्विह्वली भवनंविभोकारुण्यात्मगुणस्त्वेषआर्ता नांभीतिवारकः ५८ (तदासुग्रीवस्यपुरःइतिप्रतिज्ञांअकरोत्भार्यापहारिणम्तवद्वेष्यंशीघ्रंहनिष्यामि) ता समय सुग्रीव के आगे रघुनंदन ऐसी प्रतिज्ञा कीन्हे कि स्त्री को हरनेवाला जो तुम्हारा द्रोही वालिहै ताहिशीघ्रही मारिहौं ५९ (सुग्रीवःअपिआहराजेंद्रवलवतांवलीवालीदेवैः अपिदुरासदम्भवा न्कथंहनिष्यति सुग्रीववोलेहे राजेंद्रवडेवलवंतनमें वलीवाली जो देवतन करिकै जीतना दुर्घट है सो वाली को आपकौनी प्रकारमारौगे जो वहरी ६० ॥

शृणुतेकथयिष्यामितद्वलंवलिनांवर॥ कदाचिद्दुंदुभिर्नाममहाकायोमहावलः ६१ किष्किंधामगमद्राममहामहिषरूपधृक् ॥ युद्धायवालिनंरात्रौसमाह्वयतभीष णः ६२ तच्छ्रुत्वाऽसहमानोऽसौवालीपरमकोपनः ॥ महिषंशृङ्गयोर्धृत्वापा तयामासभूतले ६३ पादेनैकेनतत्कायमाक्रम्यास्यशिरोमहत् ॥ हस्ताभ्यांभ्राम यंश्छित्वातालयित्वापतद्भुवि ६४ पपाततच्छिरोराममातंगाश्रमसन्निधौ॥योजना

त्पतितंतस्मान्मुनेराश्रममण्डले ६५ रक्तवृष्टिःपपातोच्चैर्दृष्ट्वातांक्रोधमूर्छितः ॥ मातंगोवालिनंप्राहयद्यागंतासिमेगिरिम् ६६ ॥

(वलिनांवरश्शृणुतद्वलंतेकथयिष्यामि महाकायःमहाबलः दुंदुभिःनामकश्चित्) हे वलिन में उत्तम हे रघुनाथ जी सुनिये तिस वाली में जैसा बल है ताहि मैं आप सो कहौंगो एक दानव बड़ी भारी देह बड़ा बली दुंदुभी नामे दुर्मद लोक में विचरता हुआ किसी समय में ६१ (रामकिष्किंधां अगमत् महामहिषरूपधृक्भीषणः रात्रौयुद्धायवालिनंसमाह्वयत्) हेरघुनाथ जी वह राक्षस किष्किंधाको आया बड़ा भारी महिष रूप धरे भयंकर रात्री विषे युद्धकरिबे हेत वालीको बुलावता भयाद२ (तत्श्रुत्वाअसहमानःअसौवालीपरमकोपनः शृंगयोःधृत्वामहिषंभूतलेपातयामास)राक्षसकी प्रचार सो सुनि नहीं सहि सका सो वाली क्रोध करि दोऊ सींघन को पकरि महिष लोहै ताहि भूमि तल में गिराय दिया ६३ (एकेनपादेनतत्कायां आक्रम्यमहत्आस्यशिरः हस्ताभ्यांभ्रामयंछित्वा तोलयित्वा भुविअपतत्) भूमि में परेपर एक पांय करि कै दुंदुभी की देह दावे रहे अरु बड़ा भारी जो मुख शिर सो दोऊ हाथन करिकै पकरि मिरोरि वारं वार घुमाय ग्रीवा तेभिन्न करि हाथ में लै भजमाय भूमिपै फेंकि दीन्हे ६४ (रामतत्शिरः मातंगस्यआश्रमसन्निधौ पपातयोजनात्पतितं तस्मात् मुनेःआश्रममण्डले) हे रघुनाथ जी त्यहि दुंदुभी को सो शिरजाय मातंग ऋषिके आश्रम के समीप गिरा काहेते जहांते वाली ने फेंका तहांते चारि कोश पर जाय गिरा तिस कारण ते मुनि के आश्रम के मण्डल विषे गिरा ६५ (रक्तवृष्टिःउच्चैःपपाततांदृष्ट्वा मातंगःक्रोधमूर्छितःवालिनंप्राहमेगिरिम्यदि आगंतासि) उस शिरते रक्त की वृष्टि ऊंचे करि कै गिर ती भई ताहि देखि मातंग ऋषि बड़े क्रोध सो वाली प्रति बोले कि तू ऐसा उपद्रौ करता है अब आज ते मेरे गिरि पै जो फिरि आइहैतो ६६ ॥

इतःपरंभग्नशिरामरिष्यसिनसंशयः ॥एवंशप्तस्तदारभ्यऋष्यमूकंनयात्यसौ६७ एतज्ज्ञात्वाहमप्यत्रवसामिभयवर्जितः ॥ रामपश्यशिरस्तस्यदुंदुभेःपर्वतोपमम् ६८ तत्क्षेपणेयदाशक्तःशक्तस्त्वंवालिनोवधे ॥ इत्युक्त्वादर्शयामासशिरस्तद्गिरिसन्निभं ६९ दृष्ट्वारामःस्मितंकृत्वापादांगुष्ठेनचाक्षिपत् ॥ दशयोजनपर्यंतंतदद्भुतमिवाभवत् ७० साधुसाध्वितिसंप्राहसुग्रीवोमंत्रिभिःसह ॥ पुनरप्याहसुग्रीवोरामंभक्तपरायणम् ७१ एतेतालामहासाराःसप्तपश्यरघूत्तम ॥ एकैकंचालयित्वासौनिःपत्रान्कुरुतेंजसा ७२ ॥

(इतः परंभग्न शिरामरिष्यसिसंशयः नएवंशप्तः तदारभ्यअसौ ऋष्यमूकंनयाति) आजु ते जो फिरि आइ है फाटि कै शिर मरि जाइहै यामें संशय नहीं है इस प्रकार ऋषिशाप दिया तब ते अब तक यह वाली ऋष्यमूकपै नहीं आवताहै ६७ (एतत्ज्ञात्वाभयवर्जितः अहंअपिअत्रवसामि रामतस्यदुंदुभेशिरः पर्वतोपमम्पश्य) यही शाप को हाल जानि कै अभय वाली की भय रहित मैं भी निश्चय करि इहैं वास करता हौं अरु हे रघुनाथ जी तिस दुंदु भी को शिर पर्वत की तुल्य वइ परा है ताहि आप देखि ये ६८ (यदातत्क्षेपणेशक्तःतदात्वंवालिनःवधेशक्तः इतिउक्त्वागिरिसन्निभम्तत्शिरःदर्शयामास) हे रघुनन्दन जो उस शिर को उठाइकै फेंकि देने को समर्थ होउतौ जाना जाय कि आप वाली के मारि डारनेमें समर्थहौ ऐसा कहि पर्वताकार उस शिर को देखावतै भये ६९ (.रामः दृष्ट्वास्मितंकृत्वाचपादस्य अंगुष्ठेनदशयोजनपर्यंतं अक्षिपत्तत्अद्भुतंइवअभवत्) रघुनन्दन

उस शिरको देखि सुग्रीव की अविश्वास विचारि मुसुकान करि कै बाँये पाँय के अगूठा करि कै फेके सो शिर दशयोजन चालिश कोस पर जाय गिरा सो आश्चर्य वत् कौतुक भया ७० (मंत्रिभिः सह सुग्रीवः साधुसाधु इति प्राह भक्तपरायणम् रामं पुनः अपि सुग्रीव. आह मंत्रिन करिकै सहित सुग्रीव साधुसाधु ऐसा बोले भाव सब कार्य साधवे को समर्थ हौ भक्तन पर प्रीति करने वाले, रघुनन्दन प्रति पुनः निश्चय करि सुग्रीवबोले ७१ (रघूत्तमपश्यएते सप्ततालाःमहासाराप्रसौअंजसाएकएकंचाल यित्वा निः पत्रान् कुरुते (हेरघुवंशमें उत्तम और भी देखिये ये साततालके वृक्ष महापुष्ट हैं तिनहिं वाली स्वभुज वल वेग करिकै नीचे पकरि हलाय रूखे पत्तों को गिराय देता रहै ७२ ॥

यदित्वमेकबाणेनविध्वाछिद्रंकरोपिचेत् ॥ हतस्त्वयातदावालीविश्वासोमेप्रजायते ७३ तथेतिधनुरादायसायकंतत्रसंदधे ॥ बिभेदचतदारामःसप्ततालान्महाबलः ७४ सप्ततालान्विनिर्भिद्यगिरिंभूमिंचसायकः ॥ पुनरागत्यरामस्यतूणीरेपूर्ववत्स्थितः ७५ ततोतिहर्षात्सुग्रीवोराममाहातिविस्मितः ॥ देवत्वंजगतांनाथः परमात्मानसंशयः ७६ मत्पूर्वकृतपुण्योघैःसंगतोद्यमयासह ॥ वांभजंतिमहात्मानःसंसाराद्विनिवृत्तये ७७ त्वांप्राप्यमोक्षसचिवंप्रार्थयेहंकथंभवम् ॥ दाराःपुत्राधनंराज्यंसर्वंत्वन्माययाकृतम् ७८ ॥

(यदिचेत्त्वं एकबाणेन विध्वा छिद्रं करोपि तदावाली त्वयाहतः मे विश्वासः प्रजाय ते) हे रघुनन्दन जो कदाचि आप एकै बाण करिकै सातौ ताल वृक्षों को वेधि छिद्र करि देवैं तव वाली आप करिकै वधहोइगो यह मोको विश्वास उपजैगी ७३ (तथाइति धनुः आदाय तत्रसायकं संदधेच तदारामः महाबलः सप्ततालान् विभेद) जो कहते हो सोई करौं गे ऐसा कहि धनुप लयतामें बाण संधानि पुनः तब रघुनन्दन महा वली बाण चलाय सातौ ताल जो हैं तिनहि विशेषि भेदन कीन्हे ७४ (सप्ततालान् च गिरिं भूमिं विनिर्भिद्य सायक. पुनः आगत्य पूर्ववत् रामस्य तूणी रे स्थितः) सातौ ताल जो हैं तिनहि पुनः ताके पाछे पहार भूमि जो रहे तिनहि भेदन करि बाण पुनः लौटि पूर्व की नाईं रघुनन्दन के तरकस में स्थित भया ७५ (ततः सुग्रीवः अति विस्मितः अति हर्षात् रामं आह देवत्वं जगतां नाथः परमात्मा संशयः नः तदनंतर सुग्रीव अत्यंत आश्चर्य वंत ह्वै जानि लिये कि ईश्वर हैं ताते अत्यंत हर्षते रघुनन्दन प्रति बोले हे देव आप जगत् के पालन हारे नाथ परमात्मा हौ यामें संशय नहीं है ७६ (पूर्वमत्कृतपुण्यओघैः अद्यमया सहसंगतः संसार विनिवृत्तये महात्मानः वां भजंति). पूर्व जन्मों की मेरी करी हुई पुण्य समूह उदय भई त्याहि प्रभाव करिकै या समय में हम करिकै सहित आपकी संगति भाव मित्रता को प्राप्त भया यही सिद्धांत है यथा महा रामायणे । येकल्पकोटिसततं जपहोमयोगैर्ध्यानैः समाधिभिरहोरतब्रह्मज्ञानात् ॥ तेदेवि धन्यमनुजाहृदिवाह्यशुद्धाभक्तिस्तदाभवतितेष्वपिरामपादौ ॥ पुनः संसार बंधन छूटवे हेत महात्मा लोग आपको भजते हैं ७७ (त्वंमोक्षसचिवं प्राप्य अहं भवं कथं प्रार्थये दाराः पुत्राधनं राज्यं त्वत् मायया कृतं सर्वं आप मोक्ष देन हारे तिनको सचिव अर्थात् मित्रभाव को प्राप्त भया मैं सो भव जो संसार ताकी प्राप्ती कैसे आपते प्रार्थना करौं क्योंकि संसार में स्त्री पुत्र धन राज्य सो तौ आपकी माया करिकै किये हुये सब पदार्थ भव के साधक भक्ति के बाधक हैं ७८ ॥

अतोऽहंदेवदेवेशनाकांक्षेऽन्यत्प्रसीदमे ॥ आनंदानुभवंत्वाद्यप्राप्तोहंभाग्यगौरवा त्७९मृदर्थंयतमानेननिधानमिवसत्पते॥आद्यविद्यासंसिद्धंबंधनंछिन्नमद्यनः८० यज्ञदानतपःकर्मपूर्तेष्टादिभिरप्यसौ ॥ नजीर्यतेपुनर्दार्ढ्यंभजतेसंसृतिःप्रभो ८१ त्वत्पाददर्शनात्सद्योनाशमेतिनसंशयः॥क्षणार्धमपियच्चित्तंत्वयितिष्ठत्यचंचलः८२ तस्याज्ञानमनर्थानांमूलंनश्यतितत्क्षणात् ॥ तत्तिष्ठतुमनोरामत्वयिनान्यत्रमे सदा ८३ ॥

(अतः अन्यत् ना कांक्षे देवेश देव में प्रसीद भाग्य गौरवात् अहं आनंदानु भवं त्वाद्य प्राप्तः) स्त्री पुत्रादि लोक बंधन है इसकारण आपको भजन सेवाय मोहि अन्य पदार्थ की कांक्षा नहीं है हे देवेश मेरे ऊपर प्रसन्न होहु क्योंकि भाग्यकी अधिक ताते मैं आनंद अनुभव रूप आपको अब प्राप्त भयो ७९ (सत्पते मृदर्थं यतमानेन निधानं इवअनादि अविद्या संसिद्धंबंधनंनः अद्यछिन्नं) हे सत्पुरुषों के पाल ने वाले रघुनाथ जी आप कौन भांति मोको प्राप्त भयो जैसे कोऊ माटी लै जाने हेत भूखननादियत्न करताहै तहाँ निधान जो है धनराशि सो पाइजाय ताही भांति मैं प्राण घात बचावने हेत आपको खोज करावा तामें परमात्मा आप प्राप्त भये ताते अनादि जो कारणकार्य रूप अविद्या माया तामें लगे रहेते सिद्धभया जो बिषय बासना रूप जीव को बंधन सो मेरा बंधन आज कट गया इति अपूर्व लाभ पाय किस हेत चूकों ८० (पूर्तइष्टादिभिः अपि यज्ञ दान तपः असौकर्म भजते प्रभो संसृतिः न जीर्यते पुनः दार्ढ्यं) बावली कूप तड़ाग धर्मशाला देवालयादि पूर्त कर्महैं यज्ञ तपादि इष्ट कर्म हैं यथा त्रिष्वथ क्रतु कर्मेष्टं पूर्तं खातादि कर्म यत् इत्यमरः सुग्रीव कहत कि पूर्त इष्टादि निश्चय करिकै यज्ञ दान तप ये कर्म करने ते हेप्रभो संसार जीर्ण नहींहोतपुनः पुष्टहोत भाव कर्म करने ते बासना बढ़ते जात है ८१ (त्वत्पाददर्शनात् नाश मेति संशयः न यत्चित्तं अचंचलः क्षणार्धं अपि त्वयि तिष्ठति) आपके पद कमलोंके दर्शन मात्रते संसार शीघ्रहीं नाशको प्राप्त होत पुनः जिस को चित्त चंचलता त्यागि क्षणको आधा पांचपला जो आप विषे स्थिर होइतौ ८२ (तस्यअनर्थानां मूलं अज्ञानं तत्क्षणात् नश्यति तत्मनः में राम त्वयि सदा तिष्ठतु अन्यत्र न) ताके अनर्थन को मूल अज्ञान उसी क्षण नाशहोता है सो मन मेरा हे रघुनाथ जी आप बिषे सदा बसा रहै अरु अन्यत्र अर्थात् स्त्री पुत्र राज्य धन मानादि और किसी बस्तुमें मन न लागै ८३ ॥

रामरामेतियद्वाणीमधुरंगायतिक्षणम् ॥ सब्रह्महासुरापोवामुच्यतेसर्वपातकैः ८४ नकांक्षेविजयंरामनचदारसुखादिकम् ॥ भक्तिमेवसदाकांक्षेत्वयिबंधविमोचनीम् ८५ त्वन्मायाकृतसंसारस्त्वदंशोऽहंरघूत्तम॥ स्वपादभक्तिमादिश्यत्राहिमांभवसंकटात् ८६ पूर्वंमित्राण्युदासीनास्त्वन्मायावृतचेतसः ॥ आसन्मेद्यभवत्पाददर्शनादेवराघव ८७ सर्वंब्रह्मैवमेभातिक्वमित्रंक्वचमेरिपुः ॥ यावत्त्वन्माययाबद्धस्तावद्गुणविशेषता ८८ सायावदस्तिनानात्वंतावद्भवतिनान्यथा ॥यावन्नानात्वमज्ञानात्तावत्कालकृतंभयम् ८९ ॥

(यत्वाणीरामरामइति मधुरंक्षणंगायति सब्रह्महावासुरापः सर्वपातकैः मुच्यते) जाकीबाणीराम रामइत्यादि मधुर स्वरते क्षणमात्र गानकरत सो चहै ब्रह्मघाती होइ चहैमदिरापीने वालाहोयइत्यादि

सब पापन करिके छूटिजाय ८४ (रामनविजयंकांक्षे चनदारसुखादिकं वंधविमोचनीम् त्वयिभक्तिं एवसदाकांक्षे) हे रघुनाथ जी अब न मोंको वालीके वधरूप विजय की कांक्षा है न स्त्री सुखादि की कांक्षाहै भव वंधनते जीवको छुड़ावन हारी जो आपविषे भक्तिहै ताहि निश्चय करि सदाकांक्षाहै ८५ (रघूत्तमत्वत् मायाकृतसंसारः अहंत्वत्अंशः स्वपादभक्तिंआदिश्य भवसंकटात्मांत्राहि) हेरघुवंशनाथ आपकी माया को कियाहुआ संसार रूप सागरमें बूड़ता हुआ मैं आपको अंश हौं शरण आया ताते अपने पद कमलौंकी जो भक्तिहै ताहि उपदेश करिके भवसंकट ते मोहिं रक्षाकरौ ८६ (पूर्वत्वत् मायया आवृतचेतसः मित्रअरिउदासीनाः आसन्राघव भवत्पाददर्शनात् एवमेअद्य) पूर्व आपकी माया करिके घेराहुआ चित्त जो मैं ताको हित करने वाला सो मित्र अनहित करता सो शत्रु जासों प्रयोजन नहीं सो उदासीन इत्यादि होतेभये हे रघुनन्दन आपके पद कमलों के दर्शन भयेते निश्चय करिकै मोंको अब ८७ (सर्वमेवब्रह्मएवभाति कमित्रचकमेरिपुः त्वत्मायायावत्वद्धः तावत्दगुण विशेषता) सब भूतमात्र मोंको ब्रह्महो निश्चय करिके प्रकाशमान देखाताहै तब कौन मित्रहै पुनः कौन मेरा शत्रुहै यहतौ आपकी माया करिकै जबतक जीव बँधारहताहै तबैतक गुणोंकी विशेपता भाव रजोगुण की विशेषता ते मित्रहै तमोगुण की बिशेषताते शत्रु है सतोगुण की विशेषताते उदासीनहै ८८ (सायावत्अस्ति तावत्नानात्वंभवति अन्यथानअज्ञानात् यावत्नानात्वं तावत्कालकृतं भयं) सो माया जबतक जीवमें बनीहै तबतक शत्रु मित्रादि अनेक भांति की भेद बुद्धी बनीरहतीहै इसी व्यापार की सेवाय परमार्थादि और कछु नहीं होताहै अज्ञान ते जबतक नानात्व अर्थात् भेद बुद्धीते शत्रुमित्रादि अनेक बने रहते हैं पुनः जबतक भेद बुद्धी है तबतक काल की भय है भावजन्म मरणादि छूटता नहीं है ८९ ॥

अतोऽविद्यामुपास्तेयःसोंऽधेतमसिमज्जति ॥ मायामूलमिदंसर्वंपुत्रदारादिबंधनम्॥अतोसारयमायांत्वंदासींतवरघूत्तम९० त्वत्पादपद्मार्पितचित्तवृत्तिस्त्वन्नामसंगीतकथासुवाणी ॥ त्वद्भक्तसेवानिरतौकरौमेत्वदंगसंगंलभतांमदंगम् ९१ त्वन्मूर्तिभक्तान्स्वगुरुंचचक्षुःपश्यत्वजस्रंश्रृणोतुकर्णः ॥ त्वज्जन्मकर्माणिचपादयुग्मम्व्रजत्वजस्रंतवमंदिराणि ९२ अंगानितेपादरजोविमिश्रतीर्थानिविभ्रत्वहिशत्रुकेतो ॥ शिरस्त्वदीयंभवपद्मजाद्यैर्जुष्टंपदंरामनमत्वजस्रम् ९३ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामयणेकिष्किंधाकाण्डेप्रथमःसर्गः १ ॥

(अतःयःअविद्यां उपासते सःअंधेतमसिमज्जति पुत्रदारादिसर्ववंधनम् इदंमूलंमायाअतःरघूत्तम तवदासींमायांत्वंउत्सारय) इस कारण जो जन मायाको उपासते भाव बिषय सेवन करताहै सोई अंधतम जो संसार सागर ताहीमें बूडा परा रहताहै पुत्र स्त्री आदि जो सब जीवको बंधनहैं इसीकी मूलमाया है इसकारण हे रघुनाथ जी आपकी दासी जो मायाहै ताहि दूरिकरिये शुद्धरूपते आपनी कैंकर्यता मे लगाइये ९० (चित्तवृत्तिःत्वत् पादपद्मार्पितसुवाणी त्वत्नामसंगीत कथामें करौत्वत् भक्तसेवानिरतौमत्अंगंत्वत्अंगसंगंलभतां) मेरे चित्तकी वृत्ति आपके पदकमलौं में अर्पितरहै मेरी सुंदर वाणी आपके नामस्मरण संगीत कीर्तिगान कथा कीर्तन करै मेरेहाथ दोऊआपकेभक्तोंकीसेवा में लगेरहैं मेरासर्वांग आपके अंगसंग को प्राप्तहोइ ९१(त्वत्मूर्तिभक्तान्स्वगुरुंचक्षुः पश्यतुत्वत्जन्म

कर्माणिसअजस्रंकर्णौशृणोतु चतवमंदिराणिअजस्रंपादयुग्ममूव्रजतु) आपकी मूर्ति जो है आपके भक्त जो हैं पुनः आपने गुरूजोहैं तिनहि मेरे नेत्र देखतरहैं आपके जन्म कर्मकी जो गाथा है सो नित्यही मेरेकान सुनैं पुनः आपके मंदिरन को नित्यही मेरे पाँय दोऊ जावाकरैं ९२ (अहिशत्रुके तोतेपादरजःविमिश्रतीर्थानिअंगानि विभ्रतुरामभवपद्मजाद्यैः जुष्टंत्वदीयंपदंअजस्रं शिरःनमतु) हे गरुड़ध्वजआपके पाँयनकी रजमिले हुये अयोध्या मिथिला चित्रकूटादि तीर्थोंको जलरजादि मेरा अंगधारण करै हे रघुनाथजी शिवब्रह्मादि देवतों करिकै सेवित जो आपके पदहैं तिनहिं नित्यही मेरा शिर प्रणामकरै ९३ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियबल्लभपदशरणागतबैजनाथबिरचितेअध्यात्मभूषणे किष्किंधाकांडेश्रीरामसुग्रीवसमागमवर्णनोनामप्रथमःप्रकाशः १ ॥

इत्थंस्वात्मपरिष्वंगनिर्द्धूताशेषकल्मषम् ॥ रामःसुग्रीवमालोक्यसस्मितंवाक्यमब्रवीत् १ मायांमोहकरींतस्मिन्वितन्वन्कार्यसिद्धये ॥ सखेत्वदुक्तंयत्तन्मांसत्यमेवनसंशयः २ किंतुलोकावदिष्यंतिमामेवंरघुनंदनः ॥ कृतवान्किंकपींद्रायसख्यंकृत्वाग्निसाक्षिकम् ३ इतिलोकापवादोमेभविष्यतिनसंशयः ॥ तस्मादाह्वयभद्रंतेगत्वायुद्धायवालिनम् ४ बाणेनैकेनतंहत्वाराज्येत्वामभिषिंचये ॥ तथेतिगत्वासुग्रीवःकिष्किंधोपवनंद्रुतम् ५ ॥

दोहा ॥ मित्रदुखितलखिबालिवधि । त्यहिदीन्हेनिजधाम ॥ रघुवरकरुणासिंधुको । पुनिपुनिकरौं प्रणाम ॥ (स्वात्मपरिष्वंगअशेषकल्मषंनिर्द्धूतइत्थंसुग्रीवंआलोक्यरामःसस्मितंवाक्यंअब्रवीत्) अपने अंगमें लगाय लीन्हे ताके प्रभावते अनेक जन्मके संचित संपूर्ण पाप दूरिभयेहैं जाके इसप्रकार शुद्ध ज्ञानयुत रामानुरागी जो सुग्रीव ताहि देखिरघुनंदन मुसुकानि सहित वाक्य बोले मुस्काने को भाव कि अबही तौ ज्ञान है जब स्त्री राज्यपावैगो तब पुनः ज्ञानमेरा सनेह भूलिजाइगो वाहास में माया बसत सो मुसुकाय कै माया विस्तारे १ (कार्यसिद्धयेमोहकरींमायांतस्मिन्वितन्वन्सखेयत्मां त्वत् उक्तंतत्सत्यंएवसंशयःन) जो कार्य किया चाहते हैं ताकी सिद्धीके अर्थ मोहकरने वाली जो अविद्या माया है ताहि सुग्रीवमें विस्तारि रघुनंदन बोले हे सखेसुग्रीव जो बातमोप्रति तुमने कहासो सब सत्य है निश्चय करिकै यामें संशयनहीं २ (किंतुमांलोकाःएवंवदिष्यंति अग्निसाक्षिकम्कपींद्राय रघुनदनःसख्यंकृत्वाकिंकृतवान) परंतुमोहिं लोग सब इसप्रकार कहैंगे कि देखो अग्नि को साक्षी करि सुग्रीव को बानरौं को राजा बनायबे अर्थ रघुनंदन मित्रताकरि बालि बधकी प्रतिज्ञा करि क्या किया जो नमारा ३(इतिमेलोकापवादोभविष्यतिसंशयःनतस्मात्गत्वातेभद्रंयुद्धायवालिनंअह्वय) प्रतिज्ञापूरी न कियेतौभूठेहैं इत्यादि मोको लोकमें अपबाद अयशहोइगो यामें संशय नहीं तातेजाउ तुम्हारा कल्याण होय युद्धकरने हेत बालिको बुलावौ ४(एकेनवाणेनतंहत्वात्वांराज्येअभिषिंचयेतथा इतिसुग्रीवःद्रुतंकिष्किंधोपवनंगत्वा) एकहीबाणकरिकै उसबालिको मारित्वोंहि राज्य विषेअभिषेक करिहौं जैसी आपकी आज्ञा तैसाही करिहौं ऐसाकहि सुग्रीव तुरतही किष्किंधाके उपवनमेंगये ५ ॥

कृत्वाशब्दंमहानादंतमाह्वयतवालिनम् ॥ तच्छ्रुत्वाभ्रातृनिनदंरोषताम्रविलोचनः ६ निर्जगामगृहाच्छीघ्रंसुग्रीवोयत्रवानरः ॥ तमापतंतंसुग्रीवःशीघ्रंवक्षस्यताडयत् ७

सुग्रीवमपिमुष्टिभ्यांजघानक्रोधमूर्छितः ॥ बालीतमपिसुग्रीवएवंक्रुद्धोपरस्प रम् ८ अयुध्येतामेकरूपौदृष्ट्वारामोतिविस्मितः ॥ नमुमोचतदाबाणंसुग्रीववधशं कया ९ ततोदुद्रावसुग्रीवोवमन्रक्तम्भयाकुलः ॥वालीस्वभवनंयातःसुग्रीवोराम मब्रवीत् १० किंमांघातयसेरामशत्रुणाभ्रातृरूपिणा ॥ यदिमद्धननेवांछात्वमेवज हिमांविभो ११ ॥

(वालिनंतंमह्वयतमहानादंशब्दंकृत्वाभ्रातृनिनदंतत्श्रुत्वारोषताम्रविलोचनः) वालीजो है ताहि बुलावता हुआ सुग्रीव महाध्वनिगर्जि शब्दकिया भाईकी ललकार शब्दसोसुनिवालिके रोषकरिनेत्र लालिहै गये ६ (गृहात्शीघ्रंनिर्जगामयत्रसुग्रीवःवानरःतंआपतंतंसुग्रीव.शीघ्रंतंवक्षसिअताडयत्) गृहते निसरि शीघ्रही जाताभया जहाँ सुग्रीववानर खड़ाहै वाको आवत देखिसुग्रीव शीघ्रही तिस वाली की छाती में मुष्टिक मारता भया ७ (क्रोधमूर्छितःवालीसुग्रीवं अपिमुष्टिभ्यांजघानसुग्रीवतं अपिएवंक्रुद्धःपरस्परम्) क्रोधकरिदेहकी सुधि नहीं ऐसा जो वालीसो सुग्रीव जो है ताहि मुष्टिकन करिके मारता भयापुनः सुग्रीव वालिको मारा इसी प्रकारक्रोधित परस्पर दोऊ ८ (अयुधेत्एकरूपौ तांदृष्ट्वारामःअतिविस्मितःसुग्रीववधशंकयातदावाणंनमुमोच) युद्धकरतमें एकही तुल्यदोऊ के रूप तिनहिं देखिरघुनाथ जी अत्यंत विस्मित सुग्रीवके लागिजाने की शंकाकरिकै ता समय में वाणन छोड़े भावदोऊ भाई एकै रूपचिह्ननहींतो सुग्रीवके न वाणलागिजाय ९ (ततःरक्तंवमन्भयाकुलः सुग्रीवःदुद्राववालीस्वभवनंयातःरामंसुग्रीवःअब्रवीत्) तदनंतररक्त मुखते उगिलताहुवा वधकी भय करिके आकुलसुग्रीव भाग वालि आपने घरको गया इहाँ रघुनंदन प्रतिआय सुग्रीव बोले १० (राम भ्रातृरूपिणाशत्रुणाकिंमांघातयसे विभोयदिमत्हननेवांछामांत्वंएवजहि) सुग्रीव बोले हे रघुनाथ जी भाई रूप शत्रुकरि कै क्यों मेरे प्राणघात करावते हौ भावक्यों नहीं वाली को मारेउ हे प्रभुआप को जो मेरे मारने की वांछाहोइतौमोहिं आपही निश्चय करि मारिये ११ ॥

एवंमेप्रत्ययंकृत्वासत्यवादिन्रघूत्तम ॥ उपेक्षसेकिमर्थंमांशरणागतवत्सल १२ श्रुत्वासुग्रीववचनंरामःसाश्रुविलोचनः ॥ आलिंग्यमास्मभैपीस्त्वंदृष्ट्वावामेकरू पिणौ १३ मित्रघातित्वमाशंक्यमुक्तवान्सायकंनहि ॥इदानीमेवतेचिह्नंकरिष्ये भ्रमशांतये १४ गत्वाह्वयपुनःशत्रुंहतंद्रक्ष्यसिवालिनम् ॥ रामोहंत्वांशपेभ्रातर्ह निष्यामिरिपुंक्षणात् १५ इत्याश्वास्यससुग्रीवंरामोलक्ष्मणमब्रवीत् ॥ सुग्रीवस्य गलेपुष्पमालामामुच्यपुष्पितां १६ प्रेषयत्वमहाभागसुग्रीवंवालिनंप्रति॥लक्ष्म णस्तुतदाबध्वागच्छगच्छेतिसादरम् १७॥

(शरणागत वत्सल सत्यवादिन् रघूत्तम एवं मे प्रत्ययं कृत्वा किं अर्थं मां उपेक्षसे) हे शरणागत पर प्रीति करणे वाले हे सत्यबोलने वाले हे रघुवंश में उत्तम भाव शरण पाल हैं तौ मेरी पालना करैं गे सत्यवादी हैं तौ जो कहैं सो करैं गे रघुवंश में उत्तम हैं तौ दीन जानि मेरी विपत्ति हरि लेइंगे इसप्रकार मोको विश्वास कराय अब किस हेत मोहिं त्याग तें हौ १२ (सुग्रीववचनं श्रुत्वा रामः साश्रुविलोचनः आलिंग्य मास्मभैपीस्त्वं एकरूपिणौ वां दृष्ट्वा) सुग्रीव के आरत वचन सुनिरघु- नन्दन करुणावश सहित अश्रु नेत्र सुग्रीव को हृदय में लगाय बोले हे सखे मत डरौ तुम जो वाली

वचा ताको कारण यह है कि एकही रूप दानों तुम देखिपरे १३ (मित्रघाति त्वं आशंक्य सायकं नहि मुक्तवान् भ्रमशांतये इदानीं एव ते चिह्नं करिष्ये) दोऊ एकरूप तौ मित्र सुग्रीवको न घात है जाय इस शंका करि बाण को नहीं छोड़ा सो भ्रम मिटाइवे हेत इसी समय निश्चयकरि तुम्हारे चिह्न किहे देताहौं १४ (गत्वापुनः शत्रुं आह्वय वालिनं हतं द्रक्ष्यसि अहंरामः भ्रातः त्वां शपेक्षणात् रिपुंह निष्यामि) जाउ पुनः शत्रुको बुलावो वालि जो है ताहि मरै देखि हौ क्यों कि मैं रामहौं भाव जो कहौं सोई करौं हे भाई तुम्हारी सपहै क्षणे भरेमें शत्रुको मरिहौं १५ (इतिससुग्रीवं आश्वास्य रामः लक्ष्मणम् अब्रवीत् पुष्पितांपुष्पमालां सुग्रीवस्य गलेआमुच्य) इसप्रकार प्रभु सुग्रीवको धैर्य दयलक्ष्मणप्रति बोले हे लक्ष्मण फूले हुये फूलों की माला सुग्रीव केगरे में बाँधि देउ १६ (महाभाग वालिनं प्रति सुग्रीवं प्रेपयस्वतु तदा लक्ष्मणः बध्वा गच्छ गच्छ इति सादरम्) हे महाभाग वाली प्रति सुग्रीव जो है ताहि पठवो यह सुनि पुनः ता समय में लक्ष्मण फूलों की माला गले में बांधि पुनः हे सुग्रीव जाउ जाउ ऐसा वचन सहित आदर कहे इहाँ जो प्रभुकहे कि तुमदोऊ एकै रूप त्यहि भ्रम ते मित्रघात की भय करिकै मैं बाण नहीं छांड़यों ये वचन संदग्धहै क्योंकि प्रभु सर्वज्ञ प्रभुको बाण संकल्प अनुकूल कार्य करणे वाला तब ये वचन वाचकार्थ कैसे सिद्ध हैं अरु रघुनाथ जी सत्य वादी हैं सत्यही कहे पुनः वालि बधकी संकल्प करि सुग्रीव को पठाये ताते नर नाट्य को भी अभाव ताते यह अभिप्राय है कि शत्रु मित्र भाव रहित सबसों एकरस प्रभु हैं तहांदर्पणे मुखवत् न्याय करि जो जैसा भाव राखत ताको तैसाही प्रभु देखात यथा गीतायां॥ येयथामांप्रपद्यन्तेतां स्तथैवभजाम्यहं॥ पुनःश्रुतितद्यथायथोपासतेतथातथातद्भवति॥ यहि रीतिते प्रभु विचारे कि सुग्रीव को मित्र भाव है अरु वालि कोई भाव प्रसिद्ध नहीं किया अरु जो वध की प्रतिज्ञा है सो सुग्रीव के दुख निवारणहेत है अरु पिता पुत्र पति पत्नी भाई इत्यादि की प्रीति तौ सांची अरु विरोध साँचा नहीं है यथा प्रह्लाद वध कराय पीछे नृसिंह सों पिता की मुक्ति मांगे गौतम पर पतिरत दोषते स्त्री को त्यागे पछि मेरे पद रज स्पर्श कराय ग्रहण कीन्हे ताते इहाँ बिचारि कार्य कौन चाहिये क्योंकि सुग्रीव की दिशि ते तौ वैर है नहीं केवल वालि ही की दिशि ते है जो मेरा बल पाय सुग्रीव जाय कदाचि बैर त्यागि वाली मिलि चलै तौ यथा सुग्रीव तथा वालि भी मेरा मित्रहै इस बिचार ते रघुनन्दन कहे कि तुम दोऊ एकै रूपहौ पुनःवाली बड़ाभाई बली राजा है अरु सुग्रीव छोटा अबलसो प्रथमही जायगर्जि प्रचारि वाको गॉसे तब वाली धावा तबौ सुग्रीवहीं प्रथम वाको मारे तब बालीने मारा जब सुग्रीव भागे तब वाली ने पछिा नहीं किया अपने घरै लौटि गया याते वालीमें साँचा वैर भी नहीं प्रसिद्ध भया तौयह लोक रीति है सौभाविकै भाई भाई लड़ते हैं पुनः एकै होतेहैं तथा जो वालिमें बैर नहीं प्रसिद्ध भया तो जो अंतरमें प्रीतिहै तौ यथासुग्रीव तथाबाली भी मित्रहै ताको कैसेमारैंइस हेत कहेकि मित्रघात शंका करिके मैं बाण नहीं छाड़ेउँ पुनः तब आपना कोई चिह्ननहीं दिया रहै अब फूल माल अपनाचिह्न दै पठावै तब जो सुग्रीव को प्राणघात की इच्छाकरै तब वैर प्रसिद्ध देखि बालिकोमारौं इसहेत लक्ष्मण जीके हाथ फूलमाल पहिराय पुनः जाने को कहे १७॥

प्रेषयामाससुग्रीवंसोपिगत्वातथाकरोत्॥पुनरप्यद्भुतंशब्दंकृत्वाबालिनमाह्वयत् १८ तच्छ्रुत्वाविस्मितोवालीक्रोधेनमहतावृतः॥ बध्वापरिकरंसम्यक्गमनायोपचक्रमे १९ गच्छंतंबालिनंताराग्रहीत्वानिषिषेधतम्॥ नगंतव्यंत्वयेदानींशंकामेतीव

जायते २० इदानीमेवतेभग्नःपुनरायातिसत्वरः ॥ सहायोबलवांस्तस्यकश्चिन्नू नंसमागतः २१ बालीतामाहहेसुभ्रुशंकातेव्येतुतद्गता ॥ प्रियेकरंपरित्यज्यगच्छ गच्छामितंरिपुम् २२ हत्वाशीघ्रंसमायास्येसहायस्तस्यकोभवेत् ॥ सहायीयदि सुग्रीवस्ततोहत्वोभयंक्षणात् २३ ॥

(सुग्रीवंप्रेषयामाससः अपि गत्वातथाकरोत् बालिनंचह्वयत् पुनःअपिअद्भुतंशब्दंकृत्वा) सुग्रीवहि पठावते भये सो निश्चय करि जाय यथापूर्व करे तैसेही किया बालीको प्रचारि बुलाता हुआ पुनः निश्चय करि अद्भुत शब्दकरि गर्जा १८ (तत्श्रुत्वाबालीविस्मितः महताक्रोधेनआवृतःसम्यक्परिकरं वध्वा गमनायउपचक्रमे) सुग्रीव को किया हुआ शब्द सो सुनिके बाली विस्मय अर्थात् आश्चर्य माना भाव मेरी भयते भाग फिरतारहा अब जो बारम्बार आय गर्जताहै तौ कछु कारण है पुनः बड़े क्रोधकरि घेराहुआ युद्धके सम्पूर्ण साज सहितकमर बाँधि चलने हेत तय्यारभया१९(बालिनंगच्छंतं तंताराग्रहीत्वा निषिषेधत्वया इदानींनगन्तव्यं मे अतीवशंका जायते) बालिको जात समय ताको तारा पकरिकै रोंका कि तुम या समयमें न जाउ क्योंकि मेरे उरमें अत्यंत शंका उत्पन्न होतीहै २० (इदानींएवतेभग्नः सत्वरःपुनः आयातितस्यसहायः कश्चित्बलवान् नूनं समागतः) इसी समय निश्चय करि तुमते हारि भागिगया अरु शीघ्रही पुनः आया इस अनुमानते सूचित होत कि तिस सुग्रीव को सहाय करता कोऊ बलवान् बीर निश्चय करिकै संग आयाहै २१ (तांबालीआह हेसुभ्रुते शंकागता तत्व्येतु प्रियेकरंपरित्यज्य गच्छारिपुम्तंगच्छामि) तिस ताराप्रति बालि बोला हेसुभ्रु सुंदर भौंहवाली तेरे जो शंका उत्पन्न भईहै सो त्यागु हेप्रिये मेराहाथ छांड़िदे मंदिर को जा अरु मैं शत्रुप्रति जाताहौं २२ (तस्यसहायःकःभवेत् शीघ्रंहत्वासंआयास्ये यदिसुग्रीवःसहायी ततःक्षणात् उभयंहत्वा) ताको सहाय करता कौन है सक्ताहै शीघ्रही वाको मारि आवताहौं जो सुग्रीव सहायक सहित होइगो तब जो सहायक होइ अरु सुग्रीव इन दोऊको क्षणैमें मारिहौं २३ ॥

आयास्येमाशुचःशूरःकथंतिष्ठेद्गृहेरिपुं ॥ ज्ञात्वाप्याहूयमानंहिहत्वायास्यामिसुं दरि २४ तारोवाच ॥ मत्तोन्यच्छृणुराजेंद्रश्रुत्वाकुरुयथोचितम् ॥ आहमामंग दःपुत्रोमृगयायांश्रुतंवचः २५ अयोध्याधिपतिःश्रीमान्रामोदाशरथिःकिल ॥ ल क्ष्मणेनसहभ्रातासीतयाभार्यया सह २६ आगतोदण्डकारण्येतत्रसीताहृताकि ल ॥ रावणेनसहभ्रातामार्गमाणोथजानकीम् २७ आगतोऋष्यमूकाद्रिंसुग्रीवेण समागतः ॥ चकारतेनसुग्रीवःसख्यंचानलसाक्षिकम् २८ प्रतिज्ञांकृतवान्रामः सुग्रीवायसलक्ष्मणः ॥ बालिनंसमरेहत्वाराजानंत्वांकरोम्यहम् २९ ॥

(आयास्ये माशुचः आहूय मानं रिपुं ज्ञात्वा अपिशूरः गृहे कथं तिष्ठेत् सुंदरिहि हत्वायास्यामि) दोऊ को मारि आवताहौं मतशोच करु अरु प्रचारि बुलावता हुआ शत्रु ताहि जानि कै निश्चय करि कै शूर ह्वै घरमें मैं कैसे बैठरहसक्ताहौं हे सुंदरि निश्चय करि वाको मारिही कै लौटोंगा २४ (राजेंद्र मत्तः अन्यत्शृणु श्रुत्वायथोचितं कुरुपुत्रः अंगदः मृगयायां श्रुतंवचः मांआह) तारा बोली हे राजेंद्र मेरा कहा और कछुहाल सुनिलीजे सुनिकै जैसा उचितहोय सो करिये तुम्हारा पुत्र अंगद शिकार खेलने गयारहै तहांसुनि सोई वचन मो प्रति कहाहै २५ (अयोध्या धिपतिः

श्रीमान् दाशरथिः किलरामः भ्रातालक्ष्मणेनसह भार्ययासीतयासह) अयोध्यापुरीके पति बड़े शोभायमान दशरथ के पुत्र निश्चय करिकै राम अपने छोटे भाई लक्ष्मण करिकै सहित अपनी भार्या सीता करिकै सहित २६ (दण्डकारण्येआगतः तत्ररावणेन किलसीताहृता अथजानकीम्सह भ्रातामार्गमाणः) दण्डक वनमें आये तहां रावण निश्चय करि सीताको हरि लैगया अब हरीहुई जो जानकीहैं तिनहिं शोधहेत सहित भाई रघुनन्दन वनमें ढूँढ़ते हुये २७ (ऋष्यमूकाद्रिंआगतः सुग्रीवेणसमागतः चअनलसाक्षिकम्तेन सुग्रीवःसख्यंचकार) राम लक्ष्मण ऋष्यमूक पै आये तहां सुग्रीव करिकै समागम भया पुनः अग्नि को साक्षी करि राम करिकै सुग्रीव सख्यं अर्थात् राम सुग्रीव दोऊ मित्रता करते भयेहैं २८ (सलक्ष्मणःरामःसुग्रीवायप्रतिज्ञांकृतवान् अहंवालिनंसमरेहत्वात्वांराजानंकरोमि) सहित लक्ष्मण राम सोसुग्रीव के हितहेत यह प्रतिज्ञा कीन्हे हैं कि वालिजोहै ताहि हम युद्धमें मारिकै हे सुग्रीव तोहिं किष्किंधा राजधानीमें बानरों को राजाकरिहौं २९ ॥

इतिनिश्चित्यतौयातौनिश्चितंश्रृणुमद्वचः ॥ इदानीमेवतेभग्नःकथंपुनरुपागतः ३० अतस्त्वंसर्वथावैरंत्यक्त्वासुग्रीवमानय ॥ यौवराज्येभिषिंचाशुरामंत्वंशरणंव्रज ३१ पाहिमामंगदंराज्यंकुलंचहरिपुंगव ॥ इत्युक्त्वासुमुखीतारापादयोःप्रणिपत्यतम् ३२ हस्ताभ्यांचरणौधृत्वारुरोदभयविह्वला ॥ तामालिंग्यतदावाली सस्नेहमिदमब्रवीत् ३३ स्त्रीस्वभावाद्बिभेषित्वंप्रियेनास्तिभयंमम ॥ रामोयदि समायातोलक्ष्मणेनसमंप्रभुः ३४ तदारामेणमेस्नेहोभविष्यतिनसंशयः ॥ रामो नारायणःसाक्षादवतीर्णोऽखिलप्रभुः ३५ ॥

इतितौनिश्चित्ययातौमत्वचःनिश्चितंश्रृणुइदानींएवतेभग्नःपुनःकथंउपागतः) राम लक्ष्मण कहे कि हे सुग्रीव वालि को मारितोहिं राजा बनैहौं इत्यादि दोऊ निश्चय करितव विश्राम स्थान को गये ताते मेरा वचन निश्चय करि सुनिये भाव साँचा मानिये ना तरु अबहीं निश्चय करि तुम ते हारि भागिगया सुग्रीव फिरिकैसे आयसक्ता ३० (अतःत्वंसर्वथावैरंत्यक्त्वासुग्रीवंआनयआशुयौवराज्येअभिषिंचत्वंरामंशरणंव्रज) इसकारण सब प्रकारवैर त्यागिनिश्छल स्नेहयुत सुग्रीवंहिलवाय लावै ताहि शीघ्रही राज्य विषे अभिषेक करिअरुतुम रघुनंदन के शरण जाउ ३१ (हरिपुंगवमांअंगदंचराज्यंकुलंपाहिइतिउक्त्वातारा अश्रुमुखीतंपादयोःप्रणिपत्य) हे बानरोंमें श्रेष्ठमोहिं अंगदहिपुनः यह राज्य वानर कुल इत्यादि जो हैं तिनहिं रक्षा करौ ऐसा कहितारा अश्रु वहे मुख सहित वालि के पाँयन में गिरिपरी ३२ (हस्ताभ्यांचरणौधृत्वाभयविह्वलारुरोदतदावालीतांआलिंग्यसस्नेहंइदंअब्रवीत्) हाथों करिकै तारा वालीके दोऊ पाँयपकरि डरतेविकल रोदनकरती भई ता समयवाली ताराजो है ताहि उठाय उरमें लगाय सहित स्नेह इसप्रकारबोलता भया ३३ (प्रियेस्त्रीस्वभावात् त्वंबिभेषिममभयंनास्ति लक्ष्मणेनसमंप्रभुःरामःयदिसमायातः)ताराप्रति वाली बोला हे प्राण प्रिये स्त्री स्वभाव ते तू डरमानती है अरुमोको भयकछु नहीं है काहेते लक्ष्मण करिकै सहित प्रभु सबके पालन- हारेअरिघुनाथ जी जो इहाँको आयेहैं ३४ (रामःसाक्षात्नारायणःअखिलप्रभुः अवतीर्णः रामेणमेस्नेहःभविष्यतिसंशयः न) रघुनाथ जी साक्षात् नारायण संपूर्ण लोकन के प्रभु पालनहारे स्वामी लोकोद्धारहेत अवतीर्ण भयेहैं तिनरघुनाथ जी करिकै मेरा स्नेहहोई उनमें सांची प्रीति करिहौं यामें संशय नहीं है निश्चयजानु ३५ ॥

भभारहरणार्थायश्रुतंपूर्वमयाऽनघे ॥ स्वपक्षःपरपक्षोवानास्तितस्यपरात्मनः ३६ आनेष्यामिगृहंसाध्विनत्वातच्चरणाम्बुजम् ॥ भजतोनुभजत्येषभक्तिगम्यःसुरेश्वरः३७यदिस्वयंसमायातिसुग्रीवोहन्मितंक्षणात्॥यदुक्तंयौवराज्यायसुग्रीवस्याभिषेचनं ३८ कथमाहूयमानोऽहंयुद्धायरिपुणाप्रिये ॥ शूरोऽहंसर्वलोकानांसंमतःशुभलक्षणे ३९ भीतभीतमिदंवाक्यंकथंवालीवदेत्प्रिये ॥ तस्माच्छोकंपरित्यज्यतिष्ठसुंदरिवेश्मनि ४० एवमाश्वास्यतारांतांशोचंतीमश्रुलोचनाम् ॥ ततो वालीसमुद्युक्तःसुग्रीवस्यवधायसः ४१ ॥

(भूभारहरणार्थायअनघेपूर्वंमयाश्रुतंपरात्मनःतस्यस्वपक्षःवापरपक्षःनास्ति) भूमिको भारहरने हेत अवतीर्ण भये हे निः पापे यहहालपूर्वही मैंने सुनिराखा है सो रघुनाथजी परात्मा हैं तिनके स्वपक्ष अर्थात् अपना मित्र वा परपक्षशत्रु इत्यादि भावउन में नहीं है ३६ (साध्वितत्चरणाम्बुजं नत्वागृहंआनेष्यामिभजतःअनुभजतिएषसुरेश्वरःभक्तिगम्यः) हे पतिव्रते तिनरघुनाथ जीके चरण कमलों को प्रणाम करि आपने घरको लवाय लैहौं क्योंकि उनको जो भजता है ताही को ओभी भजते हैं वे देवतों के ईश्वर भक्ति करि प्राप्तहोते हैं ३७ (यदिसुग्रीवःस्वयंसमायातितत्क्षणात्तं हन्मिसुग्रीवस्ययौवराज्यायअभिषेचनम्यत्उक्तम्) जो सुग्रीव आपही अकेला युद्ध हेतु आवहिगो तौ उसी क्षणताको मारि डारिहौं अरु सुग्रीव केयौवराज्य हेत अभिषेक करने को जो कहती है सो तौ स्नेहमें होनेवाला है ३८ (शुभलक्षणेसर्वलोकानांसंमतः अहंशूरः प्रियेयुद्धायरिपुणाआहूयमानः कथंअहंवालीभीतभीतइदंवाक्यंकथंवदेत्अस्मत्प्रियेशोकंपरित्यज्यसुदरिवेश्मनितिष्ठ) हे शुभलक्षणे सब लोकन के संमत लोक प्रसिद्ध मैं शूरहौं ताहूपर हे प्रिये युद्ध के अर्थ शत्रुकरि कै प्रचारि बुलावा हुआ कैसे मैं वालीह्वैके डरेहुयेन मैं डराहुआ ऐसावचन कैसेमैंकहौं अर्थात् शूरह्वैकेअवकैसे कादरवनि कहौं कि हे सुग्रीव आउतोहि मैं राज्याभिषेक करिदेउं सो नहीं होनहारहै तिसकारण हे प्रिये शोक परित्यागि के हे सुंदरि घरमें बैठु ३९।४० (आश्रुलोचनांशोचंतींतांएवसमाश्वास्यततः सः वालीसुग्रीवस्यवधायसमुद्युक्तः) आंशुवहि रहेहैं नेत्रनमें जाके शोचती हुई जो तारताहि समुझाय धैर्यदै तदनंतर सो वाली सुग्रीव के मारने अर्थ उद्योग युक्त अर्थात् मारने परतत्पर ह्वै चलता भया ४१॥

दृष्ट्वावालिनमायांतंसुग्रीवोभीमविक्रमः॥उत्पपातगलेवद्धपुष्पमालःपतंगवत् ४२ मुष्टिभ्यांताडयामासवालिनंसोपितंतथा ॥ अहन्वालीचसुग्रीवंसुग्रीवोवालिनंतथा ४३ रामंविलोकयन्नेवसुग्रीवोयुयुधेयुधि॥इत्येवयुद्ध्यमानौतौदृष्ट्वारामःप्रतापवान् ४४ वाणमादायतूणीरादैन्द्रन्धनुषिसंदधे ॥ आकृष्यकर्णपर्यंतमदृश्योवृक्षखंडगः ४५ निरीक्ष्यवालिनंसम्यग्लक्ष्येतध्दृदयंहरिः॥उत्ससर्जाशनिसमंमहावेगंमहावलः ४६ विभेदसशरोवक्षोवालिनःकंपयन्महीम् ॥ उत्पपातमहाशब्दंमुंचन्सनिपपातह ४७ ॥

(पुष्पमालःगलेवद्धभीमविक्रमःसुग्रीवःवालिनंआयांतंदृष्ट्वापतंगवत्उत्पपात) रघुनंदन को दिया

हुवा फूलों को माला गलेमें बँधाहै जाके पुनः भयंकर पराक्रमहै जाकेऐसा सुग्रीव बालिको आवता हुवा देखि युद्ध के हेत संमुख पक्षी की नाईं कूदि पहुँचता भया ४२ (सःअपिमुष्टिभ्यांबालिनंतंता डयामाससचतथावालीसुग्रीवंमहन्तथाबालिनंसुग्रीवः) सो सुग्रीव निश्चय करि मुष्टिकन करिकै बालीजो है ताहि प्रथमहि मारताभया पुनः ताही भांति वाली सुग्रीवहि मारा तैसे पुनः बाली को सुग्रीव मारा इति परस्पर प्रहार करतेहैं ४३ (सुग्रीवःरामंविलोकयन्एवयुयुधेइतिएवतौयुद्ध्यमानौप्रतापवान्रामःदृष्ट्वा) बालिके बधकी कांक्षा राखे सुग्रीव रघुनंदन को देखतेहुये रण भूमिमें युद्धकरते भये इसी भांति निश्चय करि दोऊ युद्धकरिरहेहैं तिनहिं प्रतापवान् रघुनंदन देखते हैं ४४ (तूणीरात्बाणंआदायऐंद्रंधनुषिसंदधेकर्णपर्यंतआकृष्यवृक्षखंडगःअदृश्यः) तरकसते बाण निकारि अगस्त्य को दिया हुवा जो इंद्रको धनुषहै तामें संधानि कानें तकखैंचे परंतु सघन वृक्षोंके ओटखड़े हैं ताते बाली को देखि नहींपरतेहैं ४५ (बालिनंसम्यक्निरीक्ष्यतत्हृदयंलक्ष्यंमहाबलःहरिःमहावेगं अशनिसमंउत्ससर्ज) बाली को संपूर्ण तन देखिताकी छातीकों निशाना शोधि महाबलवंत हरि श्री रघुनाथ जी बड़ा बेगवान् बज्रसम बाण छाडते भये अर्थात् बड़ाकराल बाण बाली की छाती परमारते भये ४६ (सशरःवक्षःविभेदबालिनःमहीमूकंपयन्उत्पपातमहाशब्दंमुंचयत्सनिपापतह) सो बाण छाती फोरि कै नांघिगया तिस घाउ पीरते बाली भूमिको कंपावता हुवा उछरता भया महा शब्दको छोड़नसहित अर्थात् चिल्लायकै गिरिपरा मूर्छित ह्वै जाता भया ४७ ॥

तदामुहूर्तंनिःसंज्ञोभूत्वाचेतनमापसः ॥ ततोबालीददर्शाग्रेरामंराजीवलोचनम् ४८ धनुरालंब्यबामेनहस्तेनान्येनसायकम् ॥ बिभ्राणंचीरवसनंजटामुकुटधारिणम् ४९ बिशालबक्षसंभ्राजद्वनमालाविभूषितम् ॥ पीनचार्वायतभुजंनवदूर्वादलच्छविम् ५० सुग्रीवलक्ष्मणाभ्यांचपार्श्वयोःपरिसेवितम् ॥ विलोक्यशनकैःप्राहबालीरामंबिगर्हयन् ५१ किंमयापकृतंरामतवयेनहतोस्म्यहम् ॥ राजधर्ममविज्ञायगर्हितंकर्मतेकृतम् ५२ वृक्षखंडेतिरोभूत्वात्यजतामयिसायकम् ॥ यशःकिंलप्स्यसेरामचोरवत्कृतसंगरः ५३ ॥

(तदामुहूर्तंनिःसंज्ञःभूत्वाचेतनंआपसःततःबालीअग्रेराजीवलोचनंरामंददर्श) ता समय दोदण्ड मूर्छित पराहा पुनः चैतन्य ह्वै तदनंतर बाली आगे खड़ेहुये राजीव कमल तुल्य नेत्र जो रघुनंदन तिनहिं देखताभया कैसेहैं ४८ (वामेनहस्तेनधनुःआलम्ब्यअन्येनसायकम्चीरवसनं बिभ्राणं जटामुकुटधारिणम्) बामहाथ करिकै धनुष लिहे दहिने करिकै बाण लीन्हे मुनि बसन तनमेंबिराजमान शिरमें जटाके मुकुट धारण किहे ४९ (विशालबक्षसंभ्राजत्) चौंड़ीछातिशोभित (बनमालविभूषितम्) तुलसीदलकंदमंदारपारिजातकमलइत्यादि फूलोंतेगुहाहुवाग्रीवातेजानुपर्यंतवनामालाशोभायमानकरिकै भूषित (पीन चारुआयतभुजं) पुष्टसुढारसुंदरलबायमान भुजाहैं (नवदूर्वादलछविम्) नवीन दूर्वादलसमश्यामतनकी छबिहै ५० (चपार्श्वयोःसुग्रीवलक्ष्मणाभ्यांपरिसेवितमविलोक्यबालीरामंविगर्हयन्शनकैःप्राह) पुनःदहिने बांयेदोऊ समीपमें खड़े सुग्रीव लक्ष्मणकरिकै सेवित इसप्रकार देखिके बाली रघुनंदन को निंदाकरत संते धीरा धीरा बोलताभया ५१ (रामतव मयाकिंअपकृतंयेनहतोस्म्यहम्राजधर्मंअविज्ञायतेगर्हितंकर्मकृतम्) बालिबोला कि हे राम आपको मैंने क्या अपकार किया जिसकारण मारेउ मोको राज नीति धर्मविना जाने निंदित कर्म आपने

कियाभाव यामें लोकमें आपकी निंदाहोगी ५२ (वृक्षखंडेतिरोभूत्वामयिसायकमुत्सृजताम्राम चोरवत्संगरःकृतकिंयशःलप्स्यसे) वृक्षोंके समूह में गुप्तह्वैके व्याध की भांति मेरे ऊपर बाण छांड़ि दिहेउ हे राम चोर की भांति छिपिकै संग्राम कीन्हेउ तामें कौने यशको प्राप्त होउ गे अर्थात् अपयश पावहु गे ५३ ॥

यदिक्षत्रियदायादोमनोर्वंशसमुद्भवः ॥ युद्धंकृत्वासमक्षंमेप्राप्स्यसेतत्फलंतदा५४ सुग्रीवेणकृतंकिंतेमयावानकृतंकिमु ॥ रावणेनहृताभार्यातवराममहावने ५५ सुग्रीवंशरणंयातस्तदर्थमितिशुश्रुम ॥ तवरामनजानीषेमद्बलंलोकविश्रुतम् ५६ रावणंसकुलंबध्वाससीतंलंकयासह ॥ आनयामिमुहूर्तार्द्धाद्यदिचेच्छामिराघव ५७ धर्मिष्ठइतिलोकेस्मिन्कथ्यसेरघुनन्दन ॥ वानरंव्याधवद्धत्वाधर्मंकंलप्स्यसेवद ५८ अभक्ष्यंवानरमांसंहत्वामांकिंकरिष्यसि ॥ इत्येवंबहुभाषंतंवालिनंराघवोऽब्रवीत् ५९ ॥

(मनोः वंशसमुद्भवः यदि क्षत्रियदायाद. मे समक्षं युद्धं कृत्वा तदा तत्फलं लप्स्यसे) जोमनुके वंशमें उत्पन्न भयो जो क्षत्रिय के पुत्र पौत्र होते तौ मो प्रति प्रसिद्ध है युद्ध करते तौ ताके फलको प्राप्त होते भाव सन्मुख युद्धकरि मोको मारते तब यश पावते वा मृत्युपाते ५४ (सुग्रीवेण ते किं कृतं वा मया किमुनकृतं राम महावने तवभार्या रावणेन हृता जो सुग्रीव के सहायक है मोको मारा तौ सुग्रीव ने आपको क्या उपकार किया जो सहायक भये अथवा मैंने आपको क्या कार्य नहीं किया हे राम महावन में तुम्हारी भार्या रावण ने हरा ५५ (तत् अर्थं सुग्रीवं शरणं यातः इति शुश्रुम मत्बलं लोक विश्रुतं राम तव न जानीषे) स्त्री रावण हरा ताही सहायता के अर्थ सुग्रीव की शरण प्राप्त भये यह मैंने सुना है अरु मेरा बल लोक में प्रसिद्ध है सो आपने नहीं जाना भाव मेरे घर क्यों न चले आये ५६ (राघव यदि चेत् इच्छामि सकुलंरावणं बध्वा लंकयासहससीतं मुहूर्तार्द्धात् आनयामि) वाली बोला कि हे राघव जो मैं इच्छा करता तो सहित कुल रावण को बांधि लंकापुरी सहित सीता सहित मुहूर्त के आधे काल अर्थात् दंड भरेमें इहाँको उठाय लाता जो आपमेरे पास आते५७ (रघुनन्दन अस्मिन् लोके धार्मिष्ठइति कथ्यसेव्याधवत् बानरं हत्वा कं धर्मंलप्स्यसेवद) हे रघुनन्दन इसलोक विषे आप धर्मिष्ठ कहावते हौ सो व्याधा की नाईं मैं जो बानर ताहि बधकरि कौने धर्मको प्राप्त भयो सो कहिये भाव धर्मवंत कहाय अधर्मिन को कार्य कीन्हेउ कैसे धर्मवंत रहे ५८ (बानरंमांसं अभक्ष्यं मां हत्वा किं करिष्यसि इति बहुभाषंतं एव बालिनं राघवः अब्रवीत्) बानरको मांस अभक्ष्य है मनुष्य को भोजन में वर्जित है तौ मोहि मारिकै क्या करोगे इत्यादि बहुत भांति के वचन कहता हुवाजो निश्चय करि बाली ता प्रति रघुनन्दन बोलते भये ५९ ॥

धर्मस्यगोप्तालोकेस्मिँश्चरामिसशरासनः ॥ अधर्मकारिणंहत्वासद्धर्मंपालयाम्यहम् ६० दुहिताभगिनीभ्रातुर्भार्य्याचैवतथास्नुषा ॥ समायोरमतेतासामेकामपि विमूढधीः॥पातकीसतुविज्ञेयःसवध्योराजभिःसदा६१त्वंतुभ्रातुःकनिष्ठस्यभार्ययारमसेबलात् ॥ अतोमयाधर्मविदाहतोसिवनगोचर ६२ त्वंकपित्वान्नजानीषेमहान्तोविचरन्तियत् ॥ लोकंपुनानाःसंचारैरतस्तान्नातिभाषयेत् ६३ ॥

(धर्मस्यगोप्तासशरासनः अस्मिन्लोकेचरामि अहंसत्धर्मंपालयामि अधर्मकारिणंहत्वा) धर्मको पालनेवाला सहितधनुप इसलोकविषे बिचरताहौं मैंसो सत्धर्मकरने वालनको पालनकरताहौं ६० अधर्म करनेवालनकोवधकरताहौं(दुहिताभगिनीचिएवभ्रातुःभार्यातथास्नुपा समातासांएकांअपियःवि मूढ़धीरमतेसपात कीविज्ञेयः तुसराजभिःसदावध्यः)अपनीकन्या अपनी बहिनि पुनःनिश्चयकरिछोटे भाईकीपत्नी तैसेपुत्रकीपत्नीअर्थात्कन्या बहिनिभयहो पतोहुएचारिहूबराबरिहैंतिनमेंएकोमें निश्चय करि जो मूढ़बुद्धी रमै सो पातकी जानिये पुनः सो राजों करिकै सदा मारने योग्य हैं ६१ (त्वं कनिष्ठस्यभ्रातुः भार्यायाःवलात्रमसे अतः वनगोचर धर्मविदामयाहतोसि) पुनः तू छोटेभाई की स्त्री में बरबश रमता है इस कारण हे बन गोचर भाव वनमें चरने वाले बानर धर्म की रीतिजानि मैंने अधर्म रत बिचारि तेरा बधकिया यामे शंका है कि धर्म अधर्म तौ देव मनुष्योंमें हैं अरु पशु पक्षिन में धर्माधर्म को अभाव इति शास्त्र सिद्धांत है अरु बाली को बनगोचर कहि क्यों अधर्मी कहे इसका आशय यह है कि पशु पक्षिन में धर्माधर्म को अभाव केवल अज्ञान ते है तैसा अज्ञान पशु तू नहीं है क्योंकि इन्द्रके अंशते उत्पन्न बालही ते वेद शास्त्रपढ़े संध्यातर्पणादि करता है अरुलोक मर्यादा जानता है तापर लोक बेद प्रतिकूल कार्य कीन्हे ताते तू अधर्मी वधयोग्य रहसि ६२ (यत् महान्तः संचारैः लोकं पुनानाः विचरंति अतः तान् न अतिभावयेत् त्वंकपित्वात् नजानीषे) जोमहात्मा लोग अपने संचार करिकै भाव आपने आचरण दर्शाय लोकको पवित्र करते हुये भूतल में बिचरते हैं इसकारण तिनहि न अतिभापयेत् अर्थात् अत्यंत कठोर बचन निन्दा आदि अनादर बचन न कहना चाहिए भाव जो निंदा आदि करता है सो तत्काल पापको फल दण्डभागी होता है तथा तू बानर स्वभाव ते मोको नहीं जाने अर्थात् तेरी स्त्री तारा ने समुझायकै मेरा समग्र हाल कहि सुनाया तथा तोहूं पूर्व मोको जानता रहा तबहूं बानर स्वभाव बश अपने बलबीरता के गर्व ते मेरी दण्डवत्करने न आये अरु शरणागत भयहारी मेरा प्रणवेद द्वारा लोक प्रसिद्धहै सो भी जानताहैं तौ सुग्रीव तौ मेरी शरण मेरा पठाया आया अरु मेरा दिया फूलों को माला धारण किहे तापर तू मोसो बिमुख अरु इंद्रके आशीर्वादी माला के भरोसे सुग्रीव को मारने की इच्छा किहे तौ अपनी मृत्यु अपने हाथै बुलाय लिया अब मरापरा हसितापर तेरा अभिमान नहीं गया बारम्बार मेरी निंदा करता है तौ क्यायमसां सति सहाचाहताहै ६३ ॥

तच्छ्रुत्वाभयसंत्रस्तोज्ञात्वारामंरमापतिम् ॥ बालीप्रणम्यरभसाद्रामंबचनमब्रवीत् ६४ रामराममहाभागजानेत्वांपरमेश्वरम् ॥ अजानतामयाकिंचिदुक्तंतत्क्षंतुमर्हसि ६५ साक्षात्त्वच्छरघातेनविशेषेणतवाग्रतः ॥ त्यजाम्यसून्महायोगिदुर्लभम्तवदर्शनम् ६६ यन्नामबिवशोगृह्णन्म्रियमाणःपरंपदं ॥ यातिसाक्षात्सएवाद्यमुमूर्षोर्मेपुरःस्थितः ६७॥

(तत्श्रुत्वारमापतिम् रामंज्ञात्वाभयसंत्रस्तः बालिरभसात्प्रणम्यरामंवचनंअब्रवीत्) रघुनंदन के कहे बचन सो सुनि रमापति भाव ईश्वर करि रघुनंदन को जानि बिमुखताकी भयते यम सांसतिकी त्रासमानि बाली शीघ्रताते प्रणामकरि रघुनंदन प्रति बचन बोला ६४ (रामराममहाभाग त्वांपरमेश्वरं जानेमयाअजानताकिंचित् उक्तंतत्क्षंतुं अर्हसि) हे राम साकेत बिहारी हे राम सबके रमावनहारे हे महाभाग रघुबंशनाथ आप परमेश्वरहौ मैंजानेउ मैनेबिनाप्रभाव जानेकछुप्रौढ़बचन

कहा सो आप क्षमा करिबे योग्यहौ ६५ (तवदर्शनम् महायोगिदुर्लभम्साक्षात्त्वत्शरघातेन विशेषेण तवअग्रतःअसून्त्यजामि) बालीबोला हे रघुवंश नाथ आप के दर्शन योगीजनन को दुर्लभहैं नहीं पायसक्ते हैं सोई साक्षात् आप के बाण के घात करिकै पुनः विशेपि करिकै आपही के आगे भाव सन्मुख आपको देखता हुआ प्राणनको त्यागताहौं ६६ (विवशोम्रियमाणः यत्नामगृह्णन्परंपदंयातिसएवअद्यसाक्षात्मुमूर्षोःमेपुरःस्थितः) शोच संकटादि करि विवश सावधानता रहित मरण समय जो प्राणी जिनको नाम लेवै सो मरेपर परंपद को जाताहै सोई रघुनाथ जी निश्चय करि या समय में साक्षात् मरने की चाह किये जो मैं ताके आगे स्थित हैं तौ जो मेरीपरं पद की प्राप्ति होइ सो क्याकहना है ६७ ॥

देवजानामिपुरुपंत्वांश्रियंजानकींशुभाम्॥रावणस्यवधार्थायजातंत्वांब्रह्मणार्थितम् ६८ अनुजानीहिमांरामयांतंत्वत्पदमुत्तमम् ॥ ममतुल्यबलेबालेअंगदेत्वंदयांकुरु ६९ विशल्यंकुरुमेरामहृदयंपाणिनास्पृशन् ॥ तथेतिबाणमुद्धृत्यरामः पस्पर्शपाणिनात्यक्त्वातद्वानरंदेहममरेंद्रोभवत्क्षणात् ७० बालीरघूत्तमशराभिहतोविमृष्टोरामेणशीतलकरेणसुखाकरेण ॥ सद्योविमुच्यकपिदेहमनन्यलभ्यं प्राप्तःपरमरमहंसगणैर्दुरापम् ७१ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसम्वादेकिष्किंधाकांडेद्वितीयःसर्गः २ ॥

(रावणस्यवधार्थायत्वांब्रह्मणार्थितम् जातंदेवत्वंपुरुपंजानामिजानकीम्शुभाम्श्रियं) रावणके बधकरनेके अर्थ आप प्रति ब्रह्माने प्रार्थना किया ताकारण अवतीर्ण भयो हे देव आपको परमात्मा पुरुप जानता हौं जानकी मंगल रूप को लक्ष्मी जानता हौं ६८ (रामउत्तमम्त्वत्पदम्यांतंमां अनुजानीहि ममतुल्यबलेअंगदेबालेत्वंदयांकुरु) हे रघुनाथजी उत्तम जो आपको पद तहांकोजाता हुआ तोमें ताहि जानेकी आज्ञादीजिये अरु मेरीतुल्यबल है जाके ऐसा अंगद नामे मेरा बालक ता पर दया कीजिये शरण राखिये ६९ (रामपाणिनामेहृदयंस्पृशन्विशल्यंकुरुतथेतिरामःबाणंउद्धृत्य पाणिना (पस्पर्शवानरंदेहंत्यक्त्वाक्षणात्अमरेंद्रः अभवत्) पुनः बालिबोला कि हे रघुनाथजी अपनेहाथ करिकै मेरेहृदयको स्पर्श करत संते बाणको निकारि लीजिये जो कहेउ सोई करिहौं इत्यादि कहि रघुनंदन बाणको निकारि हाथकरिकै स्पर्श कीन्हे तबसो बालीबानर देहको त्यागि क्षणमें इंद्रकी देहत्व को प्राप्त भया७०(रघूत्तमशराभिहतः सुखाकरेणरामेणशीतल करेण विमृष्टः बालीकपिदेहं विमुच्य सद्यःपरंप्राप्तःकथंभूतंपरंअनन्यलभ्यंपरमहं सगणैःदुरापम्) रघुनंदन के बाण करिकै मरासुखके खानि रघुनंदनके शीतल भव तापहारक हाथ करिकै स्पर्श कियागया सो बाली वानर देहको त्यागि शीघ्रही परंपदको प्राप्त भया कैसापरंपद है जो औरको नहीं प्राप्त होत परमहंस वृन्दोंको भी दुःखकरि प्राप्तहोताहै ७१ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचितेअध्यात्मभूषणे किष्किंधाकाण्डेबालीबधवर्णनोनामद्वितीयःप्रकाशः २ ॥

निहतेवालिनिरणेरामेणपरमात्मना ॥ दुद्रुवुर्वानराःसर्वेकिष्किंधांभयविह्वलाः १ तारामूचुर्महाभागेहतोवालीरणाजिरे ॥ अंगदंपरिरक्षाद्यमंत्रिणःपरिनोदय२ चतुर्द्वारकपाटादीन्बध्वारक्षामहेपुरीम् ॥ वानराणांतुराजानमंगदंकुरुभामिनि३ निहतंवालिनंश्रुत्वाताराशोकविमूर्च्छिता ॥ अताडयत्स्वपाणिभ्यांशिरोवक्षश्चभूरिशः४ किमंगदेनराज्येननगरेणधनेनवा॥इदानीमेवनिधनंयास्यामिपतिनासह ५ इत्युक्त्वात्वरितातत्ररुदन्तीमुक्तमूर्द्धजा॥ययौताराऽतिशोकार्तायत्रभर्तृकलेवरम्६॥

सवैया ॥ जूझत बालिचले कपि संभ्रम शोक विलाप विलोकततारा । ज्ञानदिये प्रभुशोच विहाय प्रपन्न स्वभक्ति स्वरूप सँभारा ॥ बालि क्रियाकृत प्रेरिस्वबंधु सुकंठशिरे अभिषेकहिसारा । सानुजराम नमामि तहां कृतवास प्रवर्षण शोधि अगारा ॥ (परमात्मनारामेण रणेवालिनिनिहतेभयविह्वलाः सर्वेवानराः दुद्रुवुःकिष्किंधां) परमात्मा रघुनन्दन करिकै रणमें वालीके जूझत संते डरते विह्वल ह्वै सब बानर भागिकै किष्किंधा को जाते भये १ (तारांऊचुः महाभागेरणाजिरे वालीहतः अद्यअंगदं परिरक्षमंत्रिणःपरिनोदय) ताराप्रति सबबोले कि हे महाभागे रणरूपी आंगनमें बालीमरे अब या समयमें अंगदकी रक्षाकरो सेनासजग हेत मंत्रिन को आज्ञाकरौ २ (चतुर्द्वारकपाटादीन् बध्वापुरीम् रक्षामहेतुभामिनि वानराणां राजानंअंगदंकुरु) चारिहूफाटकन के केवारादि बंदकरि बानरी सेनासजि सब मिलि पुरीकी रक्षाकरी पुनः हे भामिनि वानरोंको राजा अंगदहि करो ३ (बालिनंनिहतंश्रुत्वा शोकविमूर्च्छितातारा स्वपाणिभ्यां शिरःचवक्षःभूरिशः अताडयत्) वालिको मरण सुनिदुख करिकै मूर्च्छित तारा अपने हाथों करिकै शिर पुनः छाती बहुत भांति ताड़न करती भई ४ (अंगदेनराज्येन वा नगरेणधनेन किंपतिनासह इदानींएवनिधनं यास्यामि) शोकार्त ताराबोली कीं अंगदकरिकै राज्य करिकै अथवा नगर करिकै मेरा क्या प्रयोजनहै मैं तौ पति करिकै सहित इसीसमय में निश्चय करि मृत्युको प्राप्त होहुँगी भाव सतीहोहुँगी ५ (इतिउक्त्वाशोकार्ता मुक्तमूर्द्धजा रुदंतीतारात्वरिता तत्रययौ यत्रभर्तृकलेवरम्) मैं पतिसंगही जाउँगी ऐसाकहि दुःख करिकै अधीर शीशमें केशखुले रोवती हुई तारात्वरितहीं तहां जातिभई जहां वाकेपति वालीको मृतक शरीर पराहुआहै ६ ॥

पतितंवालिनंदृष्ट्वारक्तैःपांशुभिरावृतम्॥रुदंतीनाथनाथेतिपतितातस्यपादयोः७ करुणंविलपंतीसाददर्शरघुनंदनम् ॥ राममांजहिबाणेनयेनबालीहतस्त्वया ८ गच्छामिपतिसालोक्यंपतिर्मामभिकांक्षते ॥ स्वर्गेपिनसुखंतस्यमांविनारघुनन्दन ९ पत्नीवियोगजंदुःखमनुभूतंत्वयानघ ॥ वालिनेमांप्रयच्छाशुपत्नीदानफलं भवेत् १० सुग्रीवस्त्वंसुखंराज्यंदापितंवालिघातिना ॥ रामेणरुमयासार्द्धंभुंक्ष्वसापत्नवर्जितम् ११ इत्येवंविलपंतींतांतारांरामो महामनाः॥सांत्वयामासदययातत्त्वज्ञानोपदेशतः १२ ॥

(रक्तैःपांशुभिःआवृतम् वालिनंपतितंदृष्ट्वा नाथनाथइति रुदतीतस्यपादयोःपतिता) रक्त करिकै धूरिकरिकै भराहुआ मृतक शरीर जोवालीताहिभूमिपै पराहुआदेखि करुण.वशअधीर ह्वै तारावोली हेनाथ हेनाथ इत्यादि शब्दसह रोवती हुई तिस वालीके पायों पर गिरिपरी ७ (करुणंविलपन्ती सारघुनन्दनददर्शरामयेन बाणेनत्वयावालीहतः तेनमांजहि) करुणा रसको उद्दीपन कारक बचनों

सहित रोवती हुई सो तारा रघुनन्दन जो हैं तिनहिं देखती भई भाव इनहीं मेरे पतिको मारे इति विचारि बोली हेराम जौने बाण करिकै तुमने बालीको मारा ताही करिकै मैं जो हौं ताहिमारौ ८ (पतिसालोक्यंगच्छामि पतिःमांअभिकांक्षते रघुनन्दनमां विनातस्य स्वर्गेपिनसुखं) मैं भी पतिके लोकको जाउंगी काहेते मेरापति वहांभी मेरे प्राप्तीकी इच्छा किहेहोई किस कारण हेरघुनन्दन मोहिं विना ताको स्वर्गमें भी नहीं सुख है ९ (अनघपत्नी वियोगजंदुःखं त्वयाअनुभूतंमांआशु बालिने प्रयच्छ पत्नीदानफलंभवेत्) हेनिष्पाप पत्नीके वियोग करिकै उत्पन्न जो दुःख ताहि तुमने जानाहै ताते मोहिं शीघ्रही बालिके अर्थ दीजिये तौ पत्नीदान को फल होइगो भाव याही को फल तुमहिं पत्नी लाभ होइगी १० (सुग्रीवबालिघातिनारामेण दापितंसापत्नवर्जितम् राज्यं सुखंरुमयासार्द्धं स्वंभुंक्ष्व) तारा कहत है सुग्रीव बालिको घात करिकै राम करिकै दियाहुआ शत्रुरहित राज्य तथा सुख जोहै ताहि स्वपत्नी रुमा करिकै सहित तुम भोगकरौ ११ (इतिएवंविलपंतीं तारांतांमहात्मनाः रामःसदययातत्व ज्ञानउपदेशतः सांत्वयामास) इस प्रकार रोवती हुई जो तारा ताहि महात्मा रघुनन्दन दया करिकै तत्वज्ञान उपदेशते अर्थात् पांचौतत्व माया कालकर्म स्वभाव जीवात्मा भिन्न दर्शाय सावधान करते भये १२ ॥

किंभीरुशोचसिव्यर्थंशोकस्याविषयंपतिम् । पतिरतवायंदेहोवाजीवोवावदतत्वतः १३ पंचात्मकोजड़ोदेहस्त्वङ्मांसरुधिरास्थिमान् ॥ कालकर्मगुणोत्पन्नःसो ऽप्यास्तेद्यापितेपुरः १४ मन्यसेजीवमात्मानंजीवस्तर्हिंनिरामयःनजायतेनम्रियते नतिष्ठतिनगच्छति १५ ॥

भीरुशोकस्यअविषयंपतिम्व्यर्थंकिंशोचसितत्वतःवदअयंदेहःतवपतिःवाजीवः) रघुनंदन कहे कि हेसौभाविक डरने वालीदुःखकी नहीं है आशय जामें भावउत्तम पुत्रवर्तमान है जाके पुनः वीरहै रणसन्मुखमरण स्वर्गको अधिकारी ताहूमें मेरेहाथ मरण परमपदको अधिकारी ऐसा जो तेरापति ताहि व्यर्थ क्यों शोचकरती है अरुजो तू आपना पतिमाने है तौतत्व विचारते कहु यह देहतेरापति है अथवा जीवतेरा पतिहै १३ (पंचात्मकःदेहःजड़ः) हे तारा जो देहैंको पति मानती है तौ पूर्व जड़ कारण माया त्यहिते उत्पन्न आकाश वायु अग्नि जल पृथ्वी ये पाँचौ महाभूतसोभी जड़ते सब मिलिकै एक पिण्डबंधिगया सो देह कहावत सो तौ जड़ है भाव जामें हानि लाभ सुख दुःखादि किसी वस्तकी चैतन्यता नहीं है पुनः कैसी है (त्वक्मांसरुधिरअस्थिमान्) जामें खालमांस रक्त हाड़ इत्यादि अपावन वस्तुभरी हैं ताते निषिद्ध है सो भई कैसे (कालकर्मगुणोत्पन्नः) काल जो समय कर्म जो पुण्य पाप गुण जो सत्वरजतम इत्यादि सो उत्पन्न है अर्थात् कारण मायाबश आत्म दृष्टि भूलि जीवत्व बुद्धीभई तब त्रिगुणात्म अहंकार भयो तब सतो गुणकी अधिकताते पुण्य कर्म करत तमोगुणते पापकरत रजोगुणते पाप पुण्य दोऊ करत जैसा कर्म करत तैसेही स्वभाव परि जाततांही की बासना ते समयपाय देह धरत इसभांति देह उत्पन्न होत समय पाय मरत इसी भांति प्रति जन्म देह के संबंधी होते छूटते जाते हैं तौ कैसेदेहतेरा पतिहै पुनः (स.अद्यापितेपुरः अपिआस्ते) अरुजो देहहींतेरापतिहै सो तौ देह अबहीं तेरे आगेहीपरी है तौभी शोचकरना व्यर्थ है १४ (जीवात्मनंमन्यसेतर्हिंजीवःनिरामयःनजायतेनम्रियतेनगच्छतिनतिष्ठति) अरुजीवात्मा जो है ताहिजो अपना पतिमानती है तो जीव तौ रुज मरणादि रहित है अनादि कालते एकरस चला

आवता है सोतौ नकभी जन्मताहै नकभी मरताहै अरुनकभी चलता है अरुनकभी बैठताहै १५ ॥

नस्त्रीपुमान्वाषंढोवाजीवःसर्वगतोऽव्ययःएकएवाऽद्वितीयोयमकाशवदलेपकः॥नि
त्योज्ञानमयःशुद्धःसकथंशोकमर्हति १६ तारोवाच॥देहोऽचित्काष्ठवद्रामजीवोनित्य
श्चिदात्मकः ॥ सुखदुःखादिसंबंधःकस्यस्याद्रामसेवद १७ श्रीरामउवाच ॥ अ
हंकारादिसंबंधोयावद्देहेंद्रियैःसह ॥ संसारस्तावदेवस्यादात्मनस्त्वविवेकिनः १८ ॥

(स्त्रीवापुमान्वाषंढःजीवःनःएकएवअद्वितीयःसर्वगतः अव्ययःयंअकाशवत्अलेपकःशुद्धःज्ञानमयः नित्यःसकथंशोकंअर्हति)रघुनंदन कहत हेतारा स्त्री अथवा पुरुष अथवा नपुंसक इत्यादि जीवनहीं है एकही निश्चय करिकैताकी बराबरीको दूसरानहीं है अरुतत्वभूत मात्रमें व्यापहै अरुनाश रहितहै सो अकाशकी नाईं निर्लेप अर्थात् काहूमें छुइनही जाताहै शुद्धज्ञानमयनित्य है सो कैसे शोचकरने योग्य है १६ (हेरामदेहःकाष्ठवत्अचित्जीवःचित्आत्मकःनित्यःहेरामसुखदुःखादिसंबद्धःकस्यमेवद) तारावोली हे रघुनाथजी जो देहकाठकी नाईं चैतन्यता रहित भाव जड़नाशमानहै अरुजीव चैतन्य आत्मनित्य नाशरहित है भाव देहजड़ ताको दुख सुखादि जानिबेकी गतिहीनहीहै अरुचैतन्य जीव दुःखसुख होतही नहीं है अरुलोकमें दुःख सुखवर्तमानसबमें है यह संदेह है हे रघुनाथजी तो सुख दुःखादि संबधकिसको होताहै सो यथार्थ हाल मो प्रति कहिये १७ (यावत्देहइन्द्रियैःसहअहंकारा दिसंबंधःतुअविवेकिनःआत्मनःतावत्एवसंसारः) रघुनंदन बोले हे तारा जबतक देह इंद्रिनकरिकै सहित अहंकारादि को संबंधहै पुनः बिनाविवेक आत्माजीव बुद्धिकिहे देह सुखमें भूलाहै तबनक निश्चय करिसंसार को सबव्यवहार सांचादेखाताहै आशय यहहै कि पांचौतत्व मयपांचदेहैं हैं यथा पद्मपुराणे कापिलगीतायां स्थूलंसूक्ष्मंकारणंचमहाकारणतः परंकैवल्यंज्ञानदेहंचपंचदेहाःप्रकीर्तिता जाग्रत्स्वप्नःसुषुप्तिश्चतु र्ी यस्याचउन्मनीताचैवसहजावस्थाः पंचवस्थाःप्रकीर्तितातहांआकाशवायु अग्नि जल इति चारिगुप्त पृथ्वी तत्व प्रसिद्ध रजोगुण मयसाढ़ेतीनि हाथ को ताम्रवर्ण स्थूल देह सो उत्पत्ति जाग्रत बोधव्या वृतइति चारिकलायुत जाग्रत अवस्थाविश्वाभिमानी विपरीतज्ञान वैखरी बाणी इंद्रीद्वारा भोजन गान नृत्य भूषणवसन वाहन शय्यावनितादि भोगमें रतहै (तथाभूवायुतेज आकाश गुप्त प्रसिद्ध जल तत्वको सत्वगुण मयश्वेत वर्ण अंगुष्ट मात्र सूक्ष्मदेह कण्ठमें वास साद्दश्य अनादृश्य संहरतादृशादि चारिकला युत स्वप्न अवस्थातेज साभिमानी अन्य था ज्ञान मध्यमा बाणी मन चित अहंकारादि युत सर्वेंद्री द्वारा विषयासक्तइति सूक्ष्म देह तथा भू अप वायू अकाश गुप्त तेज प्रसिद्ध तमोगुण मय कृष्णवर्ण कारण देह जव मात्र हृदय कमल में वास सो मरण विस्मृति मूर्च्छा निद्रादि कलायुत सुषुप्ति अवस्था प्राज्ञाभिमानी अज्ञान रूप पश्यंती बाणी सूक्ष्मवासना द्वारा आनंद भोक्ता तथा वायूतत्व प्रसिद्ध शुद्ध संतोगुण मयनीलवर्ण मसुरी मात्र महा कारण देह शीशमें वास सो वैराग्य मुमुक्षुता आत्मतत्व तत्त्व दर्शनादि कलायुतपरावाणी तुरीयअवस्था प्रत्यगात्माभिमानी विवेक विज्ञान में सेवक सेव्य भावते ईश्वर की समीपते आनंद भोग तथा आका- श तत्वमय अगुण आत्म कैवल्य देह आत्म परमात्म की एकता उन्मनी अवस्था में अखंड आनंद भोगे परात्परा वाणी इन में कारण में मोह सूक्ष्म में ममता स्थूल में श्रवण त्वचा नेत्र रसना नासि कादि ज्ञान इंद्री हाथ पद मुख शिस्न गुद कर्म इन्द्री तिनकी विषय चाह करिकै जीवमन चित बुद्धि अहंकारादि में भूला देहै को सत्यमाने लोक सुखहेत शुभाशुभ अनेकन कर्म करता है ताको अवि-

मानी बना देह इन्द्री अंतःकरण के धर्म आत्मा में आरोपित करता है अरु आत्माके धर्म देह इन्द्री अंतःकरण में आरोपित करता है यद्यपि न आत्मा के धर्म अंतःकरण में ह्वै सकै न अंतःकरण के धर्म आत्मामें ह्वैसकैं परंतु देहसंग कारणतेमिले दर्शित होत यथाजल शीतल अग्नि तप्त परंतु पात्रमें जलभरि अग्निपर धरौ तौ जल के संग ते पात्रलाल नहीं परत इति अग्नि शीतल होत अरु जल गरम ह्वे जात ये दोऊ देखने मात्र हे यथार्थ नहीं हैं तथा देह के साथ इन्द्री अंतःकरण के धर्म मिलि आत्मा विवेक रहित जबतक हे तथा संगते आत्माके धर्म मिले देह इन्द्री अंतःकरण में चैतन्यता है इत्यादि आत्मा के अविवेक ते जबतक देह व्यवहार सांचा माने है तबतक संसार निश्चय करि सांचा देखात अर्थात् मेरा घर है मेरा धन है मेरी स्त्री है मेरा पतिहै मेरा पुत्रहै मेरी राज्य में ब्राह्मण विद्वान् सबको पूज्य मैं क्षत्री राजा सबको स्वामी मैं सुखी मैं दुखी इत्यादि झूठे को सत्यमाने १८ ॥

मिथ्यारोपितसंसारोनस्वयंविनिवर्तते ॥ विषयान्ध्यायमानस्यस्वप्नेमिथ्यागमोय था १९ अनाद्यविद्यासंबंधात्तत्कार्याहंकृतेस्तथा ॥ संसारोऽपार्थकोपिस्याद्रागद्वे षादिसंकुलः२०मनएवहिसंसारोबंधश्चैवमनःशुभे ॥ आत्मामनःसमानत्वमेत्य तद्गतबंधभाक् २१ यथाविशुद्धःस्फटिकोऽलक्तकादिसमीपगः ॥ तत्तद्वर्णयुगा भातिवस्तुतोनास्तिरंजनम् २२ ॥

विषयान् ध्यायमानस्य मिथ्यासंसारः आरोपित स्वयं न विनिवर्तते यथास्वप्ने मिथ्यागमः)रघुनन्दन कहत हे तारेशब्दस्पर्श रूपरसगंध मैथुनादि जो इंद्रिन की विषयहैं तिनहिं सेवन करने वाले पुरुष को मिथ्यासंसारसत्य आरोपित होताहै भाव स्त्री पुत्र धन धामादि सब सत्यही अपना देखाताहै सो विना ज्ञानउदयभये आपही ते नहीं निवृत्त होता है कौन प्रकार यथास्वप्नेंम कोई हानिलाभ प्राप्त भई यद्यपि झूठहीहै परंतु बिना जागे मिटती नहीं है तैसेही विना ज्ञान संसार सत्य देखात १९ अविद्या अनादि सबंधात् तत्कार्य अहंकृतेः तथाअपार्थकः अपिसंसारः स्यात् रागद्वेषादि संकुलः) अबसंसारको कारण कहत कि जीव को भ्रमावने वाली जो अविद्या मायाहै ताको अनादि काल ते जीव को संबंधहै भाव माया के वशीभूत है इसकारण ते तिसको कार्य है अहंकार भाव झूठे को सत्य सत्य को झूंठ यह संसारको व्यापार यथा अहंकार तैसे झूठा निश्चय करिकै संसार है परंतु प्रीति बिरोधादि दोषौं सों परि पूर्ण भराहै २० (हे शुभेमन एवहि संसारः च एव मनः बंधः आत्मामनः समान त्वं एत्यतत्बं धभाक् गत) हे मंगल रूपे मनै निश्चय करिकै संसारको कारणहै पुनः निश्चय करिकै मनै जीव को बंधन करने वाला है कौन भांति जब जीवात्मा मनकी एकता को प्राप्त भाव मेरा मनजो चहै गो सोई करौंगो ऐसा अंगीकार करिकै ता मनको जो बंधन है ताके भागको प्राप्त होइगो भाव इंद्री द्वारा बि- षय ग्राहते जो कर्म मन करैगो ताही फल दुःख सुखादि को आत्मौ सहैगो सोई बंधन है २१ (शु- द्धः फटिकः यथा अलक्त कादि समीपगः तत्वर्ण युगाभांति वस्तुतः रंजनम्नास्ति) कौन रीति मन के धर्म आत्मा में दर्शित होतेहैं जैसे शुद्ध अमल स्फटिक मणि लाखादि रंग के समीप प्राप्त भई तब ताही रंग को दर्शित होती है परंतु वास्तव में विचार पूर्वक देखने ते रक्तवर्ण तादि रंग वामें नहीं है तथा अमल आत्मा में मनके विकार देखाते हैं २२ ॥

बुद्धींद्रियादिसामीप्यादात्मनःसंसृतिर्बलात् ॥ आत्मास्वलिंगंतुमनःपरिगृह्यतदु द्भवान् २३ कामाञ्जुषन्गुणैर्बद्धःसंसारेवर्ततेवशः ॥ आदौमनोगुणान्सृष्ट्वाततः

कर्माण्यनेकधा २४ शुक्ललोहितकृष्णानिगतयस्तत्समानतः॥ एवंकर्मवशाज्जीवो भ्रमत्याभूतसंप्लवम् २५ सर्वोपसंहृतौजीवोवासनाभिःस्वकर्मभिः ॥ अनाद्यविद्याव शगस्तिष्ठत्यभिनिवेशतः २६ ॥

(आत्मास्वालिंगंतुमनःतत्बुद्धिइंद्रियादिसामीप्यात्आत्मनःबलात्संसृतिःउद्भवान्परिगृह्य) आत्मा आपमनमें मिला तिसीसे बुद्धि इंद्री इत्यादि की समीपता भई तिनके धर्मों को ग्रहणकरि आत्मा बलात् अर्थात् अवशहो कै संसार की उत्पत्ति आदि ग्रहण किया अर्थात् यथारंग के समीप स्फटिक रंगदार देखात अरु स्फटिक के समीप रंग अधिक चमकदार होत तथा आत्मा को संगपाय मनमें चमत्कारी वढ़ी ताते बुद्धि इंद्रिन को चमत्कार करदिया ते शुभाशुभ कर्मकरनेलगे तिनमन बुद्धि इंद्रिन की समीपता ते उनकर्मोंमें अपनपौ मानि आत्मा अवश है उनकर्मों को फल जन्म मरणादि ग्रहण किया २३ (गुणैःवद्धःअवशःसंसारेवर्त्ततेकामान्जुपन्मनः आदौगुणान्सृष्ट्वाततःअनेकधाकर्माणि) आत्मा मन के अधीन जीव बुद्धीते तीनोंगुणोंमेंबँधा अवशसंसारमें रहत विषयकामनाजोहैं तिनहिं सेवत संतेमन प्रथम तौ सतरजतमादि गुणोंको प्रकट कियाा तदनंतर अनेक प्रकार कर्म किया २४ (शुक्ललोहितकृष्णानितत्समानतःगतयःएवंजीवःकर्मवशात् आभूतसंप्लवम्भ्रमति) ते कर्म दोप्रकार के हैं एकशुभ दूसरा अशुभ पुनः शुभमें दोभेद एक शुक्ल जो हिंसारहित यथा जप तप तीर्थ व्रत दान पूजा पाठादि दूसरा लोहित जोहिंसासहित यथा यज्ञादि पुनः अशुभ कृष्ण कर्म है यथा जीव हिंसाचोरी परस्त्री परापकारा दियावत्पाप कर्म हैं इति कर्म मनकर्ता है तिनकी समान गतिफलकी प्राप्ती होतीहै अर्थात् कछु अशुभ हैं अरुशुक्ल कर्म किया तो उत्तम ब्राह्मण भया जो केवल शुक्ल तौ सत्यलोक प्राप्ती कछु अशुभ सहित लोहित कर्म करि उत्तम राजाभया केवललोहित देवलोक केवलअशुभ करिनरक प्राप्तीअरुशुभाशुभामिले यथा योग्य योनिन में जन्म पावताहै इसी प्रकार जीव कर्म वशते प्रलयकाल पर्यन्त भ्रमता है २५ (सर्वोपसंहृतः अभिनिवेशतःस्वकर्मभिःवासनाभिःजीवःअनादिअविद्यावशगःतिष्ठति)प्रलय काल आयेपर जबसब लोक संहार हैगये तब मनादि अंतः करण सहित लिंगशरीरको धारण किये आपने कर्मन सहित वासना सहित अनादि अविद्यामें लीन है रहता २६ ॥

सृष्टिकालेपुनःपूर्ववासनामानसैःसह ॥ जायतेपुनरप्येवंघटीयंत्रमिवावशः २७ यदापुण्यविशेषेणलभतेसंगतिंसताम् ॥ मद्भक्तानांसुशांतानांतदामद्विषयामतिः २८ मत्कथाश्रवणेश्रद्धादुर्लभाजायतेततः॥ततःस्वरूपविज्ञानमनायासेनजायते २९ तदाचार्यप्रसादेनवाक्यार्थज्ञानतःक्षणात् ॥ देहेंद्रियमनःप्राणाहंकृतिभ्यः पृथक्स्थितम् ३०॥

(पुनः सृष्टि कालेपूर्ववासनामानसैःसहअवशःघटीयंत्रइवपुनः अपिएवंजायते) पुनः सृष्टिकाल में पूर्व की वासना पूर्व कर्म मनादि अंतःकरण सहित सोई लिंग शरीर अवश घटी यंत्र इव अर्थात् माया वशतीनिहू गुणों में बँधाहुआ जीव रहँटघटियोंकी नाँई पुनः निश्चय करि इसीभांति उत्पन्न होता है यथा कूपमें चलते रहँट में रसरोंके आधार बँधी हुई मलिया छूँछी नीचेको जाती हैं भरी ऊपर आय जलनाय खाली फिरि नीचे को जाती है तैसेमायाके आधार त्रिगुणात्मरस्सीते वासना रूपबँधे जीवकाल चक्र रहँट में भ्रमते हैं २७ (यदापुण्यविशेषेणसुशांतानांसतांमद्भक्तानांसंगतिं

लभते तदामत्विपयामतिः) रघुनंदन कहत हे तारे अब ससार ते मुक्त होने को कारण सुनु जा समय जीव विशेष पुण्य किया ताके प्रभाव करिकै शांतहैं चित्तजिनको ऐसे महात्मा मेरे भक्तों की सगति वाको प्राप्त होतीहै तव मेरी विषय मति अर्थात् ईश्वर प्राप्तीकी चाह बुद्धि में होतीहै २८ (ततः दुर्लभामत्कथाश्रवणेश्रद्धाजायतेततःअनायासेनस्वरूपविज्ञानंजायते) ईश्वर बिपयिक बुद्धि भये तदनतर जो विषयी जननको दुर्लभहै सो मेरी कथा सुनिवेमें श्रद्धा उत्पन्न होती कथा सुनत संते तदनन्तर विनापरिश्रम भावयोग क्रिया तप साधनादि विनाकिहे मेरे स्वरूप जानिबे योग्य विज्ञान उत्पन्न होताहै २९ (तदाआचार्य प्रसादेन) जब विज्ञान भयातव वेद वेदांततत्त्व ज्ञाता आचार्यकी शरण गया तिनकी प्रसन्नता पूर्वक उपदेश करिकै (वाक्यार्थ ज्ञानतः क्षणात्) तत्त्व मासि इति जो महावाक्य हैं ताको अर्थ यथा तत्पद ईश्वर वाचकः त्वं पद जीव वाचकः असि इति क्रिया पदं तत्कोर्थः तस्य ईश्वरस्य हे जीवः त्वं असि भवसि इत्यर्थ. तेनजीव ईश्वरयो रेवअनादिसंवंधः इत्यादि वाक्यको अर्थ ताको ज्ञान भयेते एकक्षण भरेमें स्थूल सूक्ष्मकारण इतिदेह श्रवण त्वचानेत्र रसना नासिका लिंगादि जोइंद्री पान अपानउदान समान व्यान इतिप्राण मन अहंकारदि इनसव सों बिलगजो स्थित है ३० ॥

स्वात्मानुभावतःसत्यमानन्दात्मानमद्वयम् ॥ ज्ञात्वासद्योभवेन्मुक्तःसत्यमेवमयो दितम् ३१ एवंमयोदितंसम्यगालोचयतियोऽनिशम् ॥ तस्यसंसारदुःखानिन स्पृशंतिकदाचन ३२ त्वमप्येतन्मयाप्रोक्तमालोचयविशुद्धधीः ॥ नस्पृश्यसेदुः खजालैःकर्मवंधाद्विमोक्ष्यसे ३३ पूर्वजन्मनितेसुभ्रुकृतामद्भक्तिरुत्तमा ॥ अतस्त वविमोक्षायरूपंमेदर्शितंशुभे ३४ ध्यात्वामद्रूपमनिशमालोचयमयोदितम् ॥ प्रवाहपतितंकार्यंकुर्वंत्यपिनलिप्यसे ३५ श्रीरामेणोदितंसर्वंश्रुत्वातारातिविस्मि ता ॥ देहाभिमानजंशोकंत्यक्त्वानत्वारघूत्तमम् ३६ ॥

(सत्यंअद्वयम् आनंदात्मानं स्वात्माअनुभावतः ज्ञात्वासद्यःमुक्तः भवेत् मयाएवसत्यंउदितम्) सत्यद्वैत रहित अखण्ड आनंद स्वरूप जो आपनी आत्मा ताको अनुभवते जानिकै शीघ्रही मुक्तहोत यह मैंने निश्चयकरिकै सत्य कहाहै ३१ (एवंमयाउदितंसम्यक्यः अनिशम्आलोचयति तस्यसंसार दुःखानि कदाचननस्पृशंति) इस प्रकार मेरा कहाहुआ सम्पूर्ण ज्ञानको जो प्राणी दिनोराति बिचा- रताहै ताको संसार के दुःख कभीनहीं छुइजातेहैं ३२ (एततमयाप्रोक्तं त्वंअपिविशुद्धधीः आलोचय दुःखजालैः नस्पृश्यसे कर्मवंधात् विमोक्ष्यसे) यह जो मेरा कहाज्ञानहै ताहि हेतारे तू भी अमल बुद्धिहोके बिचार करती रहु तौ संसारके समूह दुःखों करिकै नस्पर्श कीजावैगी दुःखतेरेनछुइजायंगे अरु कर्म बंधनते छूटिजायगी मुक्तहोवैगी ३३ (सुभ्रुपूर्वजन्मनिते मत्उत्तमाभक्तिः कृताअतः शुभे तवविमोक्षायमे रूपंदर्शितं) हे सुंदरी भौंह वाली तारेपूर्वके जन्ममें तू मेरी उत्तम भक्ति कियाहै इस कारण हेमंगलरूपे तेरे मोक्ष करने अर्थ मैं अपना रूपतोहिं दिखाया ३४ (मत्रूपंअनिशंध्यात्वा मयाउदितंआलोचय प्रवाहपतितं कार्यंकुर्वंति अपिलिप्यसेन) मेरा जो रूपहै ताहि दिनौराति ध्यान करतीहुई मेरा कहाहुआ जो ज्ञानहै ताहि विचारती रहु तौभव प्रवाहमें गिरने वाले जो देह संबंधी कार्यहैं ताहि करती हुई भी लिप्त न होइगी भाव कर्मफल भोगना न परी ३५ (अतिविस्मिता तारा श्रीरामेणउदितं सर्वंश्रुत्वादेभिमानजंशोकंत्यक्त्वा रघूत्तमंनत्वा) पति वियोग को दुःख ईश्वर के

दर्शन को सुख तामें कौनझूँठा कौनसाचा यह निश्चय नहीं ताते विस्मयवंत तारारही जब रघुनाथ जीने ज्ञानकहा सो सब सुनिकै पूर्व जो देहाभिमान रहा भावमें वाली की प्रियपत्नी हौं इति अभिमान त्यहि करिकै उत्पन्न भया जो दुःख भाव सेरापति मरिगया मैं कैसे जी सकौहौं इत्यादि झूँठा व्यवहार विचारि त्यागि रघुनन्दन को प्रणाम करि ३६ ॥

आत्मानुभवसंतुष्टाजीवन्मुक्तावभूवह । क्षणसंगममात्रेणरामेणपरमात्मना॥ अनादिबंधंनिर्धूयमुक्तासापिविकल्मषा३७सुग्रीवोपिचतच्छ्रुत्वारामवक्त्रात्समीरितम् ॥ जहावज्ञानमखिलंस्वस्थचित्तोभवत्तदा ३८ ततःसुग्रीवमाहेदंरामोवानरपुंगवम्॥ भ्रातुर्ज्येष्ठस्यपुत्रेणयद्युक्तंसांपरायिकम् । कुरुसर्वंयथान्यायंसंस्कारादिममाज्ञया ३९ तथेतिवलिभिर्मुख्यैर्वानरैःपरिणीयतम् ॥ वालिनंपुष्पकेक्षिप्त्वा सर्वराजोपचारकैः ४० ॥

(आत्माअनुभवसंतुष्टा) आत्मज्ञान साक्षात्प्राप्त भया ताते देह सुखकी आशात्यागि संतुष्टहृवै (जीवनमुक्ताबभूवह) भव बंधन रहित तारा जीवन मुक्तभई (परमात्मनारामेण क्षणसंगममात्रेण साअपि विकल्मषाअनादि बंधनंनिधूयमुक्ता) परमात्मा सर्वोपरि रघुनन्दन क्षणमात्र संगम भाव दर्शन दै उपदेश वार्ताकरिकै जो पशुयोनिमें गनती सोतारानिःपापकीगई अनादि कालते जो अविद्या करिकै संसार बंधन सो नाशकरि मुक्तकी गई ३७ (रामवक्त्रात् संईरितंतत्श्रुत्वाच सुग्रीवःअपि अखिलंअज्ञानंजहौतदा स्वस्थचित्तःअभवत्) रघुनन्दनके मुखतेकहाहुवाजो ज्ञानहै सोसुनिकै पुनः सुग्रीव निश्चयकरिकै संपूर्णजो अज्ञानरहै भाव देहाभिमान ताहित्यागि तासमयमें स्वस्थचित्तभयेशुद्ध रूपते प्रभुमें अनुराग भया ३८ (ततःवानरपुंगवम्सुग्रीवम्रामःइदंआहममआज्ञयाज्येष्ठस्यभ्रातुःसांपरायिकंसंस्कारादियत्उक्तंतत्पुत्रेणयथान्यायंसर्वंकुरु) तदनंतर वानरों में श्रेष्ठ जो सुग्रीवतिन प्रति रघुनंदनऐसा बोले हे सुग्रीव अबमेरी आज्ञा करिकै आपने ज्येष्ठ भाई को जो संग्राम में जूझे हुये की पारलौकिक संस्कारादि क्रियाबिधि जैसी धर्मशास्त्र में लिखीहोइ सो उसीके पुत्र अंगद केहाथ करिकै जैसी रीति चाहिये ताही विधान करिकै सब मृतक कर्मकरो ३९ (तथाइतिमुख्यैः वलिभिः वानरैःवालिनंपरिणीयतम्सर्वराजोपचारकैःपुष्पकेक्षिप्त्वा) जो आपकहे तैसाही करौंगो इत्यादि कहि सुग्रीव पुनःमुख्यबली जो वानरहैं तिनकरिकै बाली मृतक शरीरजो है ताहिउठवायसबराजसी साज सामग्री सहित अर्थात् स्नानकरायगंधलगायनवीन भूषण बसन पुष्प हारपहिरायचमरछत्रादि साज सहित पुष्पकतुल्य विमानपरपौढ़ाये ४० ॥

भेरीदुंदुभिनिर्घोषैर्ब्राह्मणैर्मंत्रिभिःसह ॥ यूथपैर्वानरैःपौरैस्तारयाचांगदेनच ४१ गत्वाचकारतत्सर्वंयथाशास्त्रंप्रयत्नतः ॥ स्नात्वाजगामरामस्यसमीपंमंत्रिभिःसह ४२ नत्वारामस्यचरणौसुग्रीवःप्राहहृष्टधीः ॥ राज्यंप्रशाधिराजेंद्रवानराणांसमृद्धिमत् ४३ दासोहंतेपादपद्मंसेवेलक्ष्मणवच्चिरम्॥ इत्युक्त्वाराघवःप्राहसुग्रीवंसास्मितंवचः ४४त्वमेवाहंनसंदेहःशीघ्रंगच्छममाज्ञया ॥ पुरराज्याधिपत्येत्वंस्वात्मानमभिषेचय ४५ नगरंनप्रवेक्ष्यामिचतुर्दशसमाःसखे ॥ आगमिष्यतिमेभ्रातालक्ष्मणःपत्तनंतव ४६ ॥

(ब्राह्मणै मंत्रिभिः सहवानरैः यूथपैः पौरैः तारयाच अंगदेनच भेरी दुंदुभिनिर्घोषैः)ब्राह्मणमंत्रीवानर यूथपाति पुरवासी तारा अंगद इत्यादि सहित भेरी दुंदभी आदि बाजों को शब्दसहित मृतकशरीर उठाये४१(गत्वा यथाशास्त्रतत्सर्वंप्रयत्नत :चकारस्नात्वामंत्रिभिःसहरामस्यसमीपंजगाम)सबसमाज सहित सुग्रीव श्मशान भूमिमें जायजैसा शास्त्रमें लिखारहैसोई विधिते दाहक्रियादि सब यत्नपूर्वक करते भये पुनः स्नान करि मंत्रिन सहित सुग्रीव रघुनाथ जी के समीप जाते भये ४२ (रामस्य चरणौनत्वाहृष्टधीःसुग्रीवःप्राहहेराजेंद्रसमृद्धिमत्वःनराणांराज्यप्रशाधि) रघुनाथ जीके चरणोंको प्रणाम करि प्रसन्न बुद्धि सुग्रीव बोले कि हे राजों में महाराज संपूर्ण ऋद्धियुत जो बानरोंकी राज्य है ताहि पालन करिये ४३ (अहंतेदास.लक्ष्मणवत्चिरम्पादपद्मंतेवेतिइतिउक्तःसुग्रीवंसस्मितंवचः राघवःप्राह) मैंतो आपको दासहौंसो लक्ष्मण की नाईं बहुत कालतक आपके पद कमल को सेवा करिहौं लक्ष्मण के तुल्य सेवक भाई न भया न है नहोनहार तिनकी नाईं मैं सेवा करिहौं ऐसा कहे तबसुग्रीवप्रति मुसुकायकै वचनरघुनंदन बोले ४४ (त्वंअहंएवसंदेहःनममअज्ञयाशीघ्रंगच्छपुरराज्याधिपतिएवंस्वआत्मानंअभिषेचय) हे सुग्रीवतुमहींहौ निश्चयकरिकै यामें संदेह नहीं तातेमेरी आज्ञा करिकै शीघ्रहींजाउ किष्किंधापुरकी राज्य को पति इसी प्रकार अपना अभिषेक करावो ४५ सखेच तुर्दशसमाःनगरंनप्रवेक्ष्यामिमेभ्राताल़क्ष्मणःतवपत्तनं आगमिष्यति (हेसखेपिताज्ञातेचौदहबर्षतक नगरमें न प्रवेशकरौं गो ताते मेराभाई लक्ष्मण तुम्हारे नगरको आवहिगो ४६ ॥

अंगदंयौवराज्येत्वमभिषेचयसादरम् ॥ अहंसमीपेशिखरेपर्वतस्यसहानुजः ४७ वत्स्यामिवर्षदिवसान्ततस्त्वंयत्नवान्भव ॥ किंचित्कालंपुरेस्थित्वासीतायाःपरिमार्गणे ४८ साष्टांगंप्रणिपत्याहसुग्रीवोरामपादयोः ॥ यदाज्ञापयसेदेवतत्तथैवकरोम्यहम् ४९ अनुज्ञातस्तुरामेणसुग्रीवस्तुसलक्ष्मणः ॥ गत्वापुरंतथाचक्रेयथारामेणचोदितः ५० सुग्रीवेणयथान्यायंपूजितोलक्ष्मणस्तदा ॥ आगत्यराघवंशीघ्रंप्रणिपत्योपतस्थिवान् ५१ ततोरामोजगामाशुलक्ष्मणेनसमन्वितः ॥ प्रवर्षणागिरिंरुर्ध्वंशिखरंभूरिविस्तरम् ५२ ॥

(यौवराज्येअगदंत्वंसादरंअभिषेचयअहंसहअनुजःसमीपेपर्वतस्यशिखरे) पुनः प्रभुकहेकिहेसुग्रीव युवराजपद मे अंगद को तुम सहित आदर अभिषेककरि दिहेउ अरु अब हम सहित लक्ष्मण तुम्हारे पुरके समीपही प्रवर्षणपर्वतके शिखरपर मंदिरकरि४७(वर्षदिवसान्वत्स्यामित्वंकिंचित्कालंपुरेस्थित्वा ततःसीतायाःपरिमार्गणेयत्नवान्भव) उहाँवर्षाकालमें बास करिहौं अरु हे सुग्रीव तुमअबहीं कुछ दिनपुरमें स्थितरहो तदनंतर सीता के ढूंढने में यत्नवंत होहु भाव वर्षा बादि सीता के ढूढने की उपायमें लागेउ ४८ (रामपादयोःप्रणिपत्यसुग्रीवःआहदेवयत्आज्ञापयसेतथाएवअहंकरोमि) प्रभु के वचन सुनितब रघुनाथजी के पायनमें दण्डप्रणाम करि सुग्रीव बोले हे देव जो आप आज्ञाकरते हो तैसाही निश्चय करि सबकार्य मैं करौंगो ४९ (तुरामेणअनुज्ञातःसलक्ष्मणःतुसुग्रीवःपुरंगत्वा यथारामेणचोदितःतथाचक्रे) पुनःरघुनंदन करिकै आज्ञाको प्राप्त सहित लक्ष्मणपुनः सुग्रीव किष्किं-धा पुरको जायकै जैसे रघुनंदन ने प्रेरणा किया रहै भाव सुग्रीव को राज्याभिषेक अंगदको युवराज इत्यादि तैसाही करते भये ५० (तदायथान्यायंसुग्रीवेणपूजितःलक्ष्मणःशीघ्रंआगत्यराघवंप्रणिपत्य उपतस्थिवान्) ता समयमें यथावेदोक्तबड़ेको जेसासत्कार चाहिये ताही विधिते सुग्रीवकरिकै पूजे

गये लक्ष्मण सो उहाँ ते विदाह्वै शीघ्रही आय रघुनंदन को प्रणाम करि समीप बैठते भये ५१-(ततो लक्ष्मणेन समन्वितःराम.प्रवर्षणागिरेः ऊर्ध्वंभूरिविस्तरंशिखरे आगुजगाम) तदनंतर लक्ष्मण सहित रघुनंदन प्रवर्षण गिरिके ऊपरजो बड़े विस्तारमें एकशिखर है भाव शिखरके ऊपर बड़ी फैली जागाहै तहाँ परशीघ्र जाते भये ५२ ॥

तत्रैकंगह्वरंदृष्ट्वास्फाटिकंदीप्तिमच्छुभम् ॥ वर्षवातातपसहंफलमूलसमीपगम् ॥ वासायरोचयामासतत्ररामःसलक्ष्मणः ५३ दिव्यमूलफलपुष्पसंयुतेमौक्तिकोपमजलौघपल्वले ॥ चित्रवर्णमृगपक्षिशोभितेपर्वतेरघुकुलोत्तमोऽवसत् ५४ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामयणेउमामहेश्वरसम्वादेकिष्किंधाकाण्डेतृतीयःसर्गः ३ ॥

(तत्रस्फाटिकं दीप्ति मत्शुभम् एकंगह्वरं दृष्ट्वा फल मूल समीपगम् वर्षवातआतप सहं तत्रसलक्ष्मणः रामः वासाय रोचयामास) तहाँ पर स्फटिक मणिकी प्रकाशवंत एक गुहा देखे तहाँ फल मूलादि समीपही हैं अरु वर्षा बयारि घाम इत्यादि जहाँ एकहू बाधा नहीं हैं तहाँ सहित लक्ष्मण रघुनाथ जी बास करिबे अर्थ रुचि करते भये अर्थात् इहाँ कछु काल रघुनाथ जी बास करैं गे ऐसा जानि देवतालोग सब रचना पूर्वहीं रचिराखे जहाँ स्फटिक मय गुहा समीप हीं जल सफल वृक्ष सब ऋतुन में सुख दायक है ५३ (दिव्य मूल फल पुष्प संयुते) देवलोक की ऐसी मूलजो वृक्षौं की जरें मधुर स्वादिष्ट होतीं हैं यथा सुधाकंदखाम्भी कसेरू मूँगफली सकरकंद इत्यादि तथा फल आँव अमरूद केला सरीफा नारियर छुहारा इत्यादि तथा फूल चँवेली बेला नेवारी गुलाब चंपा इत्यादि फूलनसंयुक्तहै (मौक्तिक उपमजल ओघपल्वले) मोतीकी उपमादेबे योग्य ऐसा अमल जल समूह भरा जिनमें ऐसे छोटे छोटे तड़ाग जिसमें (मृगपक्षि चित्र वर्ण शोभिते) मृगा अरु पक्षी बिचित्र वर्ण अनेक रंगके शोभित हैं जहाँ (पर्वते रघुकुलोत्तमः अवसत्) ऐसे उत्तम शोभाय मान पर्वतमें रघुनाथ जी बास करते भये ५४ ॥

इतिश्रीरासिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचितेअध्यात्मभूषणे किष्किंधाकाण्डेसुग्रीवराज्याभिषेकवर्णनोनामतृतीयःप्रकाशः ३ ॥

तत्रवार्षिकदिनानिराघवोलीलयामणिगुहासुसंचरन् ॥ पक्वमूलफलभोगतोषितो लक्ष्मणेनसहितोऽवसत्सुखम् १ वातनुन्नजलपूरितमेघानंतरस्तनितवैद्युतगर्भान् ॥ वीक्ष्यविस्मयमगाद्गजयूथान्यद्वदाहितसुकांचनकक्षान् २ नवघासंसमास्वाद्यहृष्टपुष्टमृगाद्विजाः ॥ धावंतःपरितोरामंवीक्ष्यविस्फारितेक्षणाः ३ ॥

सवैया ॥ सुखवास प्रवर्षण बंदन कै प्रणयारतलक्ष्मण प्रश्न किये । सुनिसो प्रभु वेद क्रिया बिधि सों निज पूजनको उपदेश दिये ॥ हनुमंत तबै कपिराज सिखै कपिवृंद पठै सियशोध लिये । पद वंदत वैजसुनाथ कृपाल बसौ नित सानुज राम हिये ॥ (तत्र लक्ष्मणेन सहितः राघवः लीलया मणि गुहासुसंचरन् पक्वफल मूल भोग तोषितःवार्षिक दिनानि सुखंअवसत्) शिव बोले हेगिरिजा तहाँ प्रवर्षण गिरिमें लक्ष्मण सहित रघुनन्दन माधुर्य्य लीलाकरिकै मणिमय गुहन विषे विचरते हुये पके फल

मूलादि भोग अर्थात् भोजन करि तोषित संतुष्ट वर्षाकाल के दिनन में सुख पूर्वक बास करते हैं १ (कांचन कक्षान् आहित सुगज यूथान् यद्वत् गतनुन्नजल पूरित अतर वैद्युत् गर्भान् स्तनित मेघान् वीक्ष्य विस्मयं अगात्) यथा कंचन मयी कामदार झूलैं पीठी परते दोऊ दिशि झूलि रही हैं जिन के ऐसे समूह गज राजों की समान आकाशमें पवन के वेगतेचले जातेहुये जलभरे जिनके अंतर बिजुली गर्भित गर्जतेहुये जो मेघहैं तिनहिं देखि रघुनन्दन बिस्मयको प्राप्तभये भावमेघशृंगारकेउद्दीपन विभाव हैंसो वियोग में बाधक देखाने अर्थात् जनुकामने हमपर चतुरगिनी सेन सजि धायो ताके आगे मेघ मानौ श्याम पुष्टांग गजराज हैं बिजुली जनु झूलैं चमकती हैं गर्जनि जनु घंटा बाजि रहे हैं ते धाये आवते हैं प्राणप्यारी रक्षक बिना हम कैसे बचैंगे इति बिस्मय को प्राप्त भये २(नवघासंसमास्वाद्य मृग द्विजा हृष्टपुष्ट परितः धावंत इक्षणाः विस्फारित रामं वीक्ष्य) वर्षे ते भूमि में नवीनिघास जामी है ताको चरिकै मृगा अरु पक्के फलन को खाइकै पक्षीते आनंदित पुष्टांग चारिहूं दिशिते इधर॰ उधर धावत समय में नेत्रों की पलकैं रोकि रघुनन्दन को देखि भाव श्यामसुंदर अद्भुत रूपकी माधुरी अवलोकत में तृप्त नहीं होते हैं ताते पला चालिनहीं शक्ती हैं ३ ॥

नचलंतिसदाध्याननिष्ठाइवमुनीश्वराः ॥ रामंमानुषरूपेणगिरिकाननभूमिषु ४ चरंतंपरमात्मानंज्ञात्वासिद्धगणाभुवि ॥ मृगपक्षिगणाभूत्वाराममेवानुसेविरे ५ सौमित्रिरेकदाराममेकांतेध्यानतत्परम् ॥ समाधिविरमेभक्त्याप्रणयाद्विनयान्वितः ६ अब्रवीद्देवतेवाक्यात्पूर्वोक्ताद्विगतोमम ॥ अनाद्यविद्यासंभूत·संशयोहृदिसंस्थितः ७ इदानींश्रोतुमिच्छामिक्रियामार्गेणराघव ॥ भवदाराधनंलोकेयथाकुर्वंतियोगिनः ८ इदमेवसदाप्राहुर्योगिनोमुक्तिसाधनम् ॥ नारदोपितथाव्यासोब्रह्माकमलसंभवः ९ ॥

दोश्लोकों की अन्वय एकहीमेंहै (सदाध्याननिष्ठामुनीश्वराः इवनचलंति) कैसे मृगपक्षी भये यथा ध्यानहीं की निष्ठाहै जिनको तिन मुनीश्वरों की नाईं मृगपक्षी भी प्रभु निकटते अन्यत्र कहूँ नहीं जातेहैं काहेते (गिरिकाननभूमिषु मानुषरूपेण रामंचरंतंपश्य) पर्वत वन भूमिइत्यादि विषे मानुष रूप करिकै रघुनन्दन को विचरते देखिकै (परमात्मानंज्ञात्वा सिद्धगणाभुवि मृगपक्षिणोभूत्वा) परमात्मा जानिकै सिद्धजनसमूह तेईजनु भूमिविषे मृगापक्षीभये(रामंएव अनुसेविरे) तेई रघुनन्दन को निश्चय करि सेवन करते हैं ४ । ५ (एकदाएकांते ध्यानतत्परम् समाधि विरमेरामं लक्ष्मणः भक्त्याविनयान्वितः प्रणयात् ६ अब्रवीत् देवपूर्वोक्तात् तेवाक्यात् अनादिअविद्या संभूतःसंशयःमम हृदिसंस्थित·विगतः) एक समय एकांत स्थानमें प्रभु बैठे ध्यान तत्पर भाव माधुर्य रूपकी सुधि त्यागे स्वयं रूपमें स्थिररहे सो समाधि त्यागि जब माधुर्यमें आये तब रघुनन्दन प्रति लक्ष्मण भक्ति करिकै भाव सेवक भाव दर्शाय नम्रता युक्त प्रीतिते बोले हे देव पूर्व कहे हुये आपके बचन ते जो अनादि कालीन अविद्या माया करिकै उत्पन्न संशय मेरे हृदयमें स्थितरही सो छूटिगई ७ (राघव क्रियामार्गेणभवत् आराधनंइदानीं श्रोतुंइच्छामि यथालोके योगिनःकुर्वंति) हेरघुनाथ जी कर्ममार्ग करिकै जो आपको आराधनहै पूजन विधि ताहि या समय में मोको सुनिवे की इच्छाहै, जिस प्रकार लोकमें योगीजन आपको पूजन करतेहैं ८ (इदंएवमुक्ति साधनंयोगिनः सदाप्राहुःनारदः अपितथा व्यासः ब्रह्माकमलसंभवः) क्रियामार्ग आराधन यही निश्चय करि मुक्तिको साधनहै ताहि योगीजन

सदा कहते हैं तिनमें नारद निश्चय करिकै कहते हैं तैसे व्यास अरु कमलज ब्रह्मा कहते हैं ९ ॥

ब्रह्मक्षत्रादिवर्णानामाश्रमाणांचमोक्षदम् ॥ स्त्रीशूद्राणांचराजेन्द्रसुलभंमुक्तिसाधनम् १० तवभक्तायमेभ्रात्रेब्रूहिलोकोपकारकम् ॥श्रीरामउवाच ॥ ममपूजाविधानस्यनांतोस्तिरघुनंदन ॥ तथाऽपिवक्ष्येसंक्षेपाद्यथावदनुपूर्वशः ११ स्वगृह्योक्तप्रकारेणद्विजत्वंप्राप्यमानवः॥ सकाशात्सद्गुरोर्मंत्रंलब्ध्वामद्भक्तिसंयुतः १२ तेनसंदर्शितविधिर्मामेवाराधयेत्सुधीः॥ हृदयेवानलेवार्चेत्प्रतिमादौविभावसौ १३॥

(ब्रह्मक्षत्रादिबर्णानांच आश्रमाणांमोक्षदम् चस्त्रीशूद्राणां सुलभम्मुक्तिसाधनम् लोकोपकारकम् राजेंद्रतवभक्ताय भ्रात्रेमेब्रूहि) ब्राह्मण क्षत्री वैश्यादि उत्तम वर्णोंको पुनः ब्रह्मचर्य गृहिस्त वाणप्रस्त संन्यासादि आश्रमोंको मुक्तिदायकहै पुनःस्त्रीशूद्रादि नीचनको भी सुलभमुक्ति साधन जोपूजनहै ताहि लोकउपकारहेतुको हेराजेंद्र आपकोभक्त भाई जोमैं ताकेअर्थकहिये१० (हेरघुनन्दन ममपूजाविधानस्य अंतःनअस्ति तथापि यथावत् अनुपूर्वशः संक्षेपात्वक्षे) रघुनाथजी बोले कि हेरघुवंशमें नन्दन लक्ष्मण मेरी पूजाके बिधानको अंतनहींहै ताहूपर जैसा करना चाहिये ताही क्रम पूर्वक संक्षेपते भाव थोरेमें सब कर्म कहताहौं ११ (स्वगृह्यउक्तप्रकारेण मानवःद्विजत्वं प्राप्यसकात् भक्तिसंयुक्तः सद्गुरोःमत्मंत्रंलब्ध्वा) प्रथम अपने गृह्य सूत्रके कहेहुये प्रकार करिकै मनुष्य द्विजत्वको प्राप्तहोइ अर्थात् बालवयमें तीनहूँ वर्ण शूद्रवत हैं तावत् क्रियाको अधिकारी नहींहै ताते अपने गोत्रको जो वेदकी शाखाहै ताकी लिखीहुई विधानते उपनयन संस्कार करि यज्ञोपवीत युत द्विजसंज्ञक ह्वै विद्या पढ़िपुनः भक्ति सहित सद्गुरु यथा रामार्चन चंद्रिकायां ॥ शांतोदांतःकुलीनश्चविनीतःशुद्धवेषवान शुद्धाचारः सुप्रसिद्धःशुचिर्दक्षःसुबुद्धिमान॥आश्रमीध्याननिष्ठश्चमंत्रतंत्रविचक्षणःनिग्रहानुग्रहेशक्तोगुरुरित्यभिधीयते ॥ ऐसे सद्गुरुते शुभ मुहूर्त विशेषि ग्रहण समय में मेरा मंत्र लेवै १२ (तेनसंदर्शित विधिःसुधीः मांएवआराधयत् अनलेवाविभावसौ हृदयेवाप्रतिमादौअर्चयत्) तिन सद्गुरु करिकै बताई हुई बिधिसो सुबुद्धी जन मेरा आराधनकरैं सोचहै हवनादि करि अग्निविषे अथवा वेद मंत्रन करिकै सूर्य मण्डल बिषे वा मानसी भावना करि हृदयविषे अथवा चित्रपट श्रीविग्रह इत्यादि मेरी प्रतिमादिमें पूजन करै १३ ॥

शालग्रामशिलायांवापूजयन्मामतंद्रितः ॥ प्रातःस्नानंप्रकुर्वीतप्रथमंदेहशुद्धये १४ वेदतंत्रोदितैर्मंत्रैर्मृल्लेपनविधानतः ॥ संध्यादिकर्मयन्नित्यंतत्कुर्याद्विधिनाबुधः १५ ॥

(वाअतंद्रितःशालग्रामशिलायांमांपूजयत्देहशुद्धयेप्रातःप्रथमंस्नानंप्रकुर्वीत) अथवाआलस्यरहित भाव श्रद्धा सहित शालग्रामशिलाविषेमेरी पूजाकरै तहाँ देहकी शुद्धताहेत प्रातः काल उठि सब प्रात क्रिया युतस्नान करै कौन भांति सो आगे कहत १४ (मृल्लेपनविधानतःवेदतंत्रोदितैःमंत्रैः) मृत्तिकालेपनआदिविधानते अरुवेद मंत्रतंत्रके मंत्रों करिकै स्नान करैं अर्थात् चारिदण्डरातिरहेउठै श्री राम जपराम इतिउच्चारण पूर्वक ध्यानकरैपुनः पूर्व मुख न्यासध्यान युत चौविस गायत्री जपै पुनः जल युतवाहेरजाय सूर्य्ये दहिने दै दिशाजाय एकबार लिंगमें पांचबारगुदा में माटी लगायशौच करै पुनः दशबार बाम हाथे सातबार दोऊ हाथौं में चारि बार पायनमें माटी लगाय धोय कुल्ला

करि आम्रादि दंत धावन करि पुनः चरणोदकतुलसी गंध शंखमें करि तीनि वारघुमाय शीशपरनावै यथा रामार्चन चंद्रिकायां॥शालग्राम शिलातोयं तुलसी गंधमिश्रितं।कृत्वाशंखंभ्रामयेत्त्रीःप्रक्षिपेन्निज मूर्द्धनि॥पुनः सूर्यकी प्रार्थनासोंजलमेंतीर्थोंका आवाहनकरै॥ यथा ब्रह्मांडोदरतीर्थानिकरैः स्पर्शेतरवे। तेनसत्येनतेदेवतीर्थदेहिदिवाकर॥ गंगेचयमुनेचैवगोदावरिसरस्वती नर्मदेसिंधुकावेरीजलेस्मिन्सन्निधिंकुरु॥ पुनः स्नान करि गायत्री तेन्यास युत त्रिबार प्राणायामकरि पुनः ब्रह्मादि देवसनकादि ऋषि पित्रादि को तर्पण करै तब बसन धारण करि आसन परबैठि पुनः (संध्यादियत्नित्यंकर्मतत् विधिनाबुधःकुर्यात्) संध्यादि जो नित्य कर्मसो विधि विधान सहित बुद्धिमान करै अर्थात् हरिमुद्रा युत संप्रदाय अनुकूल तिलक करै शिखा बाँधि दक्षिणहाथे में जलले गुरुको ध्यान करि कुश मूलके जलमें चक्रलिखिराममंत्र लिखिपूर्ववत् तीर्थोंको आवाहनकरि वही जल बाम हाथमें लेशीशपर डारै शेषपान करिलेइ इसीभाँति तीनि बारकरै पुनः रामंतर्पयामि इसीरीति सपरिवार सांगदेव सबको तर्पण करै पुनः अंगन्यास सहित १००० वा १०० वा १० बारगायत्री जपैपुनः ओंहंसःसोहं इतिमंत्र एकमालाजपै इतिरामार्चनचंद्रिकाविधि संध्याकरै १५॥

संकल्पमादौकुर्वीतसिद्ध्यर्थंकर्मणांसुधीः ॥ स्वगुरुंपूजयेद्भक्त्यामद्बुद्ध्यापूजकोमम १६ शिलायांस्नपनंकुर्यात्प्रतिमासुप्रमार्जनम्॥ प्रसिद्धैर्गंधपुष्पाद्यैर्मत्पूजासिद्धिदायिका १७ अमायिकोऽनुवृत्त्यामांपूजयेन्नियतव्रतः॥ प्रतिमादिष्वलंकारः प्रियोमेकुलनन्दन १८॥

(कर्मणांसिद्ध्यर्थंसुधीःआदौसंकल्पंकुर्वीतममपूजकःभक्त्यांमत्बुद्ध्यास्वगुरुंपूजयेत्) सबकर्मों के यथार्थ फल सिद्ध प्राप्ती अर्थ प्रथम संकल्पकरै पुनः प्रभुकहत कि मोको पूजनेवाला भक्तिकरिकै अरु मेरी बुद्धि अर्थात् ईश्वर भाव करिकै अपने गुरुकी पूजाकरै १६ (शिलायांस्नपनंकुर्यात्) शालग्राम शिलामें केशरिकपूर चंदनादि लगाय स्नानकरावै (प्रतिमासुप्रमार्जनम्) शिलाधातु मय जो मेरी प्रतिमा हैं तिनमें मार्जन अर्थात् तुलसीदल ते जल छिरकै वा बसन भेइ पोंछि लेइ विशेषितो सन्मुख आदरश करि तापर जल नाय देय (मत्पूजासिद्धिदायिकागंधपुष्पाद्यैःप्रसिद्धैः) मेरी पूजा सिद्धिदेने योग्यगंध पुष्पदलादि प्रसिद्धहै यथा अग्नि पुराणे २४८ अध्याये॥ पुष्पैस्तु पूजनाद्विष्णुः सर्व्वकार्य्येषुसिद्धिदःमालती मल्लिकायूथीपाटलाकरवीरकम्। यावंतिरतिमुक्तश्चकर्णिकारःकुरंटकः। कुब्जकस्तगरोनीपोबाणोवर्वरमल्लिका।अशोकास्तिलकःकुन्दः पूजायैस्यात्तमालजम्।विल्वपत्रंशमीपत्रंपत्रंभृङ्गरजस्यतु॥तुलसीकालतुलसीपत्रंवासकमर्चने।केतकीपत्रपुष्पंचपद्मंरक्तोत्पलादिकम्॥इत्यादि फूल तथा चंदनकर्पूरअगरतगरकेशरिकुम् कुमादिगंधलोक में प्रसिद्ध है तथापि अगस्त्यसंहितायां ६ अध्याये २१ श्लोकात्॥ चंदनागरुकस्तूरीसकर्पूरहिमांबुभिः।पंचामृताभिषेकैश्चपुष्पैस्तामरसैरपि॥पुष्पमाल्यैश्चबहुभिर्दूर्वाभिश्चाक्षतैःसह।नीलोत्पलैर्मल्लिकैश्चकरवीरैश्च चंपकैः॥जातीप्रसूनैर्विल्वैश्चपुन्नागैर्वकुलैरपि॥कदंबैर्केतकीपुष्पैःकरुणाशोककिंशुकैः॥नागबाणादिपुष्पैश्चगंधवद्भिर्मनोहरैः१७(अमायिकःअनुवृत्यानियतव्रतःमांपूजयेत्हेकुलनंदनप्रतिमादिषुअलंकारःमेप्रियः दंभछलादि रहितबाहेरभीतर शुद्धहै जो रीति गुरुने सिखावा होइताहीविधि भाव अग्नि में सूर्यमें हृदय में प्रतिमामें इत्यादि जो मार्ग गहै तामें नित्य नेम सहित मोको पूजै परंतु हे लक्ष्मण जो प्रतिमा आदिकोंमें बसन भूषण भूषित करि पूजन करते हैं ते जनमोको अत्यंत प्रियहोते हैं भाव यह विशेषिहै १८॥

अग्नौयजेतहविषाभास्करेस्थंडिलेयजेत् ॥ भक्तेनोपहृतंप्रीत्यैश्रद्धयाममवार्यपि१९किंपुनर्भक्ष्यभोज्यादिगंधपुष्पाक्षतादिकम् ॥ पूजाद्रव्याणिसर्वाणिसंपाद्यैवंसमारभेत् २० चैलाजिनकुशैःसम्यगासनंपरिकल्पयेत् ॥ तत्रोपविश्यदेवस्य सम्मुखेशुद्धमानसः २१ ॥

(अग्नौ हविषायजेत भास्करे स्थंडिले भक्तेन प्रीत्या श्रद्धया उपहृतं वारि अपि ममयजेत) अग्नि विषे भक्त घृतादि हवन करि मोको पूजै अथवा सूर्य मंडल विषे मेरा रूप जानि ताके अर्थ भूमि वेदी विषे जो जन भक्ति करिकै भाव सेवक है प्रीति करिकै श्रद्धा करिकै युक्त है जलै सों निश्चय करि मेरा पूजन करै भाव रबि सन्मुख मेरे अर्थ जलार्घ भूमि पर नाइ देवै सो भी मैं बहुत मानि लेताहौं इति शेषः १९ (भक्ष्यभोज्यादि गंध पुष्पादिकम् पुनः किम्) बौंदी लड्डू खाभा खुरमादि जो रूखे इति भक्ष्य दालि भात तस्मइ पूरी इति भोज्य इत्यादि नैवेद्य तथा चंदन फूलादि करिकै जो पूजन करता है पुनः ताको क्या कहा चाहिये ताते (सर्वाणि पूजा द्रव्याणि संपाद्य एवं संआरभेत्) जल औषधी दल फूल फल दधि मधु धूप दीप पक्कान्नादि सब पूजाकी सामग्री बटोरि अपने पास धरि इसप्रकार पूजा प्रारम्भ करै २० (चैलआजिन कुशैः सम्यक् आसनं परिकल्पयेत् तत्र शुद्धमानसः देवस्य सन्मुखे उपविश्य रोमज कौशेय बसन मृग चर्म कुश इत्यादि संपूर्ण करिकै विधिवत् आसन रचि तहाँ शुद्धमग है इष्टदेव के सन्मुख समीप बैठै अर्थात् जिस मंदिर में पूजाकरना होइ ताको नकशा खैंचि ताके भीतर इस कूर्म चक्रको पूर्व मुख लिखि देखै मंदिर के नामको प्रथमाक्षर जिसभाग में होइ उसनवयें भाग में पुनः नवभाग करि तिन में पूर्व मुख आदि आठौ घरनमें अकारादि स्वर लिखि देखै उसी पूर्वाक्षरमें जौन स्वर होइ सोई स्वर इहाँ जिसभागमें देखै सोई पूजाको स्थान करै तहाँचौकादे तामें चांदी वा अनार की कलम ते इसी कूर्मचक्रको लिखि ताके शीश पर कुशासन तापर मृगचर्म तापर ऊनवस्त्र बिछाइ तापरइष्टदेवके सन्मुखसमीप शुद्धमनकरि बैठैअरु शुद्ध चंद्रमा तारा युत शुभमुहूर्तविचारि जामें योगिनीवामें वा पीछे परै चंद्रमा सन्मुख वा दहिनेपरै तब निर्विघ्न पूजा होइ २१ ॥
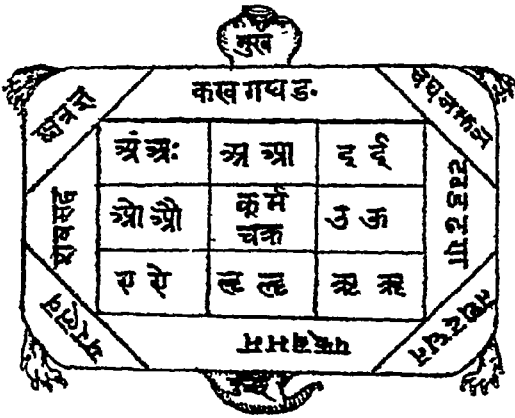
ततोन्यासंप्रकुर्वीतमातृकाबहिरंतरम् ॥

(ततःबहिः अंतरम् मातृकान्यासं प्रकुर्वीत) तदनंतर बाहेर सर्व अंगौ में अंतर सर्व कमल दलों में अकारादि क्षकारांत पचासौ वर्ण क्रमसे स्थापित करै यथा अगस्त्य संहितायां अथांतर्मातृकान्यासः कंठहृन्नाभिगुह्यके । पादौभ्रूमध्यगेपद्मेषोडशद्वादशेछदे ॥ दशपत्रेचषट्पत्रेचतुःपत्रेद्विपत्रके । पंचाशद्वर्णविन्यासःपत्रसंख्याक्रमाद्भवेत् ॥ एकैकवर्णमेकैकपत्रांतेविन्यसेन्मुने ॥ अर्थात् कंठ में षोड़श दल कमल तिनमें अआ इई उऊ ऋॠ लृॡ एऐ ओऔ अंअः इति स्वर प्रति दल न्यास करै हृदय में बारह दल कमल तिन प्रति दलन कखगघङ चछजझञ टठ न्यास करै नाभि में दशदल कमल तिन दल प्रति डढण तथदधन पफन्यास करै गुह्यमें षटदल कमल प्रति दलमें, बभम यरल न्यास

करै पाद में चारि दल कमल प्रति दल में वशपस न्यास करै भौंह मध्ये द्विदल कमल तामें हक्ष न्यास भाव इसभांति ध्यान करै कि इनकमल दलों में ये ये वर्ण अंकित हैं इति सब कमल में पुनः वहिर्न्यासयथा ॥ शिरो१वदनवृत्तेपि२चक्षु२श्रोत्रयुगेतथा२ नासा१कपोलयुगले२तथोष्टाधरयोरपि२ ऊर्ध्वाधोदंतपंक्तौ२चामूर्द्धास्यो१ षोड़सस्वरान् कचवर्गद्वयंबाह्वोःपंचसंधिस्थलेन्यसेत् टतवर्गद्वयंपादेसंध्याग्रेपितथान्यसेत् पवर्गंपार्श्वयुगलेपृष्ठनाभ्युदरेषुच ॥ हृदोर्मूलककुत्कुक्षेहृदादिकरयोर्द्वयोः जठरानलयोश्चैव व्यापकंविनियोजयेत् ओमाद्यतोनमोंऽतोवासविंदुर्विंदुवर्जितःपंचाशदक्षरन्यासःक्रमेणैवविधीयते यथा अंनमः शिरसि आंमुखावृते इं दक्षिण नेत्रेईं वामनेत्रे उं दक्षिणकर्णे ऊंवामकर्णे ऋंदक्षिणनासिकायां ॠं वाम लृं दक्षिण कपोले ॡं वाम एं उर्द्धोष्ठे ऐं अधरोष्ठे ओं उर्द्ध दंत पंक्तौ औं अधोदंत पंक्तौ अं शिरसि अः मुखे कं दक्ष वाहु मूले खं दक्षकूर्परे गं दक्षिणमणि वंधे घंदक्षांगुलौ ङं दक्षिणांगुल्यग्रे चंवामवाहु मूले छ वामकूर्परे जंवाममणिवंधे झं वामांगुलि मूले ञंवामांगुल्यग्रे टंदक्षिण पादमूले ठं दक्षिण जानुनि डं दक्षिण पाद गुल्फे ढं दक्षिण पादांगुलिमूले णं दक्षिण पादांगुल्यग्रे तं वामपादमूले थं वामपाद जानुनि दं वामपादगुल्फे धं वामपादांगुलिमूले नं वामपादांगुल्यग्रे पं दक्षकुक्षौ फं वामकुक्षौ बं पृष्ठे भ नाभौ मं उदरे यं हृदये रं दक्षांसे लंककुदि वं वामांसे शं हृदयादिदक्षवाहौ पं हृदयादि वामवाहौ सं हृदयादि दक्षपादं हं हृदयादि वामपादे लं हृदयादि उदरे क्षंहृदयादि मुखे इसी भांति आदि ॐकार तव मातृका तव नमः तव अंग को नाम लैकरसों स्पर्शकरै इतिवाह्य मातृकान्यास॥

केशवादिततःकुर्यात्तत्वन्यासंततःपरम् २२ ॥

(ततःकेशवादिकुर्यात्) मातृका न्यासकरि तदनंतर केशवादि न्यासकरै यथा रामार्चन चंद्रिकायां ॐकेशवादि मातृका न्यासस्य प्रसाध्य नारायणऋषिः गायत्रीछंदः लक्ष्मीनारायणो देवता हलोवीजं स्वरसंग्रहशक्तिः इष्टार्थेजपेविनियोगः॥अथध्यानं ॥ विद्यारविंदमुकुटामृतपद्मकुंभः कौमोदकी सुर सुदर्शन शोभिहस्तम् । सौदामिनी मुकुलकांति विभातिलक्ष्मी नारायणात्मक मखंडित मादि मूर्तिम् ॥ अथन्यासः॥ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं (अं) क्लीं श्रीं ह्रीं केशवायकीर्त्यैनमः ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं (आं) क्लीं श्रीं ह्रीं नारायणायकांत्यैनमः (ऐसहीवीजोंको संपुटसबैमातृकोंमेंचाहिये) (इं) माधवायतुष्ट्यैनमः (.ईं.) गोविंदायपुष्ट्यैनमः (.उं.) विष्णवेधृत्यैनमः (ऊं.) मधुसूदनायक्षांत्यैनमः (.ऋं.) त्रिविक्रमाय क्रियायैनमः (.ॠं.) वामनायदयायैनमः (.लं.) श्रीधराय मेधायैनमः (.लृं.) हृषीकेशाय हर्षायैनमः (.एं.) पद्मनाभायश्रद्धायैनमः (.ऐं.) दामोदरायलज्जायैनमः (.ओं.) वासुदेवायलक्ष्म्यै नमः (.औं.) संकर्षणायसरस्वत्यैनमः (.अं.) प्रद्युम्नायप्रीत्यैनमः (.अः.) अनिरुद्धायरत्यैनमः (.कं.) चक्रिणेविजयायैनमः (.खं.) गदिनेदुर्गायैनमः (.गं.) शार्ङ्गिणेप्रभायैनमः (.घं.) खड्गिने सत्यायैनमः (.ङं.) शंखिनेचण्डायैनमः (.चं.) हलिनेवारुण्यैनमः (.छं.) मुशलिनेविलासिन्यै नमः (.जं.) शूलिनेविजयायैनमः (.झं.) पाशिनेविरजायैनमः (.ञं.)अंकुशिनेविश्वायैनमः (.टं) मुकुंदायविमदायैनमः (.ठं.) नंदायसनंदायैनमः (.डं.) नंदिनेस्मृत्यैनमः (.ढं.) नरायऋद्ध्यैनमः (.णं.) नरकघ्नेसमृद्ध्यैनमः (.तं.) हरयेशुद्ध्यैनमः (.थं.) कृष्णायबुद्ध्यैनमः (.दं.) सत्याय भक्त्यैनमः (.धं.)सात्वतायसत्यैनमः (.नं.) शूरिणेक्षमायैनमः (.पं.) शूरायरमायैनमः (.फं') जनार्दनायउमायैनमः (.बं.) भूधरायक्लेदिन्यैनमः (.भं.) विश्वमूर्तयेक्लिन्नायैनमः (.मं.) वैकुण्ठाय वसुदायैनमः (.यं.) त्वगात्मनेपुरुषोत्तमायवसुधायैनमः (.रं.) असृगात्मनेसवेलिनेपरमायैनमः (.लं.) मांसात्मनेवलानुजायपरायणायैनमः (.वं.) वेदात्मनेवलायसूक्ष्मायैनमः (.शं.) अस्थ्यात्मनेवृषघ्नाय

संध्यायैनमः (.षं.) मज्जात्मनेवृषायप्रज्ञायैनमः (.सं.) शुक्रात्मनेहंसायप्रभायैनमः (.हं.) प्राणात्मनेवराहायनिशायैनमः (.क्षं.) क्रियाशक्त्यात्मनेविमलायमेधायैनमः ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं क्षं क्लीं श्रीं ह्रीं परमात्मने नृसिंहाय विद्युतायैनमः इतिकेशवादि मातृकान्यासः (ततःपरमृतत्त्वन्न्यासं) तदनंतरतत्त्व न्यासकरै यथा ॐमंनमः परायजीवात्मनेनमः ओंभंनमः परायप्राणात्मनेनमः इतिसर्वांगेन्यसेत् ओं वंनमः परायबुद्ध्यात्मनेनमः ओंफंनमः परायहंकारात्मनेनमः ओंपनमः परायात्मनेनमः एतत्त्रयं हृदये ओंनंनमः परायशब्दात्मनेनमः इतिमूर्द्धनि ओंधंनमः परायस्पर्शात्मनेनमः इतिमुखे ओंदंनमः परायरूपात्मनेनमः इतिहृदये ओंथंनमः परायरसात्मनेनमः इतिउपस्थे ओंतंनमः परायगंधात्मनेनमः इतिपाद्वयोः ओंणंनमः परायश्रोत्रात्मनेनमः इतिश्रोत्रयोः ओंढंनमःपरायत्वगात्मनेनमः इति त्वचि ओंडंनमः परायचक्षुरात्मनेनमः इतिचक्षुषे ओंठंनमः परायजिह्वात्मनेनमः इतिजिह्वायां ओंटं नमः परायघ्राणात्मनेनम ः इतिघ्राणे ओंञंनमः परायवागात्मनेनमः इतिवाचि ओंझंनमः परायपाण्यात्मनेनमःइतिहस्तयोःओंजंनमःपरायपाय्वात्ममनेनमः इतिपायौ ओंछंनमः परायपादात्मनेनमः इतिपादयोः ओंचंनमः परायउपस्थात्मनेनमः इतिउपस्थे ओंङंनमः परायाकाशात्मनेनमः इति मूर्द्धिओंघंनमः परायवाय्वात्मनेनमः इतिमुखे ओंगंनमः परायतेजात्मनेनमः इति हृदये ओंखंनमः परायसलिलात्मनेनमः इतिगुह्ये ओंकंनमःपरायपृथ्व्यात्मनेनमःइतिपादयोओंशंनमः परायहृत्पुंडरीकात्मनेनमःओंहंनमःपरायसोममण्डलात्मनेषोडशकलायनम.ओंसंनमःपरायसूर्यमण्डलात्मनेद्वादश कलायनमः ओंरंनमः परायवन्हिमंण्डलात्मनेदशकलायनमः एतच्चतुष्टयंहृदिओंषंनमःपरायपरमेष्ठ्यात्मनेवासुदेवायनमः मूर्द्धिओंयंनमः परायपुरुषात्मनेप्रद्युम्नायनमः ओंलंनमः परायनिवृत्यात्मनेअनिरुद्धायनमः ओंक्षंनमः परायसर्वात्मनेनारायणायनमः इतिपादयोः ओंक्षौंक्षौंनमः परायकोपात्मने नृसिंहायनमः इतिव्यापकम् अतः तत्त्वस्यपूज्यस्यतत्प्राप्तेर्हेतुनापुनः तत्त्वन्यासमितिप्राहुःन्यासतंत्रविदोबुधाःइतितत्त्वन्यासः २२ ॥

मन्मूर्तिपंजरन्यासंमंत्रन्यासंततोन्यसेत् ॥

(मत्मूर्तिपंजरन्यासं) पुनः मेरीमूर्तियोंको जो पंजरहैताकोन्यास करै यथा अगस्त्य संहितायां तन्मूर्तिपंजरन्यासस्तस्यतन्मूर्तिसिद्धये आकर्णयैकचित्तःसन्यतोस्तिमयिनांतरम् नमोभगवतेब्रूयाद्वासुदेवायइत्यपि ओमादेरस्यमंत्रस्यआदायैकाक्षरंततः एकैकमक्षरंतद्वत् श्रीरामाख्यमनोरपि द्विरावृत्या क्षरादानांविष्णोर्द्वादशनामसुनामैकैकमुपादायसूर्यस्यापिच ॐततश्चस्वरस्तद्वासुदेवाक्षरंततःश्रीराम मंत्रवर्णश्च ततःस्युःकेशवादयः धातादयोनमोयन्यस्तव्योन्यासयोगतः अर्थात् ललत्यागिप्रणवादिएक स्वर वासुदेव मंत्र को एकाक्षर द्वै आवृति करिराम मंत्र को एकाक्षर केशवादि भगवान को एकनाम धाता आदि सूर्य को एक नाम चतुर्थ्यंतनमःइसी क्रम अंगों में न्यास करना यथा ओं अं ओं रां केशवाय धात्रे नमः ललाटे ओं आं नां रां नारायणाय आर्यम्णेनमः नाभौ ओं इं मों मां माधवाय मित्राय नमः हृदि ॥ ओं ईं भं यं गोविन्दाय वरुणायनमः कंठे ॥ ओं उं गं नं विष्णवे अंशायनमः दक्षिणपार्श्वे ॥ ओं ऊं वं मः मधुसूदनाय भगायनमःदक्षिणांसे ॥ ओं एं तें रां त्रिविक्रमाय विवस्वतेनमः दक्षिणस्कंधे ॥ ओं ऐं वां रां बामनाय इंद्रायनमःवामपार्श्वे ॥ ओं ओं सुं मां श्रीधराय पूष्णेनमः वामांसे ॥ ओं औं दें यं हृषीकेशाय पर्जन्यायनमः वामस्कन्धे ओं अं यां नं पद्मनाभाय त्वष्ट्रेनमः पृष्ठे ॥ ओं अः यं मंः दामोदराय विष्णवेनमः ककुदि ॥ ओंनमो भगवते वासुदेवाय इति मूर्द्ध्नि विन्यसेत् इतिमूर्त्ति पंजरन्यास (ततःमंत्रसंन्यसेत्) मूर्तिपंजरन्यासकरितदनंतर मंत्रराजकी न्यास विधि

करन्यासादि करै यथा ॐ रां अंगुष्ठाभ्यांनमः ॐ रीं तर्जनीभ्यांनमः ॐ रूं मध्यमाभ्यांनमः ॐरैं अनामिकाभ्यांनमः ॐरौं कनिष्ठिकाभ्यांनमः ॐ रः करतलकरपृष्ठाभ्यांनमः इति अंगुलन्यास ॐ रां हृदयायनमः ॐ रीं शिरसे स्वाहा ॐ रूं शिखायै वौषट् ॐरैं कवचाय हुं ॐ रौं नेत्राभ्यांनमः ॐ रः अस्त्राय फट् इतिहृदयादि न्यास ॥

प्रतिमादावपितथाकुर्य्यान्नित्यमतंद्रितः २३ ॥

(तथा प्रतिमा आदावपि नित्यंकुर्यात् अतंद्रितः) पुनः प्रभु कहत हे लक्ष्मण जिसभांति पूजा करने वाला अपने सर्व अंग में न्यास करै तिसी प्रकार मेरीप्रतिमा वा शालग्राम शिला वा चित्रपट वा हृदय विषे ध्यान में वा अग्नि में वा सूर्य में जहां पूजा करै तिसी मूर्त्ति विषे मातृका न्यास ऋष्यादि न्यास तत्वन्यास केशवादि न्यास मंत्र न्यास इत्यादि न्यासै निश्चय करि नित्यपूजा समयमें करै यामें आलस न राखै भाव श्रद्धा समेत सब न्यासै करै २३॥

कलशंस्वपुरोवामेक्षिपेत्पुष्पादिदक्षिणे २४ अर्घ्यपाद्यप्रदानार्थंमधुपर्कार्थमेव च ॥ तथैवाचमनार्थंतुन्यसेत्पात्रंचतुष्टयं २५ हृत्पद्मेभानुविमलेमत्कलांजीवसंज्ञिताम् ध्यायेत्स्वदेहमखिलंतयाव्याप्तमरिंदम ॥ तामेवावाहयेन्नित्यंप्रतिमादिषु मत्कलाम् २६ ॥

(स्वपुरःवामेकलशंपुष्पादिंदक्षिणेक्षिपेत्) पूजाकरने हेत जहां बैठै तहां अपने आगे वाम दिशि जल पूर्ण कलश धरै तथा दल फूलादि आगे दहिनी दिशि धरै२४(अर्घ्यपाद्यप्रदानार्थंच एवंमधुपकार्थं तुतथाएव आचमनार्थंचतुष्टयं पात्रंन्यसेत्) अर्घ्यदेनेहेत तथा पाद्य देने हेत पुनः निश्चय करि मधु-पर्क देने हेत पुनः ताही प्रकार निश्चय करि आचमन देने अर्थ इत्यादि सोनेके वा चाँदीके वा उत्तम काँसके चारि पात्र स्थापितकरै अर्थात् प्रथम त्रिपदीपर शंखधरि तामें जल गंध पुष्प अक्षत करै ताके उत्तर जल भरि अर्घ्यपात्र धरै तामें गंध पुष्प यव अक्षत कुश तिल दूब सेरसों डारै शंख की दक्षिण दिशि जल भरि पाद्यपात्र धरै तामें श्याम कमल अकित करि कमल विष्णु क्रांता डारै शंख के पूर्व जल भरि आचमन पात्र धरै तामें जायफर लवंग कंकोल मिलावै शंखके पश्चिम मधु पर्क पात्र धरै तामें दधि सहत घृत मिलाय धरै यथा अगस्त्य संहितायां ॥ आत्मनः रूपतः शंख-पूर्वतः साधयेत्ततः। अर्घ्यपात्रेपाद्यपात्रेसंपूर्य्यसलिलंशुभम् ॥ तथार्घ्यपात्रेदातव्यंगंध पुष्पयवाक्षताः। कुशाग्रतिलदूर्वाथसर्पपाश्चार्घ्यसिद्धये ॥ पाद्यपात्रेपिदातव्यंश्यामाकंपूर्वकोवचः। अब्जंचविष्णुक्रांता चपाद्यासिद्ध्येप्रयोजयेत् ॥ तथाचमनपात्रेपिदद्याज्जातीफलंमुने।लवंगमपिकंकोलंशस्तमाचमनीयकम् ॥ दध्नाचमधुसर्पिर्भ्यांमधुपर्कोभविष्यति ॥ २५ (हेअरिंदमहृत्पद्मेजीवसंज्ञिभानुविमलेमत्कलांतयाव्याप्तंस्वदेहं अखिलंतांध्यायेत् तांमत्कलाम्प्रतिमादिषुएवानित्यंअवाहयत्) हे शत्रु नाश करने वाले लक्ष्मण हृदय कमल विषे वास जीव नाम है जाको सो सूर्य के समान अमल प्रकाशमान जो मेरी कला है ताही करिकै व्याप्त प्रकाशित अपनीदेह सम्पूर्ण जानि ताको ध्यानकरै ताही मेरी कला को प्रतिमादिकन विषे निश्चय करि नित्यही आवाहन करै यथा रामार्चन चंद्रिकायां॥ हृदांबुजेब्रह्मकंद संभूते ज्ञाननालके । ऐश्वर्याष्टदलोपेते स्थिते वैराग्यकर्णिके ॥ आराग्रमात्रो जीवस्थो चिंतनीयोमनीषिभिः। नेतव्योहंसमंत्रे द्वादशांतेस्थितः परः ॥ तेनसंयोज्यविधिवत् भूतशुद्धिमथाचरेत् । इतिजीवस्थापनम् ॥ अथभूतसंहारः ॥ पादाद्याजान्वब्जांकंपतिंद्रुहिणदैवतम् ।

चतुरस्रांपंचगुणांग्लौंह्रांह्रः फट्भुवंजले ॥ जान्वाद्यानाभिपद्मांकंश्वेतमर्द्धेन्दुवैष्णवम् । रसरूपस्पर्शशब्दं वंह्रींह्रः फट्जलंशुचौ ॥ नभ्याहृदतंप्रद्युम्नंत्रिकोणंस्वस्तिकारणम् । वह्निरूपंस्पर्शशब्दंरंह्रांह्रः फट्समीरणे ॥ भूपर्यंतंहृदोवायोः पड्विंदुस्पर्शशब्दवत् ॥ वृत्तंसाङ्कर्षणंधूम्रंयंह्रूंह्रः फट्विहायसि । भ्रूमध्यांब्रह्मरंध्रांतंवासुदेवस्यशब्दखं ॥ ह्रांह्रौंहः फडहंकारेऽहंमहत्तत्त्वकेचतम् । प्रकृतौतांरामचन्द्राख्येपरब्रह्मणिसंहरेत् ॥ इतिभूतसंहार । शरीराकारभूतानांभूतानांयद्विशोधनम् । अव्ययब्रह्मसंपर्काद्भूतशुद्धिरियंमता ॥ मूलाज्ञानंततः पापंजन्मादिदुःखदंचयत् ॥ पानापानौनिरुध्याथतस्यरूपंविचिंतयेत् । महापातकपंचांगंपातकोपांगसंश्रयम् ॥ उपपातकरोमाणांकृष्णंकरोतिभीपणम् । नाभौपट्विंदुसंयुक्तंपडस्रासितवर्तुलम् ॥ वामयापूरितेनवायोॐ यंॐ८ वारंतेनशोधयत् । हृदित्रिकोणनिर्गच्छस्वस्तिकेरक्ततेजसे ॥ ॐरंॐ१६कुंभकम्संदहामितम् । बीजंचंद्रसहास्राभेमस्तकाब्जेस्थितम्सितम्ॐवंॐ३२बारंकुस्तूरपीयूषंप्लाव्यतेतुतेनरेचयत् । इतिप्लावनम् ॥ कृत्वैवंतुसहस्राब्जेरामोहमितिसंस्मरेत् । पूजकाप्त्यैततोभक्त्यातद्देहंभावयेत्पुनः ॥ ध्यायन्जीवात्ममंत्रैकंशुद्धमंगंशुभप्रदम् । मूलाधारोत्थयासूक्ष्मभासासौषुम्णामार्गतः ॐहुंफडितिसंयम्यप्राणं १६ वारंविन्यस्य मूर्द्धनि अखंडब्रह्मणोरात्मात्प्रेरकः पुरुषस्तथा प्रकृतिर्महान्प्रकृतेः ततोऽहंत्रिकोणात्मकतस्मादेतस्मादात्मन आकाशः संभूतः आकाशाद्वायुः वायोरग्निः अग्नेरापः अप्भ्यः पृथिवीपृथिव्या ओपधयः ओपधीभ्योऽन्नं अन्नाद्रेतोरेतसः पुरुषः एवंएषपुरुषोन्नरसमयः । ग्लामितिपृथिवीबीजेनतंरसंघनतांनयेत् । ॐहमितिबीजेनाऽवयवीकरणंभवेत् । सोहंमंत्रेणमरांवीनादांतेसिद्धिंभाविताम् ॥ ध्यात्वैवंब्रह्मरंध्रेणतत्रजीवकलांन्यसेत् । हृदिहस्तंसंनिधायत्तारप्राणप्रतिष्ठया ॐप्राणप्रतिष्ठामंत्रस्यब्रह्मविष्णुरुद्राऋषयः यजुःसामानिछंदांसिभतिछंदोवाछंदः क्रियामयबपुः प्राणाख्यादेवताप्राणप्रतिष्ठार्थेविनियोगः ॐकंखंगंघंङंअंपृथिव्यप्तेजोवायुराकाशात्मने आंहृदयायनमः ॥ ॐचंछंजंझंञंइंशब्दस्पर्शरूपरसगंधात्मनेईं शिरसेस्वाहा । ॐटंठंडंढंणंउंश्रोत्रत्वक्चक्षुजिह्वाघ्राणात्मनेऊंशिखायैवौपट् ॥ ॐतंथंदंधंनंएं वाक्पाणिपादपायूमुखस्थात्मनेऐंकवचायहुं । ॐपंफंबंभंमं ॐवक्तव्यादानविसर्गानंदात्मनेओं नेत्राभ्यांवौषट् ॐयंरंलंवंशंपंसंहं क्षंअंमनोबुद्ध्याहंकारचित्तात्मने अः अस्त्रायफट् ॐआंनाभेरधः ओंह्रींहृदयादौनाभिः ॐक्रींमस्तकादि हृदयंततः ॐयंत्वगात्मनेनमः हृदि ॐरंअसृगात्मनेनमः ॐलंमांसात्मनेनमः ॐवंमेदात्मनेनमः ॐशंअस्थ्यात्मनेनमः । ॐषंमज्जात्मनेनमः ॐसंशुक्रात्मनेनमः ॐहंप्राणात्मनेनमः ॐलंजीवात्मनेनमः ॐक्षंपरमात्मनेनमः इतिन्यासः ॥ अथध्यान ॥ रक्तांभोधिस्थपोतोल्लसदरुणसरोजाधिरूढाकराग्रैः पाशंकोदण्डमिक्षूद्भवमथगुणमथांकुशंपंचवाणान् ॥ बिभ्राणासृक्कपालंत्रिनयनविलसत्पीनवक्षोरुहारा । देवीवालार्कवर्णाभवतुसुखकरीप्राणशक्तिःपरानः ॥ इतिध्यानं अथप्राणप्रतिष्ठा ॥ ॐआंह्रींक्रौंयंरंलंवंशंषंसंहंक्षंसः ॥ ममप्राणइहस्थितपुनस्तान्येवबीजान्युच्चार्यममजीवइहास्थितः ॥ पुनःतथाममसर्वेन्द्रियपुनःतथाममनोबुद्धिरहंकारश्चित्तंपृथिव्यप्तेजो राकाशशब्दस्पर्शरूपरसगंधश्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणवाक्पाणिपादपायूपस्थ जीवप्राणा इहायांतु स्वस्तयेस्तु चिरंसुखेन तिष्ठंतु हंसः सोहंस्वाहा इतिमंत्र ॥ ततो जन्मादिक व्युष्टिक्रिया संस्कार सिद्धये षोड़श प्रणवा वृतीःकृत्वा शक्तिपरांस्मरेत् इतिपुनर्देहोत्पादनम् २६ ॥

पाद्यार्घ्याचमनीयाद्यैःस्नानवस्त्रविभूषणैः ॥ यावच्छक्त्योपचारैर्वात्वर्चयन्मामममायया २७ विभवेसतिकर्पूरकुंकुमागुरुचंदनैः ॥ अर्चयेन्मंत्रवन्नित्यंसुगंधकुसुमैःशुभैः २८ ॥
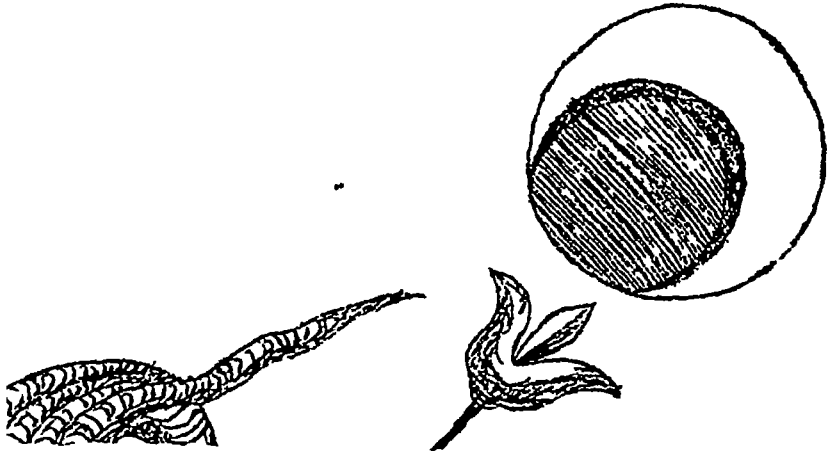
(पाद्यअर्घ्य आचमनीयआद्यैः स्नानवस्त्रविभूषणैः यावत्शक्तिउपचारैः तुअमाययामांअर्चयत्) पगधोवन जलदान मधुपर्क कुल्ला दंतधावन अभ्यंगादि स्नान वसन भूषण गंधदल फूल धूपदीप नैवेद्य आरती प्रदक्षिण इत्यादि करिकै अथवाछत्र चमर व्यजनादि यावत् शक्तिहोइ तिन उपचारन करिकै परतु छल छांड़ि मेरा पूजनकरै २७ (विभवेसतिकर्पूरकुंकुमअगरुचंदनैःशुभैः सुगंधकुसुमैः मंत्रवत्नित्यंअर्चयत्) प्रभु कहत हे लक्ष्मण ऐश्वर्यभये संते कर्पूर कुंकुम अगर केशरि मिश्रित चंदन करिक तथा मंगलीक सुगंधित चमेली वेला गुलाबादि फूलों करिकै उपचार मंत्रों करिकै नित्य पूजन करै नेम सहित २८ ॥

दशावरणपूजांवैह्यागमोक्तांप्रकारयेत् ॥ नीराजनैर्धूपदीपैर्नैवेद्यैर्बहुविस्तरैः२९ ॥

(हिआगमोक्ता) निश्चय करि जो विधि आगम शास्त्र में कहीगई यथा रामतापिनी अगस्त्यसंहिता शिवसंहिता सुंदरीतंत्र हारीत इत्यादिकों में जो विधि लिखी है ताही रीतिकरि अर्थात् भू वेदि कालीपितापर चौरग चौरीठा सों षट् कोणादि वेदी रचि तापर चौकीधरि पुनः तापर (दशावरण) सोना वा चांदी वा ताम्र पत्र पर चांदी की कलम ते केशरि कर्पूर चंदनादि करिके दशा वरण यंत्र राज लिखि धरै तापर प्रतिमा युत सिंहासन धरै पुनः (धूपदीपैःनैवेद्यैः नीराजनैःबहुविस्तरैःपूजां वैप्रकारयत्) धूप दीप नैवेद्य आरती इत्यादि बहुत विस्तार उपचारों करिकै सांग देव सपरिवार पूजन करै यथा उत्थापन आसन अर्घ्य पाद्य मधुपर्क आचमन अभ्यंग स्नान वस्त्र भूषण यज्ञोपवीत गंध दल फूल धूप दीप नैवेद्य आरती प्रदक्षिणा प्रणाम स्तुति इतिसूक्ष्मरीति अबदशावरण बिधिवत लिखनेते अवश्यही ग्रंथ बढ़ता है अरु या समय हम लोगोंमें विस्तार देखने की श्रद्धा नहीं है पूजन कौन करि सक्ता है परंतु उचित तौ यहहै कि जो बात मूल में होइ ताको परिपूर्ण रूप कहि देना चाहिये ताते मतिअनुसार लिखता हौं यथा मंदिर के द्वारपर जाय प्रभुको जगावने हेत प्रथम भेरी नाद करै व कपाट बजाय देइ (यथावाराहपुराणे भगवानाह) भेरीशब्दमकृत्वाचयस्तुमाप्रतिबोधयेत् वधिरोजायतेभूमौजन्मैकंतुनसंशयः ॥ कल्यमेवसमुत्थायहन्याद्भेरींसमुचितं । यत्रभेरीनवाद्येतकपाटं तत्रवादयेत्॥पुनःघंटानादकरैयथापाद्मे(सर्ववाद्यमयीघंटाकेशवस्यसदाप्रिया।वादनाल्लभतेपुण्यंयज्ञकोटिसमुद्भवम् ॥ वैनतेयाकृताघंटासुदर्शनयुताथवा । ममाग्रेस्थापयेद्यस्तुतस्यपापंहराम्यहम् ॥ घंटानाद सदाकुर्य्यात्पूजाकालेविशेषतः । प्रीतोभवाम्यिसततंघंटानादेनपुत्रक) श्री रामोजयति उच्चारण युत दक्षिण पद आगे धरि वाम हाथे घंटा नाद करत राम मंत्र उच्चारण युत दक्षिण हाथेके बार उवारै पुनः घृत वा तैल भरि ताम्र को दीपक बारे ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निःस्वाहा सूर्य्योज्योतिर्ज्योतिः सूर्य्यस्वाहाअग्निर्वर्चोज्योतिर्वर्च्चःस्वाहा सूर्य्योवर्चोज्योतिर्वर्च्चःस्वाहा ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्योज्योतिः स्वाहा इस मंत्रको पढ़ि दीप मुद्रादिखाय पुनः प्रार्थनीमुद्रा करि प्रार्थना करै यथा ॥ दीपोज्ञानप्रदोनित्यंदेवतानांसदाप्रियः । दानेनास्यभवेत्सौख्यंशांतिरस्तुसदामम ॥ पुनः दोऊजानु भूमिधरि दीप अर्पणकरि यहमंत्रपढ़ै यथा ॐ नमोभगवऽतेनुग्रहतेजायविष्णोसर्वदेवाग्निसंप्रविष्टएव चाग्निस्तवतेजः प्रविष्ट तेजश्चात्मानंसमंत्रश्च तेजसः संसारार्थे देवगृह्यश्व दीपद्युति मंत्र मूर्त्तिमंत्र अभूत्वा इमंकर्मणि निष्कलाम् इतिपढ़ि प्रभुके आगेदीपधरि पुनः दीपस्थान पर धरिदेइ पुनः तुलसी मूल माटी लगाय हाथ धोयडारै (यथावाराहपुराणे कृत्वातुममकर्माणि गृह्यदीपकमुत्तमम् । तावन्न स्पृशतेभूमिंयावद्दीपोन ज्वाल्यते॥ दीपेप्रज्वाल्यतेतत्र हस्तशौचंतु कारयेत्) पुनः खसखसवा गोपुच्छ बारोंकी कुचरीते बासी फूल दलादि बहारै यह पढ़त यथा ॐ भूर्भुवःस्वः(यथाविष्णुधर्मोत्तरे ॥ उशीर

कूर्चकंदत्त्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते । दत्त्वागोवालकूर्चंतु सर्वपापान्व्यपोहति ॥ अग्नि पुराणे । अथव्याहृतिभिर्निर्माल्यमपोह्या रायनस्नापयेत् पुनःप्रभुको जगावनेहेत पर्यंकपैंते समीपपूर्वमुखठाढ़ह्वैवामहाथे घंटा बजावत यह पढ़ै । ग जन्जागृहिजागृहिक्षणमपित्वामंतरेणाखिलं ॥ नैवस्थातुमलंकुतःसुखफलं भुंजंतिविश्वंविभो ॥ तेनोत्तिष्ठकृपाविशिष्टनिलयस्थांदृष्टिमुन्मीलय त्रैलोक्योपरितांप्रसारयहरेपीयूष धारामिव ॥ इति जगाय पुनः स्ववामें घंटाधरि दोऊहाथों फूलगहि कूर्ममुद्रा करि पुनः मणिमय पर्यंकपर बैठेहुये रघुनन्दन जनकनंदिनी समेत आलस भरे अधखुले नेत्र कमलनवजलधरतडिल्लताइवश्यामगौर तन इसप्रकारध्यानकरै पुनःराममंत्र उच्चारण पूर्वकउठाय सिंहासनपर बैठायआम्र अपामार्गादिकी दंतधावन करावैमंत्र यथावाराहे ॐभुवनभवनरविसंहरअनंतोमध्यचेति गृहणेमं भुवनंदेवभवनं दंतधावनम् मुखप्रच्छालिपुनः मंगलदृष्टिकरावैयथाकांस्यपात्रमें चंदनकरिकैस्वस्तिक+ इसभांतिचिह्न लिखि तामें जल फूल तुलसी दल दधि दूर्वा अक्षत चांदीकीहै मत्स्य फल इत्यादियुत पात्रअरु दर्पण प्रभुके सन्मुखकरै मंत्रयथा ॐ क्लीं रां रामायनमः॥ मंगलार्थंमयादत्तंमंगलदृष्टिंकुरुप्रभो। पुनः गरुड़ मुद्रा देखाय भेरी शंख घरियारादि शब्द सहित मंगल आरती करै प्रथम चारिपायँन पर करै द्वै नाभी पर एक मुख मंडल पर पुनः सात आरती सर्वांग पर करै प्रति आरती एक एक श्लोक पढ़ै यथा ॥ मंगलंकोशलेन्द्राय महानिधिगुणाब्धये।चक्रवर्तितनूजायसार्वभौमायमंगलम् १ वेदवेदांतवेद्यायमेघश्यामलमूर्त्तये। पुंसांमोहनरूपायपुण्यश्लोकायमंगलम् २ विश्वामित्रान्तरंगायमिथिलानगरीपते।भाग्यानांपरिपाकायभव्यरूपायमंगलम्३पितृभक्तायसततंभ्रातृभिःसहसीतया।।नन्दिताखिललोकायरामचंद्रायमंगलम् ४ इतिचरणदेशे॥त्यक्तसाकेतवासायचित्रकूटनिवासिने।सेव्यायसर्वधर्माणांमहावीरायमंगलम्५सौमित्रिणाचजानक्याचापवाणासिधारिणे। ससेव्यायसदाभक्त्यास्वामिनेममंमंगलम्६ इतिनाभिदेशेपठनीयः ॥ दण्डकारण्यवासायखण्डितासुरशत्रवे । गृद्धराजायभक्तायमुक्तिदायाशुमंगलम् ७ इतिमुखे ॥ सादरंशवरीदत्तफलमूलाभिलाषिणे । सौलभ्यगुणपूर्णायसत्त्वोद्रिक्तायमंगलम् ८ हनुमंतः समचित्तायहरीशाभीष्टदायिने । बालीप्रमथनायास्तुमहावीरायमंगलम् ९ विभीषणकृते प्रीत्याविश्वाभीष्टप्रदायिने । सर्वलोकशरण्यायसत्यसंधाग्रमंगलम् १० श्रीमतेरघुवीरायसेतुलंघितसिंधवे। जितराक्षसराजायरणधीरायमंगलम्११ब्रह्मादिदेवसेव्यायब्रह्मण्यायमहात्मने ॥ जानकीप्राणनाथयरामचंद्रायमंगलम् १२ अयोध्यानगरींदिव्यामभिषिक्तायसीतया ॥ राजाधिराजराजायरामचन्द्राय मंगलम् १३ श्रीसैमिजामातृमुनेः कृपयास्मानुपेयवे ॥ महतेममनाथायरघुनाथायमंगलम् १४ घृतवर्तिसमायुक्तंतथाकर्पूरसंयुतम् ॥ दीपंगृहाणदेवेशत्रैलोक्यतिमिरापहम् ॥ इतिचरणादि भौंह पर्यंत उठाय आरतीकरै पुनः पुष्पांजली लैमंत्रयथा ॥ ॐयज्ञानांयज्ञयष्टायांभूतंभष्टारमेवच । अल्पपुष्पंहि संगृह्यकल्यमुत्थायमाधवम् ॥ ॐश्रीरामायनमः ॥ इतिपढ़िफूलआगेछांड़िदेइपुनः वाहेरआय साष्टांग प्रणाम करै पुनः दशावरणपूजनहेतवेदीबिधियथाअगस्त्यसंहितायां ॥ विलिप्यवेदिकांसम्यग्मंडलंतत्रकारयेत् ॥ शालितंडुलचूर्णैश्चनीलपीतशितासितैः । लिखेदष्टदलंपद्मंचतुरस्रंसमावृतम्॥ षट्कोणकर्णिकामध्येकोणाग्रेवृत्तसंयुतम् । मध्यमेतन्ततःशुभ्रैरेखाभिरुपशोभितम् ॥ संपूज्यमंडलंचैवं तत्रसिंहासनंन्यसेत् । चंद्राउपपतौकश्चतोरणै रपिसर्वतः । अर्थात् बाराहकी खोदी हुई तालतेमाटी लाय ताकी बेदिका बनावै तीनि आँगुर ऊँचिहाथभरि लंबीचौड़ीताको लीपि तापर हरित पीतश्वेत श्याम रंग चौरीठा सों अष्टदल कमल बनावै ताके बिचमें षट्कोण बनावै कोण में गोलाकार बनावै दलन के बाहेर मंडलाकाररेखा करि ताके बाहर खड़ी रेखा अनेकन बनावैं तापर बिचित्र चंदोवा

ताने चारिहु दिशिविचित्रध्वजा पताका खड़ेकरै इतिकरि उसवेदी परयंत्रराजधरै ताकीविधि यथा ॥ पर्वरामतापिन्यां॥त्रिरेखापुटमालिख्यमध्येतारद्वयंलिखेत् । तन्मध्येबीजमालिख्यतदधःसाध्यमालिखेत् ॥ द्वितीयांतंचतस्योर्ध्वंषष्ठ्यंतंसाधकंतथा । कुरुद्वयंचतत्पार्श्वेलिखेद्बीजांतरेरमां ॥ तत्सर्वंप्रणवाभ्यांचवेष्टयेच्छुद्धबुद्धिमान् । दीर्घभाजिषडस्त्रेषु लिखेद्बीजं हृदादिभिः ॥ कोणपार्श्वेरमामाये तदग्रेनङ्गमा लिखेत् । क्रोध क्रोणाग्रांतरेषु लिख्यमंत्रमितोगिरं ॥ वृत्तत्रयंसाष्टपत्रं सरोजंविलिखेत्स्वरान् । केशरेचाष्टपत्रेषुवर्गाष्टकमथालिखेत् ॥ तेषुमालामनोर्वर्णान्विलिखेदूर्मिसंख्यया । अंतेपंचाक्षरानेवंपुनरष्टदलंलिखेत्॥तेषुनारायणाष्टाणांलिखेत्तत्केशरेरमां॥तद्बहिःद्वादशदलंविलिखेद्द्वादशाक्षरम् ॥ तथोंनमोभगवतेवासुदेवायइत्ययं ॥ आदिक्षांतान्केशरेषुव्रताकारेणसंलिखेत् । तद्बहि.षोडशदलं विलिख्यतत्केशरेह्रयम् ॥ वर्माखनातिसंयुक्तंदलेषुद्वादशाक्षरम् । तत्संधिष्विरजादीनंमंत्रान्मंत्रीसमालिखेत् ॥ ह्रंसंभृंवृंलृंभंश्रृंजृश्चलिखेत्सम्यक्ततोबहिः । द्वात्रिंशारंमहाचक्रंनादविंदुसमायुतं ॥ विलिखेन्मंत्रराजाणांतेषुपत्रेपुयत्नतः । ध्यायेदष्टवसूनेकादशरुद्रांश्चतत्रवै ॥ द्वादशार्कान्चधातारंवषट्कारं चतद्बहिः । भूगृहंवज्रशूलाढ्यंरेखात्रयसमन्वितम् ॥ द्वारोपेतंचराश्यादिभूषितंफणिसंयुतम् । अनंतोवासुकिश्चैवतक्षककर्कोटपद्मकः ॥ महापद्मस्तथाशंखःकुलिकोऽष्टौकुलानिच । एवंमंडलमालिख्यतस्यदिक्षुविदिक्षुच ॥ नारसिंहंचवाराहंलिखेन्मंत्रद्वयंतथा । इदंसर्वात्मकं यंत्रंप्रागुक्तंऋषिसेवितम् ॥ अबइन श्लोकों को अर्थलिखने की जरूरतनहीं है क्योंकि उद्धार किया हुवा यंत्र राज लिखा है ताको देखि सोना वा चांदी वा ताम्र पत्र पर चांदी की कलमते केशरि कुंकुम अगर कर्पूर युत चन्दन तेयंत्रराजलिखि पुनः पूर्वकहीहुईजो वेदीहै यथापाकपंचांग पूजन करि तापर यंत्रराज धरि ताकी प्राण प्रतिष्ठा करै सो विधियत्रराजके कोनोंमें लिखी है पुनः पंचांग पूजि तापर सिंहासन धरि प्रभुको जानकी सहित पधरावै फूलदल फल गंध वसन ताम्बूल दर्पणादि अपनी दक्षिण दिशिधरै जलघट घंटा बामदिशिधरै अर्घ्य पाद्याचमन मधुपर्क धूप दीपादि पात्र आगेधरै पानी धोवने को पात्रपीछे धरै पुनः मंत्रन्यास प्राणायाम युत सर्वइंद्री मनादिथिरयुत प्रभुको ध्यानकरै यथा॥अयोध्यानगरेरम्ये रत्नमण्डपमध्यगे । स्मरेत्कल्पतरोर्मूले रत्नसिंहासनं शुभम् ॥ महासिंहासने तस्मिन्वीरासनसमाश्रितम् । सम्यग्ज्ञानमयींमुद्रांदधानंदक्षिणेकरे ॥तेजःप्रकाशनंवामेजानुमूर्द्धनिचापरम्। जानकीवल्लभंदेवमिन्द्रनीलमणिप्रभम् ॥ व्याख्याननिरतं देवंद्विभुजंरघुनन्दनम् । वशिष्ठवामदेवादि मुनिभिःपरिसेवितम् ॥ बामभागेसमासीनांसीतांकांचनसन्निभाम् । भजतांकामदांनित्यंरक्तोत्पलकराम्बुजाम् ॥ लक्ष्मणंपश्चिमेभागेधृतछत्रंसचामरम् । पार्श्वेभरतशत्रुघ्नौतालवृन्तकराम्बुजौ ॥ अग्रेव्यग्रेहनूमंतंवाचयंतंसुपुस्तकम् । इति ध्यान करि शंखस्थापन करै अर्थात् कनिष्ठिकाते चंदन जलसे भूमिमें त्रिकोण लिखि ताके बाहर मंडल करि षट्कोण लिखै ताके बीच में त्रिपदी धरि ताहि प्रच्छालि एकफूल धरि ॐनमः पढ़ि शंख प्रच्छालि त्रिपदी परधरितामेंगंधपुष्पाक्षतकरिअन्यपात्रमें घटते जल लय शंखमें जल भरि पूजनकरै यथा ॐ पुरात्वंसागरोत्पन्नविष्णुनाविधृतःकरे ।नमितःसर्वदेवैश्चपांचजन्यनमोस्तुते ॥ त्रैलोक्येयानितीर्थानिवासुदेवस्यचाज्ञया ।शंखेचसंतिविप्रेन्द्रतस्मात्शंखं
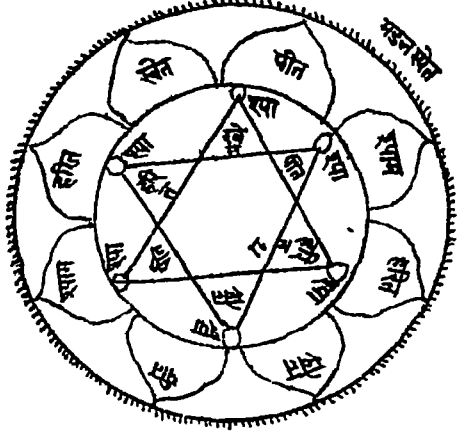
प्रपूजयेत्॥इतिगरुडपुराणे॥पुनः षट्कोनोंमें शंखमुद्रा देखायराममंत्रकी षड़क्षरन्यासपढ़ि फूलअक्षतोंकरिकैकोनों में पूजाकरैप्रथमअग्नेयमेंरांहृद यायनमः॥ नैऋत्येरींशिरसेस्वाहा॥.वायवेरुंशिखायैवषट्॥ ईशानेरैंक वचायहुं॥ उत्तरेरौंनेत्राभ्यांवौषट्॥ दक्षिणेरःअस्त्रायफट् इतिबाह्यपूजन करि पुनः रां रामायनमः पढ़ि भीतरको मंडल प्रच्छालि तापरअग्नि की दशौ कला स्थापित करै यथा अं अग्नि मंडलाय दशकलात्मने श्री रामार्घ्य पात्रासनायनमः आधारायनमः इसप्रकार आधार जो षट्कोण के भीतर मंडलाकार रेखाहै तापर अग्नि की दशौं कला स्थापित करि पूर्वादि दशौ दिशनमें पूजन करै कलायथा॥धूम्राच नीलरक्ताच कपिलाविस्फुलिंगिनी। ज्वाला निष्पतिकाचैव हव्यवाहनिका तथा॥ कव्यवाहनिका रौद्री संहारिएय ग्रिमाकला॥ पूजनयथापूर्व तेयं धूम्रायैनमः रंनीलरक्तायैनमः लंकपिलायैनमः वंविस्फुलिंगिन्यैनमः शंज्वालिन्यैनमःषंनिष्पति कायैनमःसंहव्यवाहिन्यैनमः हंकव्यवाहिन्यैनमः लंरौद्रैनमः ऊर्ध्वेक्षंसंहारिएयैनमः अधेपुनःफट्इति पढ़ि शंखप्रच्छालितापरसूर्यकी द्वादश कला स्थापितकरै यथा अंअर्कमंडलाय द्वादशकलात्मनेश्रीरामा र्घ्यपात्रायनमःकलायथा॥तपिनीतापिनीचैवसंधिनीबोधिनीतथा।कालिनीशोषिणीचाथवरेएयाकर्षिणी तथा॥वैष्णवीविष्णुविद्याज्योत्स्नाहिरएयातथैवच।सूर्यस्यसूर्यसंख्याताःकलाःप्रोक्ताश्चसूरिभिः॥इति शंखके वाह्य अंगोंमें वारहौ पूजै यथा कंभंतपिन्यैनमः खंवंतापिन्यैनमः गंफंसंधिन्यैनमः घंपंबोधिन्यै नमः ङंनंकालिन्यैनमः चंधंशोषिएयैनमः छंदंवरेएयैनमः जंथंआकर्षएयैनमः झंतंवैष्णव्यैनमः ञंणं विष्णुविद्यायैनमः टंढंज्योत्स्नायैनमः ठंडंहिरएयायैनमः इतिफूल अक्षतन करिके सर्वांग शंखपूजि पुनः प्रतिलोम मातृका राममंत्र उच्चारण करै यथा ॐ क्षंलंहंसंषंशंवंलंरंयंमंभंबंफंपंनंधंदंथंतंणंढंडंठं टंञंझंजंछंचंङंघंगंखंकंअःअंऔंओंऐंएंलॄंलृंॠंऋंऊंउंईंइंआंअंमःनंयंमांरांरां इति उच्चारण करि शुद्धोदक शंखमें पूरि भीतर चंद्रमाकी षोड़श कलास्थापित करै यथा ॐ सोम मण्डलाय षोड़श कलात्मने श्री रामार्घ्यामृतायनमःकलायथा॥अमृतांमानदांतुष्टिंपुष्टिंप्रीतिंरतिंतथा। लज्जांश्रियंस्वधांरात्रिंज्यो त्स्नांहंसवतींतथा॥ छायाचपूरणीवामाअमाचंद्रमसःकला॥शंखभीतर पूजन यथा अंअमृतायैनमः आंमानदायैनमः इंतुष्ट्यैनमःईंपुष्ट्यैनमः उंप्रीत्यैनमः ऊंरत्यैनमः ऋंलज्जायैनमः ॠंश्रियैनमःलृं स्वधायैनमः लॄंरात्र्यैनमः एंज्योत्स्नायैनमः ऐंहंसवत्यैनमः ओंछायायैनमः औंपूरएयैनमः अंवामायै नमः अः अमायैनमः पुनः॥गंगेचयमुनेचैवगोदावरिसरस्वति।नर्मदेसिंधुकावेरिजलेस्मिन्संनिधिंकुरु॥ ब्रह्मांडोदरतीर्थानिकरैःस्पृष्टानितेरवे। तेनसत्येनमेदेवतीर्थंदेहिदिवाकर॥ इतिपढ़ि अंकुश मुद्राकरि तीर्थावाहन करि गंधाक्षत फूलन करि जलपूजि शंख हाथपरधरि सातबार राममंत्रपढ़ि त्रिपदीपर धरि पुनः आवाहन स्थापन सन्निधापन सन्निरुद्ध संमुख अवगुंठन सकली करण ये सातमुद्रा देखाय अमृतायनमः पढ़िपुनःधेनु शंखचक्र गदापद्म गरुड़मत्स्य मुद्रा देखाय सो जल प्रभुके शीशपर छिरकै कलशमें डारै पुनः पूजाकी सब सामग्री पर छिरकै पुनः हृदयमें ध्यानकरै यथा धर्मकंदसमुद्भूतं ज्ञाननालंसुशोभनं। ऐश्वर्याष्टदलंपद्मं परवैराग्यकर्णिकं॥ तस्मिन्पीठेचिदात्मानं रामचंद्रस्वरूपि णम्॥ इति ध्यानमें षोड़शोपचार पूजन करि मंत्रजपहोम करै पुनः सावधान ह्वै स्वबाम दिशि गुरुकी पूजाकरै यथा ॐ गुंगुरुभ्योनमः पंपरमगुरुभ्योनमः पंपरमेष्ठिगुरुभ्योनमः पंपरापरगुरुभ्यो नमः इति गंधाक्षत फूलन करि पूजि पुनः प्रभुके द्वारदेव यथा अगस्त्य संहितायां॥ वंदेगणपतिंभानु
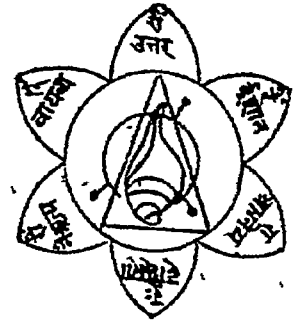
तिलकंस्वामिनंशिवं । क्षेत्रपालंतथाधात्रीं विधातारमनंतरं ॥ गृहाधीशंगृहंगंगां यमुनांकुलदेवतां । प्रचण्डौचतथाशंख गदापद्मनिधीअपि ॥ वास्तोष्पतिंद्वारलक्ष्मीं गुरुंवागधिदेवतां । एताःसंपूज्य भक्त्याहं श्रीरामद्वारदेवताः ॥ इत्यादिको जिसक्रमते पूजाचाहिये सोयथा स्वदक्षिणभागे गंगणपतये नमःसंसरस्वत्यैनमः दंदुर्गायैनमः क्षंक्षेत्रपालायनमः वांवास्तुपुरुषायनमःइत्यादिजलगंधाक्षतफूलन करि पूजिपुनः वेदीपर पीठिपूजा पाताल आदि सिंहासन पर्यंत ॐ मंडूकायनमः कालरुद्रायनमः कूर्मायनमः आधारशक्त्यैनमः ॐ रत्नदीपायनमः ॐरत्नमंडपायनमः ॐकल्पवृक्षेभ्योनमः ॐरत्न वेदिकायैनमः ॐरत्नसिंहासनायनमः पुनःवेदीपर अग्नेयेधंधर्मायनमः नैऋत्येज्ञांज्ञानायनमः वाय व्येवैं वैराग्यायनमः ईशानेऐंऐश्वर्यायनमः पूर्वेअंअधर्मायनमः दक्षिणेअंअज्ञानायनमः ॥ पश्चिमे अंअवैराग्यायनमः उत्तरेअंअनैश्वर्यायनमः इति भू वेदीपर आठौदिशा पूजै पुनः वेदीपर जो अष्ट दल कमल तामें पूजा यथा मध्यमेंअंअनन्तायनमःआंआनंदकंदायनमः संसविन्नालायनमः संसरो-रुहायनमः पंपत्रेभ्योनमः कंकेशरेभ्योनमः कंकर्णिकायैनमः तांतारामण्डलायनमः अं अर्क मण्डन लायनमःचंचंद्रमंडलायनमःअंअग्निमंडलायनमः संसत्वगुणायनमः रंरजोगुणायनमःअंआत्मनेनमः अंअन्तरात्मनेनमः पंपरमात्मनेनमः ज्ञांज्ञानात्मनेनमः इति गंधाक्षत फूलनकरि कमलमध्यमेंपूजै पुनः तापरमांमायातत्वायनमः तापरकंकलातत्वायनमः तापरविंविद्यातत्वायनमःतापरपंपरतत्वाय नमः इतिपूजिपुनः पूर्वादि आठौ दलनमें अरुमध्यमें नवशक्तिन को पूजै यथापूर्वे विंविमलायैनमः अग्नेय उंउत्कर्षिण्यैनमः दक्षिणेज्ञांज्ञानायैनमः नैर्ऋते क्रिंक्रियायैनमः । पश्चिमेयोंयोगायैनमः वायव्येप्रंपह्व्यैनमः । उत्तरेसंसत्यायैनमः ईशाने ईंईशानायैनमः । कंजमध्ये अंअनुग्रहायैनमः इति पूजिपुनः फूल हाथोंमें लै पढ़ै ॐ नमोभगवते विष्णवे सर्व भूतात्मने वासुदेवाय सर्वात्मसंयोग योग पद्म पीठात्मनेनमः पुष्पांजली मध्यमें छांडिदेइ इतिपीठपूजा पुनः यंत्रके कोनोंमें लिखी विधिते प्राणप्रतिष्ठा करिवेदीपर धरि यंत्रराजकी पूजाकरि तापर सिंहासनधरि प्रतिमा पधराय हाथोंमें फूल लै पढ़ै ॐरांरामायनमः ॐ दाशरथायविद्महे सीतावल्लभाय धीमहि तन्नोरामः प्रचोदयात् सांग सायुधंसवाहनं सपरिवारंस्वशक्तियुक्तं श्रीराममावाहयामिनमः इतिपढ़िस्वहृदयकमलते श्वासमार्ग करिकै पुष्पांजलि आनि पादुका मुद्राकरिकै मूर्त्तिमें मिलायदेय पुनः अह्वाहनी आदि सातमुद्रा देखावत प्रतिमुद्रा वाक्यपढ़ै श्रीराम इहागच्छ श्रीराम इहतिष्ठ इहसन्निहितोभव इहसन्निरुद्धोभव इहसम्मुखोभव इहसकलीकृतोभव इहअवगुंठितोभव पुनः शंखचक्र गदापद्म धेनु कौस्तुभ गरुड़ श्री वत्स वनमाला योनियेमुद्रा देखावै पुनः फूलहाथों में लै मंत्र गायत्री युक्त सांगाय सायुधाय सवा-हनाय सपरिवाराय स्वशक्ति युक्ताय श्रीरामाय पुष्पांजलिं कल्पयामिनमः पढ़िफूल आगेछांड़िदेइ पुनः दक्षिण हाथमें शंखते जल लै पढ़ै ॐ नमोभगवते रघुनन्दनाय रक्षोघ्नविशदाय मधुरप्रसन्न वदनयामित तेजसेबलाय रामायविष्णवेनमः इतिपढ़ि जल तनपर छिरिकिलेइ पवित्री धारण करि पढ़ै सर्ववाद्यमयीघंटा देवदेवस्यवल्लभा । तवनादेनसर्वेषां शुभंभवतिशोभने ॥ इतिपढ़ि वामहाथेते घंटानादयुत दहिनेहाथे पाद्यपात्र उठायपढ़ै(एतावानस्यमहिमाअतोज्यायांश्चपुरुषःपादोस्यविश्वाभू तानीत्रिपादस्यामृतंदिवि॥स्नानार्थमुष्णतोयानिपुष्पगंधयुतानिच।पाद्यंगृहाणदेवेशभक्तानुग्रहकारक) इतिपढ़ि पांयन पर घुमाय अन्यपात्रमें जलनायदेय पुनः सजल शंखहाथमें लेयपढ़ै(त्रिपादूर्ध्वउदै तपुरुषःपादोस्येहाऽभवत्पुनःततोविष्वङव्यक्रामत्साशनानशनेअभि ॥शंखतोयसमायुक्तंगंधपुष्पाधि-वासितम् । अर्घ्यंगृहाणदेवेशप्रीत्यर्थंमेसदाप्रभो) सम्मुख जल पात्रमें नायदेय मधुपर्क आगेधरि धेनु

मुद्रा देखाय आचमन पात्र उठाय पढ़ै (तस्माद्विराडजायतविराजोअधिपूरुषःसजातोअत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथोपुरः॥गंगातोयंसमानीतंसुवर्णकलशेधृतं। आचमनायदेवेशप्रीत्यर्थंप्रतिगृह्यताम्) मुख समीप करि जल पात्रमें नायदेय पुनः चौकीपर बैठारि वसन भूषण उतारि चिरौंजी कर्पूर केशरि चंदन मिश्रित अभ्यंग करि कलशते शंखमें जललै स्नान करावतमें पढ़ै (तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभृतंपृषदाज्यं पशूंस्तांश्चक्रे वायव्यान्आरण्यान् ग्राम्यांश्चये॥ गंगासरस्वती तापीपयोष्णीनर्मदार्क जा। तज्जलैःस्नापितोदेवतेनशांतिंकुरुष्वमे। इति स्नानकराय सर्वांग पोंछि वसनपहिरावतमें पढ़ै॥ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतःऋचःसामानिजज्ञिरे छन्दांसिजज्ञिरे तस्मात्यजुस्तस्मादजायत॥शीतवातोष्णसं त्राणंलज्जादोषनिवारणम्। सुवेषधारिणंयस्मात्वासोयंप्रतिगृह्यतां॥ पुनः यज्ञोपवीत पहिरावतमें पढ़ै॥तस्मादश्वा अजायंत येकेचोभयादतः गावोहयज्ञिरेतस्मात्तस्माज्जाताअजावयः॥ब्रह्मणानिर्मि तंसूत्रंविष्णुग्रंथिसमन्वितम्। यज्ञोपवीतंदेवेशगृह्यतांमेजनार्द्दन॥ इनउपचारोंके मुद्रा देखावत जाय पुन.पादुका मुद्रादेखाय किरीट कुण्डलमालादि भूषण पहिराय गंधचढ़ावतमेंपढ़ै॥तंयज्ञंवर्हिषिप्रोक्षन्पु रुषंजातमग्रतःतेनदेवाअयजंतसाध्याऋयश्चये। मलयाचलसंभूतंशीतमानंदवर्द्धनम्।काश्मीरघनसारा ढ्यंचंदनंप्रतिगृह्यताम्॥ तुलसीदल फूल चढ़ावतमेंपढ़ै॥ ॐ श्रीश्चतेलक्ष्मीश्चपत्न्यावहोरात्रेपार्श्वे नक्षत्राणिरूपमश्विनौव्यात्तम्इष्ण न्निषाणामुम्मऽइषाणासर्वलोकम्मऽइषाण॥नानाविधानिपुष्पाणि ऋतुकालोद्भवानिच। मयाहृतानिपूजार्थंपुष्पाणिप्रतिगृह्यतां॥ पुनःवसन वोढ़ावतमें पढ़ै॥ यत्पुरुषं व्यदधुःकतिधाव्यकल्पयन् मुखंकिमस्यकौवाहू कावूरूपादावुच्यते॥ सूर्यरश्मिसमज्योतिब्रह्मणानिर्मि तंपुरा। वस्त्रंगृहाणदेवेशप्रीत्यर्थंमेंसदाप्रभो॥ इन उपचारोंके मुद्रा देखाय पुनः ॐ श्रीसीतायैस्वाहा इस मंत्र करि कै प्रभुके बाम भाग में जानकी जीको पूजै पुनः ॐ लंलक्ष्मणायनमः इस मंत्रसों दक्षिणदिशि लक्ष्मण जी को पूजै पुनः ॐ शांशार्ङ्गायनमः इस मंत्र सों प्रभुके बाम दिशि धनुष पूजै पुनः ॐ शंशरेभ्योनमः इसमंत्रसों दक्षिण दिशिवाणों को पूजै पुनः परिवारांग देवन को पूजने हेतुहाथ जोरि प्रभुसों आज्ञामांगै यथा॥ अनुज्ञांदेहिमेनाथपरिवारार्चनायते॥पुनःयंत्रमध्यषट्कोणों की पूजा करै यथा ॐ रांहृदयायनमः इति पढ़ि अग्नेय कोण में गंध पुष्प चढ़ावै पुनः ॐ रींशिरसे स्वाहा नैऋते ॐ रुंशिखायैवषट् वायव्ये ॐ रैंकवचायहुं ईशाने ॐरौंनेत्राभ्यांवौषट् उत्तरे ॐ रःअ स्त्रायफट् दक्षिणे इति पूजि हाथ धोय पुष्पांजली देत पढ़ै॥दयाब्धेत्राहिसंसारसर्पान्मांशरणागतं। भ क्त्यासमर्पयेत्वाहं इति पढ़ि जल छांड़ि पुष्पांजलीदेय शंख मुद्रा देखावै इति प्रथमा वरण पूजनं पुनः दूसरे आवरणमें जो अष्ट दल हैं तामें पूर्व कवर्ग लिखोहै ताही दलते प्रारम्भ अग्नेय दक्षिणा दिक्रम आठहू दलमूल में पूजै पूर्वआंआत्मनेनमः अग्नेयानिंनिवृत्त्यैनमः दक्षिणे अंअंतरात्मने नमः नैऋतेप्रंप्रतिष्ठायैनमः। पश्चिमेपंपरमात्मनेनमः वायव्ये विंविद्यायैनमः उत्तरे ज्ञांज्ञानात्मने नमः। ईशाने शांशांत्यैनमः इत्यादि आठौदिशा में गंध पुष्पादि पूजि पूर्ववत् पुष्पांजली दय चक्र मुद्रा देखावै इतिद्वितीया वरण पूजनं पुनः तीसरे आवरण सोई अष्टदलन के बीचमें गंध फूलादि पूर्ववत् पूजै यथा ओं वांवासुदेवायनमः ॐ श्रींश्रियैनमः ॐसंसङ्कर्षणायनमः। ॐशांशान्त्यैनम ॐप्रं प्रद्युम्नायनमः ॐप्रींप्रीत्यैनमः ॐ अंअनिरुद्धायनमः। ॐरंरत्यैनमः इति पूजिकर प्रक्षालन पुष्पां जली पूर्ववत देइ गदा मुद्रा देखावै इति तृतीयावरणपूजनं पुनः चौथ आवरणपूजन यथा अब इसी दलनके अग्र भाग पर दूसरे अष्टदलों की मूल पर बंधुसखनकी पूजा पूर्वादि क्रमते करै ओं हंहनु मतेनमः। ओं सुंसुग्रीवायनमः। ओंभंभरतायनमः। ओंविंविभीषणायनमः। ओं लंलक्ष्मणायनमः।

ओंअंअंगदायनमः । ओंशंशत्रुघ्नायनमः । ओं जांजाम्ववतेनमः । इत्यादि पूजि हाथ धोय पूर्ववत् पुष्पांजली दै पद्म मुद्रा देखावै(इति चतुर्थावरण पूजनं) पंचमावरणं यथा अव'जो दूसरी आवृत्ति अष्टदल है तिनके मध्यमें आठौ मंत्रिन की पूजा पूर्वादि क्रम यथा ओंधृंधृष्टयेनमः ओंजंजयंताय नमः ओं विंविजयायनमः ओं सौंसौराष्ट्रायनमः ओंरांराष्ट्रवर्द्धनायनमः ओं अंअकोपायनमः ओं धंधर्मपालायनमः ओं सुंसुमंतायनमः इति पूजि हाथ धोय पूर्ववत् पुष्पांजली दै धेनु मुद्रा देखावै (इति पंचमा वरण पूजनं)षष्ठावरणं यथा अवजो तीजी आवृत्तिमें द्वादशदलहैं तिनमें मुनिन की पूजा पूर्वादि क्रमते यथा ओं नांनारदायनमः ओं वंवशिष्ठायनमः ओं जांजावालायनमः ओं गौंगौतमायनमः ओं भंभरद्वाजायनमः ओं कंकश्यपायनमः ओं वांवाल्मीकयेनमः ओं कौं कौशिकायनमः ओं संसनकायनमः ओं संसनंदनायनमः ओं संसनातनायनमः ओं संसनत्कुमारायनमः इति पूजि हाथ धोय पूर्ववत् पुष्पांजलीदै कौस्तुभमुद्रा देखावै(इति षष्ठावरण पूजनम्) सप्तमावरणं यथा चौथी आवृत्ति मेंजो षोडशदल हैं तिन में यूथप वानर भूषणास्त्र पूर्वादि क्रम पूजै यथा ओं नींनीलायनमः ओं नंनलायनमः ओं सुंसुषेणायनमः ओं मैंमैंदायनमः ओं संसरभायनमः ओं द्विंद्विविदायनमः ओं चंचंदनायनमः ओं गंगवाक्षायनमः ओं किंकिरीटायनमः ओं कुंकुंडलायनमः ओं श्रींश्रीवत्सायनमः ओं कौंकौस्तुभायनमः ओं शंशंखायनमः ओं चंचक्रायनमः ओं गंगदायैनमः ओं पंपद्मायनमः इतिपूजि करप्रक्षालि पूर्ववत् पुष्पांजली दै गरुड़ मुद्रा देखावै(इतिसप्तमावरणपूजनं) अष्टम यथा जो बाहर वत्तिसदलहैं तिनमें ध्रुवादि नौदेव ग्यारहौरुद्र बारहौ सूर्य पूजैपूर्ववत्क्रमयथा ओं ध्रुंध्रुवायनमः ओं धंधरायनमः ओं सोंसोमायनमः ओं आंआपायनमः ओं अंअनिलायनमः ओं अंअनलायनमः ओं प्रंप्रत्यूषायनमः ओं प्रंप्रभासायनमः ओं वींवीरभद्रायनमः ओं शंशंभवेनमः ओं गिंगिरिशायनमःओं अंअजैकपदेनमः ओं अंअहिर्बुध्न्यायनमः ओंपिंपिनाकिनेनमःओंअंअपराजितायनमः ओं भुंभुवनाधीशायनमः ओंकंकपालिनेनमःओंदिंदिक्पतयेनमः ओंस्थंस्थाणवेनमः ओंवंवरुणायनमः ओं सूंसूर्यायनमः ओं वेंवेदांगायनमः ओं भांभानवेनमः ओं इंइंद्रायनमः ओं रंरवयेनमः ओं गंगभस्तयेनमः ओं यंयमायनमः ओंस्वंस्वर्णरेतसेनमः ओंदिंदिनकरायनमः ओंमिंमित्रायनमः ओंविंविष्णवेनमः ओं धांधात्रेनमः इतिपूजि करप्रक्षालि पूर्ववत् पुष्पांजली दै श्रीवत्समुद्रा देखावै (इति अष्टमावरण पूजनं) नौमावरण यथा अब वत्तिसदलके बाहर आठौ दिशनमें इंद्रादि दिग्पाल तथा लोकपालोंकी पूजायथा पूर्व इंद्रको गंधफूलादि पूजै ओं इंइन्द्रायसुराधिपतये सायुधाय सवाहनायसपरिवारायस्व शक्तियुताय श्रीरामपार्षदायनमः येवाक्य सवमें पीछेदेय ओं रंअग्नयेतेजोधिपतये सायुधाय ० ओं धंधर्मराजायप्रेताधिपतयेसायुधाय ० ओं क्षंनैर्ऋतयेरक्षोधिपतयेसायुधाय० ओं वंवरुणायजलाधिपतयेसायुधाय ० ओं वांवायव्येप्राणाधिपतयेसायुधाय ० ओं संसोमायनक्षत्राधिपतयेसायुधाय ० ओं ईंईशानायविद्याधिपतयेसायुधाय ० पुनःपूर्व ईशानके मध्यमें ब्रह्माको पूजै ओं अंब्रह्मणेलोकाधिपतयेसायुधाय० नैर्ऋत्य पश्चिमके मध्यमें विष्णुकोपूजै ओं ह्रींविष्णवेभूताधिपतयेसायुधाय० इतिपूजिकर प्रक्षालि पूर्ववत् पुष्पांजली दै वनमाला मुद्रादेखावै॥ इतिनवमावरणपूजनं,दशम यथा भितरी रेखोंके मध्यके आयुध पूजै पूर्व ओंवंवज्रायनमः अग्नेय ओंशंशक्त्यैनमः दक्षिणे ओंदंदण्डायनमः नैर्ऋते ओंखंखड्गायनमः पश्चिमे ओंपांपाशायनमः वायव्ये ओंध्वंध्वजायनमः उत्तरे ओंगंगदायैनमः ईशाने ओंत्रिंत्रिशूलायनमः पूर्व ईशानमध्ये ओंपंपद्मायनमः नैर्ऋत्यपश्चिममध्ये ओंचंचक्रायनमः॥ इतिपूजि करप्रक्षालि पूर्ववत् पुष्पांजली दै योनिमुद्रा देखावै॥ इति दशमा वरण पूजनम्।

पुनः बहिरी रेखाके भीतर चारिहु द्वारनपर पार्षदपूजे पूर्वद्वारे ओंगंगरुड़ायनमः ओं विंविष्वक्सेनाय नमः ओंजंजयायनमः ओंविंविजयायनमः ओंप्रंप्रवलायनमः पुनः दक्षिणद्वारे ओंवंवलायनमः ओंनं नंदायनमः ओंसुंसुनंदनायनमः ओंसुंसुभद्रायनमः पुनः पश्चिमद्वारेओंभंभद्रायनमः ओंचंचंडायनमः ओंप्रंप्रचंडायनमः ओंविंविनीतायनमः पुनःउत्तर द्वारे ओंकुंकुमुदाक्षायनमः ओंशींशीलायनमः ओंसुं सुशीलायनमः ओंसुंसुसेनायनमः पूजिपुष्पांजलीदेइ तथा नागन को पूजै ओं अंअनंतायनमः ओंकुं कुलिकायनमः ओंवांवासुकयेनमः ओंशंशंखपालायनमः ओं तंतक्षकायनमः ओं मंमहापद्मायनमः ओंपंपद्मायनमः ओंकंकर्कोटकायनमः तथाही बारहराशी नवग्रहौं को पूजै ॥ इतिपूजिपुष्पांजलीदेय लोकपाल अस्त्र नागन को पूजा मुख्य दिशनमें चाहिये और पूजन आवरण में सो पूज्यपूजक मध्य सोई पूर्व दिशामानी इतिपूज्यपुनः फट्पढ़ि धूपपात्र मार्जन करि ओंनमः पढि गंधपुष्पते पूजि अग्निपर धूपधरि वामकर कनिष्ठिकाते पात्रस्पर्श करि पढ़ै ॥ ब्राह्मणोस्यमुखमासीत् बाहूराजन्यः कृतः उरूतदस्ययद्वैश्यःपद्भ्यांशूद्रोअजायतवनस्पतिरसोत्पन्नोगंधाढ्योगंधमुत्तमम्आघ्रेयःसर्वभूतानां धूपोयंप्रतिगृह्यतां सांगाय सपरिवाराय श्रीरामाय धूपं समर्पयामिनमः॥ इतिपढ़ि अर्घ्येजल भूमि नाय धूपमुद्रा देखाय वामहाथे घंटानाद धूपपात्र दक्षिण हाथते प्रभुकी नाभीसमीप व्यजनवत् फेरत में पढ़ै ॥ वामेकोदंडदंडंनिजकरकमले दक्षिणेबाणमेकं । पश्चाद्भागेचनित्यं दधतमभिमतंसासि तूणीरभारम् ॥ वामेवामेलसद्भ्यां सहमिलिततनुंजानकीलक्ष्मणाभ्यां । श्यामंरामंभजेहंप्रणतजन मनः खेदविच्छेददक्षम्॥पुनः जयजानकी रमणकरुणानिधे इतिपढ़ि धूपपात्र प्रभुके वामभागेधरि पुनः ओंफट् इतिदीपपात्र पर शंखते जल छांडि ओंनमः इतिगंधपुष्प चढ़ाय सघृतबाती वारि वामकर मध्यमाते स्पर्शकरि पढ़ै ॥ चन्द्रमामनसोजातः चक्षोःसूर्योअजायत मुखादिन्द्रश्चाग्निश्चप्राणाद्वा युरजायत सुप्रकाशोमहान्दी पस्त्रैलोक्यतिमिरापहम् । सबाह्याभ्यांतराज्योतिर्दीपोयंप्रतिगृह्यतां सांगायसपरिवारायश्रीरामायदीपंसमर्पयामिनमः- इतिपढ़ि शंखजल भूमिपैनाय दीप मुद्रा देखाय ओं नमोदीपेश्वराय इति पुष्पांजली दय दीप उठाय प्रभुके नेत्र पर्यंतफेरत समयपढ़ै ध्यायेदाजानु बाहुंधृतशरधनुषंबद्धपद्मासनस्थं । पीतंवासोवसानंनवकमलदलस्पर्द्धिनेत्रंप्रसन्नं ॥ वामांकारूढसी तामुखकमलमिलल्लोचनंनीरदाभम् । नानालंकारदीप्तंदधतमुरुजटामण्डलंरामचंद्रं ॥ श्रीराम जय राम जयजयराम पढ़ैइतिदीप अर्प्य पुनः भक्ष्यभोज्यादि दिव्यपदार्थउत्तमपात्रमें करिआगे धरितुल- सी डारि ओं रांरामायनमः सातवार पढ़ि पुनः प्रभुको पाद्य आचमन कराय अपने दक्षिण हाथ में जल लै वाम हाथे ढांकि तापर षोडश बार राम मंत्र उच्चार करि जल नैवेद्य पर छिर कै पुनः दक्षिण हाथे जल लै तामें यंहं इतिबीज लिखै दोऊ हाथमें जलकरि थारको ढाँकै पुनः हाथे जल लेय ठंठंपढ़ि नैवेद्य पर छिरकि देइ पुनः वाम हाथ में वंबीज लिखि तासों थार ढांकि उतकर पृष्ठ पर दक्षिण हाथ धरे सब पात्र पर घुमाय अमृत मय विचारे पुनः वामांगुष्ठ पात्र स्पर्श दहिने हाथे जल पात्रलैपढ़ै-नाभ्याआसीदंतरिक्षं शीर्ष्णोद्यौः समवर्तत पद्भ्यांभूमिर्दिशःश्रोत्रात् तथालोकांअक ल्पयत् अन्नंचतुर्विधंस्वादरसैःषड्भिःसमन्वितं । भक्ष्यभोज्यंसमायुक्तंनैवेद्यंप्रतिगृह्यतां ॥ सांगायसपरि वारायश्रीरामायनैवेद्यमुदकंचसमर्पयामि । इति पढ़ि शंख जल भूमि पै नाय चक्र धेनु मुद्रा देखाय ओंहं निवेदयामि पढ़ि थार उठाय तीनिबार प्रभु को देखाय त्रिपदी पर धरि प्रभुहित प्राण आहुती करै कनिष्ठा नामिका अँगुठा सो अन्न गहि पढ़ै ओं प्राणायस्वाहा पुनः तर्जनी मध्यमा अँगुठा सों गहि पढ़ै ओंअपानायस्वाहापुनः मध्यमानामिका अँगुठा सोंगहिपढ़ै ओंव्यानायस्वाहा पुनः वेकनिष्ठा

चारि सों गहि पढ़ै ओं उदानायस्वाहा पुनः पाँचौ अँगुरिनते अन्न गहि पढ़ै समानायस्वाहा पुनः थार प्रभुके आगे धरि राम मंत्र पढ़ि दोऊ हाथ जानु पर धरि दोऊ अनामिका अँगुष्ठन में जोरि पढ़ै शालीभक्तंसुभक्तंशाशिकरशितरुकूपायसापूपसूपं । लेह्यंचोष्यंसुपेयंसितममृतफलंवारिकाद्यंसुस्वाद्यं " आज्यंप्राज्यंसुभोज्यंनयनरुचिकरंराजिकैलामरीचिः। स्वादीयःशाकराजीपरिमलममिताहारजोषंजुषस्व ॥ ब्रह्मेशाद्यैःपरितउरुभिःसूपविष्टैःसमेतोलक्ष्म्यासिंजद्वलयकरयासादरंवीज्यमानः । नर्मक्रीड़ाप्रहसनमुखैर्हासयन्पंक्तिभोक्तॄन्भुंक्तेपात्रेपवित्रेकनकघटितेपड्रसान्श्रीरमेशः ॥ भोजनांत थार उठाय अलग धरै जल पान करावत में पढ़ै ओं रां रामायनमः समस्तदेवदेवेशसर्वतृप्तकरंपरं । अखंडानंदसंपूर्णंगृहाणजलमुत्तमम् ॥ इति जल पान कराय गंडूकाचमन शुद्ध आचमन कराय ताम्बूल देत में पढ़ै यतपुरुषेणहविषा देवायज्ञमतन्वत् वसंतोअस्यासी दाज्यंग्रीष्मइध्मः शरद्धविः नागवल्लिदलंदिव्यंपूगीखदिरसंयुतम् । वक्रस्याभरणंस्वाद्यंताम्बूलंप्रतिगृह्यतां ॥ पुनःदधिदूबप्रभु के शीश पर धरि माथ में गोरोचन लगाय पँचदीपक अक्षत दूब दधि राई लोन पात्र में धरि दोऊ हाथों गहि राम मंत्रपढ़त आरती उतारै पुनः शंखपर वं पढ़ि धेनु मुद्रा देखाय ओं रांरामायनमः पढ़िअमृतमय विचारि वह जल प्रभु को अर्पण करै यह पढ़ि श्रीरामाय अमृत पानीयंकल्पयामि इति दशावरण पूजन यथा सुंदरीतंत्रे षट्कोणेप्रथमावृत्तिः स्यादंगैरग्नितःक्रमात् । द्वितीयात्मादिकैर्देवैरष्टाब्जमूलकेतथा ॥ तृतीयावासुदेवाद्यैरष्टपत्रेतथैवच ॥ चतुर्थैवायुपुत्राद्यैःपत्राग्रेपूर्वतःक्रमात् । धृष्टाद्यैःपंचमावृत्तिर्द्वितीयाष्टदलेतथा ॥ षष्ठेद्वादशपत्रेपुनारदाद्यैर्महर्षिभिः। सप्तमेषोड़शाब्जस्यान्नीलाद्यैःकपिपुंगवैः ॥ ध्रुवाद्यैरष्टमेज्ञेयाद्वात्रिंशद्दलपद्मके । इंद्राद्यैर्भूगृहेशाद्यैर्नवमावरणंभवेत्॥ तदस्त्रैर्वज्रमुख्याद्यैर्दशमावरणंशुभम् । इसी भांति दशावरण यंत्रराज पर पूजनकरै २९ ॥

श्रद्धयोपहरेन्नित्यंश्रद्धाभुगहमीश्वरः॥होमंकुर्यात्प्रयत्नेनविधिनामंत्रकोविदः३० ॥

(अहंईश्वरः श्रद्धाभुक्नित्यंश्रद्धयाउपहरेत् मंत्रकोविदः प्रयत्नेनविधिनाहोमं कुर्यात्) प्रभु बोले हेलक्ष्मण हम ईश्वर हैं भाव पूर्ण काम हैं ताते श्रद्धा करिकै दिया हुवा पदार्थ भोग करते हैं इस हेत भक्त जन नित्य श्रद्धा करिकै मेरेहेत पदार्थ अर्पण करै भाव अश्रद्धाते परिश्रम वृथाहै पूजाकि हेपीछे मंत्र क्रिया में विद्वान् यत्नपूर्वक तंत्रन की बिधि करिकै होम करै यथा होमशालामें जाय पूर्ववत्आसनपर बैठि आचमनकरि पवित्री धारणकरि श्रीराममंत्रते करन्यास अंगन्यास प्राणायाम करिहाथ में जलाक्षत कुश लै पढ़ै ओं अद्ये हेत्यादि देश काल स्वनाम गोत्र इष्टसंकीर्त्य अमुकद्रव्येन श्री रामं यक्ष्य इति संकल्प करि पुनः घृत शक्करतिल यवाक्षत जाउरि श्रुवाइत्यादिसामग्री आगे धरि पुनः ३० ॥

अगस्त्येनोक्तमार्गेणकुंडेनागमवित्तमः॥ जुहुयान्मूलमंत्रेणपुंसूक्तेनाथवाबुधः३१
अथवौपासनाग्नौवाचरुणाहाविषातथा ॥ तप्तजांबूनदप्रख्यंदिव्याभरणभूषितम् ३२ ध्यायेदनलमध्यस्थंहोमकालेसदाबुधः ॥ पार्षदेभ्योबलिंदत्वाहोमशेषंसमापयेत् ३३ ॥

(अगस्त्येनउक्तमार्गेणकुंडेनआगमवित्तमःबुधःमूलमंत्रेणअथवापुंसूक्तेनजुहुयात्) अगस्त्य ऋषि करिकै कहीमार्ग जो संहितामें लिखीहै ताही बिधि करिकै बनेहुये कुंड करिकै आगमशास्त्रमें प्रवीण विद्वान् मूल मंत्र षड़क्षर अथवा पुरुष सूक्त करिकै हवनकरै यथा अगस्त्य संहितायां ॥ भूमिस्थानं

समाकृष्यपट्चतुष्कांगुलांतरम् । तावत्तन्निखनेदंतश्चतुष्कोणंतथांततः ॥ दिशिदिश्यंतरे चैव पार्श्वस्थंचचतुष्टयम् । एवंसलक्षणंकृत्वा बहिःकुर्यात्रिमेखलाम् ॥ द्वादशाष्टचतुर्थानांस्वांगुलैश्चक्रमान्मुने । एवमुत्सेधआयामश्चतुरंगुलमेवतत् ॥ आयामोत्सेधरूपेण चतुष्काधिक्यतः क्रमात् । चतुष्कत्रितयंकुर्यादेवंस्यान्मेखलाक्रमः ॥ कुण्डस्यपश्चिमेभागे योनिंकुर्यात्सलक्षणां । अश्वत्थपत्रसदृशीं कुणेकिंचित्प्रतिष्ठिताम् ॥ श्रुवंबाहुप्रमाणेन होमार्थंविदधीतवै । चतुरस्रंविधायादौ समंपंचांगुलंक्रमात् ॥ कुण्डस्थलंसमागम्य गोमयेनोपलिप्यच । सांगावाहनमंत्राग्नौ पूजयेद्रघुनंदनम् ॥ समिदाज्यचरूणांच प्रत्येकंषोडशाहुतिः । जुहुयान्मूलमंत्रेण परिवारिभ्यएवच ॥ तिलैश्चतंदुलैराज्यैर्हुत्वालोकस्यपूज्यताम् ३१ (अथवाउपासनाअग्नौचरुणावातथाहविषा) अथवा अग्निहीकी उपासना भाव अग्नि होत्रकीविधि करिकै अग्नि बिपेजाउरि वा ताहीभांति घृतकरिकै हवनकरै (तप्तजांबूनदप्रख्यं) तपाये सोनाकेतुल्य (दिव्याभरणभूषितम्)किरीटकुंडलमालाकेयूरादिदिव्यभूषणोंकरिकैंभूपितऐसाजोमेरारूप ३२ (अनलमध्यस्थंहोमकालेबुधःसदाध्यायेत्) सोई मेरा रूपअग्नि मध्यमें स्थित ताहि बुद्धिमान् सदाध्यानकरै भाव साकल्यउसीके अर्थअर्पणकरै (पार्षदेभ्योबलिंदत्त्वाशेषंहोमंसमापयेत्) मेरेअर्थ आहुती करिपुनः हनूमानादिकोंकेअर्थ बलि अर्थात् आहुतीदेवै बाकीजोरहैहोम सोसम्राप्तपूर्णाहुतिकरै अर्थात् राममंत्र पढ़िकुंडमेंजलडारै ताम्रपात्रमें शुद्धअग्निलै आगेधरिराममंत्रपढ़ि शुद्धकरिओंह्रींवह्निचैतन्यायनमःपढ़ि तृणपरधरैतापरसमिधइंधनधरिपढ़ै॥ओंचित्पिंगलहनहनदहदहपचपचसर्वज्ञापयस्वाहाज्वालिनीमुद्रा देखायहाथजोरिपढ़ै वैश्वानरजातवेदइहावहलोहिताक्षसर्वकर्माणिसाधय स्वाहाअग्निज्वलितकरिपढ़ै अग्निंप्रज्वलितंवंदेजातवेदसमूर्जितं ॥ हिरण्यवर्णममलंसमिद्धंसर्वतोमुखं । इतिप्रार्थनाअस्याग्निमंत्रस्यभृगुऋषिर्गायत्रीछंदो ऽग्निर्देवतारंबीजंस्वाहाशक्तिर्हवनेविनियोगः । जलछांड़िन्यासयथा शिरसि भृगवेऋषयेनमः मुखेगायत्रीछंदसेनमः हृदिवैश्वानरदेवतायैनमः गुह्येरंबीजायनमः पादयोःस्वाहाशक्तयेनमः ओंवैश्वानरहृदयायनमः जातवेदःशिरसेस्वाहा इहावंशिखायैवषट् लोहिताक्षकवचायहुं सर्वकर्माणिनेत्रत्रयायवौषट् ॥ साधयस्वाहाअस्त्रायफट् इतिविन्यासपुनः । त्रिनेत्रमारक्ततनुंसुशुक्लवस्त्रंसुवर्णस्रजमग्निमीडे ॥ वराभयस्वस्तिकशक्तिहस्तं पद्मस्थमाकल्पसमूहयुक्तं ॥ इत्यग्निंध्यात्वा श्रीरामाग्निमावाहयामि । इतिपुष्पांजलीदै अग्निकोआवाहनकरि । आवाहनादिमुद्रादेखायजलगंधाक्षत फूलनैवेद्यपूजिपूजायंत्रंविभाव्यश्री रामपीठदेवेभ्योममः ॥ इतिपीठदेवतापूजि पूजामंडलाद्रामंतत्रा बाह्यावाहनादिमुद्राःप्रदर्श्यपंचोपचारैः संपूज्यघृतसाकल्यमेंडारैहुंपढ़िमिलावै । ओंफट्पढ़ि रक्षाकरै ओंरांरामायनमः ॥ इतिपढ़िबलियोग्यकरैपुनःआहुतीयथा । ओंभूःस्वाहाओंभुवःस्वाहाओंस्वः स्वाहा ओंमहःस्वाहा ओंजनःस्वाहा ओंतपःस्वाहा ओंसत्यःस्वाहा ओंरांरामायनमःस्वाहा इसमंत्रते षोड़शआहुतीदै पुनः ॥ श्रीसीतायैस्वाहा ओंलंलक्ष्मणायस्वाहा ओंशंशार्ङ्गायस्वाहा ओंशरायस्वाहा अंगदेवेभ्यःस्वाहा आवरणदेवेभ्यः स्वाहा पीठदेवेभ्यःस्वाहा भूःआदिव्याहृतिनतेपुनः आहुतीकरि सांगायसपरिवाराय सायुधाय श्रीरामाय स्वाहा इतिपूर्णाहुतीकरै पुनः अग्नि को पूजि प्रणाम यथा सहस्रार्चिर्महातेजो नमस्ते बहुरूपधृक् । सर्वाशिन सर्वगतः पावकाय नमोस्तु ते इस भांति हवन करै ३३ ॥

ततोजपंप्रकुर्वीतध्यायन्मांयतवाक्स्मरन् ॥ मुखवासंचताम्बूलंदत्त्वाप्रीतिसमन्वितः ३४ ॥

(ततःमांध्यायन्जपंप्रकुर्वीतयतवाक्ततस्मरनचप्रीतिसमन्वितःमुखवासंतांबूलंदत्वा) तदनंतर मेराध्यान करताहुआ मंत्र जपकरै कौन भांति जो मंत्रवचनते उच्चारण करै सोई प्रत्यक्षरमन में स्मरण किहेरहै पुनः प्रीति सहित मुखवासहेत मोको ताम्बूलदेवै अथजपहेत माला विधिब्राह्मणी को कातासूत त्रिगुणकरि पुनःत्रिगुण करि तुलसीकी गुरिया मुखते मुख पुच्छते पुच्छमिली दोहरी गांठिदेगुहतमेंइसभांति मातृकापढैयथाइसभांतिमालागुहैसनत्कुमारसंहितायां॥ कर्पासलसमंवंसूत्रं धर्मकामार्थमोक्षदं । तंचविप्रेंद्रकन्याभिर्निर्मितंचसुशोभनम् ॥ त्रिगुणंत्रिगुणीकृत्यग्रंथयेत्शिल्पशास्त्रतः । एकैकमातृवर्णैसतारंप्रजपेत्सुधीः ॥ म णिमादायसूत्रेणग्रंथयेन्मध्यभागतः । ब्रह्मग्रंथिंविधायेत्थंमेरुंचग्रंथिसंयुतं ॥ ग्रंथ यित्वापुरोमालांततः संस्कारमाचरेत् । रामार्चनचंद्रिकायां॥गोपुच्छसदृशीकार्या एकग्रीवासमेरुका ॥ मुखंमुखेनसंयोज्यंपुच्छंपुच्छेनयोजयेत् । जपमालांविधायेत्थंततःसंस्कारमारभेत् ॥ शुभेलग्नेशुभेवारेशुभर्क्षेचशुभेतिथौ । प्रतिष्ठांकारयेन्मं न्त्रीस्वयंगुरुरथापिवा ॥ अश्वत्थपत्रनवकैः पद्माकारंतुकल्पयेत् ॥ तन्मध्ये स्थापयेन्मालांमातृकामूलमुच्चरन् । क्षालयेत्पंचगव्यैस्तुसद्योजातेनसज्जनैः ॥

इसभांति पद्माकार पीपरके नवपत्रकरि तापर मालाधरि पंचगव्यते स्नानकरावतयहपढ़ै ॐसद्योजातंप्रपद्यामिसद्योजाताय वैनमः चंदन फूलचढ़ावतपढ़ै ॐ वामदेवायनमो ज्येष्ठायनमोरुद्रायनमः काल विकरणायनमो बलप्रमथ सर्वभूतदमनायनमो मनोमंथायनमः धूप देतमें पढ़ै ॐ अघोरेभ्यो अथघोरेभ्यो घोराघोरतरेभ्योसर्वतः सर्वसर्वेभ्योनम स्तेरुद्ररूपेभ्य. लेपकरत पढ़ै तत्पुरुषायविद्महे महादेवायधीमहितन्नोरुद्रःप्रचो दयात् प्रतिगुरियापढ़ै ईशानःसर्वविद्याना मीश्वरःसर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्र ह्मणोधिपतिः शिवोमेस्तुसदाशिवों पुनः पढ़ै ह्रींॐमालेमालेमहामालेसर्वतत्त्व स्वरूपिणी।चतुर्वर्गस्त्वयिन्यस्तस्तस्मान्मेसिद्धिदाभव ॥ इतिपढ़िलालिफूलच ढ़ावै प्रणामयथा ऐंश्रींतुलसीमालिकायैनमः अथप्राणप्रतिष्ठा ॐअस्यश्रीप्राण प्रतिष्ठामंत्रस्य ब्रह्मविष्णुशिवाऋषयः ऋग्यजुःसामानिछंदांसिचैतन्यदेवतामा लायाःप्राणप्रतिष्ठापनेविनियोगः ॐआंह्रींक्रोंयंरंलंवंशंषंसंहओंक्षंसंहंसःह्रींॐ हंसःमालायावाङ्मनश्चक्षुर्घ्राणप्राणइहागच्छंतुसुखंचिरंतिष्ठंतुस्वाहाइतिपढ़ि अक्षतछांड़ै पुनःपूर्ववत् पढ़ि मालायाप्राणइहागच्छंतु सुखं चिरंतिष्ठंतुस्वाहा पुनः पूर्ववत्पढ़ि मालायाजीवइहागच्छ सुखंचिरंतिष्ठतुस्वाहा पुनः मालाया सर्वेन्द्रियाणिइहागच्छंतुसुखंचिरंतिष्ठंतुस्वाहाअक्षतछोंड़ि पुनः ऐंश्रीं तुलसी मालिकायैनमः इतिपढ़ि जलगंधफूलधूपदीपादि पूजिपुनः अक्षतलै पढ़ै श्री रामागच्छभगवान्रघुवीरनृपोत्तम । जानक्यासहराजेंद्र सुस्थिरोभवसर्वदा ॥ यावत्पूजांसमाप्येहं तावत्त्वंसन्निधोभव ॥ रघुपुंगवराजर्षे रामराजीलोचन ॥ रघुनन्दनमेदेव श्रीरामाभिमुखोभव ॥ इतिपुष्पाक्षत मालापरछोंड़ि आवा हनी आदि सातमुद्रा देखाय ॐश्रीरामायनमः इतिपढ़ि जलगंधफूलधूपदीप नैवेद्यादिमालापर पूज्य १०८ राममंत्र पढ़िगोमुखीमें करै इतिमालागोमुखी युत उरपर हाथराखि पट्सहस्रवा एकसहस्र प्रतिदिन जपै अधिकोनन्न ३४ ॥

मदर्थेनृत्यगीतादिस्तुतिपाठादिकारयेत् ॥ प्रणमेद्दंडवद्भूमौहृदयेमांनिधायच ३५ शिरस्याधायमद्दत्तंप्रसादंभावनामयम् ॥ पाणिभ्यांमत्पदेमूर्द्धर्निगृहीत्वाभक्तिसंयुतः ३६ रक्षमांघोरसंसारादित्युक्त्वाप्रणमेत्सुधीः ॥ उद्वासयेद्यथापूर्वंप्रत्यग्ज्यो तिषिसंस्मरन् ३७ ॥

(मत्अर्थेपाठादिस्तुतिनृत्यगीतादिकारयेत्चहृदयेमांनिधायभूमौदण्डवत्प्रणमेत्) हे लक्ष्मणमेरी प्रीत्यर्थ सहस्रनामस्तव राजादि पाठद्वारा स्तुतिकरै मेरी प्रसन्नताहेत गुणिनको बुलायनृत्यगानादि करावै पुनः हृदय में मेरा ध्यानराखे भूमिपै दंडकी नाईं परि प्रणाम करै यथानृसिंह पुराणे॥उरसा शिरसादृष्ट्या वचसामनसातथा।पद्भ्यांकराभ्यांजानुभ्यां प्रणामोऽष्टांगईरितः ३५ (भावनामयंमत् दत्तं प्रसादंशिरसि आधायभक्तिसंयुतः मत्पदेमूर्द्धनिपाणिभ्यां गृहीत्वा) पुनः भावनाध्यानमें मेरा दियाहुआ प्रसाद लैकै शीशपर धरे पुनः भक्तजन भक्तिअर्थात् सेवक भावकी प्रीतिसहित मेरेपायँनमें शीशधरि दोऊहाथौं करिकै मेरेपद गहै ३६ (घोरसंसारात् मांरक्षइतिउक्त्वासुधीःप्रणमेत् प्रत्यग्ज्योतिषियथा पूर्वंस्मरन् तथाउद्वासयेत्) हेदयाब्धे भयंकर संसारदुःखते मेरीरक्षाकरौ ऐसाकहि सुबुद्धी प्रणाम करै पुनः आदि ज्योति मेरी दिव्यकला जो हृदयमें बसीहुई ताहि जिसप्रकार प्रथम ध्यान द्वारा हृदयते खैंचि प्रतिमामें स्थापित किया ताही भाँति प्रतिमाते खैंचिपुनः हृदयमें स्थित करै भाव पूजाकिहे पीछे हृदय में मेराध्यान किहेरहै ३७ ॥

एवमुक्तप्रकारेणपूजयेद्विधिवद्यदि ॥ इहामुत्रचसंसिद्धिंप्राप्नोतिमदनुग्रहात् ३८ मद्भक्तोयदिमामेवंपूजांचैवदिनेदिने ॥ करोतिममसारूप्यंप्राप्नोत्येवनसंशयः ३९ इदंरहस्यंपरमंचपावनंमयैवसाक्षात्कथितंसनातनं ॥ पठत्यजस्रंयदिवाशृणोति यःससर्वपूजाफलभाङ्नसंशयः ४० एवंपरात्माश्रीरामःक्रियायोगमनुत्तमं ॥ पृष्टःप्राहस्वभक्तायशेषांशायमहात्मने ४१ पुनःप्राकृतवद्रामोमायामालंब्यदुःखितः ॥ हासीतेतिवदन्नेवनिद्रांलेभेकथंचन ४२ ॥

(एवंउक्तप्रकारेण यदिविधिवत् पूजयेत्मत्अनुग्रहात् इहचअमुत्र संसिद्धिंप्राप्नोति)हेलक्ष्मण इस मेरी पूर्व कहीहुई प्रकार करिकै जो प्राणी बिधिवत् पूजन करै तौ मेरी अनुग्रह अर्थात् आपनामानि सदादया राखनेते वाको इस लोकमें पुनः परलोकमें सम्पूर्ण सिद्धि प्राप्तहोती है ३८ (चमत्भक्तः यदिएवंमांपूजांएवदिनेदिने करोतिसःममसारूप्यंएवप्राप्नोति संशयःन) पुनःमेराभक्त जोइसीप्रकार मेरापूजा निश्चय करि प्रतिदिन जीवन पर्यंत करै सो मेरी सारूप्य मुक्तिको निश्चय करि प्राप्तहोइ यामें संशय नहीं है ३९ (इदंपरमंरहस्यं सनातनंचपावनंसाक्षात् मयाएवकथितं यदिअजस्रंपठति वायःशृणोतिससर्व पूजाफलभाक्संशयःन) हेलक्ष्मण यह पूजाविधान परम गुप्त रहस्य सनातन प्राचीन कालते चली आवती है यथा हारीत अम्बरीष प्रतिकहे पुनः पावनभाव सुलभजीवको पावन करता सोई साक्षात् मैंने तुम प्रति निश्चय करि कहा ताहि जो नित्यही पढ़ताहै वा जो मनलगाय सुनताहै सो सबदशा वरण पूजाके फलको भागी होताहै यामें संशय नहीं है ४० (एवंपृष्टःक्रियायोगंअनुत्तमम् परात्माश्रीरामः स्वभक्तायमहात्मने शेषांशायप्राह) शिवजी कहत हेगिरिजा इस प्रकार पृष्णकिया जो लक्ष्मण जी क्रियायोग भाव पूजन द्वारा प्रभुकी प्राप्ती अनुत्तम भाव जासों उत्तम और पदार्थ नहीं ऐसा श्रेष्ठ ताहि विधिवत् परमात्मा श्री रघुनाथ जी आपने भक्त महात्मा

शेषको अंशश्री लक्ष्मण जी के अर्थ कहते भये भाव जो प्रथम पूछे सोई क्रियामार्ग प्रभु लक्ष्मण प्रति वर्णन कीन्हें ४१ (पुनःरामः प्राकृतवत् मायांआलंब्यदुःखितः हासीताइतिवदन एवकथंचन निद्रांलेभे) पुनः रघुनन्दन प्राकृत मनुष्य की नाईं मायाके आलंब्य करिकै हासीता ऐसा शब्द बारम्बार उच्चारण करत निश्चयकरिकै ताते किसी भांति नहीं निद्रा पावतेहैं ४२ ॥

एतस्मिन्नंतरेतत्रकिष्किंधायांसुबुद्धिमान्॥हनूमान्प्राहसुग्रीवमेकांतेकपिनायकम् ४३ शृणुराजन्प्रवक्ष्यामितवैवहितमुत्तमम् ॥ रामेणतेकृतःपूर्वमुपकारोह्यनुत्तमः ४४ कृतघ्नवत्त्वयानूनंविस्मृतःप्रतिभातिमे ॥ त्वत्कृतेनिहतोवालीवीरस्त्रैलोक्य सम्मतः४५राज्येप्रतिष्ठितोसित्वंतारांप्राप्तोसिदुर्लभाम्॥सरामःपर्वतस्याग्रेभ्रात्रा सहवसन्सुधीः ४६ त्वदागमनमेकाग्रमीक्षतेकार्यगौरवात् ॥ त्वंतुवानरभावेनस्त्री सक्तोनाववुद्ध्यसे ४७ करोमीतिप्रतिज्ञायसीतायाःपरिमार्गणम् ॥ नकरोषिकृत घ्नस्त्वंहन्यसेवालिवद्द्रुतम् ४८ ॥

(एतस्मिन्नंतरेकिष्किंधायां तत्रएकांतेकपिनायकं सुग्रीवंसुबुद्धिमान् हनूमान्प्राह) ताही समय किष्किंधा पुरमें तहां एकांत देशमें बैठेहुये जो वानरोंके राजा सुग्रीव तिन प्रति सुबुद्धी हनूमान् बोले ४३ (राजन्तवएवउत्तमंहितं प्रवक्ष्यामिशृणुहिअनुत्तमंतेउपकारः पूर्वंरामेनकृतः) हनूमान बोले हे राजन् तुम्हारा निश्चय करिकै उत्तम हित मैं कहताहौं सो सुनिये निश्चय करिकै उत्तम तुम्हारा उपकार पूर्वही रघुनन्दनने किया भाव अब तुमको उचितरहै उनको कार्य करते ४४(त्वया कृतघ्नवत्नूनंविस्मृतः प्रतिभातिमें त्रैलोक्यसम्मतःवीरः वालीत्वत्कृतेनिहतः) तुमने कृतघ्न की नाईं निश्चय करिकै उपकारको भूलिगये ऐसा मालूम होताहै मोको देखिये तीनिहूं लोकमें प्रसिद्ध रहा ऐसा वीरवाली सो तुम्हारे हेत रघुनन्दन ने मारा ४५ (त्वंराज्येप्रतिष्ठितोसिदुर्लभाम् तारां प्राप्तोसिसरामःसुधीः भ्रात्रासहपर्वतस्य आग्रेवसन्) हे सुग्रीव तुम राज्यपद पर स्थितभयो तथा दुःखों करिकै नहीं लाभ होनेवालीरहै सो ताराके भोगको प्राप्तभयो जिनकी कृपाते सो रामसुबुद्धी भाई लक्ष्मण करिकै सहित पर्वतपर बासकिहे ४६ (कार्यगौरवात् एकाग्रेत्वत्आगमनं ईक्षतेतुत्वं वानरभावेनस्त्रीसक्तः अववुद्ध्यसेन) सीताजीकी खबर शत्रुघात इत्यादि बड़ेभारी कार्यकी चाहते रघुनन्दन एकांतमें तुम्हारे आगमन की इच्छा करतेहैं पुनःतुम वानर जातिके पशु स्वभाव करिकै स्त्री में आसक्त कछु ज्ञानते नहींहो ४७ (सीतायाः परिमार्गणम् करोमि इतिप्रतिज्ञायकरोषिनत्वं कृतघ्नःवालिवत्द्रुतम्हन्यसे) सीताको मैं ढूँढ़ौंगो इत्यादि प्रतिज्ञा करिकै सो कार्य पूरा किहेउ न ताते तुम कृतघ्नहो इस दोषते वालीकी नाईं तुमभी मारे जाउगे यही निश्चय जानिलेउ ४८ ॥

हनूमद्वचनंश्रुत्वासुग्रीवोभयविह्वलः ॥ प्रत्युवाचहनूमंतंसत्यमेवत्वयोदितम् ४९ शीघ्रंकुरुमदाज्ञांत्वंवानराणांतरस्विनाम्॥सहस्राणिदशेदानींप्रेषयाशुदिशोदश ५० सप्तद्वीपगतान्सर्वान्वानरानानयंतुते ॥ पक्षमध्येसमायांतुसर्वेवानरपुंगवाः ५१ येपक्षमतिवर्त्तंतेतेवध्यामेनसंशयः ॥ इत्याज्ञाप्यहनूमंतंसुग्रीवोगृहमाविश त् ५२ सुग्रीवाज्ञांपुरस्कृत्यहनूमान्मंत्रिसत्तमः ॥ तत्क्षणेप्रेषयामासहरीन्दशदि शःसुधीः५३ अगणितगुणसत्वान्वायुवेगप्रचारान्वनचरगणमुख्यान्पर्वताकार

रूपान्॥पवनहितकुमारःप्रेषयामासदूतानतिरभसतरात्मादानमानादितृप्तान् ५४ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसम्वादेकिष्किंधाकाण्डेचतुर्थःसर्गः ॥

(हनूमत्वचनंश्रुत्वा भयविह्वलः सुग्रीवःहनूमंतंप्रतिउवाच त्वयाउदितंसत्यंएव) हनुमान् को बचन सुनि डरते व्यकल सुग्रीव हनुमान् प्रति बोले कि जो तुमने कहा सो सत्यहै निश्चय करिकै ४६ (मत्आज्ञांत्वंशीघ्रं कुरुदशसहस्राणि तरस्विनाम् बानराणांदशदिशः इदानींआशुप्रेषय) सुग्रीव बोले हे हनूमान् अब मेरीआज्ञा को तुम शीघ्रही करौ दशहजार वेगवंत वानरोंको दशोदिशोंको इस) समयशीघ्रही पठावौ ५०(तेसप्तदीपगतान्वानरान्सर्वान्आनयंतु पक्षमध्येसर्वेवानरपुंगवाःसंआयांतु तेवानर दशौ दिशि जाय कै सातौ दीपन में प्राप्त जहांतक बानर हैं तिन सबन को बुलाय लावैं एक पक्ष के मध्य में सब वानर श्रेष्ठ इहां आय प्राप्त होवैं भाव अधिक विलंब न लगावहिं ५१ (येपक्षं अतिवर्ततेतेमेवध्यासंशयःन हनूमंतंआज्ञाप्य सुग्रीवःगृहंअविशत्) जे वानर पक्षको अत्यंत बितायकै आवैंगे तिनको मैं वध करौंगो यामें संशय नहीं इत्यादि हनूमान् को आज्ञा करि सुग्रीव घरमें प्रवेश किये ५२ (सुग्रीवस्यआज्ञां पुरस्कृत्यसुधीः हनूमान्मंत्रिसत्तमः दशदिशःहरीन् तत्क्षणेप्रेषयामास) सुग्रीव की आज्ञामानि सुबुद्धी हनूमान् मंत्रिनमें श्रेष्ठ सो दशोदिशोंमें बानरोंको तिसीक्षण पठावते भये ५३ (अतिरभसतर आत्मापवनहितकुमारः दानमानादितृप्तान् दूतान्प्रेषयामास कथंभूतान् वनचरगणमुख्यान् पर्वताकाररूपान् अगणितगुणसत्वान वायुवेगप्रचारान्) रघुनाथजीके कार्य करि-बेको अत्यंत हर्षत रहै आत्मामें जिनके ऐसे हनुमान् पवन के प्रियपुत्र सो दानदै सन्मान करि तृप्त कीन्हेहुये जो दूत तिनहिं पठावते भये कैसेहैं दूत बानर गणमें मुख्य पर्वताकार रूप अनेकगण गुण पराक्रम पवन समवेगहै जिनमें ५४ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमासियवल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचितेअध्यात्मभूषणे किष्किधाकाण्डेचतुर्थःप्रकाशः ४ ॥

रामस्तुपर्वतस्याग्रेमणिसानौनिशामुखे ॥ सीताविरहजंशोकमसहन्निदमब्रवीत् १ पश्यलक्ष्मणमेसीताराक्षसेनहृतावलात्॥मृतामृतावानिश्चेतुंनजानेऽद्यापिभामिनीम् २ जीवतीतिममब्रूयात्कश्चिद्वाप्रियकृत्समे ॥ यदिजानामितांसाध्वींजीवतीं यत्रकुत्रवा ३ हठादेवहरिष्यामिसुधामिवपयोनिधेः ॥ प्रतिज्ञांशृणुमेभ्रातर्येनमे जनकात्मजानीतातंभस्मसात्कुर्यांसपुत्रबलवाहनम् ४ ॥

सवैया ॥ बिरहार्त लखेऽनुज कोपिचले गिरिजा भ्रमपै शिवबोध करे। सुनि लक्ष्मण रोषसुकंठडरे तियपूजि विनम्र सुलाय धरे ॥ सभयातुर आय प्रणाम किये सुगरै तिन भेंटि लगाय गरे ॥ सुगरानुज सा चढ़ि यान चले जयश्री करुणाकर रामहरे ॥ (तुरामःमणिसानौ पर्वतस्याग्रेसीताविरहजंशोकंनिशामुखे असहन्इदंअब्रवीत्) पुनः रघुनन्दन मणि मय एकांत स्थानपर्वतके शिखरपर बैठे हुये सीता के बियोग ते बिरह करिकै उत्पन्न जो दुःख ताहि साँझ समय न सहि सके अर्थात् कार्त्तिक शुक्ल पूर्णिमा को चंद्रमा उदय भयो सो करुणा रस को उद्दीपन बिभाव देखि दुःख स्थाई परि पूर्ण भई सो न सहि सके ताते लक्ष्मण प्रति ऐसा बचन बोले १ (लक्ष्मणपश्यराक्षसेन बलात्मेसीता

हृता मृतावा अमृताभामिनीम् निश्चेतुंमद्यापिनजाने) हे लक्ष्मण देखिये राक्षस करि कै जबरई मेरी सीता हरगिई सो मरि गई अथवा जीवत है यह भामिनी को निश्चय हाल अबहीं तक न जानि पाये भाव किसदशा ते कहां पर है २ (वाकश्चित्जीवतीइति ममब्रूयात् समेप्रियकृत्बातां साध्वींयदिजीवतीं यत्रकुत्रजानामि) वा कोऊ जन सीता को जीवती ऐसा मोसो कहै सो मो को परम प्रिय अथवा हे लक्ष्मण उस पतिव्रता को जो जीवती हुई जहां कहीं जानि पावौं तौ ३ (पयोनिधेःसुधांइव हठात्एवहरिष्यामि हेभ्रातःमेप्रतिज्ञांशृणु मेजनकात्मजायेननीतातंसपुत्र बलवाहनम् भस्मसात्कुर्याम्) यथा क्षीर सागर मथिकै अमृत निकारा गयाहै ताही भांति बरबस बलते निश्चय करि हरि लैहौं हे भाई लक्ष्मण मेरी प्रतिज्ञाको सुनौ मेरी प्रिय पत्नी जनक नंदिनी जिस करि कै हरी गई ताहि सहित पुत्र सेना हाथी घोड़े रथादि वाहन इत्यादि सर्वस भस्म करि देऊँ ४ ॥

हासीतेचंद्रवदनेवसंतींराक्षसालये॥दुःखार्त्तामामपश्यन्तीकथंप्राणान्धरिष्यसि ५
चंद्रोपिभानुवद्भातिममचंद्राननांविना ॥ चंद्रत्वंजानकींस्पृष्ट्वाकरैर्मांस्पृशशीतलैः ६ सुग्रीवोपिदयाहीनोदुःखितमांनपश्यति ७ राज्यंनिष्कंटकंप्राप्यस्त्रीभिःपरिवृतोरहः ॥ कृतघ्नोदृश्यतेव्यक्तंपानासक्तोऽतिकामुकः ८ नायातिशरदंपश्यन्नपि मार्गयितुंप्रियाम् ॥ पूर्वोपकारिणंदुष्टःकृतघ्नोविस्मृतोहिमाम् ९ हन्मिसुग्रीवमप्येवंसपुरंसहबांधवम् ॥ बालीयथाहतोमेऽद्यसुग्रीवोपितथाभवेत् १० इतिरुष्टं समालोक्यराघवंलक्ष्मणोऽब्रवीत् ॥ इदानीमेवगत्वाहंसुग्रीवंदुष्टमानसम् ११ ॥

(हासीतेचंद्रवदनेराक्षसस्यआलयेवसंतींमांअपश्यन्तीदुःखार्त्ताप्राणान्कथंधरिष्यसि) विलापकरिप्रभु बोले हा सीते हा चन्द्रवदने तुमराक्षसके घरमें बास करतीहौ सो मोहिं बिनादेखे दुःखकरिकै पीड़ित प्राणनको कैसे धारण करौगी ५ (चंद्राननांविनाचंद्रः अपिममभानुवत् भातिचंद्रत्वंजानकीं स्पृष्ट्वाशीतलैःकरैःमांस्पृश) चंद्रवदनी सीता बिनाचंद्रमा शीतलभी सोऊ निश्चयकरिकै मोकोसूर्यवत्ताप कारकभासताहै हे चंद्रतू आपनी किरणों सों जानकीको स्पर्शकरि सोईशीतल किरणों करि कै मोहिं स्पर्शकरु ६ (सुग्रीवःअपिदयाहीनः मांदुःखितंनपश्यति) सुग्रीव भी निश्चय करिकै दयाहीन निठुर है काहेते मैं जो दुखित ताहि नहीं देखता है अपने आनन्दमें भूलापराहै ७ (निष्कंटकं राज्यंप्राप्यपानासक्तः अतिकामुकःरहःस्त्रीभिः परिवृतःव्यक्तंकृतघ्नःदृश्यते) निष्कंटक राज्य पाया सोमदपुनः मदिरापान में असक्त पुनः अत्यन्त कामबश अरुएकांत अंतहपुरमें स्त्रीगण घेरेतिनके भोगमें पराहै ताते प्रसिद्धही कृतघ्न देखि परताहै ८ (शरदंपश्यन्अपि प्रियाम्मार्गयितुंनआयाति दुष्टःकृतघ्नः पूर्वोपकारिणं मांविस्मृतोहि) शरदऋतु प्राप्त देखतहू संते प्रिया के ढूंढ़बे हेतु अबतक नआया ऐसादुष्टकृतघ्नहै कि पूर्व उपकार करनेवाला जोमैंहौंताहिभूलिगया निश्चयकरिकै९सपुरंसह बांधवंसुग्रीवं अपिएवंहन्मियथामेबालीहतः तथाअद्यसुग्रीवःअपिभवेत्) सहितपुर सहितबंधुबर्गसुग्रीव को निश्चय करिकै इसप्रकार मारिहौंजा भांति पूर्वमैंने बालीको माराताही भांतिअबआजुसुग्रीव भी निश्चयकरिहोइगो १० (इतिरुष्टंराघवंसमालोक्यलक्ष्मणःअब्रवीत् दुष्टमानसंसुग्रीवं इदानीं एवअहंगत्वा) इसप्रकार क्रोधयुक्त रघुनन्दनको देखि लक्ष्मण बोलतेभये कि दुष्टात्मा सुग्रीवकेपास इसीसमय निश्चयकरिकै मैं जाताहौं ११॥

मामाज्ञापयहत्वातमायास्येरामतेंतिकम् ॥ इत्युक्त्वाधनुरादायखड्गंतूणीरमेवच १२

गंतुमभ्युद्यतंवीक्ष्यरामोलक्ष्मणमब्रवीत् ॥ नहन्तव्यस्त्वयावत्ससुग्रीवोमेप्रियः सखा १३किंतुभीषयसुग्रीवंवालिवत्त्वंहनिष्यसे ॥इत्युक्त्वाशीघ्रमादायसुग्रीवप्रतिभाषितम् १४ आगत्यपश्चाद्यत्कार्यंतत्करिष्याम्यसंशयं ॥ तथेतिलक्ष्मणोगच्छत्त्वरितोभीमविक्रमः १५ किष्किंधांप्रतिकोपेननिर्दहन्निववानरान् ॥ सर्वज्ञोनित्यलक्ष्मीकोविज्ञानात्मापिराघवः १६ सीतामनुशुशोचार्त्तःप्राकृतःप्राकृतामिव ॥ बुद्ध्यादिसाक्षिणस्तस्यमायाकार्यातिवर्तिनः १७ ॥

(हेराममांआज्ञापयतंहत्वातेऽतिकम्आयास्य इतिउक्त्वाखड्गतूणीरंचएवधनुःआदाय) हेरघुनाथजी मोहिं आज्ञादीजिये तेहि सुग्रीवको मारिलाय तुम्हारे समीप प्राप्त करौं ऐसाकहि तरवारितरकस कटिमें बांधिपुनः निश्चयकरि धनुषहाथमें लयकरि १२ (गंतुंअभिउद्यतंवीक्ष्य लक्ष्मणंरामः अब्रवीत्वत्ससुग्रीवः मेप्रियसखात्वयानहन्तव्यः) अत्रसजि चलनेपर उद्यत देखि लक्ष्मणप्रतिरघुनंदन बोले हे वत्स लक्ष्मण सुग्रीव मेराप्रिय सखाहै इसकारण तुमकरि बधकरिवेयोग्य नहींहै १३(किंतु सुग्रीवंभीषय वालिवत् हनिष्यसेइतिउक्त्वा सुग्रीवप्रति भाषितंशीघ्रंआदाय) क्योंकिसुग्रीव कोडरपायदिहेउ कि जोराम कार्यभुलाये तौ वाली कीनाईं तूभी माराजायगो ऐसा कहिपुनः सुग्रीवको कहा बचनशीघ्रही आयहमको सुनावो १४ (आगत्यपश्चात्यत्कार्यंतत् असंशयम् करिष्यामितथा इतिभीम विक्रमः लक्ष्मणःत्वरितःअगच्छत्) उहांते लौटिआये पीछे मोको जोकार्यकरनामंजूरहोई सो बिना संशयकरिहौं इतिसुनि बोले हे महाराज जैसाआप कहतेहौ सोईकरिहौं ऐसाकहिभयंकर है पराक्रम जिनके सो लक्ष्मण तुरतही चले १५ (वानरान्निर्दहन्इवकिष्किंधांप्रतिकोपेन नित्यलक्ष्मीकःसर्वज्ञःविज्ञानात्मा अपिराघवः) वानरोंको मानहु भस्मकरिदेवैंगे इसभांति किष्किंधाप्रतिकोपकरि के लक्ष्मणगये पूर्व ऐश्वर्यसुनि अबमाधुर्य सुनिपार्वती शंकाकीन्ही कि जोनित्य लक्ष्मीयुक्त सर्वज्ञ बिज्ञानमय आत्मरूप रघुनाथजी १६ (प्राकृतःप्राकृतांइवसीतांअनुशुशोचार्त्तःबुद्ध्यादिसाक्षिणःतस्यमाया कार्यअतिवर्त्तिनः) यथा संसारी मनुष्य स्त्रीबियोगमें दुखित ताहीभांतिराघव सीताके बियोगमें दुखित शोचकरते हैं तौजो बुद्धिमनादिको साक्षीभाव सबकेअंतःकरणकीगतिजानने वाले सब सों भिन्नतिन रघुनन्दन के माया कार्य अत्यंत लिप्त देखि परते हैं १७ ॥

रागादिरहितस्यास्यतत्कार्यंकथमुद्भवेत् १८ ब्रह्मणोक्तमृतंकर्तुंराज्ञोदशरथस्य हि॥तपसःफलदानायजातोमानुषवेषधृक्१९माययामोहिताःसर्वेजनाअज्ञानसंयुताः ॥ कथमेषांभवेन्मोक्षइतिविष्णुर्विचिंतयन् २० कथांप्रथयितुंलोकेसर्वलोकमलापहाम् ॥रामायणाभिधांरामोभूत्वामानुषचेष्टकः२१क्रोधंमोहंचकामंचव्यवहारार्थसिद्धये॥तत्तत्कालोचितंगृह्णन्मोहयत्यवशाःप्रजाः॥ अनुरक्तइवाशेषगुणेषुगुणवर्जितः २२ विज्ञानमूर्त्तिर्विज्ञानशक्तिःसाक्ष्यगुणान्वितः॥अतःकामादिभिर्नित्यमाविलिप्तोयथानभः २३ ॥

(रागादिरहितस्यअस्यतत्कार्यंकथंउद्भवेत्)रागद्वेषादिरहितसदा एकरसअखंड आनन्दरूपतिनरघुनन्दनकेतिसमायाके कार्य कैसे उत्पन्नभये इतिसंदेह परशिवजी समाधान करतेहैं १८ (ब्रह्मणोक्तं ऋतंकर्तुं) रावण वध हेत ब्रह्मा को कहा वचन सत्य करिबे हेत पुनः (राज्ञोदशरथस्यहितपसः

फलदानायमानुप वेषधृक्जातः) राजा दशरथ के तपस्या को फल देने हेत मनुष्य वेष धरि उत्पन्न भये भाव मनुष्य के हाथ रावण की मृत्यु पुत्र है प्राप्त होना दशरथ की तपस्या को फल सो बिना मनुष्य बने दोऊ कैसे पूरी ह्वै सक्ती रहैं इस हेत मनुष्य वेष ते अवतीर्ण भये १६ (अज्ञानसंयुताः सर्वेजनाः मायामोहिताः एषांमोक्षकथंभवेत् इतिविष्णुःविचिंतयन्) अज्ञान सहित सब जन मेरी माया करि के मोहित इन लोक जनों की मोक्ष कैसे होय ऐसा विष्णु महाराज चिंतवन कीन्हे २० (सर्वलोकमलापहं रामायणाभिधांकथां लोके प्रथयितुंरामःमानुप चेष्टकःभूत्वा) सब लोक जनों के पाप नाश करने वाली रामायण नामे कथा लोक में विस्तार करने हेत रघुनन्दन मनुष्य की ऐसी चेष्टालिये उत्पन्नभये २१ (व्यवहारार्थसिद्धयेकामंच मोहंच क्रोधंकालोचितंतत् तत्ग्रहणन् गुणवर्जितःअशेषगुणेषुअनुरक्तइव अवशाप्रजाःमोहयाति)जिसहेत मानुष तनधरे सोई व्यवहारसिद्ध करने अर्थ कामपुनः मोहपुनः क्रोध इत्यादि जिसकाल में जो कार्य करनाउचित है ता समयमेंसो सो व्यवहार ग्रहणकरते हैं अर्थात् वहींचेष्टा देखावते हैं यद्यपि रजादिगुण रहित शुद्धआत्मा रूपहैं परन्तु पूर्वकार्य्य हेत संपूर्ण गुणोंमें अनुरक्त की नाईंगुण अवश प्रजनको मोहित करतेहैं २२ (विज्ञान शक्तिःविज्ञान मूर्त्तिःसात्यगुणान्वितःअतः नित्यकामादीभिःअविलिप्तःयथानभः) अघटघटनाकरणहारी विज्ञानरूपा शक्तिहै जिनकी तथा कारण रहित शुद्ध आत्मतत्व आनन्दघन विज्ञानमय मूर्त्ति है जिनकी सबके साक्षी अगुणयुत रघुनाथजी हैं इसकारण नित्यही एकरस आनन्दरूपकामादिविकारों करिकै नहींलिप्त होते हैं यथा आकाशमें धूमधूरि जलपवन सब देखनेमात्र हैं लिप्तकुछ नहीं तैसेही रामहैं २३ ॥

विंदंतिमुनयःकेचिज्जानंतिसनकादयः ॥ तद्भक्तानिर्मलात्मानःसम्यक्जानंतिनित्यदा २४ भक्तचित्तानुसारेणजायतेभगवानजः ॥ लक्ष्मणोऽपितदागत्वाकिष्किंधानगरान्तिकम् २५ ज्याघोषमकरोत्तीव्रम्भीषयन्सर्ववानरान् ॥ तंदृष्ट्वाप्राकृतास्तत्रवानरावप्रमूर्द्धनि २६ चक्रुःकिलकिलाशब्दंधृतपाषाणपादपाः ॥ तान्दृष्ट्वा क्रोधताम्राक्षोवानरान्लक्ष्मणस्तदा २७ निर्मूलान्कर्तुमुद्युक्तोधनुरानम्यवीर्यवान् ॥ ततःशीघ्रंसमागत्यज्ञात्वालक्ष्मणमागतम् २८ ॥

(केचिन्मुनयः विन्दंतिसनकादयः जानंतिनिर्मलात्मनः तत्भक्तानित्यदासम्यक् जानंति) रघुनन्दनकी माधुर्य लीलामें सबैभूले हैं परन्तु कोऊकोऊ मुनिलोग परमात्मतत्व करिकै देखते हैं अरुसनकादि समाधि द्वाराकछु जानतेहैं अरुजिनकी अमल आत्माहै ऐसेराम भक्तते नित्यही रघुनन्दन को सम्पूर्ण प्रकार ते जानते हैं भाववे नहीं माधुर्यमें भूलते हैं २४ (भगवान् अजः भक्तचित्तानुसारेण जायतेतदालक्ष्मणःअपि किष्किंधा नगरान्तिकम्गत्वा)भगवान् अजन्महैं परन्तुभक्तन के चित्त अनुसार भावजैसा भक्तोंको मनोर्थ होताहै तैसेही उत्पन्न होते हैं इसकारण भक्त सब जानते हैं ता समय लक्ष्मण निश्चय करि किष्किंधा नगर के समीप जातेभये २५ (सर्ववानरान् भीषयन्तीव्रंज्याघोषं अकरोत्तंदृष्ट्वावप्रमूर्द्धनितत्रप्राकृताःवानरा) सबवानरनको डरपावत संते बड़ा कठोर रोदाकोशब्द करतेभये तिनहि देखि तहां किलाको जो धुस है तापर खड़ेनोकरी वाले जे सामान्य वानर हैं २६ (पाषाणपादपाःधृतकिलकिलाशब्दंचक्रुःतान्वानरान् दृष्ट्वातदालक्ष्मणः क्रोधताम्राक्षः) पत्थरके शिलावृक्ष धारन करि किलाकिला शब्द करतेभये भाव युद्धपरउद्यत तिन

वानरों को देखि लक्ष्मण क्रोधसों नेत्रलाले ह्वैगये हैं जिनके २७ (वीर्यवान् धनुःआनम्यनिर्मूलान् कर्तुंउद्युक्तःततःलक्ष्मणंआगतम्ज्ञात्वाशीघ्रंसमागत्य)बड़ेपराक्रमवंतलक्ष्मणसबाण धनुष खैंचिवान रौंको निर्मूलनाश करिवेको खड़ेभये ता समय अंगद लक्ष्मण को आगमन जानिकै मन्दिर ते उठि शीघ्रहीं आयकै २८ ॥

निवार्यवानरान्सर्वानंगदोमंत्रिसत्तमः ॥ गत्वालक्ष्मणसामीप्यंप्रणनामसदण्डव त् २९ ततोंगदंपरिष्वज्यलक्ष्मणःप्रियवर्द्धनः ॥ उवाचवत्सगच्छत्वंपितृव्याय निवेदय ३० ममागतंराघवेणचोदितंरौद्रमूर्त्तिना ॥ तथेतित्वरितंगत्वासुग्रीवा यनिवेदयत् ३१ लक्ष्मणःक्रोधताम्राक्षःपुरद्वारिबहिस्थितः ॥ तच्छ्रुत्वातीवसंत्र स्तःसुग्रीवोवानरेश्वरः ३२ आहूयमंत्रिणांश्रेष्ठंहनूमंतमथाब्रवीत् ॥ गच्छत्वमं गदेनाशुलक्ष्मणंविनयान्वितः ३३ सांत्वयत्कोपितंवीरंशनैरानयमंदिरम् ॥ प्रेष यित्वाहनुमंतंतारामाहकपीश्वरः ३४ ॥

(सर्वान्वानरान् निवार्य मंत्रिसत्तमः अंगदः लक्ष्मणसामीप्यंगत्वासदण्डवत् प्रणनाम) सबबानरों को रोकि पुनः मंत्रिनमें उत्तम अंगद लक्ष्मणजीके समीप जाय दण्ड प्रणाम कीन्हे २९ (ततःप्रिय वर्द्धनः लक्ष्मणः परिष्वज्य अंगदंउवाच वत्सत्वंगच्छरौद्रमूर्त्तिनाराघवेणचोदितंममागंतपितृव्याय निवेदय तथा इतित्वरितं गत्वा सुग्रीवायनिवेदयत्) तदनन्तर प्रियजनोंके विभव बढ़ावनेवाले लक्ष्मण हृदयमें लगाय मिलि अंगद प्रतिबोले हेवत्सतुमजाउ क्रोध मूर्त्ति रघुनन्दन करिकै पठावाहुआ मेरा आगमन अपने पित्तीके अर्थ निवेदन करौ भाव खबरि जनायदेउ वहुत भली ऐसा कहि अंगद तुरतहीजाय सुग्रीवके अर्थ निवेदन कीन्हे ३० । ३१ (क्रोधताम्राक्षःलक्ष्मणः वहिः पुरद्वारिस्थितः तत्श्रुत्वावानरेश्वरः सुग्रीवः अतीवसंत्रस्तः) अंगद बोले हे महाराज क्रोधकरि अरुणहैं नेत्र जिनके ऐसे लक्ष्मण बाहेरपुरके द्वारपर खड़ेहैं भावजानकीके परिमार्गण हेत उनके पासनहींगयो तापर क्रोधकरि रघुनन्दन पठायेहैं इति अंगदको वचन सोसुनिकै बानरोंके राजा सुग्रिव अत्यंतडरि उठे३२ (मंत्रिणांश्रेष्ठंहनूमंतं आहूय अथ अब्रवीत् अंगदेनत्वं आशुगच्छ विनयान्वितः लक्ष्मणं) नीलनल सुखेन जामवानादि मंत्रिनमें श्रेष्ठ जो हनूमान तिनहिं बोलाय तिन प्रति अब सुग्रीव बोलतेभये हे हनूमान् अंगद करिकै सहित तुम शीघ्रहीजाउ नम्रता पूर्वकबिनती करि लक्ष्मण जोहैंतिनहिं समुझाय ३३ (कोपितं वीरंसांत्वयत्शनैः मंदिरम् आनय हनूमंतं प्रेषयित्वाकपीश्वरःतारांमाह) कोपवंतजो वीरलक्ष्मण, तिनहिं शांतकरि समुझाते हुये धीरा धीरा मंदिरको लवायलावो इसभांति हनूमानको पठाय पुनः कपीश्वर सुग्रीव ताराप्रति बोले ३४ ॥

त्वंगच्छसांत्वयंतीतंलक्ष्मणंमृदुभाषितैः ॥ शांतमंतःपुरंनीत्वापश्चाद्दर्शयमेऽन घे ३५ भवत्वितिततस्तारामध्यकक्षांसमाविशत्॥हनूमानंगदेनैवसहितोलक्ष्मणां तिकम् ३६ गत्वाननामशिरसाभक्त्यास्वागतमब्रवीत्॥एहिवीरमहाभागभवद्गृह मशंकितम् ३७ प्रविश्यराजदारादीन्दृष्ट्वासुग्रीवमेवच ॥ यदाज्ञापयसेपश्चात्त त्सर्वंकरवाणिभो ३८ इत्युक्त्वालक्ष्मणंभक्त्याकरेगृह्यसमारुतिः ॥ आनयामा

सनगरमध्याद्राजगृहंप्रति ३९ पश्यंस्तत्रमहासौधान्यूथपानांसमंततः ॥ जगामभवनंराज्ञःसुरेंद्रभवनोपमम् ४० ॥

(अनघेत्वंगच्छ मृदुभाषितैः तंलक्ष्मणं सांत्वयंतीशांतंअंतः पुरंनीत्वापश्चात् मेदर्शय) ताराप्रति सुग्रीव बोले हेनिःपापे तुमजाउ कोमल बात न करिकै तिनलक्ष्मणको चित्त शांतकरौ शांतभयेपर मंदिरके भीतरलाय पीछेमोसो भेटकराओ ३५ (भवतु इति ततः तारामध्यकक्षांसंप्राविशत् अंगदेन एव सहितः हनूमान् लक्ष्मणांतिकम्)जैसा कहतेहौ तैसाही होगा ऐसाकहि तदनन्तर तारामध्यक क्षाजो जनानी मर्दानी के बीचकी अगनाई है तामे स्थितभई अरु अंगद सहित हनूमान् लक्ष्मणके समीपको चले ३६ (गत्वाशिरसाननामभक्त्यास्वागत अब्रवीत्महाभागवीरभवद्गृहंअशंकितंएहि) समीपजाय शिरनाय करिकै प्रणामकरि भक्ति करिकै स्वागत बोलतेभये भावहमारी बड़ी भाग्यभई जो आपआये पुनः बोले हे महाभागवीर यह आपही को घरहै शंकारहित भीतरचलेआइये ३७ (प्रविश्यराजदारादीनचएवसुग्रीवंदृष्ट्वापश्चात्यत्आज्ञापयसेतत्सर्वंकरवाणिभो) मंदिरमें पैठिकै तारा रुमाआदि राजाकी स्त्रियोंको निश्चयकरि सुग्रीव को देखिये सावधानह्वै बैठि पीछे जो आज्ञाकरोगे सो सबकार्य हमकरेंगे ३८ (इतिउक्त्वासमारुतिः भक्त्यालक्ष्मणंकरेगृह्यनगरमध्यात्राजगृहंप्रतिआनयामास) चलोघरमें बैठि जो आज्ञादेउगे सोईकरैंगे ऐसाकहि पवन पुत्र भक्तिकरिकै लक्ष्मणको हाथमें हाथकरिगहि द्वारतेनगरमेंलायनगरमध्यते राजाके मंदिरको लावतेभये ३९ (समंततःपश्यंस्तत्रयूथपानां महासौधान्सुरेंद्रभवनोपमम्राज्ञःभवनंजगाम) चारिहूदिशि देखेतहां यूथपतिनके महासुंदर मंदिरहैं तिनहिं देखतेहुये जो इन्द्र के मंदिर की उपमा देबे योग्य राजा सुग्रीव को मंदिर है तहां को जाते भये ४० ॥

मध्यकक्षेगतातत्रतारातारांधिपानना ॥ सर्वाभरणसंपन्नामदरक्तांतलोचना ४१ उवाचलक्ष्मणंनत्वास्मितपूर्वाभिभाषिणी ॥ पाहिदेवरभद्रंतेसाधुस्त्वंभक्तवत्सलः ४२किमर्थंकोपमाकार्षीर्भक्तेभृत्येकपीश्वरे॥ बहुकालमनाश्वासंदुःखमेवानुभूतवान् ४३ इदानींबहुदुःखौघाद्भवद्भिरभिरक्षितः ॥ भवत्प्रसादात्सुग्रीवःप्राप्तसौख्योमहामतिः४४ कामासक्तोरघुपतेःसेवार्थंनागतोहरिः ॥ आगमिष्यंतिहरयोनानादेशगता प्रभो ४५ प्रेषितादशसाहस्राहरयोरघुसत्तम॥ आनेतुंवानरान्दिग्भ्योमहापर्वतसन्निभान् ४६ ॥

(मध्यकक्षेगतातत्रताराधिपाननामदरक्तांतलोचनासर्वाभरणसंपन्नातारा) मध्यकक्षामें जायलक्ष्मण जी तहां ताराको खड़ी देखे कैसी है ताराधिप चद्रमा तद्वत्आनन सुख है जिसको पुनः मदके भरे लालिमानेत्र कोरमें हैं जाकेसब आभूषणों करिकै भूषित है गौरतनजाको ऐसी तारा सम्मुख आई ४१ (नत्वास्मितपूर्वाभिभाषिणी लक्ष्मणंउवाचदेवरतेभद्रंपाहित्वंसाधुभक्तवत्सलः)ऐश्वर्य में सेवक भावते प्रथम प्रणाम करि माधुर्य में मित्रभाव ते मुसुकानि पूर्वक लक्ष्मण प्रति बोली हे देवर तुम्हारा कल्याण होय हमारी रक्षाकरो तुम साधुभक्तन परप्रीति करनेवाले हो भावसेवकपर क्रोध न चाहिये ४२ (भक्तेभृत्येकपीश्वरेकिंअर्थंकोपंआकार्षीः अनाश्वासंदुः खंबहुकालंएवअनुभूतवान्) आपही को भक्त सेवक जो कपीश्वर सुग्रीव तापर किसप्रयोजनार्थ कोपकरते हो जो कहो

कार्य भूलि विषयासक्तरहे सो कारण यहहै कि निरंतर दुःख बहुत काल भोगतारहा ४३ (इदानीं बहुदुःखओघात्भवद्भिःअभिरक्षितःभवत्प्रसादात् महामतिःसुग्रीवः प्राप्तसौख्यः) अबहीं बड़े दुःख समूह ते आपही करिकै रक्षा कियागया आपही के प्रसाद दयाते महामति सुग्रीव राज्य सुखपाया ४४ (कामासक्तःहरिःरघुपतेःसेवार्थंनागतःप्रभोनानादेशगताः हरयःआगमिष्यंति) जो कामवश सुग्रीव कपि रघुनन्दनकी सेवाके अर्थ समीप नहीं गया तौ हे प्रभो कार्य भूलानहीं इसी हेतसुग्रीव के बुलाये हुये अनेक देशनमें प्राप्त जो वानर ते सब आवते हैं ४५ (रघुसत्तममहापर्वतसन्निभान् वानरान् आनेतुंदशसाहस्राहरयःदिग्भ्यःप्रेषिताः) हे रघुवंशमें उत्तम महापर्वताकारवानरन को सब दिशनते बुलावने हेत सुग्रीव ने दशहजार वानर सबदिशनमें पठायेहैंवे सबको बुलाये लिहे आवते होंगे तौसुग्रीव कैसे कार्य भुलाया ४६ ॥

सुग्रीवःस्वयमागत्यसर्ववानरयूथपैः॥बधयिष्यतिदैत्यौघान्रावणंचहनिष्यति४७
त्वयैवसहितोऽद्यैवगंतावानरपुंगवः ॥ पश्यान्तर्भवनंतत्रपुत्रदारसुहृद्वृतम् ४८ द
ष्ट्वासुग्रीवमभयंदत्वानयसहैवते॥तारायावचनंश्रुत्वाकृशक्रोधोऽथलक्ष्मणः४९ज
गामांतःपुरंयत्रसुग्रीवोवानरेश्वरः ॥ रुमामालिंग्यसुग्रीवःपर्यंकेपर्यवस्थितः५०द
ष्ट्वालक्ष्मणमत्यर्थंउत्पपाताति भीतवत्॥तंदृष्ट्वालक्ष्मणःक्रुद्धोमदविह्वलितेक्षणं ५१
सुग्रीवंप्राहदुर्वृत्तविस्मृतोसिरघूत्तमम्॥वालीयेनहतोवीरःसबाणोऽद्यप्रतीक्षते५२

(सर्ववानरयूथपैःस्वयंसुग्रीवःआगत्य दैत्यौघान्बधयिष्यति च रावंणहनिष्यति) सब वानरयूथ पोंकरिकै सहित आपही सुग्रीव आइकै दैत्य समूहोंको बधकरेंगे पुनः रावण को बधकरहिंगे ४७ (वानरपुंगवःत्वयाएवसहितः अद्यएवगंताअंतर्भवनंपश्यतत्रपुत्रदारसुहृद्वृतम्) वानरों में श्रेष्ठ सुग्रीव तुम करिकै सहित इसीसमय निश्चय करि प्रभुके समीपको जायंगे हे लक्ष्मण अब सुग्रीव के रहने को भीतरको मन्दिर तौ देखिलीजिये तहां पुत्रस्त्री मित्रादि के घेरमें वानरेंद्र बैठे हैं ४८ दृष्ट्वाअभयंदत्वासुग्रीवंतेसहएव आनयतारायाःवचनंश्रुत्वाअथकृशक्रोधःलक्ष्मणः) उहांदेखिअभय बांह दयकै सुग्रीव को तुम अपने साथै निश्चयकरि लवायलय जाइये इति ताराके वचन सुनिअब कमपराक्रोध जिनको ऐसे जो लक्ष्मण सो ४९ (अंतःपुरंजगामयत्रवानरेश्वरः सुग्रीवः रुमांआलिं ग्य सुग्रीवः पर्यंके पर्यवास्थितः) रनवास मन्दिर को लक्ष्मण जातेभये जहां वानरोंके राजा सुग्रीव हैं अपनीरानी रुमाको हृदयमें लगाये सुग्रीव पलँगपर बैठे हैं ५० (लक्ष्मणंदृष्ट्वाअत्यर्थं अतिभी तवत्उत्पपातमदविह्वलितईक्षणंतंदृष्ट्वालक्ष्मणःक्रुद्धः) लक्ष्मण को देखि अतिशय करिकै अत्यंत डरवंत की नाईं सुग्रीव पलंगतेउठे मदभरे विह्वल नेत्रतिन सुग्रीव को देखि लक्ष्मण क्रोधित ह्वै कै ५१ (सुग्रीवंप्राहदुर्वृत्तरघूत्तमम्विस्मृतोसिवालीवीरःयेनहतःसबाणःअद्यप्रतीक्षते) क्रोधयुतलक्ष्मण सुग्रीव प्रतिबोलते भये कि हे दुर्वृतदुष्टोंके आचरणकरने वाले पूर्वोपकारी रघुनन्दनको बिसराय दिहे भावस्त्री में आसक्तपरा है रामकार्य की सुधि नहींहै तौ वालीऐसा वीरजिसकरिकै बधभया सो बाणतेरे हेतअबहीं बनाहै ५२ ॥

त्वमेवबालिनोमार्गंगमिष्यसिमयाहतः॥ एवमत्यंतपरुषंवदंतंलक्ष्मणंतदा ५३
उवाचहनुमान्वीरःकथमेवंप्रभाषसे॥त्वत्तोधिकतरोरामेभक्तोऽयंवानराधिपः५४

रामकार्यार्थमनिशंजागर्तिनतुविस्मृतः ॥ आगताःपरितःपश्यवानराःकोटिशःप्र
भो५५ गमिष्यन्त्यचिरेणैवसीतायाःपरिमार्गणम् ॥साधयिष्यतिसुग्रीवोरामकार्य
मशेषतः५६श्रुत्वाहनूमतोवाक्यंसौमित्रिर्लज्जितोभवत् ॥सुग्रीवोप्यर्घ्यपाद्याद्यैर्ल
क्ष्मणंसंप्रपूजयत ५७ आलिंग्यप्राहरामस्यदासोऽहंतेनरक्षितः ॥ रामःस्वतेज
सालोकान्क्षणार्द्धेनैवजेष्यति ५८ ॥

(मयाहतःत्वंएववालिनःमार्गंगमिष्यसिएवंलक्ष्मणंअत्यन्तपरुषंवदंतंतदा) मेरेहाथों करिके वध ह्वै तूभी निश्चयकरि वालिहीकी मार्गको जायगो इसप्रकारलक्ष्मणअत्यंतकठोर वचन सुग्रीवको कहत हरिहे ताही समय में ५३ (हनूमान्वीरःउवाचएवंकथंप्रभाषसेअयंवानराधिपःत्वत्तःअधिकतरः रामे भक्तः) हनूमान् वीरबोले हे लक्ष्मण जी ऐसे कठोर वचन क्यों कहतेहौ नावये वचनविमुखोंको कहना चाहिये अरु ये वानरोंके राजा सुग्रीव तुमते अधिकतर रघुनंदनमेंभक्तहैं ५४ (नविस्मृतःनरामकार्यअर्थंअनिशंजागर्तिप्रभोपश्यकोटिशःवानराःपरितःआगताः) पुनः भूलिनहींगये हैं रघुनन्दनके कार्यके अर्थ दिनोराति सुग्रीव जागते हैं भाव उसी व्यापारको साधनकरि रहेहैं हेप्रभु देखिये सुग्रीव के बुलाये हुये करोरिनवानर सब दिशोंतेचले आतेहैं ५५ (अचिरेणएवसीतायाःपरिमार्गणम्गमिष्यंतिअशेषतःरामकार्यंसुग्रीवःसाधयिष्यति) बिनाबिलंबशीघ्रही निश्चयकरिकै सीताके ढूँढवेहेतये वानर सब दिशनको जांयगे अवश्य खबरि लावहिंगे तैसेही जामें कछु बाकीनरहै संपूर्ण रघुनाथजीको कार्य सुग्रीव करहिंगे ५६ (हनूमतःवाक्यंश्रुत्वासौमित्रिःलज्जितःअभवत्सुग्रीवःअपिअर्घ्यपाद्याद्यैः लक्ष्मणं संप्रपूजयत हनूमान्के वचनसुनिकै लक्ष्मण लज्जाको प्राप्तभये शिरनीचे करिलिये तासमय में सुग्रीव भी अर्घ्यपाद्य इत्यादि षोडशोप चारों करिकै लक्ष्मणजी को भलीभांति पूजनकीन्हे ५७ (आलिंग्यप्राह अहंरामस्यदासः तेनरक्षितः स्वतेजसारामः क्षणार्द्धेन एवलोकान्जेष्यति) हृदयमेंलगाय लक्ष्मण प्रतिसुग्रीव बोले कि मैंतोरघुनंदन को दासहों रघुनाथजीने मेरी रक्षाकिया अपने तेज करिकै रघुनंदन आधेक्षणमें सब लोकनको जीतिसक्तेहैं ५८ ॥

सहायमात्रमेवाहंवानरैःसहितःप्रभो ५९ सौमित्रिरपिसुग्रीवंप्राहकिंचिन्मयोदित
म् ॥ तत्क्षमस्वमहाभागप्रणयाद्भाषितंमया ६० गच्छामोऽद्यैवसुग्रीवरामस्तिष्ठ
तिकानने ॥ एकएवातिदुःखार्तोजानकीविरहात्प्रभुः ६१ तथेतिरथमारुह्यलक्ष्म
णेनसमन्वितः ॥ वानरैःसहितोराजाराममेवानुपद्यत ६२ भेरीमृदंगैर्बहुऋक्षवा
नरैःश्वेतातपत्रैर्व्यंजनैश्चशोभितः ॥ नीलांगदाद्यैर्हनुमत्प्रधानैःसमावृतोराघव
मभ्यगाद्धरिः ६३ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसम्वादेकिष्किंधाकाण्डेपंचमःसर्गः ५ ॥

(प्रभोवानरैःसहितः अहंएव सहायमात्रं) हेप्रभु वानरन करिकै सहितमैं निश्चय करिकै सहाय मात्रहों सबकार्य प्रभुके तेजते होइगो ५९ (सुग्रीवं अपि सौमित्रिः प्राह हेमहाभागकिंचित् मयाउदितम् तत् क्षमस्व मयाप्रणयात् भाषितम्) सुग्रीव प्रति लक्ष्मण जी बोले हे महाभाग मैनेकछु कठोर वचन आपको कहा ताको क्षमाकीजिये क्यों कि मैं ने अपना जानि साँची प्रीति ते आपको

कठोरवचन कहेउ ६० (जानकी विरहात् रामः प्रभुः अतिदुःखार्तः एकएव काननेतिष्ठति अतः सु-ग्रीव अद्यएवगच्छामः) जनकनंदिनी के विरहते रघुनंदन प्रभु अत्यंतदुःख पीड़ित अकेलही वन में वासकिहे हैं इस कारण हे सुग्रीव इसी समय निश्चय करिकै उहाँजानाचाहतेहैं ६१ (तथा इतिराजा लक्ष्मणेन समन्वितः रथं आरुह्य वानरैः सहितः रामंएव अनुपद्यत) हेलक्ष्मण जो कहतेहौ सोई भली ऐसा कहि राजा सुग्रीव लक्ष्मणसंयुक्त रथपरचढ़ि अपरवानरों करिकैसहितरघुनाथजीके पास को निश्चय करिचलते भये ६२ (भेरीमृदंगैः श्वेतआतपत्रैः च व्यजनैः शोभितः नीलअंगदाद्यैः हनुमत्प्रधानैः बहुऋक्षवानरैः समावृतः हरिः राघवं अभ्यगात्) भेरमृिदंगादि बाजोंकरिकैसहितश्वेत छत्रपुनः चमर व्यजनों करिकै शोभित नीलअंगद हनूमानादि मुखिया बहुत ऋक्षवानरों करिकै संपूर्ण घेरमें सुग्रीव रघुनाथजी के पास को जाते हैं ६३ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचिते अध्यात्मभूषणेकिष्किंधाकाण्डेपंचमःप्रकाशः ५ ॥

दृष्ट्वारामंसमासीनंगुहाद्वारिशिलातले॥ चैलाजिनधरंश्यामंजटामौलिविराजित म् १ विशालनयनंशांतंस्मितचारुमुखाम्बुजम्। सीताविरहसंतप्तंपश्यंतंमृगपक्षि णः २ रथाद्दूरात्समुत्पत्यवेगात्सुग्रीवलक्ष्मणौ॥ रामस्यपादयोरग्रेपेततुर्भक्तिसंयु तौ ३ रामःसुग्रीवमालिंग्यपृष्ट्वानामयमंतिके ॥ स्थापयित्वायथान्यायंपूजयामास धर्मवित् ४ ततोऽब्रवीद्रघुश्रेष्ठंसुग्रीवोभक्तिनम्रधीः ॥ देवपश्यसमायातावानरा णांमहाचमूम् ५ ॥

सवैया । प्रभुवंदि कपीश्वर दूतपठै हनुमानहिं को मुदरीस्वदिये । बनप्यास लगीबिवरांतरगे तिय भेटि सबै जलपान किये ॥ कपिबोधि पठायतियायइतै मुखचंदसुधा नं अघातपिये । बदरीहिस्वधाम पठायस्वई बसिये नितसानुज रामहिये ॥ (गुहाद्वारिशिलातलेसमासीनं रामंदृष्ट्वाकथंभूतं श्यामं चैलाजिनधरंमौलिजटा विराजितम्) गुहाके द्वारेशिला के ऊपर बैठेहुये जो रघुनाथ जी तिनहि सुग्रीव देखतेभये कैसे हैं रघुनन्दन श्यामसुंदर तनमें मृगचर्म बसन धारण किहे शीशमें जटा विरा जमान १ (शांतस्मितचारुमुखांबुजंसीताविरहसंतप्तं विशालनयनंमृगपक्षिणःपश्यन्तं) शांत है स्वभाव मुसुकानियुत सुंदरमुख कमलसम है जिनका जानकी जीके वियोग जनित बिरहाग्नि करिकै संतप्तहै शरीरजिनका बड़ेसुंदर हैं नेत्र जिनके मृगपक्षिन को देखिरहे हैं २ (दूरात्रथात्स मुत्पत्य सुग्रीवलक्ष्मणौवेगात्रामस्य पादयोरग्रे भक्तिसंयुतौपेततुः) प्रभुको बैठेदेखि दूरिहीते रथ ते उतरि सुग्रीव लक्ष्मण दोऊबड़े बेगतेधाय आयरघुनंदनके पायँन के आगे भूमि में भक्तिसंयुक्त गिरिपर भावदण्ड प्रणामकीन्हे ३ (रामःसुग्रीवंआलिंग्यअनामयंपृष्ट्वाअन्तिके स्थापयित्वायथान्या यंधर्मवित्पूजयामास) रघुनाथजी सुग्रीव को उठाय हृदय में लगाय कुशल क्षेमपूछि आपने पास बैठारि जैसी शास्त्रकी आज्ञामित्र वर्ग सत्कार में चाहिये ताहीरीति ते धर्मज्ञ रघुनंदन सुग्रीव को पूजनकरते भये ४(ततःसुग्रीवःभक्तिनम्रधीःरघुश्रेष्ठं अब्रवीत्देववानराणांमहाचमूम्समायातांपश्य) तदनंतर सुग्रीव भक्ति अर्थात् सेवकभावकी प्रीतिदर्शाय नम्रश्री कोमल बुद्धिकरि प्रिय वचन रघुबंश नाथ प्रति बोलतभये हे देवस्वयंप्रकाशरूप आपके कार्यहेत मेरी बुलाई हुई सबद्वीपौंते वानरोंकी

बड़ी भारी सेना सबदिशों ते चली आवतीहै ताहि देखियेभावमेंआपके कार्यको भूलानहींरहाहैं५॥

कुलाचलाद्रिसंभूतामेरुमंदरसन्निभाः॥नानाद्वीपसरिच्छैलवासिनःपर्वतोपमाः६ असंख्याताःसमायान्तोहरयःकामरूपिणः॥ सर्वेदेवांशसंभूताःसर्वेयुद्धविशारदाः ७अत्रकेचिद्गजबलाःकेचिद्दशगजोपमाः॥गजायुतबलाःकेचिदन्येऽमितबलाः प्रभो८ केचिदञ्जनकूटाभाःकेचित्कनकसन्निभाः॥ केचिद्रक्तांतवदनादीर्घबाला स्तथापरे ९ शुद्धस्फटिकसंकाशाःकेचिद्राक्षससन्निभाः॥ गर्जन्तःपरितोयांतिवान रायुद्धकांक्षिणः १० त्वदाज्ञाकारिणःसर्वे फलमूलाशनाःप्रभो ॥ ऋक्षाणामधि पोवीरो जाम्बवान्नामबुद्धिमान्॥एषमेमंत्रिणांश्रेष्ठः कोटिभल्लूकवृन्दपः ११ ॥

(कुलाचलाद्रिसंभूतानानाद्वीपसरित्शैलवासिनः मेरुमंदरसंन्निभापर्वतोपमाः)हिमालयादि समूह पर्वतनमें उत्पन्न भये अनेक द्वीपन में नदीतट पर्वतनके वसने वाले मेरु मंदराचल के तुल्य पर्वता कार शरीरहैं जिनके ६ (हरयःकामरूपिणःअसंख्याताःसमायांतिसर्वदेवानांअंशैःसंभूतायुद्धविशारदाः सर्वे) वानर इच्छा पूर्वक रूप धरने वाले असंख्यन आवतेहैं सब देवनके अंशकरिकै उत्पन्नभये युद्ध कलामें प्रवीण सब हैं ७ (अत्रकेचित्गजबलाः) इनमें किसी वानरके एक हाथी भरेको बल है (के चित्दशगजोपमाः) काहूके दश हाथी के समान बल है (केचित्अयुतगजाःबलाःप्रभोअन्येअमित बलाः) किसीके दशहजार हाथिनकी तुल्य बलहै हेप्रभो किसीके अमित बलहै जिसकी प्रमाणे नहींके तराबल है ८ (अंजन कूटाभाःकेचित्कनकसन्निभाः केचित्रक्तांतवदनाःकेचित्तथाअपरेदीर्घ बालाः) अंजनके पर्वत के समान कांऊनील वर्ण है सोने पर्वत समकोईहै किसीको लाल मुख है तेसेहीं औरनके शरीरमें बड़बड़े बारहैं ९ (केचित्शुद्धस्फटिकसंकाशाः राक्षससन्निभाः युद्धकांक्षिणः वानराःपरितःगर्जंतःयांति) कोऊ शुद्धस्फटिक मणिसम श्वेतवर्ण हैं बहुत राक्षस के सम महाभयं कर हैं युद्धकी इच्छाराखे सब वानर गर्जते चले आवते हैं १० (प्रभोत्वत्आज्ञाकारिणः सर्वेफलमूल शनाः) हे प्रभु आपकी आज्ञाकरने वालेसब हैं अरुफल मूल इत्यादि को भोजनकरने वाले बनमे आपढूंढि लेइगे (ऋक्षाणांअधिपःजांबवान्नाम बुद्धिमान्वीरःकोटिभल्लूकवृंदपःमेमंत्रिणांएषश्रेष्ठः) ऋक्षन के राजा जांबवान् नामबडे बुद्धिमान् वीर हैं करोरि ऋक्षवृंदोंको पालनेवाले स्वामी हैं अरु मेरे मंत्रिनमें ये जांबवान् सबते श्रेष्ठहैं ११ ॥

हनूमानेषविख्यातोमहासत्वपराक्रमः ॥ वायुपुत्रोऽतितेजस्वी मंत्रीबुद्धिमतांवरः १२ नीलोनलश्चगवयो गवाक्षोगन्धमादनः ॥ शरभोमैंदवश्चैव गजःपनसएव च १३ बलीमुखोदधिमुखः सुषेणस्तारएवच ॥ केशरीचमहासत्वः पिताहनुम तोबली १४ एतेमेयूथपाराम प्राधान्येनमयोदिताः॥ महात्मानोमहावीर्याःशक्रतु ल्यपराक्रमाः १५ एतेप्रत्येकतःकोटि कोटिवानरयूथपाः ॥ तवाज्ञाकारिणःसर्वे सर्वेदेवांशसंभवाः १६ एषवालिसुतःश्रीमानंगदोनामविश्रुतः॥ वालितुल्यबलो वीरो राक्षसानांबलांतकः १७ एतेचान्येचबहवस्त्वदर्थेत्यक्तजीविताः ॥ योद्धारः पर्वताग्रैश्च निपुणाःशत्रुघातने १८ आज्ञापयरघुश्रेष्ठ सर्वेतेवशवर्तिनः १९ ॥

(एषहनूमान्विख्यातः वायुपुत्रःमहासत्वपराक्रमः अतितेजस्वीबुद्धिमतांवरः मंत्री) येहनूमान् नाम करि लोकमें प्रसिद्धपवनके पुत्र हैं महावीर्यवान् पराक्रमी भाव दुर्घट कार्यको सुगमकरि सकैहैं अत्यंत तेजस्वी भाव अकेले सब लोक परास्त करि सके हैं बुद्धिमानों में श्रेष्ठ मेरे मंत्री हैं १२ (नीलःनलःचगवयः गवाक्षःगंधमादनः शरभःमैंदवः चएवगजःचएव पनसः१३ बलीमुखः दधिमुखः चएवतारः चहनुमतः पिताकेशरी महासत्वःबली) नील नल पुनः गवय गवाक्ष गंध मादन शरभ मैंदव गजपनस बलीमुख दधिमुख तार पुनःहनूमान्को पिताकेशरी बड़ावीरबली १४ (हेरामएतेमे यूथपामहात्मानःमहाबीर्याःशक्रतुल्यपराक्रमाः प्राधान्येनमयाउदिताः) हे रघुनाथजी ये मेरेयूथपती महात्मामहा प्रभाववंत इंद्रके तुल्य पराक्रमीहैं इत्यादि मुख्य मुख्यमैंनेकहाहै १५ (एतेएकतःप्रतिको टिकोटिवानर यूथपाःसर्वेदेवांशसंभवाः सर्वेतवाज्ञाकारिणः) इसमें एक एक करोरि करोरि वानरों के यूथपों के पतिहैं सबदेवतों के अंशकरिकै उत्पन्न भये हैं सब आपके आज्ञाकार हैं १६ (एषश्रीमान् अंगदःनामविश्रुतःबालिसुतः बालितुल्यबलःवीरः राक्षसानांबलांतकः) येश्रीमान् अंगदनाम प्रसिद्ध बालि के तुल्य बलवंत वीर हैं राक्षसों की सेना को नाशकरने वाले हैं काल के तुल्य १७ (एतेच अन्येचबहवःपर्वताग्रैः योद्धारःचशत्रुघातनेनिपुणाः त्वत्अर्थेत्यक्तजीविताः) एततो कहे पुनः और बहुत हैं पर्वतों करिकै युद्ध करने वाले पुनः शत्रुके नाशकरने में प्रवीण हैं हे रघुनाथजी आपके कार्य के अर्थ जीवन आश त्यागे हैं १८ (रघुश्रेष्ठआज्ञापयतेसर्वेवशवर्तिनः) हे रघुनाथजी आज्ञा कीजिये ते सब बानर आपके वश हैं १९ ॥

रामःसुग्रीवमालिंग्य हर्षपूर्णाश्रुलोचनः ॥ प्राहसुग्रीवजानासि सर्वंत्वंकार्यगौरव म् २० मार्गणार्थंहिजानक्या नियुंक्ष्वयदिरोचते ॥ श्रुत्वारामस्यवचनंसुग्रीवः प्रीतमानसः २१ प्रेषयामासबलिनो वानरान्वानरर्षभः ॥ दिक्षुसर्वासुविविधा न्वानरान्प्रेष्यसत्वरं २२ दक्षिणांदिशमत्यर्थं प्रयत्नेनमहाबलान् ॥ युवराजंजांब वन्तं हनूमन्तंमहाबलम् २३ नलंसुषेणंशरभं मैंदंद्विविदमेवच ॥ प्रेषयामाससु ग्रीवो वचनंचेदमब्रवीत् २४ विचिन्वन्तुप्रयत्नेन भवंतोजानकींशुभाम् ॥ मासा दर्वाङ्निवर्तध्वं मच्छासनपुरःसराः २५ ॥

(सुग्रीवंआलिंग्य हर्षआश्रुपूर्ण लोचनःरामःप्राह सुग्रीवकार्य गौरवं सर्वंत्वंजानासि) सुग्रीव को हृदय में लगाय हर्ष आँशु जल ते पूर्ण भरे नेत्र रघुनन्दन बोले हे सुग्रीव कार्य की गुरुता सब तुम जानते हौ भाव स्त्री वियोग दुःख तुम को व्यापा है २० (यदिरोचतेजानक्या मार्गणार्थंहिनियुंक्ष्व रामस्य वचनंश्रुत्वासुग्रीवः प्रीतमानसः) हे सुग्रीव जो तुम्हारे मनते रुचैतौ जानकीके ढूंढ़ने अर्थ वानरोंको भेजिये इति रघुनाथजी के वचन सुनि सुग्रीव प्रीति मनमें राखे २१ (वानरर्षभःबलिनः वानरान्सर्वासदिक्षुप्रेषयामास विविधान्वानरान् सत्वरंप्रेष्य) वानरोंमें श्रेष्ठ बली वानरनको सबदि शन विषेपठावतेभयेअनेकवानरनको शीघ्रही पठायपुनः २२ द्वैश्लोककी अन्वयएकमेंहै(युवराजंजाम्ब वंतं महाबलंहनूमंतं नलंसुखेणंसरभं मैन्दंएवचाद्विविदं अत्यर्थंमहाबलान् प्रयत्नेन दक्षिणांदिशंसुग्रीवः प्रेषयामासचइदंवचनंअब्रवीत्) अंगद जामवंत महाबली हनूमान् नील नल सुषेण शरभ मैंद पुनः निश्चय करिद्विविद इत्यादि जे अतिशयकरिकै बली वीरहैं तिनहिं प्रकर्षयत्न करिकै भाव दक्षिण दिशिमें रावणके मंदिर में जानकी जी हैं तहां राक्षसी सेना बली रावण महाबली ताके पुरनिंबल

क्या करिसक्के हैं ताते उहां महाबलवंत वीरन को भेजा चाहिये इति विचारि इनसब को दक्षिण दिशाको सुग्रीव पठावते भये पुनः इस प्रकारको वचन बोलतेभये २३।२४ (प्रयत्नेनभवंतःशुभाम् जानकीम्विचिन्वंतुमत्शासनपुरःसराःमासात्अर्वाक्निवर्तध्वम्)वानरनप्रति सुग्रीव कहत यत्नपूर्वक तुम सब मंगल रूप जानकी जी जो हैं तिनहि ढूंढ़ोजाय अरुमेरी आज्ञाअंगीकार करि महीना के पूर्वहीं लौटि आयो अधिक दिनवीतैं तौ खबरिलैके आयो इति भावः २५ ॥

सीतामदृष्ट्वायदिवोमासादूर्ध्वंदिनंभवेत् ॥ तदाप्राणांतिकंदण्डंमत्तःप्राप्स्यथवानराः २६ इतिप्रस्थाप्यसुग्रीवो वानरान्भीमविक्रमान् ॥ रामस्यपार्श्वेश्रीरामं नत्वाचोपविवेशसः २७ गच्छंतंमारुतिंदृष्ट्वा रामोवचनमब्रवीत् ॥ अभिज्ञानार्थमेतन्मे ह्यंगुलीयकमुत्तमम् ॥ मन्नामाक्षरसंयुक्तं सीतायैदीयतांरहः २८ अस्मिन् कार्येप्रमाणंहि त्वमेवकपिसत्तम ॥ जानामिसत्वंतेसर्वं गच्छपंथाःशुभस्तव २९ एवंकपीनांराज्ञाते विसृष्टाःपरिमार्गणे ॥ सीतायाअंगदमुखा बभ्रमुस्तत्रतत्रह ३० भ्रमंतोविंध्यगहने ददृशुःपर्वतोपमम् ॥ राक्षसंभीषणाकारंभक्षयन्तंमृगान् गजान् ३१ ॥

(यदिवः सीतांअदृष्ट्वामासात्ऊर्ध्वंदिनंभवेत्तदावानराःप्राणांतिकंदण्डंमत्तःप्राप्स्यथ)जो तुमलोगोंको सीताको बिनादेखे महीनाते ऊपर दिन ह्वैगये तब वानर प्राणघात दण्डको मोंसो प्राप्तहोयँगे भावजो विना खबरिलाये मासते अधिक दिन बितायकै आवहुगे तौ मैं बधकरौंगो २६ (इति सुग्रीवःभीमविक्रमान्वानरान्प्रस्थाप्यसःश्रीरामंनत्वारामस्यपार्श्वेउपविवेश) इसप्रकार सुग्रीव बडेवली वीरवानरनको पठाय सो सुग्रीव श्रीरघुनाथजीको नमस्कार करि पुनः रघुनाथजीके समीप बैठतेभये २७ (मारुतिंगच्छंतंदृष्ट्वाराम वचनंअब्रवीत्एतत्मेहिअंगुलीयकंउत्तमंमत्नामाक्षरसंयुक्तंअभिज्ञानार्थंरहःसीतायैदीयतां) हनुमान्को जाते देखि समीप बोलाय रघुनन्दन वचन बोलतेभये कि यहमेरी मुद्रिका उत्तम मेरेनामाक्षर अंकित सहितहै याकोलेउ पहिचानके हेत एकांत स्थानमें सीताके अर्थ इसको दिहेउ २८ (कपिसत्तमअस्मिन्कार्येत्वंएवप्रमाणाहितेसर्वंसत्वंजानामिगच्छतवपंथाःशुभः)हनुमान् प्रति पुनः प्रभु कहतहेवानरोंमें श्रेष्ठसीतामार्गण यह जो कार्यहै ताके साधनमें तुमहीं निश्चयकरि समर्थहौ तुम्हारा बल बुद्धि साहस मैं जानताहौं जाउ तुमको पंथ मंगलहारी होयगो २९ (एवंकपीनांराज्ञाविसृष्टाःअंगदमुखातेसीतायाःपरिमार्गणेतत्रतत्रहबभ्रमुः) इसप्रकार कपिराजके पठाये हुये अंगदहैं मुखिया जिनमें ते सब वानर सीताको ढूंढतेहुये वन पहारादि भूमिमें जहांतहां घूमनेलगे ३० (विंध्यगहनेभ्रमंतःमृगान्गजान्भक्षयंतंभीषणाकारंपर्वतोपमम्राक्षसंददृशुः) विंध्याचलवनमें घूमतेहुये तहां मृगनको हाथिनको खाताहुआ भयंकर सूरति पर्वततुल्यभारी तनको एकराक्षस ताहि सब वानर देखते भये ३१ ॥

रावणोयमितिज्ञात्वा केचिद्वानरपुंगवाः ॥ जघ्नुःकिलकिलाशब्दं मुंचंतोमुष्टिभिःक्षणात् ३२ नायरावणइत्युक्त्वा ययुरन्यन्महद्वनम् ॥ तृषार्ताःसलिलंतत्र नाविंदन्हरिपुंगवाः ३३ विभ्रमंतोमहारण्ये शुष्ककंठोष्ठतालुकाः ॥ ददृशुर्गह्वरंतत्र तृणगुल्मावृतंमहत् ३४ आर्द्रपक्षान्क्रौंचहंसान्निःसृतान्ददृशुस्ततः ॥ अत्रास्ते

सलिलंनूनं प्रविशामोमहागुहाम् ३५ इत्युक्त्वाहनुमानग्रेप्रविवेशतमन्वयुः॥ स वेंपरस्परंधृत्वा बाहूनूबाहुभिरुत्सुकाः ३६ अंधकारेमहद्दूरं गत्वाऽपश्यन्कपीश्व राः ॥ जलाशयान्मणिनिभतोयान्कल्पद्रुमोपमान् ३७ ॥

(कोचित्वानरपुंगवाःज्ञात्वाअयंरावणःकिलकिलाशब्दंमुंचंतःक्षणात्मुष्टिभिःजघ्नुः)कोई वानरोत्त-मजाना कि यही रावणहै इति विचारियुद्धकी उत्साह करि सब किलकिलाशब्दछोड़तेहुये क्षणमात्र वाकोमुष्टिकों करिकै मारतेभये जब वह मूर्छित भया ३२ (अयंरावणःनइतिउक्त्वाअन्यंमहत्वनंययुः हरिपुंगवाःतृषार्ताःतत्रसलिलंनाविंदन्) जब युद्धपर न उद्यत भया तब विचारे कि यह रावण नहीं है ऐसाकहि औरेमहाबनहि जातेभये बानरश्रेष्ठसब पियासकरि पीड़ितभये अरु तहां कहूँ जल न-देखे ३३ (महारण्येविभ्रमंतःकंठओष्ठतालुकाशुष्कतत्रतृणगुल्मआवृतंमहत्गह्वरंददृशुः) महाबन में घूमते हुये प्यासते कण्ठ ओष्ठ तालू सूखिगया तासमय तहां तृण कुशकाशादि गुल्म गेंदा तुलसी इ-त्यादि झपाहुवा एकबड़ाभारी बिबर भूमिमें देखतेभये३४ (ततःआर्द्रपक्षान्क्रौंचहंसान्निःसृतान्ददृ शुःअत्रनूनंसलिलंआस्तेमहागुहाम्प्रविशामः) तदनन्तर उसते पानीसो भीजेहुये पक्षनसहित क्रौंच हंसनकोनिसरते हुये देखते भये तबअनुमान किये किया बिबरमें निश्चयकरिकै जलहै तातेमहा गुहामें सबमिलि पैठैंगे ३५ (इतिउक्त्वाउत्सुकाअग्रेहनूमान्तंअन्वयुःसर्वेपरस्परंबाहुभिःबाहून्धृत्वा प्रविवेश) जलहै यामेंपैठी ऐसाकहि जलकीचाहते आगे हनूमान् ताके पाछे सब आपुसमें हाथोंक रिकै एक एक को हाथपकरे बिबर में पैठते भये अँधेरेमें भ्रमित ह्वै कोई छूटिनजाय इसहेत हाथपक रेहैं ३६ (महतअंधकारेदूरंगत्वाकपीश्वराः अपश्यन्मणिनिभतोयान्जलाशयान्कल्पद्रुमोपमान्) अत्यंतअंधकार में दूरितक चलेगये तहां सबबानर देखतेभये स्फटिकमणि सम अमलजलभरे उत्तम तडाग ताके समीप वृक्षलगेहैं सोकल्पवृक्षके उपमा देबेयोग्य ३७ ॥

वृक्षान्पक्वफलैर्नम्रान्मधुद्रोणसमन्वितान् ॥ गृहान्सर्वगुणोपेतान्मणिवस्त्रादि पूरितान् ३८ दिव्यभक्षान्नसहितान्मानुषैःपरिवर्जितान् ॥ विस्मितास्तत्रभवने दिव्येकनकविष्टरे३९प्रभयादीप्यमानांतुददृशुःस्त्रियमेकलाम्॥ध्यायंतींचीरबस नांयोगिनींयोगमास्थिताम्४०प्रणेमुस्तांमहाभागाभक्ताभीत्याचवानराः ॥दृष्ट्वा तान्वानरान्देवीप्राहयूयंकिमागताः४१कुतोवाकस्यदूतावामत्स्थानं किंप्रधर्षथ॥ तच्छ्रुत्वाहनुमानाहश्रृणुवक्ष्यामिदेविते ४२ अयोध्याधिपतिःश्रीमान्राजादश-रथःप्रभुः ॥ तस्यपुत्रोमहाभागोज्येष्ठोरामइतिश्रुतः ४३ ॥

(पक्वफलैःनम्रान्वृक्षान्मधुद्रोणसमन्वितान् मणिवस्त्रादिपूरितान्सर्वगुणोपेतान्गृहान्) पकेफ लन करिकै वृक्षों की शाखानय रही हैं मधु द्रोण प्रमाण युक्त अर्थात् बत्तिससेर जिनमेंसहत ऐसी ममाखी लगी हैं मणि बसन भरेहुये सबगुण युत अर्थात् आतप बर्षा हिमादि सब ऋतु में सुखद ऐसे मंदिर ३८ (दिव्यभक्षान्नसहितान्मानुषैःपरिवर्जितान् विस्मिताःतत्रभवनेदिव्येकनकविष्टरे) देवतन के खाने योग्य अन्न सहित मंदिर मनुष्यों करिकै रहित ताहिदेखि सब बानर आश्चर्य वश भये पुनः तहां मंदिर में दिव्य कंचन मय बिछावने पर ३९ (तुएकलाम्स्त्रियम्ददृशुःप्रभयादीप्य मानांचीर बसनाम्योगिनींयोगंआस्थिताम्ध्यायंतीम्) पुनः कन कासनपर अकेलीएकस्त्री कोदेखते

भये कैसी है जो अपनी प्रभाकरिकै प्रकाशमान वल्कलादि बसन धारण किहे वह योगिनी योग में स्थित अर्थात् आसन किहे प्राणायाम ध्यान करिरहीहै ४० (भक्त्याचभीत्याबानराः तांमहाभागांप्रणेमुःतान्वानरान् दृष्ट्वादेवीप्राहयूयं किंमागताः) भक्तिकरिकै पुनः भयकरिकै सबबानर तिस महाभागस्त्रीको प्रणाम करतेभये तिनबानरों को देखि सो देवी बोलती भई कि तुमसब किस कारण ते इहां आयो है सो सबहाल कहिये ४१ (कुतःवाकस्यदूताःवाकिंमत्स्थानंप्रधर्षथतत्श्रुत्वा हनूमान् आहदेविशृणुतेवक्ष्यामि) कहांते आवतेहो अथवाकिसके दूतहो अथवा किसहेत मेरेस्थान को वर्वशप्रवेश करिआयो इत्यादि वचनसुनि कै हनूमान् बोले कि हे देविसुनिये आपसों मैं सब हाल कहताहौं४२ (अयोध्यायाःअधिपतिःप्रभुःश्रीमान्राजादशरथःतस्यजेष्ठःपुत्रःमहाभागःरामइति श्रुतः) अयोध्यापुरी के पति सबराजोंके प्रभुबड़े ऐश्वर्यवंतराजा दशरथ तिनके ज्येठेपुत्र बड़े भागवाले जिनको रामचन्द्र ऐसोनाम लोकन में प्रसिद्धहै ४३ ॥

पितुराज्ञांपुरस्कृत्यसभार्यःसानुजोवनम् ॥ गतस्तत्रहृताभार्यातस्यसाध्वीदुरात्म
ना ४४ रावणेनततोरामःसुग्रीवंसानुजोययौ ॥ सुग्रीवोमित्रभावेनरामस्यप्रिय
वल्लभाम् ४५ मृगयध्वमितिप्राहततोवयमुपागताः ॥ ततोवनंविचिन्वंतोजान
कींजलकाङ्क्षिणः ४६ प्रविष्टागह्वरंघोरंदैवादत्रसमागताः ॥ त्वंवाकिमर्थमत्रासि
कावात्वंवदनःशुभे ४७ योगिनीचतथादृष्ट्वाबानरान्प्राहहृष्टधीः ॥ यथेष्टंफल
मूलानिजग्ध्वापीत्वामृतंपयः ४८आगच्छततोवक्ष्येममवृत्तांतमादितः॥ तथेति
भुक्त्वापीत्वाचहृष्टास्तेसर्ववानराः ४९ देव्यासमीपंगत्वातेबद्धांजलिपुटाःस्थि
ताः ॥ ततःप्राहहनूमंतंयोगिनीदिव्यदर्शना ५० ॥

(पितुःआज्ञांपुरस्कृत्य सानुजः सभार्यःवनमूगतः तत्रसाध्वी तस्यभार्यादुरात्मना रावणेनहृता ततः सानुजः रामः सुग्रीवंययौ मित्रभावेनसुग्रीवः) पिता की आज्ञामानि छोटे भाई लक्ष्मण तथा अपनी भार्यासीता सहित घर त्यागि बन को गये तहां तिन राम चन्द्रकी पतिव्रता भार्या दुष्टात्मा रावण करिकै हरिगई तब लक्ष्मण सहित रामचंद्र सुग्रीवके पास आय मित्रता कियासोई मित्र भाव करिकै सुग्रीव हम लोगों को आज्ञा दिया ४४। ४५ (रामस्यप्रियवल्लभाम् मृगयध्वं इतिप्राह ततः वयंवनंउपागताः जानकींविचिन्वंतः ततःजलकांक्षिणः) रघुनन्दन की प्रिय पत्नीको ढूंढ़ौ इत्यादि सुग्रीव आज्ञादिया तब हम लोग वन को आये जानकी को ढूंढ़त फिरेतृषार्तभयेतब जलकी इच्छा करते हुये ४६ (घोरंगह्वरं प्रविष्टादैवात्अत्रसमागताः त्वंकावाकिंअर्थंत्वंअत्रासिशुभेनःवद) प्यास बशजल चाहते भयंकर गुहामें पैठे दैवयोग इहां प्राप्तभये अरु आपको हौ अरुकिस कार्यार्थ इहां वास किहेहो हे कल्याणरूपे अपना हाल हमलोगों प्रतिकहौ४७ (तथादृष्ट्वाचयोगिनीहृष्टधीःवानरान्प्राह फलमूलानियथेष्टंजग्ध्वाअमृतंपयःपीत्वा) यथा कहे तथा प्यासे भूखे देखियोगिनी प्रसन्नमनबानरों प्रति बोली किफलमूलादि जोइच्छाहोय सो भोजनकरौ अमृत समजल पानकरौ४८ (आगच्छततो ममवृत्तांतआदितः वक्ष्येतथाइतिभुक्त्वाचपीत्वाहृष्टाःतेसर्वेवानरा,) भोजन पानकरि आवौतबमैं अपना सबहाल पूर्वतेकहौं बहुत भला ऐसाकहिजाय फल खायजल पानकरि प्रसन्न मनते सब वानर ४९(गत्वादेव्यासमीपंतेबद्धांजलिपुटास्थिताःततःदिव्यदर्शनायोगिनीहनूमंतंप्राह)जायदेवीकेसमीपते सब वानर हाथ जोरि खड़ेभये तब दिव्य दर्शन हैं जाके सो योगिनी हनूमान् प्रति बोलतीभई ५० ॥

हेमानामपुरादिव्यरूपिणीविश्वकर्मणः॥ पुत्रीमहेशंनृत्येनतोषयामासभामिनी५१ तुष्टोमहेशःप्रददाविदंदिव्यपुरंमहत् ॥ अत्रस्थितासासुदतीवर्षाणामयुतायुतम् ५२तस्याअहंसखीविष्णुतत्परामोक्षकांक्षिणी॥नाम्नास्वयंप्रभादिव्यगंधर्वतनया पुरा ५३ गच्छंतीब्रह्मलोकंसामामाहेदंतपश्चर ॥ अत्रैवनिवसंतीत्वंसर्वप्राणिवि वर्जिते ५४ त्रेतायुगेदाशरथिर्भूत्वानारायणोऽव्ययः ॥ भूभारहरणार्थायविचरि ष्यतिकानने ५५ मार्गंतोवानरास्तस्यभार्यामायांतितेगुहाम् ॥ पूजयित्वाथता नूगत्वारामंस्तुत्वाप्रयत्नतः ५६ यातासिभवनंविष्णोर्योगिगम्यंसनातनं ॥ इतो हंगंतुमिच्छामिरामंद्रष्टुंत्वरान्विता ५७ ॥

(पुराविश्वकर्मणः पुत्रीहेमानामदिव्यरूपिणी भामिनीनृत्येन महेशंतोषयामास) पूर्वकाल म विश्वकर्मा की कन्या हेमा नामे दिव्य रूप रहै जाको नाद कला में प्रवीण सो भामिनी एक समय में गान नृत्य करिकै महेश को प्रसन्न करतीभई ५१ (महेशःतुष्टःइदंमहत् दिव्यपुरंप्रददौ सासुदती अयुतः अयुतम्वर्षाणांअत्रस्थिता (महेश प्रसन्न ह्वैकै यह बड़ादिव्य पुर सो हेमाके अर्थ देते भये सो सुंदर दांत वाली हेमा दश हजार गुणे दश हजार अर्थात् दश करोरि वर्षतक इहाँ वास करती रही ५२ (तस्यासखीअहं मोक्षकांक्षिणी विष्णुतत्परापुरा दिव्यगंधर्वतनया स्वयंप्रभानाम्ना) तिस हेमा की सखी मैं हौं मोक्षकी इच्छा राखे विष्णु के आराधन में तत्परहौं पूर्व दिव्य नामे गंधर्व रहा ताकी पुत्री हौं स्वयंप्रभा मेरा नामहै ५३ (साब्रह्मलोकंगच्छंती मांइदंआह सर्वप्राणविवर्जिते त्वंअत्रएवनि वसंतीतपःचर (सो हेमाब्रह्मलोक को जात समय मो प्रति ऐसा कही कि सर्व प्राणिन करिकै रहित अकेले तू इहां वास करती हुई तपस्याकरु ५४ (त्रेतायुगेअव्ययः नारायणःदाशरथिः भूत्वा भूभार हरणार्थाय काननेविचरिष्यति) त्रेता युग में नाश रहित नारायण दशरथ के पुत्र होंइगे सो भूमि को भार उतारणार्थ बनमें विचरहिंगे तिन की स्त्री रावण हरि ले जाइगो इति शेषः ५५ (तस्यभार्यांमार्गंतःवानराःतेगुहाम् आयांतितान् पूजयित्वाअथप्रयत्नतः रामंगत्वास्तुत्वा) तिन रघु- नन्दन की भार्या सीता को ढूढ़ते हुये वानर तेरेगुहाको आवहिंगे तिनहिं पूजनकरि तब यत्न पूर्वक रघुनंदन के पास जायस्तुति करि ५६ (योगिगम्यंसनातनंविष्णो भवनंयातासिइतःरामंद्रष्टुंअहंत्व रान्वितागंतुंइच्छामि (जहांयोगिन को गम्यऐसा सनातन विष्णुको स्थान तहांको जायगी इतिहेमा कहा सो सत्यभया हे वानरो अबरघुनाथजीके दर्शन करिवे कोमैं शीघ्रही जानेकी इच्छाकिहेहौं५७॥

यूयंपिदध्वमक्षीणिगमिष्यथबहिर्गुहाम् ॥ तथैवचक्रुस्तेवेगाद्गताःपूर्वस्थितंवन म् ५८ सापित्यक्त्वागुहांशीघ्रंययौराघवसन्निधिम् ॥ तत्ररामंससुग्रीवंलक्ष्मणंच ददर्शह ५९ कृत्वाप्रदक्षिणंरामंप्रणम्यबहुशःसुधीः ॥ आहगद्गदयावाचारोमांचि ततनूरुहा ६० दासीतवाहंराजेंद्रदर्शनार्थमिहागता ॥ बहुवर्षसहस्राणितप्तंमेदु श्चरन्तपः॥गुहायांदर्शनार्थंतेफलितंमेद्यतत्तपः६१अद्यहित्वांनमस्यामिमायायाः परतःस्थितम्६२सर्वभूतेषुचालक्ष्यंबहिरंतरवस्थितम्॥योगमायाजवनिकाच्छन्नो मानुषविग्रहः ६३ ॥

(अक्षीणियूयंपिदध्वंगुहामूवहिःगमिष्यथतथैवचक्रुःतेवेगात्पूर्वस्थितंवनमूगताः) अपने अपने नेत्र तुमसब मूंदा तौ गुहाके बाहेरजाउगे तैसाही सब करतेभये ते सबवानर शीघ्रही जहां प्रथम वनमें रहें तहँ जायप्राप्त भये ५८ (सापिगुहामूत्यक्त्वाशीघ्रंराघवसन्निधिमूययौतत्रससुग्रीवंचलक्ष्मणंरामंद दर्शह) सोस्वयंप्रभा निश्चयकरि गुहाको त्यागि शीघ्रही रघुनन्दनके समीपको जातीभई तहां सहित सुग्रीव पुनः लक्ष्मणको रघुनाथजीको देखतीभई ५९ (प्रदक्षिणंकृत्वाबहुशःरामंप्रणम्यतनूरुहारोमांचितसुधीःगद्गदयावाचाआह) प्रदक्षिणकरि पुनः बहुतबार रघुनंदनको प्रणामकरि प्रेमउमगितनमें रोमखड़ेहैं जिसके ऐसी सुंदरबुद्धिवाली स्वयंप्रभा गद्गद अर्थात् कंठारोधनते अपुष्टाक्षरबाणी करिकैबोली ६० (राजेंद्रअहंतवदासीदर्शनार्थंइहागतातेदर्शनार्थंगुहायांबहुवर्षसहस्राणिदुःचरंतपःतसंत त्तपःमेअद्यफलितम्) हेराजेंद्र रघुवंशनाथमैं आपकी दासीहौं आपके दर्शनकरने हेत इहांको आई हौं आपहीके दर्शनार्थ गुहाविषे बहुत हजार वर्षतक दुःखदआचरण तपरीति तपकिया सो तप मोको आजुसफल भया ६१ (मायया परतःस्थितामूत्वाअद्यहिनमस्यामि) मायाकरिकैपरेस्थित जो आप हौ तिनहिं आजु निश्चयकरि सन्मुख खड़ी प्रणाम करतीहौं इतितपसफलभया ६२ (चअलक्ष्यंसर्वभूतेषुवहिःअंतरवास्थितम्योगमायाजवनिकात्छन्नःमानुषविग्रहः) मायातेपरे हौ पुनः किसीको देखाते नहींहौ अरु सब भूतचराचर विषे वाहेर भीतर बनेहौ अरु अपनी योगमाया रूप कनातते गुप्त मानुष विग्रह किहेहौ भावकारण रहित शुद्धअंतर्यामी रूप सोई लोकोद्धारहेत योगमायामयराजकुमार रूपधारण किहे विचरतेहौ ६३ ॥

नलक्ष्यसेऽज्ञानदृशांशैलूषइवरूपधृक् ॥ महाभागवतानांत्वंभक्तियोगविधित्सया ६४ अवतीर्णोसिभगवन्कथंजानामितामसी ॥ लोकेजानातुयःकश्चित्तवतत्त्वंरघूत्तम ६५ ममैतदेवरूपंतेसदाभातुहृदालये ॥ रामतेपादयुगलंदर्शितंमोक्षदर्शनम् ६६ अदर्शनंभवार्णानांसन्मार्गपरिदर्शनम् ॥ धनपुत्रकलत्रादिविभूतिपरिदर्पितः ६७ ॥

(शैलूषइवरूपधृक् अज्ञानदृशांनलक्षसे महाभागवतानां भक्तियोग विधित्सयात्वं अवतीर्णोसि) यथानट अनेकरूप बनाय सबको मोहित करताहै आप स्वतंत्र रहताहै ताहीभांति आप अपनी माया करिकै अनेक रूप धरतेहौ सो अज्ञान दृष्टि वालेनको नहीं देखिपरतेहौ भावरूपकी चेष्टोंको सत्य मानि मोहित होतेहैं अर्थात् आपको दुखी सुखी मानते हैं यथार्थ रूपको नहीं जानिसकते हैं अरु महा भागवतों को भक्ति योगके विधान करने की ईच्छाकरिकै अवतीर्ण भयोहै अर्थात् अदेख रूपको ध्यान सेवन पूजनादि नहीं बनि परताहै ताते अवतीर्ण ह्वै सुंदर स्वरूप करिकै माधुर्यलीला करते हौ ताहीको देखि सुनिजे शुद्धात्मा रामानुरागी हैं ते भक्ति अर्थात् श्रवण कीर्त्तन स्मरण पादसेवन अर्चन वंदन दास्य सख्य आत्मनिवेदन इत्यादि को योग अर्थात् प्रेमते आपके रूपमें लगेरहना इति विधान भक्तों ते सुलभ करावने की इच्छा करिकै अवतीर्ण होतेहौ ६४ (रघूत्तमतवतत्त्वं लोकेयः कश्चित्जानातु भगवन्तामसी कथंजानामि) हे रघुवंशनाथ आपको तत्त्व यथार्थ रूप ताहि लोकमें जो कोऊ जानतहोइ सो जानै हे भगवन् सो आपको तत्त्व ताहि तामसी तमोगुणी प्रकृति स्त्री जातिमें कैसे जानिसकौं ६५ (तेएतत्रूपं एवममहृदालये सदाभातुराममोक्षदर्शनम् तेपादयुगलंदर्शितम्) आपको यह श्यामसुंदर द्विभुज धनुधारी राजकुमार रूप निश्चय करिकै मेरे

हृदय रूप मंदिरमें सदा प्रकाशकरै हे श्रीरघुनाथजी मोक्षको देखावनेवाले जो आपके दोऊपदकमल तिनहिं आपने मोंको देखावा भाव दर्शन दिह्यौ तौ अवश्य मोक्ष ह्वैउगे ६६ (भवार्णानांमदर्शन सन्मार्गपरिदर्शनम्) कैसेहैं आपके पद कमल कि चौरासी लक्ष योनिनमें जन्म मरणादि जो भव-सागर है ताको अदर्शन अर्थात् भव दुःखते छोड़ाय देनेवालेहैं पुनः ईश्वर की प्राप्तीकी जो सन्मार्ग ज्ञान भक्ति तिनको देखावने वालेहैं (कलत्रपुत्रधनादि विभूतिपरिदर्पितः) वनिता पुत्रधन इत्यादि लोक ऐश्वर्य में जे अभिमानीहैं ६७ ॥

अकिंचनधनंत्वाद्यनाभिधातुंजनोर्हति ॥ निवृत्तगुणमार्गायनिष्किंचनधनायते ६८ नमःस्वात्माभिरामायनिर्गुणायगुणात्मने ॥ कालरूपिणमीशानमादिमध्यान्तवर्जितं ६९ समंचरंतंसर्वत्रमन्येत्वांपुरुषंपरं ॥ देवतेचेष्टितंकश्चिन्नवेदनृविडंबनम् ७० नतेस्तिकश्चिद्दयितोद्वेष्योवापरएवच ॥ त्वन्मायापिहितात्मानस्त्वां पश्यंतितथाविधम् ७१ अजस्याकर्तुरीशस्यदेवतिर्यङ्नरादिषु ॥ जन्मकर्मादिकंयद्यत्तदत्यंतविडंबनम्॥त्वामाहुरक्षरंजातंकथाश्रवणसिद्धये॥केचित्कोशलराजस्यतपसःफलसिद्धये ७३ ॥

(जनःअभिधातुंनअर्हति) जो लोक विभवके अभिमानी जनहैं सो आपको नाम लेने योग्य नहींहैं (अकिंचनधनंत्वाद्य) जिनके और कछु नहीं एक आपही धनहो (निवृत्तगुणमार्गाय) छूटि गयाहै संसार जिनसे (निष्किंचनधनायतेनमः) जिनके और कछुनहीं धनकीतुल्य जो आप तिनको मेरा नमस्कारहै ६८ (निर्गुणायगुणात्मने स्वात्माभिरामायनमः आदिमध्यांत वर्जितं कालरूपिणं) कृपा दया क्षमा शील सुलभ उदारतादि अनंत कल्याण गुण धारण किहे रजादि गुणों करिकै रहित अपने सच्चिदानंद रूपमें रमण करनहारे तिनके अर्थ नमस्कार है आप आदि मध्य अन्त रहित सदा एकरस कालरूप सवको संहार करनहारे ६९ (सर्वत्रसमंचरंतं त्वांपरमंपुरुषंमन्ये देवनृविडंवनंते चेष्टितं कश्चिन्नवेद)अंतर्यामी रूपते सर्वत्र भूतमात्र में सम विचरते हो हे देव प्राकृत मनुष्योंकैसी नकल यहजो आपको अद्भुत चरित्र ताको कोऊनहीं जानता है ७० (नतेकश्चिद्दयितःअस्तिद्वेष्योवापरएवचत्वन्मायापिहितात्मानःत्वांतथाविधम्पश्यंति) न आपके कोई मित्रहै न शत्रुहै न उदाशिनहै निश्चयकरि पुनः आपकी मायाकरिकै विषमताहै जीवमें जिनके तेजैसाभावरा खेहै आपको ताहीविधि देखतेहैं ७१ (अकर्तुःअजस्यईशस्यदेवतीर्यङ्नरादिषुजन्मकर्मादियत्यत्तत् अत्यंतविडंवनम्) अकर्ताअजन्म ईश्वरजो आप तिनको वामनादि देवयक्षादि तीर्यङ्रामादिनरइत्यादि देहनविषे जन्मधरनारक्षा दंडादिकर्म करना जो जो भया सो अत्यन्त करिकै नकलहै ७२ (त्वंआहुः कथाश्रवण सिद्धये अक्षरंजातंकेचित्कोशलराजस्यतपसाफलसिद्धये) हे रघुनाथजी आपको वहुत मुनिलोग कहते हैं कि आपने गुणनमय कथा श्रवण सिद्धी के अर्थ परब्रह्म प्राकृत तनधारण कीन्हे भावकथा श्रवण द्वाराजीवनको सुलभ मुक्ति हेत पुनः कोऊकहत कि राजा दशरथ के तपस्या को फलसिद्धी के अर्थ भाव पुत्र भावको सुख देने हेत अवतीर्ण भये ७३ ॥

कौशल्ययाप्रार्थमानंजातमाहुःपरेजनाः। दुष्टराक्षसभूभारहरणा यार्थितोविभुः ॥ ब्राह्मणानररूपेणजातोऽयमितिकेचन ७४ शृण्वंतिगायंतिचयेकथास्तेरघुनन्दन

पश्यंतितवपादाब्जंभवार्णवसुतारणम् ७५ त्वन्मायागुणबद्धाहंव्यतिरिक्तंगु णाश्रयम् ॥ कथंत्वांदेवजानीयांस्तोतुंवाविषयंविभुम् ७६ नमस्यामिरघुश्रेष्ठं बाणासनशरान्वितम् ॥ लक्ष्मणेनसहभ्रात्रासुग्रीवादिभिरन्वितम् ७७ एवंस्तु तोरघुश्रेष्ठःप्रसन्नःप्रणताघहृत् ॥ उवाचयोगिनींभक्तांकिंतेमनसिकांक्षितम् ७८ ॥

(परेजनाःआहुःकौशल्ययाप्रार्थमानंजातं)अपरजन कहते हैं कि पूर्वजन्ममें आराधन द्वाराकौशल्या ने प्रार्थनाकिया कि मोकोपुत्रह्वै प्राप्तहोउताहीते अवतीर्णभये (दुष्टराक्षसभूभारहरणायब्रह्मणाऽर्थि तःविभुःअयंनररूपेणजातःइतिकेचन)रावणादि दुष्ट राक्षस भूमिको भारहै सो उतारने हेत ब्रह्माने याचना किया ताते प्रभु ये नररूप करिकै अवतीर्ण भये ऐसा कोऊ कहताहै ७४ (रघुनन्दनतेकथाः येगायंतिचशृण्वंतिभवार्णवसुतारणम्तवपादाब्जंपश्यंति)हे रघुनंदन आपकीकथाजे जनगावतेहैंपुनः श्रवण करते हैं ते भवसागरको तारणहारे आपके पदकमलोंको देखतेहैं७५(गुणाश्रयम्त्वन्मायागुण बद्धाहंव्यतिरिक्तंदेवत्वां विषयंविभुम् वास्तोतुंकथंजानीयां) पद उत्तम गुणों के आश्रयहैं अरु आपकी माया के गुणों करि बद्ध जे अहंकारी पुरुष तिन सों बिलग हैं भाव उनको दर्शन नहीं होते हैं हेदेव आप की विषय प्रभुता अथवा स्तुति मैं कैसे जानि सकौं ७६ (सुग्रीवादिभिःअन्वितम् भ्रात्रालक्ष्म णेन सहबाणासनशरान्वितम् रघुश्रेष्ठंनमस्यामि) सुग्रीव आदि बानरों करिकैयुक्त छोटेभाई लक्ष्मण सहित धनुष बाण युत ऐसे रघुवंशनाथ को मैं नमस्कार करती हौं ७७ (एवंस्तुतःप्रणताघहृत् रघु श्रेष्ठःप्रसन्नःभक्तांयोगिनीं उवाचतेमनसि किंकांक्षितम्) इसप्रकार स्वयंप्रभाने स्तुति किया सोसुनि शरणागत के पाप हरने वाले रघुवंशनाथ प्रसन्न ह्वै परम भक्त योगिनी प्रति बोलते भये हेस्वयंप्रभे तेरे मन में क्या कांक्षा है सो माँगु ७८ ॥

साप्राहराघवंभक्त्याभक्तिंतेभक्तवत्सल ॥ यत्रकुत्रापिजातायानिश्चलांदेहिमे प्रभो ७६ त्वद्भक्तेषुसदासंगोभूयान्मेप्राकृतेषुन ॥ जिह्वामेरामरामेतिभक्त्यावदतु सर्वदा ८० मानसंश्यामलंरूपंसीतालक्ष्मणसंयुतम् ॥ धनुर्बाणधरंपीतवाससंमु कुटोज्वलम् ८१ अंगदैर्नूपुरैर्मुक्ताहारैःकौस्तुभकुंडलैः ॥ भांतंस्मरतुमेरामवर्तना न्यंवृणेप्रभो ८२ ॥ श्रीरामउवाच ॥ भवत्वेवंमहाभागेगच्छत्वंबदरीवनम् ॥ तत्रैवमांस्मरंतीत्वंत्यक्त्वेदंभूतपंचकम्॥मामेवपरमात्मानंअचिरात्प्रतिपद्यसे८३ श्रुत्वारघूत्तमवचोमृतसारकल्पंगत्वातदैवबदरीतरुखंडयुष्टम्॥तीर्थेतदारघुपतिं मनसास्मरंतीत्यक्त्वाकलेवरमवापपरंपदंसाः ८४ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेकिष्किंधाकांडेषष्ठःसर्गः६ ॥

(साभक्त्याराघवंप्राहभक्तवत्सलप्रभोयत्रकुत्रापिजातायातेनिश्चलांभक्तिंमेदेहि) सो स्वयंप्रभाभक्ति करिकै रघुनंदन प्रति बोली हे भक्तनपर प्रीति करनेवाले प्रभो कर्मवश जहांकहों मैं जन्म पावोंतहां आपनी निश्चल भक्तिमोको दीजिये ७९(सदात्वत्भक्तेषुसंगःमेभूयान् प्राकृतेषुनजिह्वामे रामराम इतिभक्त्यासर्वदावदतु) सदा सबकाल में आप के भक्तन में मेरासंगहोवै अरु प्राकृतों को संग न होवै औ जिह्वा मेरी रामराम इति आप को नाम भक्ति करिकै सबकाल में कहा करै ८० (सीता लक्ष्मणसंयुतंश्यामलंरूपंमानसं कथंभूतंधनुर्बाणधरंपीतवाससंमुकुटोज्वलम्) सीता

लक्ष्मणसहित आपको श्यामल स्वरूप मेरे मनमें सदावसा रहै कैसा रूप धनुष बाण धारणकि हे अंगमें पीतवस्त्र शशिपर मुकुटउज्वल सूर्यवत् प्रकाशमान् ८१ (अंगदैः) वजुल्लों करि कै भुजमूल (नूपुरैः) पहुँटन करि कै पायँ (कौस्तुभमुक्ताहारैः) कौस्तुभमणि मुक्ताहारों करिकै ग्रीवा उर (कुंडलैः) कुंडलों करि कै श्रवण (भांतंस्मरतुमेवरं रामप्रभोऽन्यंनवृणे) इन भूषणों करि कै सर्वांग श्याम रूप प्रकाशमान आप को सदा स्मरण करौं मोंको यही बर दीजिये हे रघुनन्दन प्रभु और कछु नहीं मांगती हौं ८२ (एवंभवतुमहाभागे त्वंवदरीवनम् गच्छतत्रएवत्वं मांस्मरंतीइदं भूत पंचकम् त्यक्तपरमात्मानंमां एवअचिरात्प्रतिपद्यसे) रघुनन्दन बोले हे स्वयंप्रभे जोकहेसोई होइगा हेमहाभागे अब तू वदरविन को जा तहां निश्चय करि तू मेरा स्मरण करती हुई यह भूत पंचक तन त्यागि परमात्मा जो मैंहौं ताको निश्चय करि थोरेही काल में प्राप्त होइगी ८३ (अमृतसारक ल्पंरघूत्तमवचःश्रुत्वातदाएववदरी तरुखण्डयुक्तम्तीर्थंगत्वातदामनसा रघुपतिंस्मरंती कलेवरंत्यक्त्वा सापरंपदंअवाप) अमृत के सारांश सम वनेहुये रघुनाथ जीके वचन सुनि तासमय जहां वदरी वृक्षों को समूह युत तीर्थ हैं तहां को गई तहां मन करि कै रघुनन्दन को स्मरण करती हुई देह त्यागि सो स्वयं प्रभा परमपद को प्राप्त भई ८४ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचिते
अध्यात्मभूषणेकिष्किंधाकांडेषष्ठःप्रकाशः ६ ॥

अथतत्रसमासीनावृक्षखंडेषुवानराः ॥ चिंतयंतोविमुह्यंतःसीतामार्गणकर्शिता १ तत्रोवाचांगदःकांश्चिद्वानरान्वानरर्षभः ॥ भ्रमतांगह्वरेऽस्माकंमासोनूनंगतोऽभवत् २ सीतानाभिगतास्माभिर्नकृतंराजशासनम् ॥ यदिगच्छामकिष्किंधां सुग्रीवोस्मान्हनिष्यति ३ विशेषतःशत्रुसुतंमांमिषान्निहनिष्यति ॥ मयितस्य कुतःप्रीतिरहंरामेणरक्षितः ४ इदानींरामकार्यमेनकृतंतन्मिषंभवेत् ॥ तस्यमद्धन नेनूनंसुग्रीवस्यदुरात्मनः ५ मातृकल्पांभ्रातृभार्यांपापात्मानुभवत्यसौ ॥ नगच्छे यमतःपार्श्वंतस्यवानरपुंगवाः ६ ॥

सवैया ॥ दुखअंगदपै हनुमानसिखै तटसागरगे सबशोचगहे । बतरातलखे गिरिकन्दरसों कढ़ि गीधतबै इनखानचहे ॥ बधबंधुसुने कररावणकेदुख पुंजदवानल देहदहे । चलिसिंधुनहाय क्रियाकरिकै सियशोधनको सबहालकहे ॥ (अथतत्रवानराःवृक्षखंडेषुसमासीनाःसीतामार्गणकर्शिताचिन्तयंतःवि मुह्यन्तः) अब तिस बनमें सब वानर वृक्षसमूह विषे बैठे हैं सीताके ढूँढ़नेकी चिंताकरि देह दुर्बल चिंतवन करतेहुये विशेषि मोहको प्राप्तहैं १ (तत्रवानरर्षभः अंगदः कांश्चित्वानरान् उवाचगह्वरे भ्रमतांअस्माकंनूनंमासःगतः) तहां वानरोंमेंश्रेष्ठ अंगद किसी वानरन प्रति बोले भाव सुग्रीवके पक्षी हनूमानादि बराय अपने पक्षिन सों बोले कि बन पर्वतकी गुहामें घूमतेहुये हमलोगोंको निश्चयकरि एक मास बीतिगया २ (अस्माभिः नसीता अधिगतानराजशासनम् कृतंयदिकिष्किन्धांगच्छामसुग्री वःअस्मान् हंनिष्यति) हम करिकै न सीतामिली अरु न राजाकी आज्ञा किया भावमास भीतरलौ- टिनगये जो अब किष्किंधाको जॉय तौ सुग्रीव हम लोगोंको वधकरी ३ (शत्रुसुतंमांमिषात् विशे- षतःनिहनिष्यतिमयितस्यप्रीतिःकुतःअहंरामेणरक्षितः) उसके शत्रुको पुत्रमैंहौं मोंको इसी वहाने

तेविशेषि मारैगौ मेरे विषे ताकी प्रीति किसी भाँति नहीं मैं तो रघुनंदन करिकै रक्षाकियागयाहूँ ४ (इदानींमेरामकार्यंनकृतंततनूनंमत्हननेतस्यदुरात्मनः सुग्रीवस्यमिषंभवेत्) अब जो हम रघुनाथ जीको कार्य न किया सोई निश्चय करिकै मेरे वधहेत तिस दुष्टात्म सुग्रीवको वहाना होइगो मातृ कल्पंभ्रातृभार्यांअसौपापात्मानुभवति अतःवानरपुंगवाःतस्यपार्श्वेनगच्छेयं) माताके तुल्यबड़ेभाईकी स्त्री में जोयह पापात्मा रमता है इस कारण हेवानरो कुमार्गी जो सुग्रीवताके पासमें न जाऊंगो ६॥

त्यक्ष्यामिजीवितंचात्रयेनकेनापिमृत्युना ॥इत्यश्रुनयनंकेचिद्दृष्ट्वावानरपुंगवाः७ व्यथिताःसाश्रुनयनायुवराजमथाब्रुवन् ८ किमर्थंतवशोकोत्रवयंतेप्राणरक्षकाः ॥ भवामोनिवसामोत्रगुहायांभयवर्जिताः ६ सर्वसौभाग्यसहितंपुरंदेवपुरोपमम्॥ शनैःपरस्परंवाक्यंवदतांमारुतात्मजः १० श्रुत्वांगदंसमालिंग्यप्रोवाचनयको विदः ॥ विचार्यतेकिमर्थंतेदुर्विचारोनयुज्यते ११ राज्ञोऽत्यंतप्रियस्त्वंहिता रापुत्रोतिवल्लभः ॥ रामस्यलक्ष्मणात्प्रीतिस्त्वयिनित्यंप्रवर्द्धते १२ अतोनराघ वाद्भीतिस्तवराज्ञोविशेषतः ॥ अहंतवहितेसक्तोवत्सनान्यंविचारय १३ ॥

(चअत्रयेनकेन अपिमृत्युनाजीवितंत्यक्ष्यामि इतिअश्रुनयनं वानरपुंगवाःकेचित् दृष्ट्वा) पुनः इहां जिस किसी उपाय निश्चय मृत्यु करिकै प्राणत्याग करोंगो इत्यादि कहत आंशुभरे नेत्र अंगदको उत्तम वानर किसीने देखा ७ (व्यथिताःसआश्रुनयनाअथयुवराजंअब्रुवन्) अंगदके दुखते व्यथित सहित आंशु नेत्रकरि अब अंगदप्रति वानरबोले ८ (वयंतेप्राणरक्षकाःअत्रकिंअर्थंतवशोकः भयवर्जि ताः अत्रगुहायांभवामःनिवसामः) वानरबोले हे युवराज हम सब तुम्हारे प्राणोंके रक्षकहैं तो इहां किसहेत तुम दुःखमानेहो सब की भय रहित इहां गुहाविषे तुम सहित हमलोग वासकरैंगे ९ (सर्व सौभाग्यसहितं देवपुरोपमंपुरंपरस्परंशनैःवाक्यंवदतां) सब ऐश्वर्य सहित देव पुरकी उपमादेवे योग्य जो गुहाके भीतरपुर है तहां वासकरेंगे इत्यादि आपुसमें धीरेधीरे वार्ता करतेरहैं ताहि १० (नयकोविदःमारुतात्मज.श्रुत्वाअंगदंसमालिंग्यप्रोवाचदुर्विचारःतेयुज्यतेनकिंअर्थंविचार्यते) नीतिशा स्त्रमें विद्वान्पवनपुत्र हनूमान् सांगदवानरोंकी वार्तोंको सुनि विचारे कि रामकाज तौ वीचहीं रहा जो यही विचार ठीकभया तौ अंगद सुग्रीव ते विरोधखड़ा है जायगो ताते याको शीघ्रहीमिटाय देना चाहिये यह विचारि अंगदकोहृदय में लगाय कै बोले हेअंगद यह दुष्ट विचार तुम्हारी योग्य नहीं है तौ किस हेत ऐसा विचार करतेहो ११(त्वंहिराज्ञः अत्यंतप्रियः तारापुत्रः अतिवल्लभः रामस्यलक्ष्म णात्त्वयिप्रीतिः नित्यंप्रवर्द्धते) हे अंगद तुम निश्चय करि राजाको अत्यन्त प्रियहौ क्योंकि रुमाते अधिक प्रियतारा तिनके पुत्रहौ ताते अत्यन्त प्रियहौ अरु रघुनन्दनके लक्ष्मणते अधिक तुम विषे प्रीति नित्यहीं बढ़ती जाती है १२ (अतःतवनराघवात्भीतिःविशेषतः राज्ञः वत्सअहंतवहितेसक्तःअ न्यंनविचारय) इस कारण तुम को न रघुनाथजीते भयहै अरु ताराके पुत्रहौ ताते विशेषि करिकै राजाते नहीं भयहै हे वत्सहम तुम्हारे हितकरनेमें समर्थ हैं आव सीता शोधलावेंगे ताते रामकाज की सेवाय और न विचारकरो १३ ॥

गुहावासश्चनिर्भेद्यइत्युक्तंवानरैस्तुयत् ॥ तदेतद्रामबाणानामभेद्यंकिंजगत्त्र ये १४ येत्वांदुर्बोधयंत्येतेवानरावानरर्षभ ॥ पुत्रदारादिकंत्यक्त्वाकथंस्थास्यंति

लेत्वया १५ अन्यद्गुह्यतमंवक्ष्येरहस्यंशृणुमेसुत ॥ रामोनमानुषोदेवःसाक्षान्नारायणोऽव्ययः १६ सीताभगवतीमायाजनसंमोहकारिणी ॥ लक्ष्मणोभुवनाधारःसाक्षाच्छेषःफणीश्वरः १७ ब्रह्मणाप्रार्थिताःसर्वेरक्षोगणविनाशने ॥ मायामानुषभावेनजातालोकैकरक्षकाः १८ वयंचपार्षदाःसर्वेविष्णोर्वैकुंठवासिनः ॥ मनुष्यभावमापन्नेस्वेच्छयापरमात्मनि॥वयंवानररूपेणजातास्तस्यैवमायया १९

(तुयत्गुहावासःचनिर्भेद्यइतिवानरैःउक्तंतत्एतत्रामबाणानां अभेद्यजगत्त्रयंकिं) पुनः हेअंगद गुहामें बास अभेद्य भाव वामें किसी कीगति नहीं है ऐसा बानरों ने कहाहै सो यह मिथ्याहै क्योंकि रघुनाथ जीके बाणोंको अभेद्य तीनिहूं लोकमें क्याहै कौनस्थान बाणनहीं भेदिसक्ते हैं १४ (वानरर्षभएतेवानराःयेत्वांदुर्बोधयंतितेपुत्रदारादिकंत्यक्त्वात्वयाकथंस्थास्यंति) बानरों में श्रेष्ठ हे अंगद ये बानर यह तुमको सलाह देते हैं कि हम तुम्हारे प्राणके रक्षकहैं इहांतुम्हारे साथै रहेंगे सोभीमिथ्या है क्योंकि ते बानर घरमें पुत्रस्त्री त्यागि तुम्हारे साथ कैसे रहेंगे १५ (सुतअन्यत्गुह्यतमंरहस्यंमेवक्ष्येशृणुरामःमानुषःनअव्ययःसाक्षात्नारायणःदेवः) हे पुत्र और कछु परमगुप्त रहस्य मैं कहताहौं सुनु रघुनाथ जी मनुष्य नहीं हैं किंतु नाशरहित साक्षात् नारायण देवहैं १६ (जनसंमोहकारिणी भगवतीमायासीता भुवनाधारःफणीश्वरः साक्षात्शेषःलक्ष्मणः) जनलोक मनुष्यों को मोहवश करन हारी भगवत् की माया सीता हैं अरु भुवनहै आधारजाके सर्पोंके स्वामी साक्षात् शेष लक्ष्मण हैं १७ (रक्षोगणविनाशने ब्रह्मणाप्रार्थिताः लोकैकरक्षकाःमायामानुषभावेनसर्वेजाता) रावणादि राक्षसगणों को नाश करने हेत ब्रह्मा करि कै प्रार्थना किये गये जो सब लोकों के रक्षा करन हारे एक भगवान्हैं सोई माया मय मनुष्य भाव करिकै सब अवतीर्णभये १८ (चवयंसर्वेवैकुंठवासिनः विष्णोःपार्षदाः परमात्मनि स्वइच्छयामनुष्यभावं आपन्नेतस्यएवमायया वयंवानररूपेणजाताः) पुनः हम सब बैकुंठवासी विष्णु के पार्षद हैं तहां परमात्मा अपनी इच्छा करिकै मनुष्य भाव को प्राप्त होत संते तिनकी निश्चयकरि मायाकरिकै हमें सब पार्षद वानर रूप करिकै उत्पन्नभये भाव जब स्वामी मनुष्य भये तब सेवक बानर भये १९ ॥

वयंतुतपसापूर्वंआराध्यजगतांपतिं ॥ तेनैवानुग्रहीतास्मःपार्षदत्वमुपागतः २० इदानीमपितस्यैवसेवांकृत्वाविमायया ॥ पुनर्वैकुंठमासाद्यसुखंस्थास्यामहेवयम् २१ इत्यंगदमथाश्वास्यगताविंध्यंमहाचलम् २२ विचिन्वंतोथशनकैर्जानकीं दक्षिणांबुधेः ॥ तीरंमहेंद्राख्यगिरेःपवित्रंपादमाययुः २३ दृष्ट्वासमुद्रंदुःपारमगाधंभयवर्द्धनम् ॥ वानराभयसंत्रस्ताःकिंकुर्मइतिवादिनः २४ निषेदुरुदधेस्तीरेसर्वेचिंतासमन्विताः ॥ मंत्रयामासुरन्योन्यमंगदाद्यामहाबलाः २५ अमतामेवनोमासोगतोत्रैवगुहांतरे ॥ नदृष्टोरावणोवाद्यसीतावाजनकात्मजा २६ ॥

(तुपूर्वंवयंतपसा जगतांपतिंआराध्य तेन एवअनुग्रहीतास्मः पार्षदत्वंउपागतः) पुनः पूर्वकालमें हमलोग तपस्या करिकै परमात्माको आराधन किया तिनकी अनुग्रह सदा एकरस दया करिकै हम लोग पार्षद पदको प्राप्तभये २० (इदानींअपिविमायया तस्यएवसेवांकृत्वा पुनःवयंवैकुंठं आसाद्यसुखं स्थास्यामहे) अबहूँ निश्चय करि छल छांड़ि तिन रघुनाथ जी की सेवा करते हैं ताहीते पुनः हम

लोग वैकुंठमें प्राप्त ह्वैके सुखपूर्वक वास करैंगे २१ (इति अंगदं आश्वास्य अथमहाचलंविध्यंगताः) इसप्रकार हनूमान् अंगद को समुझायके अवमहान् पर्वत विंध्याचल को सबगये २२ (अथजानकीं विचिन्वंतः शनकैःदक्षिणाम्बुधेः तीरंमहेंद्राख्यगिरेः पादंपवित्रंआययुः) अवजानकीजीको ढूंढते हुये धीरा धीरा दक्षिण दिशिमें जो समुद्रहै ताके तीर महेंद्र नामे जो पर्वत है ताके समीप एक छोटा पहार पवित्र भाव तीर्थसंज्ञक तहां सव जातेभये २३ (दुःपारंअगाधंभयवर्द्धनंसमुद्रंदृष्ट्वाभयसंत्रस्ताः वानराः किंकुर्म इतिवादिनः) दुःखों करिपारजावे योग्य नहीं अरु अथाह समूह तरंगन की वेग करि कै भय वढ़ाव ने वाला ऐसे समुद्र को देखि भय पीड़ित ह्वै वानर वोले कि यासमय में हमलोगों को क्या करना चाहिये ऐसी वार्ता करते हैं २४ (उदधेः तीरे चिंता समन्विताः सर्वेनिषेदुः अंगदाद्यामहावलाः अन्योन्यंमंत्रयामासुः) समुद्रके तीर चिंतायुक्त सववानर विषाद करते भये अंगद आदि महावली आपुसमें सल्लाह करतेहुये २५ (गुहांतरेभ्रमतां एवनःमासःगतः अत्रएवअद्यनरावणः वानजनकात्मजासीतादृष्टा) गुहाके भीतर भ्रमते फिरतेहुये निश्चयकरि हम लोगोंको महीनावीतिगया इहांभीआये अवतकनरावणमिला अथवानजनकनंदिनीसीताकोदेखा२६ ॥

सुग्रीवस्तीक्ष्णदंडोस्मान्निहंत्येवनसंशयः॥ सुग्रीववधतोस्माकंश्रेयःप्रायोपवेशनम् २७ इतिनिश्चित्यतत्रैवदर्भानास्तीर्यसर्वतः॥ उपाविवेशुस्तेसर्वेमरणेकृतनिश्चयाः २८ एतस्मिन्नंतरेतत्रमहेंद्राद्रिगुहांतरात् ॥ निर्गत्यशनकैरागाद्गृध्रः पर्वतसन्निभः २९ दृष्ट्वाप्रायोपवेशेनस्थितान्वानरपुंगवान् ॥ उवाचशनकैर्गृध्रः प्राप्तोभक्षोद्यमेवहुः ३० एकैकशःक्रमात्सर्वान्भक्षयामिदिनेदिने ॥ श्रुत्वातद्गृध्रवचनंवानराःभीतमानसाः ३१ भक्षयिष्यतिनःसर्वानसौगृध्रोनसंशयः ॥ रामकार्य्यंचनास्माभिःकृतंकिंचिद्धरीश्वराः ३२ सुग्रीवस्यापिचहितंनकृतंस्वात्मनामपि ॥ वृथातेनवधंप्राप्तागच्छामोयमसादनम् ॥ ३३ ॥

(तीक्ष्णदंडः सुग्रीवः अस्मान्एवनिहंतिसंशयः न सुग्रीववधतः प्रायउपवेशनम्अस्माकंश्रेयः) तीक्ष्णहै दंडजाको ऐसा सुग्रीव हमलोगनको निश्चयकरि मारिडारैगो यामें संशय नहीं है ताते सुग्रीव के वधते वहुत उपास करिकै मरिजाना हमलोगनको कल्याणहै २७ (इतिनिश्चित्यसर्वतः मरणे निश्चयाःकृततत्रएवदर्भान्आस्तीर्यतेसर्वेउपाविवेशुः) इहैं मरणश्रेयहै ऐसा निश्चय करि सव प्रकार मरिजानै निश्चयकरि तहां सिंधुतट कुशोंको विछायते सव वानर वैठतेभये २८ (एतस्मिन्अंतरेसत्र महेंद्रआद्रिगुहाअंतरात्निर्गत्यपर्वतसन्निभःगृध्रःशनकैःआगात्) ताही समयके वीचमें तहां महेंद्र पर्वतके गुहाके भीतरते निसरि पर्वताकार गृध्र धीरा धीरा आवताभया२९ (प्रायोपवेशेनस्थितान् वानरपुंगवान्दृष्ट्वागृध्रःशनकैःउवाचअद्यमेवहुःभक्षःप्राप्तः) मरणेको निश्चयकरिकै वैठेहुये जो वानरोत्तमतिनहिंदेखि गृध्र धीराते वोलताभया कि आजुमोको वहुतसा भोजन प्राप्तभया ३० (एकएकशः दिनेदिनेक्रमात्सर्वान्भक्षयामितत्गृध्रवचनंश्रुत्वावानराभीतमानसाः) एकएक वानर को रोजरोज इसीक्रमते सवनको भक्षण कियाकरौंगो सो गीधको वचन ताको सुनि वानर मनते डरायउठे ३१ (असौगृध्रःनःसर्वान्भक्षयिष्यतिसंशयःनहेहरीश्वराःअस्माभिःकिंचित्रामकार्यंचनकृतं) यह गीधहम सवनको खायलेइगो यामें संशय नहींहै हे वानरौ हमलोगोंने कछुतौ रघुनाथजीको कार्य नहीं किया३२ (चअपिसुग्रीवस्यहितंनकृतंस्वात्मनाअपिअनेनवृथावधंप्राप्ताःयमसादनंगच्छामः)पुनःनिश्च-

यकरि सुग्रीवको हित कछु नहीं किया अरु कछु अपनाभी हितनहीं किया अब इस गृध्र करिकै वधको प्राप्त ह्वै भाव इसके खायलेनेते कुमृत्युह्वै यमधामको जायँगे ३३ ॥

अहोजटायुर्धर्मात्मारामस्यार्थेमृतःसुधीः ॥ मोक्षंप्रापदुरावापंयोगिनामप्यरिंदमः ३४ संपातिस्तुतदावाक्यंश्रुत्वावानरभाषितम् ॥ केवायूयंममभ्रातुःकर्णपीयूषसन्निभम् ३५ जटायुरितिनामाव्यव्याहरंतःपरस्परं ॥ उच्यतांवोभयंमाभून्मत्तःप्लवगसत्तमाः ३६ तमुवाचांगदःश्रीमानुत्थितोगृध्रसन्निधौ ॥ रामोदाशरथिःश्रीमान् लक्ष्मणेनसमन्वितः ३७ सीतयाभार्ययासार्द्धंविचचारमहावने ॥ तस्यसीता हृतासाध्वीरावणेनदुरात्मना ३८ मृगयांनिर्गतेरामेलक्ष्मणेचहृताबलात् ॥ रामरामेतिक्रोशंतीश्रुत्वागृध्रःप्रतापवान् ३९ जटायुर्नामपक्षीन्द्रोयुद्धंकृत्वासुदारुणम् ॥ रावणेनहतोवीरोराघवार्थमहाबलः ४० ॥

(अहोधर्मात्मासुधीःजटायुःरामस्यार्थेमृतःयोगिनांदुरावापंअरिंदमःमोक्षंप्राप) आश्चर्यमय धर्मात्मा सुधीजटायुः रहाजो रामके कार्यहेत मरा जो योगिनको दुःख करि अप्राप्त सो शत्रुको नाशकरनेवाला जटायु मोक्षको प्राप्तभया ३४ (तुतदावानरभाषितंवाक्यंसंपातिःश्रुत्वाकर्णपीयूषसन्निभम्ममभ्रातुः केवायूयं) पुनः तासमयमें वानरोंको कहावचन संपाति सुनिकै बोला कि कानोंको अमृतसम मेरे भाईकी वार्तासुनावनेवालेको तुमसबहौ ३५ (प्लवगसत्तमाजटायुः इतिनामाव्यपरस्परंव्याहरंतःमत्तःवःभयंमाभूत्उच्यतां) हेवानरोत्तमौ जटायुः ऐसानाम पूर्वकहि आपुसमें वार्ताकरतेहौ तौ मोसों तुमलोग भयमतिकरौ भावमोको न डरो अपना हालकहौ तुमकोहौ ३६ (गृध्रसन्निधौउत्थितःश्रीमान्अंगदःतंउवाचदाशरथिःश्रीमान्रामःलक्ष्मणेनसमन्वितः) गीधके समीपजाय श्रीमान् अंगदतिसगीध प्रतिबोलतभये कि राजादशरथके पुत्रबड़े ऐश्वर्यवंतरामचन्द्र लक्ष्मणसहित ३७ (सीतयाभार्ययासार्द्धंमहावनेविचचारतस्यसाध्वीसीतादुरात्मनारावणेनहृता) सीतानामे आपनी भार्या सहित पितु आज्ञाते रामचन्द्र महाबनमें बिचरते हुये तिनकी पतिव्रता सीतासो दुष्टात्मारावणकरिकै हरी गई कौनभांति ३८ (रामेचलक्ष्मणेमृगयांनिर्गतेबलात्हृतारामरामइतिक्रोशंतीप्रतापवान्गृध्रःश्रुत्वा) रामचन्द्रपुनः लक्ष्मण मृगयामें गये संतेबरवशहरिलिया तब रामराम ऐसा पुकारि रोतीहुई सीता सोप्रतापवान्गृध्रने सुना ३९ (जटायुःनामपक्षीन्द्रःमहाबलः राघवार्थेसुदारुणंयुद्धंकृत्वारावणेनवीरः हतः) जटायु नामपक्षिनको राजा महाबली ताने रघुनाथजीके हेत रावण प्रति महा कठिन युद्ध किया तबरावणकरिकै बड़ाबरि जटायुः मारागया ४० ॥

रामेणदग्धोरामस्यसायुज्यमगमत्क्षणात् ॥ रामःसुग्रीवमासाद्यसख्यंकृत्वाग्निसाक्षिकं ४१ सुग्रीवचोदितोहत्वाबालिनंसुदुरासदम् ॥ राज्यंददौवानराणांसुग्रीवायमहाबलः ४२ सुग्रीवःप्रेषयामाससीतायाःपरिमार्गणे ॥ अस्मान्वानरसंघान्वै महासत्वान्महाबलः ४३ मासादर्वाङ्निवर्तध्वंनोचेत्प्राणान्हरामिवः ॥ इत्याज्ञयाभ्रमंतोस्मिन्वनेगह्वरमध्यगाः ४४ गतोमासोनजानीमःसीतांवारावणंचवा ॥ मर्तुंप्रायोपविष्टास्मस्तीरेलवणवारिधेः ४५ यदिजानासिहेपक्षिन्सीतांकथयनः

शुभाम् ॥ अंगदस्यवचःश्रुत्वासंपातिर्हृष्टमानसः ४६ उवाचमत्प्रियोभ्राताजटा
युःप्लवगेश्वरः ॥ बहुवर्षसहस्रांतेभ्रातृवार्ताश्रुतामया ४७ ॥

(रामेणदग्धःक्षणात्रामस्यसायुज्यंअगमत्रामः सुग्रीवंआसाद्यअग्निसाक्षिकम्सख्यंकृत्वा)रामचंद्र ने वाको दग्ध किया क्षणभेरे मे जटायु रामके रूपको प्राप्त भया तव रामचंद्र सुग्रीव के समीपजाय अग्नि को साक्षीदय मित्रता कीन्हें ४१ (सुग्रीवचोदितःमहाबलःरामःदुरासदम्वालिनंहत्वावानरा णांराज्यसुग्रीवायददौ) सुग्रीव की प्रेरणाते महाबली रामचंद्रने अजितवीर वालिकोमारा अरुवानरों की राज्य सुग्रीवके अर्थदेते भये ४२ (महाबलःमहासत्वान्अस्मान्वानरवृंदानवैसीतायाःपरिमार्ग णेसुग्रीवःप्रेषयामास) महाबली महावीर्यवंत हमलोग वानरवृंदतिनहिं निश्चय करिसीता के ढूंढने निमित्त सुग्रीव पठावा है किसआज्ञा ते ४३ (मासात्अर्वाक्निवर्तध्वंनोचेत्वःप्राणान्हरामि इति आज्ञयाभ्रमंतःअस्मिन्वनेगह्वरमध्यगाः) महिनाते पूर्वहीलौटि आयो नाहीं तौ तुमलोगों के प्राण हरिहौं इसआज्ञा करिकै भ्रमते हुये इसवनमें गुहा के मध्य में परे ४४ (मासःगतःसीतांवाचरावणं वानजानीमःलवणवारिधेःतीरेमतुंप्राय उपविष्टास्मः) एकमास वीतिगया अबतक सीताको अथवा रावण को नहीं जानि पाये अबअधीर ह्वै इस लवणसिंधुकेतीर मरनेकी इच्छा कि हे वैठेहैं ४५(हे पक्षिन्शुभाम्सीतांयदिजानासिनःकथयअंगदस्यवचः श्रुत्वाहृष्टमानसःसंपातिःउवाच) हे पक्षिन् मंगलमूर्ति सीता को जो जानतेहोउतौ हमसों कहौ इति अंगद के वचनसुनि प्रसन्नमन सम्पाति बोलतभया ४६ (प्लवगेश्वरजटायुःमत्प्रियःभ्रातावहुसहस्र् अर्षांतेभ्रातृवार्तामयाश्रुता) हे वानरे श्वरजटायुः मेरापरमप्रिय छोटाभाई है सो बहुतहजार वर्षवीते पीछे अपनेभाई की वार्ता तुम ते आजु मैंने सुना ४७ ॥

वाक्सहायंकरिष्येहंभवतांप्लवगेश्वराः ॥ भ्रातुःसलिलदानायनयध्वंमांजलांति
कम् ४८ पश्चात्सर्वंशुभंवक्ष्येभवतांकार्यसिद्धये ॥ तथेतिनिन्युस्तेतीरंसमुद्रस्य
विहंगमम् ४९ सोपितत्सलिलेस्नात्वाभ्रातुर्दत्वाजलांजलिम् ॥ पुनःस्वस्थानमा
साद्यस्थितोनीतोहरीश्वरैः५० संपातिःकथयामासवानरान्परिहर्षयन् ॥ लंकाना
मनगर्यास्तेत्रिकूटगिरिमूर्द्धनि ५१ तत्राशोकवनेसीताराक्षसीभिःसुरक्षिता ॥
समुद्रमध्येसालंकाशतयोजनदूरतः ५२ दृश्यतेमेनसन्देहःसीताचपरिदृश्यते ॥
गृध्रत्वाद्दूरदृष्टिर्मेनात्रसंशयितुंक्षमम् ५३ ॥

(प्लवगेश्वराःभवतांअहंवाक्यसहायं करिष्येभ्रातुःसलिलदानायमांजलांतिकम्नयध्वं)हे वानरोतमौ तुम्हारी में वचन सहाय करिहौं भाव जानकी वतायदेहौं अब भाई को तिलांजलि देने हेत मोको जल के समीप लै चलो ४८ (पश्चात्भवतांकार्यसिद्धयेसर्वं शुभंवक्ष्येतथेतिते विहंगमंसमुद्रस्यती रंनिन्युः) प्रथम तिलांजलिदय तिसपीछे तुम्हारे कार्य की सिद्धीके अर्थ सब मंगलीक बार्ता मैंकहि हौं जैसा कहतेहो तैसाही करेंगे ऐसाकहिते सब वानर उसपक्षी को समुद्र के तीरलवायलय आये ४९ (सःअपितत्सलिलेस्नात्वाभ्रातुःजलांजलिम्दत्वापुनःहरीश्वरैःनीतःस्वस्थानं आसाद्यस्थितः) सो सम्पाति निश्चय करि उससमुद्र के जलमें स्नान करि अपनेभाई को तिलांजलि दिया पुनः वानरों करिकै आनाहुआ सम्पाति अपनेस्थान को प्राप्त ह्वै बैठा ५० (वानरान्परिहर्षयन्संपातिः

कथयामास त्रिकूटगिरिमूर्द्धनिलंकानामनगरीआस्ते) सब वानरोंको हर्षित करत संते सम्पाति सब हाल कहनेलगा हे वानरौ त्रिकूट गिरिपर्वतपर लंकानामे नगरी वसी है ५१ (शतयोजनदूरतःसमुद्रमध्येसा लंकातत्रअशोकवनेसीताराक्षसीभिःसुरक्षिता) इहांते सोयोजन दूरि अर्थात् चारिसौकोश पर समुद्रके वीचमें सो लंकापुरी है तहां एक अशोकवन है तामें सीताहैसो रावण की आज्ञा ते राक्षसिन करिकै रक्षा की जाती है भाव उनहीं रखावती हैं ५२ (मेहश्यतेसन्देहःनचसीतापरिदृश्यते गृध्रत्वात्मेदूरदृष्टिःअत्रसंशयितुंनक्षमम्) लंका अशोक वनादि सब मैं देखताहों यामें सन्देहनहीं है पुनः सीताको भी देखता हैं क्योंकि गीधतन होनेते मैं दूरदृष्टहों वहुत दूरतक देखता हौं यामें संशय करनेको तुमनहीं समर्थहौ भाव सत्यहीमानौ ५३ ॥

शतयोजनविस्तीर्णंसमुद्रंयस्तुलंघयेत् ॥ सएवजानकींदृष्ट्वापुनरायास्यतिध्रुवम् ५४ अहमेवदुरात्मानंरावणंहन्तुमुत्सहे ॥ भ्रातृहंतारमेकाकीकिंतुपक्षविवर्जितः ५५ यतध्वमितियत्नेनलंघितुंसरितांपतिम् ॥ ततोहंतारघुश्रेष्ठोरावणंराक्षसाधिपम् ५६ उलंघ्यसिंधुंशतयोजनायतंलंकांप्रविश्याथविदेहकन्यकाम् ॥ दृष्ट्वासमाभाष्यचवारिधिंपुनस्तर्तुंसमर्थःकतमोविचार्यताम् ५७ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसम्वादेकिष्किंधाकाण्डेसप्तमःसर्गः ७ ॥

(तुशतयोजनविस्तीर्णंसमुद्रंयःलंघयेत् सएवजानकींदृष्ट्वापुनःध्रुवंआयास्याति) पुनः सौयोजन चारिसौकोश विस्तार जो समुद्र ताहिजो नांघै सोलंकामें निश्चयजाय जानकीको देखि पुनःनिश्चय करि सोई लौटि आवैगो ५४ (एकाकीभ्रातृहंतारंदुरात्मानंरावणंहंतुं अहमेवउत्सहेकिंतुपक्षविवर्जितः) अकेले मेरे भाई को मारनेवाला दुष्टात्मा रावणको बधकरने हेत मेरे अतष्करण में निश्चय करि उत्साह होती है परंतु क्याकरों पंखरहितहौं ताते किसी कामको नहींहौं ५५ (सरितांपतिंयत्नेनलंघितुंइतियतध्वंततःराक्षसाधिपम्रावणंहंतारघुश्रेष्ठः) नादिन को पति जो समुद्र है ताहि यत्नपूर्वक नांघिजाउ ऐसी उपाय करौ तदनंतर राक्षसों को राजा जो रावण ताको तौ नाशकरनहारे रघुनाथ जी हैं भाव तुम जानकी जीकी खबरिलैजाउ तब रघुनाथ जी रावण को वंशसहितमारेंगे५६ (शतयोजनायतंसिंधुंउल्लंघ्यलंकांप्रविश्यअथविदेहकन्यकाम्दृष्ट्वाचसंआभाष्यपुनःवारिधिंतर्तुंसमर्थः कतमःविचार्यताम्) संपाति कहत कि हे वानरौजो सौयोजनअर्थात् चारिसै कोशको विस्तार जोसमुद्र ताको नांघि के लंका में पैठि अरुविदेहकी पुत्रीको देखै पुनःउन प्रतिवार्ता लाप करिपुनः समुद्रनांघि आवने को समर्थहोइ ऐसा तुमलोगोंमें कौनवानरसमर्थहै यहविचार तुमसवकोकरना चाहिये ५७॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतवैजनाथ
विरचितेअध्यात्मभूषणेकिष्किंधाकाण्डेसप्तमःप्रकाशः ७ ॥

अथतेकौतुकाविष्टाःसंपातिंसर्ववानराः ॥ पप्रच्छुर्भगवन्ब्रूहिस्वमुदंतंत्वमादितः १ संपातिःकथयामासस्ववृत्तांतंपुराकृतम् ॥ अहंपुराजटायुश्चभ्रातरौरूढयौवनौ २ वलेन दर्पितावावांवलजिज्ञासयाखगौ ॥ सूर्यमण्डलपर्यंतं गंतुमुत्पतितौ

मदात्३ बहुयोजनसाहस्रंगतोतत्रप्रतापितः ॥ जटायुस्तंपरित्रातुंपक्षैराच्छाद्यमो हतः ४ स्थितोऽहंरश्मिभिर्दग्धपक्षोऽस्मिन्विंध्यमूर्द्धनि ॥ पतितोदूरपतनान्मूर्च्छितोऽहंकपीश्वराः ५ दिनत्रयात्पुनःप्राणसहितोदग्धपक्षकः ॥ देशंवागिरिकूटान्वानजानेभ्रांतमानसः ६ ॥

सवैया ॥ उड़िसानुजपक्षजरेरबिसोंदुखमेंमुनिचंदसुज्ञानदिया । इतआवहिंरामप्रियार्थकपीशिविलोकिसुखीतुबतायसिया ॥ ममपक्षजमेंतकिधीरधरौइतिगीधभलीबिधिबोधकिया । कपिवृंदबलीतजिकादरतासबकाजकरौप्रभुराखिहिया ॥ (अथकौतुकाविष्टाः तेसर्वेवानराःसंपातिंपप्रच्छुः भगवन् स्वंउदंतंत्वंआदितःब्रूहि) अब बड़े आश्चर्यवशते सबबानर संपाति प्रति पूछतेभये हे भगवन् अपना सब हाल आपआदिहीते कहिये भाव किस कारण ते आपकी यह दशा भई १ (पुराकृतंस्ववृत्तांतंसंपातिःकथयामासअहंचजटायुः भ्रातरौपुरारूढयौवनौ) पूर्व को किया हुआ अपना सब वृत्तांत ताको संपाति कहता भया हे बानरो हमपुनः जटायुः दोऊ भाई हैं पूर्वकाल में जब युवाअवस्था को प्राप्तरहे २ (बलेनदर्पितौबलजिज्ञासयाआवांखगौमदात्उत्पतितौसूर्यमंडलपर्यंतंगंतुं) बलकरि के अभिमानी बलके जिज्ञासाकरिकै भाव देखैं किसके अधिक बलहै यह कहि हमदोऊ पक्षी इसमद ते उडे कि सूर्यमंडल पर्यंत चले जायँ ३ (बहुयोजनसाहस्रंगतःतत्रजटायुःप्रतापितः तंपरित्रातुंमोहतःपक्षैःआच्छाद्य) बहुत हजारयोजन ऊपर को उड़िगये तहां जटायुः तप्तभया देखि ताहि रक्षाहेत मोहते मैं पक्षोंकरिकै वाको ढांकिकै ४ (अहंस्थितःरश्मिभिःपक्षःदग्धअस्मिन्विंध्यमूर्द्धनिपतितःहे कपीश्वराः दूरपतनात्अहंमूर्च्छितः) पक्षढाँकि स्थितभयों सूर्य किरिणिनकरिकै पक्षभस्म ह्वैगये इसी बिंध्याचलपर गिरिपरेउँ हेवानरौ दूरते गिरेते मैं मूर्च्छित ह्वैगयों ५ (दिनत्रयात्पुनःप्राणसहितःदग्धपक्षकः भ्रांतमानसःदेशंवागिरिकूटान्वानजाने) तीनिदिनबादिपुनःप्राणसहितभयों परंतु पक्षजरे ते भ्रमयुतमन ताते किसदेश में हौं वा किस पर्वतके शिखरपरहौं इत्यादि कछु न जानेउँ ६ ॥

शनैरुन्मील्यनयनेदृष्ट्वातत्राश्रमंशुभम् ॥ शनैःशनैराश्रमस्यसमीपंगतवानहम् ७ चंद्रमानाममुनिराट्दृष्ट्वामांविस्मितोऽवदत् ॥ संपातेकिमिदंतेद्यविरूपंकेनवाकृतम् ८ जानामित्वामहंपूर्वमत्यंतंबलवानसि ॥ दग्धौकिमर्थंतेपक्षौकथ्यतांयदिमन्यसे ९ ततःस्वचेष्टितंसर्वंकथयित्वातिदुःखितः ॥ अब्रुवंमुनिशार्दूलंदह्येऽहंदाववह्निना १० कथंधारयितुंशक्तोविपक्षंजीवितंप्रभो ॥ इत्युक्तोथमुनिर्वीक्ष्यमांदयार्द्रविलोचनः ११ शृणुवत्सवचोमेऽद्यश्रुत्वाकुरुयथेप्सितम् ॥ देहमूलमिदंदुःखं देहःकर्मसमुद्भवः १२ ॥ कर्मप्रवर्ततेदेहेऽहंबुद्ध्यापुरुषस्यहि ॥ अहंकारस्त्वनादिःस्यादविद्यासंभवोजडः १३ ॥

(शनैःनयने उन्मील्यतत्रशुभम् आश्रमंदृष्ट्वाशनैःशनैः अहंआश्रमस्य समीपंगतवान्) धीरे धीरे नेत्र खोलि निगाह किया तहां एक मंगलीक आश्रम देखा तब धीरे धीरे चलता हुआ मैं आश्रम के समीपजाय प्राप्तभया ७ (चंद्रमानाममुनिराट्मांदृष्ट्वाविस्मितःअवदत्संपाते अद्यतेइदंकिंवाकेनाविरूपंकृतम्) उस आश्रम में चंद्रमा नामे मुनिराज मोंको देखि बड़े आश्चर्य युत बोले कि हेसंपाते आजु तू ऐसा क्यों भया अथवा तोको किसने बिरूप किया ८ (अहंत्वांजानामि पूर्वंअत्यंतं बलवान्

असितेपक्षौर्किंअर्थंदग्धौ यदिसन्यसेकथ्यतां) मैं तोको जानता हौं पूर्व तुम बड़े बलवान् रहे अब तेरे दोऊ पक्ष किस हेत जरि गये इति हाल जो मन भावै तौ कहिये ९ (ततःअतिदुःखितः स्वचेष्टितं सर्वंकथयित्वा मुनिशार्दूलंअब्रुवन् दाववह्निना अहंदह्ये) तब अत्यंत दुःखित ह्वै अपना किया कर्म सब कहि कै पुनः मुनिराज प्रति बोल्यों हेनाथ दावानल सम मैं अन्तर तप्त ह्वै रहा हौं १० (प्रभो विपक्षंजीवितंधारयितुंकथंशक्तः इतिउक्तः मुनिःदयार्द्रविलोचनः मांवीक्ष्य) हे प्रभो विनापक्षन मैं जीवन राखने को कैसे समर्थ ह्वै सक्ता हौं कैसे जीहौं ऐसा कहेउँ तब मुनि दया वश आंशु भरे नेत्र मोंको देखि बोले ११ (वत्सअद्यमेवचः शृणुश्रुत्वायथा इप्सितंकुरु कर्मसमुद्भवः देहःइदंदेहदुःखंमूलं) हेवत्स अब मेरा वचन सुनु सुनिकै जैसी इच्छा होय सो करु कर्मन करिकै उत्पन्न भई जो देह ताते यही देह दुःख की मूल है १२ (पुरुषस्याहिअहंबुद्ध्या कर्मप्रवर्तते तु अहंकारःअविद्यासंभवः जड़ःअनादिःस्यात्) पुरुष के निश्चयअहंकार बुद्धि करिकै कर्म उत्पन्न होते हैं पुनः अहंकार अविद्या करि कै उत्पन्न भया ताते जड है अनादि कालते है १३ ॥

> चिच्छाययासदायुक्तस्तप्तायःपिण्डवत्सदा ॥ तेनदेहस्यतादात्म्याद्देहश्चेतनवान्भवेत् १४ देहोऽहमितिबुद्धिःस्यादात्मनोऽहंकृतेर्बलात् ॥ तन्मूलएषसंसारः सुखदुःखादिसाधकः १५ आत्मनोनिर्विकारस्यमिथ्यातादात्म्यतःसदा ॥ देहोऽहं कर्मकर्ताहमितिसंकल्प्यसर्वदा १६ जीवःकरोतिकर्माणितत्फलैर्बध्यतेवशः ॥ ऊर्ध्वाधोभ्रमतेनित्यंपापपुण्यात्मकःस्वयम् १७ कृतंमयाधिकंपुण्यंयज्ञदानादिनिश्चितम् ॥ स्वर्गंगत्वासुखंभोक्ष्येइतिसंकल्पवान्भवेत् १८ ॥

(तप्तअयःपिंडवत्सदाचित् छाययासदायुक्तः तेनदेहस्यतादात्म्यात्देहः चेतनवान्भवेत्) अग्नि में तपाये हुये लोह पिंड की नाईं सदा चैतन्य की छाया करि कै सदा युक्त अहंकार तेहिकरिकै देह की तादात्म्यते अर्थात् कि चैतन्ययुत अहंकार देह में मिलानभये ते देहभी चैतन्य युक्त भई १४ (अहंकृतेबलात्अहंदेहः आत्मनः इति बुद्धिःस्यात्ततत्मूलसंसारः सुखदुःखादिसाधकः) अहंकार के सब लता ते चैतन्यता तौ लोप भई अपना को मानि लिया कि मैं देह हौं आत्मा में ऐसी बुद्धि भई सोई है मूल जाकी ऐसा जो संसार सोई सुख दुःखादि को उपजावने वाला है १५ (निर्विकारस्यआत्मनः मिथ्यातादात्म्यतः सदाअहंदेहः अहंकर्ता इतिसंकल्प्यसर्वदा) निर्विकार आत्मा को भी झूठे अहंकार संबंध ते सदा यही माने है कि मैं देह भावहम ब्राह्मण हैं हम क्षत्री हैं हमवैश्यहैं इति सत्य माने है पुनः मैं कर्ता हौं अर्थात् शुभाशुभकर्म करने वाला मैं हौं इत्यादि संकल्प सदाबनी रहतीहै १६ (जीवःकर्माणिकरोति तत्फलैःअवशबध्यते पापपुण्यात्मकः स्वयंऊर्ध्वअधोनित्यंभ्रमते) जीव शुभाशुभ कर्म करता है सोई फलों करि कै अवश उसी में बँधा हुआ पापात्मा पुण्यात्मा बनि आपही ऊँची नीची गति में नित्यहीं भ्रमता है अर्थात् पुण्य करि पुण्यात्मा बनि स्वर्ग को जाता है पाप करि पापात्मा ह्वै नरक को जाता है फल भोगि भये दूनहू ठौरते आय पुनः जन्म लेता है इत्यादि सदा भ्रमता है १७ (मयायज्ञदानादि पुण्यंअधिकंकृतंनिश्चितम् स्वर्गंगत्वासुखंभोक्ष्ये इतिसंकल्पवान्भवेत्) मैंने यज्ञ तप तीर्थ व्रत पूजा जप परोपकार दानादि पुण्य कर्म अधिक कियाहै ताते निश्चय करि स्वर्ग को जाऊँगो उहां सुख भोग करौंगो ऐसा संकल्प करने वाला जीव होता भया १८॥

तथैवाध्यासतस्तत्राचिरंभुक्त्वासुखंमहत् ॥ क्षीणपुण्यःपतत्यर्वाक्अनिच्छंकर्मचोदितः १९ पतित्वामण्डलेचेंदोस्ततोनीहारसंयुतः ॥ भूमौपतित्वाव्रीह्यादौतत्रस्थित्वाचिरंपुनः २० भूत्वाचतुर्विधंभोज्यंपुरुषैर्भुज्यतेततः ॥ रेतोभूत्वापुनस्तेनऋतौस्त्रीयोनिसिंचितः २१ योनिरक्तेनसंयुक्तंजरायुपरिवेष्टितम् ॥ दिनेनैकेनकललंभूत्वारूढत्वमाप्नुयात् २२ तत्पुनःपंचरात्रेणबुद्बुदाकारतामियात् ॥ सप्तरात्रेणतदपिमांसपेशित्वमाप्नुयात् २३ पक्षमात्रेणसापेशीरुधिरेणपरिप्लुता ॥ तस्याएवांकुरोत्पत्तिःपंचविंशतिरात्रिषु २४ ॥

(तथाएवअध्यासतःतत्रमहत्सुखंचिरंभुक्त्वाक्षीणपुण्यःकर्मचोदितः अनिच्छंअर्वाक्पतति) जैसा कर्म किये तैसेही निश्चय करि अध्यासते अर्थात् मैं पुण्य किया ताही अभिमान ते अंतर में सुख की बासना है ताते त्यहि स्वर्गमें बड़ाभारी सुख बहुतकाल भोगकिया जब पुण्यक्षीण अर्थात् चुकि गई तब अन्यकर्मन की प्रेरणा ते अनइच्छित विनाइच्छा किहे नीचेको गिरे १९ (चइंदोःमण्डले पतित्वाततःनीहारसंयुतःभूमौपतित्वातत्रव्रीहिआदौ चिरंस्थित्वापुनः) स्वर्गते आयजीव चंद्रमा के मंडलमेंगिरा तदनंतर हिमि सहित भूमिपरगिरा तहां यव गोहूं धानादि अन्नादि में बहुतकाल स्थित रहा पुनः २० (चतुर्विधंभोज्यंभूत्वाततःपुरुषैःभुज्यतेरेतो भूत्वापुनःतेनऋतौ स्त्रीयोनिसिंचितः) अन्न पुनः भक्ष्यभोज्यचोष्यलेह्यादि चारिप्रकारको भोजनभया सो पुरुषोंकरिकै भक्षणकियागया ताकेरसते उदरमें बीर्यभया पुनः त्यहिकरिकै ऋतुसमयमें स्त्रीकी योनि सींचीगई २१ (योनिरक्तेनसंयुक्तंजरायु परिवेष्टितंएकेनदिनेनकललंभूत्वारूढत्वंआप्नुयात्) योनिके रक्त करिकै सहित वीर्य सूक्ष्मजारामेंल पेटाहुआ दोऊ एकदिनमें मिलिकै दृढताको प्राप्तभया २२ (पुनःतत्पंचरात्रेणबुद्बुदाकारतांइयात् तत्अपिसप्तरात्रेणमांसपेशित्वंआप्नुयात्) पुनः सोपांचरातिमें पानीके बुल्लाके आकार उसीकी प्रमाणको होताभया सो निश्चय करिकै सातरातिमें यथामांसको अंडा ताही भावको प्राप्तभया मांसकेसोअंडाह्वैगया २३ (सापेशीपक्षमात्रेणरुधिरेणप्लुतःपंचविंशतिरात्रिषुतस्याःएवअंकुरोत्पत्तिः) सो मांसपिंडपक्षभरे में रुधिरते लपटाहुआ देखिपरा पुनः पचीस दिनमें तामें निश्चय करि सर्वांग के अंकुर उत्पन्न भये २४ ॥

ग्रीवाशिरश्चस्कंधश्चपृष्ठवंशस्तथोदरम् ॥ पंचधांगानिचैकैकंजायतेमासतःक्रमात् २५ पाणिपादौतथापार्श्वःकटिर्जानुस्तथैवच ॥ मासद्वयात्प्रजायंतेक्रमेणैवनचान्यथा २६ त्रिभिर्मासैःप्रजायंतेअंगानांसंधयःक्रमात् ॥ सर्वांगुल्यःप्रजायंतेक्रमान्मासचतुष्टये २७ नाशाकर्णौचनेत्रेचजायंतेपंचमासतः ॥ दन्तपंक्तिर्नखागुह्यंपंचमेजायतेतथा २८ अर्वाक्षण्मासतश्छिद्रंकर्णयोर्भवतिस्फुटम् ॥ पायुर्मेढ्रमुपस्थंचनाभिश्चापिभवेन्नृणाम् २९ सप्तमेमासिरोमाणिशिरःकेशास्तथैवच ॥ विभक्तावयवत्वंचसर्वंसंपद्यतेऽष्टमे ३० ॥

(ग्रीवाशिरःचस्कंधःचपृष्ठवंशःतथाउदरम्एकएकंक्रमात्पंचधाअंगानिचमासतः जायंते) ग्रीवा शीशपुनःस्कंधपुनः पृष्ठरीरचाकटि तैसेही पेट इत्यादि एक एक अग क्रमते अर्थात् प्रथम ग्रीव पुनः शिरपुनःस्कंधपुनःपृष्ठ पुनः उदर इति क्रमते पांचहुअंगपुनः एकमहीनाभरेमें उत्पन्नभये २५ (पाणि

पादौतथापाश्वर्वेःकटिःतथाएवच जानुःक्रमेणएवमासद्वयात्प्रजायंतेचअन्यथान) हाथपायँ पशुरी कटिजानु अर्थात् घोटना येभी पूर्व क्रम निश्चय करि दोमहीनामें उत्पन्न भये पुनः और प्रकारनहीं २६ (अंगानांसंधयःक्रमात्त्रिभिःमासैःप्रजायंतेमासचतुष्टये क्रमात्सर्वांगुल्यः प्रजायंते) सबअंगन के मिलान स्थान क्रमते तीन महीनामें उत्पन्न भये चौथे महीनामें क्रमते सब अँगुरी उत्पन्न भईं २७ (पंचमासतःनासाचकर्णौचनेत्रेजायंतेतथापंचमेदंतपंक्तिःनखाचगुह्यंजायंते) पँचयें महीना तक नासिका पुनः दोऊ श्रवण अरुनेत्र उत्पन्न होते हैं ताही भांति पँचयें महीनामें दांतोंकी पांति अरु हाथ पांयके नख पुनः गुह्य अर्थात् दिशा फिरैकी इन्द्री इत्यादि उत्पन्न भये २८ (षट्मासांतः अर्वाक्नृणाम्कर्णयोःछिद्रंस्फुटम्भवतिपायःचमेढ्रउपस्थंचअपिनाभिःभवेत्) षट्मासतक पूर्वही मनुष्योंके कानोंके छिद्र प्रसिद्धभये तथा लिंगेंद्री पुनः अंडकोश कन्याके योनि पुनः निश्चयकरिकै नाभी इत्यादि सबभये २९ (सप्तमेमासिरोमाणिचतथाएवशिरःकेशःचअष्टमेसर्वेअवयवत्वांविभक्तः संपद्यते) सतयें महीनामें सब देहके रोम पुनः ताही भांति निश्चय करि शिरकेबार भये पुनः अठयें महीनामें देहके सर्वांग न्यारेन्यारे होतेभये ३० ॥

जठरेवर्द्धतेगर्भःस्त्रियाएवंविहंगम॥नवमेमासिचैतन्यंजीवःप्राप्नोतिसर्वशः ३१ नाभिसूत्राल्परंध्रेणमातृभुक्तान्नसारतः॥ वर्द्धतेगर्भगःपिंडोनाम्रियेतस्वकर्मतः ३२ स्मृत्वासर्वाणिजन्मानिपूर्वकर्माणिसर्वशः ॥ जठरानलतप्तोऽयमिदंवचनमब्रवीत् ३३ नानायोनिसहस्रेषुजायमानोऽनुभूतवान् ॥ पुत्रदारादिसंबंधंकोटिशःपशुबांधवान् ३४ कुटुंबभरणाशक्त्यन्यायान्यायेधनार्जनम् ॥ कृतंनाकारवंविष्णुचिन्तांस्वप्नेपिदुर्भगः ३५ इदानींतत्फलंभुंजेगर्भदुःखम्महत्तरम् ॥ अशाश्वतेशाश्वतवद्देहेतृष्णासमन्वितः ३६ ॥

(विहंगमएवंस्त्रियाजठरेगर्भःवर्द्धतेनवमेमासिजीवःसर्वशःचैतन्यंप्राप्नोति) हे विहंगम गीध इसी भांति स्त्रीके उदरमें गर्भ बढ़तसन्ते नवयें महीना में जीव सब इंद्रिनमें चैतन्यताको प्राप्तभया ३१ (मातृभुक्तअन्नसारतःनाभिसूत्रअल्परंध्रेणगर्भगःपिंडःवर्द्धतेस्वकर्मतःनम्रियेत) माताको भोजनकिया अन्न ताको सारांशरससोबालक की नाभीमें जो सूत्र लगाहोता है तामें सूक्ष्म रंध्रहोताहै तिसमेंह्वै वहीरस उदरमेंजाताहै ताके प्रभावते गर्भको पिंडबढ़ताहै अरु अपने कर्मप्रभावते नहीं मरताहै ३२ (पूर्वसर्वाणिजन्मानिसर्वशःकर्माणिस्मृत्वाजठरानलतप्तःअयंइदंवचनंअब्रवीत्) नवेंमास जब चैतन्य भया तब पूर्वके सबजन्मोंकेसबकर्मोंको सुधिकरताभया अरुमाताके जठराग्निमें तप्तवह बालकऐसा वचन बोलताभया ३३ (नानायोनिसहस्रेषुजायमानःपुत्रदारादिपशुबांधवान्कोटिशःसम्बंधंअनुभूतवान्) अनेकप्रकार की योनीहजारों में उत्पन्न भयों तहां तहां पुत्रस्त्री गजवाजिगो आदिपशु बंधुवर्ग इत्यादि कोटिन संबंधभाव जिनमें अपनपौमानेउँ तिन करिकै जो कछु दुःख सुखभया सो सबजानताहौं ३४ (कुटुंबभरणेअशक्त्यन्यायअन्यायेधनस्यअर्जनम्कृतंदुर्भगःविष्णुचिन्तांस्वप्नेअपिनाकारवं) परिवारके पालन में प्रीति किहे धर्मअधर्म विचारहीन धनउपार्जन तौकिया जोदुःखमूलअरु अभागी मैं बिष्णुको स्मरण स्वप्नेमें भी नहींकिया सुखकी मूल ३५(शाश्वतवत्अशाश्वतेदेहेतृष्णासमन्वितः महत्तरम्गर्भदुःखंइदानींतत्फलंभुंजे) नित्यके तुल्यमाने अनित्य देहमेंतृष्णाभाव विषयसुख कीप्यास सहित बड़ाभारी गर्भ बास को दुःख इत्यादि या समय में सोई पूर्व कर्मनको फलभोगता हौं ३६ ॥

अकार्य्याण्येवकृतवान्नकृतंहितमात्मनः ॥ इत्येवंबहुधादुःखमनुभूयस्वकर्मतः३७ कदानिष्क्रमणंमेस्याद्गर्भान्निरयसन्निभात् ॥ इतऊर्ध्वंनित्यमहंविष्णुमेवानुपूजये३८इत्यादिचिंतयन्जीवोयोनियंत्रप्रपीड़ितः ॥ जायमानोऽतिदुःखेननरकात्पातकीयथा ३९ पूतिव्रणान्निपतितःकृमिरेषइवापरः ॥ ततोबाल्यादिदुःखानिसर्वेएवंविभुंजते ४० त्वयाचैवानुभूतानिसर्वत्रविदितानिच ॥ नवर्णितानिमेगृध्रयौवनादिषुसर्वतः ४१ एवंदेहोऽहमित्यस्मादभ्यासान्निरयादिकम् ॥ गर्भवासादिदुःखानिभवंत्यभिनिवेशतः ४२ ॥

(आत्मनःहितंनकृतअकार्य्याणिएवकृतवान्इतिएवंस्वकर्मतःबहुधादुःखंअनुभूय) जामें अपना हित है हरिभजन सो तौन किया अरुजामें अकाज है देहसुखसाधन तिनहि निश्चय करि किया इत्यादि अपने कर्मन को फल बहुत भांति के दुःख तिनहि समुझि ३७ (निरयसन्निभात्गर्भात् कदामेनिष्क्रमणंस्यात्इतऊर्ध्वंअहंनित्यविष्णुं एकअनुपूजये) नरक के तुल्यइस गर्भवासते कब मेरा निकास होयगो इहिते उपरात अर्थात् इसदुःखसे जब छूटौंतबमैं नित्यहीं विष्णुको पूजनकरौंगो३८ (इत्यादिचिंतयन् योनियंत्रप्रपीड़ितःजीवःअतिदुःखेनजायमानःयथानरकात्पातकी) इसप्रकारचिंतवन करता हुआ जैसे जंतामें तार खैंचाजाताहै तैसे प्रसवपवन प्रेरित योनि यंत्र करिकै पीड़ितजीव अत्यन्त दुःख करिकै उत्पन्न हुआ जैसे नरकते पापी पुरुष कढ़ताहै ३९ (पूतिव्रणात्निपतितःकृमिः इवअपरःएषततःबाल्यादिदुःखानिएवंसर्वेविभुंजते) यथापीब पूर्णव्रणफोड़ाते गिराहुआ कीड़ाताही तुल्ययह नरायह बालक देखाताह तदनन्तर बाल अवस्थामें पराधीनतादि दुःखइसीप्रकार अनेकदुःख सबभांतिभोगताहै४० (गृध्रत्वयाचएवअनुभूतानिचसर्वत्रविदितानियौवनादिषुसर्वतःमेनवर्णितानि) हे गृध्रतुमभीसबबातें निश्चयकरिकै जानतेहो पुनः लोकमें सर्वत्रप्रसिद्धहैं तातेबालअरुयुवा अवस्था में यावत्दुःख होतेहैंते सब में नहीं वर्णन कियासो जानतहीहो४१ (एवंअहंदेहःइतिअस्मात्अभ्यासात् अभिनिवेशतःनिरयादिकम्गर्भवासादिदुःखानिभवन्ति) इसीप्रकारमरता जन्मता जीवमानताहै कि मेंदेह अर्थात् मैं ब्राह्मणहौं मैं क्षत्रीहौं इत्यादि दे हैं सत्यमाने इसी अभ्यास ते अहंकार कि हे कर्म करताहै ताते नरक गर्भवासादि दुःख होते हैं ४२ ॥

तस्माद्देहद्वयादन्यमात्मानंप्रकृतेःपरम् ॥ ज्ञात्वादेहादिममतांत्यक्त्वात्मज्ञानवान्भवेत् ४३ जाग्रदादिविनिर्मुक्तंसत्यज्ञानादिलक्षणं ॥ शुद्धंबुद्धंसदाशांतमात्मानमवधारयेत् ४४ चिदात्मनिपरिज्ञातेनष्टेमोहेऽज्ञसंभवे ॥ देहःपततुप्रारब्धकर्मवेगेनतिष्ठतु ४५ योगियोनहिदुःखंवासुखंवाज्ञानसंभवम् ॥ तस्माद्देहेनसहितोयावत्प्रारब्धसंक्षयः ४६ तावत्तिष्ठसुखेनत्वंधृतकंचुकसर्पवत् ॥ अन्यद्वक्ष्यामितेपक्षिन्शृणुमेपरमंहितम् ४७ त्रेतायुगेदाशरथिर्भूत्वानारायणोऽव्ययः ॥ रावणस्य वधार्थायदंडकान्गमिष्यति ४८ ॥

(तस्मात्देहद्वयात्अन्यंप्रकृतेः परंआत्मानंज्ञात्वादेहादिममतांत्यक्त्वाआत्मज्ञानवान्भवेत्)ताते हे गीध स्थूलसूक्ष्म दोऊ देहोंते भिन्न प्रकृतिजो कारण माया ताते परआत्माको जानि देहादि यावत्

अपन.पौहै ताकी ममता त्यागि आत्मज्ञान युक्त ह्वैकै ४३ (जाग्रत्आदिविनिर्मुक्तं) शब्दस्पर्शरूपरसगंधमनचित्त बुद्धि अहंकार इनकी वशजीव स्थूल देहमें इंद्रीद्वारा व्यवहार करना इति जाग्रत्अवस्था स्वप्नद्वारा सूक्ष्मरूपको व्यवहार स्वप्नअवस्था कारणरूप वशसोइ जानासुषुप्तिअवस्था इत्यादिते न्यारा (सत्यज्ञानादि लक्षणम्) सदा एकरस इति सत्यसदा चैतन्यआनन्द घन इति ज्ञानादि लक्षण युत आत्मस्वरूप (शुद्धबुद्धंसदाशांतं) मायादोष रहित अमलज्ञान सदा शीतल (आत्मानं अवधारयेत्) ऐसे आत्मा को ध्यानकरु ४४ (चित्आत्मनिपरिज्ञाते अज्ञसंभवेमोहेनष्टे आरब्धकर्मवेगेनदेहः पततुवातिष्ठतु) चैतन्य आत्म स्वरूप जाने संते पुनः अज्ञान सो उत्पन्न मोह देह की सत्यता सो नाश भये संते तब प्रारब्ध कर्मन के वेग करिकै देह त्याग होय वा वनीरहै ४५ (ज्ञान संभवम् योगिनः दुःखंवासुखंवानहि) ज्ञान उत्पन्न होने सो योगी को देह त्याग को दुःख वा देह रहे को सुख नहीं होता है (तस्मात्यावत् प्रारब्धसंक्षयः तावत्धृतकंचुकसर्पवत् देहेनसहितःत्वं सुखेनतिष्ठ) ताते हेगीध जब तक तेरे प्रारब्ध कर्म नहीं नाश होते हैं तब तक धारण किये केचुली सर्प की नाई अनिच्छित देह को धारण किये तू भी सुखपूर्वक बास करु (पक्षिन्तेपरमंहितम्मे अन्यत्वक्ष्यामिश्रृण) हे पक्षिन् तेरा परम हितमें और कछु हाल कहता हौं सो सुनु ४६।४७ (त्रेता युगे अव्ययः नारायणः दाशरथिःभूत्वा रावणस्य वधार्थंदंडकान्गमिष्यति) त्रेतायुगमें अविनाशी नारायण आय राजा दशरथ के पुत्र होयँगे सो रावण के बधहेत दंडक वनहि जायँगे ४८ ॥

सीतयाभार्ययासार्द्धंलक्ष्मणेनसमन्वितः ॥ तत्राश्रमेजनकजांभ्रातृभ्यांरहितेवने ४९ रावणःचोरवन्नीत्वालंकायांस्थापयिष्यति ॥ तस्याःसुग्रीवनिर्देशान्द्वानराः परिमार्गणे ५० आगमिष्यंतिजलधेस्तीरंतत्रसमागमः ॥ त्वयातैःकारणवशाद्भविष्यतिनसंशयः ५१ तदासीतास्थितिंतेभ्यःकथयस्वयथार्थतः ॥ तदैवतव पक्षौद्वावुत्पत्स्यतेपुनर्नवौ ५२ संपातिरुवाच ॥ बोधयामाससमांचंद्रनामामुनिकुलेश्वरः ॥ पश्यंतुपक्षौमेजातौनूतनावतिकोमलौ ५३ ॥

(लक्ष्मणेनसमन्वितःसीतयाभार्ययासार्द्धंतत्रवनेआश्रमेभ्रातृभ्यां रहितेजनकजां)छोटेभाईलक्ष्मण संयुक्त सीता नामे अपनी भार्य्या साथ में लैआय पंचवटीमें बास कीन्हें तहांवनमेंआश्रमविषे भाइन करि कै रहित भये संते अर्थात् लक्ष्मण सहित रघुनन्दन मृगया हेत जब वन में दूरि जायँगे तब सूने आश्रम में जो जनकनंदनी रहैगी तिनहिं ४९ (चोरवत्रावणः नीत्वालंकायां स्थापयिष्यति तिन सीता को चोर की नाई रावण हरि लै जाय लंकापुरी विषे स्थापित करै गो ५० (तस्याः परिमार्गणे सुग्रीवनिर्देशात् वानराःजलधेःतीरंआगमिष्यंतितत्रकारणवशात् तैःत्वयासमागमःभविष्यतिसंशयःन) तिस सीता को ढूंढने निमित्त बानरेश सुग्रीव की आज्ञाते बानर समूह समुद्रके तीर को आवहिंगे तहां किसी कारण बशते तिन बानरों करिकै तेरे साथ मिलाप होइगा यामें संशयकरने की बात नहीं है निश्चय मिलान होइगो ५१ (तदातेभ्यःसीतास्थितिं यथार्थतःकथयस्व तदा एव द्वौपक्षौ पुनःनवौउत्पत्स्यते) तासमय में तिन बानरों से सीता के बास करने को स्थान सत्यसत्य कहि दीन्हेसु ता समय में निश्चय करि कै तेरे दोऊ पक्ष अर्थात् उड़ने के पखना फिरि से नवीन जामि आवहिंगे ५२ (चंद्रमानामामुनि कुलेश्वरः मांबोधयामास पश्यंतुमेपक्षौ नूतनौअति कोमलौजातौ) अब तक मुनि के कहेहुये बचन कहतारहा अब संपाति शुद्ध आपने बचन कहत हेवानरौ

चद्रमा नामे मुनि कुल में उत्तम सो मो को ज्ञान उपदेश द्वारा बोध किया अब देखौ मेरे पक्ष दोऊ नवीन अति कोमल जामि आये ५३ ॥

स्वस्तिवोस्तुगमिष्यामिसीताद्रक्ष्यथनिश्चयम् ॥ यत्नंकुरुध्वंदुर्लंघ्यसमुद्रस्यविलंघने ५४ यन्नामस्मृतिमात्रतोऽपरिमितंसंसारवारानिधिंतीर्त्वागच्छतिदुर्जनोऽपिपरमंविष्णोःपदंशाश्वतम्॥तस्यैवस्थितिकारिणस्त्रिजगतांरामस्यभक्ताःप्रियाः यूयंकिंनसमुद्रमात्रतरणेशक्ताःकथंवानराः ५५ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेकिष्किन्धाकाण्डेऽष्टमस्सर्गः ८॥

(वःस्वस्तिअस्तुगमिष्यामिनिश्चयम् सीतांद्रक्ष्यथदुर्लंघ्यसमुद्रस्यविलंघनेयत्नंकुरुध्वं) हेवानरौ तुम्हारा कल्याण होय अब मैं जाताहौं निश्चयकरि तुमसीता को देखौगे परंतु दुर्लंघ्य अर्थात् साधारण किसी के नांघने योग्य नहीं ऐसा जो अगाध अपार समुद्र ताके नांघने की यत्न करौ भाव जो समर्थ होय सो नांघि लंका को जाय ५४ (यत्नामस्मृतिमात्रतःदुर्जनः अपिअपरिमितंसंसारवारानिधिंतीर्त्वाशाश्वतम्विष्णोःपरमंपदंगच्छति) जिनको राम ऐसानाम स्मरणमात्रते दुष्टजनयमनादि भी जाकी प्रमाण नहीं ऐसा अपार संसार समुद्र ताको पार ह्वै जो सनातननित्य एकरस विष्णु को परम पद तहां को जाते हैं (त्रिजगतांस्थितिकारिणःएवतस्यरामस्यप्रियाःभक्ताःयूयंवानराःसमुद्रमात्रतरणेकथंकिंनशक्ताः) जिनके नाममें ऐसा प्रभाव सो तीनिहूं लोकन के उत्पत्ति पालन करन हारेतिन श्री रघुनाथजी के प्रिय भक्त तुम सब वानर ते इसतुच्छ समुद्र मात्रके पारजाने में किस प्रकार कादरता धारण किहेहौ क्यों नहीं समर्थहौ अर्थात् सिंधुपार जाने को समर्थहौ ५५ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमप्रियवल्लभपदशरणागतबैजनाथ
विरचितेअध्यात्मभूषणेकिष्किंधाकांडेऽष्टमःप्रकाशः ८ ॥

गतेविहायसागृध्रराजेवानरपुंगवाः ॥ हर्षेणमहताविष्टाःसीतादर्शनलालसा १ ऊचुःसमुद्रम्पश्यंतोनक्रचक्रभयंकरम् ॥ तरंगादिभिरुन्नद्धमाकाशमिवदुर्ग्रहम् २ परस्परमवोचन्वैकथमेनंतरामहे ॥ उवाचचांगदस्तत्रशृणुध्वंवानरोत्तमाः ३ भवंतोत्यंतबलिनःशूराश्चकृतविक्रमाः ॥ कोवात्रवारिधिंतीर्त्वाराजकार्यंकरिष्यति४एतेषांवानराणांसःप्राणदातानसंशयः॥अतोतिष्ठतुमेशीघ्रंपुरतोयोमहाबलः ५वानराणांचसर्वेषांरामसुग्रीवयोरपि ॥ सएवपालकोभूयान्नात्रकार्यविचारणा६॥

सवैया ॥ गतगीधपयोधिउलंघकऊन कहेवलअंगदथाहलिये । इतजावन आपनिशक्तिकहे फिर आवनमाहिंसँदेहकिये ॥ तुमनायकहौ कहिऋक्षपती पुनिवालजको ललकारिदिये । हनुमानतहींबल भाषिउठेगतसिंधुतटेधरिरामहिये ॥ (विहायसागृध्रराजेगतेवानरपुंगवाः सीतादर्शनलालसामहताहर्षेणाविष्टाः) आकाश मार्गकरिकै गीधराजके चलेगये संतेसब वानरोत्तम सीता के देखनेकी लालसा करिके बडे आनंद करिकै युक्त भये १ (तरंगादिभिःउन्नद्धंआकाशंइव दुर्ग्रहम्नक्रचक्रभयंकरम् समुद्र पश्यंतःऊचुः) तरंगनकरिकै ऊँचायथाआशकिसी को पकरे नहीं मिलता तैसेही पारजाने को दुर्ग-

मनक्रादि जल जंतुजल के भ्रमर इत्यादि भयंकर ऐसा जो समुद्र ताहि देखि वानर बोलते भये २ (परस्परंअवोचन्एनंवैकथम् तरामहेचतत्रअंगदः उवाचवानरोत्तमाःशृणुध्वं) आपुस में सब बानर बोलते भये इस अपार समुद्रको निश्चय करि कौन प्रकार तरैंगे पुनः तहां अंगद बोलतेभये हेवानरो-त्तमौ सुनौ ३ (भवंतःअत्यंतबलिनःचशूराः विक्रमाःकृतअत्रकोवावारिधितीत्वाराजकार्य्यकरिष्यति) तुमसब अत्यंतबलवान्पुनः शूरहौ पराक्रम बहुत कीन्हेउ है अत्रकौन समुद्र पारजायकै राज कार्य करैगो ४ (सःएतेषांवानराणांप्राणदातासंशयःनअतःयःमहाबलःशीघ्रंमेपुरतःउत्तिष्ठतु) जो कार्यकरै सोई इनसब बानरों को प्राणदाता है यामें संशयनहीं है इसते जो महाबलवान्होय सो शीघ्रहीमेरे आगे उठै ५ (सर्वेषांवानराणांवरामसुग्रीवयोः अपिपालकःभूयात् अत्रकार्य विचारणान) सबबानरों को पुनः रघुनंदन सुग्रीव को भी सोई रक्षा करने वाला होयगो यामें कछु बिचार करना नहीं है भाव महायश पावहिगो ६ ॥

इत्युक्तेयुवराजेनतूष्णींवानरसैनिकाः ॥ असन्नोचुःकिंचिदपिपरस्परंविलोकिनः ७ अंगदउवाच ॥ उच्यतांवैबलंसर्वैःप्रत्येकंकार्यसिद्धये ॥ केनवासाध्यतेकार्यं जानीमस्तदनंतरम् ८ अंगदस्यवचःश्रुत्वाप्रोचुर्वीराःबलंपृथक् ॥ योजनानांद शारभ्यदशोत्तरगुणंजगुः ९ शतादर्वाग्जांबवांस्तुप्राहमध्येवनौकसाम्॥पुरात्रिवि क्रमेदेवेपादंभूमाणलक्षणम् १० त्रिसप्तकृत्वोऽहमगांप्रदक्षिणविधानतः ॥ इदा नींवार्द्धकग्रस्तोनशक्नोमिविलंघितुम् ११ अंगदोप्याहमेगंतुंशक्यंपारंमहोद धेः ॥ पुनर्लंघनसामर्थ्यंनजानाम्यस्तिवानवा १२ ॥

(इतियुवराजेनउक्ते वानरसैनिकाःतूष्णीं आसन्परस्पर विलोकिनः किंचित्अपिनऊचुः) ऐसा अंगदने कहा तब बानर सब चुप ह्वै गये आपुसमें एक एकनकी दिशि देखतेहैं कछु भी न बोलते भये ७ (कार्यसिद्धयेप्रत्येकं बलंवैसर्वैउच्यतां तदनंतरम्जानीमः केनवाकार्यंसाध्यते) अंगदबोले कि कार्य सिद्धीके अर्थ अपना अपना बल सबन करिकै कहाजाय तिस पीछे जानिलेयँगे कि कौन करिकै कार्य साधा जायगो ८ (अंगदस्यवचःश्रुत्वा वीराःयोजनानांदशारभ्य दशोत्तरगुणंजगुः पृथक्बलंप्रोचुः) अंगदको बचन सुनि सब बीर दश योजन आदिदै दशको द्विगुण त्रिगुण इसी भांति अधिक गमन अलग अलग सब कहते भये अर्थात् गज दश योजन जानेको अपना बल कहे गवाक्ष बीस शरभ तीस ऋषभ चालिस गंधमादन पचास मैंदसाठि द्विविद सत्तरि सुषेण असी इस क्रमकहे ९ (वनौकसाम्मध्येशतात् अर्वाक्जांबवांस्तुप्राह पुरात्रिविक्रमे देवेभूमाण लक्षणंपाद) बानरोंके बीचमें सौके भीतर अर्थात् नब्बे योजन जानेको जाम्बवंत कहे पुनः कहे पूर्वकाल जब वामन रूपधरे बलि सों मांगि लोक नापनेलगे तब पृथ्वीकी प्रमाण भरि भगवान्को एकपद भयाहै १० (अगांप्रदक्षिण विधानतः अहंत्रिसप्तकृत्वा इदानींवार्द्धग्रस्तः विलंघितुंनशक्नोमि) ता समय में पृथ्वीको प्रदक्षिण विधानते मैं यकिसवार प्रदक्षिण किया तब युवारहा अब वृद्धावस्था ग्रस्तहौं ताते समुद्र पार नांघि जानेको समर्थ नहीं हौं ११ (अंगदःअपिआहमहोदधेः पारंगंतुंशक्यं पुनःलंघनसामर्थ्यं अस्तिवान वानजानामि) अंगदभी बोले कि समुद्रके पारजानेको मेरीसामर्थ्यहै पुनः नांघि आवनेकी सामर्थ्यहै अथवा नहीं है यह मैं नहीं जानता हौं १२ ॥

तमाहजांबवान्वीरस्त्वंराजानोनियामकः ॥ नयुक्तंत्वांनियोक्तुंमेत्वंसमर्थोसियद्यपि १३ अंगदउवाच ॥ एवंचेत्पूर्ववत्सर्वेस्वप्स्यामोदर्भविष्टरे ॥ केनाऽपिनकृतंकार्यंजीवितुंचनशक्यते १४ तामाहजांबवान्वीरोदर्शयिष्यामितेसुत॥येनास्माकंकार्यसिद्धिर्भविष्यत्यचिरेणच १५ इत्युक्त्वाजांबवान्प्राहहनूमंतमवस्थितम् ॥हनूमन्किंरहस्तूष्णींस्थीयतेकार्यगौरवे १६ प्राप्तेऽज्ञेनेवसामर्थ्यंदर्शयाद्यमहाबल॥त्वंसाक्षाद्वायुतनयोवायुतुल्यपराक्रमः १७रामकार्यार्थमेवत्वंजनितोसिमहात्मना ॥ जातमात्रेणतेपूर्वंदृष्ट्वोद्यंतंविभावसुम् १८ ॥

(जांबवान्वीरःतंआहनः नियामकःत्वंराजायद्यपित्वंसमर्थःअसिमेत्वांनियोक्तंनयुक्तं) जाम्बवंत वीर तिन अंगद प्रतिबोले कि हम लोगों पर आज्ञा करनेवाले राजाहौ यद्यपितुम समर्थहौ तथापि हम तुमको अकेले जानेको आज्ञा तौ नहीं देसक्तेहैं १३ (केनअपिकार्यनकृतच जीवितुंनशक्यते एवंचेत् पूर्ववत्दर्भविष्टरे सर्वेस्वप्स्यामः) तब अगद बोले कि जब किसीने भी कार्य न किया तब पुनः जीवेको नहीं समर्थ ह्वै सक्तेहैं जो ऐसाही है तौ पूर्वकीनाई कुश बिछावने पर सब मरणे की निश्चय करि शयन करहिंगे १४ (जांबवान्वीरः तंआहसुतअचिरेणच अस्माकंकार्यसिद्धिः येनभविष्यतितेदर्शयिष्यामि) तब जांबवंतवीर तिन अंगद प्रतिबोले हे पुत्र शीघ्रही हमलोगोंको कार्य सिद्धी जिस करिकै होइगी सो वीरको हम तुमहिं देखावते हैं १५ (इत्युक्त्वाजांबवान् अवस्थितंहनूमंतं प्राहहनूमन् कार्यगौरवे किंतूष्णींरहःस्थीयते) ऐसा अंगद प्रतिकहि जांबवंत बैठेहुये हनूमान् प्रति बोले हे हनूमन् ऐसे बड़ेकार्य समय क्यों चुपह्वै एकांत स्थानमें बैठेहौ भाव सबतौ वार्ता करते हैं अरु तुम क्यों चुपबैठे रहे १६ (साक्षात्वायुतनयः वायुतुल्यपराक्रमः त्वंअज्ञेनएवप्राप्ते महाबलअद्य सामर्थ्यंदर्शय) साक्षात् पवनके पुत्रहौ अरु पवनैके तुल्य तुम्हारे पराक्रमहै सो तुम अज्ञताको प्राप्त भये संते अपना बलभूले हौ ताते हेमहाबल अब अपनी सामर्थ्य दिखाइये भाव सिंधुपार जाय राम कार्य करौ १७ (रामकार्यार्थंमहात्मनात्वं एवजनितोसि जातमात्रेणपूर्वंते विभावसुम्उद्यंतंदृष्ट्वा) रामके कार्य करनेहेत महात्मा पवनने तुमको निश्चय करि उत्पन्न कियाहै अरु उत्पन्न होत मात्रही प्रथम तुम ने सूर्यको उदय होत देखा १८ ॥

पक्कंफलंजिघृक्षामीत्युत्प्लुत्यबालचेष्टया॥योजनानांपंचशतंपतितोसिततोभुवि १९ अतस्त्वद्बलमहात्म्यंकोवाशक्नोतिवर्णितुं ॥उत्तिष्ठकुरुरामस्यकार्यंनःपाहिसुव्रत २० श्रुत्वाजांबवतोवाक्यंहनूमानातिहर्षितः ॥ चकारनादंसिंहस्यब्रह्मांडंस्फोटयन्निव २१ बभूवपर्वताकारस्त्रिविक्रमइवापरः॥लंघयित्वाजलनिधिंकृत्वालंकांचभस्मसात् २२ रावणंसकुलंहत्वाऽनेष्येजनकनंदिनीम्॥ यद्वाबध्वागलेरज्वारावणंवामपाणिना २३ लंकांसपर्वतांधृत्वारामस्याग्रेक्षिपाम्यहम्॥यद्वादृष्ट्वैवयास्यामि जानकींशुभलक्षणां २४ ॥

(अमींपक्वफलंइतिजिघृक्षाबालचेष्टयायोजनानांपंचशतंउत्प्लुतंततःभुविपतितोसि) सूर्य कोदेखि विचारे कि यह पक्का फल है याको भक्षण करैं इति इच्छाकरि बालकेलिकरिकै पाँचसय योजनऊपर

को कूदिगये तदनंतर आयभूमिपै गिरे यह जन्म समयकी बातहै १९ (अतःस्वत्बलमाहात्म्यंवर्णितुं कोवाशक्नोति सुव्रतउत्तिष्ठरामस्य कार्यंकुरु नः पाहि) इसकारण तुम्हारे बलको माहात्म्य वर्णन करिवेको कौन समर्थहै सुंदर शोभायमान ब्रह्मचर्य व्रतहै जाको इति हे सुव्रत उठौ रामको कार्यकरौ अरु हमसब की रक्षाकरौ २० (जाम्बवतःवाक्यं श्रुत्वाअतिहर्षितः हनूमानब्रह्माण्डंस्फोटयन् इवसिंहस्यनादंचकार) जाम्बवंतके कहे सब वचन सुनिकै अत्यंत प्रसन्न होइकै मानों ब्रह्मांडको फोरि डारैंगे ऐसा कठोर सिंहको नाद करते भये भावबल सँभारि बीरताकी उत्साहते गर्जिउठे २१ (अपरः त्रिविक्रमइवपर्वताकारः वभूवजलनिधिं लंघयित्वाच लंकांभस्मसात्कृत्वा) यथा दूसरे त्रिविक्रम अर्थात् भूमिनापत समय वावन जी जैसे बाढि गयेहैं तैसेही हनूमान् जी पर्वताकारह्वै बोले कि समुद्रको नांघिकै पुनः लंका को सम्पूर्ण भस्म करिकै २२ (सकुलंरावणंहत्वा जनकनंदिनीं आनेष्येयद्वारज्वागलेबध्वावामपाणिनारावणं) सहितकुल रावणको मारि जनक नंदिनीको लावों अथवा दुष्टके गरेमें रस्सी बांधि वामहाथे करि रावण को गहि अरु २३ (सपर्वतांलंकांधृत्वारामस्यअग्रेअहं क्षिपामियद्वाशुभ लक्षणाम्जानकीदृष्ट्वाएवयास्यामि) दक्षिण हाथे सहित त्रिकूट पर्वत लंकाको उठाय लय आय रघुनंदन के आगे धरों अथवा मंगली कल क्षण हैं जिनके ऐसी जानकी को देखि निश्चय करि लौटि आवों २४ ॥

श्रुत्वाहनूमतोवाक्यंजाम्बवानिदमब्रवीत् ॥ दृष्ट्वैवागच्छ भद्रंतेजीवंतींजानकींशुभां २५ पश्चाद्रामेणसहितोदर्शयिष्यसिपौरुषम् ॥ कल्याणंभवताद्भद्रगच्छतस्तेविहायसा २६ गच्छंतंरामकार्यार्थंवायुस्त्वामनुगच्छतु ॥ इत्याशीर्भिःसमामंत्र्यविसृष्टःप्लवगाधिपैः २७ महेंद्राद्रिशिरोगत्वाबभूवाद्भुतदर्शनः २८ महानगेंद्रप्रतिमोमहात्मासुवर्णवर्णोऽरुणचारुवक्त्रः ॥ महाफणीन्द्राभसुदीर्घबाहुर्वातात्मजोऽदृश्यतसर्वभूतैः २९ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसम्वादेकिष्किंधाकाण्डेनवमःसर्गः ९ समाप्तः ॥

(हनूमतःवाक्यंश्रुत्वाजांववानइदंअब्रवीत्तेभद्रंजीवंतींशुभाम्जानकीम् दृष्ट्वाएवआगच्छ) हनूमानजीको वचनसुनिकै तब जाम्बवंत ऐसाबोलतभये हेहनूमान् तुम्हाराकल्याणहोय जाउजीवतीहुइ मंगलीक जानकी को देखि लौटि आवो २५ (पश्चात्रामेणसहितःपौरुषम्दर्शयिष्यतिभद्रविहायसागच्छतःतेकल्याणंभवतात्) पीछे लंकामें जाय रघुनंदन करिकै सहित पौरुष देखायो हे कल्याण-रूपआकाश मार्ग करिकै जात समय तुम्हारा कल्याण होय २६ (रामकार्यार्थंगच्छंतंत्वांअनुवायुः गच्छतु इतिआशीःभिःसमामंत्र्यप्लवगाधिपैःविसृष्टः) रामकार्य करने हेत जात समय तुम्हारे पाछे पवन चलै भाव सहायक रहें इत्यादि आशीर्वाद न करिकै मन्त्रित वानरेश करिकै आज्ञाको प्राप्त जो हनूमान् २७ (महेन्द्राद्रिशिरःगत्वाअद्भुतदर्शनःबभूव) महेन्द्रपर्वतके शिखर पर गये तहां अद्भुत दर्शन होते भये भाव ऐसा भारी रूपभये जिनको देखि वानर विस्मितभये २८ (महानगेंद्रप्रतिमः सुवर्णवर्णःचारुअरुणवक्त्रःफणींद्रआभसुदीर्घबाहुः वातात्मजः महात्मासर्वभूतैःअदृश्यत) बड़े भारी पर्वत समदेह सोने के सोवर्ण सुंदर अरुण मुख शेषसम सुढर चिक्कन लंबायमान भुजाऐसे अद्भुत पवन के पुत्र महात्मा हनूमान सो सब भूतो करिकै देखे गये २९ ॥

इतिश्रीवैजनाथविरचितेअध्यात्मभूषणेकिष्किंधाकाण्डेनवमःप्रकाशः ९ समाप्तः ॥

अथ अध्यात्मरामायण सुन्दरकाण्ड सटीक ॥

श्रीमहादेवउवाच ॥ शतयोजनविस्तीर्णंसमुद्रंमकरालयम् ॥ लिलंघयिषुरानंदसंदोहोमारुतात्मज. ॥ ध्यात्वारामंपरात्मानमिदंवचनमब्रवीत् १ पश्यन्तुवानरास्सर्वे गच्छन्तंमांविहायसा ॥ अमोघंरामनिर्मुक्तंमहाबाणमिवाखिला. २ पश्याम्यद्यैवरामस्यपत्नींजनकनंदिनीम् ॥ कृतार्थोऽहंकृतार्थोऽहंपुनःपश्यामिराघवम् ३ प्राणप्रयाणसमयेयस्यनामसकृत्स्मरन् ॥ नरस्तीर्त्वाभवाम्भोधिमपारंयातितत्पदम् ४ किंपुनस्तस्यदूतोऽहंतदांगांगुलिमुद्रिकः ॥ तमेवहृदयेध्यात्वालंघयाम्यल्पवारिधिम् ५ ॥

सवैया ॥ सुरसानन पैठि सुबोध किये श्रम पै मैनाक सुपास दये । जल छांह ग्रस्यो हनि सिंहिकया गत सागर पार प्रमोदछये । लघुरूप धरे पुर पैठतहीं तहँ द्वारहिं लंकिनि रोकिदये । हति मुष्टिक ताहि प्रबोधकरे इति लंकपुरी हनुमानगये ॥ (मकरालयम् समुद्रशतयोजनविस्तीर्णं लिलंघयिषुःआनंद संदोह मारुतात्मजः परमात्मानंरामंध्यात्वा इदंवचनमब्रवीत्) शिव बोलेकिहेगिरिजा मगर आदि जल जंतुन के रहने को स्थान समुद्र सौ योजन विस्तार है जाको ताहि नांघि जाने में आनंद समूह है जाके ऐसे पवन पुत्र परमात्मा रामचन्द्र को ध्यान करि ऐसा वचन बोलते भये १ (रामनिर्मुक्तंअमोघंमहाबाणंइव मांविहायसागच्छंतं अखिलाः वानराः सर्वेपश्यंतु) रघुनन्दन को छाड़ाहुआ अमोघ जोखाली न जाय ऐसे महाबाण की नाईं मोको आकाश मार्गकरिकै जात समय यावत् वानरहैं तेसब देखैं २ (रामस्यपत्नीम् जनकनंदिनीम् अद्यएवपश्यामि पुनःराघवम्पश्यामि अहंकृतार्थः अहंकृतार्थः) रघुनन्दनकी पत्नी जनक पुत्री को आजु निश्चयकरि देखिहौं तिनकीखबरि लाय पुनः रघुनन्दनको देखिहौं ताते मैं धन्यहौं धन्य हौं यह प्रेमकी गलित दशाहै ३ (प्राणप्रयाण समयेनरः यस्यनामसकृत्स्मरन् अपारंभवअंभोधिं तीर्त्वातत्पदंयाति) प्राण जात समय में मनुष्य जिनको राम ऐसा नामहै एक बार स्मरण करिकै अपार भवसागर को तरिकै तिनही प्रभु के परम पद को जाता है ४ (तस्यदूतःअहंतत् अंगअंगुलिमुद्रिकः तंएवहृदयेध्यात्वा अल्पवारिधिम् लंघयामिपुनःकिम्) जिनको नाम भवतारक तिन प्रभु को दूतमैं तिनके अंग अंगुली की मुद्रिका लीन्हें तिन रघुनन्दनको रूप हृदय में ध्यानधरे यह तुच्छ समुद्रनांघौं तौ पुनः यामें क्या कहनाहै ५ ॥

इत्युक्त्वाहनुमान्बाहूप्रसार्य्यायतबालधीः ६ ऋजुग्रीवोर्ध्वदृष्टिःसन्नाकुंचितपद द्वयः॥ दक्षिणाभिमुखस्तूर्णंपुप्लुवेनिलविक्रमः७आकाशात्त्वरितंदेवैर्वीक्ष्यमाणोज गामसः॥ दृष्ट्वाऽनिलसुतंदेवागच्छंतंवायुवेगतः ८ परीक्षणार्थंसत्वस्यवानरस्ये दमब्रुवन्॥ गच्छत्येषमहासत्वोवानरोवायुविक्रमः ९ लंकांप्रवेष्टुंशक्तोवानवाजा नमिहेबलम्॥ एवंविचार्यनागानांमातरंसुरसाभिधाम् १० अब्रवींद्देवतावृन्दः कौतूहलसमन्वितः॥ गच्छत्वंवानरेंद्रस्यकिंचिद्विघ्नंसमाचर ११ ज्ञात्वातस्यबं लंबुद्धिंःपुनरेवत्वरान्विता॥ इत्युक्तासायर्यौशीघ्रंहनुमद्विघ्नकारणात् १२॥

(इतिउक्काहनूमान्आयतबालधीःबाहूप्रसार्य्य) ऐसाकहि हनूमान लम्बी पूंछ अरु दोऊ बाहुन को पसारि ६ (ऋजुग्रीवःऊर्ध्वदृष्टिःसनपदद्वयःआकुंचितअनिल विक्रमःदक्षिणाभिमुखःतूर्णंपुप्लुवे) सीधीग्रीव ऊँचीदृष्टि किहे संते दोऊपांय सिकोरि पवनतुल्य पराक्रम है जिनके ऐसे हनूमान्दक्षिण दिशिको मुखकरि पर्वतपर ते कूदते भये ७ (आकाशात्देवैःवीक्ष्यमाणःसत्वरितंजगामवायुवेगतः गच्छंतंअनिलसुतंदेवादृष्ट्वा) आकाशते देवनकरिकै देखत संतेसोहनूमान् आकाशमें शीघ्रगमन की न्हें पवनसम बेगते जाते हुये पवनपुत्र को देवतालोग देखे ८ (वानरस्यसत्वस्यपरीक्षणार्थंइदंअब्रु वन्एषवानरःमहासत्वःवायुविक्रमःगच्छति) वानर के बलवीर्य की परीक्षा के अर्थ देवता ऐसा बोले कि यह वानर महाबलवन्त पवनतुल्य वेगते जाताहै ९ (लंकांप्रवेष्टुंशक्तःवानवाबलंजानीमिहेएवंवि- चार्यनागानांमातरंसुरसाभिधाम्) हनूमान् को लंका में प्रवेश अर्थात् लंकापुरीके भीतर पैठिपुनः लौटि आवने की शक्तिहै अथवा नहीं है ऐसाविचारि देवता तब नागन की माता सुरसानामे ताहि बुलाय कै १० (कौतूहलसमन्वितःदेवतावृंदःअब्रवीत्त्वंगच्छवानरेंद्रस्यकिंचिद्विघ्नंसमाचर) एक तमाशा देखने कीचाह सहित देवतागण बोलतेभये हे सुरसे तुमजाउ वानरन में श्रेष्ठजो हनूमान् लंका को जाते हैं तिनका कछु विघ्नकरौ भावबल बुद्धिकी परीक्षा लेउ ११ (तस्यबलंबुद्धिंज्ञात्वा त्वरान्वितःपुनःएहिइतिउक्ताहनुमद्विघ्नकारणात्साशीघ्रंययौ) तिनहनूमान् को बलअरु बुद्धिजा नि कै शीघ्रहींपुनः लौटि आयो ऐसा देवतन कहा तब हनुमान्के विघ्नकरने के कारण ते सो सुरसा शीघ्रहीजाती भई १२॥

आवृत्यमार्गंपुरतःस्थित्वावानरमब्रवीत्॥ एहिमेवदनंशीघ्रंप्रविशस्वमहामते १३ देवैस्त्वंकल्पितोभक्षःक्षुधासंपीड़ितात्मनः॥ तामाहहनूमान्मातरहंरामस्यशास नात् १४ गच्छामिजानकींद्रष्टुंपुनरागम्यसत्वरः॥ रामायकुशलंतस्याःकथयित्वा त्वदाननम्॥ निवेक्ष्येदेहिमेमार्गंसुरसायैनमोस्तुते १५ इत्युक्तापुनरेवाहसुरसाक्षुधि तास्म्यहम्॥ प्रविश्यगच्छमेवक्त्रंनोचेत्त्वांभक्षयाम्यहम् १६ इत्युक्तोहनुमानाहमु खंशीघ्रंविदारय १७ प्रविश्यवदनंतेद्यगच्छामित्वरयान्वितः॥ इत्युक्त्वायोजना यामदेहोभूत्वापुरःस्थितः १८ दृष्ट्वाहनूमतोरूपंसुरसापंचयोजनम्॥ मुखंचक्रे हनुमान्द्विगुणंरूपमादधत् १९॥

पवत ९ पवन के

(आवृत्यपुरतःस्थित्वावानरंअब्रवीत्महामतेएहिमेंवदनंशीघ्रंविशस्व) राहको रोंकि आगे

स्थित ह्वै सुरसा हनुमान् प्रति बोलती भई हे महामते इहां आवो मेरेमुख में शीघ्रही प्रवेश करो किस हेत सो कहत १३ (क्षुधासंपीड़ितात्मनःदेवैःत्वंभक्षःकल्पितः हनूमान्तांआहमातःअहंरामस्य शासनात्) मैं भूखकरिकै दुखितहौं ताहेत देवतों करिकै तू भोजनदिया गया है सो सुनि हनूमान् तिस सुरसा प्रति बोले हे मातः मैं रघुनाथजी की आज्ञाते या समय में १४ (जानकींद्रष्टुंगच्छामित स्याःकुशलंरामायकथयित्वापुनःत्वरःआगम्यत्वत्आननंनिवेक्ष्येसुरसायैनमोऽस्तुतेमेमार्गेदेहि) जानकीजीको देखने हेत लंकाको जाता हौं तिनकी कुशल क्षेमकी खबरि रघुनंदन के अर्थ कहिकै पुनः शीघ्रही आय तेरे मुखमें प्रवेश करिहौं सुरसा के अर्थ नमस्कार है मोंको राहदे रोंकुन १५ (इतिउक्ता पुन.सुरसाएवआहअहंक्षुधितास्मिमेवक्त्रंप्रविश्यगच्छनोचेत्त्वांअहंभक्षयामि)मोंको राहदे ऐसाहनूमान् कहा पुनः सुरसा बोली कि मैं भूँखी बहुतहौं मेरेमुख में पैठिकैजाउ नहीं तौ तोको मैं भक्षण करतीहौं १६ (इतिउक्तःहनूमान् आहशीघ्रंमुखं विदारय) ऐसासुरसा कहा तब हनूमान् कहे कि तुम शीघ्रही मुख पसारो १७ (अद्यतेवदनंप्रविश्यंत्वरयान्वितःगच्छामिइतिउक्त्वायोजनआयामदेहः भूत्वापुरःस्थितः) अभीतेरेमुख में पैठि शीघ्रतायुत जाउँगो ऐसा कहि योजनभरि विस्तार देहकरि आगेस्थित भये १८ (हनूमतःरूपंदृष्ट्वासुरसापंचयोजनंमुखंचकारहनूमान् द्विगुणंरूपंआदधत्) हनूमान् को योजनभरि रूप को देखि सुरसा पांच योजन का मुख करतीभई तब हनूमान् वाकोद्विगुण दशयोजनका रूपधारणकीन्हें १९ ॥

ततश्चकारसुरसायोजनानांचविंशतिम् ॥ वक्त्रंचकारहनुमांस्त्रिंशद्योजनसम्मितम् २० ततश्चकारसुरसापंचाशद्योजनायतम् ॥ वक्त्रंतदाहनूमांस्तुवभूवांगुष्ठसन्निभः २१ प्रविश्यवदनंतस्याःपुनरेत्यपुरःस्थितः ॥ प्रविष्टोनिर्गतोऽहंतेवदनंदेवितेनमः ॥ २२ एवंवदंतंदृष्ट्वासाहनूमंतमथाब्रवीत् ॥ गच्छसाधयरामस्यकार्यंबुद्धिमतांवर २३ देवैःसंप्रेषिताऽहंतेबलंजिज्ञासुभिःकपे ॥ दृष्ट्वासीतांपुनर्गत्वा रामंद्रक्ष्यसिगच्छभो २४ इत्युक्त्वासाययौदेवलोकंवायुसुतःपुनः ॥ जगामवायुमार्गेणगरुत्मानिवपक्षिराट् २५ समुद्रोप्याहमैनाकंमणिकांचनपर्वतम् ॥ गच्छत्येषमहासत्वोहनूमान्मारुतात्मजः २६ ॥

(ततःसुरसायोजनानांचविंशतिम्वक्त्रंचकारहनूमांस्त्रिंशत्योजनसम्मितंचकार) तदनन्तर सुरसा योजनबीसको मुखकरती भई तब हनूमान्तीसयोजन प्रमाण शरीर करतेभये२० (ततःसुरसापंचाशत्योजनआयतंवक्त्रंचकारतदाहनूमांस्तुअंगुष्ठसन्निभःबभूव) तदनंतर सुरसा पचासयोजन विस्तार मुख करती भई तब हनूमान् पुनः अंगुष्ठमात्र तुल्य लघुरूप ह्वै जातेभये २१ (तस्याःवदनंप्रविश्य पुनः एत्यपुरःस्थितःदेवितेवदनंअहंप्रविष्टःनिर्गतःतेनमः)लघुरूपते तिससुरसाके मुखमेंपैठि पुनः नासिका द्वारा निसरि आगे स्थितह्वै हनूमानजी बोले कि हे देवि तेरे मुखमें पैठिकै मैं निसरिआयों तेरेअर्थ नमस्कार है भाव अबमैं जाताहौं २२(एवंहनूमंतवदंतंदृष्ट्वाअथसाअब्रवीत्बुद्धिमतांवरगच्छरामस्यकार्यंसाधय) इस प्रकार हनूमान् को वार्ता करते देखि तबसो सुरसा बोलतीभई हे बुद्धिमानोंमें श्रेष्ठ हनूमान् जाउ रघुनन्दनको कार्य करो २३ (कपेतेबलंजिज्ञासुभिःअहंदेवैःसंप्रेषितःभोगच्छसीतांदृष्ट्वापुनःगत्वारामंद्रक्ष्यसि) हेकपे तुम्हारे बलकी जिज्ञासाकरिकै मोंकोदेवतोंने पठावारहे सोबलबुद्धि जानि चूकी हे हनुमान् प्रसन्नमनजाउ सीताको देखि पुनः लौटिआय रामको देखोगे २४ (इ

तिउक्त्वासादेवलोकंययौपुनःवायुसुतःपक्षिराट्गरुत्मानइववायुमार्गेणजगाम) ऐसाकहि सो सुरसा देवलोकको जातीभई पुनः पवनपुत्र हनूमान् पक्षिनके राजागरुड़ समान पवन वेगकरिकै जातेभये २५ (मणिकांचनपर्वतंमैनाकंसमुद्रःअपिआहएषमहासत्वः मारुतात्मजःहनूमान्गच्छति) मणिकांचनमयपर्वतजोमैनाकहै त्यहिप्रति समुद्र निश्चयकरि वोला हे मैनाक यह महावली पवनको पुत्र हनूमान् जाताहै २६ ॥

रामस्यकार्यसिद्ध्यर्थंतस्यत्वंसचिवोभव ॥ सगरैर्वर्द्धितोयस्मात्पुराहंसागरोभवम् २७ तस्यान्वयेवभूवासौरामोदाशरथिःप्रभुः॥ तस्यकार्यार्थसिद्ध्यर्थंगच्छत्येषमहाकपिः २८ त्वमुत्तिष्ठजलात्तूर्णंत्वयिविश्राम्यगच्छतु ॥ सतथेतिप्रादुरभूज्जलमध्यान्महोन्नतः २९ नानामणिमयैश्शृंगैस्तस्योपरिनराकृतिः ॥ प्राहयातंहनूमंतंमैनाकोऽहंमहाकपे ३० समुद्रेणसमादिष्टस्त्वद्विश्रामायमारुते ॥ आगच्छामृतकल्पानिजग्ध्वापक्कफलानिमे ३१ विश्राम्यात्रक्षणंपश्चाद्गमिष्यसियथासुखम् ॥ एवमुक्तोऽथतंप्राहहनूमान्मारुतात्मजः ३२ ॥

(रामस्यकार्य्यसिद्ध्यर्थंत्वंतस्यसचिवःभवपुरायस्मात्सगरैःवर्द्धितःअहंसागरःभवम्) रामको कार्य सिद्धकरने अर्थ जाताहै ताते हे मैनाक तुम तिस हनूमान्के सचिवहोउ भाव मित्रवनि खानपान विश्रामदेउ क्योंकि पूर्वकालमें जिन सगरके पुत्रोंकरिकै वढ़ावागया ताते मैं सागरनाम भयों २७ (तस्यअन्वयेदाशरथिःप्रभुःअसौरामःबभूवतस्यकार्यार्थसिद्ध्यर्थंएषमहाकपिः गच्छति) तिन सगरके वंशमें दशरथके पुत्र सबके स्वामी येराम अवतीर्ण होतेभये तिनको कार्य सिद्धकरने अर्थ यह महावली वानर लंकाको जाताहै २८ (तूर्णंजलात्त्वंउत्तिष्ठत्वयिविश्राम्यगच्छतुसतथा इतिजलमध्यात् महाउन्नतःप्रादुरभूत्) शीघ्रही जलते तुम उठौ तुम्हारेऊपर विश्रामकरि तव हनूमान् जायँ इति सुनिसो मैनाक वोला जैसा कहतेहौ तैसाही करौंगो ऐसाकहि जलमध्यते महाऊंचा प्रसिद्धभया २९ (नानामणिमयैःश्रृंगैःतस्यउपरिनराकृतिःयातंहनूमंतंप्राहमहाकपेअहंमैनाकः) अनेक मणिनमय शृंगनकरिकै शोभायमान पर्वत ताके ऊपर मनुष्य कैसो स्वरूप धारण किहे मैनाक सो जातेहुये जो हनूमान् तिनप्रति वोलताभया कि हेकपे मैं मैनाकनामे पर्वतहौं ३० (मारुतेत्वत्विश्रामायसमुद्रेणसमादिष्टःमेआगच्छअमृतकल्पानिपक्कफलानिजग्ध्वा) हे पवनपुत्र तुम्हारे विश्रामलेने अर्थ समुद्रने मोंको आज्ञादियाहै तातेमैं प्रसिद्धभया हौं आप आइये अमृतके तुल्य पक्केफल भोजन कीने।३१ (अत्रक्षणंविश्राम्यपश्चात्यथासुखंगमिष्यसिएवंउक्तः अथतंमारुतात्मजः हनूमान्प्राह) त्वदाननेविश्रामकरितत्पश्चात्जब खुशीहोई तब जायउ इसप्रकार कहा तब तिसमैनाक प्रति तास्स्यहनुमान् वोलतेभये ३२ ॥

खंशीघ्रंविदारकार्यार्थंभक्षणंमेकथंभवेत् ॥ विश्रामोवाकथंमेस्यात्गंतव्यंत्वरितंमयामदेहोभूत्वाक्त्वास्पृष्टाशिखरःकराग्रेणययौकपिः ॥ किंचिद्दूरंगतस्यास्यछायांनमान्द्विग्रहीत् ३४ सिंहिकानामसाघोराजलमध्येस्थितासदा ॥ आकाशगाइआवृत्यपुसाक्रम्याकृष्यभक्षयेत्३५तयागृहीतोहनुमांश्चिंतयामाससर्वीर्यवान्॥केगरोधनंविघ्नकारिणा ३६ दृश्यतेनैवकोऽप्यत्रविस्मयोमेप्रजायते॥ ए

पवत ९.
पवन के
ई

वंविचिंत्यहनुमानधोदृष्टिप्रसारयत् ३७ तत्रदृष्ट्वामहाकायांसिंहिकांघोररूपिणी
म् ॥ पपातसलिलेतूर्णंपद्भ्यामेवाहनद्रुषा ३८ ॥

(रामकार्यार्थंगच्छतः मेभक्षणंकथंभवेत् वामेविश्रामः कथंस्यात्मयात्वरितंगंतव्यं)हनूमान् बोलेहे मैनाक मैं रघुनाथ जीके कार्य करिबे अर्थ जाता हौं तौ मेरा भोजन कैसेहैसकैअथवा मेरेकोविश्राम कैसे ह्वै सक्ता है क्योंकि हम करिकै शीघ्रही लंका को जाना है ३३ (इतिउक्त्वाकराग्रेणशिखरः स्पृष्ट्वाकपिः ययौकिंचित्दूरंगतस्य अस्यछायांछायाग्रहः अग्रहीत्) ऐसा कहिहाथके नखकरिकै वाको शिखर स्पर्श करि हनूमान् जाते भये कछु दूरि गये तबइनकी छायाको छाया पकरनेवाली सिंहिका ने पकरि लिया न चलिसके ३४ (जलमध्येसदा स्थितसिंहिकानामसाघोराआकाशगामिनांछायां आक्रम्यआकृष्यभक्षयेत्) समुद्र के जल मध्यमें सदा रहती रहै सिंहिका नाम है जाको सो भयंकर राक्षसी क्याकरै कि आकाशमें जानेवाले पक्षी आदिकोंकी छायाको गहि खैंचिकै भक्षण करिलेती रहै३५ (तयागृहीतःवीर्यवान् हनुमांश्चिंतयामास इदंकेनविघ्नकारिणामेवेगरोधनंकृतं) तिसराक्षसी करि के पकरे हुये बड़े वली हनुमान् सो मन में चिंतवन करते भये कि यह किस विघ्नकारी करि के मेरी वेग रोक करीगई भाव किसने मेरी गति रोकिदिया ३६ (अत्रकोपिनएवदृश्यते मेविस्मयः प्रजायते एवंहनुमान्विचिंत्य अधोदृष्टिप्रसारयत्) इहां कोई भी नहीं देखाता है यह मों को बड़ा आश्चर्य मालूम होता है गति भंग में क्याकारण है इसप्रकार हनुमान् विचार करि नीचेको दृष्टि फैलावते भये भाव तरे निहारि जल में देखे ३७ (तत्रमहाकायां घोर रूपिणीम् सिंहिकांदृष्ट्वातूर्णं सलिलेपपात रुपापद्भ्यां एवअहनत्) तहां बड़ीभारीदेहहै जाकी भयंकररूपहैजाको ऐसी सिंहिका को देखे शीघ्रही जल में कूदि परे क्रोध करिकै दोनों पांयन करिकै सिंहिका को मारते भये ३८ ॥

पुनरुत्प्लुत्यहनुमान्दक्षिणाभिमुखोययौ ॥ ततोदक्षिणमासाद्यकूलंनानाफलद्रुम
म् ३९ नानापक्षिमृगाकीर्णंनानापुष्पलतावृतम् ॥ ततोददर्शनगरंत्रिकूटाचलमू
र्द्धनि ४० प्राकारैर्बहुभिर्युक्तंपरिखाभिश्चसर्वतः ॥ प्रवेक्ष्यामिकथंलंकामितिचिं
तापरोऽभवत् ४१ रात्रौवेक्ष्यामिसूक्ष्मोऽहंलंकांरावणपालितं ॥ एवंविचिंत्यतत्रै
वस्थित्वालंकांजगामसः ४२ धृत्वासूक्ष्मंवपुर्द्वारंप्रविवेशप्रतापवान् ॥ तत्रलंका
पुरीसाक्षाद्राक्षसीवेषधारिणी४३प्रविशंतंहनूमंतंदृष्ट्वालंकाव्यतर्जयत् ॥ कस्त्वं
वानररूपेणमामनादृत्यलंकिनीम् ४४ ॥

(हनुमान्पुनः उत्प्लुत्यदक्षिणाभिमुखंययौ ततोदक्षिणंकूलं आसाद्यनानाफलद्रुमं) हनुमान् जी पुनः कूदि आकाश में दक्षिण दिशि को जातेभये समुद्र के दक्षिण किनारे पर पहुंचि देखे अनेक फलन युत वृक्ष लगे हैं ३९ (नानापुष्पलतावृतम् नानापक्षिमृगाकीर्णंततःत्रिकूटाचल मूर्द्धनिनगरं ददर्श) अनेक प्रकार के फूलन सहित लता वृक्षों पर फैलीहैं अनेकन पत्ती वृक्षोंपर भूमि में समूह मृगा भरे हैं तदनंतर हनुमान् जी त्रिकूटाचल पर्वत पर लंकानगर को देख ते भये ४० (प्राकारैः बहुभिःयुक्तंच सर्वतःपरिखाभिः लंकांकथंप्रवेक्ष्यामि इतिचिंतापरःअभवत्) मंदिर बहुतभांतिन करि कै युक्त पुर सब दिशि में खॉवा करि कै गुप्त ऐसे दुर्गम लंका को किस प्रकार प्रवेश करौं इत्यादि चिंतापर होते भये भाव मन में बिचार करते हैं कि किसयुक्तिते निर्विघ्न भीतरजाऊँ ४१ (रावण

पालितंलंकां सूक्ष्मःसहंरात्रौ वेक्ष्यामि एवंविचिंत्यतत्रएवस्थित्वासः लंकांजगाम) महाबली रावण करि कै रक्षा की जाती अगम जो लंका तामें छोटा रूप धरि मैं रात्री विषे प्रवेश करि हौं ऐसा बिचारि तहैं थँभे रहे रात्रि भये सो हनुमान् लंका को जाते भये ४२ (सूक्ष्मंवपुः धृत्वाप्रतापवान् द्वारंप्रविवेश तत्रसाक्षात्राक्षसी वेषधारिणी लंकापुरी) छोटा तन धरि प्रतापवान् हनुमान् पुरद्वार में पैठे तहां प्रसिद्ध राक्षसी वेष धारण किहे लंकापुरी प्रथमहीं मिली ४३ (हनूमंतंप्रविशंतंदृष्ट्वा लंकाव्यतर्जयत् मांलंकिनीम्अनादृत्य वानररूपेणत्वंकः) हनूमान् को द्वार में पैठत देखि लंका अनादर पूर्वक बोली कि मैं जो लंकिनी ताहि निदरि वानर रूप करि कै तू को है ४४ ॥

प्रविश्यचोरवद्रात्रौकिंभवान्कर्तुमिच्छति ॥इत्युक्त्वारोषताम्राक्षीपादेनाभिजघान तम् ४५ हनूमानपितांवाममुष्टिनावज्ञयाहनत् ॥ तदैवपतिताभूमौरक्तमुद्वमती भृशम् ४६ उत्थायप्राहसालंकाहनूमंतंमहाबलम् ॥ हनूमानूगच्छभद्रंतेजिता लंकात्वयानघ ४७ पुराहंब्रह्मणाप्रोक्ताह्यष्टाविंशतिपर्यये ॥ त्रेतायुगेदाशरथी रामोनारायणोव्ययः ४८ जनिष्यतेयोगमायासीताजनकवेश्मनि ॥ भूभारहरणा र्थायप्रार्थितोयंमयाक्वचित् ४९ सभार्योराघवोभ्रात्रागमिष्यतिमहावनम् ॥ तत्र सीतांमहामायांरावणोपहरिष्यति ५० पश्चाद्रामेणसाचिव्यंसुग्रीवस्यभविष्यति ॥ सुग्रीवोजानकींद्रष्टुंवानरान्प्रेषयिष्यति ५१ ॥

(चोरवत्रात्रौप्रविश्यभवान्किंकर्तुंइच्छतिइतिउक्त्वारोषताम्राक्षी पादेनाभितंजघान) चोरकी नाईं रात्री में प्रवेश करिकै पुरमें आपक्या किया चाहते हैं ऐसा कहिक्रोध करि लाल भये हैं नेत्र जाके ऐसी लंकिनी पांये करिकै तिन हनुमान् को मारती भई ४५ (हनुमान्अपिवाममुष्टिनाअवज्ञ यातांअहनत् तदाएवभृशम्रक्तंउद्वमतीभूमौपतिता) हनुमान भी वामहाथ मूठी करिकै निदरिता को मारते भये ता समय बारंबार रक्त मुख सो उगिलती हुई भूमि पर गिरिपरी ४६ (सालंका उत्थायमहाबलंहनूमंतंप्राहअनघहनूमान्गच्छतेभद्रंत्वयालंकाजिता) सो लंकिनी उठिकै पुनः महा बली जो हनूमान् तिन प्रति बोलती भई हे निःपापहनूमान् सुख पूर्वक जाउ तुम्हारा कल्याण होय तुमने लंका जीता ४७ (अहंपुराब्रह्मणाप्रोक्ताहिअष्टाविंशतिपर्यायेत्रेतायुगेअव्ययःनारायणः दाशरथी) मोप्रति पूर्वहीं ब्रह्माने कहा है कि अट्ठाइसयें त्रेतायुगमें अविनाशी नारायण दशरथ के पुत्र होंयगे ४८ (योगमायाजनकवेश्मनिसीताजनिष्यतेमयाप्रार्थितःअयंभूभारहरणार्थायक्वचित्) योगमाया आय जनक के मंदिर में सीता उत्पन्न होइंगी सो पूर्व मैंने प्रार्थना किया है ताते वैभूमि को भार हरनेअर्थ किसी समयमें ४९ (भ्रात्रासभार्यःराघवःमहावनंगमिष्यतितत्रमहामायासीतां रावणोपहरिष्यति) छोटेभाई सहित भार्यारघुनंदन महाबन को जांयगे तहां महामाया सीता को रावण हरिलै जायगो ५० (पश्चात्रामेणसुग्रीवस्यसाचिव्यंभविष्यतिजानकींद्रष्टुंसुग्रीवःवानरान्प्रे षयिष्यति) पीछे राम करिकै सुग्रीव के साथमित्रता होइ तब जानकी को देखिबे हेत सुग्रीव बानरन को पठावहिंगे ५१ ॥

तत्रैकोवानरोरात्रावागमिष्यतितेंऽतिकम्॥त्वयाचभर्त्सितःसोपिऽत्वांहनिष्यतिमु ष्टिना५२ तेनाहतात्वंव्यथिताभविष्यसियदानघे॥तदैवरावणस्यांतोभविष्यन्ति

नसंशयः ५३ तस्मात्त्वयाजितालंकाजितंसर्वंत्वयानघ ॥ रावणांतःपुरवरेक्रीड़ा काननमुत्तमम् ५४ तन्मध्येऽशोकवनिकादिव्यपादपसंकुला ॥ अस्तितस्यांमहा वृक्षःशिंशपानाममध्यगः ५५ तत्रास्तेजानकीघोरराक्षसीभिःसुरक्षिता ॥ दृष्ट्वै वगच्छत्वरितंराघवायनिवेदय ५६ धन्याहमप्यद्यचिरायराघवस्मृतिर्ममासीद्भव पाशमोचनी ॥ तद्भक्तसंगोप्यतिदुर्लभोममप्रसीदतांदाशरथिःसदाहृदि ५७ ॥ उल्लंघितेऽब्धौपवनात्मजेनधरासुतायाश्चदशाननस्य ॥ पुस्फोरवामाक्षिभुजश्च तीव्रंरामस्यदक्षांगमतीन्द्रियस्य ५८ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसम्वादेसुंदरकाण्डेप्रथमःसर्गः १ ॥

(तत्रएकःवानरःरात्रौतेअंतिकंआगमिष्यतिचत्वयाभर्त्सितःसःअपित्वांमुष्टिनाहनिष्यति) तिनमें ते एक वानर रात्री में तेरे समीप आवैगो पुनः तू करिकै तिरस्कार भया वह वानरभी तोहि मुष्टिका करिकै मारैगो ५२ (अनघेयदातेनाहतात्वंव्यथिताभविष्यतितदाएवरावणस्यअंतःभविष्यतिसंशयः न) निः पापेजब तिसवानर करिकै ताड़न करीगई तू बड़ी व्यथित होइगी तबै रावण को अंत काल होइगो यामें संशय नहींहै ५३ (अनघत्वयालंकाजितातस्मात्त्वयासर्वंजितंरावणस्यअंतःपुरवरे उत्तमम्क्रीड़ाकाननम्) हे निःपापतुमने लंकाजो मेंहों ताको जीता ताते अबतुमने इहां के वासिन को सबको जीतिलिया अब जिस हेत आयेहो सो हाल सुनिये रावणको को जो राजमंदिर विस्तारते उत्तमहै त्यहि सीवां के वीचमें क्रीड़ा करिवे योग्य उत्तम वन है ५४ (तत्मध्येदि-व्यपादपसंकुलाअशोकवनिकाअस्तितस्यांमध्यगःशिंशपानाममहावृक्षः) तिसके मध्यमें दिव्यवृक्षों करिकै परिपूर्ण अशोक वाटिका है ताके मध्यमें शीशम नाम बड़ाभारी वृक्ष है ५५ (तत्रजानकी आस्तेघोरराक्षसीभिःसुरक्षितागच्छदृष्ट्वाएवत्वरितंराघवायनिवेदय)तहांजानकीहैंअरु भयंकरराक्षसिन करिकै सुंदरी प्रकार रक्षाकीजाती हैं तहां जाउ जानकी को निश्चय करि देखि शीघ्रही जाय रघुनंदनके अर्थ खबरि सुनावो ५६ (भवपाशमोचनीराघवस्मृतिःचिरायममआसीत्अद्यअहंअपि धन्याअतिदुर्लभःतत्भक्तसंगःअपिममहृदिसदादाशरथिःप्रसीदतां) भवबंधनको छोड़ावन हारी श्री रघुनाथकी स्मृति अर्थात् नामरूप की स्मरण बहुत कालके अर्थमोको होतीभई भावबहुत कालतक प्रभुकी स्मरणवनी रहैगी ताते या समयमेंमैंभी धन्यभई पुनः जोलोकमें अत्यन्तदुर्लभ तिनकेभक्तको संगनिश्चय करिभया तातेअब मेरेहृदयमें सदावास किहे दशरथनन्दनप्रसन्नरहैं भावध्यान न छूटै५७ (पवनात्मजेन अब्धौउलंघिते अतींद्रियस्यरामस्यदक्षांगंधरासुतायाःचदशाननस्य वामाक्षि चभुजःतीव्रं पुस्फोर) पवन नन्दनकरिकै समुद्रपार नांघत संतेजे इन्द्रिनके व्यवहारतेपरहैं रघुनाथजी तिनको भी-मौधुर्यदेशमें दक्षिणअंगतथा धरासुता जानकीजीकोपुनः रावणकोवामनेत्र वामभुजाअत्यन्तफरकिउठे भावरघुनन्दन को दक्षिणनेत्र भुजाफरका तथाजानकीजीको वामनेत्र भुजाफरका सोमिलन सूचकस-गुनभया अरु रावणको वामनेत्र भुजा फरका सोमृत्युसूचक असगुनहै ५८ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचिते अध्यात्मभूषणसुन्दरकाण्डेप्रथमःप्रकाशः १ ॥

ततोजगामहनुमान्लंकांपरमशोभनाम्॥रात्रौसूक्ष्मतनुर्भूत्वाबभ्रामपरितःपुरीम् १ सीतान्वेषणकार्यार्थीप्रविवेशनृपालयम्॥ तत्रसर्वप्रदेशेषुविविच्यहनुमान्कपिः२ नापश्यज्जानकींस्मृत्वाततोलंकाभिभाषितम्॥ जगामहनुमञ्छीघ्रमशोकवनिकांशुभां ३ सुरपादपसंबाधांरत्नसोपानवापिकाम्॥ नानापक्षिमृगाकीर्णांस्वर्णप्रसादशोभिताम् ४ फलैरानम्रशाखाग्रपादपैःपरिवारिताम्॥ विचिन्वन्जानकींतत्र प्रतिवृक्षंमरुत्सुतः ५ ददर्शाभ्रलिहंतत्रचैत्यप्रासादमुत्तमम्॥ दृष्ट्वाविस्मयमापन्नोमणिस्तंभशतान्वितम् ६ समतीत्यपुनर्गत्वाकिंचिद्दूरंसमारुतिः॥ ददर्शशिंशिपावृक्षमत्यंतनिविडच्छदम् ७ अदृष्टातपमाकीर्णस्वर्णवर्णविहंगमम्॥ तन्मूले राक्षसीमध्येस्थितांजनकनंदिनीम् ८ ॥

सवैया॥गतलंकपुरीघरढूंढ़ि अशोकवनेद्रुममूल सुसीयलहे।द्रुमगुप्तरहे त्यहिऔसर रावणआयसियाहिं कुबैनकहे॥गतशासन देखल राक्षसि कोटिन सासति कैतिनहीयदहे। दुखीपीड़ित शोचत देखिसियाहनुमानतहाँहगनीरबहे (ततःहनुमान्परमशोभनां लंकांजगामरात्रौसूक्ष्मतनुः भूत्वापरितः पुरींबभ्राम) तदनन्तरहनुमान् परमशोभायमानलंकापुरके भीतरजातेभयेरात्रीविषे छोटातनुधरिचारिहु दिशिलंका पुरीमें घूमतेभये१ (सीतान्वेषणकार्यार्थी नृपालयम्प्रविवेशतत्रहनुमान्कपिःसर्वप्रदेशेषुविविच्य)सीता ढूंढ़नकार्यके स्वारथी हैं ताते राजमंदिर में पैठि हनुमान् कपि तहांसब मंदिर के भीतरमें ढूंढ़ि फिर परन्तु२(जानकीं न अपश्यत् ततःलंकाभिभाषितं स्मृत्वा शीघ्रं हनुमान्शुभाम् अशोकवनिकां जगाम) राजमंदिर में जानकी को न देखे तबतक लंकिनी को कहाहुआवचन सुधिभया तबशीघ्रही हनुमान् मंगलीक जो अशोक बाटिकाहै तहांकोजातेभये ३ (सुरपादपसंबाधाम्)जहां कल्पवृक्षसमूहलगेहैं (रत्न सोपान वापिकाम्)जिनमें मणिनमयसीढ़ी ऐसी बावली बनीहैं (नानापक्षिमृगाकीर्णा) अनेकन पक्षी अरु मृगा भरे हैं (स्वर्णप्रासादशोभिताम्) सोने के अनेकन मंदिर शोभित हैं ४(फलैः शाखाग्रअनम्रपादपैः परिवारिताम् तत्रमरुत् सुतःप्रतिवृक्षं जानकीम् विचिन्वन्) फलन करिकै डारनकी फुनगीलचिरहीहैं जिनमें ऐसे वृक्षों करिकै अशोक बाटिका आच्छादितहै तहां पवनपुत्र हनुमान्जी एकएक वृक्ष केतरे जानकीजीको ढूंढ़ते भये ५ (तत्रउत्तमम् चैत्यप्रासादं अभ्रलिहंददर्शमणिस्तंभशतान्वितम् दृष्ट्वाविस्मयमापन्नः)तहां अशोक बाटिका में उत्तम विस्तार सहित ऊँचा ऐसाजोमेघोंको स्पर्शकरताहै ताको देखतेभये जामें मणिनके खंभा सैकरन युक्तहैं ताको देखिहनुमान् आश्चर्ययुक्त भये ६ (संअतीत्यस मारुतिः किंचित् दूरं पुनःगत्वा अत्यन्त निविडच्छदम् शिंशिपावृक्षं ददर्श)तिसमंदिर कोनांघिकै सोमारुतनन्दन हनुमान् कछुदूरि पुनः गयेतहां अत्यन्त सघनं जामेंदल पल्लव हैं ऐसाएक शिंशिपाअर्थात्शीशमको वृक्ष देखते भये ७ (आतपंअदृष्टं स्वर्णवर्णविहंगमम् आकीर्णं तन्मूले राक्षसी मध्ये जनकनंदिनीम् स्थितां) घामजिसकेतरे देखि नहीं परताहै सोने कैसो रंग जिनका ऐसे पक्षी समूह जिसमें बैठे हैं तिस वृक्षकी मूलसमीप राक्षसिन के मध्य में जनक नंदिनी बैठीहैं तिनको कौनभाँति देखे सोकहत ८ ॥

ददर्शहनुमान्वीरोदेवतामिवभूतले॥ एकवेणींकृशांदीनांमलिनाम्बरधारिणीम् ९ भूमौशयानांशोचंतींरामरामेतिभाषिणीम् ॥ त्रातारंनाधिगच्छंतीमुपवासकृशां

शुभाम् १० शाखांतच्छदमध्यस्थोददर्शकपिकुंजरः ॥ कृतार्थोऽहंकृतार्थोऽहंद्द
ष्ट्वाजनकनंदिनीम् ११ मयैवसाधितंकार्यंरामस्यपरमात्मनः ॥ ततःकिलकिला
शब्दोबभूवांतःपुराद्बहिः १२ किमेतदितिसंलीनोवृक्षपत्रेषुमारुतिः ॥ आयांतं
रावणंतत्रस्त्रीजनैःपरिवारितम् १३ दशास्यंविंशतिभुजंनीलांजनचयोपमम् ॥
दृष्ट्वाविस्मयमापन्नोपत्रखण्डेष्वलीयत १४ ॥

(भूतलेदेवतांइवहनुमान्वीरःददर्शकृशांदीनांएकवेणीम्मलिनाम्बरधारिणीम्) यथा भूतलमें देवता ताही भांति जानकीजीको हनुमान्वीर देखतभये दुर्बल शरीर मनतेदीन सबबारोंकी एकवेणी जटा जूट सो बांधे अंगमें मलिन वस्त्र धारण कीन्हे हैं ९ (भूमौशयानांशोचंतीं) भूमिपरशयन किहे मन में शोचकरि रहीहैं (रामरामइतिवादिनीम्) मुखते रघुवर रघुनन्दन इत्यादिनाम उच्चारण करती हैं (त्रातारंनाधिगच्छंतींउपवासकृशांशुभाम्) रक्षाकरनेवाले को नहीं प्राप्तहोतीहैं तिस शोकते उ- पासकरि दुर्बलहैं इतिमाधुर्य अरु ऐश्वर्यमें मंगलमूर्ति हैं १० (शाखांतच्छदमध्यस्थःकपिकुंजरःद दर्शजनकनंदिनीम्दृष्ट्वाअहंकृतार्थःअहंकृतार्थः) शाखन को सघनदल पल्लव मध्यछिपिकै स्थित है वानरोंमें उत्तम हनुमान् देखतभये पुनः विचारे किजनकनंदिनीकोदेखा अब मैंधन्यभया धन्यभया ११(परमात्मनःरामस्यकार्यंमयाएवसाधितंततःअंतः पुरात्बहिःकिलकिलाशब्दःबभूव) परमात्मा रघुनाथजीको कार्यमैंने निश्चयकरि साधिलिया भाव अब मुद्रिकादै प्रसिद्धवार्ताकरौं ऐसा विचारे तदनंतर राज मंदिरते बाहेर किलकिलाशब्द होताभया १२ (एतत्किंइतिमारुतिःवृक्षपत्रेषुसंलीनः तत्रस्त्रीजनैःपरिवारितंरावणंआयांतं) जो शब्द भया यह क्याहै इसको भी जानिलेवें ऐसा विचारि हनुमान्जी वृक्षके पत्तोंविषे छिपेरहे ताही समयमें देखेकि स्त्रीजनों करिकै सहित रावण आवता है सोकैसाहै १३ (दशआस्यंविंशतिभुजंनीलांजनचयउपमंदृष्ट्वाविस्मयं आपन्नःपत्रखंडेषुअलीयत) रावणके दशमुखहैं वीशभुजाहैं नीलअंजनको समूह पहार तुल्यभारी देहदेखि हनुमान्जी विस्मय आश्चर्यको प्राप्त ह्वै समूह दलनमें छिपिरहे १४ ॥

रावणोराघवेणाशुमरणंमेकथंभवेत् ॥ सीतार्थमपिनायातिरामःकिंकारणंभवे
त् १५ इत्येवंचिंतयन्नित्यंराममेवसदाहृदि ॥ तस्मिन्दिनेपररात्रौरावणोराक्षसा
धिपः १६ स्वप्नेरामेणसंदिष्टःकश्चिदागत्यवानरः ॥ कामरूपधरःसूक्ष्मोवृक्षाग्र
स्थोऽनुपश्यति १७ इतिदृष्ट्वाद्भुतंस्वप्नंस्वात्मन्येवानुचिंत्यसः ॥ स्वप्नःकदाचि
त्सत्यःस्यादेवंतत्रकरोम्यहम् १८ जानकींवाक्शरैर्विध्यद्दुःखितांनितरामहम् ॥
करोमिदृष्ट्वारामायनिवेदयतुवानरः १९ इत्येवंचितयन्सीतासमीपमगमद्द्रुत
म् ॥ नूपुराणांकिंकिणीनांश्रुत्वासिंजितमंगना २० ॥

(रावणःमेमरणंराघवेणआशुकथंभवेत्सीतायाःअर्थंअपिरामःनआयातिकिंकारणंभवेत्) रावण विचारकरताहै कि मेरामरण रघुनन्दनकरिकै शीघ्रही कैसेहोय बहुत दिन बीतिगये सीताके अर्थराम अवहींतक न आये क्याकारण भया जो विलम्बभई १५ (इतिएवंनित्यंचिंतयत्रामंएवसदाहृदितस्मिन्दिनेपररात्रौराक्षसाधिपःरावणः) इसीप्रकार अपनीमृत्युहेत नित्यही विशेषि चिंतवन करता हुआ रामरूपको सदा हृदयमें ध्यानराखतारहै ताहीदिन पछिली रातिमें राक्षसोंको राजारावण

सोवतमें स्वप्न देखा १६ (स्वप्नेरामेणसंदिष्टःकश्चिद्वानरःआगत्यकामरूपधरःसूक्ष्मःवृक्षाग्रस्थः अनुप श्यति) स्वप्नेमें क्यादेखा कि रघुनन्दनकरिकै पठावा हुवा कोई एक वानर आया इच्छाचारी सूक्ष्म रूपधारण किहे वृक्षकी फुनगीमें बैठा सीताको देखिरहाहै १७ (इतिअद्भुतंस्वप्नंदृष्ट्वासः स्वआत्म निएवअनुचिंत्यकदाचित्स्वप्नः सत्यःस्यात्तत्रअहंएवंकरोमि) ऐसा अद्भुत स्वप्न देखिकै सो रावण अपने मनमें चिंतवन किया कि कदाचित् यहस्वप्न सत्यहीहोय भाव सत्यही वानरआयाहोइ तौत. हांजाय मैं ऐसाहालकरौं १८ (अहंनितरांवाक्शरैःविध्यजानकींदुःखितांकरोमिदृष्ट्वावानरःरामाय निवेदयतु) मैं नित्यही वचनरूप बाणोंकरिकै बेधनकरि भाव कुवचन कहिजानकी को दुखितकरौं सो हालदेखिकै वही बानर शीघ्रही जायरामके अर्थ निवेदन करै सब हाल कहैजाय १९ (इतिएवं चिंतयन्द्रुतम्स्त्रीतासमीपंअगमत्अंगनानूपुराणांकिंकिणीनांसिंजितंश्रुत्वा) ऐसाचिंतवनकरत संते रावण स्त्रिन सहित शीघ्रही सीताके पासको चला तासमैं स्त्रियनके नूपुर पायजेबघुंघुरुकटि किंकिणी की ध्वनिको सुनिकै २० ॥

सीताभीतालीयमानास्वात्मन्येवसुमध्यमा ॥ अधोमुख्यश्रुनयनास्थितारामार्पि तांतरा २१ रावणोऽपितदासीतामालोक्याहसुमध्यमे ॥मांदृष्ट्वाकिंवृथासुभ्रूस्वा त्मन्येवविलीयसे २२ रामोवनचराणांहिमध्येतिष्ठतिसानुजः ॥ कदाचिदृश्यते कैश्चित्कदाचिन्नैवदृश्यते २३ ॥

(सुमध्यमासीताभीतास्वआत्मनिएवलीयमानारामायअर्पितअंतराअधोमुखीअश्रुनयनास्थिता)सुंदर मध्यहै जिनको सो सीता शब्दसुनि रावण आवतजानि डरायकै आपने शरीरही में लीनभई भाव सर्वांग में समेटिलीन्ही रघुनन्दनकेअर्थ अंतरवृत्ति अर्पिभाव उरमें ध्यानकिहे नीचेको मुखकीन्हे अश्रु भरे नेत्रस्थितभई २१ (सीतांआलोक्यतदारावणः अपिआहसुमध्यमेसुभ्रूमांदृष्ट्वाकिंवृथास्वात्मनि एवविलीयसे) सीताको देखि तब रावण बोला हे सुमध्यमे सुभ्रूवा व सुन्दर कटि सुन्दरीभौंहैंवाली सीते मोंको देखि क्यों वृथाही आपने सर्वांग अंगहीमें छिपायलीन्हे भावप्रसन्नतापूर्वक मेरी दिशि क्यों नहीं कटाक्षकरिहेरती है इति माधुर्यमेवा चकार्थ पुनः ऐश्वर्यमें व्यंग्यार्थ यथा हे सुमध्यमे भाव जीव ईश्वरके मध्यस्थ आपहीहो चहौविमुखकरौ चहौप्रभुकी सन्मुखकरौ पुनः हे सुभ्रूभाव जीवनपर सदा सुन्दरदियायुत आपकी भृकुटी हैं ऐसी जगत् मातुजानि मैं आपहीकी शरण आयाहौं ऐसा जानि क्यों नहीं शीघ्रही कृपाकटाक्षकरि मेरी ओर हेरतीहो २२ (सानुजःरामःवनचराणांहिमध्येतिष्ठ ति कदाचित्कैश्चित्दृश्यतेकदाचित्नएवदृश्यते]जो रामके स्नेहते मेरीदिशि नहीं हेरतीहौ सो आशरा त्यागौ क्योंकि छोटेभाईसहित रामवनवासिनके भाव वानप्रस्थ संन्यासिनके बीचमेंरहता है तिसके स्त्री परप्रीति कहां है ताहूपर किसीसमयमें काहूकोदेखिपरताहै किसी समय में नहीं देखपरताहै भाव अब है या नहीं है इति निश्चयनहीं इति माधुर्य्यमेंवाच्यार्थ अथैश्वर्य व्यंग्यार्थ हे जगदंब जोकहौ कि रघुनाथजीकी शरणहो तब तेराकल्याणहोइगो सो बात मेरे मानकी नहीं है क्योंकि प्रभुकी तौ यह रीति है कि जे स्त्री पुत्र धन धाम देह सुखादि सब त्यागि वनमें एकाग्र स्मरणध्यानकरते हैं तिनके हृदय मध्यमेंरहते हैं सो भी सबको सुलभप्राप्तिनहीं कबहूं किसीको ध्यानकरिकै देखिपरते हैं अरु कभी नहीं देखिपरते हैं अरु तुम जिसपर कृपाकरतीहौ ताकेप्रभु वशीभूतरहतेहैं यथा शिवदिव्य सौ वर्ष मन्त्रराजजपकिये तब प्रभुध्यानमें आये शिवकहे ऐसे बनेरहौ प्रभुबोले बिनासीता हम क्षणभर

नहीं रहिसकैहैं यथाअगस्त्यसंहितायां॥कदाचिच्छ्रीशिवोरूपं ज्ञातुमिच्छुर्हरेःपरं । दिव्यंवर्षशतंवेदविधि-ना विधिवेदना॥जजापपरमंजाप्यंरहस्येस्थितचेतसा। प्रसन्नोभूत्तदादेवःश्रीरामःकरुणाकरः॥मंत्राराध्येन रूपेणभजनीयःसतांप्रभुः। द्रष्टुमिच्छासियद्रूपंमदीयंभावनास्पदं॥आह्लादिनींपरांशक्तिंस्तूयाःसात्वतसंमतां। तदाराध्यस्तदारामस्तदधीनस्तयाविना॥तिष्ठामिनक्षणंशम्भोजीवनंपरमंमम ॥ इत्यादिप्रभुकी प्राप्ती आपके आधीनहै इति आपकी शरणहौं २३ ॥

मयातुबहुधालोकाःप्रेषितास्तस्यदर्शने ॥ नपश्यंतिप्रयत्नेनवीक्षमाणाःसमंततः २४ किंकरिष्यसिरामेणनिस्पृहेणसदात्वयि ॥ त्वयासदालिंगितोऽपिसमीपस्थोऽपिसर्वदा २५ ॥

(तुतस्यदर्शनेमयाबहुधालोकाःप्रेषिताःसमंततःप्रयत्नेनवीक्ष्यमाणाः न पश्यंति) पुनः तिसरामके देखनेहेत मैंने बहुत से दूतपठावा ते सर्वत्रलोकमें यत्न पूर्वक ढूंढ़े परंतु रामको किसीने न देखा ताते आशात्यागौ वे अब नहीं हैं इति माधुर्यवाच्यार्थः अथैश्वर्यव्यंग्यार्थः हे जगदंब जो आपकहौ कि तुम स्मरण ध्यान कभी किया नहीं जो करते तौ क्यों न प्राप्तहोते सो प्रभुके देखनेहेत मैंने मन चित्त बुद्धि अहंकार सर्वेन्द्रिय इत्यादि बहुतसे दूतपठावा ते सब लोकमें यत्नपूर्वक ढूंढ़िफिरे रामको किसीने न देखा भाव विचार करिदेख्यौं कि काम क्रोधादि युत तामसी तनते कैसे प्रभुकी प्राप्ति ह्वैसक्ती है अरु आप पुत्र मातृवत् नीच ऊंच सबको प्रतिपाल करनहारीहौ ऐसा जानि आपकी शरण आया हौं २४ (सर्वदाअपिसमीपस्थः त्वयासदालिंगिता अपित्वयिसदानिस्पृहेणरामेणकिंकरिष्यसि) सब कालमें भी राम तेरे समीपरहा अरु तूने सदावाको हृदयमें भी लगाया तबहूं तू विषे वाकी प्रीति नहींरही क्योंकि अब तक तेरी सुधि न किया ऐसे अनिच्छित रामकरिकै तू क्याकरैगी मेरीदिशि प्रीतिकरु इति माधुर्यवाच्यार्थः अथैश्वर्यव्यंग्यार्थः हे महारानीजी जो आपकहौ कि जब रघुनन्दन आवहिंगे तब तेरा उद्धारहोइगो तहा रघुनन्दन सब कालमें आपके समीपही हैं अरु आप उनहीं की आश्रितहै लोककी उत्पत्ति पालन संहारादि सब व्यापारकरतीहौ सो जो आपको व्यापार तिससे रघुनंदन अनिच्छित हैं भाव कार्य कारण माया रहित शुद्ध आत्म रूप कुछु नहीं करते हैं तिनकरिकै क्या करौगी बद्धमोक्ष करने को आपही समर्थहौ २५ ॥

हृदयेऽस्यनचस्नेहस्त्वयिरामस्यजायते २६ त्वत्कृतान्सर्वभोगांश्चत्वद्गुणानपिराघवः॥ भुंजानोऽपिनजानातिकृतघ्नोनिर्गुणोऽधमः २७ त्वमानीतामयासाध्वीदुःखशोकसमाकुला ॥ इदानीमपिनायातिभक्तिहीनःकथंव्रजेत् ॥ निःसत्वोनिर्ममोमानीमूढःपण्डितमानवान् २८ ॥

(अस्यरामस्यहृदयेत्वयिस्नहेःनचजायते) इनरामके हृदय में तेरेविषेस्नेह नहीं उत्पन्न होता है तौ तू क्यों उसमें प्रीतिराखै है भाव उधर प्रीति त्यागि मेरेमें प्रीतिकरु इतिमाधुर्य वाच्यार्थः अथैश्वर्य व्यंग्यार्थ हे महारानी जी यावत् देह बुद्धी संसार सो सब आपही को रूपहै तामें रघुनंदन प्रीति नहीं करते हैं भाव जे आत्म रूप को सत्यमाने हैं तिनपर स्नेह करते हे अरु मैंतौ विषयासक्त देहैंको सत्यमानेहौं तौ रघुनंदन मोपर कैसे कृपाकरैंगे ताते मोपर कृपाकरबे को आपही समर्थहौ २६ (त्वत्कृतान्सर्वभोगान्भुंजान.अपिचत्वत्गुणान्अपिराघवः नजानातिकृतघ्नःअधमः निर्गुणः) हे सीते तेरेकिये हुये सब भोग पदार्थों को भोगभी करता है पुनः तेरेगुणोंको निश्चय करिकै रामनहीं

जानता है ताते कृतघ्नभाव किसी को किया सलूकनहीं मानताहै ऐसा अधम गुणहीन है इति माधुर्येवाच्यार्थः अथैश्वर्यैव्यंग्यार्थः हे जगदंब रावासअरूखास्वतन शोभा अर्पण इत्यादि तुम्हारे किये भोगों को सुख भोगकरते भी हैं पुनः तुम्हारे कियेहुये जो गुणसुख संकल्प कामादि तिनको नहीं जानत अरु कर्मको अभिमानी नहीं ताते कृतघ्न हैं पुनः किंचिनधमति शब्द विपयोभवति इति अधमः कछु भी शब्द विषय जिनमें नहीं होती ताते अधमहै पुनः निर्गुण रजतमादि गुणोंत पर सच्चिदानन्दहैं तिनको मैं विषयी कैसे पाय सक्ता हौं केवल आपकी शरणहौं २७ (साध्वीत्वांमयानी तादुःखशोकसमाकुला इहर्मीअपिनआयाति निःसत्वःमानीनिःममः भक्तिहीनः कथंव्रजेत्मूढःपंडि तमानवान्) हे पतिव्रतेतोको मैंने बरवश हरिलाया इहां तू दुःखशोक करिकै व्याकुल है तरेहेत अबतक भी राम इहां न आयातौ पराक्रमहीन अरुमानी तथानिर्मोही तेरेमेंप्रीति हनि कैसेआवै पुनः हैतौमूढ़अरुअपना को पंडित माने है इतिमाधुर्ये वाच्यार्थ अथैश्वर्ये व्यंगार्थ- हेरामानन्द प्रदायनी मैं दुःखशोक करिकै व्याकुल हौं अपने उद्धार हेत प्रभुसों वैर भाव करि मैंने तुमको हरिलाया सो अबतक प्रभु इहां न आये ताते शोच करता हौं कि हौंतौ मूढ़ अरु अपना को पंडित माने हौं पुनः न प्रभुमें मेरी ममता है न भक्ति है तौकैसे प्रभु आवैं ताते केवल आपकी शरण हौं २८ ॥

नराधमंत्वद्विमुखंकिंकरिष्यसिभामिनि ॥ त्वय्यतीवसमासक्तंमांभजस्वासुरोत्तमम् २९ देवगंधर्वनागानांयक्षकिन्नरयोषिताम् ॥ भविष्यसिनियोक्त्रीत्वंयदिमांप्रतिपद्यसे ३० रावणस्यवचःश्रुत्वासीतामर्षसमन्विता ॥ उवाचाधोमुखीभूत्वा निधायतृणमंतरे ३१ राघवाद्विभ्यतानूनंभिक्षुरूपंत्वयाधृतम् ॥ रहितेराघवाभ्यां त्वंशुनीवहविरध्वरे ३२ हतवानसिमांनीचतत्फलंप्राप्स्यसेऽचिरात् ॥ यदारामशराघातविदारितवपुर्भवान् ३३ ज्ञायसेमानुषंरामंगमिष्यसियमांतिकम् ॥ समुद्रंशोषयित्वावाशरैर्बध्वाथवारिधिम् ३४ ॥

(भामिनित्वत्विमुखंनरःअधमंकिंकरिष्यसित्वयिअतीवसंआसक्तंअसुरोत्तमंमांभजस्व)हेभामिनि तुमते विमुख प्रीति रहित पुनः मनुष्य अधम तिसकोलेके क्या करोगी तुम्हारे विषे अत्यंत प्रीति करने वाला राक्षसों को राजा जो मैंहौं ताहि भजौ प्रीति करौ २९ (यदिमांप्रतिपद्यसेदेवगंधर्व नागानां यक्ष किन्नर योषिताम् त्वंनियोक्त्रीभविष्यसि) हेसीतेजोमोको प्राप्त होइगीतौदेवता गंधर्व नागयक्ष किन्नर इत्यादि की स्त्रियोंपर तू आज्ञाकरने वाली होइगी३०(रावणस्यवचः श्रुत्वासीताअधो मुखी भूत्वा अंतरेतृणं निधाय अमर्ष समन्विता उवाच)रावणके बचनसुनिकै सीता नीचे को मुख करि पर पुरुष भाषण असाक्षात् अनुचित बिचारि बीचमें तृणधरि क्रोध सहित बोलती भई ३१(राघवात् विभ्यतात्वया नूनंभिक्षुरूपं धृतम् राघवाभ्यांरहिते अध्वरेहविः शुनी इवत्वं)रघुनन्दनते डरमानि तूने निश्चय करिसंन्यासीको रूप धरिजब रघुनन्दन लक्ष्मण करिकै रहित आश्रममें यथायज्ञ भाग को कुत्ताले भागै तैसेतू ३२ (नीचमां हृतवानासि तत्फलं आचिरात्प्राप्स्यसे यदारामशराघात भवान वपुःविदारित) नीचतू मोको हरिलाये ताको फलशीघ्रही पैहै जबरघुनन्दन के बाणों करिकै तेरा शरीर विदारणकियाजायगा ३३ (यमस्य अंतिकमागमिष्यसि रामंमानुषं ज्ञायसेशरैःसमुद्रंशोषयित्वा अथवारिधिम् बध्वा) जबयम के पासको जैहै तबरामको मनुष्यजनिहै जबप्रभुआवैंगे तौबाणों करिकै समुद्रको शोषिलेइँगे अथवा समुद्रमें सेतु बांधिलेइँगे ३४ ॥

हत्वात्वांममरेरामोलक्ष्मणेनसमन्वितः ॥ आगमिष्यत्यसंदेहोद्रक्ष्यसेराक्षसाध म३५त्वांसपुत्रंसहबलंहत्वानेष्यतिमांपुरम् ॥ श्रुत्वारक्षःपतिःक्रुद्धोजानक्याःपरु षाक्षरम् ३६ वाक्यंक्रोधसमाविष्टःखड्गमुद्यम्यसत्वरः ॥ हंतुंजनकराजस्यतनयां ताम्रलोचनः ३७ मंदोदरीनिवार्याहपतिंपतिहितेरता॥त्यजैनांमानुषींदीनांदुःखि तांकृपणांकृशाम् ३८ देवगंधर्वनागानांबह्व्यःसंतिवरांगनाः ॥ त्वामेववरयंत्यु च्चैर्मदमत्तविलोचनाः ३९ ततोऽब्रवीद्दशग्रीवोराक्षसीर्विकृताननाः ॥ यथामेवश गासीताभविष्यतिसकामना ॥ तथायतध्वंत्वरितंतर्जनादरणादिभिः ४० ॥

राक्षसेपुअधमसमरेत्वांहत्वालक्ष्मणेनसमन्वितःरामःआगमिष्यतिद्रक्ष्यसेअसंदेहः) हे राक्षसनमें अ-धर्मसमर मे तोहिंमारिबे हेत लक्ष्मण सहित रघुनन्दन आवहिंगेतब देखिहै यामें संदेह नहीं है ३५ (सहबलंसपुत्रंत्वांहत्वामांपुरंनेष्यतिजानक्याःपरुपाक्षरम्वाक्यंश्रुत्वारक्षःपतिःक्रुद्धः) सहित सेना सहित पुत्रतोको मारिकै रघुनन्दन मोको अवधपुरको लैजॉयगे इतिजानकी के कहे कठोर वचनसु निकै राक्षसोंको राजारावण क्रोधित है ३६ (ताम्रलोचनःक्रोधसमाविष्टःजनकराजस्यतनयांहंतुंसत्व रःखड्गंउद्यम्य) लालह्वैगये नेत्रक्रोधभरा दुष्टजानकी को मारने हेत शीघ्रही तरवार खैंचिउदाव कर तामया ३७ (पतिहितेरतामंदोदरीनिवार्यआहदीनांदुःखितांकृपणांकृशांएनांमानुषींत्यज) पतिके हित में रतजो मंदोदरी सो पति को मना करि बोली हे नाथ दीन परवश दुःख पीड़ित पति बंधु हीन इति कृपण दुर्वल इस मानुपी को त्याग करौ ३८ (देवगंधर्वनागानां उच्चैःवरांगनाः बह्व्यः संतिमदमत्तविलोचनाः एवत्वांवरयंति) देवता गंधर्व नाग इत्यादि ऊंचे कुल करिकै उत्पन्न उत्तम स्त्री तुम्हारे बहुती हैं काम मद करि कै माते हैं नेत्र जिन के तौनी सर्व निश्चयकरि तुमहीं को वरती हैं भाव जो तुम्हारेही संग भोग की इच्छा राखे हैं तिन के साथ भोग करौ दीन मानुपी को क्यों सतावते हो ३९ (ततःविकृताननाराक्षसीः दशग्रीवः अब्रवीत् यथासीतासकामनामे वशगा भविष्यति तर्जनआदरणादिभिः तथात्वरितंयतध्वं) तदनंतर भयंकर हैं मुख जिनके तिनराक्षसिन सों रावण बोला कि जिस भांति सीता विषय कामना सहित मेरी वश होइ भय देखाय वा आदरादि उपाइ करिकै तैसी शीघ्रहीं यत्न करौ ४० ॥

द्विमासाभ्यन्तरेसीतायदिमेवशगाभवेत् ॥ तदासर्वसुखोपेताराज्यंभोक्ष्यतिसाम या ४१ यदिमासद्वयादूर्ध्वंमच्छय्यांनाभिनंदति ॥ तदामेप्रातराशायहत्वाकुरुत मानुषीम् ४२ इत्युक्त्वाप्रययौस्त्रीभिःरावणोंतःपुरालयम् ॥ राक्षस्योजानकीमेत्य भीषयंत्यःस्वतर्जनैः ४३ तत्रैकाजानकीमाहयौवनंतेवृथागतम् ॥ रावणेनसमासा द्यसफलंतुभविष्यति४४अपराचाहकोपेनकिंविलंबेनजानकीम् ॥इदानींछिद्यतामं गांविभज्यचपृथक्पृथक् ४५ अन्यातुखड्गमुद्यम्यजानकींहंतुमुद्यता ॥ अन्या करालवदनाविदार्यास्यमभीषयत् ४६ एवंतांभीषयंतीस्ताराक्षसीर्विकृताननाः ॥ निवार्यत्रिजटावृद्धाराक्षसीवाक्यमब्रवीत्४७ ॥

(द्विमासाभ्यंतरे यदि सीतामेवशगाभवेत् तदामयासासर्वसुखोपेताराज्यं भोक्ष्यति) दो मास

के बीच में जो सीता मेरी वशी भूत होय तब तौ सर्व प्रकार के सुखन सहित मेरे साथ राज्य भोग करै ४१ (यदिमासद्वयात् ऊर्ध्वंमत्शय्यांनअभिनंदति तदामेप्रातःआशायमानुषींमहत्वाकुरुत) जो दो मास ते अधिक बीति जाँय अरु मेरीशय्यामें आनन्द पूर्वक न आवे तौमेरे प्रातःकाल के भोजन हेत इस मानुषी को मारि पाक करौ ४२ (इतिउक्त्वारावणः स्त्रीभिःअंतःपुरालयम्प्रययौराक्षस्या एत्यस्वतर्जनैः जानकींभीषयत्यः) ऐसा कहि रावण स्त्रिन सहित राज महलको चलागया राक्षसी समीप जाय आपनी बुद्धि कल्पना करि अनेक दुखद उपायो करि के सीता को डरपावती हैं ४३ (तत्रएकाजानकींआहते यौवनंवृथागतंतु रावणेनसमासाद्य सफलंभविष्यति) तिनमें एकराक्षसी जानकी प्रति बोली कि हे राज कुमारी दुःखनेंपरी तुम्हारा यौवन वृथाही बीता जाता है पतिको आशात्यागि पुनः रावण को संग करो तौसफल होई ४४ (चक्रोपेनअपराआह विलंबेनकिंइदानीं जानकींछेद्येतांचपृथक्पृथक् अंगंविभज्य) पुनः कोप करिके और राक्षसी बोली कि विलंब करिकै क्या प्रयोजन है इसी समय जानकी को काटि पुनः अलग अलग सब अंग करि बाँटि खाँय ४५ (तुअन्याखड्गंउद्यम्य जानकींहन्तुं उद्यताअन्या करालवदना आस्यंविदार्य्यअभीषयत्) (पुनः और राक्षसी तरवारि खैंचि जानकी के मारिवे को उद्यत भई औरि भयंकर वदन वाली राक्षसी मुख पसारि डरावती है आव में ऐसेही खाय लेउँगी ४६ (एवंविकृताननाःताःराक्षसीतांभी षयंती त्रिजटावृद्धराक्षसी निवार्यवाक्यंअब्रवीत्) इस प्रकार भयंकर मुख वाली तौनरिाक्षसी तिन सीताको डरपावनी हैं तहां त्रिजटानामे एक वृद्धराक्षसी तो सबकोमनाकरि वचन बोली ४७ ॥

शृणुध्वंदुष्टराक्षस्योमद्वाक्यंवोहितंभवेत्॥नभीषयध्वंरुदतींनमस्कुरुतजानकीम्॥४८॥इदानीमेवमेस्वप्नेरामःकमललोचनः॥ आरुह्यैरावतंशुभ्रंलक्ष्मणेनसमागतः॥४९॥दग्ध्वालंकांपुरींसर्वांहत्वारावणमाहवे॥ आरोप्यजानकींस्वांकेस्थितोहृष्टोऽगमूर्धनि॥५०॥रावणोगोमयह्रदेतैलाभ्यक्तोदिगंबरः॥ आगाहत्पुत्रपौत्रैश्चकृत्वावदनमालिकाम्॥५१॥विभीषणस्तुरामस्यसन्निधौहृष्टमानसः॥ सेवांकरोतिरामस्यपादयोर्भक्तिसंयुतः॥५२॥सर्वथारावणंरामोहत्वासकुलमंजसा॥ विभीषणायाधिपत्यंदत्वासीतांशुभाननाम्॥५३॥

(दुष्टराक्षस्यःशृणुध्वंमत्वाक्यं वोहितंभवेत् रुदतींजानकींभीषयध्वंननमः कुरुत) त्रिजटा बोली हे दुष्टराक्षसिउ सुनो शोक समुद्र में बूड़त समय यही मेरावचन तुमको जहाज होवैगो दुःखपीडित रोवती हुई जानकी ताहि डरपावो न किंतु इसको नमस्कार करो ४८ (इदानीं एवस्वप्नेशुभ्रंऐरावतंआरुह्यकमल लोचनःरामःलक्ष्मणेनसमागतः) अभी निश्चयकरि मैने स्वप्नमें देखा किश्वेतवर्ण ऐरावत हाथीपर सवार कमल नयन रघुनन्दन लक्ष्मण सहित आयेहैं ४९ (लंकांपुरींसर्वांदग्ध्वाआहवेरावणंहत्वास्वअंकेजानकींआरोप्यहृष्टःअगमूर्धनिस्थितः) लंकापुरी सब भस्म करि संग्राममें सरेन रावणकोमारि राघवअपने अकोरामें जानकीका लैके आनन्दपूर्वक पर्वत परबैठेहैं ५० (रावणःदिगंबरःतैलाभ्यक्तःचवदनमालिकांकृत्वापुत्रपौत्रैःगोमयह्रदेआगाहत्) रावण नग्न तनमें तैललगाये पुनः अपने मूड़ोंकी माला बनाये हाथमें लिहे पुत्र पौत्रों करिकै सहित गोवरभरे कुंडमें बूड़ता उतराताहै ५१ (तुविभीषणःहृष्टमानसःरामस्यसन्निधौभक्तिसंयुतःरामस्यपादयोःसेवां करोति) पुनः विभीषण प्रसन्न मनसों रघुनाथजीके समीप बैठे भक्तिसहित अर्थात् स्वामी मानि

सेवक भावकी प्रीतिसों रघुनाथजीके पाँयनकी सेवाकरतेहैं इसरावणेको फल जो होनहार है सोसु
नो ५२ (सकुलंसबलंरावणंरामःअंजसाहत्वाविभीषणाय अधिपत्यंदत्वाशुभाननासीता) सहित
कुलसब सेना सहित रावणको रघुनन्दन शीघ्रही मारि विभीषण के अर्थ लंकाकी राज्य देवेंगे मंगल
मुखी जो श्रीजानकी जीहैं तिनहि ५३ ॥

अंकेनिधायस्वपुरींगमिष्यतिनसंशयः ॥ त्रिजटायावचःश्रुत्वाभीतास्ताराक्षस
स्त्रियः ५४ तूष्णीमासंस्ततस्तत्रनिद्रावशमुपागताः ॥ तर्जितराक्षसीभिःसासी
ताभीतातिविह्वला ५५ त्रातारंनाधिगच्छंतीदुःखेनपरिमूर्च्छिता ॥ अश्रुभिः
पूर्णनयनाचिंतयंतीदमब्रवीत् ५६ प्रभातेभक्षयिष्यंतिराक्षस्योमांनसंशयः ॥
इदानीमेवमरणंकेनोपायेनमेभवेत् ५७ एवंसुदुःखेनपरिप्लुतासाविमुक्तकंठंरुद
तीचिराय॥आलंब्यशाखांकृतनिश्चयामृतौनजानतीकंचिदुपायमंगना ५८ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंबादेसुंदरकांडेद्वितीयःसर्गः २ ॥

(अंकेनिधायस्वपुरींगमिष्यतिसंशयःनात्रिजटायावचःश्रुत्वाराक्षसस्त्रियःभीतास्ताः) जानकी को
अकोरामें लैके रघुनन्दन आपनी पूरीको जांयगे यामें संशय नहीं आलजो इन को दुःखदेरहोगी
तो रावण मरे पीछे तुम्हारी क्यादशा होइगी इत्यादि त्रिजटाके वचन सुनिराक्षसी डरायउठी सब
५४ (तूष्णीमासंस्ततस्तत्रनिद्रावशउपागताःराक्षसीभिःतर्जितासासीताभीताअतिविह्वला) सबराक्ष
सी चुपहूवै बैठी जहां कि तहां नींदके वशको प्राप्तभई सबसोइगई सब राक्षसिन करिकै डरपाईहूई
सो जानकी भय करिकै व्याकुलहैं ५५ (त्रातारंअधिनगच्छंतीदुःखेनपरिमूर्च्छिताचिंतयंतीअश्रुभिः
पूर्णनयनाइदंअब्रवीत्) इस समय रक्षाकरवेहारा किसीको नहीं पावती अतिदुःखकरिकै मूर्च्छित
अंतरमें चिंतवनकरती आंसूनकरिकै भरेनेत्र ऐसा वचन बोली ५६ (प्रभातेराक्षस्यःमांभक्षयिष्यंति
संशयःनइदानींएवमेमरणंकेनउपायेनभवेत्) प्रातहोतही राक्षसी मोको भक्षण करिहैंगी ताते
इसी समयमें मेरामरण कौन उपाय करिकै होय सोकरौं ५७ (एवंसासुदुःखेनपरिप्लुताविमुक्तकंठं
चिरायरुदतीसुतौनिश्चयाकृतशाखांआलंब्यअंगनाकंचित्उपायंनजानती) इसी प्रकारसों सीता
दुःखकरिकै परिपूर्ण कंठखोलि बहुत बारतक रोवतरहीं मरणमें निश्चयकरि वृक्षकी शाखागहे खड़ी
रही उपाय खोजैंहैं ताते मरणेकी कछु उपाय नहीं जानती हैं तौ क्याकरैं ५८ ॥

इति श्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतरामजैनाथविरचिते
अध्यात्मभूषणेसुंदरकांडेद्वितीयःप्रकाशः २ ॥

उल्लंघनेनवामोक्ष्येशरीरंराघवंविना ॥ जीवितेनफलंकिंस्यान्ममरक्षोधिमध्यतः १
दीर्घवेणीममात्यर्थमुद्बंधनायभविष्यति ॥ एवंनिश्चितबुद्धिंतांमरणायाथजानकी
म् २ विलोक्यहनुमान्किंचिद्विचार्यैतदभाषत ॥ शनैःशनैःसूक्ष्मरूपोजानक्याः
श्रोत्रगंवचः ३ इक्ष्वाकुवंशसंभूतोराजादशरथोमहान् ॥ अयोध्याधिपतिस्तस्य
चत्वारोलोकविश्रुताः ४ पुत्रादेवसमास्सर्वेलक्षणैरुपलक्षिताः ॥ रामश्चलक्ष्मण
श्चैवभरतश्चैवशत्रुहा ५ ॥

सवैया ॥ सियसोंबतराय उजारिवनै बहुराक्षस वृंदसँहारभयो । शरसेनपती सुतमंत्रिनहू पुनि अक्ष कुमारहु प्राणहयो ॥ त्यहिवन्धुचलो बलवीरभिरो त्यहिसाथ महाकपि युद्धकयो । वरफांसबँधे हनुमन्त लिये घननादतहाँ पितु पास गयो ॥ (राघवंविनारक्षोधिमध्यतोममजीवितेनकिंफलंस्यात् उद्बंधनेनवाशरीरंमोक्ष्ये) शिवजी कहत हे गिरिजा अब जानकी जी अपने मनमें विचारती हैं कि रघुनंदन बिना राक्षसिनि के बीचमें मोको जीवन करिकै क्या फल है भाव एकदिन मरनैतौ है ताते गले में फँसरी बांधि करिकै शरीरको छाडिदेउ (ममवेणीअत्यर्थंदीर्घाउद्बंधनायभविष्यतिएवंमरणायनिश्चितबुद्धिंअथतांजानकीम्) मेरे शिरके बारोंकी वेणी अत्यंतलम्बी है सोई फसरी बांधने केअर्थ होइगी इसप्रकार मरने के अर्थ निश्चय किया जिन्होंने ऐसीजो सीताहैं तिनहिं१।२ (हनुमान् विलोक्य किंचित्विचार्यसूक्ष्मरूपःजानक्याःश्रोत्रगं वचःशनैःशनैःएतत्अभाषत्) जानकीजीकोदुखितहनुमान् देखि कछुवार विचारकीन्हें भाव कैसे वार्ता करौंपुनःछोटेरूपते कैसा बोले जो जानकी जीके कानमें सुनिपरै ऐसे वचन धीरा धीरा ऐसाकहे ३ (इक्ष्वाकुवंशसंभूतःमहान्राजादशरथःअयोध्याअधिपतिःतस्यलोकविश्रुतःचत्वारः) इक्ष्वाकुवंश में उत्पन्न महात्मा राजादशरथ अयोध्यापुरी के पति तिनके लोकमें प्रसिद्धचारि ४ (पुत्राःसर्वैलक्षणैःउपलक्षिताःदेवसमाःरामःचलक्ष्मणःचएवभरतःचएवशत्रुहा) चारिपुत्र नीति धर्म उदारता बलवीरता तेजप्रतापादि सब लक्षणनकरिकै युक्त देवतोंके तुल्य हैं राम पुनः लक्ष्मण पुनः तैसेही भरत पुनः शत्रुघ्न इतिचारि पुत्रभये ५ ॥

ज्येष्ठोरामःपितुर्वाक्याद्दण्डकारण्यमागतः ॥ लक्ष्मणेनसहभ्रात्रासीतयाभार्यया सह ६ उवासगौतमीतीरेपंचवट्यांमहामनाः॥ तत्रनीतामहाभागासीताजनकनंदिनी ७ रहितेरामचंद्रेणरावणेनदुरात्मना ॥ ततोरामोऽतिदुःखार्तोमार्गमाणोथ जानकीम् ८ जटायुषंपक्षिराजमपश्यत्पतितंभुवि ॥ तस्मैदत्त्वादिवंशीघ्रंऋष्यमूकमुपागमत् ९ सुग्रीवेणकृतामैत्रीरामस्यविदितात्मनः ॥ तद्भार्याहारिणंहत्वावालिनंरघुनंदनः १०राज्येभिषेच्यसुग्रीवंमित्रकार्यंचकारसः॥ सुग्रीवस्तुसमानाय्यवानरान्वानरप्रभुः ११ ॥

(ज्येष्ठोरामःसीतयाभार्ययासहभ्रात्रालक्ष्मणेनसहापितुःवाक्यात्दण्डकारण्यंआगतः) चारि में ज्येष्ठराम सीता नामे अपनीभार्या सहित छोटभाई लक्ष्मण सहित पिताके वचन ते दण्डकवनको आये ६ (गौतमीतीरेपंचवट्यांमहामनाःउवास) दण्डकवन में गौतमी नदीके तीरपंचवटी विषे जानकी लक्ष्मणसहित महाउदारमन रघुनन्दन वास करतेभये ७ (तत्ररामचंद्रेणरहितेमहाभागा जनकनंदिनीसीतादुरात्मनारावणेननीता) तहां रामचन्द्रकरिकै रहित सूने आश्रममें महाभागवती जनकपुत्री सीता सो दुष्टात्मा रावण करिकै हरीगई ८ (ततःअतिदुःखार्तःरामःजानकीं मार्गमाणः अथपक्षिराजंजटायुषंभुविपतितंअपश्यत्तस्मैशीघ्रंदिवंदत्त्वाऋष्यमूकंउपागमत्) तदनंतर अत्यन्त दुःख करिकै आरत रघुनंदन जानकी को ढूंढतेहुये तहां मार्गमें पक्षिनको राजा जटायु को घायल भूमि में परादेखे ताके अर्थ शीघ्रहीस्वर्ग वास देकै रघुनंदन ऋष्यमूक पर्वतपर गये९ (विदितात्मनः रामस्यसुग्रीवेणमैत्रीकृतातत्भार्याहारिणंवालिनंरघुनंदनःहत्वा) विदित है आत्माजिनकी ऐसे राम के साथ सुग्रीवने मित्रता किया तिससुग्रीव की स्त्रीको हरि लेनेवालाजो बाली ताहि रघुनंदनमारिकै १० (राज्येसुग्रीवंअभिषेच्यसःमित्रकार्यंचकारतुवानरप्रभुःसुग्रीवःवानरान्समानाय) वानरों की

राज्य विषेसुग्रीवको अभिषेक किये इत्यादि सो रघुनंदन मित्र सुग्रीव को कार्यकरते भये पुनःरघुनंदन के कार्य हेत वानरों को राजासुग्रीव सबलोक के वानरों को अपनी राजधानी को बोलाया है किष्किंधामें जमाकरिकै ११॥

प्रेषयामासपरितोवानरान्परिमार्गणे ॥ सीतायास्तत्रचैकोऽहंसुग्रीवसचिवोहरिः १२ संपातिवचनाच्छीघ्रमुल्लङ्घ्यशतयोजनम् ॥ समुद्रंनगरींलंकांविचिन्वन्जानकींशुभां १३ शनैरशोकवनिकांविचिन्वन्शिंशपातरुम् ॥ अद्राक्षंजानकीमत्र शोचंतींदुःखसंप्लुताम् १४ रामस्यमहिषींदेवींकृतकृत्योहमागतः ॥ इत्युक्त्वोपरराम थमारुतिर्बुद्धिमत्तरः १५ सीताक्रमेणतत्सर्वंश्रुत्वाविस्मयमाययौ ॥ किमिदंमेश्रुतंव्योम्निवायुनासमुदीरितम् १६ स्वप्नोवामेमनोभ्रांतिर्यदिवासत्यमेवतत् ॥ निद्रामेनास्तिदुःखेनजानाम्येतत्कुतोभ्रमः १७ येनमेकर्णपीयूषंवचनंसमुदीरितम् ॥ सदृश्यतांमहाभागःप्रियवादीममाग्रतः १८ ॥

(सीतायाःपरिमार्गणेपरितःवानरान्प्रेषयामासतत्रचएकःहरिःअहंसुग्रीवसचिवः) सीताके ढूँढने निमित्त सुग्रीव सब दिशनको वानरन को पठावता भया तिनमें एक वानर मैंभी सुग्रीव को मंत्री हों १२ (संपातिवचनात्शतयोजनंसमुद्रंशीघ्रंउल्लंघ्यलंकांनगरींशुभाम्जानकींविचिन्वन्) संपातिके वचनते सौयोजन समुद्र को शीघ्रही नांघि के लंकानगरीमें मंगलरूप जानकी को ढूंढत संते १३ (शनैःविचिन्वन्अशोकवनिकांअत्रशिशपातरुंदुःखसंप्लुतांशोचंतींजानकींअद्राक्षम्) धीरा धीरा ढूंढत संते अशोक वनिकामें इहां शीशम वृक्षके तरेदुःखकी भरीहुई शोचती जानकी को देख्यों १४ (रामस्यमहिषींदेवीं अहंकृतकृत्यःआगतःइतिउक्त्वाअथबुद्धिमत्तरःमारुतिःउपरराम) रामकीपाट महिषी देवी को देखि मैं कृतार्थभयों ऐसा कहि अब बुद्धिमान् मरुत नंदन हनुमान् चुप ह्वै रहे १५ (तत्सर्वं क्रमेणश्रुत्वासीताविस्मयंआययौव्योम्निवायुनासंउदीरितंइदंमेकिंश्रुतं) जो हनुमान् कहे सो सब क्रम करिकै आदिते अंत तक सुनिकै सीता आश्चर्य को प्राप्त भई विचारती हैं कि आकाशसे पवन का कहाहुआ यह मैंने क्या सुना १६ (सत्यंवामेमनःभ्रांतिःवायदिस्वप्नःदुःखेनमेंनिद्रानास्तिजानामिएतत्भ्रमःकुतः) यह सत्यही किसीने कहावा मेरे मनमे भ्रांति है अथवा जो स्वप्न है तौ दुःखकरिकै मोको निद्रानहीं आती तौ स्वप्न कैसा पुनः सब बात जानतीहौं तौ यह भ्रांति कैसे है ताते सत्यही कोई कहाहै इति निश्चय करि बोली १७ (मेकर्णपीयूषवचनंयेनसमुदीरितंसप्रियवादी महाभागः ममाग्रतःदृश्यताम्) मेरे कर्णोंको अमृततुल्य वचन जिसने कहा है सो प्रिय वचन बोलेने वाला महाभागीमेरे आगे प्रसिद्ध ह्वै देखिपरे १८॥

श्रुत्वातज्जानकीवाक्यंहनुमान्पत्रखण्डतः ॥ अवतीर्यशनैःसीतापुरतःसमवस्थितः १९ कलविंकप्रमाणांगोरक्तास्यःपीतवानरः ॥ ननामशनकैःसीतांप्रांजलिःपुरतःस्थितः २० दृष्ट्वातंजानकीभीतारावणोऽयमुपागतः ॥ मांमोहयितुमायातो माययावानराकृतिः २१ इत्येवंचिंतयित्वासातूष्णीमासीदधोमुखी॥ पुनरप्याहतां सीतांदेवियत्त्वंविशंकसे २२ नाहंतथाविधोमातस्त्यजशंकांमयिस्थिताम् ॥ दासो

हंकोशलेन्द्रस्यरामस्यपरमात्मनः २३ सचिवोऽहंहरीन्द्रस्यसुग्रीवस्यशुभप्रदे ॥
वायोःपुत्रोऽहमखिलप्राणभूतस्यशोभने २४ ॥

(जानकीवाक्यंश्रुत्वाशनैःपत्रखंडतःअवतीर्य हनुमान्सीतापुरतःसमवस्थितः) जानकी जीको वचन सुनि धीरा धीरा समूह पत्तों ते उतरि हनुमान् सीता के आगे आय स्थितभये १९ (कलविंकप्रमाणअंगःपीतवानरःरक्तआस्यःशनकैःपुरतःस्थितःप्रांजलिःसीतांननाम) घरके रहने वाले पक्षीगौरौवा बरावरि सर्वांग पीतवर्ण को वानर लाल मुख ऐसे रूपते हनुमान् धीरा धीरा आगे समीप जाय हाथजोरि सीताजीको प्रणाम कीन्हे २० (तंदृष्ट्वाजानकीभीताअयंरावणःमाययावानराकृतिःमांमोहयितुंउपागतआयातः) तिन हनुमान् को देखि जानकी डरायउठीं कि यह रावण है माया करिकै वानराकार बनि मोको मोहिवेहेत समीप आया २१ (इतिएवंचिंतयित्वासाअधोमुखीतूष्णींआसीत्तांसीतांपुनःअपिआहदेवियत्त्वंविशंकसे) इस प्रकार चिंतवन करि सो सीता नीचे को मुख करि चुप ह्वै बैठीतिन सीता प्रति पुनः भी हनुमान् बोले हे देवि जो तुम शंका करती हौ कि यह मायावी रावण है २२ (तथाविधःअहंनमातःमयिस्थिताम् शंकांत्यजपरमात्मनः कोशलेन्द्रस्यरामस्य अहंदासः) जो शंका किहेउ तिस विधिको मैं नहीं हौं हेमातः मेरे विषे जो स्थापित किहे हौ सो शंका त्याग करौ क्योंकि परमात्मा कोशलेंद्ररघुनंदन को दास हौं २३ (शुभप्रदेहरीन्द्रस्यसुग्रीवस्य अहंसचिवःशोभने अखिलप्राणभूतस्यवायोपुत्रःअहं) हे कल्याण को देनहारी वानरन के राजा सुग्रीव तिनको मैं मन्त्री हौं हे शोभने सम्पूर्ण जगत्को प्राण पवन तिनको पुत्र मैंहौं २४ ॥

तच्छ्रुत्वाजानकीप्राहहनूमंतंकृतांजलिम् ॥ वानराणांमनुष्याणांसंगतिर्घटतेकथम् २५ यथात्वंरामचन्द्रस्यदासोऽहमितिभाषसे ॥तामाहमारुतिःप्रीतोजानकींपुरतःस्थितः २६ ऋष्यमूकमगाद्रामःशवर्यानोदितःसुधीः॥ सुग्रीवोऋष्यमूकस्थोदृष्टवान्रामलक्ष्मणौ २७ भीतोमांप्रेषयामासज्ञातुंरामस्यहृद्गतम् ॥ ब्रह्मचारिवपुर्धृत्वागतोऽहंरामसंनिधिम् २८ ज्ञात्वारामस्यसद्भावंस्कंधोपरिनिधायतौ ॥ नीत्वासुग्रीवसामीप्यंसख्यंचाकारवंतयोः२९ सुग्रीवस्यहृताभार्यावालिनातंरघूत्तमः ॥ जघानैकेनबाणेनततोराज्येभ्यषेचयत् ३० सुग्रीवंवानराणांसःप्रेषयामासवानरान् ॥ दिग्भ्योमहाबलान्वीरान्भवत्याःपरिमार्गणे ३१ ॥

(तत्श्रुत्वाकृतांजलींहनुमंतंजानकीप्राह मनुष्याणांवानराणांसंगतिःकथंघटते) सो सुनिकै हाथ जोरेहुये जो हनुमान तिनप्रति जानकीबोलीं कि मनुष्योंकी अरु वानरोंकी संगति कौन प्रकार ह्वै सक्ती है २५ यथात्वंइतिभाषसेअहंरामचन्द्रस्यदासः प्रीतःमारुतिःपुरतःस्थितःतांजानकींआह) जैसे तू ऐसाकहे कि मैं रामचन्द्रको दासहौं यह संगति कैसे भई सो कहु तव प्रीतिपूर्वक पवनपुत्र आगे खड़ेह्वै तौन हाल जानकीप्रति कहनेलगे २६ (शवर्यानोदितः सुधीरामःऋष्यमूकं अगात्ऋष्यमूकस्थःसुग्रीवःरामलक्ष्मणौदृष्टवान्) शवरीके कहेते सुबुद्धीरघुनन्दन ऋष्यमूकपर्वतको आवतेरहैं ऋष्यमूकपरबैठेहुये सुग्रीव राम लक्ष्मणको आवतेदेखा २७ (भीतःरामस्यहृद्गतम्ज्ञातुंमांप्रेषयामास ब्रह्मचारिवपुःधृत्वाअहंरामसन्निधिंगतः) सुग्रीवडरायकै रामके हृदयकी वात जानिवेहेत मोको पठावतेभये ब्रह्मचारीरूपधरि मैं रघुनन्दनके समीपगया २८ (रामस्यसत्भावंज्ञात्वातौस्कंधेउपरि

निधायसुग्रीवसामीप्यंनीत्वातयोःसख्यंचकारवं) रघुनन्दनको सत्भावजानिकै राम लक्ष्मण दोऊको अपनेकांधे ऊपरचढ़ाय सुग्रीवके समीपकोलायों तिनकेसाथ सुग्रीवने मित्रताकिया २९ (वालिना सुग्रीवस्यभार्याहृतातंरघूत्तमःएकेनवाणेनजघान ततः वानराणांराज्येसुग्रीवंअभ्यपेचयत्) बालीने सुग्रीवकीभार्याकोहरिलिया तिसवालीको रघुनन्दन एकहीवाणकरिकैमारे तदनन्तर वानरोंकी राज्य में सुग्रीवको अभिषेककिये ३० (सःभवत्यापरिमार्गणेमहावलान्वीरानवानरान्दिग्भ्योप्रेषयामास) सो सुग्रीव तुम्हारे ढूंढनेहेत महावली वीरवानरनको सब दिशनको पठावतेभये ३१ ॥

गच्छंतंराघवोदृष्ट्वामामभाषतसादरम् ॥ त्वयिकार्यमशेषंमेस्थितंमारुतनंदन३२ ब्रूहिमेकुशलंसर्वंसीतायैलक्ष्मणस्यच ॥ अंगुलीयकमेतन्मेपरिज्ञानार्थमुत्तमम् ३३सीतायैदीयतांसाधुमन्नामाक्षरमुद्रितम् ॥ इत्युक्त्वाप्रददौमह्यंकराग्रादंगुलीयकम् ३४ प्रयत्नेनमयानीतंदेविपश्यांगुलीयकम् ॥ इत्युक्त्वाप्रददौदेव्यैमुद्रिकांमारुतात्मजः ॥ नमस्कृत्वास्थितोदूराद्बद्धांजलिपुटोहरिः ३६ दृष्ट्वासीताप्रमुदितारामनामांकितांतदा॥ मुद्रिकांशिरसाधृत्वास्रवदानंदनेत्रजा ३७ कपेमेप्राणदातात्वंबुद्धिमानसिराघवे ॥ भक्तोसिप्रियकारीत्वंविश्वासोऽस्तितवैवहि ३८ ॥

(गच्छंतंदृष्ट्वाराघवःसादरम्मांअभाषत) चलत समय देखिकै रघुनन्दनसहित आदरमोंप्रति बोले ३२ (मारुतनन्दनमेअशेषंकार्यंत्वयिस्थितंलक्ष्मणस्यचमेसर्वंकुशलंसीतायैब्रूहि) रघुनन्दनकहे कि हे मारुतनंदन मेरा सम्पूर्ण कार्य तुमविषे स्थितहै भावसवकार्य तुमहींकरिहौ ताते लक्ष्मणकी पुनः मेरी सब भांतिकी कुशल सीताके अर्थसुनायउ ३३ (साधुमन्नामाक्षरमुद्रितम्एतत्मेअंगुलीयकम् उत्तमम्परिज्ञानार्थंसीतायैदीयताम्) हे साधुहनुमान् मेरेनामके अक्षरनकरिकै अंकित यह मेरीमुद्रिका उत्तमलैजाउ ताको अपने पहिचानकरावनेकेहेत सीताके अर्थदेना ३४ (इतिउक्त्वाकराग्रात्अंगुलीयकम्मह्यंप्रददौप्रयत्नेनमयानीतंदेविअंगुलीयकम्पश्य) ऐसाकहि रघुनन्दन अपनी अँगुरीते उतारिमुद्रिका मेरेअर्थदेतेभये ताहियत्नपूर्वक मैनेलाया हे देवि मुद्रिकाको देखिये ३५ (इतिउक्त्वामारुतात्मजःमुद्रिकांदेव्यैप्रददौबद्धांजलिपुटःहरिःदूरात्नमस्कृत्वास्थितः) ऐसाकहि मारुतनन्दन मुद्रिकाको जानकीदेवी के अर्थ दै देतेभये पुनः हाथजोरि हनुमान दूरिहीते नमस्कारकरि-खड़ेभये ३६ (तदारामनामांकितामुद्रिकांदृष्ट्वामुदितासीताशिरसाधृत्वाआनंदनेत्रजास्रवत्) ता समयमें रामनामकरिकै चिह्नित जो मुद्रिकाताहिदेखि मनमें हर्ष सहित मुद्रिकाको शीशपरधरि प्रेमानन्द आंशु नेत्रनतेगिरनेलगे ३७(कपेत्वंमेप्राणदाताबुद्धिमानसित्वंप्रियकारीराघवेभक्तोसितवएवहिविश्वासःअस्ति) हे कपि तू मेरे प्राणदेनेवाला वड़ाबुद्धिमानहसि प्रियकार्यकरनेवाला रघुनंदन विषे परमभक्त हसि इसीते तुम्हारेविषे रघुनन्दनकी विश्वासहै निश्चयकरि ३८ ॥

नोचेन्मत्सन्निधिंचान्यंपुरुषंप्रेषयेत्कथम् ॥ हनूमन्दृष्टमाखिलंममदुःखादिकंत्वया ३९ सर्वंकथयरामाययथामेजायतेदया ॥ मासद्वयावधिप्राणाःस्थास्यंतिममसत्तम ४० नागमिष्यतिचेद्रामोभक्षयिष्यतिमांखलः ॥ अतःशीघ्रंकपीन्द्रेनसुग्रीवेणसमन्वितः ४१ वानरानीकपैःसार्द्धंहत्वारावणमाहवे ॥ सपुत्रंसवलंरामोयदिमांमोचयेत्प्रभुः ४२ तत्तस्यसदृशंवीर्यंवीरवर्णयवर्णितम् ॥ यथामांतारयेद्रामोह

त्वाशीघ्रंदशाननम् ४३ तथायतस्वहनुमन्वाचाधर्ममवाप्नुहि ॥ हनुमानपितामा
हदेविदृष्टोयथामया ४४ रामःसलक्ष्मणःशीघ्रमागमिष्यतिसायुधः ॥ सुग्रीवेणस
सैन्येनहत्वादशमुखंबलात् ४५ ॥

(नोचेत्अन्यंपुरुषंमत्सन्निधिंचकथंप्रेषयेत् हनूमान्ममदुःखादिकं अखिलंत्वयादृष्टं) नाहींतो अन्यप्राकृत पुरुष को मेरे समीप को रघुनन्दन कैसे पठावते हे हनूमान् मेरा दुःखादिक संपूर्ण हाल तुमने देखा है ३९ (रामायसर्वंकथय यथामेदयाजायते सत्तममासद्वयावधिममप्राणाःस्थास्यंति) रघुनाथजी के अर्थ मेरा सब हाल ऐसी भांति कहेउ जिसते मेरे ऊपर प्रभु की दया उत्पन्न होय हेहनूमान् परसोत्तम दुइ मास तक मेरे प्राण शरीर में स्थितरहि सके हैं ४० (चेत्रामःनआगमिष्यति खलःमांभक्षयिष्यति अतःकपींद्रेणसुग्रीवेण समन्वितःशीघ्रं) कदाचित् दो मास के भीतर रघुनन्दन न आवहिं गे तौ खल रावण मोको भक्षण करि लेइगो इसकारण ते कपिराज सुग्रीव करिकै सहित शीघ्रहीं ४१ (वानरानीकपैःसार्द्धंरामः प्रभुःसपुत्रंसबलंरावणं आह वेहत्वामांमोचयत्) वानरी सेना सेना पतिन करिकै सहित रघुनन्दन प्रभु इहां आयकै सहित पुत्र सहितसेना रावणको संग्राममें मारैं जो मोको इस संकटते छुड़ावा चाहैं ४२ (वीरवर्णितंतस्यसदृशं तत्वीर्यंवर्णय यथारामःशीघ्रंदशाननम् हत्वामांतारय) हेमहाबीर यज्ञ रक्षा धनुभंग परशुराम पराजय खर वध इत्यादि पूर्व को जो प्रभुको बल लोकमें वर्णनह्वै रहा है ताहीकी तुल्यसो बल वर्णन किहेउ जिस प्रकाररघुनन्दन शीघ्रहीं रावण को मारि मोको शोक सिंधुते पारकरैं ४३ (हनुमत्तथायतस्ववाचाधर्मंआप्नुहि हनुमान्अपितांआह देविमयायथादृष्टः) हे हनुमत् जैसे मेरा उद्धार होय तैसेही यत्न करना यामें तुम वाचा धर्म को प्राप्त होउगे भाव वचन द्वारातुम को धर्म होइगो तब हनुमान् भी जानकी प्रति बोले हे देवि मैंने जैसे उद्यत प्रभु को देखा है ताते ऐसा अनुमान होत ४४ (ससैन्येनसुग्रीवेण सलक्ष्मणःसायुधःरामःशीघ्रं आगमिष्यति बलात्दशमुखंहत्वा) सहित सैन्य सुग्रीव सहित लक्ष्मणसहित हथियारन सहित रघुनन्दन शीघ्रही आवैंगे अपनेबलते रावण को मारिकै ४५ ॥

समानेष्यतिदेवित्वामयोध्यांनात्रसंशयः ॥ तमाहजानकीरामःकथंवारिधिमातत
म् ४६ तीर्त्वायास्यत्यमेयात्मावानरानीकपैःसह ॥ हनुमानाहमेस्कंधावारुह्यपु
रुषर्षभौ ४७ आयास्यतःससैन्यश्चसुग्रीवोवानरेश्वरः ॥ विहायसाक्षणेनैवतीर्त्वा
वारिधिमाततम् ४८ निर्दहिष्यतिरक्षौघान्त्वत्कृतेनात्रसंशयः ॥ अनुज्ञांदेहिमे
देविगच्छामित्वरयान्वितः ४९ द्रष्टुंरामःसहभ्रात्रात्वरयामितवांतिकम् ॥ देविकिं
चिदभिज्ञानंदेहिमेयेनराघवः ५० विश्वसेन्मांप्रयत्नेनततोगंतासमुत्सुकः ॥ ततः
किंचिद्विचार्याथसीताकमललोचना ५१ ॥

(देवित्वांअयोध्यांसंआनेष्यति अत्रसंशयःन) हे देवि जानकी तुमको प्रभु अयोध्या को लैजाँयगे यामें संशय नहीं है ४६ (तंसीताआहवानरानीकपैः सहअमेयात्मारामः आततम्वारिधिंकथंतीर्त्वा आयास्यति) तिन हनुमान् प्रति जानकी बोलीं कि अप्रमाण आत्मा रघुनन्दन बानरी सेना सहित ऐसे भारी विस्तार समुद्र को कैसे उतरि कै आवहिंगे ४७ (हनुमान्आहमेस्कंधौ आरुह्यपुरुषर्षभौ आयास्यतःच ससैन्यवानरेश्वरः सुग्रीवःविहाय साक्षणेनैव आततंवारिधिंतीर्त्वा) हनुमान् बोले कि

मेरे कांधों पर चढ़ि पुरुषोंमें उत्तम राम लक्ष्मण आवहिंगे पुनः सहित सेना वानरोंके राजा सुग्रीव स्वबल ते आकाश मार्ग करिके क्षणै भरे में विस्तार युत समुद्र को उतरि पार चले आवहिंगे ४८ (स्वत्कृतेरक्षौघान् निर्दहिष्यति अत्रसंशयःन देविमेअनुज्ञांदेहि त्वरयान्वितःगच्छामि) हनुमान्बोले हेमात. तुम्हारे हेत राक्षस समूहन को रघुनाथ जी भस्म करि देइँगे इसमें संशय नहीं है हेदेवि अब मोको प्रभु पास जाने की आज्ञा दीजिये शीघ्रता युत जॉउ गो ४९ (सहभ्रात्रारामः द्रष्टुं तव अंतिकमृत्वरयामि देविकिंचित् अभिज्ञानंमेदेहि येनराघवः मांविश्वसेत्) सहित भ्राता लक्ष्मण रघुनन्दन के देखने को मोको आतुरता है उहां ते पुनः तुम्हारे पास को शीघ्रही आवेंगो हे देवि अब कछु चिह्न की वस्तु मोको दीजिये जिस करिके रघुनन्दन मेरी बिश्वास करें ५० (ततः प्रयत्नेनसंउत्सुकः गंताततःकमललोचनः सीताकिंचिद्विचार्याथ) तदनन्तर आपकी दीहुई वस्तुको यत्नपूर्वक गुप्त राखे उत्कंठा सहित प्रभुके पास जाउँगो इति सुनि तदनन्तरकमलसमनेत्रहैं जिनके ऐसी जो सीता सो मनमें कछु विचार करिके भाव कौन भूषण देवें इति विचारि तब ५१॥

विमुच्यकेशपाशांतेस्थितंचूडामणिंददौ ॥ अनेनविश्वसेद्रामस्त्वांकपींद्रसलक्ष्मणः ५२ अभिज्ञानार्थमन्यच्चवदामितवसुव्रत ॥ चित्रकूटगिरौपूर्वमेकदारहसिस्थितः ५३ मदंकेशिरआधायनिद्रातिरघुनन्दनः॥ ऐंद्रःकाकस्तदागत्यनखैस्तुंडेनचासकृत् ५४ मत्पादांगुष्ठमारक्तंविददारामिषाशया ॥ ततोरामःप्रबुद्ध्याथ दृष्ट्वापादंकृतव्रणम् ५५ केनभद्रेकृतंचैतद्विप्रियंमेदुरात्मना ॥ इत्युक्त्वापुरतोपश्यद्वायसंमांपुनःपुनः ५६ अभिद्रवंतंरक्तास्यंनखतुंडंचुकोपह ॥ तृणमेकमुपादायदिव्यास्त्रेणाभ्ययोज्यतत् ॥ चिक्षेपलीलयारामोवायसोपरितज्ज्वलत् ५७ ॥

(केशपाशांतेस्थितंचूडामणिंविमुच्यददौकपींद्रअनेनसलक्ष्मणःरामःत्वांविश्वसेत्) जूड़ामें स्थित जो चूड़ामणि ताहि छोरिके जानकीजी देतीभई पुनः बोली हेकपि नायक हनुमान् इसमणि करिके सहित लक्ष्मण रघुनंदन तुम विषे विश्वास करेंगे ५२ (चसुव्रततवअभिज्ञानार्थंअन्यत्वदामिपूर्वंचित्रकूटगिरौएकदारहसिस्थितःरघुनंदनमत्अंकेशिरआधायनिद्राति) सुंदर ब्रह्मचर्य व्रतधारण करनेवाले इति हेसुव्रत हनूमान् तुमको पहिचान देने हेत और कछुगुप्तवार्त्ता मैं कहतीहौं सुनो पूर्वकाल चित्र कूट पर्वतमें एकांत में बैठेहुये रघुनंदन मेरे अकोरामें शिरकोधरि निद्राको प्राप्तभये ५३ तदाऐंद्रःकाकःआगत्यआमिषाशयाआरक्तंमत्पादांगुष्ठंनखैःचतुण्डेनअसकृत् विददार) ताहीसमय इंद्रको पुत्रका करूपते आवामांसकी आशाकरिके लालवर्ण मेरेपायँनको अंगुष्ठा देखि ताहिनखौं करिकै पुनःचोच करिकै वारम्वार विदारन अर्थात् घावकरि देताभया ५४ (ततःरामःप्रबुद्ध्यअथकृतव्रणम्पादंदृष्ट्वाभद्रे एतत्मेविप्रियंदुरात्मनाकेनकृतं) तदन्तर रघुनंदन जागे तब कियागया है घावजामें ऐसाजो मेरा पांव ताहि देखिमो प्रतिबोले हे कल्याण रूपेयह तेरेपद अंगुष्ठको विदारण रूपमेरा अप्रिय कार्य को दुष्टात्मा किसनेकिया ५५(इतिउक्त्वापुरतःनखचोंचरक्तआस्यंमांपुनः पुनःअभिद्रवंतंवायसंअपश्यत् चुकोपह) ऐसा कहि आगेदृष्टि कियेतहां रक्तभरे नखचोंच मुखलालहै जाको मेरी दिशि वारम्वारधावताहुआ काकको देखि रघुनंदन कोप करतेभये तब ५६ (एकंतृणंआदायदिव्यअस्त्रेणाभ्य योज्यतत् लीलयारामःवायसस्यउपरिचिक्षेपतत्ज्वलत्) एक तृणलैके दिव्य ब्रह्मास्त्रमंत्रसों मंत्रित करि सो लीलामात्र रघुनंदन उसीकाक के ऊपर छांड़ि दिये सो अग्निवत् वरताहुआ ५७॥

अभ्यद्रवद्वायसश्चभीतोलोकान्भ्रमत्पुनः ॥ इन्द्रब्रह्मादिभिश्चापिनशक्योरक्षितुं तदा ५८ रामस्यपादयोरग्रेऽपतद्भीत्यादयानिधेः ॥ शरणागतमालोक्यरामस्त मिदमब्रवीत् ५९ अमोघमेतदस्त्रंमेदत्त्वैकाक्षमितोव्रज ॥ सव्यंदत्त्वाततःकाकएवं पौरुषवानपि ६० उपेक्षतेकिमर्थंमामिदानींसोपिराघवः ॥ हनूमानपितामाहश्रु त्वासीतानुभाषितम् ६१ देवित्वांयदिजानातिस्थितामत्ररघूत्तमः ॥ करिष्यतिक्ष णाद्भस्मलंकांराक्षसमण्डिताम् ६२ जानकीप्राहतंवत्सकथंत्वंयोत्स्यसेऽसुरैः ॥ अतिसूक्ष्मवपुःसर्वेवानराश्चभवादृशाः ६३ ॥

(अभ्यद्रवत्चवायसःभीतःलोकान्भ्रमत्पुनः इंद्रब्रह्मादिभिःचापिरक्षितुंनशक्यः) अग्नितुल्य बरताहुआतृण वाण आवत देखि काकभयभीत सबलोकन में भ्रमता फिरा तहां इंद्रब्रह्मादिकों करि जब रक्षाको न प्राप्त भया ५८ (तदा भीत्यादयानिधेःरामस्यपादयोः अग्रेअपतत्शरणागतंआलोक्य रामःतंइदंअब्रवीत्) तबडर करिकै दयाभरे रघुनंदन के पांयन के आगेत्राहि त्राहि करिगिरिपरा शर णागत काकको देखि रघुनंदन त्यहि प्रतिऐसा वचन बोलतेभये ५९ (एतत्मेअस्त्रंअमोघंएकाक्षंदत्त्वा इतःव्रजततःकाकसव्यंदत्त्वाएवंपौरुषवान्अपि)रघुनंदन कहे कि यहमेरा वाण वृथानहीं जायसक्ताहै ताते आपनाएक नेत्रदैकै यहांते चलाजा तदनन्तर काक आपनावामनेत्रदैकै प्राण बचाय गया ऐसे पराक्रम युक्तप्रभु ६०(सःअपिराघवःकिंअर्थंमांइदानींउपेक्षतेसीतानुभाषितंश्रुत्वाहनूमान्अपितांआह) सोई राघव किसहेत मोको या समय ऐसी दशामें दयादृष्टि नहींदेखते हैं इति आरत सीताको कहा वचन सुनि हनुमान् भी तिन जानकीजी प्रति बोलतेभये ६१ (देवियदिअत्रस्थितात्वांरघूत्तमःजाना तिराक्षसमण्डिताम्लंकाम्क्षणात्भस्मकरिष्यति) हनुमान् कहे किहे देविजो इहांपर रहतीहुई तुम को मेरेकहेते रघुनाथजी जानेंगे तौ राक्षसों करिकै भूषित यह जो लंका है ताहि प्रभुएक क्षणभरे में भस्म करि देवैंगे ६२ (तंजानकीप्राहवत्सअतिसूक्ष्मवपुःचभवादृशाःसर्वेवानराःत्वंअसुरैःकथंयोत्स्यसे तिनहनुमान् प्रति जानकी बोलती भई हे वत्स तुम्हारा अत्यन्त छोटाशरीर अरु तुम्हारेही समसबै वानरहोंयँगे तौ तुम राक्षसों करिकै कैसे युद्धकरि सकोगे ६३ ॥

श्रुत्वातद्वचनंदेव्यैपूर्वरूपमदर्शयत् ॥ मेरुमंदरसंकाशंरक्षोगणविभीषणम् ६४ दृष्ट्वासीताहनूमंतंमहापर्वतसन्निभम् ॥ हर्षेणमहताविष्टाप्राहतंकपिकुंजरम् ६५ समर्थोसिमहासत्वद्रक्ष्यंतित्वांमहाबलम् ॥ राक्षस्यस्तेशुभःपंथागच्छरामांतिकं द्रुतम् ६६ बुभुक्षितःकपिःप्राहदर्शनात्पारणंमम ॥ भविष्यतिफलैःसर्वैस्तवदृष्टौ स्थितैर्हिमे ६७ तथेत्युक्तःसजानक्याभक्षयित्वाफलंकपिः ॥ ततःप्रस्थापितोऽग च्छज्जानकींप्रणिपत्यसःकिंचिद्दूरमथोगत्वास्वात्मन्येवानुचिंतयत् ६८ कार्यार्थ मागतोदूतःस्वामिकार्याविरोधतः ॥ अन्यत्किंचिदसंपाद्यगच्छत्यधमएवसः६९॥

(तत्वचनंश्रुत्वारक्षोगणविभीषणंमेरुमंदरसंकाशंपूर्वरुपंदेव्यैअदर्शयत्) सोसीता को बचनसुनि कै हनुमान् राक्षस समूहको भयदायक ऐसाकराल पुनःसुमेरुगिरि मंदराचल की तुल्यभारी उन्नत ऐसा आपना पूर्वको रूपप्रकट करि सीता देवीके अर्थ देखावते भये ६४(महापर्वतसंन्निभम्हनूमंतं

दृष्ट्वासीताहर्षेणमहताविष्टातंकपिकुंजरंप्राह) महाभारी पर्वत समरूप हनूमान् को देखिकै सीता आनंद समूह करिकै युक्तिन हनुमान् प्रतिबोलतीभई ६५ (महासत्त्वसमर्थोऽसिमहाबलम्त्वांराक्षस्यः द्रक्ष्यंतिरामांतिकंद्रुतंगच्छतेपंथाःशुभः) हेहनूमान् तुममहापराक्रमी सर्वकार्यकोसमर्थहौअवमहाबलवंतरूप तुमको राक्षसी देखैंगी तौ जाय रावणते कहैंगी तौतुम्हारे जानेमें बाधालागैगी तातेअबतुम शीघ्रही रघुनन्दनके पासको चलेजाउ तुमको मार्गमंगलकारीहोवै ६६ (कपिःबुभुक्षित.प्राहतवदर्शनात्ममपारणंतवदृष्टौस्थितैःहिसर्वैःफलैःमेभविष्यति) हनुमान् भूखेहैंतातेबोले हे मातःयावत्देख्यो नहींतावत् उपवासकिहेउँ अब आपके दर्शन भयेते व्रतपूर्ण भया ताते मोको पारण उचित है सो आपकी दृष्टि के आगेस्थित जो वाग में सबफल हैं तिनहीं करिकै मेरा पारण होइगो ६७ (जानक्यातथाइतिउक्तःसकपिःफलंभक्षयित्वाततःअगच्छत्जानकींप्रणिपत्यप्रस्थापितःस. किंचित्दूरंगत्वा अथ.स्वआत्मनिएवअनुचिंतयत्) जानकी के तथाइति कहेभाव आज्ञापाय सो कपि हनुमान् फल खाय तदनन्तर आय जानकीको प्रणामकरि विदाह्वै चले सो कछु दूरिगये अब आपने मनमें चिन्तवनकीन्हे ६८ (कार्यार्थेदूतःआगतःस्वामिकार्यअविरोधनःकिंचित्अन्यत्असंपाद्यगच्छतिसः एवअधमः) मालिकके पठाये किसी कार्यहेत दूतआया तहां जिसमें स्वामीकेकार्यमें विरोध न आवताहोय भावउसीकी अनुकूल कछु और कार्य न साधिलिया केवल स्वामीकी आज्ञापूर्णकरि चलागया सो दूतभी अधम है ६९ ॥

अतोऽहंकिंचिदन्यच्चकृत्वादृष्ट्वाथरावणम् ॥ संभाष्यचततोरामदर्शनार्थंव्रजाम्यहम् ७० इतिनिश्चित्यमनसावृक्षखण्डान्महाबलः॥उत्पाट्याशोकवनिकांनिर्वृक्षामकरोत्क्षणात् ७१ सीताश्रयनगंत्यक्त्वावनंशून्यंचकारसः ॥ उत्पाटयंतंविपिनंदृष्ट्वाराक्षसयोषितः ७२ अपृच्छन्जानकींकोऽसौवानराकृतिरुद्भटः ७३ जानक्युवाच ॥ भवत्यएवजानन्तिमायांराक्षसनिर्मिताम् ॥ नाहमेनंविजानामि दुःखशोकसमाकुला ७४ इत्युक्तास्त्वरितंगत्वाराक्षस्योभयपीडिताः॥ हनूमताकृतंसर्वंरावणायन्यवेदयत् ७५ देवकश्चिन्महासत्त्वोवानराकृतिदेहभृत् ॥सीतयासहसंभाष्यअशोकवनिकांक्षणात्॥उत्पाट्यचैत्यप्रासादंबभंजामितविक्रमः ७६ ॥

(अतःअहंकिंचित्अन्यत्कृत्वाचरावणंदृष्ट्वाचसंभाष्यततःरामदर्शनार्थंअहंव्रजामि)इस कारण मैं कछु और हू कार्यकरौं पुनः रावणको देखिलउ पुनः तासों कछु वार्ताकरि तदनन्तर रघुनाथजीके दर्शनहेत को मैं जाउँ ७० (इतिमनसानिश्चित्यमहाबलः वृक्षखंडान्उत्पाट्यक्षणात्अशोकवनिकां निर्वृक्षंअकरोत्) ऐसा मनमें निश्चयकरि महाबलीहनुमान् वृक्षसमूहोंको उखारि क्षणभरेमें अशोकवाटिकाको विनावृक्षकीकरिदेतेभये ७१ (सीताश्रयनगत्यक्त्वासःवनंशून्यंचकार विपिनंउत्पाटयंतं दृष्ट्वाराक्षसयोषितः)सीताके वास स्थानको एक वृक्ष वरायसो अशोकवन सब शून्यकरिदिये उसवनको उखारत देखि राक्षसों की स्त्री ७२ (जानकींअपृच्छन्वानराकृतिःउद्भटःअसौकः) जानकी प्रति पूछती हैं कि वानरकी आकार उद्भटवीर यह कौनहै ७३ (राक्षसनिर्मितांमायांभवत्यएवजानंतिदुःखशोकसमाकुलाअहं एनंनविजानामि) जानकी बोलीं कि राक्षसों की रचीहुई माया को तुमहीं लोग जानती हो दुखशोक में आकुल मैं इस वानर को नहीं जानतीहौं कौन है ७४ (इतिउक्ताभयपीड़िताः राक्षस्यः त्वरितंगत्वाहनूमताकृतंसर्वंरावणायन्यवेदयत्) ऐसा जानकी कहे तब भय

पीडित राक्षसी त्वरतहीं जाय हनुमान् को किया हुआ सब हाल रावणके अर्थ सुनावती भई ७५ (देवकश्चित्वानराकृतिःदेहभृत्महासत्वःसीतयातहसंभाष्यक्षणात्अशोकवनिकां उत्पाट्यअमितविक्रमःचैत्यप्रासादंवभंज) हे देव कोउ एक देवादिवानरकी देहधरे महापराक्रमी आयसीता के साथवार्ता करिक्षणमें अशोक वाटिका उखारि डारा ऐसा अमितवली है कि देवमंदिर को तोरि फोरि गिरायदीन्हेसि ७६ ॥

प्रासादरक्षिणःसर्वान्हत्वातत्रैवतस्थिवान् ॥ तच्छ्रुत्वातूर्णमुत्थायवनभंगंमहाप्रियम् ७७ किंकरान्प्रेषयामासनियुतंराक्षसाधिपः ॥ निर्भग्नचैत्यप्रासादप्रथमांतरसंस्थितः ७८ हनुमान्पर्वताकारोलोहस्तंभकृतायुधः ॥ किंचिल्लांगूलचलनोरक्तास्योभीषणाकृतिः ७९ आपतंतंमहासंघंराक्षसानांददर्शसः ॥ चकारसिंहनादंचश्रुत्वातेमुमुहुर्भृशम् ८० हनूमंतमथोदृष्ट्वाराक्षसाभीषणाकृतिम् ॥ निर्जघ्नुर्विविधास्त्रौघैःसर्वराक्षसघातिनाम् ८१ ततउत्थायहनुमान्मुद्गरेणसमंततः ॥ निष्पिपेषक्षणादेवमशकानिवयूथपः ८२ ॥

(प्रासादस्यरक्षिणःसर्वान्हत्वातत्रएवतस्थिवान्महाप्रियंवनभंगंतदश्रुत्वातूर्णंउत्थाय) मंदिर के रक्षा करनेवालेरोकातिन सब को मारिकै वानर वहीं बैठा भी है परमप्रिय वनको भंग सो सुनि रावणशीघ्रहीउठा ७७ (राक्षसाधिपःनियुतंकिंकरान्प्रेषयामासचैत्यप्रासादनिर्भग्नप्रथमांतरसंस्थितः राक्षसोंको राजा रावणएकलाख सेवकनको पठावता भया नियुत लक्षकोकहीयथा (शतंसहस्त्रमयुतं नियुतंप्रयुतंमतम् । स्त्रीकोटिरर्बुदमितिक्रमाद्दशगुणोत्तरमितिरत्नकोशः) ते आय देखे टूटाहुवा जो देवमंदिर ताके नीचे के दर्जेमें वह बैठा है ७८ (पर्वताकारःभीषणाकृतिःरक्तास्यःहनुमान्लोहस्तंभआयुधःकृतकिंचित्लांगूलचलनः) पर्वत सम भारीतनभयंकर सूरति लालमुख ऐसे हनुमान् लोह खंभाको हथियार बनाय हाथमें लिहे कछु पूछको चलायरहे हैं ७९ (राक्षसानांमहासंघंआपतंतंददर्शसःसिंहनादं चकारचतेश्रुत्वाभृशम्मुमुहुः) राक्षसोंकोमहाभारीयूथआवताहुआ ताहि देखते भये सो हनुमान् सिंहसमभारी नादकरते भये सो गर्जपुनः ते सब राक्षस सुनि कै अत्यंत मोहित भये अर्थात् सबके मूर्च्छाआगया ८० (अथहनूमंतं भीषणाकृतिंराक्षसाहष्ट्वा सर्वराक्षसघातिनांविविधअस्त्रओघैःनिर्जघ्नुः) अब हनुमान्को महाभयंकर रूप ताहि सब राक्षस देखिकै सब राक्षसों को घात करने वाले जो हनुमान् तिनहिं अनेक प्रकार के हथियार बहुतौं करिकै राक्षस मारतेभये ८१ (हनुमानउत्थायतत्मुद्गरेणक्षणात्एवसमंततः निष्पिपेषयूथपःमशकानइव) हनुमान् उठिके तोई मुद्गर अर्थात् लोह खंभ करिकै क्षणै भरे में सब राक्षसों को पीसिडारे कैसे चूर्ण ह्वै गये यथा यूथपति हाथी समूह मसन को पीसिडारै तथा वे परिश्रम चूर्णकिये ८२ ॥

निहतान्किंकरान्श्रुत्वारावणःक्रोधमूर्च्छितः ॥ पंचसेनापतींस्तत्रप्रेषयामासदुर्मदान् ८३ हनूमानपितान्सर्वान्लोहस्तंभेनचाहनत् ॥ ततःक्रुद्धोमंत्रिसुतान्प्रेषयामाससप्तसः ८४ आगतानपितान्सर्वान्पूर्ववद्वानरेश्वरः ॥ क्षणान्निःशेषतोहत्वालोहस्तंभेनमारुतिः ८५ पूर्वस्थानमुपाश्रित्यप्रतीक्षन्राक्षसान्स्थितः ॥ ततोजगामबलवान्कुमारोऽक्षःप्रतापवान् ८६ तमुत्पपातहनुमान्दृष्ट्वाकाशेसमुद्गरः ॥

गगनात्त्वरितोमूर्ध्निमुद्गरेणव्यताडयत् ८७ हत्वातमक्षंनिःशेषबलंसर्वंचकारसः ८८ततःश्रुत्वाकुमारस्यवधंराक्षसपुंगवः॥क्रोधेनमहताविष्टइंद्रजेतारमब्रवीत्८९॥

(किंकरान् निहतानश्रुत्वा क्रोधमूर्च्छितःरावणः दुर्मदान्पंचसेनापतींस्तत्रप्रेषयामास) अपनेसेवकन को मरण सुनिकै क्रोधविवश रावण बल वरितामें दुर्मद पांच सेनापतिन को तहां को पठावताभया जहां हनुमान् रहैं८३ (हनुमानअपिलोहस्तम्भेनच तान्सर्वानहनत् ततःक्रुद्धःसः सप्त मंत्रिसुतान्प्रेषयामास) सेनापतिन को आवत देखि हनुमान् भी संमुखआय उसी लोह खंभ करिकै उन सबन को मारे सो सुनि तदनंतर क्रोध करि सो रावण सातमंत्रीके पुत्रनको पठावताभया ८४ (तान्सर्वान् आगतान् अपिवानरेश्वरः मारुतिःपूर्ववत् लोहस्तंभेनक्षणात् निःशेषतःहत्वा) तिन सबन को आवत देखि वानरेश्वर मारुत नन्दन हनुमान् पूर्व कीनाईं लोहखंभ करिकै क्षणैं भरे में सबनकोमारिकै८५(पूर्वस्थानंउपाश्रित्यस्थितः राक्षसान्प्रतीक्षन् ततःबलवान्प्रतापवानअक्षःकुमारः जगाम) राक्षसौं को मारि जायपूर्वके स्थान में बैठा हुआ राक्षसौं के आवने की राह देखि रहा है तदनंतर महाबली प्रतापवंत अक्षकुमार जाताभया ८६ (तंदृष्ट्वाहनुमान् समुद्गरः आकाशेउत्पपात् गगनात्त्वरितः मुद्गरेणमूर्ध्निव्यताड़यत्) तिस अक्षकुमार को देखि हनुमान् मुद्गर सहित आकाश में कूदिगये आकाशते शीघ्रही आय लोह खंभ करिकै ताके शिर में मारते भये ८७ (तंअक्षंनिःशेषबलंसर्वंसः हत्वाचकार) तिस अक्षकुमार को ताके संग जो सेना रही तिन सब को नाश करते भये ८८ (कुमारस्यवधंश्रुत्वा ततःराक्षसपुंगवः क्रोधेनमहताविष्टः इंद्रजेतारंअब्रवीत्) अक्षकुमार को मरण सुनि तदनंतर राक्षसौं को राजा बड़े क्रोध करिकै युक्त इंद्रको जीतनेवाला जो मेघनाद त्यहि प्रति बोलता भया ८९ ॥

पुत्रगच्छाम्यहंतत्रयत्रास्तेपुत्रहारिपुः ॥ हत्वातमथवाबध्वाआनयिष्यामितेऽतिकम् ९० इन्द्रजित्पितरंप्राहत्यजशोकंमहामते ॥ मयिस्थितेकिमर्थंत्वंभाषसेदुःखितंवचः ९१ बध्वानेष्येद्रुतंतातवानरंब्रह्मपाशतः ॥ इत्युक्त्वारथमारुह्याराक्षसैर्बहुभिर्वृतः ९२ जगामवायुपुत्रस्यसमीपंवीरविक्रमः ॥ ततोऽतिगर्जितंश्रुत्वास्तंभमुद्यम्यवीर्यवान् ९३ उत्पपातनभोदेशंगरुत्मानिवमारुतिः ॥ ततोभ्रमंतंनभसिहनूमंतंशिलीमुखैः९४विध्वातस्यशिरोभागमिषुभिश्चाष्टभिःपुनः ॥ हृदयंपादयुगलषड्भिरेकेनबालधिम् ॥ भेदयित्वाततोघोरंसिंहनादमथाकरोत् ९५ ॥

(पुत्रपुत्रहारिपुःयत्रआस्तेतत्रअहंगच्छामितंहत्वाअथवाबध्वातेअंतिकम्आनायिष्यामि)हे पुत्रमेघनाद मेरेपुत्रको मारनेवाला शत्रु जहांपरहै तहांको मैं जाताहौं ताकोमारिहौं अथवा बांधिकै तेरेपास कोलाइहौं ९० (पितरंइन्द्रजित्प्राहमहामतेशोकंत्यजमयिस्थितेत्वंदुःखितंवचःकिंअर्थंभाषसे) पिता प्रति मेघनाद बोला कि हेमहामते शोकमानसो खेदको त्यागकरौ काहेते मेरेबनेरहेसंते तुम दुःखित वचन किस हेत कहते हौ ९१ (तातब्रह्मपाशतःवानरंबध्वाद्रुतंआनेष्येइतिउक्त्वारथंआरुह्यबहुभिः राक्षसैःवृतः) रावण प्रति मेघनाद बोला कि हेतात ब्रह्मपाशते वानरको बांधिकै शीघ्रही लिहेआवताहौं ऐसाकहि मेघनाद रथपर सवार ह्वै तथा बहुतेराक्षसौं करिकै वृत अर्थात् अन्य बहुत सुभटरथ के सब दिशि घेरे हुये चलेजातेहैं ९२ (वायुपुत्रस्यसमीपंवीरविक्रमःजगामततःअतिगर्जितंश्रुत्वा

वीर्यवान्स्तंभंउद्यम्य) पवनपुत्रके समीप को वीर पराक्रमी मेघनाद जाताभया तदनन्तर अत्यन्त गर्जनि राक्षसौंकी सुनि बड़ेबली हनुमान् लोहखंभकोउदांबैकरि ९३(गरुत्मानिवमारुतिःनभःदेशंउत्पपात्भ्रमंतंहनूमंततस्यशिरोभागंशिलीमुखैःविध्वा) गरुड़की नाईं पवनपुत्र आकाशको उड़िगये तहां भ्रमते हुये हनुमान् के शिरदेशहि मेघनाद वाणोंकरिकै वेधताभया ९४ (पुनःअष्टभिःइषुभिःहृदयंषड्भिःपादयुगलंएकेनबालधिंभेदयित्वाततःघोरंसिंहनादंअथअकरोत्) पुनः आठवाणों करिहृदयको वेधन किया छावाणों करि दोऊ पायनको भेदनकिया अरु एकवाण करिकै पूछको भेदन किया तदनंतर मेघनाद महाभयंकर सिंहसमनादकरताभया ९५ ॥

ततोऽतिहर्षाद्धनुमांस्तंभमुद्यम्यवीर्यवान् ॥ जघानसारथिंसाश्वंरथंचाचूर्णयत्क्षणात् ९६ ततोऽन्यंरथमादायमेघनादोमहाबलः ९७ शीघ्रंब्रह्मास्त्रमादायबध्वा वानरपुंगवम् ॥ निनायनिकटंराज्ञोरावणस्यमहाबलः ९८ यस्यनामसततंजपंतिये ज्ञानकर्मकृतबन्धनंक्षणात् ॥ सद्यएवपरिमुच्यतत्पदंयांतिकोटिरविभासुरंशिवम् ९९ तस्यैवरामस्यपदांबुजंसदाहृत्पद्ममध्येसुनिधायमारुतिः ॥ सदैवनिर्मुक्तसमस्त बंधनःकिंतस्यपाशैरितरैश्चबंधनैः १०० ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेसुंदरकांडेतृतीयःसर्गः ३ ॥

(ततःअतिहर्षात्वीर्यवान्हनुमान्स्तंभंउद्यम्यजघानसअश्वंरथंचसारथिंक्षणात्चूर्णयत्) तदनन्तर वीररसकी परिपूरणताते अत्यन्त हर्षतेबड़े बली हनुमान् लोहखंभको उठाय मारते भये ताकीचोटते सहित घोड़ारथ पुनः सारथी इत्यादि सबको क्षणमें चूर्ण करिदिये ९६ (ततः मेघनादःमहाबलः अन्यंरथंआदाय) तदनन्तर मेघनाद महाबली औरे रथपर सवार है ९७ (महाबलःशीघ्रंब्रह्मास्त्रंआदायवानरपुंगवंबध्वाराज्ञःरावणस्यनिकटंनिनाय) महाबली मेघनाद शीघ्रही ब्रह्मास्त्रलै हनुमान्को बाँधिकै राजारावण के समीप लैजाताभया ९८ (यस्यनामसततंयेजपंतिअज्ञानकर्मकृतबंधनंक्षणात्परिमुच्यकोटिरविभासुरंशिवंतत्पदंसद्यएवयांति) जिनको रामऐसानाम सदा जे जन जपते हैं ते अज्ञानकर्म करिकै जो भवबंधन ताहि क्षणमें छोरि पुनःजहां करोरिन सूर्यनकैसो प्रकाश ऐसाकल्याण रूप तिन रघुनन्दनकोपद तहांको शीघ्रही जातेहैं ९९ (तस्यरामस्यपदअंबुजंएवमारुतिःहृत्पद्ममध्येसदासुनिधायसमस्तबंधनःसदैवनिर्मुक्ततस्यचइतरैःपाशैःबंधनैःकिं) तिन रघुनन्दन के पद कमल निश्चयकरि हनुमान् हृदय कमलमध्यमें सदा सुंदरी प्रकारते धारण किहे रहते हैं ताके प्रभावते सब बंधनसो सदा मुक्तहैं तिन हनुमान्को पुनः और पाशादि बंधनोंकरिकै क्या कोईबांधिसक्ताहै भावस्वइच्छितबँधिगयेकछु और कार्य कियाचाहते हैं १०० ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमासियवल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचिते
अध्यात्मभूषणेसुन्दरकांडेतृतीयः प्रकाशः ३ ॥

यांतंकपींद्रंधृतपाशबंधनंविलोकयंतंनगरंविभीतवत् ॥ अताड़यन्मुष्टितलैःसुकोपनाःपौराःसमंतादनुयांतईक्षितुम् १ ब्रह्मास्त्रमेनंक्षणमात्रसंगमंकृत्वागतंब्रह्मवरेणसत्वरम् ॥ ज्ञात्वाहनूमानपिफल्गुरज्जुभिर्धृतोययौकार्यविशेषगौरवात् २

सभांतरस्थस्यचरावणस्यतंपुरोनिधायाहबलारिजित्तदा ॥ बद्धोमयाब्रह्मवरेण वानरःसमागतोऽनेनहतामहासुराः ३ ॥

सवैया ॥ कहिरावणको कपिराघवदूत इतायकहांसियशोधलये । हितरामभजे शरणागतहोयहि प्राणहरोकहिक्रोधतये ॥ बधदेखिविभीषणरोकतहीं पटतैलसपुच्छजरायदये । खलघालिमहाकपिफूकिसवै पुरपूछवुझावनसिन्धुगये॥(धृतपाशबंधनंविभीतवन् नगरंविलोकयंतंयान्तंकपीन्द्रंईक्षितुं पौराः समंतात्अनुयांतसुकोपनाःमुष्टितलैःअताडयन्) शिवजी बोले हे गिरिजा आपनी इच्छाते धारणकिये पाशबंधन भयभीतकीभांति लंकानगरको देखतेहुये चले जाते जो हनुमान् तिनहिंदेखनेहेतआये जो पुरवासी राक्षसतेघेरेहुये पीछेपीछे जातेहुयेको पकरिकै हनुमान्की पृष्ठिमें मुष्टिकोंकरिकैमारतेहैं१(एनब्रह्मास्त्रंक्षणमात्रंसंगमंकृत्वाब्रह्मवरेणसत्वरंगतंफल्गुरज्जुभिः धृतःहनुमान्ज्ञात्वाअपिकार्यं गौरवात् विशेषययौ) इन हनुमान्को ब्रह्मास्त्रआय एकक्षणभरि संगमाकिया भाव अंग में लागिमात्रगया फिरि न रहिसका क्योंकि इनको बालअवस्थामें ब्रह्माने वरदानदियाहै कि मेरा अस्त्र तुमको न बाधाकरैगा इतिब्रह्माके वरदानके प्रभावकरिकै ब्रह्मास्त्रशीघ्रहीचलागया अब निर्बल रसरिनकरिकैबंधाहौं यह हनुमान्जानतेभी हैं परन्तु रावणते वार्ताकरना लंकाभस्मकरना इत्यादिकार्य बडेभारीकरनाहैं ताते विशेषकरि विनाबंधनैजातेभये २ (सभायाःअंतरस्थस्यचरावणस्यपुरःतंहनुमंतंनिधायतदाबलारिजित् आहमयाब्रह्मवरेणवानरःबद्धःसमागतःअनेनमहासुराःहताः) सभा मन्दिरके मध्यमें बैठेहैं मंत्री आदि पुनः रावण ताके आगे तिन हनुमान्को स्थापितकरि ता समय में मेघनाद बोलताभया कि मैं ब्रह्माके वरदानकरिकै इस वानरको बांधिकै इहांकोलायाहौं भावबलकरिकै नहीं बँधिसक्ताहै काहेते इसीने अक्षकुमारादि बडेबलीवीर राक्षसोंको मारिडारा है सो बलकरिकै कैसेबँधिसक्ता था ३ ॥

यद्युक्तमत्रार्यविचार्यमंत्रिभिर्विधीयतामेषनलौकिकोहरिः ॥ ततोविलोक्याहसराक्षसेश्वरःप्रहस्तमग्रेस्थितमंजनाद्रिभम् ४ प्रहस्तपृच्छैनमसौकिमागतःकिमत्र कार्यंकुतएववानरः ॥ वनंकिमर्थंसकलंविनाशितंहताःकिमर्थंममराक्षसाबलात्५ ततःप्रहस्तोहनुमंतमादरापप्रच्छकेनप्रहितोसिवानर ॥ भयंचतेमास्तुविमोक्ष्यसेमयासत्यंवदस्वाखिलराजसन्निधौ ६ ततोऽतिहर्षात्पवनात्मजोरिपुंनिरीक्ष्य लोकत्रयकंटकासुरम्॥वक्तुंप्रचक्रेरघुनाथसत्कथांक्रमेणरामंमनसास्मरन्मुहुः७॥

(आर्यमंत्रिभिःविचार्ययदिउक्तंअत्रविधीयतांएषलौकिकःहरिः नततःअंजनाद्रिभंप्रहस्तंअग्रेस्थितं विलोक्यराक्षसेश्वरःआह) पुनः मेघनाद बोला कि हे आर्यभाव नीति विद्या बुद्धि चातुर्यता आदि सबभांति आप श्रेष्ठहौ पुनः मंत्रिनकरिकै सहित विचारकरिकै जो बात कहीजाय सोईइहांपरविधान कीजिये बँधादेखि न भूलिये क्योंकि यह लोकके अन्य वानरों में नहीं है भाव अतुलबलीवीर है ऐसा जानि विचारपूर्वक कार्यकीजिये इति सुनि तदनन्तर अंजनके पर्वततुल्य शरीरहैजाको ऐसाप्रहस्त मंत्री आगेबैठाहुवा ताकीदिशिदेखि राक्षसोंको राजा रावण बोलताभया ४ (प्रहस्तएनंपृच्छवानरःकुतएवअसौकिंआगतःअत्रकिंकार्यंसकलंवनंकिंअर्थंविनाशितंममराक्षसाःकिंअर्थंबलात्हताः) रावणबोला हेप्रहस्तयाहि पूछौ वानरकहांकोहै यहक्यों यहांआयाहै यहांयाकोक्याकार्यहै सब अशोकवनकिस हेत विनाशकरादिया पुनः मेरे राक्षस किसहेत इसने ५ (ततःहनुमंतंप्रहस्तःआदरात्प्रपच्छ

वानरकेनप्रहितोसिचतेभयंमाअस्तुअखिलराजसन्निधौसत्यंवदस्वमयाविमोक्ष्यसे) तदनन्तरहनुमानप्रति प्रहस्तआदरतेपूछताभया हे वानर किसने तोकोपठावा है पुनः तोको कछुभय नहीं है सब राजोंके राजा रावणकेआगे सत्यहीकहु तौ हमकरिकै छोड़ायदियाजायगा ६ (ततःत्रयलोककंटकंअसुरंरिपुंनिरीक्ष्यपवनात्मजः मनसामुहुःरामंस्मरन्अतिहर्षात्रघुनाथसत्कथांक्रमेणवक्तुंप्रचक्रे) तब हनुमान्जी विचारकिये कि एकतौ तीनिहुलोकनको कंटकभावनिर्दयी पुनः असुरतामसीप्रकृति पुनः रिपुभाव याके पुत्रसेन पशुभटनकोबधकिया तासोंवार्ताकरना कुशलजानेकी समय नहीं है इत्यादि विचारपूर्वक रावणकोदेखि पवननन्दनमनकरिकै वारम्वार रघुनन्दनको स्मरणकरि तब अति हर्षते भावयुत वीरताकी स्थाई उत्साहते रघुनन्दनकी जो उत्तमकथाहै ताहिकहवेको प्रारम्भकरतेभये ७ ॥

शृणुस्फुटंदेवगणाद्यमित्रहेरामस्यदूतोऽहमशेषहृत्स्थितेः ॥ यस्याखिलेशस्यहृताधुनात्वयाभार्यास्वनाशायशुनेवसद्धविः ८ सराघवोऽभ्येत्यमतंगपर्वतंसुग्रीवमैत्रींमनलस्यसन्निधौ॥कृत्वैकबाणेननिहत्यवालिनंसुग्रीवमेवाधिपतिंचकारतम् ९ सवानराणामधिपोमहाबलीमहाबलैर्वानरयूथकोटिभिः ॥ रामेणसार्द्धंसहलक्ष्मणेनभोप्रवर्षणेऽमर्षयुतोऽवतिष्ठते १०संचोदितास्तेनमहाहरीश्वराधरासुतांमार्गयितुंदिशोदश ॥ तत्राहमेकःपवनात्मजःकपिःसीतांविचिन्वन्शनकैःसमागतः ११ ॥

(हेदेवगणादिअमित्रस्फुटंशृणुअशेषहृत्स्थितेरामस्यअहं दूतःयस्यअखिलेशस्यभार्यास्वनाशायसत्हविःशुनाइवत्वयाअधुनाहृता) हेदेवगणादि कौं के शत्रुरावण मेरे वचनस्पष्ट सुनौ जोअंतर्यामी रूपते सबके हृदय में स्थितहैं तिन रामको मैं दूतहौं जिन सर्वेश्वर की स्त्री अर्थात् जानकी को तुम अपने नाशहोने अर्थ यथा यज्ञमें स्थित उत्तम हव्यसो कुत्ताकरिकै हरिजाय ताही भांति तुमने अब हराहै ८ (सराघवःमतंगपर्वतंअभ्येत्यअनलस्यसन्निधौसुग्रीवमैत्रींकृत्वाएकबाणेनवालिनंनिहत्यतंसुग्रीवं एवअधिपतिंचकार) हे रावण जिन की भार्या हरि लायो सोई राघव मतंग पर्वत अर्थात् ऋष्य मूक पर जाय प्राप्त भये तहां अग्नि के समीप सुग्रीव सो मित्रताकीन्हे अरु एकही बाण करिकै बाली को मारि तिस सुग्रीव को किष्किंधा में राजाकीन्हे ९ (भोरावणसमहाबली वानराणांअधिपःमहाबलैः वानरयूथकोटिभिःसहलक्ष्मणेनरामेणसार्द्धंअमर्षयुतः प्रवर्षणेअवतिष्ठते) हेरावण सोई महाबली वानरोंकोराजा सुग्रीव तथा महाबलकरिकै युक्त वानरोंके करोरिन यूथ सहित तथा सहित लक्ष्मण राम को साथ लीन्हे वड़े क्रोध युत प्रवर्षण गिरिपर स्थित हैं १० (तेनसंचोदिताः महाहरीश्वराःदिशदिशाःधरासुतांमार्गयितुंतत्रएक अहंपवनात्मजः कपिःशनकैःसीतांविचिन्वन्संआगतः) तिन सुग्रीव करिकै पठाये हुये महाबली वीरवानरवहुत दशौ दिशनमें सीता को ढूंढवे हेत गये हैं तिनहिनमें एक महूंपवन को पुत्रबानर हौं धीरे धीरे सीता को ढूंढत संते इतै आय गयो ११ ॥

दृष्टामयापद्मपलाशलोचनासीताकपित्वाद्विपिनंविनाशितम् ॥ दृष्ट्वाततोऽहंरभसासमागतान्मांहंतुकामान्धृतचापसायकान् १२ मयाहतास्तेपरिरक्षितंवपुःप्रियोहिदेहोऽखिलदेहिनांप्रभो ॥ ब्रह्मास्त्रपाशेननिबध्यमांततःसमागमन्मेघनिनादनामकः १३स्पृष्ट्वैवमांब्रह्मवरप्रभावतस्त्यक्त्वागतंसर्वमवैमिरावण॥तथाप्यहंबद्ध

वागतोहितंप्रवक्तुकामःकरुणारसार्द्रधीः १४ विचार्यलोकस्यविवेकतोगतिंनरा क्षसींबुद्धिमुपैहिरावण ॥ दैवींगतिंसंसृतिमोक्षहेतुकींसमाश्रयात्यंतहितायदेहिनः १५

(पद्मपलाशलोचनासीतामयादृष्टाकपित्वात्विपिनंविनाशितमृततःअहंदृष्ट्वाचापशायकान्धृत मांहंतुकामान्रभसासमागतान्) कमलदलवत् नेत्र हैं जिनके ऐसीसीताइहां मैंनेदेखा पुनःवानरको चंचलस्वभाव ताते वनकोविनाशकिया तदनन्तर मोकोदेखि धनुप बाण धारणकिहे मोको मारनेकी कामनाराखि वडेवेगकरिकै राक्षस जे मेरे संमुखआये १२ (प्रभोअखिलदेहिनांदेहःप्रियोहिवपुःपरि रक्षितंतेमयाहताःततःमेघनिनादनामकःब्रह्मास्त्रपाशेनमांनिवध्यसमागमन्) हे प्रभो समग्र देहधारि नको अपनीदेह प्रियहोती है ताते अपनीदेहकी रक्षाहेत जे मोकोमारनेलगे तिनको मैंने मारा तद- नन्तर मेघनादनामे तुम्हारापुत्र ब्रह्मास्त्रपाश करिकैमोको बांधिकै तुम्हारे निकटको लयआवतभया १३ (रावणब्रह्मवरप्रभावतःमांस्पृष्ट्वाएवत्यक्त्वागतंसर्वंअवैमितथापिअहंकरुणारसार्द्रधीः हितंप्रवक्तु कामःवद्धइवआगतः) हे रावणमोको पूर्वब्रह्माने वरदिया कि तोको मेरा अस्त्र न वाधाकरैगा इति ब्रह्माकेवरप्रभावते ब्रह्मास्त्र मोको स्पर्शकियाभी परन्तु त्यागिचलागया सो सब मैं जानतारहाताहू पर करुणा रसमें भीजी बुद्धि तेरा हितकहिबे कामसों बंधेहुये की नाईंमें तेरे समीपचलाआयाहौं १४ (रावणलोकस्यगतिविवेकतःविचार्यराक्षसींबुद्धिनउपैहिदेहिनः अत्यंतहितायसंसृतिमोक्षहेतुकींदैवीं गतिंसमाश्रय) तेराहित कहताहौं लो सुनु हे रावण लोककी जो गतिहै यथा पापते नरकादि दुःखहै पुण्यते स्वर्गादि सुख हैं हरि भक्तिते मोक्ष इत्यादि सारासार विवेककरि आपनाहिताहितविचारु अरु तमोगुणी राक्षसी बुद्धिकोनप्राप्तहो भाव अधर्म अनीति त्यागकरु अपनेजीवके अत्यन्त हितहोने अर्थ ससार बंधनते छूटबेके हेतु दैवी देवनकी भापी परमार्थगतिको ग्रहणकरौ १५ ॥

त्वंब्रह्मणोह्युत्तमवंशसंभवःपौलस्त्यपुत्रोऽसिकुबेरबांधवः ॥ देहात्मबुद्ध्यापिचप श्यराक्षसोनास्यात्मबुद्ध्याकिमुराक्षसोनहि १६ शरीरबुद्धींद्रियदुःखसंततिर्नतेन चत्वंतवनिर्विकारतः ॥ अज्ञानहेतोश्चतथैवसंततेरसत्त्वमस्याःस्वपतोहिदृश्यव त् १७ इदंतुसत्यंतवनास्तिविक्रियाविकारहेतुर्नचतेऽद्वयत्वतः ॥ यथानभःसर्व गतंनलिप्यतेतथाभवान्देहगतोऽपिसूक्ष्मकः १८ ॥

(आत्मबुद्ध्याराक्षसः नाहिइतिकिमुवदेहात्मबुद्ध्यापिपश्यराक्षसः नासिकुबेरबांधवः पौलस्त्य पुत्रःअसिहिउत्तमवंशसंभवस्त्वंब्राह्मणः) हे रावण जो कहौ किमैं राक्षसहौं उत्तम क्रिया कोअधिका- री नहींहौं तौ जो आत्मबुद्धि करिकै कहिये कि तु राक्षस नहीं है यह क्या कहनाहै पुनः जो देहैं को निश्चयआत्म करि देखौ तौभी राक्षस नहींहौ काहे ते कुबेरके भाई पौलस्त्य अर्थात् पुलस्त्य केपुत्र को पुत्रहसि निश्चयकरि उत्तमवंशमें उत्पन्न भये ताते ब्राह्मणहसि १६ (देहबुद्धींद्रियदुःखसंततिः तेन) मैं ब्राह्मण मैं क्षत्री इसभांति देहैं को सत्यमानना इत्यादि जो देहबुद्धी है ताहीते काम क्रोध लोभरागद्वेषादिवश इंद्री विषयासक्त ह्वै अनेक कर्म करतताही ते दुःखउत्पन्न होता है सो केवलदेहैं में है तेरे आत्मरूपमें दुःखनहीं है (चत्वंनतवनिर्विकारतः) पुनः तूभी उसदुःखके आश्रितनहीं है क्योंकि तमरज कामादि विकार रहित अमलशुद्ध आत्मरूप सदाएक रसहै (चअज्ञानहेतोःस्वप्नोहि दृश्यवत्तथाएवअस्याःसंततेःअसत्वं) पुनःमेरे स्त्री पुत्रधन परिपूर्ण मैं सुखीहौं व मेरेधन पुत्रादि नहीं मैं दुखीहौं इत्यादि जो सत्यमानना ताको अज्ञान कारणहै भाव अज्ञानते झूठेको सत्यमाने है

कौनभांति यथा किसीराजाने स्वप्न देखा कि मैं कंगाल है गया वा कंगाल स्वप्न में राजा भयो ते यावत् सोवते तावत् सत्यमाने जागेभूठहीहै तैसेही निश्चयकरि इससंसारके दुःख सुखकी उत्पत्ति को अज्ञान ते सत्यमाने सोई ज्ञानभये परलोक व्यवहारभी भूठही है१७ (विकारहेतुःतेनचअद्वयत्व तःइदंसत्यंतुतवविक्रियानास्ति) हे रावण रजतमादि विकार कारण तेरे आत्मरूप में नहींहै क्योंकि वेदने ब्रह्मको अद्वैतकहा ताते यही आत्मरूपै सत्यहै पुनः जो तुमदेहको सत्यमानेहौ सो सत्यनहीं है (यथानभःसर्वगतंलिप्यतेनतथाभवान्देहगतःसूक्ष्मकःअपि) जैसे आकाश सूक्ष्मरूपते सवतत्त्वन में व्याप्तहै परन्तु स्पर्शरूपरस गंधादिकछु भी आकाश में छुई नहीं जाताहै तैसे तुम्हारी देहमें व्यापक सूक्ष्मआत्मा भी देहके विकार में नहीं लिप्तहोता है (तुशरीरसंगतःदेहइंद्रियप्राणआत्माइति बुद्ध्याअखिलबंधभाग्भवेत्) पुनःशरीरके संगहोने ते मेरी देहहै मेरीइंद्री हैं मेरेप्राण हैं इत्यादिआत्म अर्थात् सत्य हैं ऐसी अज्ञान बुद्धि करिकै आत्मा भी देह के सम्बन्धनको भागीहोत १८॥

देहेंद्रियप्राणशरीरसंगतस्त्वात्मेतिबुद्ध्याखिलबंधभाग्भवेत् ॥ चिन्मात्रमेवाहमजोहमक्षरोह्यानन्दभावोहमितिप्रमुच्यते ॥ देहोऽप्यनात्मापृथिवीविकारजो नप्राणआत्मानिलएषएवसः १९ मनोप्यहंकारविकारएवनोनचापिबुद्धिःप्रकृतःविकारजा ॥ आत्माचिदानंदमयोविकारवान्देहादिसंघाद्व्यतिरिक्तईश्वरः२० निरंजनोमुक्तउपाधितःसदाज्ञात्वैवमात्मानमितोविमुच्यते ॥ अतोहमात्यंतिकमोक्षसाधनंवक्ष्येश्रृणुष्वावहितोमहामते २१ ॥

(अहंएवचिन्मात्रंअहंअजःअहंअक्षरःहिआनंदभावः इतिप्रमुच्यते) हेरावण जबऐसीबुद्धिआवैकि मैं निश्चयकरिकै चैतन्यमात्रहौमैं जन्मरहित हौंमैं अक्षरअर्थात् नाशरहित निश्चयकरि आनन्द रूपहौ तबतौ वह मुक्तहोई (देहःअपिअनात्मापृथिवीविकारजःएवप्राणआत्मानसःअनिलएव)देह निश्चयकरिअनात्माहै क्योंकि पृथिवीको विकार अन्नादिसो उत्पन्नहै पुनः येप्राण भी आत्मानहींहैं क्योंकि सोतौ पवनको रूपहै निश्चयकरिकै १९ (मनःअपिनोअहंकारविकारएवचबुद्धिःअपिनप्रकृतेःविकारजादेहादिसंघात्व्यतिरिक्तअविकारवान्चिदानन्दमयःआत्माईश्वरः) मनभी आत्मानहीं है क्योंकि मनतौ अहंकार को विकारहै अहंकार पुनः बुद्धिभी आत्मानहीं है क्योंकि प्रकृतिके विकार महातत्त्वते उत्पन्नभये पुनः प्राणेन्द्रिय देहादि समूह विकारते भिन्ननिर्विकार सदाचैतन्यआनन्दमय आत्मा ईश्वरहै २० (उपाधितःसदामुक्तनिरंजनःआत्मानंज्ञात्वाएवइतोविमुच्यतेअतःआत्यान्तिकमोक्षसाधनंअहंवक्ष्येमहामतेअवहितःश्रृणुष्व) धर्माधर्मकी चिंतवनजो उपाधिहै त्यहिते छूटा पुनः निरंजन अर्थात् कारणमाया रहित शुद्ध आत्मारूपको जानेते निश्चयकरि पुरुषकी मुक्तिहोतीहै इससे जो अत्यन्त उत्तम मुक्तिको साधनहै ताहि हम कहतेहैं हे महामते बड़ी बुद्धिवाले रावण एकाग्र चित्त करिकै सुनौ २१ ॥

विष्णोर्हिभक्तिःसुविशोधनंधियस्ततोभवेज्ज्ञानमतीवनिर्मलम्॥ विशुद्धतत्त्वानुभवोभवेत्ततःसम्यग्विदित्वापरमंपदंव्रजेत् २२ अतोभजस्वाद्यहरिंरमापतिंरामं पुराणंप्रकृतेःपरंविभुम् ॥ विसृज्यमौर्ख्यंहृदिशत्रुभावनांभजस्वरामंशरणागतप्रियम् ॥ सीतांपुरस्कृत्यसपुत्रबांधवोरामंनमस्कृत्यविमुच्यसेभयात् २३ रामं

परात्मानमभावयन्जनोभक्त्याहृदिस्थंसुखरूपमद्वयम् ॥ कथंपरंतीरमवाप्नुयाज्जनोभवांबुधेर्दुःखतरंगमालिनः २४ ॥

(धियःसुविशोधनंहिविष्णोःभक्तिः ततःअतीवनिर्मलंज्ञानंभवेत्ततःविशुद्धतत्त्वमनुभवःभवेत्सम्यग्विदित्वा परमपदंव्रजेत्) बुद्धि के विशेष शोधनको विष्णु की भक्तिहै अर्थात् हरि यश श्रवण कीर्तन नाम स्मरण पद सेवन पूजन वंदन दास्य सख्य आत्मनिवेदनादि करनेते बुद्धि चित्तादि अंतःकरण शुद्धह्वैजातेहैं तब अत्यंत निर्मल ज्ञान भाव आत्म रूप की पहिचान होतीहै देहव्यवहार वृथा देखात तब विशेषि शुद्ध आत्मतत्त्वसाक्षात्कार होताहै तब मायाब्रह्म परब्रह्म इत्यादि संपूर्ण पदार्थ जानेते पुरुष परमपदको जाताहै २२ (अतःप्रकृतेःपरंविभुं पुराणंआद्यहरिं रमापतिंरामभजस्व) इसकारणते हेरावण प्रकृति ते परे सबमें व्यापक पुराण पुरुष आद्य हरि लक्ष्मी के पति जो रामहैं तिनहिं भजो कौन भांतिकि (हृदिशत्रुभावानांमौर्ख्यंविसृज्य शरणागतप्रियम् रामंभजस्व) हृदयमे जो शत्रुभाव है सो मूर्खता त्यागि के शरणागत प्रिय है जिन को ऐसे राम को भजौ ताकी उपायमैं बतावताहौं (सीतांपुरस्कृत्यसपुत्रबांधवः रामंनमस्कृत्यभयात् विमुच्यसे) हे रावण सादर जानकीजीको आगेकरि सहित पुत्र भाइन चलौ श्री रघुनाथजी को प्रणाम करौ तौ लोक में प्राण घात परलोकमें यम सांसति इत्यादि सब भयते छूटि जाहुगे २३ (हृदिस्थंसुखरूपंअद्वयम् परात्मानंरामंभक्त्याजनः अभावयन् दुःखतरंगमालिनः भवांबुधेःपरंतीरंजनः कथंअवाप्नुयात्) हे रावण जो अंतर्यामी रूपते सब के हृदय में स्थित आनंद रूप अद्वैत ऐसे परमात्मा जो रघुनन्दन तिनहिं भक्ति करिकै जो जन नहीं भावनाकरता है तो तीनिउ तापें जराजन्म मरण गर्भवास यमसांसति इत्यादि दुःखोंकी समूह तरंगै हैं जामें ऐसा भवसागरके पार तीरको जन कैसे प्राप्त ह्वै सक्ताहै भाव विना रघुनाथजीके भजे कोई जीव भवसागरकेपार नहीं जायसक्ता है २४ ॥

नोचेत्त्वमज्ञानमयेनवह्निनाज्वलंतमात्मानमरक्षितारिवत्॥नयस्यधोधःस्वकृतैश्च पातकैर्विमोक्षशंकानचतेभविष्यति२५ श्रुत्वामृतास्वादसमानभाषितंतद्वायुसूनोर्दशकंधरोऽसुरः ॥ अमृष्यमाणोऽतिरुषाकपीश्वरंजगादरक्तांतविलोचनोज्ज्वलम् २६ कथंममाग्रेविलपस्यभीतवत्प्लवंगमानामधमोसिदुष्टधीः ॥ कएषरामःकतमोवनेचरोनिहन्मिसुग्रीवयुतंनराधमम् २७ त्वांचाद्यहत्वाजनकात्मजांततोनिहन्मिरामंसहलक्ष्मणंततः ॥

(नोचेत्अज्ञानमयेनज्वलंतंवह्निनाअरिवत्त्वंआत्मानं अरक्षितःचस्वकृतैःपातकैःअधःअधःनयसि चतेविमोक्षशंकानभविष्यति) हे रावण जो मेराकहा नहीं मानतेहौ अरु अज्ञानमय बरतीहुई अग्नि करिकै जरतीहुईदेखिकै शत्रुकीनाईं तुम आत्माको नहीं रक्षाकरतेहौ पुनः जीवहिंसा परधन परस्त्री हरणादि आपने कियेहुये पापोंकरिकै नीचीतेनीचीगतिको आत्माकोलिहेजातेहौ भावजो यासमयमें चूकतेहौ तौ पुनः अब तुमको कबहूं मोक्षकीशंकानहोइगी भाव ऐसे असंख्यपापकिहेउहै तिनके प्रभावते कभी भवबंधनते न छूटौगे २५ (अमृतस्यअस्वादसमानवायुसूनोःभाषितंतत्श्रुत्वाअसुरःदशकन्धरः अमृष्यमाणःरक्तांतविलोचनःज्वलम्अतिरुषाकपीश्वरंजगाद) खाने में मधुर पीछे अमरता ऐसे अमृतके स्वादसमान पवनपुत्रकोकहाहुआ वचनसोसुनिकै दुष्ट रावण न सहिसका क्रोधवशलालह्वैगये हैं नेत्रदोउ अग्नि तुल्य प्रज्वलित अत्यन्त कोपकरि हनुमान्प्रति बोलताभया २६ (प्लवंग

मानांअधमःअसिदुष्टधीःमभीतवत्ममाग्रेकथंविलपसिएपरामः कःवनेचरःकतमः सुग्रीवयुतंनराधमम् निहन्मि) तू वानरोमें अधम है हे दुष्टधी निडरकी नाईं मेरे आग कैसो वार्त्ताकरता हसि यह राम कौनवड़ावलीवीर है जिसको छोटाभाई घरतेनिकारि राज्यलैलिया तिसकी क्या प्रशंसाकरताहै तथा वनके चरनेवाला सुग्रीव काहे में है जो वालीके डरते भागभागफिरतारहा तिसकी क्या प्रशंसाकरताहै सुग्रीव सहित नरनमें अधम रामकोमारौंगो २७ (अद्यत्वांहत्वाततःजनकात्मजांततःसहलक्ष्मणंरामंनिहन्मि) हे अधम वानर अभी तोकोमारताहौं तदनन्तर जनकपुत्रीकोमारौंगो तदनन्तर सहितलक्ष्मण रामकोमारौंगो ॥

सुग्रीवमग्रेबलिनंकपीश्वरंसवानरैर्हन्म्यचिरेणवानर २८ श्रुत्वादशग्रीववचःसमारुतिर्विवृद्धकोपेनदहन्निवासुरम् ॥ नमेसमारावणकोटयोऽधमारामस्यदासोहमपारविक्रमः २९ श्रुत्वातिकोपेनहनूमतोवचोदशाननोराक्षसमेकमब्रवीत् ॥ पार्श्वेस्थितंमारयखंडशःकपिंपश्यंतुसर्वेऽसुरमित्रबांधवाः ३० निवारयामासततो विभीषणोमहासुरंसायुधमुद्यतंवधे॥ राजन्वधार्होनभवेत्कथंचनप्रतापयुक्तैःपरराजवानरः ३१ हतेस्मिन्वानरेदूतेवार्त्तांकोवानिवेदयेत्॥रामायत्वंसमुद्दिश्यवधायसमुपस्थितः ३२ ॥

(वानरअग्रेकपीश्वरंवलिनंसुग्रीवंसवानरैःअचिरेणहन्मि) हे वानर ताके आगेवानरोंको राजाजो बड़ावली सुग्रीवहै ताको सहित वानरनथोरेही कालमें मरिहौं २८ (दशग्रीववचःश्रुत्वासमारुतिःअसुरम्दहन्इवविवृद्धकोपेनअधमाःरावणकोटयःमेनसमानअपारविक्रमःअहंरामस्यदासः) दशग्रीवरावणके वचन सुनि सो मारुत नन्दन रावणको भस्मकरने के समान बड़े कोपकरिकै बोले कि तू सबको क्यामारैगा जो अधम रावण करोरिनहौंइतौ युद्धमें अकेले मेरी समान नहीं हैं क्योंकि अपार है पराक्रम जाके ऐसा मैं रघुनाथजी को दासहौं २९ (हनूमतःवचःश्रुत्वाअतिकोपेनदशाननःएकंराक्षसंपार्श्वेस्थितंअब्रवीत्खंडशःकपिंमारयअसुरमित्रबांधवाःसर्वेपश्यंतु) हनूमान् को वचन सुनि अत्यन्त कोपकरिकै रावण एकराक्षस समीप बैठारहा ताप्रति बोलताभया कि सर्वांग खंडखंड करि इस वानरको मारडाल जामें राक्षस मंत्री बंधु आदि सब देखैं भाव जिनको इसने माराहै तिनके संबंधी शत्रुको वध देखिलेवैं ३० (ततः सायुधंउद्यतंवधेमहासुरंविभीषणःनिवारयामासराजन्प्रतापयुक्तैःपरराजवानरःवधार्हःकथंचननभवेत्) तदनन्तर सहित हथियार उद्यत मारत सन्तउसराक्षसको विभीषण मनाकरते भये पुनः रावण प्रति बोले हे राजन् प्रतापकरिकै युक्त पुनः तुम्हारे शत्रु राजाको वानर मारिबे योग्य किसी प्रकारते नहीं भाव एकतौ बलीवीर याको कौन मारि सकाहै पुनः दूतको वधनीति विरोधहै ३१ (तस्मिन् दूते वानरेहतेवार्त्तांरामायकःवानिवेदयेत्त्वंवधायत्वंउद्दिश्यसमुपस्थितः) तिसदूत वानरके मारे संते तुम्हारी वार्त्ता रामके अर्थको जाय सुनाई जिनराम के वधके हेत तुम उद्यत बैठहौ व्यंग्यजिनके हाथ आपनी मृत्यु चाहते हौ ३२ ॥

अतोवधसमंकिंचिदन्यच्चिंतयवानरे ॥ सचिह्नोगच्छतुहरिर्यंदृष्ट्वायास्यतिद्रुतम् ३३ रामःसुग्रीवसहितस्ततोयुद्धंभवेत्तव ॥ विभीषणवचःश्रुत्वारावणोप्येतदब्रवीत् ३४ वानराणांहिलांगूलेमहामानोभवेत्किल ॥ अतोवस्त्रादिभिःपुच्छंवेष्ट

यित्वाप्रयत्नतः ३५ वह्निनायोजयित्वैनंभ्रामयित्वापुरेऽभितः ॥ विसर्जयतपश्यं तुसर्वेवानरयूथपाः ३६ तथेतिशणपट्टैश्चवस्त्रैरन्यैरनेकशः । तैलाक्तैर्वेष्टयामासु र्लांगूलंमारुतेर्दृढम् ३७ पुच्छाग्रेकिंचिदनलंदीपयित्वाथराक्षसाः ॥ रज्जुभिःसु दृढंबध्वाधृत्वातंबलिनोऽसुराः ३८ समंताद्भ्रामयामासुश्चोरोयमितिवादिनः ॥ तूर्यघोषैर्घोषयंतस्ताडयंतोमुहुर्मुहुः ३९ ॥

(अतःवधसमंवानरेकिंचित्अन्यत्चिंतयसचिह्नःहरिःगच्छतुयंदृष्ट्वासुग्रीवसहितःरामःद्रुतंआया स्यति) इसकारणते वधके समान वानर विषे कछु और दंड विचार करौ जामें सहित चिह्न वानर जाय जाको देखि सुग्रीव करिकै सहित रामशीघ्रही आवहिं ३३ (ततःतवयुद्धभवेत्विभीषणवचःश्रु- त्वारावणःअपिएतत्अब्रवीत्) तदनन्तर तुम्हारे साथ रामका युद्धहोई इतिविभीषणको वचन सुनि रावण भी ऐसा बोलताभया ३४ (वानराणांहिलांगूलेकिलमहामानःभवेत्अत.प्रयत्नतःवस्त्रादिभिः पुच्छंवेष्टयित्वा) वानरनको लांगूलविषे निश्चयकरि महामान अर्थात् प्रीति होतीहै इस कारणते यत्न पूर्वक वस्त्रादिकोंकरिकै पूछको लपेटौ ३५ (वह्निनायोजयित्वापुरेअभिहितःएनंभ्रामयित्वावि सर्जयतसर्वेवानरयूथपाःपश्यन्तु) अग्नि करिकै योजितकरौ भाव पूछमें अग्नि करिजराय पुनः लंका पुरमें सबदिशि घुमायकै छोड़िदेउ जब इहांते जायगा तब सब वानर यूथपपूछहीन देखैंगे तब जानैं गेकि लंकागये को यही फलहै ३६ (तथा इतिशणपट्टैःचअनेकशःअन्यैःवस्त्रैःतैलाक्तैःमारुतेःलांगू- लंदृढम्वेष्टयामासुः) तैसही होय ऐसा कहि राक्षसनकेपटटाट करिकै पुनः अनेक प्रकार ऊन सू- ताटि वस्त्रों करिकै तेल बोरिकरिकै हनुमानके लांगूलको पुष्टकरि लपेटतेभये ३७ (अथराक्षसाःपु- च्छाग्रेकिंचित्अनलंदीपयित्वारज्जुभिःसुदृढंबध्वातंबलिनःअसुराःधृत्वा) अब राक्षस पूछके अग्रकछु आगि जरायकै रसरिनकरिकै पुष्टबांधि ताको बली राक्षस गहिकै ३८ (अयंचोरः इति वादिनःस मंतात्भ्रामयामासुःतूर्यघोषैःघोषयतः मुहुःमुहुःताडयंतः) यहचोर है ऐसा कहते हुये सर्वत्र घुमावते भये साथ में तुरही आदि बाजों करिकै शब्द होता है वारंवार मारते हैं ३९ ॥

हनुमतापितत्सर्वंसोढुंकिंचिच्चिकीर्षुणा ॥ गत्वातुपश्चिमद्वारसमीपंतत्रमारुतिः ४० सूक्ष्मोबभूवबंधेभ्योनिःसृतःपुनरप्यसौ ॥ बभूवपर्वताकारस्ततउत्प्लुत्यगो पुरम् ४१ तत्रैकस्तंभमादायहत्वातान्रक्षिणःक्षणात् ॥ विचार्य्यकार्य्यशेषंसः प्रासादाग्राद्गृहाद्गृहम् ४२ उत्प्लुत्योत्प्लुत्यसंदीप्तपुच्छेनमहताकपिः ॥ ददाह लंकामखिलांसाट्टप्रासादतोरणाम् ४३ हातातपुत्रनाथेतिक्रंदमानाःसमंततः ॥ व्याप्ताःप्रासादशिखरेप्यारूढादैत्ययोषितः ४४ देवताइवदृश्यंतेपतंत्यःपावकेऽखि लाः ॥ विभीषणगृहंत्यक्त्वासर्वंभस्मीकृतंपुरम् ४५ ॥

(किंचित्चिकीर्षुणाहनूमताऽपितत्सर्वंसोढुंतु पश्चिमद्वारसमीपंगत्वातत्रमारुतिः) कछु और कार्य करने की इच्छा करिकै हनुमान् भी राक्षसों को तिरस्कार सो सब सहतेहैं पुनः जब पश्चिकाद्वार के समीप गये तहां पवन पुत्र ४० (सूक्ष्मःबभूवबंधेभ्यः निःसृतःअपि असौपर्वताकार.बभूवततःगोपु रंउत्प्लुत्य) उहांसूक्ष्म तन हो जाते भये ढीलेपरे रस्सी बंधनोंते निसरि पुनः निश्चय करिये हनुमान् बाढ़िकै पर्वताकार ह्वै जाते भये तदनंतर द्वार के ऊपर कूदि चढ़ि गये ४१ (तत्रएकस्तंभं आदायर

रक्षिणःतान्क्षणात् हत्वाशेषंकार्यविचार्यसःप्रासादअग्रात्गृहात्गृहम्) द्वारऊपरजायतहां एकखंभाउचारि लैकै यावत् इनके रखावनेवाले रहैं तिन को क्षण भरे में मारि डारे पुनः और बाकी जो कार्य्य रहा हैताको विचार करिकै ऊँचे महल पर जाय तापरते एक मंदिरते दूसरे मंदिरपर ४२ (उत्प्लुत्य महताकपिः पुच्छेनसंदीप्तसअट्टप्रासादतोरणाम्अखिलाम् लंकाम्ददाह) एक मंदिर परते कूदि दूसरे पर जाय महा कपि हनुमान् पूछ की अग्नि करिकै अग्नि ज्वलित करते हुये सहित अटारी मंदिर द्वारादि संपूर्ण लंकापुरी भस्म करिदेते भये ४३ (प्रासादशिखरेअपि आरूढादैत्ययोषितः हातातपुत्र नाथइतिक्रंदमानाः समंततःव्याप्तः पावकेअखिलाःपतंत्यः देवताइवदृश्यंते विभीषणंगृहंत्यक्त्वा सर्वं पुरंभस्मीकृतम्) मंदिरन के ऊपर चढ़ी हुई राक्षसोंकी स्त्रीतें हा तात हा पुत्र हा नाथ ऐसा पुकारि रोवती चिल्लातीहुई अरु सर्वत्र व्यापक अर्थात् वरतीहुई अग्नि बिषे वरतीहुई गिरतीहैं तेदेवता सम देखातीहैं इसी भांति एक बिभीषण को घर बराय और सब पुर भस्म करि दिये ४४ । ४५ ॥

ततउत्प्लुत्यजलधौहनूमान्मारुतात्मजः ॥ लांगूलंमज्जयित्वांतःस्वस्थचित्तोबभूवसः ४६ वायोःप्रियसखित्वाच्चसीतयाप्रार्थितोऽनलः॥नददाहहरेःपुच्छंबभूवात्यंतशीतलः ४७ यन्नामसंस्मरणधूतसमस्तपापास्तापत्रयानलमपीहतरंतिसद्यः ॥ तस्यैवकिंरघुवरस्यविशिष्टदूतःसंतप्यतेकथमसौप्रकृतानलेन ४८ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेसुन्दरकाण्डेचतुर्थःसर्गः ४ ॥

(तत्मारुतात्मजः हनूमान्उत्प्लुत्यजलधौ लांगूलंमज्जयित्वासः अंतःस्वस्थचित्तःबभूव) सब लंका भस्म करि तब पवन पुत्र हनूमान् लंकाते कूदे आय समुद्र विषे जल में ज्वलित लांगूल बोरि दिये अग्नि बुझाय तब सो हनुमान् अंतःकरण में स्वस्थ चित्त अर्थात् श्रम रहित प्रसन्न होते भये अब पार्वती जी शंकाकिया कि प्रचंड अग्नि की ज्वालन में रहे अरु हनुमान् क्यों नजरे तापर शिव जी कहते हैं ४६ (वायोःप्रियसखित्वात्च सीतायाःप्रार्थितःअनलः अत्यंतशीतलःबभूवहरेः पुच्छंन ददाह) हनुमान् के पिता पवन तिनको प्रिय सखाहै अग्नि इति मित्र को पुत्र जानि पुनः सीता करिकै प्रार्थना कियागया ताते अग्नि अपनी दाहकता त्यागि अत्यंत शीतल होता भया इसकारण हरि जो बानर अर्थात् हनुमान्जी तिनकी पूछ को अग्नि नहीं जरावता भया ४७ (यन्नामस्मरणासमस्तपापाः धूततापत्रयानलंअपीहसद्यः तरंतितस्यएवरघुवरस्यविशिष्टदूतः किंअसौप्रकृतानलेनकथंसंतप्यते) पूर्वमाधुर्यमें कहे अब ऐश्वर्य में कहत कि जिन प्रभुको राम ऐसा नाम स्मरणकरि जन सब प्रकार के पापदूरि करि देते हैं पुनः तापत्रय यथा अधिदैहिक ज्वर शूलादि अधि भौतिक शत्रुराज दंडादि पुनः अधिदैविक दरिद्र हानि वियोगादि जो तीनिहु तापै तिन करिकै उत्पन्न जो दुःखाग्नि तिसको भी निश्चय करिशीघ्रतरि जाता है भाव तापदुःखनहीं व्यापता है ऐसाप्रभाव जाके नाममें है तिन रघुनंदन को उत्तमदूत हनुमान् को क्या है तुच्छ यह लौकिक अग्नि तिस करिकै कैसे संतप्तहोवैं ४८ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतबैजनाथ
बिरचितेअध्यात्मभूषणेसुंदरकाण्डेचतुर्थः प्रकाशः ४ ॥

तत सीतांनमस्कृत्यहनूमानब्रवीद्वचः ॥ आज्ञापयतुमांदेविभवतीरामसन्निधिम् १ गच्छामिरामस्त्वांद्रष्टुमागमिष्यतिसानुजः ॥ इत्युक्त्वात्रिःपरिक्रम्यजानकींमारुतात्मजः २ प्रणम्यप्रस्थितोगंतुंइदंवचनमब्रवीत् ॥ देविगच्छामिभद्रंते तूर्णंद्रक्ष्यसिराघवम् ३ लक्ष्मणंचससुग्रीवंवानरायुतकोटिभिः ॥ ततःप्राहहनूमंतंजानकीदुःखकर्शिता ४ त्वांदृष्ट्वाविस्मृतंदुःखमिदानींत्वंगमिष्यसि ॥ इतःपरं कथंवर्तेरामवार्ताश्रुतिंविना ५ मारुतिरुवाच ॥ यद्येवंदेविमेस्कंधमारोहक्षणमात्रतः ॥ रामेणयोजयिष्यामिमन्यसेयदिजानकि ६ ॥

सवैया ॥ सियबोधि प्रणम्य चलेकपि सोफल खात सुकंठसुमोदलहे । हनुमान् पुराकरिआयसबै कपिराजसराघव पाँयगहे ॥ मणिदीन सिया कुशलातदुखी निजकृत्य सबैहनुमान् कहे । फलखाय समग्रउपारि बनैखलमारि घनेपुरलंकदहे ॥ (ततःहनुमान्सीतांनमस्कृत्यवचःअब्रवीतुदेविरामसन्निधिम्भवतीमांआज्ञापयतु) तदनंतर हनुमान् सीताको नमस्कार करि वचन बोलते भये हे देवि रघुनाथजीके समीपजाने को आपमोको आज्ञा दीजिये १ (गच्छामित्वांद्रष्टुंसानुजःरामःआगमिष्यति इतिउक्त्वामारुतात्मजःजानकींत्रिःपरिक्रम्य) मैं जांउतौ तुम्हारे देखने को सहित लक्ष्मण रघुनाथ जी आवहिंगे ऐसाकहि हनुमान् जानकी को तीनि परिक्रमा करिकै २ (प्रणम्यगंतुंप्रस्थितःइदंवचनंअब्रवीतुदेवितेभद्रंगच्छामितूर्णंराघवंद्रक्ष्यसि)प्रणामकरि चलिबे पर उद्यत ह्वै हनुमान् ऐसावचन बोलतेभये हे देवि तुम्हारा कल्याण होय अब मैं जाताहौं शीघ्रही रघुनाथजी को देखहुगी कौन भांति ३ (लक्ष्मणंचवानरायुतकोटिभिःसुग्रीवंततःदुःखकर्शिताजानकीहनुमंतप्राह) लक्ष्मणको पुनः हजारन करोरिवानरन सहित सुग्रीवको देखौगी तबदुःख करिकै दुर्बल जानकी सो हनुमान् प्रति बोलती भई४ (त्वांदृष्ट्वादुःखंविस्मृतंइदानींत्वंगमिष्यसिइतःपरंविनारामवार्ताश्रुतिंकथंवर्ते) हेहनुमान् तुमको देखिकै दुःख बिसरि गयाहै अबतुम जातेहौ इस्के पाछे विना रघुनंदन की वार्ता सुने कैसे रहौंगी ५ (देवियदिएवंमेस्कंधंआरोहजानकियदिमन्यसेक्षणमात्रतःरामेणयोजयिष्यामि) तबहनुमान् बोले किहे देवि जो ऐसही है तौ मेरेकांधेपर चढ़ौ हे जानकी जो मेरा कहा मानौ तौएकक्षणमात्र में रघुनंदन करिकै तुमको मिलाय देऊँगो ६ ॥

सीतोवाच ॥ रामःसागरमाशोष्यबध्वावाशरपंजरैः ॥ आगत्यवानरैःसार्द्धंहत्वा रावणमाहवे ७ मांनयेद्यदिरामस्यकीर्तिर्भवतिशाश्वती ॥ अतोगच्छकथंचापि प्राणान्संधारयाम्यहम् ८ इतिप्रस्थापितोवीरःसीतयाप्रणिपत्यताम् ॥ जगाम पर्वतस्याग्रेगंतुंपारंमहोदधेः ९ तत्रगत्वामहासत्वःपादाभ्यांपीड्यन्गिरिम्॥ जगामवायुवेगेनपर्वतश्चमहीतलम् १० ततोमहीसमानत्वंत्रिंशद्योजनमुच्छ्रितः॥ मारुतिर्गगनांतस्थोमहाशब्दंचकारसः ११ तंश्रुत्वावानराःसर्वेज्ञात्वामारुतिमागतम् ॥ हर्षेणमहताविष्टाःशब्दंचक्रुर्महास्वनम् १२ ॥

(रामःसागरंआशोष्यवाशरपंजरैःबध्वावानरैःसार्द्धंआगत्यआहवेरावणंहत्वा) हनुमान् के वचन सुनि जानकीजी बोली कि चोरी ते जाना लघुता है ताते रघुनंदन वाण की अग्नि करिकै समुद्रको शोषिलेवैं अथवा वाणसमूहौं को पजरकरिकै सेतुबांधि वानरों करिकै सहित आयसंग्राम में रावण

को मारिकै ७ (यदिमांनयेत्रामस्यशाश्वतीकीर्तिःभवति अतःगच्छ अहंकथंचापिप्राणान्संधारयामि) रावण मारिकै जो मोको लैजांयगे तौ रघुनंदन की बहुतकालान कीर्ति होइगी इससे हे हनुमान् तुमजाउ अव मैं किसी भांति प्राजन को धारण किहे रहौंगी ८ (इतिसीतयाप्रस्थापितःवीरःतांप्रणिपत्यमहोदधेःपारंगंतुंपर्वतस्यअग्रेजगाम) इसप्रकार सीताकरिकै पठावा हुआ वीरहनुमान् तिन सीताको प्रणाम करिसमुद्रके पारजाने को पर्वतके ऊपर को कूदिकै चढ़िजाता भया ६ (तत्रगत्वा महासत्वःगिरिम्पादाभ्यांपीड़यन्वायुवेगेनजगामचपर्वतःमहीतलंजगाम) तिसपर गये महाबली हनुमान् उसपर्वत को पायन करिकै दबाय पवन के तुल्यवेग करिकै चलते भये पुनः जहां तेकूदेसो पर्वत इनकेदवाने ते भूमि में समायजाताभया १० (ततःत्रिंशत्योजनंउच्छ्रितःमहीसमानत्वंमारुतिःगगनांतस्थःसःमहाशब्दंचकार) तदनंतर जो तीसयोजन ऊंचा पर्वतरहा सो हनुमान् के दवाने ते ऐसा समाय गया कि ऊपर को शिराभूमि के वरावरि होगया अरु हनुमान् जाय आकाश में स्थित ह्वै सो महाभारी शब्द करतभये ११ (तंश्रुत्वासर्वेवानराःमारुतिंआगतंज्ञात्वाहर्षेणमहताविष्टःमहास्वनम्शब्दंचक्रुः) हनुमान् को कियाजो शब्द ताहि सुनिकै सब वानर हनुमान् को आगमन जानिकै बड़े आनंद सहित महाभारी रवते शब्दकरते भये अर्थात् हर्षवशगार्जि उठे १२ ॥

> शब्देनैवविजानीमःकृतकार्यःसमागतः ॥ हनूमानेवपश्यध्वंवानरावानरर्षभम् १३
> एवंब्रुवत्सुवीरेषुवानरेषुसमारुतिः ॥ अवतीर्य्यगिरेर्मूर्ध्नवानरानिदमब्रवीत् १४
> दृष्टासीतामयालंकाधर्षिताचसकानना ॥ संभाषितोदशग्रीवस्ततोऽहंपुनरागतः १५इदानीमेवगच्छामोरामसुग्रीवसान्निधिम् ॥ इत्युक्त्वावानराःसर्वेहर्षेणालिंग्य मारुतिम् १६ केचिच्चुचुंवुर्लांगूलंननृतुःकेचिदुत्सुकाः ॥ हनूमतासमेतास्तेजग्मुः प्रस्रवणंगिरिम् १७ गच्छंतोददृशुर्वीरावनंसुग्रीवरक्षितम् ॥ मधुसंज्ञंतदाप्राहुरंगदंवानरर्षभाः १८ ॥

(हनूमान्एवकृतकार्यःसमागतःशब्देनएवजानीमःवानराःवानरर्षभंपश्यध्वम्) कोई वानर बोला कि हनूमान् निश्चय करिकार्य पूरा करिकै आयेहैं यह अनुमान हनुमानके शब्दैकरिकै हमजानिगये कोई बोला हे वानरो वानरों में श्रेष्ठ जो हनुमान् ताहि देखौ अर्थात् आयगया १३ (एवंवीरेपुवानरेषुब्रुवत्सुसमारुतिःगिरेःमूर्ध्निअवतीर्य्यवानरान्इदंअब्रवीत्)इसप्रकारवीरवानरसव परस्परवार्ताकरते रहे ताही समयमें हनुमान् पहार केशिखरपर आकाशते उतरि वानरनप्रतिऐसोवचन वोलतेभये १४ (मयासीतादृष्टाचसकाननालंकाधर्षितादशग्रीवः संभाषितःततःअहंपुनःआगतः) मैंने सीता देखी इति कहि सावधान किये पुनः सहित वनलंका जीता रावण सों वार्ता किया भाव वन उजारि घने राक्षसों को मारि रावण सों वार्ता करिलंका भस्म करि तदनंतर मैं पुनः यहां को आया १५ (इदानींएवरामसुग्रीवसन्निधिम् गच्छामःइतिउक्त्वाहर्षेणसर्वे वानराःमारुतिंआलिंग्य) इसी समय में निश्चय करि रघुनंदन सुग्रीव के समीप को हम सब चलैंगे ऐसा जब हनुमान् कहे तब आनंद करिकै सब वानर हनुमान् को हृदय में लगाय मिले १६ (केचित्लांगूलंचुचुंवुःकेचित्उत्सुकाःननृतुःते हनूमता समेताःप्रस्रवणंगिरिम्जग्मुः)कोई तौ हनुमान् की पूछको चूँवते हैं कोई अभीष्ट प्राप्तिके आनंद वशनाचते हैं ते सब वानर हनुमान् समेत प्रवर्षण गिरिको जहां रघुनंदन वास किहे हैं तहां को यात्रा करते १७ (सुग्रीवरक्षितंमधुसंज्ञंवनंगच्छंतवीराःददृशुःतदावानरर्षभाःअंगदंप्राहुः) सुग्रीव

करिकै रक्षा किया हुवा जो मधुनामे वनहै फलाहुवा ताको जाते हुये वानर बीर देखतेभये तासमय में उत्तम वानर सब अंगद प्रति बोलते भये १८ ॥

क्षुधिताःस्मोयंवीरदेह्यनुज्ञांमहामते ॥ भक्षयामःफलान्यद्यपिवामोऽमृतवन्मधु १९ संतुष्टाराघवंद्रष्टुंगच्छामोऽद्यैवसानुजं २० ॥ अङ्गदउवाच ॥ हनूमान्कृतकार्योयंपिवतैतत्प्रसादतः ॥ जक्षध्वंफलमूलानित्वरितंहरिसत्तमाः २१ ततःप्रविश्यहरयःपातुमारेभिरेमधु॥रक्षिणस्ताननादृत्यदधिवक्त्रेणनोदितान् २२ पिवतस्ताडयामसुर्वानरानवानरर्षभाः॥ततस्तान्मुष्टिभि.पादैश्चूर्णयित्वापपुर्मधु २३ ततोदधिमुखःक्रुद्धःसुग्रीवस्यसमातुलः ॥ जगामरक्षिभिःसार्द्धंयत्रराजाकपीश्वरः २४ गत्वातमब्रवीदेवचिरकालाभिरक्षितम् ॥ नष्टंमधुवनंतेद्यकुमारेण हनूमता २५ ॥

(वीरवयंक्षुधिताःस्मःमहामतेअनुज्ञां देहि अद्यफलानि भक्षयामःअमृतवनमधुपिबामः) वानर बोले हे अंगद बीर हमसब भूँखे हैं ताते हे महामते आज्ञादीजिये आज फल खांयगे तथा अमृत के तुल्यजो मधुवृक्षों को मीठारस पान करहिंगे १९ (अद्यएवसंतुष्टासानुजंराघवंद्रष्टुंगच्छामः) भोजन पान करि अब निश्चय करि संतुष्ट ह्वैकै तब सहित लक्ष्मण रघुनंदन को देखने को चलैं २० (अयंहनुमान्कृतकार्यःएतत्प्रसादतःहरिसत्तमाःपिवतफलमूलानित्वरितंयक्षध्वं) अंगद बोलतेभये कि यं हनुमान् कार्य करिआये हैं सो इनहीं के प्रसादते हे उत्तम वानरो मधुपीवो फल मूलादि शीघ्रही भोजनकरो २१ (ततःहरयःप्रविश्यमधुपातुंआरेभिरेदधिवक्त्रेननोदितान्रक्षिणःतान्अनादृत्य) तदनंतर अंगदकी आज्ञापाय सब वानर वनमें पैठि मधुपान करिबेको प्रारंभ किये उहांदधिमुखके आज्ञाकार रखवार रहे ते मना किये तिनहिं अंगदादि अनादर करि दिये उनका कहा न माने २२ (पिवतःवानरान्वानरर्षभःताडयामासुःततःतान्मुष्टिभिःपादैःचूर्णयित्वामधुपपुः) मधुपान करते हुये जो वानर तिनहिं वानरनमें श्रेष्ठ जो दधिमुख अपने आज्ञाकार वानरन सहित मारने लगे तदनंतर दधिमुख की जो समाज रही तिनाहि अंगदादि मुष्टिक लातों करिके मारि चूरकरिदिये अरु मधुपान करते भये २३ (तत.सुग्रीवस्यमातुलःमदधिमुखःक्रुद्ध.रक्षिभिःसार्द्धंजगामयत्रराजाकपीश्वरः) तदनंतर सुग्रीव को मामासो दधिमुख क्रोधवश रखवारन सहित उहां जाताभया जहां वानरोंके राजा सुग्रीव वैठे रहैं २४(गत्वातंअब्रवीत्एवचिरकालतेअभिरक्षितंमधुवनंअद्यकुमारेणहनूमतानष्टं) उहां जाय दधि मुख सो तिन सुग्रीव प्रति बोलते भये हे राजन् वहुत कालते आपकरिकै रक्षा किया गया जो मधुवन ताहि आज अंगद और हनुमान्ने नष्ट किया २५ ॥

श्रुत्वादधिमुखेनोक्तंसुग्रीवोहृष्टमानसः ॥ दृष्टागतोनसंदेहःसीतांपवननंदनः २६ नोचेन्मधुवनंद्रष्टुंसमर्थःकोभवेन्मम ॥ तत्रापिवायुपुत्रेणकृतंकार्यंनसंशयः २७ श्रुत्वासुग्रीववचनंहृष्टोरामस्तमब्रवीत् ॥ किमुच्यतेत्वयाराजन्वचःसीताकथान्वितम् २८ सुग्रीवस्त्वब्रवीद्वाक्यंदेवदृष्टावनीसुता ॥ हनूमत्प्रमुखाःसर्वेप्रविष्टामधुकाननम् २९ भक्षयंतिस्मसकलंताडयंतिस्मरक्षिणः ॥ अकृत्वादेवकार्यंतेद्रष्टुंम

ध्रुवनंमम ३० नसमर्थास्ततोदेवीदृष्टासीतेतिनिश्चितम् ॥ रक्षिणोवोभयंमास्तु गत्वाब्रूतममाज्ञया ३१ ॥

(दधिमुखेनउक्तंश्रुत्वासुग्रीवःहृष्टमानसःसीतांदृष्ट्वापवननंदनःआगतःसंदेहःन) दधिमुख करिकै कहाहुआ वचनसुनिकै सुग्रीव आनंदमन कहतेभये कि अनुमानते मालूमहोताहै कि सीताकोदेखिकै हनुमान् आये हैं यामें संदेह नहीं है २६ (नोचेत्ममममधुवनंद्रष्टुंसमर्थःकःभवेत्तत्रापिवायुपुत्रेणकार्यंकृतंसंशयःन) नाहींतौ अर्थात् जो कार्य न किहे होते तौ मेरे रक्षा कियेहुये मधुवन को देखने को कौनसमर्थ है ताते निश्चयकरि हनुमान् ने कार्य किया यामें संशय नहीं है २७ (सुग्रीववचनंश्रुत्वा रामःहृष्टःतंअब्रवीत्राजन्सीताकथान्वितम्वचःकिंत्वयाउच्यते) सुग्रीवको वचन सुनिकै रघुनंदन प्रसन्न ह्वै सुग्रीवप्रति बोलते भये हे राजन् सीताकी कथायुक्त वचन क्या तुमने कहा २८ (तुसुग्रीवःवाक्यंअब्रवीत्देवअवनीसुताद्दृष्टाहनुमत्प्रमुखाःसर्वेमधुकाननम्प्रविष्टाः)पुनः सुग्रीववचन बोलते भये हे देवभूमि की पुत्री अर्थात् सीता देखिकै आये हनुमान् मुखियाहैं जिनमें ते सबवानर मधुवन में पैठिगये फलादिखाते हैं २९ (भक्षयंतिस्मरक्षिणःसकलंताड़यंतिस्मदेवतेकार्यंअकृत्वाममममधुवनंद्रष्टुंनसमर्थाः) वरवश फलखाते हैं पुनः जे वनके रक्षकरहे तिनसबको मारे हे देवरघुनंदन आपको कार्य विना किहे मेरे मधुवन को देखने को कोऊ वानर समर्थ नहीं है ३० (ततःसीतादेवीदृष्टा इति निश्चतम्रक्षिणःवःभयंमास्तुममाज्ञयागत्वाब्रूत) ताते सीतादेवी देखि आये यह निश्चयकरि साची है इति रघुनंदन प्रतिकहि पुनः सुग्रीव बोले हे रक्षकौ अब तुमको मारनेकी भयनहीं है मेरी आज्ञाकरिकै मधुवन को जाउ वानरौं ते कहौ भाव तुमको बुलावते हैं इति जायकहौ ३१ ॥

वानरानंगदमुखानानयध्वंममांतिकम् ॥ श्रुत्वासुग्रीववचनंगत्वातेवायुवेगतः ३२ हनुमत्प्रमुखानूचुर्गच्छतेश्वरशासनात् ॥ द्रष्टुमिच्छतिसुग्रीवःसरामोलक्ष्मणान्वितः ३३ युष्मानतीवहृष्टास्तेत्वरयंतिमहाबलाः ॥ तथेत्यम्बरमासाद्यययुस्तेवानरोत्तमाः ३४ हनूमंतंपुरस्कृत्ययुवराजंतथांगदम् ॥ रामसुग्रीवयोरग्रेनिपेतुर्भुविसत्वरम् ३५ हनूमान्राघवंप्राहदृष्टासीतानिरामया ॥ साष्टांगंप्रणिपत्याग्रेरामंपश्चाद्धरीश्वरम् ३६ कुशलंप्राहराजेंद्रजानकीत्वांशुचान्विता ॥ अशोकवनिकामध्येशिंशपामूलमाश्रिताः ३७ ॥

(अंगदमुखान्वानरान्ममांतिकम्आनयध्वम् सुग्रीववचनंश्रु वातेवायुवेगतःगत्वा) अंगद आदि सब वानरनको मेरे पासको बुलायलावौ इति सुग्रीवको कहा वचन ताहिसुनिकै ते रक्षक पवनवेगकरिकै शीघ्रही मधुवनकोगये ३२ (हनुमत्प्रमुखान्ऊचुः ईश्वरशासनात्गच्छतलक्ष्मणान्वितः सरामःसुग्रीवः द्रष्टुंइच्छति) हनुमान्आदि वानरनप्रति बोलतेभये स्वामीकी आज्ञातेचलौ लक्ष्मण संयुक्त सहित रघुनन्दन सुग्रीव तुम लोगनको देखनेकी इच्छाकरतेहैं भाव शीघ्रही चलौ ३३ (महाबलाःयुष्मान् अतीवहृष्टाःतेत्वरयंतितथाइतितेवानरोत्तमाःअम्बरंआसाद्यययुः) हे महावली वानरौ तुम लोगनप्रति अत्यन्त प्रसन्नते राम लक्ष्मण सुग्रीव तुम्हारे देखनेकी शीघ्रताकरिरहे हैं इति सुनि बहुतभली ऐसा कहि ते हनुमानादि वानरोत्तम आकाश मार्गकरिकै शीघ्रही जातेभये ३४ (हनूमंतंपुरस्कृत्यतथायुवराजंअंगदंसत्वरम्रामसुग्रीवयोः अग्रेभुविनिपेतुः) हनुमान्को आगेकरि तैसे युवराज अंगद को आगे

करि सब वानर शीघ्रही आयरघुनंदन सुग्रीव के आगेभूमि में गिरि दण्डप्रणाम करतेभये ३५ (अग्रे रामंसाष्टांगंप्रणिपत्यपश्चात्हरीश्वरंहनूमान्राघवंप्राहनिरामयासीतादृष्टा)प्रथम रघुनंदन को साष्टांगप्रणाम करि पीछे वानरेश्वर सुग्रीव को प्रणाम करि तब हनुमान् रघुनंदन प्रति बोलते भये कि अदूषित कुशल सीता मैंने देखी ३६ (राजेंद्रअशोकवनिकामध्येशिंशपामूलंआश्रिताशुचान्वितासीतात्वांकुशलंप्राह) रघुनंदन प्रति हनुमान् कहत कि हे राजेंद्र अशोकवनिकामध्यमें शिंशपावृक्ष के तरे बैठी शोकयुत सीता आपकी कुशल पूछा है ३७ ॥

राक्षसीभिःपरिवृतानिराहाराकृशाप्रभो ॥ हारामरामरामेतिशोचंतीमलिनाम्बरा ३८ एकवेणीमयादृष्टाशनैराश्वासिताशुभा ॥ वृक्षशाखांतरेस्थित्वासूक्ष्मरूपेणते कथाम् ४० जन्मारभ्यतवात्यर्थंदण्डकागमनंतथा ॥ दशाननेनहरणंजानक्या रहितेत्वयि ४१ सुग्रीवेणयथामैत्रींकृत्वाबालिनिबर्हणम् ॥ मार्गणार्थंचवैदेह्याःसुग्रीवेणविसर्जिताः ४१ महाबलामहासत्वाहरयोजितकाशिनः ॥ गताःसर्वत्रसर्वेवै तत्रैकोऽहमिहागतः ४२ अहंसुग्रीवसचिवोदासोऽहंराघवस्यहि ॥ दृष्टायज्जानकीभाग्यात्प्रयासःफलितोद्यमे ४३ ॥

(प्रभोराक्षसीभिःपरिवृतानिराहाराकृशामलिनाम्बराहारामरामरामइतिशोचंती)हेप्रभोराक्षसिन करिकै घेरमें परी भोजन रहित दुर्बल होरहाहै शरीर जिनको मलीन वस्त्रधारण किहे हाराम हाराम हाराम ऐसा उच्चारणकरि शोचकरतीहैं ३८ (वृक्षशाखांतरेस्थित्वासूक्ष्मरूपेणमयाएकवेणीदृष्टाशुभाते कथा मृशनैःआश्वासिता) वृक्षशाखों के बीचमेंबैठा सूक्ष्मरूपकरिकै मैंने एकवेणी धारणकिये जानकी को देखा तब मंगलीक आपकी कथाहै ताहि धीरा धीरा कहि सावधान किया ३९ (तव जन्म आरभ्यतथा अत्यर्थंदंडकागमनंत्वयिरहितेदशाननेनजानक्याहरणं) हेरघुनन्दनआपके जन्मते प्रारंभकरि ताही भांति विवाहादिविस्तारसहित दंडक वनको गमन तहां आपकरिकै रहित सूने आश्रममें रावण करिकै जानकी को हरण ४० (यथासुग्रीवेणमैत्रींकृत्वा बालिनिबर्हणम् चवैदेह्याःमार्गणार्थं सुग्रीवेणविसर्जितः) जैसे सुग्रीव करिकै मित्रता किया जिस प्रकार बालि को मारा आपने पुनः जानकी जीके ढूंढनेहेत सुग्रीव करिकै भेजे हुये ४१ (महाबलामहासत्वाजितकाशिनः हरयःसर्वेवै सर्वत्रगताः तत्रएकःअहंइहागतः) बड़े बली बड़ेवीर्यवंत अजितव्योममार्ग गमन करने वाले वानर सब निश्चय करि सब दिशन को गये हैं बहुत तिन बानरन में एक मैंभी हौं सो ढूँढतसंते इहांआया हौं ४२ (अहंसुग्रीवसचिवः हि अहंराघवस्यदासः यत्भाग्यात्जानकीदृष्टा अद्यमेप्रयासःफलितः) मैं सुग्रीव को मंत्री हौं पुनः निश्चय करिकै मैं रघुनन्दन को दास हौं जो भाग्य वशते मैंने जानकी देखी तौ अब मेरा परिश्रम सफल भया ४३ ॥

इत्युदीरितमाकर्ण्यसीताविस्फारितेक्षणा ॥ केनवाकर्णपीयूषंश्रावितंमेशुभाक्षरम् ४४ यदिसत्यंतदायातुमद्दर्शनपथंतुसः ॥ ततोऽहंवानराकारःसूक्ष्मरूपेणजानकीम् ४५ प्रणम्यप्रांजलिर्भूत्वादूरादेवस्थितःप्रभो ॥ पृष्टोऽहंसीतयाकस्त्वमित्यादिबहुविस्तरम् ४६ मयासर्वंक्रमेणैवविज्ञापितमरिंदम ॥ पश्चान्मयार्पितंदेव्यै भवद्दत्तांगुलीयकम् ४७ तेनमामतिविश्वस्तावचनंचेदमब्रवीत् ॥ यथादृष्टास्मि

हनुमन्पीड्यमानादिवानिशम् ४८ राक्षसीनांतर्जनैस्तत्सर्वंकथयराघवे ॥ मयोक्तं देविरामोपित्वच्चिन्तापरिनिष्ठितः ४९ ॥

(इतिउदीरितंआकर्ण्यसीता विस्फारितेक्षणामेकर्णपीयूषंशुभाक्षरम् केनवाश्रावितं) इत्यादिमैंरा कहा ताहि सुनिकै सीता खोलि नेत्रौं करिकै सर्वत्र निहारे जब न देखे तब बोली कि मेरे कानौं को सुनत में अमृततुल्य मंगलमय वचन किसने सुनावाहै ४३ (सयादिसत्यंमदर्शनपथंतुतदायातु ततःअहंवानराकारःसूक्ष्मरूपेण) यह सुनावनेवाला सो जो सत्यहै तोमेरे नेत्रनके आगे प्रसिद्धहोय जब ऐसा कहे तब मैं वानराकार छोटारूप करिकै प्रसिद्ध है ४५ (प्रभोजानकीम्प्रणम्यप्रांजलिः भूत्वादूरात्एवस्थित.त्वंकः इत्यादिबहुविस्तरंसीतयापृष्टःअहम्) हे प्रभो जानकी को प्रणाम करिकै हाथ जोरेहुये दूरही खड़ारहौं मोको देखि बोली कि तू कौनहै कहांते आया इहांक्या कार्य है इत्यादि बहुत विस्तार पूर्वक सीता करिकै मैं पूछागया भाव वानर देखि मायावी राक्षस रावण की शंकाकर तीभई ४६ (अरिंदममयाक्रमेणएवसर्वंविज्ञापितंपश्चात्भवतुदत्तअंगुलीयकम्मयादेव्यैअर्पितं) हे शत्रुनाशक मैंने क्रमकरिकै अपना सब हाल जनाय दिया पीछे जो आपकी दीन्हीं मुद्रिकारहै ताको मैंने देवीजानकी के अर्थअर्पित किया हाथ में धरिदिया ४७(तेनमांअतिविश्वस्ताचइदंवचनंअब्रवीत् हनुमत्दिवानिशम्पीड्यमानायथादृष्टास्मि) तिसमुद्रिका करिकै मेरेमें अत्यन्त विश्वास राखि पुनः यह वचन बोलती भई हे हनुमन् दिनौराति दुःखपीड़ित जैसे देखेउहै मोको ४८ (राक्षसीनांतर्जनैः तत्सर्वंराघवेकथय मयाउक्तंदेवित्वत्चिंतापरिनिष्ठितःरामःअपि) राक्षसिनको तर्जन(ताड़न)डरपाव नादि करिकै जो दुःख देखेउहै सो सब रघुनंदन के अर्थ कहेउ इतिसुनि तब मैंने कहा कि हे देवि तुम्हारी चिंतामें बूडे रघुनंदन भी हैं ४९ ॥

परिशोचत्यहोरात्रंत्वद्वार्तांनाधिगम्यसः॥इदानीमेवगत्वाहंस्थितिंरामातेब्रुवे ५० रामःश्रवणमात्रेणसुग्रीवेणसलक्ष्मणः ॥ वानरानीकपैःसार्द्धमागमिष्यतितेंतिकम् ५१ रावणंसकुलंहत्वानेष्यतित्वांस्वकंपुरम् ॥ अभिज्ञांदेहिमेदेवियथामांविश्वसेद्विभुः ५२ इत्युक्तासाशिरोरत्नंचूड़ापाशेस्थितंप्रियम् ॥ दत्त्वाकाकेनयद्वृत्तं चित्रकूटगिरौपुरा ५३ तदप्याहाश्रुपूर्णाक्षीकुशलंब्रूहिराघवम् ॥ लक्ष्मणंब्रूहिमे किंचिद्दुरुक्तंभाषितंपुरा ५४ तत्क्षमस्वाज्ञभावेनभाषितंकुलनंदन ॥ तारयेन्मां यथारामस्तथाकुरुकृपान्वितः ५५ ॥

(त्वत्वार्तांनअधिगम्यसः अहोरात्रंपरिशोचतिइदानींएवअहंगत्वातेस्थितिंरामायब्रुवे) हे मातः आपकीवार्ताभली प्रकार नहीं जानते हैं ताते सो रघुनंदन दिनौराति शोचाकरते हैं अबमैं जाताहौं तुम्हारे इहां रहनेको सबहाल रघुनंदन के अर्थ जायकै सुनाइहौं ५० (श्रवणमात्रेणरामःसलक्ष्मणः वानरानीकपैःसार्द्धंसुग्रीवेणतेअंतिकंआगमिष्यति) तुम्हारा हालसुनतेही रघुनंदन सहित लक्ष्मण वानरी सेनासेनापतिन करिकै सहित सुग्रीव सहित प्रभुतुम्हारे समीपअर्थात् लंकाको आवहिंगे ५१ (सकुलंरावणंहत्वात्वांस्वकंपुरम्नेष्यति देविमेअभिज्ञांदेहियथाविभुःमांविश्वसेत्) सहित परिवार रावण को मारिकै तब तुमको अपनेपुर अयोध्या जीको लवाय-लै जांयगे अब हे देवि मोको कुछ आपनी चिह्न दीजिये जिस्में रघुनंदन प्रभुमेरे में विश्वास करैं ५२ (इतिउक्तासाचूड़ापाशेस्थितं

प्रियमूर्ध्निशिरोरत्नंदत्त्वापुराचित्रकूटगिरौकाकेनयत्कृतं) ऐसा मैंने कहातब सो जानकी जी अपनेजूड़ा के पार्श्वभागम स्थित प्रियजो चूड़ामणि ताहि उतारि दैकै पुनःपूर्वकाल चित्रकूट में जो जयंतकाक करिकै जो पायँ में क्षतभया सो वृत्तांत ५३ (तत्अपिआहअश्रुपूर्णाक्षीराघवंकुशलंब्रूहिलक्ष्मणंब्रूहि पुरामे किंचित्दुरुक्तंभाषितं) काकको वृत्तांत सो निश्चय करिकहिआंशुबहत नेत्रनयुत बोली कि रघुनंदन प्रति मेरीकुशल कहेउ पुनः लक्ष्मण प्रति कहेउ उनको पूर्वमैं कछु दुष्ट वचन कहेउँ हैं ५४(कुलनंदनअज्ञभावेनभाषितंतत्क्षमस्वयथामांरामःतारयन्तथाकृपान्वितःकुरु) लक्ष्मणप्रतिकहेउ हे कुलनंदन अज्ञानता करिकै जो मैंने कुवचन कहाहै सो क्षमाकरौ पुनः जिसभांति मोको रघुनंदन दुःखते उबारैं तैसेही कृपासमेत तुमभी मेरा उबारकरौ ५५॥

इत्युक्त्वारुदतीसीतादुःखेनमहतावृता ॥ मयाप्याश्वासितारामवदतासर्वमेवते ५६ ततःप्रस्थापितोरामत्वत्समीपमिहागतः ॥ तदागमनवेलायामशोकवनिकां प्रियाम् ५७ उत्पाट्यराक्षसांस्तत्रबहून्हत्वाक्षणादहम् ॥ रावणस्यसुतंहत्वाराव णेनाभिभाष्यच ५८ लंकामशेषतोदग्ध्वापुनरप्यगमंक्षणात् ॥ श्रुत्वाहनूमतोवा क्यंरामोत्यंतप्रहृष्टधीः ५९ हनूमांस्तेकृतंकार्यंदेवैरपिसुदुष्करम् ॥ उपकारंनप श्यामितवप्रत्युपकारिणः ६० इदानींतेप्रयच्छामिसर्वस्वंमममारुते ॥ इत्यालिं ग्यसमाकृष्यगाढंवानरपुंगवम् ६१ ॥

(इतिउक्त्वारुदतीसितामहतादुःखेनवृतारामतेसर्वंएववदतामयापिआश्वासिता) ऐसा कहिकै रोवती हुई सीताबड़ेदुःख करिकै घेरी हुई हे रघुनंदन आप प्रति कहने हेत सब वृत्तांत कहती हुई जो सीता तिनको मैंने समुझाय कै सावधान किया ५६ (ततःरामत्वत्समीपंप्रस्थापितःइहागतःगम नवेलायांतदाप्रियाम्अशोकवनिकाम्) तदनंतर हेरघुनंदन आप के समीप आवने हेत जानकी जी मोको बिदाकिया इहांको आवने हेत चलत की वेला में तब रावण की परम प्रिय जो अशोकवाटि काहै ५७ (उत्पाटयतत्रअहंक्षणात्बहून्राक्षसांहत्वारावणस्यसुतंहत्वाचरावणेनअभिभाष्य) उस अशोकवनवृक्षों को उचारि तहां रावणके पठाये हुये मैं क्षणैभरे में बहुते राक्षसोंको मारापुनःरावण को पुत्रअक्षःकुमार आयाताको मारा पुनःरावण से वार्ता करिकै ५८ (अशेषतःलंकांदग्ध्वापुनःअपि क्षणात्अगमम्हनूमत.वाक्यश्रुत्वारामःअत्यंतप्रहृष्टधीः) पुनःसंपूर्ण लंकापुरीको भस्म करिकै पुनः क्षणैभरे में इहां को आयगया इत्यादि हनुमान् के वचन सुनिकै रघुनाथजी अत्यंत प्रसन्न ह्वै बोलते भये ५९ (हनूमान् देवैःअपिसुदुष्करम्तेकार्यं कृतंतवप्रत्युपकारिणःउपकारंनपश्यामि) हे हनुमन् जो देवतन करिकै होना दुर्घट रहै सो तुम कार्य किया ताते जैसा तुमने मेरा उपकारकिया ताकी समान उपकार मैं नहीं देखताहौं जो दै तुमते उऋण होउँ ६० (मारुतेममसर्वस्वंइदानींते प्रयच्छामि इतिसमाकृष्यवानरपुंगवम्गाढंआलिंग्य) हे पवनपुत्र मेरेजो कछु है सो सब याहीसमय में मैंतोको देताहौं ऐसाकहि रघुनंदन हाथ गहि खैंचि वानरन में श्रेष्ठ जो हनुमान् तिनहिंदृढ़करि हृदयमें लगाये ६१ ॥

सार्द्रनेत्रोरघुश्रेष्ठःपरांप्रीतिमवापसः॥ हनूमंतमुवाचेदंराघवोभक्तवत्सलः६२परि रंभोहिमेलोकेदुर्लभःपरमात्मनः ॥ अतस्त्वंममभक्तोसिप्रियोसिहरिपुंगव ६३

यत्पादपद्मयुगलंतुलसीदलाद्यैः संपूज्यविष्णुपदवीमतुलांप्रयांति ॥ तेनैवकिं पुनरसौपरिरब्धमूर्तीरामेणवायुतनयःकृतपुण्यपुंजः ६४ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेसुन्दरकाण्डेपञ्चमः सर्गः॥५॥
सुन्दरकाण्डःसमाप्तः ॥

(परांप्रीतिंअवाप्तः रघुश्रेष्ठःसआर्द्रनेत्रः भक्तवत्सलःराघवः हनूमंतंइदंउवाच)हनुमान्‌को हृदयमें लगाय तब परम प्रीति को प्राप्त भये सो रघुवंश में श्रेष्ठ सहित आंशु जल सो भीजे नेत्र भक्तन पर गोवत्सवत् प्रीति है जिनके ऐसे रघुवंश नाथ हनूमान् प्रति ऐसा वचन बोलते भये ६२ (मेपरमात्मानः परिरंभःहिलोकेहिदुर्लभः अतःहरिपुंगवत्वंममभक्तः असिप्रियःअसि) मैं जो परमात्मा हौं ताको परिरंभ अर्थात् हृदय में लगाय मिलना यह निश्चय करि लोक में जीवन को दुर्लभ है सो मेरा आलिंगन तुम को प्राप्त भया इस कारणते हेवानरोंमें श्रेष्ठ हनुमान् तुम मेरे परम भक्तहौ भाव मेरे आलिंगन करनेते जन्म जन्मांतर के कर्मनाश भये ताते देहाभिमान जीवबुद्धी नाश होगई अब शुद्ध आत्मरूप ते परम अनुरागी मेरे भक्त भयो ताते मोको भी परम प्रिय है जाते भयो ६३ (तुलसीदलाद्यैर्यत्पाद पद्मयुगलंसंपूज्यअतुलां विष्णुपदवींप्रयांति तेनएवरामेणपरिरब्ध मूर्तीवायुतनयः कृतपुण्यपुंजःपुनःअसौकिं) जलफल फूल तुलसी दलादिकों करिकै मनुष्य जिनभगवत्‌के पदकमल दोउन को पूजन करिकै अतुल है माहात्म्य जाको ऐसी विष्णु पदवी भगवान्‌के समीप को जाते हैं तिनहीं निश्चय करि रघुनन्दन करिकै आलिंगन कियागया सर्वांग जिसको सो पवननन्दन हनुमान् कियागया पुण्य समूह अर्थात् परम उत्तम भक्त भया तो पुनः यह क्याकहना है ६४ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचिते
अध्यात्मभूषणेसुंदरकाण्डेपंचमःप्रकाशः ५ समाप्तः ॥

अथ अध्यात्मरामायण लंकाकाण्ड सटीक ॥

श्रीमहादेवउवाच ॥ यथावद्भाषितंवाक्यंश्रुत्वारामोहनूमतः ॥ उवाचानन्तरंवाक्यंहर्षेणमहतावृतः १ कार्यंकृतंहनुमतादेवैरपिसुदुष्करम् ॥ मनसापियदन्येनस्मर्तुंशक्यंनभूतले २ शतयोजनविस्तीर्णंलंघयेत्कःपयोनिधिम् ॥ लंकांचरक्षसैर्गुप्तांकोवाधर्षयितुंक्षमः ३ भृत्यकार्यंहनुमताकृतंसर्वमशेषतः ॥ सुग्रीवस्येदृशोलोकेनभूतोनभविष्यति ४ अहंचरघुवंशश्चलक्ष्मणश्चकपीश्वरः ॥ जानक्यादर्शनेनाद्यरक्षिताःस्मोहनूमता ५ सर्वथासुकृतंकार्यंजानक्याःपरिमार्गणम् ॥ समुद्रंमनसास्मृत्वासीदतीवमनोमम ६ ॥

सवैया ॥ सुनिहाल प्रशंसि प्रभू हनुमन्तहि लंकपुरी कसिप्रश्नकये । हनुमन्तकहे अति दुर्गपुरी बहुकंचनधाम अनूपनये ॥ गजबाजि सवीरनद्वारखड़े सुनिसानँद तत्र पयानकये । तुरतैकपिराजसवानरसानुज राघवसागरपासगये ॥ (यथावत्भाषितंहनूमतः वाक्यंश्रुत्वारामःमहताहर्षेणावृतःअनंतरंवाक्यंउवाच) अब शिवजी बोले हे गिरिजा जैसा कछुभया है सो यथार्थकहे इत्यादि हनूमान्के वचनसुनिकै रघुनन्दन बड़ेआनन्दकरिकै मग्नह्वै तदनन्तर बचन बोलतेभये १ (देवैःअपिसुदुष्करम् कार्यंहनुमताकृतंयत्अन्येनमनसाअपिस्मर्तुंभूतलेनशक्यं) देवतनकरिकै भी करनेको दुर्घटरहै सो कार्य हनुमाननेकिये जो सुर नरादि औरनको मनकरिकै भी स्मरणकरिबेको भूतल में अशक्य है भाव लोक में ऐसा समर्थ कोऊ नहीं है २ (शतयोजनविस्तीर्णंपयोनिधिंकःलंघयेत् चरक्षसैःगुप्तांलंकांधर्षयितुंकःवाक्षमः) सौयोजन विस्तार अर्थात् चारिसै कोस चौड़े समुद्रको और कौन नांघिसकै पुनः महावली राक्षसोंकरिकै रक्षित लंकाको सेवायहनुमान् दूसराकौन नाशकरिवेको समर्थ है ३ (सुग्रीवस्यभृत्यकार्यंअशेषतःसर्वंहनुमताकृतंलोकेईदृशः नभूतोनभविष्यति) सुग्रीवकी सेवकाईको कार्य जैसा उचितरहै तामें बाकी नहीं राखे सव हनुमानने किया ताते लोक में इन हनुमान्के समान सेवक न भयाहै न होनहारहै ४ (जानक्याःदर्शनेनअद्यहनुमताअहंचलक्ष्मणःचरघुवंशःचकपीश्वरः रक्षिताःस्मः) जानकीको देखि आवनेकरिकै आजु हनुमानने हमको पुनः लक्ष्मण तथा रघुवंशभरि पुनः सुग्रीव इत्यादि सबको रक्षाकीन्हे हैं ५(जानक्याःपरिमार्गणंसर्वथासुकृतंकार्यंसमुद्रंमनसास्मृत्वा ममुमनःसीदतीव) जानकीको ढूंढ़न यह एक कार्य करने में सर्व प्रकार सुकृत कार्यकिये अब समुद्र को मनकरिकै सुधिकीन्हे मेरा मनदुखितहोताहै ६ ॥

कथंनक्रझषाकीर्णंसमुद्रंशतयोजनम्॥ लंघयित्वारिपुंहन्यांकथंद्रक्ष्यामिजानकी म् ७ श्रुत्वातुरामवचनंसुग्रीवःप्राहराघवम् ॥ समुद्रंलंघयिष्यामोमहान्नक्रझषा कुलम् ८ लंकांचविधमिष्यामोहनिष्यामोऽद्यरावणम् ॥ चिंतांत्यजरघुश्रेष्ठचिं ताकार्यविनाशिनी ९ एतान्पश्यमहासत्वान्शूरान्वानरपुंगवान् ॥ त्वत्प्रियार्थं समुद्युक्तान्प्रवेष्टुमपिपावकम् १०समुद्रतरणेबुद्धिंकुरुष्वप्रथमंततः॥दृष्ट्वालंकांद शग्रीवोहतइत्येवमन्महे ११ नहिपश्याम्यहंकंचित्त्रिषुलोकेषुराघव ॥ गृहीतध नुषोयस्तेतिष्ठेदभिमुखोरणे १२ ॥

(नक्रझषाकीर्णंशतयोजनंसमुद्रंकथंलंघयित्वारिपुंहन्यांकथंजानकीम्द्रक्ष्यामि) नाक मत्स्यादिसमूह हैं परिपूर्णजामें ऐसा सौयोजन विस्तार समुद्रको कैसे नाँघिकै शत्रु रावणको मारि कैसे जानकीको देखैंगे इतिमाधुर्य्य लीलामें नरनाट्यहै ७ (रामवचनंश्रुत्वातुसुग्रीवःराघवंप्राहमहान्नक्रझषाकुलंसमुद्रं लंघयिष्यामः) अधीरता सहित रघुनन्दनके वचन सुनि पुनः सुग्रीवधीर्यदायक वचन रघुनन्दन प्रतिबोले हे महाराज आपधैर्य्य राखिये महाभारी नाक मत्स्यादि परिपूर्ण समुद्रको हमसब वानर आपने बलकरिकैनाँघिजायँगे८(लंकांविधंयिष्यामःचअद्यरावणंहनिष्यामःरघुश्रेष्ठचिंतांत्यजचिंताकार्य विनाशिनी)लंका गढ़तोरि देईंगे पुनः अभी चलिकै रावणको मारैंगे ताते हे रघुवंशमें उत्तम भावकुलकी रीति सँभारिकै चिंताको त्यागकीजिये क्योंकि धैर्यकी प्रतिकूल यह चिंतासब कार्य नाशकरती है ९(महासत्वान्शूरान् वानरपुंगवान् एतान् पश्यत्वत्प्रियार्थंपावकंमपिप्रवेष्टुंमनमुद्युक्तान्) हे रघुनंदन महावीर्यवंत शूरवानरोंमें श्रेष्ठ हनुमान् अंगदादिकोंको देखिये आपके प्रियकार्य करनेको अग्नि में प्रवेशकरनेको भी आनंद युक्तहैं भावनिशंक अग्निमें पैठि जायसक्तेहैं १०(प्रथमंसमुद्रतरणेबुद्धिं कुरुष्वततःलंकांदृष्ट्वादशग्रीवःहतइतिएवमन्महे) हे रघुनन्दन अब प्रथमतौ समुद्रके पारजानेकी बुद्धि विचार करना चाहिये तदनन्तर जब लंकापुरको देखा भाव घेरिलिया तब रावणतौ मारही पराहै यह निश्चयकरि मेरे मनमें आताहै ११(राघवःधनुपःगृहीतत्रिपुलोकेपुअहंकंचित्नहिपश्यामि यःतेअभिमुखःरणेतिष्ठेत्) हे रघुनन्दन जब आप धनुष चढ़ाय हाथमेंलै बाणसंधानेगे तब ऐसातीनिहूंलोकनमें मैं किसीको नहीं देखताहौं जोआपके सन्मुखरणमें खड़ाहोइ इतिरावणमरापराहै१२॥

सर्वथानोजयोरामभविष्यतिनसंशयः ॥ निमित्तानिचपश्यामितथाभूतानिसर्व शः १३ सुग्रीववचनंश्रुत्वाभक्तिवीर्यसमन्वितम् ॥ अंगीकृत्याब्रवीद्रामोहनूमंतं पुरःस्थितम् १४ येनकेनप्रकारेणलंघयामोमहार्णवम् ॥ लंकास्वरूपंमेब्रूहिदुःसा ध्यंदेवदानवैः १५ ज्ञात्वातस्यप्रतीकारंकरिष्यामिकपीश्वर ॥ श्रुत्वारामस्यवच नंहनूमान्विनयान्वितः १६ उवाचप्रांजलिर्देवयथादृष्टंब्रवीमिते ॥ लंकादिव्यापु रीदेवत्रिकूटशिखरेस्थिता १७ स्वर्णप्राकारसहितास्वर्णाट्टालकसंयुता ॥ परि खाभिःपरिवृतापूर्णाभिर्निर्मलोदकैः १८ ॥

(रामसर्वथानः जयःभविष्यतिसंशयःनःचनिमित्तानिपश्यामितथासर्वशःभूतानि) हे रघुनन्दन आपके अनुचरहैं ताते सब प्रकार से हमारीही जयहोइगी भाव राक्षस सब मारेजायँगे पुनः अनेक भांति शकुनादि देखतेहैं ताही प्रकारसबकार्य होनहारहै भाव रावण मारिजानकी सहितलौटेंगे १३

(भक्तिवीर्यसमन्वितंसुग्रीववचनंश्रुत्वारामः अंगीकृत्यपुरःस्थितंहनूमंतंमब्रवीत्) सेवक भावकी प्रीतिमें पराक्रम युक्तऐसे सुग्रीव के वचन सुनि रघुनन्दन अंगीकार करि पुनः आगे बैठे हुये जो हनुमान् तिन प्रति बोलतेभये १४ (येनकेनप्रकारेणमहार्णवमूलंघयामःदेवदानवैःदु साध्यंलंकास्वरूपमेब्रूहि) प्रभु बोले हे हनूमान् जिस किसीउपाय करिकै बनैगो ता विधि करि महासागरके पार जावैकरेंगे अब जो देव दैत्यन करिकै युद्धमेंजीतने योग्य नहीं तिस लंकागढ़को स्वरूप हमसों कहिये १५ (कपिश्वरज्ञात्वातस्यप्रतीकारंकरिष्यामिरामस्यवचनंश्रुत्वाविनयान्वितः हनूमान्) हनूमान् प्रति प्रभुबोले हे वानरनमें उत्तम जबलंकाको स्वरूपजानिलेवैं तब ताके नाशको उपाय करेंगे इति रघुनन्दन को वचनसुनिकै नम्रता युक्तहनूमान् सन्मुखह्वैकै १६ (प्रांजलिःउवाचदेवयथा दृष्टंतंब्रवीमिदेवत्रिकूटशिखरेस्थितालंकादिव्यापुरी)हाथजोरिकै हनूमान् बोलते भये हे देव जैसामैं देखा है तैसा आप प्रति कहताहों हे रघुनाथजी त्रिकूट पर्वतके शिखरपर बसीहै लंकादिव्यपुरीहै देवलोक तुल्यविचित्रशोभामयबनीहै १७ (निर्मलोदकैः पूर्णाभिः परिखाभिः परिवृतास्वर्णप्राकार सहिता स्वर्णअट्टालकसंयुता) निर्मल जल करिकैपरिपूर्ण अगाधखावां करिकै सब दिशोंते पुरी घेरीहै सोनेको धुस रौनी सब दिशि बनी हैं सहित अटारी दिवार सोनेके सब मंदिर बनेहैं १८ ॥

नानोपवनशोभाढ्यादिव्यवापीभिरावृता ॥ गृहैर्विचित्रशोभाढ्यैर्मणिस्तम्भमयैः शुभैः १६ पश्चिमद्वारमासाद्यगजवाहाःसहस्रशः ॥ उत्तरेद्वारितिष्ठंतिसाश्ववाहाःसपत्तयः २० तिष्ठंत्यर्बुदसंख्याकाःप्राच्यामपितथैवच ॥ रक्षिणोराक्षसावीराद्वारंदक्षिणमाश्रिताः २१ मध्यकक्षेप्यसंख्यातागजाश्वरथपत्तयः॥रक्षन्तिसर्वदालंकांनानास्त्रकुशलाःप्रभो२२ संक्रमैर्विविधैर्लंकाशतघ्नीभिश्चसंयुता॥ एवंस्थितेपिदेवेशशृणुमेतत्रचेष्टितम् २३ दशाननबलौघस्यचतुर्थांशोमयाहतः॥ दग्ध्वा लंकांपुरींस्वर्णप्रासादोधर्षितोमया २४ ॥

(मणिस्तंभमयैःशुभैःगृहैःविचित्रशोभाढ्यैःनानाउपवनशोभाढ्यादिव्यवापीभिःआवृता) मणिन के खम्भन करिकै युक्त मंगलीक मन्दिरन करिकै विचित्र शोभाकरिकै शोभितपुरी में अनेकप्रकार के उपवन शोभायुक्त दिव्यबावलिन करिकै पुरघेरा है सर्वदिशि बनी हैं १९ (पश्चिमद्वारंसहस्रशः गजवाहाःआसाद्यसपत्तयःसअश्ववाहाःउत्तरेद्वारितिष्ठंति) पुरके पश्चिम द्वारपर हजारन राक्षस हाथिनपर सवार प्राप्त रहतेहैं पुनः सहित पैदर सेना सहित घोड़ोंपर सवार उत्तर द्वारपर खड़े रहते हैं २० (अर्बुदसंख्याकाःप्राच्यांअपितिष्ठंतिचतथाएवराक्षसाःवीराः रक्षिणःदक्षिणंद्वारंआश्रिताः) अर्बुगन्ती में राक्षसवीर पूर्वद्वारपर भी टिके रहते हैं पुनः ताही भांति निश्चय करि एक अर्ब राक्षस वीर रक्षा करनेवाले दक्षिणद्वार के आश्रित अर्थात् सदैव टिकेरहते हैं २१ (प्रभोमध्यकक्षेअपिगज अश्वरथपत्तयःनानाअस्त्रकुशलाःअसंख्यातासर्वदालंकांरक्षति) हेप्रभो राजद्वार के बीचकी डेउढ़ीपर भी हाथी घोड़े रथोंपर सवार तथा पैदरसेना अनेकप्रकार हथियार धारण किहे युद्धकला में प्रवीन असंख्यनवीर सदा लंकाकी रक्षाकरते हैं २२ (लंकासंक्रमैःविविधैःचशतघ्नीभिःसंयुताएवंस्थितेअपि देवेशतत्रमेचेष्टितंशृणु) धुसधूंधुटबुर्जन के बीच है लंकाजाने की मार्ग अनेकप्रकार करिकै दुर्घट हैं तिनके भी सन्मुख बुर्जनपर अनेकन तोपें लगी हैं तिनकरिकै सहित अधिकदुर्घट हैं इसप्रकार दुर्घट भी है परन्तु हे देवेशतहां मेरा किया जो व्यापार है सो सुनिये २३ (स्वर्णप्रासादःमयाधर्षितालं

कांपुरींदग्ध्वादशाननबलञ्मोघस्यचतुर्थांशःमयाहतः) अशोकवनमें सोनेको मंदिर रहा सो मैंने तोरि डारा लंकापुरीको भस्मकिया रावण की जो समूह सेनारही तामें चौथाई मैंने नाश करिदियां २४ ॥

शतघ्न्यःसंक्रमाश्चैवनाशितामेरघूत्तम ॥ देवत्वद्दर्शनादेवलंकाभस्मीकृताभवे त् २५ प्रस्थानंकुरुदेवेशगच्छामोलवणांबुधेः ॥ तीरंसहमहावीरैर्वानरौघैः समंत तः २६ श्रुत्वाहनूमतोवाक्यमुवाचरघुनंदनः ॥ सुग्रीवसैनिकान्सर्वान्प्रस्थानाया भिनोदय २७ इदानीमेवविजयोमुहूर्तःपरिवर्तते ॥ अस्मिन्मुहूर्तेगत्वाहंलंकांरा क्षससंकुलम् २८ सप्राकारांसुदुर्धर्षांनाशयामिसरावणाम् ॥ आनेष्यामिचसी तांमेदक्षिणाक्षिस्फुरत्यधः २९ प्रयातुवाहिनीसर्वावानराणांतरस्विनाम् ॥ रक्षंतु यूथपाःसेनामग्रेपृष्ठेचपार्श्वयोः ३० ॥

(शतघ्न्यःचएवसंक्रमाःमेनाशितारघूत्तमदेवलंकात्वत्दर्शनात्एवभस्मीकृताभवत्) तापै पुनः विषममार्गै सोतौ फोरि तोरि मैं नाशकरि दिया भाव अबलंकाजाने हेत सुगम मार्गै वहुती होगई है रघूत्तम देव अबजो लंकारही सो आपको देखतही नाश ह्वै जायगी २५ (देवेशप्रस्थानंकुरुमहावीरैः वानरौघैःसमंततःसहलवणांबुधेःतीरंगच्छामः)हे देवन के देव रघुनाथजी अब यात्राकीजै महाबली वीरजो वानर समूह हैं तिनसब करिकै सहित लवण समुद्रके तीर को हमलोग चलेंगे २६ (हनूमतः वाक्यंश्रुत्वारघुनंदनःउवाचसुग्रीवप्रस्थानायसैनिकान्सर्वान्अभिनोदय) हनूमान् के वचन सुनिकै रघुनंदन बोलते भये किहे सुग्रीव अब बिलम्ब ते क्या प्रयोजन है लंकाको चलने अर्थ यावत् सेना पती हैं तिन सबन को आज्ञा करिये २७ (विजयःमुहूर्तःइदानींएवपरिवर्त्ततेअस्मिन्मुहूर्तेअहंगत्वा राक्षससंकुलाम्लंकाम्) पौषकृष्ण अष्टिमी मध्याह्नकाल अभिजित्वेला उत्तरा नक्षत्रग्यारहों चंद्र बली वामें युद्धार्थ शुभदिग्द्वारी मकरलग्न इति विजय मुहूर्त इसी समय में वर्तमान है इसी मुहूर्त में मैं यात्रा करोंगो तो राक्षसों करिकै परिपूर्ण जो लंका है २८ (सुदुर्धर्षांसप्राकारांसरावणांनाशया मिचसीतांआनेष्यामिमेदक्षिणाक्षिअधःस्फुरत्) जो किसी के तूरिबे योग्यनहीं तिसलंका को कोट सहित रावण को नाश करिहौं पुनः कुशल पूर्वक सीताको लाइहौं क्योंकि मेरा दक्षिण नेत्रनीचे से फरकिरहा है २९ (तरस्विनांवानराणांसर्वावाहिनीप्रयातुसेनांअग्रेपृष्ठेचपार्श्वयोःयूथपाःरक्षंतु) बली वेगवंत बानरन की सब सेना व्यूहबांधि मध्यमें चलै ताके आगे पीछे दहिने वायें इति सबदिशि में नल नील द्विविदजामवंतादि यूथपती रक्षाकरते चलैं ३० ॥

हनूमंतमथारुह्यगच्छाम्यग्रेऽङ्गदंततः ॥ आरुह्यलक्ष्मणोयातुसुग्रीवत्वंमयास ह ३१ गजोगवाक्षोगवयोमैंदोद्विविदएवच ॥ नलोनीलःसुषेणश्चजांबवांश्चत थापरे ३२ सर्वेगच्छंतुसर्वत्रसेनपाःशत्रुघातिनः ॥ इत्याज्ञाप्यहरीन्रामप्रतस्थे सहलक्ष्मणः ३३ सुग्रीवसहितोहर्षात्सेनामध्यगतोविभुः ॥ वारणेंद्रनिभाःसर्वे वानराःकामरूपिणः ३४ क्ष्वेलंतःपरिगर्जंतोजग्मुस्तेदक्षिणांदिशम् ॥ भक्षयंतो ययुःसर्वेफलानिचमधूनिच ३५ ब्रुवंतोराघवस्याग्रेहनिष्यामोवयरावणम् ॥ एवंते वानरश्रेष्ठागच्छंत्यतुलविक्रमाः ३६ हरिभ्यामुह्यमानौतौशुशुभातेरघूत्तमौ ॥ न क्षत्रैःसेवितौयद्वच्चन्द्रसूर्याविवांबरे ३७ ॥

(अथहनूमंतंमारुह्यअग्रेगच्छामिततः अंगदंमारुह्यलक्ष्मणःयातुसुग्रीवत्वंमयासह) अब हनुमान् पर सवार ह्वै आगे में चलताहौं मेरे पीछे अंगदपर सवार ह्वै लक्ष्मण चलैं पुनः हे सुग्रीव तुममेरे साथचलो ३१ (गजःगवाक्षःगवयःमैंदःद्विविदःचएवनलःनीलःसुषेणःचजाम्बवान्चतथाअपरे ३२ (शत्रुघातिनःसेनपाःसर्वेसर्वत्रगच्छंतुइतिहरीन्आज्ञाप्यरामःसहलक्ष्मणःप्रतस्थे) गजगवाक्षगवयमैंद द्विविदनलनीलसुषेणजांबवंत तैसे औरहू जे शत्रुन को नाशकरने वाले सेना पति हैं तेसब सेनाके आस पास सब दिशनमें रक्षा करते हुये चलैं इस प्रकार वानरन को आज्ञा दै कै रघुनंदन लक्ष्मण समेत चलते भये ३३ (सुग्रीवसहितःविभुःहर्षात्सेनामध्यगतःवारणेंद्रनिभाःवानराःसर्वेकामरूपिणः) सुग्रीव सहित प्रभु आनंद ते सेना के मध्यमें चले जाते हैं गजराजों के समान हैं वानर सब जैसा चहैं तैसा रूप धरि लेवैं ३४ (क्ष्वेलंतःपरिगर्जंतःतेदाक्षिणांदिशम्जग्मुःफलानिचमधूनिभक्षयंतःसर्वेययुः) पटेवाजी पैंतरादि युद्ध के व्यापारकरत गर्जते हुये तेसब वानर दक्षिण दिशाको जाते हुये फल मधु आदि खाते हुये सब जाते भये ३५ (राघवस्यअग्रेब्रुवंतःअद्यरावणम्हनिष्यामःएवंतेवानरश्रेष्ठाःअतुलविक्रमाःगच्छंति) रघुनंदनके आगे सब वानर ऐसाकहते हैं कि आजही चलि कै रावणको मारैंगे इस प्रकार ते वानर अतुल बलवंत जाते हैं ३६ (हरिभ्यांउह्यमानौरघूत्तमौतौशुशुभातेयद्वत्चंद्रसूर्यौ इवअंबरेनक्षत्रैः सेवितौ) हनुमान अंगद जो कांधेंपर बैठारे हैं तिन दो वानरों करिकै ऊंचे पर राम लक्ष्मण दोऊ सब वनारोंके मध्यमें कैसे शोभित होते हैं यथा चंद्रमासूर्यहैं ते आकाश में नक्षत्रो करिकै सेवित हैं ३७॥

आवृत्तपृथिवींकृत्स्नांजगाममहतीचमूः ॥ प्रस्फोटयंतःपुच्छाग्रान्उद्वहंतश्चपादपान् ३८ शैलानारोहयंतश्चजग्मुर्मारुतवेगतः ॥ असंख्यातश्चसर्वत्रवानराः परिपूरिताः ३९ हृष्टास्तेजग्मुरत्यर्थंरामेणपरिपालिताः ॥ गताचमुर्दिवारात्रंक्वचिन्नासज्जतक्षणम् ४० काननानिविचित्राणिपश्यन्मलयसह्ययोः ॥ तेसह्यंसमतिक्रम्यमलयंचतथागिरिम् ४१ आययुश्चानुपूर्व्येणसमुद्रंभीमनिस्वनम् ॥ अवतीर्यहनूमंतंरामःसुग्रीवसंयुतः४२सलिलाभ्यासमासाद्यरामोवचनमब्रवीत् ॥ आगताःस्मोवयंसर्वेसमुद्रंमकरालयम् ४३ इतोगंतुमशक्यंनोनिरुपायेनवानराः ॥ अत्रसेनानिवेशोस्तुमंत्रयामोऽस्यतारणे ४४ ॥

(कृत्स्नपृथिवींआवृत्तमहतीचमूःजगामपुच्छाग्रान्प्रस्फोटयंतःचपादपान्उद्वहंतः) संपूर्ण पृथिवीको घेरे हुये बड़ी भारी वानरी सेना जाती भई अपनी पूछको अग्र भाग पृथिवी पर पटकते हैं पुनःवृक्षों को उखारि उखारि धारण किहे हैं ३८(शैलान्आरोहयंतःचमारुतवेगतःजग्मुःचअसंख्याताःवानराः सर्वत्रपरिपूरिताः) पर्वतन के ऊपर चढ़िजाते हैं पुनः पवन तुल्य बेगते जाते हुये पुनः असंख्यन अनगंतिन वानर सर्वत्र पृथिवी भरेमें परिपूर्ण भरे देखाते हैं ३९ (रामेणपरिपालिताःतेअत्यर्थंहृष्टाः जग्मुःदिवारात्रंगताचमूःक्वचित्क्षणम्नासज्जत) रघुनंदन करिकै पालन किये गये ताते ते वानर अत्यंत आनंद युत जाते भये दिनौ राति चली जाती है सेना कहौं क्षणमात्र नहीं बिश्रामकरते भये ४० (मलयसह्ययोःविचित्राणिकाननानिपश्यन्तेसह्यंचतथामलयंगिरिम्संअतिक्रम्य) मलय अरु सह्यपर्वत के समीप जो विचित्र वनहैं तिनहिं देखत संते ते सब वानर सह्यगिरि पुनः तैसे मलय गिरि तिनहिं नांघिकै ४१ (अनुपूर्वेणचभीमनिस्वनंसमुद्रंआययुःसुग्रीवसंयुतःरामःहनूमंतंअवतीर्य)

क्रम करिकै जाते हुये पुनः भयंकर है शब्द जामें ऐसे समुद्र के समीप जाते भये तहां हनूमान् ते उतरि रघुनंदन सुग्रीव सहित ४२ (सलिलाभ्यांसंआसाद्यरामः वचनंअब्रवीत्वयंसर्वेमकरालयम् समुद्रंआगताःस्मः) जल समीप प्राप्त ह्वै रघुनंदन वचन बोले कि अब हम सब मगरादिकों के बास को स्थान समुद्र ताके समीप आय गये ४३ (वानराःनिःउपायेनइतःगंतुंनःअशक्यंअत्रसेनानिवेशः अस्तुअस्यतारणेमंत्रयामः) रघुनंदन बोले कि हे वानरो अब विना उपाय कीन्हे इहांते आगे जाने को हम लोगों को सामर्थ्य नहीं है ताते यहांहीं सेनाको विश्रामहोय तब इस समुद्र के पार जाने की सलाहकरेंगे ४४ ॥

श्रुत्वारामस्यवचनंसुग्रीवःसागरांतिके॥सेनांन्यवेशयत्क्षिप्रंरक्षितांकपिकुञ्जरैः४५ तेपश्यंतोविषेदुस्तंसागरंभीमदर्शनम् ॥ महोन्नततरंगाढ्यंभीमनक्रभयंकरम्४६ अगाधंगगनाकारंसागरंवीक्ष्यदुःखिताः ॥ तरिष्यामःकथंघोरंसागरंवरुणालयम् ४७ हन्तव्योस्माभिरद्यैवरावणोराक्षसाधमः ॥ इतिचिंताकुलाःसर्वेरामपार्श्वे व्यवस्थिताः४८ रामःसीतामनुस्मृत्यदुःखेनमहतावृतः ॥ विलप्यजानकींसीतां बहुधाकार्यमानुषः ४९ अद्वितीयश्चिदात्मैकःपरमात्मासनातनः ॥ यस्तुजानाति रामस्यस्वरूपंतत्त्वतोजनः ॥ तन्नस्पृशतिदुःखादिकिमुतानंदमव्ययम् ५० ॥

(रामस्यवचनंश्रुत्वासुग्रीवःकपिकुंजरैः रक्षितांसेनांसागरांतिकेक्षिप्रंन्यवेशयत्) रघुनन्दन को वचन सुनिकै सुग्रीव तब जो बड़े बली बानरों करिकै रक्षित सेनाहै ताहि समुद्र के किनारे शीघ्रही वास कराते भये ४५ (महाउन्नततरंगाढ्यं भीमनक्रभयंकरम् भीमदर्शनम् तंसागरंपश्यंतःतेविषेदुः) महा ऊँची तरंगन करिकै युक्त तथा भयकारी नक्रादि जल जंतु भरे तिन करिकै भयंकर ऐसा भयंकर दर्शन है जाको तिस समुद्र को देखते भये तेसब बानर विषादको प्राप्त होते भये मन भंग भया ४६ (गगनाकारं अगाधंसागरंवीक्ष्यदुःखिताःवरुणालयंघोरंसागरंकथंतरिष्यामः) आकाशके तुल्य अगाध समुद्र को देखि वानर दुःखित भये बिचारते हैं कि वरुण को बास स्थान भयंकर समुद्रको हम कैसे पार होवेंगे ४७ (राक्षसाधमःरावणः अद्यएवस्माभिःहंतव्यः इतिसर्वेचिंताकुलाः रामपार्श्वेव्यवस्थिताः) राक्षसों में अधम रावण या समय में निश्चय करि हम लोगोंको मारिबेके योग्य है इस भांति सब वानर चिंता करिकै व्याकुल जाय रघुनाथजीके समीप बैठते भये ४८ (बहुधा मनुषःकार्यरामःसीतांअनुस्मृत्य महतादुःखेनआवृतःजानकीं सीतांविलप्य) बहुत मानुषवत् कार्य नरनाव्य करतेहैं ऐसे राम सीता को स्मरण करि बड़े दुःख करि मग्न जानकी को सीता को नाम लैकै बिलाप करते हैं ४९ (अद्वितीयःचिदात्माएकः सनातनः परमात्मा रामस्यतत्त्वतःस्वरूपंयः जनःजानातितत्दुःखादिनस्पृशति तु अव्ययम्आनंदंकिमुत) जिसको दुसरिहा कोई नहीं चैतन्य आत्मा एकही परमात्मा रामके तत्त्व स्वरूप को जोजन जानताहै उस को दुःखादि नहींछुइ जाता है पुनः नाश रहित आनंद रूप राम को दुःखहै यह क्या कहनाहै ५० ॥

दुःखहर्षभयक्रोधलोभमोहमदादयः ॥ अज्ञानलिंगान्येतानिकुतस्संतिचिदात्मनि ५१ देहाभिमानिनोदुःखंनादेहस्यचिदात्मनः ॥ संप्रसादेद्वयाभावात्सुखमात्रं हिदृश्यते ५२ बुद्ध्याद्यभावात्संशुद्धेदुःखंतत्रनदृश्यते ॥ अतोदुःखादिकंसर्वंबुद्धे

रेवनसंशयः ५३ रामःपरात्मापुरुषःपुराणोनित्योदितोनित्यसुखोनिरीहः ॥ तथापिमायागुणसंगतोऽसौसुखीवदुःखीवविभाव्यतेबुधैः ५४ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्धकाण्डेप्रथमस्सर्गः ॥ १ ॥

(दुःखहर्षभयक्रोधलोभमोह मदादयःएतानि अज्ञानलिंगानिचिदात्मनिकुतःसंति) हानिवियोग रुजादि जो दुःख धनस्त्री पुत्रादि प्राप्ति जो हर्ष दण्डते वचने की चाह भय दण्ड देने की चाह क्रोध धनादि चाह लोभ चैतन्यता रहित मोह धनादि ते हर्ष बढ़ावना मद इत्यादिक ये सब अज्ञान के चिह्नहैं ते चैतन्य रूप राम में कैसे उत्पन्न हो सकेहैं ५१ (दुःखंदेहाभिमानिनःअदेहस्याचिदात्मनः नसंप्रसादे ह्यभावात्सुखमात्रंहिदृश्यते) यावत् दुःखहै सो देहाभिमानिन को होता है यथा धन धाम स्त्री पुत्रादि मेरे हैं इत्यादि वियोग भये अवश्यही दुःख होयगो अरु जो देहाभिमान रहित चैतन्यआत्म रूप में दुःख नहीं होता है यथा सुषुप्त अवस्थाको प्राप्त होतसंते दूसरा नहीं देखाताहै केवल सुख मात्रही देखपरता है ५२ (बुद्धिआदिअभावात्संशुद्धेतत्र दुःखंनदृश्यते अतःदुःखादिकं सर्वंबुद्धेः एवसंशयःन) परिपूर्ण आनंद में बुद्ध्यादिकों को अभाव होनेतेशुद्धात्म रूपमें दुःख नहीं देखि परता है ताते दुःखादि सबको कारण बुद्धी है निश्चय करि यामें संशय नहीं है ५३ (रामःपरमात्मापुरुषःपुराणः) रघुनन्दन प्रकृतिते पर शुद्ध आत्मरूप मायाके प्रेरक पुरुष पुराण सबके आदि कारण हैं (नित्यउदितः नित्यसुखःनिरीहः) नित्यस्वयं प्रकाशमान् सदा अखण्ड आनंद रूप क्षीणपीनादि चेष्टा रहित (तथापिमायागुणसंगतःअसौअबुधैःसुखीइवदुःखीइव विभाव्यते)ताहूपर तस रजतमादि माया गुण संगते ये राज कुमार रूप रघुनन्दन माधुर्य्य में अज्ञानी पुरुषों करिकैव्याहादि में सुखीकी नाईं वन में जानकी वियोग में दुखी की नाईं कल्पना किये गये ५४ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतवैजनाथ
विरचितेअध्यात्मभूषणेयुद्धकांडेप्रथमःप्रकाशः १ ॥

लंकायांरावणोदृष्ट्वाकृतंकर्महनूमता ॥ दुष्करंदैवतैर्वापिह्रियाकिंचिदवाङ्मुखः १ आहूयमंत्रिणःसर्वानिदंवचनमब्रवीत् ॥ हनूमताकृतंकर्मभवद्भिर्दृष्टमेवतत् २ प्रविश्यलंकांदुर्धर्षांदृष्ट्वासीतांदुरासदाम् ॥ हत्वाचराक्षसान्वीरानक्षंमंदोदरीसुतम् ३ दग्ध्वालंकामशेषेणलंघयित्वाचसागरम् ॥ युष्मान्सर्वानतिक्रम्यस्वस्थोगात्पुनरेवसः ४ किंकर्तव्यमितोऽस्माभिर्यूयंमंत्रविशारदाः ॥ मंत्रयध्वंप्रयत्नेनयत्कृतंमेहितंभवेत् ५ रावणस्यवचःश्रुत्वाराक्षसास्तेतथाब्रुवन् ॥ देवशंकाकुतोरामात्तवलोकजितोरणे ६ ॥

सवैया ॥ वनतोरि सबै पुरजारि जहीं हनुमान निशाचर वीरदले । लखिरावण मंत्रिनबोलि तहीं तिन पूछतभो शुभमंत्रभले ॥ हितबंधु कहेन सुहान सुवाच कुवाचकहे खल क्रोधजले । गतव्योमासिखावन देततहीं सुबिभीषण राघवपास चले ॥ (देवतैःवापिदुष्करंलंकायांहनूमताकृतंकर्मदृष्ट्वारावणः किंचित्ह्रियाअवाङ्मुखः) शिवजी कहत हैंगिरिजा जो देवतों करिकै दुर्घट रहै सो लंका विषेहनुमा-

नने कर्म किया सो देखि रावण कछुलज्जा करि कछु बोलानहीं मुख नीचे किहे बैठारहा १ (सर्वान् मंत्रिणःआहूयइदंवचनंअब्रवीत्हनूमताकृतंकर्मतत्भवद्भिःदृष्टंएव) सब मंत्रिनको बुलाय तिनसों रावण ऐसा वचन बोला कि हनूमान् ने किया जो कर्म सो तौ तुमलोगों करिकै देखै गया है २ (दुर्धर्षांलंकांप्रविश्यदुरासदामूसीतांदृष्ट्वाराक्षसान्वीरान्चमंदोदरीसुतंअक्षंहत्वा) जो किसी केप्रवेश करने योग्य नहीं तिसलंका में हनुमान् प्रवेश करि पुन. जाके पास कोई न जायसकै तिस सीताको देखि अरु राक्षस वीरन को पुनः मंदोदरी को पुत्रअक्षःकुमार इत्यादि को मारा ३ (अशेषेणलंकां दग्ध्वाचसागरमुल्लंघयित्वायुष्मान् सर्वान्अतिक्रम्यसःपुनःएवस्वस्थःऽगात्) संपूर्णलंकाकोभस्म किया पुनः समुद्रको नांघिगया तुम सबको निदरि सो हनुमान् कुशल सहित पुनः भी चलागया ४ (इतः अस्माभिःकिंकर्तव्यंयूयंमंत्रविशारदःप्रयत्नेनमंत्रयध्वंयत्कृतंमेहितंभवेत्) इस के उपरांत हमलोगों करिकै क्या करना चाहिये सो कहो तुमसब सलाह में प्रवीणहौ ताते यत्न पूर्वक ऐसी सलाह करि कहो जोकिहे ते मेरा हित होय ५ (रावणस्यवचःश्रुत्वातथाराक्षसाःअब्रुवन्देवरणेतवलोकाजितः रामात्कुतःशंका) रावण के बचन सुनि तैसेही सब राक्षस बोले कि हे देव रण भूमि में आप सब लोक जीति लिया तौ मानुष मात्र रामते रणमें क्या शंका है ६ ॥

इन्द्रस्तुबध्वानिक्षिप्तःपुत्रेणतवपत्तने ॥ जित्वाकुवेरमानीयपुष्पकंभुज्यतेत्वया ७ यमोजितःकालदंडाद्भयंनाभूत्तवप्रभो॥ वरुणोहुंकृतेनैवाजितःसर्वेपिराक्षसाःऽमयो महासुरोभीत्याकन्यांदत्वास्वयंतव ॥ त्वद्वशेवर्ततेद्यापिकिमुतान्येमहासुराः ९ हनूमद्धर्षणंयत्तुतदवज्ञाकृतंचनः॥वानरोयंकिमस्माकमस्मिन्पौरुषदर्शने१० इत्यु पेक्षितमस्माभिर्धर्षणंतेनकिंभवत् ॥ वयंप्रमत्ताःकिंतेनवंचिताःस्मोहनूमता ११ थानीमोयदितंसर्वेकथंजीवन्गमिष्यति ॥ आज्ञापयजगत्कृत्स्नमवानरममा नुषम् १२ ॥

(निक्षिप्तःपुत्रेणइंद्रःबध्वातवपत्तनेतुकुवेरंजित्वापुष्पकंआनीयत्वयाभुज्यते)हे महाराज आपकी आज्ञाते पुत्र मेघनाथने इंद्रको बांधिलाया तुम्हारे पुर में डारिदिया आप कुवेरकोजीति पुष्पकविमानछीनिलाये सो आपकरिकै भोगकियाजाताहै ७ (प्रभोयमःजितःतवकालदण्डात् भयंनअभूत्हुंकृतेनवरुणःएवाजितःराक्षसाःअपिसर्वे) हे प्रभो जब यमराजकोजीता तब आपको कालदंडते भय न भई भाव तब मानुषते क्या भयहै तथा हुंकारकरिकै वरुणको भी जीतिलिया अरु राक्षसभी सब आपके आधीन हैं ८ (महासुरःमयःभीत्यास्वयंकन्यांतवदत्वाअद्यापित्वत्वशेवर्तते अन्येमहासुराः किमुत) महाअसुर मयनामेदानवडरकरिकै आपनीकन्या मंदोदरीकोलाय तुमको बिवाहिदिया सो तौ अबतक तुम्हारेवशमेंहै बाकी और जो महाअसुर तिनकी क्या गनती है काहेमेंहैं ९ (तुयत्हनूमत्धर्षणंतत्चनःअवज्ञाकृतंअयंवानरःअस्मिन्पौरुषदर्शनेअस्माकंकिं) पुनः जो हनूमान्करिकै हमार तिरस्कारभया सो तौ हमलोग उसको अनादरकिया वाको तुच्छमानिलिया कि यह वानर पशुजाति इसमें बलदेखानेसे हमको कौनबड़ाई है इस हमारी ढीलमें उसका सब कार्य बनगया १० (इति अस्माभिःउपेक्षितंतेनकिंधर्षणंभवेत् वयंप्रमत्ताःहनूमतावंचिताः स्मः तेनकिं) यह तुच्छहै ऐसा हम लोगोंने अनादरकरिदिया तब उसने जो कुछ बिगारिडारा तिसकरिकै हमारा क्या तिरस्कारभया पशु बिचारि हमलोग भूलेरहे ताते हनुमानने हमको छलिलिया पुर में अग्निलगाय भागिगया

तिसकरिकै भय क्या है ११ (यदितंसर्वेजानीमःकथंजीवन्गमिष्यति आज्ञापयजगत्कृत्स्नंमवानरं अमानुषंकृत्वा) जो ताको हम सब जानते कि यह ऐसा बलीहै तौ पूर्वही मारिडारते जीवत कैसे जानेपावता परन्तु जो अब आज्ञादीजिये तौ सम्पूर्ण जगत्को बिना वानर बिना मानुषकोकरिदेवें १२ ॥

कृत्वायास्यामहेसर्वेप्रत्येकंवानियोजय॥कुंभकर्णस्तदाप्राहरावणंराक्षसेश्वरम् १३ आरब्धंयत्त्वयाकर्मस्वात्मनाशायकेवलम् ॥ नदृष्टोसितदाभाग्यात्त्वंरामेणमहात्मना १४ यदिपश्यतिरामस्त्वांजीवन्नायासिरावण ॥ रामोनमानुषोदेवःसाक्षान्नारायणोऽव्ययः १५ सीताभगवतीलक्ष्मीरामपत्नीयशस्विनी॥ राक्षसानांविनाशायत्वयानीतासुमध्यमा १६ विषपिंडमिवागीर्यमहामीनोयथातथा ॥ आनीताजानकीपश्चात्त्वयाकिंवाभविष्यति १७ यद्यप्यनुचितंकर्मत्वयाकृतमजानता ॥ सर्वंसमंकरिष्यामिस्वस्थचित्तोभवप्रभो १८ ॥

(आयास्यामहेसर्वेवाप्रत्येकंनियोजयतदाराक्षसेश्वरंरावणंकुंभकर्णःप्राह) संसारभरेके वानर मानुषोंकोनाशकरि लौटिआवैं हम सब अथवा एक एक राक्षस वानरनसौं युद्धकरायदीजे तासमय राक्षसौं के राजा रावणप्रति कुंभकर्णबोलताभया १३ (त्वयायत्कर्मआरब्धंकेवलम्स्वआत्मनाशाय तदाभाग्यात्महात्मनारामेणत्वंनदृष्टोसि) कुभकर्ण बोला कि हे रावण तुमने जो सीताहरणादि कर्म प्रारंभकियाहै सो केवल अपने नाशके अर्थकियाहै जब सीता हरनेगये तासमय में तुम्हारी कोई बडी भाग्यउदयरहै ताते महात्मा रामने तुमको नहीं देखा १४ (रावणयदिरामःत्वांपश्यतिजीवन्नायासि रामःमानुषःदेवःनअव्ययःसाक्षात्नारायणः) हे रावण जो रामतोको देखते तौ तू जीवत न आवता भावउहैं मारडालते पुनः राम मानुष राजा नहीं हैं किंतु अविनाशी साक्षात्नारायण हैं १५ (रामपत्नीयशस्विनीसीताभगवतीलक्ष्मीसुमध्यमात्वयानीताराक्षसानांविनाशाय) रामकी पत्नी यशवंती सीतासो भगवती लक्ष्मी है सुंदर मध्यदेशहै जाको ताको तुमने हरिआनी सो राक्षसनकेनाशके अर्थ लायो कौनप्रकार १६ (यथामहामीनःविषपिंडइवागीर्यंतथात्वयाजानकीआनीतापश्चात्किंवाभविष्यति) जैसे महामत्स्यविषकेपिंडकनाई कांटासहित चाराकोलीलिजातीहै पीछे प्राणगंवावत तैसे तुमने जानकीहरिआनी है तामें देखैं पीछे क्या होनहारहै १७ (प्रभोयदिअजानतात्वयाअनुचितंअपि कर्मकृतंस्वस्थचित्तःभवसर्वंसमंकरिष्यामि) हे प्रभो जो अजानभूलते तुमने अनुचितभी कर्म किया तौ आपने चित्तको सावधानकरौ मैं अपने बलकरिकै तुम्हारा टेढ़ाभी यावत् कार्य है सो सब मैं सीधा करिदेउंगो १८ ॥

कुम्भकर्णवचःश्रुत्वावाक्यमिंद्रजिदब्रवीत्॥ देहिदेवममानुज्ञांहत्वारामंसलक्ष्मणम् ॥ सुग्रीवंवानरांश्चैवपुनर्यास्यामितेंतिकम् १९ तत्रागतोभागवतप्रधानोविभीषणोबुद्धिमतांवरिष्ठः ॥ श्रीरामपादद्वयएकतानःप्रणम्यदेवारिमुपोपविष्टः २० विलोक्यकुंभश्रवणादिदैत्यान्मत्तप्रमत्तानतिविस्मयेन ॥ विलोक्यकामातुरमप्रमत्तोदशाननंप्राहविशुद्धबुद्धिः २१ नकुंभकर्णेन्द्रजितौचराजन्तथामहापार्श्वमहोदरौतौ ॥ निकुंभकुंभौचतथातिकायःस्थातुंनशक्तायुधिराघवस्य २२ ॥

(कुंभकर्णवचःश्रुत्वाइंद्रजित्वाक्यंअब्रवीत् देवममअनुज्ञांदेहि वानरांदचएवसुग्रीवंसलक्ष्मणंरामं

हत्वातेअंतिकंपुनर्यास्यामि)कुंभकर्णकेवचनसुनि इंद्रजित् मेघनाद रावणप्रति वचनबोला हे देव और न सो पूछनेते क्या प्रयोजन है केवल मोको आज्ञादीजिये तौ सब वानरौंको अरु सुग्रीवको अरु लक्ष्मण सहित रामको मारिकै कुशलपूर्वक तुम्हारे पासको पुनः लौटिआवौं १९ (तत्रभागवतप्रधानःबुद्धिमतांवरिष्ठः श्रीरामपादद्वयएकतानः विभीषणःआगनःदेवारिंप्रणम्यउपोपविष्टः) ताही समय में तहां भगवद्भक्तों में मुख्यबुद्धिमानों में श्रेष्ठ श्रीरघुनाथजीके दोऊपदकमलों में एकाग्रचित्तकी वृत्तिलगी है जाकी ऐसा विभीषण आवताभया रावणको प्रणामकरि समीपही बैठजाताभया २० (मत्तप्रमत्तान्कुंभश्रवणादिदैत्यान् विलोक्यकामातुरंअप्रमत्तः दशाननंविलोक्य अतिविस्मयेनविशुद्धबुद्धिःप्राह) मतवारेन में मतवार कुंभकर्ण आदि दैत्यन को देखि तथा कामातुर महामतवार रावण को देखि भाव मन वचनते हरिविमुखता विचारि वंशनाशहोतेजानि बड़ी विस्मयकरिकै विशेषशुद्धहै बुद्धि जाकी सो विभीषण रावणप्रति बोलताभया २१ (राजन्कुंभकर्णेद्रजितौचमहापार्श्वमहोदरौ तौनअतिकायः चतथानिकुंभकुम्भौ राघवस्ययुधिस्थातुंनशक्ताः)हेराजन् कुंभकर्ण मेघनाद येदोऊ पुनः तैसे महापार्श्व महोदर ये दोऊ पुनः अतिकाय तैसे निकुंभ कुंभ ये दोऊ इत्यादि सब रघुनाथजी के संमुख युद्ध में ठाढ़ होने को समर्थ कोऊ नहीं है भाव सबमारि डारे जांयगे २२ ॥

सीताभिधानेनमहाग्रहेणग्रस्तोसिराजन्नचतेविमोक्षः ॥ तामेवसत्कृत्यमहाधनेन दत्त्वाभिरामायसुखीभवत्वम् २३ यावन्नरामस्यशिताःशिलीमुखाल्लंकाममिव्याप्यशिरांसिरक्षसाम् ॥ छिंदंतितावद्रघुनायकस्यभोतांजानकींत्वंप्रतिदातुमर्हसि २४ यावन्नगाभाःकपयोमहाबलाहरींद्रतुल्यानखदंष्ट्रयोधिनः ॥ लंकांसमाक्रम्यविनाशयंतितेतावद्द्रुतंदेहिरघूत्तमायताम् २५ जीवन्नरामेणविमोक्ष्यसेत्वंगुप्तःसुरेंद्रैरपिशंकरेण ॥ नदेवराजांकगतोनमृत्योःपाताललोकानपिसंप्रविष्टः २६ ॥

(राजन्सीताभिधानेनमहाग्रहेणग्रस्तोसिचतेविमोक्षःन महाधनेनतांएवसत्कृत्यअभिरामायदत्त्वात्वंसुखीभव) हे राजन् सीतानाम करिकै महाग्राहने तुमको ग्रसिलिया है पुनः तुमको छूटना दुर्घटहै ताते स्वर्णमणी आदि महाधन करिकै सहित तिस सीताको भी आदर सहित लैकै आनन्दरूप राम के अर्थ देकै तुमसुखीहोउ २३ (भोरावण रामस्यशिताःशिलीमुखाःलंकांअभिव्याप्ययावत्रक्षसांशिरांसिनछिंदंतितावत्त्वंतांजानकींरघुनायकस्यप्रतिदातुंअर्हसि) भो रावण रामके पैनेबाण लंकामें व्यापिकै जबतक राक्षसौं के शिरनहीं खण्डन करते तबतक तुम तिसजानकी को लैकै रघुनन्दन को देदेनेके योग्यहौ २४ (नगाभाःहरींद्रतुल्यानखदंष्ट्रयोधिनःमहाबलाःकपयः तेलंकांसमाक्रम्ययावत् नाविनाशयंतितावत्रघूत्तमायतांद्रुतंदेहि) पर्वताकार शरीर सिंहौंके तुल्यअशंक विक्रमी कराल नख दांतौं करिकै युद्धकरने वाले ऐसे महाबली बानर ते लंकामें प्रवेशकरि जबतक राक्षसों को नहीं नाश करते हैं तबतक रघुनंदन के अर्थ तिन जनकनन्दिनी को शीघ्रहीदेउ २५ (सुरेंद्रैःशंकरेणअपिगुप्तःत्वंरामेणजीवन्नविमोक्ष्यसेदेवराजांकगतःनमृत्योःपाताललोकान्अपिसंप्रविष्टःन) देवन में श्रेष्ठकुबेरादिकौं करिकै रक्षितहोउ अथवा शंकर करिकै भी रक्षा किये जाउ तुमरामसे जीवतनछुटिहौ जो स्वर्ग में जाय इन्द्रके अकोरामें बैठिहौ तहांनबचिहौ मृत्युलोक पुनः पाताल लोकन में भी प्रवेश करिजैहौ तहां न बचिहौ भाव केवलप्रभु की शरणागते में बचि सकेहौ २६ ॥

शुभंहितंपवित्रंचविभीषणवचःखलः ॥ प्रतिजग्राहनैवासौम्रियमाणइवौषधम् २७

कालेननोदितोदैत्योविभीषणमथाऽब्रवीत् ॥ मद्दत्तभोगैःपुष्टांगोमत्समीपेवसन्नपि २८ प्रतीपमाचरत्येषममैवाहितकारिणः ॥ मित्रभावेनशत्रुर्मेजातोनास्त्यत्र संशयः २९ अनार्येणकृतघ्नेनसंगतिर्मेनयुज्यते ॥ विनाशमभिकांक्षंतिज्ञातीनां ज्ञातयस्सदा ३० योन्यस्त्वेवंविधंब्रूयाद्वाक्यमेकंनिशाचरः ॥ हन्मितस्मिन्क्षणेए वधिक्त्वांरक्षःकुलाधमम् ३१ रावणेनैवमुक्तःसन्परुषंसविभीषणः ॥ उत्पपात सभामध्याद्गदापाणिर्महाबलः ३२ ॥

(विभीषणवचःशुभंहितंचपवित्रंखलः असौप्रतिजग्राहनएव म्रियमाणऔषधंइव) विभीषणको वचन कैसाहै कल्याणमयहित है जामें भाव रामशरण जानापुनः पवित्रहै भाव जानकी को दै देना ताहि खल यह रावणअंगीकार नहींकिया कौन भांति यथा बिषमरुज वशमरणहार औषधनहीं खाता है २७ (अथकालेननोदितःदैत्य.विभीषणंअब्रवीत् मत्दत्तभोगैः पुष्टांगःमत्समीपेवसन्नपि) अब काल करिकै प्रेरित दैत्य रावण विभीषण प्रति बोला कि तू मेरेदियेहुये भोगोंकरिकै पुष्टांगभयापुनः मेरेही समीप बसता भी है २८ (हितकारिणःमांएवप्रतीपंआचरतिएषमित्रभावेनमेशत्रुःजातःअत्रसंशयःनअस्ति) पालन पोषणादि हितकरनेवाला जो मैं हौं ताको भी प्रतिकूल आचरण भाव विमुखता है ताते यह विभीषण मित्र भावकरिकै मेराशत्रु उत्पन्न भया यामें संशयनहीं है सत्य है २९ (कृतघ्नेनअनार्येणमेसंगतिःनयुज्यतेज्ञातयःविनाशंज्ञातीनांसदाअभिकांक्षन्ति) सलूकन मानैइतिकृतघ्नकुल धर्मत्यागी अनार्य ऐसे विभीषण करिकै मेरी संगति मिलती नहीं है यथा साधु असाधु स्वभाव प्रतिकूल है पुनःकुटुंबी को विनाश होने की कुटुंब के लोगनको सदा रक्षारहतीहै ३०(तुयः अन्यःएकंनिशाचरःएवंविधंवाक्यंब्रूयात्तस्मिनक्षणेएवहान्मिरक्षःकुलाधमंत्वांधिक्) तू भाई है क्या मारौंपुनः जो और एकनिशाचर इसी विधिकी वाक्य बोलतातो उसी क्षणमारि डारता राक्षसकुल में ऐसा अधमभया तोको धिक्कार है मुख देखने योग्य नहीं है ३१ (एवंपरुषंरावणेनउक्तःसन्सविभीषणःमहाबलःगदापाणिःसभामध्यात्उत्पपात) इसप्रकार कठोर वचन रावण करिकै कहतसन्ते सो विभीषण महाबली गदाहाथ में लैके सभामध्य ते ऊपर को जाता भया ३२ ॥

चतुर्भिर्मंत्रिभिःसार्द्धंगगनस्थोब्रवीद्वचः ॥ क्रोधेनमहताविष्टोरावणंदशकंधरम् ३३ मांविनाशमुपेहित्वंप्रियवादिनमेवमाम् ॥ धिक्करोषितथापित्वंज्येष्ठोभ्रातापितुःसमः ३४ कालोराघवरूपेणजातोदशरथालये ॥ कालीसीताभिधानेनजाता जनकनंदिनी ॥ तावुभावागतावत्रभूमेर्भारापनुत्तये ३५ तेनैवप्रेरितस्त्वंतुनशृणोषिहितंमम ॥ श्रीरामःप्रकृतेःसाक्षात्परस्तात्सर्वदास्थितः ३६ बहिरंतश्चभूतानांसमःसर्वत्रसंस्थितः॥नामरूपादिभेदेनतत्तन्मयइवामलः३७ यथानानाप्रकारेषुवृक्षेष्वेकोमहानलः ॥ तत्तदाकृतिभेदेनभिद्यतेज्ञानचक्षुषाम् ३८ ॥

(चतुर्भिःमंत्रिभिःसार्द्धंगगनस्थःमहताक्रोधेनआविष्टःदशकंधरम्रावणंवचःअब्रवीत्)चारि मंत्रिनसहित विभीषण आकाशमें स्थित बड़े क्रोधसे परिपूर्ण दशकंधर रावण प्रति वचन बोले ३३ (मांविनात्वंशमुपेहिप्रियवादिनंमांएवधिक्करोषितथापित्वंपितुस्समःज्येष्ठोभ्राता) विभीषण बोले हे रावणमैं जाताहौं अब मेरे विना तुम सुखकरौ प्रियवचन बोलनेवाला जोमैंहौं ताकोभी धिक्कारकरते हौताहू

पर तुम पिताके समहौ क्योंकि ज्येठे भाईहौ तातेमैं तुम्हारे हितैकी कहौंगो ३४ (राघवरूपेणकालः दशरथालयेजातःसीताभिधानेनजनकनंदिनी कालीजातातौउभौभूमेःभारापनुत्तयेअत्रआगतौ) हे रावण राघवरूपकरिकै तुम्हाराकाल दशरथके मंदिर में उत्पन्नभया पुनः सीतानाम करिकै जनक पुत्रीकाली उत्पन्नभई ते दोनौं रामजानकी भूमिकोभार उतारिवे अर्थ इहाँ को आयेहैं ३५ (तेनएव प्रेरितःतुत्वंहितंममनश्रृणोपिश्रीरामःप्रकृतेःपरस्तात्साक्षात्सर्वदास्थितः) हे रावण तिनहीं की प्रेरणा अर्थात् अंतर्यामीरूपते अंतरमें वसे तिनराम करिकै प्रेरणा कियेगये जो तुम ताते अपना हित मेराकहा वचन नहीं सुनतेहौ अरु श्रीरामप्रकृतिते परसाक्षात् अंतर्यामी रूपते सवकाल सवमें वसेहैं सो प्रेरकहैं ३६ (भूतानांबहिःचअंतःसर्वत्रसमःसंस्थितःअमलःनामरूपादिभेदेनतत्तत्मयइव) भूतचराचरके बाहेर पुनः भीतर सब ठौर बरावरिही बसाहै विकार रहित अमल परन्तु नामरूपभेदन करिकै ताहीसम देखाताहै यथा सोनाकनककुण्डलादि नामरूपभयेते सोनाभी वही मय देखा है विचारेतेसोना एकही है ३७ (नानाप्रकारेपुवृक्षेषुयथामहाअनलःएकःतत्तत्आकृतिभेदेनअज्ञान चक्षुषाम्भिद्यते) संसार में अनेकप्रकारके वृक्षहैं तिनविषे जैसे महा अग्नि एकही व्यासहै जैसेजैसे वृक्ष तैसी तैसी आकृति सूरति भेद करिकै अज्ञान दृष्टिवालेनको भेददेखि परताहै यथा वट पीपर भाँब इसी भांति परमात्मा भी एकव्याप्त है ३८ ॥

पंचकोशादिभेदेनतत्तन्मयइवाबभौ ॥ नीलपीतादियोगेननिर्मलःस्फटिकोयथा ३९ सएवनित्यमुक्तोपिस्वमायागुणाबिंबितः ॥ कालःप्रधानंपुरुषोऽव्यक्तंचेतिच तुर्विधः ४० प्रधानपुरुषाभ्यांसजगत्कृत्स्नंसृजत्यजः ॥ कालरूपेणकलनांजग तःकुरुतेऽव्ययः ४१ कालरूपीसभगवान्रामरूपेणमायया ॥ ब्रह्मणाप्रार्थितोदेव स्त्वद्वधार्थमिहागतः ४२ ॥

(पंचकोशादिभेदेनतत्तत्मयइवाबभौ) पंचकोशादि भेदन करिकै ताही ताही मयसम देखात अर्थात् प्रथम अन्नमयकोशदेहहै ताके भेद करिकै परमात्मा ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्रादि देखात दूसरा प्राणमयकोशतन व्याप्त जो वायुहै ताकेभेद करिकै स्वासापला क्षुधाप्यास मलमूत्रत्यागादि देखात तीसरा मनोमय कोशमन चित्तबुद्धि अहंकारादि तिनके भेदते शुभाशुभ मनोरथादि अनेक व्यापारकरते देखात चौथा आनन्दमय कोश ताके भेदकरिकै विषयानंद प्रेमानंद ब्रह्मानंदादिकरते देखात पांचवां विज्ञानमयकोश ताकेभेद करिकै ब्रह्मनिरूपणादि करते देखात इति पंचकोशादिमय कैसादेखात (यथानीलपीतादियोगेननिर्मलःस्फटिकः) जैसे वसन फूलादि नील पीत अरुणादि समीपता योग करिकै अमलस्फटिकमणि भी रंगदार देखात ३९ (सएवनित्यमुक्तःअपि) तैसेही रघुनन्दन नित्यमुक्तभी हैं परन्तु (स्वमायागुणाबिंबितः) अपनी मायाके रजतमसत्वादि गुणोंमें प्रतिबिंबितहैकै (कालःप्रधानंपुरुषःचअव्यक्तंइतिचतुर्विधः) काल अरु प्रधान अरु पुरुष पुनः अव्यक्त इत्यादि चारि विधि करिकै जानेजात ४० (सअजःप्रधानपुरुषाभ्यांजगत्कृत्स्नंसृजतिकालरूपेणकलनांजगतःव्ययःकुरुते) सोई राम जन्मरहित अज रजोगुणमय प्रधान अरु पुरुषरूपन करिकै जगत् जो संपूर्ण हैताको उत्पन्न पालन करतेहैं तमो गुणमय कालरूप करिकै संहार करि जगत्को नाशकरि देते हैं शुद्ध सतोगुणमय अव्यक्त अंतर्यामीरूपकरि सवमें व्याप्तहैं ४१ (सभगवान्कालरूपी ब्रह्मणाप्रार्थितः देवःमाययारामरूपेणत्वत्वधार्थइहागतः) सो भगवान् कालरूपी ब्रह्माकरिकै प्रार्थनाकियेगये देवमाया

रामरूप करिकै तुम्हारे वधके अर्थ इहां आये हैं भाव तेरे मारने की प्रतिज्ञा करिकै आये हैं ४२ ॥

तदन्यथाकथंकुर्यात्सत्यसंकल्पईश्वरः ॥ हनिष्यतित्वांरामस्तुसपुत्रबलवाहनम् ४३ हन्यमानंनशक्नोमिद्रष्टुंरामेणरावण ॥ त्वांराक्षसकुलंकृत्स्नंततोगच्छामिराघवम् ॥ मयियातेसुखीभूत्वारमस्वभवनेचिरम् ४४ विभीषणोरावणवाक्यतःक्षणाद्विसृज्यसर्वंसपरिच्छदंगृहम् ॥ जगामरामस्यपदारविंदयोःसेवाभिकांक्षीपरिपूर्णमानसः ४५ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्धकाण्डेद्वितीयस्सर्गः २ ॥

(सत्यसंकल्पईश्वरःतत्अन्यथाकथंकुर्यात्सपुत्रबलवाहनंतुत्वांरामःहनिष्यति) जो तेरेमारनेकी प्रतिज्ञा करिकै आये हैं तौसत्य है संकल्प जाको सोईश्वर अपने वचन को वृथा कैसे करैंगे ताते सहित पुत्र सेनावाहन पुनः तुमको राम निश्चयकरि मारैंगे ४३ (रामेणहन्यमानंरावणत्वांकृत्स्नं राक्षसकुलंदृष्टुंनशक्नोमिततःराघवंगच्छामि) अबरामकरिकै मारेजाउगे रावण तुमतथा सम्पूर्णराक्षस कुल सो मैं देखिनसकौंगो ताते रघुनंदन के समीपको जाताहौं (मयियातेसुखीभूत्वाभवनेचिरंरमस्व) हे रावण मेरेचले गयेसन्ते तुम सुखीहोउ अरु मंदिरमें बहुतकालतक रमण करो सुख भोगकरौ४४ (रामस्यपदारविदयोः सेवाभिकांक्षीपरिपूर्णमानसः विभीषणःरावणवाक्यतः सपरिच्छदंगृहंसर्वंक्षणात्विसृज्यजगाम) श्रीरघुनाथजी के पदकमलों के सेवन करनेकी अभिलाषा परिपूर्ण है मनमें जिसके ऐसा रामानुरागी विभीषण सो रावण के धिक्कार वचनमात्रते स्त्री पुत्रादि आपने पक्षी सहित सम्पूर्ण ऋद्धिभरा मंदिर इत्यादि यावत् लौकिकविभव रहा सो सम्पूर्ण क्षणै भरमें त्याग करिशुद्ध विरागमान ह्वै कै रघुनाथजीकी शरणागत को जाताभया ४५ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतवैजनाथ विरचिते अध्यात्मभूषणेयुद्धकाण्डेद्वितीयःप्रकाशः २ ॥

विभीषणोमहाभागश्चतुर्भिर्मंत्रिभिःसह॥आगत्यगगनेरामसंमुखेसमवस्थितः१ उच्चैरुवाचभोस्वामिन्रामराजीवलोचन॥रावणस्यानुजोऽहंतेदारहर्तुर्विभीषणः २ नाम्नाभ्रात्रानिरस्तोहंत्वामेवशरणंगतः ॥ हितमुक्तंमयादेवतस्यचाविदितात्मनः ३ सीतांरामायवैदेहींप्रेषयेतिपुनःपुनः ॥ उक्तोपिनशृणोत्येषःकालपाशवशंगतः ४ हंतुंमांखड्गमादायप्राद्रवद्राक्षसाधमः॥ ततोचिरेणसचिवैश्चतुर्भिःसहितोभयात् ५ त्वामेवभवमोक्षायमुमुक्षुःशरणंगतः॥ विभीषणवचःश्रुत्वासुग्रीवोवाक्यमब्रवीत् ६ ॥

सवैया ॥ शरणायविभीषण की विनती वरदै प्रभुता अभिषेक किये । शुकआय वधेकपि सेनघनी सुनि रावणशोक उसास लिये ॥ शरखैंचतसिंधु सभीतचलो प्रभु वंदनकै मणिभेटदिये । शरदुष्ट हतो त्वहि सेतुबँधे कहि वंदिचलो सहमोदहिये॥(चतुर्भिःमंत्रिभिःसहचमहाभागःविभीषणआगत्यगगने रामसंमुखेसमवस्थितः) शिवजीबोले हे गिरिजा चारिहुमंत्रिन सहित पुनः महाभाग्यवंत विभी·

षण आयकै अकाशमें रघुनाथजीके संमुख स्थितभया १ (उच्चैः उवाचभोस्वामिन् राजीवलोचन राम ते दारहर्तुःरावणस्यअनुजःअहंविभीषणः)ऊंचेस्वरकरिकै बोलते भये भो स्वामिन्कमलनयन रघुनंदन आपकी भार्या सीता को हरने वाला जो रावण ताको छोटाभाई मैं २ (विभीषण नाम्नाभ्रात्रा निरस्तःअहंत्वांएवशरणंगतःदेवअविदितात्मनःतस्यचहितंमयाउक्तं) विभीषणनाममैंभाई रावणकरिकै तिस्कार किया गया मैं आपकी शरण को आयाहौं हे रामदेव आपको ऐश्वर्यरूपनहीं जानता जो रावण ताके हितकारी बचन को मैंने कहा ३ (वैदेहींसीतांरामायप्रेपयइतिपुनःपुनःउक्तःअपि एषःकालपाशवशंगतःनश्रृणोति) विदेह पुत्री सीता को राम के अर्थ पठायदीजे ऐसा वारम्वार कहा तौभी यह रावण काल पाश के वश प्राप्त ताते मेरे वचन नहीं सुना ४ (राक्षसाधमःखड्गंआदायमांहंतुंप्राद्रवत् ततः भयात्अचिरेणचतुर्भिःसचिवैःसहितः) राक्षसों में अधमरावण तरवारि खैंचि मेरे मारने को दौरा तब डरते मैं शीघ्रही चारिमंत्रिन करिकै सहित ५ (मुमुक्षुःभवमोक्षायत्वांएवशरणंगतःविभीषणवचःश्रुत्वासुग्रीवःवाक्यंअब्रवित्) मोक्षकी इच्छाराखे भवबंधनते छूटने अर्थ आपकी शरण को प्राप्त भयाहौं इति विभीषण के वचन सुनि सुग्रीव वचन बोले ६ ॥

विश्वासार्होनतेराममायावीराक्षसाधमः ॥ सीताहर्तुर्विशेषेणरावणस्यानुजोबली ७ मंत्रिभिःसायुधैरस्मान्विवरेनिहनिष्यति ॥ तदाज्ञापयमेदेववानरैर्हन्यतामयं ८ ममैवंभातितेरामबुद्ध्याकिंनिश्चितंवद ॥ श्रुत्वासुग्रीववचनंरामःसस्मितमब्रवीत ९ यदीच्छामिकपिश्रेष्ठलोकान्सर्वान्सहेश्वरान् ॥ निमिषार्द्धेनसंहन्यांसृजामि निमिषार्द्धतः १० अतोमयाभयंदत्तंशीघ्रमानयराक्षसम् ११ सकृदेवप्रपन्नायतवास्मीतिचयाचते ॥ अभयंसर्वभूतेभ्योददाम्येतद्व्रतंमम १२ ॥

(हेरामराक्षसाधमःमायावीसीताहर्तुः रावणस्यअनुजःबली विशेषेणतेविश्वासार्हःन) सुग्रीव बोले हे रघुनाथजी एकतौ राक्षस अधम भाव सहज स्वभाव दुष्ट पुनः मायावी अर्थात् माया सो अनेक छलकरने वाला पुनः सीता हरने वाले रावण तुम्हारे शत्रु को छोटा भाई बली अवश्यही होगा ताते विशेषि करिकै आप के विश्वास करिबे योग्य नहीं है ७ (सायुधैःमंत्रिभिःविवरेअस्मान्हनिष्यतितत्देवमे आज्ञापयवानरैः अयंहन्यतां) सहित हथियार आया साथ में रहैगा तौ संधि पाये संते मंत्रिन करिकै हम लोगन को घात करावैगो इससे हे देव मोको आज्ञादीजिये तौ वानरोंसे इसको वध करावौं ८ (ममएवंभातिहेराम तेबुद्ध्याकिंनिश्चितंवद सुग्रीववचनंश्रुत्वा रामःसस्मितंअब्रवीत्) मेरे विचार में तो ऐसही आवता है हे रघुनाथ जी आपकी बुद्धि करिकै क्यानिश्चय भया सोकहिये इति सुग्रीवको वचन साधुअसाधु विचार रहित कादरता बोधक सुनिकै रघुनन्दनसहित मुसुकानि वचन बोले मुसुकाने को भाव कि सुग्रीव मेरे ऐश्वर्यरूप को भूलि गये सो जनाय देउ ९ (कपिश्रेष्ठयदि इच्छामि सहईश्वरान्सर्वान्लोकान् निमिषार्द्धेनसंहन्यां निमिषार्द्धतःसृजामि) प्रभु बोले हेवानरों में श्रेष्ठ जो मैं इच्छाकरौं तौ सहित लोक पालन सब लोकन को आधे निमिषमें नाश करि देउँ पुनः आधे निमिष में रचि देंउ तौ मेरे संमुख कौन छल करि सक्ताहै अथवा छली मेरी शरण नहीं आय सक्ता है १० (अतःमयाअभयंदत्तंराक्षसं शीघ्रं आनय) इससे मैंने इसको अभय दान दिया ताते राक्षस विभीषण को शीघ्रही मेरे संमुख लावौ काहेते ११ (अस्मितवइतिसकृत्एववयाचतेप्रपन्नाय सर्वभूतेभ्यः अभयंददामि एतत्ममव्रतं) मैंतुम्हाराहौं ऐसा वचन एकहूवार निश्चय

करि कहिकै पुनः अभय याचना करै तौ उस शरणागत के अर्थ सब भूतों ते अभय देउं भाव किसी को डर मानि जो कोऊ जन मेरे संमुख आय एकहूवार कहै कि मैं तुम्हारी शरण हौं मेरी रक्षा करो तिस शरणागत जनके हेत ऐसा अभय करि देउँ जापर सुरासुर मुनि नर नाग पशु पक्षी इत्यादि कोऊ वाको दुःख न देसकै इति शरण पाल मेरा व्रतहै तौ जो याकी रक्षा न करों तौमेरा व्रतै भंगहोय तौ अयश को पात्र होउं ताते विभीषण को शीघ्रही लावौ १२ ॥

रामस्यवचनंश्रुत्वासुग्रीवोहृष्टमानसः ॥ विभीषणमथानाय्यदर्शयामासराघवम् १३ विभीषणस्तुसाष्टांगंप्रणिपत्यरघूत्तमम् ॥ हर्षगद्गदयावाचाभक्त्याचपरयान्वितः १४ रामंश्यामंविशालाक्षंप्रसन्नमुखपंकजं ॥ धनुर्बाणधरंशांतंलक्ष्मणेनसमन्वितम् १५ कृतांजलिपुटोभूत्वास्तोतुंसमुपचक्रमे १६ विभीषणउवाच ॥ नमस्तेरामराजेंद्रनम सीतामनोरम ॥ नमस्तेचंडकोदंडनमस्तेभक्तवत्सल १७ ॥

(रामस्यवचनंश्रुत्वा हृष्टमानसः सुग्रीवःआनाय्य विभीषणअथराघवंदर्शयामास) रघुनन्दन को वचन सुनि आनंद भया मन जाको सो सुग्रीव आनिकै विभीषण को जब रघुनन्दन को देखावते भये संमुख खड़ाकरि देते भये १३ (तुविभीषणःरघूत्तमंसाष्टांगंप्रणिपत्यपरयाभक्त्यान्वितःहर्षगद्गदयावाचा) पुनः विभीषण रघुनाथ जी को साष्टांग प्रणाम करि अंतरमें पराभक्ति अचल अनुराग युक्त है पुनः सर्वांगमें हर्ष अर्थात् प्रभुको देखि जो प्रेमानंद उमँगा तातेअंगमें पुलकावलीनेत्र सजल कंठा रोध भया ताते गद्गदवचन करिकै १४ (रामंश्यामंविशालाक्षं) विभीषण पलकरोंकि देखे कैसेहैं रघुनाथ जी सुंदर श्याम अंगवड़ेलंवे सुंदर नेत्र (प्रसन्नमुखपंकजम्) आनंद दर्शितहै चेष्टा जामें ऐसा मुख कमल तुल्य (धनुर्बाण धरंशांतं) वीरवेषतीक्ष्णस्वभावके चिह्न धनुष बाण धारण किहे ताहूपर स्वभाव शांतहै (लक्ष्मणेनसमन्वितं) लक्ष्मण सहित आसीन देखि के १५ (कृतांजलिपुटोभूत्वास्तोतुंसमूउपचक्रमे) हाथ जोरिकै विभीषण प्रभुकी स्तुति प्रारंभ किये १६ (रामराजेंद्रतेनमःसीता मनोरमनमःचंडकोदंडतेनमः भक्तवत्सलतेनम) हे राम राजों में महाराज आपके अर्थ नमस्कार है प्रचंड है को दंड धनुष जिनको ऐसे आपके अर्थ नमस्कार है हे सीता के मनको रमण करावन हारे आप के अर्थ नमस्कार है भक्तजन प्रिय हैं जाको इति हे भक्तवत्सल आपके अर्थ नमस्कार है १७ ॥

नमोऽनंतायशांतायरामायामिततेजसे ॥ सुग्रीवमित्रायचतेरघूणांपतयेनमः १८ जगदुत्पत्तिनाशानांकारणायमहात्मने ॥ त्रैलोक्यगुरुवेऽनादिगृहस्थायनमोनमः १९ त्वमादिर्जगतांरामत्वमेवस्थितिकारणम् ॥ त्वमंतेनिधनस्थानंस्वेच्छाचारस्त्वमेवहि २० चराचराणांभूतानांबहिरंतश्चराघव ॥ व्याप्यव्यापकरूपेणभवान्भातिजगन्मयः २१ त्वन्माययाहृतज्ञानानष्टात्मानोविचेतसः ॥ गतागतंप्रपद्यंते पापपुण्यवशात्सदा २२ तावत्सत्यंजगद्भातिशुक्तिकारजतंयथा ॥ यावन्नज्ञायते ज्ञानचेतसानान्यगामिना २३ ॥

(अनंतायशांतायअमिततेजसेरामायनमःसुग्रीवमित्रायचतेरघूणांपतयेनमः) जाकी महिमाको अन्त कोऊ नहींपावत सदा शांत स्वभाव अमित तेज ऐसे रामके अर्थ नमस्कार है सुग्रीव के मित्र

पुनः आप जो रघुबंशिनके नाथहौ तिनके अर्थ नमस्कारहै १८ (जगत्उत्पत्तिनाशानांकारणायमहात्मने) जगत्को उत्पन्न पालन संहारके आदि कारण महात्मा जो आप तिनके अर्थ नमस्कार है (त्रैलोक्यगुरुवेअनादिगृहस्थायनमोनमः) त्रयलोकनके स्वामी पालनहारे प्रकृतिके संयोगते संसारपुत्रवत् उत्पन्नकरनेवाले अनादिगृहस्थ जो आप तिनकेअर्थ नमस्कारहै १९ (रामत्वंजगतांआदिःत्वंएवस्थितिकारणम् अन्तेनिधनस्थानंत्वंस्वेच्छाचारःत्वंएवहि) हे राम आपही जगत्के आदि उत्पन्नकरताहैं आपही पालनके कारणहौ अंतमें नाशके स्थान आपहीहौ परमस्वतंत्र आपही निश्चयकरिहौ २० (चराचराणांभूतानांबहिःचअंतः व्याप्यव्यापकरूपेणराघवभवान्जगन्मयःभाति) चर जंगम अचर स्थावर भूतमात्रके बाहेर पुनः भीतरव्याप्य जो बाहेर इंद्रीआदिकों में चैतन्यता प्रकाशहै व्यापक प्रकाशी जो अंतर्यामी भीतरहै इति रूपकरिकै हे राघव आपही जगन्मय प्रकाशित हौ २१ (त्वत्मायथाहृतज्ञानाःनष्टात्मनः विचेतसःपापपुण्यवशात्सदागतागतंप्रपद्यंते) संसार आपमय किसीकोदेखाता नहीं ताको कारण यह है हे रघुनाथजी विषयरूप आपकीमायाने ज्ञानहरि लिया देहाभिमानते नष्टात्माभये भाव आत्मरूप भूलिगया मोहवश चैतन्यतारहित पाप पुण्यकरतेहैं ताही कर्मनवशते सदा जन्म मरणमय संसारको प्राप्तहोतेहैं २२ (अनन्यगामिनाज्ञानचेतसायावत् नज्ञायते तावत्जगत्सत्यंभातियथाशुक्तिकारजतं) और सब वासनात्यागि केवल परमात्मरूपही में सदाजाताहै चित्त इति अनन्यगामी ज्ञान चित्तकरिकै जबतक नहीं जानाजाताहै भाव जाकेप्रकाशते लोक चैतन्य सो चराचर में व्यापक शुद्ध परमात्मरूप सो जबतकनहीं देखाताहै तबैतक संसार सत्य देखात कौन भांति जैसे सीपी में चांदीकी भ्रमहै सो विचारकीन्हे वामें चांदी नहीं है तैसेही परमात्मरूपको ज्ञानभये लोक मिथ्याहै २३॥

त्वदज्ञानात्सदायुक्ताःपुत्रदारगृहादिषु ॥ रमन्तेविषयान्सर्वानंतेदुःखप्रदान्विभो २४ त्वामिंद्रोऽग्निर्यमोरक्षोवरुणश्चतथानिलः ॥ कुवेरश्चतथारुद्रस्त्वमेवपुरुषोत्तम २५ त्वमणोरप्यणीयांश्चस्थूलात्स्थूलतरःप्रभो ॥ त्वंपितासर्वलोकानां माताधातात्वमेवहि २६ आदिमध्यांतरहितःपरिपूर्णोच्युतोऽव्ययः ॥ त्वंपाणिपादरहितश्चक्षुःश्रोत्रविवर्जितः २७ श्रोत्राद्रष्टागृहीताचजवनस्त्वंखरांतकः ॥ कोशेभ्योव्यतिरिक्तस्त्वंनिर्गुणोनिरुपाश्रयः २८ ॥

(विभोत्वत्अज्ञानात्सदायुक्ताः अन्तदुःखप्रदान्पुत्रदारगृहादिषुसर्वानाविषयान्रमंते) हे प्रभु आपको रूपनहींजानेते इति अज्ञानमें सदायुक्तरहनेवाले संसारैको सत्यमाने जो अन्तकालमें दुखदेनहार पुत्र स्त्री घरादिकविषे असक्त सब विषयनको भोगकरते हैं २४ (इन्द्रःअग्निःयमःरक्षःचवरुणः तथाअनिलःत्वंचकुवेरःतथारुद्रःपुरुषोत्तमएवत्वं) इंद्र अरु अग्नि अरु यमराज अरु राक्षस पुनः वरुण तैसे पवन इत्यादि सब आपहीहौ पुनः कुवेर तैसे रुद्र पुरुषोत्तमभी आपहीहौ भाव इनमें देवता बुद्धी न राखै सब में ईश्वरव्यापकमानै २५ (प्रभोत्वंअणोःअपिअणीयांश्चस्थूलात्स्थूलतरःसर्वलोकानांपितात्वंमाताधातात्वंएवहि) झरोपा है मंदिर में घामआवत तामे जो कनै चमकत ताको अणुकही हे प्रभो आप अणुते भी अत्यन्त सूक्ष्महौ जो जीवके अंतरव्याप्तहौ पुनः स्थूलते अत्यन्त स्थूलहौ जाके रोमप्रति कोटिन ब्रह्मांडराजत पुनः सब लोकनके पिता आपहीहौ सबके माता पालनहार आपहीहौ २६ (आदिमध्यअन्तरहितः) आदि जन्म मध्यजीवन अंतमारणइत्यादि रहित

अनादिहो (परिपूर्णः अच्युतःअव्ययः) अखंडपरिपूर्णहो शक्ति आदि कलुच्युतनहीं भाव शक्ति तेज बल वीर्यादि परिपूर्ण नाशरहित (त्वंपाणिपादरहितः चक्षुःश्रोत्रविवर्जितः) पुनः आप कैसेहो कि हाथ पद गुदा शिश्न मुखादि कर्म इन्द्रिनकरिके रहित नेत्र कर्ण त्वचा जिह्वा नासिकादि ज्ञान इंद्री विवर्जित२७(खरांतकःत्वंश्रोत्राद्यग्राग्रहीताचजवनःकोशेभ्यःव्यतिरिक्तःत्वंनिर्गुणःनिरुपाश्रयः) माधुर्य में खरके नाशकरनेवाले आप कर्णरहित सुनतेहो नेत्रहीनदेखतेहो करहीन ग्रहणकरतेहो पुनः पदहीन चलतेहो पुन. अन्नमय प्राणमय मनोमय आनन्दमय विज्ञानमय कोशनते भिन्न आप निर्गुणकाहूके आधार नहींहो २८ ॥

निर्विकल्पोनिर्विकारोनिराकारोनिरीश्वरः ॥ षड्भावरहितोऽनादिःपुरुषःप्रकृतेः परः २९ माययागृह्यमाणस्त्वंमनुष्यइवभाव्यसे ॥ ज्ञात्वात्वांनिर्गुणमजंवैष्णवा मोक्षगामिनः ३० अहंत्वत्पादसद्भक्तिनिश्रेणींप्राप्यराघव ॥ इच्छामिज्ञानयोगा ख्यंसौधमारोढुमीश्वर ३१ नमःसीतापतेराम नमःकारुणिकोत्तम ॥ रावणारेनम स्तुभ्यंत्राहिमांभवसागरात् ३२ ततःप्रसन्नःप्रोवाचश्रीरामोभक्तवत्सलः ॥ वरंवृ णीष्वभद्रंतेवांछितंवरदोस्म्यहं३३॥ विभीषणउवाच ॥ धन्योस्मिकृतकृत्योऽस्मि कृतकार्योऽस्मिराघव ॥ त्वत्पाददर्शनादेवविमुक्तोस्मिनसंशयः ३४ ॥

(निर्विकल्पःनिर्विकारः) आप में भेदनहीं है रजतमादि विकार रहित भावएकही शुद्ध परमात्महो (निराकारःनिरीश्वरः) आकार रहित आप के ऊपर और कोई ईश्वर नहीं है स्वतंत्रहो (षड्भाव रहितःप्रकृतेःपरःअनादिः) षड्भावयथा जायते १ उत्पन्न होनापुनःअस्ति २ समर्थहोना पुनःवर्धते३ अवस्थादिकों में देह बढ़नापुनः विपरिणमते ४ रूपको बदलिजाना पुनः अपक्षीयते ५ दुर्बल होना पुनः विनश्यति ६ नाशहोना इतिषड्भाव रहित प्रकृति ते परे अनादिहो २९ (त्वंमाययागृह्यमाणः मनुष्यइवभाव्यतेनिर्गुणंअजंत्वांज्ञात्वावैष्णावाःमोक्षगामिनः) आप दिव्यमाया करिकै राजकुमार रूपग्रहण किहेउ ताते विषयी विमुखों को मनुष्य की नाईं देखिपरते हो अरु इसी रूपकी भक्तिकरि गुणनते पर निर्गुण जन्मादिविकार रहित आपको जानिकै भक्तजन मुक्त होते हैं ३० (राघवत्वत्पा दसत्भक्तिनिश्रेणींप्राप्यईश्वरज्ञानयोगाख्यंसौधंआरोढुंअहंइच्छामि) हे राघव आप के पदकमलों की सेवनस्मरण अर्चन वंदनादि जो सत् उत्तमपावन भक्तिरूप सीढ़ी है ताको प्राप्तह्वै हे ईश्वर तव ज्ञानयोग भाव आत्मरूप ते परमात्मरूपकी प्राप्तिरूप जो महल है तापर चढ़िवेकी मैं इच्छाकरता हों३१ (कारुणिकोत्तमरामनमःसीतापतेनमःरावणारेतुभ्यंनमःभवसागरात्मांत्राहि) हे करुणाकर उत्तम हे राम हे सीतापते हे रावण के शत्रुआप के अर्थ नमस्कार है भवसागर ते मेरी रक्षाकरौ ३२ (ततःभक्तवत्सलःश्रीरामःप्रसन्नःप्रोवाचतेभद्रंवरंवृणीष्ववांछितंवरदःस्म्यहम्) तब भक्तपरप्रीति करनेवाले रघुनंदन प्रसन्न ह्वै बोले तेराकल्याण होय वरमांगु मनभावन वरदेनेपर उपस्थितमैंहों३३ (राघवत्वत्पाददर्शनात्एवधन्यःअस्मिकृतकृत्यःअस्मिकृतकार्यःअस्मिविमुक्तःअस्मिसंशयःन) विभी षण बोले हे राघव आप के पदकमल देखे ते धन्यभयों कृतार्थभयों सम्पूर्ण कार्यकरि चुकेउं मुक्त भयों यामें संशय नहीं है ३४ ॥

नास्तिमत्सदृशोधन्योनास्तिमत्सदृशःशुचिः॥ नास्तिमत्सदृशोलोकेरामत्वन्मूर्ति

दर्शनात् ३५ कर्मबन्धविनाशायत्वज्ज्ञानंभक्तिलक्षणम् ॥ त्वद्ध्यानंपरमार्थंचदेहि मेरघुनन्दन ३६ नयाचेरामराजेंद्रसुखंविषयसंभवम् ॥ त्वत्पादकमलेसक्ताभक्ति रेवसदास्तुमे ३७ ओमित्युक्त्वापुनःप्रीतोरामःप्रोवाचराक्षसम् ॥ शृणुवक्ष्यामिते भद्रंरहस्यंममनिश्चितम् ३८ ॥

(रामत्वत्मूर्तिदर्शनात्मत्सदृशःलोकेनअस्तिमत्सदृशः शुचिःनअस्तिमत्सदृशःधन्यःनअस्ति) हे रघुनाथजी आप की श्याम सुंदर मनोहर मूर्तिके दर्शन पाये ते आजु मोसम भाग्यवन्त लोकमें दूसरा नहीं है दर्शनमात्र जन्म जन्मांतर के पाप नाश भये ताते मेरीसमान पवित्र दूसरा नहीं है आपकी कृपादृष्टि अवलोकन ते सब सुकृति को भाजनभयों ताते मेरी समान धन्यप्रशंसनीय दूसरा नहीं है ३५ (रघुनंदनकर्मबंधविनाशयभक्तिलक्षणंत्वत्ज्ञानंचपरमार्थंत्वद्ध्यानंमेदेहि) हे रघुनंदन शुभाशुभ कर्मन को फल दुःखसुख भोगरूप जो जीव को बंधन जन्म मरणादिकों के विनाश अर्थ जामें श्रवण कीर्तनस्मरण सेवन अर्चन वंदनादि आपकी भक्तिही साधनहै जामें ऐसा आपने रूप को ज्ञानतथा परमार्थ अर्थात् स्वार्थ रहित केवल परलोक साधनयुत अपने सुन्दर स्वरूप को ध्यान अर्थात् ऐश्वर्यरूप जाने माधुर्यरूप को ध्यानलोक व्यवहार त्यागिदेह सर्वांगतेकैंकर्यताकरों इत्यादि मोको दीजिये ३६ (रामराजेंद्रविषयसंभवम्सुखंनयाचेत्वत्पादकमलेसक्ताभक्तिःएवमेसदाअस्तु) हे रघुनंदन राजेंद्रइन्द्री विषय शब्द स्पर्श रूप रस गंध मैथुनादि ते उत्पन्न जो लौकिक सुख ताको नहीं मांगताहौं केवल आपके पदकमलों में चित्तअसक्त रहना इति प्रेमाभक्ति निश्चय करि मेरे उरमें सदाबनीरहै ३७ (ओं इतिउक्त्वारामःपुनः प्रीतःराक्षसम्उवाचतेभद्रंममनिश्चितंरहस्यंवक्ष्यामिश्रृणु) वरदान पूर्णताको प्रभु उपदेश दिये हेविभीषण आदि अंत ओंकार संपुट करि मेरामंत्र सदा जपाकरौ तौ ज्ञानयुत भक्तिसदा तुमको प्राप्त रहैगी यह हनुमदुक्तरामोपनिषद्के दूसरे खण्ड में लिखाहै यथा हनुमानुवाच सिंहासने समासीनंरामंपौलस्त्यसूदनम् । प्रणम्यदण्डवद्भूमौपौलस्त्यो वाक्यमब्रवीत् ॥ रघुनाथ महाबाहोकैवल्यं कथितंमया। अज्ञानांसुलभंचैवकथनीयं चसौलभम् ॥ श्री रामउवाच ॥ पंचाशल्लक्षमन्मंत्रमाद्यन्त प्रणवंमन्मंत्रात् द्विगुणःप्रणवोयोजपतेसस्वयमेवाहंभवेन्नकिम्) ऐसा कहि रघुनाथजी पुनः प्रीतिपूर्वक राक्षस विभीषण प्रति बोले तेराकल्याण होय अब अपना निश्चय कियाहुवा जो रहस्य एकांती सिद्धांत ताहि कहताहौं सुनु ३८ ॥

मद्भक्तानांप्रशांतानांयोगिनांवीतरागिणाम् ॥ हृदयेसीतयानित्यंवसाम्यत्रनसंशयः ३९ तस्मात्त्वंसर्वदाशांतःसर्वकल्मषवर्जितः ॥ मांध्यात्वामोक्षसेनित्यंघोरसंसारसागरात् ४० स्तोत्रमेतत्पठेद्यस्तुलिखेद्यःशृणुयादपि ॥ मत्प्रीतयेममाभीष्टं सारूप्यंसमवाप्नुयात् ४१ इत्युक्त्वालक्ष्मणंप्राहश्रीरामोभक्तभक्तिमान् ॥ पश्य त्विदानीमेवैषममसंदर्शनेफलम् ४२ लंकाराज्येभिषेक्ष्यामिजलमानयसागरात्॥ यावच्चंद्रश्चसूर्यश्चयावत्तिष्ठतिमेदिनी ४३ ॥

(वीतरागिणाम्योगिनांप्रशांतानांमद्भक्तानांहृदयेनित्यंसीतयावसामिअत्रसंशयःन) छूटि गया है राग विषय सुखकी चाह ऐसेयोगी अर्थात् यमनियमासन प्रत्याहार प्राणायामधारणा ध्यान समाधि करि मेरेरूपमें मन लगानेवाले पुनःराग द्वेषादि विषमता त्यागि शुद्धसतोगुणी शांत चित्तहैं जिनके

ऐसे जे मेरे भक्तहैं तिनके हृदय में सदा सीता सहित बास करताहौं यामें संशय नहीं ३८ (तस्मात्सर्वकल्मषवर्जितःसर्वदाशांतःत्वंनित्यंमांध्यात्वाघोरसंसारसागरात्मोक्ष्यसे) ताते हेविभीषण सब प्रकार के पापकर्म त्यागि सवकालशांत चित्त है तुम नित्यही मेरा ध्यानकरौ घोर संसार सागर तेमोक्ष होउगे ४० (एतत्ममाभीष्टस्तोत्रंमत्प्रीतयेयःपठेत्तुलिखेत्यःशृणुयात्अपिसारूप्यंसंप्राप्नुयात्) यहमेरा प्रियस्तोत्र जोहै ताहिमेरी प्रीति के अर्थ जो जनपढ़ैगो पुनः लिखैगो अथवा जो सुनैगो सो मेरे समानरूपको प्राप्तहोइगो भाव सारूप्य मुक्ति पावैगो ४१ (इतिउक्त्वाभक्तभक्तिमान्श्रीरामःलक्ष्मणंप्राहममसंदर्शनेफलम्एषइदानींएवपश्यतु) इत्यादि वचन विभीषण सो कहिकै पुनः अपने भक्तनके भक्तिमान् अर्थात् प्रीति करणेवाले श्रीरघुनन्दन लक्ष्मण प्रति बोलते भये हे लक्ष्मण मेरे दर्शनको फल जोहै ताहि यह विभीषण इसी समय निश्चयकरि देखै ४२ (सागरात्जलंआनयलंकाराज्येअभिषेक्ष्यामियावत्चंद्रःचसूर्यःयावत्मेदिनीतिष्ठति) हे लक्ष्मण समुद्रते जललावो क्योंकि लंकापुरी की राज्यमें इस विभीषणको इसीसमय राज्याभिषेक करताहौं कबतक को जबतक चन्द्रमा पुनः सूर्यरहै तथा जबतक पृथिवी बनी रहै ४३ ॥

यावन्ममकथालोकेतावद्राज्यंकरोत्वसौ ॥ इत्युक्त्वालक्ष्मणेनांबुह्यानाय्यकलशेनतं ४४ लंकाराज्याधिपत्यार्थमभिषेकंरमापतिः॥ कारयामाससचिवैर्लक्ष्मणेनविशेषतः ४५ साधुसाध्वितितेसर्वेवानरास्तुष्टुवुर्भृशम् ॥ सुग्रीवोऽपिपरिष्वज्यविभीषणमथाब्रवीत् ४६ विभीषणावयंसर्वेरामस्यपरमात्मनः ॥ किंकरास्तत्रमुख्यस्त्वं भक्त्यारामपरिग्रहात् ४७ रावणस्यविनाशेत्वंसाहाय्यंकर्तुमर्हसि ॥ विभीषणउवाच ॥ अहंकियान्सहायत्वेरामस्यपरमात्मनः ॥ किंतुदास्यंकरिष्येहंभक्त्याशक्त्यात्वमायया ४८

(यावत्लोकेममकथातावत्असौराज्यंकरोतुइतिउक्त्वालक्ष्मणेनकलशेनहिअंबुआनाय्यतम्) जबतक लोकमें मेरी कथा रामायणादिरहै तबतक यह विभीषण राज्यकरै ऐसाकहि लक्ष्मणसे कलश करिकै जल मँगाय ताहि हाथोंमें लैकरि ४४ (लंकाराज्याधिपत्यार्थंरमापतिःसचिवैःविशेषतःलक्ष्मणेनअभिषेकंकारयामास) लंकाकी राज्यको अधिपति अर्थात् राजाहोने अर्थ लक्ष्मीनाथ श्रीराम सुग्रीवादिमन्त्रिन करिकै विशेष्य अर्थात् प्रथम लक्ष्मण करिकै राज्याभिषेक करावते भये ४५ (सर्वेवानराःभृशम्तुष्टुवुःतेसाधुसाधुइतिसुग्रीवःअपिविभीषणंपरिष्वज्यअथअब्रवीत्) शरण पालताप्रभु की देखि सब वानर अत्यन्त प्रसन्नभये ते सब साधुसाधु ऐसा कहने लगे भाव बहुत अच्छा भया पुनः सुग्रीव भी विभीषण को उरमें लगायकै तब वचन बोले ४६ (विभीषणवयंसर्वेपरमात्मनःरामस्यकिंकराःतत्रभक्त्यारामपरिग्रहात्त्वंमुख्यः) सुग्रीव कहत हे विभीषण हम लोग सब परमात्मा रघुनन्दनके सेवकहैं तिनमें भक्ति करिकै तथा रघुनाथजी के अंगीकार करने ते तुम सबमें मुख्यहौ भाव हम लोगन पर आज्ञाकरने योग्यहौ ४७ (रावणस्यविनाशेत्वंसाहाय्यंकर्तुंअर्हसि) हे विभीषण युद्धमें रघुनन्दन सेना सहित रावणको विनाशकरैंगे तिस व्यापारमें शत्रुकोगुप्तभेद प्रसिद्ध करणादि तुम सहाय करने योग्यहौ (परमात्मनोरामस्यसहायत्वेअहंकियान्किंतुभक्त्याशक्त्यातुअमाययाअहंदास्यंकरिष्ये) विभीषण बोले कि हे सुग्रीव परमात्मा शक्तितेजवीर्य बल ऐश्वर्यवंत रघुनाथजीकी

सहायता हमलोग कौनकरैंगे हांयहकरैंगें कि भक्तिकरिकै जहांतक ह्वै सकी सो शक्ति करिकै पुनः छल त्यागि करिकै हम दास्यता करैंगे ४८ ॥

दशग्रीवेणसंदृष्टःशुकोनाममहासुरः॥संस्थितोह्यंबरेवाक्यंसुग्रीवमिदमब्रवीत् ४९ त्वामाहरावणोराजाभ्रातारंराक्षसाधिपः ॥ महाकुलप्रसूतस्त्वंराजासिवनचारिणाम् ५० ममभ्रातृसमानस्त्वंतवनास्त्यर्थविप्लवः ॥ अहंयदहरंभार्यांराजपुत्रस्य किंतव ५१ किष्किंधांयाहिहरिभिर्लंकाशक्यानदैवतैः ॥ प्राप्तुंकिंमानवैरल्पसत्वैर्वानरयूथपैः ५२ तंप्रापयंतंवचनंतूर्णमुत्प्लुत्यवानराः॥प्रापद्यंततदाक्षिप्रंनिहंतुंदृढमुष्टिभिः ५३ वानरैर्हन्यमानस्तुशुकोराममथाब्रवीत् ॥ नदूतान्घ्नन्तिराजेंद्रवानरान्वारयप्रभो ५४

(रावणेनसंदृष्टः महासुरःशुकःनाम अंबरेसंस्थितःहिइदंवाक्यंसुग्रीवंअब्रवीत्) ताहिसमय रावण को पठावा हुआ दूत महाअसुर शुक है नाम जाको शुक रूपते आकाश में स्थित ह्वै इस प्रकार बचन सुग्रीव प्रति बोला ४९ (राक्षसाधिपः रावणःराजाभ्रातरंत्वांआह त्वंमहाकुलप्रसूतः वनचारिणांराजासि) शुक बोला हे सुग्रीव राक्षसौं को स्वामी रावण लंकाको राजा अपना भाई जानि तुम प्रति यह वचन कहाहै कि तुम उत्तम कुल में उत्पन्न भये पुनः वानरों के राजा हौ ५० (त्वंमम भ्रातृसमानः तवअर्थ विप्लवःनास्ति राजपुत्रस्यभार्यांयत् अहंअहरम्तवकिम्) हमसों वाली सों मित्रता रही ताके भाई सुग्रीव तुम मेरे भाई के समानहौ पुनः तुम्हारा कछु धन नाश मैं नहीं किया पुनः दशरथ राजकुमार रामजीकी भार्या सीता को जो मैं हरि लाया हौं तामें आपका क्या अपराध किया जो तुम चढ़ि आये ५१ (हरिभिःकिष्किंधांयाहि लंकांप्राप्तुंदेवतैः अशक्यानअल्पसत्वैः मानवैः वानरयूथपैःकिं)वानरन करिकै सहित किष्किंधाको लौटि जाउ क्योंकि लंकामें प्राप्त होनेको देवतौंको भी समर्थ नहीं है तब थोरा है पराक्रम जिनमें ऐसे मनुष्यौं करिकै वा वानरयूथपों करिकै कैसे प्राप्त हो सकीहै ५२ (वचनंप्रापयंतंतंवानराः तूर्णंउत्प्लुत्यतदाक्षिप्रंदृढमुष्टिभिः निहंतुंप्रापद्यंत) ऐसावचन सुनाता हुवा जो शुक ताहि देखि वानर शीघ्रही कूदिकै गहिलिये तब तुरतहीं पुष्ट मुष्टिन करिकै वाको मारना प्रारंभकिये ५३ (तुवानरैःहन्यमानः शुकःअथरामंअब्रवीत् राजेंद्रदूतानघ्नंति प्रभोवानरान्वारय) पुनः वानरौं करिकै मारा जाता हुवा शुक तब रघुनन्दन प्रति वचन बोला हे राजेंद्र दूतौं को राजा नहीं मारतेहैं इस न्याय करि हे प्रभो भाव आप महाराज हैं वानरों को मना कीजिये ५४ ॥

रामःश्रुत्वातदावाक्यंशुकस्यपरिदेवितम् ॥ मावधिष्टेतिरामस्तान्वारयामासवानरान् ५५ पुनरंबरमासाद्यशुकःसुग्रीवमब्रवीत् ॥ ब्रूहिराजन्दशग्रीवंकिंवक्ष्यामिव्रजाम्यहम् ५६ ॥ सुग्रीवउवाच ॥ यथावालीममभ्रातातथात्वंराक्षसाधम ॥ हंतव्यस्त्वंमयायत्नात्सपुत्रबलवाहनः ५७ ब्रूहिमेरामचंद्रस्यभार्यांहृत्वाक्वयास्यसि ॥ ततोरामाज्ञयाधृत्वाशुकंबध्वान्वरक्षयत् ५८ शार्दूलोपिततःपूर्वंदृष्ट्वाकपिबलंमहत् ॥ यथावत्कथयामासरावणायसराक्षसः ५९ दीर्घंचिंतापरोभूत्वानिःश्वसन्नासमंदिरे ॥ ततःसमुद्रमावेक्ष्यरामोरक्तांतलोचनः ६० ॥

(परिदेवितंशुकस्यवाक्यंश्रुत्वातदारामः मावधिष्ट इतितान् वानरान् रामःवारयामास) विलाप पूर्वक शुकराक्षस को वचन सुनिकै तव राम बोले हेसुग्रीव, दूत न मारा जाय ऐसा कहि मारने वाले तिन वानरन को रघुनन्दन मना करि दिये कि मति याको मारो ५५ (पुनःशुकःअंबरंप्रासाद्यसुग्रीवंअब्रवित् अहंव्रजामिराजन् ब्रूहिदशग्रीवंकिंवक्ष्यामि)फिरि शुकराक्षस आकाशमें प्राप्तह्वै सुग्रीव प्रति बोला कि मैं जाताहौं हे राजन् कहिये रावण प्रतिक्या कहौंगो ५६ (यथाममभ्राता वालीतथा राक्षसाधम त्वंसपुत्रवलवाहनः त्वंयत्नात्मयाहंतव्यः) सुग्रीव बोलतेभये हेशुक रावणते यह कहना कि जैसे मेरा भाई वाली शत्रु रहा मेरेही वैरते मारागया तैसेही हे राक्षस अधम तूभी शत्रुहै ताते सहित पुत्र सेना वाहन तूभी यत्न पूर्वक हम करिकै बध करिबेयोग्य हसि५७(ब्रूहिमेरामचन्द्रस्यभार्यांहृत्वाकयास्यसि ततःरामाज्ञयाशुकंधृत्वाबध्वाअन्वरक्षयत्) पुनः यह कहेउ कि मेरे स्वामी रामचंद्र की भार्या सीता को हरिकै अब कुशल कहां जाताहै तासमय में रघुनाथ जी विचारे कि जो यह जाय हाल कहै तौ रावण वानरन के मारने की उपाय बांधैतौसिंधु तरने में बाधा होई इति विचारि कहे याको बांधिराखौ तब रघुनन्दन की आज्ञा करिकै शुक को पकरि बांधि रक्षामें राखे ५८ (ततः पूर्वेशार्दूलःअपिमहत् कपिवलंदृष्ट्वासराक्षसः रावणाययथावत्कथयामास) ताके पूर्वहींशार्दूल नामे दूत बड़ी भारी वानरी सेना को देखिगया सो राक्षस जाय रावणके अर्थ जैसी सेना देखिगया तैसीही सुनाता भया ५६ (दीर्घचिंतापरोभूत्वा मंदिरेनिश्वसन्नासततःसमुद्रंभावेक्ष्यरक्तांतलोचनः रामः) बड़ी सेना सुनिकै रावण बड़ी चिंतामें मग्न अर्थात् अकेला एक वानर आय लंका परास्त करि कुशलचलागया अब असंख्यन वानरआवैंगे तौ क्या होगा इसी चिंतामें बेसुधि मंदिर में परम शोचकी बड़ी उसांसैलेतेहुये पारहा इहां ताही समय में समुद्रको विमुखदेखि क्रोधकरिकै लाल ह्वै गये हैं नेत्रजिनके ऐसे रघुनन्दन बोले ६० ॥

पश्यलक्ष्मणदुष्टोऽसौवारिधिर्मामुपागतम् ॥ नाभिनंदतिदुष्टात्मादर्शनार्थममान घ ६१ जानातिमानुषोऽयंमेकिंकरिष्यतिवानरैः ॥ अद्यपश्यमहाबाहोशोषयिष्यामिवारिधिम् ६२ पादेनैवगमिष्यंतिवानराविगतज्वराः ॥ इत्युक्त्वाक्रोधताम्राक्ष आरोपितधनुर्धरः ६३ तूणीराद्बाणमादायकालाग्निसदृशप्रभम् ॥ संधायचाप माकृष्यरामोवाक्यमथाब्रवीत् ६४ पश्यंतुसर्वभूतानिरामस्यशरविक्रमम्॥इदानीं भस्मसात्कुर्य्यांसमुद्रंसारितांपतिम् ६५ ॥

(अनघलक्ष्मणपश्यअसौवारिधिःदुष्टःमांउपागतंममदर्शनार्थंदुष्टात्मानाभिनंदति) हे निःपाप लक्ष्मणदेखिये यह समुद्र दुष्ट मोको आपने समीप प्राप्त जानिकै भी मेरे दर्शनकरनेको दुष्टात्मा आनन्द नहीं करताहै भाव अवतक दर्शनहेत नहीं आया ६१ (जानातिअयंमानुषः वानरैःमेकिंकरिष्यतिमहाबाहोपश्यअद्यवारिधिम्शोषयिष्यामि) समुद्र यहीजानताहै कि ये राम मनुष्य शक्तिहनि वानरौंकरिकै मेरा क्या करैंगे हेमहाबाहो लक्ष्मण देखिये अभी बाणौंकरिकै समुद्रको शोषिलेताहौं ६२ (विगतज्वराःवानराःपादेनएवगमिष्यंति इतिउक्त्वाक्रोधताम्राक्षःधनुर्धरःआरोपितः) सन्तापरहित प्रसन्नमन सब वानर पायन करिकै समुद्रके पारचले जांयगे ऐसा कहि क्रोधकरि लाल ह्वै गये हैं नेत्र जिनके ऐसे धनुषधारी रघुनन्दन धनुष में रोदाचढ़ावतेभये ६३ (कालाग्निसदृशम्बाणम्तूणीरात् आदायसंधायचापंआकृष्यअथरामःवाक्यंअब्रवीत्) प्रलयकालके अग्नितुल्य प्रभाहै जामें ऐसे कराल

बाणको तरकसते निकारि रोदामें संधानकरि धनुषकोखैंचि तब रघुनन्दन वचनको बोले ६४ (रामस्यशरविक्रमस्सर्वभूतानिपश्यंतुसरितांपतिंसमुद्रंइदानीम्भस्मसात्कुर्यां) रामके बाणको पराक्रम सब भूत अर्थात् सुरासुर नर नाग पशु पक्षी आदिदेखें सब नदिनको पति जो समुद्रहै ताहि अभी इसी बाणकरिकै सम्पूर्ण जलभस्मकरताहों६५ ॥

एवंब्रुवतिरामेतुसशैलवनकानना ॥ चचालवसुधाद्यौश्चदिशश्चतमसावृताः६६ चुक्षुभेसागरोवेलांभयाद्योजनमत्यगात् ॥ तिमिनक्रझषामीनाःप्रतप्ताःपरितत्रसुः ६७ एतस्मिन्नंतरेसाक्षात्सागरोदिव्यरूपधृक् ॥ दिव्याभरणसंपन्नःस्वभासाभासयन्दिशः ६८ स्वांतस्थदिव्यरत्नानिकराभ्यांपरिगृह्यसः ॥ पादयोःपुरतःक्षिप्त्वा रामस्योपायनंबहु ६९ दंडवत्प्रणिपत्याहरामंरक्तांतलोचनम् ॥ त्राहित्राहिजगन्नाथरामत्रयलोक्यरक्षक ७० जडोऽहंरामतेसृष्टःसृजतानिखिलंजगत् ॥ स्वभावमन्यथाकर्तुंकःशक्तोदेवनिर्मितम् ७१ ॥

(एवंरामेब्रुवतितुसशैलवनकाननावसुधाचचालचद्यौःचदिशःतमसावृताः) इस प्रकारको वचन रघुनन्दनकेकहतसंते सहित पर्वत जल वन सब पृथ्वी हालिउठी पुनः आकाश अरु सब दिशामें अन्धकारछायगया कछु देखातानहीं ६६ (सागरःचुक्षुभेभयात्योजनंवेलांअत्यगात्प्रतप्ताःतिमिनक्रझषामीनापरितत्रसुः) बाणके तेजाग्निकरिकै समुद्र क्षोभको प्राप्तभया भाव जलखौलिकै जलनेलगा डरते योजनभरि किनारत्यागि जलहटिगया जलकी उष्णताते नाकादि अन्य जलचर तिमिझषादि मत्स्य सब डरिउठे ६७ (एतस्मिन्अंतरेसागरःसाक्षात्दिव्यरूपधृक् दिव्यआभरणसंपन्नःस्वभासादिशःभासयन्) ताही समयके बीचमें समुद्र प्रसिद्ध दिव्यरूपधरि दिव्यकिरीट कुण्डलमाला केयूरादि भूषण भूषित सर्वांग अपनी प्रभाकरिकै सब दिशा प्रकाशकरतसंते ६८ (स्वअन्तस्थदिव्यरत्नानिबहुउपायनंकराभ्यांपरिगृह्यसःरामस्यपादयोःपुरतःक्षिप्त्वा) अपने भीतर रहने वाले मूँगा मोती हीरादि दिव्य रत्न बहुत से भेट हेत हेम थार भरि दोऊ हाथोंकरिकै लिहेआय समुद्र रघुनन्दन के पायनके आगे धरिकै ६९ (दण्डवत्प्रणिपत्यरक्तांतलोचनंरामं आह त्रयलोक्यरक्षकजगन्नाथ रामत्राहित्राहि) दंड की नाईं भूमि में गिरि प्रणाम करि पुनः क्रोधकरि लाल भये नेत्र जिनके ऐसे रघुनन्दनप्रति समुद्र बोला हे तीनिहुं लोकनके रक्षा करनहार हे जगत् के नाथ राम बारंबार मेरी रक्षा करौ ७० (रामतेसृजतानिखिलंजगत अहंजड़सृष्टःदेवनिर्मितंस्वभावंअन्यथाकर्तुंकःशक्तः) हेरघुनाथजी आप जब रचा सब जगत् तबै हमको जड़स्वभाव रचिदिया हेदेव आपको बनावाहुवा जड़स्वभाव ताको अन्यथा औरप्रकार करि देने को दूसरा कौन समर्थ है ७१ ॥

स्थूलानिपंचभूतानिजड़ान्येवस्वभावतः ॥ सृष्टानिभवतैतानित्वदाज्ञांलंघयंति न७२ तामसादहमोरामभूतानिप्रभवंतिहि ॥ कारणानुगमातेषांजडत्वंतामसंस्वतः ७३ निर्गुणस्त्वंनिराकारोयदामायागुणान्प्रभो ॥ लीलयांगीकरोषित्वंतदावैराजनामवान् ७४ गुणात्मनोविराजश्चसत्वाद्देवाबभूविरे ॥ रजोगुणात्प्रजेशाद्यामन्योर्भूतपतिस्तव ७५ त्वामहंमाययाच्छन्नंलीलयामानुषाकृतिं ॥ जड़बुद्धिजडो

मूर्ख कथंजानामिनिर्गुणम् ७६ दंडएवहिमूर्खाणांसन्मार्गप्रापकःप्रभो ॥ भूतानाम मरश्रेष्ठपशूनांलगुडोयथा ७७ ॥

(स्थूलानिपंचभूतानिस्वभावतःजडानिएवभवतासृष्टानिएतानित्वत्आज्ञांनलंघयंति) हे रघुनाथ-जी आकाश वायु अग्नि जल भूमि ये स्थूल पांचौभूत सहज स्वभावहीते जड़ हैं पुनः आपही करिकै, ऐसे रचेगये ताते ये पंचभूत आपकी आज्ञा नहीं उल्लंघतेहैं भाव सदा जड़ै स्वभावबने हैं ७२ (हेराम तामसात्अहमः भूतानिप्रभवंतिहितामसंस्वतःकारणानुगमातेपांजडत्वं) हे रघुनाथ जी आपकोरचा जो तामस अहंकार है ताही सो पांचौभूत उत्पन्नभये तहां तामस सहज स्वभावहीजडहै तिसकारणके, गुण हमलोग कार्योंमें आये ताकी जड़ता हमलोगनमेंहै यथा पिताकेगुणपुत्रोंमें तथा तामसकी जडता हमलोगोंमेंहै ७३ (प्रभोत्वंनिर्गुणःनिराकारःयदालीलयामायागुणान्अंगीकरोपितदात्ववैराजनामवान्) हेप्रभो आप तमादिगुणोंतेपर आकार रहितहौ परंतु जबलीलाकरिकै मायाकेगुणोंको अंगीकारकरतेहो तब आप वैराजनामवंतहोतेहौ ७४ (विराजःगुणात्मनःसत्वात्देवावभूविरेचरजोगुणात्प्रजेशाद्यातव मन्योःभूतपतिः) विराजगुणनमय सगुणरूपजो आप तिनके सतोगुणते सनकादि शांतस्वभाव वाले देवता भये पुनः रजो गुणते प्रजापति मनु इन्द्रादि भये आपके क्रोधते रुद्रभये ७५ (लीलयामा नुषाकृतिं माययाछन्नंनिर्गुणंत्वांअहंजडबुद्धिः जडः मूर्खःकथंजानामि) माधुर्य लीलाकरिकै मनुष्य कैसा आकार राजकुमार बने अरु माया करिकै ढाके हुये निर्गुणरूपको जिस रूपकी लीलादेखि ज्ञानी भूलि जाते हैं ऐसे आपको जानिबे में मैं कैसा हों कारणरूप तामसमय ताते जडबुद्धी सूक्ष्म रूपरसमय विषय सो भी जड़ स्थूलरूप जल मूर्ख अर्थात् ऊंचापद त्यागि नीचे को ढरताहौं सो आपको कैसे जानौं ७६ (प्रभोमूर्खाणांसन्मार्गप्रापकःदंडएवहिभूतानांअमरश्रेष्ठयथापशूनांलगुडः) हे प्रभो मूर्खन को सत्मार्ग मे लगाने वाला दंडहीहै हे भूतमात्र के श्रेष्ठ देवजैसे पशुनको लाठी ७७ ॥

शरणंतेव्रजामीशशरण्यंभक्तवत्सल ॥ अभयदेहिमेरामलंकामार्गंददामिते ७८ रामउवाच ॥ अमोघोयंमहाबाणःकस्मिन्देशेनिपात्यताम् ॥ लक्ष्यंदर्शयमेशीघ्रं बाणस्यामोघपातिनः ७९ रामस्यवचनंश्रुत्वाकरेदृष्ट्वामहाशरम् ॥ महोदधिर्म हातेजाराघवंवाक्यमब्रवीत् ८० रामोत्तरप्रदेशेतुद्रुमकुल्यइतिश्रुतः ॥ प्रदेशस्त त्रबहवःपापात्मानोदिवानिशम् ८१ बाधंतेमांरघुश्रेष्ठतत्रतेपात्यतांशरः ॥ रामे णसृष्टोबाणस्तुक्षणादाभीरमण्डलम् ८२ हत्वापुनःसमागत्यतूणीरेपूर्ववत्स्थितः ॥ ततोऽब्रवीद्रघुश्रेष्ठंसागरोविनयान्वितः ८३ ॥

(ईशभक्तवत्सलशरण्यंतेशरणं व्रजामिराममेअभयंदेहितेलंकामार्गंददामि) हे ईश भक्तन पर प्रीति करने वाले शरणागतपर रक्षा करने वाले आपकी शरण को प्राप्त होता हौं हे रघुनंदन मोको अभयदीजे आपको लंका जाने हेत मार्ग मैं देताहौं ७८ (अयंमहाबाणःअमोघःकस्मिन्देशे निपात्य तांबाणस्यअमोघपातिनःलक्ष्यंमे शीघ्रंदर्शय) रघुनंदन बोले हे समुद्र तुमको तौ अभय दिया परंतु मेरा यह महाबाण अमोघ है अर्थात् वृथा नहीं जायगा ताको छाड़ि किस देशमें किसको नाशकरें ताते बाणकी अमोघता मिटाने हेत निशाना मोको शीघ्रही देखावो ७९ (रामस्यवचनंश्रुत्वामहा-शरंकरेदृष्ट्वा महातेजामहोदधिः राघवंवाक्यंअब्रवीत्) रघुनंदन के वचन सुनि महातेजवन्त बाण

हाथों में देखि महातेज वंत समुद्र रघुनंदन प्रति वचन बोला ८० (रामउत्तरप्रदेशेतुद्रुमकुल्यइति श्रुतःतत्रप्रदेशःपापात्मानःवहवःदिवानिशं) सिंधु बोला हे रघुनाथ जी मेरे उत्तर तट भाग में पुनः द्रुम कुल्यनामकरिकै प्रसिद्ध स्थानहै तिस भाग में महापापी आभीर बहुत से वास किहे हैं ते दिनो राति जीवहिंसा आदि व्यापार द्वारा ८१ (मांवाधंतेरघुश्रेष्ठतत्रतेशरःपात्यताम् रामेणसृष्टःवाणःतु आभीरमंडलंक्षणात्) मोको बाधाकरते हैं हे रघुवंशनाथ तिन आभीरों पर अपना वाण छांड़िये इतिसिंधुको वचन सुनिकै रघुनंदन ने छोड़ा जो वाण सो उहां जाय पुनः आभीर मंडलको क्षणै में ८२ (हत्वापुनःसमागत्यपूर्ववत्तूणीरेवस्थितः ततःविनयान्वितःसागरःरघुश्रेष्ठंअब्रवीत्) अभीरन को नाश करि वाण पुनः लौटि कै पूर्ववत् तरकश में स्थित भया तदनंतर नम्रता युक्त समुद्र रघुनंदन प्रति बोला ८३ ॥

नलःसेतुंकरोत्वस्मिन्जलेमेविश्वकर्मणः॥सुतोधीमान्समर्थोऽस्मिन्कार्येलब्धवरो हरिः ८४ कीर्तिंजानंतुतेलोकासर्वलोकमलापहाम् ॥ इत्युक्काराघवंनत्वाययौसिंधुरदृश्यताम् ८५ ततोरामस्तुसुग्रीवलक्ष्मणाभ्यांसमन्वितः॥नलमाज्ञापयच्छीघ्रं वानरैःसेतुबंधने८६ ततोतिहृष्टःप्लवगेंद्रयूथपैर्महानगेन्द्रप्रतिमैर्युतोनलः॥ बबन्ध सेतुंशतयोजनायतंसुविस्तृतंपर्वतपादपैर्दृढम् ८७॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्धकाण्डेतृतीयःसर्गः ॥ ३ ॥

(विश्वकर्मणःसुतःधीमान्लब्धवरःअस्मिन्कार्येसमर्थःहरिर्नलःमेअस्मिन्जलेसेतुंकरोतु) समुद्रबोला हे रघुनाथजी विश्वकर्माको पुत्र वड़ा बुद्धिमान् बाल अवस्था में ब्रह्मा करिकै वरदान पाया है कितेरे करस्पर्श पाषाण जलमें न बूड़ैंगे ताते इसकार्य में समर्थ वानर जो नलहै सो मेरे इस जल में सेतुरचना करै ८४ (सर्वलोकमलापहाम्तेकीर्तिंलोकाःजानंतुइतिउक्काराघवंनत्वासिंधुःअदृश्यतांययौ) हे रघुनाथजी यथा आपके औरभी उत्तम चरितहैं तैसे मेरेमेंसेतु बांधना भी एक चरित्र है तामें सब लोकन के पापहरन हारी आपकी कीर्ति होइगी ताको सबलोक जानैं ऐसाकहि रघुनंदन को प्रणाम करिकै विदामांगि समुद्र जो प्रसिद्ध रूप किहे रहासो अदृश्य ह्वै जाताभया ८५ (ततः सुग्रीवलक्ष्मणाभ्यांसमन्वितःतुरामःशीघ्रंसेतुबंधने वानरैःनलंआज्ञापयत्) समुद्र के गये पीछे सुग्रीव लक्ष्मण करिकै सहित पुनः रघुनन्दन शीघ्रहीसेतु बांधने हेत अपर वानरन सहित नलको आज्ञा दियेभाव सब वानर पर्वत वृक्ष लावैं नल सेतुबांधैं ८६ (ततःमहानगेंद्रप्रतिमैःप्लवगेंद्रयूथपैःयुतःनलः अतिहृष्टःपर्वतपादपैःशतयोजनायतंसुविस्तृतंदृढंसेतुंबबंध) तदनन्तर महापर्वत के समान शरीर हैं जिनके ऐसे बड़ेबड़े बली यूथपती वानरों करिकै सहित नल अत्यन्त प्रसन्नमन पर्वतन वृक्षों करिकै सौयोजन लंबा सुन्दर दशयोजन चौड़ा पुष्ट सेतुबाँधते भये ८७ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमासियवल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचिते अध्यात्मभूषणेयुद्धकाण्डेतृतीयःप्रकाशः ३ ॥

सेतुमारंभमाणस्तुतत्ररामेश्वरंशिवम् ॥ संस्थाप्यपूजयित्वाह रामोलोकहिताय च १ प्रणमेत्सेतुबंधंयोदृष्ट्वारामेश्वरंशिवम् ॥ ब्रह्महत्यादिपापेभ्योमुच्यतेमदनु

ग्रहात् २ सेतुबंधेनरःस्नात्वादृष्ट्वारामेश्वरंहरम् ॥ संकल्पनियतोभूत्वागत्वावारा णसींनरः ३ आनीयगंगासलिलंरामेशमभिषिच्यच ॥ समुद्रेक्षिप्ततद्भारोब्रह्मप्रा प्नोत्यसंशयः ४ कृतानिप्रथमेनाह्नायोजनानिचतुर्दश ॥ द्वितीयेनतथाचाह्नायो जनानितुविंशतिः ५ तृतीयेनतथाचाह्नायोजनान्येकविंशतिः॥ चतुर्थेनतथाचा ह्नाद्वाविंशतिरितिश्रुतम् ६ ॥

सवैया ॥ शिवपूजन सेतुबँधायचले कपिसेन सलंक समीपगये। उतरेप्रभुदूत छुडायतहीं गतरावण पै शुकशिशनये॥ प्रभु प्रेरितहाल सुनायपुनः वरणेकपि यूथपयूथ चये। नवचौविधिगंभुसहायप्रभूवचि हौ रघुनाथहितीवदये (सेतुंमारंभमाणःतुरामेश्वरंशिवंतत्रसंस्थाप्यपूजयित्वाचलोकहितायरामःआह) शिवजी बोले हे गिरिजा सेतुरचना प्रारंभकरि पुनः रामेश्वरनामे शिवतहांपर विधिवत्स्थापि पूजन करिकै पुनः लोक के कल्याण अर्थ रघुनाथजी बोलते भये १ (यःरामेश्वरंशिवंदृष्ट्वा सेतुबंधंप्रणमे त्मत्अनुग्रहात्ब्रह्महत्यादिपापेभ्यःमुच्यते) जो जन रामेश्वर शिवको दर्शन करी पुनः मेराकिया हुआ जो सेतुबंध ताको प्रणाम करी सो ब्रह्महत्यादि महापापों ते छूटि जायगो २ (सेतुबंधेस्नात्वा नरःरामेश्वरंहरंदृष्ट्वासंकल्पनियत.भूत्वानरःवाराणसींगत्वा) सेतुबंधमें स्नान करिके नररामेश्वर महादेव का दर्शन करि जल चढ़ावने की संकल्पकरि नियम सहित नर काशी को जायके ३ (गंगा सलिलंआनीयरामेशंअभिषिच्यचतत्भारःसमुद्रेक्षिप्तब्रह्मप्राप्नोतिअसंशयः) काशीते गंगाजल आनि रामेश्वरको स्नानकरायभींसा कांवरि आदि जो भार सो समुद्र में डारि ब्रह्मको प्राप्त होई यामें संशय नहीं है ४ (प्रथमेनआह्नाचतुर्दशयोजनानिकृतानिचतथाद्वितीयेनअह्नाविंशतियोजनानितु) पहिले दिन चौदह योजनसेतु बनापुनः तैसे दूसरेदिन बीसयोजन पुनःबना ५ (चतथातृतीयेनअ ह्नाएकविंशति.योजनानिचतथाचतुर्थेनअह्नाद्वाविंशतिःइतिश्रुतं) पुनःतैसे तीसरेदिन इक्कीसयोजन बना पुनः तैसे चौथेदिन बाइसयोजन बना ऐसा सुनिपरा है ६ ॥

पंचमेनत्रयोविंशद्योजनानिसमंततः ॥ बबंधसागरेसेतुंनलोवानरसत्तमः ७ तेनैव जग्मुःकपयोयोजनानांशतंद्रुतम् ॥ असंख्याताःसुवेलाद्रिंरुरुधुःप्लवगोत्तमाः ८ आरुह्यमारुतिंरामोलक्ष्मणोप्यंगदंतथा ॥ ददृशूराघवोलंकामारुरोहाचलंमह त् ९ दृष्ट्वालंकांसुविस्तीर्णांनानाचित्रध्वजाकुलाम् ॥ चित्रप्रासादसंबाधांस्वर्ण प्राकारतोरणाम् १० परिखाभिःशतघ्नीभिःसंक्रमैश्चविराजिताम् ॥ प्रासादोपरि विस्तीर्णप्रदेशेदशकंधरः ११ मंत्रिभिःसहितोवीरैःकिरीटदशकोज्ज्वलः ॥ नीला द्रिशिखराकारःकालमेघसमप्रभः १२ रत्नदंडैःसितच्छत्रैरनेकैःपरिशोभितः ॥ एतस्मिन्नंतरेवक्षोमुक्तोरामेणवैशुकः १३ ॥

(पंचमेनत्रयोविंशत्योजनानिवानरसत्तमःनलःसमंततःसागरेसेतुंअबंध)पँचये दिन तेइसयोजन बना इसीप्रकार वानरन में उत्तमनल सम्पूर्ण समुद्र सौ योजन में सेतु बांधतेभये ७ (तेनएवकपयः शतंयोजनानांद्रुतंजग्मुःअसंख्याताः प्लवगोत्तमाःसुवेलाद्रिंरुरुधुः) तिसीसेतु मार्गकरिकै सबवानर सौ योजन समुद्र के पारशीघ्रही जातेभये असंख्यन वानरोत्तम समुद्रपारतट पै जो सुवेलपर्वत ताको

रूँधि लेतेभये ८ (मारुतिंरामःआरुह्यतथाअंगदंलक्ष्मणःअपिलंकांदिदृक्षूराघवःमहत्अचलंआरुरोह) हनुमान् पर रघुनंदन सवार तैसेही अंगदपर लक्ष्मण सवार लंकाको देखने हेत दोऊ जने बड़ेभारी सुवेल पर्वतपर चढ़िजाते भये६(सुविस्तीर्णांस्वर्णप्राकारतोरणामचित्रप्रासादसंबाधाम्नानाचित्रध्वजाकुलाम्लंकांदृष्ट्वा) सुंदरबड़े विस्तार में सोनेमय कोट सोनेके फाटक सोने के मणिमय चित्र मन्दिर समूह अनेकरंग रेशमीजरतारी समूहध्वजा शोभित ऐसी लंकापुरी को देखतेभये १० (परिखाभिःचशतघ्नीभिःसंक्रमैःविराजिताम् प्रासादउपरिविस्तीर्णप्रदेशेदशकंधरः) खावां करिकै धुसबुर्जनपर चढ़ी तोपन करिकै भीतरजाने की मार्गें विषम शोभित हैं बड़ेभारी मन्दिरके ऊपर विस्तार सहित बनाहुआ धौरहर तामें रावण कैसा बैठा है ११ (मंत्रिभिःवीरैःसहितः नीलाद्रिशिखराकारः कालमेघसमप्रभःकिरीटदशकोज्ज्वलः) मंत्री अरुवीरन करिकै सहित नीलपर्वतके शिखरके आकार शरीर काले मेघोंसम तनकी प्रभाशीशनपर दशों किरीट उज्ज्वल चमकि रहे हैं १२ (रत्नदंडैः अनेकैःसितच्छत्रैःपरिशोभितःएतस्मिन्अंतरेशुकःवैबद्धःरामेणमुक्तः) रत्नजटित दंड जिनमें ऐसे अनेकन श्वेत छत्रों करिकै शोभित रावण को देखि ताहीसमयमें बांधाहुआ शुक राक्षस ताको रघुनंदन ने,छुड़ाय दिया १३ ॥

वानरैस्ताडितःसम्यक्दशाननमुपागतः ॥ प्रहसन्रावणःप्राह पीडितःकिंपरैःशुक १४ रावणस्यवचःश्रुत्वाशुकोवचनमब्रवीत् ॥ सागरस्योत्तरेतीरेऽब्रुवंतेवचनं यथा ॥ ततोउत्प्लुत्यकपयोगृहीत्वामांक्षणात्ततः १५ मुष्टिभिर्नखदंतैश्चहंतुंलोप्तुंप्रचक्रमुः ॥ ततोमांरामरक्षेतिक्रोशंतंरघुपुंगवः १६ विसृज्यतामितिप्राहविसृष्टोहं कपीश्वरैः॥ततोहमागतोभीत्वादृष्ट्वातद्वानरंबलम् १७ राक्षसानांबलौघस्यवानरेंद्र बलस्यच ॥ नैतयोर्विद्यतेसंधिर्देवदानवयोरिव १८ पुरप्राकारमायांतिक्षिप्रमेकतरंकुरु ॥ सीतांवास्मैप्रयच्छाशुयुद्धंवादीयतांप्रभो १९ ॥

(सम्यक्वानरैःताड़ितःदशाननंउपागतःरावणःप्रहसन्प्राहशुकपरैःपीडितःकिं) सब वानरोंकरिकै मारा गयाहुआ शुकछूटेपर रावणके समीप गया उदास देखि रावण हँसतसंते बोला हेशुक तू शत्रुन करिमारा गया क्या १४ (रावणस्यवचःश्रुत्वाशुकःवचनंअब्रवीत् सागरस्यउत्तरेतीरेतेवचनंयथाऽब्रुवन्ततःकपयःक्षणात्उत्प्लुत्यमांगृहीत्वाततः) रावण के कहे वचन सुनिकै शुकराक्षस रावण प्रतिवचन बोला हे राजन् समुद्र के उत्तरतीर में सुग्रीव प्रति आपको वचन मैं जैसेही सुनावने लगा तैसेही वानर क्षणभरमें कूदि मोको पकरि तदनन्तर१५(मुष्टिभिःचनखदंतैःहंतुंलोप्तुंप्रचक्रमुःततःराममारक्षइतिक्रोशंतंरघुपुंगवः) मुष्टिकनकरिकै पुनः नखोंदांतों करिकै मोको मारडालने हेत अंग खंडन करनेलगे तदनन्तर मैं पुकारयौं हे राम मेरीरक्षाकरौ इसप्रकारमोको पुकारतेसुनिकै रघुवंशनाथदया करिबोले १६ (विसृज्यतांइतिप्राहअहंकपीश्वरैःविसृष्टःततःअहंतत्वानरंबलंदृष्ट्वाभीत्वाआगतः) रघुनंदन बोले कि इसको छांड़िदेवो ऐसा कहे तब मैं वानरों करि छूटा तदनंतर मैं तिन वानरों की सेना को देखताहुआ सडर आय आपके समीप प्राप्तभया १७ (राक्षसानांबलौघस्यचवानरेंद्रबलस्यएतयोःसंधिःनविद्यतेदेवदानवयोःइव) हे राजन् राक्षसों की सेनासमूहक पुनःउत्तम वानरों की सेना समूहक इनदोऊ को मिलाप कभीनहीं ह्वै सकाहै कौनभांति देवता दैत्यों की नाईं अचल विरोध है १८ (पुरप्राकारंक्षिप्रंआयांतिप्रभोएकतरंकुरुवाअस्मैसीतांआशुप्रयच्छवायुद्धंदीयतां) पुरकोट

के ऊपर को वानर शीघ्रही आयजाने चाहते हैं ताते हे प्रभो दोमें एकबात करौ कितौराम के अर्थ सीताको शीघ्रही देउ अथवा युद्धदेवो अन्यभांति संधिनहीं होनहार है १९ ॥

मामाहरामस्त्वंब्रूहि रावणंमद्वचःशुक ॥ यद्बलंचसमाश्रित्य सीतांमेहृतवानसि २० तद्दर्शययथाकामंससैन्यःसहबांधवः ॥ श्वःकालेनगरींलंकांसप्राकारांसतोरणाम् २१ राक्षसंचबलंपश्यशरैर्विध्वंसितेमया ॥ घोररोषमहंमोक्ष्येबलंधारयरावण २२ इत्युक्त्वोपररामाथरामःकमललोचनः ॥ एकस्थानगतायत्रचत्वारःपुरुषर्षभाः २३ श्रीरामोलक्ष्मणश्चैवसुग्रीवश्चविभीषणः ॥ एतेएवसमर्थास्तेलंकांनाशयितुंप्रभो २४ उत्पाट्यभस्मीकरणेसर्वेतिष्ठंतुवानराः॥तस्ययादृग्बलंदृष्टंरूपंप्रहरणानिच २५ वधिष्यंतिपुरंसर्वंएकस्तिष्ठंतुतेत्रयः ॥ पश्यवानरसेनांतामसंख्यातांप्रपूरिताम् २६ ॥

(रामःमांआहशुकमत्वचःत्वंरावणंब्रूहियत्बलंसमाश्रित्यमेसीतांहृतवानसि) पुनः राममोप्रति बोले कि हे शुक मेरा वचन तुम रावणप्रति ऐसा कहेउ कि जौने बलकेभरोसेते मेरी सीताको हरि लायो है २० (ससैन्यःसहबांधवःयथाकामंतत्दर्शयश्वःकालेसप्राकारांसतोरणाम्नगरींलंकाम्) स-हित सेनासहित भाइन जैसी इच्छाहोइ सो बलदेखावो कल्हि प्रातःकालही में सहित मन्दिर सहित द्वारनगरी लंकाको २१ (राक्षसंचबलंमयाशरैः विध्वंसितंपश्यरावणबलंधारयअहंघोररोषंमोक्ष्ये) वीरबली राक्षसोंको राक्षसी सेनाको मेरे बाणोंकरिकै नाशकोप्राप्तदेखैगो ताते हे रावण तू अपनाबल सँभारि धारणकरु मैं अपने घोररोषको छोड़ताहों २२ (इतिउक्त्वाअथकमललोचनः रामःउपरराम चत्वारःपुरुषर्षभाःयत्रएकस्थानगताः) ऐसा कहिकै तब कमलनयनराम चुपहोजातेभये पुनः हेरावण चारिहुपुरुषोत्तम जहां एकस्थानपरप्राप्तहोवैं २३ (श्रीरामःचएवलक्ष्मणःसुग्रीवःचविभीषणः हे प्रभो तेलंकांनाशयितुंएतेएवसमर्थाः) श्रीराम पुनः लक्ष्मण सुग्रीव पुनः विभीषण हे प्रभो तुम्हारीलंकाको नाशकरिवेको ये चारिहीजने समर्थ कैसे हैं २४ (उत्पाट्यभस्मीकरणेवानराःसर्वेतिष्ठंतुतस्ययादृग्बलंरूपंचप्रहरणानिदृष्टं) लंकाकोउखारि भस्मकरिदेवेको चारिहीसमर्थ हैं वानर सब बैठेहीरहैं तिन रामको जिस प्रकारको बल स्वरूप उनके हथियार जैसे मैंनेदेखा है २५ (एकःसर्वंपुरंवधिष्यंतितेत्रयःतिष्ठंतु वानरसेनांतांपश्यअसंख्यातांप्रपूरिताम्) ताते निश्चयहोता है कि एक रामही सब लंकापुरको नाशकरनेकोसमर्थ हैं अरु लक्ष्मण सुग्रीव विभीषणते तीनिहूँ बैठेहीरहैं पुनः हे राजन् अब वानरीसेना जो आई है ताहिदेखिये असंख्यनभाव जिनकी गिनतीनहीं है सर्वत्र भरिपूरिरहेहैं २६ ॥

गर्जंतिवानरास्तत्रपश्यपर्वतसन्निभाः ॥ नशक्यास्तेगणयितुं प्राधान्येनब्रवीमिते २७ एषयोभिमुखोलंकांनदन्तिष्ठतिवानरः ॥ यूथपानांसहस्राणांशतेनपरिवारितः २८ सुग्रीवसेनाधिपतिर्नीलोनामाग्निनंदनः ॥ एषपर्वतशृंगाभःपद्मकिंजल्कसन्निभः २९ स्फोटयत्यभिसंरब्धोलांगूलंचपुनःपुनः ॥ युवराजोंगदोनामवालिपुत्रोऽतिवीर्यवान् ३० येनदृष्टाजनकजारामस्यातीववल्लभा ॥ हनुमानेष

विख्यातोहतोयेनतवात्मजः ३१ श्वेतोरजतसंकाशोमहाबुद्धिपराक्रमः ॥ तूर्णंसु ग्रीवमागम्यपुनर्गच्छतिवानरः ३२ ॥

(पश्यपर्वतसन्निभाःवानराःतत्रगर्जंतितेगणयितुंनशक्याःप्राधान्येनतेब्रवीमि) देखिये पर्वतकेतुल्य वानर तहांपर गर्जिरहे हैं ते गननेको अशक्य हैं भाव नहीं गनिवेयोग्य हैं तिनमें मुख्यकरिकै मैं तुम प्रतिकहताहौं २७ (एषवानरःयःलंकांअभिमुखः नदन्तिष्ठति शतेनसहस्राणांयूथपानांपरिवारितः) यह वानर जो लंकाके संमुखगर्जताहुआ बैठाहै अरु सौ हजार यूथपती वानरों करिकै परिवेष्टित है २८ (नीलःनामअग्निनन्दनःसुग्रीवसेनाधिपतिः) नीलनामे अग्निकोपुत्र सुग्रीवको सेनापती है (एषपद्मकिंजल्कसन्निभःपर्वतशृंगाभः) यह जो कमलकी केसर सम तनकीदीप्ति पर्वत शृंगतुल्य भारी शरीर है २९ (अभिसंरब्धःपुनःपुनःलांगूलंचस्फोटयाति वालिपुत्रःअतिवीर्यवान्अंगदःनामयुवराजः) क्रोधकरिकै जो वारंवार लांगूलको भूमिमें पटकिरहाहै यह वालीकोपुत्र अत्यन्त पराक्रम युक्त अंगद नामे युवराजहै ३० (येनजनकजादृष्टायेनतवआत्मजःहतःरामस्यअतीववल्लभाएषहनुमान् विख्यातः) जिसने समुद्रनांघि रामकीभार्या जनकपुत्री को देखा जिसने वन उजारि तुम्हारेपुत्र अक्षकुमारको मारा रामको अत्यन्तप्रिय सेवक है यह हनुमान् नामकरिकै लोकमें प्रसिद्ध हैं ३१ (रजतसंकाशःवानरमहाबुद्धिपराक्रमःतूर्णंसुग्रीवंआगम्यपुनःगच्छातिश्वेतः) जिसकी चांदीके तुल्य देहकीकांति है सो वानर महाबुद्धिवंत महापराक्रमी जो शीघ्रही सुग्रीवके समीप आवताहै पुनः लौटिजाता है याकोश्वेतनामहै ३२ ॥

यस्त्वेषसिंहसंकाशःपश्यत्यतुलविक्रमः ॥ रंभोनाममहासत्वो लंकांनाशयितुंक्षमः ३३ एषपश्यतिवैलंकांदिधक्षन्निववानरः ॥ शरभोनामराजेंद्रकोटियूथपनायकः ३४ पनसश्चमहावीर्योमैंदश्चद्विविदस्तथा ॥ नलश्चसेतुकर्तासौविश्वकर्मसुतोबली ३५ वानराणांवर्णनेवासंख्यानेवाकईश्वरः॥शूराःसर्वेमहाकायाःसर्वेयुद्धाभिकांक्षिणः ३६ शक्ताःसर्वेचूर्णयितुंलंकांरक्षोगणैःसह॥ एतेषांबलसंख्यानंप्रत्येकंवच्मितेशृणु ३७ एषांकोटिसहस्राणिनवपंचचसप्तच ॥ तथाशंखसहस्राणितथार्बुदशतानिच ३८ सुग्रीवसचिवानांतेबलमेतत्प्रकीर्तितम् ॥ अन्येषांतुबलंनाहंवक्तुंशक्तोऽस्मिरावण ३९ ॥

(तुएषयःसिंहसंकाशःअतुल विक्रमःपश्यति महासत्वःरंभःनामलंकांनाशयितुंक्षमः) पुनःयहजो वानर सिंह तुल्य अतुल पराक्रमी देखरहा है महावीर्यवंत याको रंभ नाम लंका नाश करनेको समर्थ है३३ (राजेंद्रएषवानरः लंकांवैदिधक्षन्इवपश्यति कोटियूथपनायकः शरभःनाम) हेराजेंद्र यहवानर मानों लंका को निश्चय करिभस्म करि देने चाहताहै ऐसा देखि रहाहै कोटि यूथप तिनको मालिक याको शरभ नामहै ३४ (महावीर्यःपनसःचमैंदः चतथाद्विविदः चअसौनलः विश्वकर्मसुतः बली सेतुकर्ता) महा वीर्यवंत पनस पुनः मैंदतैसे द्विविद पुनः ये नल हैं विश्वकर्मा के पुत्र बड़े वली सेतु इसीने किया है ३५ (वानराणां वर्णनेवासंख्यानेवाकईश्वरः सर्वेमहाकायाः शूराःसर्वेयुद्धाभिकांक्षिणः) वानरों को वर्णन करने को वा गनती करने को कौन समर्थ है सब बड़ेभारी शरीर वाले शूर तथा सर्व युद्ध की इच्छा किहे हैं ३६ (रक्षोगणैःसहलंकांचूर्णयितुं सर्वेशक्ताः एतेषांप्रत्येकं बल

संख्यानंतेवच्मिश्रृणु) राक्षसन सहित लंका को मर्दि चूर्ण करिबे को सब समर्थ हैं इन सबके एक एकके सेना की संख्या आप प्रति कहता हौं सुनिये ३७ इनमेंनीलकेकरोरि अंगदके हजार करोरि हनुमान्के नवकरोरि श्वेतके पांचकरोरि रंभके सातकरोरि शरभके एकशंख पनसके हजारशंख तैसेंमैंद के हजारशंख द्विविदके एकअर्बनलके सौअर्ब ३८ (सुग्रीवसचिवानांते एतत्बलंप्रकीर्तितं रावणतु अन्येषां बलंवक्तुअहंनशक्तःअस्मि) सुग्रीव के दशौ मंत्रिनके यह सेना की गनती है हे रावण पुनः जामवंत केशरी सुषेण गज गवय गवाक्षादि औरन की सेना को कहनेमें मैं समर्थ नहींहौं अर्थात् असंख्य है ३६ ॥

रामोनमानुषःसाक्षादादिनारायणःपरः ॥ सीतासाक्षाज्जगद्धेतुश्चिच्छक्तिजगदात्मिका४०ताभ्यामेवसमुत्पन्नंजगत्स्थावरजंगमम् ॥ तस्माद्रामश्चसीताचजगतस्तस्थुषश्चतौ४१पितरौपृथिवीपालतयोर्वैरीकथंभवेत् ॥अजानतात्वयानीताजगन्मातैवजानकी ४२ क्षणनाशिनिसंसारेशरीरेक्षणभंगुरे । पंचभूतात्मकेराजन् चतुर्विंशतितत्त्वके ४३ मलमांसास्थिदुर्गंधभूयिष्ठेऽहंकृतालये ॥ कैवास्थाव्यतिरिक्तस्यकायेतवजडात्मके ४३ यत्कृतेब्रह्महत्यादिपातकानिकृतानिते ॥ भोगभोक्तातुयादेहःसदेहोत्रपतिष्यति ४५ ॥

(रामःमानुषःनपरःसाक्षात्आदिनारायणःसीतासाक्षात्चित्शक्तिःजगत्हेतुःजगदात्मिका)रामम-नुष्य नहीं हैं प्रकृति ते परे साक्षात् आदि नारायण हैं तथा सीता साक्षात् चैतन्य आदि शक्ति उत्पत्तिपालन प्रलयादि करनहारी जगत्की कारण जगकी आत्माहैं ४० (स्थावरजंगमंजगत्ताभ्यां एव समुत्पन्नं तस्मात्रामः चसीताचतौजगतः चतस्थुषः) स्थावर जे चलते नहीं जंगम जे चलते हैं इत्यादि मय जगत् इन दोऊ सीताराम करिकै उत्पन्न भयाहै ताते राम पुनः सीता ये दोऊ जंगम पुनः स्थावर के ४१ (पितरौपृथिवीपाल तयोःवैरीकथंभवेत् जगत्माताएवजानकी त्वयाअजानता नीता) चराचर के माता पिता पृथिवी के पालन हारे सीताराम तिनको वैरी कैसे कोऊ होय सो जगत् की माता निश्चय करि जानकी तिनको हेरावण तुमने अजाननताते इहां को हरिलायो ४२ (राजन्क्षणनाशिनि संसारेचतुर्विंशतितत्त्वके पंचभूतात्मके क्षणभंगुरेशरीरे) हेराजन् क्षण में नाशमान ऐसे झूँठेसंसार में दशेंद्री पंच तत्त्व पंच तनमात्रा चारि अंतःकरण इति चौबिस तत्त्वमय पांचौ भूत आकाश वायुः अग्नि जल भूमि इति पांचौ भूतोंको क्षणभंगी शरीर में ४३ (अहंकृतालयेमलमांस अस्थिदुर्गंधभूयिष्ठेव्यतिरिक्तस्यतव जड़ात्मकेकैवास्थे) अहंकारको मंदिर जामें मल मांस अस्थि इत्यादि दुर्गंध वहुत भारी त्यहिते बिलग जीवात्मा तुम इस जड़ात्मक देहमें विश्वास करिबे योग्यहौ भाव झूंठी देह को सत्य मानते हौ यह तुम्हारे योग्य नहींहै ४४ (यत्कृतेतेब्रह्महत्यादिपातकानिकृतानितु भोगभोक्तायादेहः सदेहः अत्रपतिष्यति) जिस देह के कीन्हेते तुम आत्मरूप भूलि देहाभिमानी ह्वै ब्रह्महत्यादि अनेकन पाप कीन्हेउ पुनः सुख भोग को भोगनेवाली जोदेह सोइहै छूटि जायगी ४५ ॥

पुण्यपापेसमायातोजीवेनसुखदुःखयोः ॥ कारणेदेहयोगादि नात्मनःकुरुतेऽनिशम् ४६ यावद्देहोस्मिकर्तास्मीत्यात्माहंकुरुतेवशः॥ अध्यासात्तावदेवस्याज्जन्म

नाशादिसंभवः ४७ तस्मात्त्वंत्यजदेहादावभिमानंमहामते ॥ आत्मातिनिर्मलःशुद्धोविज्ञानात्माचलोऽव्ययः ४८ स्वाज्ञानवशतोबंधंप्रतिपद्यविमुह्यति ॥ तस्मात्त्वंशुद्धभावेनज्ञात्वात्मानंसदास्मर ४९ विरतभजसर्वत्रपुत्रदारगृहादिषु ॥ निरयेष्वपिभोगःस्याच्छ्वसूकरतनावपि ५० देहंलब्ध्वाविवेकाढ्यंद्विजत्वंवाविशेषतः ॥ तत्रापिभारतेवर्षेकर्मभूमौसुदुर्लभम् ५१ ॥

(सुखदुःखयोःकारणेपुण्यपापे जीवेनसमायातःदेहयोगादिआत्मनःअनिशंनकुरुतः) सुखदुःख को कारण पुण्य पापते तौ जीवके साथही जाते हैं तेई देहादि संयोग पाय सदा सुखदुःख उत्पन्न कराकरते हैं अरु देहयोगादि को दुःखसुख आत्मामें निरंतर नहीं करते हैं भाव देहादि से भिन्न आत्मा को दुःखसुख नहीं होता है ४६ (देहःअस्मिकर्ताअस्मिइतिअवशःयावत् आत्माअहंकुरुते तावत्अध्यासात्जन्मनाशादि संभवःस्यात्) देह मैं हौं करतामैं हौं अर्थात् मैं ब्राह्मण तपबल से लोकभस्म करिसक्ताहौं इत्यादि प्रकृति बश जबतक आत्माकर्तृत्व को अभिमान करता है तबतक जड़चैतन्य की एकता बुद्धि इति अध्यास ते जन्म मरणादि को प्राप्त होता भाव अध्यासहीनज्ञानी भक्तों को देह संयोग में भी दुःखसुख नहींहोताहै ४७ (तस्मात्महामतेदेहादौअभिमानंत्वंत्यजआत्मा अतिनिर्मलशुद्धःविज्ञानात्माअचलःअव्ययः) ताते हेमहाबुद्धिवंत रावणदेहादिकों विषेजो अभिमान है ताहि तुम त्याग करौ देहादि ते भिन्न तुम्हारा आत्माअत्यंतअमल शुद्ध विज्ञान रूप अचल अविनाशीहै ४८ (स्वअज्ञानवशतःबंधंप्रतिपद्य विमुह्यतितस्मात् शुद्धभावेनत्वंआत्मानंज्ञात्वा सदास्मर) अपने आत्मरूप बिसारि देह बुद्धी अज्ञान बशते पुरुष बंधन को प्राप्त है पुरुष मोहित होता हैताते राग द्वेष रहित शुद्ध भाव करिकै तुम आत्माको जानि सदा स्मरण करौ ४९ (पुत्रदारगृहादिषुसर्वत्र विरतिंभजभोगः निरयेषुअपिश्वसूकरतनौ अपिस्यात्) पुत्रस्त्री गृहादि विषे सर्वत्र विराग को करौ क्योंकि भोग तौ नरक विषेभीहै तथा कूकर सूकर तन में भीभोगहै ५० (विवेकाढ्यंदेहंलब्ध्वा वाविशेषतः द्विजत्वंतत्रापिसुदुर्लभम् कर्मभूमौ भारतेवर्षे) विवेक योग्य मानुष देह पाय तामें भी विशेषता ब्राह्मण तन को पाय ताहूपर उत्तम जीवन को दुर्लभ जो नहीं प्राप्त होने योग्य ऐसी कर्म सिद्धि होने योग्य भूमि भारत बर्ष में जन्म पाय कै भाव परलोक साधन में ऐसी उत्तमता प्राप्त ह्वैकै ५१ ॥

कोविद्वानात्मसात्कृत्वादेहंभोगानुगोभवेत् ॥ अतस्त्वंब्राह्मणोभूत्वापौलस्त्यतनयश्चसन् ५२ अज्ञानिवसदाभोगाननुधावसिकिंमुधा ॥ इतःपरंवात्यक्त्वात्वंसर्वसंगंसमाश्रय ५३ राममेवपरात्मानंभक्तिभावेनसर्वदा ॥ सीतांसमर्प्यरामायतत्पादानुचरोभव ५४ विमुक्तःसर्वपापेभ्यो विष्णुलोकंप्रयास्यसि ॥ नोचेद्गमिष्यसेधोधःपुनरावृत्तिवर्ज्जितः ॥ अंगीकुरुष्वमद्वाक्यंहितमेववदामिते ५५ सत्संगतिंकुरुभजस्वहरिंशरण्यंश्रीराघवंमरकतोपलकांतिकांतम् ॥ सीतासमेतमनिशंधृतचापबाणंसुग्रीवलक्ष्मणविभीषणसेविताङ्घ्रिं ५६ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्धकांडेचतुर्थःसर्गः ४ ॥

(कःविद्वान्आत्मसात्कृत्वादेहंभोगानुगोभवेत्अतःत्वंब्राह्मणःभूत्वाचपौलस्त्यतनयःसन्)ऐसासांगोपांग पायकै को ऐसा विद्वान् है जो देहके आधीन आत्मा को करि देहके भोगों को दास की भांति सेवन करै ताते तुमब्राह्मण ह्वैकै पुनःपुलस्त्य के पुत्रको पुत्रह्वैकै ५२ (अज्ञानीइवसदाभोगान् अनुकिंसुधाधावसिइतःपरंत्वसर्वसंगंत्यक्त्वावासमाश्रय) अज्ञानीकी नाईं सदादेह सुख भोगन के पाछे क्या वृथा धावतेहौ इसकी उपरांत तुम सबको संगत्यागि आत्मरूप ग्रहणकरौ वारामकी शरणहोउ ५३ (सीतांरामायसमर्प्यरामंएवपरात्मानंसर्वदाभक्तिभावेनतत्पादअनुचरःभव) सीताको राम के अर्थ समर्प्यरामको निश्चय परात्मा मानि सबकाल में भक्ति सेवक सेव्यभावकी प्रीति करिकै तिनके पांयन के सेवकहोउ ५४ (सर्वपापेभ्यःविमुक्तःविष्णुलोकंप्रयास्यसि नोचेत्पुनरावृत्यवर्जित-अधोधःगमिष्यसेतेहितंएववदामिमत्वाक्यंअंगीकुरुष्व) सब पापन ते छूटि विष्णुकेलोकको जायगो अरुजो ऐसा न करोगे तोउत्तम लोकत्यागि नीचे ते नीचे लोकन को प्राप्तहोहुगे हे राजन्तुम्हारे हितको निश्चय करि कहताहौं ताते मेरा वचन अंगीकार करौ ५५ (सत्संगंतिकुरुमरकतोत्पलकांति कांतंधृतचापवाणसुग्रीवलक्ष्मणविभीषणसेविताघ्रिंशरण्यंसीतासमेतंहरिंराघवंअनिशंभजस्व) हेरावण सज्जनों को संगकरोपुनः मरकत मणिकी कांतिसम सुंदर श्यामतन धनुषबाण धारण किहे सुग्रीव लक्ष्मण विभीषणादि करिकै सेवितहैं चरण जिनके शरणागतके रक्षा करने में तत्पर सीताकरिकै सहित हरि श्रीराम रघुवंश नाथ को निरंतर भजन करौ ५६ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचिते
अध्यात्मभूषणेयुद्धकाण्डेचतुर्थःप्रकाशः ४ ॥

श्रुत्वाशुकमुखोद्गीतंवाक्यमज्ञाननाशनम् ॥ रावणःक्रोधताम्राक्षोदहन्निवतमब्रवीत् १ अनुजीव्यसुदुर्बुद्धेगुरुवद्भाषसेकथम् ॥ शासिताहंत्रिजगतांत्वंमांशिक्षयन्नलज्जसे २ इदानीमेवहन्मित्वांकिंतुपूर्वकृतंतव ॥ स्मरामितेनरक्षामित्वांयद्यपिवधोचितम् ३ इतोगच्छविमूढत्वमेवंश्रोतुंनमेक्षमम् ॥ महाप्रासादइत्युक्त्वावेपमानोगृहंययौ ४ शुकोपिब्राह्मणःपूर्वंब्रह्मिष्टोब्रह्मवित्तमः ॥ वानप्रस्थविधानेनवनेतिष्ठन्स्वकर्मकृत् ५ देवानामभिवृद्ध्यर्थंविनाशायसुरद्विषाम् ॥ चकारयज्ञविततिमविच्छिन्नांमहामतिः ६ ॥

सवैया ॥ शुकआपत रावण क्रोधतहीं तजि राक्षस देहद्विजत्वलई । शुभ आपत रावण मातपिता सुनि ताहि तपै नहिंकान दई ॥ सदनोपरि रावण देखिप्रभू शरत्यागिसछत्र किरीटहई । पुनिराघव रावण प्रेरित वानर राक्षस युद्धसमूहभई ॥ (अज्ञाननाशनंशुकमुखस्यउद्गीतंवाक्यंश्रुत्वारावणः क्रोधताम्राक्षःतंदहन्इवअब्रवीत्) शिवजी बोले हे गिरिजा अज्ञान को नाश करनेवाला शुकमुखका कहा वचन सुनिकै रावण क्रोधकरि लालनेत्र करि मानो ताशुक को भस्मकरि देइगो ऐसा कठोरवचन बोलताभया १ (सुदुर्बुद्धेअनुजीव्यगुरुवत्कथंभाषसे त्रिजगतांशासिताऽहंमांत्वंशिक्षयन्लज्जसेन) हे अत्यंत दुर्बुद्धेतू मेरा सेवक है कै मोसों गुरूके समान कैसे वार्ताकरता है तीनिहुं लोकन को शिक्षा करनेवाला मैंहौं मोको तू शिक्षाकरता हुआ लज्जा को नहींप्राप्त होताहै २ (त्वांइदानींएवहन्मिकिंतुतवपूर्वकृतंस्मरामितेनत्वांरक्षामियद्यपिवधोचितम्) हे शुकतोको अभीवध करता परन्तु तू प्रथम

बड़ेकार्य किया है सोई स्मरण करिकै तेरीरक्षा करताहौं यद्यपि मारनेयोग्य है ३ (विमूढत्वंइतः गच्छएवंश्रोतुंमेनक्षमम्महाप्रासादइतिउक्त्वावेपमानःगृहंययौ) हे मूढतू इहां ते चलाजा ऐसे तेरे बचन मैं नहींसुनि सक्ताहौं तब हेराजन् बड़ीआपकी अनुग्रह भई ऐसा कहि शुककंपमान राक्षस तन त्यागि पूर्ववत् ब्राह्मण है आपने आश्रम को जाताभया ४ (शुकःअपिपूर्वं ब्रह्मिष्टःब्रह्मवित्तमःब्राह्मणः वनेतिष्ठन् वानप्रस्थ विधानेनस्वकर्मकृत्) यह शुकभी पूर्व ब्रह्मवेत्तनमें श्रेष्ठब्रह्म विचार में रत ब्राह्मण है बन में वसत संते वानप्रस्थ विधान करिकै अपने कर्म करतारहा ५ (सुरद्विषाम्विनाशाय देवानांअभिवृद्ध्यर्थंमहामतिःअविच्छिन्नांयज्ञविततिंचकार) राक्षसों के नाश अर्थ देवतों के वृद्ध्यर्थ महाबुद्धिमान् शुकछिद्ररहित निरंतरयज्ञ विधिवत् करतारहा ६ ॥

राक्षसानांविरोधोभूच्छुकोदेवहितोद्यतः ॥ वज्रदंष्ट्रइतिख्यातस्तत्रैकोराक्षसोमहान् ७ अंतरंप्रेप्सुरातिष्ठच्छुकापकरणोद्यतः ॥ कदाचिदागतोगस्त्यस्तस्याश्रमपदंमुनेः ८ तेनसंपूजितोगस्त्योभोजनार्थंनिमंत्रितः ॥ गतेस्नातुंमुनौकुंभसंभवे प्राप्यचांतरम् ९ अगस्त्यरूपधृक्सोपिराक्षसःशुकमब्रवीत् ॥ यदिदास्यसिमेब्रह्मन्भोजनंदेहिसामिषं १० बहुकालंनभुक्तंमेमांसंछागांगसंभवम् ॥ तथेतिकारयामासमांसभोज्यंसविस्तरम् ११ उपविष्टेमुनौभोक्तुंराक्षसोतीवसुंदरम् ॥ शुकभार्यावपुर्धृत्वातांचांतर्मोहयन्खलः १२ ॥

(शुकःदेवहितोद्यतःराक्षसानांविरोधः अभूत्तत्रएकः महान्राक्षसःवज्रदंष्ट्रइतिख्यातः) शुकतौ देवतोंके हितके उपाय यज्ञादि करतारहा ताते शुकपै राक्षसोंका विरोध भया तहांएक महान्राक्षस वज्रदंष्ट्र ऐसानाम प्रसिद्ध ७ (शुकस्यअपकरणोद्यतःअंतरंप्रेप्सुः आतिष्ठत्कदाचित्तस्यमुनेःआश्रमपदंअगस्त्यःआगतः) शुकके अपकार अर्थात् हानि विघ्नकरने पर राक्षस उद्यत रहा ताते विघ्नकरिबे योग्य छिद्र देखतारहा किसीसमय में तिसशुक मुनि के आश्रम को अगस्त्य ऋषि आवते भये ८ (तेनअगस्त्यःसम्पूजितःभोजनार्थंनिमंत्रितःकुंभसंभवेमुनौस्नातुंगतेचअंतरंप्राप्य) तिसशुक ब्राह्मण ने अगस्त्यजीको विधिवत् पूजन करि भोजन हेत निमंत्रण किया कुंभते उत्पत्ति अर्थात् अगस्त्य मुनि को स्नानहेत जातसंते अर्थात् जब अगस्त्यजी स्नानकरने हेत गये तब संधिपाय कै ९ (सः अपिराक्षसःअगस्त्यरूपधृक्शुकंअब्रवीत्ब्रह्मन्यदिमेभोजनंदास्यसिसामिषंदेहि) सो वज्रदंष्ट्रराक्षस अगस्त्यको रूप धरिशुक ब्राह्मण प्रति बोला हे ब्रह्मन जो हमको भोजन दियाचाहते हौ तौ आमिष सहित भोजन दीजिये १० (छागांगसंभवम्मांसंमेबहुकालंनभुक्तंतथाइतिसमांसविस्तरम्भोज्यंकारयामास) हे शुकछागके अंगसों उत्पन्नभया अर्थात् छगरे को मांस को बहुत दिनभये मैं नहीं खाया है ताते मांस भोजन चाहताहौं शुक बोला हे अगस्त्यजी जो आप कहते हौ सोई करौंगो ऐसा कहि मांस सहित बहुत प्रकारके भोजन तयारकरता भया ११ (मुनौभोक्तुंउपविष्टेराक्षसःअतीव सुंदरम् शुकभार्यावपुःधृत्वाचखलःतांमोहयन्) जब अगस्त्य मुनि भोजनकरनेहेत बैठे तब राक्षस अत्यन्त सुंदर शुककी स्त्रीको स्वरूप धरि दुष्ट आपतौ रसोई के भीतर गया अरु शुककी स्त्रीको मोहित करि दिया वह भीतरै परी रही १२ ॥

नरमांसंददौतस्मैसुपक्वंबहुविस्तरं ॥ दत्त्वैवांतर्दधेरक्षस्ततोदृष्ट्वाचुकोपसः १३

अमेध्यंमानुषंमांसमगस्त्यःशुकमब्रवीत् ॥ अभक्ष्यंमानुषंमांसंदत्तवानसिदुर्मते १४ मह्यंत्वंराक्षसोभूत्वातिष्ठत्वंमानुषाशनः ॥ इतिशप्तःपुरोभीत्याप्राहागस्त्यंमुनेत्वया १५ इदानींभाषितंमेद्यमांसंदेहीतिविस्तरम् ॥ तथैवदत्तंमेदेवकिंमेशापंप्रदास्यसि १६ श्रुत्वाशुकस्यवचनंमुहूर्तंध्यानमास्थितः ॥ ज्ञात्वारक्षःकृतंसर्वंततःप्राहशुकंसुधीः १७तवापकारिणासर्वंराक्षसेनकृतंत्विदम् ॥ अविचार्यैवमेदत्तः शापस्तेमुनिसत्तम १८ ॥

(वहुविस्तरम्सुपक्वनरमांसंतस्मैददौएवंदत्त्वाराक्षसःअन्तर्दधेततःदृष्ट्वासःचुकोप) वहुत प्रकारको भोजनसहित सुन्दरपकाहुवा मानुषकोमांस तिन अगस्त्यऋषिके भोजनअर्थ परसिदेताभया इस प्रकारदैकै राक्षसतौ अन्तर्द्धानभया तदनन्तर वह मांसदेखि सो अगस्त्यऋषिकोपकरतेभये १३ (मानुषंमांसंअमेध्यंअगस्त्यःशुकंअब्रवीत् दुर्मतेमानुषंमांसंअभक्ष्यंत्वंमह्यंदत्तवानसि) मानुषमांस अपावन देखि अगस्त्यऋषि शुकप्रति बोले कि हे दुर्बुद्धी यह मानुषकोमांस जो अभक्ष्यहै तू मोको भोजन हेत दीन्हे १४ (त्वंराक्षसोभूत्वामानुषाशनतिष्ठ इतिशप्तःभीत्यापुरःअगस्त्यंप्राह) यथा मोको मानुषमांस दीन्हे तथा तू राक्षस ह्वैकै मानुषकोमांसखाताहुवा स्थितरहु इति शापदीन्हे तब शुकडरकरिकै करजोरि आगे खड़ाह्वै अगस्त्यप्रति बोलताभया १५ (मुनेत्वयाइदानींइतिभाषितंमेअद्यविस्तरंमांसंदेहितथा एवमेदत्तंदेवमेकिंशापंप्रदास्यसि) शुकमुनि बोले हे मुने अर्थात् अगस्त्यजी आपनेतौ इसी समय में मोप्रति ऐसा बचनकहेउहै कि या समय में मोको बिस्तारसहित मांसभोजनदेहु नाहीं आपकी आज्ञा से मैं मांस भोजन दिया हेदेव अब मोको क्यों शाप देतेहौ १६ (शुकस्यवचनंश्रुत्वामुहूर्तंध्यानंआस्थितः रक्षःकृतंसर्वंज्ञात्वाततःसुधीःशुकंप्राह) शुकके कहे हुये वचन सुनिकै संदेहभई ताते अगस्त्यजी कारण सत्य जानिबे हेत मुहूर्त भरि ध्यानमें स्थितरहे राक्षस को किया हुवा सब हाल जानि लिये तब सुबुद्धी अगस्त्य शुक प्रति बोलते भये १७ (तवअपकारिणाराक्षसेन इदंसर्वंकृतंतुमुनिसत्तमतेशापः अविचार्यएवमेदत्तः) अगस्त्यबोले हेशुकतेरा अनहित करने वाला राक्षसने यह सब विघ्न किया पुनः हे मुनिनमें उत्तम शुक तो को शाप बिना विचारही मैं दै दिया भाव तेरा अपराध नहीं है १८ ॥

तथापिमेवचोमोघमेवमेवंभविष्यति ॥ राक्षसंवपुरास्थायरावणस्यसहायकृत् १९ तिष्ठतावद्यदारामोदशाननवधायहि ॥ आगमिष्यतिलंकायाः समीपंवानरैःसह २० प्रेषितोरावणेनत्वंचारोभूत्वारघूत्तमम् ॥ दृष्ट्वाशापाद्विनिर्मुक्तोबोधयित्वाचरावणं २१ तत्त्वज्ञानंततोमुक्तःपरंपदमवाप्स्यसि ॥ इत्युक्तोगस्त्यमुनिनाशुकोब्राह्मणसत्तमः२२ बभूवराक्षसःसद्योरावणंप्राप्यसंस्थितः॥ इदानींचाररूपेणदृष्ट्वारामंसहानुजम् २३ रावणंतत्त्वविज्ञानंबोधयित्वापुनर्द्रुतम् ॥ पूर्ववद्ब्राह्मणोभूत्वास्थितोवैखानसैःसह २४ ॥

(तथापिअमोघंमेवचःएवंएवभविष्यतिराक्षसंवपुःआस्थायरावणस्यसहायकृत्) हे शुक यद्यपि तेरा अपराध नहींहै-ताहूपर वृथानहीं जानेवाला मेरा वचन ऐसेही निश्चयकरि होयगो ताते अब तुम राक्षस तन धरिकै लंकामें जाय रावणकी सहायकरौगे १९ (तावत्तिष्ठयदादशाननवधायहिरामःवानरैःसहलंकायाःसमीपंआगमिष्यति) तवतक राक्षस तनते लंकामें रहेउ जब रावण के बंध

करने अर्थ रामचन्द्र वानरोंकी सेना सहित लंकाके समीप को आवहिंगे २० (रावणेनप्रेषितस्त्वं चारःभूत्वारघूत्तमम्दृष्ट्वाचरावणमृतत्त्वज्ञानं बोधयित्वाशापात्विनिर्मुक्तः) हे शुक रावणकरिके पठावा हुवा तू चार अर्थात् हरकारा ह्वैकै रघुनाथजीको देखि पुनः लौटि आय लंकामें रावणको तत्त्व ज्ञान को उपदेश करिकै तब मेरे शापते विमुक्त अर्थात् शापते छूटिके २१ (ततःमुक्तःपरंपदमवाप्स्यसि इति अगस्त्यमुनिनाउक्तःब्राह्मणसत्तमःशुकः) तदनन्तर मुक्त ह्वैकै परमपदको प्राप्तहोहुगे इसप्रकार अगस्त्यमुनि करिकै कहागया सो वचन सुनिकै ब्राह्मणों में उत्तम शुक २२ (सद्यःराक्षसःबभूवरावणंप्राप्यसंस्थितःइदानींचाररूपेणसहानुजंरामंदृष्ट्वा) वह शुक शीघ्रही राक्षस तन होताभया लंकामें जाय रावण के पास प्राप्त ह्वै स्थितभया या समय में चार अर्थात् हलकारा रूप करिकै लक्ष्मण सहित रघुनन्दनको देखि २३ (तत्त्वविज्ञानंरावणंबोधयित्वाद्रुतंपूर्ववत् ब्राह्मणो भूत्वावैखानसैःसहस्थितः) पुनः आत्मतत्त्वमय विज्ञान रावणको उपदेश करि शुक शीघ्रही राक्षसतन त्यागि पूर्वकी नाईं ब्राह्मण तन ह्वैकै वानप्रस्थ के धर्मों करिकै सहित आश्रममें वास पूर्वक तप करनेलगा २४ ॥

ततःसमागमद्वृद्धोमाल्यवान्राक्षसोमहान् ॥ बुद्धिमान्नीतिनिपुणोराज्ञोमातुःप्रियःपिता २५ प्राहतंराक्षसंवीरंप्रशांतेनांतरात्मना ॥ शृणुराजन्वचोमेद्यश्रुत्वाकुरुयथेप्सितम् २६ यदाप्रविष्टानगरींजानकीरामवल्लभा ॥ तदादिपुर्यांदृश्यंतेनिमित्तानिदशानन २७ घोराणिनाशहेतूनितानिमेवदतःशृणु ॥ खरस्तनिर्तानिर्घोषामेघाअतिभयंकराः २८ शोणितेनाभिवर्षंतिलंकामुष्णेनसर्वदा ॥ रुदंतिदेवलिंगानिस्विद्यंतिप्रचलंतिच २९ कालिकापांडुरैर्दंतैःप्रहसंत्यग्रतःस्थितः ॥ खरागोषुप्रजायंतेमूषकानकुलैःसह ३० ॥

(ततःमहान्राक्षसःवृद्धःमाल्यवान्समागमत्राज्ञःमातुःपिताप्रियःबुद्धिमान्नीतिनिपुणः) ताही समय में महान् राक्षस वृद्धमाल्यवान् रावण के पास आवता भया पुनः राजा रावण की माता केकसी ताको पितामालीताको प्रियबंधुहै अर्थात् मालीसुमाली माल्यवान् तीनिहुं भाईरहे सो माल्यवान् बड़ाबुद्धिमान् नीतिमें प्रवीण है २५ (अंतरात्मनाप्रशांतेनराक्षसंवीरंतंप्राहराजन्अद्यमेवचःशृणु श्रुत्वायथेप्सितंकुरु) अंतरात्माशांतकरिकै माल्यवान् अमंगल विचारि राक्षस वीरजो रावण त्यहि प्रति बोला हे राजन् अबमेरे वचन सुनौ सुनि कै पुनः जैसी इच्छाहोइ तैसाकरौ२६ (दशाननरामवल्लभा जानकीयदानगरींप्रविष्टातदादिपुर्यांघोराणिनिमित्तानिदृश्यंते)हे रावण रामवल्लभाअर्थात् परमप्रिय जानकी जबते तुम्हारी नगरीमें प्रवेश किया तबते पुरमें भयंकर निमित्त उत्पातअसगुन देखि परते हैं २७ (नाशहेतूनिमेवदतःतानिशृणुखरस्तनितनिर्घोषा अतिभयंकराःमेघाः) राक्षसों के नाशहोने के हेतु जो उत्पात देखि परते हैं सो मैं कहताहों तिनहिं सुनिये कठोरगर्जिवज्रपात सहित अत्यंत भयंकर समूह मेघा आकाशमें छायेहुये २८ (उष्णेनशोणितेनलंकांअभिवर्षंतिसर्वदादेवलिंगानिरुदंतिस्विद्यंतिचप्रचलंति) आकाशते मेघागरम रुधिर करिकै लंकामें वर्षाकरते हैं तबकाल में देवन की प्रतिमा रोदनकरती हैं खेदको प्राप्त होती हैं भाव आंखिन ते अश्रुधारा तनते पसीनाचलता है पुनःप्रतिष्ठित प्रतिमा स्थानत्यागि अन्यत्र चलीजाती हैं २९ (पांडुरैःदंतैःप्रहसंतिकालिका अग्रतःस्थितःगोषुखराःप्रजायंतेनकुलैःसहमूषकाः)उज्ज्वलदांतोंको काढ़ि करिकै हँसतीहुई कालिका

राक्षसों के आगेस्थित होती है भाव तुमको भक्षण करौंगी पुनः गौवन में गदहा उत्पन्न होते हैं नकुलोंसहित मूसा ३० ॥

मार्जारेणतुयुद्ध्यंतिपन्नगागरुडेनतु ॥ करालोविकटोमुंडःपुरुषःकृष्णपिंगलः ३१ कालोगृहाणिसर्वेषांकालेकालेत्ववेक्षते ॥ एतान्यन्यानिदृश्यंते निमित्तान्युद्भवंति च ३२ अतःकुलस्यरक्षार्थंशांतिंकुरुदशानन ॥ सीतांसत्कृत्यसधनांरामायाशुप्र यच्छभो ३३ रामंनारायणंविद्धिविद्वेषंत्यजराघवे ॥ यत्पादपोतमाश्रित्यज्ञानिनो भवसागरम् ३४ तरंतिभक्तिपूतांतास्ततोरामोनमानुषः ॥ भजस्वभक्तिभावेनरा मंसर्वहृदालयम् ३५ यद्यपित्वंदुराचारोभक्त्यापूतोभविष्यसि ॥ मद्वाक्यंकुरुरा जेंद्रकुलकौशलहेतवे ३६ ॥

(तुमार्जारेणयुद्ध्यंतितुपन्नगागरुडेनकृष्णपिंगलःविकटःकरालःमुंडःपुरुषः) जोस्वाभाविक आहार ते मूसापुनः बिलारियोंसे युद्धकरते हैं पुनःसर्प गरुड़ से युद्धकरते हैं भावमानुप वानर भी राक्षसों को मारैंगे यह सूचितहोता है पुनः अर्द्धकाला अर्द्धपीलावर्ण कठिनकराल मुंडितपुरुप ३१ (कालः सर्वेषांगृहाणि कालेकालेतुअवेक्षतेएतानिचअन्यानि निमित्तानिउद्भवंतिदृश्यंते) पूर्ववत्पुरुषरूप धरे काल सब राक्षसों के घरनमें प्रति दिन देखि परताहै इत्यादि पुनः औरहू उत्पात उत्पन्न होतेदेखि परते हैं ३२ (अतःदशाननकुलस्यरक्षार्थंशांतिंकुरुभोसधनांसीतांसत्कृत्यरामायआशुप्रयच्छ) ताते हे दशानन अपने कुलकी रक्षाअर्थ शांति उपायकरौ क्या शांति उपाय है भोरावण सहित धनको लैके सीताको आदर समेत लैजाय रामके अर्थशीघ्रही दैदीजिये ३३ (रामंनारायणंविद्धिराघवेविद्वेषंत्यजयत्पादपोतंआश्रित्यभक्तिपूतांताःज्ञानिनःभवसागरंतरंतिततःरामःमानुषः नसर्वहृदालयम्रामं भक्तिभावेनभजस्व) हे रावण रामको नारायण जानौ ताते रघुवंशनाथ में जो विरोधबुद्धी राखेहो सोत्यागकरौकाहेते जिनरामके पांयरूप नावके आश्रितह्वै भक्तिकरि पवित्रभयाहै अंतःकरण जिनका ऐसेज्ञानी भक्त भवसागर को तरिजाते हैं तौजिनके पांयन की सेवाते जीव भवसागर तरत तातेराम मानुष नहीं हैं अंतर्यामी रूपते सबके हृदय में मंदिर करि वास किहे हैं ऐसे रामको भक्ति भावकरिकै भजौ ३४ । ३५ (त्वंयद्यपिदुराचारःभक्त्यापूतःभविष्यसिराजेंद्रकुलकौशलहेतवे मत्वाक्यं कुरु) तुम यद्यपि दुष्ट आचार में रत अपावन हो परन्तु भक्ति करिकै पवित्र ह्वै जाहुगे ताते हेराजेंद्रे रावण राक्षस कुल के कुशल हेत मेरा वचन अंगीकार करौ ३६ ॥

तत्तुमाल्यवतोवाक्यं हितमुक्तंदशाननः ॥ नमर्षयतिदुष्टात्माकालस्यवशमाग तः ३७ मानवंकृपणंरामंएकंशाखामृगाश्रयम् ॥ समर्थंमन्यसेकेनहीनंपित्रामुनि प्रियम् ३८ रामेणप्रेषितोनूनंभाषसेत्वमनर्गलम् ॥ गच्छवृद्धोसिबंधुस्त्वंसोढंसर्वं त्वयोदितम् ३९ इतोमत्कर्णपदवींदहत्येतद्वचस्तव ॥ इत्युक्त्वासर्वसचिवैःसहि ताप्रस्थितस्तदा ४० प्रासादाग्रेसमासीनःपश्यन्वानरसैनिकान् ॥ युद्धायायोजय त्सर्वराक्षसान्समुपस्थितान् ४१ रामोपिधनुरादायलक्ष्मणेनसमाहृतम् ॥ दृष्ट्वा रावणमासीनंकोपेनकलुषीकृतः ४२ ॥

(हितंउक्तंमाल्यवतः वाक्यंतत्तुदुष्टात्मादशाननः नमर्षयति कालस्यवशंआगतः) यद्यपि परम

हित कहा परंतु माल्यवान् को वचन सो सुनिकै पुनः दुष्टात्मा रावण नहीं सहि सका क्योंकि काल के वश में आगया शीघ्रही मृत्यु को प्राप्त होइगो हित वचन कैसे सुनै ३७ (राममेकंमानवंकृपणं शाखामृगाश्रयम्पित्राहीनंमुनिप्रियम् केनसमर्थंमन्यसे)रावण बोला हेमाल्यवान् राम अकेला मानुष पुनः घरस्त्री छूटे दुःखित बानरों के आश्रय भयाहै जिसको पिताने वनबास दिया इति पिता हीन मुनिहैं प्रिय जाको तिसको कौन कारणते समर्थ माने हौ ३८ (नूनंरामेणप्रेषितः त्वंअनर्गलंभाषसेवृद्धोसि बंधुःत्वंगच्छ त्वयाउदितंसर्वंसोढं) निश्चय करि रामही करिकै पठाहुवा वसीठ बनिकै आयाहै ताते तू अनर्गल मेरी प्रतिकूलवचनकहताहै एकतौ बूढे पुनःनानाके बंधुहौ तातेतुम उठिजाउ तुमने कहा सो मैंने सहि लिया ३९ (इतःतवएतत्वचः मत्कर्णपदवींदहति इतिउक्त्वातदासर्वसचिवैः सहितःप्रस्थितः) इसी से उठिजा कि तेरा यह वचन मेरे कानों को भस्म करता है ऐसा कहिकै तब रावण सब मंत्रिन करिकै सहित उठिकै अन्यत्र को चलागया ४० (प्रासादाग्रेसंआसीनःवानरसैनिकान्पश्यन् समुपस्थितान्सर्वराक्षसान् युद्धायअयोजयत्) रावण जाय मंदिर के ऊपर बैठिकै बानरों की सेना को देखि तुरतही समीप बैठे हुये जो सब राक्षस तिन्हिं युद्ध करने अर्थ आज्ञादिया भाव बाहेर युद्ध न होइगा तो बानर पेलि आवैंगे ४१ (रावणंसंआसीनंदृष्ट्वारामःअपि कोपेनकलुषीकृतः लक्ष्मणेनसमाहृतं धनुःआदाय) रावण को निशंक संमुख बैठे देखि रघुनन्दन भी कोप करिकै मुख धूमिल करि धनुष मांगे तब लक्ष्मण करिकै दिया हुवा धनुष हाथमें लैकै बाण संधानि पुनः देखे ४२ ॥

किरीटिनंसमासीनं मंत्रिभिःपरिवेष्टितम् ॥ शशांकार्द्धनिभेनैवबाणेनैकेनराघवः ४३ श्वेतच्छत्रसहस्राणिकिरीटदशकंतथा ॥ चिच्छेदनिमिषार्द्धेनतदद्भुतमिवाभवत् ४४ लज्जितोरावणस्तूर्णंविवेशभवनंस्वकम् ॥ आहूयराक्षसान्सर्वान्प्रहस्तप्रमुखान्खलः ४५ वानरैःसहयुद्धायनोदयामाससत्वरः ॥ ततोभेरीमृदंगाद्यैः पणवानकगोमुखैः ४६ महिषोष्ट्रैःखरैःसिंहैर्द्वीपिभिःकृतवाहनाः ॥ खड्गशूलधनुःपाशयष्टितोमरशक्तिभिः ४७ लक्षिताःसर्वतोलंकांप्रतिद्वारमुपाययुः ॥ तत्पूर्वमेवरामेणनोदितावानरर्षभाः ४८ ॥

(मंत्रिभिःपरिवेष्टितम् किरीटिनंसमासीनंशशांकार्द्धनिभेनएवएकेनबाणेनराघवः) कैसा बैठाहै मंत्रीन करिकै सहित किरीटन को धारण किहे बैठा रावण को देखि जिसमें अर्द्ध चंद्राकार गांसी लगीहै ऐसा एकही बाण प्रहार करिकै रघुनन्दन ४३ (सहस्राणिश्वेतच्छत्रतथाकिरीट दशकं निमिषार्द्धेन चिच्छेदतत्अद्भुतंइवअभवत्) हजारनश्वेत छत्र तैसेही दशौ किरीट आधी पलक में काटि गिराय दीन्हे सो आश्चर्यवत् कौतुक भया अर्थात् सभाजन कोऊ जानि न पाये कि किस कारण छत्र मुकुट गिरिगये ताते आश्चर्य माने ४४ (लज्जितःरावणःस्वकंभवनंतूर्णं विवेशखलःप्रहस्तप्रमुखान् सर्वान्राक्षसान् आहूय) छत्र मुकुट गिरेते लज्जित ह्वैकै रावण आपने मंदिर को शीघ्रही प्रवेश करता भया तहांते खल रावण प्रहस्त है मुखिया जिन्में तिन सब राक्षसन को बुलायकै ४५ (वानरैःसहयुद्धायसत्वरः नोदयामास ततःभेरीमृदंगाद्यैः पणवआनकगोमुखैः) राक्षसों को बुलाय रावण वानरोंसे युद्ध करने अर्थ आज्ञा देता भया सेना सजी तब भेरी मृदंग पणवनगारा गोमुखाकार तुरही इत्यादि बाजा बाजते हुये ४६ (महिषैःउष्ट्रैःखरैःसिंहैःद्वीपिभिःवाहनाः

रुतखड्गशूलधनुः पाशयष्टितोमरशक्तिभिः) भैंसा ऊँट गदहा सिंह बाघ इत्यादि बाहन करिकै अर्थात् इनपर सवार ह्वै करिकै तरवारि त्रिशूल धनुष पाश अर्थात् फसरी लाठी तोमर सांग इत्यादि हथियारों करिकै सजिकै ४७ (सर्वतःलंकांलक्षिताः प्रतिद्वारंउपाययुः तत्पूर्वंरामेणएवनोदिताः वानरर्षभाः) ते सब राक्षस सब दिशों में लंकाके कोटपर चढ़ि गये पुनः चारिहु द्वारन के बाहेर जाते भये ताके प्रथमही रघुनन्दनने भी पठाये ताते उत्तम बली बानर भी आय गये ४८ ॥

उद्यम्यगिरिशृंगाणिशिखराणिमहांतिच ॥ तरूंश्चोत्पाट्यविविधान्युद्धायहरियूथपाः ४९ प्रेक्ष्यमाणारावणस्यतान्यनीकानिभागशः॥राघवप्रियकामार्थंलंकामारुरुहुस्तदा ५० तेद्रुमैःपर्वताग्रैश्चमुष्टिभिश्चप्लवंगमाः ॥ ततःसहस्रयूथाश्चकोटियूथाश्चयूथपाः ५१ कोटिशतयुताश्चान्येरुरुधुर्नगरंभृशम् ॥ आप्लवंतःप्लवंतश्चगर्जंतश्चप्लवंगमाः ५२ रामोजयत्यतिबलोलक्ष्मणश्चमहाबलः ॥ राजाजयतिसुग्रीवोराघवेणानुपालितः ५३ इत्येवंघोषयंतश्चसमंयुयुधिरेरिभिः ॥ हनूमानंगदश्चैवकुमुदोनीलएवच ५४ ॥

(गिरिशृंगाणिचमहांतिशिखराणिउद्यम्यचविविधान्तरून्उत्पाट्ययुद्धायहरियूथपाः) पर्वतनके शिखर बड़ेभारी पर्वत हाथों में लीन्हे पुनः अनेक भांतिके वृक्षउखारिलीन्हे युद्धके अर्थ वानर यूथपती समूहखड़ेहैं ४९(राघवप्रियकामार्थंतदाभागशःलंकांआरुरुहुःरावणस्यअनीकानितानिप्रेक्ष्यमाणाः) रघुनन्दनके प्रियकार्यकरने अर्थ तासमय में सेनाके चारिभागकरिकै लंकाकोघेरेहुये वानरखडे रावण की जो सेनाहै ताहि आवने की राहहेरते हैं ५० (तेप्लवंगमाःद्रुमैःचपर्वताग्रैःचमुष्टिभिःततःसहस्रयूथाःचकोटियूथाःचयूथपाः) ते सब वानर वृक्षोंकरिके पुनः बडेभारी शिलोंकरिकै पुनः मुष्टिकोंकरिकै राक्षसोंकोमारनेपर उद्यत किसी द्वारपर हजारयूथोंके यूथपति किसी द्वारपर करोरियूथ के यूथपतिखड़े हैं ५१ (चअन्येशतकोटियुताःनगरंभृशम्रुरुधुःप्लवंगमाः गर्जंतःचप्लवंतःचआप्लवंतः) पुनः औरे द्वारपर सौकरोरि वानरनयुत यूथपती लंकानगरको अत्यन्तकरिकैघेरे हैं जामें किसीकोबहिराय जानेकी राहनहीं ते बानरगर्जितेहैं पुनःआकाशकोकूदिजातेहैं पुनःआकाशते भूमिको आवते हैं ५२ (अतिबलःरामःजयतिचमहाबलःलक्ष्मणःजयतिराघवेणअनुपालितःसुग्रीवःजयति) पुन. ऐसा कहतेहैं कि अत्यन्त बली जो राम सो जयको प्राप्तहोय पुनः महाबली जो लक्ष्मण सो जयकोप्राप्तहोय रघुनन्दन करिकै जो रक्षाकियेगये सो राजा सुग्रीव जयकोप्राप्तहोवें ५३ (इत्येवंघोषयंतःचसमंअरिभिः युयुधिरेहनुमान्चअंगदःएवकुमुदः चनीलएव) ऐसा शब्दकरतेहुये अपनी बराबरिके शत्रुनकरिकै युद्ध करतेभये तब हनूमान् पुनः अंगद तथा कुमुद पुनः नील ५४ ॥

नलश्चशरभश्चैव मैंदोद्विविदएवच ॥ जाम्बवान्दधिवक्त्रश्चकेशरीतारएवच ५५ अन्येचबलिनःसर्वेयूथपाश्चप्लवंगमाः ॥ द्वाराण्युत्प्लुत्यलंकायाःसर्वतोरुरुधुर्भृशम् ॥ तदावृक्षैर्महाकायाःपर्वताग्रैश्चवानराः ५६ निजघ्नुस्तानिरक्षांसि नखैर्दंतैश्चवेगिताः ॥ राक्षसाश्चतदाभीमाद्वारेभ्यःसर्वतोरुषा ५७ निर्गत्यभिंदिपालैश्चखड्गैःशूलैःपरश्वधैः ॥ निजघ्नुर्वानरानीकंमहाकायामहाबलाः ५८ राक्षसांश्चतथाजघ्नुर्वानराजितकाशिनः ॥ तथाबभूवसमरोमांसशोणितकर्द

मः ५९ रक्षसांवानराणांचसंबभूवाद्भुतोपमः ॥ तेहयैश्चगजैश्चैवरथैःकांचनसन्निभैः ६० रक्षोव्याघ्रायुयुधिरेनादयंतोदिशोदश ॥ राक्षसाश्चकपींद्राश्चपरस्परजयैषिणाः ६१ ॥

नल शरभ मैंद द्विविद जाम्बवान् दधिमुख केशरी तार ५५ (चअन्येबलिनःयूथपाःसर्वेचप्लवंगमाः द्वाराणिउत्प्लुत्यसर्वतःलंकायाःभृशम्रुरुधुः) पुनः औरहूबली जे यूथपती हैं ते सब पुनः बानर ते सब द्वारोंपरकूदिकरिकै सब दिशनते लंकाको अत्यन्त घेरिलेतेभये (तदामहाकायाःबानराःवृक्षैःच पर्वताग्रैः) ता समय में भारीतनवाले वानर ते वृक्षोंकरिकै पुनः पर्वतकेशिलोंकरिकै ५६ (नखैःच दंतैःरक्षांसितानिवेगितःनिजघ्नुःचतदाभीमाराक्षसाः रुषासर्वतःद्वारेभ्यः) नखोंकरिकै पुनः दांतोंकरिकै राक्षसजोहैं तिनहिं बड़े वेगते मारतेभये पुनःताही समयमें भयंकर राक्षस क्रोधकरि सब द्वारों ते ५७ (निर्गत्यमहाकायामहाबलाः भिंदिपालैःचखड्गैःशूलैःपरश्वधैःवानराःअनीकंनिजघ्नुः) द्वारोंते निसरे बड़ेभारीशरीर बड़ेबली राक्षसते धनबासिनकरिकै शिला खड्गनकरिकै त्रिशूलनकरिकै फरसाकरिकै बानरनकी सेनाकोमारतेभये ५८ (तथाजितकाशिनःवानराःचराक्षसांजघ्नुःमांसशोणितकर्दमःतथासमरःबभूव) तैसेही जयकरिकै शोभितजो सब बानर ते पुनः राक्षसौंकोमारतेभये ता समय में भूमिपै मांस रक्त को कीचर ह्वैगया तैसी युद्धहोतीभई ५९ (वानराणांचरक्षसांअद्भुतोपमः संबभूवतेहयैःचगजैःचएवकांचनसन्निभैःरथैः) वानरोंका पुनः राक्षसौंका अद्भुत उपमादेने योग्य संग्रामहोताभया ते राक्षस घोड़ोंकरिकै हाथिनकरिकै कंचनतुल्य प्रभावंत रथोंकरिकै ६० (दशदिशः नादयंतःरक्ष व्याघ्रायुयुधिरेराक्षसाःचकपीन्द्राःचपरस्परजयैषिणाः)दशों दिशों में शब्दयुत राक्षसवीर युद्धकरतेभये राक्षस पुनः बानर अपनी२ जयकीइच्छाकिहे कैसे युद्धकरते हैं ६१ ॥

राक्षसान्वानराजघ्नुर्वानरांश्चैवराक्षसाः ॥ रामेणविष्णुनादृष्टाहरयोदिविजांशजाः ६२ बभूवुर्बलिनोहृष्टास्तदापीतामृताइव ॥ सीताभिमर्षपापेनरावणेनाभिपालितान् ६३ हतश्रीकान्हतबलान्राक्षसाञ्जघ्नुरोजसा ॥ चतुर्थांशावशेषेणनिहतंराक्षसंबलम् ६४ स्वसैन्यंनिहतंदृष्ट्वामेघनादोथदुष्टधीः ॥ ब्रह्मदत्तवरःश्रीमानंतर्द्धानंगतोसुरः ६५ सर्वास्त्रकुशलोव्योम्निब्रह्मास्त्रेणसमंततः ॥ नानाविधानिशस्त्राणिवानरानीकमर्दयन् ६६ ववर्षशरजालानितदद्भुतमिवाभवत् ॥ रामोपिमानयन्ब्राह्ममस्त्रमस्त्रविदांवरः ६७ ॥

(वानराःराक्षसान्जघ्नुः च एवराक्षसाःवानरान्दिविजांशजाः हरयःविष्णुनारामेणदृष्टाः) वानर राक्षसौं को मारते हैं पुनः राक्षस वानरों को मारते हैं देवतों के अंशसे उत्पन्न भये वानर ते बिष्णु साक्षात् राम को देखिकै ६२ (अमृतापीताइवतदाहृष्टाबलिनः बभूवुःसीताभिमर्षपापेनरावणेनअभिपालितान्) जैसे अबल देवता अमृत पानकरि बली ह्वै दैत्यों को जीते तैसेही देवांश वानर रघुनन्दनको देखि बली होते भये आनंद भये अरु सीता को हरत समय बिरोध भाव अंगस्पर्शते पापी रावण करिकै पालित दुष्टों की समाज कैसी भई ६३ (हतश्रीकान्हतबलान् राक्षसान्ओजसाजघ्नुः राक्षसंबलंनिहतंचतुर्थांशअवशेषेण) नाश ह्वै गई लक्ष्मी जिनकी नाश भयाहै बल जिन को ऐसे तेज बल हीन राक्षसों को वानर बड़े वेग करिकै ऐसा मारते हैं कि राक्षसी सेना को तीनि

हींसा नाशकरदिये चतुर्थअंशवाकीरहे ६४ (दुष्टधीःमेघनादःस्वसैन्यंनिहतंदृष्ट्वाब्रह्मदत्तवरःश्रीमान् असुरःअथअंतर्द्धानंगतः) दुष्टबुद्धी मेघनाद अपनी सेनाको सहारदेखि ब्रह्माको दियाहुवा जो वरहै ताकेप्रभावते श्रीयुत असुर मेघनाद अब अंतर्द्धान आकाशको जाताभया किसीको देखिनहींपरताहै ६५(व्योम्निसर्वास्त्रकुशलःब्रह्मास्त्रेणनानाविधानिशस्त्राणिसमंततःवानरानीकमर्दयन्) आकाशमेंजाय सब वाणविद्यामें प्रवीण जो मेघनाद सो ब्रह्मास्त्रके प्रभावसे अनेक प्रकारके शस्त्रनकरिकै सम्पूर्ण वानरोंकीसेना को मर्दनकरताभया ६६ (शरजालानिववर्षतत् अद्भुतंइवअभवत्अस्त्रविदांवरःरामःअपिब्राह्मंअस्त्रंमानयन्) वाण समूह रघुनन्दनपर वर्षताभया सो आश्चर्यमय कौतुक सम हालहोता भयाक्योंकि सब वाणविद्यावालों में श्रेष्ठ जो रघुनाथजी सो भी ब्रह्माके अस्त्रको मानराखे स्वोपरि ग्रहणकीन्हे ६७ ॥

क्षणंतूष्णींमुवासाथ ददर्शपतितंबलम् ॥ वानराणांरघुश्रेष्ठ श्चुकोपानलसन्निभः ६८ चापमानयसौमित्रेब्रह्मास्त्रेणासुरंक्षणात् ॥ भस्मीकरोमिमेपश्यबलमद्य रघूत्तम ६९ मेघनादोपितच्छ्रुत्वारामवाक्यमतंद्रितः ॥ तूर्णंजगामनगरंमायया मायिकोऽसुरः ७० पतितंवानरानीकंदृष्ट्वारामोतिदुःखितः ॥ उवाचमारुतिंशीघ्रंगत्वाक्षीरमहोदधिं ७१ तत्रद्रोणगिरिर्नामदिव्यौषधिसमुद्भवः ॥ तमानयद्रुतंगत्वासंजीवयमहामते ७२ वानरौघान्महासत्वान्कीर्तिस्तेसुस्थिराभवेत्॥ आज्ञाप्रमाणमित्युक्त्वाजगामानिलनंदनः ७३ आनीयचगिरिंसर्वान्वानरान्वानरर्षभः ॥ जीवयित्वापुनस्तत्रस्थापयित्वाययौद्रुतम् ७४ ॥

(क्षणंतूष्णींउवासअथवानराणांबलंपतितंददर्शरघुश्रेष्ठःअनलसन्निभःचुकोप) ब्रह्मास्त्रको मान राखि प्रभु क्षणमात्र चुपवैठे रहे अब वानरों की सेनाको परीदेखिकै रघुनाथजी अग्निकी समानकोप करतेभये ६८ (सौमित्रेचापंआनयरघूत्तमअद्यमेबलंपश्यब्रह्मास्त्रेणक्षणात्असुरंभस्मीकरोमि) प्रभु वोले हे लक्ष्मण मेरा धनुष लावौ हे रघूत्तम अब मेरेबलको देखौ क्योंकि क्षणमात्र में असुरको भस्मकरता हौं६९(रामवाक्यं तत् श्रुत्वामेघनादःअपिमायिकःअसुरःअतंद्रितःमाययातूर्णंनगरंजगाम) रघुनन्दनको वचन सो सुनिकै मेघनादभी बड़ामायावी असुरसो सावधान है माया करिकै आव अंतरिक्ष शीघ्रही नगरको जाताभया ७० (वानरानीकंपतितंदृष्ट्वाअतिदुःखितःरामःमारुतिंउवाच क्षीरमहोदधिंशीघ्रंगत्वा) वानरन की सेनाको मृतरूपरी देखिकै अत्यन्त दुखितहै रघुनन्दन हनुमान प्रति वोलते भये कि हे हनूमान् छीरसागरको तुमशीघ्रही जावो ७१ (महामतेगत्वातत्रदिव्यओषधसमुद्भवःद्रोणनामगिरिःतंआनयद्रुतंसंजीवय) हे महामतेजाउ तहां दिव्य औषधीउत्पन्न करने वाला एक द्रोणनामे पर्वत है ताको लाय शीघ्रही वानरों को सजीवकरौ ७२(महासत्वान्वानरौघान् ते कीर्तिःसुस्थिराभवेत्आज्ञाप्रमाणंइतिउक्त्वाअनिलनंदनःजगाम) महाबली वानरोंको जिआवौगे तौ तुम्हारी कीर्तिलोकमें सदास्थिर वनीरहैगी आपकी आज्ञामोको अवश्यकरनाहै ऐसाकहि पवननंदन जातेभये ७३ (गिरिंआनीयवानरर्षभः सर्वान्वानरान्जीवयित्वापुनःद्रुतंययौतत्रस्थापयित्वा) पर्वत को आनिकै वानरोत्तमहनुमान् सब वानरोंको औषधदैदै जिआवतेभये पुनःशीघ्रही लैजाते भये तहैं पहारको धरिआये ७४ ॥

पूर्ववद्भैरवंनादंवानराणांवलौघतः॥ श्रुत्वाविस्मयमापन्नोरावणोवाक्यमब्रवीत् ७५ राघवोमेमहान्शत्रुःप्राप्तोदेवविनिर्मितः॥ हंतुतंसमरेशीघ्रंगच्छंतुममयूथपाः ७६ मंत्रिणोबांधवाःशूरायेचमत्प्रियकांक्षिणः ॥ सर्वेगच्छंतुयुद्धायत्वरितंममशासनात् ७७ येनगच्छंतियुद्धायभीरवःप्राणविह्वलात् ॥ तान्हनिष्याम्यहंसर्वान्मच्छासनपराङ्मुखान् ७८ तच्छ्रुत्वाभयसंत्रस्तानिर्जग्मूरणकोविदाः ॥ अतिकायःप्रहस्तश्चमहानादमहोदरौ ७९ देवशत्रुर्निकुंभश्चदेवांतकनरांतकौ॥ अपरेवालिनः सर्वेययुर्युद्धायवानरैः ८० एतेचान्येचवहवःशूराःशतसहस्रसः ॥ प्रविश्यवानरंसैन्यंममंथुर्वलदर्पिताः ८१ ॥

(पूर्ववत्वानराणांवलौघतःभैरवंनादंश्रुत्वारावणःविस्मयंआपन्नःवाक्यंअब्रवीत्) प्रथम की न वानरों की सेना समूह को भयंकर शब्दसुनिकै रावण आश्चर्यको प्राप्त ह्वै वचन वोला ७५ (देव निर्मितः राघवःमेमहान्शत्रुःप्राप्तःतंसमरेहंतुंममयूथपाःशीघ्रंगच्छंतु) देवतों को वनावा हुआ र। मेरा वड़ाभारी शत्रुआय प्राप्तभया है ताको संग्राम में मारिवे हेतु मेरेयूथपती सव सेनादि ..घ्र जांय ७६ (मंत्रिणःवांधवाःचमत्प्रियकांक्षिणःयेशूराः सर्वेममशासनात्युद्धायत्वरितंगच्छन्तु) मं लोग पुनःभाई लोगपुनः मेरीप्रीति की कांक्षा राखे जेशूर हैं ते सव मेरीआज्ञा ते युद्धकरने ..त्वर हीजांय ७७ (येभीरवःप्राणविह्वलात्युद्धायनगच्छंतिमत्शासनपराङ्मुखान्तान्सर्वान्अहं..नि.. । अरुजे कादरप्राण घातभयते युद्धके अर्थ न जांयगे ऐसे जे मेरी आज्ञा ते विमुख तिनसवको मैं करिहौं ७८ (तत्श्रुत्वाभयसंत्रस्ताःरणकोविदाःनिर्जग्मुःअतिकायःप्रहस्तःचमहानादमहोदरौ) र को वचन सो सुनिकै रावण करवध कुमृत्यु की भयते त्रासमानि जे युद्धमें प्रवीणरहैं ते रण.. जातेभये सो यथा अतिकाय प्रहस्त पुनः महानाद महोदर ७९ (देवशत्रुः निकुंभःचदेवांतकनरांत अपरेवालिनःवानरैःयुद्धायसर्वेययुः) देवारि निकुंभ देवांतक नरांतक तैसे औरहूजेवली हैं ते ।नर युद्धकरने अर्थ सवजाते भये ८० (एतेचअन्येशतसहस्रशःवहवःशूराःवलदर्पिताः वानरं.. प्र वि ममंथुः) एतेपुनः औरहू सैकरन हजार वहुत शूर राक्षस ते वलदर्पित वानरोंकी सेनामें .. .. मथन करतेभये भाव युद्धमें वानरोंको मानभंग करिदीन्हें ८१ ॥

भुशुंडैर्भिंदिपालैश्चवाणैःखड्गैःपरश्वधैः ॥ अन्यैश्चविविधैरस्त्रैर्निजघ्नुर्हरियूथपान् ८२ तेपादपैःपर्वताग्रैर्नखदंष्ट्रैश्चमुष्टिभिः ॥ प्राणैर्विमोचयामासुःसर्वराक्षसयूथपान् ८३ रामेणनिहताःकेचित्सुग्रीवेणतथापरे ॥ हनूमताचांगदेनलक्ष्मणेनमहात्मना ८४ यूथपैर्वानराणांतेनिहतासर्वराक्षसाः ॥ रामतेजःसमाविश्यवानराबलिनोभवन्॥रामशक्तिविहीनानामेवंशक्तिःकुतोभवेत्८५सर्वेश्वरःसर्वमयोविधातामायामनुष्यत्वविडंवनेन ॥ सदाचिदानंदमयोऽपिरामोयुद्धादिलीलांवितनोतिमायाम् ८६ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसम्वादेयुद्धकांडेपंचमःसर्गः ५ ॥

(भुशुंडैःभिंदिपालैःचवाणैःखड्गैःपरश्वधैःचअन्यैःविविधैःअस्त्रैःहरियूथपान्निर्जघ्नुः) तुपक

पुनः बाणतरवारि फरसा पुनः औरहू अनेक हथियारों करिकै राक्षस वानर यूथपतिन को मारते भये ८२ (तेपादपैःपर्वताग्रैःनखदंष्ट्रै.चमुष्टिभि.सर्वराक्षसयूथपान्प्राणैःविमोचयामासुः) ते वानर वृक्षों करिकै पर्वतके शिलों करिकै नखदांतों करिकै पुनःमुष्टिकों करिकै मारिकै सब राक्षस यूथपतिन को प्राणन करिकै शरीर छुड़ाय देतेभये देहप्राण रहित करिदिये ८३ (केचित्रामेणनिहताःतथा अपरेसुग्रीवेणहनूमता अंगदेनमहात्मनालक्ष्मणेन) कछुतौ राक्षस रघुनाथजीने मारा तैसेही औरन को सुग्रीव ने मारा कछ हनूमान् ने मारा कछु अंगदने मारा कछु महात्मा लक्ष्मण ने मारा इतियावत् मुख्यते सबमृत्यु भाव को प्राप्तभये ८४ (सर्वराक्षसाःतेवानराणांयूथपैःनिहता.रामतेजःसंश्राविश्यवानराःबलिनःअभवत्) बाकी सबराक्षसते वानरोंके यूथपोंने नाशकरि दिया काहेते रघुनाथजीके तेज प्रताप को प्राप्त ह्वैकै वानर बलीहोते भये अरुराक्षस (रामशक्तिविहीनानां) रघुनंदनकी शक्ति करिकै हीन तिनको (एवंशक्तिःकुतःभवेत्) इसप्रकार शक्तिकैसे होसक्ती है ८५ (सर्वेश्वरःसर्वमयःविधाता) सबके ईश्वर सर्व भूतमय सबको रचनेवाले (मायामनुष्यत्वविडंबनेन) मायाकरिकै मनुष्य कसी नकल बनाये (सदाचिदानंदमयःरामःअपियुद्धादिलीलांमायाम्वितनोति) सबकाल चैतन्य आनन्दमय रामसोभी युद्धादिलीलारूप जो अपनी मायाहै ताको विस्तार करते हैं ८६ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचिते अध्यात्मभूषणेयुद्धकाण्डेपंचमःप्रकाशः ५ ॥

श्रुत्वायुद्धेबलंनष्टमतिकायमुखंमहत् ॥ रावणोदुःखसंतप्तःक्रोधेनमहतावृतः १ निधायेंद्रजितंलंकारक्षणार्थंमहाद्युतिः ॥ स्वयंजगामयुद्धायरामेणसहराक्षसः २ दिव्यंस्यंदनमारुह्यसर्वशस्त्रास्त्रसंयुतम् ॥ राममेवाभिदुद्रावराक्षसेंद्रोमहाबलः ३ वानरान्बहुशोहत्वाबाणैराशीविषोपमैः ॥ पातयामाससुग्रीवप्रमुखान्यूथनायकान् ४ गदापाणिमहासत्वंतत्रदृष्ट्वाविभीषणम् ॥ उत्ससर्जमहाशक्तिंमयदत्तांविभीषणे ५ तामापतंतीमालोक्यविभीषणविघातिनि ॥ दत्ताभयोयंरामेणवधार्होनायमासुरः ६ ॥

सवैया ॥ हतिरावणशक्ति विभीषणपै लखितानुजआपहिधावसही । प्रभुत्राणनमुर्छिदशाननगो मगऔषधिकोहनुमानगही ॥ कहिकालसुने महिजायकरौ कपिमारगमें कछुविघ्नतही । वहरावणपै शुभज्ञानसिखै शरणागतराघवजानकही ॥ (अतिकायमुखंयुद्धेबलंनष्टंश्रुत्वारावणः महद्दुःखसंतप्त.महताक्रोधेनावृतः) शिवजी बोले हे गिरिजा अतिकायआदिक मुखिया जिनमें ते युद्धमें सब सेनाको नाशसुनिकै रावण बड़े दुःखमें संतप्त बड़े क्रोधयुक्तहै १ (लंकारक्षणार्थंइंद्रजितंनिधायरामेणसहयुद्धायमहाद्युतिः राक्षसःस्वयंजगाम) लंकापुरकी रक्षाकरने के अर्थ इंद्रजित् जो मेघनाद ताको स्थापितकरि पुनः रघुनन्दन के साथ युद्धकरने अर्थ महातेजवंत राक्षस रावण आपहीजाताभया २ (सर्वशस्त्रास्त्रसंयुतंदिव्यंस्यंदनंआरुह्यमहाबलः राक्षसेंद्रःरामंएवअभिदुद्राव) सब प्रकारके अस्त्र शस्त्र संयुत दिव्यरथपर सवार ह्वै कै महाबली राक्षसोंको राजा रावण रघुनन्दनके संमुखधावताभया ३ (आशीविषोपमैःबाणैःबहुशःवानरान्हत्वा सुग्रीवप्रमुखान्यूथनायकान्पातयामास) सर्पतालूके विषैलेदांत के तुल्य बाणों करिकै बहुते वानरोंको मारिकै सुग्रीवआदि जे मुख्यसेनापत्ती तिनहिं सू-

च्छितकरिगिरायदिया४(तत्रगदापाणिंमहासत्त्वंविभीषणं दृष्ट्वामयदत्तांमहाशक्तिंविभीषणेउत्ससर्ज) तहां गदा हाथमेंलिये महाबली विभीषणकोदेखि रावण जो मयदानवकीदीन्ही महाअमोघ शक्ति सो विभीषणपरछांड़ताभया ५ (विभीषणविघातिनींतांआपतंतींआलोक्यअयंरामेणअभयंदत्ताअयं असुरःवधार्हःन) विभीषणको घातकरनैवाली जो शक्ति ताहि आवतीदेखि लक्ष्मणजी विचारे कि इसको रघुनन्दन ने अभयदियाहै ताते यह विभीषण असुरवधकेयोग्यनहीं है ६ ॥

इत्युक्त्वालक्ष्मणोभीमंचापमादायवीर्यवान् ॥ विभीषणस्यपुरतःस्थितोऽकंपइवाचलः ७ साशक्तिर्लक्ष्मणतनुंविवेशामोघशक्तितः ॥ यावंत्यःशक्तयोलोकेमाययासंभवंतिहि ८ तासामाधारभूतस्यलक्ष्मणस्यमहात्मनः ॥ मायाशक्त्याभवेत्किंवाशेषांशस्यहरेस्तनोः ९ तथापिमानुषंभावमापन्नस्तदनुव्रतः ॥ मूर्च्छितःपतितोभूमौतमादातुंदशाननः १० हस्तैस्तोलयितुंशक्तोनबभूवातिविस्मितः ॥ सर्वस्यजगतःसारंविराजंपरमेश्वरम् ११ कथंलोकाश्रयंविष्णुंतोलयल्लघुराक्षसः ॥ अहीतुकामंसौमित्रिंरावणंवीक्ष्यमारुतिः १२ ॥

(इतिउक्त्वावीर्यवान्लक्ष्मणःभीमंचापंआदायअकंपअचलःइव विभीषणस्यपुरतःस्थितः) विभीषणको बचावाचाहिये ऐसाकहि बड़ेबलवान् लक्ष्मण भयंकर धनुषको हाथमेंलैके थिरपर्वत सम विभीषणके आगे स्थितभये ७ (अमोघशक्तितःसाशक्तिःलक्ष्मणतनुंविवेशलोकेयावंत्यःशक्तयःमाययासंभवंतिहि) जो वृथा न जाय ऐसी शक्तिहै जामें सो रावणकी चलाईहुई जो सांगसो लक्ष्मण जीकी छातीपरलागि तन में प्रवेशकरिगई यद्यपि अमोघशक्तिहै परन्तु लक्ष्मणके हेत कछुभी नहीं बाधाकरिसक्ती है काहेते कि लोकमें जहांतकशक्ती हैं ते सब मायाते उत्पन्नहोती हैं ८ (तासांआधारभूतस्यहरेःतनोःशेषांशस्यमहात्मनः लक्ष्मणस्यमायाशक्त्याकिंवाभवेत्) तिस मायाके आधार भूत हरिको तन शेषको अंश ऐसे महात्मा लक्ष्मणको मायाशक्तिकरिकै क्या ह्वै सकै ९ (तथापि मानुषंभावंआपन्नःतत्अनुव्रतःमूर्च्छितःभूमौपतितःतंआदातुंदशाननः) यद्यपि मायामयशक्ति इनको बाधक नहींरहै ताहूपर मानुषभावमेंपरे सोईमानिकै मूर्च्छित ह्वै भूमिपर गिरिपरे तिनहिं उठाय लै जाने हेत रावण १० (हस्तैःतोलयितुंशक्तःनबभूवअतिविस्मितःजगतःसर्वस्यसारंपरमेश्वरंविराजं) रावण बीसोंहाथोंकरिकै बहुतेराउठायथका परन्तु उठानेको समर्थ न भया भाव उठाये न उठिसके तब अत्यन्त आश्चर्य मानताभया पुनः जगत्यावत् स्थावर जंगम तिस सबके सारांश परमेश्वर विराट्रूप ११ (लोकाश्रयंविष्णुंलघुराक्षसः कथंतोलयत्सौमित्रिंग्रहीतुकामंरावणंवीक्ष्यमारुतिः) लोक है आधार जिनको ऐसे विष्णुको छोटा राक्षस रावण कैसे उठायसकै ता समय में लक्ष्मणको उठावताहुवा जो रावण ताकोदेखिकै हनुमान्धायकै १२ ॥

आजघानोरसिक्रुद्धोवज्रकल्पेनमुष्टिना ॥ तेनमुष्टिप्रहारेणजानुभ्यामपतद्भुवि १३ आस्यैश्चनेत्रश्रवणैरुद्वमन्रुधिरंबहु॥विघूर्णमाननयनोरथोपस्थउपाविशत्१४ अथलक्ष्मणमादायहनूमान्रावणार्दितम् ॥ आनयद्रामसामीप्यंबाहुभ्यांपरिगृह्यतम् १५ हनूमतःसुहृत्त्वेनभक्त्याचपरमेश्वरः ॥ लघुत्वमगमद्देवोगुरूणांगुरुरप्यजः १६ साशक्तिरपितंत्यक्त्वाज्ञात्वानारायणांशजम् ॥ रावणस्यरथंप्रागाद्रा

वणोपिशनैस्ततः १७ संज्ञामवाप्यजग्राहबाणासनमथोरुषा॥ राममेवाभिदुद्राव दृष्ट्वारामोपितंक्रुधः १८ ॥

(क्रुद्धःवज्रकल्पेनमुष्टिनाउरसिम्राजघान मुष्टिप्रहारेणतेन जानुभ्यां भुवि अपतत्) हनुमान् क्रोध करि वज्र के समान मुष्टिका करिकै रावण की छाती में मारते भये मुष्टिका लागेसे जो चोट आई त्यहि व्यथा करिके मूर्च्छित ह्वै टिहुनिन को टेकि करिकै भूमिमें गिरि परा १३ (आस्यैःचनेत्रश्रवणेः वहुरुधिरंउद्वमन् नयनःविघूर्णमानः रथोस्थउपाविशत्) मुखों करिकै पुनः नेत्र श्रवणों करिकै वहुत रक्त वमन करता हुआ नेत्रों को घुमाता हुआ धीरे धीरे जाय रथ पर गिरि परा १४ (अथ रावणार्दितम् लक्ष्मणं हनूमान्मादाय वाहुभ्यांपरिगृह्यतं रामसामीप्यंमानयत्) अब रावण करिकै घायल मूर्च्छित जो लक्ष्मण तिनहिं हनूमान् उठाय वाहुन करिकै पकरेहुये तिनको रघुनाथजी के समीप को लावते भये १५ (गुरूणांगुरुः अपिअजःदेवः हनूमतःसुहृत्त्वेनचभक्त्यापरमेश्वरः लघुत्वंअगमत्) गरू पदार्थन को गरुता देनहारे अजन्म स्वयं प्रकाश रूप सो हनूमान् को मित्र भाव करिकै पुनः भक्ति करिके अर्थात् अपना सेवक जानिकै परमेश्वर हलुकेह्वै जातेभये अर्थात् विरोध भाव वालेन को मुक्ति देते हैं उनके वश नहीं होतेहैं अरु प्रीति भाव वालेन के वश रहते हैं १६ (नारायणअंशजंज्ञात्वा तंत्यक्त्वासाशक्तिः अपिरावणस्यरथंप्रागात्) नारायण के अंशते उत्पन्न जानि तिन लक्ष्मण को त्यागि सो शक्ति रावण के रथको चलीगई १७ (ततःरावणःअपिशनैःसंज्ञां अवाप्य वाणासनंजग्राह अथरुषारामंएवअभिदुद्राव तंदृष्ट्वारामःअपिक्रुधः) तदनंतर रावणभी धीरा धीरा चैतन्यता को प्राप्तह्वै धनुष हाथ में लैकै तव क्रोध करि रघुनन्दन के संमुख धावता भया तिसको आवते देखिकै रघुनन्दन भी क्रोधकरि १८ ॥

आरुह्यजगतांनाथोहनूमंतंमहाबलम्॥ रथस्थंरावणंदृष्ट्वाअभिदुद्रावराघवः १९ ज्याशब्दमकरोत्तीव्रंवज्रनिष्पेषनिष्ठुरम् ॥ रामोगंभीरयावाचाराक्षसेंद्रमुवाच ह २० राक्षसाधमतिष्ठाद्यक्वगमिष्यसिमेपुरः ॥ कृत्वापराधमेवंमेसर्वत्रसमदर्शिनः २१ येनबाणेननिहताराक्षसास्तेजनालये ॥ तेनैवत्वांहनिष्यामितिष्ठाद्यमम गोचरे २२ श्रीरामस्यवचःश्रुत्वारावणोमारुतात्मजम्॥ वहंतंराघवंसंख्येशरैस्तीक्ष्णैरताडयत् २३ हतस्यापिशरैस्तीक्ष्णैर्वायुसूनोःस्वतेजसा॥ व्यवर्द्धतपुनस्तेजो ननर्दचमहाकपिः २४ ॥

(जगतांनाथः महाबलंहनूमंतंआरुह्य रथस्थंरावणंदृष्ट्वाराघवः अभिदुद्राव) जगत् के नाथ क्रोध युत महाबली हनूमान् पर सवारह्वै रथ पर चढ़ाहुआ रावण को देखि रघुनन्दन भी संमुख धावते भये १९ (वज्रनिष्पेषनिष्ठुरम् तीव्रंज्याशब्दं अकरोत् राक्षसेंद्रंरामः गंभीरयावाचाउवाचह) जैसे बिजुली गिरे को महा कठिन शब्द होता है तैसेही तीव्र धनुष के रोदा को शब्द करते भये पुनः रावण प्रति रघुनन्दन गंभीर वचन बोलते भये २० (राक्षसअधमसर्वत्र समदर्शिनः मेएवंअपराधंकृत्वा तिष्ठमेपुरःअद्यक्वगमिष्यसि) प्रभु बोले हेराक्षस अधम सर्वत्र चराचरमें समदृष्टि राखने वाला जोमैंहौं ताकी भार्या हरि लैगया इस प्रकार को अपराध किया ताते खड़ारहु मेरे आगेते अव कहा जाय तक्ताहि भाव स्वर्ग भूतल पातालादि जास्थान को जायगा तहाँ विना मारे न

वचैगा २१ (जनालयेतेराक्षसायेन बाणेननिहता तेनएव त्वांहनिष्यामि अद्यममगोचरेतिष्ठ) प्रभु बोले हे दुष्ट रावण जनस्थान पंचवटी में तेरे राक्षस चौदहहजार खरादिकों को जौने बाण करिके सबको संहारकिया ताही बाण करिके तोको भी मारिहौं आज मेरे संमुख संग्राम में खड़ारहु २२ (श्रीरामस्यवचःश्रुत्वा रावणःराघवंवहंतंमारुतात्मजं संख्येतीक्ष्णैःशरैःअताड़यत्) श्री रघुनाथजी के वचन सुनिके रावण धनुषबाण संधानि रघुनन्दन को लै चलनेवाले जो हनूमान् तिनहिं संग्राम में बहुते पैने बाणों करिकै मारता भया २३ (तीक्ष्णैः शरैः हतस्वअपि वायुसूनोः तेजः स्वतेजसापुनः व्यवर्द्धतचमहाकपिःननर्द) रावण के तीक्ष्ण पैने बाणों करिकै ताड़ित भी हनूमान् को तेज आपने रुद्र तेज करिकै पुनः बढ़ि जाताभया भाव व्यथाको नप्राप्तभये प्रसन्नमन पुनःमहाबली कपि हनूमान् गर्जतेभये २४ ॥

ततोदृष्ट्वाहनूमंतंसव्रणंरघुसत्तमः ॥ क्रोधमाहारयामासकालरुद्रइवापरः २५ साश्वंरथंध्वजंसूतंशस्त्रौघंधनुरंजसा ॥ छत्रंपताकांतरसाचिच्छेदशितसायकैः २६ ततोमहाशरेणाशुरावणंरघुसत्तमः ॥ विव्याधवज्रकल्पेनपाकारिरिवपर्वतम् २७ रामबाणहतोवीरश्चचालचमुमोहच ॥ हस्तान्निपतितश्चापस्तंसमीक्ष्यरघूत्तमः २८ अर्द्धचन्द्रेणचिच्छेदतत्किरीटंरविप्रभम् ॥ अनुजानामिगच्छत्वमिदानीं बाणपीडितः २९ प्रविश्यलंकामाश्वास्यश्वःपश्यसिबलंमम ॥ रामबाणेनसंविद्धो हतदर्पोऽथरावणः ३० ॥

(हनूमंतंसव्रणंदृष्ट्वाततः रघुसत्तमःअपरःकालरुद्रःइवक्रोधंआहारयामास) हनूमान्को घावन सहित देखिके तब रघुवंशनाथ यथा दूसरे प्रलयकालके रुद्रहैं ऐसा भारी क्रोध उत्पन्न करतेभये २५ (सअश्वंरथंसूतंछत्रंध्वजंपताकांधनुःशस्त्रौघंतरसाशितैःसायकैःअंजसाचिच्छेद) सहित घोड़न रावण को रथ सारथी छत्र ध्वजा पताका धनुष बाणोंको समूह इत्यादि सबनको रघुनन्दन अपने पराक्रम ते पैने बाणों करिकै शीघ्रही काटिडारते भये २६ (ततःरघूत्तमःवज्रकल्पेनमहाशरेणआशुरावणंविव्याधपाकारिःपर्वतंइव) तदनन्तर रघुनाथजी वज्रके समान महाप्रचंड एक बाण करिकै शीघ्रही रावणको ताडन करिकैसा मूर्च्छित भूमिपै गिराय दिये यथा पाकारि इंद्र वज्र प्रहारकरि पर्वत को पक्ष बलहीन करि भूमिपै गिराय दियो २७ (वीरःरामबाणहतःचचालचमुमोहचहस्तात्चापःनिपतितःतंसमीक्ष्यरघूत्तमः) यद्यपि रावण संग्राममें अविचल वीरहै परन्तु रघुनन्दनके बाण करिकै विदारण कियाहुआ रावण भी चलायमानभया पुनः मूर्च्छितभया पुनः हाथते धनुष गिरिपरा इत्यादि दशायुत जो रावण ताहि देखिके रघुनाथजी २८ (रविप्रभंतत्किरीटंअर्द्धचंद्रेणचिच्छेदबाणपीडितः अनुजानामित्वंइदानींगच्छ) मूर्च्छित देखि वीरता धर्मते प्राणघातक शर नहीं मारे सूर्यवत् प्रकाशमान ज्योति रावणको किरीटहै ताहि अर्द्धचंद्राकार बाण करिकै काटिदीन्हे पुनःबोले कि बाणव्यथा करिकै पीड़ितहसि यह मैं जानताहौं ताते तू अभी चलाजा २९ (लंकांप्रविश्यआश्वास्यश्वःममबलंपश्यसिरामबाणेनसंविद्धःअथदर्पहतःरावणः) लंकामें जाय सावधानह्वै प्रभातकाल आय मेरा बल देखेगा रामबाण करिकै घायल अब अहंकार हीन रावण ३० ॥

रामोऽपिलक्ष्मणंदृष्ट्वामूर्च्छितंपतितं

महत्त्रासलज्जयायुक्तोलंकांप्राविशदातुरः ॥

भुवि ३१ मानुषत्वमुपाश्रित्यलीलयानुशुशोचह ॥ ततःप्राहहनूमंतंवत्सजीवय लक्ष्मणम् ३२ महौषधीःसमानीयपूर्ववद्वानरानपि ॥ तथेतिराघवेणोक्तोजगामा शुमहाकपिः ३३ हनूमान्वायुवेगेनक्षणात्तीर्त्वामहोदधिम् ॥ एतस्मिन्नंतरेचारारा वणायन्यवेदयन् ३४ रामेणप्रेषितोदेवहनूमान्क्षीरसागरम् ॥ गतोनेतुंलक्ष्मण स्यजीवनार्थंमहौषधीः ३५ श्रुत्वातच्चारवचनंराजाचिंतापरोभवत् ॥ जगामरात्रा वेकाकीकालनेमिगृहंक्षणात् ३६ ॥

(महत्यालज्जयायुक्तःआतुरःलंकांप्राविशत्मूर्च्छितंभुविपतितंलक्ष्मणंदृष्ट्वारामःअपि) बड़ीलज्जायुक्त रावण शीघ्रही लंकामें प्रवेश किया अरु इहां मूर्च्छावश भूमिपै परेहुये लक्ष्मणको देखि रघुनंदन भी माधुर्यलीलामें ३१ (मानुषत्वंउपाश्रित्यलीलयाअनुशुशोचहततःहनूमंतंप्राहवत्सलक्ष्मणंजीवय) मानुष भावको प्राप्तह्वै माधुर्यलीला करिकै शोच करतेभये तदनन्तर रघुनन्दन हनूमान् प्रति बोले कि हेवत्स लक्ष्मणको सजीव करौ ३२(महाऔषधीःसंआनीयपूर्ववत्वानरान्अपिराघवेणउक्त. तथा इतिमहाकपिःआशुजगाम) द्रोणागिरि युत महा औषधी सजीवनमूरि लाय लक्ष्मणको जिआय पुनः प्रथमकी नाईं वानरोंको भी जिआवो ऐसा रघुनन्दनने कहा तब जैसा आपकहतेहौ तैसा ही करौंगो ऐसाकहि महाबली हनूमान् शीघ्रही जातभये ३३ (वायुवेगेनहनुमान्क्षणात्महोदधिंतीर्त्वाएतस्मिन्अंतरेचाराःरावणायन्यवेदयन्) पवन तुल्य वेग करिकै चले हनूमान् यह प्रतिज्ञा किये कि क्षणमात्रमें समुद्रपार उतरि शीघ्रही सगिरि औषधी लावोंगोजब चलनेपर भये ताही समय में रावणके दूत यह हाल जाय रावणके अर्थ निवेदन किये ३४ (देवलक्ष्मणस्यजीवनार्थंमहाऔषधीः नेतुंहनूमान्रामेणप्रेषितःक्षीरसागरंगतः) दूत रावण प्रति बोले कि देदेव लक्ष्मणको जिआवने अर्थ महाऔषधी सजीवनमूरि आनिबे हेत हनूमान् राम करिकै पठायेहुये क्षीरसागरको गये ३५ (चार वचनंतत्श्रुत्वाराजाचिंतापरःअभवत्रात्रौएकाकीक्षणात्कालनेमिगृहंजगाम)दूतोंको कहाहुआ वचन सो सुनिकै राजारावण बड़े चिंतायुक्त होकै रात्रिही विषे अकेले क्षणमात्रमें कालनेमिके मंदिर को जाता भया ३६ ॥

गृहागतंसमालोक्यरावणंविस्मयान्वितः ॥ अर्घ्यादिकंततःकृत्वारावणस्याग्रतः स्थितः ३७ कालनेमिरुवाचेदंप्रांजलिर्भयविह्वलः ॥ किंतेकरोमिराजेंद्रकिमाग मनकारणम् ३८ कालनेमिमुवाचेदंरावणोदुःखपीड़ितः ॥ ममापिकालवशतःक ष्टमेतदुपस्थितम् ॥ मयाशक्त्याहतोवीरोलक्ष्मणःपतितोभुवि ३९ तंजीवयितुमा नेतुमौषधीर्हनुमान्गतः ॥ यथातस्यभवेद्विघ्नंतथाकुरुमहामते ४० माययामुनि वेषेणमोहयस्वमहाकपिम् ॥ कालात्ययोयथाभूयात्तथाकृत्वेहिमंदिरे ४१ रावण स्यवचःश्रुत्वाकालनेमिरुवाचतम् ॥ रावणेशवचोमेद्यश्रृणुधारयतत्त्वतः ४२ ॥

(गृहागतंरावणंसंआलोक्यविस्मयान्वितःततःअर्घ्यादिकंकृत्वारावणस्यअग्रतः स्थितः) अकेला राति को घरमें आयाहुआ जो रावण ताहि देखिकै मारीच बड़े आश्चर्य युक्त है तदनंतर अर्घ्यपाद्यादि षोड़शोपचार पूजन करिरावण के आगे खड़ाभया ३७ (भयविह्वलःकालनेमिःप्रांजलिःइदंउवाचराजेंद्रआगमनकारणंकिंतेकिंकरोमि) भयकरिकै विकल कालनेमि हाथ जोरिरावण प्रतिइस

प्रकारको बचन बोला हे राजेंद्रआपको मेरेपास आवनेको क्या कारण ह सो कहिये आपको क्या कार्य करौं ३८ (दुःखपीड़ितःरावणःकालनेमिंइदंउवाचकालवशतः ममअपिएतत्कष्टंउपस्थितंमया शक्तयाहतःलक्ष्मणःवीरःभुविपतितः) दुःख करिकै पीड़ित रावण कालनेमि प्रति ऐसावचनबोलता भया हेमित्रकाल प्रभाव वशते मोको भी यह कष्टप्राप्त भया कि मैंने शक्ति करिकै मारा तिसधाव से मूर्च्छित लक्ष्मण वीर भूमिपै परे हैं ३९ (तंजीवयितुंऔषधीःआनेतुंहनुमान्गतः महामतेतस्य विघ्नंयथाभवेत्तथाकुरु) तिस लक्ष्मणको जिआवने हेतु औषधी आनवे हेतु क्षीरसागरको हनूमान गये हैं हे महामते ताको विघ्न जैसे होय तैसा कार्यकरौ ४० (मायामुनिवेषेणमहाकपिंमोहयस्वय थाकालात्ययःभूयात्तथाकृत्वामन्दिरेएहि) माया से मुनिवेष करिकै महा कपि हनूमानको मोहित करि जिसप्रकार निशाकाल व्यतीतहोय सो कार्य करिकै पुनः अपने मंदिरको चलेआयो४१(रावण स्यवचःश्रुत्वाकालनेमिःतंउवाचरावणेशऽद्यमेवचःशृणुतत्त्वतःधारय) रावण को वचनसुनि कालने मितिसप्रतिबोलता भया हे रावण स्वामी या समय में मेरावचन सुनौ ताहीको यथार्थ परमतत्त्व मानि धारण करौ ४२ ॥

प्रियंतेकरवाण्येवनप्राणान्धारयाम्यहम् ॥ मारीचस्ययथारण्येपुराभून्मृगरूपिणः ४३ तथैवमेनसंदेहोभविष्यतिदशानन ॥ हतापुत्राश्चपौत्राश्चबांधवाराक्षसाश्चते ४४ घातयित्वासुरकुलंजीवितेनापिकिंतव ॥ राज्येनवासीतयावाकिंदेहेनजड़ात्मना ४५ सीतांप्रयच्छरामायराज्यंदेहिविभीषणे॥ वनंजाहिमहावाहोरम्यंमुनिगणाश्रयम् ४६ स्नात्वाप्रातःशुभजलेकृत्वासंध्यादिकाःक्रियाः ॥ ततएकांतमाश्रित्यसुखासनपरिग्रहः ४७ विसृज्यसर्वतःसंगमितरान्विषयान्बहिः ॥ बहिःप्रवृत्ताक्षगणंशनैःप्रत्यक्प्रवाहय ४८ ॥

(तेप्रियंएवकरवाणिअहंप्राणान्धारयामियथापुराअरण्येमृगरूपिणः मारीचस्यअभूत्तथाएवमेभविष्यतिसंदेहः न) हे रावण तुम्हाराप्रिय कार्यतौ करिहौं परन्तु यहकार्य करिकै मैं अपनेप्राणन को न धारण करिहौं काहेते जैसे पूर्वकालवनमें मृगरूप मारीचकी जो दशाभई भावमारा गया तैसेही मेरीभी मृत्युहोइगी यामें संदेहनहीं४३ (दशाननतेपुत्राःचपौत्राःचबांधवाःचराक्षसाःहताः) हे दशमुख तुम्हें पुत्रपुनः पौत्रपुनः भाई पुनः अनेकन राक्षस ते सबमारे गये ४४ (असुरकुलंघातयित्वातव जीवितेनअपिकिंराज्येनवासीतयावाजड़ात्मनादेहेनकिं) राक्षस कुलको नाशकराय अकेले तुम्हारे जीवतरहनेते तुमको क्या सुखहै पुनः राज्यकरिअथवा सीता करिकै अथवा पंचभौतिकजड़ रूपदेह करिकै तुमको क्या फललाभहोइगो ४५ (राज्यंविभीषणेदेहिसीतांरामायप्रयच्छमहावाहोमुनिगणाश्रयंरम्यंवनंजाहि) राज्यपदको तौ विभीषण को देहुसीता को राम के अर्थदेउ हे महावाहो जहां समूह मुनि वासकरते हैं ऐसे सुंदर वनको तुमजाहु ४६ (प्रातःशुभजलेस्नात्वासंध्यादिकाःक्रियाःकृत्वाएकांततःआश्रित्यसुखासनपरिग्रहः) प्रातःकाल तीर्थादि कल्याणकारी जलमें स्नानकरि संध्यातर्पणादि नित्य क्रियाकरौ पुनः जहां एकांत स्थानहोय तहां पद्मासनादि जामें सखहोय तिसआसनते बैठो ४७ (बाह्यःविषयान्इतरान्सर्वतःसंगंविसृज्यअक्षगणंवहिःप्रवृत्तंशनैःप्रत्यक्प्रवाहय) बाहेरकी विषय यथा शब्द स्पर्श रूपरसगंधादि तथा औरहूजे स्त्री पुत्र धनधाम राज्यादि तिन सबका

संग त्यागकरि इंद्री समूह जो वासना द्वारा बाहेर विषयिनमें प्रवृत्तहैं तिनहिं खेंचिमनादि स्वाधी-नकरि धीरा धीरा पूर्वरूपजो आत्मतत्त्वताको प्राप्त होहु ४८ ॥

प्रकृतेर्भिन्नमात्मानंविचारयसदानघ ॥ चराचरजगत्कृत्स्नं देहबुद्धींद्रियादिक म् ४९ आब्रह्मस्तंबपर्यंतंदृश्यतेश्रूयतेचयत् ॥ सैषाप्रकृतिरित्युक्तासैवमायेतिकीर्तिता ५० सर्गस्थितिविनाशानांजगद्वृक्षस्यकारणम् ॥ लोहितश्वेतकृष्णादिप्रजासृजतिसर्वदा ५१ कामक्रोधादिपुत्राद्यान्हिंसातृष्णादिकन्यकाः ॥ मोहयत्यनिशंदेवमात्मानंस्वैर्गुणैर्विभुम् ५२ कर्तृत्वभोक्तृत्वमुखान्स्वगुणानात्मनीश्वरे ॥ आरोप्यस्ववशंकृत्वातेनक्रीड़तिसर्वदा ५३ शुद्धोप्यात्मायययायुक्तोपश्यतीवसदा बहिः ॥ विस्मृत्यचस्वमात्मानंमायागुणविमोहितः ५४ ॥

(अनघप्रकृतेःभिन्नंआत्मानंसदाविचारय इंद्रियादिकंदेहबुद्धी चराचरंकृत्स्नंजगत्) हे निष्पाप रावण प्रकृत मायाते भिन्न जो आत्मा है ताहि सदा विचार करौ अरु इंद्री आदिक जो देह बुद्धी चराचरादि संपूर्ण जो जगत् है ४९ (आब्रह्मस्तंबपर्यंतंयत्दृश्यतेच श्रूयतेसएषाप्रकृतिः इतिउक्ता साएवमायाइतिकीर्तिता) ब्रह्मादिसे तृणपर्यंत जो कुछ देखि परताहै पुनः जो सुनि परता है सोई यह प्रकृतिहै ऐसा आचार्यों ने कहाहै जो प्रकृति सोई माया है ऐसा भी कहते हैं तिसते न्याराकरि आत्मतत्त्व विचार करौ ५० (जगद्वृक्षस्यसर्गस्थितिविनाशानां कारणंलोहितश्वेतकृष्णादिप्रजाः सर्वदासृजति) जगत् रूपी वृक्षकी उत्पत्ति पालन संहार इत्यादि को कारण प्रकृतिहै सो अरुण रंगके जो रजोगुणी हैं श्वेतरंग जो सतोगुणी कृष्णरंगके जो तमोगुणी इत्यादि प्रजा सर्वकालमें उ-त्पन्नकरती है ५१ (कामक्रोधादिपुत्राद्यान्हिंसातृष्णादिकन्यकाःस्वैः गुणैःविभुम्आत्मानंदेवंअनिशं मोहयति) पुनः प्रकृति काम क्रोध लोभ मोह मद मात्सर्यादि पुत्रहिंसा तृष्णाआशाचिंता ममता लोलुपतादि कन्या उत्पन्न करती तिस परिवार सहित आपने गुण रजतमादिकों करिकै समर्थ जो आत्मदेव ताको दिनोराति मोहित करती है ५२ (कर्तृत्वभोक्तृत्वमुखान्स्वगुणान्आत्मनिईश्वरेआरोप्यस्ववशंकृत्वातेनसदाक्रीडति) मैंकरताहों मैं भोगकरने वालाहों इत्यादि मुख्यअपने गुणोंको आ-त्म ईश्वर विषे आरोपणकरि आपने वश करिकै तिस आत्मके साथ सदा प्रकृति जन्म मरणादिक्रीड़ाकरती है ५३ (आत्माशुद्धःअपिमायागुणविमोहितःस्वआत्मानंविस्मृत्यचययायुक्तःसदाबहिःपश्यतिइव) आत्मा शुद्धभीहै परंतु मायाके गुणों करिकै विमोहित ह्वै अपना आत्मरूप बिसारि पुनः मायाकरिकै युक्त सदा बाहेर इंद्रियों को देखताहुवा जीवभासता है ५४ ॥

यदासद्गुरुणायुक्तोबोध्यतेबोधरूपिणा ॥ निवृत्तदृष्टिरात्मानंपश्यत्येवसदास्फुटम् ५५ जीवन्मुक्तःसदादेहीमुच्यतेप्राकृतैर्गुणैः ॥ त्वमप्येवंसदात्मानंविचार्य्यनियतेन्द्रियः ५६ प्रकृतेरन्यमात्मानंज्ञात्वामुक्तोभविष्यसि ॥ ध्यातुंयद्यसमर्थोसिसगुणदेवमाश्रय ५७ हृत्पद्मकर्णिकेस्वर्णपीठेमणिगणान्विते ॥ मृदुश्लक्ष्णतरेतत्र जानक्यासहसंस्थितम् ५८ वीरासनंविशालाक्षंविद्युत्पुंजनिभांवरम् ॥ किरीटहारकेयूरकौस्तुभादिभिरन्वितम् ५९ ॥

(बोधरूपिणासद्गुरुणायुक्तःयदाबोध्यतेनिवृत्तदृष्टिः सदास्फुटंआत्मानंएवपश्यति) ज्ञानस्वरूप

सद्गुरुकरिकै युक्तह्वै जब जीव बोधको प्राप्तहोताहै तबनिवृत्तदृष्टि अर्थात्इंद्री विषयद्वारा जोबाहेरको दृष्टिहै ताको खैंचिविषयोंसों निवृत्त है जीव सदास्पष्ट अपनी आत्माको देखताहै ५५ (देहीसदा जीवनमुक्तःप्राकृतैःगुणैःमुच्यतेएवंत्वंअपिनियतेन्द्रियःसदात्मानंविचार्य) आत्माको ध्यान करनेवा-लाजीव सदाजीव न मुक्त ह्वै मायागुणों करिकै जोबंधनहै तिनसों छूटि जाताहै हे रावण इसप्रकार तुम भी शमदमादि बलइंद्रीजित् ह्वैकै सदा आत्मरूपको विचारकरो ५६ (प्रकृतेःअन्यंआत्मानंज्ञात्वामुक्तःभविष्यसियदिध्यातुंअसमर्थःअसिसगुणंदेवंआश्रय) हेरावण प्रकृति जो देहबुद्धी तासोंभिन्न आत्मअगुण ब्रह्म ताको जानिकै मुक्त ह्वै जाहुगे पुनः जो इस अगुणरूपके ध्यान करनेको नहीं स-मर्थ होतो सगुणरूप जो देवहै तिनकी शरण होउ कौन भांति ५७ (हृत्पद्मकर्णिकेमणिगणान्वितेस्वर्णपीठेमृदुश्लक्ष्णतरेतत्रजानक्यासहवीरासनंसंस्थितम्) हृदय में कमल ताकी कर्णिकामेंअनेक रंगकी मणिन सहित सोनेके सिंहासनपर कोमल अत्यन्त सचिक्कण बिछावनेपर तहां जानकी करिकै सहित रामचन्द्र वीरासनते बैठे हैं ५८ (विशालअक्षंविद्युत्पुंजनिभांबरम्किरीटहारकेयूरकौस्तुभादिभिःअन्वितम्) बड़े लंबायमान सुंदरनेत्र जिनके बिजुली समूहकी ऐसी प्रभाजामें ऐसा दिव्य पीतपट धारण किहे कोटि सूर्यवत् प्रकाशजामें ऐसा किरीटशीशपर शोभित जिनके स्वर्णमणिमय दिव्य कुंडल काननमें गजमुक्तादि अनेक मणिनकेहार ग्रीवाते उरपर शोभितकेयूर अर्थात् रत्नजटित सोने को बजुल्ला भुज में कौस्तुभ मणि आदि और हू भूषणनयुक्त सर्वांगशोभित ५९॥

नूपुरैःकटकैर्भांतंतथैववनमालया ॥ लक्ष्मणेनधनुर्द्वंद्वकरेणपरिसेवितम् ६० एवं ध्यात्वासदात्मानं रामंसर्वहृदिस्थितम् ॥ भक्त्यापरमयायुक्तोमुच्यतेनात्रसंशयः ६१शृणुवैचरितंतस्यभक्तैर्नित्यमनन्यधीः॥एवंचेत्कृतपूर्वाणिपापानिचमहांत्यपि क्षणादेवविनश्यंतितथाऽग्नेस्तूलराशयः ६२ भजस्वरामंपरिपूर्णमेकंविहायवैरंनिजभक्तियुक्तः ॥ हृदासदाभावितभावरूपमनामरूपं पुरुषंपुराणम् ६३ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्धकांडेषष्ठःसर्गः ६ ॥

(नूपुरैःकटकैःतथावनमालयाएवभांतंधनुःर्द्वंद्वकरेणलक्ष्मणेनपरिसेवितम्)नूपुरों करिकै पदकड़ों करिकै हाथ तैसेही बनमाला अर्थात् तुलसी दल कुंद मंदार पारिजात कमल इत्यादि फूलों करिकै गहा हुवा तिस बनमाला करिकै भी उरपर शोभा है एक अपना एक रघुनन्दन को इति द्वै धनुष हैं हाथ में जिनके ऐसे लक्ष्मण करिकै सेवित हैं ६० (सर्वहृदिस्थितंआत्मानंरामंपरमयाभक्त्यायुक्तः एवंसदाध्यात्वामुच्यते अत्रसंशयःन) सब भूतमात्र के हृदय में स्थित परमात्मा जो रामहैं तिनहिं जोजन परमभक्ति करिकै युक्त होकरि इसप्रकार सदाध्यान करताहै सोमुक्त होताहै यामेंसंशयनहीं ६१ (भक्तैःतस्यचरितंवैअनन्यधीः नित्यंशृणुएवंचेत्पूर्वाणिकृतपापानिच महांत्यपियथातूलराशयः अग्नेःक्षणात्एवविनश्यति पूर्वभक्तों के रचेहुये तिन रघुनंदन के चरित्र हैं तिनहिंनिश्चय करिकै सब को आशभरोसा त्यागिकै वईईश्वरआधार इति अनन्य बुद्धिह्वै करि रामचरित्र श्रवणकरो जो ऐसहीं करोगे तो तुम्हारे पूर्वके कियेहुये पाप पुनः महापाप ते सब जैसे रुईकोढेर अग्नि के छुइजात भस्म होत तैसेही सबपापक्षणै भरेमें नाश ह्वै जांयगे ६२ (वैरंविहायनिजभक्तियुक्तः रामंभजस्वकथंभूतं रामं) हे रावण वैरभाव त्यागिकै आपभक्ति युक्त ह्वै रघुनाथजी को भजोकैसे हैं रघुनाथजी (अनाम

रूपंपुरुषंपुराणंपरिपूर्णएकंसदाहृदाभावितभावरूपं) नामरूपरहितपुराण पुरुष सबमें परिपूर्णव्यापक अद्वितीय सदाहृदय करिकै ध्यान प्रीति भावकरि जाको रूपप्राप्त होनेयोग्य अर्थात् जैसाभाव करौ तैसेहीरूप ते प्राप्त होते हैं ६३ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचिते
अध्यात्मभूषणेयुद्धकाण्डेषष्ठःप्रकाशः ६ ॥

कालनेमिवचःश्रुत्वारावणोमृतसन्निभम् ॥ जज्वालक्रोधताम्राक्षःसर्पिरद्भिरग्निमत् १ निहन्मित्वांदुरात्मानंमच्छासनपराङ्मुखम् ॥ परैःकिंचिद्गृहीत्वात्वंभाषसेरामकिंकरः २ कालनेमिरुवाचेदंरावणंदेवकिंक्रुधा ॥ नरोचतेमेवचनंयदिगत्वाकरोमितत् ३ इत्युक्त्वाप्रययौशीघ्रंकालनेमिमहासुरः ॥ नोदितोरावणेनैवहनूमद्विघ्नकारणात् ४ सगत्वाहिमवत्पार्श्वंतपोवनमकल्पयत् ॥ तत्रशिष्यैःपरिवृतोमुनिवेषधरःखलः ५ गच्छतोमार्गमासाद्यवायुसूनोर्महात्मनः ॥ ततोगत्वाददर्शाथहनूमानाश्रमंशुभम् ६ ॥

सवैया ॥ दशकंधरप्रेरित कालसुनेमिबनो मुनि मारुति देखिजही । मकरीकहि जानि संहारि चले सहद्रोण चलौषध आनितही ॥ करि औषध लक्ष्मण वेगिउठे खलगोकितयों धनुबाण गही । षटकर्णसुबोधित ज्ञानकहे त्यहि रावण क्रोधि कुवाच कही (अमृतसन्निभम्कालनेमिवचःश्रुत्वाअग्निमत्सर्पिःअद्भिःइवरावणःजज्वालक्रोधताम्राक्षः) शिवजी बोले हे गिरिजा यद्यपि अमृतकेतुल्य है कालनेमि के वचनसुनिकै यथा बरत अग्निमें घृतमिला जलपरेसे ज्वलितहोत तैसेही रावणज्वलितहोता भया क्रोधकरिकै लाल ह्वै गये नेत्र १ (मत्शासनपराङ्मुखंदुरात्मानंत्वांनिहन्मिपरैःकिंचिद्गृहीत्वारामकिंकरःत्वं भाषसे) रावण बोला हे कालनेमि मेरीआज्ञा ते विमुख दुष्टात्मा तोको अभी मारताहौं क्योंकि मेरेशत्रुन से कछु धनादिलैकै रामको सेवकबनातू वार्ताकरता है २ (कालनेमिरावणंइदंउवाचदेवकिंक्रुधामेवचनंयदिनरोचतेगत्वातत्करोमि) कालनेमिरावण प्रति ऐसा बोलताभया हे देव क्या प्रयोजन है क्रोधकरिकै मेरावचन जो आपको नहींरुचता हैतौ मैं जाता हौं जोआप कहतेहौसो करताहौं ३ (इतिउक्त्वाकालनेमिर्महासुरःरावणेनएवनोदितःहनूमत् विघ्नकारणात्शीघ्रंप्रययौ) ऐसाकहि कालनेमि महाअसुर रावण करिकै पठावाहुआ हनूमान् के विघ्न करने कारण ते शीघ्रहीं जाताभया ४ (सहिमवत्पार्श्वंगत्वातपोवनंअकल्पयत्तत्रखलःमुनिवेषधरःशिष्यैःपरिवृतः) सो कालनेमि हिमांचल गिरि के समीपगया मायासो तपोवनको रचा तहां आश्रम में खल कालनेमि मुनि वेषधरि शिष्यन करिकै सहित ५ (महात्मनःवायुसूनोःगच्छतःमार्गमासाद्यततः हनूमान् गत्वाअथशुभंआश्रमंददर्श) महात्मापवन पुत्रके जानेकी जो मार्गतामें प्राप्त रहातदनंतर तहांपर हनूमान् गये अवमंगलीक आश्रम देखतेभये ६ ॥

चिंतयामासमनसाश्रीमान्पवननंदनः ॥ पुरानदृष्टमेतन्मे मुनिमंडलमुत्तमम् ७ मार्गोविभ्रंशितोवामेभ्रमोवाचित्तसंभवः ॥ यद्वाऽविश्याश्रमपदंदृष्ट्वामुनिमशेषतः८पीत्वाजलंततोयामिद्रोणाचलमनुत्तमम्॥इत्युक्त्वाप्रविवेशाथसर्वंतोयोजनाय

तम् ६ आश्रमंकदलीशालखर्जूरपनसादिभिः ॥ समावृत्तंपक्कफलैर्नम्रशाखैश्च पादपैः १० वैरभावविनिर्मुक्तंशुद्धंनिर्मललक्षणम् ॥ तस्मिन्महाश्रमेरम्येकालने मिस्सराक्षसः ११ इंद्रयोगंसमास्थायचकारशिवपूजनम् ॥ हनूमानभिवाद्याहगौ रवेणमहासुरम् १२ ॥

(श्रीमान्पवननंदनः मनसाचिंतयामास एतत्उत्तमंमुनिमण्डलंमेपुरानदृष्टं) नवीन आश्रम देखि श्रीमान्पवनपुत्र हनुमान् मनकरिकै चिंताकरतेभये कि यह उत्तम मुनि मण्डलमुनिनको आश्रम मैंने प्रथमआवने समय नहींदेखा अब कैसे देखिपरा ७ (वामार्गःविभ्रंशितःवामेचित्तभ्रमः संभवःयद्वा आश्रमपदंआविश्यअशेषतःमुनिंदृष्ट्वा) यातौ पूर्वको रास्ताभूलिगया अथवा मोको चित्तभ्रम उत्पन्न भया अथवा इस विचारसे क्या प्रयोजन है अब आश्रम में प्रवेशकरौं समग्रशिष्योंसहित मुनिका दर्शनकरौं ८ (जलंपीत्वाततःअनुत्तमम्द्रोणाचलंयामि इतिउक्त्वाअथप्रविवेशसर्वतःयोजनायतम्) इहां जलपानकरिकै तब उत्तम द्रोणाचल को जाउँ ऐसा विचारकरि हनुमान् तब आश्रम में प्रवेश करिदेखे सब दिशिते योजनभरेको विस्तार है ज्यहिआश्रमके बाह्य सींवाको ६ (पक्कफलैःचनम्र शाखैःकदलीशालखर्जूरपनसादिभिः पादपैःसमावृतंआश्रमं) पाकेफलोंकरिकैयुक्त पुनः झुकीहुई शाखोंकरिकैयुक्त ऐसे केला साखू खर्जूर कटहर इत्यादि समूहवृक्षोंकरिकै आवृत है आश्रम अर्थात् आश्रमके आसपास सघनवृक्षलगेहैं १०(तस्मिन्महारम्येआश्रमेवैरभावविनिर्मुक्तंशुद्धंनिर्म्मललक्षणं कालनेमिसराक्षसः) तिस महारमणीक आश्रमविषे बैरभाव जो ईश्वरविमुखता राक्षसोंको सहज स्वभाव ताको त्यागे शुद्ध सतोगुणीवृत्तिकोधारणकिहे शम दम विरागत्याग शांतिइत्यादि निर्म्मल लक्षणको दर्शाये सहित राक्षसों कालनेमि बैठा ११ (इन्द्रयोगंसमास्थायशिवपूजनंचकार महासुरं गौरवेणअभिवाद्यहनूमान्आह) मायामय कपटमुनिवेषसो शिवको पूजनकरताहुवा जो महाअसुर ताहि बड़ीगुरुताकरिकै प्रणामकरि हनूमान्बोलतेभये १२ ॥

भगवन्रामदूतोऽहंहनूमान्नामनामतः ॥ रामकार्येणमहताक्षीरं शब्धिंगंतुमुद्य तः १३ तृषामांबाधतेब्रह्मन्उदकंकुत्रविद्यते ॥ यथेच्छंपातुमिच्छामिकथ्यतांमे मुनीश्वर १४ तच्छ्रुत्वामारुतेर्वाक्यंकालनेमिस्तमब्रवीत् ॥ कमंडलुगतंतोयंम मत्वंपातुमर्हसि १५ भुंक्ष्वचेमानिपक्कानिफलानितदनंतरम् ॥ निवसस्वसुखेना त्रनिद्रामेहित्वरास्तुमा १६ भूतंभव्यंभविष्यंचजानामितपसास्वयम् ॥ उत्थितो लक्ष्मणःसर्वेवानरारामवीक्षिताः १७ तच्छ्रुत्वाहनुमानाहकमंडलुजलेनमे ॥ नशाम्यत्यधिकातृष्णाततोदर्शयमेजलम् १८ ॥

(भगवन्अहंरामदूतःनामतःहनुमान्नाममहतारामकार्येणक्षीराब्धिंगंतुंउद्यतः) हे भगवन् मैं रघुनाथजीको दूतहौं जाति गुण क्रियादि अनेकनामोंते विशेषिहनूमान्नामहै बड़ेभारी रामकार्यकरि आतुर क्षीरसागरको जाने हेत उद्यतहौं १३ (ब्रह्मन्मांतृषाबाधतेउदकंकुत्रविद्यतेमुनीश्वरकथ्यतां यथेच्छंपातुंइच्छामि) हे ब्रह्मन् मोको तृषाबाधाकिहेहै अर्थात् बड़ी प्यासलगीहै अरु जलकहांपरहैहे मुनीश्वरकहिये जैसी इच्छाहै तैसेही जलपानको मोको इच्छा है १४ (मारुतेःवाक्यंतत्श्रुत्वाका लनेमिःतंअब्रवीत् सममकमण्डलुगतंतोयंत्वंपातुंअर्हसि) मारुतपुत्रको कहावचन सो सुनिकै कालनेमि

तिन हनुमान्प्रति बोलताभया हे हनुमान् तुमरामदूतहौ ताते जो मेरे कमण्डलु में धराजल है ताहि पानकरिवे योग्यहै १५ (चइमानिपक्वानिफलानिभुंक्ष्वतदनंतरंमत्रसुखेननिवसस्वनिद्रांएहित्वरास्तुमा) इस जलको पानकरौ पुनः ये पकेहुये फलखाउ तदनंतर इहां सुखसे निवासकरौ निद्राकोप्राप्तहोउ शीघ्रतामतकरौ १६ (स्वयंतपसाभूतंभव्यंचभविष्यंजानामिलक्ष्मणः सर्वेवानराःरामवीक्षिताःउत्थिताः) अपने तपबलकरिकै भूत जो पूर्व है गयाहै अरु भव्य जोवर्तमानहैरहा पुनः भविष्य जो आगे होनहारहै इत्यादि सब जानताहौं लक्ष्मण तथा सबमरेहुये वानर इत्यादि रामके कृपादृष्टि देखतही उठेंगे औषधको क्या प्रयोजनहै १७ (तत्श्रुत्वाहनूमानाहमेअधिकातृष्णाकमण्डलुजलेननशाम्यति ततःमेजलंदर्शय) कालनेमिको को वचन सो सुनिकै हनुमान् बोलतेभये हे मुनि मेरे प्यास अधिक लगी है कमण्डलुको जलपीवतसंते प्यास शांत न होयगी ताते मोको तड़ागादि जलदेखावो १८ ॥

तथेत्याज्ञापयामासवटुंमायाविकल्पितम् ॥ वटोदर्शयविस्तीर्णंवायुसूनोर्जलाशयम् १९ निमील्यचाक्षिणीतोयंपीत्वागच्छममांतिकम् ॥ उपदेक्ष्यामितेमंत्रंयेनद्रक्ष्यसिचौषधीः २० तथेतिदर्शितंशीघ्रंवटुनाशलिलाशयम् ॥ प्रविश्यहनुमान्तोयमपिवन्मीलितेक्षणः २१ ततश्चागत्यमकरीमहामायामहाकपिम् ॥ अग्रसत्तंमहावेगान्मारुतिंघोररूपिणी २२ ततोददर्शहनुमान्ग्रसंतींमकरींरुषा ॥ दारयामासहस्ताभ्यांवदनंसाममारह २३ ततोंतरिक्षेददृशेदिव्यरूपधरांगना ॥ धान्यमालीतिविख्याताहनूमंतमथाब्रवीत् २४ ॥

(तथाइतिमायाविकल्पितं वटुंआज्ञापयामासवटोविस्तीर्णं जलाशयंवायुसूनोःदर्शय) बहुतभला ऐसा कहि कालनेमि पुनः माया करिकै रचा हुआ जो ब्रह्मचारी ताहि आज्ञाकिया कि हे वटो बड़ा भारी जो तड़ाग है ताहि हनुमान् को देखाय देउ १९ (अक्षिणीनिमील्यतोयं पीत्वाचममांतिकम् आगच्छतेमंत्रं उपदेक्ष्यामियेनच औषधीःद्रक्ष्यसि) कालनेमि बोला हेहनूमान् नेत्र मूंदिकै जलपान किहेउ पुनः मेरेपास आयो तुम को ऐसा मंत्र उपदेश करिहौं जाके प्रभाव करिकै तुम सब औषधी देखोगे भाव भ्रम न परी २० (तथाइतिवटुनाशीघ्रं शलिलाशयम् दर्शितंप्रविश्य हनुमान्मीलितईक्षणः तोयंअपिवत्) बहुत भली ऐसा कहि ब्रह्मचारीने शीघ्रही लय जाय हनुमान्को तड़ाग देखाय दिया तामें पैठिकै हनुमान् नेत्र मूँदि जलको पान करनेलगे २१ (चततःमहामाया घोररूपिणीमकरीवेगात् आगत्यमहाकायंमारुतिंअग्रसत्) पुनः तदनंतर महामायावती भयंकर है रूप जाको ऐसी मकरी महाभारी वेगते आय कै महाकपि जोमारुतनंदन हनुमान् तिनहिं ग्रास करने लगी अर्थात् खाय जाना चही २२ (ततःहनुमान्ग्रसतींमकरींददर्श रुषाहस्ताभ्यांवदनंदारयामास साममारह) तदनंतर हनुमान् ग्रास करने वाली मकरी को देखि क्रोध करि हनुमान्जी दोऊ हाथौं करिकै वाको मुख फारिडारे तिस व्यथाते तुरतहीं मरिजाती भई पुनः दिव्यरूप अप्सरा ह्वैकै स्वर्ग को चली २३ (ततःदिव्यरूपधराअंगना अन्तरिक्षेददृशे धान्यमालीइतिविख्याता अथहनूमंतंअब्रवीत्) तदनंतर दिव्य रूप धारण किहे स्त्री अप्सरा आकाशमें देखि परी धान्यमाली ऐसा जाको नाम प्रसिद्ध सो अब हनूमान् प्रति बोलती भई २४ ॥

त्वत्प्रसादादहंशापाद्विमुक्तास्मिकपीश्वर ॥ शप्ताहंमुनिनापूर्वमप्सराकारणान्त

रे २५ आश्रमेयस्तुतेदृष्टःकालनेमिर्महासुरः ॥ रावणप्रहितोमार्गेविघ्नंकर्तुंतवा नघ २६ मुनिवेषधरोनासौमुनिर्विप्रविहिंसकः ॥ जहिदुष्टंगच्छशीघ्रंद्रोणाचल मनुत्तमम् २७गच्छाम्यहंब्रह्मलोकंत्वत्स्पर्शाद्धतकल्मषा॥इत्युक्तासाययौस्वर्गेहनू मानप्यथाश्रमं २८ आगतंतंसमालोक्यकालनेमिरभाषत॥ किंविलंबेनमहतात ववानरसत्तम २९ गृहाणमत्तोमंत्रांस्त्वंदेहिमेगुरुदक्षिणाम् ॥ इत्युक्तोहनुमान् मुष्टिंदृढंबध्वाहराक्षसम् ३० ॥

(कपीश्वरत्वत्प्रसादात् अहंशापात्विमुक्तास्मि पूर्वंअप्सराकारणांतरे अहंमुनिनाशप्ता) हेकपी- श्वर हनूमान् आप के प्रसादते मैं शापते छूटि गईहौं पूर्वकी मैं अप्सराहौं अरु यह जो मुनि बना बैठा है सो गंधर्वहै हम दोऊ दुर्वासाको देखिहँसे इस कारणते हमको मुनिने शापदिया हमप्रार्थना किया तब आपकेहाथों मृत्युद्वारा उद्धार कहा २५ (यस्तुआश्रमेतेदृष्टः महाअसुरःकालनेमिः अनघ मार्गेतवविघ्नंकर्तुं रावणप्रहितः) जो आश्रम में बैठा तुम देखाहै वह महाअसुर कालनेमिहै हे नि- पाप राह में तुम्हारे विघ्नकरने हेत रावणने पठावा है २६ (असौमुनिःनविप्रविहंसकः मुनिवेषधरः दुष्टंजहिशीघ्रं अनुत्तमंद्रोणाचलंगच्छ) यह मुनि नहींहै ब्राह्मणों को घात करने वाला राक्षसहै तुम को बिल मावने हेत मुनि को वेषधारण किहे बैठाहै ताते दुष्टको मारि शीघ्रहीं उत्तम द्रोणाचल को जाउ २७ (त्वत्स्पर्शाद्धतकल्मषा अहंब्रह्मलोकंगच्छामि इतिउक्त्वासास्वर्गंययौ अथहनूमान्अपि आश्रमंआगतं) हेहनूमान्जी आपकेअंगमेरेतन स्पर्श होने ते छूटिगये पाप शुद्ध ह्वै मैं अब ब्रह्म लोक को जातीहौं ऐसा कहि स्वर्ग को जाती भई अब हनुमान् भी आश्रम को आये २८ (तंसमा लोक्यकालनेमिः अभाषतवानरसत्तम महताविलम्बेनतवकिं) आवतेहुये जो हनुमान् तिनहिं देखि कालनेमि बोला हे वानरों में उत्तम हनूमान् बड़ी बिलंब करिकै तुम्हारा क्या प्रयोजन है ताते शीघ्रहीं २९ (त्वंमत्तःमंत्रान्गृहाणमेगुरुदक्षिणांदेहिइतिउक्तः दृढंमुष्टिंबध्वाहनुमान् राक्षसम्आह) तुम मोसों मंत्रों को ग्रहण करौ अरु मोको गुरुदक्षिणा देहु ऐसा कालनेमिकहा तब पुष्ट मुष्टिका बांधि हनुमान् राक्षस कालनेमि प्रति बोलते भये ३० ॥

गृहाणदक्षिणामेतामित्युक्त्वानिजघानतम् ॥ विसृज्यमुनिवेषंसःकालनेमिर्महा सुरः ३१ युयुधेवायुपुत्रेणनानामायाविधानतः ॥ महामायिकदूतोसौहनूमान् मायिनांरिपुः ३२ जघानमुष्टिनाशीर्ष्णिभग्नमूर्द्धाममारसः ॥ ततःक्षीरनिधिं गत्वादृष्ट्वाद्रोणंमहागिरिम् ३३ अदृष्ट्वाचौषधीस्तत्रगिरिमुत्पाट्यसत्वरः ॥गृहीत्वा वायुवेगेनगत्वारामस्यसन्निधिम् ३४ उवाचहनुमान्राममानीतोऽयंमहागिरिः॥ य द्युक्तंकुरुदेवेशविलंबोनात्रयुज्यते३५श्रुत्वाहनूमतोवाक्यंरामःसंतुष्टमानसः॥गृही त्वाचौषधीःशीघ्रंसुषेणेनमहामतिः ३६ ॥

(एतांदक्षिणांगृहाणइतिउक्त्वातम्निजघानसःकालनेमिःमहाअसुरःमुनिवेषंविसृज्य) हनुमान् बोले हे मुनि यह दक्षिणाग्रहण करौ ऐसाकहि ताके मुष्टिका मारते भये तबसो कालनेमि महा असुर मुनि वेषत्याग करि पूर्ववत् राक्षस रूप ह्वैकै ३१ (नानामायाविधानतः वायुपुत्रेणयुयुधेअसौ हनूमान् महामायिकदूतः मायिनांरिपुः) अनेकमाया छल उपाय करि कालनेमि हनुमान् से युद्ध

करता भया यह हनुमान् महामाया के पति रघुनंदनके दूतहैं अरुमायावी राक्षसोंके शत्रुहैं ३२(मुष्टि नाशीर्ष्णिजघानभग्नमूर्द्धासःममारततःक्षीरनिधिंगत्वामहागिरिद्रोणंदृष्ट्वा) हनुमान् मुष्टिका करिकै वाके शीशमें ऐसे वेगसे मारेजातों फाटि गया शिशसो राक्षस मरिगया तदनंतर हनुमान् क्षीरसागर को गये महापर्वतद्रोणाचल को देखे ३३ (चतत्रऔषधीअदृष्ट्वासत्वरःगिरिंउत्पाट्यगृहीत्वावायुवेगे नरामस्यसन्निधिमुगत्वा) पुनः तहां औषधी न देखे शीघ्रही पर्वतउखारिकै हाथों में लैकै वायुवेगक-रिकै रघुनन्दनके समीप को हनुमान्जीगये ३४ (हनुमानरामंउवाचअयंमहागिरिःआनीतः देवेशयद्यु क्तंकुरुअत्रविलम्बोनयुज्यते) हनुमान् रघुनन्दनप्रति बोलते भये कि यह महाभारी पर्वततो मैं लै आयाहों हे देवेश जो कार्य करिवेयोग्यहोय सो कीजिये अबविलम्ब न कीजिये भावविलम्बकोसमय नहीं है ३५ (हनूमतःवाक्यंश्रुत्वासंतुष्टमानसःरामःशीघ्रंऔषधीर्गृहीत्वाचमहामतिःसुखेणेन) हनूमा-न्कोकहाहुवा वचनसुनिकै बड़े प्रसन्नमन सो रघुनन्दन शीघ्रही औषधी लैकै महाबुद्धिमान् जो वैद्य सुखेण है ताके हाथों करिकै ३६ ॥

चिकित्सांकारयामासलक्ष्मणायमहात्मने ॥ ततःसुप्तोत्थितइवबुद्ध्वाप्रोवाचलक्ष्मणः ३७ तिष्ठतिष्ठक्वगंतासिहन्मीदानींदशानन ॥ इतिब्रुवंतमालोक्यमूर्ध्न्यवघ्राय राघवः ३८ मारुतिंप्राहवत्सात्वत्प्रसादान्महाकपे॥ निरामयंप्रपश्यामिलक्ष्मणं भ्रातरंमम ३९ इत्युक्त्वावानरैःसार्द्धंसुग्रीवेणसमन्वितः ॥ विभीषणमतेनैवयुद्धा यसमवस्थितः ४० पाषाणैःपादपैश्चैवपर्वताग्रैश्चवानरः ॥ युद्धायाभिमुखाभूत्वा ययुःसर्वेयुयुत्सवः ४१ रावणोविव्यथेरामबाणैर्विद्धोमहासुरः ॥ मातंगइवसिंहेनग रुडेनेवपन्नगः ४२ ॥

(महात्मनेलक्ष्मणायचिकित्सांकारयामासततःसुप्तःउत्थितइवबुद्ध्वाचलक्ष्मणःप्रोवाच)महात्मा लक्ष्मण के अर्थरुजहारक उपाय करावते भये तदनंतर जैसे कोउसोवत से जागि उठै तैसेही चैत-न्य है उठि पुनः लक्ष्मण बोलते भये ३७ (दशाननतिष्ठतिष्ठक्वगंतासिइदानींहन्मिइतिब्रुवंतंआ लोक्यराघवःमूर्ध्न्यवघ्राय) हे दशमुख खड़ाहो खड़ाहो कहांजाताहै अभी तोको मारताहौं ऐसाकहते हुये लक्ष्मणकोदेखिकै रघुनन्दन वात्सल्यप्रीतिवश उरमेंलगाय शीशसूंघिलेतेभये ३८ (मारुतिंप्राह महाकपेवत्सत्वत्प्रसादात्ममभ्रातरंलक्ष्मणंअद्य निरामयंपश्यामि) पुनः हनुमान् प्रति रघुनन्दन बोलते भये हेमहाकपे हे वत्स तुम्हारेही प्रसादते अपने भाई लक्ष्मण को अब मैं रोग रहित अर्थात् प्रसन्नमन देखताहौं३९(इतिउक्त्वाविभीषणमतेनसुग्रीवेणसमन्वितः वानरैःसार्द्धंयुद्धायसमवस्थितः) इस प्रकार हनुमान्सो कहि पुनःरघुनन्दन विभीषणके मत करिकै भाव जैसीयुक्ति विभीषण बताया ताहीभांति सुग्रीव करिकै युक्त वानरों सहित युद्धके अर्थ उठि चले ४० (पाषाणैःचएवपादपैः चप र्वताग्रैःयुयुत्सवः सर्वेवानराःययुः युद्धायअभिमुखाभूत्वा) पाषाणों करिकै पुनः वृक्षों करिकै पुनः पर्वत के शिखों करिकै युद्ध करिबे की उत्साह राखे सब वानर लंकासमीप जातेभये तहां युद्धकरने अर्थ राक्षसों के संमुख भये ४१ (रामबाणैःविद्धः महासुरः रावणःविव्यथेसिंहेन मातंगइवगरुडेन इवपन्नगः) रघुनंदन के बाणों करिकै घायल महा असुर रावण बड़ी व्यथा पीड़ा को प्राप्तहै यथा सिंह करिकै प्रहार किया हुआ हाथी यथा गरुड़ करिकै प्रहार किया हुआ सर्प पीड़ित ४२ ॥

अभिभूतोऽगमद्राजाराघवेणमहात्मना । सिंहासनेसमाविश्यराक्षसानिदमब्रवी
त्४३ मानुषेणैवमेमृत्युमाहपूर्वंपितामहः ॥ मानुषोहिनमांहंतुंशक्तोस्तिभुविकश्च
न४४ ततोनारायणःसाक्षान्मानुषोभून्नसंशयः ॥ रामोदाशरथिर्भूत्वामांहंतुंसमुप
स्थितः४५ अनरण्येनयत्पूर्वंशप्तोऽहंराक्षसेश्वराः ॥ उत्पत्स्यतेचमद्वंशेपरमात्मा
सनातनः ४६ तेनत्वंपुत्रपौत्रैश्चबान्धवैश्चसमान्वितः॥हनिष्यसेनसंदेहइत्युक्त्वा
मांदिवंगतः४७ सएवरामःसंजातोमदर्थेमांहनिष्यति ॥ कुंभकर्णस्तुमूढात्मासदा
निद्रावशंगतः ४८ ॥

(महात्मनाराघवेणराजाअभिभूतःअगमत्सिंहासनेसमाविश्यराक्षसानइदंअब्रवीत्) तैसेही दशा महात्मारघुनंदन करिकै राजा रावण की होती भई अर्थात् सिंह के चोटकीन्हे हाथी भयातुर गरुड़ के चोटते सर्प भयातुरहोते तैसेही रघुनंदन के बाणलागे ते रावण भी जानिलिया कि मोको मार डालेंगे बचोंगो नहीं इति हारिमानि मंदिरमें आय सिंहासनपर बैठि राक्षसन प्रति ऐसावचन बोलता भया ४३ (मानुषेणएवमेमृत्युंपितामहःपूर्वंआहमानुषःहिकश्चनभुविनअस्तिमांहंतुंशक्तः)मानुषहीके हाथ करिकै मेरमृत्यु ब्रह्मापूर्वही कहा है सो अवश्यही होइगी अरुमानुष ऐसा कोई भूतल में नहीं है जो मोको मारने को समर्थ होय ४४ (ततःसाक्षात्नारायणःमानुषःअभूत्संशयःनदाशरथिः रामःभूत्वामांहंतुंसमुपस्थितः) ताते साक्षात् नारायण आपही मानुष भये हैं यामें संशयनहीं सोई दशरथ के पुत्र राम ह्वैकै मेरे मारने हेत इहांआय प्राप्तभये ४५ (राक्षसेश्वराःयत्पूर्वंअनरण्येनअहंशप्तःपरमात्मासनातनःमत्वंशेउत्पत्स्यतेच) रावण बोला हे राक्षउत्तमौजो पूर्व अयोध्याके राजा अनरण्यनेमोको शाप दिया है कि परमात्मा सनातन मेरे वंशमें उत्पन्न होंगे पुनः ४६ (तेनत्वंचपुत्रपौत्रैःचबांधवैःसमन्वितःहनिष्यसेसंदेहःनइतिमांउक्त्वादिवंगतः) तिनपरमात्माके हाथौं करिकै तूपुनः पुत्रपौत्रपुनः भाइन करिकै सहित नाश ह्वै है इसभांति मोको कहिकै स्वर्गको गये अर्थात् दिग्विजय में युद्धभई रावण के मारे प्राणत्याग समय अनरण्य शापदिया ४७ (सएवमत्अर्थेसंजातःरामः मांहनिष्यतितुमूढात्माकुम्भकर्णःसदानिद्रावशंगतः) सोई परमात्मा मेरे मारने अर्थ उत्पन्न भये राम सो मोको मारेंगे इति मेरीमृत्यु निश्चय भई पुनः मूढबुद्धी कुम्भकर्ण सदानींदें के वशभाव रातिंउ दिनसोवै करता है ४८ ॥

तंविबोध्यमहासत्वमानयंतुममांतिकम्॥इत्युक्तास्तेमहाकायास्तूर्णंगत्वातुयत्नतः
४९ विबोध्यकुंभश्रवणंनिन्यूरावणसान्निधिम्॥नमस्कृत्यसराजानमासनोपरिसंस्थि
तः ५० तमाहरावणोराजाभ्रातरंदीनयागिरा॥कुंभकर्णनिबोधत्वंमहत्कष्टमुपस्थि
तम् ५१ रामेणनिहताःशूराःपुत्राःपौत्राश्चबान्धवाः॥ किंकर्तव्यमिदानीमेमृत्युका
लउपस्थिते ५२ एषदाशरथीरामःसुग्रीवसहितोबली ॥ समुद्रंसबलस्तीत्वार्मूलं
नःपरिकृंतति ५३ येचराक्षसामुख्यतमास्तेहतावानरैर्युधि ॥ वानराणांक्षयंयुद्धेन
पश्यामिकदाचन ५४ ॥

(महासत्वंतंविबोध्यतुममांतिकंआनयन् इतिउक्ताःतेमहाकायाःतूर्णंगत्वातुयत्नतः) महाबलीजो कुम्भकर्ण ताहि जगाय कै पुनः मेरेसमीप को लवायल्लावो ऐसा रावण ने कहासो सुनिते राक्षस

बड़ी देहवाले तुरंतहीगयेपुनः यत्नंते४९(कुम्भश्रवर्णविवोध्यरावणसन्निधिम्निन्यूसराजानंनमस्कृत्य आसनोपरिसंस्थितः) तेराक्षस अनेक यत्नकरिकै कुम्भकर्णको जगाय रावणके समीपको लवायलाये सो कुम्भकर्ण आय राजा रावण को नमस्कार करि अपने आसन पर बैठजाता भया ५० (राजा रावणःतंभ्रातरंदीनयागिराआहमहत्कष्टंउपस्थितंकुम्भकर्णत्वंनिबोध) राजा रावण तिस अपनेभाई कुम्भकर्ण प्रति दीनता करिकै वाणी बोलता भया कि यासमय मोको बड़ाभारी कष्टप्राप्त भया है ताते हे कुम्भकर्ण सो बना बिगरा तुमजानौ ५१ (पुत्राःपौत्राःचबांधवाःशूराःरामेणनिहताःइदानीं मे मृत्युकाल उपस्थितेकिंकर्तव्यं) पुत्रपौत्र पुनः बंधुवर्ग शूरयावत् संग्राम सन्मुखभये सबराम क· रिकै मारेगये अब यासमयमें मेरा मृत्युकाल आय प्राप्तभया अवमैं क्या करिसक्ताहौं आव बचि नहीं सक्ताहौं ५२ (सुग्रीवसहितःएषदाशरथीरामःवलीसवलःसमुद्रंतीर्त्वानिःमूलंपरिकृंतति) वानरौं को राजा सुग्रीव सहित यह अवधेश दशरथ को पुत्रराम बड़ावली सहित वानरी सेना समुद्रको उतरि आय हमारी मूल जो सेना ताको काटि रहे हैं ५३ (चयेमुख्यतमाःराक्षसाःतेयुधि वानरैःहताः वानराणांक्षयंयुद्धेकदाचननेपश्यामि) पुनः जे वड़े मुखिया वरि राक्षस रहे ते सब युद्ध में वानरौं करिकै मारेगये अरु वानरौंकी नाश युद्धविषे कभी नहीं देखताहौं ५४ ॥

नाशयस्वमहाबाहोयदर्थंपरिबोधितः ॥ भ्रातुरर्थेमहासत्वकुरुकर्मसुदुष्करम् ५५
श्रुत्वातद्रावणेंद्रस्यवचनंपरिदेवितम् ॥ कुंभकर्णोजहासोच्चैर्वचनंचेदमब्रवीत् ५६
पुरामंत्रविचारेतेगादितंयन्मयानृप ॥ तदद्यत्वामुपगतंफलंपापस्यकर्मणः ५७
पूर्वमेवमयाप्रोक्तोरामोनारायणःपरः॥सीताचयोगमायेतिबोधितोपिनबुध्यसे ५८
एकदाहंवनेसानौविशालायांस्थितोनिशि ॥ दृष्टोमयामुनिःसाक्षान्नारदोदिव्यद
र्शनः ५९ तमब्रुवन्महाभागकुतोगंतासिमेवद ॥ इत्युक्तोनारदःप्राहदेवानांमं
त्रणेस्थितः ६० ॥

(महाबाहोनाशयस्वयत्अर्थंपरिबोधितःमहासत्वभ्रातुःअर्थेदुष्करंकर्मकुरु) हे महाबाहु मेरेशत्रु सेना को नाशकरौ जिस अर्थ तुमको जगायाहौं हे महाबल अपने भाईके हित अर्थ जो किसीको किया न ह्वैसकै ऐसा रणमें दुष्कर कर्मकरौ ५५ (परिदेवितम्रावणेंद्रस्यवचनंतत्श्रुत्वाकुंभकर्णःउच्चैःजहासचइदंवचनंअब्रवीत्) विलापपूर्वक जो रावण को वचन सो सुनिकै कुंभकर्ण ऊँचेस्वर करिकैहँसताभया आव याकी हियो कपारकी फूटी हैं इतिहँसिकै पुनः ऐसा वचन बोलता भया ५६ (नृप पुरामंत्रविचारेमयायत्तेगदितंतत्अद्यत्वांपापस्यकर्मणःफलंउपागतं)हे नृप रावण प्रथमही मंत्र वि- चार समय में मैंने जो बात आपसों कहाहै तब नहीं मानेउ सोई अब या समय में आपको पाप कर्मोंको पूर्ण फलआय प्राप्तभया ५७ (पूर्वंएवमयाप्रोक्तःरामःपरःनारायणःचसीतायोगमायाइतिबोधितःअपिनबुध्यसे) हे राजन् प्रथम भी मैंने कहाहै कि मानुष न जानौ राम परात्परनारायण हैं पुनः सीता नारायणकी योगमायाहै इत्यादि वार्ताकरि बहुत बोध कराया तबभी तुमको बोधन भया अर्थात् नरस्त्रीमाने सीताको राखे रहेउ सोई पापको फलहै ५८ (एकदावनेसानौविशालायांअहंनिशिस्थितःदिव्यदर्शनःमुनिःसाक्षात्नारदःमयादृष्टः) एक समय वनमें पर्वत के ऊपर विशाला नाम नगरीमें मैं रात्रीमें स्थितरहौं तहां दिव्यहै दर्शन जिनका ऐसे मुनि साक्षात् नारद आतेहुये मैंने दे- खा ५९ (तंअब्रुवन्महाभागकुतःगंतासिमेवदइतिउक्तःदेवानांमंत्रणेस्थितःनारदः प्राह) तिनन्नारद

प्रतिमें बोलेउ कि हे महाभाग आपकहांते आवते हौ मोसो कहिये ऐसामैने कहा सो सुनि देवतोंकी सलाह में वैठिकै आयेहुये नारदसो मो प्रतिवोलतेभये ६० ॥

तत्रोत्पन्नमुदंतंतेवक्ष्यामिशृणुतत्त्वतः॥ युवाभ्यांपीड़िताःदेवाः सर्वेविष्णुमुपागताः ६१ ऊचुस्तेदेवदेवेशंस्तुत्वाभक्त्यासमाहिताः ॥ जहिरावणमक्षोभ्यंदेवत्रैलोक्य कंटकम् ६२ मानुषेणमृतिस्तस्यकल्पिताब्रह्मणापुरा ॥ अतस्त्वंमानुषोभूत्वाजहि रावणकंटकम् ६३ तथेत्याहमहाविष्णुःसत्यसंकल्पईश्वरः ॥ जातोरघुकुलेदेवोरा मइत्यभिविश्रुतः६४सहनिष्यतिवःसर्वानित्युक्त्वाप्रययौमुनिः ॥ अतोजानीहिरा मंत्वंपरंब्रह्मसनातनम् ६५ त्यजवैरंभजस्वाद्यमायामानुषविग्रहम् ॥ भजतोभक्ति भावेनप्रसीदतिरघूत्तमः ६६ ॥

(तत्र उत्पन्नंउदंतंतत्त्वतःतेवक्ष्यामिशृणुयुवाभ्यांपीडिताःसर्वेदेवाःविष्णुंउपागताः) नारद मोसो वोले हे कुंभकर्ण तहां देवतौं की समाज को उत्पन्न हुवा वृत्तांत सो यथार्थ में तुमसो कहता हौंसु० नौ तुम अरु रावण दोउनकरिकै पीड़ित सब देवता विष्णुके पासको गये ६१ (तेभक्त्यासमाहिता स्तुत्वादेवदेवेशंऊचुःदेवत्रैलोक्यकंटकंअक्षोभ्यंरावणंजहि) देवता सबते भक्ति करिकै सहित स्तुति करिकै देवनके देव जो ब्रह्मा शिवादि तिनके ईश नारायण प्रति ब्रह्मादि देवता वोलते भये कि हे देवतीनिहूलोकन को कंटक जो किसीको डरतानहीं है तिस रावण को मारौ ६२ (तस्यमानुषे णमृतिःपुराब्रह्मणाकल्पिताअतःत्वंमानुषःभूत्वाकंटकंरावणंजहि) तिस रावणकी मानुष करिकै मृत्यु होय इति पूर्वही ब्रह्माने रचिराखाहै इससे आप मानुष ह्वैकै कंटक रावणको मारिये ६३ (महावि ष्णुःतथाइतिआहईश्वरःसत्यसंकल्पदेवःरामइतिअभिविश्रुतःरघुकुलेजातः) देवतौं की विनती सुनि महा विष्णु वोले हे देवतौ जो कहते हौ सोई करौंगो ऐसाकहि ईश्वर सत्यसंकल्प देवजो कहैं सोई करैं तातेराम ऐसानाम लोकमें प्रसिद्ध करि रघुकुलमें उत्पन्न भये हैं ६४ (सवःसर्वान्हनिष्यतिइ तिउक्त्वामुनिःप्रययौअतःत्वंरामंपरंब्रह्मसनातनंजानीहि) सोई रघुवंशनाथ तुमसव राक्षसोंको मार हिंगे ऐसा कहि नारद मुनि चले जातेभये ताते हे रावण तुम रामको परब्रह्म सनातनजानौ ६५ (वैरंत्यजमायामानुषविग्रहम्अद्यभजस्वभक्तिभावेनभजतःरघूत्तमःप्रसीदति) हे राजन् वैरभाव त्यागि प्रीतिभाव करिकै जो दिव्यमाया करिकै मानुषतन धारण किहे हैं तिन रघुनन्दनको अब भजौ भक्तिभाव करिकै भजे रघुवंशनाथ प्रसन्न होते हैं ६६ ॥

भक्तिर्जनित्रीज्ञानस्यभक्तिर्मोक्षप्रदायिनी ॥भक्तिहीनेनयत्किंचित्कृतंसर्वमसत्समं ६७ अवताराःसुबहवोविष्णोर्लीलानुकारिणः ॥ तेषांसहस्रसदृशोरामोज्ञानम यःशिवः ६८ रामंभजंतिनिपुणामनसावचसानिशम् ॥ अनायासेनसंसारंतीर्त्वा यांतिहरेःपदम् ६९ येराममेवसततंभुविशुद्धसत्वाध्यायंतितस्यचरितानिपठं तिसंतः॥मुक्तास्तुएवभवभोगमहाहिपाशैःसीतापतेःपदमनंतसुखंप्रयांति ७० ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्धकाण्डेसप्तमःसर्गः ७ ॥

(ज्ञानस्यजनित्रीभक्तिःमोक्षप्रदायिनीभक्तिः) देह व्यवहार असत्यमानि शुद्ध आत्मरूपको सत्य

जानना यह जो ज्ञानहै ताको जीवके अन्तर उत्पन्न करनेवाली भक्तिहै पुनः मोक्षको देनेवाली भक्तिहै (भक्तिहीनेनयत्किंचित्कृतंसर्वंअसत्समम्) पुनः भक्ति करिकै हीन मनुष्य यज्ञतीर्थ दान पूजा व्रतादि जो कछुक सत्कर्म करताहै ते सब असत्कर्मके समदुख ह्वैजातेहैं ६७ (लीलानुकारिणः विष्णोःसुबहवःअवताराःतेषांसहस्रसदृशोज्ञानमयःशिवःरामः) मच्छ कच्छ वाराह नृसिंह वामन परशुराम इत्यादि लीलाकरने वाले विष्णुके सुन्दर बहुत अवतारहैं तिन हजारों अवतारके समान अकेले अखण्ड ज्ञानमय कल्याण रूपराम अवतारीहैंयथाश्रुतिः सःश्रीरामः सवितारीसर्वेषामीश्वरः यमेवेशःवृणुतेसःपुमानस्तुयमवेदस्माद्भूर्भुवःस्वःत्रिगुणमयोवभूव ६८(निपुणाअनिशंमनसावचसारामंभजंतिअनायासेनसंसारंतीर्त्वाहरेःपदंयांति) जे बुद्धिते प्रवीनजनहैं ते दिनों रातिमन करिकै स्वरूपको ध्यानवचनकरि नामस्मरण इसभांति रामको भजतेहैं ते विना परिश्रम संसार सिंधुको तरि कैहरिके पदको जातेहैं ६९ (शुद्धसत्वायेभुविसंत सततंरामं एवध्यायंति तस्यचरितानि पठंतिभव भोगमहा अहिपाशैः मुक्तः एवतुअनंतसुखंसीतापतेःपदंप्रयांति) शुद्धहैअन्तःकरण जिनकोऐसे भूमिपैजेसंत सदारघुनाथैजीको ध्यानकरते हैं राम चरितनको पढ़तेहैं ते संसारको भोगरूप जो महासर्प ताकी पाशों करिकै छूटि पुनः अनन्तसुखहै जहां ऐसे सीता पतिके पदको जातेहैं ७० ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचिते
अध्यात्मभूषणेयुद्धकाण्डेसप्तमःप्रकाशः ७ ॥

कुंभकर्णवचःश्रुत्वाभृकुटीकुटिलाननः ॥ दशग्रीवोजगादेदमासनादुत्पतन्निव १
त्वमानीतोनमेज्ञानबोधनायसुबुद्धिमान् ॥ मयाकृतंसमीकृत्ययुद्धस्वयदिरोचते २
नोचेद्गच्छसुषुप्त्यर्थंनिद्रात्वांबाधतेधुना॥रावणस्यवचःश्रुत्वाकुंभकर्णोमहाबलः३
रुषोयमितिविज्ञायतूर्णंयुद्धायनिर्ययौ ॥ सलंघयित्वाप्राकारंमहापर्वतसन्निभाः ४
निर्ययौनगरात्तूर्णंभीषयन्हरिसैनिकान्॥ सननादमहानादंसमुद्रमभिनादयन् ५
वानरान्कालयामासबाहुभ्यांभक्षयन्रुषा॥कुंभकर्णंतदादृष्ट्वासपक्षमिवपर्वतम्रद् ॥

सवैया ॥ घटकर्ण जुरोरणकीशहने लखतै त्यहिराघव प्राणहरी । ऋषिदेवसनारद आयलखेसुख माप्रभुकी विनतीसुकरी ॥ घननादकरै स्वजयीमखको कहतेति विभीषण पासहरी । तियभोजननींद तजेइनहै इतिलक्ष्मण सों वहदुष्टमरी ॥ (कुंभकर्णवचःश्रुत्वादशग्रीवः भृकुटीकुटिलाननः आसनात् उत्पतन्निवइदंजगाद) शिवजीबोले हे गिरिजा कुम्भकर्णको वचन सुनि रावण क्रोधवशभौंहैं टेढ़ीह्वै गई मुख लाल ह्वैगया आसनते उछरिकरि ऐसा वचनबोला १ (मेज्ञानबोधायसुबुद्धिमान्त्वंनआनीतःमयाकृतंसमीकृत्ययदिरोचतेयुद्धस्व) हे कुम्भकर्ण मोकोज्ञान उपदेशकरनेको सुन्दर बुद्धिमान् जानिकै तुम नहीं बुलायेगयो है भाववली वीरजानिकै बुलाये गयो है ताते जो कछु मैंने किया सो व्यापार मेरी समान अंगीकार करिकै जो रुचैतौ युद्धकरौ२ (नोचेत्सुषुप्त्यर्थंगच्छअधुनात्वांनिद्राबाधतेरावणस्यवचःश्रुत्वामहाबलःकुम्भकर्णः) जो न युद्धकरो तौ सोवने अर्थजाउ अबहीं तुमकोनींद बाधा किहे है इतिरावणके वचनसुनिकै महाबली कुम्भकर्ण ३ (अयंरुषःइतिविज्ञाययुद्धायतूर्णंययौ महापर्वतसन्निभः सप्राकारंलंघयित्वा) यह रावण क्रोधाधीनहै ऐसाजानि युद्धके अर्थ शीघ्रही जाता भया महाभारी पर्वतके तुल्यसो कुंभकर्णलंका कोटरौनीको नांघिकै ४ (हरिसैनिकान्भीषयन्नगरात्

तूर्णंनिर्ययौसमुद्रंअभिनादयन्महानादंसननाद) वानरी सेनाको भय उपजावतसंते नगरते शीघ्रही कढ़ासमुद्रको नादकरावतसंते भारी शब्दते गर्जताभया ५ (वानरान्कालयामास रुपावाहुभ्यांभक्ष यन्तदासपक्षपर्वतंइवकुंभकर्णंदृष्ट्वा) वानरनको मारताहुआ क्रोधकरि दोऊ हाथों गहिकरिकै वानरोंको भक्षणकरताहुआ आवताहै ताही समयमें सहित पक्षनपर्वतकी समान भारीतन जो कुंभकर्ण ताहि आवते देखिकै ६ ॥

दुद्रुवुर्वानराःसर्वेकालांतकमिवाखिलाः ॥ भ्रमंतंहरिवाहिन्यामुद्गरेणमहाबलम् ७ कालयंतंहरीन्वेगाद्भक्षयंतंसमंततः ॥ चूर्णयंतंमुद्गरेणपाणिपादैरनेकधा ८ कुंभकर्णंतदादृष्ट्वागदापाणिर्विभीषणः ॥ ननामचरणौतस्यभ्रातुर्ज्येष्ठस्यबुद्धिमान् ९ विभीषणोहंभ्रातुर्मेदयांकुरुमहामते ॥ रावणस्तुमयाभ्रातुर्बहुधापरिबोधितः १० सीतांदेहीतिरामायरामःसाक्षाज्जनार्दनः ॥ नशृणोतिचमांहंतुंखड्गमुद्यम्यचोक्तवान् ११ धिक्त्वांगच्छेतिमांहत्वापदापापिभिरावृतः ॥ चतुर्भिर्मंत्रिभिःसार्द्धंरामंशरणमागतः १२ ॥

(कालअंतकंइवमहाबलंमुद्गरेण हरिवाहिन्यांभ्रमंतं अखिलावानराःसर्वेदुद्रुवुः) काल मृत्यु के समान महा बल कुंभकर्ण मुद्गर सहित वानरों की सेना में घूमिरहाहै ताहि देखि समग्र वानर भय मानि सब भागते भये ७ (पाणिपादैःमुद्गरेणअनेकधाचूर्णयंतंवेगात् समंततःभक्षयंतंहरीन्कालयंतं) हाथों करिकै पाओं करिकै मुद्गर करिकै इत्यादि अनेक प्रकार करि मारि चूर्ण करताहुआ वेगते धाय सब दिशों में भक्षण करता हुआ इस प्रकार मारिकै वानरन को भगाय रहाहै ८ (गदापाणिः विभीषणःतदाकुंभकर्णंदृष्ट्वा बुद्धिमान्ज्येष्ठस्यभ्रातुः तस्यचरणौननाम) गदाहै हाथमें जिस्के ऐसा विभीषण ताही समय में कुंभकर्ण को देखा बड़ा बुद्धिमान् है ताते आगे जाय ज्येष्ठ भाई जो कुंभकर्ण ताके चरणों को नमस्कार करताभया ९ (अहंविभीषणः महामतेमेभ्रातुःदयांकुरु तुरावणः भ्रातुःमयाबहुधापरिबोधितः) हेभाई कुंभकर्ण मैं तुम्हारा छोटाभाई विभीषण हौं हे महामते मैं जो भाई हौं ताके ऊपर दया करो पुनः रावण जो भाई है ताको मैंने बहुत प्रकारके वचन कहिकै बोध किया अर्थात् समुझाया १० (रामःसाक्षात्जनार्दनः सीतांरामायदेहि नशृणोतिच मांहंतुंखड्गंउद्यम्यचउक्तवान्) क्या मैंने समुझाया इनको मानुष न मानौ राम साक्षात् परमेश्वर हैं इति मानि वैर भाव त्यागि सीता को लै जाय रामके अर्थ अर्पण करिदेउ इत्यादि सोतौ न सुना मेरे मारने हेत तरवारिखैंचि पुनः बोला ११ (त्वांधिक्गच्छइतिपापिभिः आवृतःमांपदाहत्वाचतुर्भिः मंत्रिभिःसार्द्धं रामंशरणंआगतः) तोको धिक्कार है इहांते चला जा इत्यादिकहि पुनः पापी राक्षसों करिकै सहित बैठा मोको लात सों मारा तब चारि मंत्रिन सहित मैं रामके शरण आया हौं १२ ॥

तच्छ्रुत्वाकुम्भकर्णोऽपिज्ञात्वाभ्रातरमागतम् ॥ समालिंग्यचवत्सत्वंजीवरामंपदाश्रयः १३ कुलसंरक्षणार्थायराक्षसानांहितायच ॥ महाभागवतोसित्वंपुरामेनारदाच्छ्रुतम् १४ गच्छतातममेदानींदृश्यतेनचकिंचनः ॥ मदीयोवापरोवापिमदमत्तविलोचनः १५ इत्युक्तोऽश्रुमुखोभ्रातुश्चरणावभिवंद्यसः ॥ रामपार्श्वमुपागत्यचिंतापरउपस्थितः १६ कुंभकर्णोपिहस्ताभ्यांपादाभ्यांपेषयन्हरीन् ॥ चचारवान

रीसेनांकालयनूगंधहस्तिवत् १७ दृष्टातंराघवःक्रुद्धोवायव्यंशस्त्रमादरात् ॥ चि क्षेपकुंभकर्णायतेनच्चिच्छेदरक्षसः १८ ॥

(तत्श्रुत्वाकुंभकर्णः अपिभ्रातःआगतम् ज्ञात्वासमालिंग्यच त्वंरामंपदाश्रयः वत्सजीव) विभीषण के कहे वचन सो सुनिकै कुंभकर्ण भी अपने भाईको आवन जानि कै हृदय में लगाय मिलि कैपुनः बोला कि तू रामके पद कमलोंका आश्रयणकरता है ताते हे वत्स तुम बहुत काल तक जीवत रहौ १३ (राक्षसानांहितायच कुलसंरक्षणार्थायत्वंमहाभागवतःअसि मेपुरानारदात्श्रुतम्) क्यों वहुत काल जीवतरहु हेविभीषण राक्षसो के कल्याण करने भाव तेरे रहेते राक्षस कुशल रहेंगे पुनः राक्षस कुलकी रक्षा के अर्थ भाव तेरे भजन प्रभावते कुल में कुछु बाधा न होइगी क्योंकि तू महा भागवत परम भक्त है यह मैं पूर्वही नारदते सुनाहै १४ (तातगच्छमदमत्तविलोचनःमदीयःवापरः वाभ्रपिममइदानीं किंचननचदृश्यते) हेतात बिभीषण अबतुम जाउ मदकरिकै माते नेत्र ताते आपन अथवापरार यह निश्चय करिकै मोको या समय में कछु भी नहीं देखि परताहै १५ (इतिउक्तःसःअश्रुमुखः भ्रातुःचरणौअभिवंद्यचितापररामपार्श्वेउपागत्यउपस्थितः) ऐसाकुंभकर्ण कहातब सो विभीषण आंशुबहत मुख सहित भाईके पायँन को प्रणाम करि याके मरने की चिंता युत रघुनन्दन के पास जाय बैठे १६ (कुंभकर्णःअपिहस्ताभ्यां पादाभ्यांहरीन्पेषयन्गंधहस्तिवत्वानरींसेनांकालयन्) अब कुंभकर्ण भी हाथोंसे पावोंसे वानरों को पीसता हुआ मत्त गजराज के तुल्यवानरी सेनाको भगाताहुआ रणमें स्थितहै १७ (तंदृष्ट्वाराघवःक्रुद्धःआदरात्वायव्यंशस्त्रंकुंभकर्णायचिक्षेपतेनरक्षसः समुद्गरंदक्षहस्तंचिच्छेद) तिसको देखि रघुनन्दन क्रोध करि आदर ते वायव्य शस्त्र को कुंभकर्ण के अर्थ छोड़ ते भये त्यहि करिकै राक्षस को मुद्गर सहित दक्षिण हाथ काटि डारते भये १८ ॥

समुद्गरंदक्षहस्तंतेनघोरंननादसः॥सहस्तःपतितोभूमावनेकानर्दयन्कपीन् १९ पर्यंतमाश्रिताःसर्वे वानराभयवेपिताः ॥ रामराक्षसयोर्युद्धं पश्यंतःपर्यवस्थिताः २० कुंभकर्णःछिन्नहस्त.शालमुद्यम्यवेगतः ॥ समरेराघवंहंतुंदुद्रावतमथोच्छिनत् २१ शालेनसहितंवामहस्तमैंद्रेणराघवः ॥ छिन्नबाहुमथायांतंनर्दन्तंवीक्ष्यराघवः २२ द्वावर्द्धचंद्रौनिशितावादायास्यपदद्वयम् ॥ चिच्छेदपतितौपादौ लंकाद्वारिमहास्वनौ २३ निकृन्तपाणिपादोपिकुंभकर्णोऽतिभीषणः॥ वडवामुखवद्वक्त्रंव्यादायरघुनन्दनम् २४ अभिदुद्रावनिनदन्राहुःचंद्रमसंयथा ॥

(तेनसःघोरंननादसहस्तःअनेकान्कपीन्अर्दयन्भूमौपतितः) मुद्गरसहित हाथकटिगया त्यहिकरिकै सो कुम्भकर्ण भयंकर शब्दकरताभया कटाहुआ सो हाथ अनेक बानरोंको मर्द्दनकरतसंते भूमि परगिरिपरा १९ (पर्यन्तंआश्रितःसर्वेवानराःभयवेपिताःपर्यवस्थिताःरामराक्षसयोःयुद्धंपश्यंतः) रण भूमिकी सींवामें खड़ेरहे प्रथम सब बानर ते कुम्भकर्णकी भुजा पुनः ऊपरगिरनेकी भयमानि सब हटिकै सींवाकेबाहर खडे है कै राम अरु राक्षसकेयुद्धको दूरहीते देखतेहैं २० (छिन्नहस्तःकुम्भकर्णः शालंउद्यम्यसमरेराघवंहंतुंवेगतःदुद्राव) कटिगयाहै हाथ जिसको ऐसा कुम्भकर्ण वामहाथेकरि सांखू को वृक्ष लैकरि संग्राम में रघुनन्दनको मारिवे हेत वडेवेगतेधावताभया २१ (शालेनसहितंवामहस्त

तंराघवः ऐंद्रेणअथोच्छिनत्अथछिन्नबाहुंनर्दन्तंआयांतंवीक्ष्यराघवः) शालको वृक्षकरिकै सहित जो कुम्भकर्ण को बामभुजाहै ताको रघुनन्दन ऐंद्रबाणकरिकै काटिडारे अब बिनाबाहुनको कुम्भकर्ण गर्जताहुआ संमुख आवतेदेखिकै रघुनन्दन २२ (अर्द्धचन्द्रौद्वौनिशितौआदायअस्यपदद्वयम्चिच्छेद महास्वनौपादौलंकाद्वारिपतितौ) अर्द्धचन्द्राकार गांसीहैं जिनमें ऐसे दो पैनेवाणोंकोसन्धानिप्रहारकरि उस कुम्भकर्णके दोऊपायँकाटिडारे ते बाण बेगतेउडे महाभारी शब्दसहित दोऊपायँ जायलंकाके द्वारपरगिरे २३ (निकृंतपाणिपादःअपिअतिभीषणः कुम्भकर्णःवडवामुखवत्वक्रंव्यादाय) कटिगये हाथ पायँभी अति भयंकर कुम्भकर्ण यथा समुद्र में बडवानलको मुख चारिसौ कोस बिस्तार है तैसेही मुखपसारि (रघुनन्दनम् २४ अभिनिनदन्दुद्रावयथाचंद्रमसंराहुः) रघुनन्दन के संमुखगर्जताहुआ मुखपसारे कुम्भकर्ण कैसा लोटतेचला यथा चन्द्रमाको ग्रासकरने हेत राहु है ॥

अपूरयत्सिताग्रैश्चशायकैस्तद्रघूत्तमः २५ शरपूरितवक्त्रोसौचुक्रोशातिभयंकरः ॥ अथसूर्यप्रतीकाशमैंद्रंशरमनुत्तमम् २६ वज्राशनिसमंरामश्चिक्षेपासुरमृत्यवे ॥ सतत्पर्वतसंकाशंस्फुरत्कुंडलदंष्ट्रकम् २७ चकर्त्तरक्षाधिपतेःशिरोवृत्रमिवाशनिः ॥ तच्छिरःपतितंलंकाद्वारिकायोमहोदधौ २८ शिरोस्यरोधयत्द्वारंकायोनक्राद्यचूर्णयत् ॥ ततोदेवासऋषयोगंधर्वाःपन्नगाःखगाः २९ सिद्धायक्षागुह्यकाश्चअप्सरोभिश्चराघवम् ॥ ईडिरेकुसुमासारैर्वर्षतश्चाभिनंदिताः ३० आजगामतदारामंद्रष्टुंदेवमुनीश्वरः ॥ नारदोगगनात्तूर्णंस्वभासाभासयन्दिशः ३१ ॥

(रघूत्तमःसिताग्रैःचशायकैःतत्अपूरयत्)मुखपसारेसम्मुखआवतेदेखि रघुनन्दनपैनीगांसीहैं जिनमें ऐसे बाणोंकरिकै वाको मुखसो मारिभरिदीन्हे २५ (शरपूरितवक्त्रअसौअतिभयंकरःचुक्रोशअथसूर्यप्रतीकाशंअनुत्तमंऐंद्रंशरं) बाणोंकरिकैभरा मुखतौभी वह कुम्भकर्ण अत्यन्त भयंकरशब्दते चिल्लाता भया तब जामें सूर्यवत्प्रकाश है ऐसा उत्तम ऐंद्रबाणको संधानि २६ (असुरमृत्यवेअशनिवज्रसमं रामःचिक्षेपकुण्डलदंष्ट्रकंस्फुरत्सतत्पर्वतसंकाशं) असुरके मृत्यु अर्थ वज्रकेतुल्य बाण रघुनन्दन छांडे अब कानों में कुण्डल मुख में दांत प्रकाशमान हैं जामें ऐसाजोपर्वताकार कुम्भकर्णको शीश२७ (वृत्रंअशनिःइवरक्षाधिपतेःशिरःचकर्ततत्शिरःलंकाद्वारिपतितंकायःमहोदधौ) जैसे वृत्रासुरपर इन्द्रको वज्रचला तैसेही प्रभुकोबाण कुम्भकर्णको शिरकाटिडारा सो शिर लंकाकेद्वारपर जायगिरा शरीर समुद्र में गिरा २८ (अस्यशिरःद्वारंरोधयत्नक्राद्यकायः चूर्णयत्ततःऋषयःदेवाःगन्धर्वाःपन्नगाः खगाः) कुम्भकर्णको शिरतौ लंकाकोद्वाररूँधिलिया अरु नक्रादि जलजीवोंको शरीर चूरकरिदिया तब सहित ऋषिन देवता गंधर्व नाग पक्षी २९ (सिद्धाःयक्षाःचगुह्यकाःचअप्सरोभिःराघवंईडिरेचअभिनंदितःकुसुमासारैःवर्षतः) सिद्ध यक्ष गुह्यक अप्सरन सहित श्रीरघुनाथजीकी स्तुतिकरतेभयेबड़े आनन्दयुत फूलनकी वर्षाकरतेभये ३० (तदादेवमुनीश्वरःनारदःस्वभासादिशः भासयन्रामंद्रष्टुं गगनात्तूर्णंआजगाम) ताही समय में देव मुनिनके स्वामी नारद अपनी प्रभाकरिकै सब दिशोंको प्रकाशकरतेहुये रघुनन्दनके दर्शनकरिबेको आकाशते शीघ्रही उतरिआवतेभये ३१ ॥

राममिंदीवरश्याममुदारांगंधनुर्द्धरम् ॥ ईषत्ताम्रविशालाक्षं मैंद्रास्त्रांचितबाहुकम्३२दयार्द्रदृष्ट्यापश्यंतंवानरान्शरपीडितान् ॥ दृष्ट्वागद्गदयावाचाभक्त्यास्तो

तुंप्रचक्रमे ३३ नारदउवाच ॥ देवदेवजगन्नाथपरमात्मन्सनातन ॥ नारायणाखिलाधारविश्वसाक्षिन्नमोस्तुते ३४ विशुद्धज्ञानरूपोपित्वंलोकानतिवंचयन् ॥ माययामनुजाकारःसुखदुःखादिमानिव ३५ त्वंमाययागुह्यमानःसर्वेषांहृदिसंस्थितः ॥ स्वयंज्योतिःस्वभावस्त्वंव्यक्तएवामलात्मनां३६उन्मीलयन्सृजस्येतन्नेत्रेरामजगत्त्रयम् ॥ उपसंह्रियतेसर्वंत्वयाचक्षुर्निमीलनात् ३७ ॥

(इन्दीवरश्यामंउदारांगंधनुर्द्धरं) नीलकमल सम श्याम सुंदर उत्तम अंगहै जिनको हाथमें धनुप धारण है जिनके (ईपत्ताम्रविशालाक्षं) थोरी ललामीयुत विशाल नेत्र हैं जिनके (ऐंद्रमस्त्रमंचितवाहुकं) ऐंद्रअस्त्र करिके शोभित है दक्षिण हाथ जिनका ३२ (शरपीड़ितान्वानरान्दयार्द्रदृष्ट्या पश्यंतं) वाणन करिके पीड़ित जो वानर हैं तिनहिं दया रसभीजी दृष्टि करिकै देखि रहेहैं (रामं दृष्ट्वाभक्त्यागद्गदयावाचास्तोतुंप्रचक्रमे) ऐसे रघुनंदन को देखि नारद प्रेमा भक्ति करिकै कंठारोधभयो ताते गद्गदवानी करिकै स्तुति करनेलगे ३३ नारदबोले हे देवदेव ब्रह्मादि देवन के पूज्य हे जगन्नाथ जगत् के पालन करणहारे हे परमात्मन् सनातन सबके आदिकारण हे नारायण जीवके अंतरवाक्षीर सागरमें वास करणहारे हे अखिलाधार सम्पूर्ण संसारके आधार भूत हे विश्वसाक्षिन्सव के बाहेर भीतर की जानन हारे(ते नमोस्तु)आपके अर्थ नमस्कारहै ३४ (विशुद्धज्ञानरूपःअपि) यद्यपि आप कारणरहित विशेपि शुद्ध अखण्ड ज्ञानरूपभीहौ (त्वंलोकान्अतिवंचयन्) तौभी आप माधुर्यलीला करिकै लोकजननको अत्यन्त छलते हुये (माययामनुजाकारःसुखदुःखादिमान्इव)माया करिकै मानुप कैसा आकार बनाये सुखदुःखादियुक्तकी नाईं देखिपरते हौ ३५ (सर्वेषांहृदिसंस्थितःस्वयंज्योतिः माययागुह्यमानःअमलात्मनांस्वभावःत्वंव्यक्तएव) यद्यपि अंतर्यामीरूपते सबके हृदय में स्थित स्वयं प्रकाश मानहौ तौभी कारण माया करिकै गुप्तहौ तौ प्राकृत मनुष्य न को कैसे देखिपरौ अरु अमल अन्तःकरणहै जिनका ऐसे जननको सौभाविकही आपप्रसिद्ध भीहौ ३६ (राम नेत्रेउन्मीलयन् एतत्जगत्त्रयम्सृजसिचक्षुःनिमीलनात्त्वयासर्वंउपसंह्रियते) हे रघुनाथजी आप नेत्रोंको खोलतसंते इन तीनिहूंलोकनको उत्पन्न करतेहौ पुनः नेत्रमूदने ते आपसब लोकन को संहार करतेहौ ३७ ॥

यस्मिन्सर्वमिदंभातियतश्चैतच्चराचरम् ॥यस्मान्नकिंचिल्लोकेस्मिंस्तस्मैतेब्रह्मणेनमः ३८ प्रकृतिंपुरुषंकालंव्यक्ताव्यक्तस्वरूपिणम् ॥ यंजानंतिमुनिश्रेष्ठास्तस्मैरामायतेनमः ३९ विकाररहितंशुद्धंज्ञानरूपंश्रुतिर्जगौ ॥ त्वांसर्वजगदाकारमूर्तिंचाप्याहसाश्रुतिः ४० विरोधोदृश्यतेदेववैदिकोवेदवादिनाम् ॥ निश्चयंनाधिगच्छंतित्वत्प्रसादंविनाबुधाः ४१ माययाक्रीडितोदेवनविरोधोमनागपि ॥ रश्मिजालंरवेर्यद्वद्दृश्यतेजलवद्भ्रमात् ४२ ॥

(इदंसर्वंयस्मिन्भातिचएतत्चराचरंयतःअस्मिन्लोकेयस्मात्किंचित्नतस्मैतेब्रह्मणेनमः) यहसंपूर्ण संसार जिसके सत्ताविपे दीप्तिमान् है पुनः यह चराचर जासों उत्पन्न होत जासों पालन होत जामें लयहोत पुनः यहिलोकविपेजिहिते परे कछु कारण नहीं है ऐसे जो आप अद्वैत ब्रह्म तिनके अर्थ नमस्कार है ३८ प्रकृति जो आदि कारण माया जासों महत्तत्त्व त्रिगुणात्म अहंकारजासोंसव

ब्रह्माण्डरचना है पुनः पुरुष महा विष्णु पुनः कालजो पलदण्ड दिन मास वर्ष युग कल्पादि पुनः व्यक्तजो अवतारादि भगवत्रूप प्रसिद्ध है पुनः अव्यक्त जो अगुण व्यापक ब्रह्म इत्यादि रूपों के रूपी साकेतविहारी जिनको उत्तम मुनि यथा पराशर अगस्त्य याज्ञवल्क्य् वाल्मीकि इत्यादिजान-ते ऐसे साकेतनिवासी रामजो आप तिनके अर्थ नमस्कारहै ३६ (विकाररहितंत्वांशुद्धंज्ञानरूपंश्रुतिःजगौचसाश्रुतिःजगदाकारमूर्तिंअपिआह) हे रघुनन्दन रजतमादि विकाररहित आपको शुद्धज्ञान रूप वेद गानकरताहै पुनः सोई वेद आपको जगत् आकार मूर्ति भी कहता है ४० (देववैदिकःवेदवादिनाम्विरोधःदृश्यतेत्वत्प्रसादंविनाबुधाःनिश्चयंनाधिगच्छन्ति) हे देव जो निर्विकार शुद्धज्ञान रूप अरु जगदाकार सविकार रूप दोऊ वेदै कहत इसीसे वैदिकजे वेदपाठी वेदवादी जेवेदैकीबात को प्रमाण करते हैं तिनको परस्पर विरोध देखाताहै भावमानवश विवाद करतेहैं ताते आपके प्रसाद विना पंडित भी निश्चय तत्त्वको नहीं प्राप्त होतेहैं अर्थात् जिनपर आपकी कृपाहै ते विरोध रहित सर्वत्र आपको निर्विकार रूप देखते हैं ४१ (देवमाययाक्रीडितःमनाक्अपिनविरोधःरवेःरश्मिजालंयद्वत्भ्रमात्जलवत्दृश्यते) हे देव आप निर्विकार शुद्ध ज्ञानरूप सो भी भक्तनको सुखदेनेहेत दिव्यमायाकरिकै क्रीडाकरते हो तामें कछु भी नहीं विरोधहै यथा सूर्य किरणनको समूह भूमिपर अथ मृगादिकों को भ्रमते जल ऐसा देखात तथा आपकी नरनाट्यहै ४२ ॥

भ्रांतिज्ञानात्तथारामत्वयिसर्वंप्रकल्प्यते ॥ मनसोविषयोदेवरूपंतेनिर्गुणंपरं ४३
कथंदृश्यंभवेद्देवदृश्याभावेभजेत्कथम् ॥ अतस्तवावतारेषुरूपाणिनिपुणाभुवि ४४
भजंतिबुद्धिसंपन्नास्तरंत्येवभवार्णवम् ॥ कामक्रोधादयस्तत्रबहवःपरिपंथिनः ४५ भीषयंतिसदाचेतोमार्जारामूषकंयथा ॥ त्वन्नामस्मरतांनित्यंत्वद्रूपमपि मानसे ४६ त्वत्पूजानिरतानांतेकथामृतपरात्मनां ॥ त्वद्भक्तसंगिनांरामसंसारोगोपदायते ४७ अतस्तेसगुणंरूपंध्यात्वाहंसर्वदाहृदि ॥ मुक्तश्चरामिलोकेषुपूज्योहं सर्वदैवतैः ४८ ॥

(तथाभ्रांतिज्ञानात्रामत्वयिसर्वंप्रकल्पते) तैसेही भ्रांतिज्ञानते हे रघुनाथजी आपविषे सर्व कलपना करते हैं अर्थात् जैसे रवि किरणन में जल है नहीं भ्रममात्र जलमाने हैं तैसेही जिनको शुद्ध ज्ञान नहीं है देहमें आत्मबुद्धीकिहे हैं सोई ज्ञानमें भ्रम अर्थात् अज्ञानते नरनाट्यदेखि आपको दुःख सुख युक्तदेखते हैं काहेते (देवतेपररूपंनिर्गुणंमनसःविषयःकथंदृश्यंभवेत्) हे देव आपको पररूप जो नि-र्गुण है ताको मन नेत्रादि विषय सो कैसे देखिपरै ४३ (देवदृश्यअभावेकथंभजेतअतःभुविनिपुणाः बुद्धिसंपन्नाः तवअवतारेषुरूपाणिभजांति) हे देव जो रूप देखि नहीं परता है ताको कैसे भजै इस कारणते भूतल में जे जन भक्ति में निपुण बुद्धि से परिपूर्ण हैं ते आपके अवतारादिकोंविषे जे रूप हैं तिनहिं भजते हैं ४४ (भवार्णवंएवतरंतितत्रपरिपंथिनः कामक्रोधादयःबहवः) जे बुद्धिमान् सगुण रूपकोभजते हैं ते भवसागर को भी तरिजाते है परंतु तिस मार्गमें शत्रु काम क्रोधादिक बहुत से घेरते हैं ४५ (यथामूषकंमार्जाराः चेतःसदाभीषयंति त्वत्नामनित्यंस्मरतांमानसेत्वत्रूपंअपि) जैसे मूसको बिल्ली घेरत तैसेही भक्तके चित्त को सदा कामादि भय उपजातेहैं तिनसो बचाव हेत आपको नाम सदा स्मरण करते हैं तथा मनमें आपके रूप को भी ध्यान राखतेहैं ४६ (रामत्वत्पूजानिरतानां) हे रघुनाथ जी आपके पूजन मानसी वा प्रतिमा पूजन में लगे रहतेहैं (तेकथामृतपरात्म

नां) आपकी कथा रूप अमृत श्रवण पुट पान में तत्पर रहते हैं (त्वद्भक्तसंगिनांसंसारःगोपदाय ते) आपके भक्तन को संग करने वालन को संसार सिंधु गाय के खुर भरि ह्वै जाता है ४७ (अतःतेसगुणंरूपंसर्वदा हृदिध्यात्वा अहंलोकेषुमुक्तः चरामिअहंसर्वदेवतैःपूज्यः) इसीसे आपके सगुणरूप को सदा हृदय में ध्यान राखे में लोकनमें मुक्त रूपते विचरताहौं इति परमारथ पुनः स्वारथमें मैं देवतौं करिकै पूजितभयौं ४८ ॥

रामत्वयामहत्कार्यंकृतदेवहितेच्छया ॥ कुंभकर्णवधेनाद्यभूभारोयंगतःप्रभो ४९ श्वोहनिष्यतिसौमित्रिरिंद्रजेतारमाहवे ॥ हनिष्यसेथरामत्वंपरश्वोदशकंधरम् ५० पश्यामिसर्वंदेवेशासिद्धैःसहनभोगतः ॥ अनुग्रहणीष्वमांदेवगमिष्यामिसुरालयम् ५१ इत्युक्त्वाराममामंत्र्यनारदोभगवानृषिः ॥ ययौदेवैःपूज्यमानोब्रह्मलोकमकल्मषम् ५२ भ्रातरंनिहतंश्रुत्वाकुम्भकर्णंमहाबलम्॥ रावणःशोकसंतप्तो रामेणाक्लिष्टकर्मणा ५३ मूर्च्छितःपतितोभूमावुत्थायविललापह ॥ पितृव्यंनिहतंश्रुत्वापितरंचातिविह्वलम् ५४ इंद्रजित्प्राहशोकार्तंत्यजशोकंमहामते ॥ मयिजीवतिराजेंद्रमेघनादेमहाबले ५५ ॥

(रामदेवहितेच्छयात्वयामहत्कार्यंकृतंप्रभोअद्यकुंभकर्णवधेनअयंभूभारःगतः) हे रघुनन्दन देवतौंके हितकी इच्छा करिकै आपने बडाभारी कार्य किया क्योंकि हे प्रभो कुंभकर्ण को बध करिकै यह भूमिको महाभार उतरिगया ४९ (श्वःआहवेसौमित्रिःइंद्रजेतारंहनिष्यतिअथरामपरश्वःत्वंदशकंधरंहनिष्यसे) काल्हि संग्राम में लक्ष्मण इंद्रजीत अर्थात् मेघनादको मारैंगे पुनः हे राम परसौं आप रावण को मारौगे ५० (देवेशासिद्धैःसहनभःगतःसर्वंपश्यामिदेवमांअनुगृह्णीष्वसुरालयंगमिष्यामि) हे देवन के ईश सिद्धन करिकै सहित आकाश में प्राप्त आपको संग्राम चरित सब देखताहौं हे देव अब मोपर अनुग्रह करौ भाव सदादयावनी रहै अब मैं देवलोकको जांउगो ५१ (इतिउक्त्वानारदःभगवान्ऋषिरामंआमंत्र्यदेवैःपूज्यमानःअकल्मषंब्रह्मलोकंययौ) ऐसा कहि नारद भगवान् ऋषि रघुनंदनकी आज्ञालैकै देवन करिकै पूज्यमान ह्वैकै पाप रहित जो शुद्ध ब्रह्मलोक तहांको जाते भये ५२ (अक्लिष्टकर्मणारामेणमहाबलंभ्रातरंकुंभकर्णंनिहतंश्रुत्वारावणःशोकसंतप्तः) थोरेही श्रम से रघुनन्दन करिकै महाबली भाई कुंभकर्ण को मराहुवा सुनिकै रावण शोकाग्नि करि संतप्तभया५३ (मूर्च्छितःभूमौपतितःउत्थायविललापहपितृव्यंनिहतंश्रुत्वाचपितरंअपिविह्वलं)शोकबश रावण मूर्च्छित ह्वै भूमिपर गिरिपरा पुनः उठिकै विलाप करताभया तब मेघनाद पित्तीको मरण सुनि पुनः पिता को भी अत्यन्त विकल देखि ५४ (शोकार्तंइंद्रजित्प्राहमहामतेशोकंत्यजराजेंद्रमहाबलेमेघनादेमयिजीवति) शोकार्तरावण प्रति मेघनाद बोला हे महामते दुःखशोच त्यागकरौ हे राजेंद्र महाबल युतजो मेघनाद में हौं ताके जीवतबनेरहेसंते ५५ ॥

दुःखस्यावसरःकुत्रदेवांतकमहामते ॥ त्यजतुतेदुःखमखिलंस्वस्थोभवमहीपते५६ सर्वंशर्मीकरिष्यामिहनिष्यामिचवैरिपून्॥गत्वानिकुंभिलांसद्यस्तर्पयित्वाहुताशनम् ५७ लब्ध्वारथादिकंतस्मादजेयोहंभवाम्यरेः ॥ इत्युक्त्वात्वरितंगत्वानिर्दिष्टंहवनस्थलम् ५८ रक्तमाल्याम्बरधरोरक्तगंधानुलेपनः ॥ निकुंभिलास्थलेमौनीहव

नायोपचक्रमे ५९ विभीषणोथतच्छ्रुत्वामेघनादस्यचेष्टितम् ॥ प्राहरामायसकलं होमारंभंदुरात्मनः ६० समाप्यतेचेद्धोमोयंमेघनादस्यदुर्मतेः॥ तदाजेयोभवेद्राम मेघनादःसुरासुरैः ६१ श्रीरामउवाच ॥ अहमेवगमिष्यामिहंतुमिंद्रजितंरिपुं ॥ आग्नेयेनमहास्त्रेणसर्वराक्षसघातिना ६२॥

(देवांतकमहामतेदुःखस्यभवसरःकुत्रतेअखिलंदुःखंव्येतुमहीपतेस्वस्थःभव) मेघनाद बोला हे देवतोंको नाशकरने वाले हेमहामते दुःखको समय कहांहै भाव शूरनको मरणसमय उत्साह चाहिये आपको सम्पूर्ण दुःख मिटिजायगा हे राजन्स्वस्थचित्त होहु ५६ (सर्वेशमीकरिष्यामिचवैरिपूनहनिष्यामिसद्यः निकुंभिलांगत्वाहुताशनमृतर्पयित्वा) मैं तुम्हारे सबदुःखको भस्म करिदेंउगो पुनः निश्चयकरि तुम्हारे शत्रुनको नाश करैं को अबमें शीघ्रहीं निकुंभिलास्थान को जायकै अग्नि को तृप्तकरौंगो ५७ (तस्मात्रथादिकंलब्ध्वाअहं मेरः अजेयःभवामिइतिउक्त्वानिर्दिष्टंहवनस्थलंत्वरितं गत्वा) अग्नि को तृप्तकरितासे अंतरिक्षरथादि वरपायकैमैं शत्रुतेरण में अजित होंउगो ऐसाकहि मेघनाद रावणकी आज्ञापाय निकुंभिलानामे हवन स्थानकोशीघ्रही जाताभया५८लालेफूलोंकीमाला लालवसन धारण करि लालचंदन अंगमें लेपन करि निकुंभिला स्थान में मौन ह्वै बैठि हवनप्रारंभकरता भया ५९ (मेघनादस्यचेष्टितंतत्श्रुत्वाअथ विभीषणःदुरात्मनःहोमारंभंसकलंरामायप्राह) मेघनाद को हालसो सुनिकै अब विभीषण आय उसदुष्ट मेघनाद के होमप्रारंभ करनेको सबवृत्तांत रघुनंदन के अर्थ सुनाते भये ६० (दुर्मतेमेघनादस्यहोमःअयंचेत्समाप्यतेतदाराममेघनादःसुरासुरैः अजेयःभवेत्) दुर्बुद्धी मेघनाद को होमयह कदाचित् पूर्णभया तौ हे राम मेघनाद देव दैत्योंकरिकै अजित ह्वै जायगो ६१ (सर्वराक्षसघातिनाआग्नेयेनमहास्त्रेणइंद्रजितंरिपुंहंतुंअहंएवगमिष्यामि) रघुनंदन बोले कि सब राक्षसौं को नाश करनेवाले आग्नेयमहा अस्त्र करिकै मेघनाद शत्रुको मारनेहेत हमहीं जांयगे ६२ ॥

विभीषणोपितंप्राहनासावन्यैर्निहन्यते ॥ यस्तुद्वादशवर्षाणि निद्राहारविवर्जितः ६३ तेनैवमृत्युर्निर्दिष्टोब्रह्मणास्यदुरात्मनः ॥लक्ष्मणस्तुअयोध्यायानिर्गम्यायात्त्वयासह ६४ तदादिनिद्राहारादीन्नजानातिरघूत्तम ॥ सेवार्थंतवराजेंद्रज्ञातंसर्वमिदंमया ६५ तदाज्ञापयदेवेशलक्ष्मणंत्वरयामया ॥ हनिष्यतिनसंदेहःशेषःसाक्षाद्धराधरः ६६ त्वमेवसाक्षाज्जगतामधीशोनारायणोलक्ष्मणएवशेषः ॥ युवांधराभारनिवारणार्थंजातौजगन्नाटकसूत्रधारौ ६७ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्धकांडेअष्टमःसर्गः ८ ॥

(तंविभीषणःअपिप्राहअसौअन्यैःननिहन्यतेयस्तु निद्राहारद्वादशवर्षाणिवर्जितः) तिनप्रभु प्रति विभीषण बोले कि यह मेघनाद और किसी करिकै न मरैगो यो पुरुष निद्रा भोजन बारहवर्ष तक त्यागेरहै ६३ (तेनएवअस्यदुरात्मनःमृत्युःब्रह्मणानिर्दिष्टःतुलक्ष्मणः अयोध्यायाःनिर्गम्यत्वयासहआयात्) तिसी करिकै इसदुष्ट की मृत्युब्रह्माने कहा है पुनः लक्ष्मण जबते अयोध्याते निसरि आप करिकै सहित वनको आये हैं ६४ (रघूत्तमतत्आदिनिद्राहारादीन्नजानातिराजेंद्रतवसेवार्थंइदंसर्वं

मयाज्ञातं) हे रघुवंशनाथ जबते अयोध्यातेचले तबते आदि दै अबतक लक्ष्मण निद्रा भोजनादि नहींजानतेहैं ताको कारण यह है हे राजेंद्र केवल आपकी सेवाके अर्थ सबभोगत्याग किहे रहेहैं यह सबहाल मैंने जानाहै ताते मेघनादको बध करिबे योग्य लक्ष्मण एकही हैं ६५ (तत्देवेशमयात्वर यालक्ष्मणंआज्ञापयधराधरःसाक्षात्शेषःहनिष्यतिसंदेहःन) तिस कारणसे हेदेवेश मेरेसाथ जानेहेत लक्ष्मणको शीघ्रही आज्ञा दीजिये पृथिवीको धारण करणहारे साक्षात् शेषरूपहैं तातेलक्ष्मणमेघनाद को मारैंगेयामेंसंशय नहीं है ६६ (त्वंएवजगतांअधीशःसाक्षात्नारायणःलक्ष्मणशेषः एवजगन्नाटक सूत्रधारौधराभार निवारणार्थंयुवांजातौ) हे रघुनंदन आप जगत् के स्वामी साक्षात्नारायणहौ तथा लक्ष्मण शेष हैं जगत् व्यापार जो नाटक है ताके सूत्रधार आदि कारणहौ सो भूमि कोभार उतारने हेत दोऊ स्वरूप अवतीर्ण भयो है ६७ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतबैजनाथविरचिते
अध्यात्मभूषणेयुद्धकांडेअष्टमःप्रकाशः ८ ॥

विभीषणवचःश्रुत्वारामोवाक्यमथाब्रवीत् ॥ जानामितस्यरौद्रस्यमायांकृत्स्नांवि भीषण १ सहिब्रह्मास्त्रविच्छूरोमायावीचमहाबलः ॥ जानामिलक्ष्मणस्यापिस्व रूपंममसेवनम् २ ज्ञात्वैवासमहंतूष्णींभविष्यत्कार्यगौरवात् ॥ इत्युक्त्वालक्ष्मणं प्राहरामोज्ञानवतांवरः ३ गच्छलक्ष्मणसैन्येनमहताजहिरावणिम् ॥ हनुमत्प्रमु खैःसर्वैर्यूथपैःसहलक्ष्मण ४ जांबवानृक्षराजोयंसहसैन्येनसंवृतः ॥ विभीषणश्च सचिवैःसहत्वामभियास्यति ५ ॥

सवैया ॥ कपिलैगत लक्ष्मण यज्ञथली खलसेन समूहसँघारकिये । घननाद जुरो रणघोरमचोत्य हिएकहि बाणसुप्राण लिये ॥ प्रभुपास गये सुतघातसुने बिलखातस रावण शोकहिये । गतखङ्गउद म्यसिया हनने शुभमंत्रि सुपारसरोकिदिये ॥(विभीषणवचःश्रुत्वा अथरामः वाक्यं अब्रवीत् विभी- षणतस्यरौद्रस्य मायांकृत्स्नांजानामि)शिवजीबोले हेगिरिजा विभीषणकेप्रतिअबरघुनन्दन बचनबोल तेभये हे विभीषण तिसमेघनादको तामस अरु मायासंपूर्ण मैं जानताहौं १ (सहिब्रह्मास्त्रवित्महा बलःशूरःचमायावी लक्ष्मणस्यअपिस्वरूपंममसेवनम्जानामि) सो मेघनाद निश्चयकरि ब्रह्मास्त्र जानताहै पुनः महाबली है अरु शूरहै पुनः मायावीहै इतिजानताहौं तथा लक्ष्मणको भी स्वरूप अर्थात् जैसाबलवीरता शूरतासाहस स्वरूपमेंहै पुनः मेरेसेवनमें नींदनारि भोज नादित्यागेरहे हैं सो भी सब जानताहौं २ (कार्यगौरवात्भविष्यत्ज्ञात्वाएवअहंतूष्णींआसन्इत्युक्त्वाज्ञानवतांवरःरामः ल- क्ष्मणंप्राह) मेघनाद बधहेत लक्ष्मणके गयेते कार्य बड़ा उत्तमहोयगो भाव मेघनादको मारिकुशल लौटि आवहिंगें यही विचारिकै हमभी चुपरहे भाव तुम्हारी बात प्रमाणराखा ऐसा विभीषण प्रति कहिकै पुनः ज्ञानवंतनमे श्रेष्ठरघुनन्दन लक्ष्मण प्रतिबोलते भये ३ (लक्ष्मणमहतासैन्येनगच्छराव- णिजहि लक्ष्मणहनूमत्प्रमुखैःसर्वैःयूथपैःसह) हे लक्ष्मण बड़ी भारीसेना करिकै सहित जाउरणमें रावणके पुत्र मेघनादको मारौ हे लक्ष्मण हनूमान्हैं मुखिया जिनमें ऐसे सब यूथपन करिकै सहित ४ (सहसैन्येनसंवृतःअयंजांबवान्ऋक्षराजःचसचिवैः सहविभीषणःत्वांअभियास्यति) अपनी सहित सेना साथलीन्हे येजांबवान् ऋक्षोंकेराजा पुनः मंत्रिन करिकै सहित विभीषण सो भी तुम्हारे साथ जायँगे ५ ॥

अभिज्ञस्तस्यदेशस्यजानातिविवराणिसः ॥ रामस्यवचनंश्रुत्वालक्ष्मणःसविभीषणः ६ जग्राहकार्मुकंश्रेष्ठमन्यद्भीमपराक्रमः ॥ रामपादांबुजंस्पृश्यहृष्टःसौमित्रिरब्रवीत् ७ अद्यमत्कार्मुकान्मुक्ताःशराःनिर्भिद्यरावणिम् ॥गमिष्यन्तिहिपातालंस्नातुंभोगावतीजले ८ एवमुक्त्वाससौमित्रिःपरिक्रम्यप्रणम्यतम् ॥ इंद्रजिन्निधनाकांक्षीययौत्वरितविक्रमः ९ वानरैर्बहुसाहस्रैर्हनूमान्पृष्ठतोन्वगात् ॥ विभीषणश्च सहितोमंत्रिभिस्त्वरितंययौ १० जांबवत्प्रमुखाऋक्षाःसौमित्रिंत्वरयान्वगुः ॥ गत्वानिकुंभिलादेशंलक्ष्मणोवानरैःसह ११ अपश्यद्बलसंघातंदूराद्राक्षससंकुलं ॥ धनुरायाम्यसौमित्रिर्यत्तोभूद्भूरिविक्रमः १२ ॥

(सःतस्यदेशस्यअभिज्ञःविवराणिजानाति रामस्यवचनंश्रुत्वासविभीषणःलक्ष्मणः) सो विभीषण तिसलंका देशके हालजाननेमें प्रवीणहैं अरु जहां यज्ञकरताहै उनगुप्त विवरादिकोंको भी जानतेहैं ते साथजांयगे इतिरघुनन्दन के बचनसुनिकै सहित विभीषण लक्ष्मणउठे ६ (भीमपराक्रमःअन्यत्श्रेष्ठंकार्मुकंजग्राहरामपादांबुजंस्पृश्यहृष्टःसौमित्रिःअब्रवीत्) भयंकर पराक्रमी और उत्तम धनुष को हाथ में लैकै रघुनन्दनके पदकमलोंको स्पर्श करिकै आनन्द पूर्वक लक्ष्मणबोलते भये ७ (अद्य मत्कार्मुकान्मुक्ताःशराःरावणिंनिर्भिद्यभोगवतीजलेस्नातुंहिपातालंगमिष्यति) लक्ष्मण बोले कि आजुमेरे धनुषते छूटेहुये बाण रावणके पुत्रको भेदिकै भोगावती गंगाके जलमें स्नानकरने हेत पातालोकको जाँयगे ८ (एवंउक्त्वाससौमित्रिःतंपरिक्रम्यप्रणम्यइंद्रजित्निधनाकांक्षीत्वरितविक्रमः ययौ) ऐसा कहि सो सुमित्रानन्दन तिन रघुनाथजीको परिक्रमा प्रणामकरि मेघनादके मारिवेकी इच्छा करिकै शीघ्रही वेगयुतजातेभये ९ (बहुसाहस्रैःवानरैःहनूमान् पृष्ठतःअन्वगात्चमंत्रिभिःसहितःविभीषणःत्वरितंययौ) बहुत हजारवानरन सहित हनुमान् लक्ष्मणके पीछे पीछे चले पुनःमंत्रिन करिकै सहित विभीषण तुरतही जातेभये १० (जांबवत्प्रमुखाऋक्षाःत्वरयासौमित्रिंअन्वगुः वानरैः सहलक्ष्मणःनिकुंभिलादेशंगत्वा) जाम्बवान् हैं मुखिया जिनमें ऐसे ऋक्षसमूह शीघ्रही लक्ष्मणके साथचलते भये इसभांति बानरों करिकै सहित लक्ष्मण निकुंभिला स्थानको गये ११ (राक्षससंकुलंबलसंघातंदूरात्अपश्यत्भूरिविक्रमःसौमित्रिःधनुःआयाम्ययत्तःअभूत्) मेघनाद बैठा ताके आस पास घेरे सघन राक्षसभरे हैं ऐसी राक्षसी सेना समूहको दूरिहीते देखतेभये तब बड़े पराक्रमी सुमित्रानन्दन लक्ष्मण धनुषको हाथमें लैकै यत्नपूर्वक ह्वै खड़े भये १२ ॥

अंगदेनचवीरेणजांबवान्राक्षसाधिपः ॥ तदाविभीषणःप्राहसौमित्रिंपश्यराक्षसान् १३ यदेतद्राक्षसानीकंमेघश्यामंविलोक्यते ॥ अस्यानीकस्यमहतोभेदनेयत्नवान्भव १४ राक्षसेंद्रसुतोप्यस्मिन्भिन्नेदृश्योभविष्यति ॥ अभिद्रवाशुयावद्वैनैतत्कर्मसमाप्यते १५ जहिवीरदुरात्मानंहिंसापरमधार्मिकम् ॥ विभीषणवचःश्रुत्वालक्ष्मणःशुभलक्षणः १६ ववर्षशरवर्षाणिराक्षसेंद्रसुतंप्रति ॥ पाषाणैःपर्वताग्रैश्चवृक्षैश्चहरियूथपाः १७ निर्जघ्नुःसर्वतोदैत्यान्तेपिवानरयूथपान् ॥ परश्वधैःसितैर्बाणैरसिभिर्यष्टितोमरैः १८ ॥

(जांववान्राक्षसाधिपःचअंगदेनवीरेण तदाविभीषणःसौमित्रिंप्राह राक्षसान्पश्य)जांबवान् अरु राक्षसों को राजा बिभीषण पुनः अंगद वीर सहित सब यत्न पूर्वक खडे ताही समय विभीषण लक्ष्मण प्रति बोलते भये हेलक्ष्मण राक्षसोंको देखिये १३ (मेघश्यामंयत्एतत्राक्षसानीकं विलोक्यते अस्यमहतःअनीकस्य भेदनेयत्नवान्भव) विभीषण बोले कि हेलक्ष्मण मेघनकी तुल्य श्याम जो यह राक्षसी सेना देखि परती है इस बडी भारी राक्षसी सेना को नाश करने को यत्न करौ १४ (अस्मिन्भिन्नेराक्षसेंद्रसुतः अपि दृश्यःभविष्यति यावत्वैनएतत्कर्मसमाप्यते आशुअभिद्रव) इस राक्षसी सेना के भिन्न भये भागि गये वा नाश भये पर राक्षसों के राजा रावण को पुत्र मेघनाद भी देखि परैगो ताते जबतक निश्चय करिकै न यह कर्म समाप्त होने पावै तब तक शीघ्रही संमुख जाय युद्धकरौ १५ (वीरहिंसापरंअधर्मिकंदुरात्मानंजहि शुभलक्षणःलक्ष्मणः विभीषणवचःश्रुत्वा) विभीषण बोले हेलक्ष्मण वीर यह हिंसामें तत्पर अधर्मी दुष्टात्मा जो मेघनाद ताहि शीघ्रही मारिये अब शुभ लक्षण युत जो लक्ष्मण सो विभीषण को वचन सुनि धनुष बाण सजिकै १६ (राक्षसेंद्र सुतंप्रतिशरवर्षाणिववर्ष हरियूथपाःपाषाणैः चपर्वताग्रैःचवृक्षैः) राक्षसों को राजा रावण ताको पुत्र मेघनाद तापर लक्ष्मण बाणों को वर्षा बर्षते भये तथा वानर यूथपती पत्थरन करिकै पुनः पहार शिलों करिकै पुनः वृक्षों करिकै १७ (सर्वतःदैत्यान्निर्जघ्नुः तेअपिपरश्वधैःसितैःबाणैःअसिभिः यष्टितोमरैःवानरयूथपान्) यथा वानर सब दैत्यन पर प्रहारकीन्हें तथा ते राक्षस भी परशों करि पैने बाणों तरवारिन करि लाठिन करि तोमरन करिकै वानर यूथपनको भी १८ ॥

निर्जघ्नुःवानरानीकंतदाशब्दोमहानभूत् ॥ ससंप्रहारस्तुमुलःसंयज्ञेहरिरक्षसाम् १९ इंद्रजित्स्वबलंसर्वमर्द्यमानंविलोक्यसः ॥ निकुंभिलांचहोमंचत्यक्त्वाशीघ्र विनिर्गतः २० रथमारुह्यसधनुःक्रोधेनमहतागमत् ॥ समाह्वयित्वासौमित्रिंयुद्धायरणमूर्द्धनि २१ सौमित्रेमेघनादोहंमयाजीवन्नमोक्ष्यसे ॥ तत्रदृष्ट्वापितृव्यंस प्राहनिष्ठुरभाषणम् २२ इहैवजातःसंवृद्धःसाक्षाद्भ्रातापितुर्मम ॥ यस्त्वंस्वजनमुत्सृज्यपरभृत्यत्वमागतः २३ कथंद्रुह्यसिपुत्रायपापीयानसिदुर्मतिः ॥ इत्युक्त्वा लक्ष्मणंदृष्ट्वाहनूमत्पृष्ठतःस्थितम् २४ ॥

वानरानीकनिर्जघ्नुःतदामहान्शब्दःबभूव ससंप्रहारःहरिरक्षसांतुमुलःसंयज्ञे) वानरी सेनाको जब राक्षस मारते भये तब इधर हनुमान् अंगद जाम्बवानादि वडेबली वीरते प्रचारि भिरे ताते बड़ाभारी प्रचार शब्द होताभया परस्पर प्रहारकरत ताते वानर राक्षसों का जुटिकै युद्ध भया १९ (स्वबलंसर्वंअर्द्यमानंविलोक्य इंद्रजित्सःनिकुंभिलांचहोमंचत्यक्त्वा शीघ्रंविनिर्गतः) अपनी सब सेनाको घाव पीड़ित देखि मेघनाद उस निकुंभिलास्थान को पुनः होम को त्यागि शीघ्रही निसरता भया २० (सधनुःरथंआरुह्य महताक्रोधेनआगमत् युद्धायरणमूर्द्धनि सौमित्रिंसंआह्वयित्वा) सहित धनुपरथ पर सवार ह्वै बड़े क्रोध करिकै संमुख आय युद्धके अर्थ संग्राम भूमि पर को लक्ष्मण को बुलायकै ऐसा बोलताभया २१(सौमित्रेअहंमेघनादः मयाजीवन्नमोक्ष्यसे तत्रपितृव्यंदृष्ट्वानिष्ठुरभाषणंसप्राह) हेसुमित्रानंदन मैं मेघनादहौं मोसे जीवत नहीं छूटौगे तहैं अपने पित्ती विभीषण को देखातासों कठोर बचन सहित बोलता भया २२ (यःत्वंइहएवजातः संवृद्धःसाक्षात्ममपितुः भ्रातास्वजनंउत्सृज्यपरभृत्यत्वंआगतः) हेविभीषण जो तू इसी राक्षस वंशमें उत्पन्न भया उसी घर में वृद्धता को

प्राप्त भया साक्षात् मेरे पिता को भाई ह्वैकै अपने वंधुवर्ग को त्यागि शत्रु की सेवकाईको प्राप्त भया है २३ (पुत्रायकथंद्रुह्यसिपापीयानसि दुर्मतिः इतिउक्त्वाहनूमत्पृष्ठतः स्थितंलक्ष्मणंदृष्ट्वा) पुत्र जो मैं ताके अर्थ कैसे द्रोह करता है तूवड़ा पापी दुर्बुद्धी है ऐसा कहि पुनः हनूमान् की पीठीपर सवार वैठेहुवे लक्ष्मण को देखा २४॥

उद्यदायुधनिस्त्रिंशेरथेमहतिसंस्थितः॥ महाप्रमाणमुद्यम्यघोरंविस्फारयन्धनुः २५ अद्यवोमामकावाणाःप्राणान्यास्यंतिवानराः ॥ ततःशरंदाशरथिःसंधायामित्रकर्षणः २६ ससर्जराक्षसेंद्रायक्रुद्धःसर्पइवश्वसन् ॥ इंद्रजिद्रक्तनयनोलक्ष्मणंसमुदेक्षत २७ शक्राशनिसमस्पर्शैर्लक्ष्मणेनाहतःशरैः ॥ मुहूर्तमभवन्मूढःपुनःप्रत्याहृतेंद्रियः २८ ददर्शावस्थितंवीरंवीरोदशरथात्मजम् ॥ सोभिचक्रामसौमित्रिंक्रोधसंरक्तलोचनः २९ शरान्धनुषिसंधायलक्ष्मणंचेदमब्रवीत् ॥ यदितेप्रथमेयुद्धे नदृष्टोमेपराक्रमः ३० ॥

(उद्यतआयुधनिस्त्रिंशेमहतिरथेसंस्थितःमहाप्रमाणंधनुःउद्यम्यघोरंविस्फारयन्) प्रकाशमान् हैं सब हथियार तरवारी जामें ऐसे महान्‌रथ में वैठाहुआ मेघनाद सो महाप्रमाण अर्थात् काने तक धनुष को खैंचिछोड़ि रोदाको भयंकर शब्दकरत संते वोलता भया २५ (वानराःअद्यवःप्राणान्मामकावाणाःयास्यंतिततःदाशरथिःअमित्रकर्षणःशरंसंधाय)मेघनाद वोला हे वानरौ आज तुम्हारे प्राणनको मेरेवाण पानकरैंगे ताही समय में लक्ष्मण शत्रुको नाश करनेवाले वाणको धनुष में संधानि २६ (क्रुद्धःसर्पइवश्वसन्राक्षसेंद्रायससर्जरक्तनयनःइंद्रजित्लक्ष्मणंसमुदैक्षत) क्रोधवश लक्ष्मण सर्पसमश्वास लेत संते खैंचिकै वह वाण मेघनाद पर छांड़तेभये तव क्रोधकरि लाल ह्वै गये हैं नेत्र जाके ऐसाइंद्रजित मेघनाद लक्ष्मण की दिशि देखता भया २७ (शक्राशनिसमस्पर्शैःशरैः लक्ष्मणेनहतःमुहूर्तंमूढःअभवत्पुनःप्रत्याहृतेन्द्रियः) इन्द्रके वज्रसम जाको स्पर्शहै ऐसे प्रचण्ड वाणोंसे लक्ष्मण करिकै ताडन कियागया मेघनाद मुहूर्त अर्थात् दोदंडतक मूर्च्छित परारहा पुनः प्राप्तभया इंद्री ज्ञानको अर्थात् चैतन्य होताभया २८ (वीरःदशरथात्मजंवीरंअवस्थितंददर्शक्रोधसंरक्तलोचनःससौमित्रिंअभिचक्राम) चैतन्य ह्वै मेघनाद वीर सन्मुख दशरथनन्दन लक्ष्मणवीरको खड़े हुये देखताभया तव क्रोध करिकै लालह्वैगयेहैं नेत्रजाके सो मेघनाद लक्ष्मणके सन्मुख जाताभया २९ (धनुषिशरान्संधायचलक्ष्मणंइदंअब्रवीत्प्रथमेयुद्धेयदितेमेपराक्रमःनदृष्टः) धनुष में वाणोंको संधान करि पुनः मेघनाद लक्ष्मण प्रति ऐसावचन वोलताभया हे लक्ष्मण प्रथमयुद्ध विषे जो तुम मेरेपराक्रमको नहीं देखा है ३० ॥

अद्यत्वांदर्शयिष्यामितिष्ठेदानींव्यवस्थितः ॥ इत्युक्त्वासप्तभिर्वाणैरभिविव्याध लक्ष्मणम् ३१ दशभिश्चहनूमंतंतीक्ष्णधारैःशरोत्तमैः ॥ ततःशरशतेनैवसंप्रयुक्तेनवीर्यवान् ३२ क्रोधाद्द्विगुणसंरब्धोनिर्बिभेदविभीषणम् ॥ लक्ष्मणोपितथा शत्रुंशरवर्षैरवाकिरत् ३३ तस्यवाणैःसुसंविद्धंकवचंकांचनप्रभम् ॥ व्यशीर्यत रथोपस्थेतिलशःपतितंभुवि ३४ ततःशरसहस्रेणसंक्रुद्धोरावणात्मजः ॥ विभेद

समरेवीरंलक्ष्मणंभीमविक्रमम् ३५ व्यशीर्य्यतापतद्दिव्यंकवचंलक्ष्मणस्यच ॥
कृतप्रतिकृतान्योन्यंबभूवतुरभिद्रुतौ ३६ ॥

(अद्यत्वांदर्शयिष्यामिइदानींव्यवस्थितः तिष्ठ इतिउक्त्वासप्तभिःवाणैःलक्ष्मणंअभिविव्याध) सो वल अव मैं तुमको देखाताहौं यासमय संग्राममें सन्मुखखड़े रहो ऐसा कहि मेघनाद सातवाणों करिकै लक्ष्मणको ताड़न करताभया ३१ (चतीक्ष्णधारैः दशभिः शरोत्तमैः हनूमंतं ततःवीर्यवान् संप्रयुक्तेनशरशतेनएव) पुनः पैनी हैं धारें जिनकी ऐसे दशउत्तम वाणों करिकै हनूमान्को ताड़न करता भया तदनन्तर वडावली मेघनाद धनुपमें योजितकरि सौवाणन करिकै ३२ (द्विगुणक्रोधात् संरब्धः विभीषणंनिर्बिभेदतथालक्ष्मणः अपि शरवर्षैःशत्रुंअवाकिरत्) द्विगुणे क्रोधते वाणों को छाड़ि विभीपणको भेदनकरता भया तैसेही लक्ष्मणभी समूहवाणोंकी वर्षाकरिकै शत्रु जो मेघनाद ताको आच्छादित करते भये भाववाणोंकी वर्षामें देखि नहीं परताहै ३३ (तस्यवाणैःसुसंविद्धंकांचनप्रभं कवचंरथोपस्थेतिलशः व्यशीर्य्यतभुविपतितं) तिन लक्ष्मणके वाणोंकरिकै ऐसा बेधागया मेघनाद जासो कंचन मय प्रकाशमान पहिरेरहा वख्तर सो रथके ऊपर तिलसम खंड खंडह्वैकटिकै सब टूक भूमिपै गिरि परे ३४ (ततःरावणात्मजः संक्रुद्धःसमरेशरसहस्रेण भीमविक्रमंवीरं लक्ष्मणं विभेद) तदनंतर रावण को पुत्र मेघनाद वड़ा क्रोध करि संग्राम में हजारों वाण प्रहारकरिकै बड़ा भयंकरहै पराक्रम जिनको ऐसे वीर लक्ष्मण को ऐसा विदारण करताभया जासो ३५ (लक्ष्मणस्य दिव्यंकवचंव्यशीर्य्यतअपतत्) लक्ष्मण को दिव्य वख्तर सोभी कटिकै टूक टूक ह्वैगिरिपरा (अन्योन्यंकृतप्रतिकृतअभिद्रुतौबभूव) परस्पर प्रहार करने पर प्रहार दोऊ दिशिते वारंवार संमुख धाय धाय दोऊ सो महायुद्ध होताभया ३६ ॥

अभीक्ष्णंनिश्वसंतौतौयुद्धेतांतुमुलंपुनः ॥ शरसंवृतसर्वांगौसर्वतोरुधिरोक्षितौ ३७ सुदीर्घकालंतौवीरावन्योन्यंनिशितैःशरैः॥ अयुध्येतांमहासत्वौजयाजयविवर्जितौ ३८ एतस्मिनंतरेवीरोलक्ष्मणःपञ्चभिःशरैः ॥ रावणेःसारथिंसाश्वं रथञ्चसमचूर्णयत् ३९ चिच्छेदकार्मुकंतस्यदर्शयन्हस्तलाघवम्॥सोन्यत्तुकार्मुकं भद्रंसज्यंचक्रेत्वरान्वितः ४० तच्चापमपिचिच्छेदलक्ष्मणस्त्रिभिराशुगैः ॥ तमेव च्छिन्नधन्वानंविव्याधानेकसायकैः ४१ पुनरन्यत्समादायकार्मुकंभीमविक्रमः ॥ इंद्रजित्लक्ष्मणंबाणैःशतैरादित्यसन्निभैः ४२ ॥

(तौतुमुलंयुद्धेतां पुनःअभीक्ष्णंनिश्वसंतौसर्वांगौशरसंवृतसर्वतःरुधिरोक्षितौ) दोऊजुटिकै युद्ध करते हैं पुनः क्रोध वा श्रमते वारम्वार बडी श्वास लेते हैं सर्व अंगों में बाणलगे हैं दोउन कोसंपूर्ण शरीर रुधिर से बूड़िरहा है ३७ (तौवीरौमहासत्वौजयाजयविवर्जितौअन्योन्यंनिशितैःशरैःसुदीर्घकालंअयुद्धेतां) तौ दोऊ लक्ष्मण मेघनाद वीर दोऊ महापराक्रमी ताते वीरताकी उत्साह में जय अथवा पराजय की चाह रहित परस्पर पैने वाणों करिकै वहुत वारतक युद्धकरते रहे ३८ (एतस्मिन्अंतरेलक्ष्मणःवीरः पंचभिःशरैःरावणेःसअश्वंरथंचसारथिं समचूर्णयत्) ताही समय के बीच में लक्ष्मण वीर पांचवाणों करिकै रावणी जो मेघनाद ताको सहित घोड़ेन रथपुनःसारथी रथहाकने वाला इत्यादि सवको चूर्ण करिडारे ३९ (हस्तलाघवंदर्शयन्तस्यकार्मुकंचिच्छेदतुसःअन्यत्भद्रं

कार्मुकंत्वरान्वितःसज्यंचक्रे) लक्ष्मण अपने हाथकी पटेवाजी देखावत संते तिसमेघनाद को धनुष काटि डारतेभये पुनः सो मेघनाद और मंगलीक धनुष को शीघ्रही सजिलेता भया ४० (त्रिभिः आशुगैःलक्ष्मणःतत्चापंअपिचिच्छेदचिच्छेदधन्वानंतंएवअनेकसायकैःविव्याध) तीनि बाणोंकरिकै लक्ष्मण सोऊ धनुष को भी काटि डारतेभये कटि गयाहै धनुष जाको ऐसे मेघनाद कोभी लक्ष्मण अनेक बाणोंकरिकै वेधते भये ४१ (पुनःअन्यत्कार्मुकंसमादायभीमविक्रमःइंद्रजित् आदित्य सन्निभैःशतैःबाणैःलक्ष्मणं) पुनः और धनुष लैकै भयंकर है पराक्रम जाके ऐसा मेघनाद सूर्य के तुल्य है प्रभा जिनमें ऐसे सौबाणौं करिकै लक्ष्मण को ४२ ॥

विभेदवानरान्सर्वान्बाणैरापूरयन्दिशः ॥ ततऐंद्रंसमादायलक्ष्मणोरावणिंप्रति ४३ संधायाकृष्यकर्णांतंकार्मुकंदृढनिष्ठुरम् ॥ उवाचलक्ष्मणोवीरःस्मरन्रामपदांबुजं ४४ धर्मात्मासत्यसंधश्चरामोदाशरथिर्यदि ॥ त्रिलोक्यामप्रतिद्वंद्वस्तदेनंजहिरावणिम् ४५ इत्युक्त्वाबाणमाकर्णाद्विकृष्यतमजिह्मगम् ॥ लक्ष्मणः समरेवीरःससर्जेन्द्रजितंप्रति ४६ सशरःसशिरस्त्राणंश्रीमज्ज्वलितकुण्डलम्॥प्रमथ्येंद्रजितःकायात्पातयामासभूतले ४७ततःप्रमुदितादेवाःकीर्तयंतोरघूत्तमम्॥ ववर्षुःपुष्पवर्षाणिस्तुवन्तश्चमुहुर्मुहुः ४८ ॥

(बाणैःदिशःअपूरयन्सर्वान्वानरान्विभेदेततःलक्ष्मणःऐंद्रंसमादायरावणिंप्रति) मेघनाद बाणौं करिकै सब दिशौं को ऐसापूर्ण करिदिया जासों सबवानरौं को भेदनकिया तब लक्ष्मण ऐंद्र अस्त्र मंत्रित करि हाथ में लैकै मेघनाद के बधहेत ४३ (दृढनिष्ठुरम्कार्मुकंसंधायकर्णांतंआकृष्यरामपदांबुजंस्मरन्लक्ष्मणःवीरःउवाच) पुष्टकठोर धनुष में बाण संधान करिता युतरोदा कर्ण पर्यंत खैंचि रघुनंदन के पदकमलन को स्मरण करत संते लक्ष्मण वीरबोलते भये ४४ (दाशरथिःरामःयदिध र्मात्माचसत्यसंधःत्रिलोक्यांअप्रतिद्वंद्वःततएनंरावणिंजहि) लक्ष्मण बोले कि दशरथ के पुत्रराम जो धर्मात्मा होंइपुनःसत्यप्रतिज्ञा होंइतथा तीनिहुँ लोकनमें जिनकी समताको दूसरा बरियोद्धान होयतौ हे वाण इसरावण के पुत्र मेघनाद को नाशकरु ४५ (इतिउक्त्वालक्ष्मणःवीरःबाणंआकर्णात्विकृष्यतंअजिह्मगंसमरेइंद्रजितंप्रतिससर्ज) ऐसा कहिलक्ष्मण वीरबाणको कर्ण पर्यंत खैंचितिस बाण को संग्राम विषे मेघनाद प्रति छांड़ते भये ४६ (सत्राणंश्रीमत्ज्वलितकुंडलंशिरः सशरःप्रमथिइंद्रजितःकायात्भूतलेपातयामास) सहित कुंडल प्रकाशमान कुंडल हैं जामें तिसशिरको सो बाण काटिकै(इंद्रजितःकायात्)अर्थात् मेघनाद की देहते भिन्नकरि भूतल में डारि देताभया ४७ (ततःदेवाःप्रमुदिताःरघूत्तमम्कीर्तयंतःपुष्पवर्षाणिववर्षुःचमुहुःमुहुःस्तुवंतः) तदनंतर अर्थात् मेघनाद के मरेपर इंद्रादि सब देवतापरम आनंद ह्वैकै रघुनंदन के गुणनको कीर्त्तन करतेभये फूलोंकी वर्षावर्षते भये पुनः बारम्बार स्तुति करते भये ४८ ॥

जहर्षशक्रोभगवान्सहदेवैर्महर्षिभिः ॥ आकाशेपिचदेवानां शुश्रुवेदुंदुभिःस्वनः ४९ विमलंगगनंचासीत्स्थिराभूद्विश्वधारिणी ॥ निहतंरावणिंदृष्ट्वाजयजल्पसमन्वितः५०गतश्रमःससौमित्रिःशंखमापूरयद्रणे ॥ सिंहनादंततःकृत्वाज्याशब्दमकरोद्विभुः५१ तेननादेनसंहृष्टावानराश्चगतश्रमाः ॥ वानरेन्द्रैश्चसहितःस्तु

वद्भिर्हृष्टमानसैः ५२ लक्ष्मणःपरितुष्टात्मादद्दर्शाभ्येत्यराघवम् ॥ हनूमद्राक्षसाभ्यांचसहितोविनयान्वितः ५३ ववंदेभ्रातरंरामंज्येष्ठंनारायणंविभुम् ॥ त्वत्प्रसादाद्रघुश्रेष्ठहतोरावणिराहवे ५४ ॥

(सहदेवैःमहाऋषिभिःशक्रः भगवान्जहर्षच आकाशेपिदेवानां दुंदुभि स्वनःशुश्रुवे) सहित सब देवतन महा ऋषिण करिकै सहित इंद्र भगवान् आनंदको प्राप्त होतेभये पुनः आकाशमें भी देवतों के वजाये हुये नगारों का शब्द सुनि परता है ४९ (गगनंविमलंआसीत्चविश्वधारिणीस्थिराभूत् रावर्णिनिहतंदृष्ट्वा जयजल्पसमन्वितः) आकाश विमल होता भया पुनः विश्वको धारण करन हारी पृथिवी सो स्थिर होती भई रावण के पुत्र को मरा देखि सब दिशिते जयजय कार धुनि सहित ५० (गतश्रमःसौमित्रिः रणेशंखंअपूरयत् ततःसिंहनादंकृत्वा विभुःज्याशब्दंअकरोत्) वीति गयाहै श्रम जिन को ऐसे लक्ष्मण रण भूमि विषे जय दर्शावन हारा शंख वजावते भये तदनंतर सिंहवत् नाद करि गर्जि समर्थ लक्ष्मण धनुष के रोदा को शब्द करते भये ५१ (तेन नादेनवानराःसंहृष्टाः चगत श्रमाःस्तुवद्भिः चहृष्टमानसैः वानरेंद्रैसहिताः) जो लक्ष्मण धनुष टंकोर किया त्यहिशब्द करिकै सब वानर आनंद होते भये पुनः श्रम रहित भये ताते लक्ष्मण की स्तुति करते हुये पुनः आनंद है मन करिकै ऐसे उत्तम वानरन सहित ५२ (परितुष्टात्मालक्ष्मणःचहनूमत्राक्षसाभ्यांसहितअभ्येत्यराघवंद दर्शविनयान्वितः) शत्रुमारि कुशलपूर्वक लौटे इति परमआनन्दचित्त लक्ष्मण पुनः हनूमान् अरु राक्षस विभीषण इन दोउन करिकै सहितआय सन्मुख रघुनन्दनको देखते तब नम्रतायुक्त ह्वैकरि लक्ष्मणजी ५३ (विभुंनारायणंज्येष्ठंभ्रातरंरामंववंदेरघुश्रेष्ठत्वत्प्रसादात्आहवेरावणिर्हतः) समर्थ साक्षात् नारायण ज्येठे भाई जो राम तिनहिंप्रणाम करतेभयेपुनः लक्ष्मणवोले हेरघुवंशनाथआपके प्रसादते रण में रावण को पुत्र मेघनाद मारागया ५४ ॥

श्रुत्वातल्लक्ष्मणाद्भक्त्यातमालिंग्यरघूत्तमः ॥ मूर्ध्न्यवघ्रायमुदितःसस्नेहमिदमब्रवीत्५५साधुलक्ष्मणतुष्टोस्मिकर्मतेदुष्करंकृतम् ॥ मेघनादस्यनिधनेजितंसर्वमरिंदम ५६ अहोरात्रैस्त्रिभिर्वीरःकथंचिद्विनिपातितः ॥ निःसपत्नःकृतोस्म्यद्यनिर्यास्यतिहिरावणः ५७ पुत्रशोकान्मयायोद्धुंतंहनिष्यामिरावणम् ॥ मेघनादंहतंश्रुत्वालक्ष्मणेनमहाबलम् ५८ रावणःपतितोभूमौमूर्च्छितःपुनरुत्थितः ॥ विललापातिदीनात्मापुत्रशोकेनरावणः ५९ पुत्रस्यगुणकर्माणिसंस्मरन्पर्यदेवयत ॥ अद्यदेवगणाःसर्वेलोकपालामहर्षयः ६० ॥

(तत्भक्त्यालक्ष्मणात्श्रुत्वारघूत्तमः तंआलिंग्यमुदितःमूर्ध्न्यवघ्रायसहस्नेहंइदंअब्रवीत्) सो वचन भक्ति करिकै सहित लक्ष्मण के मुखते सुनिकै रघुनन्दन तिन लक्ष्मण को हृदय में लगाय आनद सहित शिर सूँघि सहित स्नेह ऐसा वचन वोलते भये ५५ (लक्ष्मणसाधुतुष्टोस्मि तेदुष्करं कर्मकृतम्अरिंदममेघनादस्यनिधनेसर्वंजितं) हे लक्ष्मण साधुमैं तुम्हारे ऊपर वहुत प्रसन्नहौं क्यों-कि दुष्कर अर्थात् जो किसीके करने योग्य न रहै सो कर्म तुमने किया हे शत्रुनके नाश करने वाले मेघनाद को वधकरत संते सब राक्षसों को तुमने जीति लिया ५६ (त्रिभिःअहोरात्रैःकथंचित्वीरः विनिपातितः अद्यनिःसपत्नःकृतोस्मिहिरावणःनिर्यास्यति) तीनि दिन रात्रों करिकैकैसेभी मेघनाद

वीर मारपाया हे लक्ष्मण तुमने यासमय मोको शत्रु रहित करिदिया अब पुत्र शोकाकुल रावण शीघ्रहीं आवैगा ५७ (पुत्रशोकात्मयायोद्धुंरावणंहनिष्यामि) पुत्र शोकते मेरेसाथ युद्ध करने को आवैगो तव रावण को शीघ्रही बध करौंगो (मेघनादंमहावलम्लक्ष्मणेनहतंश्रुत्वा) मेघनाद महा वली सो लक्ष्मण करिकै मारागया यह सुनिकै ५८ (रावणःमूर्च्छितःभूमौपतितः पुनःउत्थितः पुत्र शोकेनरावणःअतिदीनात्माविललाप) मेघनाद को मरण सुनतही रावण मूर्च्छितह्वै भूमिपै गिरि परा पुनः उठिकै पुत्र के शोक करिकै रावण अत्यंत दीनपुरुपरथ हीनह्वै विलाप अर्थात् रोदन करता भया ५९ (पर्यदेवयत्पुत्रस्यगुणकर्माणिसंस्मरन् अद्यसर्वेलोकपालाः देवगणाःमहर्षयः) विलाप करतसंते रावण पुत्र के गुण वल वीरता सूरता पितु आज्ञा कारतादि तथा कर्म दिग्विजया दि स्मरण करि कहत की अब सब लोकपाल देवगण महा ऋषि ६० ॥

हतमिंद्रजितंज्ञात्वासुखंस्वप्स्यंतिनिर्भयाः ॥ इत्यादिबहुशःपुत्रलालसोविललाप ह ६१ ततःपरमसंक्रुद्धोरावणोराक्षसाधिपः ॥ उवाचराक्षसान्सर्वान्विनाशयिषु राहवे६२सपुत्रबधसंतप्तःशूरःक्रोधवशङ्गतः ॥ संवीक्ष्यरावणोबुद्ध्याहंतुंसीतांप्रद्रु द्रुवे ६३ खड्गपाणिमथायांतंक्रुद्धंदृष्ट्वादशाननम् ॥ राक्षसीमध्यगासीता भयशोका कुलाभवत् ६४एतस्मिन्नंतरेतस्यसचिवोबुद्धिमान्शुचिः ॥ सुपार्श्वोनाममेधावी रावणंवाक्यमब्रवीत् ६५ ॥

(इन्द्रजितंहतंज्ञात्वानिर्भयाःसुखंस्वप्स्यंति इत्यादिपुत्रलालसःबहुशःविललापह) देवगण लोक पाल महाऋपि इत्यादि सब मेघनादको मरणजानिकै अब निर्भयह्वैकै सुखपूर्वक सोवहिंगे इत्यादि पुत्रकीलालसाकरिकै शोकयुत रावण वहुत प्रकारके वचनकहि विलापकरताभया ६१ (ततःराक्षसा धिपःरावणःपरमसंक्रुद्धःविनाशयिपुःआहवेसर्वान्राक्षसान्उवाच) तदनन्तर राक्षसौंको राजा रावण परमक्रोधयुक्तह्वै शत्रुनको नाशकरनेकी इच्छाकरिकै संग्रामकरनेको सब राक्षसनसो बोलताभया भाव सब राक्षसजाउ वानरौंते युद्धकरौ ६२ (पुत्रबधसंतप्तःशूरःक्रोधवशंगतः सरावणःबुद्ध्यासंवीक्ष्यसीतां हंतुंप्रदुद्रुवे) पुत्रबध दुःखाग्नि में संतप्तह्वै शूरभी क्रोधवशीभूतह्वै सो रावण बुद्धिसे विचारकरिकै भाव इसीके हेत मेरे बन्धु पुत्र सेना सुभटादि सब मारेगये इति विचारि सीताको मारिबेहेतधावताभया ६३ (अथखड्गपाणिंक्रुद्धंदशाननम्आयांतं तंदृष्ट्वाराक्षसीमध्यगासतिाभयशोकाकुलाअभवत्) अब प्रकाश- मान नग्नतरवारि हाथमेंलिहे क्रोधयुत दशानन अर्थात् रावणको आवतेदेखि पुनः इधर कोई धर्मवंत नहीं जो रक्षाकरै हिंसा रत राक्षसिनके मध्यमें प्राप्त सीता भय शोककरिकै आकुलहोतीभई भाव मोको अवशि बधकरी ६४ (एतस्मिन्नंतरेतस्यसचिवःसुपार्श्वःनाममेधावीशुचिः बुद्धिमान्रावणंवा क्यंअब्रवीत्) ताही समयविपे तिसरावणको मंत्री सुपार्श्वनाम धीः धारणकरनहारी जो मेधा त्यहि युक्त पवित्र बुद्धिमान् सो सुपार्श्व मंत्री अनीति कार्यपर उद्यतदेखि रावणप्रति वचनबोलताभया ६५॥

ननुनामदशग्रीवसाक्षाद्वैश्रवणानुजः ॥ वेदविद्याव्रतस्नातःस्वकर्मपरिनिष्ठितः ६६ अनेकगुणसम्पन्नःकथंस्त्रीवधमिच्छसि ॥ अस्माभिःसहितोयुद्धेहत्वारामंचलक्ष्म णम् ॥ प्राप्स्यसेजानकींशीघ्रमित्युक्तःसन्यवर्तत ६७ ततोदुरात्मासुहृदानिवेदितं

वचःसुधर्म्यंप्रतिगृह्यरावणः ॥ गृहंजगामाशुशुचाविमूढधीःपुनःसभांचप्रययौ सुहृद्वृतः ६८ ॥

इति श्रीमदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसम्वादेयुद्धकाण्डेनवमःसर्गः ॥ ९ ॥

(दशाननसाक्षात्वैश्रवणस्यअनुजःननुनाम) सुपार्श्व बोला हे दशग्रीव तुम साक्षात् कुबेरके छोटे भाईहौ इत्यादि निश्चयकरिकै तुम्हारानाम लोक में प्रसिद्ध है भाव लोकविजयी बली शूरवीरहौ पुनः (वेदविद्याव्रतस्नातः स्वकर्मपरिनिष्ठितः) वेदविद्या में प्रवीण महाव्रत अर्थात् प्रतिज्ञाको निर्वाहनहारे पुनः मुक्ति हेत गायत्रीद्वारा परब्रह्मकी उपासनादेह शुद्धी हेत निर्वाशिक पंचदेवनकी पूजा इति स्नातधर्म जो अपने ब्राह्मणौंकेकर्म हैं तिनमें निष्ठाराखे ६६ (अनेकगुणसम्पन्नःस्त्रीवधं कथमिच्छसि अस्माभिःसहितःयुद्धेरामचलक्ष्मणंहत्वा) विद्या बुद्धि साहस वीरता धीरता अनेकउत्तम गुणौंकरिकै परिपूर्णह्वैकै तुम अवध्य स्त्री को बधकरनेकी कैसे इच्छाकरतेहौभाव यह काम तुम्हारे योग्य नहीं है ताते हमलोगोंकरिकै सहितचलो संग्राम में रामको पुनः लक्ष्मणकोमारो तब (शीघ्रं जानकींप्राप्स्यसेइतिउक्तःसन्यवर्तत) शीघ्रही जानकीको प्राप्तहोउगे ऐसा समुझाय जब सुपार्श्व तब रावण सीता वधते निवृत्तभया ६७ (सुहृदानिवेदितंसुधर्म्यंवचःप्रतिगृह्यततःदुरात्मारावणःआ शुगृहंजगामचशुचाविमूढधीःसुहृद्वृत पुन सभांप्रययौ) मित्रके कहेहुये जो सुधर्मयुत वचन तिनको ग्रहणकरिकै तदनन्तर दुष्ट रावण शीघ्रही घरकोजाताभया पुनः शोचकरिकै विशेषिमूढ है बुद्धिजाकी ऐसा रावण मंत्रिनकरिकै वेष्टित पुनः सभाकोजाताभया ६८ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचिते अध्यात्मभूषणेयुद्धकाण्डेनवमःप्रकाशः ९ ॥

सविचार्यसभामध्येराक्षसैःसहमंत्रिभिः ॥ निर्ययौयेवसिष्टास्तैराक्षसैःसहराघव म् १ शलभःशलभैर्युक्तःप्रज्वलंतमिवानलम् ॥ ततोरामेणनिहताःसर्वेतेराक्षसा युधि २ स्वयंरामेणनिहतस्तीक्ष्णबाणेनवक्षसि ॥ व्यथितस्त्वरितंलंकांप्रविवेश दशाननः ३ दृष्ट्वारामस्यबहुशःपौरुषंचाप्यमानुषम् ॥ रावणोमारुतेश्चैवशीघ्रं शुक्रांतिकंययौ ४ नमस्कृत्यदशग्रीवःशुक्रंप्रांजलिरब्रवीत् ॥ भगवन्राघवेणैवंलं कांराक्षसयूथपैः ५ विनाशितामहादैत्यानिहताःपुत्रबांधवाः ॥ कथंमेदुःखसंदोह स्त्वयितिष्ठतिसद्गुरौ ६ ॥

सवैया ॥ रणसंमुख राघवराक्षस मारिसधावन रावण लंकगयो । उशनामतसो खल यज्ञरचे मुनि राघवकीशतहीं पठयो ॥ तियशांसति यज्ञ विध्वंसिचले उठि रावण नारिसुज्ञानदयो । प्रभुकी महिमा तियसो सुनिकै कहि रावण मोकुल मुक्तभयो ॥ (राक्षसैःमांत्रिभिःसहसभामध्येसविचार्ययेवशि ष्टास्तैराक्षसैःसहराघवंनिर्ययौ) शिवजी बोले हे गिरिजा अब सब राक्षस अरु मंत्रिन करिकै सहित सभाके मध्यमें बैठि सो रावण विचारकरि जे बाकीरहे तिन निशाचरन करिकै साहित रावण रघुनंदनसो युद्धकरने को जाताभया १ (शलभैःयुक्तःशलभःज्वलंतंअनलंइवततःतेसर्वेराक्षसाःयुधिरामे

णनिहताः) सहित राक्षसन रावण कैसा प्रभुके संमुख गया जैसे पतंगियों सहित पतंगावरतीहुई अग्निके संमुख गये तदनन्तर ते सब राक्षस संग्राम में रघुनन्दन करिकै नाशभये २ रामेणतीक्ष्णवाणेनवक्षसिनिहतःस्वयंदशाननःव्यथितःत्वरितंलंकांप्रविवेश) जब रामने पैनेबाण करिकै छाती में मारे तब आप रावण भी बड़ी व्यथाको प्राप्त है तुरतही लंकामें प्रवेश किया ३ (अमानुषंअपिचरामस्यबहुशःपौरुषंचएवमारुतेःदृष्ट्वारावणःशीघ्रंशुक्रांतिकंययौ) नहींहै मानुषत्वभी पुनः रामका बहुत सा पौरुष पुनः हनुमान्का पौरुष देखि हियेहारि रावण शीघ्रही शुक्राचार्य के पासजाताभया ४ (दशग्रीवःनमस्कृत्यप्रांजलिःशुक्रंअब्रवीत्भगवन्रामेणएवंराक्षसयूथपैःलंकाविनाशिता) रावण नमस्कार करि हाथ जोरि शुक्रप्रति बोला हे भगवन् यथा मैं घायल हों रामने इसी प्रकार राक्षस यूथपों करिकै सहित लंका को नाश करिदिया ५ (पुत्रबांधवामहादैत्यानिहतासद्गुरौत्वयितिष्ठतिकथंमेदुःखसंदोहः) मेरे पुत्रभाई महाबली दैत्यनको नाशकरि दिया आप ऐसे उत्तम गुरुके बने रहत संते कैसे मोको दुःख समूह होवै भाव न होना चाहिये ६ ॥

इतिविज्ञापितोदैत्यगुरुःप्राहदशाननम् ॥ होमंकुरुप्रयत्नेनरहसित्वंदशानन ७
यदिविघ्नोनचेद्धोमेतर्हिहोमानलोत्थितः ८ महान्रथश्चवाहाश्चचापतूणीरशायकाः ॥ संभविष्यंतितैर्युक्तस्त्वमजेयोभविष्यसि ९ गृहाणमंत्रान्मद्दत्तान्गच्छ होमंकुरुद्रुतम् ॥ इत्युक्तस्त्वरितंगत्वारावणोराक्षसाधिपः १० गुहांपातालसदृशीं मंदिरेस्वेचकारह ॥ लंकाद्वारकपाटादिबध्वासर्वत्रयत्नतः ११ होमद्रव्याणिसंपाद्य यान्युक्तान्यभिचारिके ॥ गुहांप्रविश्यचैकांतेमौनीहोमंप्रचक्रमे १२ उत्थितंधूममालोक्यमहांतंरावणानुजः ॥ रामयदर्शयामासहोमधूमंभयाकुलः १३ ॥

(इतिविज्ञापितःदैत्यगुरुःदशाननंप्राहदशाननरहसिप्रयत्नेनत्वंहोमंकुरु) ऐसे अपनेदुःखकोहाल सुनाया तब दैत्यगुरु शुक्राचार्य रावणप्रति बोलते भये हे दशानन एकांतस्थानमें यत्न करिकै भाव विदित न होवै गुप्त बैठितुम होमकरो ७ (यदिचेत्विघ्नःनतर्हिहोमानलात्महान्रथःउत्थितः) जो कदाचित् विघ्ननलागैंगे तौ होमअग्निते एकबड़ा उत्तम रथ निकलैगो ८ (चवाहाःचचापतूणीरशायकाःसंभविष्यति) रथपुनः घोड़ेपुनः धनुष तरकस बाण उत्पन्न होयंगे) तैःयुक्तःत्वंअजेयःभविष्यसि (हे रावण तिन रथादि युक्त युद्धकरने में तुम अजय होउगे तुमसे कोऊन जीति सकैगो ९ मत्दत्तान्मंत्रान्गृहाणद्रुतम्गच्छहोमंकुरुइतिउक्तःराक्षसाधिपःरावणःत्वरितंगत्वा) मेरे दियेहुये मंत्रौंको ग्रहण करि शीघ्रही जाय होमकरौ ऐसा जब शुक्रने कहा तब राक्षसौं को राजारावण तुरत ही गया १० (स्वेमंदिरेपातालसदृशींगुहांचकारहयत्नतःलंकाद्वारकपाटादिसर्वत्रबध्वा) अपनेमंदिर में रावण पाताल के समान गहिर गुहा बनवावताभया यत्नपूर्वक लंकाद्वारोंके केवारादि सब बंदकराय दिया ११ (अभिचारकेयानिउक्तानिहोमद्रव्याणिसंपाद्यगुहांप्रविश्यचएकांतेमौनीहोमंप्रचक्रमे) तंत्रौमें शत्रुनाशनप्रयोग में जो कहीं हैं होमकीद्रव्ययथा बहेरा भेलावां काष्ठमसान छार सेरसौं मद्य मांस उलूक पक्षी इत्यादि बटोरि गुहामें पैठि पुनः एकांतमें मौन बैठा होमकरता भया १२ (महांतंधूमंउत्थितंआलोक्यरावणानुजःभयाकुलंहोमधूमंरामायदर्शयामास) बडाभारी धूम उठता देखि रावणानुज विभीषण भयाकुल है आय होमको धूम रघुनन्दन के अर्थ देखावते भये १३ ॥

पश्यरामदशग्रीवो होमंकर्तुंसमारभत् ॥ यदिहोमःसमाप्तःस्यात्तदाजेयोभविष्य
ति १४ अतोविघ्नायहोमस्यप्रेषयाशुहरीश्वरान् ॥ तथेतिरामःसुग्रीवसंमतेनां
गदंकपिम् १५ हनूमत्प्रमुखान्वीरान्आदिदेशमहाबलान् ॥ प्रकारंलंघयित्वाते
गत्वारावणमंदिरम् १६ दशकोट्यःप्लवंगानांगत्वामन्दिररक्षकान् ॥ चूर्णयामासु
रश्वांश्चगजांश्चन्यहनत्क्षणात् १७ ततश्चसरमानामप्रभातेहस्तसंज्ञया ॥ वि
भीषणस्यभार्यासाहोमस्थानमसूचयत् १८ गुहापिधानपाषाणमंगदःपादघट्टनैः ॥
चूर्णयित्वामहासत्वःप्रविवेशमहागुहाम् १९ ॥

(रामदशग्रीवःहोमंकर्तुंसमारभत्पश्ययदिहोमःसमाप्तःस्यात्तदाअजेयःभविष्यति) विभीषण कहत हे राम रावण होमकरनेको प्रारंभकिया ताको धूम देखिये जो यह होम कदाचित् समाप्तभया तो रावण अजीत ह्वै जायगा भाव फिरि न शीघ्रमरैगा १४ (अतःहोमस्यविघ्नायहरीश्वरान्आशु प्रेषयतथाइतिरामःसुग्रीवसंमतेनअंगदंकपिम्)इसकारणसे होमके विघ्नकरणेअर्थ वानरनको शीघ्रही पठाइये बहुतभली ऐसाकहि रघुनंदन सुग्रीवके संमतकरिकै अर्थात् सल्लाहलैकरि अंगदकपिको १५ (हनुमत्प्रमुखानवीरान्महाबलान्आदिदेशतेप्रकारंलंघयित्वारावणमंदिरंगत्वा) हनूमानादि बीर महाबली वानरनको आज्ञादिये भावरावणकोहोमभंगकरिआवौ सोसुनिते वानरलंकाके कोटकोफांदि रावण के मंदिरके द्वारपरको जातेभये १६ (दशकोट्यःप्लवंगानांगत्वा) दशकरोरिवानररातिहीं कोगये (मंदिररक्षकान्चूर्णयामासुः) रावणके मंदिरके रक्षक रहैं तिनको मारिचूरकरिदिये (चअ श्वांचगजांक्षणात्न्यहनत) पुनः घोड़ौंको हाथिनको क्षणों भरे में नाशकरिदिये सर्वत्र मंदिर ढूंढ़े होम थलनपाये १७ (चततःप्रभातेसरमानाम विभीषणस्यभार्यासाहस्तसंज्ञयाहोमस्थानंअसूचयत्) पुनः तदनंतर भोरभये समय सरमा नाम विभीषणकी स्त्री सोहाथेकी संज्ञाकरि गुप्तजो होमको-स्थान ताहि सूचितसकरिदिया भाव इस भूमिकाकेनीचेहै १८ (अंगदःपादघट्टनैःगुहापिधानपाषाणं चूर्णयित्वामहासत्वःमहागुहाम्प्रविवेश) अंगद पायनकी ठोकरौंकरिकै गुहाद्वारमें मूंदाहुआ शिलाको चूरचूरकरिद्वारखोलिकै अंगदहनूमानादि महाबलीबीरवानर बड़ेभारी गुहाकेभीतरप्रवेशकरतेभये १९॥

दृष्ट्वादशाननंतत्रमीलिताक्षंदृढासनम् ॥ ततोंगदाज्ञयासर्वे वानराविविशुर्द्रुत
म् २० तत्रकोलाहलंचक्रुस्ताडयंतश्चसेवकान् ॥ संभारांश्चिक्षिपुस्तत्रहोमकुंडे
समंततः २१ स्रुवमाच्छिद्यहस्ताच्चरावणस्यबलाद्रुषा ॥ तेनैवसंजघानाशुहनूमा
नप्लवगाग्रणीः २२ प्रतिदंतैश्चकाष्ठैश्चवानरास्तामितस्ततः ॥ नजहौरावणोध्या
नंहतोपिविजिगीषया २३ प्रविश्यंतःपुरेवेस्मन्यंगदोवेगवत्तरः ॥ समानयत्केश
बंधेधृत्वामंदोदरींशुभाम् २४ रावणस्यैवपुरतोविलपंतीमनाथवत् ॥ विददारांग
दस्तस्याःकंचुकंरत्नभूषितम् २५ मुक्ताःविमुक्ताःपतिताः समंताद्रत्नसंचयैः ॥ श्रो
णिसूत्रंनिपतितंत्रुटितंरत्नचित्रितम् २६ ॥

(तत्रमीलिताक्षंदृढासनंदशाननंदृष्ट्वाततःअंगदाज्ञयाद्रुतम्सर्वेवानराःविविशुः) तहां नेत्रमूंदे दृढ़ आसनपर बैठाहुवा रावणको देखि तदनंतर अंगदकी आज्ञाकरिकै शीघ्रहीं सब वानरहोमस्थलमें प्रवेशकरिगये २० (तत्रकोलाहलंचक्रुःचसेवकान्ताडयंतःतत्रसमंततःसंभारान्होमकुंडेचिक्षिपुः)

तहांवानर कोलाहल भारी शब्दकरकै रावणके सेवकनको मारनेलगे तहां सबदिशौंते होसकी साम ग्रीको लैकरि होमकुंड में फेंकिदेतेभये २१ (प्लवंगाग्रणीःहनूमान्रुपावलात्रावणस्यहस्तात्स्रुवंआच्छिद्यतेनएवआशुजघान) वानरौंमें अग्रणी मुख्य हनूमान् क्रोधकरि वरवश बलते रावण के हाथते स्रुवाछीनिकै ताही करिकै शीघ्रही रावणके मारतेभये २२ (ततःइतःवानराःदंतैःचकाष्ठैःचतंघ्नन्ति हतःअपिरावणःविजिगीषयाध्यानंनजहौ)तब इधरउधरते वानर दातौंकरिकै पुनः काष्ठोंकरिकै तिस रावणको ताड़न करतेहैं इतिताड़न कियाभी रावण विजयकी इच्छा करिकै ध्यानको न त्यागा २३ (वेगवत्तरःअंगदःअंतःपुरेवेस्मनिप्रविश्यशुभांमंदोदरींकेशबंधेधृत्वासमानयत) वेगतायुक्त अंगद राजमंदिर रनवास में प्रवेशकरि मंगलरूप मंदोदरीके बारोंको जूरापकारे खैंचिलाये २४ (अनाथवत् विलपंतींरावणस्यएवपुरतःतस्या कंचुकंरत्नभूषितंअंगदःविददार) अनाथकी नाईं रोवतीहुई रावण केभी आगे ताकी कंचुकी रत्नजड़िततताको अंगद फारिडारे २५ (पुनःरत्नसंचयैःसमंतात्विमुक्तः मुक्तःपतितःरत्नचित्रितंश्रोणिसूत्रंत्रुटितंनिपतितं) मुक्तादिरत्न समूहकरिकै जटित जो कंचुकी सो फाटेते सब ओरनते टूटिटूटिमुक्तागिरतेहैं पुनःरत्नजटित जोकटिसूत्ररहै सोभी टूटिकैगिरिपरी २६ ॥

कटिप्रदेशाद्विस्त्रस्तानीवीतस्यैवपश्यतः ॥ भूषणानिचसर्वाणिपतितानिसमंततः २७ देवगंधर्वकन्याश्चनीताहृष्टैःप्लवंगमैः ॥ मंदोदरीरुरोदाथरावणस्याग्रतो भृशम् २८क्रोशंतीकरुणंदीनांजगाददशकंधरम्॥निर्लज्जोसिपरैरेवंकेशपाशेविकृष्यसे २९ भार्यांतवैवपुरतःकिंजुहोषिनलज्जसे ॥ हन्यतेपश्यतोयस्यभार्यापापैश्चशत्रुभिः ३० मर्तव्यंतेनतत्रैवजीवतान्मरणंवरम् ॥ हामेघनादतेमाताक्लिश्यतेवतवानरैः ३१ त्वयिजीवतिमेदुःखमीदृशंचकथंभवेत् ॥ भार्यालज्जाचसंत्यक्ताभर्त्रामेजीविताशया ३२ ॥

(तस्यएवपश्यतःकटिप्रदेशात्नीवीविस्रस्ताचसर्वाणिभूषणानिसमंततःपतितानि) तिसरावण के भीदेखतही मंदोदरी के कटिदेश में पटदृढ़ हेतबँधीरही जो नीबिअर्थात् कोछी गांठिसोभी खुलि परी और भी सर्वांगके भूषणसब छूटि सर्वत्र भूमिपै गिरिपरे २७ (चदेवगंधर्वकन्याःप्लवंगमैःहृष्टैःनीता अथरावणस्यअग्रतःमंदोदरीभृशम्रुरोद)पुनः और भी रावणकी रानी जोदेवनकी गन्धर्वनकी कन्या रहीं तिनको वानरौंने खुशीते पकरिलाये मंदोदरीकीसी दशाकिये अब रावणके आगे मंदोदरीअत्यंत रोदनकरती भई २८ (करुणंदीनाक्रोशंतीदशकंधरंजगाद निर्लज्जःअसिएवंपरैःकेशपाशेविकृष्यसे) जासो रावण के करुणाआवै इसभांति दीन ह्वै रोवती हुई मंदोदरी रावणप्रति बोलती भई कि तुम बड़े निर्लज्जहौ क्योंकि इसप्रकार तुम्हारे आगे शत्रुनकरिकै केशबंधगहे खैंची जातीहौं २९ (भार्यांतवएवपुरतःलज्जसेनकिंजुहोषिपापैःचशत्रुभिःपश्यतःयस्यभार्याहन्यते) तेरी स्त्री मैं तेरेही आगे इसदशा को प्राप्त तूलज्जा नहींकरता क्यों होमकरता है स्त्रीघातक पापी पुनः शत्रुन करिकै पतिके देखत जिसकी स्त्री मारीजावै ३० (तेनतत्रएवमर्तव्यंजीवनात्मरणंवरंहामेघनादतेमाता वतवानरैःक्लिश्यते) जिसके देखत स्त्री शत्रुकरि ताड़नकी जाय त्यहि लाज करिकैतहँ पतिको भी मरिजाना चाहिये ऐसे जीवनते मरना उत्तम है हामेघनादतेरी मातावड़े खेदकी बात वानरौं करिकै क्लेशको प्राप्तहोय ३१ (त्वयिजीवतिचमेईदृशंदुःखंकथंभवेत्मेभर्त्राजीविताशयाभार्याचलज्जा

संत्यक्ता) हे मेघनाद तू जीवत होतातौ मोको इस प्रकारको दुःख कैसे होता अरु मेरापति तौ जीवनकी आशा करिकै स्त्री पुनः लज्जा दोऊत्याग किया तत्र कौन सहायक है ३२ ॥

श्रुत्वातद्देवितंराजामंदोदर्य्यादशाननः ॥ उत्तस्थौखड्गमादायत्यजदेवीमितिब्रुवन् ३३ जघानांगदमव्यग्र कटिदेशेदशाननः ॥ ततोत्सृज्यययुःसर्वेविध्वंस्यहवनं महत् ३४ रामपार्श्वमुपागम्यतस्थुःसर्वेप्रहर्षिताः ॥ रावणस्तुततोभार्यामुवाचप रिसांत्वयन् ३५ दैवाधीनमिदंभद्रेजीवताकिन्नदृश्यते ॥ त्यजशोकंविशालाक्षिज्ञा नमालंब्यनिश्चितं ३६ अज्ञानप्रभवःशोकःशोकोज्ञानविनाशकृत् ॥ अज्ञानप्रभ वाहंधीःशरीरादिष्वनात्मसु ३७ तन्मूलंपुत्रदारादिसंबंधःसंसृतिस्ततः ॥ हर्षशो कभयक्रोधलोभमोहस्पृहादयः ३८ अज्ञानप्रभवाःह्येतेजन्ममृत्युजरादयः ॥ आ त्मातुकेवलःशुद्धोव्यतिरिक्तोह्यलेपकः ३९ ॥

(मंदोदर्य्यातत्देवितंश्रुत्वाराजादशाननःखड्गंमादायउत्तस्थौदेवींत्यजइतिब्रुवन्) मंदोदरीको विलाप ताको सुनिकै राजारावण तरवारिलैकै उठा अंगद प्रति बोला कि देवी जो मंदोदरी ताकोछोड़ में आता हौं ऐसा कहत संते ३३ (अव्यग्रःदशाननःकटिदेशेअंगदंजघानततोत्सृज्यमहत्हवनंविध्वंस्यसर्वेययुः) सावधान ह्वै रावण कमरपै अंगदके तरवारि मारताभया तब स्त्रियोंको छांडि महाभारी हवनको विध्वंसि सब बानर जातेभये ३४ (रामपार्श्वेउपागम्यसर्वेप्रहर्षितातस्थुःततःरावणस्तुपरिसांत्वयन्भार्यांउवाच) रघुनाथ जीके समीप जाय सब बानर आनंद सहित बैठे तदनन्तर रावण पुनः चित्त सावधान करत संते अपनी स्त्री प्रति बोलताभया ३५ (भद्रेइदंदैवाधीनंजीवताकिन्नदृश्यतेविशालाक्षिनिश्चितंज्ञानंआलंब्यशोकंत्यज) मंदोदरी प्रति रावण बोला हे कल्याणरूपे यह संसार दैवके आधीनहै ताकी वशजीवते पुरुषकरि क्यानहीं देखा जाताहै भाव दुःख सुख अवश्यही देखना परता है ताते हे विशालाक्षि निश्चय ज्ञान की आधार शोक त्याग करो ३६ (शोकःअज्ञानप्रभवः शोकःज्ञानविनाशकृत् शरीरादिषुअनात्मसु अज्ञानअहंधीप्रभवः) शोक अज्ञानसे उत्पन्न होता है शोक ज्ञान को नाश करिदेता है अरु शरीरादि जो अनात्म झूठे पदार्थ हैं तिन में अज्ञानही से अहं बुद्धी उत्पन्न होती है यथा मैं ब्राह्मण हौं ३७ (तन्मूलंपुत्रदारादिसंबंधःततसंसृतिः) सोअहं बुद्धिः मूलहै जामें ऐसा पुत्र स्त्री आदिसंबंध सत्यमानना तदनन्तर संसार सम्बन्धन हेतुक पाप पुण्य कर्म होते हैं पुनः हर्ष शोक भय क्रोध लोभ मोह (स्पृहादयः) इच्छाआदिक ३८ (जन्ममृत्युजरादयः एतेहिअज्ञानप्रभवाःतुआत्माकेवलःशुद्धःव्यतिरिक्तःहिअलेपकः) जन्म मरण वृद्धावस्थादि एते निश्चय करिकै अज्ञानते उत्पन्न होते हैं पुनः आत्मा तौ केवल शुद्धहै सब विकारों ते बिलग निश्चय करि अलेपक जिसमें कोई विकार छुइ नहीं जाता है ३९ ॥

आनंदरूपोज्ञानात्मासर्वभावविवर्जितः ॥ नसंयोगोवियोगोवा विद्यतेकेनचित्स तः ४० एवंज्ञात्वास्वमात्मानंत्यजशोकमनिंदिते ॥ इदानीमेवगच्छामिहत्वारामं सलक्ष्मणम् ४१ आगमिष्यामिनोचेन्मांदारयिष्यतिशायकैः ॥ श्रीरामोवज्रक ल्पैश्चततोगच्छामितत्पदम् ४२ तदात्वयामेकर्त्तव्याक्रियामच्छासनात्प्रिये ॥ सी तांहत्वामयासार्द्धंत्वंप्रवेक्ष्यसिपावकम् ४३ एवंश्रुत्वावचस्तस्यरावणस्यातिदुःखि

ता ॥ उवाचनाथमेवाक्यंशृणुसत्यंतथाकुरु ४४ शक्योनराघवोजेतुंत्वयाचान्यैः कदाचन ॥ रामोदेववरःसाक्षात्प्रधानपुरुषेश्वरः ४५ ॥

(सतःकेनचित्वियोगःवासंयोगःनविद्यतेसर्वभावविवर्जितःज्ञानात्माआनंदरूपः)सत्रूप आत्माको किसीसे बियोग अथवा संयोग नहीं है क्योंकि शत्रु मित्र हर्ष शोकादि सबभाव रहित केवल ज्ञानस्व रूपअखण्ड सदा आनन्दरूपहै ४० (एवंस्वात्मानंज्ञात्वाअनिंदितेशोकंत्यज इदानींएवगच्छामिरामंस लक्ष्मणंहत्वा) इस प्रकार आनन्दरूप अपने आत्माकोजानिकै हे अनिंदिते निंदारहिते मंदोदरि शोकको त्यागकरौ अभी मैं रणभूमिकोजाताहौं रामको सहित लक्ष्मणके मारिकै ४१ (आगमिष्या मिनोचेत्वज्रकल्पैशायकैः श्रीरामःमांदारयिष्यतिततःतत्पदंचगच्छामि) कितौ राम लक्ष्मणकोमा- रिकै लौटिआवहुँगो नाहींतौ वज्रकेतुल्य बाणोंकरिकै श्रीराम मोको विदारणकरहिंगे तदनन्तर तिन रामहीके परमपदको पुनः जायप्राप्तहोहुँगो४२ (तदाप्रियेमत्शासनात्मेक्रियात्वयाकर्त्तव्यासीतांहत्वा मयासार्द्धंत्वंपावकंप्रवेक्ष्यसि) जब राममोकोमारैं तब हेप्रिये मेरी आज्ञाते मेरीपारलौकिकक्रिया तुम करिकै करनायोग्य है तब सीताकोमारिकै मेरे साथ तुम चिताअग्निमें प्रवेशकिहेउ ४३ (एवंतस्य रावणस्यवचः श्रुत्वाअतिदुःखिताउवाचनाथमेवाक्यंसत्यंशृणुतथाकुरु) इस प्रकार तिस रावणके वचन सुनिकै मंदोदरी अत्यन्त दुःखित ह्वैकै बोलतीभई हेनाथ मेरे वचन सत्यहैं तिनहिंसुनौ अरु जैसे मैं कहौं तैसेही करौ ४४ (त्वयाचअन्यैःकदाचनराघवःजेतुंशक्यः नदेववरःरामःसाक्षात्प्रधान पुरुषेश्वरः) तुमकरिकै अथवा औरनकरिकै कभी राघवजीतिबेको शक्य नहीं हैं अर्थात् कोऊ कभी न जीतिसकी काहेते देवतोंमें श्रेष्ठराम साक्षात् प्रकृति पुरुषके ईश्वर भावसबकेप्रेरकहैं ४५ ॥

मत्स्योभूत्वापुराकल्पेमनुंवैवस्वतंप्रभुः॥ररक्षसकलापद्भ्योराघवोभक्तवत्सलः४६ रामःकूर्मोभवत्पूर्वंलक्षयोजनविस्तृतः ॥ समुद्रमथनेपृष्ठेदधारकनकाचलः ४७ हिरण्याक्षोतिदुर्वृत्तोहतोऽनेनमहात्मना ॥ क्रोडरूपेणवपुषाक्षोणीमुद्धरताक्वचि त् ४८ त्रिलोककंटकंदैत्यंहिरण्यकशिपुंपुरा ॥ हतवान्नारसिंहेनवपुषारघुनन्द नः ४९ विक्रमैस्त्रिभिरेवासौबलिंबध्वाजगत्त्रयम् ॥आक्रम्यादात्सुरेंद्रायभृत्याय रघुसत्तमः ५० राक्षसाःक्षत्रियाकाराजाताभूमेर्भरावहाः ॥ तान्हत्वाबहुशोरामो भुवंजित्वाह्यदान्मुने ५१ ॥

(पुराकल्पेभक्तवत्सलःराघवःप्रभुः मत्स्यःभूत्वावैवस्वतंमनुंसकलापद्भ्यांररक्ष) पूर्व कल्प में भक्तनपर प्रीतिकरनेवाले राघव प्रभु मत्स्यरूपकोधारणकरि वैवस्वतमनुको प्रलयकालादि सब आ- पदों से रक्षाकरतेभये ४६ (रामःपूर्वंलक्षयोजनविस्तृतःकूर्मः अभवत्समुद्रमथनेकनकाचलंपृष्ठेद- धार) इनहीं राम पूर्व अर्थात् सतयुगमें लक्षयोजनविस्तार है जाको ऐसा कच्छपरूपह्वैकै समुद्र मथन समय में कनकाचल अर्थात् मन्दराचल मथानीको अपनी पृष्ठिपरधारणकरतेभये४७ (अने नमहात्मनाक्वचित्क्रोड़रूपेणवपुषाक्षोणींउद्धरतादुर्वृतःहिरण्याक्षःहतः) इसी राम महात्माने किसी समय में वाराहरूपकरिकै शरीरधारणकरि पृथिवी को उद्धारकरताभया तब दुर्वृत अर्थात् दुष्ट आ- चाररत हिरण्याक्षदैत्यकोमारा ४८ (पुरारघुनन्दनःनारसिंहेनवपुषात्रिलोककंटकं दैत्यंहिरण्यकशि पुंहतवान्) पूर्वकाल सतयुग में रघुनन्दन नारसिंहशरीरधारणकरिकै भक्तप्रह्लादके रक्षा हेत जो

तीनिहूँ लोकनको कंटक दुखददैत्य जो हिरण्यकशिपु ताहिमारतेभये ४९ (असौरघुसत्तमःविक्रमैः त्रिभिःएवबलिंवध्वाजगत्त्रयंआक्रम्यभृत्यायसुरेंद्रायअदात्) इनहीं रघुवंशनाथ बामनरूपधरिकै तीनिपग भूमिमांगि बलिकोबाँधि तीनिहूँ लोकनकोआक्रम्य अर्थात् तीनिपदकरिकै नापिलिये सो अपने सेवक इन्द्रके अर्थ देतेभये ५० (क्षत्रियाकाराराक्षसाःभूमेः भरावहाःजातातान्बहुशःरामः हत्वाजित्वाभुवंहिमुनेअदात्) सहस्रबाहु आदि क्षत्रियाकारराक्षस भूमिकोभाररूप उत्पन्नभये तिन वहुतनको परशुरामरूपह्वै राममारिकै जीतीहुई भूमिको कश्यपमुनिके अर्थदेतेभये ५१ ॥

सएवसांप्रतंजातोरघुवंशेपरात्परः ॥ भवदर्थेरघुश्रेष्ठोमानुषत्वमुपागतः ५२ तस्यभार्याकिमर्थंवाहृतासीतावनाद्बलात् ॥ ममपुत्रविनाशार्थंस्वस्यापिनिधनायच ५३ इतःपरंवावैदेहींप्रेषयस्वरघूत्तमे ॥ विभीषणायराज्यंतुदत्त्वागच्छामहेवनम् ५४ मंदोदरीवचःश्रुत्वारावणोवाक्यमब्रवीत् ॥ कथंभद्रेरणेपुत्रान्भ्रातॄन्राक्षसमंडलम् ॥ घातयित्वाराघवेणजीवामिवनगोचरः ५५ रामेणसहयोत्स्यामिरामबाणैःसुशीघ्रगैः ॥ विदार्य्यमाणोयास्यामितद्विष्णोःपरमंपदम् ५६ जानामिराघवंविष्णुंलक्ष्मींजानामिजानकीम्॥ज्ञात्वैवजानकीसीतामयानीतावनाद्बलात्५७

(सएवपरात्परःरघुश्रेष्ठःभवत्अर्थेसांप्रतंरघुवंशेजातःमानुषत्वंउपागतः)सोई निश्चय करि परात्पर रघुनाथजी तुम्हारे बध अर्थ या समय में रघुवंशमें उत्पन्न ह्वै मानुष भावको प्राप्तभये हैं ५२ (तस्यभार्यासीतावनात्बलात्किमर्थंवाहृताममपुत्रविनाशायचस्वस्यअपिनिधनाय) तिन रघुनन्दनकी भार्या सीतासो वनते वरवस तुम किस अर्थ हरिलायो परन्तु यह सूचित होताहै कि मेरे पुत्रन के नाशहेत पुनः अपनी मृत्युके अर्थ सीता हरिलाये ५३ (इतःपरंवावैदेहींरघूत्तमेप्रेषयस्वतुराज्यंविभीषणायदत्त्वावनंगच्छामहे) इसके उपरान्त अब जानकी जीको तो रघुनाथजीके समीप पठायदेवो पुनः राज्य विभीषण के अर्थ दैकै हरिभजन करनेहेत वनको हमतुम चलैं ५४ (मंदोदरीवचः श्रुत्वारावणः वाक्यंअब्रवीत्भद्रेरणेपुत्रान्भ्रातॄन्राक्षसमंडलंराघवेणघातयित्वाकथंवनगोचरः जीवामि) मंदोदरी के वचन सुनिकै रावण वचन बोलताभया हेकल्याणरूपे रणमें पुत्रन को भाइनको समग्रराक्षसोंको राम करिकै नाशकराय अब कैसे वनमें जाय मैं अपना जीवनकरौं ताते ५५ (रामेणसहयोत्स्यामिशीघ्रगैःरामबाणैःविदार्यमाणःतत्विष्णोःपरमंपदम्यास्यामि) रामके साथ युद्धही करिहौं अरु शीघ्र चलने वाले रामके बाणों करिकै विदीर्ण ह्वैकै सोई जो विष्णुको परमपदहै ताको प्राप्तहोउँगो ५६ (राघवंविष्णुंजानामिजानकींलक्ष्मीं जानामिज्ञात्वाएवजानकीसीतावनात्बलात् मयानीता) राघवको विष्णुजानताहौं जानकीको लक्ष्मी जानताहौं इत्यादि जानिकै भी जनकपुत्रीसीतासो वनते वरवस आनि यहां प्राप्तकरी ५७ ॥

रामेणनिधनंप्राप्ययास्यामीतिपरंपदम् ॥ विमुच्यत्वांतुसंसाराद्गमिष्यामिसहप्रिये ५८ परानंदमयीशुद्धासेव्यतेयामुमुक्षुभिः ॥ तांगतिंतुगमिष्यामिहतोरामेणसंयुगे ५९ प्रक्षाल्यकल्मषाणीहमुक्तियास्यामिदुर्लभाम् ६० क्लेशादिपंचकतरंग

युगभ्रमाढ्यंदारात्मजाप्तधनबंधुझषाभियुक्तम्॥ औौर्वानलाभनिजरोषमनंगजालं संसारसागरमतीत्यहरिंव्रजामि ६१ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्धकाण्डेदशमःसर्गः १० ॥

(रामेणनिधनंप्राप्यइतिपरंपदंयास्यामिप्रियेत्वांविमुच्यतुसंसारात्सहगमिष्यामि) राम करिकै मृत्युको प्राप्त ह्वै इसप्रकार परंपदको जाउँगो हे प्रिये तुमको त्यागि पुनः संसारबंधनते छूटि अपने परिवार सहित परमपदको जाउँगो ५८ (परानन्दमयींशुद्धायामुमुक्षुभिःसेव्यतेतांगतिंतुगमिष्यामि रामेणसंयुगेहतः) परमआनंदमयी अर्थात् जहांदुःखनहीं हैं शुद्धा जहां रजतमादि नहीं हैं जो मुमुक्षुन करिकै सेवित अर्थात् जिनको मुक्ति की कांक्षाहै ते उपासनाकरिकै प्राप्तहोते हैं तिसगति को पुनः प्राप्तहोउँगो जो रामकरिकै संग्राम में माराजाउँगो ५६ (इहकल्मषाणिप्रक्षाल्यदुर्लभांमुक्तिंयास्यामि) इस राक्षसी तनकोकियेहुये जो समूहपाप हैं तिनहिं प्रक्षाल्य अर्थात् रामरूपदेखतही रामकेहाथों मृत्यु रामनामस्मरण इति अमलजल में उन पापोंकोधोय दुर्लभ जो मुक्ति ताको प्राप्त होउँगो ६० अब संसारसागरको रूपककहत यथा (क्लेशादिपंचकतरंग) पांच प्रकारके क्लेश यथा योगशास्त्रे॥अविद्यास्मितारागद्वेषाभिनिवेशाः पंचक्लेशाः।अर्थात् आत्मरूपभूलनाअविद्याहै १ देहसत्य मानना अस्मिता है २ प्रीति राग है ३ विरोध द्वेष है ४ मरणकीत्रास अभिनिवेश है ५ ये पंच क्लेश जामें तरंगै हैं (युगभ्रमाढ्यं) चारिउयुग घूमि घूमिआवना सोई भ्रमरशोभितहै जामें (दारात्मजधनबंधुआप्तझषाभियुक्तम्) स्त्री पुत्र धन बंधु इत्यादि प्राप्तहोना सोई झषादिजलजंतु युक्त हैं (निजरोषंऔर्वअनलआभ) अपना क्रोध सोई वाड़वअनल तुल्य है (अनंगजालम्) कामदेव जाल हैं जामें (संसारसागरंअतीत्यहरिंव्रजामि) ऐसा संसाररूप सागरको उलंघ्य मैं हरि रामको प्राप्त होउँगो ६१ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचिते
अध्यात्मभूषणेयुद्धकांडेदशमःप्रकाशः १० ॥

इत्युक्त्वावचनंप्रेम्णाराज्ञींमंदोदरींतदा ॥ रावणःप्रययौयोद्धुंरामेणसहसंयुगे १
दृढंस्यंदनमास्थायवृतोघोरैर्निशाचरैः ॥ चक्रैःषोडशभिर्युक्तंसवरूथंसकूबरम् २
पिशाचवदनैर्घोरैःखरैर्युक्तंभयावहम् ॥ सर्वास्त्रशस्त्रसहितंसर्वोपस्करसंयुतम् ३
निश्चक्रामाथसहसारावणोभीषणाकृतिः॥आयांतंरावणंदृष्ट्वाभीषणंरणकर्कशम्४
संत्रस्ताभूत्तदासेनावानरीरामपालिता ॥ हनूमानथचोत्प्लुत्यरावणंयोद्धुमाययौ ५
आगत्यहनुमान्रक्षोवक्षस्यतुलविक्रमः ॥ मुष्टिंबंधदृढंबध्वाताड़यामासवेगतः ६

सवैया॥दशकंठरथीरण राघवहेत सुरेंद्रतहाँ रथआपदयो । रणघोरमचोशिररावणके प्रभुकाटतहीं जमिजातनयो ॥ सुखिनाभि सुधाहिय बाणलगे मरिहै खलभाषि विभीषणयो । शरघोरतजे उरबेधि गिरोवहजूझतही प्रभुलीनभयो॥ (राज्ञींमन्दोदरींप्रेम्णावचनंइतिउक्त्वातदारावणः संयुगेरामेणसह योद्धुंप्रययौ) शिवजीबोले हे गिरिजारानी मंदोदरीप्रति प्रेम से बचन इस पूर्वोक्त प्रकारकहिकै तब

रावण संग्राम में रघुनन्दनकेसाथ युद्धकरिवे हेतजाताभया १ (सवरूथंसकूवरंषोडशभिःचक्रैःयुक्तं दृढंस्यंदनंआस्थायघोरैःनिशाचरैःवृतः)लोह मय पंजर बाह्य देशमें सहित दोऊ बकौवें सहित सोरह पहियोंकरिकै युक्त ऐसे पुष्टरथपर सवार भयंकर राक्षसोंकरिकै युक्त २ (घोरैःपिशाचवदनैःखरैःयुक्तं भयावहसर्वशस्त्रास्त्रसहितंसर्वैउपस्करसंयुतम्) भयंकर पिशाचों कैसो मुख जिनके ऐसे गर्धभोंकरि कै जुताहुआ महाभयंकर सर्व अस्त्र बाणादि शस्त्र तरवारि आदि सहित युद्धकी सब सामग्री सहित ३ (भीषणाकृतिःरावणःअथसहसानिश्चक्रामरणकर्कशंभीषणंरावणंआयांतंदृष्ट्वा) भयंकररूपजाको ऐसा रावण अब सहसानगरते निसरिचला अब युद्धमें कठोर देखत में भयंकर रावणको आवतेदे-खिकै ४ (तदारामपालितावानरीसेनासंत्रस्ताभूत्अथहनूमान्उत्प्लुत्यचरावणंयोद्धुंआययौ) ता समय में राम करिकै रक्षित जो वानरों की सेना सो डराय उठती भई अब हनुमान् कूदिकै पुनः रावण प्रति युद्ध करने को जाने भये ५ (अतुलविक्रमःहनुमान्आगत्य मुष्टिंबंधदृढंबध्वारक्षोवक्षसि वेगतःताड़यामास) अतुल है पराक्रम जिनमें ऐसे हनुमान् संमुख जाय अपनी मूठी को पुष्ट बांधि राक्षस रावण की छाती में बड़े वेगते मारते भये ६ ॥

तेनमुष्टिप्रहारेणजानुभ्यामपतद्रथे ७ मूर्च्छितोथमुहूर्तेनरावणःपुनरुत्थितः ॥ उवाचचहनूमंतंशूरोसिममसंमतः ८ हनूमानाहतंधिङ्मांयस्त्वंजीवसिरावण॥ त्वंतावन्मुष्टिनावक्षोममताडयरावण ९ पश्चान्मयाहतःप्राणान्मोक्षसेनात्रसंशयः ॥ तथेतिमुष्टिनावक्षोरावणेनापिताडितः १० विघूर्णमाननयनःकिंचित्कश्मलमाययौ ॥ संज्ञामवाप्यकपिराट्रावणंहंतुमुद्यतः ११ ततोन्यत्रगतोभीत्यारावणोराक्षसाधिपः ॥ हनूमानंगदश्चैवनलोनीलस्तथैवच १२ चत्वारःसमवेताग्रेदृष्ट्वाराक्षसपुंगवान् ॥ अग्निवर्णंतथासर्परोमाणंखड्गरोमकम् १३ ॥

(तेनमुष्टि प्रहारेण जानुभ्यांरथे अपतत्) तिसहनुमान्की मुष्टिका प्रहारकरिकै मूर्च्छितह्वै रावण टिहुनिन करिकै टेकि रथमें गिरिपरा ७ (मुहूर्तेनमूर्च्छितः अथ रावणःपुनःउत्थितः चहनूमंतंउवाच ममसंमतः शूरोसि) दोदंडभरि मूर्च्छितपरारहा अबरावणपुनः उठिकै अरुहनूमान्प्रतिबोलताभया किहेहनूमान्मेरे मतसे तुमशूरहो ८ (तंहनूमान् आह रावणयः त्वंजीवसि मांधिक् रावण तावत्त्वं ममवक्षः मुष्टिनाताड़य) ताप्रतिहनूमान्बोले हे रावण मेरे प्रहारते जो तू जीवत रहिगया तौमोको धिक्कारहै हेरावण अबप्रथम तूमेरी छातीपर मुष्टिका करिकै ताड़नकरु ९ (पश्चात् मयाहतःप्राणान् मोक्षसे अत्रसंशयः नतथा इति रावणः अपिमुष्टिना वक्षः ताडितः) पीछेमेरे प्रहारकरिकैमराहुआप्राण त्यागकरैगा यामें संशय नहीं बहुत भली ऐसा कहि रावणभी मुष्टिका करिकै हनुमान्की छातीमेंताड़-न किया १० (नयनःविघूर्णमानाकिंचित्कश्मलं आययौकपिराट्संज्ञांअवाप्यरावणंहंतुंउद्यतः) रावण की मुष्टिका लागेते हनूमान्के नेत्र घूमिगये कछु मूर्च्छाभी आगया पुनः हनूमान् चैतन्यता को प्राप्त ह्वै रावणको मारने पर उद्यत भये ११ (ततःराक्षसाधिपःरावणःभीत्याअन्यत्रगतःहनूमान्चपुनः चअंगदःचनलःतथाएवनीलः) हनूमान् को मारि तदनंतर राक्षसोंको राजा रावण हनूमान्की भय करिकै अनत चलागया तब हनूमान् पुनःअंगद अरुनल तैसेनील १२ (चत्वारःसमवेताराक्षसपुंगवान् अग्रेदृष्ट्वा) हनूमानादि चारो युद्धकला बराबरि जाननेवाले ते चारि उत्तम राक्षसोंको आगे

देखते भये कौन कौन (अग्निवर्णतथासर्परोमाणंखड्गरोमकम्) अग्निवर्ण सर्प रोम खड्गरोम ह्रांनि ये पुनः १३ ॥

तथावृश्चिकरोमाणंनिर्जघ्नुःक्रमशोसुरान् ॥ चत्वारःचतुरोहत्वाराक्षसान्भीमविक्रमान् १४ सिंहनादंपृथक्कृत्वारामपार्श्वमुपागताः ॥ ततःक्रुद्धोदशग्रीवःसंदश्यदशनच्छदम् १५ निवृत्यनयनेक्रूरोराममेवान्वधावत्॥ दशग्रीवोरथस्थस्तुरामंवज्रोपमैःशरैः १६ आजघानमहाघोरैर्धाराभिरिवतोयदः॥ रामस्यपुरतःसर्वान्वानरानपिविव्यथे १७ ततःपावकसंकाशैःशरैःकांचनभूषणैः ॥ अभ्यवर्षद्रणेरामोदशग्रीवंसमाहितः १८ रथस्थंरावणंदृष्ट्वाभूमिस्थंरघुनन्दनम् ॥ आहूयमातलिंशक्रोवचनंचेदमब्रवीत् १९ ॥

(तथावृश्चिकरोमाणंअसुरान्चत्वारः चतुरःक्रमशःनिर्जघ्नुःभीमविक्रमान्राक्षसान्हत्वा) तैसे वृश्चिकरोम इनचारिहु असुरन को हनूमानादि चारिहु चतुर वरिक्रमसे एक एक को मारे यथा हनूमान् अग्नि वर्ण को मारे अंगद सर्परोम को मारे नलखड्गरोम को मारे नील वृश्चिकरोम को को मारे इतिभयंकर पराक्रमी राक्षसों को मारे १४ (पृथक्सिंहनादंकृत्वारामपार्श्वंउपागतः ततः दशग्रीवःक्रुद्धःदशनच्छदम्संदश्य) हनूमानादि चारौवानरविलगविलग सिंहवत् नादकरिकै रघुनंदन के पासको जातेभये तदनंतर रावण क्रोधकरि दांतोंसे ओष्ठोंको काटता हुआ १५ (नयनेनिवृत्यक्रूरः रामंएवअन्वधावत्रथस्थःदशग्रीवःवज्रोपमैःशरैः) नेत्रों को खोलि दृष्टि फैलाय सर्वत्र निहारि क्रूर रावण रघुनंदन को देखि संमुखै धावताभया रथपर आरूढ दशग्रीव वज्रके तुल्य बाणों करिकै (तुरामं १६ आजघानमहाघोरैःधाराभिः तोयदःइवरामस्यपुरतःवानरान्सर्वान्अपिविव्यथे) पुनः रघुनंदन पै कैसे बाणों को प्रहार करने लगायथा महाभयंकर जल धारों करिकै मेघकी समान अरु रघुनंदन के आगे खड़े जे वानर रहे तिन सबनको भीताडन करि व्यथित करिदेता भया १७ (ततः पावकसंकाशैःकांचनभूषणैःशरैःरामःरणेदशग्रीवंसमंततःअभ्यवर्षत्) तदनंतर अग्नि तुल्य ज्वलित प्रकाशहै जिनकासोने करिकै भूषित ऐसे बाणों करिकै रघुनंदन रणमें रावण पर सर्वथा वर्षते भये १८ (रथस्थंरावणंभूमिस्थंरघुनंदनं दृष्ट्वाशक्रःमातलिंआहूयचइदं वचनंअब्रवीत्) रथपर स्थित रावण को अरु भूमिपर स्थित रघुनंदन को देखि इंद्रअपने सारथी मातलिको बुलाय पुनः इसप्रकार को वचनबोलते भये हे मातलि १९ ॥

रथेनममभूमिष्ठंशीघ्रंजाहिरघूत्तमम् ॥ त्वरितंभूतलंगत्वाकुरुकार्यंममानघ २० एवमुक्तोथतंनत्वामातलिर्देवसारथिः॥ततोहयैश्चसंयोज्यहरितैःस्यंदनोत्तमम् २१ स्वर्गाज्जयार्थंरामस्यह्युपचक्राममातलिः ॥ अब्रवीच्चततोराममप्रतर्क्यंरथेस्थितः ॥ प्रांजलिर्देवराजेनप्रेषितोस्मिरघूत्तम २२ रथोयंदेवराजस्यविजयायतवप्रभो ॥ प्रेषितश्चमहाराजधनुरैंद्रंचभूषितम् २३ अभेद्यंकवचंखड्गंदिव्यतूणीयुगंतथा ॥ आरुह्यचरथंरामरावणंजहिराक्षसम् २४ मयासारथिनादेववृत्रंदेवपतिर्यथा ॥ इत्युक्तस्तंपरिक्रम्यनमस्कृत्यरथोत्तमम् २५ ॥

(अनघममरथेनभूमिष्ठंरघूत्तमम्शीघ्रंयाहि भूतलंत्वरितंगत्वाममकार्यंकुरु) हे निःपाप मेरे रथ

करिके सहित भूमिपर स्थितजो रघुनाथ जी तिनके समीप को शीघ्रही जाउ भूतलको तुरतही जाय के रथस्थ रामकरि रावण वध इतिमेरा कार्यकरौ २० (एवंउक्तःअथदेवसारथिःमातलिःतंनत्वाततः हरितैःहयैःचस्यंदनोत्तमंसंयोज्य) इसप्रकार इन्द्र ने कहा तव इन्द्रको सारथी मातलितिन इंद्रको प्रणामकरि सब्जे घोड़ों करिकै रथउत्तम नहिकै चलताभया २१ (रामस्यहिजयार्थमातलिःस्वर्गात् उपचक्रामअप्रतर्क्यरथेस्थितःचततःप्रांजलिःराममब्रवीत्रघूत्तम देवराजेनप्रेषितोस्मि) रामकेनिश्चय विजयकेअर्थमातलि स्वर्गते उतरि रघुनंदनके समीपप्राप्तभया जो किसीके देखनेको प्राप्त नहीं ऐसे दिव्यरथपर स्थितपुनः तवमातलि प्रभुके सम्मुख हाथजोरि रघुनंदन प्रति बोला हे राघवेंद्र इंद्रने मोको पठावाहै २२ (प्रभोतवविजयायप्रेषितःअयंदेवराजस्यरथःचमहाराजभूषितंऐंद्रंचधनुः) हेप्रभो आपके विजयके अर्थ पठावा हुआ यह इंद्रको रथहै पुनः हे महाराज भूषित सजाहुआ यह इंद्रको धनुप है २३ (अभेद्यंकवचंदिव्यखड्गंतथातूणीयुगंरामरथंआरुह्यचराक्षसंरावणंजहि) जो किसी अस्त्र करिकै न कटिसकै ऐसी बख्तर दिव्यतरवारि तैसेहीअक्षय दोतरकसहैं हेरघुनंदन इसरथपर सवार ह्वैकै पुनः राक्षस रावणको मारिये २४ (देवमयासारथिनायथादेवपतिः वृत्रंइतिउक्तःतंरथोत्तमंपरि क्रम्यनमस्कृत्य) हेदेव मैं जोसारथीहौंताकी सहाय करिकै जैसे इंद्रवृत्रासुरकोमारे तैसेहीतुम रावण को मारौऐसा मातलिने कहा तव प्रभुतिस उत्तम रथको परिक्रमाकीन्हे पुनः नमस्कारकरिकै २५॥

आरुरोहरथंरामोलोकान्लक्ष्म्यानियोजयत् ॥ ततोभवन्महायुद्धंभैरवंरोमहर्षण म् २६ महात्मनोराघवस्यरावणस्यचधीमतः ॥ आग्नेयेनचआग्नेयंदैवंदैवेनरा घवः २७ अस्त्रंराक्षसराजस्यजघानपरमास्त्रवित् ॥ ततस्तुससृजेघोरंराक्षसंचास्त्र मस्त्रवित् २८ क्रोधेनमहताविष्टोरामस्योपरिरावणः ॥ रावणस्यधनुर्मुक्ताःसर्पाभू त्वामहाविषाः ॥ शराःकांचनपुंखाभाराघवंपरितोपतन् २९ तैःशरैःसर्पवदनैर्वम द्भिरनलंमुखैः ॥ दिशश्चविदिशश्चैवव्याप्तास्तत्रतदाभवन् ३० रामसर्पास्ततो दृष्ट्वासमंतात्परिपूरितान् ॥ सौपर्णमस्त्रंतत्घोरंपुरःप्रावर्तयद्रणे ३१ ॥

(लोकान्लक्ष्म्यानियोजयत्रामः रथंआरुरोहततः रोमहर्षणंभैरवंमहायुद्धंअभवत्) रावण पीड़ित लक्ष्मीहीन लोकनको लक्ष्मी करिकै युक्तकरनाहै भावशीघ्रही रावणको मारा चाहतेहैं तातेरघुनंदनरथपरचढ़तेभये तदनंतरजाको देखिरोमखड़ेहोयँ ऐसाभयंकर महायुद्ध रामरावण सोंहोताभया २६ (महात्मनः रामस्य धीमतः रावणस्य) महात्मा सत्यसंध राम को बुद्धिमान्रावणको युद्धहोतमें (परमास्त्रवित् राघवः राक्षसराजस्य अस्त्रं आग्नेयं आग्नेयेनदैवं दैवेन जघान) वाणविद्यामें परम प्रवीण रघुनंदन रावण के आग्नेयअस्त्र को आग्नेय अस्त्रकरिकै काटे अन्यदेवोंके अस्त्र जे रावणछोड़े तिनको उसीदेवास्त्रोंकरिकैकाटे २७ (ततः तुअस्त्रवित्चघोरं राक्षसं अस्त्रंससृजे) तदनंतरवाणविद्या में प्रवीणरावण पुनः भयंकर राक्षस अस्त्रको छोड़ताभया २८ (महताक्रोधेन आविष्टः रावणःरामस्य उपरि) बड़ेक्रोधकरिकै युक्तरावणरघुनदनं के ऊपर जो छोड़ा (रावणस्यधनुः मुक्तः कांचनपुंखा भाशराः महाविषाः सर्पाः भूत्वाराघवं परितः पतन्) रावणके धनुषते छूटेहुये सोनेकीफोंकप्रकाश मानवाण ते महा विषधरसर्पह्वैकरि रघुनंदनके आसपास गिरनेलगे २९ (तैः शरैः सर्पवदनैः मुखे अनलंवमद्भिः तदातत्र दिशः चविदिशःचैवव्याप्ताः अभवन्) तेरावणके बाण सर्पाकार वदन जिनके मुखकरिकै अग्निको उगलतेहुये तासमय में तहं [illegible]दे सब दिशा पुनः आग्नेयादिविदिशाइत्यादि

सर्वत्र व्याप्तहोते भये भरिपूरिगये ३० (ततः समंतात्परिपूरितान् सर्पान्दृष्ट्वारामः सौपर्णं मस्त्रंघोरं तत्पुरः रणेप्रावर्तयत्) तदनंतर सर्वत्र परिपूरित सर्पोंको देखिरघुनंदन गरुड़ भस्त्रजो घोर सो रावण के भागे रणमें छोंड़तेभये ३१ ॥

रामेणमुक्तास्तेबाणाभूत्वागरुडरूपिणः ॥ चिच्छिदुःसर्पबाणांस्तान्समंतात्सर्पशत्रवः ३२ अस्त्रेप्रतिहतेयुद्धेरामेणदशकंधरः ॥ अभ्यवर्षत्ततोरामंघोराभिःशरवृष्टिभिः ३३ ततःपुनःशरानीकैःराममक्लिष्टकारिणम् ॥ अर्दयित्वातुघोरेणमातलिंप्रत्यविध्यत् ३४ पातयित्वारथोपस्थेरथकेतुंचकांचनम् ॥ ऐंद्रानश्वानभ्यहनद्रावणःक्रोधमूर्च्छितः ३५ विषेदुर्देवगंधर्वाश्चारणाःपितरस्तथा ॥ आर्ताकारंहरिंदृष्ट्वाव्यथितश्चमहर्षयः ३६ व्यथितावानरेंद्राश्चवभूवुःसविभीषणाः॥ दशास्योविंशतिभुजःप्रगृहीतशरासनः ३७ ॥

(रामेणमुक्ताःतेबाणाः सर्पशत्रवःगरुडरूपिणःभूत्वासर्पबाणांस्तान्समंतात्चिच्छिदुः) गरुड़मंत्र करिकै मंत्रित रघुनंदन करिकै छोंड़ेगये ते सब बाण सर्पोंके शत्रुगरुड़ रूपीह्वैके सर्पबाण जो रहैं तिन सबनको सर्वत्रकाटिडारतेभये ३२ (युद्धे रामेण अस्त्रेप्रतिहते ततः दशकंधरः घोराभिः शरवृष्टिभिः रामंअभ्यवर्षत्) युद्धमें जबरघुनंदनने रावण के सर्व अस्त्रकाटिडारे तदनंतर रावण भयंकर बाणों करिकै महावृष्टिरघुनंदनपै वर्षताभया ३३ (ततः पुनः शरानीकैः अक्लिष्टकारिणं रामं अर्दयित्वातुघोरेण मातलिं प्रत्यविध्यत्) तदनंतर पुनः रावण समूहबाणों करिकै क्लेशहरण हारे रघुनंदन कोपीड़ित करिकै पुनः भयंकर बाण करिकै प्रभुके सारथी मातलिकोवेधता भया ३४ (कांचनं रथकेतुं रथोपस्थेपातयित्वाचक्रोधमूर्च्छितःरावणः ऐंद्रान्अश्वान् अभ्यहनत्) कांचन मय रचित जो रथमें केतु रहै ताहि बाणते काटिकै रथकेभीतर गिराय देताभया पुनः क्रोधकरिकै मूर्च्छित रावण रथमें नहेहुये इंद्रके घोड़ों को बाणों करिकै ताड़ना करता भया ३५ (आर्ताकारं हरिंदृष्ट्वा महा ऋषयः व्यथिताः चदेवगंधर्वाः चारणाः तथा पितरः विषेदुः) रावणके बाणों करिकै पीड़ितकीनाई भाव अव्यथितभी व्यथितइवरघुनंदन को देखि महा ऋषिलोग शोचते व्यथितभये पुनः देवता गंधर्व चारण तैसेही पितरइत्यादि सबबड़ेविषादको प्राप्तभये भावमनते दुखितभये ३६ (सविभीषणःचवानरेंद्राः व्यथितावभूवुः दशास्यः विंशति भुजःशरासनःप्रगृहीत्) सहित विभीषणपुनः बानरोंके यूथपती भोबड़ेदुःख को प्राप्तहोते भये अबदशहैं मुखजाके बीसहैं भुजाबामदशौ हाथनमें धनुष धारणकीन्हे ३७ ॥

ददर्शरावणस्तत्रमैनाकइवपर्वतः ॥ रामस्तुभृकुटिंबध्वाक्रोधसंरक्तलोचनः ३८ कोपंचकारसदृशंनिर्दहन्निवराक्षसम् ॥ धनुरादायदेवेंद्रधनुराकारमद्भुतम् ३९ गृहीत्वापाणिनाबाणं कालानलसमप्रभम् ॥ निर्दहन्निवचक्षुर्भ्यांददर्शरिपुमंतिके ४० पराक्रमंदर्शयितुंतेजसाप्रज्वलन्निव ॥ प्रचक्रमेकालरूपांसर्वलोकस्यपश्यतः ४१ विकृष्यचापंरामस्तुरावणंप्रतिविध्यच ॥ हर्षयन्वानरानीककालांतकइवाबभौ ४२ क्रुद्धंरामस्यवदनं दृष्ट्वाशत्रुंप्रधावतः ॥ तत्रसुःसर्वभूतानिचचालचवसुंधरा ४३ ॥

(मैनाकपर्वतःइवतत्ररावणःददृशेतुरामःक्रोधसंरक्तलोचनःभृकुटिंबध्वा) मैनाक पर्वत की समान भारी तन तहां पर रावण देखि परता भया पुनः रघुनंदन भी क्रोध वश अरुण ह्वै गयेहैं नेत्र जिनके भौंहैं चढ़ायकै ३८ (राक्षसंनिर्दहन्निवसदृशंकोपंचकारदेवेंद्रधनुःआकारंअद्भुतंधनुःआदाय) राक्षस रावण को मानौ भस्म करि देवेंगे तिस तुल्य क्रोध करते भये तब जैसा वर्षा काल में उदय होता है तिस इंद्र धनुष के आकार बनाहुवा ऐसा अद्भुत धनुष हाथमें लैकरि ३९ (कालानलसमप्रभंबाणं पाणिनागृहीत्वाचक्षुर्भ्यांनिर्दहन्निवअंतिकेरिपुंददृशे) प्रलय काल की अग्नि समान प्रकाशहै जामें ऐसे बाणको हाथ से लैकै नेत्रौं करिकै भस्म करते हुयेकी समान समीपहीं शत्रु रावण को देखते भये ४० (पराक्रमंदर्शयितुंसर्वलोकस्यपश्यतःतेजसाप्रज्वलन्निवकालरूपंप्रचक्रमे) रघुनंदन आपना पराक्रम देखावे हेत सब लोकनके देखते देखते प्रभु तेज करिकै अग्नि की समान प्रकाश मानहै काल कैसा प्रचंड स्वरूप करि युद्ध प्रारंभ करते भये ४१ (तुरामःचापंविकृष्यरावणंप्रतिविध्यचवानरानीकंहर्षयन्कालांतकइवावभौ) पुनः रघुनंदन बाण योजित धनुष को रोदाश्रवण पर्यंत खैंचिकै बाणकरिकै रावण को ताड़न करिकै पुनः वानरन की सेनाको आनंद करत संते प्रभु काल मृत्यूके तुल्य करालरूप प्रकाशमान भये ४२ (शत्रुंप्रधावतोरामस्यवदनंक्रुद्धंदृष्ट्वासर्वभूतानितत्रसुःचवसुन्धराचचाल) शत्रु रावण पर धावत समय तेजवंत रघुनंदन को मुखको क्रोधयुत देखिकै सब भूत प्राणीमात्र त्रासको प्राप्त भये पुनः पृथिवी चलायमान अर्थात् हालि उठती भई ४३ ॥

रामंदृष्ट्वामहारौद्रमुत्पातांश्चसुदारुणान् ॥ त्रस्तानिसर्वभूतानिरावणंचाविशद्भयम् ४४ विमानस्थाःसुरगणाःसिद्धगंधर्वकिन्नराः ॥ ददृशुस्तेमहायुद्धंलोकसंवर्तकोपमम् ४५ ऐंद्रमस्त्रंसमादायरावणस्याशिरोच्छिनत् ॥ मूर्द्धानोरावणस्याथबहवोरुधिरोक्षिताः ॥ गगनात्प्रपतंतिस्मतालादिवफलानिहि ४६ नदिवंनचवैरात्रिर्नसंध्यानदिशोपिवा ॥ प्रकाशंतेनतद्रूपंदृश्यतेतत्रसंगरे ४७ ततोरामोबभूवाथविस्मयाविष्टमानसः ॥ शतमेकोत्तरंछिन्नंशिरसांचैकवर्चसाम् ४८ नचैवरावणःशान्तोदृश्यतेजीवितक्षयात् ॥ ततःसर्वास्त्रविद्वीरःकौशल्यानंदवर्द्धनः ४९ ॥

(महारौद्रंरामंदृष्ट्वाचसुदारुणान्उत्पातांसर्वभूतानित्रस्तानिचरावणंभयंआविशत्) महाभयंकर तेजमान रूप रघुनंदन को देखि पुनः भूकंप उल्कापातादि बड़ेभयंकर उत्पातोंको देखि सर्वभूतजीव मात्र भयभीत भये पुनः रावण केभी उरमें भय समाय गई ४४ (सिद्धगंधर्वकिन्नराःसुरगणाःविमानास्थाःतेलोकसंवर्तकोपमंमहायुद्धंददृशुः) सिद्ध गंधर्व किन्नरादि देवता समूह अपने विमाननपर स्थित ते सब लोक प्रलयके तुल्य महा युद्धको देखि रहेहैं ४५ (ऐंद्रंअस्त्रंसंआदायरावणस्यशिरःअच्छिनत्अथरुधिरोक्षिताःरावणस्यमूर्द्धानःबहवःतालादिवफलानिहगगनात्प्रपतंतिस्म) रघुनंदन ऐंद्र अस्त्र को ग्रहण करि रावणके शिरनको काटते हैं अब रुधिर से डूबेहुये रावणके शिरकटे हुये बहुत से ताल फलकी समान आकाशते भूमि पै गिरतेहैं ४६ (नदिवंचनवैरात्रिःनसंध्यानदिशःअपिवातत्रसंगरेतेनप्रकाशंतद्रूपंदृश्यते) तासमय न दिन पुनः न निश्चय करिकै रात्री न संध्या न कोई दिशा इत्यादि कछु नहीं जानाजाताहै भाव अनेक दिनतक सबकाल एकैरस युद्ध होतरहा तहां संग्राममें रावणके शिर कटिकै तुरतही जमि आवतेहैं त्यहि करिकै वाके तनमें प्रकाश भी एकरस देखात धूम्र नहींहोत ४७ (ततःअथरामःविस्मयाविष्टमानसःबभूवएकोत्तरंशतंशिरसांछिन्नंचएकवर्चसां) तदनं-

तर अब रघुनाथजी बड़े आश्चर्य युक्त मनमें विचारते भये कि एक अधिक सौ शिरोंको काटा तबहूं रावणको एकैरस तेजबनाहै ४८ (रावणःएवक्षयात्जीवितचशान्तःनदृश्यतेततःकौशल्यानंदवर्द्धनःसर्वास्त्रविद्वीरः) रावणभी मरणेते जी आवताहै भाव शिश कटिकै जमि आवते हैं पुनः इसकी धीरता बरिता भी नहीं शांत देखातीहै इति बिचारि कौशल्या के आनंद बढ़ावने वाले रघुनंदन सर्व बाण बिद्या में प्रवीण वीर ४९ ॥

अस्त्रैश्चबहुभिर्युक्तश्चिंतयामासराघवः ॥ यैर्यैर्बाणैर्हतादैत्यामहासत्वपराक्रमाः ५० तएतेनिष्फलंजातारावणस्यनिपातने ॥ इतिचिंताकुलेरामेसमीपस्थोविभीषणः ५१ उवाचराघवंवाक्यंब्रह्मदत्तवरोह्यसौ ॥ विच्छिन्नाबाहवोऽप्यस्यविच्छिन्नानिशिरांसिच५२उत्पत्स्यंतिपुनःशीघ्रमित्याहभगवानजः॥ नाभिदेशेमृतंतस्य कुंडलाकारसंस्थितम् ५३ तच्छोषयानलास्त्रेणतस्यमृत्युस्ततोभवेत् ॥विभीषणवचश्श्रुत्वारामःशीघ्रपराक्रमः ५४ पावकास्त्रेणसंयोज्यनाभिंविव्याधरक्षसः॥अनंतरंचचिच्छेदशिरांसिचमहाबलः ५५॥

(राघवःचिंतयामासबहुभिःअस्त्रैःचयुक्तयैःबाणैःमहासत्वपराक्रमाःदैत्याःहताः) रघुनाथजी मनमें चिंतापूर्वक विचारकरतेभये कि बहुते अस्त्रनकरिकै अर्थात् अस्त्र मंत्रयोजितकरिकै जिन जिन बाणों करिकै महावीर्य पराक्रमी दैत्यनको बधकिया ५० (तएतेरावणस्यनिपातनेनिष्फलंजाताइति चिंताकुलेरामेसमीपस्थःविभीषणः) ते ए सब बाण रावणके बधकरनेमें निष्फलजातेहैं ऐसी चिंताकरिकै आकुलहोतेहुये रघुनन्दन ता समय में समीपस्थितजो विभीषण ५१ (राघवंवाक्यंउवाच असौहि ब्रह्मदत्तवरःअस्यबाहवःविच्छिन्नाःअपिचशिरांसिविच्छिन्नानि) रघुनन्दनप्रति विभीषण वचनबोलते भये कि इस रावणको ब्रह्माकोदियावर है ताते इसकी बांहुइकटेभी पुनः शिरकटे ५२ (पुनःशीघ्रं उत्पत्स्यंतिइतिभगवान्अजःआह तस्यनाभिदेशेकुण्डलाकारंअमृतंसंस्थितम्) जो बाहु शिर कटैंगे तौ पुनः शीघ्रही जामिआवहिंगे ऐसा भगवान् ब्रह्माकहा है पुनः तिस रावणके नाभीबिषे जलकुंडके आकार अमृतस्थित है ५३ (अनलअस्त्रेणतत्शोषय तस्यमृत्युःभवेत् विभीषणवचःश्रुत्वाशीघ्रपराक्रमःरामः) विभीषण बोले कि हे रघुनन्दन प्रथम अग्निबाणकरिकै नाभीमें जो अमृतहै सो शोषिलीजिये तदनन्तर तिस रावणकी मृत्युहोइगी इति विभीषणके वचनसुनिकै शीघ्रही सर्व कार्यकरिबे योग्य पराक्रम है जिनके ऐसे रघुनन्दन ५४ (पावकास्त्रेणसंयोज्यरक्षसःनाभिंविव्याधचअनंतरंमहाबलःशिरांसिचचिच्छेद) प्रथम अग्निअस्त्र मंत्रितकरि तिस बाणकरिकै राक्षस रावणकी नाभीको बेधनकरि अमृतशोषिलीन्हे पुनःतदनन्तर महाबल रघुनन्दन रावणके शिरनकोकाटतेभये ५५॥

बाहूनपिचसंरब्धोरावणस्यरघूत्तमः ॥ ततोघोरांमहाशक्तिमादायदशकंधरः ५६ विभीषणबधार्थायचिक्षेपक्रोधविह्वलः ॥ चिच्छेदराघवोबाणैस्तांशितैर्हेमभूषितैः ५७ दशग्रीवशिरश्छेदात्तदातेजोविनिर्गतम् ॥ म्लानरूपोबभूवाथछिन्नैःशीर्षैर्भयंकरैः ५८ एकेनमुख्यशिरसाबाहुभ्यांरावणोबभौ ॥ रावणस्तुपुनःक्रुद्धोनानाशस्त्रास्त्रवृष्टिभिः ५९ ववर्षरामंतंरामस्तथाबाणैर्ववर्षच॥ततोयुद्धमभूद्घोरंतुमुलं

लोमहर्षणम् ६० अथसंस्मारयामासमातलीराघवंतदा ॥ विसृज्यास्त्रंवधायास्य ब्राह्मंशीघ्रंरघूत्तमः ६१॥

(चरावणस्यबाहून्अपिरघूत्तमःसंरब्धः ततःदशकन्धरःमहाघोरांशक्तिंआदाय) पुनः रावणकी बाहुनको भी रघुनन्दन काटिडारे तदनन्तर रावण महाभयंकरशक्ति अर्थात् सांग लेताभया ५६ (क्रोधविह्वलःविभीषणबधार्थायचिच्छेपतांराघवःहेमभूषितैःशितैःबाणैःचिच्छेद) क्रोधवश विह्वलतन सुधिविसारि रावण विभीषण के बधकरिवे अर्थ वही करालशक्ति चलावताभया आवते देखि तिस शक्तिको रघुनन्दन कांचनभूषित पैनेबाणोंकरिकै काटिडारतेभये ५७ (शिरःछेदात्तदादशग्रीवःतेजःविनिर्गतंअथभयंकरैः शीर्षैश्छिन्नैःम्लानरूपःबभूव) शिरकटेते ता समय रावणको तेज नाश होगया अब भयंकर शिरोंके कटिजानेकरिकै म्लान अर्थात् कांतिहीन रूपधूमिल चेष्टाहोताभया ५८ (मुख्यएकेनशिरसाबाहुभ्यांरावणः बभौतुरावण.पुनःक्रुद्धःनानाशस्त्रअस्त्रवृष्टिभिः) मुख्य एकही शीश करिकै दो बाहुनकरिकै शेषरावणहोतभया तब रावण पुनः क्रोधकरि अनेक प्रकारके त्रिशूल तरवारि आदि शस्त्र बाणशक्ति आदि अस्त्रोंकीबर्षाकरिकै ५९ (रामंववर्षचतथारामःतंबाणैःववर्षततःतुमुलंलोमहर्षणंघोरंयुद्धंअभूत्) जैसे रावण रघुनन्दनपर बाणादि वृष्टिकरताभया पुनः तैसेही रघुनन्दन तिस रावणपर बाणनकरिकै बर्षाकरतेभये तदनन्तर जुटिकै लोम हर्षण भयंकर युद्धहोताभया ६० (अथतदामातलीराघवंसंस्मारयामास रघूत्तमअस्यबधायब्राह्मंअस्त्रंशीघ्रंविसृज्य) अब ता समय में मातली रावणके मृत्युको समय रघुनन्दनको सुधिकराताभया कि हे रघुनन्दन इसरावणके बध अर्थ ब्रह्मास्त्रको शीघ्रछाडिये ६१ ॥

विनाशकालःप्रथितोयःसुरैःसोद्यवर्तते ॥ उत्तमांगंनचैतस्यछेत्तव्यंराघवत्वया६२ नैवशीर्षिणप्रभोबध्योबध्यएवहिमर्मणि ॥ ततःसंस्मारितोरामस्तेनवाक्येनमातलेः ६३ जग्राहसशरंदीप्तंनिश्श्वसंतमिवोरगं ॥ यस्यपार्श्वेतुपवनःफलेभास्करपावकौ ६४ शरीरमाकाशमयंगौरवेमेरुमंदरौ ॥ पर्वस्वपिचविन्यस्तालोकपाला महौजसा ६५ जज्वालमानंवपुषाभांतंभास्करवर्चसा ॥ तमुग्रमस्त्रंलोकानांभयनाशनमद्भुतम् ६६ अभिमंत्र्यततोरामस्तंमहेषुंमहाभुजः ॥ वेदप्रोक्तेनविधिना संदधेकार्मुकेबली ६७ ॥

(यःविनाशकालःसुरैःप्रथितःसःअद्यवर्ततेराघवत्वयाएतस्यउत्तमांगंनछेत्तव्यं) जो रावण कोविनाश काल देवतों ने कहाहै सो या समयमें वर्तमानहै ताते हेरघुनंदन अब इसरावणको शिर न काटिये ६२ (प्रभोशीर्षिणनएवबध्यःमर्मणिएवहिबध्यःमातलेःतेनवाक्येनसंस्मारितःततःरामः) हे प्रभो शीश कटे याकी मृत्युनहीं है मर्मस्थान अर्थात् हृदय में बाणमारने ते याकी मृत्युहोइगी इतिमातलिके वचनों करिकै सुधिकराये हुये तदनंतर रघुनंदन ६३ (उरगंइवनिःश्वसंतंसशरंदीप्तंजग्राहयस्य पार्श्वेपवनःतुफलेभास्करपावकौ) सर्प की समान फुफकारता हुआसो बाण प्रज्वलित हाथ में लेते भये जिसके चारिहु दिशिमें अर्थात् परगीरी में पवन है पुनःगांसी के दोऊ धारणमें सूर्य पुनःअग्नि है ६४ (आकाशमयंशरीरंगौरवेमेरुमंदरौचपर्वसुअपिमहाओजसालोकपालाःविन्यस्ताः)आकाशमय प्रमाण रहित हिरण्यगर्भरूप जाको शरीर है पुनः जाकी गरोई में सुमेरु अरु मंदराचल हैं पुनःजाके पोठन में महातेजवंत इंद्रादि सबलोकपाल वास किहेहैं ६५ (सूर्यवर्चसाजज्वालमानंवपुषाभांतं

लोकानांभयनाशनंतंअद्भुतंउग्रंअस्त्रं) सूर्यवत् तेज करिकै ज्वलित आपने शरीरकरिकै प्रकाशमान सबलोकन की भयनाश करणहारा तिस अद्भुत उग्रतीक्ष्ण अस्त्रको ६६ (वेदप्रोक्तेनविधिनाअभिमंत्र्यततःमहाभुजःबलीरामःतंमहाइषुंकार्मुकेसंदधे) जैसा वेदने कहा है ताही विधि करिकै मंत्रसो अभिमंत्रित करि तदनंतर महाभुजबली रघुनंदन तिस महाबाणको धनुष में संधानकरतेभये ६७ ॥

तस्मिन्संधीयमानेतुराघवेणशरोत्तमे ॥ सर्वभूतानिवित्रेसुश्चचालचवसुंधरा ६८ सरावणायसंक्रुद्धोभृशमानम्यकार्मुकम् ॥ चिक्षेपपरमायत्तस्तमस्त्रंमर्मघातिनम् ६९ सवज्रइवदुर्द्धर्षोवज्रपाणिविसर्जितः ॥ कृतांतइवघोरास्योन्यपतद्रावणोरसि ७० सनिमग्नोमहाघोरःशरीरांतकरःपरः ॥ विभेदहृदयंतूर्णंरावणस्यमहात्मनः ७१ रावणस्याहरत्प्राणान्विवेशधरणीतले॥सशरोरावणंहत्वारामतूणीरमाविशत् ७२ तस्यहस्तात्पपाताशुसशरंकार्मुकंमहत् ॥ गतासुर्भ्रमिवेगेणराक्षसेन्द्रोऽपतद्भुवि ७३ ॥

(राघवेणशरोत्तमेसंधीयमानेतुतस्मिन्सर्वभूतानिवित्रेसुःचवसुंधराचचाल) रघुनंदन करिकै उत्तमबाण संधान करत संते पुनः तासमय में सब प्रणीमात्र विशेषि त्रासको प्राप्त भये अर्थात् धनुष में संधानाहुआ ज्वलित बाणको देखि सब डरिउठे पुनःपृथिवी हालिउठी ६८ (सभृशंसंक्रुद्धःकार्मुकं आनम्य मर्मघातिनम्परमायतःतंअस्त्रंरावणायचिक्षेप) रघुनंदन अत्यंत क्रोधकरि धनुष कोखेंचि मर्मस्थान घात करनेवाला परमलंबायमान भारी तिसबाण को रावणकी मृत्यु के अर्थ छोड़ते भये ६९ (वज्रपाणिविसर्जितःवज्रइवदुर्द्धर्षःकृतांत इवघोरास्यःसरावणोरसिन्यपतत्) इंद्रको छोड़ा वज्रसम अमोघ कालसम भयंकरहै मुखजाको सो बाण रघुनंदनको छोड़ाहुआ जायकै रावण कीछाती में प्रवेश होताभया ७० (सनिमग्नःशरीरांतकरःपरःमहाघोरःमहात्मनःरावणस्य हृदयंतूर्णंविभेद) सो रावण की छाती में प्रवेश शरीरको नाशकरने वाला महाभयंकर बाण महात्मा रावण के हृदय को शीघ्रही विभेदन करता भया ७१ (रावणस्यप्राणान्अहरत्धरणीतलेविवेशरावणंहत्वासशरःरामतूणीरंआविशत्) ऐसे वेगते चला जो छाती विदारण करि रावण के प्राणन को हरिकै भूमि में प्रवेश करिगया इसप्रकार रावण को मारि पुनः सोई बाणभूमि आय रघुनाथ जीके तरकश में प्रवेश भया ७२ (तस्यहस्तात्सशरंमहत्कार्मुकंआशुपपातभ्रमिवेगेणगतासुःराक्षसेंद्रःभुविअपतत्) तिस रावण के हाथते सहित बाण बड़ाभारी धनुषछूटिकै शीघ्रही गिरि परताभया मराहुआ शरीरबाणवेगते भ्रमण को प्राप्त ह्वै रावण भूमि पै गिरि परताभया ७३ ॥

तंदृष्ट्वापतितंभूमौहतशेषाश्चराक्षसाः ॥ हतनाथाभयत्रस्तादुद्रुवुःसर्वतोदिशम्७४ दशग्रीवस्यनिधनंविजयंराघवस्यच ॥ ततोविनेदुःसंहृष्टावानराजितकाशिनः ७५ वदंतोरामविजयंरावणस्यचतद्वधम् ॥ अथांतरिक्षेव्यनदत्सौम्यस्त्रिदशदुंदुभिः ७६ पपातपुष्पवृष्टिश्चसमंताद्राघवोपरि ॥ तुष्टुवुर्मुनयःसिद्धाश्चारणाश्चदिवौकसः ७७ अथांतरिक्षेननृतुःसर्वतोप्सरसोमुदा ॥ रावणस्यचदेहोत्थंज्योतिरादित्यवत्स्फुरत् ७८ प्रविवेशरघुश्रेष्ठंदेवानांपश्यतांसताम् ॥ देवाऊचुरहोभाग्यंरावणस्यमहात्मनः ७९ ॥

(तंभूमौपतितंदृष्ट्वाहतनाथाः चहतशेषाः राक्षसाःभयत्रस्तासर्वतःदिशंदुद्रुवुः) तिस रावणको भूमिपे गिरादेखिकै पुनः जूझिगया है राजा जिनको ऐसे जे मारने ते बाकीरहे हैं राक्षस ते भयभीत ह्वैकै सब दिशौंकोभागते भये ७४ (दशग्रीवस्यनिधनंचराघवस्यविजयंततःजितकाशिनःवानराःसंहृष्टाविनेदुः) संग्राम में दशग्रीव रावणकोमरण पुनः रघुनन्दनकी विजय इति देखिकै तदनन्तर जय करिकै प्रकाशमान सब वानर ते आनन्दह्वैकै गर्जतेभये ७५ (रामविजयंचरावणस्यवधंतत्वदंतः अथअंतरिक्षेभौम्यःत्रिदशदुंदुभिःव्यनदत्) रघुनन्दनकी विजय पुनः रावणकी मृत्युलोकहतेहुये वानर गर्जते हैं अब ताही समयम आकाशविषे मंगलानंददर्शावनहारे देवतोंके नगारावाजतेभये ७६ (च समंतात्राघवोपरिपुष्पवृष्टिःपपातमुनयःसिद्धाःचारणाःचदिवौकसःतुष्टुवुः) पुनः सब दिशौंते रघुनंदनकेऊपर फूलौंकीवृष्टिगिरती है अरु मुनि सिद्धचारण पुनः देवता प्रभुकी सब स्तुतिकरतेभये ७७ (अथअंतरिक्षेसर्वत.अप्सरसःमुदाननृतुःचरावणस्यदेहोत्थंआदित्यवत्स्फुरत्ज्योतिः) आकाश विषे सर्वत्र अप्सरा आनंदसहित नाचि रहीं हैं पुनः रावण की देहते निसरी सूर्यवत् प्रकाशमान ज्योति ७८ (सताम्देवानांपश्यताम्रघुश्रेष्ठंप्रविवेशदेवाऊचुः महात्मन.रावणस्यअहोभाग्यं) साधु देवतन के देखतदेखत रावण की ज्योति रघुनंदन में प्रवेश ह्वै गई सो देखि बड़ा आश्चर्य मानि देवता बोलते भये कि महात्मा रावण की अहोभाग्य अर्थात् आश्चर्य मय प्रशंसा करने योग्य भाग्य उदय भई है ७९ ॥

वयंतुसात्विकादेवाविष्णोःकारुण्यभाजनाः ॥ भयदुःखादिभिर्व्याप्तासंसारेपरिवर्तिनः ८० अयंतुराक्षसःक्रूरोब्रह्महातीवतामसः ॥ परदाररतोविष्णुद्वेषीतापसहिंसकः ८१ पश्यत्सुसर्वभूतेषुराममेवप्रविष्टवान् ॥ एवंब्रुवत्सुदेवेषुनारद.प्राहसुस्मितः ८२ शृणुतात्रसुरायूयंधर्मतत्त्वविचक्षणाः ॥ रावणोराघवद्वेषादनिशंहृदिभावयन् ८३ भृत्यैःसहसदारामचरित्रंद्वेषसंयुतः ॥ श्रुत्वारामात्स्वनिधनंभयात्सर्वत्रराघवम् ८४ पश्यन्ननुदिनंस्वप्नेराममेवानुपश्यति ॥ क्रोधोपिरावणस्याशुगुरुबोधाधिकोभवत् ८५ ॥

(तुवयंदेवःसात्विकाविष्णोःकारुण्यभाजनाःभयदुःखादिभिःव्याप्ता.संसारेपरिवर्तिनः) पुनः हमलोग देवता सतोगुण करिकै उत्पन्न भये विष्णु की दयाके पात्र भाव हमारादुःख सदा निवारण करते हैं सो हम लोग देह सुखमें भूले शत्रुन की भयहानि वियोगादि दुःखादिकों करिकैयुक्त संसार में भ्रमते हैं ८० (तुअयंराक्षसःअतीवतामसःक्रूरोब्रह्महातापसहिंसकःविष्णुद्वेषीपरदाररतः) पुनः यह रावण राक्षस अत्यंत तामसीक्रूर अर्थात् कठोर निर्दयी स्वभाव ब्राह्मणों को घातक तपस्विन को घातक विष्णुको विरोधी परस्त्रीरत ८१ (सर्वभूतेषुपश्यत्सुरामंएवप्रविष्टवान्एवंदेवेषुब्रुवत्सुनारद.सुस्मितःप्राह) सब प्राणमात्रके देखत संते रावण को तेज रघुनंदन में प्रवेश भया इसप्रकार देवतों के कहत संते नारद मुसकायकै बोले ८२ (देवायूयंधर्मतत्त्वविचक्षणाःअत्रशृणुतराघवद्वेषात् रावणःअनिशंहृदिभावयन्) हे देवतौ तुमलोग धर्मतत्त्वकी सूक्ष्मगति जानवेमें प्रवीण हौ तातेइस विषयमें मै कहौं सो सुनौ रघुनंदन सो विरोध ते रावण दिनौराति हृदय में रामको ध्यान करता रहा ८३ (द्वेषसंयुतःभृत्यैःसहसदा रामचरित्रंश्रुत्वास्वनिधनंरामात्भयात्सर्वत्रराघवंपश्यन्) विरोध बुद्धिसंयुत रावण सेवकन सहित दूतन के मुखते सदा रामचरित्रों को सुनि कै पुनः अपनी मृत्यु

रामते जानि डरते सर्वत्र रघुनंदनै को देखता रहै ८४ (स्वप्नेअनुदिनंरामंएवअनुपश्यति रावणस्य आशुगुरुबोधअधिकःक्रोधःअपिअभवत्) स्वप्ने में भी प्रतिदिन रामही को देखतारहा रावण को शीघ्रही जो गुरुके उपदेश तेज्ञान होताहै त्यहिते अधिक ज्ञानदेनहारा क्रोधही होता भया भावक्रोध वश देह व्यवहार त्यागि मन बचन कर्म राम संमुख भया ८५ ॥

रामेणनिहतश्चांतेनिर्धूताशेषकल्मषः॥ रामसायुज्यमेवापरावणोमुक्तबन्धनः८६ पापिष्ठोवादुरात्मापरधनपरदारेषुसक्तोयदिस्यान्नित्यंस्नेहाद्भयाद्वारघुकुलतिल कंभावयन्संपरेतः ॥ भूत्वाशुद्धांतरंगोभवशतजनितानेकदोषैर्विमुक्तः सद्योरा मस्यविष्णोःसुखरविनुतंयातिवैकुंठमाद्यम् ८७ हत्वायुद्धेदशास्यंत्रिभुवनविषमं वामहस्तेनचापं भूमौविष्टभ्यतिष्ठन्नितरकरधृतंभ्रामयन्बाणमेकम् ॥ आरक्तो पांतनेत्रःशरदलितवपुः सूर्यकोटिप्रकाशोवीरश्रीबंधुरांगस्त्रिदशपतिनुतःपातुमां वीररामः ८८ ॥

इत्यध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसम्बादेयुद्धकाण्डेएकदशःसर्गः ११ ॥

(चअंतेरामेणानिहतःनिर्धूतअशेषकल्मषःमुक्तबंधनःरावणःरामसायुज्यंएवआप) पुनः अंतकाल में रघुनंदन करिकै बधभया ताते छूटिगये हैं सबपाप जिसके तथा छूटिगये हैं सर्वस्नेह कर्म बंधन जिसके ऐसा जो शुद्धरावण रघुनंदन में मिलिकै परधाम को प्राप्त भया ८६ (पापिष्ठःवादुरात्मा) महापापिष्ठ होइ अथवा दुष्टचित्तहोय (परधनपरदारेषुसक्तःयदिस्यात्) परधन हरनेवाला परस्त्री मेंरतऐसहू पुरुष कदाचित् (स्नेहात्वाभयात्नित्यंरघुकुलतिलकंभावयन्संपरेतः) प्रीति ते अथवा भयते जो नित्यहीं रघुनाथ जीके ध्यान में तत्पर होयसो अंतकाल में (शुद्धांतरंगःभूत्वाभवशतज नितअनेकदोषैःविमुक्तः) शुद्धअंतः करण होकै लोकके सैकरौं जन्मौं के उत्पन्न हुये अनेक दोषों से छूटि कै पुनः (सुरवरविनुतंविष्णोःरामस्यआद्यंवैकुंठंसद्यःयाति) उत्तम देवतौं करिकै स्तुति किया जो विष्णुराम को आद्य बैकुण्ठलोक तहां को शीघ्रही जाता है ८७ (त्रिभुवनविषमंदशास्यंयुद्धेहत्वा वामहस्तेनचापंभूमौविष्टभ्यतिष्ठनइतरकरएकंबाणंधृतंभ्रामयन्आरक्तोपांतनेत्रःशरदलितवपुः कोटि सूर्य्यप्रकाशःवीरःश्रीबंधुरअंगःत्रिदशपतिनुतःवीररामःमांपातु) अब वासमय को ध्यान शिवजकिह ते हैं कि तीनिहू लोकनको कठिन दुखदायक जो रावण ताको युद्धमें मारिकै बामहाथसे धनुषभूमि में टेकि खड़े हैं अरुदूसरे हाथ से एकबाण लिहे घुमाय रहे हैं अरुथोरा अरुणनेत्रौं को समीप भाग जिनका रावण के बाणौंकरिकै विदीर्ण है तनजामें करोरि सूर्य कैसो प्रकाश ह्वैरहो है वीरतनमेंयथा योग्य उन्नतनत है अंग जिनका इंद्रादि देवन करिकै स्तुति किये गये ऐसेजो बीरनमें शिरोमणि राम सो मेरी रक्षाकरौ ८८ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचिते अध्यात्मभूषणेयुद्धकांडेएकादशःप्रकाशः ११ ॥

रामोपिविभीषणंदृष्ट्वाहनूमंतंतथांगदम्॥ लक्ष्मणंकपिराजंचजाम्बवंतंतथापरा

न् १ परितुष्टेनमनसासर्वानेवाब्रवीद्वचः ॥ भवतांबाहुवीर्येणनिहतोरावणोमया २ कीर्तिःस्थास्यतिवःपुण्यायावच्चंद्रदिवाकरौ ॥ कीर्तयिष्यंतिभवतांकथांत्रैलोक्यपावनीम् ३ ययोपेतांकलिहरांयास्यंतिपरमांगतिम् ॥ एतस्मिन्नंतरेदृष्ट्वारावणंपतितंभुवि ४ मंदोदरीमुखाःसर्वाःस्त्रियोरावणपालिताः ॥ पतितारावणस्याग्रेशोचंत्यःपर्यदेवयन् ५ विभीषणःशुशोचार्तोशोकेनमहतावृतः ॥ पतितोरावणस्याग्रेबहुधापर्यदेवयत् ६ ॥

सवैया ॥ रनवास विभीषणशोक लखे प्रभुशासन लक्ष्मण ज्ञानदिये । सविभीषणमृत्यु क्रियाकरिकै गत लक्ष्मणता अभिषेक किये ॥ हनुमान कहे कुशलात चली मिथिलेश सुता अतिमोद हिये । पति आयसु पैठि हुताशन में सियसानंद सोसति सत्व लिये ॥ (विभीषणंहनूमंतंतथाअंगदंलक्ष्मणंकपिराजंचजाम्बवंतंतथाअपरान् दृष्ट्वारामः) शिवजी बोले हे गिरिजा अब विभीषण हनूमान् तैसेही अंगद लक्ष्मण सुग्रीव पुनः जाम्बवान् तैसेही और जे यूथपती वानर हैं तिन सबन को देखिकै रघुनंदन १ (परितुष्टेनमनसासर्वान्एववचःअब्रवीत्भवतांबाहुवीर्येणमयारावणःनिहतः) परम प्रसन्न मनसे प्रभु सबन प्रति वचन बोलते भये कि तुम लोगन के बाहुबल करिकै मैंने रावण को मारा २ (यावत्चंद्रदिवाकरौवःपुण्याकीर्तिःस्थास्यतित्रयलोक्यपावनीम्भवतांकथांकीर्तयिष्यंति) जबतकचंद्रमासूर्य हैं तबतक तुम्हारी पावन कीर्तिवनी रहैगी अरुतीनिहूं लोकनको पावन करणहारी तुम्हारी कथा कविजन गानकरहिंगे ३ (ययाउपेतांकलिहरांपरमांगतिंयास्यंतिएतस्मिन्अंतरेभुविपतितंरावणदृष्ट्वा) जिसकीर्त्तिसहित कलिमलहरणहारी कथा गानकरि लोग परम गतिको जायँगे ताही समय में भूमि में पराहुआरावणको मृतकदेखिकै ४ (मंदोदरीमुखाःरावणपालिताःसर्वाःस्त्रियःरावणस्यअग्रेपतिताशोचन्त्यःपर्यदेवयन्) मंदोदरीहैमुख्य जिन में ऐसी रावणकी सबस्त्री रावणकेआगे भूमि में परी शोच विलाप वचनपूर्वक रोदनकरती हैं ५ (विभीषणःमहताशोकेनवृतः शुशोचार्तःरावणस्यअग्रेपतितःबहुधापर्यदेवयन्) विभीषण वडेशोकयुक्त शोचकरिकैदुखित रावण के आगेपरे बहुतप्रकारके विलापवचनकहि रोदनकरते हैं ६ ॥

रामस्तुलक्ष्मणंप्राहबोधयस्वविभीषणम् ॥ करोतुभ्रातृसंस्कारंकिंविलंबेनमानद ७ स्त्रियोमंदोदरीमुख्याःपतिताविलपंतिच ॥ निवारयतुताःसर्वाराक्षसीरावणप्रियाः ८ एवमुक्तोथरामेणलक्ष्मणोऽगाद्विभीषणम् ॥ उवाचमृतकोपांतेपतितंमृतकोपमम् ९ शोकेनमहताविष्टंसौमित्रिरिदमब्रवीत् ॥ यंशोचसित्वंदुःखेनकोयंतवविभीषण १० त्वंवास्यकतमःसृष्टेपुरेदानीमतःपरम् ॥ यद्वत्तोयौघपतिताःसिकतायांतितद्वशाः ११ संयुज्यंतेवियुज्यंतेतथाकालेनदेहिनः ॥ यथाधानासुवैधानाभवंतिनभवन्तिच १२ ॥

(तुरामःलक्ष्मणंप्राहमानदविभीषणंबोधयस्वभ्रातृसंस्कारंकरोतुविलंबेनकिं) पुनः रघुनन्दन लक्ष्मणप्रति बोलतेभये हे मानद लक्ष्मण शोकार्त विभीषणको बोधकरावो भाव समुझायकै ज्ञान उत्पन्नकरावो जामें अपने भाई रावणकी पारलौकिक संस्कारक्रियाकरैं अब विलंबकरनेते क्या प्रयोजन है ७ (मंदोदरीमुख्याःस्त्रियःपतिताचविलपंतिरावणप्रियाःराक्षसीताःसर्वानिवारयतु) मंदो

दरीहै मुख्यजिनमें ऐसी स्त्री भूमिमेंपरी पुनः विलापकरती जे रावणकीप्रिया राक्षसी तिन सबका विभीषण शोकनिवारणकरै ८ (एवंरामेणउक्तः अथलक्ष्मणः अगात्मृतकउपांतेमृतकउपमंपतितं विभीषणंउवाच) इस प्रकार रघुनंदननेकहा तब लक्ष्मण वहांकोगये जहांमराहुवा रावणपराहै ताके समीप मरेकेतुल्यपरे जो विभीषण तिनप्रति लक्ष्मणजी बोलतेभये ९ (शोकेनमहताविष्टंसौमित्रिः इदंअब्रवीत् विभीषणदुःखेनयंत्वंशोचसिअयंतवकः) बड़ेदुःखयुत जो विभीषण तिनप्रति लक्ष्मण ऐसा बोलतेभये हे विभीषण दुःखकरिकै जाको तुम शोचकरतेहौ यह तुम्हाराकौन है १० (वाअस्यत्वंकतमःपुरासृष्टेइदानीमृअतःपरंयद्वत्तोयओघपतिताःतत्वशाः सिकतायांति) अथवा इसके तुम कौनहौ तहां पूर्वजन्ममें याके तुम कौनहौ अब कौनहौ और जन्ममें कौनहोउगे भाव न पूर्व सम्बन्धरहा न आगेहोयगो अरु या जन्ममें सम्बन्ध कैसा है जैसे जलसमूहगिरताहै ताके वेग में रेणुका आगे पाछे बहाचलाजाता है ११ (संयुज्यंतेवियुज्यंतेतथादेहिनः कालेनयथाधानासुवैधाना भवंतिचनभवंति) उस रेणुकौंको संयोग वियोगहुवाकरता है तैसेही जीवनको संयोग वियोग काल के वेगकरिकै हुवाकरता है जैसे धाना अर्थात् भूजेहुये यव सुन्दर तिनको वैधानाहोता है अर्थात् जवोंको ढेरलगावो तब एकपर एक थभिजाता है पुनः चिकनाईते नहीं थभते हैं सरकिपरते हैं १२ ॥

एवंभूतेषुभूतानिप्रेरितानीशमायया॥त्वंचेमेवयमन्येचतुल्याःकालवशोद्भवाः १३ जन्मम्रत्यूयदायस्मात्तदातस्माद्भविष्यतः ॥ ईश्वरःसर्वभूतानिभूतैःसृजतिहंत्यजः १४ आत्मसृष्टैरस्वतंत्रैरनपेक्षोऽपिबालवत् ॥ देहेनदेहिनोजीवादेहादेहोभिजायते १५ बीजादेवयथाबीजंदेह्यन्यइवशाश्वतः ॥ देहीदेहविभागोयमविवेककृतःपुरा १६ ॥

(एवंईशमाययाप्रेरितानिभूतेषुभूतानित्वंचइमेवयंचअन्येकालवशाःतुल्याःउद्भवाः)इसीप्रकार ईश्वरकीमायाकरिकै प्रेरित प्राणिन में प्राणिनको संयोग बियोगहुवाकरताहै ताते हेबिभीषण तुम पुनःयह रावण अरु हम पुनः और जो लोग हैं इत्यादि सब कालकेबशते बराबरि उत्पन्नहोते हैं १३ (जन्म मृत्यूयस्मात्यदातस्मात्तदाभविष्यतः ईश्वरःभूतैःसर्वभूतानिसृजतिअजःहंति) जन्म अरु मरण जिसते जासमय में जिसको परमेश्वररचिराखा है ताहीते ताको तिसकाल में होताहै यथा बालकोंको खेल अनेक रचनारचि पुनः बिगारिदेते हैं तैसेही ईश्वर अपनेरचेहुये भूतौंकरिकै अर्थात् स्त्री पुरुषौंकरिकै कन्या पुत्रादि सब भूतोंकोरचता है अरु पालनकरता है पुनः ईश्वरै किसी द्वारानाश कराय देता है १४ (बालवत्अनपेक्षःअपिआत्मसृष्टैःअस्वतंत्रैःदेहिनःदेहेनजीवःदेहात्देहःअभिजायते) बालकोंकीनाईं हर्ष विषादरहित जो ईश्वरकीरचना है तामें माता पितादिकौं करिकै पुत्रादि उत्पन्नकरना अस्वत्रताकरिकै है भाव विना ईश्वरकी आज्ञा कोऊ स्वइच्छित पुत्रादि नहीं उत्पन्न करिसक्ता है तामें आत्माउत्पन्न नहींहोताहै देहधारीहै देहसम्बंधकरिकै जीवकहावताहै अरु माता पिताकी देहते पुत्रकीदेह मात्रही उत्पन्नहोताहै १५ (यथाबीजात्एवबीजंदेहीअन्यइवशाश्वतः देही देहविभागःअयंपुराअविवेकतःकृतः) जैसे बीजबोये जामिकै वृक्षभया सफल है पुनः बीजहोता है इसी भांति देहते देहहोत अरु अरु देही अर्थात् जीव सो तौ देहते अन्य नित्यहै अरु देह अनित्य है सो देही देहको विभाग अर्थात् जीव नित्य देह अनित्य दोऊकी एकता दृष्टि यह पूर्वहीसे अज्ञान ते कल्पना है अर्थात् कारण बश आत्म दृष्टि भुलाय जीव बुद्धि करि कार्य माया बश इंद्री बिषयों

आसक्त है मैं ब्राह्मण मैं क्षत्री इत्यादि देहैं को सत्य मानि ताके संबंधिन से अपनपौ मानि संयोग में सुखी वियोग में दुखी इत्यादि अज्ञानते कल्पनाहै १६ ॥

नानात्वंजन्मनाशश्चक्षयोवृद्धिःक्रियाफलम् ॥ द्रष्टुराभात्यतद्धर्मोयथाग्नेर्दारुविक्रिया १७ तद्वदेहसंयोगादात्मनाभान्तिसद्ग्रहात् ॥ अथायथातथाचान्यद्ध्यायतोऽसत्सदाग्रहात् १८ प्रसुप्तस्यानहंभावात्तदाभातिनसंसृतिः ॥ जीवतोऽपितथातद्वद्विमुक्तस्यानहंकृतेः १९ तस्मान्मायामनोधर्मंजह्यहंममताभ्रमं ॥ रामभद्रे भगवतिमनोदेह्यात्मनीश्वरे २० ॥

(नानात्वंजन्मनाशः चक्षयःवृद्धिःक्रियाफलम्अतत धर्माआभांतिद्रष्टुःयथाअग्नेःदारुविक्रियाः) अनेक भेद मानना जन्म होना मरिजाना पुनः घटिजाना वढ़िजाना शुभाशुभ कर्म करना तिन को फल सुख दुःखादि ये नहीं है तिस आत्मा के धर्म अर्थात् अनात्मा के धर्म हैं ते आत्मा विषे प्रकाश मान देखि परते हैं कौनभांति यथा अग्निके संयोग काठ को विकार अर्थात् अँबिली बबूरके काठमें अग्नि प्रचण्ड गूलरि पाकरि आँवमें मंद देखात ये काठहीके धर्म हैं अग्निके नहीं हैं१७ (तद्वदेहसंयोगात्असत्ग्रहात् आत्मनिआभांतिअसत् सत्चअन्यत्अग्रहात्यथाध्यायतः तथाप्रथा) ये जो पूर्वकहे हैं यथा नानात्वजन्म मरण हानि वृद्धि क्रिया फल इत्यादि जो अंतः करणके धर्म हैं ते देहसंयोग रूप असत्य अर्थ ग्रहणकरनेसे देहान्तःकरणके आत्मा विषे दर्शित होते हैं तहां असत् यावत् पाप मूल हैं सत् यावत् पुण्य मूल पुनः अन्य गृह कार्यादि अंगीकार करिकै जैसा ध्यान करता है तैसाही प्रथा भवतिअर्थात्प्रसिद्ध होताहै १८ (प्रसुप्तस्यअन्अहंभावात्संस्मृतिः नभाति तथाविमुक्तस्य अन्अहंकृतेः जीवतःअपितद्वत्) जैसे सोवते हुये पुरुषको अहंकार को अभाव होनेते हानिवियोगादि संसारी दुःख नहीं व्याप्ता है तैसेही तत्त्वज्ञानके प्रभावते जीवन् मुक्तपुरुषन को अहंकार को अभावहोने ते जीवत भी सोवतेके तुल्य संसारदुःखनहीं व्याप्ता है १९ (तस्मात् मायामनोधर्मं अहंममताभ्रमंजहि आत्मनिईश्वरेभगवति रामभद्रेमनःदेहि) ताते हे विभीषण माया को अंश जो मन ताके धर्म जो देहाभिमान तिस देह संबंधिन में जो ममता झूठे पदार्थ में सांचे कीभ्रम है ताहिमनते त्यागकरौ अरु आत्म ईश्वर विषे परमात्माकल्याण रूप रघुनाथजी में मन देहु भाव देह व्यवहार को सत्य मानि जो मन लगायेहौ सो वृथा मानि तहां ते खैंचि आत्मरूपको सत्यमानि तामें तदाकार ह्वै तत्र परमात्मा राम रूपमें अनुरागयुतमनलगावौ २० ॥

सर्वभूतात्मनिपरेमायामानुषरूपिणि ॥ बाह्येन्द्रियार्थसम्बन्धात्त्याजयित्वामनःशनैः २१ तत्रदोषान्दर्शयित्वारामानंदेतियोजय ॥ देहबुद्ध्याभवेद्भ्रातापितामातासुहृत्प्रियः २२ विलक्षणंयदादेहान्जानत्यात्मानमात्मना ॥ तदाकःकस्यवाबंधुर्भ्रातामातापितासुहृत् २३ मिथ्याज्ञानवशाज्जातादारागारादयःसदा ॥ शब्दादयश्चविषयःविविधाश्चैवसंपदा २४ ॥

दोश्लोकएक मेंअन्वय (बाह्यइंद्रियार्थतत्रदोषान्दर्शयित्वासंबंधात्त्याजयित्वामायामानुषरूपिणि सर्वभूतात्मनि परेरामानंदेतिशनैः मनः योजयदेहबुद्ध्याभ्रातापितामाता सुहृत्प्रियःभवेत्) देह में बाहेर की जो श्रवण त्वचा नेत्र जिह्वा नासिका लिंगादि इंद्रीहैं तिनकोअर्थशब्द स्पर्श रूप रसगंध

मैथुन इत्यादि जो बिषय हैं तिन में दोष देखि कै तिन इंद्रिन के संबंध ते मन को जुदा करिकै पुनः दिव्य माया करिकै मानुष रूप है जिन को सर्व भूतके आत्मा प्रकृति ते परे परम आनंद रूप रघु- नाथ जी में धीरा धीरा मन को लगावो अरु देह बुद्धि करिकै अर्थात् मैं ब्राह्मण मैं क्षत्री इत्यादि सत्य मानेते भाई पितामातामित्र प्रिय इत्यादि संबंधी होते हैं भाव देह सत्य मानेते देह संबंधी भी सत्यदेखातेहैं २१।२२ (देहात्विलक्षणंयदाआत्मना आत्मानंजानातितदाबंधुः वाभ्रातामातापिता सुहृत्कस्यकः) देहते जो बिलक्षण अर्थात् जामें कछु कारण नहीं अपूर्वता की प्राप्ति हेत जब कर्म ज्ञान भक्ति इत्यादि यत्न करिकै प्राणी आत्मा को जानताहै तब बंधु वा भाई माता पिता मित्र इत्यादि किस को कौन है भाव कथा देह झूँठी तथा देह संबंध भी मिथ्या देखाते हैं २३ (अज्ञान वशात्दाराअगारआदयो मिथ्यासदाजाताच शब्दादयःविषयःचएव विविधाःसंपदा) कारण माया बश आत्मा रूप भूलि जीव बुद्धी भई कार्य माया बश इंद्री बिषयन में आसक्त देहैं कोसत्य मानि लिया इति अज्ञान वश ते स्त्री मंदिर इत्यादि झूँठही सदा उत्पन्न होते हैं पुनः शब्द स्पर्श रूप रस गंधादि बिषयी पुनः सोनामणि अन्न धन भूषण बाहन इत्यादि अनेक प्रकारकी संपदा २४ ॥

बलंकोशोभृत्यवर्गो राज्यभूमिःसुतादयः ॥ अज्ञानजत्वात्सर्वेतेक्षणसंगमभंगु राः २५ अथोत्तिष्ठहृदारामंभावयन्भक्तिभावितम् ॥ अनुवर्तस्वराज्यादिभुंज न्प्रारब्धमन्वहम् २६ भूतंभविष्यदभजन्वर्तमानमथाचरन् ॥ विहरस्वयथान्या यंभवदोषैर्नलिप्यसे २७ आज्ञापयतिरामस्त्वांयद्भ्रातुःसांपरायिकम् ॥ तत्कुरु ष्वयथाशास्त्रंरुदंतीश्चापियोषितः २८ निवारयमहाबुद्धेलंकांगच्छंतुमाचिरम् ॥ श्रुत्वाथथावद्वचनंलक्ष्मणस्यविभीषणः २९ ॥

(राज्यंभूमिःकोशःबलंभृत्यवर्गःसुतादयःएतेसर्वेअज्ञानजत्वात्क्षणसंगमभंगुराः) राज्य भूमि खजाना सेना सेवक वर्ग पुत्रादिक ऐ सब अज्ञानसे उत्पन्न हैं ताते इनसबको क्षणमात्रको मिलन पुनः नाश ह्वै जातेहैं २५ (भक्तिभावितम्रामंहृदाभावयन्अथ उत्तिष्ठ प्रारब्धंअनुअहम्राज्यादि भुंजन्अनुवर्तस्व) भक्तिकरिकै स्मरण करणे योग्य जो श्रीराम तिनहिं हृदय में ध्यान करते हुये हे विभीषण अब यहांते उठौ अरु प्रारब्धकेपीछे हमहैं भाव प्रारब्ध कर्म बिना भोगे छुट्टी नहीं मिल- तीहै ताको भोगना चाहिये ऐसा विचारि राज्यादि प्रारब्ध भोगत संते राजकाजकरौ प्रजापालो२६ (भूतंभविष्यत्अभजन्अथवर्तमानंआचरन्यथान्यायंविहरस्वभवदोषैःनलिप्यसे) पूर्व जो कुछहानि लाभह्वैगई तथा आगे जोकुछ होनहारहै इतिभूत भविष्य अभजन् अर्थात् जोहानिह्वैचुकी अथवा होनहार तामें विषाद न करौ तथा ह्वैचुकी लाभ अथवा होनहार ताकी हर्ष न करौ अब बर्तमान में जो कछु दुःख सुख जो प्राप्तहोय ताको भोगते संते नीति धर्म विवेक युक्त वेदआज्ञा अनुकूल लोकमें विहारकरौ तौ संसार के दोषों करिकै न लिप्तहोउगे भाव कर्म बंधन तुमको न होइंगे २७ (रामःत्वांआज्ञापयतिभ्रातुःयत्सांपरायिकम्यथाशास्त्रंतत्कुरुष्वचयोषितःअपिरुदंतीः) हे विभीषण रघुनाथजी तुमको आज्ञादेतेहैं कि तुम्हारे भाई रावणकी जो पारलौकिक क्रियाहै ताहि धर्म शास्त्रकी रीति विधिवत् सबकार्यकरौ पुनः स्त्रीभी रोदन करतीहैं तिनहिं २८ (महाबुद्धेनिवारयमाचिरंलंकां गच्छंतुलक्ष्मणस्ययथावत्वचनंश्रुत्वाविभीषणः) हे महाबुद्धियुक्त स्त्रीनिको शोक निवारणकरौ जामें शीघ्रही लंकाको जांय इति लक्ष्मण के समय उचित वचन सुनिकै विभीषण २९ ॥

त्यक्त्वाशोकंचमोहंचरामपार्श्वमुपागमत् ॥ विमृश्यबुद्ध्याधर्मज्ञोधर्मार्थसहितोव चः ३० रामस्यैवानुवृत्त्यर्थमुत्तरंपर्यभाषत ॥ नृशंसमनृतंक्रूरंत्यक्तधर्मव्रतंप्र भो ३१ नार्होस्मिदेवसंस्कर्तुंपरदाराभिमर्शिनम् ॥ श्रुत्वातद्वचनंप्रीतोरामोवचन मब्रवीत् ३२ मरणांतानिवैराणिनिर्वृत्तंनःप्रयोजनम् ॥ क्रियतामस्यसंस्कारोममा प्येषयथातव ३३ रामाज्ञांशिरसाधृत्वाशीघ्रमेवविभीषण ॥ सांत्ववाक्यैर्महाबु द्धिंराज्ञींमंदोदरींतदा ३४ सांत्वयामासधर्मात्माधर्मबुद्धिर्विभीषणः ॥ त्वरयामा सधर्मज्ञःसंस्कारार्थंस्वबांधवान् ३५ ॥

(शोकंचमोहंत्यक्त्वाचरामपार्श्वंउपागमत्धर्मज्ञःबुद्ध्याविमृश्यधर्मार्थसहितंवचः) शोक सामयि क दुःखपुनः मोह अज्ञानता इत्यादि त्यागकरि सावधानह्वै पुनः रघुनाथजीकेपास जायधर्मकोजानने वाले विभीषण बुद्धिकरिकै विचारि भाव रामविरोधी रावणकी क्रियाकरना मेरे योग्य नहीं है इति विचारि धर्मकी रीति अर्थ सहित वचन ३० (रामस्यअनुवृत्त्यर्थंएवउत्तरंपर्यभाषत्प्रभोत्यक्तधर्मव्रतं नृशंसंअनृतंक्रूरं) रघुनाथजीकी संमति अनुकूल उत्तर विभीषण बोलतेभये हे प्रभोत्यागकियाहै धर्म व्रतजिसने हिंसारत अनीति बोलनेवाला कठिन निर्दयी स्वभाव ३१ (देवपरदाराभिमर्शिनंसंस्कर्तुं नअर्हःअस्मितत्वचनंश्रुत्वारामःप्रीतःवचनंअब्रवीत्) हे देवपरस्त्रिनको सेवन करनेवाला ऐसापापी जो रावण ताको मृतक संस्कार करनेके योग्य नहीं मैहों सोबचन सुनिकै रघुनंदन प्रीतिपूर्वक वचन बोलते भये ३२ (मरणांतानिवैराणिनः प्रयोजनंनिर्वृत्तंममअपिएषयथातवअस्यसंस्कारःक्रियतां) हे विभीषण मरणपर्यंत देहते वैरहोताहै सोतौ लोकहित रावणके मरतेही मेराप्रयोजन पूर्णभया अब तौ मोकोभी यहरावण वैसेही प्रियहै जैसे तुम भावपूर्वकोपार्षद पुनः आपने पदको प्राप्तभया ताते याकोमृतक संस्कार कीजिये ३३ (रामाज्ञांशिरसाधृत्वातदाविभीषणःशीघ्रंएवसांत्ववाक्यैःमहाबुद्धिं राज्ञींमंदोदरीं सांत्वयामास) रघुनंदनकी आज्ञा शीशधरि तासमय विभीषण शीघ्रहि जाय शांत वचनों करिकै बडी बुद्धिवंतरानी मंदोदरीको सावधान कराये ३४ (धर्मात्मा धर्मं बुद्धिःधर्मज्ञःविभी- षणः स्वबांधवान्संस्कारार्थंत्वरयामास) धर्मात्मा धर्ममें है बुद्धिजाकी धर्म जाननेवाला विभीषण अपने भाइनको दाह क्रियादि संस्कार करनेको उद्यतभया ३५ ॥

चित्यांनिवेश्यविधिवत्पितृमेधविधानतः ॥ आहिताग्नेर्यथाकार्यंरावणस्यविभीष णः ३६ तथैवसर्वमकरोद्बंधुभिःसहमंत्रिभिः ॥ ददौचपावकंतस्यविधियुक्तंविभी षणः ३७ स्नात्वाचैवार्द्रवस्त्रेणतिलान्दर्भविमिश्रितान् ॥ उदकेनचसंमिश्रान्प्र दायविधिपूर्वकम् ३८ प्रदायचोदकंतस्मैमूर्ध्नाचैनंप्रणम्यच ॥ ताःस्त्रियोनुनया माससांत्वमुक्त्वापुनःपुनः ३९ गम्यतामितिताःसर्वाविविशुर्नगरंतदा ॥ प्रविष्टा सुचसर्वासुराक्षसीषुविभीषणः ४० रामपार्श्वमुपागत्यतदातिष्ठद्विनीतवत् ४१ रामोपिसहसैन्येनसुग्रीवःसहलक्ष्मणः ॥ हर्षंलेभेरिपून्हत्वायथावृत्रंशतक्रतुः ४२

(पितृमेधविधानतःविधिवत् चित्यांनिवेश्यरावणस्ययथाआहिताग्नेःकार्यं तथाएवविभीषणःसर्वं अकरोत्) पितृमेध में जैसा विधान लिखाहै ताही विधान ते विधिपूर्वक चितापर स्थापित करि रावणको जैसे अग्निहोत्र करनेवालेनको मृतक कर्म होताहै तैसेही विभीषण सब करते भये ३६

(मंत्रिभिःबंधुभिःसह विभीषणःविधियुक्तंवतस्यपावकंददौ) मंत्रिन सहित बंधुवर्ग सहित विभीषण विधिसंयुक्तपुनःतिस रावणको अग्नि दाहदेतेभये ३७ (स्नात्वाचएवआर्द्रवस्त्रेणतिलान्दर्भौवामिश्रितानचउदकेनसंमिश्रान् विधिपूर्वकंप्रदाय) दाह करिस्नानकीन्हें पुनः भीजेवस्त्रन सहित तिलकुश मिले पुनःजल मिलेसहित विधिपूर्बक मंत्रपढि पढिरावणके अर्थ जलांजलिसाजि३८(चतस्मैउदकं प्रदायचएनंमूर्द्धनाप्रणम्यचपुनःपुनःसांत्वंउक्त्वास्त्रियःताःअनुनयामास)पुनःतिसरावणकेअर्थतिलांजलिदैकैताको शिशनवाय प्रणामकरि पुनः बारम्बार शांतिकेवचनकहिकै मन्दोदरीआदि जोस्त्री तिनको समुझावतेभये३९ (गम्यतांइतिताःसर्वानगरंविविशुः सर्वासुराक्षसीषुप्रविष्टासुतदाविभीषणः) घर कोजावो ऐसा वचन विभीषण स्त्रियोंसेकहे इति विभीषणकीआज्ञाते वै सब नगरमें प्रवेश करतीभई सब राक्षसिनके नगरमें पहुँचिजातसंते तब बिभीषणलौटे ४० (रामपार्श्वेउपागत्यतदाविनीतवत् अतिष्ठत्) रघुनाथजीके पासजायकै विभीषण तासमय नम्रतापूर्वक अर्थात् बारम्बार प्रभुको प्रणामकरि समीप बैठतेभये ४१ (वृत्रंशतक्रतुःयथारामःअपिरिपून्हत्वासहसैन्येनसुग्रीवःसहलक्ष्मणः हर्षलेभे) बडेबली वृत्रासुरकोमारि इन्द्र जैसे आनंदपाये तैसेही रघुनंदनभी रावणादि शत्रुनको मारिकै सहितबानरी सेना सुग्रीव सहित लक्ष्मण प्रभु परमआनंदकोप्राप्तहोतेभये ४२ ॥

मातलिश्चतदारामपरिक्रम्याभिवंद्यच ॥ अनुज्ञातश्चरामेणययौस्वर्गंविहायसा ४३ ततोहृष्टमनारामोलक्ष्मणंचेदमब्रवीत् ॥ विभीषणायमेलंकाराज्यंदत्तंपुरैवहि ४४ इदानीमपिगत्वात्वंलंकामध्येविभीषणम् ॥ अभिषेचयविप्रैश्चमंत्रवद्विधिपूर्वकं ४५ इत्युक्तोलक्ष्मणस्तूर्णंजगामसहवानरैः ॥ लंकांसुवर्णकलशैःसमुद्रजलसंयुतैः ४६ अभिषेकंशुभंचक्रेराक्षसेंद्रस्यधीमतः ॥ ततःपौरजनैःसार्द्धं नानोपायनपाणिभिः ४७ विभीषणःससौमित्रिरुपायनपुरस्कृतः ॥ दंडप्रणाममकरोद्रामस्याक्लिष्टकर्मणः ४८ ॥

(चतदामातलिः रामंपरिक्रम्य च अभिवंद्य च रामेणअनुज्ञातः विहायसा स्वर्गं ययौ) पुनः ताही समय में इंद्र को सारथी मातालि रघुनंदन को परिक्रमा करि पुनः प्रणाम करि पुनः रघुनंदन से आज्ञा लैकै आकाशमार्ग करिकै स्वर्ग को जाता भया ४३ (ततःरामःहृष्टमाना लक्ष्मणंइदंअब्रवीत् लंकाराज्यंविभीषणाय मेपुरा एवहिदत्तं) तदनंतर रघुनंदन आनंदमन सहित लक्ष्मणप्रति ऐसा बोलतेभये कि हे लक्ष्मण लंकाकीराज्य विभीषणके अर्थमैं पूर्वही निश्चयकरिदैचुकाहौं परंतु राजसिंहासन पर अभिषेक होना चाहिये तिस हेत ४४ (त्वंइदानींअपिगत्वा विप्रैःचमंत्रवत् विधिपूर्वकंलंकामध्ये विभीषणंअभिषेचय) हे लक्ष्मण तुम इसी समय निश्चय करिकै जावो वेदविद ब्राह्मणों करिकै पुनः मंत्र उच्चारण विधि पूर्वक लंकाके मध्यमें भद्रासन पर विभीषण को राज्याभिषेक करौ ४५ (इतिउक्तःसहवानरैःलक्ष्मणःतूर्णंलंकांजगामसमुद्रजलसंयुतैःसुवर्णकलशैः) ऐसारघुनंदनकहे तब सहित बानरन लक्ष्मण शीघ्रही लंकाको जाते भये वहां समुद्रनको जल सहित सोने के कलशौं करिकै ४६ (धीमतःराक्षसेंद्रस्यशुभंअभिषेकंचक्रे ततःनानाउपायनपाणिभिःपौरजनैःसार्द्धं) बुद्धिमान राक्षसों के राजा विभीषणको मंगलिक राज्याभिषेक करते भये तदनंतर अनेकभांति के भेट सामग्री हाथनमेंहै जिनके ऐसे पुरजन करिकै सहित ४७ (उपायनपुरस्कृतःससौमित्रिः विभीषण अक्लिष्टकर्मणःरामस्यदंडप्रणामंअकरोत्) अपने भेटकी सामग्री आगेकरि सहित लक्ष्मण विभीषण

आयके पुनः नहीं है क्लेशकर्मन में जिनके ऐसे रघुनाथजीको विभीषण दंडप्रणामकरते भये ४८ ॥

रामोविभीषणंदृष्ट्वाप्राप्तराज्यंमुदान्वितः ॥ कृतकृत्यमिवात्मानममन्यत्तसहानुजः ४९ सुग्रीवंचसमालिंग्यरामोवाक्यमथाब्रवीत् ॥ सहायेनत्वयावीरजितोमेरावणोमहान् ॥ विभीषणोपिलंकायामभिषिक्तोमयानघ ५० ततःप्राहहनूमंतंपार्श्वस्थंविनयान्वितम् ॥ विभीषणस्यानुमतेगच्छत्वंरावणालयम् ५१ जानक्यैसर्वमाख्याहिरावणस्यवधादिकम् ॥ जानक्याःप्रतिवाक्यंमेशीघ्रमेवनिवेदय ५२ एवमाज्ञापितोधीमान्रामेणपवनात्मजः॥प्रविवेशपुरींलंकांपूज्यमानोनिशाचरैः ५३ प्रविश्यरावणगृहंशिंशपामूलमाश्रिताम्॥ददर्शजानकींतत्रकृशांदीनामनिंदिताम् ५४॥

(प्राप्तराज्यंविभीषणंदृष्ट्वासहानुजःरामःमुदान्वितःकृतकृत्यंइवआत्मानंअमन्यत्)प्राप्तभयाहैराज्यपद जिनको ऐसे विभीषण को देखिकै सहित लक्ष्मण रघुनंदन आनंदयुत भाव प्रतिज्ञा पूर्ण भयेते कृतकृत्यसम अपना को मानते भये ४९ (चसुग्रीवंसमालिंग्यअथरामःवाक्यंअब्रवीत् वीरत्वयासहायेनमेमहान्रावण जितःअनघलंकायांमयाविभीषणःअपिअभिषिक्तः) पुनः सुग्रीवको हृदय में लगाय कै तिनप्रति अब रघुनंदन वचन बोलतेभये हे वीर सुग्रीव तुम्हारी सहायता करिकै हम महानबली वीर रावण को जीता पुन. हे अनघलंका की राज्य विषे मैंने विभीषण कोभी अभिषेक किया ५० (ततःविनयान्वितम्पार्श्वस्थंहनूमंतंप्राहविभीषणस्यअनुमतेत्वंरावणालयम्गच्छ) तद-नतर नम्रतापूर्वक समीप बैठेहुये जो हनूमान् तिनप्रति रघुनंदन कहे कि हे हनूमान् विभीषणकी सलाहलैके तुम रावण के मंदिर को जावो ५१ (रावणस्यवधादिकम्सर्वंजानक्यैआख्याहिजानक्याःप्रतिवाक्यशीघ्रंएवमेनिवेदय) उहां जायकै रावण को मरणादि सबहाल जानकी के अर्थ कहिसुनावौ सो सुनि जानकी जो कहैं तिनके सबवचन शीघ्रही आयहम सो कहौ ५२ (एवंरामेणआज्ञापितःधीमान्पवनात्मजःनिशाचरैःपूज्यमानःपुरींलंकांप्रविवेश) इसप्रकार रघुनंदन करिकै आज्ञा किये गये बुद्धिमान् पवनपुत्र हनूमान् सो राक्षसों करि पूज्यमान ह्वै लंकापुरी में प्रवेश करते भये ५३ (रावणगृहंप्रविश्यतत्रशिंशपामूलंआश्रिताम्कृशादीनांअनिंदितांजानकींददर्श) लंकामें जायहनूमान् रावण के मंदिरमें प्रवेश करितहां शीशमवृक्षकी मूल के समीप बैठी हुई दुर्बल ह्वै रहाहै शरीरजिनको मनसो दुखित दोषरहित ऐसी जानकी को देखते भये ५४ ॥

राक्षसीभिःपरिवृतां ध्यायंतींराममेवहि ॥ विनयावनतोभूत्वाप्रणम्यपवनात्मजः ५५ कृतांजलिपुटोभूत्वाप्रह्वोभक्त्याग्रतःस्थितः ॥ तंदृष्ट्वाजानकीतूष्णींस्थित्वापूर्वस्मृतिंययौ ५६ ज्ञात्वातंरामदूतंसाहर्षात्सौम्यमुखीभवत् ॥ सतांसौम्यमुखींदृष्ट्वातस्याःपवननंदनः ॥ रामस्यभाषितंसर्वमाख्यातुमुपचक्रमे ५७ देविरामः ससुग्रीवोविभीषणसहायवान् ॥ कुशलीवानराणांचसैन्यैश्चसहलक्ष्मणः ५८ रावणंससुतंहत्वासबलंसहमंत्रिभिः ॥ त्वामाहकुशलंरामो राज्येकृत्वाविभीषणम् ५९ श्रुत्वाभर्तुःप्रियंवाक्यंहर्षगद्गदयागिरा ॥ किंतेप्रियंकरोम्यद्यनपश्यामिजगत्त्रये ६० ॥

(राक्षसीभिःपरिवृतांराममेवहिध्यायंतींविनयावनतःभूत्वापवनात्मजःप्रणम्य) राक्षसिन करिकै

परिवेष्टित केवल रघुनंदन को ध्यान करती हैं तिनसीता को देखिकै नम्रह्वैकै हनूमान् प्रणामकीन्हे ५५ (प्रह्वोभक्तधाकृतांजलिपुटोभूत्वाअग्रतःस्थितःतूष्णींस्थित्वाजानकींतंदृष्ट्वापूर्वस्मृतिंययौ) नमि-तभक्ति करिकै हाथ जोरे हनूमान् आगेखड़े रहे अरुमौन बैठी हुई जानकी सो हनूमान् खड़े हुये तिनहिं देखिकै पूर्वकी सुधि आवती भई भावइसको मैं कभी देखा है ५६ (तंरामदूतंज्ञात्वासाह-र्षात्सौम्यमुखीअभवत्तां सौम्यमुखींदृष्ट्वासपवननंदनःरामस्यभाषितंसर्वंतस्याःआख्यातुंउपचक्रमे) कछु बीच विचार करि तिन हनुमान् को रामदूत जानिकै सो सीता अंतर आनंद होने ते प्रसन्न मुख होती भई तिनको प्रसन्नमुख देखिकैसो पवननंदन यावत् रघुनाथजीके कहे वचन सबजानकी जीसे कहने लगे ५७ (देविससुग्रीवःसहायवान्विभीषणःचवानराणांसैन्यैःचसहलक्ष्मणःरामःकुश-ली) हे देविसहित सुग्रीव सहायक बिभीषण पुनःवानरनकी सेनाकरिकै सहितपुनः सहित लक्ष्मण रघुनंदन कुशल पूर्व आनंदहै ५८ (सबलंसहमंत्रिभिःससुतंरावणंहत्वाविभीषणम्राज्येकृत्वारामःत्वां कुशलंआह) सहित राक्षसी सेना सहित मंत्रिनसहित पुत्रन रावण को मारिकै विभीषण कोलंका की राज्य बिषे स्थापित करि रघुनाथजी मोको पठै अबतुमसो कुशल पूंछतेहैं ५९ (भर्तुःप्रियंवाक्यं श्रुत्वाहर्षात्गद्गदयागिराअद्यतेकिंप्रियंकरोमि) हनूमान् द्वारापतिकेकहेहुये प्रियवचन तिनहिंसुनिकै हर्षतेअर्थात् प्रेमानंद उअँगातनमें रोमांच नेत्रनमें आँशुकंठारोध भयाताते अपुष्टाक्षरगद्गदवानी करिकै बोली जानकीजी हे हनूमान् या समयमें तेरा क्या प्रियकरौं भावतोको क्यादेंउक्योंकि ६०॥

समंतेप्रियवाक्यस्यरत्नान्याभरणानिच॥ एवमुक्तस्तुवैदेह्याप्रत्युवाचप्लवंगमः ६१ रत्नौघाद्विविधाद्वापिदेवराज्याद्विशिष्यते ॥ हतशत्रुंविजयिनंरामंपश्यामिसुस्थिरम् ६२ तस्यतद्वचनंश्रुत्वामैथिलीप्राहमारुतिम् ॥ सर्वेसौम्यागुणाःसौम्यत्वय्येवपरिनिष्ठिताः ६३ रामंद्रक्ष्यामिशीघ्रंमामाज्ञापयतुराघवः ॥ तथेतितांनमस्कृत्यययौद्रष्टुंरघूत्तमम् ६४ जानक्याभाषितंसर्वंरामस्याग्रेन्यवेदयत् ॥ यन्निमित्तोयमारंभःकर्मणांचफलोदयः ६५ ॥

(तेप्रियवाक्यस्यसमंरत्नानिचआभरणानिजगत्त्रयेनपश्यामिएवंवैदेह्याउक्तःतुप्लवंगमःप्रत्युवाच) हे हनूमान् तुम्हारेप्रिय वचन के तुल्य आनंद दान देने योग्य वस्तु यथा किसी भांति के रत्न पुनः भूषण इत्यादि तीनिहू लोकन में कछु नहीं देखतीहौं तौ क्या देंउ ताते तुमसो उरिण नहींहौं इस प्रकार जानकी जीने कहा तबपुनः हनूमान् बोले ६१ (हतशत्रुंविजयिनंसुस्थिरम् रामंपश्यामिवि विधात्रत्नौघात्वा अपिदेवराज्यात्विशिष्यते) हेमातः संग्राम में सबल शत्रुको मारि बिजयवंत सुस्थिरसदा एकरस सावधान ऐसे रघुनंदन को मैं देखताहौं सो आपकी कृपाते ईश्वर प्राप्ति रूप अपूर्वफल लाभ है सो अनेक भांति के समूह रत्नों ते विशेषि अथवा निश्चय करिदेवतों की राज्य ते विशेषिहै भाव यही कृपा बनी रहै और कछु न चाहिये ६२ (तस्यतत्वचनंश्रुत्वामैथिली मारुतिं प्राह हेसौम्य सर्वेसौम्या गुणाःत्वयिएवपरिनिष्ठिताः)तिनहनूमान्केकहे सो वचनसुनिकै जनकनंदिनी हनुमान प्रति बोलतीभई हेसुंदरशुद्धबुद्धिमंत ज्ञान विराग त्यागसमताशांति संतोषविवेक इत्यादि सब शुद्धअमल उत्तम गुण तुम्हारेही बिषे निश्चय करि देखि परते हैं ६३ (रामंद्रक्ष्यामिमांराघवःशीघ्रं आज्ञापयतुतथाइतितांनमस्कृत्यरघूत्तमंद्रष्टुंययौ) हे हनूमान् अब रघुनंदन के देखने को आतुरहौं ताते ऐसी उपाय करौ जामें मोको समीप आवने को रघुनंदन शीघ्रही आज्ञादेवैं सो सुनि बहुत

भली ऐसा कहि हनूमान् जानकीजी को नमस्कार करि रघुनंदन को देखने हेत जाते भये ६४ (जानक्याःभाषितंरामस्यअग्रेसर्वंन्यवेदयत्यन्निमित्तंअयंकर्मणांआरंभःचफलोदयः) जानकीके कहे हुये वचन रघुनाथ जीके आगे सबकहि सुनाये पुनः हनूमान् कहेकि हे प्रभु जिनके निमित्त यह युद्ध कर्म प्रारम्भ भया ते सब कर्म पूर्ण भये तिनको फलभी उदयभया है ताते ६५ ॥

तांदेवींशोकसंतप्तां द्रष्टुमर्हसिमैथिलीम् ॥ एवमुक्तोहनुमतारामो ज्ञानवतांवरः ६६ मायासीतांपरित्यक्तुंजानकीमनलेस्थिताम् ॥ आदातुंमनसाध्यात्वारामःप्राहविभीषणम् ६७ गच्छराजन्जनकजामानयाशुममांतिकम् ॥ स्नातांविरजवस्त्राढ्यांसर्वाभरणभूषिताम् ६८ विभीषणोऽपितच्छ्रुत्वाजगामसहमारुतिः ॥ राक्षसीभिःसुवृद्धाभिःस्नापयित्वातुमैथिलीम् ६९ सर्वाभरणसंपन्नामारोप्यशिविकोत्तमे ॥ याष्टिकैर्बहुभिर्गुप्तांकंचुकोष्णीषिभिःशुभाम् ७० तांद्रष्टुमागताःसर्वेवानराजनकात्मजाम् ॥ तान्वारयंतोबहवःसर्वतोवेत्रपाणयः ७१ ॥

(शोकसंतप्तांदेवींमैथिलीम्तांद्रष्टुंअर्हसिएवंहनूमताउक्तःज्ञानवतांवरःरामः) शोकाग्नि में संतप्त जो देवी जनकनंदिनी हैं तिनहिं अब आप देखबे योग्य हौ अर्थात् अपने समीप को बुलावौ इस प्रकार जब हनूमान् ने कहा तबज्ञानवंतनमें श्रेष्ठजो रघुनंदन ६६ (मायासीतांपरित्यक्तुंअनलेस्थितांजानकींआदातुंमनसाध्यात्वारामःविभीषणंप्राह) माया सीता जो लंकामें हैं तिनहिं परित्याग करि पुनःअग्नि में स्थित जो सत्यसीता हैं तिन्हैं ग्रहण करिबे को मनमें ध्यान राखिकै रघुनंदन विभीषण प्रतिबोलते भये ६७ (राजन्गच्छस्नातांविरजवस्त्राढ्यांसर्वाभरणभूषितांजनकजांममांतिकंआशुआनय) हेराजन् विभीषणतुमलंका को जाउ मज्जन कराय अमल नवीन वसन पहिराय सर्वाङ्ग भूषण भूषितकरि जनकनंदिनी को मेरे समीप शीघ्रही लवायलावौ (तत्श्रुत्वा विभीषणःअपिसहमारुतिःजगामतुराक्षसीभिःसुवृद्धाभि-मैथिलीम्स्नापयित्वा) सो रघुनाथ जीको वचन सुनिकै विभीषण भी सहित हनूमान् लंकाको जाते भये तहां राक्षसी जो वृद्धरहीं तिन्हैं विभीषण आज्ञा दिये तिन्होंने उबटन लगाय जानकी जीको स्नान करावतीभई पुनः६८।६९(सर्वाभरणसंपन्नांशिवकोत्तमेआरोप्यकंचुकउष्णीषिभिःशुभाम्याष्टिकैःबहुभिःगुप्तां) अमल नवीन दिव्य वसनपहिराय सर्वांगमें भूषण भूषित करिउत्तम शिवका में सवार कराय पुनः जिनके तनमें सुंदर जांमा शीशमें पाग ऐसेमंगलीकचोपदारादिबहुतों करिकै रक्षित ७० (जनकात्मजाम्तांद्रष्टुंसर्वे वानराःआगताः वेत्रपाणयः सर्वतः बहवः तान्वारयंतः) आवती हुई जनकनंदिनी तिनहिं देखने अर्थात् दर्शन करिबे हेत सब वानर आगे जाते भये अरुइहां चोपदार शिवका के सब ओर बहुत हैं ते वानरन को रोकते भये ७१ ॥

कोलाहलंप्रकुर्वन्तोरामपार्श्वमुपाययुः ॥ दृष्ट्वातांशिविकारूढांदूरादथरघूत्तमः ७२ विभीषणकिमर्थंतेवानरान्वारयंतिहि ॥ पश्यंतुवानराःसर्वेमैथिलींमातरंयथा ७३ पादचारेणसायातुजानकीममसन्निधिम् ॥ श्रुत्वातद्रामवचनंशिविकादवरुह्य सा७४पादचारेणशनकैरागतारामसन्निधिम् ॥ रामोपिदृष्ट्वातांमायासीतांकार्यार्थेनिर्मिताम् ७५ अवाच्यवादान्बहुशःप्राहतांरघुनंदनः ॥ अमृष्यमाणासासीता

वचनंराघवोदितम् ७६ लक्ष्मणंप्राहमेशीघ्रंप्रज्वालयहुताशनम् ॥ विश्वासार्थं हिरामस्यलोकानांप्रत्ययायच ७७ राघवस्यमतंज्ञात्वालक्ष्मणोपितदैवहि ॥ महा काष्ठचयंकृत्वाज्ज्वालयित्वाहुताशनम् ७८ ॥

(कोलाहलंप्रकुर्वंतःरामपार्श्वंउपाययुःशिविकारूढांतांदूरात्दृष्ट्वाअथरघूत्तमः) वानरोंको अरु चोपदारोंको वादाविवादते बडा गुलगपाड़ाकरतेहुये बहुत वानर रघुनाथजीके समीप जातेभये तब शिविकापरचढ़ीहुई जानकी ताहि दूरितेदेखिकै अब रघुनन्दन बोले ९२ (विभीषणतेकिंअर्थंवानरा न्वारयंतिहियथामातरंमैथिलीमृसर्वेवानराःपश्यंतु) हे विभीषण तुम्हारे चोपदारते किस हेत वानरनको मनाकरते हैं भाव न रोकैं जैसे कोऊ अपनी माताको देखता है तैसे जनकनंदिनीको सब वानरदेखैं ७३ (साजानकीपादचारेणममसंनिधिंआयातुतत् रामवचनंश्रुत्वासाशिविकात्अवरुह्य) अरु सो जानकी पायन पायनचलिकै मेरेसमीपको आवैं सो रघुनन्दनको वचनसुनिकै सो जानकी जी शिविकाते उतरिकै ७४ (पादचारेणशनकैःरामसन्निधिंआगताकार्यार्थेनिर्मितामायासतींतां दृष्ट्वारामःअपि)पायन पायन धीरा धीरा चलिकरिकै जानकी रघुनन्दनके समीपआवती भई अब प्रयोजन अर्थात् देवकार्यार्थबनाईहुई मायाकी सीता तिनहिंदेखि रघुनन्दन ७५ (तांरघुनन्दनःअ वाच्यवादान्बहुशः प्राहराघवोदितंवचनंअमृष्यमाणासासीता) तिन मायासीताको रघुनंदन जो कहवे योग्य नहीं ऐसे अपवाद वचन बहुतकहे रघुनंदनके कहेबचनन सहिसकी सो सीता ७६ (लक्ष्म णंप्राहहिरामस्यविश्वासार्थंचलोकानांप्रत्ययायमेशीघ्रंहुताशनंप्रज्वालय) लक्ष्मणप्रति जानकी बोलतीभई हे लक्ष्मण निश्चयकरि रघुनंदनके विश्वास हेत पुनः सब लोकौंके प्रतीति के अर्थ तुम मेरे हेत अग्निको प्रज्वलितकरौ ७७ (राघवस्यमतंज्ञात्वातदाएवहिलक्ष्मणःअपिमहाकाष्ठचयंकृत्वाहुता शनम्प्रज्वालयित्वा) रघुनंदनको भी यही सम्मत है ऐसा जानिकै लक्ष्मणभी वड़ाभारी काष्ठको ढेरकरि अग्निजरायदिये ७८ ॥

रामपार्श्वमुपागम्यतस्थौतूष्णींमरिंदमः ॥ ततःसीतापरिक्रम्यराघवंभक्तिसंयु ता ७९ पश्यतांसर्वलोकानांदेवराक्षसयोषिताम् ॥ प्रणम्यदेवताभ्यश्चब्राह्मणेभ्य श्चमैथिली ८० बद्धांजलिपुटाचेदमुवाचाग्निसमीपगा ॥ यथामेहृदयंनित्यंनाप सर्पतिराघवात् ८१ तथालोकस्यसाक्षीमांसर्वतःपातुपावकः ॥ एवमुक्त्वातदासी तापरिक्रम्यहुताशनम् ८२ विवेशज्वलनंदीप्तंन्निर्भयेनहृदासती ॥ ८३ दृष्ट्वाततो भूतगणाःससिद्धाःसीतांमहावह्निगतांभृशार्ताः॥ परस्परंप्राहुरहोससीतांरामःश्रि यंस्वांकथमत्यजज्ज्ञः ८४ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्धकांडेद्वादशःसर्गः १२ ॥

(अरिंदमःरामपार्श्वंउपागम्यतूष्णींतस्थौततः सीताभक्तिसंयुताराघवंपरिक्रम्य) शत्रुको नाशकरनेवाले लक्ष्मण रघुनाथजीके पासजायमौनह्वै बैठेतदनंतर सीताभक्तिसहित रघुनंदनको परिक्रमा करिकै ७९ (देवराक्षसयोषितांसर्वलोकानांपश्यतां देवताभ्यःचब्राह्मणेभ्यःप्रणम्यचमैथिली)देवतौंकी राक्षसौंकी स्त्री तथा सब लोकनके देखतेहुये देवतौंके अर्थपुनःब्राह्मणौंके अर्थप्रणामकरिपुनः जनक-

नंदिनी ८० (अग्निसमीपगाचबद्धांजलिपुटाचइदंउवाचतथामेहृदयंनित्यंराघवात्नापसर्पति) अग्नि के समीपजाय पुनः सीता हाथजोरि पुनः ऐसा वचनबोलतीभई जो मेरा मन नित्यही रघुनंदनते भिन्न और किसी में न जाताहोय ८१ (तथालोकस्यसाक्षीपावकःमांसर्वतःपातुएवंउक्त्वातदासीता हुताशनंपरिक्रम्य) तौ लोककोसाक्षी सत्यासत्यजाननेवाले यह अग्नि मोको सब भांतिते रक्षाकरैं ऐसा कहि तब सीता अग्निको परिक्रमाकरिकै ८२ (निर्भयेनहृदासतीदीप्तिंज्वलनंविवेश) निर्भय हृदयसे सतीसीता बरतीअग्निमें प्रवेशकरतीभई ८३ (महावह्निगतांसीतांदृष्ट्वाततःभृशार्ताःभूतगणाः ससिद्धाःपरस्परंप्राहुःअहोज्ञः रामःस्वांश्रियंसतीतांकथंअत्यजत्) महाप्रचण्डबरती हुई अग्नि मेंप्राप्त सीताको देखिकै ता समय अत्यन्त दुःख पीड़ित ह्वै सब प्राणिमात्र सहित सिद्धलोग आपुस में वार्ताकरते हैं कि वड़े आश्चर्यकी बात है कि सर्वज्ञ ह्वै कै राम अपनी नित्य लक्ष्मी सो सीताको कैसे त्यागकरते हैं ८४ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचिते अध्यात्मभूषणेयुद्धकाण्डेद्वादशः प्रकाशः १२ ॥

ततःशक्रःसहस्राक्षोयमश्चवरुणस्तथा ॥कुवेरश्चमहातेजाःपिनाकीवृषवाहनः १ ब्रह्माब्रह्मविदांश्रेष्ठोमुनिभिःसिद्धचारणैः ॥ पितरोऋषयःसाध्यागंधर्वाप्सरसोरगाः २ एतेचान्येविमानाग्र्यैराजग्मुर्यत्रराघवः॥ अब्रुवन्परमात्मानंरामंप्रांजलयश्चते ३ कर्तात्वंसर्वलोकानांसाक्षीविज्ञानविग्रहः ॥ वसूनामष्टमोसित्वंरुद्राणांशंकरोभवान् ४ आदिकर्तासिलोकानांब्रह्मात्वंचतुराननः ॥ अश्विनौघ्राणभूतौतेचक्षुषीचंद्रभास्करौ ५ लोकानामादिरंतोसिनित्यएकःसदोदितः ॥ सदाशुद्धःसदाबुद्धःसदामुक्तगुणोद्वयः ६ ॥

सवैया ॥ सवदेवविरंचिसुरेशमहेशविनैसियकानलप्राचुरको । पितुबंदिसवंधुअशीपलहेगतलोकन मोदसवैसुरको ॥ समुझायविभीपणवानरपूज्यगयेप्रभुरूपदियेउरको । सहसेवकदिव्यविमानचढ़ेसिय सानुजरामचलेपुरको ॥ (ततःसहस्राक्षःशक्रः चयमःतथावरुणः च कुबेरःवृषवाहनः महातेजाःपिनाकी)शिवजी बोले हेगिरिजा तदनंतर हजार हैं नेत्र जिनके ऐसेइंद्र पुनः यमराज तैसेही वरुण पुनः कुबेर वृषभहै वाहन जिनके ऐसे महातेजस्वी महेश १ (ब्रह्मविदांश्रेष्ठः मुनिभिः सिद्धचारणैः ब्रह्मा पितरःऋषयः साध्यागंधर्वाःअप्सराःउरगाः) ब्रह्म वेत्तन में श्रेष्ठ मुनि सिद्ध चारण इत्यादि सहित ब्रह्मा पितृ ऋषि साध्य गन्धर्व अप्सरानाग२(एतेचअन्येविमानाग्र्यैःआजग्मुः यत्रराघवःतेप्रांजलयःच परमात्मानंरामंअब्रुवन्) एते सब पुनः और भी देवगण विमानों पर सवार आवते भये जहां रघुनाथजीहैं ते सब देवता हाथजोरि पुनः परमात्मा जो श्रीरघुनाथ जी तिन प्रति बोलते भये ३ (सर्वलोकानांकर्तात्वं साक्षीविज्ञानविग्रहः वसूनांअष्टमःत्वंअसिरुद्राणांशंकरःभवान्) सब लोगनके कर्ता आप अंतर्यामी रूपते सव के साक्षी बाहेर भीतर की जानन हारे विज्ञानरूपहौ वसुन में आठवां विभावसु आपहीहौ गेरहरुद्रन में शंकर आपही हौ ४ (लोकानांआदिकर्ता चतुराननः ब्रह्मात्वं असिअश्विनौतेघ्राणभूतौचंद्रभास्करौ चक्षुषी) सब लोकन के आदिकर्ता चतुर्मुख ब्रह्मा आपही हौ अश्विनी कुमार आपकी नासिकाहैं चंद्रमा सूर्य दोऊ आपके नेत्र हैं ५ (लोकानांआदिःअंतःअसि

अद्वयः नित्यएकःसदाउदितः सदाशुद्धःसदावुद्धः सदामुक्तगुणः) लोकन के आदि उत्पत्ति कर्ता अंत संहार कर्ता मध्य पालन कर्ता आपही हौ अद्वैत नित्य एक सदा स्वयं प्रकाश मान रज तमादि विकार रहित सदा शुद्ध सदा बुद्ध अखंडज्ञानरूप सदा लोक बंधन ते मुक्त गुण युक्त है ६ ॥

त्वन्मायासंवृतानांत्वंभासिमानुषविग्रहः ॥ त्वन्नामस्मरतांरामसदाभासिचिदात्मकः ७ रावणेनहृतस्थानमस्माकंतेजसासह ॥ त्वयाद्यनिहतोदुष्ट पुनःप्राप्तंपदंस्वकं८एवंस्तुवत्सुदेवेषुब्रह्मासाक्षात्पितामह ॥ अब्रवीत्प्रणतोभूत्वारामंसत्यपथेस्थितम् ९ ब्रह्मोवाच ॥ वंदेदेवंविष्णुमशेषस्थितिहेतुंत्वामध्यात्मज्ञानिभिरंतर्हृदिभाव्यम् ॥ हेयाहेयद्वंद्वविहीनंपरमेकंसत्तामात्रंसर्वहृदिस्थंदशिरूपम् १० प्राणापानौ निश्चयबुद्ध्याहृदिरुध्वाछित्त्वासर्वंसंशयबंधंविषयौघान् ॥ पश्यंतीशंयंगतमोहा यतयस्तंवंदेरामंरत्नकिरीटंरविभासम् ११ ॥

(रामत्वन्मायासंवृतानां त्वंमानुषविग्रहः भासित्वन्नामस्मरतां सदाचिदात्मकःभासि) हे रघुनाथ जी आप की माया करि आच्छादित जे पुरुष हैं तिन को आप मानुष बिग्रह देखि परते हो अरु जे आप को नाम स्मरण करते हैं तिनभक्तन को सदा अखंड ज्ञानरूप देखि परते हौ ७ (तेजसासहअस्माकं स्थानंरावणेनहृतं अद्यदुष्टःत्वयानिहतः पुनःस्वकंपदंप्राप्तं) हे श्री रघुनाथ जी तेज अर्थात् बल प्रताप बीरतादि सहित हमारा बास स्थान रावणने हरिलिया महाबिपत्ति में परे रहे अब दुष्ट रावण आप करिकै मारागया हम लोग पुनः अपने पद को प्राप्तभये ८ (एवंदेवेषुस्तुवत्सु पितामहः साक्षात्ब्रह्माप्रणतोभूत्वा सत्पथेस्थितम् रामंअब्रवीत्) इस प्रकार देवतोंके स्तुति करत संते जगत् के पितामह हम साक्षात् ब्रह्मा नम्र होकै सन्मार्ग में स्थित जो रघुनाथ जी तिनप्रति बोलते भये ९ (अशेषस्थितिरहेतुंविष्णुंदेवंत्वांवंदे) ब्रह्मा बोले हे रघुबंशनाथ संपूर्ण लोकनके पालन में कारण भूत बिष्णु देव जो आप तिनहि मैं प्रणाम करता हौं कैसेहौ आप (आत्मज्ञानिभिः अंतर्हृदिभाव्यम्) आत्म तत्त्व को ज्ञान है जिनके ऐसे पुरुषों करिकै अंतर हृदय में ध्यान करिकै जाने गयो है पुनः कैसेहौ (हेयअहेयद्वंद्वविहीनं) हेयत्याग करिबे योग्य यथा असत्कर्म दुःख शत्रु आदि अहेय जो नहीं त्यागिबे योग्य यथा सत्कर्म सुख मित्रादि इति अहित हितजो द्वंद्व भाव त्यहि करिकै विशेषि हीनहौ भाव शत्रु मित्र रहितहौ पुनः कैसे हौ (परंएकंसत्तामात्रं सर्वहृदिस्थंदशिरूपम्) सबसे पर अद्वितीय सत्ता आत्मधारणामात्र सबके हृदय में स्थित ज्ञान रूपहौ १० (निश्चयबुद्ध्याप्राणअपानौहृदिरुध्वाविषयाः ओघान्संशयबंधंसर्वंछित्त्वागत मोहायतयःयंईशंपश्यंतितंरत्नकिरीटंरविभासंरामंवंदे)हठयोग करिकै हम परमात्मा रूपको जानि लेयगे इति निश्चय बुद्धि करिकै प्राण जो नासिका द्वारा निसरनेवाला पवनहै अरुअपान जो गुदाद्वारा निसरनेवालाहै पवन है तिनहिं हृदयमें रोंकिकै अर्थात् यमनियम प्रत्याहारादि साधन युक्त पद्मासनकरि एकसोंसा मूँदि दूसरे द्वारा जहां तक पवन खैंचाजाय सो प्रणव उच्चारण पूर्वक खैंचि जहांतक थाभा थभै तहांतक दोऊ श्वासा मूंदि थांभिराखै पुनः दूसरे श्वासा धीरा धीरा छाड़ै पुनः पूर्ववत्करणा इसभांतिउरअंतरमें पवन रोकनेते इन्द्री मनादि स्वाधीन थिरह्वै जातेहैं सो इंद्रिनको स्वाधीन करि शब्दस्पर्श रूपरस गंध मैथुनादि जो विषयी समूहहैं तिनहिं छित्त्वा छेदनकरि पुनःमनादिस्वाधीनकरि संसार सांचाहै वा झूठा इति संशय ईश्वररूप कैसाहै इति संशय इत्यादि सब संशय छेदनकरि भाव देह व्यवहार

मिथ्या त्यागि आत्मरूपते परमात्माकी प्राप्ती निश्चयकरि इति मोह जो अज्ञान सो जातरहा है जिन में ऐसे यतयः संन्यासी लोग धारना ध्यान समाधिकरि जिसअंतर्यामी ईश्वरको देखते हैं तिनहीं ईश्वर मूर्तिमान् श्याम सुंदर रत्न क्रीटादि भूषणयुक्त ऐसे जोराम रघुवंशनाथहैं तिनहिंहम वंदनाकरते हैं ११॥

मायातीतंमाधवमाद्यंजगदादिंमानातीतंमोहविनाशंमुनिवंद्यम्॥योगिध्येयंयोगविधानंपरिपूर्णंवंदेरामंरंजितलोकंरमणीयम् १२॥

(मायातीतं) मायातेपरे अर्थात् सूर्यवत् प्रकाशमान कारण मायाके गुणजीव बुद्धी अरु कार्य माया के गुणदेहाभिमान इत्यादि जामें स्पर्श नहीं करते हैं शुद्धपरमात्मरूप पुनः (माधवंआद्यंजगत्आदि) मालक्ष्मी ताके धवपति सबसों आदिजो पररूप जगत्के आदि कारण पुनः (मानातीतं) मानरहित अर्थात् सब देश सब काल में एक आपही परिपूर्णदूसराहै नहीं तबमान किस पदार्थकोहोय पुनः (मोहविनाशंमुनिवंद्यम्) अपने दासनको मोहांधकार नाशकरने वाले मुनिनकरिके वंदना करने योग्यपुनः (योगिध्येययोगविधानंपरिपूर्णं) योगिन करिके ध्यानकरिबे योग्य योग शास्त्रके प्रवर्तक सर्वत्र परिपूर्ण व्यापक पुनः (रंजितलोकंरमणीयंरामंवंदे) कृपादया शील सौलभ्य उदारता करुणा सौहार्दादि आपने दिव्यगुणों करिकै आनंद देनहारे लोकके अत्यंत रमणीय अर्थात् श्यामसुंदर मनोहर मूर्ति जो श्रीरघुवंशनाथ तिनहीं हम वंदना बारंबार प्रणाम करतेहैं १२॥

भावाभवप्रत्ययहीनंभवमुख्यैर्भोगाशक्तैरर्चितपादांबुजयुग्मम् ॥ नित्यंशुद्धंबुद्धमनंतंप्रणवाख्यंवंदेरामंवीरमशेषासुरदावम् १३त्वंमेनाथोनाथितकार्याखिलकारी मानातीतोमाधवरूपोखिलधारी॥भक्त्यागम्योभावितरूपोभवभयहारीयोगाभ्यासैर्भावितचेतःसहचरी १४ त्वामाद्यंतंलोकपतीनांपरमीशंलोकानांनोलौकिकमानैरधिगम्यम् ॥ भक्तिश्रद्धाभावसमेतैर्भजनीयंवंदेरामंसुंदरमिंदीवरनीलम १५

(भावअभावप्रत्ययहीनं) प्रीति विरोधकी आधनिता रहित समदर्शी (भवमुख्यैःभोगाशक्तैःअर्चित पादांबुजयुग्मम्) शिवहैं मुखिया जिनमें ऐसेविषै भोगोंको त्यागिदियाहै जिन्होंने ऐसे विरागमान योगियों करिकै पूजितहैं पदकमल दोऊजिनके (नित्यंशुद्धंबुद्धंअनंतंप्रणवाख्यं) नित्यसदा एकरस शुद्ध विज्ञान धाम जिनको अंतकोऊ नहीं जानत ॐकारनामहै जिनको (अशेषअसुरदावम्वीरंरामं वंदे) संपूर्ण असुर रूपवनके भस्म करता दावानल ऐसे वीररामको हमवंदना करते हैं १३ (त्वंमे नाथःनाथितकार्याखिलकारी) हे रघुनंदन आप मेरे स्वामीहौ रावणा दिवधहेत जो मैं पूर्व आपसों प्रार्थनाकीन्हें उसे संपूर्ण कार्य आपने पूराकिया (मानअतीतःमाधवरूपःअखिलधारी) कौन देश मेहौ कौन में नहीं किसकालमेंहौ किसमेंनहीं कौनरूपमेंहौ कौन में नहीं इत्यादि परिच्छेद रहित लक्ष्मीके पतिविष्णुरूप सबको धारण करणहारेहौ(भक्त्यागम्यःभावितरूपःभवभयहारी)नवधाप्रेमा परादि केवल भक्तिकरिकै प्राप्तहोतेहौ जोकोई ध्यानकरि तुम्हारा रूप हृदयमें राखताहै ताके भव बंधनहरि मुक्तकरतेहो (योगाभ्यासैर्भावितचेतः सहचरी) यमनियमआसन प्रत्याहार प्राणायाम धारना ध्यान समाधि इत्यादि योगाभ्यासोंकरके शुद्धकियागया है चित्त जिसमें तिनके संगविचरने वालेहौ १४ (त्वामाद्यंतंलोकपतीनांपरमीशं) आप जो आदिसृष्टिकर्ता अंत संहारकर्ता लोकन के

पति परमईशहौ (लोकान्तंलौकिकमानैःअधिगम्यमनः) लोकनके पालनहारे अरुलौकिकप्रमाणों करिकै प्राप्तनहींहोतेहौ अर्थात् वेदशास्त्रों करिकै जानेजातेहौ (भक्तिश्रद्धाभावसमेतैः भजनीयं) भक्ति श्रद्धा भावयुक्तपुरुषों के सेवन करिबे योग्य (इंदीवरनीलंसुंदररामंवंदे) नील कमल तुल्यश्याम सुंदरतन ऐसे जो राम तिनहिं हमवंदना करते हैं १५ ॥

कोवाज्ञातुंत्वामतिमानंगतमानंमानासक्तोमाधवसक्तोमुनिमान्यम् ॥ वृंदारण्येवंदितवृंदारकवृंदंवंदेरामंभवमुखवंद्यंसुखकंदम् १६ नानाशास्त्रैर्वेदकदंबैःप्रतिपाद्यंनित्यानंदंनिर्विषयज्ञानमनादिम् ॥ मत्सेवार्थेमानुषभावंप्रतिपन्नंवंदेराममर्कतवर्णंमथुरेशं १७ श्रद्धायुक्तोयःपठतीमंस्तवमाद्यंब्राह्मंब्रह्मज्ञानविधानंभुविमर्त्यः ॥ रामंश्यामंकामितकामप्रदमीशंध्यात्वाध्यातापातकजालैर्विगतःस्यात् १८ श्रुत्वास्तुतिंलोकगुरोर्विभावसुःस्वांकेसमादायविदेहपुत्रिकाम् ॥ विभ्राजमानांविमलारुणद्युतिंरक्तांवरांदिव्यविभूषणान्विताम् १९ ॥

(अतिमानंगतमानंमाधवत्वांमानासक्तःकोवाज्ञातुंसक्तःमुनिमान्यम्वृंदारण्येवृंदारकवृंदंवंदितभवमुखवंद्यंसुखकंदंरामंवंदे) सबमें व्यापक जाकी गति कोई जानि नहीं सकत हे लक्ष्मीनाथ ऐसेआपको विषयासक्त पुरुषको जानवेको समर्थ है मुनिन करिकै बंदित वृंदावन में कृष्णअवतार में देवता समूह वंदना करेहैं भाव विनाजाने बालक बछवा हरिजाने पीछेमें वंदना कीन्हेउ तथा व्रजपर अति वृष्टिकरि पीछे इन्द्रवन्दना कीन्हे नंदको ग्रहण करि पीछे वरुण इत्यादि शिवादिकनकेवंदना करिबे योग्य सुखरूपी जल वर्षिबेको मेघजो राम तिनहिं हम वंदना करते हैं १६ (नानाशास्त्रैर्वेदकदंबैःप्रतिपाद्यम्) मीमांसा वैशेषिक न्याय सांख्य योग वेदांतादि अनेक शास्त्रों करिकै तथाऋक्यजुःसामअथर्वणादि वेद समूहों करिकै वर्णन करिबे योग्य (नित्यानंदंनिर्विषयज्ञानंअनादिं) नित्यआनंद मूर्ति विषय रहित अखंड ज्ञान जिनकी आदि कोऊ नहीं जानत (मत्सेवार्थंमानुषभावंप्रतिपन्नं) मेरी प्रार्थना ते इतिमेरी सेवाके अर्थ मानुष भावको प्राप्तभये (मर्कतवर्णमथुरेशंरामंवंदे) मर्कत मणितम श्यामवर्ण मथुराके ईश जो राम तिनहिं प्रणाम करताहौं १७ (कामितकामप्रदंईशंश्यामंरामंध्यात्वाभुवियःध्यातामर्त्यः श्रद्धायुक्तःइमंब्रह्मज्ञानविधानं आद्यंब्राह्मंस्तवंपठतिपातकजालैःविगतःस्यात्) सकामी पुरुषनको मनोकामना देनेवाले ईश्वर श्यामस्वरूप रामको ध्यान करिकै पृथिवी विषे योध्यानकरणे वाला मनुष्यश्रद्धा सहित इस ब्रह्मज्ञानके करनेवाले आद्यब्रह्माको किया हुवास्तोत्रको पढ़ताहै सो पातक जालोंसे छूटि जाताहै १८(लोकगुरोःस्तुतिंश्रुत्वाविभावसुःविमलअरुणद्युतिंविभ्राजमानांरक्तांवरांदिव्यविभूषणान्विताम्विदेहपुत्रिकांस्वांकेसमादाय) ब्रह्माकी स्तुति सुनिकै ताही समय अग्नि प्रसिद्धभये अमल अरुण तन की कांति विराजमान अरुण वस्त्र दिव्यभूषण युत विदेह पुत्रीको अपने अकोरामें लैकै १९ ॥

प्रोवाचसाक्षीजगतांरघूत्तमंप्रपन्नसर्वार्तिहरंहुताशनः॥गृहाणदेवींरघुनाथजानकींपुरात्वयामय्यवरोपितांवने २० विधायमायाजनकात्मजांहरेदशाननप्राणविनाशनायच ॥ हतोदशास्यःसहपुत्रबांधवैर्निराकृतोनेनभरोभुवःप्रभो २१ तिरोहितासाप्रतिबिम्बरूपिणीकृतायदर्थंकृतकृत्यतांगता ॥ ततोपिहृष्टांपरिगृह्यजानकीं

रामः प्रहृष्टः प्रतिपूज्यपावकम् २२ स्वांकेसमावेश्यसदानपायनींश्रियंत्रिलोकीजन नींश्रियःपतिः ॥ दृष्ट्वाथरामंजनकात्मजायुतंश्रियस्फुरंतंसुरनायकोमुदा २३ भक्त्यागिरागद्गदयासमेत्यकृतांजलिःस्तोतुमथोपचक्रमे ॥

(प्रपन्नसर्वार्तिहरंरघूत्तमंजगतांसाक्षीहुताशनःप्रोवाचरघुनाथत्वयापुरावनेमयिअवरोपितां जानकीं देवींगृहाण) शरणागतजनोंके सब प्रकार के दुःखोंके हरण हारे जोरघुनन्दन तिन प्रति जगत्साक्षी अग्नि बोलतेभये हे रघुनाथ आपने पूर्वहीं वनमें मेरे विषे जिनको अवरोपित कियारहै तिन जानकी देवीको ग्रहणकीजिये २० (हरेदशाननप्राणविनाशनायमायाजनकात्मजांविधायचसहपुत्रबांधवैःदशास्यःहतःप्रभोअनेनभुवःभरःनिराकृतः) हे हरेराघव रावण के प्राणनाश करने अर्थ आपनेमायाकी जानकी को रचिकै पुनः सहित पुत्रबांधवनरावणको मारि हे प्रभो इस रावण के वध करिके भूमिको भार दूरकर दिया २१. (यत्अर्थंप्रतिबिंबरूपिणी साकृताकृतकृत्यतां गतातिरोहितातत: प्रहृष्टःरामःपावकंप्रतिपूज्यअतिहृष्टां जानकींपरिगृह्य) जिसकार्यार्थ प्रतिबिंबरूपिणी सीता को रचीरहै तिस कार्य कोपूराकरि कृतार्थ ताको प्राप्तहै अंतर्द्धान होगईइति सुनितदनंतरआनंद सहित रघुनंदन अग्नि को पूजन करिके तब अत्यंत आनंद युत जो जानकी तिनहिं ग्रहण करि २२ (त्रिलोकी जननीं सदान पायिनींश्रियंश्रियःपतिःस्वअंके समावेश्यजनकात्मजायुतंश्रियास्फुरंतंरामं दृष्ट्वाअथसुरनायकःमुदा) तीनिहु लोकन की उत्पत्ति पालन करणहारी मातासदा समीप रहने वाली सीता रूप लक्ष्मीको लक्ष्मीनाथ रघुनाथजी वाम अंकोरामें बैठारे सो जानकी सहित शोभा करिकै प्रकाशमान रघुनंदन को देखि अब इंद्र आनंद सहित २३ (कृतांजलिःभक्त्यासमेत्यग द्गदयागिराअथस्तोतुंउपचक्रमे) हाथजोरि भक्ति समेत गद्गदवानी अर्थात् प्रेम उमागि कंठारोध हैगया ताते अपुष्टाक्षरवचनो करिकै अब स्तुतिकरनेलगे ॥

इंद्रउवाच ॥ भजेहंसदाराममिंदीवराभंभवारण्यदावानलाभाभिधानम् ॥ भवानीहृदाभावितानंदरूपंभवाभावहेतुंभवादिप्रपन्नम् २४ सुरानीकदुःखौघनाशैक हेतुंनराकारदेहंनिराकारमीड्यं ॥ परेशंपरानंदरूपंवरेण्यंहरिंराममीशंभजेभारनाशम् २५ प्रपन्नाखिलानंददोहंप्रपन्नंप्रपन्नार्तिनिःशेषनाशाभिधानम् ॥ तपोयोग योगीशभावाभिभाव्यंकपीशादिमित्रंभजेराममित्रम् २६ सदाभोगभाजांसुदूरेविभांतंसदायोगभाजामदूरेविभांतम् ॥ चिदानंदकंदंसदाराघवेशंविदेहात्मजानंदरूपंप्रपद्ये २७ ॥

(भवअरण्यदावाअनलआभअभिधानम्) इंद्रबोले कि संसार रूपीवनके जराय देनेहेत दावानलसमहै नाम जिनको (भवानीहृदाभावितआनंदरूपं) पार्वतीके हृदय करिकै ध्यान सो आनंद उत्पन्न किया है रूप जिनको (भवअभावहेतुंभवादिप्रपन्नम्) भवदुःख के नाशके हेतु शिवादिकों करिकै सेवित (इंदीवराभंरामंअहंसदाभजे) नील कमल समतन की कांति है जिनकी ऐसे रघुनाथजी को हमसदा भजन करते हैं २४ (सुरअनीकदुःखअघनाशैकहेतुं) देवतों की सेना को दुःख जो समूह ताके नाशकरिवे के एकहेतु हैं जो (निराकारंईड्यंनिराकारदेहं) वास्तव में आकार रहित सबके वदनाकरिवे योग्य सोई कृपाकरि लोकोद्धार हेत नराकार देह है जिनकी (परेशंपरा

नंदरूपंवरेण्यभारनाशंहरिंरामंईशंभजे) सवरूपों ते परईश परम आनंद रूपश्रेष्ठ भूभारनाशकहरि राम ईश्वर को भजन करता हौं २५ (प्रपन्नअखिलआनंदोहं) शरणागत पुरुषनको संपूर्ण आनंद के देने वाले (प्रपन्नंप्रपन्नआर्तिनिःशेषनाशाभिधानं) भक्त शरणागतनके दुःख संपूर्ण नाश करत हारा जिन को नाम है (तपःयोगयोगीशभावाभिभाव्यं कपीशादिमित्रंरामंमित्रंभजे) जलशयन पंचाग्नि आदि तपयमनिय मासन प्रत्याहार प्राणायाम धारणा ध्यान समाधि इत्यष्टांग योगादि करने वाले योगेश्वर प्रीति भाव से अंतर में ध्यानकरि प्राप्त होने योग्य सोईप्रभु कृपाकरि लोको द्धार हेत माधुर्य रूपते बानर राज के मित्र भये ऐसे राम सूर्यवत् प्रतापवंत को हम भजते हैं २६ (भोगभाजांसदासुदूरेविभांतंयोगभाजांसदाअदूरेविभांतं चिदानदकंदंविदेहात्मजानंदरूपंराघवेशंसदा प्रपद्ये) स्त्री भोजनादि बिषय भोगन को जे सेवन करते हैं तिनकोसदा अत्यंत दूर देखाते हैं अरु योग के सेवने वाले जेहैं तिनहिं सदा निकट देखाते हैं चैतन्यता आनंदके मूल जानकी जीके सदा आनंद रूप आनंद देनहारे रघुवंश नाथ की शरण को हम सदा प्राप्तहैं २७ ॥

महायोगमायाविशेषानुयुक्तोविभासीशलीलानराकारवृत्तिः ॥ त्वदानंदलीलाक थापूर्णकर्णाःसदानंदरूपाभवंतीहलोके २८ अहंमानपानोभिमत्तप्रमत्तोनवेदा खिलेशाभिमानाभिमानः ॥ इदानींभवत्पादपद्मप्रसादात्त्रिलोकाधिपत्याभिमानो विनष्टः २९ स्फुरद्रत्नकेयूरहाराभिरामंधराभारभूतासुरानीकदावम् ॥ शरच्चंद्र वक्त्रंलसत्पद्मनेत्रंदुरापारपारंभजेराघवेशम् ३० सुराधीशनीलाभ्रनीलांगकां तिंविराधादिरक्षोवधाल्लोकशांतिं ॥ किरीटादिशोभंपुरारातिलाभंभजेरामचंद्रंरघू णापधीशम् ३१ ॥

(ईशमहायोगमायाविशेषानुयुक्तः लीलानराकारवृत्तिः विभासित्वत् आनंदलीलाकथापूर्णकर्णाः इहलोकेसदानंदरूपाभवंति) हेईश आपकी जो महा योग मायाहै ताके सत्वादि गुणों करिकै युक्त आप जैसे अरुण फूलों के समीप स्फटिक मणि अरुण देखातीहै तैसेही लीला करिकै माया युक्त आपमें मानुष कैसा स्वरूप तैसेही व्यापार देखाता है सोई रूपते आपकी जो आनंद मय लीला ताकी कथा श्रवण करिकै परिपूर्ण हैं कान जिनके ते पुरुष इसी मृत्युलोक में सदा आनंद रूप होते हैं २८ (अखिलेशाभिमानाभिनः मानपानाभिमत्तप्रमत्तः अहंनवेद) जैसे मंडलेश्वर राजोंके अभिमान होता है ताही तुल्य अभिमान त्रिलोकराज को अहंकार रूप मद पान करि मतवारा ताते महामत्त हौं मैं आपको नहीं जान्यों (इदानीं भवत्पादपद्मप्रसादात्) अबआपके पद कमलों के दर्शन प्रसादते (त्रिलोकाधिपत्याभिमानविनष्टः) तीनिहूं लोकन के राज पदको जो मेरे अभिमानरहै सोनाशभया २९ (शरच्चंद्रवक्त्रं लसत्पद्मनेत्रं स्फुरत्रत्नकेयूरहाराभिरामं धरा भारभूतःअसुरअनीकदावमदुःअपारपारंराघवेशंभजे) शरदऋतुके अमल पूर्ण चंद्रवत् मुख शोभित कमल सम नेत्र प्रकाश मान रत्नजटित बहूटा मणिनके हार तिन करिकै शोभायमान भूमिके भार होते भये समूह राक्षसबनवत् भस्म करिबेको दावानलदुःखों करि अपार है पार जिन को ऐसे रघुवंश नाथ को भजताहौं ३० (नीलअभ्रनीलअंगकांतिं किरीटादिशोभंविराधादिरक्षोवधात् लोक शांतिंपुरआराति लाभंरघूणांअधीशं सुराधीश रामचंद्रंभजे) सजल नीलमेघवत् श्याम अंगकी कांति जिनके सर्वांग में किरीटादि भूषणों करिकै शोभाहै विराधादि राक्षसोंको मारनेतेलोक उपद्रव शांति

करने वाले त्रिपुरासुर के शत्रु जो शिव तिनको महारत्नवत् लाभरूप ऐसे रघुवंशनाथ देवनमें महाराज रामचन्द्र को हम भजतेहैं ३१ ॥

लसच्चंद्रकोटिप्रकाशादिपीठेसमासीनमंकेसमाधायसीताम् ॥ स्फुरद्धेमवर्णांतडित्पुंजभासांभजेरामचंद्रंनिवृत्तार्तितंद्रम् ३२ ततःप्रोवाचभगवान्भवान्यासहितोभवः ॥ रामंकमलपत्राक्षंविमानस्थोनभस्थले ३३ आगमिष्याम्ययोध्यायांद्रष्टुंत्वांराज्यसत्कृतम् ॥ इदानींपश्यपितरमस्यदेहस्यराघव ३४ततोपश्यद्विमानस्थंरामोदशरथंपुरः ॥ ननामशिरसापादौमुदाभक्त्यासहानुजः ३५ आलिंग्यमूर्ध्न्यवघ्रायरामंदशरथोब्रवीत् ॥ तारितोस्मित्वयावत्ससंसाराद्दुःखसागरात् ३६ इत्युक्त्वापुनरालिंग्यययौरामेणपूजितः॥रामोपिदेवराजंतंदृष्ट्वाप्राहकृतांजलिम् ३७॥

(हेमवर्णांस्फुरत्तडित्पुंजभासांसीतां अंकेसमाधायलसत्चंद्रकोटिप्रकाशादिपीठेसमासीनं आर्तितंद्रांनिवृत्तरामचंद्रंभजे) सोने सम अंगवर्ण देदीप्यमानतामें बिजुली समूहकीसी प्रकाश है रही ऐसी सीताको वाम अकोरामें लीन्हे अरु शोभित हैं रत्न समूह तिनते चंद्रमा कोटिन सम प्रकाश है जामें ऐसे सिंहासन पर बैठेहुये दुःख आलस्य रहित प्रसन्न सदा स्वयंप्रकाशमान जो रामचन्द्र तिनहिं हम भजते हैं ३२ (ततःनभस्थलेविमानस्थःभवान्यासहितःभगवन्भवःकमलपत्राक्षंरामं प्रोवाच) ताही समय आकाश विषे विमानपर स्थित पार्वती सहित भगवान् शिव संमुख है कमलदलवत् नेत्र जो रघुनाथजी तिनप्रति बोलते भये ३३ (राघवअयोध्यायांराज्यसत्कृतम्त्वांद्रष्टुंआगमिष्यामिइदानींअस्यदेहस्यपितरम्पश्य) शिवबोले हे राघव अयोध्याजी में राज्याभिषेक समय आपके देखने हेत मैं आवौंगो अब या समय यह जो आपकी देहको पिता है दशरथ ताहिदेखिये ३४ (ततःपुरःविमानस्थंदशरथंअपश्यत्सहानुजःरामःमुदाभक्त्याशिरसापादौननाम) तदनन्तर आगे विमानपर स्थितदशरथको देखिकै सहित लक्ष्मण रघुनन्दन आनंदसहित भक्तिसेशीशनायकरिकै पितुपांयनको प्रणाम कीन्हे ३५ (रामंआलिंग्यमूर्ध्निअवघ्रायदशरथःअब्रवीत्वत्सदुःखसागरात्संसारात्त्वयातारितोस्मि) रघुनन्दन को हृदय में लगाय शिरसूंघि दशरथ बोलतेभये हेवत्स दुःखको समुद्रसंसारते तुमने मोको पार उतारा ३६ (इतिउक्त्वारामेणपूजितःपुनःआलिंग्ययथौरामःअपिदेवराजंदृष्ट्वातंकृतांजलिःप्राह) ऐसा कहि रघुनन्दन करिकै पूजित दशरथ पुनः रघुनन्दन को उरमें लगायजातेभये तब रघुनन्दन भी इंद्रकोदेखि तिनप्रति हाथ जोरि प्रभु बोलतेभये ३७ ॥

मत्कृतेनिहतान्संख्येवानरान्पतितान्भुवि ॥ जीवयाशुसुधावृष्ट्यासहस्राक्षममाज्ञया ३८ तथेत्यमृतवृष्ट्यातान्जीवयामासवानरान् ॥ येयेमृतामृधेपूर्वंतेतेसुप्तोत्थिताइव ॥ पूर्ववत्बलिनोहृष्टारामपार्श्वमुपाययुः ३९ नोत्थितारा क्षसास्तत्रपीयूषस्पर्शनादपि॥ विभीषणस्तुसाष्टांगंप्रणिपत्याब्रवीद्वचः४०देवमामनुगृह्णीष्वमयिभक्तिर्यदातव ॥ मंगलस्नानमद्यत्वंकुरुसीतासमन्वितः ४१ अलंकृत्यसहभ्रात्राश्वोगमिष्यामहेवयम् ॥ विभीषणवचःश्रुत्वाप्रत्युवाचरघूत्तमः ४२ ॥

(सहस्राक्षमत्कृतेसंख्येनिहतान्भुविपातितान्वानरान्ममाज्ञयासुधावृष्ट्याआशुजीवय) हे इन्द्र मेरेहेत संग्राम में राक्षसोंकरिकै मारेगये भूमिमें परेजो वानर तिनहिं मेरी आज्ञा करिकै अमृत वृष्टि

करिके शीघ्रही जियावो ३८ (तथाइतिअमृतवृष्ट्यावानरान्तान्जीवयामास) बहुत भली ऐसा कहि इंद्र अमृतकी वर्षा करिकै मरेहुये जे वानर तिनहिं जिआवते भये (पूर्वमृधेयेयेमृतातेते सुप्तइवउत्थितापूर्ववत्वलिनःहृष्टारामपार्श्वंउपाययुः) पूर्वसंग्राम बिषेयेये वानर मरेपरे रहैं तेते सब सोवतेके तुल्य जागि उठि उठि पूर्वकी नाईं बली आनंद सहित रघुनन्दन के पासको आवते भये ३६ (तत्रपियूषस्पर्शनात्अपिराक्षसाःनउत्थिता) तहां अमृत के स्पर्शभये तेभी मरे राक्षस नहीं जीउठे अर्थात् प्रभुके हाथमरे मुक्तह्वै जिस धामको गये तहांते लौटारि लानेको अमृतको शक्तिही नहीं है तौ उनजीवनको कैसे लाय जिलायसकै अथवा प्रभुकी प्रतिज्ञा राक्षसों के मारने की हैअरु वानरोंके जिलावनेकी है सो कैसे अमृत प्रतिकूल करिसकै ताते प्रभुकीआज्ञा अनुकूल वानरों को अमृतने जिलाया राक्षसों को नहीं जिलाया (तुविभीषणःसाष्टांगंप्रणिपत्यवचःअब्रवीत्) पुनःविभीषणसाष्टांगप्रणाम करि प्रभु प्रति वचन बोलते भये ४० (देवयदामयितवभक्तिमांअनुग्रहणीष्वसीतासमन्वितःत्वंअद्यमंगलस्नानंकुरु) विभीषण बोले हे देव रघुनन्दन जो मेरे ऊपर आपकी प्रीति है तौ मेरे ऊपर अनुग्रह कीजिये अपनाबनाइये इससे सीता सहित आप या समय में मंगल उबटनलगायस्नान कीजिये ४१ (सहभ्रात्राअलंकृत्यश्वःवयंगमिष्यामहेविभीषणवचः श्रुत्वारघूत्तमःप्रत्युवाच) सहित लक्ष्मण नवीन बसन भूषणधारण करि आज इहांरहौ काल्हिहम आप अयोध्या जीको चलैंगे इति विभीषणके वचन सुनिके रघुनाथजी बोलतेभये ४२ ॥

सुकुमारोतिभक्तोमे भरतोमामवेक्षते ॥ जटावल्कलधारीसशब्दब्रह्मसमाहितः ४३ कथंतेनविनास्नानंअलंकारादिकंमम ॥ अतःसुग्रीवमुख्यांस्त्वंपूजयाशु विशेषतः ४४ पूजितेषुकपींद्रेषुपूजितोऽहंनसंशयः ॥ इत्युक्तोराघवेणाशुस्वर्णरत्नांबराणिच ४५ ववर्षराक्षसश्रेष्ठोयथाकामंयथारुचि ॥ ततस्तान्पूजितान्दृष्ट्वा रामोरत्नैश्चयूथपान् ४६ अभिनंद्ययथान्यायंविससर्जहरीश्वरान् ॥ विभीषणसमानीतंपुष्पकंसूर्यवर्चसम् ४७ आरुरोहततोरामस्तद्विमानमनुत्तमम् ॥ अंके निधायवैदेहींलज्जमानांयशस्विनीम् ४८ ॥

(मेभक्तःअतिसुकुमारःभरतःमांअवेक्षतेसजटावल्कलधारीशब्दब्रह्मसमाहितः) हे विभीषणमेरा भक्त अत्यन्त सुकुमार भरतमेरेहीसमान सोऊ जटा बल्कल बसनधारण किहे शब्द ब्रह्म जो ॐकार ताके ध्यानमें तत्परहै ४३ (तेनविनाकथंममस्नानंअलंकारादिकंअतः सुग्रीवमुख्यांविशेषतःत्वं आशु पूजय) तिन भरत बिना कैसे मेरा स्नान भूषण धारणादि ह्वै सक्ता है भावमेरी राहदेखताहै जोअवधिपर न जाउँ तौ प्राणत्यागकरै इससे सुग्रीवादिबानरोंको विशेषि करिकै तुमशीघ्रही पूजनकरौ ४४ (कपींद्रेषुपूजितेषु अहंपूजितः संशयः नइतिराघवेणउक्तः आशुस्वर्णरत्नंचअंबराणिराक्षसश्रेष्ठः ववर्ष) बानरोंके पूजतसंते हमहीं पूजेगये यामें संशय नहीं है ऐसा रघुनन्दन ने कहा तब शीघ्रही सोना रत्न पुनः बसनादि विभीषण वर्षतेभये ४५ (यथाकामंयथारुचिः ततःरामः रत्नैःचपूजितान् यूथपान् तान्दृष्ट्वा) जैसी जाकी कामनारही जैसी जाकी रुचिरही तैसा सो लीन्हे तदनन्तर रघुनन्दन रत्नों करिकै पूजित जो यूथपती बानर तिनहिं देखिकै ४६ (यथान्यायंअभिनंद्यहरीश्वरान् विससर्ज सूर्यवर्चसम्पुष्पकंविभीषणसमानीतं) जिसको जैसो उचितरहै तैसा ताको प्रशंसा करिकै रघुनन्दन वानरेश्वरोंको बिदा कीन्हे ताही समय सूर्यवत् प्रकाशमान पुष्पक विमानको विभीषण लावते भये

(ततःलज्जमानांयशस्विनीम् वैदेहींअंकेनिधायरामःतत्अनुत्तमंविमानंआरुरोह) तदनन्तरलज्जावंतहै स्वभावजिसको उत्तम आचरणकरि यशउपजावने वाली जो विदेह पुत्री तिनहिं अकोरा में लैके रघुनन्दन उसी उत्तमपुष्पक विमान पर सवार होतेभये ४८ ॥

लक्ष्मणेनसहभ्रात्राविक्रांतेनधनुष्मता ॥ अब्रवीच्चविमानस्थःश्रीरामःसर्ववानरान्४६सुग्रीवंहरिराजंचअंगदंचविभीषणम् ॥ मित्रकार्यंकृतंसर्वंभवद्भिःसहवानरैः५० अनुज्ञातामयासर्वेयथेष्टंगंतुमर्हथ॥सुग्रीवप्रतियाह्याशुकिष्किंधांसर्वसैनिकैः५१ स्वराज्येवसलंकायांममभक्तोविभीषणः॥नत्वांधर्षयितुंशक्ताःसेंद्राअपिदिवौकसः ५२ अयोध्यांगंतुमिच्छामिराजधानींपितुर्मम॥एवमुक्तास्तुरामेणवानरास्तेमहाबलाः५३ ऊचुःप्रांजलयःसर्वेराक्षसश्चविभीषणः ॥ अयोध्यांगंतुमिच्छामस्त्वयासहरघूत्तम ५४ ॥

(विक्रांतेनधनुष्मताभ्रात्रालक्ष्मणेनसहविमानस्थः श्रीरामः चसर्ववानरान्अब्रवीत्) बीर धनुष धारी भ्राता लक्ष्मणकरिकै सहित विमान पर सवार रघुनन्दन पुनः वानरन प्रतिबोलते भये ४९ (हरिराजंसुग्रीवंचअंगदंचविभीषणम्सहवानरैःभवद्भिःमित्रकार्यंसर्वंकृतं) वानरोंके राजा सुग्रीव प्रति पुनः अंगदप्रतिपुन. विभीषण प्रति रघुनाथजी बोले कि वानरोंकी सेना सहित तुम लोगोंने मित्र कार्य अर्थात् मित्र जो हम ताको कार्य यावत्रहा सो सब पूर्ण किया ५० (मयाअनुज्ञाताःसर्वे यथा इष्टंगंतुंअर्हथसुग्रीवसर्वसैन्यकैःकिष्किंधांप्रतिआशुयाहि) मेरी आज्ञा करिकै सब जने जैसी इच्छाहोइ तैसी खुशी सहित घरनको जाने योग्यहौ तुम सुग्रीव सब सेनापतिन सहित किष्किंधाको शीघ्रही जावौ ५१ (विभीषणममभक्तःस्वराज्येलंकायांवससइंद्राःअपिदिवौकसाःत्वांधर्षयितुंनशक्ताः) हे विभीषण तुम मेरी भक्ति युक्तहोकै अपनी राज्यको भोगकरतेहुये लंकाविषे बासकरौ अत्र सहितइंद्रादि दिग्पालभी देवता तुमको तिरस्कार करनेको नहीं समर्थहोसक्ते हैं भाव अभयराज्यकरौ ५२ (ममपितुःराजधानींअयोध्यायांगंतुंइच्छामि एवंरामेणउक्ताः तुतेमहाबलाःवानराः) पुनः मैं अपने पिताकी राजधानी अयोध्याजीको जानेकी इच्छा करताहौं इस प्रकार रघुनन्दन करिकै कहे गये पुनः ते महाबली वानर सुग्रीव अंगदादि सब ५३ (सर्वेचराक्षसः विभीषणः प्रांजलयःऊचुःरघूत्तम त्वयासहअयोध्यांगंतुंइच्छामः) सब वानर पुनःराक्षस विभीषण इत्यादि सबहाथ जोरिकै बोलतेभये हे रघुवंशनाथ आप करिकै सहित हम लोग अयोध्याजी को चलनेकी इच्छा कि हे हन ५४ ॥

दृष्ट्वात्वामभिषिक्तंतुकौशल्यामभिवाद्यच ॥ पश्चाद्गृणीमहेराज्यमनुज्ञांदेहिनःप्रभो ५५ रामस्तथेतिसुग्रीववानरैःसविभीषणः ॥ पुष्पकंसहनूमांश्चशीघ्रमारोहसांप्रतम् ५६ ततस्तुपुष्पकंदिव्यंसुग्रीवःसहसेनया ॥ विभीषणश्चसामात्यःसर्वेचारुरुहुर्द्रुतम् ५७ तेष्वारूढेषुसर्वेषुकौवेरंपरमासनम् ॥ राघवेणाभ्यनुज्ञातमुत्पपातविहायसा ५८ बभौतेनविमानेनहंसयुक्तेनभास्वता ॥ प्रहृष्टश्चतदारामश्चतुर्मुखइवापरः ५९ ततोबभौभास्करबिम्बतुल्यंकुबेरयानंतपसानुलब्धम् ॥ रामेणशोभांनितरांप्रपेदेसीतासमेतेनसहानुजेन ६० ॥

इत्यध्यात्मरामायणेयुद्धकांडेत्रयोदशःसर्गः १३ ॥

(अभिषिक्तंत्वांदृष्ट्वातुकौशल्यांअभिवाद्यचपश्चात्राज्यंवृणीमहेप्रभोनःअनुज्ञांदेहि) राजसिंहासनासनिराज्याभिषेकयुक्त आपकोदेखि पुनः माता कौशल्याको प्रणामकरि ताकेपाछे राज्यकरिबेकी इच्छाकरते हैं ताते हे प्रभो हमलोगनको अयोध्याजीको चलनेकी आज्ञादीजिये ५५ (तथाइतिरामः सविभीषणःवानरैः सुग्रीवसहनूमांश्चशीघ्रंसांप्रतम्पुष्पकम्आरोह) जैसा कहतेहौ तैसाहीकरो भाव मेरे साथचलौ ऐसा रघुनाथजीकहे कि सहित विभीषण अंगदादि मुख्य वानरों सहित सुग्रीव सहित हनूमान् शीघ्रही सब भोर पुष्पकपरचढ़ौ ५६ (ततस्तुसहसेनयासुग्रीवःचसअमात्यःविभीषणःचसर्वे दिव्यंपुष्पकंद्रुतंआरुरुहुः) तदनन्तर सहित सेना सुग्रीव पुनः सहित मंत्रिन विभीषण पुनः जाम्बवंतादि और सब सेनापतीते सब दिव्य पुष्पकविमानकेऊपर शीघ्रही सवार होतेभये ५७ (तेषुसर्वेषुआरूढेषुकौवेरंपरमासनम्राघवेणअभिअनुज्ञातंविहायसाउत्पपात) तिन सबके सवारहोतसंते कुबेरको परमासन जो पुष्पकविमान सो रघुनंदनकी आज्ञाकरिकै आकाशमार्गकरिकै बड़ेबेगते चलता भया ५८ (हंसयुक्तेनभास्वताविमानेनतेनप्रहृष्टः चतदारामःअपरःचतुर्मुखइवबभौ) हंसोंकरिकैयुक्त जो प्रकाशमान पुष्पकविमान तिसकरिकै अयोध्याजी में शीघ्रपहुँचना विचारि परमआनंद पुनः ता समय में रघुनंदन हंसयुक्त विमानपर मानौ अपरब्रह्मा हैं ऐसे शोभितहोतेभये ५६ (तपसानुलब्धं कुवेरयानंनितरांशोभांप्रपेदेसहानुजेनसीतासमेतेनरामेणभास्करबिम्बतुल्यंबभौ) तपस्याकरिकै प्राप्त भया जो कुबेरको पुष्पकविमान सो नित्यहीं शोभाको प्राप्त अरु अब सहित लक्ष्मण सीता समेत रघुनंदनकरिकैयुक्त सो सूर्यके बिम्बतुल्य प्रकाशमानहोताभया ६० ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचिते
अध्यात्मभूषणेयुद्धकांडेत्रयोदशःप्रकाशः १३ ॥

पातयित्वाततश्चक्षुःसर्वतोरघुनंदनः ॥ अब्रवीन्मैथिलींसीतांरामःशशिनिभाननाम् १ त्रिकूटशिखराग्रस्थांपश्यलंकांमहाप्रभाम् ॥ एतांरणभुवंपश्यमांसकर्दमपंकिलाम् २ असुराणांप्लवंगानामत्रवैशसनंमहत् ॥ अत्रमेनिहतःशेतेरावणोराक्षसेश्वरः ३ कुम्भकर्णेन्द्रजिन्मुख्याःसर्वेचात्रनिपातिताः ॥ एषसेतुर्मयाबद्धःसागरेसलिलाशये ४ एतच्चदृश्यतेतीर्थंसागरस्यमहात्मनः ॥ सेतुबन्धमितिख्यातंत्रैलोक्येनचपूजितम् ५ एतत्पवित्रंपरमंदर्शनात्पातकापहम् ॥ अत्ररामेश्वरोदेवोमयाशंभुःप्रतिष्ठितः ६ ॥

सवैया ॥ थलसीय दिखावतआय प्रयागमिलेमुनिबन्दनकोकरतै । हनुमानगये कुशलातकहे भरतादरलायमिलेगरतै ॥ सियसानुज रायवआगमजानि मुदापुरलोगचलेघरतै । तिनदेखत पुष्पक तेउतरे प्रभुसानुजआयमिलेभरतै ॥ (ततःसर्वतःचक्षुःपातयित्वारघुनंदनःशशिनिभाननाम्मैथिलीम् सीताम्रामःअब्रवीत्) शिवजी बोले हे गिरिजा तदनंतर विमानपरते सब दिशि नेत्रफेरि रघुनंदन देखिकै पुनः चन्द्रवत् प्रकाशमान है मुखजिनको ऐसी मिथिलेशनंदिनी सीताप्रति रघुनंदन बोलते भये १ (त्रिकूटशिखराग्रस्थांमहाप्रभाम्लंकांपश्यमांसकर्दमपंकिलाम्एतांरणभुवंपश्य) हे सीते त्रिकूटाचल पर्वतके शिखरपरबसीहुई महाप्रकाशमान लंकापुरीकोदेखौ पुनः रक्त मांसके कीचड़से कीचड़वंत यहिरणभूमिकोदेखौ २ (अत्रअसुराणांप्लवंगानांमहत्वैशसनंमेनिहतःराक्षसेश्वरःरावणः

अत्रशेते) इहां राक्षसौंको वानरौंको महामारभया है इमकरिकै मारागया राक्षसौं को राजा रावण इहां मृतक शयनकरताभया है ३ (चकुम्भकर्णइंद्रजित्मुख्याःअत्रसर्वेनिपातिताः सलिलाशयेसागरे एपसेतुःमयाबद्धः) पुनः कुम्भकर्ण मेघनादादि मुख्ययावत् राक्षसरहे ते इहैं सवमारे गये जलाशय समुद्र में यह सेतु मैंने बांधा है ४ (चएतत्दृश्यतेसागरस्यमहात्मनःतीर्थंसेतुबंधं इतिख्यातंचत्रैलोक्येनपूजितम्) पुनः यह दर्शनकरिबे योग्य समुद्रके तीर महान् तीर्थ है सेतुबंध ऐसा नाम प्रसिद्ध पुनः तीनिहुलोकनकरिकै पूजित है ५ (अत्रमायारामेश्वरःदेवःशम्भुःप्रतिष्ठितः एतत्परमंपवित्रंदर्शनात्पातकापहम्) हे सीते इसी भूमिका में मैंने रामेश्वरनामे देव शिवजीकी प्रतिष्ठाकिया है ताते यह परम पवित्र तीर्थ है याके दर्शनमात्रते जननके पापनाश ह्वै जाते हैं ६ ॥

अत्रमांशरणंप्राप्तोमंत्रिभिश्चविभीषणः ॥ एषासुग्रीवनगरीकिष्किंधाचित्रकानना ७ तत्ररामाज्ञयाताराप्रमुखाहरियोषितः॥आनयामाससुग्रीवःसीतायाःप्रियकाम्यया ८ ताभिःसहोत्थितंशीघ्रंविमानंप्रेक्ष्यराघवः ॥ प्राहचाद्रिंऋष्यमूकंपश्यवाल्यत्रमेहतः ९ एषापंचवटीनामराक्षसायत्रमेहताः ॥ अगस्त्यस्यसुतीक्ष्णस्यपश्याश्रमपदंशुभे १० एतेतेतापसाःसर्वेदृश्यन्तेवरवर्णिनि ॥ असौशैलवरोदेविचित्रकूटःप्रकाशते ११ अत्रमांकैकयीपुत्रःप्रसादयितुमागतः ॥ भरद्वाजाश्रमंपश्य दृश्यतेयमुनातटे १२ ॥

(अत्रमंत्रिभिःचविभीषणःमांशरणंप्राप्तःचित्रकानना सुग्रीवनगरीएषाकिष्किंधा) इहां मंत्रिनसहित पुनः विभीषण मेरी शरणको प्राप्तभयाहै विचित्र वनहै जामें ऐसी सुग्रीवकी नगरी यह किष्किंधाहै ७ (तत्ररामाज्ञयासुग्रीवःसीतायाःप्रियकाम्ययाताराप्रमुखाहरियोषितःआनयामास) अब शिवजी कहत हैं गिरिजा जब किष्किंधामें पहुंचे तब रघुनंदनकी आज्ञाकरिकै सुग्रीव जानकीजीकी प्रीतिकीकांक्षा करिकै तारा आदि वानरनकी स्त्रीनको बुलावतेभये ८ (ताभिःसहशीघ्रंविमानंउत्थितंप्रेक्ष्यचराघवःप्राहऋष्यमूकंअद्रिंपश्यअत्रमेवालीहतः) तिनस्त्रियोंकरिकै सहित शीघ्रही विमान उठिकै चलतदेखि पुनःरघुनंदन बोले कि हेसीते ऋष्यमूक नामे यह पर्वत देखिये इहांमैंने वालीको माराहै ९ (एषापंचवटीनामयत्रमेराक्षसाहताःअगस्त्यस्यसुतीक्ष्णस्यआश्रमपदंशुभेपश्य) गोदावरीतट यह पंचवटी नामे स्थानहै जहां मैंने खरादि चौदहहजार राक्षसौंको माराहै पुनः अगस्त्यको अरुसुतीक्ष्णके आश्रम मंगलमें देखौ भाव फल दल फूलौं युक्त वृक्षोंकी परमशोभाहै १० (हेवरवर्णिनिएतेतापसाःतेसर्वेदृश्यंतेहेदेविअसौशैलवरःचित्रकूटःप्रकाशते) हे उत्तम आनंद रूपे येदंडक वनके तपसीलोग ते सब देखिपरतेहैं हे देविसीते यह पर्वत उत्तम अर्थात् परम पावन चित्रकूट प्रकाशमान ह्वै रहाहै देखिये ११ (अत्रमांप्रसादयितुंकैकयीपुत्रःआगतःयमुनातटेदृश्यतेभरद्वाजआश्रमंपश्य) इसी चित्रकूटमें मोंको प्रसन्नकरनेको कैकेयीको पुत्र भरत आयारहै अब प्रयागक्षेत्रअंतर्गतयो यमुनातटमें देखताहै इस भरद्वाजमुनिके आश्रमकोदेखिये १२॥

एषाभागीरथीगंगादृश्यतेलोकपावनी ॥ एषासादृश्यतेसीतेसरयूर्यूपमालिनी १३ एषासादृश्यतेऽयोध्याप्रणामंकुरुभामिनि ॥ एवंक्रमेणसंप्राप्तोभरद्वाजाश्रमंहरिः १४ पूर्णेचतुर्दशेवर्षेपंचम्यांरघुनंदनः ॥ भरद्वाजंमुनिंदृष्ट्वाववंदेसानुजःप्रभुः १५ अपृच्छन्मुनिमासीनंविनयेनरघूत्तमः ॥शृणोषिकच्चिद्भरतःकुशल्यास्तेसहानुजः १६

सुभिक्षावर्त्ततेऽयोध्याजीवंतिचहिमातरः ॥ श्रुत्वारामस्यवचनंभरद्वाजःप्रहृष्टधीः १७ प्राहसर्वेकुशलिनोभरतस्तुमहामनाः ॥ फलमूलकृताहारोजटावल्कलधारकः १८ ॥

(एषाल्लोकपावनीभागीरथीगंगादृश्यतेसीतेएषासरयूसादृश्यतेयूपमालिनी) यहलोक पावनकरन हारी भागीरथी गंगा देखातीहै पुनः हेसीते यहसरयू सोदेखातीहै ताकेसमीप सूर्यवंशी राजोंके यज्ञोंके खंभोंको माला धारन करन हारी जो पुरी१३(एषाअयोध्यासादृश्यतेभामिनिप्रणामंकुरुएवंक्रमेणहरि भरद्वाजाश्रमंसंप्राप्तः) यह अयोध्या सो देखातीहै हे भामिनि अयोध्यापुरीको प्रणामकरुइसी क्रम करिकै हरिश्रीरघुनाथजी भरद्वाज मुनिके आश्रममेंआय प्राप्तभये१४(चतुर्दशेवर्षेपूर्णेपंचम्यांरघुनंदनः भरद्वाजंमुनिंदृष्ट्वासानुजःप्रभुःववंदे) चैत्रशुक्लनौमीको अयोध्याजीतेचलेरहे तबते चौदहवर्षनौमीको पूर्णहोगये तिसी चैत्रशुक्लपंचिमीको रघुनंदन प्रयागमेंआय भरद्वाजमुनिकोदेखेतब लक्ष्मणसहित रघुनंदन प्रभुभरद्वाज मुनिको प्रणाम करते भये १५ (आसीनंमुनिंरघूत्तमःविनयेनप्रपच्छसहानुजः भरतःकुशल्यास्तेकच्चित्शृणोषि) आश्रममें वैठेहुयेजोभरद्वाज मुनि प्रति रघुनंदन नम्रहोकरि पूछते भये हे भगवन् शत्रुघ्न सहित भरत कुशल पूर्वकहैं यह हाल आपने कछु सुनाहै १६ (अयोध्यासुभिक्षावर्त्ततेचहिमातरःजीवंतिरामस्यवचनंश्रुत्वाप्रहृष्टधीःभरद्वाजः) अयोध्या सुभिक्षयुक्तवर्तमान अर्थात् सब प्रजा अन्नधनते परिपूर्णहैं पुनः निश्चयकरि सब माताजीवतीहैं इतिरघुनंदनकेवचनसुनिप्रसन्नमन भरद्वान १७ (प्राहसर्वेकुशलिनःतुमहामनाःभरतःजटावल्कलधारकःफलमूलकृताहारः)भरद्वाजवोले हे रघुनंदन प्रजा परिवार सब कुशल पूर्वकहैं पुनः महात्मा सत्पुरुषभरत शीशमें जटावल्कलवसन धारण किहे महिशायी फलमूलादि भोजन करतेहैं १८॥

पादुकेसकलंन्यस्यराज्यंत्वांसुप्रतीक्षते ॥ यद्यत्कृतंत्वयाकर्मदंडकेरघुनंदन १९ राक्षसानांविनाशंचसीताहरणपूर्वकम् ॥ सर्वंज्ञातंमयारामतपसातेप्रसादतः २० त्वंब्रह्मपरमंसाक्षादादिमध्यांतवर्जितः ॥ त्वमग्रेसलिलंसृष्ट्वातत्रसुप्तोसिभूतकृत् २१ नारायणोसिविश्वात्मन्नराणामंतरात्मकः ॥ त्वन्नाभिकमलोत्पन्नोब्रह्मा लोकपितामहः २२ अतस्त्वंजगतामीशःसर्वलोकनमस्कृतः ॥ त्वंविष्णुर्जानकी लक्ष्मीःशेषोऽयंलक्ष्मणाभिधः २३ आत्मनासृजसीदंत्वमात्मन्येवात्ममायया ॥ नसज्जसेनभोवत्त्वंचिच्छक्त्यासर्वसाक्षिकः २४ ॥

(राज्यंसकलंपादुकेन्यस्यत्वांसुप्रतीक्षिते रघुनन्दनत्वयादंडकेयत् यत्कर्मकृतं) राज्य सब आपके खड़ाओं को समर्पण करि भाव सिंहासनपर स्थापित किहे उनकी आज्ञा लैकै सेवकवत् राज काज करते हैं अरु आपके दर्शन की अत्यंत प्रतीक्षा करते हैं हे रघुनन्दन आपने दंडक वनमें जोजो कर्म कियाहै १९ (सीताहरणपूर्वकंचराक्षसानांविनाशंरामतेप्रसादतः तपसासर्वंज्ञातंमया) सीता हरण पूर्वक पुनः रावणादि राक्षसोंके नाश पर्यंत यावत् आपने लीला किया हे रघुनन्दन आपके प्रसादते तपस्याके प्रभाव करिकै सब मैं जानताहौं २० (आदिमध्यअंतवर्ज्जितः त्वंसाक्षात्परमंब्रह्मभूतकृत् त्वंअग्रेसलिलंसृष्ट्वातत्रसुप्तोसि) आदि उत्पत्ति मध्य जीवन अन्त मरण इत्यादि रहित आप साक्षात् परब्रह्म सदा एक रसहौ हे भूतमात्रके रचने वाले आप पूर्वहीं जल उत्पन्न किया ताही में शयन

करते भये २१ (हेविश्वात्मन्नराणांअंतरात्मकः नारायणःअखिलोकपितामहःब्रह्मात्वन्नाभिकमलो त्पन्नः) हे संसारके आत्मन राघवनाराजोजलतामें अयनवासस्थान अथवानार जीवतामें वासस्थान अथवानरनके अंतरात्माहौताते आपनारायणहौ लोकनके पितामह जो ब्रह्मा हैं सो आपकी नाभी कमलते उत्पन्नभये२२ (अत.त्वंजगतांईश :सर्वलोकनमस्कृतःविष्णुःत्वंलक्ष्मी जानकी अयंलक्ष्मणा भिधःशेषः) आपते ब्रह्माभये इससे सब जगत्के स्वामी आपही हौ सब लोकन करिकै नमस्कार किये गये सोई विष्णु आपहौ लक्ष्मीजानकी हैं ये लक्ष्मण नामशेषहैं २३ (त्वंआत्ममाययाआत्म निएवइदंआत्मनासृजसिचित्शक्त्यासर्वसाक्षिकःत्वंनभोवत्नसज्जसे) आप अपनी मायाकरिकै अपने आत्माहीमें यहसंसारमय अपनारूप रचतेहौ अरुचित्शक्ति करिकै सबके साक्षी सबबात जाननेवाले आप आकाशवत् काहूमें लिप्तनहीं होतेहौ २४ ॥

बहिरंतश्चभूतानांत्वमेवरघुनंदन ॥ पूर्णोपिमूढदृष्टीनांविच्छिन्नइवलक्ष्यसे २५ जगत्त्वंजगदाधारस्त्वमेवपरिपालकः ॥ त्वमेवसर्वभूतानांभोक्ताभोज्यंजगत्पते २६ दृश्यतेश्रूयतेयद्यत्स्मर्यतेवारघूत्तम ॥ त्वमेवसर्वमखिलंत्वद्विनान्यन्नकिंचन २७ मायासृजतिलोकांश्चस्वगुणैरहमादिभिः ॥ त्वच्छक्तिप्रेरितारामतस्मात्त्वय्युपचर्यते २८ यथाचुंबकसान्निध्याच्चलंत्येवायआदयः ॥ जडातथात्वयादृष्टा मायासृजतिवैजगत् २९ देहद्वयमदेहस्यतवविश्वंरिरक्षिषोः ॥ विराट्स्थूलंशरीरंतेसूत्रंसूक्ष्ममुदाहृतम् ३० ॥

(रघुनंदनभूतानांबहिःच अंतःत्वंएव पूर्ण.अपिमूढदृष्टीनांविच्छिन्न इवलक्ष्यसे) हे रघुनन्दन भूत चराचर के बाहर पुनः भीतर आप निश्चय करि परिपूर्ण भीहौ परंतु मूढ दृष्टी वाले पुरुषों को विशेषि खंडित ऐसे देखिपरतेहौ भाव अनेकभेद माने लघु दीर्घ देखतेहैं २५ (जगत्पतेजगत्त्वंजगदाधारः त्वंएवसर्वभूतानांपरिपालकः भोक्ताभोज्यंत्वंएव) हे जगत्पते आत्मरूप व्यापक जग सब आपही हौ जीवबुद्धीमायामय जो जगत्है ताके आधार आपहीहौ भाव आपके सत्ताते जग चैतन्यहै पुनःदेह धारीभूत मात्रके परिपालन हारे भोग करता भोजनरूप सब आपहीहैं २६ (रघूत्तमयत्दृश्यतेश्रूयते वायत्स्मरतेसर्वंअखिलंत्वंएवत्वद्विनाअन्यत्किंचनन) हे रघूत्तम जो कछु देखिपरता है सुनि परता है अथवा जो कछु स्मरण कियाजाताहै सो सबसंपूर्ण आपहीहौ आपबिना और कछुनहीं है २७ (राम प्रेरितात्वत्शक्तिमायास्वगुणै अहमादिभिःलोकांश्चसृजतितस्मात्त्वयिउपचर्यते) हेरघुनंदन आपकी प्रेरणाते आपकी शक्तिमाया आपने गुणअहंकारादिकों करिकैलोकनको रचती है सोई आपमें प्रतीतहै यथा सेवककेकर्म स्वामीमें प्रतीतहोतेहैं२८(यथाचुंबकसान्निध्यात्अयआदयःएवचलंतितथात्वयादृष्टा जडामायावैजगत्सृजति)जैसे चुंबकपत्थरके समीपताते लोहादिकभी चलतेहैं तैसेहीआपकरिकै देखी हुई जड़मायाभी जगत्को रचतीहै २९ (तवअदेहस्यविश्वंरिरक्षिषोःदेहद्वयंविराटतेस्थूलंशरीरंसूत्रं सूक्ष्मंउदाहृतम्) हेरघुनंदन आपजो देह रहितहौ तिनके संसार रक्षाकरिबेको द्वैदेहैं हैं तहांब्रह्मांड रचना.जो विराटहै सो आपकी स्थूल देहहै पुनः भूतमात्रको चैतन्यकरता जो सूत्रात्माहै सो आपकी सूक्ष्म देहकहीजातीहै ३० ॥

विराजःसंभवत्येतेअवतारासहस्रशः ॥ कार्यांतेप्रविशंत्येवविराजंरघुनंदन३१अ

वतारकथांलोकेयेगायंतिगृणंतिच ॥ अनन्यमनसोमुक्तिस्तेषामेवरघूत्तम ३२ त्वं ब्रह्मणापुराभूमेर्भारहारायराघव ॥ प्रार्थितस्तपसातुष्टस्त्वंजातोसिरघोःकुले ३३ देवकार्यमशेषेणकृतंतेरामदुष्करम् ॥ बहुवर्षसहस्राणिमानुषंदेहमाश्रितः ३४ कुर्वन्दुष्करकर्माणिलोकद्वयहितायच ॥पापहारीणिभुवनंयशसापूरयिष्यसि ३५ प्रार्थयामिजगन्नाथपवित्रंकुरुमेगृहम् ॥ स्थित्वाद्यभुक्त्वासबलःश्वोगमिष्यसि पत्तनम् ३६ ॥

(सहस्रशःअवताराः एतेविराजःसंभवंति कार्यांतेरघुनन्दन विराजंप्रविशंतिएव) हजारन अवतार ये सब ते विराट् रूप उत्पन्न होते हैं जिस हेतु सो कार्य करि अंतमें हे रघुनन्दन उसी विराट् रूप में लय होते हैं ३१ (रघूत्तमअवतारकथां लोकेयेगायंतिचगृणंतिच अनन्यमनसःतेषांमुक्तिएव) हे रघुबंशनाथ आपके अवतारों की जो लीला मय कथाहै ताको लोक में जे जन गान करते हैं पुनः सार्थ बर्णन करते हैं एकै राम सनेह पुष्ट मन में राखि तिनको मुक्ति अवश्यही होतीहै ३२ (राघव पुरात्वंतपसा तुष्टः ब्रह्मणाप्रार्थितः भूमेःभारहारायत्वंरघोःकुलेजातोसि) हे राघवपूर्ब आप ब्रह्माकी तपस्याते प्रसन्न रहे ताते ब्रह्मा करिकै प्रार्थना किये गयो भूमि को भार हरने अर्थ आप रघुके कुल में अवतीर्ण भयो ३३ (हेरामदुष्करम् देवकार्यंअशेषेणकृतं मानुषंदेहंआश्रितः बहुवर्षसहस्राणि) हे रघुनन्दन जो किसीके करने योग्य न रहै ऐसा दुष्कर रावण बधादि देवतोंकोकार्यसो संपूर्ण आपने पूर्ण किया पुनः अब मानुष की देहके आश्रित अर्थात् मानुष देह धारण किये हुये बहुत हजार बर्ष तक लोक में बने रहि करि ३४ (चलोकद्वयहिताय दुष्करकर्माणिकुर्वन् पापहारीणियशसाभुवनंपूरयिष्यसि) पुनः दोऊ लोकनके हितके अर्थ अर्थात् जाके श्रवण कीर्तन कीन्हें यहि लोकमें अरुज सुख पूर्बक जीवन अन्न धन पुत्र पौत्रादि ते परिपूर्णता अन्त परलोक में शुभ गति इति जननके हितार्थ दुष्कर कर्म करत संते पाप हरण हारे यश करिकै भुवनको भरि परिपूर्ण करौगे भाव सब यश गान करैंगे ताके प्रभावते पाप रहित होंइगे ३५ (प्रार्थयामिजगन्नाथमेगृहंपवित्रंकुरुअद्यस्थित्वा सबलःभुक्त्वाश्वःपत्तनंगमिष्यसि) यह मेरी प्रार्थनाहै हे जगन्नाथ अब मेरा धाम पवित्र कीजिये आज इहाँ रहिये सहित सेना भोजन कीजिये कल्हि प्रात भये अयोध्या नगर को जाइये ३६ ॥

तथेतिराघवोऽतिष्ठत्तस्मिन्नाश्रमउत्तमे ॥ ससैन्यःपूजितस्तेनसीतयालक्ष्मणेन च ३७ ततोरामश्चिंतयित्वामुहूर्तंप्राहमारुतिम् ॥ इतोगच्छहनूमंस्त्वमयोध्यां प्रतिसत्वरः ३८ जानीहिकुशलीकश्चिज्जनोनृपतिमंदिरे ॥ शृंगिबेरपुरंगत्वाब्रूहिमित्रंगुहंमम ३९ जानकीलक्ष्मणोपेतमागतंमांनिवेदय ॥ नंदिग्रामंततोगत्वा भ्रातरंभरतंमम ४० दृष्ट्वाब्रूहिसभार्यस्यसभ्रातुःकुशलंमम ॥ सीतापहरणादीनि रावणस्यबधादिकम् ४१ ब्रूहिक्रमेणमेभ्रातुःसर्वंतत्रविचेष्टितम् ॥ हत्वाशत्रुगणान्सर्वान्सभार्यःसहलक्ष्मणः ४२ ॥

(तथाइतिराघवः तास्मिन्आश्रमउत्तमे अतिष्ठत्लक्ष्मणेनच सीतयाससैन्यःतेनपूजितः) बहुत भली ऐसा कहि रघुनन्दन तिस आश्रम उत्तम बिषे उतरते भये अरु लक्ष्मण पुनः सीता सहित सेना रघुनंदन तिन भरद्वाज मुनिकरिकै सत्कार कियेगये ३७ (ततःमुहूर्तंचिंतयित्वा रामःमारुतिं

प्राहहनूमंस्त्वंइतःसत्वरः अयोध्यांप्रतिगच्छ) तदनंतर मुहूर्तभरि अर्थात् दोदंड मनमें चिंतवनकरि भाव बिना खवरि पाये सब लोग शोक संदेह युक्त रहैंगे इस कारण खबरि पठाय देवें इति विचारि रघुनंदन हनूमान् प्रति बोले हेहनूमान् तुमइहांते शीघ्रहीं अयोध्याजी को जावो ३८ (नृपतिमंदिरेजनः कच्चित्कुशलीजानीहिश्रृंगिवेरपुरंगत्त्वाममममित्रंगुहंब्रूहि) महाराज दशरथके मंदिर में सब जन कुशल पूर्वक हैं इति जानि आवो तहां प्रथम श्रृंगिवेर पुरको जायो तहांमेरा मित्र निषाद राज जो गुहाहै त्यहि प्रति कहेउ ३९ (जानकीलक्ष्मणःअपिएतंमांआगतंनिवेदयततःनंदिग्रामंगत्वा ममभ्रातरंभरतं) जानकी लक्ष्मण भी यह इहां भरद्वाज के आश्रम को मेरा आगमन निषाद राज प्रति कहिकै तदनंतर नंदी ग्रामको जायो तहां मेरे भ्राता जो भरतहैं तिनहिं ४० (दृष्ट्वासभार्यस्य सभ्रातुःममकुशलंब्रूहि सीताअपहरणआदीनि रावणस्यवधादिकम्) भरतकोदेखि तिन प्रति सहित जानकी की कुशल सहित लक्ष्मणकी कुशल मेरी कुशल कहि पुनः जानकी को हरण आदिक तथा रावण को सदल वध आदिक ४१ (तत्रसर्वंविचेष्टितं मेभ्रातुःक्रमेणब्रूहि शत्रुगणान्सर्वान्हत्वा सभार्यःसलक्ष्मणः) उहां लंका को सब हाल मेरे भाई भरतते क्रम करिकै सब कहेउ किरावणादि शत्रु समूह सबन को मारिकै भार्या सीता सहित लक्ष्मण सहित ४२ ॥

उपयातिसमृद्धार्थःसहऋक्षहरीश्वरैः॥इत्युक्तातत्रवृत्तांतंभरतस्यविचेष्टितम्४३ सर्वंज्ञात्वापुनःशीघ्रमागच्छममसन्निधिम् ॥ तथेतिहनुमांस्तत्रमानुषंवपुरास्थितः ४४ नंदिग्रामंययौतूर्णंवायुवेगेनमारुतिः ॥ गरुत्मानिववेगेनजिघृक्षन्भुजगोत्तमम् ४५ श्रृंगिवेरपुरंप्राप्यगुहमासाद्यमारुतिः॥उवाचमधुरंवाक्यंप्रहृष्टेनांतरात्मना ४६ रामोदाशरथिःश्रीमान्सखातेसहसीतया ॥ सलक्ष्मणस्त्वांधर्मात्माक्षेमीकुशलमब्रवीत् ४७ अनुज्ञातोद्यमुनिनाभरद्वाजेनराघवः ॥ आगमिष्यतितंदेवंद्रक्ष्यसित्वंरघूत्तमम् ४८ ॥

(सहऋक्षहरीश्वरैःसमृद्धार्थःउपयातिइतिउक्त्वाभरतस्यविचेष्टितंतत्रवृत्तांतं) सहित ऋक्ष बानरन सहित पूर्णमनोरथ रामआवते हैं ऐसा कहिकै अरु भरतको चरित्र अरु तहांको वृत्तान्त अर्थात् अयोध्याको सब हाल ४३ (सर्वंज्ञात्वापुनःममसन्निधिंशीघ्रंआगच्छतथाइतितत्रहनुमानमानुषंवपुःआस्थितः) उहांको सब हाल जानिकै पुनः मेरेपासको शीघ्रहीं लौटिआयो बहुतभली ऐसा कहि तहां हनुमान् मानुषतनमें स्थितहोतेभये ४४ (भुजगोत्तमंजिघृक्षन्गरुत्मान्इववेगेनमारुतिःवायुवेगेनतूर्णंनंदिग्रामंययौ) जैसे उत्तम सर्पको ग्रहणकरनेको गरुड़वेगकरिकैचलै तैसेही भरतादि अवधवासिन को रामवियोग दुःख ग्रासकरने वाला है ताको ग्रासकरनेहेतु हनूमान् पवनसम वेगकरिकै शीघ्रहीं नंदीग्रामको चलतेभये ४५ (श्रृंगिवेरपुरंप्राप्यप्रहृष्टेनअंतरात्मनामारुतिः गुहंआसाद्यमधुरं वाक्यंउवाच) प्रथम श्रृंगिवेरपुरमें पहुंचि आनदमनसे हनुमान् गुहाको मिलिमधुर वचन बोलते भये४६(धर्मात्माश्रीमान्दाशरथिःरामःतेसखासहसीतयासलक्ष्मणःक्षेमीत्वांकुशलंअब्रवीत्) धर्मात्मा धर्मकी धुरी धारनकरणहारे बड़े शोभायुक्त दशरथ के पुत्ररामचंद्र तुम्हारे सखा सहित सीता सहित लक्ष्मण कुशल सहित हैं अरु हे निपादराज तुम्हारी कुशल पूंछते हैं अर्थात् सीता सानुज प्रभु कुशलपूर्वक वनते आते हैं तुम्हारी कुशल पूंछने हेत मोको इहां को पठाये ४७ (भरद्वाजेनमुनिनाअनुज्ञातःराघवःआगमिष्यतितंरघूत्तमंदेवंत्वंद्रक्ष्यासि) भरद्वाज मुनि की आज्ञा पालन

करिकै भाव आजु पहुनाई में हैं कालिह बिदा ह्वै रघुनंदन आवहिंगे तिनरघुवंशोत्तम देवको कालिह तुम देखौगे भाव तुम्हारे इहांको आवहिंगे ४८ ॥

एवमुक्त्वामहातेजाःसंप्रहृष्टतनूरुहम् ॥ उत्पपातमहावेगोवायुवेगेनमारुतिः ४९
सोपश्यद्रामतीर्थंचसरयूञ्चमहानदीम् ॥ तामतिक्रम्यहनुमान्नंदिग्राममंययौमुदा ५०
क्रोशमात्रेत्वयोध्यायाश्चीरकृष्णाजिनाम्बरम् ॥ ददर्शभरतंदीनंकृशमाश्रमवासिनम् ५१ मलपङ्कविदग्धांगंजटिलंवल्कलांबरम् ॥ फलमूलकृताहारंरामचिंतापरायणम् ५२ पादुकेतेपुरस्कृत्यशासयंतंवसुंधराम् ॥ मंत्रिभिःपौरमुख्यैश्चकाषायांबरधारिभिः ५३ वृतदेहंमूर्तिमंतंसाक्षाद्धर्ममिवस्थितम् ॥ उवाचप्रांजलिर्वाक्यं हनूमान्मारुतात्मजः ५४ ॥

(एवंउक्त्वासंप्रहृष्टतनूरुहंमहातेजाःमहावेगःमारुतिःवायुवेगेनउत्पपात)तुम रघुनंदनको देखौगे ऐसा हनुमान्जी कहे सो सुनि गुहा के आनंद उमगा तन में रोमांच उठि आये पुनः महातेजवंत महावेगवंत पवनपुत्र वायुवेग करिकै अयोध्या को जाते भये ४९ (सःरामतीर्थंचमहानदीसरयूंअप श्यत्तांअतिक्रम्यहनुमान् मुदानंदिग्राममंययौ) सो हनुमान् जाते समय आकाशते रामतीर्थ जो अयोध्यापुनः महाउत्तम नदी जो सरयू ताहि देखतेभये ताको उल्लंघनकरि अर्थात् प्रथम अयोध्याजी को नहींगये हनुमान् आनंद सहित नंदीग्राम को जातेभये ५० (तुअयोध्यायाः क्रोशमात्रे आश्रम वासिनंचीरकृष्णअजिनाम्बरंकृशंदीनंभरतंददर्श) अयोध्या की सीवांत वाह्यकोशभरे पर आश्रम के वासीश्याम मृगचर्म वसन धारणकिहे शरीरदुर्बल मनते दीन जो भरततिनहिं देखतेभये ५१ (मल पंकविदग्धअंगं) बहुतकाल के उपटननहीं लगाये ताते मलरूप कीचड़करिकै मूंदाहै अंग जिनको (जटिलंवल्कलअंबरं) शीशमें जटा तनमें वल्कल वसन धारण किहे (फलमूलकृताहारं) फल मूलादि भोजन करतेहैं (रामचिंतापरायणम्) रघुनंदन आवहिंगे वा न आवहिंगे इति चिंताकरिरहे हैं ५२ (पादुकेतेपुरस्कृत्यवसुंधरामशासयंतंपौरमुख्यैःचमंत्रिभिःकाषायांवरधारिभिःवृतदेहं) रघुनंदन के पादुकों को आगेकरि पृथिवी को पालन करतेहैं पुरवासी मंत्री गेरुहा वसन धारण किहे तिनकरिकै सेवित है देहजिनकी भाव सबयती कैसो वेषकिहे हैं ५३ (मूर्तिमंतंसाक्षात्धर्मइवस्थितम्मारुतात्मजःहनूमान्प्रांजलिःवाक्यंउवाच) मानों मूर्ति धारणकिहे साक्षात् धर्महैं इसी भांति बैठेहुये भरत तिनहिं देखि पवनपुत्र हनूमान् प्रणाम करि हाथ जोरि वचन बोलतेभये ५४ ॥

यंत्वंचिंतयसेरामंतापसंदण्डकेस्थितम् ॥ अनुशोचसिकाकुत्स्थःसत्वांकुशलमब्रवीत् ५५ प्रियमाख्यामितेदेवशोकंत्यजसुदारुणम् ॥ अस्मिन्मुहूर्तेभ्रात्रात्वंरामेणसहसंगतः ५६ समरेरावणंहत्वारामःसीतामवाप्यच ॥ उपयातिसमृद्धार्थः ससीतःसहलक्ष्मणः ५७ एवमुक्तोमहातेजोभरतोहर्षमूर्च्छितः ॥ पपातभुविचास्वस्थःकैकेयीप्रियनन्दनः ५८ आलिंग्यभरतःशीघ्रंमारुतिंप्रियवादिनम् ॥ आनन्दजैरश्रुजलैःसिषेचभरतःकपिम् ५९ देवोवामानुषोवात्वमनुक्रोशादिहागतः ॥ प्रियाख्यानस्यतेसौम्यददामिब्रुवतःप्रियम् ६० ॥

(तापसंदंडकेस्थितंयंरामंत्वंचिंतयसे अनुशोचसितकाकुत्स्थःत्वांकुशलंअब्रवीत्) तपस्वी दण्डक वन में स्थित जिन रामको आप चिंतनकरते हुये न आवनको शोचकरतेहौ सोई ककुत्स्थवंशोत्तम राम हे भरतजी तुमसों कुशल पूछतेहैं भाव मागते तुम्हारी कुशल जानिबे हेतु मोको पठाये हैं ५५ (देवतेप्रियंआख्यामिसुदारुणंशोकंत्यजअस्मिन्मुहूर्तेत्वंभ्रात्रारामेणसहसंगतः) हेदेव तुमको प्रिय वचन सुनावताहौं ताते अत्यन्त कठिन जो शोकहिहै हौ ताहि त्यागकरौ काहेते इसी मुहूर्त में तुम अपने भाई रामसे मिलौगे भाव रघुनन्दन आते हैं ५६ (समरेरामःरावणंहत्वाचसीताअवाप्यससीतःसहलक्ष्मणःसमृद्धार्थःउपयाति) सग्राममें रघुनंदन रावण को मारिकै पुनः सीताको प्राप्तहो करि सहित जानकी सहित लक्ष्मण मनोरथ पूर्णता सहित रघुनाथजी इहाको आवते हैं ५७ (एवंउक्तःमहातेजाभरतःकैकेयीप्रियनंदनःहर्पमूर्च्छितःभुविपपातचास्वस्थः) रघुनंदन आवते हैं ऐसा हनुमान् कहे सो सुनि भरत नाम कैकेयी के जे प्रियपुत्रहैं ते प्रेमानंदमें बेसुधिह्वैकै भूमिपर गिरिपरे पुन कछु वारमें देहकी सुधिकरि स्वस्थ चित्तह्वैकै ५८ (प्रियवादिनंमारुतिंभरतःशीघ्रंआलिंग्यभरतःआनन्दजैःअश्रुजलैःकपिंसिषेच) प्रियवचन बोलनेवाले जो मारुतनंदनहैं तिनहिं भरत शीघ्रही उठि हृदयमें लगाय मिले पुनः भरतके अंतरते जो प्रेमानन्दउमगा त्यहि करिकै उत्पन्न जो आंशुजल त्यहिकरिकै हनुमान्को भिजैदेतेभये पुनः बोले ५९ (त्वदेवःवा मानुषःवा अनुक्रोशात्इहागतः सौम्य तेब्रुवतः प्रिय आख्यानस्यप्रियम्ददामि) आपदेवताहौ अथवा मानुषहौ जो मोपर दयाकरणे हेतु इहां को आयेहौ हे सौम्य शुद्ध शीतल सुखद तुम्हारा कहाहुआ जो प्रिय वचनहै ताकी सम बोधक प्रिय पदार्थ तुम्हें देताहौं ६० ॥

गवांशतसहस्रंचग्रामाणांचशतंवरम् ॥ सर्वाभरणसंपन्नामुग्धाकन्यास्तुषोडश ६१ एवमुक्त्वापुनःप्राहभरतोमारुतात्मजम् ॥ बहूनीमानिवर्षाणिगतस्यसुमहद्वनम् ६२ शृणोम्यहंप्रीतिकरंममनाथस्यकीर्तनम् ॥ कल्याणीवतगाथेयंलौकिकीप्रतिभातिमे ६३ एतिजीवंतमानंदोनरंवर्षशतादपि ॥ राघवस्यहरीणांच कथमासीत्समागमः ६४ तत्वमाख्याहिभद्रंतेविश्वसेयंवचस्तव ॥ एवमुक्तोथ हनुमान्भरतेनमहात्मना ६५ आचचक्षेथरामस्यचरितंकृत्स्नशःक्रमात् ॥ श्रुत्वातुपरमानंदंभरतोमारुतात्मजात् ६६ ॥

(शतसहस्रंगवांचशतंवरंग्रामाणांचसर्वाभरणसंपन्नामुग्धाकन्याःतुषोडश) सउहजार गौवैं पुनः सउ उत्तम ग्राम पुनः सब भूषणों करिकै भूषित मुग्धा अर्थात् अंकुरितयौवना कन्या पुनः सोरह इत्यादितोको देंउगो ६१ (एवंउक्त्वापुनःभरतःमारुतात्मजंप्राहसुमहत्वनंगतस्यइमानिबहूनिवर्षाणि) ऐसा कहि पुनः भरत हनुमान् प्रति बोलते भये हे प्रियवचनबोलनेवाले अत्यन्त बड़ाभारीजो दंडकवन है तहांको मेरे स्वामीको गये यहिलोकके बहुत वर्ष बीतिगये स्वामीको मंगलीक हालनहीं सुना ६२ (ममनाथस्यकीर्तनंप्रीतिकरंशृणोमिअहंकल्याणीवतइयंगाथालौकिकीप्रतिभातिमे) मेरे नाथको कीर्तन प्रीति करणेवाला आनन्ददायक वचन आजसुनेउ मैं कल्याण करणहारी यह कथा लोककी प्रतीत होतीहै मोको भाव रावण वधभूभारहरण तामें त्रिलोककोस्वस्ति इति गायालोक कल्याण करणहारी देखातीहै ६३ (जीवंतंनरंवर्षशतात्आपिआनंदःएतिराघवस्यचहरीणांसमागमःकथंआसीत्) दुःखयुक्त भी जो जीवतारहै तौ मानुषको सउवर्ष तक कभी निश्चयकरि कभी आनन्द

प्राप्तहोतीहैं यथा मोको आजु आनन्द प्राप्तभई अब कहिये रघुनन्दनको पुनः वानरोंको समागम कैसे भया ६४ (तेभद्रंतत्त्वंआख्याहितववचःविश्वसेयंएवंमहात्मनाभरतेनउक्तःअथहनुमान्) तुम्हारा कल्याण होय यथार्थ हालकहो तब तुम्हारे वचनोंमें मोको विश्वास आवे ऐसामहात्मा भरतने कहा तबहनुमान् ६५ (अथरामस्यचरितंक्रमात्कृत्स्नशः आचचक्षेमारुतात्मजात्परमानंदंश्रुत्वातुभरतः) अब राम चरित आदि क्रमते अंततक संपूर्ण वर्णन करतेभये सोपवननंदनके मुखतेपरम आनंदमय वचन सुनिकै पुनः भरत ६६ ॥

आज्ञापयच्छत्रुहणंमुदायुक्तंमुदान्वितः ॥ दैवतानिचयावंतिनगरेरघुनंदन ६७
नानोपहारबलिभिःपूजयंतुमहाधियः॥सूतावैतालिकाश्चैववंदिनस्तुतिपाठकाः६८
वारमुख्याश्चशतशोनिर्यांत्वेवसंघशः ॥ राजदारास्तथामात्यासेनाहस्त्यश्व
पत्तयः ६९ ब्राह्मणाश्चतथापौराराजानोयेसमागताः ॥ निर्यांतुराघवस्याद्यद्रष्टुं
शशिनिभाननम् ७० भरतस्यवचःश्रुत्वाशत्रुघ्नपरिचोदिताः ॥ अलंचक्रुश्चनग
रींमुक्तारत्नमयोज्ज्वलैः ७१ तोरणैश्चपताकाभिर्विचित्राभिरनेकधा॥अलंकुर्वंति
वेश्मानिनानाबलिविचक्षणाः ७२ ॥

(मुदायुक्तंमुदान्वितःशत्रुहणंआज्ञापयत्रघुनंदनदैवतानिचयावंतिनगरे) श्रीरामचरितरामआगमन सुनि आनंदयुक्त जो भरत सोअपनी आनंद सहित शत्रुघ्नको आज्ञादिये किहे रघुनंदन देवतोंकी प्रतिमा जहांतक अयोध्यानगर मेंहैं तिनहिं ६७ (नानाउपहारबलिभिःमहाधियःपूजयंतुसूताः वैतालिकाःचएववंदिनःस्तुतिपाठकाः) फूल फल दलगंधाक्षत धूपदीपादि अनेक सामग्री तथा बलिआदिकों करिकै बड़े बुद्धिमान् पुरुष प्रतिमोंको पूजनकरैं पुनः सूत जो पौराणिक वैतालिक जेप्रशंसागानकरि राजोंको जगावतेहैं वंदीजन स्तुतिपाठ करनेवाले ६८ (चवारमुख्यःशतशःसंघशः अद्यएवानिर्यांतुराजदाराःतथाअमात्याः हस्तीअश्वपत्तयःसेना) पुनः वेश्या सजिकै सैकरों झुंडबांधि इसी समयपुरतेकढ़ि आगेचलें महाराजकी सबरानी सुमंत्रादि सब मंत्री हाथी घोड़ा पैदरादि सब सेना सजिआगेचलें ६९ (ब्राह्मणाःचतथापौराःसमागतायेराजानःशशिनिभाननंराघवस्यद्रष्टुंअद्यनि र्यांतु) ब्राह्मण लोग पुनः तैसेही पुरवासी सब अरु अन्यदेशोंतेआयेहुये येराजालोगहैं इत्यादि सब तयारह्वै शरदपूर्णचंद्रसम प्रकाशमान मुखहै जिनको ऐसे रघुनंदनको देखने हेतु इसीसमय सब आगेचलैं ७० (भरतस्यवचःश्रुत्वाशत्रुघ्नेनपरिचोदिताःमुक्तारत्नमयउज्ज्वलैः पताकाभिःतोरणैःचन गरींअलंचक्रुः) भरतके वचनसुनि शत्रुघ्नने चतुरजनोंको आज्ञादिया तेसबमोतीआदि रत्नमयउज्ज्व लेपताकोंकरिकै बाह्यद्वारोंमें आरोपित्त करिकै पुनः सबनगरको भूषितकरतेभये७१ (विचक्षणाःनाना बलिअनेकधाविचित्राभिःवेश्मानिअलंकुर्वंति) चतुरजन अनेकप्रकार भेंटकी सामग्री सजिअरु चित्र सारी आदि विचित्र वस्तुन करिकै मंदिरनको अलंकृतकीन्हे अर्थात् मंगलसाज साजतेभये ७२ ॥

निर्यांतिवृंदशःसर्वेरामदर्शनलालसाः॥ हयानांशतसाहस्रंगजानामयुतंतथा ७३
रथानांदशसाहस्रंस्वर्णसूत्रविभूषितम् ॥ पारमेष्ठ्यान्युपादायद्रव्याण्युच्चावचानि
च ७४ ततस्तुशिविकारूढानिर्ययूराजयोषितः ॥ भरतःपादुकेन्यस्यशिरस्येवकृ
तांजलिः ७५ शत्रुघ्नसहितोरामंपादचारेणनिर्ययौ ॥ तदैवदृश्यतेदूराद्विमानंचं

द्रसन्निभम् ७६ पुष्पकंसूर्यसंकाशंमनसाब्रह्मनिर्मितम् ॥ एतस्मिन्भ्रातरौवीरौ वैदेह्यारामलक्ष्मणौ ७७ सुग्रीवश्चकपिश्रेष्ठोमांत्रिभिश्चविभीषणः॥ दृश्यतेपश्य तजनाइत्याहपवनात्मजः ७८ ॥

(रामदर्शनलालसाःवृंदशःसर्वेनिर्यातिहयानांशतसाहस्रंतथागजानांअयुतं) रघुनंदनके दर्शनके लालसा करिकै पुरवासीलोग वर्ण वर्ण झुंडके झुंड सब चलतेभये तिनमें घोड़ा लउहजारसजे सवारयुत हाथीसजे दशहजार सवारनयुत चलतेभये ७३ (स्वर्णसूत्रविभूपितंरथानांदशसाहस्रंपार्मेष्ठीनिउपादायउच्चावचानिचद्रव्याणि) कलाबतूआदि सोनेके सूत्रोंकरिकै भूपितरथ दशहजारचले तिनपर राजालोग ईश्वरके भेटदेनेयोग्य ऊंच नीच द्रव्यलैकैचले ७४ (ततःतुराजयोषितःशिविकारूढानिर्ययू पादुकेशिरसिएवन्यस्यकृतांजलिःभरतः) तदनंतरपुनः महाराजकी रानी कौशल्याआदि पालकिनमें सवार ह्वैचलतीभई प्रभुके पादुकोंको शीशपर धारनकरि हाथजोरि भरत ७५ (शत्रुघ्नसहितःपादचारेणरामंनिर्ययौतदाएवचंद्रसन्निभंविमानंदूरात्दृश्यते) शत्रुघ्न सहित भरत पैदर चालकरिकै रघुनाथजीके समीपको चलतेभये ताहीसमयमें चंद्रमासम प्रकाशमान विमानआकाशमें आवताहुआ देखाई परा ७६ (मनसाब्रह्मानिर्मितम्सूर्यसंकाशंपुष्पकम्एतस्मिन्वैदेह्याभ्रातरौवीरौ रामलक्ष्मणौ) मनकरिकै ब्रह्माने निर्मानाकिया यह जोसूर्यवत्प्रकाशमानहै इसीमें जानकीजी सहित दोनोंभाईबीर श्रीरघुनाथजी लक्ष्मणजी विराजमान हैं ७७ (चकपिश्रेष्ठःसुग्रीवःचमंत्रिभिः विभीषणःदृश्यतेजनापश्यतइतिपवनात्मजःप्राह) पुनः श्रेष्ठवानरों सहित वानरोंकेराजा सुग्रीव इसीमें वैठेहैं पुनः मंत्रिन सहित राक्षसोंके राजाविभीपण इसीमेंवैठेहैं सो विमान आकाशमें देखाई देताहै हे लोगो दृष्टिफैलायदेखो ऐसाहनुमान कहतेभये ७८ ॥

ततोहर्षसमुद्भूतोनिस्स्वनोदिवमस्पृशत्॥स्त्रीबालयुववृद्धानांरामोयमितिकीर्तनात् ७९ रथकुंजरवाजिस्थाअवतीर्यमहीगतः ॥ ददृशुस्तेविमानस्थंजनाःसोममिवांबरे ८० प्रांजलिर्भरतोभूत्वाप्रहृष्टोराघवोन्मुखः ॥ ततोविमानाग्रगतंभरतोराघवंमुदा ८१ ववंदेप्रणतोरामंमेरुस्थमिवभास्करम्॥ ततोरामाभ्यनुज्ञातंविमानमपतद्भुवि ८२ आरोपितोविमानंतद्भरतःसानुजस्तदा ॥ राममासाद्यमुदितःपुनरेवाभ्यवादयत् ८३ समुत्थाप्यचिराद्दृष्टंभरतंरघुनन्दनः ॥ भ्रातरंस्वांकमारोप्य मुदातंपरिषस्वजे ८४

(ततःस्त्रीबालयुववृद्धानांरामःअयंइतिकीर्तनात्हर्षसमुद्भूतःनिस्स्वनःदिवंअस्पृशत्) बिमान देखि तब स्त्री बालक युवा वृद्ध उच्चस्वर ते बोलिउठे कि रघुनन्दन इसी विमान में हैं ऐसा कहने ते आनंदसे उपजा हुवा भारीशब्द सो आकाश लोकों में पहुँचि जाता भया ७९ (सोमंइवअंबरेविमानस्थंददृशुःतेजनाःरथकुंजरवाजिस्थाअवतीर्यमहीगतः) चंद्रमा सम प्रकाशमान आकाश में पुष्पक विमान तामें वैठे हुये रघुनन्दन को देखते भये ते सब जन ये रथन पर हाथिनपर घोड़ेनपर सवार रहे तिनते उतरि भूमिपर खड़ेभये ८०(राघवोन्मुखःभरतःप्रहृष्टःप्रांजलिःभूत्वाततःविमानाग्रगतंराघवंभरतःमुदा) रघुनन्दन के सन्मुख भरत आनंद पूर्वक हाथजोरि खड़े होतेभये तबतक विमान समीप आयगया तब बिमान पर वैठे हुये जो रघुनन्दन तिनहिं देखिकै भरत बड़े आनंद युक्त है ८१

(मेरुस्थंभास्करंइवरामंप्रणतःववंदेतनःरामाभ्यनुज्ञातंविमानंभुविअपतत्) यथा सुमेरु पर स्थित सूर्य तथा विमान पर स्थित जो रघुनन्दन तिनहिं नम्रतापूर्वक भरत दंड प्रणाम कीन्हे तब रघुनन्दन की आज्ञाकरिकै विमान भूमिपर उतरता भया ८२ (ततःसानुजःभरतःतत्विमानंआरोपितः रामंभ्राताप्यमुदितःपुनःएवअभ्यवादयत्) तदनन्तर सहित शत्रुघ्न भरत तिनहिं उसी विमान पर रघुनन्दन चढ़ाय लिये तब रघुनन्दन को प्राप्त है आनंद मन है भरत जी पुनः श्रीरघुनन्दन को दंड प्रणाम करतेभये ८३ (रघुनन्दनःचिरादृष्टंभ्रातरंभरतंसमुत्थाप्यस्वअंकंआरोप्यमुदान्वितंपरिषस्वजे) रघुनन्दन बहुते दिनोंपर देखे ताते छोटे भाई भरत को उठाय अपने अकोरा में बैठाय बड़े आनंद करिकै तिन भरत को हृदय में लगाय रघुनन्दन मिलते भये ८४ ॥

ततोलक्ष्मणमासाद्यवैदेहींनामकीर्तयन् ॥ अभ्यवादयतप्रीतोभरतःप्रेमविह्वलः ८५ सुग्रीवंजाम्बवंतंचयुवराजंतथांगदम् ॥मैंदद्विविदनीलांश्चऋषभंचैवसस्वजे ८६ सुषेणंचनलंचैवगवाक्षंगंधमादनम् ॥शरभंपनसंचैवभरतःपरिषस्वजे ८७ सर्वेतेमानुषंरूपंकृत्वाभरतमादृताः ॥ पप्रच्छुःकुशलंसौम्याःप्रहृष्टाःप्लवगमाः ८८ ततःसुग्रीवमालिंग्यभरतःप्राहभक्तितः ॥ त्वत्सहायेनरामस्यजयोभूद्रावणो हतः ८९ त्वमस्माकंचतुर्णांतुभ्रातासुग्रीवपंचमः ॥ शत्रुघ्नश्चतदारामंसलक्ष्मणम्भ्यवादयत् ९० ॥

(ततःप्रीतःप्रेमविह्वलःभरतःलक्ष्मणंवैदेहींआसाद्यनामकीर्तयन्अभ्यवादयत्) तदनन्तर प्रीतिवंत प्रेमकरि विह्वल भरत तब लक्ष्मण पुनः जानकी जी के सन्मुख ह्वै लक्ष्मण जनकनंदिनी रघुनन्दन की जयहोय इतिनाम कीर्तन वारम्बार करत संते प्रणाम कीन्हे यद्यपि भरत को बड़ेजानि लक्ष्मण प्रथमही प्रणाम कीन्हे तो बड़े कार्यके आगे देहकी बड़ाई तुच्छ मानि भाव देह सुख संबंध त्यागि वनमें स्वामी की उत्तम सेवकाई कीन्हे ताते स्वामी के तुल्य मानि तीनिहू नाम कीर्तन युत प्रणाम कीन्हे ८५ (सुग्रीवंजाम्बवंतंचतथायुवराजंअंगदंमैंदद्विविदनीलांऋषभंचएव सस्वजे इन सबन को भरत उरमें लगाय मिले ८६ (सुषेणंचनलंचएवगवाक्षंगंधमादनम् शरभंचएवपनसंभरतःपरिषस्वजे ॥ इनको भरत उरमें लगाय सबको मिलते भये ८७ (तेसर्वेप्लवंगमाःमानुषंरूपंकृत्वाप्रहृष्टाःचसौम्याःभरतमादृताःकुशलंपप्रच्छुः) सुग्रीवादि ते सब वानर मानुष कैसोरूप धारन किहे परम आनंद पूर्वक पुनः सौम्य अर्थ तू वानरों को स्वभाव चंचल होता है सो त्यागि शुद्ध सतोगुणी शीलवंत स्वभाव पूर्वक भरत प्रति आदर सहित सब कुशल पूछते भये ८८ (ततः भरतःसुग्रीवंआलिंग्यभक्तितःआहत्वत्सहायेनरावणःहतःरामस्यजयःअभूत्) तब भरत जी सुग्रीवको हृदय में लगाय प्रीति सहित बोलते भये हे सुग्रीव तुम्हारी सहायता करिकै संग्राम में सदल रावण मारागया ताते रघुनन्दन की जय होतीभई ८९ (अस्माकंचतुर्णांतुत्वंपंचमःभ्राता चतदाशत्रुघ्नःरामंसलक्ष्मणंअभिवाद्य) हमलोग जो चारि भाई हैं तिनको मानिबे को पुनःहे सुग्रीव तुम पँचयें भाई हौ पुनः ताही समय में शत्रुघ्न रघुनन्दन को सहित लक्ष्मणको प्रणामकरतेभये ९० ॥

सीतायाश्चरणौपश्चाद्ववंदेविनयान्वितः ॥ रामोमातरमासाद्यविवर्णांशोकविक्लवाम् ९१ जग्राहप्रणतःपादौमनोमातुःप्रसादयन् ॥ कैकेयींचसुमित्रांचननामे

तरमातरः ९२ भरतःपादुकेतेतुराघवस्यसुपूजिते ॥ योजयामासरामस्यपादयो र्भक्तिसंयुतः ९३ राज्यमेतन्न्यासभूतंमयानिर्जातितंतव ॥ अद्यमेसफलंजन्म फलितोमेमनोरथः ९४ यत्पश्यामिसमायातमयोध्यांत्वामहंप्रभो ॥ कोष्ठागारंबलं कोशंकृतंदशगुणंमया ९५ त्वत्तेजसाजगन्नाथपालयस्वपुरंस्वकम् ॥ इतिब्रुवा णंभरतंदृष्ट्वासर्वेकपीश्वराः ९६ ॥

(पश्चात्विनयान्वितःसीतायाः चरणौववंदेशोकविह्वलांविवर्णांमातरंमासाद्यरामः) पीछेनम्रता सहित शत्रुध्न जानकी जीके चरणों को प्रणाम कीन्हें अवशोक करिकै विह्वलचित्त देहकी पूर्व चेष्टामलीन परिगई है जिनकी ऐसी कौशल्यादि मातोंको प्राप्त ह्वै रघुनंदन ९१ (मातुःमनःप्रसाद यन्प्रणतःपादौजग्राहकैकेयींचसुमित्रांचइतरमातरःननाम) माता कौशल्या को मन प्रसन्न करत संते नम्रता पूर्वक रघुनंदन पांय गहतेभये अर्थात् प्रणाम कीहें पुनः कैकेयीको सुमित्रा को पुनःअपर जो मातारहीं तिनसबन को प्रणाम कीन्हें ९२ (राघवस्यपादुकेसुपूजितेतेतुभरतःभक्तिसंयुतःराम स्यपादयोःयोजयामास) रघुनंदन के खड़ाऊँ जिनहिं भलीभांति पूजतेरहे ते पुनःभरत प्रीतिसंयुक्त लयके दोऊ पादुकों को रघुनाथजी के पांयन में योजित किये अर्थात् पहिराय देतेभये ९३(तवनि र्जातितंराज्यंमयाएतन्न्यासभूतंअद्यमेजन्मसफलंमेमनोरथःफलितः) आपकी दीन्ही धरोहरि सी मेरे पास रही अवआप आये ताते तिसीराज्य को मैं यह आपको सौंपताहौं सो राज्यग्रहण कीजिये आपके दर्शन पाये ते अबमेरा जन्मसफल भया अरुमेरा मनोर्थ पूर्णभया कुशल पूर्वक आपपुर को आये ९४ (यत्अयोध्यांसमायातंत्वांअहंपश्यामिप्रभोकोष्ठागारंबलंकोशंमयादशगुणंकृतं) जोअयो ध्यामें आय प्राप्त आपको मैं देखताहौं ताते मेरा मनोर्थ पूर्णभया है प्रभोभूषण वसनादि के कोठा सजेमंदिर गजवाजि पैदरादि सेना खजाना इत्यादि सब मैंने दशगुना किया है ९५ (जगन्नाथत्व त्तेजसास्वकंपुरंपालयस्वइतिब्रुवाणंभरतंसर्वेकपीश्वराःदृष्ट्वा) हे जगन्नाथ आपके प्रतापते सब कार्य में किया अब अपने पुर अयोध्या को पालन कीजे ऐसा कहते हुये भरतको सब वानर देखिकै ९६॥

मुमुचुर्नेत्रजंतोयंप्रशशंसुर्मुदान्विताः ॥ततोरामःप्रहृष्टात्माभरतस्वांकगंमुदा९७य यौतेनविमानेनभरतस्याश्रमंतदा ॥अवरुह्यतदारामोविमानाग्र्यान्महीतलम्९८ अब्रवीत्पुष्पकंदेवोगच्छवैश्रवणंवह॥ अनुगच्छानुजानामिकुवेरंधनपालकम्९९ रामोवशिष्ठस्यगुरोःपदांबुजंनत्वायथादेवगुरोःशतक्रतुः ॥ दत्वामहार्हासनमुत्तमं गुरोरुपाविवेशाथगुरोःसमीपतः १०० ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसम्वादेयुद्धकाण्डेचतुर्दशःसर्गः १४ ॥

(नेत्रजंतोयंमुमुचुःमुदान्विताःप्रशशंसुःततःप्रहृष्टात्मारामोभरतंस्वांकगंमुदा) वानरोंके नेत्रोंते अश्रुजल वहिरहाहे आनन्द सहित भरतकी प्रशंसा करते भये तदनन्तर प्रसन्न मन रघुनन्दन भरत को अपने अकोरामें कीन्हें आनंद सहित ९७ (तेनविमानेन तदाभरतस्यआश्रमंययौ तदारामःवि मानाग्र्यात्अवरुह्यमहीतलम्) तिसी विमान करिकै तासमयमें भरत जीके आश्रम को जाते भये तब रघुनाथ जी समाज सहित विमान के ऊपर ते उतरि भूमिपर खड़े भये ९८ (देवःपुष्पकंअब्र

वीत् धनपालकंकुवेरं अनुगच्छानुजानामि गच्छवैश्रवणंवह) रघुनंदन उतरिके पुष्पक विमान प्रति बोलते भये कि धनपालक जो कुवेर है तिनके अनुगामी आज्ञा पालनेवाले भाव तुम कुवेरै के विमान हौ बरवश रावण छीनि लै गया रहै यह सब हाल मैं जाननाहौं ताते मैं आज्ञा देताहौं जाउ कुवेर के भार वाहक होहु ९९ (यथादेवगुरोः शतक्रतुःगुरोः वशिष्ठस्यपादांबुजंरामःनत्वामहा हे आसनं उत्तमंगुरोः दत्वा अथगुरोः समीपतःउपाविवेश) जैसे देवतौंके गुरुजो बृहस्पतिहैं तिनको इंद्रप्रणामकरतेहैं तैसेही गुरू वशिष्ठके पदकमलौं कोरघुनंदन प्रणाम करि महामाणिमयआसनउत्तम गुरूको दीन्हे वैठारे तब गुरूके समीप रघुनंदनवैठे १०० ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचितेअध्यात्म भूषणे युद्धकांडेचतुर्दशःप्रकाशः १४॥

ततस्तुकैकयीपुत्रोभरतोभक्तिसंयुतः ॥ शिरस्यंजलिमाधायज्येष्ठंभ्रातरमब्रवी त् १ मातामेसत्कृतारामदत्तंराज्यंत्वयासम ॥ ददामितत्तेचपुनर्यथात्वमददन्म म २ इत्युक्त्वापादयोर्भक्त्यासाष्टांगंप्रणिपत्यच ॥ वहुधाप्रार्थयामासकैकेय्यागुरु णासह ३ तथेतिप्रतिजग्राहभरताद्राज्यमीश्वरः ॥ मायामाश्रित्यसकलांनरचेष्टा मुपागतः ४ स्वाराज्यानुभवोयस्यसुखज्ञानैकरूपिणः ॥ निरस्तातिशयानंदरूपि णःपरमात्मनः ५ मानुषेणतुराज्येनकिंतस्यजगदीशितु ॥ यस्यभ्रूभंगमात्रेणत्रि लोकीनश्यतिक्षणात् ६ ॥

सवैया ॥ मज्जनके पट भूषणसाजि सिंहासन राजतलोक पुनीता । चामरछत्र सखागहि सोहत दिव्य प्रभासव लोकन रीता ॥ श्यामलगौर सवाम विराजत सारतिकाम करोरिन जीता । वंदतदेव समाज यही सवतौंहिय सानुज राघव सीता ॥ (ततःतुकैकेयीपुत्रःभरतःशिरसिअंजलिंआधायभक्ति संयुतःज्येष्ठंभ्रातरंअब्रवीत्) शिवजी बोले हे गिरिजा तदनंतर पुनः कैकेयीके पुत्र भरत शीशनाय हाथ जोरि प्रीति सहित जेठे भाई जो रघुनाथजी तिनप्रति बोलतेभये १ (राममेमातासत्कृतात्व सताराज्यंममदत्तंयथात्वंसमअददान्चतत्पुनः तेददामि) भरत बोले हे राघवेंद्र पूर्वमेरी माता को राज्यकार किया भाव रामको बनवास भरतको राज्य इति मेरीमाता को वचन अंगीकार करिआपने उत्साभै मोकोदै वनको गये तब जैसे आप मोको दिया तैसे सो राज्य मैं पुनः आपको देताहौं २(इति सहित भक्त्यापादयोसाष्टांगंप्रणिपत्यचकैकेय्यागुरुणासहवहुधाप्रार्थयामास) ऐसा कहिके भरत प्रीति बहुतप्रकार रघुनंदन के पांयन को साष्टांग दंडप्रणाम करि पुनः कैकेयी करिकै अरु वशिष्ठ करिकै सहित चेष्टांउपागर प्रार्थना करते भये ३ (तथाइतिईश्वरःभरतात्राज्यंप्रतिजग्राहमायांआश्रित्यसकलांनर कोद्वार हैगतः) वहुत भली ऐसाकहि ईश्वर रघुनंदन भरत ते राज्यको ग्रहण करतेभये काहेते लो- ग्रहण कियेन मायाका आश्रयण होकरि सवमानुष की चेष्टा को प्राप्त हैं ताही अनुकूल राज्य भी जिनको पुर्न्नातरु ४ (स्वाराज्यअनुभवःयस्यसुखज्ञानैकरूपिणः) अपने परमात्म रूपको अनुभव है त्याग है मायोः सुखज्ञानै एकरूप है जिनको (अतिशयनिरस्तः आनंदरूपिणःपरमात्मनः) अत्यंत पेणतुराज्येनतस्यकारण रूपजिनमें ऐसो अखंड आनंदरूप है जिनको ऐसे परमात्मा रामको ५ (मानु किंजगदीशितुर्यस्यभ्रूभंगमात्रेणक्षणात्त्रिलोकीनश्यति) मानुष करिकै पुनः राज्य

करिकै ताकी कौन जगदीशता है जाकी भृकुटीभंगमात्र ते क्षण में तीनिहुँ लोकनाश होते हैं ६ ॥

यस्यानुग्रहमात्रेणभवंत्याखंडलश्रियः ॥ लीलासृष्टमहासृष्टेःकियदेतद्रमापतेः ७ तथापिभजतांनित्यंकामपूरविधित्सया ॥ लीलामानुषदेहेनसर्वमप्यनुवर्तते ८ ततःशत्रुघ्नवचनान्निपुणःश्मश्रुकृंतकः ॥ संभाराश्चाभिषेकार्थमानीताराघवस्य हि ९ पूर्वंतुभरतेस्नातेलक्ष्मणेचमहात्मनि ॥ सुग्रीवेवानरेंद्रेचराक्षसेंद्रेविभीष णे १० विशोधितजटःस्नातश्चित्रमाल्यानुलेपनः ॥ महार्हवसनोपेतस्तस्थौतत्र श्रियाज्वलन् ११ प्रतिकर्मचरामस्यलक्ष्मणस्यमहामतिः ॥ कारयामासभरतः सीतायाराजयोषितः १२ ॥

(यस्यअनुग्रहमात्रेणआखंडलश्रियःभवंतिमहासृष्टेःलीलासृष्टरमापतेः एतत्कियत्) जिनकी अनुग्रह मात्रकरिकै सम्पूर्ण लोकों की ऐश्वर्य होती है अरुमहा सृष्टि जोअनेक ब्रह्मांड ताकोलीला मात्र रचनेवाले रमापति तिनको यह अयोध्याकी राज्य क्याहै ७ (तथापिनित्यंभजतांकामपूरवि धित्सयालीलामानुषदेहेनसर्वंअपिअनुवर्तते) तौभी जे नित्यभजन करनेवाले भक्त हैं तिनकी मन कामना को पूर्ण करनेकी इच्छा करिकै लीला मात्रमानुष देह धारण करिकै ताही की अनुकूलसब आचरण उत्तम करिकै लोकको सिखावन देते हैं ८(ततःशत्रुघ्नवचनात्श्मश्रुकृंतकःनिपुणःचराघव स्यहिअभिषेकार्थंसंभाराःआनीता) तदनंतर शत्रुघ्नके बचन ते वारबनाने वाला चतुरनापितअरु रघुनंदन के राज्याभिषेकार्थ यावत् सामग्री है सो सबमंत्री लोग लावतेभये ९ (तुपूर्वंभरते स्नाते चमहात्मनिलक्ष्मणेवानरेंद्रेसुग्रीवेचराक्षसेंद्रेविभीषणे) प्रथम भरतजी मज्जनकीन्हे पुनः महात्मा लक्ष्मण मज्जन कीन्हे तब वानरोंके राजा सुग्रीव मज्जन कीन्हे पुनः राक्षसों के राजा विभीषण मज्जन कीन्हे इसक्रम इनचारिहु के स्नान कीन्हे संते तब १० (विशोधितजटःस्नातः) रघुनंदन अपने जटन को बिवराय अधिक कटाय मसालासों मलाय धोय फुलेल लगाय ऐंछि तनमें उबटन लगवाय स्नान करि पीतांवर पहिरि (चित्रमाल्यानुलेपनः) विचित्रमालादि भूषण धारण करि अंगराग लेपन करि (महार्हवसनोपेतःश्रियाज्वलन् तत्रतस्थौ) बड़ेमोल के बसन पहिरि शोभा करिकै प्रकाशमान तहां बैठते भये ११ (रामस्यप्रतिकर्ममहामातिःलक्ष्मणःचभरतः कारयामाससी तायाःराजयोषितः) रघुनंदन को उबटनादि सब कार्य बड़े बुद्धिमान् लक्ष्मण पुनः भरत करते भये सीता को कौशल्यादि रानी करती भई १२ ॥

महार्हवस्त्राभरणैरलंचक्रुःसुमध्यमाम् १३ ततोवानरपत्नीनांसर्वासामेवशोभना ॥ अकारयतकौशल्याप्रहृष्टापुत्रवत्सला १४ ततःस्यंदनमादायशत्रुघ्नवचनात्सु धीः ॥ सुमंत्रःसूर्यसंकाशंयोजयित्वाग्रतःस्थितः ॥ आरुरोहरथंरामःसत्यधर्मपरा यणः १५ सुग्रीवोयुवराजश्चहनुमाँश्च विभीषणः ॥ स्नात्वादिव्यांवरधरादिव्या भरणभूषिताः १६ राममन्वीयुरग्रेचरथाश्वगजवाहनाः ॥ सुग्रीवपत्न्यःसीताचय युर्यानैःपुरंमहत् १७ वज्रपाणिर्यथादेवैर्हरिताश्वरथेस्थितः ॥ प्रययौरथमास्थाय तथारामोमहत्पुरम् १८ ॥

(महार्ह वस्त्रमाभरणैः सुमध्यमां मलंचक्रुः) बड़ेमोलके वसन आभूषणों करिकै सुंदर मध्यांगहै जिन

कोऐसी सीताको अलंकृत करती भई १३ (ततःपुत्रवत्सला प्रहृष्टा कौशल्या वानरपत्नीनां सर्वासांए वशोभनाअकारयत)तिसकेपाछे पुत्रपर प्रीतिकरने वालीपरमानंदभरीकौशल्यासोसुग्रीवादि वानरोंकी जो पत्नी रहींतिन सबकोभी उबटनमज्जन बसन भूषणादि सबसंस्कार करिशोभा युक्त करतीभई १४ (ततःशत्रुघ्नबचनात्सुधीःसुमंत्रःसूर्यसंकाशंयोजयित्वास्यंदनं आदाय अग्रतः स्थितः) तदनंतर शत्रुघ्न की आज्ञाते सुबुद्धी सुमंत्रसुर्यवत्प्रकाशमान रथ वाजिजोरिलै आयरघुनंदनकेआगेस्थितकीन्हे (सत्य धर्मपरायणःरामःरथंआरुरोह)सत्यधर्ममेंतत्पर रघुनंदन रथपर सवारहोतेभये १५ (सुग्रीवःचयुवराजः हनुमांश्चबिभीषणःस्नात्वादिव्यअंबरधराःदिव्यआभरणभूषिताः)सुग्रीवपुनःयुवराजजोअंगदतथाहनु-मान्पुनः बिभीषण इत्यादिसब उबटनलगायस्नानकरि दिव्यबसनधारण करि दिव्यभूषण किरीट कुंडलमाल केयूरादि भूषितह्वैकरिसब १६ (रथअश्वगज वाहनाःरामं अन्वीयुःचअग्रेसीताचसुग्रीव पत्न्यःयानैःमहत्पुरं ययु.) सुग्रीवादि सबरथघोड़े हाथी इत्यादि वाहनौंपरसवारह्वै कोऊ रघुनाथजी के पाछे पुनः कोऊचले आगे अरु जानकीजी पुनःसुग्रीवादिकौंकीस्त्री वाहनोंपरसवारह्वैकेमहाउत्तम पुरजो अयोध्या तहाँ को जाती भई १७ (हरिताश्वरथेस्थितःयथावज्रपाणिःदेवैः प्रययौ तथारामः रथंअस्थायमहत्पुरम्) सब्जा घोड़ेनहेहुये रथमें सवारह्वै जैसे इंद्रदेवतों सहित चलतेभये तैसेही बंधुसखान सहित रघुनंदन रथपरसवारह्वैअयोध्यापुरको चलते भये १८॥

सारथ्यंभरतश्चक्रेरत्नदंडंमहाद्युतिः॥ श्वेतातपत्रंशत्रुघ्नोलक्ष्मणोव्यजनंदधे१९
चामरंचसमीपस्थोन्यवीजयदरिंदमः॥ शशिप्रकाशंत्वपरंजग्राहासुरनायकः २०
दिविजैःसिद्धसंघैश्चऋषिभि र्दिव्यदर्शनैः ॥ स्तूयमानस्यरामस्यशुश्रुवेमधुर ध्वनिः २१ मानुषंरूपमास्थायवानरागजवाहनाः ॥ भेरीशंखनिनादैश्चमृदंगप णवानकैः २२ प्रययौराघवश्रेष्ठस्तांपुरींसमलंकृताम् ॥ ददृशुस्तेसमायांतंराघवं पुरवासिनः २३ दूर्वादलश्यामतनुंमहार्हकिरीटरत्नाभरणांचितांगं॥ आरक्तकं जायतलोचनांतंदृष्ट्वाययुर्मोदमतीवपुण्याः २४॥

(भरतः सारथ्यंचक्रे रत्नदंडं महाद्युतिःश्वेतआतपत्रं शत्रुघ्नःलक्ष्मणःव्यजनंदधे) भरत रघुनंदन कोरथहांकते भये जामेंरत्नजटितऐसासोने को दंडमहा प्रकाशमानउज्वल छत्र शत्रुघ्नलिहे तैसेही लक्ष्मण दिव्यपंखालिहे १९ (चसमीपस्थःअरिंदमः चामरंन्यवीजयत् तुअपरंशशिप्रकाशं असुरना यकःजग्राह) पुनः समीप बैठेहुये शत्रुनाशकरनेवाले जो सुग्रीव सोचमरढोरतेहैं पुनः और दूसरा चमरचंद्रवत् प्रकाशवंत ताहि राक्षसौंके राजा बिभीषण लिहे ढोरिरहेहैं २० (दिविजैः सिद्धसंघैः चदिव्यदर्शनैःऋषिभिः रामस्य स्तूयमानस्य मधुरध्वनिः शुश्रुवे) देवतौंकरिकै सिद्धगणौंकरिकै पुनः दिव्यहै दर्शन जिनका ऐसे ऋषश्वरोंकरिकै जो रघुनाथजी की स्तुति कीजातीहै ताकी मधुरध्वनि सुनाई देतीहै २१ (वानरामानुषंरूपं आस्थायगजवाहनाः मृदंग पणवआनकैःचभेरी शंखनिनादै) वानरमानुषरूप धरे हाथि नपरसवार मृदंग पणव आनक भेरी शंख इत्यादि बाजौं करिकै नाद करते हैं अर्थात् ए सब बाजा बजाय रहे हैं २२ (राघवःश्रेष्ठःसमलंकृतां तांपुरींप्रययौ आयांतंराघवं पुरवासिनःतेददृशुः) सबबाजों सहित रघुवंशनाथ मंगल साजौं करिकै भूषित करी गई तिस अयोध्यापुरी को जाते भये अरु आवतेहुये जो रघुनन्दन तिनहिं पुरबासी लोग देखते भये २३ (दूर्वादलश्यामतनुं) दूबके दल सम श्याम सुंदर तनुहै जिनको (महार्हकिरीटरत्नाभरणंचित अंगं

अमोल मणि जटित किरीट शीशपर कुंडल माल केयूरादि रत्न भूषणों करिके व्याप्त है अंग जिनको (कंजायतलोचनांतंआरक्तपुण्याद्दृष्ट्वाअतीवमोदंययुः) कमल समलंबायमान नेत्रों के अंत भाग में किंचित् अरुणता है जिनके ऐसे जो रघुनन्दन तिनहिं बड़े पुण्यवंत अयोध्या वासी देखिकै अत्यंत आनंदको प्राप्तभये २४ ॥

विचित्ररत्नांचितसूत्रनद्धपीतांबरंपीनभुजांतरालम् ॥ आनर्घ्यमुक्ताफलदिव्यहारैर्विरोचमानंरघुनंदनंप्रजाः २५ सुग्रीवमुख्यैर्हरिभिःप्रशांतैर्निषेव्यमाणंरवितुल्यभासम्॥ कस्तूरिकाचंदनलिप्तगात्रंनिवीतकल्पद्रुमपुष्पमालं२६श्रुत्वास्त्रियोराममुपागतंमुदाप्रहर्षवेगोत्कलिताननश्रियः ॥ अपास्यसर्वंगृहकार्यमाहितंहर्म्याणिचैवारुरुहुःस्वलंकृताः २७ दृष्ट्वाहरिंसर्वदृगुत्सवाकृतिंपुष्पैर्किरंत्यःस्मितशोभिताननाः ॥ दृग्भिःपुनर्नेत्रमनोरसायनंस्वानंदमूर्तिंमनसाभिरेभिरे २८ रामःस्मितस्निग्धदृशाप्रजास्तथापश्यन्प्रजानाथइवापरःप्रभुः ॥

(विचित्ररत्नांचितसूत्रंतेननद्धःपीतांबरंयस्य) विचित्र रत्नयुत हेममय कटिसूत्र तेहिकरिकै बँधाहै पीतांबर जिनको (पीनभुजांतरालम्) पुष्ट है भुजन को अंतर वक्षःस्थल जिनको (अनर्घ्यमुक्ताफलदिव्यहारैरघुनन्दनंप्रजाःविरोचमानं) बड़े मोलके मोतिनके दिव्य हारों करिकै प्रकाशमान रघुनन्दन को प्रजालोग देखि रहेहैं २५ (सुग्रीव मुख्यैः प्रशांतैःहरिभिःनिषेव्यमाणंरवितुल्यभासं) सुग्रीव आदि शांतचित्त वानरों करिकै सेव्यमान सूर्य तुल्य प्रभा है जिनकी (कस्तूरिकाचंदनलिप्तगात्रं) केशरि कर्पूर कस्तूरी मिलाहुआ चंदन लिप्त है गात्र में जिनके (निवीतकल्पद्रुमपुष्पमालं) कंठते लटकि रहाहै कल्पवृक्ष के फूलों की माला २६ (उपागतंरामंश्रुत्वामुदास्त्रियःप्रहर्षवेगेनआननश्रियःउत्कलिताआहितंगृहकार्यंसर्वंअपास्यचएवस्वलंकृताःहर्म्याणिआरुरुहुः) आवते हुये रघुनंदनको सुनिकै आनन्दयुत जो पुरकी स्त्री तिनमें बड़े आनन्द उमंगके वेगकरिकै मुखकी शोभा वृद्धिको प्राप्तभई दर्शन लालसाते अवश्यकरनेयोग्य जो गृहकार्य सो सब त्यागि पुनः तनमें वसन भूषण अलंकृतकरिकै मन्दिरनपरचढ़तीभई२७(सर्वदृकुउत्सवआकृतिंहरिंदृष्ट्वास्मितशोभिताननाःपुष्पैःकिरंत्यः पुनः नेत्रमनोरसायनंस्वानंदमूर्तिंदृग्भिःमनसाभिरेभिरे) सबके नेत्रोंकी दृष्टिके उत्सवकी मूर्ति रघुनाथजीकोदेखिकै मुसुकानिकरिकै शोभित हैं मुखजिनके सो स्त्रीजन फूलोंकरिकै वर्षाकरतीभईं पुनः नेत्र मनको रसायन सम अपने आनन्दकीमूर्ति रघुनन्दनको नेत्रद्वारा उरमेंआनि मनकरिकै आलिंगनकरतीभईं २८ (तथा अपरः प्रजानाथइवप्रभुःरामःस्मितस्निग्धदृशाप्रजाःपश्यन्) यथा प्रजा प्रभुकोदेखते हैं तैसेही अपरब्रह्मा के तुल्य प्रभु रघुनन्दन मुसुकानियुत प्रसन्नमुख स्नेहयुक्त दृष्टिकरिकै प्रजनको देखतेहुये ॥

शनैर्जगामाथपितुःस्वलंकृतंगृहंमहेंद्रालयसन्निभेहरिः२९प्रविश्यवेश्मांतरसंस्थितोमुदारामोववंदेचरणौस्वमातुः ॥ क्रमेणसर्वाःपितृयोषितःप्रभुर्ननामभक्त्यारघुवंशकेतुः ३० ततोभरतमाहेदंरामःसत्यपराक्रमः॥ सर्वसंपत्समायुक्तंममममंदिरमुत्तमम् ३१ मित्रायवानरेंद्रायसुग्रीवायप्रदीयताम् ॥ सर्वेभ्यःसुखवासार्थंमंदिराणिप्रकल्पय ३२रामेणैवसमादिष्टोभरतश्चतथाकरोत् ॥ उवाचचमहातेजाः

सुग्रीवंराघवानुजः ३३ राघवस्याभिषेकार्थंचतुःसिंधुजलंशुभम् ॥ आनेतुंप्रेषय स्वाशुदूतांस्त्वरितविक्रमान् ३४ ॥

(अथ महेंद्रालयसन्निभेलंकृतंस्वपितुःगृहंशनैःहरिःजगाम) अब इंद्रके मन्दिरके तुल्य प्रकाशमान भूषित जो आपने पिताको गृह तहांको धीरा धीरा प्रभुजातेभये २९ (प्रविश्यवेश्मांतरसंस्थितःमुदा रामःस्वमातुःचरणौववंदेरघुवंशकेतुःप्रभुःभक्त्यापितृयोषितःक्रमेणसर्वाःननाम) मंदिर में प्रवेशकरि मध्य डेउढ़ी में बैठि आनन्दयुत रघुनंदन प्रथम अपनी माताके चरणोंको प्रणामकीन्ह पुनःरघुवंश में पताका प्रभुभक्ति सहित पिताकी यावत् स्त्री रहीं तिनहिं क्रम क्रम सबको प्रणामकरतेभये ३० (ततःसत्यपराक्रमःरामःभरतंइदंआह सर्वर्तुसंपत्समायुक्तंउत्तमंममर्मंदिरम्) तदनंतर सत्य है पराक्रम जिनको सो रघुनंदन भरतप्रति ऐसा बोलतेभये हे भरत सब प्रकार संपत्तियुक्त उत्तम जो मेरा मन्दिर है ३१ (वानरेंद्रायमित्रायसुग्रीवायप्रदीयतां सुखवासार्थंसर्वेभ्यःमंदिराणिप्रकल्प्य) बानरोंके राजा मेरे मित्र जो सुग्रीवहैं तिनको वासकरने अर्थ मेरा मंदिरदेहु तथा सुख सहित बासकरने अर्थ विभीषणादिक सबके अर्थ उत्तम मंदिरदेहु ३२ (रामेणएवसंआदिष्टःचभरतःतथाकरोत्चमहातेजाः राघवानुजःसुग्रीवंउवाच) इस प्रकार रघुनंदनकरिकै आज्ञाको प्राप्तह्वै पुनः भरत तैसेहीकरतेभये सबको बासदै पुनः महातेजस्वी भरत सुग्रीवप्रतिबोलतेभये ३३ (राघवस्यअभिषेकअर्थंचतुःसिंधुजलशुभम् आनेतुंत्वरितविक्रमान्दूतान्आशुप्रेषयस्व) हे सुग्रीव रघुनंदनके राज्याभिषेककरने अर्थ चारिहु समुद्रनको जल मंगलीक आनबेहेत शीघ्रचलनेवाले पराक्रमी दूतनको शीघ्रहींपठायेइजाय जललैआवहिं ३४ ॥

प्रेषयामाससुग्रीवोजांबवंतंमरुत्सुतम् ॥ अंगदंचसुषेणंचतेगत्वावायुवेगतः ३५ जलपूर्णाञ्शातकुंभकलशांश्चसमानयत्॥आनीतंतीर्थसलिलंशत्रुघ्नोमंत्रिभिःसह ३६ राघवस्याभिषेकार्थंवशिष्ठायन्यवेदयत्॥ततस्तुप्रयतोवृद्धोवशिष्ठोब्राह्मणैःसह ३७ रामंरत्नमयेपीठेससीतंसंन्यवेशयेत् ॥ वशिष्ठोवामदेवश्चजावालिर्गौतमस्तथा ३८ वाल्मीकिश्चतथाचक्रुःसर्वेरामाभिषेचनम्॥ कुशाग्रतुलसीयुक्तंपुण्यगंधजलैर्मुदा ३९ अभ्यषिंचन्रघुश्रेष्ठंवासवंवसवोयथा ॥ ऋत्विग्भिर्ब्राह्मणैःश्रेष्ठैःकन्याभिःसहमंत्रिभिः ४० ॥

(सुग्रीवःजाम्बवंतंमरुत्सुतं चअंगदंचसुषेणंप्रेषयामासतेवायुवेगतःगत्वा) भरतके वचन सुनि सुग्रीव जामवंत को अरु हनुमान् को पुनः अंगदको अरु सुषेणको दक्षिणादि क्रमते चारिहु दिशनको पठावते भये ते सब पवनसम वेगतेगये ३५(जलपूर्णान्शातकुंभकलशान्समानयन्मंत्रिभिःसहशत्रुघ्नःतीर्थसलिलंआनीतं) सिंधुके जल करिकै पूर्ण पुनः सोनेके कलशन को लातेभये अरु मंत्रिन सहित शत्रुघ्न पूर्वको आताहुवा सबतीर्थों को जल सो लातेभये ३६ (राघवस्यअभिषेकार्थं) रघुनंदन के राज्याभिषेक करने अर्थ (वशिष्ठायन्यवेदयत) सबतीर्थो को सब समुद्रोंको जल लाय वशिष्ठके अर्थ निवेदन किये अर्थात्सौंपिदिये (ततःप्रयतःवृद्धःवशिष्ठःतुब्राह्मणैःसह) तब इंद्रीजित् वृद्ध वशिष्ठ पुनः वामदेवादि अपर ब्राह्मणों सहित ३७ (ससीतंरामंरत्नमयेपीठेसंन्यवेशयतवशिष्ठः वामदेवःचजावालिःतथागौतमः) सहित सीता रघुनंदनको रत्नमय सिंहासन पर बैठाय कै वशिष्ठ

अरु वामदेव पुनः जा वालितेसे गौतम ३८ (चतथावाल्मीकिःकुशाग्रतुलसीगंधयुक्तपुण्यजलैःमुद सर्वेरामाभिषेचनंचक्रुः) पुनः तैसेही वाल्मीकि इत्यादि मुनिजन कुशों को अग्रभाग लैके तुलसदिल केशरि कर्पूर कस्तूरी कुंकुम अगर चंदन इत्यादि गंध द्रव्य युक्त पुण्य तीर्थों के जल करिकै आनंद सहित सब मुनिलोग रघुनाथजीको अभिषेक करतेभये ३९ (ऋत्विग्भिःब्राह्मणेःश्रेष्ठैःकन्याभिःसह मंत्रिभिःरघुश्रेष्ठंअभ्यषिंचन्यथावसवःवासवं)प्रोहितब्राह्मणोंमें श्रेष्ठब्राह्मणोंकी कन्यों करिकै सहित मंत्रिन करिकै रघुवंशनाथ अभिषेक किये गये कौन भांति जैसे वसुनामे देवतों करिकै इंद्र अभिषेक किये गये हैं ४० ॥

सर्वौषधीरसैश्चैवदेवतैर्नभसंस्थितैः ॥ चतुर्भिर्लोकपालैश्चस्तुवद्भिःसगणैस्तथा ४१ छत्रंचतस्यजग्राहशत्रुघ्नःपांडुरंशुभम् ॥ सुग्रीवराक्षसेंद्रौतौदधतुःश्वेतचामरे ४२ मालांचकांचनींवायुर्ददौवासवचोदितः ॥ सर्वरत्नसमायुक्तंमणिकांचनभूषितम् ४३ ददौहारंनरेंद्रायस्वयंशक्रस्तुभक्तितः ॥ प्रजगुर्देवगंधर्वानन्तृतुश्चाप्सरोगणाः ४४ देवदुंदुभयोनेदुःपुष्पवृष्टिःपपातखात् ॥ नवदूर्वादलश्यामं पद्मपत्रायतेक्षणम् ४५ रविकोटिप्रभायुक्तकिरीटेनविराजितम् ॥ कोटिकंदर्पलावण्यंपीताम्बरसमावृतम् ४६ ॥

(चएवसर्वऔषधीरसैःनभसिस्थितैःदेवतैःतथासगणैःचचतुर्भिःलोकपालैःस्तुवद्भिः)पुनः सबऔषधीके रसों करिकै आकाशमें स्थित जो देवता तैसे सहित आपने पार्षदन पुनः इंद्रवरुण कुवेरधर्मराजादि चारिहु लोकपाल जेस्तुति करते हैं इनसवनकरिकै अभिषेक किये गये रघुनन्दन ४१(चपांडुरंशुभंछत्रंतस्यशत्रुघ्नःजग्राहसुग्रीवराक्षसेंद्रौतौश्वेतचामरेदधतुः) पुनः श्वेतवर्ण मंगलीक जो रघुनाथजीको छत्र है ताको शत्रुघ्नलिहे हैं सुग्रीव विभीषण दोऊ दिशिते श्वेत वर्ण चामर प्रभुपर ढोरते हैं ४२ (वासवचोदितःवायुः कांचनींमालांददौचसर्वरत्नसमायुक्तंमणिकांचनभूषितंहारं) इंद्रके पठाये हुये पवन कंचन मय बनाहुवा दिव्य माला रघुनाथजीको भेटदेतेभये पुनः सबरत्नन सहित मणि कंचन भूषित ऐसा जो दिव्य उत्तम हारहै तिसको आनि ४३ (तुभक्तितःस्वयंशक्रःनरेंद्रायददौदेवगंधर्वाःप्रजगुःचअप्सरःगणाःननृतुः) सोई हार पुनः प्रीति पूर्वक आपही इंद्रराजाधिराज जो रघुनाथ जी तिनहिंदेतेभये ता समय देव गंधर्व गान करते भये तथा अप्सरा समूह नृत्य करती भई ४४ (देवदुंदुभयोनेदुःखात्पुष्पवृष्टिःपपातनवदूर्वादलश्यामंपद्मपत्रआयतइक्षणम्) देवतोंकी दुंदुभी बाजि रहीहैं आकाशते फूलोंकी वर्षागिरि रहीहै तासमयमें प्रभुकी कैसी शोभाहै कि नवीन दूर्वा दलसम श्यामतनहै जिनको कमल दल सम बिशालनेत्र हैं जिनके ४५ (कोटिरविप्रभायुक्तंकिरीटेनविराजितम्पीतांबरसमावृतंकोटिकंदर्पलावण्यं) करोरिन सूर्य कैसो प्रकाश युक्त दिव्य किरीट करिकै शोभित है शीशु जिनको तनमें पीतांबर धारण किहे करोरिन काम की शोभाहै जिनमें ४६ ॥

दिव्याभरणसंपन्नं दिव्यचन्दनलेपनं ॥ अयुतादित्यसंकाशंद्विभुजरघुनंदनम् ४७ वामभागेसमासीनांसीतांकांचनसन्निभाम् ॥ सर्वाभरणसंपन्नांवामांकेसमुपस्थिताम् ४८ रक्तोत्पलकरांभोजांवामेनालिंग्यसंस्थितम् ॥ सर्वातिशयशोभाढ्यंदृष्ट्वाभक्तिसमन्वितः ४९ उमयासहितोदेवःशंकरोरघुनंदनम् ॥ सर्वदेवग

एवमुक्तःस्तोतुंसमुपचक्रमे ५० श्रीमहादेवउवाच ॥ नमोस्तुरामायसशक्तिकायनीलोत्पलश्यामलकोमलाय ॥ किरीटहारांगदभूषणाय सिंहासनस्थायमहाप्रभाय ५१ त्वमादिमध्यांतविहीनएकःसृजस्यवस्यत्सिचलोकजातं ॥ स्वमाययातेन नलिप्यसेत्वंयत्स्वेसुखेजस्ररतोनवद्यः ५२ ॥

(दिव्याभरणसंपन्नं) कुंडल माल केयूरपहुँची मुद्रिका कांची आदि दिव्य भूषणोंकरि सर्वांग भूपित (दिव्यचंदनलेपनं) केशरि कस्तूरी कर्पूरादि मिला दिव्य चंदनलेप किहे (अयुतआदित्यसंकाशंद्विभुजंरघुनंदनं) दशहजार सूर्यतुल्य प्रकाशमान द्वैद्वै हैं भुजा जिनके ऐसे जो रघुनंदन ४७ (कांचनसन्निभाम्सर्वाभरणसंपन्नांसीतांवामभागेसमासीनांवामअंकेसंउपस्थितां) सुवर्णसम तनकी कांतिहै जिनकी सर्वांग भूपणों करिकै भूषित ऐसी जो सीता सो बामभागमें आसीन है कौन भांति बामअंकोरामें उपस्थितहै ४८ (रक्तोत्पलकरांभोजां) अरुण वरण कमल हाथमें है जिनके (वामेनालिंग्यसंस्थितं) ऐसी सीताको बाम हाथ करिकै आलिंगन किहे बैठेहुये (सर्वातिशयशोभाढ्यंदृष्ट्वाभक्तिसमन्वितः) सब रूपनते अतिशय अधिक शोभा युक्त रघुनंदनको देखिकै बड़ी प्रीति सहित ४९ (सर्वदेवगणैःयुक्तःउमयासहितःशंकरःदेवःरघुनन्दनंस्तोतुंसमुपचक्रमे) सब देवगण युक्त पार्वती सहित शंकर देव प्रीतिपूर्वक रघुनंदनकी स्तुति करनेलगे ५० (नीलउत्पलश्यामलकोमलायकिरीटहारअंगदभूपणायसशक्तिकायसिंहासनस्थायमहाप्रभायरामायनमोस्तु) नीलकमलसम श्यामल कोमलअंगहै जिनको शीशमें दिव्य किरीटगलेमें मणिकांचनमयहार भुजमें अंगद श्रवणमें कुंडलकर मूलपहुँची अँगुलीमें मुद्रिका कटिमें कांची इत्यादि सर्वांग भूपणयुक्त जिनके अपनी आदि शक्तिका अवतार सीता सहित दिव्य रत्नसिंहासन पर आसीन महाप्रभावंत ऐसे रामरघुवंशनाथ तिनके अर्थ मेरी नमस्कार है ५१ (आदिमध्यअंतविहीनंत्वंएकः स्वमाययालोकस्रजसि अवस्यत्सिचजातंतेनत्वंलिप्यसेनयत्स्वेसुखेअजस्ररतःनवद्यः) आदि कबतेहौ मध्यकैसेहौ अंतकबतक रहौगे इत्यादि बिहीन आप सदा एकही अद्वैतहौ अरु अपनी माया करिकै जो लोकको उत्पन्नपालन संहार करतेहौ परंतु उसकर्मों करिकै आप लिप्यनहीं होतेहौसदा निर्दोषरहतेहौ क्योंकिजोअपने आनंदरूपमें सदास्थित रहतेहौ ताते निर्दोषहौ ५२ ॥

लीलांविधत्सेगुणसंवृतस्त्वंप्रपन्नभक्तानुविधानहेतोः ॥ नानावतारैःसुरमानुषाद्यैःप्रतीयसेज्ञानिभिरेवनित्यं ५३ स्वांशेनलोकंसकलंविधायतंविभर्षिचत्वंतदधः फणीश्वरः ॥ उपर्यधोभान्वनिलोडुपौषधीप्रवर्षरूपोऽवसिनैकधाजगत् ५४ त्वमिहदेहभृतांशिखिरूपःपचासिभुक्तमशेषमजस्रं ॥ पवनपंचकरूपसहायोजगदखंडमनेनविभर्षि ५५ ॥

प्रपन्नभक्तानुविधानहेतोःगुणसंवृतःत्वंसुरमानुषाद्यैःनानावतारैःलीलांविधत्सेज्ञानिभिःएवनित्यंप्रतीयसे) शरणागत भक्तोंके मोक्ष हेत मायागुणावृत आपसुरवावनादि मानुष राम कृष्ण इत्यादि अनेक अवतारों करिकै लीलाधारण करतेहौ सो परमेश्वरके अवतारहैं ऐसा ज्ञानी पुरुपों करिकै नित्यहीं जाने जातेहौ अरु अज्ञानिन करिकै मानुप जानेजातेहौ भक्तजन लीलाश्रवण कीर्तनकरि भवबंधनते छूटते हैं ५३ (स्वांशेनसकलंलोकंविधायचतत्अधःत्वंफणीश्वरःतंविभर्षिअधोउपरिभानुः

अनिलः उडुपः औपधीःप्रवर्षःनैकधारूपः जगत्अवसि) हे रघुनन्दन अपने अंश करिकै अर्थात् अंशावतार ब्रह्मारूप है करि सब लोकोंको रचिकै पुनः ताके नीचे आपशेषरूप ह्वैकै तिस ब्रह्माण्ड को शीशपर धारण करतेहौ अरु ऊपरसे सूर्यपवन चंद्रमा अन्नादि सब औषधीमेघ इत्यादि अनेकन प्रकार केरूप ह्वै करि संसारको पालन करतेहौ ५४(पंचकरूपपवनसहायःत्वंशिखिरूपःइहदेहभृतांभुक्तमशेषंअजस्रंपचसिअनेनजगत्अखंडंविभर्षि) पांचरूपपवन यथा जिज्ञासापंचके॥ हृदिप्राणोगुदेऽपानःसमानोनाभिसंस्थितः।उदानः कंठदेशेस्यात्व्यानः सर्वशरीरगः॥इतिप्राण अपान उदान व्यान येशरीर व्याप्तपांचरूपते पवन सहायक जिसका ऐसे आप जठराग्निरूप उदरमें वर्तेहुये इन देहधारिनको भोजन किया हुआ संपूर्ण पदार्थको नित्यही पचावतेहौ यथा गीतायां ॥ अहं वैश्वानरोभूत्वाप्राणिनां देहमाश्रितः।प्राणापानसमायुक्तः पचाम्यन्नंचतुर्विधम्॥इसप्रकारकरिकै जगत्संपूर्णपालतेहौ ५५॥

चंद्रसूर्यशिखिमध्यगतंयत्तेजईशचिदशेषतनूनाम्॥ प्राभवत्तनुभृतामिहधैर्यंशौर्यमायुरखिलंतवसत्वम् ५६ त्वंविरंचिशिवविष्णुविभेदात्कालकर्मशशिसूर्यविभागात्॥ वादिनांपृथगिवेशविभासिब्रह्मनिश्चितमनन्यदिहैकम् ५७ मत्स्यादिरूपेणयथात्वमेकःश्रुतौपुराणेषुचलोकसिद्धः॥ तथैवसर्वंसदसद्विभागस्त्वमेवनान्यद्भवतोविभाति ५८ यद्यत्समुत्पन्नमनंतसृष्टोउत्पत्स्यतेयच्चभवच्चयच्च ॥ नदृश्यते स्थावरजंगमादौत्वयाविनातःपरतःपरस्त्वम् ५९ ॥

(हेईशचंद्रसूर्य शिखिमध्यगतंयत्तेज अशेषतनूनांचित्इहतनुभृतांधैर्यं शौर्यंआयुः अखिलंतवसत्वं प्राभवत्) हेईश रघुनाथ जी चंद्रमा सूर्य अग्नि इत्यादि यावत् ज्योतिवंतहैं तिनके मध्य व्याप्त जो तेज है अरु संपूर्ण देह धारिनकी जो चैतन्यता शक्तिहै तथा इन देह धारिनमें धीरता शूरता आयुर्बल इत्यादि सपूर्ण रूपोंते आपको सत्त्व प्रकट होता है ५६ (हेईशविभेदात् विरंचिशिवविष्णुकालकर्मशशिसूर्य विभागात्वादिनां पृथक्इवत्वंविभासिब्रह्मनिश्चितंअनन्यत्इहएकम्)हेईश रघुनंदन लोकन के कार्य साधनहेतु जोआप भेदते विरंचि शिव विष्णु काल कर्म चंद्रमा सूर्य इत्यादि विभाग ते अर्थात् ब्रह्मा लोक उत्पन्न करत विष्णु पालन करत शिव संहार करत काल सबकी अवधि बतावत कर्म जीवन को व्यापार करावत चंद्रमा अमृत मय शीतल किरणन ते अन्नादि औषधनको पुष्ट करत सूर्य प्रकाश करत भूमि शोधत इत्यादि अलग अलग सबको प्रभाव देखनेते जे मतवादी हैं तिन को पृथक् सम तुम देखाते हौ भाव जोजिस रूपकी उपासना किया ताही को ईश्वर मानता है अरु वास्तवमें ब्रह्म निश्चितहौ अद्वितीय एकहीहौ ५७ (यथामत्स्यादिरूपेणत्वंएकःश्रुतौ चपुराणेषु लोकसिद्धःतथाएवसत्असत्विभागःसर्वंत्वंएवभवतःअन्यत्नविभाति) जैसे मत्स्यादिदश रूपों करि आप एकहीवेद पुनः पुराणोंमें लिखे लोक प्रसिद्धहौ तैसेही सत् देवादि असत् राक्षसादि त्रिभाग रूपते सब आपहीहौ निश्चय करिकै आपसों भिन्न कछु भी नहीं देखाता है भाव सब में व्यापकसारांश आपअन्यत् वृथाहै ५८ (अनंतसृष्टौयत्उत्पत्स्यतेचयत्भवत्चयत्यत्समुत्पन्नंस्थावरजंगमादौ त्वयाविनानदृश्यते अतःपरतःपरःत्वम्) अनंत सृष्टि में ये उत्पन्न होयँगे पुनः येहैं पुनः येये उत्पन्न ह्वैगये तिन स्थावर वृक्षादि जंगम मानुषादि इत्यादि में आप बिना कछुभी नहीं देखि परताहै ताते परतेपर सर्वो परि एक आपहीहौ दूसरा कछु नहीं ५९ ॥

तत्त्वंनजानंतिपरात्मनस्तेजनाःसमस्तास्तवमाययातः ॥ त्वद्भक्तसेवामलमानसानांविभातितत्त्वंपरमेकमैशम् ६० ब्रह्मादयस्तेनविदुःस्वरूपंचिदात्मतत्त्वंवहिरर्थभावाः ॥ ततोवुधस्त्वामिदमेवरूपंभक्त्याभजन्मुक्तिमुपैत्यदुःखः ६१ अहंभवन्नामगृणन्कृतार्थोवसामिकाश्यामनिशंभवान्या ॥ मुमूर्षमाणस्यविमुक्तयेहंदिशामिमंत्रंतवरामनाम ६२ इमंस्तवंनित्यमनन्यभक्त्याशृण्वंतिगायंतिलिखन्तियेवै ॥ ते सर्वसौख्यंपरमंचलब्ध्वाभवत्पदंयांतुभवत्प्रसादात् ६३ ॥

(तवमाययातःतेसमस्ताःजनाः परात्मनःतत्त्वंनजानंति त्वत्भक्तसेवाअमलमानसानांएकंपरमैशंतत्त्वंविभाति) हे रघुनंदन आपकी माया करिकै आच्छादित ते सब विषयीजन परमात्म तत्त्वको नहीं जानते हैं भाव देह व्यवहार सत्य मानि लोक में भेद बुद्धी राखे हैं अरु आपके भक्तोंकी सेवा करिकै कामादि बिकार त्यागि अमल हैं मन जिनके तिनको सब में परिपूर्ण एकही परमेश्वर तत्त्व देखि परताहै ६० (वहिःअर्थभावःब्रह्मादयःतेचिदात्मतत्त्वंस्वरूपंनविदुः ततः वुधःइदंएवत्वांरूपंभक्त्याभजन् अदुःखःमुक्तिंउपैति) हेरघुनंदन देहके बाह्य इंद्री विषयन में सत्य बुद्धिहै जिनकी ऐसे मानुषोंकी कौनकहै ब्रह्मादिक देवतातेभी चैतन्य आत्मतत्त्व स्वरूपको नहीं जानिसकेहैं तातें बुद्धिमान् यही जो श्यामसुंदर आपको स्वरूपहै तिसी को श्रवण कीर्तन स्मरण सेवन अर्चन बंदनादि भक्ति करिकै भजत्संते सब दुःखहीन मुक्ति को प्राप्त होते हैं ६१ (अहंभवान्याभवत्नामगृणन्कृतार्थःअनिशंकाश्यांवसामि मुमूर्षमाणस्यविमुक्तये अहंतवरामनाममंत्रंदिशामि)हेरघुनंदनमैं पार्वती करिकै सहित आपको नाम उच्चारण करत संते कृतार्थ होकर दिनों राति काशी में बास करता हौं तहाँ जीवमात्र को मरण समय उनकी मुक्ति के अर्थ मैं आपको राम नाम महामंत्र उपदेश करि देताहौं ६२ (येवैअनन्यभक्त्याइमंस्तवंनित्यंशृण्वंतिगायंतिलिखंति तेसर्वंपरमंसौख्यंलब्ध्वा चभवत्प्रसादात्भवत्पदंयांतु) हे रघुनन्दन यह मेरी प्रार्थना है ये जननिश्चय अनन्य भक्ति करिकै इस मेरे स्तुति किये हुये आप के स्तोत्र को नित्यहीं श्रवण करैं वा गान करैं वा लिखैं ते जीवन पर्यंत स्त्री पुत्र धनधाम भोजन भूषण बाहनादि सबप्रकारके परम सुखको पावैं पुनः अंतकाल आप के प्रसादतें आपके पद को जावैं ६३ ॥

इन्द्रउवाच ॥ रक्षोधिपेनाखिलदेवसौख्यंहृतंचमेब्रह्मवरेणदेव ॥ पुनश्चसर्वंभवतःप्रसादात्प्राप्तंहतोराक्षसदुष्टशत्रुः ६४ देवाऊचुः ॥ हतायज्ञभागाधरादेवदत्तामुरारेखलेनादिदैत्येनविष्णो ॥ हतोद्यत्वयानोवितानेषुभागाःपुरावद्भविष्यंतियुष्मत्प्रसादात् ६५ पितरऊचुः ॥ हतोद्यत्वयादुष्टदैत्योमहात्मन्गयादौनरैर्दत्तपिंडादिकान्नः ॥ बलादत्तिहत्वागृहीत्वासमस्तानिदानींपुनर्लब्धसत्वाभवामः ६६ यक्षाऊचुः ॥ सदाविष्टिकर्मण्यनेनाभियुक्तावहामोदशास्यंबलाद्दुःखयुक्ताः ॥ दुरात्माहतोरावणोराघवेशत्वयातेवयंदुःखजाताद्विमुक्ताः ६७ ॥

(हेदेवब्रह्मवरेणरक्षोऽधिपेनमेचअखिलदेवसौख्यंहृतंदुष्टशत्रुःराक्षसहतःचभवतःप्रसादात्पुनःसर्वं प्राप्तं) अब इंद्रबोले हे रघुनंदन देवब्रह्मा के बरदान करि गर्वित राक्षसोंको राजा रावणने मेरापुनः सम्पूर्ण देवतों को सुखसाज हरिलिया सो दुष्टशत्रु राक्षस मारागया पुनः आपके प्रसादतें पुनःसब

सुख प्राप्त भया ६४ (हेमुरारेविष्णोधरादेवदत्तायज्ञभागाखलेनमादिदैत्येनहृताभ्रद्यत्वयाहतःयुष्मत्प्र सादात्नःवितानेषुभागाःपुरावत्भविष्यंति) देवता बोले हे मुरके शत्रुविष्णो भूदेवब्राह्मणों कोदिया हुआ यज्ञनको जो हमाराभाग ताको खल रावणनेहरलियारहे अब आपकरिकै दुष्टमारागया तौ आपके प्रसादतेनः अर्थात् हमलोगोंको वितानेषु अर्थात् यज्ञनविषे भाग पूर्वकीनाईं पुनः प्राप्तहोइगो ६५ (गयादौनरैःनःदत्तपिंडादिकान्अतिबलात्हृत्वासमस्तान्गृहीत्वाभ्रद्यत्वयामहात्मन् दुष्टदैत्यः हतःइदानीं पुनः लब्धसत्वाभवामः) पितरबोले हे रघुनंदन गयादिकों में हमारे वंशके मानुषोंकरिकै हमकोदियेजाते श्राद्ध में पिण्डादिक तिनहिं अत्यंतजबरइन हरि सबको रावण ग्रहणकरि लेतारहे सोई अब आपकरिकै महाबली दुष्ट दैत्यमारागया अब पुनः पिंडादिपाय हमलोग बलीहोवेंगे ६६ (बलात्सदाविष्टिकर्माणिअनेनाभियुक्ताःदुःखयुक्ताःदशास्यंवहामः हेराघवेश त्वयादुरात्मारावणःहतः तेवयंदुःखजातात्विमुक्ताः) यक्ष बोले कि जबरइन पकरेहुये सदा वेगारिकर्म जो है इसीकरिकैयुक्त दुःख सहित पालकीआदिकों में रावणको भारवहतेरहे हे रघुवंशनाथ अब आपकरिकै दुष्टरावणमा-रागया ताते हम लोग दुःखसमूहतेछूटिगये ६७ ॥

गंधर्वाऊचुः ॥ वयंसंगीतनिपुणागायंतस्तेकथामृतम्॥आनंदामृतसंदोहयुक्ताःपूर्णाःस्थिताःपुरा ६८ पश्चाद्दुरात्मनारामरावणेनाभिविद्रुताः॥ तमेवगायमानाश्च तदाराधनतत्पराः६९स्थितास्त्वयापरित्राताहतोयंदुष्टराक्षसः ॥ एवंमहोरगाःसिद्धाःकिन्नरामरुतस्तथा ७० वसवोमुनयोगावोगुह्यकाश्चपतत्त्रिणः ॥ सप्रजापतयश्चैतेतथाचाप्सरसांगणः ७१ सर्वेरामंसमासाद्यदृष्ट्वानेत्रमहोत्सवम्॥स्तुत्वा पृथक्पृथक्सर्वेराघवेणाभिनंदिताः ७२ ययुःस्वंस्वंपदंसर्वेब्रह्मरुद्रादयस्तथा ॥ प्रशंसंतोमुदारामंगायंतस्तस्यचेष्टितम् ७३ ॥

(वयंसंगीतनिपुणाःतेकथामृतंगायंतः आनंदामृतसंदोहपूर्णाःयुक्ताःपुरास्थिताः) गंधर्वबोले हे रघुवंशनाथ हमलोग गानविद्यामें निपुण आपकी कथामृतगानकरतेहुये आनंदरूप अमृतसमूह परि-पूर्णयुक्त पूर्वरहतेरहे ६८ (हेरामपश्चात्दुरात्मनारावणेनअभिविद्रुताःतंएवगायमानाःचतत्आरा-धनतत्पराः) हे रघुनंदन पीछे दुष्टरावणने बरबसस्वाधीनकरिराखा तब ताकोभी गुणगानकरतेहुये पुनः तिसीके आराधनमें लगेरहे भावभयकरि उसीको प्रसन्नकरतेरहे ६९ (अयंदुष्टराक्षसःहतः त्वया परित्रातास्थिताः एवंमहाउरगाःसिद्धाः तथाकिन्नराःमरुतः) अब यह दुष्ट राक्षस रावण मारागया आप करिकै रक्षाको प्राप्तभये इसी प्रकार महानाग सिद्ध तैसेही किन्नर मरुत ७० (वसवःमुनयःगावःगुह्यकाःचपतत्त्रिणःसप्रजापतयः एतेचतथाअप्सरसांगणः) द्रोणादि आठौवसु कश्यपादि मुनि कामधेनु आदि गौवें गुह्यक पक्षीगण दक्षादि प्रजापति इत्यादि सब पुनः तैसेही अप्सरा समूह ७१ (सर्वेरामंसमासाद्यनेत्रमहाउत्सवंदृष्ट्वापृथक्पृथक्स्तुत्वासर्वेराघवेणअभिनंदिताः) इत्यादि सबरघु-नाथजीके समीप आयकै नेत्रोंको महाआनंद दायक राज्याभिषेक समयरघुनंदनके दर्शनकरि न्यारी न्यारी स्तुति करि सब रघुनंदन करिकै प्रशंसित भये ७२ (ब्रह्मरुद्रादयःतथासर्वेमुदारामंप्रशंसंतः तस्यचेष्टितंगायंतःस्वंस्वंपदंययुः) ब्रह्मारुद्रादि तथा और सब आनंद सहित रघुनंदन की प्रशंसा करते हुये क्षमाशील सुलभ उदारतादि गुणनमय प्रभु के चरित्रगान करते हुये सब अपने अपने लोकोंको जाते भये ७३ ॥

ध्यायंतस्त्वभिषेकार्द्रंसीतालक्ष्मणसंयुतम् ॥ सिंहासनस्थंराजेंद्रंययुःसर्वेहृदि स्थितम् ७४ खेवाद्येषुध्वनत्सुप्रमुदितहृदयैर्देववृंदैःस्तुवद्भिर्वर्षद्भिःपुष्पवृष्टिंदिवि मुनिनिकरैरीड्यमानंसमंतात् ॥ रामःश्यामःप्रसन्नस्मितरुचिरमुखःसूर्यकोटिप्र काशः सीतासौमित्रिवातात्मजमुनिहरिभिःसेव्यमानोविभाति ७५ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्धकांडेपंचदशःसर्गः १५ ॥

(सीतालक्ष्मणसंयुतंसिंहासनस्थंराजेंद्रंहृदिस्थितंतुअभिषेकार्द्रंध्यायंतःसर्वेययुः) श्रीजनकनंदिनी अरु लक्ष्मण सहित रत्न सिंहासन पर बैठेहुये राजाधिराज तिनहिं हृदय में स्थित किये पुनः राज्या भिषेक समय को जो प्रेमानंद है तामें भीजेहुये सोई समय को ध्यानकरते हुये ब्रह्मा शिव इंद्रादि सब देवता अपने अपने लोकों को जातेभये ७४ (खेवाद्येषुध्वनत्पुष्पवृष्टिंवर्षद्भिः सुप्रमुदितहृदयैःदेववृंदैःस्तुवद्भिःदिविसमंततत्मुनिनिकरैःईड्यमानंसीतासौमित्रिवातात्मजमुनिहरिभिः सेव्यमानोविभाति रामःश्यामःप्रसन्नास्मितरुचिरमुखःसूर्यकोटिप्रकाशः) अब राज्याभिषेक समयराजसमाज सहित रत्न सिंहासन पर आसीन प्रभुको ध्यान कविवर्णन करत यथा आकाशमें विमानों पर अनेक बाजोंमें ध्वनि करतेहुये समूह फूलोंकी वर्षा करिकै अत्यन्त आनन्दहृदय करिकै देवतोंके वृंदस्तुति करते हुये आकाश ते सब दिशो ते मुनिगणों करिकै स्तुति कियेगये पुनः जनकनंदिनी लक्ष्मण हनुमान् मुनिजन वशिष्ठादि सुग्रीवादि वानर इत्यादि करिकै सेवित भाव चमरछत्र व्यजन पानदान पीकदान अतरदान इत्यादि सेवासाज लिहे सब दिशिशोभित मध्य रत्न सिंहासनासीन रघुवंशनाथ सुन्दरश्यामतन प्रसन्न मंद मुसुकानि युत सुन्दर मुख कोटि सूर्यवत् प्रकाश मानहैं ७५ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचितेअध्यात्म भूषणेयुद्धकांडेश्रीरामराज्याभिषेकवर्णनोनामपंचदशःप्रकाशः १५ ॥

महादेवउवाच ॥ रामेभिषिक्तेराजेंद्रेसर्वलोकसुखावहे ॥ वसुधासस्यसंपन्नाफलवंतोमहीरुहाः १ गंधहीनानिपुष्पाणिगंधवंतिचकाशिरे ॥ सहस्रशतमश्वानांधेनूनांचगवांतथा २ ददौशतवृषान्पूर्वंद्विजेभ्योरघुनन्दनः ॥ त्रिंशत्कोटिसुवर्णस्यब्राह्मणेभ्योददौपुनः ३ वस्त्राभरणरत्नानिब्राह्मणेभ्योमुदातथा ॥ सूर्यकांतिसमप्रख्यांसर्वरत्नमयींस्रजम् ४ सुग्रीवायददौप्रीत्याराघवोभक्तवत्सलः ॥ अंगदायददौदिव्येह्यंगदेरघुनन्दनः ५ चंद्रकोटिप्रतीकाशंमणिरत्नविभूषितम् ॥ सीतायैप्रददौहारंप्रीत्यारघुकुलोत्तमः ६ ॥

सवैया ॥ दान द्विजैहनुमान स्वभक्ति सखान बिदाधन भूषण दीन्हे । नीति सधर्म प्रजापति पालन यज्ञ अनेक यशादिक लीन्हे ॥ अल्पन मृत्यु दुकालन व्याधिरहै सब वर्ण स्वधर्महि चीन्हे । आरुज आनद लोगरहैं प्रभुराज्य सबै सुखपूर्ण सुकीन्हे ॥ (राजेंद्रेरामेअभिषिक्तेसर्वलोकसुखावहेवसुधासस्यसम्पन्नामहीरुहाःफलवंतः) शिवजी बोले हे गिरिजा राजाधिराज श्री रामचन्द्र जबराज्या

भिषेककोप्राप्तभये राज्यकरनेलगे तब संपूर्णलोक अन्न धन पुत्र परिवारादि सबभांतिते सुखीभया अरु पृथिवी अन्न करिकै परिपूर्ण रहतीहै अरु वृक्ष सदा फले रहतेहैं १ (पुष्पाणिगंधहीनानिगंधवंतिच काशिरे। शतसहस्रमश्वानांतथाधेनूनांचगवां) फूल जो सुगन्ध हीनहैं तेभी गंधवंतहै प्रकाश करतेभये अरु सउहजार उत्तम घोडे तैसेही सउहजार कामधेनु समगौवै २ (शतवृषान्पूर्वंरघुनन्दनःद्विजेभ्यः ददौ पुनःत्रिंशत्कोटिसुवर्णस्यब्राह्मणेभ्यःददौ) सउ बैलों समेत गौवैं रघुनन्दन ब्राह्मणोंके अर्थ देते भये पुनः तीसकरोरि अशरफी ब्राह्मणोंके अर्थ देतेभये ३ (तथावस्त्रआभरणरत्नानिमुदाब्राह्मणेभ्यः सूर्यकांतिसमप्रख्यांसर्वरत्नमयींस्रजं) तैसेही वसन भूषण रत्न हीरा मुक्तादि आनन्द सहित ब्राह्मणोंके अर्थ देतेभये सूर्य कांतिसम प्रकाश जामे ऐसी रत्नमयमाला ४ (भक्तवत्सलःराघवःप्रीत्यासुग्रीवायददौहिदिव्येअंगदेरघुनन्दनःअंगदायददौ) भक्तनपर प्रीति करणे वाले रघुनन्दन प्रीति सहित वह माला सुग्रीव के अर्थ देते भये निश्चय दिव्य वहूटा रघुनंदन अंगद के अर्थ देतेभये ५ (कोटिचंद्रप्रतीकाशंमणिरत्नविभूषितं। हारंरघुकुलोत्तमःप्रीत्यासीतायैप्रददौ) कोटिचंद्रसमप्रकाशमान मणि रत्नों करि भूपित हार को रघुनन्दन प्रीति सहित जानकी जीके अर्थ देतेभये ६ ॥

अवमुच्यात्मनःकंठात्हारंजनकनंदिनी ॥ अवैक्षतहरीन्सर्वान्भर्तारंचमुहुर्मुहुः ७ रामस्तामाहवैदेहीमिंगितज्ञोविलोकयन् ॥ वैदेहियस्यतुष्टासिदेहितस्मैवरानने ८ हनूमतेददौहारंपश्यतोराघवस्यच ॥ तेनहारेणशुशुभेमारुतिर्गौरवेणच ९ रामोपिमारुतिंदृष्ट्वाकृतांजलिमुपस्थितम् ॥ भक्त्यापरमयातुष्टइदंवचनमब्रवीत् १० हनूमांस्तेप्रसन्नोस्मिवरंवरयकांक्षितम् ॥ दास्यामिदेवैरपियत्दुर्लभंभुवनत्रये ११ हनूमानपितंप्राहनत्वारामंप्रहृष्टधीः ॥ त्वन्नामस्मरतोरामनतृप्यतिमनोमम १२ ॥

(आत्मनःकंठात्हारंअवमुच्यजनकनंदिनी सर्वान्हरीनचमुहुःमुहुःभर्तारंअवैक्षत्) अपने कण्ठते हारकोउतारि जनकनंदिनी सब वानरोंकोदेखि पुनः आज्ञालेने हेतु वारम्वार पतिकी ओर देखतीहैं भाव यह हार किसकोदेवें ७ (इंगितज्ञःरामःवैदेहींविलोकयन्तांआह हे वैदेहिवराननेयस्यतुष्टासित स्मैदेहि) चेष्टाको जाननेवाले रघुनंदन विदेहपुत्रीको देखतसंते तिनप्रति बोलतेभये हे विदेहनंदिनी उत्तम वदने जिसकेऊपर तुम प्रसन्नहोउ तिसके अर्थ यह मालादेहु ८ (राघवस्यपश्यतःचहारंहनूमतेददौतेनहारेणचगौरवेणमारुतिःशुशुभे) रघुनंदनके देखतेही पुनः जानकीजी उसहारको हनूमान्के अर्थ देतीभई तिस हारको पायकरिकै पुनः समाजकेवीचमें जानकीजीके अधिक आदरकरिकै हनूमान् बड़ी शोभापाये ९ (कृतांजलिंउपस्थितंमारुतिंदृष्ट्वापरमयाभक्त्यातुष्टःरामः अपिइदंवचनं अब्रवीत्) हाथजोरेहुये समीप बैठेहुये जो पवनपुत्र तिनहिंदेखि पुनः हनुमान्की परमभक्तिकरिकै प्रसन्नहै रघुनंदन भी ऐसा वचन बोलतेभये १० (हे हनूमानतेप्रसन्नःअस्मिकांक्षितंवरंवरययत् भुवनत्रयेदेवैःअपिदुर्लभम्दास्यामि) रघुनंदन बोले हे हनूमान् तुम्हारे ऊपरमैं बहुत प्रसन्नहौं ताते जो कांक्षा मनोकामनाहोइ सो वरमांगो जो तीनिहूंलोकों में देवतोंकरिकै प्राप्ती दुर्लभहोय सो वर तोहिं मैं देहुंगा ११ (प्रहृष्टधीःरामंनत्वाहनूमान्अपितंप्राह हे रामत्वत्नामस्मरतःममनःतृप्यति न) प्रसन्नमन रघुनंदन को प्रणामकरि तिनप्रति हनूमान् भी बोलतेभये हे श्रीरघुनाथजी आपको नाम स्मरणकरतमें मेरामन कभी तृप्तनहींहोता है १२ ॥

अतस्त्वन्नामसततंस्मरन्स्थास्यामिभूतले ॥ यावत्स्थास्यतितेनामलोकेतावत्कलेवरम् १३ ममतिष्ठतुराजेंद्रवरोऽयंमेभिकांक्षितः॥रामस्तथेतितंप्राहमुक्तस्तिष्ठ यथासुखम् ॥ १४ कल्पांतेममसायुज्यंप्राप्स्यसेनात्रसंशयः १५ तमाहजानकी प्रीतायत्रकुत्रापिमारुते ॥स्थितंत्वामनुयास्यंतिभोगाःसर्वेममाज्ञया १६ इत्युक्तो मारुतिस्ताभ्यांईश्वराभ्यांप्रहृष्टधीः॥आनंदाश्रुपरीताक्षोभूयोभूयःप्रणम्यतौ ॥कृच्छ्राद्ययौतपस्तप्तुंहिमवंतंमहामतिः १७ ततोगुहंसमासाद्यरामःप्रांजलिमब्रवीत् ॥ सखेगच्छपुरंरम्यंशृंगिवेरमनुत्तमम् १८ ॥

(अतःसततंत्वत्नामस्मरन्भूतले स्थास्यामियावत्तेनामलोकेस्थास्यतितावत्ममकलेवरंतिष्ठतु) इससे हे रघुनाथजी निरंतर आपको नाम स्मरण करताहुआ भूतल में स्थितरहौं अरु जब तक आपको नाम लोक में प्रसिद्धरहै तबतक मेरा शरीर ऐसेही बनारहै १३ (राजेंद्र अयंवरःमेअभिकांक्षितः तथाइतिरामःतंप्राह मुक्तः यथासुखंतिष्ठ) हे राजाधिराज यही वर मैं चाहताहौं सो दीजिये सो सुनि प्रभुबोले हे हनुमान् जो तुमनेमांगा सोई मैं दिया ऐसा कहि रघुनंदन पुनः तिन प्रति बोले हे हनूमान् तुम जीवन्मुक्तहौ स्वइच्छित सुखपूर्वक पृथिवीपर स्थितरहौ १४ (कल्पांतेममसायुज्यंप्राप्स्यसेअत्रसंशयःन) अरु कल्पांत में महाप्रलय काल में मेरी सायुज्यमुक्तिको प्राप्तहोहुगे यामें संशय नहीं है १५ (जानकीप्रीतातंआहमारुतेयत्रकुत्रापिस्थितं ममाज्ञयासर्वेभोगाःत्वांअनुयास्यंति) पुनः जानकीजी प्रीतिपूर्वक तिनहनुमान्प्रति बोलतीभई हेपवनपुत्र तुमजहांकहौंरहौगे तहां मेरी आज्ञाकरिकै सब सुखभोग तुम्हारेपास प्राप्तबनेरहैंगे १६ (इतिताभ्यांईश्वराभ्यांउक्तःमारुतिः प्रहृष्टधीःआनंदाश्रुपरीताक्षःतौभूयःभूयः प्रणम्यमहामतिःकृच्छ्रात्तपःतप्तुंहिमवंतंययौ) इस प्रकार तिन दोऊ ईश्वर सीतारामकरिकै कहेगये पवनपुत्र हनूमान् सो प्रेमानंदकरिकै उमगे आंशुभरे हैं नेत्र जाके ऐसे जो हनुमान् सो सीतारामको बारम्बार प्रणामकरिकै बड़े बुद्धिवंत परमकष्टसे तप करनेको हिमालयकोजातेभये १७ (ततःप्रांजलिंगुहंसमासाद्यरामःअब्रवीत् सखेअनुत्तमंशृंगिवेरंपुरंरम्यंगच्छ) तदनन्तर हाथजोरे खड़ाहुआ जो निषादराजगुह ताको प्राप्त ह्वै अर्थात् देखिकै रघुनंदन बोलतेभये कि हे सखे तुम अब उत्तम शृंगिवेरपुर जो सुंदर है तहांकोजाहु १८ ॥

मामेवचिंतयन्नित्यंभुंक्ष्वभोगान्निजार्जितान्॥अंतेममैवसारूप्यंप्राप्स्यसेत्वंनसंशयः १९ इत्युक्त्वाप्रददौतस्मैदिव्यान्याभरणानिच ॥ राज्यंचविपुलंदत्वाविज्ञानंचददौविभुः २० रामेणालिंगितोहृष्टोययौस्वभवनंगुहः ॥ येचान्येवानराःश्रेष्ठा अयोध्यांसमुपागताः २१ अमूल्याभरणैर्वस्त्रैःपूजयामासराघवः॥ सुग्रीवप्रमुखाः सर्वेवानराःसविभीषणाः २२ यथार्हंपूजितास्तेनरामेणपरमात्मना ॥ प्रहृष्टमनसः सर्वेजग्मुरेवयथागतम् २३ सुग्रीवप्रमुखाःसर्वेकिष्किंधांप्रययुर्मुदा ॥ विभीषणस्तुसंप्राप्यराज्यंनिहतकंटकम् २४ ॥

(नित्यंमांएवचिंतयन्निजार्जितान्भोगान्भुंक्ष्वअंतेममसारूप्यंत्वंएवप्राप्स्यसेसंशयःन) सदामेरा चिंतवन स्मरण करत संते अपने उपराजे अर्थात् प्रारब्धी सुख भोगोंको जीवत भोगकरौ अंतकाल में मेरसारूप्य मुक्ति को तुमभी प्राप्त होहुगे यामें संशय नहीं है १९ (इतिउक्त्वादिव्यानिआभर-

णानितस्मैप्रददौचविपुलंराज्यंदत्वाचविभुःविज्ञानंददौ) ऐसाकहि रघुनंदन पुनः दिव्यभूषण तिस निषादराज के अर्थ देते भये पुनः बहुतराज्य देकै पुनः प्रभु विज्ञान देतेभये २० (रामेणआलिंगितः हृष्टःगुहःस्वभवनंययौचयेअन्येश्रेष्ठावानराःअयोध्यांसमुपागताः) रघुनंदन करिकै हृदय में लगाय मिला हुआ गुह निषादराज आनंद सहित अपने घरको गया पुनः जे और उत्तम बानर अयोध्या जीको आये रहैं २१ (अमूल्यआभरणैःवस्त्रैः राघवःपूजयामाससविभीषणाः सुग्रीवप्रमुखाःसर्वेवानराः) बड़ेमोलके भूषणयथा किरीट कुंडलहार अंगद पहुंची मुद्रिका क्षुद्रघंटिकादि तथा जामा पाग उरमाल दुशाला पटुका धोतीइत्यादि बसन भूषणों करिकै रघुनंदन सबको पूजाकरते भये सहित विभीषण अरु सुग्रीव आदि दै सब वानर २२ (परमात्मनारामेणतेनयथार्हंपूजिताःयथाआगतम्प्रहृष्टमनसः सर्वेजग्मुःएव) परमात्मा जो रघुनंदन तिन करिकै सबयथायोग्य पूजेगये तब जैसे पूर्व आये रहैं तैसेही प्रसन्नमन सब जाते भी गये अर्थात् राज्याभिषेक देखनेआये सो देखे प्रभुकी आज्ञापाय प्रसन्न मन चले २३ (सुग्रीवप्रमुखाःसर्वेमुदाकिष्किंधांप्रययुःतुविभीषणःनिहतकंटकम्राज्यंसंप्राप्य)सुग्रीवादि सबवानर आनंद सहित किष्किंधा को जाते भये पुनः विभीषण भी अकंटक राज्यको प्राप्तहैकै२४॥

रामेणपूजितःप्रीत्याययौलंकामानिंदितः ॥ राघवोराज्यमखिलंशशासाखिलवत्सलः २५ अनिच्छन्नपिरामेणयौवराज्येभिषेचितः ॥ लक्ष्मणःपरयाभक्त्यारामसेवापरोभवत् २६ रामस्तुपरमात्मापिकर्माध्यक्षोऽपिनिर्मलः ॥ कर्तृत्वादिविहीनोपिनिर्विकारोपिसर्वदा २७ स्वानंदेनापितुष्टःसन्लोकानामुपदेशकृत् ॥ अश्वमेधादियज्ञैश्चसर्वैर्विपुलदक्षिणैः २८ अयजत्परमानंदोमानुषंवपुराश्रितः ॥ नपर्यदेवन्विधवानचव्यालकृतंभयम् २९ नव्याधिजंभयंचासीद्रामेराज्यंप्रशासति॥ लोकेदस्युभयंनासीदनर्थोनास्तिकश्चन ३० ॥

(प्रीत्यारामेणपूजितःअनिंदितःलंकांययौअखिलवत्सलःराघवःअखिलंराज्यंशशास) प्रीतिसहित रघुनंदन करिकै पूजेगये ताते निंदारहित विभीषण लंकाको जाते भये भाव कुलनाशक भी प्रभु कृपाते निंदाको न प्राप्तभये सबपर प्रीति करनेवाले रघुनंदन सम्पूर्ण भूमंडल की राज्यको रक्षाकरते भये २५ (परयाभक्त्यालक्ष्मण.रामसेवापरःअभवत्अनिच्छन्अपिरामेणयौवराज्येअभिषेचितः) परा भक्ति अर्थात् सदाएकरस प्रेमसहित लक्ष्मणजी रघुनाथजी की सेवामें तत्पर होतेभये जिनको मान बड़ाई लौकिक सुखादि किसी बातकी इच्छानहींहै परंतु रघुनाथजीने उनको युवराज पदमें अभिषेक किया २६ (तुरामःपरमात्माअपिकर्माध्यक्षःअपिकर्तृत्वादिविहीनःअपि निर्विकारःअपिसर्वदानिर्मलः) पुनःरघुनंदन परमात्मा हैं जीवनको शुभाशुभ कर्मोंको यथार्थफल दाता कर्तृत्वादि दोपरहित रजतमादि विकार रहित सबकाल में अमल हैं २७ (स्वआनंदेनअपितुष्टःसन्लोकानांउपदेशकृत् अश्वमेधादिसर्वैःयज्ञैः च विपुलदक्षिणैः) अपने आनंद मेंभी सदापरिपूर्ण रहतसंते तौभी लोकजनों को उपदेश करत संते जो उत्तम राजोंको धर्म है सो अश्वमेधादि सबयज्ञों करिकै पुनः बहुतदक्षिणा करिकै २८ (परमानंदःमानुषंवपुःआश्रितःअयजत्विधवान्पर्यदेवनचनव्यालकृतंभयम्) परम आनंदरूप रघुनंदन तौभी मानुषतनुके आश्रित सहित दक्षिणायज्ञादि करतेहैं जिनकी राज्यमें विधवा नहीं रोवत देखातनसर्पकृत भय किसी को होवै २९ (रामेराज्यंप्रशासतिलोकेनव्याधिजंभयंआसीत्चनदस्युभयंआसीत्कश्चनअनर्थःनास्ति) रघुनंदन के राज्यकरत संते लोकमें न किसीको रोगकी

भयहोवै न किसीको चोरकीभयहोवै न किसीको कभी कछुअनर्थहोवै सबलोग सदासुखी रहतेहैं ३०॥

वृद्धेषुसत्सुबालानांनासीन्मृत्युभयंतथा॥रामपूजापराःसर्वे सर्वेराघवचिंतकाः ३१ ववर्षुर्जलदास्तोयंयथाकालंयथारुचि ॥ प्रजाःस्वधर्मनिरतावर्णाश्रमगुणान्विताः ३२ औरसानिवरामोऽपिजुगोपपितृवत्प्रजाः ॥ सर्वलक्षणसंयुक्तःसर्वधर्मपरायणः ३३ दशवर्षसहस्राणिरामोराज्यमुपारतसः ३४ इदंरहस्यंधनधान्यऋद्धिमत्दीर्घायुरारोग्यकरंसुपुण्यदम् ॥ पवित्रमाध्यात्मिकसंज्ञितंपुरारामायणंभाषितमादिशंभुना ३५ शृणोतिभक्त्यामनुजःसमाहितोभक्त्यापठेद्वापरितुष्टमानसः ॥ सर्वाःसमाप्नोतिमनोगताशिषोविमुच्यतेपातककोटिभिःक्षणात् ३६ ॥

(वृद्धेषुसत्सुबालानांमृत्युभयंनआसीत् तथासर्वेरामपूजापराः सर्वेराघवचिंतकाः) वृद्ध पितादि के बने रहे संते बालकन को मृत्यु भय नहीं होतीहै तैसे सब मनुष्य देह करिकै रघुनन्दनके पूजन में तत्पर रहते हैं तथा मन करिकै रघुनन्दन को सब चिंतवन करते हैं ३१ (यथाकालंयथारुचिजलदाःतोयंववर्षुः वर्णाश्रमगुणान्विताः प्रजाःस्वधर्मनिरताः) जैसा काल आवत ताही अनुकूल जैसी प्रजन की रुचि होती है तैसेही मेघ जल को वर्षते भये सब वर्ण आश्रम उत्तम गुणन युक्त प्रजा आपने आपने धर्म आचरण में रत भये ३२ (सर्वलक्षणसंयुक्तःसर्वधर्मपरायणःरामः अपिपितृवत् औरसान्इवप्रजाःजुगोप) क्षमा दया शील सुलभ उदारतादि सब लक्षण युत सत्य शौच तप दान यज्ञ स्वाध्याय संयम नियम इत्यादि सर्व धर्म में तत्पर रघुनन्दन भी पिता तुल्य अपने पुत्रन के समान प्रजा पालतेहैं ३३ (सहरामःदशसहस्राणिवर्षराज्यंउपास्त)सोरघुनन्दन दशहजारबर्ष राज्य किन्हे ३४ (आदिशंभुनाभाषितंपवित्रंअध्यात्मिकंसंज्ञितंपुरारामायणंइदंरहस्यंधनधान्यऋद्धिमत्आरोग्यदीर्घायुःकरंसुपुण्यदं) प्रथम पार्वती प्रति शिवजीने बर्णन किया अध्यात्म नामे पवित्र पूर्व रामायण येह जो रहस्य सो धन धान्य बढ़ने वाला आरोग्यतायुत बड़ी आयुर्बल करणे वाला पुण्य बढ़ावने वाला है ३५ (समाहितःमनुजःभक्त्याशृणोति वापरितुष्टमानसःभक्त्यापठेत्मनोगताशिषः सर्वाःसमाप्नोति पातककोटिभिःक्षणात्विमुच्यते) एकाग्रचित्त ह्वै जोमनुष्य भक्ति करिकै इस रामायण को श्रवण करताहै अथवा प्रसन्न ह्वै भक्ति करिकै पढ़ताहै सो मनुष्य मनके उठे हुये मनोरथन को सब को पावताहै अरु पातक करोरिन करिकै बँधा हुआ क्षण में छूटि जाता है ३६ ॥

रामाभिषेकंप्रयतःशृणोतियोधनाभिलाषीलभतेमहद्धनम् ॥ पुत्राभिलाषीसुतमार्यसंमतंप्राप्नोतिरामायणमादितःपठन् ३७ शृणोतियोध्यात्मिकरामसंहितांप्राप्नोतिराजाभुवमृद्धसंपदम् ॥ शत्रून्विजित्यारिभिरप्रधर्षितोऽव्यपेतदुःखोविजयीभवेन्नृपः ३८ स्त्रियोपिशृण्वंत्यधिरामसंहितांभवंतिताजीवसुताश्चपूजिताः॥बंध्यापिपुत्रंलभतेसुरूपिणंकथामिमांभक्तियुतांशृणोतिया ३९ श्रद्धान्वितोयःशृणुयात्पठेन्नरोविजित्यकोपंचतथाविमत्सरः ॥ दुर्गाणिसर्वाणिविजित्यनिर्भयोभवेत्सुखीराघवभक्तिसंयुतः ४० ॥

(यःधनाभिलाषीप्रयतःरामाभिषेकंशृणोतिमहत्धनंलभते पुत्राभिलाषीआदितः रामायणंपठन् आर्यसंमतंसुतंप्राप्नोति) जो मनुष्य धनकी अभिलाषा करि इसप्रयतः अर्थात् पवित्रश्रीराम राज्या-

भिषेक चरित्र को सावधान ह्वै सुनता है सो बहुते धन को पावता है तथा पुत्र की प्रा
जो मनुष्य आदि ते अंत तक रामायण को पढ़ता है सो श्रेष्ठों के आदरणीय उत्तम पुत्र को पावता है ३७ (आध्यात्मिकरामसंहितांयः राजाशृणोतिऋद्धिसंपदंभुवं प्राप्नोतिअरिभिः अप्रधर्षितः शत्रूनविजित्यदुःखः व्यपेतनृपः विजयीभवेत्) अध्यात्म नामे राम संहिता को जोराजा श्रवण करताहै सो ऋद्धि सम्पदा सहित भूमिको प्राप्त होता है अरु शत्रुन करिकै अजित ह्वै शत्रुन को जीति सब प्रकार दुःखों से रहित ह्वैकै वह राजा लोक विजयी सब कों जीतनेवाला होता है ३८ (अधिरामसंहितांस्त्रियः अपिशृण्वंतिताजीवसुताः चपूजिताः भवंतियाबन्ध्यापिभक्तियुतांइमांकथांशृणोतिसुरूपिणंपुत्रंलभते) अध्यात्मरामायण को मृतवत्सास्त्री भी सुनें सो जीवत सुता होवैं अर्थात् जिनके पुत्र मरि जाते होयँ तिनके पुत्र जीवत रहैं पुनः लोक पूजित होवैं पुनः जो वंध्या भी भक्ति युक्त ह्वै इस कथा को सुनती है सो स्त्री सुंदर स्वरूपवन्त पुत्र पावती है ३९ (यःनरःश्रद्धान्वितःशृणुयात् चतथाविजित्यकोपंविमत्सरःपठेत् सर्वाणिदुर्गाणिविजित्यनिर्भयः राघवभक्तिसंयुतःसुखीभवेत्) जो मनुष्य श्रद्धा सहित इस कथा को श्रवण करे पुनः तैसेही क्रोध को जीति मत्सरता पर सम्पत्ति न देखि सकना इत्यादि रहित शुद्ध शांत ह्वै पाठ करै सो सब क्लेशों को जीति निर्भय ह्वै रघुनन्दन की भक्ति सहित सदा सुखी रहै ४० ॥

सुराःसमस्ताअपियांतितुष्टतांविघ्नाःसमस्ताअपयांतिशृण्वताम् ॥ अध्यात्मरामायणमादितोनृणांभवतिसर्वाअपिसंपदःपराः ४१ रजस्वलावायदिरामतत्पराशृणोतिरामायणमेतदादितः ॥ पुत्रंप्रसूतेऋषभंचिरायुषंपतिव्रतालोकसुपूजिताभवेत्४२पूजयित्वातुयेभक्त्यानमस्कुर्वंतिनित्यशः॥सर्वैःपापैर्विनिर्मुक्ताविष्णोर्यांतिपरंपदम् ४३ अध्यात्मरामचरितंकृत्स्नंशृण्वंतिभक्तितः ॥ पठंतिवास्वयंवक्त्रात्तेषांरामःप्रसीदति ४४ रामएवपरब्रह्मतस्मिंस्तुष्टेखिलात्मनि ॥ धर्मार्थकाममोक्षाणांयद्यदिच्छतितद्भवेत् ४५॥

(अध्यात्मरामायणंआदितःशृण्वतांनृणांसमस्ताःसुराःअपितुष्टतांयांतिसमस्ताःविघ्नाःअपयांति सर्वाःसंपदःपराःअपिभवंति) अध्यात्मरामायणको आदिते अंततक सुननेवाले मनुष्योंपर सबदेवता भी प्रसन्नहोतेहैं अरु सबविघ्न नाशको प्राप्त होतेहैं अरु अन्नधनधामधराभूषण बाहन इत्यादि सब संपदा युक्त सुखी होताहै ४१ (वायदिरजस्वलारामतत्पराएतत्रामायणंआदितःशृणोतिऋषभंचिरायुषंपुत्रंप्रसूतेपतिव्रतालोकसुपूजिताभवेत्) अथवा जोरजस्वलास्त्री ऋतुस्नानकरिकै श्रीरघुनन्दन के रूपको ध्यानराखि नामोच्चारण पूर्वक इस रामायणको आदिते अंतसमाप्तीतकसुनैतौ बड़ाउत्तम दीर्घायुअर्थात् बड़ीउम्रवाला पुत्रको उत्पन्नकरै तथापतिव्रता अरुलोकजनोंकरिकै पूजनकरिबेयोग्य होवै ४२(येभक्त्यानित्यशःपूज्ययित्वातुनमस्कुर्वंतिसर्वैःपापैः विनिर्मुक्ताःविष्णोःपरंपदंयांति)येजन भक्तिकरिकै नित्यही अध्यात्मरामायण की पुस्तकको पूजन करतेहैं पुनःनमस्कार करतेहैं तेजन सब पापोंसे छूटिकै विष्णुके परमपदको प्राप्तहोते हैं ४३ (अध्यात्मरामचरितं कृत्स्नंभक्तितःशृण्वंति वास्वयंवक्त्रात्पठंतितेषांरामःप्रसीदति) अध्यात्मनामेरामचरित अर्थात् अध्यात्मरामायण संपूर्ण को भक्तिते श्रवणकरते हैं अथवा अपने मुखते पाठकरते हैं तिनपर श्रीरघुनाथजी प्रसन्नहोते हैं ४४ (अखिलात्मनिपरब्रह्मरामएवतस्मिंस्तुष्टेकामार्थधर्ममोक्षाणांयत्यत्इच्छतितत्तत्भवेत्) सब

चराचरके आत्मा परंब्रह्मरघुनाथजी के प्रसन्नहोतसंते काम अर्थ धर्म मोक्ष इत्यादि जो जो इच्छा करताहै सो सो प्राप्तहोताहै ४५ ॥

श्रोतव्यंनियमेनैतद्रामायणमखण्डितम् ॥ आयुष्यमारोग्यकरंकल्पकोट्यघनाशनम् ४६ देवाश्चसर्वेतुष्यंतिग्रहाःसर्वेमहर्षयः ॥ रामायणस्यश्रवणेतुष्यंतिपितरस्तथा ४७ अध्यात्मरामायणमेतदद्भुतंवैराग्यविज्ञानयुतंपुरातनम् ॥ पठंतिशृण्वंतिलिखंतियेनरास्तेषांभवेऽस्मिन्नपुनर्भवोभवेत् ४८ आलोड्याखिलवेदराशिमसकृद्यत्तारकंब्रह्मतद्रामोविष्णुरहस्यमूर्तिरितियोविज्ञायभूतेश्वरः ॥ उद्धृत्याखिलसारसंग्रहमिदंसंक्षेपतःप्रस्फुटंश्रीरामस्यनिगूढतत्त्वमखिलंप्राहप्रियायैभवः ४९ ॥

इतिश्रीअध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्धकाण्डेषोडशःसर्गः १६ समाप्तः ॥

(आयुष्यंआरोग्यकरंकोटिकल्पअघनाशनंएतत्रामायणंअखंडितंनियमेनश्रोतव्यं) दीर्घायु आरोग्यताको करणहारी अरु करोरिन कल्पनके जीव के संचित कियेहुये पापोंको नाशकरणहारी यह जो रामायण है ताहि संपूर्ण को नियम करिकै श्रवण करना चाहिये ४६ (रामायणस्यश्रवणेसर्वेदेवाःचग्रहाःतुष्यंतिसर्वेमहर्षयःतथापितरःतुष्यंति) रामायणके श्रवणकरत संते ब्रह्मा शिव इंद्रादि सब देवता पुनः सूर्यादि सब ग्रह प्रसन्नहोते हैं पुनः नारदादि महात्रृषीश्वर तैसेही सब पितृ प्रसन्न होते हैं ४७ (वैराग्य विज्ञानयुतंपुरातनं एतत्अद्भुतंअध्यात्मरामायणंयेनराः पठंतिशृण्वंतिलिखंति तेषांअस्मिन्भवेपुनर्भवःनभवेत्) वैराग्य विज्ञान युत पुरातन यहजो अद्भुत अध्यात्मरामायण है ताहि जे मनुष्यपढ़ते हैं वा श्रवण करतेहैं वा पुस्तक अपनेहाथ ते लिखते हैं तिन मनुष्योंको इस संसारमें पुनः जन्म नहीं होताहै भाव परंपदपावते हैं ४८ (अखिलवेदराशिंअसकृत् भूतेश्वरः आलोड्ययत्तारकंब्रह्मतत् विष्णुरहस्यमूर्तिःरामः इतिविज्ञाय यः अखिलसारसंग्रहं उद्धृत्यसंक्षेपतः इदंरामस्यनिगूढतत्त्वंप्रस्फुटंभवः अखिलंप्रियायैप्राह) सूतजी की वाक्यहै अखिल संपूर्ण जो वेद की राशिमहा विस्तारहै ताहि असकृत अर्थात् अनेक बारभूतेश्वर महादेव आलोड्यविचार करिकै जो तारक ब्रह्म सोई विष्णु रहस्य अर्थात् परमात्माकी गुप्तमूर्ति रघुनाथजी हैं ऐसा जानिकै ताही परात्मरूपके बोधक जो अखिलसंपूर्ण वेदोंकोसार जोअनेक उपनिषदें हैं तिनको संग्रह अर्थात् सब बटोरि तिनते उद्धृत्यसार भाग निकारि संक्षेपते यह जो अध्यात्मरामायण रघुनाथजी को गूढतत्त्वहै ताहि प्रकट करनेको शिवजी अपनी प्रिया जोपार्वती तिनके अर्थ सुनावते भये ४९ ॥

कवित्त ॥ बैठेभद्रआसनै समाज राजशशिताज भ्राजअंगअंग मणिभूषणझलकहैं । मुनिनसमाज सहमुनिराजकंज करकलित ललित कृतहियमें ललकहै ॥ बैजनाथ सीतानाथ माथपैबिराजै स्वच्छ अक्षत निशाक्षतसमक्ष अपलक है । सुयशझलककी सुकीर्तिखलकाखलक की प्रतापकी फलककीधौं राजसीतिलकहै १ सूरभूबिलासकृत चकृतशतकृतलौ प्रतिबद्धकृत केतु सकृतभुगापभो । दुष्कृतादि वांधप्रतिघास्मरकुमुद हतजीव मन्युदुक्रमाघ मोषकसतापभो ॥ मंडल अखंडप्रथ्युयौतखंड बैजनाथसुहृदमनाब्जहृष्ध्वंत परदापभो । अनूततम्पूष पुरपूर्व आसरामभद्रआसनोदयाद्रि भानुउदितप्रतापभो २

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतबैजनाथ
विरचितेअध्यात्मभूषणेयुद्धकांडेषोडशःप्रकाशः १६ ॥

अथ अध्यात्मरामायण उत्तरकाण्ड सटीक ॥

जयतिरघुवंशतिलकःकौशल्याहृदयनंदनोरामः ॥ दशवदननिधनकारीदाशरथिः पुंडरीकाक्षः १ पार्वत्युवाच ॥ अथरामःकिमकरोत्कौशल्यानंदवर्द्धनः ॥ हत्वामृधे रावणादीन्राक्षसान्भीमविक्रमः २ अभिषिक्तस्त्वयोध्यायांसीतयासहराघवः ॥ मायामानुषतांप्राप्यकतिवर्षाणिभूतले ३ स्थितवान्लीलयादेवःपरमात्मासनातनः ॥ अत्यजन्मानुषंलोकंकथमंतेरघूद्वहः ४ एतदाख्याहिभगवन्श्रद्धत्याममप्रभो ॥ कथापीयूषमास्वाद्यतृष्णामेतीववर्द्धते रामचंद्रस्यभगवन्ब्रूहिविस्तरशः कथाम् ५ ॥

सवैया ॥ ऋषिवृंद अगस्त्यहि आवतहीं उठिकै रघुनंदन पॉयधरे। दियआसन पूजन बैठिबिनै करते घननादप्रशंसपरे ॥ मुनिक्यों घननाद प्रशंसतहौ बलबीर सुदुष्टरहे सगरे। तबउत्पति रावण आदिन की प्रभुपास अगस्त्य बखानकरे ॥ (कौशल्याहृदयनंदनःदाशरथिःदशवदननिधनकारीरघुवंशतिलकःपुंडरीकाक्षःरामःजयति) कौशल्या के हृदयको आनंद दायक दशरथ के पुत्र रावण को नाश करणहारे रघुवंश शिरोमणि कमलनयन रामकी जयहोय १ (भीमविक्रमःरावणादीन् राक्षसान्मृधे हत्वाकौशल्यानंदवर्द्धनःरामः अथकिंमकरोत्) पुनः पार्वतीजी पूछती भईं कि हे भगवन् भयंकर पराक्रमी रावणादि राक्षसों को संग्राम में मारि कौशल्या के आनंद बढ़ावने वाले रामचंद्र राज्याभिषेकको प्राप्तभये पीछेपुनः क्याकरते भये२(अयोध्यायांअभिषिक्तःतुसीतयासहराघवःमायामानुषतां प्राप्तभूतलेकतिवर्षाणि) अयोध्या बिषे राज्याभिषेक को प्राप्तभये पुनः सीता सहित रघुनंदन माया करिकै मानुषभावको प्राप्त भूतल विषे कितने बर्षन तक ३ (सनातनःपरमात्मादेवः लीलयास्थितवान्अंतेरघूद्वह मानुषंलोकंकथंअत्यजन्) सनातन सदाएक रसपरमात्मादेव रघुनाथजी लीलाकरिकै मानुष रूपते कितनेवर्ष अयोध्यामें स्थितरहे पुनः अंतकालमें रघुवंशनाथ मानुषलोकको कौनभांति त्यागकरते भये ४ (हे भगवन्एतत्आख्याहि प्रभोममश्रद्धत्याकथापीयूषंआस्वाद्य मे अतीवतृष्णा वर्द्धतेभगवन् रामचंद्रस्यकथांविस्तरशःब्रूहि) हे भगवन् जो मैंने प्रश्न किया है यहकृपा करिकहिये हे प्रभो मैं श्रद्धावन्तहौं क्योंकि कथा रूपजो अमृतहै ताहिपान करनेकी मेरे अत्यंत प्यासबढ़तीजाती है ताते हे भगवन् श्रीरघुनाथजीकी कथाको बिस्तारपूर्वक वर्णन कीजिये ५ ॥

श्रीमहादेवउवाच ॥ राक्षसानांवधंकृत्वाराज्यंरामउपस्थिते ॥ आययुर्मुनयःसर्वे श्रीराममभिवंदितुं ६ विश्वामित्रोऽसितःकण्वोदुर्वासाभृगुरंगिराः॥कश्यपोवामदेवोऽत्रिस्तथासप्तर्षयोमलाः ७ अगस्त्यःसहशिष्यैश्चमुनिभिःसहितोभ्यगात् ॥ द्वारमासाद्यरामस्यद्वारपालमथाब्रवीत् ८ ब्रूहिरामायमुनयःसमागत्यबहिःस्थिताः ॥ अगस्त्यप्रमुखाःसर्वेआशीभिरभिनंदितुं ९ प्रतिहारस्ततोराममगस्त्यवचनाद्रुतं ॥ नमस्कृत्वाब्रवीद्वाक्यंविनयावनतःप्रभुम् १० कृतांजलिरुवाचेदमगस्त्योमुनिभिःसह ॥ देवत्वद्दर्शनार्थायप्राप्तोबहिरुपस्थितः ११ ॥

(राक्षसानांवधंकृत्वारामराज्यंउपस्थितेश्रीरामंअभिवंदितुंसर्वेमुनयःआययुः) शिवजी बोले हेगिरिजा रावणादि राक्षसों को बध करि अयोध्याजीमें आयरघुनन्दन के राज्यपदपर उपस्थित होत संते श्रीरघुनाथजीको प्रणाम करिबेको सब मुनिलोग अयोध्याजीको आवतेभये ६ विश्वामित्र अरु असित अरु कण्व अरु दुर्वासा अरु भृगु अरु अंगिरा अरु कश्यप अरु वामदेव अरु अत्रि (तथाअमलःसप्तऋषयः) तैसेही अमल हृदयवाले जे सप्तऋषिनमें बाकीरहे यथा वशिष्ठ भरद्वाज गौतम पुलह नारद जमदग्निपुलस्ति७ (मुनिभिःसहितःचसहशिष्यैः अगस्त्यः अभ्यगात्रामस्यद्वारंआसाद्य अथद्वारपालंअब्रवीत्) विश्वामित्रादि मुनिन सहित पुनःअपनेशिष्य सुतीक्ष्णादि सहित अगस्त्यजी आय रघुनंदनकेद्वारपर प्राप्तह्वैकैद्वारपालप्रति बोलतभये८(रामायब्रूहिअगस्त्यप्रमुखाःसर्वेमुनयःआशीभिःअभिनंदितुंसमागत्यबहिःस्थितः) हेद्वारपाल जाय रघुनन्दन से कहौ कि अगस्त्यआदि सबमुनि लोग आशीर्वादों करि आनंददेने को आये मंदिरके बाहेर द्वारपरस्थितहैं ९ (ततःअगस्त्यवचनात्प्रतिहारः द्रुतंरामंप्रभुंनमस्कृत्वा विनयावनतःवाक्यंअब्रवीत्) तब अगस्त्य के बचन ते द्वारपाल उठिकै शीघ्रही भीतर जायरघुनंदन प्रभुको प्रणामकरि हाथ जोरिनम्रतापूर्वक रघुनंदन प्रति प्रिय वचन बोलता भया १० (कृतांजलिःइदंउवाचहेदेव मुनिभिःसहअगस्त्यः त्वत्दर्शनार्थायप्राप्तःबहिः उपस्थितः) हाथजोरि द्वारपालरघुनंदन प्रतिऐसा वचन बोलता भया हेराजाधिराज अवधेश महाराजबहुत मुनिनसहित अगस्त्य मुनिआपके दर्शनार्थ आयप्राप्तभये मंदिरकेबाहेर द्वारपरखड़ेहैं ११ ॥

तमुवाचद्वारपालंप्रवेशययथासुखम् ॥ पूजिताविविशुर्वेश्मनानारत्नविभूषितम् १२ दृष्ट्वारामोमुनीन्शीघ्रंप्रत्युत्थायकृतांजलिः ॥पाद्यार्घ्यादिभिरापूज्यगांनिवेद्ययथाविधि १३ नत्वातेभ्योददौदिव्यान्यासनानियथार्हतः ॥ उपविष्टाःप्रहृष्टाश्चमुनयोरामपूजिताः १४संपृष्टकुशलाःसर्वेरामंकुशलमब्रुवन् ॥ कुशलंतेमहाबाहोसर्वत्ररघुनंदन १५दिष्ट्येदानींप्रपश्यामोहतशत्रुमरिंदम॥नहिभारःसतेरामरावणोराक्षसेश्वरः १६सधनुस्त्वांहिलोकांस्त्रीन्विजेतुंशक्तएवहि ॥दिष्ट्यात्वयाहताः सर्वेराक्षसारावणादयः १७ ॥

(तंद्वारपालंउवाचयथासुखं प्रवेशयनानारत्नविभूषितंवेश्म पूजिताविविशुः) तिस द्वारपालप्रतिरघुनन्दनबोलतेभये कि सुखपूर्वक मुनि लोगों को मन्दिरके भीतर प्रवेश करावो तबअनेकरत्नों करि सजेहुये मन्दिरमें सत्कारकियेगये मुनि लोग प्रवेशकरतेभये १२ (मुनीन्दृष्ट्वारामःशीघ्रंप्रत्युत्थायकृतांजलिःयथाविधि पाद्यार्घ्यादिभिःआपूज्यगांनिवेद्य) मुनिनको देखि रघुनन्दन शीघ्रही उठि

के हाथ जोरे पुनः जैसी शास्त्रकी आज्ञा तैसी विधिसों पाद्य अर्घ्य आदि षोडशोपचारों करिके पूजन करि सब को गौवेंदेतभये १३ (ततः तेभ्यः यथार्हत दिव्यानि आसनानि दत्त्वा रामपूजिताः मुनयः प्रहृष्टाः उपविष्टः) सबको प्रणामकरि तिनके अर्थ यथा योग्य दिव्य आसन देतेभये रघुनन्दन करिके पूजित मुनिलोग आनन्दभये पुन. आसनों पर बैठतभये १४ (कुशलं संपृष्टाः सर्वे रामं कुशलं महाबाहो रघुनन्दन ते सर्वत्र कुशलं) रघुनंदन करिके कुशल पूछेहुये सब मुनिलोग रघुनन्दन प्रति कुशल पूछतेहुये बोले हे महाबाहो रघुनन्दन तुम्हारे सर्वांग राजश्री में सर्वत्र कुशल है १५ (हे अरिंदमराम राक्षसेश्वरः रावणः शत्रुं हतं इदानीं दिष्ट्या पश्यामः सभारः ते न हि) पुनः ऋषिलोग बोले कि हे शत्रुनके नाश करनेवाले रघुनंदन राक्षसों को स्वामी रावण शत्रुको जो आपने मारि राज सिंहासनपर आसीन दृष्टि करिके हमलोग देखते हैं सो संग्राम को श्रमरूप भार आपको नहीं है भाव लीला मात्रही दुष्टों को मारे १६ (स धनुः त्वं हि त्रीन् लोकान् विजेतुं शक्त एव हि रावणादयः सर्वे राक्षसा त्वया हताः दिष्ट्या) क्यों स्मनभार आपको नहीं है कि सहित धनुष आपही अकेले तीनिहूलोक नाश करिबे को समर्थ हो तौभी रावणादि सब राक्षसों को आपने मारा सो देखि हम आनन्द भये १७ ॥

सद्यमेतन्महाबाहोरावणस्यनिबर्हणम्॥ असह्यमेतत्संप्राप्तरावणेयत्निपूदनम् १८ अंतकप्रतिमाःसर्वेकुम्भकर्णादयोमृधे ॥ अंतकप्रतिमैर्बाणैर्हतास्तेरघुसत्तम १९ दत्ताचेयंत्वयाऽस्माकंपुराह्यभयदक्षिणा ॥ हत्वारक्षोगणांसंख्येकृतकृत्योद्यजीवसि २० श्रुत्वानुभाषितंतेषांमुनीनांभावितात्मनाम् ॥ विस्मयंपरमंगत्वारामःप्रांजलिरब्रवीत् २१ रावणादीननिक्रम्यकुम्भकर्णादिराक्षसान् ॥ त्रिलोकजयिनो हित्वाकिंप्रशंसथरावणिम् २२ ततस्तद्वचनंश्रुत्वाराघवस्यमहात्मनः ॥ कुम्भयोनिर्महातेजारामंप्रीत्याब्रवीत् २३ ॥

(महाबाहो रावणस्य निबर्हणं तत् सद्यः रावणं यत्निपूदनं संप्राप्त एतत् असह्यम्) हे महा बाहो रघुनंदन इस रावण को मरण यह तो सुगम रहे परंतु रावण को पुत्र जो मेघनाद मरण को प्राप्त भया यह अगम रहे तो भी मारा गया१८(रघुसत्तम कुम्भकर्णादयः मृधे अंतकप्रतिमाः सर्वे अंतकप्रतिमैः बाणैः ते हताः)हे रघुवंशनाथ कुम्भकर्ण आदिमहाबली धीर राक्षस संग्राममें कालमृत्युसमसब अजितरहे तेसंहारीकालमृत्युतुल्य करालबाणोंकरिके आपसबको बधकिया१९ (पुरा त्वया अस्माकं हि अभयदक्षिणा च इयं दत्ता संख्ये रक्षोगणान् हत्वा कृतकृत्यः अद्य जीवसि)ऋषि लोग बोले कि हे रघुवंशनाथ पूर्वहीं दण्डक वनमें आप ने हम लोगों को अभय दक्षिणा देने की प्रतिज्ञाकिया रहे सो यही अब अभय दान दिया जो संग्राम में राक्षस गणों को मारि ताते आपहू कृतकृत्य प्रशंसनीय ह्वैके अब जीवनको प्राप्त वर्त्तमान हो २० (भावितात्मनां मुनीनां तेषां भाषितं श्रुत्वा तु रामः परमं विस्मयं गत्वा प्रांजलिः अब्रवीत्) आत्मदर्शी मुनि अगस्त्यादि तिनको कहा वचन सुनिके पुनः रघुनंदन परम विस्मय को प्राप्त भये अर्थात् आश्चर्य मानि हाथ जोरि रघुनंदन बोलते भये २१ (त्रिलोकजयिनः कुंभकर्णादिराक्षसान् हित्वा रावणादीन् अतिक्रम्य रावणिं किं प्रशंसथ) तीनिहू लोकनको जीतनेवाले बलवीर कुम्भकर्णादि राक्षसों को त्यागि लोकविजयी रावणादिकोंको बराय एक रावणको पुत्र मेघनाद ही की क्यों प्रशंसा करते हो ताकी क्या आशय है सो कहिये २२ (महात्मनः राघवस्य वचनं तत् श्रुत्वा ततः महातेजाः

कुंभयोनिःप्रीत्यावचःराममब्रवीत्)महात्मा रघुनन्दनके कहे हुये जो बचन सो सुनिके तदनन्तर महा तेजवंत जो कुम्भ योनि अगस्त्य जी हैं सो प्रीति पूर्वक वचन रघुनन्दन प्रति बोलते भये २३ ॥

शृणुरामयथावृत्तंरावणेरावणस्यच ॥ जन्मकर्मवरादानंसंक्षेपाद्वदतोमम २४ पुरा कृतयुगेरामपुलस्त्योब्रह्मणःसुतः ॥तपस्तप्तुंगतोविद्वान्मेरोःपार्श्वेमहामतिः२५ तृणविंदोराश्रमेसौन्यवसन्मुनिपुंगवः॥तपस्तेपेमहातेजाःस्वाध्यायनिरतःसदा २६ तत्राश्रमेमहारम्येदेवगंधर्वकन्यकाः ॥ गायंत्योननृतुस्तत्रहसंत्योवादयंतिच २७ पुलस्त्यस्यतपोविघ्नंचक्रुःसर्वाअनिंदिताः॥ततःक्रुद्धोमहातेजाव्याजहारवचोमहत् २८ यामेदृष्टिपथंगच्छेत्सागर्भंधारयिष्यति ॥ ताःसर्वाशापसंविग्नानतंदेशं प्रचक्रमुः २९ ॥

(हेरामरावणेचरावणस्यजन्मकर्मवरादानं संक्षेपात्ममवदतःयथावृत्तंशृणु) हे रघुवंशनाथ रावण के पुत्र मेघनाद को पुनः रावणको जा भांति जन्म भया जो जो कर्म कीन्हे जिसभांति बरदानपाये सो संक्षेप ते मेरा कहाहुआ जैसा वर्णन है ताको सुनिये २४ (हेरामपुराकृतयुगेब्रह्मणःसुतःपुलस्त्यः विद्वान्महामतिःतपःतप्तुंमेरोःपार्श्वेगतः) हे रघुनाथजी पूर्वही सतयुग में ब्रह्माको पुत्र पुलस्त्य नामे बड़े बिद्वान् महाबुद्धिवन्त सो तपस्या करिबेको सुमेरुपर्वत के समीपगये कैसे तपकरने लगे २५ (महातेजाःअसौमुनिपुंगवःतृणविंदोः आश्रमेन्यवसन्स्वाध्यायनिरतःसदातपःतेपे) महातेज वंत सोई मुनिनमें श्रेष्ठ पुलस्त्यजी तृणविंदु ऋषि के आश्रम में बासकरत सन्ते वेदपाठ में परा· यण ह्वैके सदा तपस्या करनेलगे भाव हिमि वात वर्षाआतप सहतेहुये वेदपाठ करते रहे २६(तत्र महारम्येआश्रमेदेवगंधर्वकन्यकाःगायंत्यःननृतुःचतत्रहसंत्यःवादयंति) तहां महारमणीक आश्रम में देव गंधर्वोंकी कन्या शृंगारकरि आवैं तालस्वर सहित रागों को गानकरैं हाव भाव दर्शायनृत्य करैं पुनःतहां हासकरैं बीणादि बाजा बजावती रहैं २७ (अनिंदिताःसर्वापुलस्त्यस्यतपः विघ्नंचक्रुः ततः महातेजाःक्रुद्धःमहत्वचःव्याजहार) निंदा रहित गुणज्ञसुन्दरी सब पुलस्त्य जीकी तपस्या में विघ्न करती भई तब महातेजस्वी पुलस्त्य क्रोधकरि महाकठोर बचन बोलते भये २८ (मेदृष्टिपथंया गच्छेत्सागर्भंधारयिष्यतिशाप संविग्नाताःसर्वातंदेशंनप्रचक्रमुः) पुलस्त्य बोले कि आजते मेरीदृष्टि के आगेजो कन्या आवैंगी सो तुरतही गर्भको धारण करैंगी भाव मेरीदृष्टि परतही गर्भवतीह्वै जायँ- गी इतिशापकी भयते वेसब कन्या तिसदेश को न जाती भई २९ ॥

तृणविंदोस्तुराजर्षेःकन्यातन्नाशृणोद्वचः॥विचचारमुनेरग्रेनिर्भयातंप्रपश्यती३० बभूवपांडुरतनुर्व्यंजितांतः शरीरजा ॥ दृष्ट्वासादेहवैवर्ण्यंभीतापितरमन्व गात् ३१ तृणविंदुश्चतांदृष्ट्वाराजर्षिरमितद्युतिः ॥ ध्यात्वामुनिकृतंसर्वमवैद्विज्ञा नचक्षुषा ३२ तांकन्यांसुनिवर्यायपुलस्त्यायददौपिता ॥ तांप्रगृह्याब्रवीत्कन्यांवा ढमित्येवसद्द्विजः ३३ शुश्रूषणपरांदृष्ट्वामुनिःप्रीतोब्रवीद्वचः ॥ दास्यामिपुत्रमे कंतेउभयोर्वंशवर्द्धनम् ३४ ततःप्रासूतसापुत्रंपुलस्त्याल्लोकविश्रुतम् ॥ विश्रवा इतिविख्यातःपौलस्त्योब्रह्मविन्मुनिः ३५ ॥

(तुतृणविंदोःराजर्षेः कन्याततवचः नाश्रृणोत्मुनेःअग्रेतंपश्यतीनिर्भया विचचार) पुनः जिनको वह आश्रम है तिन तृणविन्दुराजऋषिकी जो कन्यारही तिसने उस पुलस्त्यकेवचन को नहीं सुने रही ताते पुलस्त्य मुनिके आगे मुनिको देखती हुई निर्भय विचरती भई ३० (अन्तःशरीरजाव्यंजितःपांडुरतनुःबभूव देहवैवर्ण्यंदृष्ट्वासाभीता पितरअन्वगात्) उर अन्तर गर्भ के चिह्नबाह्य अंगों में दर्शितभये पीतवर्ण तनु होजातभया सो देह विवर्ण देखिके सो कन्या भयमानि करिकै अपने पिता के पासको जातीभई ३१ (अमितद्युतिःराजर्षिः तृणविंदुःतांदृष्ट्वाच विज्ञानचक्षुपाध्यात्वा मुनिकृतं सर्वंअवैत्) अमित तेजवंत राजऋषि तृणविंदु तिस कन्याको गर्भवती दशा देखिकै पुनः विज्ञान दृष्टि करिकै ध्यानकरि देखे तब पुलस्त्य मुनिको कियाहुआ जो कछु हालरहा सो सब जानिगये ३२ (तांकन्यांपितामुनिवर्याय पुलस्त्यायददौतांकन्यां प्रगृह्यवाढंइतिएवसद्विजः अब्रवीत्) तिस कन्या का पिताने आय मुनिन में श्रेष्ठ जो पुलस्त्य तिनके अर्थ देतेभये तिस कन्याको पाणिग्रहण करि पुनः दृढ़करि हम अगीकार किया ऐसा निश्चय वचन द्विजपुलस्त्य बोलते भये ३३ (शुश्रूषणपरां दृष्ट्वामुनिःप्रीतःवचः अब्रवीत्उभयो वंशवर्द्धनंएकंपुत्रंतेदास्यामि) अपनी सेवामें परायण पत्नीको देखि पुलस्त्य मुनि प्रीति पूर्वक वचन बोलते भये हे कल्याणरूपे माता पिता दोऊ वंश बढ़ावनहारा एक पुत्र तोको देऊँगो ३४ (ततःपुलस्त्यात्सापुत्रंप्रासूतलोकविश्रुतंविश्रवापौलस्त्या इतिविख्यातः ब्रह्मविन्मुनिः) तदनन्तर पुलस्त्यके संयोगते सोई स्त्री पुत्र उत्पन्न करतीभई लोकमें प्रसिद्ध विश्रवा ऐसा नाम पुनः पुलस्त्यके पुत्र ताते पौलस्त्य ऐसा नाम प्रसिद्ध ब्रह्मज्ञाता मुनिभये ३५ ॥

तस्यशीलादिकंदृष्ट्वा भरद्वाजोमहामुनिः ॥ भार्यार्थंस्वांदुहितरंददौविश्रवसेमुदा३६तस्यांतुपुत्रःसंजज्ञेपौलस्त्याल्लोकसंमतः॥पितृतुल्योविश्रवणोब्रह्मणाचानुमोदितः ३७ ददौतत्तपसातुष्टोब्रह्मातस्मैवरंशुभम् ॥ मनोभिलषितंतस्यधनेशत्वमखंडितम् ३८ ततोलब्धवरःसोपिपितरंद्रष्टुमागतः ॥ पुष्पकेनधनाध्यक्षोब्रह्मदत्तेनभास्वता ३९ नमस्कृत्वाथपितरंनिवेद्यतपसःफलम् ॥ प्राहमेभगवन्ब्रह्मादत्त्वावरमनिंदितम् ४० निवासायनमेस्थानंदत्तवान्परमेश्वरः॥ब्रूहिमेनियतंस्थानंहिंसायत्रनकस्यचित् ४१ ॥

(तस्यशीलादिकंदृष्ट्वामहामुनिः भरद्वाजःमुदास्वांदुहितरंभार्यार्थं विश्रवसेददौ) तिनको शीलादिक उत्तमगुणों युत देखिकै महामुनि भरद्वाज आनन्दपूर्वक अपनी कन्याको वामांगी होनेहेत विश्रवाके अर्थ देतेभये अर्थात् विवाह करदेते भये ३६ (तस्यांतुपौलस्त्यात्पुत्रः संजज्ञेलोकसंमतः वैश्रवणःपितृतुल्यःचब्रह्मणानुमोदितः) तिस स्त्रीमें पुनः विश्रवा मुनिते कुवेरनामे पुत्र उत्पन्नभये लोक संमत विश्रवाको पुत्र गुणोंकरिकै पिताके तुल्यभया पुनः कुवेरपर ब्रह्माभी प्रसन्न भये हैं ३७ (तत्तपसातुष्टःब्रह्मातस्यमनोभिलषितं अखंडितधनेशत्वशुभंवरंतस्मैददौ) ताकी तपस्या करिकै प्रसन्न भये ब्रह्मा ताके मनकी अभिलाप योग्य अखंड जो कभी कमती न परै धनेशत्व अर्थात् समूह धनके अधिकारी इति मंगलीक वरको तिस कुवेरके अर्थ ब्रह्मा देतेभये ३८ (वरःलब्धःततःसःअपिधनाध्यक्षः ब्रह्मदत्तेनपुष्पकेन भास्वतापितरंद्रष्टुंआगतः) ब्रह्माते वर पायकै तदनन्तर एक समय सोई धनाध्यक्ष कुवेर ब्रह्माके दियेहुये पुष्पक विमानपर सवार जो सूर्यवत् प्रकाशमान अपने पिताके देखनेको आवते भये ३९ (पितरंनमस्कृत्वाअथतपसःफलं निवेद्यप्राहभगवन् अनिंदितंवरं ब्रह्मामे

दत्त्वा) पिताको नमस्कार करि तब कुवेर अपनी तपस्याको फल कहि बोले हे भगवन् निन्दा रहित प्रशंसनीय धनेशत्व वर तौ ब्रह्माजीने मोको दिया परन्तु वास कहांकरों क्योंकि ४० (मेनिवासाय स्थानंपरमेश्वरःनदत्तवान् नियतस्थानं मेब्रूहि यत्रकस्यचित्हिंतान) मेरे वासकरने अर्थ कोई स्थान परमेश्वर ब्रह्माने नहीं दिया ताते जहां किसीकी बाधा नहोवै ऐसा दृढ़स्थान आप मोको बताइये जहां किसीकी हिंसा नहोवै कोई दुख न पावै ४१ ॥

विश्रवाअपितंप्राहलंकानामपुरीशुभा ॥ राक्षसानांनिवासायनिर्मिताविश्वकर्मणा ४२ त्यक्त्वाविष्णुभयाद्दैत्याविविशुस्तेरसातलम् ॥ सापुरीदुःप्रधर्षान्यैर्मध्येसागरमास्थिता ४३ तत्रवासायगच्छत्वं नान्यैःसाधिष्ठितापुरा ॥ पित्रादिष्टस्त्वसौ गत्वातांपुरींधनदोविशत् ४४ सतत्रसुचिरंकालमुवासपितृसंमतः ॥ कस्यचित्त्वथकालस्यसुमालीनामराक्षसः ४५ रसातलान्मर्त्यलोकंचचारपिशिताशनः ॥ गृहीत्वातनयांकन्यांसाक्षाद्देवीमिवश्रियम् ४६ अपश्यद्धनदंदेवंचरंतंपुष्पकेणसः॥ हितायचिंतयामासराक्षसानांमहामनाः ४७ ॥

(विश्रवाअपितंप्राहराक्षसानांनिवासायविश्वकर्मणानिर्मितालंकानामशुभापुरी) विश्रवाभीति नकुवेर प्रति बोलतेभये हे पुत्र राक्षसों के वास करनेअर्थ पूर्वकाल में विश्वकर्मा ने निर्माण करि राखा है लंकानाम मंगलीकपुरी है ४२ (विष्णुभयात्दैत्यात्यक्त्वातेरसातलं विविशुःसापुरीमध्ये सागरंआस्थिताअन्यैःदुःप्रधर्षा) विष्णुकी भयते दैत्यउसपुरी को त्यागि भागे ते सब रसातल में प्रवेश भये सोपुरीखाली है अरुबीच समुद्र में बसी है ताते औरेन करिकै दुराधर्ष है वाकी प्राप्ति दुर्घट है ४३ (पुराअन्यैःनसाधिष्ठितातत्रवासायत्वंगच्छपित्रादिष्टःतुअसौधनदःगत्वातांपुरींविशत्) जबते दैत्यत्यागे तबते खालीपरी है अबते पूर्व और किसी करिकै नहीं सो पुरी बास करीगई तहां वास करिबे अर्थ तुमजाउ इसप्रकार पिताकी आज्ञासे पुनः कुवेर उहांको गये तिसपुरी में प्रवेश कीन्हे ४४ (पितृसंमतःसतत्रसुचिरंकालंउवास अथकस्यचित्कालस्यतुसुमालीनामराक्षसः) पिता के संमतते सो कुवेर तहां लंकापुरी में बहुतकाल तक वासकीन्हे अबरावण के उत्पन्न को कारण सुनिये किसीसमय में पुनः सुमालीनामे जो प्राचीन राक्षसरहा ४५ (साक्षात् देवींश्रियंइवतनयां कन्यांगृहीत्वापिशिताशनःरसातलात्मर्त्यलोकंचचार) साक्षात् देवी लक्ष्मी तुल्यस्वरूप तेजवन्त अपनी पुत्री कुमारी को साथ लैकै सोई राक्षस सुमाली रसातल लोक ते आयमनुष्य लोक में विचरता भया सब देशों में घूमता फिरै ४६ (पुष्पकेणसःचरंतंधनदंदेवंअपश्यत् राक्षसानांहिताय चिंतयामासमहामनाः) कन्याके बिवाह योग्य वरढूँढता रहै ता समय में पुष्पकपर सवार विचरते हुये कुवेर देवको देखताभया तब राक्षसनके हितके अर्थ चिन्तवन करि महानन्दमन भया भाव जाके पुत्र ऐसे उसीको बिवाहौं ४७ ॥

उवाचतनयांतत्रकैकसींनामनामतः॥ वत्सेबिवाहकालस्तेयौवनंचातिवर्त्तते ४८ प्रत्याख्यानाच्चभीतैस्त्वंनवरैर्गृह्यसेशुभे॥सात्वंवरयभद्रंतेमुनिंब्रह्मकुलोद्भवम् ४९ स्वयमेवततःपुत्राभविष्यंतिमहाबलाः ॥ ईदृशासर्वशोभाढ्याः धनदेनसमाशुभे५०तथेतिसाश्रमंगत्वामुनेरग्रेऽव्यवस्थिता ॥ लिखंतीभुवमग्रेणपादेनाधोमुखी

स्थिता ५१ तामपृच्छन्मुनिःकात्वंकन्यासिवरवर्णिनि ॥ साब्रवीत्प्रांजलिर्ब्रह्म न्ध्यानेनज्ञातुमर्हसि ५२ ततोध्यात्वामुनिःसर्वंज्ञात्वातांप्रत्यभाषत् ॥ ज्ञातंतत्त्वा भिलषितंमत्तःपुत्रानभीप्स्यसि ५३ ॥

(कैकसींनामनामतःतनयांतत्रउवाच वत्सेतेविवाहकालः वयोवनंअतिवर्त्तते) कैकसीनामे अपनी पुत्री प्रति तहां सुमाली बोलताभया हे वत्से तेरे विवाहको कालआया पुनः तेरा यौवन अत्यंत वर्तमान है ४८ (वशुभेप्रत्याख्यानात्भीतेःवरैः त्वंनगृह्यसेतेभद्रंसात्वब्रह्मकुलोद्भवंमुनिस्स्वयंएवबर य) हे मंगलरूपे तेरारूप तेज अधिक देखि अपनाको लघुमानि तेरे इनकार करनेकी भय करिकै वरोंने तोको नहीं पाणिग्रहण करिसके तेरा कल्याण होय तासों अब तू ब्रह्माके कुलमें उत्पन्न जो विश्रवा मुनिहैं तिनहिं स्वइच्छित विवाहकरु ४९ (ततःशुभेईदृशा.सर्वशोभाढ्याःधनदेनसमा.महा बलाःपुत्रा.भविष्यंति) जो विश्रवा सग तेरा बिवाह होई तदनन्तर हेमगलरूपे इसप्रकार सब शोभायुक्त कुवेरकी समान महाबली पुत्रतेरे भी होवेंगे भाव तिन करिकै राक्षस कुलकी वृद्धि होवैगी ५० (तथाइतिसाआश्रमगत्वामुनेः अग्रेऽव्यवस्थितापादेनअग्रेणभुवंलिखंती अधोमुखीस्थिता) हे पिता जैसा कहते हौ तैसाही करोंगी ऐसा कहि सो कन्या आश्रममें जाय विश्रवा मुनिके आगे बैठि पायेंके नख करिकै भूमिको लिखती हुई नीचे मुखकीन्हे बैठीरही ५१ (मुनिःतांअपृच्छन्हेवरवर्णिनित्वंकाकन्यासिसाप्रांजलिःअब्रवीत्ब्रह्मन्ध्यानेनज्ञातुमर्हसि) आगे देखि विश्रवामुनि तिसकन्या प्रति पूछते भये हे उत्तमवर्णी तुम कोहौ किसकी कन्याहौ तुम्हारा क्या प्रयोजनहै तब सो कन्या हाथजोरि वोलती भई हेब्रह्मन् ध्यान करिकै जानिबे योग्यहौ ५२ (तत.मुनिःध्यात्वासर्वंज्ञात्वातांप्रत्य भाषत्तत्त्वाभिलषितज्ञातंमत्त पुत्रान्अभीप्स्यसि) तब मुनि ध्यान करिकै सब जानिकै तिस कन्या प्रति वोले कि तेरे मनकी अभिलाष मैं जानिलिया मोसों पुत्रोंकी इच्छा करती है ५३ ॥

दारुणायांतुवेलायामागतासिसुमध्यमे ॥ अतस्तेदारुणौपुत्रौराक्षसौसंभविष्य तः ५४ साब्रवीन्मुनिशार्दूलत्वत्तोप्येवंविधौसुतौ ॥ तामाहपश्चिमोयस्तेभवि ष्यतिमहामतिः ५५ महाभागवतःश्रीमान्रामभक्त्यैकतत्परः ॥ इत्युक्त्वासात थाकालेसुषुवेदशकंधरम् ५६ रावणंविंशतिभुजंदशशीर्षंसुदारुणम् ॥ तद्रक्षोजा तमात्रेणचचालचवसुंधरा ५७ वभूवुर्नाशहेतूनिनिमित्तान्यखिलान्यपि ॥ कुंभक र्णस्ततोजातोमहापर्वतसन्निभः ५८ ततःसूर्पणखानामजातारावणसोदरी ॥ ततोविभीषणोजातःशांतात्मासौम्यदर्शनः ५९ ॥

(तुसुमध्यमेदारुणायांवेलायांआगतासिअत.तेपुत्रौदारुणौराक्षसौसंभविष्यत.) पुनः हेसुन्दरमध्यमांगे यह सायंकाल दारुण वेलामें आईहौ इसकारण से तुम्हारे दो पुत्रदारुण कुटिल स्वभाववाले राक्षस होइंगे ५४ (साअब्रवीत्हेमुनिशार्दूलत्वत्तःअपिएवंविधौ सुतौतांआहतेय.पश्चिमःमहामतिःभ विष्यति) सो कन्या वोलती भई हे मुनिनमें श्रेष्ठ तुमते उत्पन्न तौभी इस विधि के अधमपुत्रहोवैंगे यह सदेह है तब तिसकन्या प्राति मुनिवोलते भये कि तेरे जो पिछला तीसरा पुत्रहोई सो महाबुद्धिवन्त होइगा ५५ (श्रीमानमहाभागवत.रामभक्त्यैकतत्परः इति उक्त्वातथाकालेमादशकंधरम्सुषुवे) श्रीमान् महाभागवत श्रीरामै भक्तिही में सदा तत्पररहैगो ऐसा मुनि कहि पुनः वाको अंगीकार

कीन्हे जैसा मुनि कहअरहै तैसेही कालपाय सो कन्या दशकंधर पुत्र उत्पन्न कीन्हो ५६ (दशशीर्षविंशतिभुजंसुदारुणंरावणंतत्रक्षःजातमात्रेणचवसुंधराचचाल) दशहैं शिशजाके बोस हैं भुजा जाके अत्यन्त कुटिल स्वभाववाला रावण तिसराक्षस के उत्पन्न होतमात्रही पुन. सबपृथिवी चलायमान भई हालि उठी ५७ (निमित्तानिअखिलानिअपिनाशहेतूनिबभूवुःततःमहापर्वतसन्निभःकुम्भकर्णःजातः) अनेक भांति के उत्पात सम्पूर्ण संसारके नाश करिबे योग्य होतेभये तदनंतर महाभारी पर्वत के तुल्य शरीर है जाको ऐसा कुम्भकर्ण उत्पन्न होता भया ५८ (ततःरावणसोदरी सूर्पणखानामजाता ततः शांतात्मासौम्यदर्शनःविभीषणःजातः) तदनंतर रावण की भगिनी सूर्पणखा नामे उत्पन्न भई तदनंतर शांत है स्वभाव जाको मंगलीकसुखद दर्शन हैं जाके ऐसा उत्तम बिभीषण उत्पन्नभया ५९॥

स्वाध्यायीनियताहारोनित्यकर्मपरायणः ॥ कुंभकर्णस्तुदुष्टात्माद्विजान्संतुष्टचेतसः ६० भक्षयन्नृषिसंघांश्चविचचारातिदारुणः ॥ रावणोपिमहासत्वोलोकानांभयदायकः ॥ ववृधेलोकनाशायह्यामयोदेहिनामिव ६१ रामत्वंसकलांतरस्थमभितोजानासिविज्ञानदृक् साक्षीसर्वहृदिस्थितोहिपरमोनित्योदितोनिर्मलः ॥ त्वं लीलामनुजाकृतिः स्वमहिमामायागुणैर्नाज्यसेलीलार्थंप्रतिचोदितोद्यभवतोवक्ष्यामिरक्षोद्भवम् ६२ ॥

(नियताहारःस्वाध्यायीनित्यकर्मपरायणः तुदुष्टात्माकुम्भकर्णः द्विजान्संतुष्टचेतसः) विभीषण तौ पावन पदार्थ स्वल्प भोजन करता वेदपाठ करता संध्योपासनादि नित्यकर्मों में परायण रहै पुनः दुष्ट है स्वभाव जाको ऐसा कुम्भकर्ण उत्तम ब्राह्मणों को भोजन करने में चित्तराखै ६० (अतिदारुणःऋषिसंघांश्चभक्षयन् विचचारमहासत्वःरावणःअपिलोकानांभयदायकः) कुम्भकर्ण अत्यंत दारुण स्वभाव ऋषि समूहोंको भक्षण करताहुआ विचराकरै महापराक्रमी रावण भी लोकन को भयदेनहारा (देहिनांआमयःइवहिलोकनाशायववृधे) जैसे जीवन की देहमें रोगबढ़ता तैसेही निश्चयकरि लोकनके नाश अर्थरावण बढ़ता भया ६१ (रामत्वसकलांतरस्थंनित्यउदितः निर्मलःपरमःसाक्षिसर्वहृदिस्थितोहिविज्ञानदृक्अभितोजानासिमनुजाकृतिःलीलात्वंस्वमहिमामायागुणैःनाज्यसे लीलार्थे भवतःप्रतिचोदितःअद्यरक्षःउद्भवम्वक्ष्यामि) अगस्त्यजी बोले कि हे श्री रघुनाथजी आपतौ सकल भूतमात्र के अंतर में वासकिहेहौ कौनभांति नित्य उदित निर्मल अर्थात् सदा एकरस स्वयं प्रकाशमान् जामें किसीभांति को मल नहीं शुद्ध परमात्मरूप परमसाक्षी अर्थात् सबकाल की सबके बाहेर भीतर की जाननेवाले सबके हृदय में स्थित निश्चयकरि विज्ञानदृष्टि करिकै सबके अंतरकी बात जानतेहौ पुनः मनुजाकृतिःलीला अर्थात् राजकुमार बनेलोकोद्धारहेत जो नरनाट्य करतेहौ सो सब को देखनेमात्र है क्योंकि त्वंस्वमहिमा माया गुणैः नाज्यसे अर्थात् आप अपनी महिमा के प्रभाव करिकै माया के गुण जो रजतमादि तिनकरिकै नहीं लिप्त होतेहौ अरुलीला वृद्धिअर्थ जो आप पूछा सो आपही की प्रेरणाते या समय सें राक्षसों की उत्पन्नहोने को हाल मैं वर्णन करता हूं ६२॥

जानामिकेवलमनंतमचिंत्यशक्तिंचिन्मात्रमक्षरमजंविदितात्मतत्त्वं ॥ त्वांरामगूढ़निजरूपमनुप्रवृत्तोमूढ़ोप्यहंभवदनुग्रहतश्चरामि ६३ एवंवदंतमिनवंशपवित्र

कीर्तिःकुम्भोद्भवंरघुपतिःप्रहसन्बभाषे॥मायाश्रितंसकलमेतदनन्यकत्वान्मत्कीर्तनंजगतिपापहरंनिबोध ६४ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसम्वादेउत्तरकाण्डेप्रथमःसर्गः १ ॥

(हेरामअहंमूढ़अपिभवत्अनुग्रहतःत्वांकेवलंअनंतंअचिंत्यशक्तिं चिन्मात्रंअक्षरंअजंविदितात्मतत्त्वं जानामिगूढ़निजरूपंअनुव्रतःचरामि) हे रघुनाथजी यद्यपि मैं मूढ़अल्पज्ञजीव हौं तोभी आपको अनुग्रह सदादया राखनेते आपको केवल अर्थात् समता योग्य दूसरानहीं एकही अनंत जाकीमहिमा को अंत कोऊनहीं पावत अचिंत्य जोकिसी की चिंतवन में नहीं आवत ऐसी अघटघटना शक्तिहै जिनमें चैतन्यमात्र अर्थात् अखंड सदा एकरस ज्ञान अक्षर कारण मायारहित अज जिनकी उत्पत्ति किसीते नहीं विदित आत्मतत्त्व करि जानताहौं सोईगुप्त किहेहौ आपना ऐश्वर्य्यरूप जिसले माधुर्य में द्विभुज धनुधारी श्यामसुंदर राजकुमार रूपते विचरतेहौ ताही रूपको उपासक है आपकी प्रवृत्ति अर्थात् नामरूप लीलाधामादि प्रभुप्राप्तिकी मार्गआप प्रसिद्ध किया है तामें विचरताहौं भाव नाम स्मरण लीला श्रवण कीर्तन रूप सेवन अर्चन इत्यादि में लगारहताहौं ६३ (एवंवदंतंकुम्भोद्भवंइनवंशपवित्रकीर्तिःरघुपतिः प्रहसन्बभाषेएतत्सकलंमायाश्रित अनन्यकत्वात्मत्कीर्तनंजगतिपापहरंनिबोध) इसप्रकार कहते हुये जो अगस्त्य तिनप्रति सूर्य वंशमें पवित्र कीर्ति है जिनकी ऐसे रघुपति हँसत संते बोले कि हे मुने यह यावत् लोक सम्बन्धी व्यापार है सो सब मायाके आश्रित है केवल अनन्यताते मेरा कीर्तन करना सोई भूतलमें पाप हरने हेत है ऐसा विचारराखौ ६४ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतबैजनाथविरचितेअध्यात्मभूषणे उत्तरकाण्डेप्रथमःप्रकाशः १ ॥

श्रीरामवचनंश्रुत्वापरमानंदनिर्भरः ॥ मुनिःप्रोवाचसदसिसर्वेषांतत्रशृण्वताम् १ अथवित्तेश्वरोदेवस्तत्रकालेनकेनचित्॥ आययौपुष्पकारूढःपितरंद्रष्टुमंजसा २ दृष्ट्वातंकैकसीतत्रभ्राजमानंमहौजसम् ॥ राक्षसीपुत्रसामीप्यंगत्वारावणमब्रवीत् ३ पुत्रपश्यधनाध्यक्षंज्वलंतंस्वेनतेजसा ॥ त्वमप्येवंयथाभूयास्तथायत्नंकुरुप्रभो ४तच्छ्रुत्वारावणोरोषात्प्रतिज्ञामकरोद्द्रुतम्॥ धनदेनसमोवापिह्यधिकोवाचिरेणतु ५ भविष्याम्यंबमांपश्यसंतापंत्यजसुव्रते ॥ इत्युक्त्वादुष्करंकर्तुंतपःसदशकन्धरः ६ ॥

सवैया ॥ तपकै बरपाय सहानुज रावण व्याहसलंकहि वासलिये । लियपुष्पक छीनि कुबेरहि सों दिगपालन को बहुत्रास दिये ॥ सुख भोगिसवै पुनिमुक्त भये प्रभुहाथमरेअरि बैरहिये । कहियों पुनिराघवकी महिमा जगमें घटजात बखान किये ॥ (श्रीरामवचनंश्रुत्वामुनिः परमानंदनिर्भरःतत्र सदसिसर्वेषांशृण्वताम्प्रोवाच) शिवजी बोले हे गिरिजा श्रीरघुनाथ जीके वचन सुनि अगस्त्य मुनि परमानंद परिपूर्ण तिससभा के मध्यसबके सुनत संते मुनि रघुनंदन प्रति बोलते भये १.(अथकेन चित्कालेवित्तेश्वरः देवः पुष्पकारूढःपितरंद्रष्टुं अंजसातत्रआययौ) अब किसी समय में वित्तेश्वर कुबेरदेव पुष्पक विमानपर सवारपिता विश्रवाको देखनेहेत वेगता सहित तहां को आवते भये २ (तत्रकैकसीराक्षसीभ्राजमानं महौजसम्तंदृष्ट्वापुत्ररावणंसामीप्यंगत्वाअब्रवीत्)तहां विश्रवाके समीप

कैकसी राक्षसी रहै ताने पुष्पकपर विराजमान तेज पराक्रमवंत तिन कुवेरको देखि अपनेपुत्र रावण के समीप जाय बोलती भई ३ (पुत्रस्वेनतेजसा ज्वलंतधनाध्यक्षं पश्यप्रभोत्वंअपियथाएवंभूयाः यत्नंकुरु) हे पुत्र अपने तपो तेजकरिकै प्रकाशमान ह्वैरहे हैं इन कुवेरको देखु हेप्रभो भावतू राक्षसों को राजा होइगो ताते तूभी जाभांति इसीप्रकार तेजस्वी होवै सो यत्नकरु ४ (तत्श्रुत्वारावणः रोपा त्द्रुतंप्रतिज्ञांअकरोत्वा धनदेनसमःवाअधिकःअपितुअचिरेण) सो सुनि रावण क्रोधते तुरतही प्रतिज्ञा करताभया कि यातौ कुवेरकी बराबरि को अथवा कुवेरते अधिक पुनः थोरेही दिनोंमें५(भविष्या मिअंवमांपश्यसुव्रते संतापंत्यजइतिउक्त्वासदशकन्धरःदुष्करंतपःकर्तुं) मैंभी तेजवंत होउँगो हे माता मोको देखौ क्या करताहौं हे सुव्रते सन्ताप त्यागकरौ ऐसा कहि रावण दुष्करतप करने हेतु ६ ॥

आगमत्फलसिद्ध्यर्थंगोकर्णंतुसहानुजः ॥ स्वंस्वंनियममास्थायभ्रातरस्तेतपोमहत् ७ आस्थितादुष्करंघोरंसर्वलोकैकतापनम् ॥ दशवर्षसहस्राणिकुंभकर्णोकरोत्तपः ८ विभीषणोपिधर्मात्मासत्यधर्मपरायणः ॥ पंचवर्षसहस्राणिपादेनैकेनतस्थिवान् ९ दिव्यवर्षसहस्रंतुनिराहारोदशाननः ॥ पूर्णेवर्षसहस्रेतुशीर्षमग्नौजुहावसः ॥ एवंवर्षसहस्राणिनवतस्यातिचक्रमुः १० अथवर्षसहस्रेतु दशमेदशमं शिरः ॥ छेत्तुकामस्यधर्मात्माप्राप्तश्चाथप्रजापतिः ॥ वत्सवत्सदशग्रीवप्रीतोस्मीत्यभ्यभाषत् ११ ॥

(फलसिद्ध्यर्थंतुसहानुजः गोकर्णंआगमत्तेभ्रातरःस्वंस्वंनियमंआस्थाय) फल सिद्धी अर्थ पुनः सहित भाइन गोकर्ण तीर्थको आवते भये ते सब भाई अपने अपने नियमोंमें स्थित ह्वैकै ७ (सर्वलोकैकतापनं दुष्करंघोरंमहत्तपः आस्थिताकुंभकर्णः दशवर्षसहस्राणितपः अकरोत्) सब लोकनको ताप करनेवाला दुष्कर घोर महातपमें स्थित भये तामें कुंभकर्ण दशहजार वर्षतक तप करताभया ८ (सत्यधर्मपरायणः धर्मात्माविभीषणः अपिएकेनपादेन पञ्चवर्षसहस्राणितस्थिवान्) सत्य धर्म में परायण धर्मात्मा विभीषण एक पायें करिकै पांचहजार वर्षतक खड़ारहा ९ (तुदशाननः दिव्यवर्षसहस्रंनिराहारः वर्षसहस्रेवर्षेपूर्णेतुसःशीर्षंअग्नौजुहाव) पुनः रावण देवतोंके हजार वर्षतक निराहार खड़ारहा हजार वर्ष पूर्णभयेपर पुनः सो रावण अपने शीशोंको काटि काटि अग्निमें हवन करनेलगा (एवंनवसहस्रवर्षाणि तस्यातिचक्रमुः) इसी प्रकार नव हज़ार वर्षतक नवशीश काटिकाटि चढ़ावा किया १० (अथदशमेवर्षसहस्रेतुदशमंशिरः छेत्तुकामस्यचअथधर्मात्माप्रजापतिः प्राप्तःहेदशग्रीववत्स वत्स प्रीतोस्मिइतिअभ्यभाषत्) नवहज़ार वर्षतक तौनवैशिशिकाटिकाटि हवनकरत रहा अबदशवां हज़ारवर्ष लागतही पुनः दशवां शिरकाटौं ऐसी कामना के करतही पुनः अबधर्मात्मा प्रजापति अर्थात् ब्रह्माआय प्राप्त भये बोले हे दशग्रीव वत्सवत्सभाव अब शिश न काटु क्योंकि तेरेतप करिकै मैं प्रसन्नहौं ऐसावचन बोलते भये ११ ॥

वरंवरयदास्यामियत्तेमनसिकांक्षितम् ॥ दशग्रीवोऽतितच्छ्रुत्वाप्रहृष्टेनांतरात्मना १२ अमरत्वंवृणोमीशवरदोयदिमेभवान् । सुपर्णनागयक्षाणांदेवतानांतथासुरैः ॥ अवध्यत्वंतुमेदेहितृणभूताहिमानुषः १३ तथास्त्वितिप्रजाध्यक्षःपुनराहदशाननम्॥ अग्नौहुतानिशीर्षाणियानितेऽसुरपुंगव॥भविष्यंतियथापूर्वमक्षयाणिचसत्तम १४

एवमुक्त्वाततोरामदशग्रीवंप्रजापतिः॥ विभीषणमुवाचेदंप्रणतंभक्तवत्सलः १५ विभीषणत्वयावत्सकृतंधर्मार्थमुत्तमम्॥तपस्ततोवरंवत्सवृणीष्वाभिमतंहितम् १६॥

(वरंवरयतेमनसिकांक्षितं दास्यामितत्श्रुत्वादशग्रीवः अंतरात्मनाअतिप्रहृष्टेन) ब्रह्मा बोले हे रावण मनभावतवर मांगु जो तेरी मनोकामना होइगी सोई देउँगो सो सुनि रावण मनसे अत्यंत आनंद है करि बोलता भया १२ (हेईशयदिभवान्मेवरद अमरत्वंवृणोमिसुपर्णनागयक्षाणांतथादेवतानांअसुरैःअवध्यत्वमेदेहितुमानुषःतृणभूताहि) हे ईश जो आपमोको वरदेत हो तो अमरपदवी मांगता हौं कि गरुड़नाग यक्ष तैसेही देवता दैत्योंकरि अवध्यत्व अर्थात् इन किसीको मारान मरिसकौं यह बरदान दीजिये अरु मनुष्य तो मेरे संमुख तृणसम है १३ (तथाअस्तुइतिप्रजाध्यक्षःपुनः दशाननआहहेअसुरपुंगवतेयानिशीर्षाणिअग्नौहुतानि) जैसा मांगता है तैसाही होवै ऐसा कहि ब्रह्मापुनः रावण प्रति वोलतेभये हे असुरोंमें श्रेष्ठ तूनें जोशीशोंको काटि अग्निमें हवन करिदियाहै (हेसत्तमयथापूर्वंचअक्षयाणिभविष्यंति) हे उत्तम यथा प्रथम रहें पुनः तैसेही नाश रहितहोवेंगे भावकाटे पर पुनः जामि आवहिंगे १४ (हेरामएवंदशग्रीवंउक्त्वाततःप्रजापतिःभक्तवत्सलःप्रणतंविभीषणंइदंउवाच) अगस्त्य बोले हे रघुनाथजी इस प्रकार रावण प्रति कहिकै तदनंतर ब्रह्माभक्तनपर प्रीतिकरने वाले हाथजोरे प्रणामकरते देखि बिभीषण प्रति ऐसा बचन बोलतेभये १५ (वत्सविभीषणत्वयाधर्मार्थंउत्तमंतपःकृतंततः वत्सअभिमतंहितंवरंवृणीष्व) ब्रह्मावाले हे वत्स विभीषण तुमने धर्मके अर्थ उत्तम तपकियाहै ताते हे वत्स जो अंतःकर्णमें अपने हितकीकांक्षाहोयसो बरमाँगहु १६॥

विभीषणोपितंनत्वाप्रांजलिर्वाक्यमब्रवीत्। देवमेसर्वदाबुद्धिर्धर्मेतिष्ठतुशाश्वती॥ मारोचयत्वधर्मेमेबुद्धिःसर्वत्रसर्वदा १७ततःप्रजापतिःप्रीतोविभीषणमथाब्रवीत्॥ वत्सत्वंधर्मशीलोसितथैवचभविष्यसि १८ अयाचितोपितेदास्येह्यमरत्वंविभीषण ॥ कुम्भकर्णमथोवाचवरंवरयसुव्रत १९ वाण्याव्याप्तोथतंप्राहकुंभकर्णःपितामहम् ॥ स्वप्स्यामिदेवषण्मासान्दिनमेकंतुभोजनम् २० एवमस्त्वितितंप्राहब्रह्मादृष्टादिवौकसः ॥ सरस्वतीचतद्वक्त्रान्निर्गताप्रययौदिवम् २१ कुंभकर्णस्तुदुष्टात्माचिंतयामासदुःखितः ॥ अनभिप्रेतमेवास्यात्किंनिर्गतमहोविधेः २२ ॥

(तंनत्वाविभीषणःअपिप्रांजलिःवाक्यंअब्रवीत्देवमेशाश्वतीबुद्धिःसर्वदाधर्मेतिष्ठतुतुमेबुद्धिः सर्वत्र सर्वदाअधर्मे मारोचय) तिन ब्रह्माको प्रणामकरिकै विभीषण भी हाथजोरिकै बचन बोलते भये हे देव मेरी नित्य एकरस बुद्धि सर्वकाल में धर्मविषे टिकी रहै कबहूं किसीकाल अधर्ममें बुद्धि न आवै १७ (ततःप्रीतःप्रजापतिःअथविभीषणं अब्रवीत् वत्सत्वंधर्मशीलोसिचतथा एवभविष्यसि)तदनंतर प्रीति पूर्वक ब्रह्मा अबविभीषण प्रति बोलते भये हे वत्सतुम धर्मशील पूर्वहीते हो पुनःतैसेही धर्मवंत निश्चय करिकै होहुगे भाव सदाधर्महीमें बुद्धि रहैगी १८(विभीषणअयाचितःअपितेहिअमरत्वं दास्येअथ कुंभकर्णंउवाच हे सुव्रतवरंवरय) हे विभीषण तेरे विनामांगेभी तोको निश्चयकरि अमर पदवी देताहौं कल्पभरि जीवत रहैगो अबकुम्भकर्ण प्रति ब्रह्मावोलतेभये हे सुन्दरव्रतधारिवरमांगु१९ (वाण्याव्याप्तःकुम्भकर्णः अथतंपितामहंप्राहदेवषण्मासांस्वप्स्यामितुएकंदिनभोजनम्) देवतों की प्रेरणा ते सरस्वती जिह्वा में व्याप्त बुद्धिन्नदाले दिया ताते कुम्भकर्ण अबतिन ब्रह्माप्रति बोलता

भया हे देव छा महीना में सोवत रहों पुनः एकदिनजागि भोजनकरों २० (दिवौकसःदृष्ट्वा ब्रह्मा इतितंप्राहएवंअस्तुचसरस्वती ततवक्त्रात्निर्गतादिवंप्रययौ) देवतों को करुणा दृष्टि देखि ब्रह्मा ऐसा वचन तिस कुंभकर्ण प्रति बोले हे कुंभकर्ण जैसा तू मांगता है, तैसाही होवे पुनः सरस्वती ताके मुखते निसरिस्वर्ग को जाती भई २१ (दुष्टात्माकुम्भकर्णःदुःखितःचिंतयामास अहो विधिः ऊनभिप्रेतंएवास्यात् किंनिर्गतं) तब दुष्टात्मा कुम्भकर्ण दुखित है चिंतवन करने लगा कि बड़े आश्चर्य की बात है हे विधाता विना मनोरथ कीन्हे ऐसा वचन कैसे मेरे मुखते निसरि गया यह प्रारब्ध है २२ ॥

सुमालीवरलब्धांस्तान्ज्ञात्वापौत्रान्निशाचरान्॥ पातालान्निर्भयःप्रायात्प्रहस्तादिभिरन्वितः २३ दशग्रीवंपरिष्वज्यवचनंचेदमब्रवीत् ॥ दिष्ट्यातेपुत्रसंवृत्तो वांछितोमेमनोरथः २४ यद्भयाच्चवयंलंकांत्यक्त्वायातारसातलम् ॥ तद्गतंनो महाबाहोमहद्विष्णुकृतंभयम् २५ अस्माभिःपूर्वमुषितालंकेयंधनदेनतोआक्रांतामिदानींत्वंप्रत्यानेतुमिहार्हसि २६ साम्नावाथबलेनापिराज्ञांबन्धुःकुतःसुहृत्॥ इत्युक्तोरावणःप्राहनार्हस्येवंप्रभाषितुम् २७ वित्तेशोगुरुरस्माकमेवंश्रुत्वातमब्रवीत् ॥ प्रहस्तःप्रसितंवाक्यंरावणंदशकंधरम् २८ ॥

(पौत्रान्निशाचरान्तान्वरलब्धान्ज्ञात्वासुमालीप्रहस्तादिभिः अन्वितःनिर्भयःपातालात्प्रायात्) अपनी कन्या के पुत्ररावणादि निशाचरों को ब्रह्मासे अमरत्ववर प्राप्त भया ऐसाजानि सुमाली राक्षस प्रहस्तादि मंत्रिनसहित निर्भय पाताल ते निसरा २३ (दशग्रीवंपरिष्वज्यचइदंवचनं अब्रवीत्पुत्रमेवांछितः मनोरथःतदिष्ट्यासंवृत्तः) इहाँआय सुमाली रावण को हृदयमें लगाय पुनः ऐसा वचन बोलताभया हे पुत्र मेरा वांछित मनोरथ जो कछुरहा सो तुमने आनन्द पूर्ण किया २४ (यत्भयात्चवयंलंकांत्यक्त्वारसातलंयातामहाबाहोविष्णुकृतंनःमहद्भयंतत्गतं) जाकी भयते पुनः हमलोग लंका त्याग किया रसातल को गये हे महाबाहो वह विष्णु की करी हुई हमलोगों को महा भयरहै भाव विष्णुमारि डारहिंगे इति भयरहै सो अबमिटि गई २५ (पूर्वंइयंलंकाअस्माभिःउषिताइदानींतेभ्रात्राधनदेन आक्रांताइहप्रत्यानेतुंत्वंअर्हसि। पूर्वकाल में यह लंकाहमलोगों करिकैबसाई गई है अबतुम्हारे भाई कुबेरने बसिलिया है अब इस लंकापुरी को पुनः लेलेने के तुम योग्यहौ २६ (साम्नावाअथवलेनअपिराज्ञांकुतःबंधुं सुहृत्इतिउक्तःरावणः प्राहएवंप्रभाषितुंनअर्हसि) चहौ भाईते सनेह पूर्वक पावो अथवा बलकरि भी लेलेउ क्योंकि राजों के कहूंभाई मित्रहोते हैं ऐसा जब सुमाली ने कहा तब रावण बोला कि ऐसा अनुचित कहवेके नहीं योग्यहौ २७ (वित्तेशःअस्माकंगुरुःएवंश्रुत्वा प्रहस्तःप्रसितंवाक्यंदशकंधरंरावणंतंअब्रवीत्)कुबेर हमसब भाइयों ते बड़ापिता के समान हैं ऐसा सुनि के प्रहस्त तात्पर्य युक्त वचनको दशकंधर जो रावण है ताहि प्रति बोलता भया २८ ॥

शृणुरावणयत्नेननैवत्वंवक्तुमर्हसि ॥ नाधीताराजधर्म्मास्तेनीतिशास्त्रंतथैवच २९ शूराणांनहिसौभ्रात्रंशृणुमेवदतःप्रभो ॥ कश्यपस्यसुतादेवाराक्षसाश्चमहाबलाः ३० परस्परमयुध्यंतत्यक्त्वासौहृदमायुधैः ॥ नैवेदानींतनंराजन्वैरंदेवैरनुष्ठि

तम् ३१ प्रहस्तस्यवचःश्रुत्वा दशग्रीवोदुरात्मनः ॥ तथेतिक्रोधताम्राक्षस्त्रिकूटाचल मन्वगात् ३२ दूतंप्रहस्तंसंप्रेष्यनिष्काश्यधनदेश्वरम् ॥ लंकामाक्रम्यसचिवैःराक्षसैःसुखमास्थित. ३३ धनदःपितृवाक्येनत्यक्त्वालंकांमहायशाः ॥ गत्वाकैलासशिखरंतपसातोषयच्छिवम् ३४ ॥

(रावणयत्नेनशृणुवक्तुं एवनअर्हसिराजधर्माःचतथाएवनीतिशास्त्रंतेनअधीता) हेरावण सावधानता सहित मेरेवचन सुनि लीजिये तब उत्तर दीजिये अभी उत्तर देनेयोग्य नहीं हो क्योंकि राजधर्म पुनः तैसेही नीतिशास्त्र इत्यादि अभी आपने नहीं पढाहै २९ (प्रभोमेवदतःशृणुशूराणां सौभ्रात्रं नहिकश्यपस्यसुता. देवा.चराक्षसामहाबलाः) हेप्रभो मेरा कहा सुनिये शूरोंमें भाइन के साथ प्रीति नहीं होती है देखिये कश्यपके पुत्र देवता पुनः राक्षस महाबली भये ३० (सोऽहंस्त्यक्त्वाआयुधैः परस्परंअयुध्यंतराजनइदानींतननंवै. अनुप्तिंवैरंनएव) ते कश्यपके पुत्र देवता राक्षस मित्रता त्यागि हथियारों करिके आपुसमें युद्ध करते भये ताते हेराजन् इसींतनको देवनसे नवीन वैर नहीं है भाव देवतोंको अरु राक्षसोंको वैर पूर्वहीते चला आवताहै सोई दृढराखौ ३१ (प्रहस्तस्यवचःश्रुत्वा दुष्टात्मादशग्रीवः तथा इतिक्रोधताम्राक्षः त्रिकूटाचलंअन्वगात्) प्रहस्त के वचन सुनिके दुष्टात्मा रावण बोला जो कहतेहो सोई करोंगो ऐसा कहि क्रोधवश लाल होगये हैं नेत्र जाके सो रावण त्रिकूटाचल लंका समीप जातभया ३२ (प्रहस्तंदूतसम्प्रेष्यधनदेश्वरं निष्काश्यलंकांआक्रम्यराक्षसैःसचिवैःसुखंआस्थितः) प्रहस्त को दूत बनाय पठै कुबेरको निकासि दिया आप रावण लङ्कामें जाय सब राक्षसों मंत्रियों सहित सुख पूर्वक वास करता भया ३३ (महायशाःधनदःपितृवाक्येन लङ्कांत्यक्त्वा कैलासशिखरंगत्वातपसाशिवंतोषयत्) महा यशवन्त कुबेर पिताके वचन करिके लङ्काको त्यागकिया कैलासके शिखरपर जाय तपस्या करिके शिवजीको प्रसन्न करतेभये ३४ ॥

तेनसख्यमनुप्राप्यतेनैवपरिपालितः ॥ अलकांनगरींतत्रनिर्ममेविश्वकर्मणा ३५ दिक्पालत्वंचकारात्रशिवेनपरिपालितः ॥ रावणोराक्षसैःसार्द्धमाभिषिक्तःसहानुजे. ३६ राज्यंचकारासुराणांत्रिलोकींबाधयन्खलः ॥ भगिनींकालखंजायददौविकटरूपिणीं ३७ विद्युज्जिह्वायनाम्नासौमहामायीनिशाचरः ॥ ततोमयोविश्वकर्माराक्षसानांदितेःसुतः ३८ सुतांमंदोदरींनाम्नाददौलोकैकसुंदरीम् ॥ रावणायपुनःशक्तिममोघांप्रीतिमानसः ३९ वैरोचनस्यदौहित्रींवृत्रज्वालेतिविश्रुतां ॥ स्वयंदत्ताःसुदहत्कुम्भकर्णायरावणः ४० ॥

(तेनसख्यंअनुप्राप्यतेनपरिपालितः एवतत्रअलकांनगरींविश्वकर्मणा निर्ममे) तिन शिव करिके सख्यताको प्राप्तभये अरु तिनहीं करिके रक्षाकोभी प्राप्तभये ताते कुबेर तिसी कैलासपर अलका नामे नगरी विश्वकर्मा करिकै निर्माण कराते भये ३५ (शिवेनपरिपालितः अत्रदिक्पालत्वंचकार राक्षसैःसार्द्धंसहानुजे. रावणःअभिषिक्तः) शिवजीसे रक्षाको प्राप्तहवै कुबेर तो अलकापुरी में वास करि उत्तर दिशाको रक्षा करनेवाले भये अरु लङ्कामें राक्षसों सहित तथा छोटे भाइन सहित रावण राज्याभिषेक को प्राप्तभया ३६ (त्रिलोकींबाधयन्खलः असुराणाराज्यंचकारविकटरूपिणीं भगिनीं कालखंजायददौ) तीनिहूं लोकनको बाधा करत सन्ते खल रावण असुरोंकी राज्य करता भया

भयंकर है रूप जिसको ऐसी अपनी बहिनको कालखंजके वंशमें विवाहि देताभया ३७ (महामायी निशाचरः असौनाम्नःविद्युज्जिह्वायततः दितेःसुतःमयःराक्षसानांविश्वकर्मा) महा मायावी निशाचर इसको नाम विद्युज्जिह्वा ताके अर्थ सूर्पणखाको विवाहि देताभया तदनन्तर दितिका पुत्र मय नामे जो राक्षसोंको विश्वकर्मा है कारीगर ३८ (लोकैकसुन्दरींमंदोदरीं नाम्नासुतांरावणायददौ पुनःप्रीतिमानसः अमोघांशक्तिं) जो लोकमें एकही सुन्दरि मंदोदरीनामें अपनी कन्याको मयने रावणके अर्थ विवाहि देताभया पुनः प्रीतियुत मनसों एक अमोघ जो खालीनजाय ऐसी शक्तिदिया ३९ (वृत्रज्वालाइतिविश्रुतां वैरोचनस्यदौहित्रींस्वयंदत्तः रावणःकुंभकर्णायमुद्वहत्) वृत्रज्वाला ऐसा नाम प्रसिद्ध वैरोचनकी दौहित्री ताको पिता आपही ने दिया तिसको रावण कुम्भकर्णके अर्थ विवाह करता भया ४० ॥

गंधर्वराजस्यसुतांशैलूषस्यमहात्मनः ॥ विभीषणस्यभार्यार्थेधर्मज्ञांसमुदावहत् ४१ सरमांनामसुभगांसर्वलक्षणसंयुताम् ॥ ततोमंदोदरीपुत्रंमेघनादमजीजनत् ४२ जातमात्रस्तुयोनादंमेघवत्प्रमुमोचह ॥ ततःसर्वेऽब्रुवन्मेघनादोयमितिचासकृत् ४३ कुंभकर्णस्ततःप्राहनिद्रामांबाधतेप्रभो ॥ ततश्चकारयामासगुहांदीर्घांसुविस्तराम् ४४ तत्रसुष्वापमूढात्माकुम्भकर्णोविघूर्णितः ॥ निद्रितेकुंभकर्णेतुरावणोलोकरावणः ४५ ब्राह्मणानृषिमुख्यांश्चदेवदानवकिन्नरान् ॥ देवश्रियोमनुष्यांश्चनिजघ्नेसमहोरगान् ४६ धनदोपिततःश्रुत्वारावणस्याक्रमंप्रभुः ॥ अधर्ममाकुरुष्वेतिदूतवाक्यैर्निवारयेत् ४७ ॥

(महात्मनःगन्धर्वराजस्य शैलूषस्यसुतांधर्मज्ञां विभीषणस्यभार्यार्थेसमुदावहत्) महात्मा गन्धर्वोंके राजा शैलूषकी जो कन्या जो स्वधर्मको जाननेवाली ताहि विभीषणकी भार्याहोने अर्थ सहित आनन्द विवाह करते भये ४१ (सुभगांसर्वलक्षणसंयुतां सरमांनामततःमंदोदरीमेघनादपुत्रमजीजनत्) सौभागवतीके सब चिह्न सयुक्त सरमा नाम जाको सो विभीषण पत्नी है तदनन्तर मंदोदरी मेघनाद नामे पुत्र उत्पन्न करतीभई ४२ (यःजातमात्रःतुमेघवत्नादं प्रमुमोचहततःअयंमेघनादः इतिचासकृत्सर्वेअब्रुवत्) जो उत्पन्न होतही पुनः मेघोंके तुल्य शब्दको करता भया ताते यह मेघनादहै ऐसा नाम किसीने कहा पुनः बारम्बार सबै राक्षस मेघनादै कहाकिये ४३ (ततःकुम्भकर्णःप्राहप्रभोमांनिद्राबाधतेततःदीर्घांसुविस्तराम्गुहांचकारयामास) तदनन्तर कुंभकर्ण बोले हे प्रभो मोको निद्रा बहुत बाधा करती है तब रावण बड़ा लंबा चौंड़ा एक गुहा निर्माण करावता भया ४४ (तत्र मूढात्माकुंभकर्णःविघूर्णितः सुष्वापकुंभकर्णेनिद्रितेतुलोकरावणः रावणः) तहां गुहा में मूढात्मा कुंभकर्ण निद्रावश सोवता भया कुंभकर्ण के सोवतसंते पुनः लोक को रोवावने वाला रावण क्या किया ४५ (ब्राह्मणानृषिमुख्यांश्चदेवदानवकिन्नरान्समहोरगान्मनुष्यांश्चदेवश्रियःनिजघ्ने) ब्राह्मण ऋषिमुख्य पुनः देवता दानव किन्नर सहित महानाग मनुष्य देव इत्यादि सबको संग्राम में जीति त्रिलोक बासिन की ऐश्वर्य्य नाशकरि दिया ४६ (रावणस्यअक्रमंप्रभुःधनदःअपिश्रुत्वाततः अधर्ममाकुरुष्वइतिदूतवाक्यैःनिवारयत्) रावण के अधर्म कर्मों को प्रभु कुबेर भी सुना तब संदेश दिये कि अधर्मन करौ ऐसे दूतद्वारा बचनों करिकै मनेकिये ४७ ॥

ततःक्रुद्धोदशग्रीवोजगामधनदालयम् ॥ विनिर्जित्यधनाध्यक्षंजहारोत्तमपुष्पकम् ४८ ततोयमंचवरुणंनिर्जित्यसमरेऽसुरः ॥ स्वर्गलोकमगात्तूर्णंदेवराजजिघांसया ४९ ततोऽभवन्महद्युद्धमेंद्रेणसहदैवतैः ॥ ततोरावणमभ्येत्यवबंधत्रिदशेश्वरः ५० तच्छ्रुत्वासहसागत्यमेघनादःप्रतापवान् ॥ कृत्वाघोरंमहद्युद्धंजित्वात्रिदशपुंगवान् ५१ इंद्रंगृहीत्वाबध्वासौमेघनादोमहाबलः ॥ मोचयित्वातुपितरंगृहीत्वेन्द्रंययौपुरम् ५२ ब्रह्मातुमोचयामासदेवेंद्रमेघनादतः ॥ दत्वावरान्बहूंस्तस्मैब्रह्मास्वभवनंययौ ५३ रावणोविजयीलोकान्सर्वान्जित्वाक्रमेणतु ॥ कैलासंतोलयामासबाहुभिःपरिघोपमैः ५४ ॥

(ततःदशग्रीवःक्रुद्धःधनदालयम्जगामधनाध्यक्षंविनिर्जित्यउत्तमपुष्पकंजहार)कुवेरको संदेश सुनि तब रावण क्रोध करि कुवेर के मंदिर को जाताभया संग्राममें कुवेर को जीति के उत्तम जो पुष्पक विमान रहै ताको हरिलेता भया ४८ (ततःअसुरःयमंचवरुणंसमरेनिर्जित्य देवराजजिघांसयातूर्णं स्वर्गलोकंअगात्) तदनंतर असुर रावण यमराज को वरुणको संग्राम में जीति इन्द्रको जीतने की इच्छा करिकै शीघ्रही स्वर्गलोक को जाता भया ४६ (, ततःसहदैवतैःइन्द्रेणमहत्युद्धंअभवत्ततःत्रिदशेश्वरःअभ्येत्यरावणंवबंध) तदनंतर सहित देवतों इन्द्र करिकै रावण के साथ महायुद्ध होतभा तदनंतर इन्द्र संग्राम में रावण को बांधि लिये ५० (तत्श्रुत्वामेघनादःप्रतापवान्सहसागत्यमहत् घोरंयुद्धं कृत्वात्रिदशपुंगवान्जित्वा)रावणको बंधनसो सुनिकै मेघनाद बड़ा प्रतापी सहसाजाय महा भयंकर युद्धकरि सब उत्तम देवनको जीति लिया५१(महाबलःमेघनादःपितरंमोचयित्वाइन्द्रंगृहीत्वा असौबध्वातुइंद्रंगृहीत्वापुरंययौ)महाबली मेघनाद अपनेपिताको छुड़ाय लिया इन्द्रको पकरिउनको बांधिलिया पुनः इन्द्रको बांधे लिहे लंकाको जाताभया ५२(ब्रह्मामेघनादतःदेवेन्द्रं मोचयामासतुबहून्स्तस्मैवरान्दत्त्वाब्रह्मास्वभवनंययौ) ब्रह्माजाय मेघनाद ते इंद्रको छुड़ाते भये पुनः बहुतसे ताके अर्थ वांछित वरदान देकै ब्रह्मा अपने मंदिरको जातेभये ५३ (रावणःक्रमेणसर्वान्जित्वालोकान्विजयीतुपरिघोपमैःबाहुभिःकैलासंतोलयामास) रावणक्रम क्रम करिकै सबको जीति सबलोकन में विजय को पाय पुनः मुद्गर के समान भुजों करिकै कैलास को उठाय लेता भया ५४ ॥

तत्रनंदीश्वरेणैवशप्तोयंरावणेश्वरः ॥ वानरैर्मानुषैश्चैवनाशंगच्छेतिकोपिना ५५ शप्तोप्यगणयन्वाक्यंययौहैहयपत्तनम् ॥ तेनबद्धोदशग्रीवःपुलस्त्येनविमोचितः ५६ ततोपिबलमासाद्यजिघांसुर्हरिपुंगवम् ॥ धृतस्तेनैवकक्षेणबालिनादशकंधरः ५७ भ्रामयित्वातुचतुरःसमुद्रान्रावणंहरिः ॥ विसर्जयामासततस्तेनसख्यंचकार सः ५८ रावणःपरमप्रीतएवंलोकान्महाबलः ॥ चकारस्ववशेरामबुभुजेस्वयमेव तान् ५९ एवंप्रभावोराजेंद्रदशग्रीवःसहेंद्राजित् ॥ त्वयाविनिहतःसंख्येरावणो लोकरावणः ६० ॥

(तत्रअयंरावणेश्वरःनंदीश्वरेणएवशप्तः वानरैःचएवमानुषैःनाशंगच्छइतिकोपिना) तहां यह रावणनंदीश्वर करिकै शापदिया गया अर्थात् शिव पार्वती विहारमें रहे तहां को रावण जाने लगा तब

नंदीश्वर रोंका तापर रावण कहा कि तू वानर कैसो मुख लिहे क्या रोकता है तब शापदिये कि वानरों करिकै पुनः निश्चयकरि मनुष्यों करिकै नाशको प्राप्तहो ऐसावचन कोपकरिकै कहे ५५ (शप्तःअपिवाक्यंअगणयन् हैहयपत्तनम्अयौतेनदशग्रीवःबद्धःपुलस्त्येनविमोचितः) शापदीन्हे पर भी नंदीश्वर के वचन को कछु न गना पुनः सहस्रबाहुके नगर को गया तिसने रावण को बांधि लिया तब पुलस्त्य मुनि ने जाय छुड़ाया ५६ (ततःअपिबलंआत्माद्यहरिपुंगवंजिघांसुःदशकंधरःतेनवालिनाएवकक्षेणधृतः) तदनंतर भी बलके गर्वको प्राप्त वानरों के राजा को जीतने को किष्किंधामें आया रावणको तहां तिसवालीने कंखरीमें दाबिराखा ५७ (तुहरिःरावणंचतुरःसमुद्रान् भ्रामयित्वाततःविसर्जयामासततःतेनसख्यंचकार) पुनःबाली रावणको बगलमें दाबेचारिहु समुद्रों तक फिराय तब छोंड़ि देताभया पुनःतो रावण बलीजानि वालीसे मित्रता करता भया ५८ (एवंपरमप्रीतमहाबलः रावणः लोकान्स्ववशेचकारहेरामतान्एवस्वयंबुभुजे) इसीप्रकार परम प्रसन्न महाबली रावण सबलोकन को अपनेवश में करता भया पुनः हे रघुनंदन तिनलोकन को सुख आपही भोगता भया ५९ (सहइंद्रजित्दशग्रीवःएवंप्रभावःराजेंद्रलोकरावणःरावणःत्वयासंख्येविनिहतः) सहित मेघनाद रावण ऐसा प्रभाववन्त भया हे राजाधिराज लोकों को रोवानेवाला रावण आप करिकै रणमेंमारा गया ६० ॥

मेघनादश्चानिहतोलक्ष्मणेनमहात्मनः ॥ कुंभकर्णश्चानिहतस्त्वयापर्वतसन्निभः ६१ भवान्नारायणःसाक्षाज्जगतामादिकृद्विभुः ॥ त्वत्स्वरूपमिदंसर्वंजगत्स्थावरजंगमम् ६२ त्वन्नाभिकमलोत्पन्नोब्रह्मालोकपितामहः ॥ अग्निस्तेमुखतोजातोवाचासहरघूत्तम ६३ बाहुभ्यांलोकपालौघाश्चक्षुर्भ्यांचंद्रभास्करौ ॥ दिशश्चविदिशश्चैवकर्णाभ्यांतेसमुत्थिताः ६४ घ्राणात्प्राणःसमुत्पन्नश्चाश्विनौदेवसत्तमौ ॥ जंघाजानूरुजघनाद्भुवर्लोकादयोभवन् ६५ कुक्षिदेशात्समुत्पन्नाश्चत्वारःसागराहरे ॥ स्तनाभ्यामिंद्रवरुणौवालखिल्याश्चरेतसः ६६ ॥

(चमहात्मनःलक्ष्मणेनमेघनादःनिहतःचपर्वतसन्निभःकुंभकर्णःत्वयानिहतः) पुनःमहात्मा लक्ष्मण करिकै मेघनाद मारागया पुनः पर्वत तुल्य कुम्भकर्ण आप करिकै मारागया ६१ (जगतां आदिकृत्विभुःभवान्साक्षात्नारायणःस्थावरजंगमंइदंसर्वजगत्त्वत्स्वरूपं) जगत् के आदि कर्त्ता आप साक्षात् नारायणहौ चराचर यह सब जगत् आपही को विराट् स्वरूप है ६२ (लोकपितामहःब्रह्मा त्वत्नाभिकमलोत्पन्नःरघूत्तमवाचासहअग्निः तेमुखतःजातः) सबलोकों के पितामह ब्रह्माआप की नाभी कमल ते उत्पन्न भये हे रघुवंशनाथ वाणीसहित अग्नि आप के मुखते उत्पन्न भये ६३(लोकपालौघःबाहुभ्यांचंद्रभास्करौचक्षुर्भ्यांदिशः चएवविदिशःचतेकर्णाभ्यांसमुत्थिताः) हे श्री रघुनाथ जी लोकपाल जो समूह हैं ते सब आपकी बाहुनसे उत्पन्न भये हैं अरुचंद्रमा तथा सूर्यते दोऊ आप के नेत्रोंसे उत्पन्न भये हैं पूर्वदक्षिण पश्चिम उत्तरादि दिशा पुनः आग्नेय नैर्ऋत्य वायव्य ईशानादिविदिशा आप के श्रवणसे उत्पन्न होते भये ६४ (प्राणःचसत्तमौ देवअश्विनौघ्राणात्समुत्पन्नःजंघाजानुऊरुजघनात्भुवर्लोकादयःअभवन्) लोकनके प्राणपुनः उत्तम देव अश्विनीकुमार आपकी नासिका से उत्पन्न भये आपकी जंघाजानुनी ऊरुजघनादिते भुवःआदि लोकभये ६५ (हरेकुक्षिदेशात्चत्वारः

सागराःसमुत्पन्नाःइंद्रवरुणौस्तनाभ्यांचरेतसःबालखिल्याः) हेहरे आपकी कोंपिसे चारिहु समुद्र उत्पन्न भये इन्द्र वरुणदोऊ स्तनसे उत्पन्नभये आपके वीर्यसे बालखिल्या ऋषिसाठिहजार उत्पन्नभये ६६ ॥

मेढ्राद्यमोगुदान्मृत्युर्मन्यो रुद्रस्त्रिलोचनः॥अस्थिभ्यःपर्वताजाताःकेशेभ्योमेघसंहतिः६७ओषध्यस्तवरोमेभ्योनखेभ्यश्चखरादयः॥त्वंविश्वरूपःपुरुषोमायाशक्तिसमन्वितः६८नानारूपइवाभासिगुणव्यतिकरेसति ॥ त्वामाश्रित्यैवविबुधाःपिबन्त्यमृतमध्वरे६९ त्वयासृष्टमिदंसर्वंविश्वंस्थावरजंगमम् ॥ त्वमाश्रित्यैवजीवंतिसर्वेस्थावरजंगमाः ७० त्वद्युक्तमखिलंवस्तुव्यवहारेपिराघव॥क्षीरमध्यगतंसर्पिर्यथाव्याप्याखिलंपयः ७१ त्वद्भासाभासतेर्कादिर्नत्वंतेनावभाससे ॥ सर्वगंनित्यमेकंत्वांज्ञानचक्षुर्विलोकयेत् ७२ ॥

(यमःमेढ्रात्मृत्युःगुदात्मन्योत्रिलोचनः रुद्रःअस्थिभ्यःपर्वताः जाताःकेशेभ्यःमेघसंहतिः) यमराज आपके लिंगसे भये मृत्यु गुदाते भये क्रोधसे त्रिलोचन रुद्रभये आपके हाडों से सब पर्वत भये बारोंसे मेघ समूह उत्पन्न भये ६७ (तवरोमेभ्यःओषध्यः चनखेभ्यः खरादयः मायाशक्तिसमन्वितः त्वंविश्वरूपःपुरुषः) आपके रोमोंसे अन्नादि सब ओषधी उत्पन्न भई पुनः नखोंसे लोहादि कठोर वस्तु उत्पन्न भये माया शक्ति सयुक्त आप विश्वरूप पुरुषहौ भाव सब संसार आपहीको रूप है ६८ (गुणव्यतिकरेसतिनानारूप इवआभासित्वांआश्रित्यएवविबुधाः अध्वरेअमृतंपिबंति) मायाके सत्व रज तमादि गुणोंकी न्यूनाधिक परस्पर मिलान भये सन्ते अनेक रूपवत् प्रकाशित होतेहौ पुनः अग्निरूप आपके आश्रित देवताभी यज्ञमें हव्यरूप अमृतको पान करते हैं ६९(स्थावरजंगमंइदंसर्वं विश्वंत्वयासृष्टंत्वंआश्रित्य सर्वेस्थावरजंगमाःजीवन्तिएव) हे रघुनन्दन अचल चलायमान यह सब संसार आपहीने रचाहै पुनः आपहीके आश्रित सब प्राणी जीवतेभी हैं ७० (राघवव्यवहारेपित्वत् युक्तंअखिलंवस्तुयथा अखिलपयःव्याप्यक्षीरमध्यगतंसर्पिः) हे राघव जीवन मरण हानि लाभ सुख दुःख इत्यादि लोक व्यवहारमेंभी आप युक्त सब वस्तुहैं जैसे समग्र दुग्धके सब अंगोंको प्राप्त करिकै दुग्ध मध्यमें व्याप्त घृत रहताहै तैसे आपके सत्ताते सब चैतन्य है ७१ (त्वत्भासाअर्कादिभासतेत्वं नतेनावभाससेनित्यंएकं सर्वगंत्वांज्ञानचक्षुःविलोकयेत्) आपके प्रकाश करिकै सूर्य चन्द्र अग्नि आदि प्रकाशमान हैं अरु आपनहीं तिन करिकै प्रकाशितहौ नित्य एक सबमें व्यापक आपको ज्ञान दृष्टिवाले देखते हैं ७२ ॥

नाज्ञानचक्षुस्त्वांपश्येदंधदृक्भास्करंयथा॥ योगिनस्त्वांविचिन्वंतिस्वदेहेपरमेश्वरः ७३ अतन्निरशनमुखैर्वेदशीर्षैरहर्निशम्॥त्वत्पादभक्तिलेशेनगृहीतायदियोगिनः ७४ विचिन्वंतोहिपश्यंतिचिन्मात्रंत्वांनचान्यथा ॥ मयाप्रलपितंकिंचित्सर्वज्ञस्यतवाग्रतः॥क्षंतुमर्हसिदेवेशतवानुग्रहभागहं ७५ दिग्देशकालपरिहीनमनन्यमेकंचिन्मात्रमक्षरमजंचलनादिहीनं ॥ सर्वज्ञमीश्वरमनंतगुणंव्युदस्तमायंभजेरघुपतिंभजतामभिन्नम् ७६ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसम्वादेउत्तरकाण्डेद्वितीयस्सर्गः २ ॥

(अज्ञानचक्षुःस्वांनपश्यंतेयथाअन्धदृक्भास्करंयोगिनः स्वदेहेपरमेश्वरंत्वांविचिन्वंति) अज्ञान दृष्टिवाले आपको नहीं देखते हैं जैसे अन्ध पुरुष सूर्यको नहीं देखताहै पुनः योगीजन आपनी देहही में परमेश्वर जो आपहौ तिनहिं ढूंढते हैं ७३ (अतत्निरशनमुखैःअहर्निशंवेदशीर्षैःयदियोगिनःत्वत् पादभक्तिलेशेनगृहीता) अमूर्ति निराकृति निर्गुणादि करिकै जो उपनिषदों करिकै दिनों राति वर्णन यद्यपि कियाजात भाव जाको नेति नेति करत तौभी योगीजन आपके पद कमलोंकी भक्तिकी लेश करिकै आपको गहि लेतेहैं भाव प्रेमके वशहौ ७४ (चिन्मात्रंहित्वांविचिन्वंतः पश्यतिचअन्यथान सर्वज्ञस्यतवाग्रतःमयाकिञ्चित्प्रलपितं देवेशतवानुग्रहभागहंक्षंतुमर्हसि) चिन्मात्रभी आपको भक्ति करि ढूंढतेहुये देखिलेते हैं पुनः अन्य उपायते नहीं देखि परतेहौ सर्वज्ञ आप तिनके आगे मैंने कछु वर्णन किया सो प्रौढताहै परन्तु हे देवेश आपहीकी अनुग्रहको भागी मैंभीहौं ताते क्षमा करिबेयोग्य हौ क्षमाकरौ ७५ (दिग्देशकालपरिहीनं अनन्यंएकंचिन्मात्रंअक्षरंअजंचलनादिहीनं सर्वज्ञंईश्वरंअनन्तगुणंव्युदस्तमायं भजतांचभिन्नंरघुपतिंभजे) दिशा देशकाल करिकै हीन जाको दूसरा नहीं एकही चिन्मात्र आत्मतत्त्व जन्म रहित चलनादि विषय हीन सब बात जाननेवाला ईश्वर अनंत हैं गुण जामें दूरि कियाहै मायाके दोष जिसने भजन करनेवाले ते भिन्न नहीं ऐसे रघुपतिको हम भजते हैं ७६ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचितेअध्यात्म भूषणेउत्तरकाण्डेद्वितीयःप्रकाशः २ ॥

श्रीरामउवाच ॥ बालिसुग्रीवयोर्जन्मश्रोतुमिच्छामितत्त्वतः ॥रवीन्द्रौवानराकारौ जज्ञातेइतिनःश्रुतं १ ॥ अगस्त्यउवाच ॥मेरोःस्वर्णमयस्याद्रेर्मध्यशृंगेमणिप्रभे॥ तस्मिन्सभास्तेविस्तीर्णाब्रह्मणःशतयोजना २ तस्यांचतुर्मुखःसाक्षात्कदाचिद्यो गमास्थितः ॥ नेत्राभ्यांपतितंदिव्यमानंदसलिलंबहु ३ तद्गृहीत्वाकरेब्रह्माध्या त्वाकिंचित्तदत्यजत् ॥ भूमौपतितमात्रेणतस्माज्जातोमहाकपिः ४ तमाहद्रुहि णोवत्सकिञ्चित्कालंवसात्रमे ॥ समीपेसर्वशोभाढ्येततःश्रेयोभविष्यति५ ॥

सवैया ॥ विधिअंशुकपी जलनारिपवासव वीर्यपरे वरबालिभयो । रविवीर्य सुकण्ठसबालिपठै पुरपम्पतटे विधिराजदयो ॥ हरिराम जवैमहिभारहरै कपिसेनसतासुसहायभयो । इतिभाषिअगस्त्य महामहिमा रघुनन्दनकीसुबखानकयो ॥ (बालिसुग्रीवयोःजन्मतत्त्वतःश्रोतुंइच्छामिनःइतिश्रुतंरवि इन्द्रौवानराकारौजज्ञाते) रघुनन्दन बोले हे अगस्त्यजी बालि अरु सुग्रीवके जन्मको हाल यथार्थ सुनिवेकी हमको इच्छा है क्योंकि हम ऐसा सुना है कि सूर्य अरु इंद्र वानराकार देहते उत्पन्न भये हैं सो यथार्थ कहिये १ (स्वर्णमयस्यमेरोःअद्रेःमध्यमणिप्रभेशृंगेतस्मिन्शतयोजनाविस्तीर्णा ब्रह्मणःसभाआस्ते) अगस्त्यजी बोले हे रघुनन्दन कञ्चनमय सुमेरु पर्वतके मध्य में मणिनकी प्रभा जामें एक शृंग है तामें सौ योजन विस्तारकी एक ब्रह्माजी की सभा है २ (तस्यांकदाचित्साक्षात् चतुर्मुखःयोगंआस्थितःनेत्राभ्यांआनन्दसलिलंदिव्यंबहुपतितं) तिसी सभा में किसी समय में साक्षात् ब्रह्मा योगाभ्यास अर्थात् समाधि में बैठेरहे सो प्रेमानन्द उमँगा सो नेत्रनसे आनन्द जल दिव्य बहुत गिरताभया ३ (तत्ब्रह्माकरेगृहीत्वाध्यात्वातत्किंचित्अत्यजत्भूमौपतितमात्रेणतस्मात्

महाकपिःजातः) सो आनन्द जल ब्रह्माहाथ में लैकै परमेश्वर को ध्यानकरि सो जल कछु डारि दिये सो भूमिपै गिरतही ताही जलते एक महाभारी वानरहोताभया ४ (तंद्रुहिणःआहवत्ससर्वशोभाढयेमेसमीपेअत्रकिंचित्कालंवसततःश्रेयःभविष्यति) त्यहि वानरप्रति ब्रह्मा बोले हेवत्स सर्व शोभायुक्त मेरे समीप यहां कुछ काल वासकरौ तब तुम्हारा कल्याणहोयगो ५ ॥

इत्युक्तोन्यवसन्तत्रब्रह्मणावानरोत्तमः ॥ एवंबहुतिथेकालेगतेऋक्षाधिपःसुधीः६ कदाचित्पर्यटन्नद्रौफलमूलार्थमुद्यतः ॥ अपश्यद्दिव्यसलिलांवापीमणिशिलान्वितां ७ पानीयम्पातुमागच्छत्तत्रछायामयंकपिं ॥ दृष्ट्वाप्रतिकपिंमत्वानिपपातजलांतरे ८ तत्राहृष्ट्वाहरिंशीघ्रंपुनरुत्प्लुत्यवानरः ॥ अपश्यत्सुंदरींरामामात्मानं विस्मयंगतः ९ ततःसुरेशोदेवेशंपूजयित्वाचतुर्मुखम् ॥ गच्छन्मध्याह्नसमयेदृष्ट्वानारींमनोरमाम् १० कंदर्पशरविद्धांगस्त्यक्तवान्वीर्यमुत्तमम् ॥ तामप्राप्यैवतद्बीजंबालदेशेपतद्भुवि ११ ॥

(इतिब्रह्मणाउक्तःवानरोत्तमःतत्रन्यवसत्एवंबहुतिथेकालेगतेसुधीऋक्षाधिपः) ऐसा ब्रह्मानेकहा तब वहवानरों में श्रेष्ठतहांपर वासकरताभया इसीप्रकारबहुत दिनबीतिगये तबवह उत्तम बुद्धिवाला ऋक्षराज वानर ६ (कदाचित्फलमूलार्थंउद्यतः अद्रौपर्यटन्मणिशिलान्वितांदिव्यसलिलांवापीं अपश्यत्) किसी समय में फल मूल ढूँढने अर्थ उद्यत पहारपर घूमतेहुये किसी ठौर मणि शिलों करि निर्माणयुक्त दिव्य जलभरा ऐसी एक बावली देखतेभये ऋक्षराज ७ (पानीयंपातुंतत्रआगच्छछायामयंकपिंदृष्ट्वाप्रतिकपिंमत्वाजलांतरेनिपपात्) पानीपीवने हेत तहां समीपगये जल में आपनी छायामय वानराकारदेखि उस प्रतिबिंबको दूसरा वानरमानि ताको गहिवे हेत जल के भीतर कूदिपरतेभये तब ८ (तत्रहरिंअदृष्ट्वावानरःपुनःशीघ्रंउत्प्लुत्यआत्मानंसुन्दरींरामांअपश्यत् विस्मयंगतः) तहां जल में वानरकोतौ देखानहीं ऊबिकै ऋक्षराज वानर पुनः शीघ्रहीं जलते उछरि बाहेरआय अपनी देहको सुन्दरी स्त्री रूपदेखिकै बड़े आश्चर्यको प्राप्तभये ९ (ततःसुरेशःदेवेशंचतुर्मुखंपूजयित्वामध्याह्नसमयेगच्छन्मनोरमाम्नारींदृष्ट्वा) ताही समय में इंद्र देवनके स्वामी ब्रह्माजी को पूजने हेत आयेरहे पूजनकरि जब दुपहर समय चलतसंते मनको रमावनहारी एक सुन्दरी युवतीदेखे १० (कंदर्पशरविद्धांगःउत्तमंवीर्यंत्यक्तवान्तत्बीजंतांबालदेशे अप्राप्यैवभुविअपतत्) कामके बाणकरिकै बेधिगया अंगजिनका ऐसे कामासक्त इंद्र अपना वीर्य त्यागकिये सो वीर्य तिस स्त्री के बालों में प्राप्त ह्वै पुनः भूमिपै आय गिरिपरताभया ११ ॥

वालीसमभवत्तत्रशक्रतुल्यपराक्रमः॥तस्यदत्त्वासुरेशानःस्वर्णमालांदिवंगतः१२ भानुरप्यागतस्तत्रतदानीमेवभामिनीम्॥दृष्ट्वाकामवशोभूत्वाग्रीवादेशेसृजन्महत् १३ वीजंतस्यास्ततःसद्योमहाकायोऽभवद्धरिः ॥ तस्यदत्त्वाहनूमंतंसहायार्थंगतोरविः १४ पुत्रद्वयंसमादायगत्वासानिद्रिताक्वचित् ॥ प्रभातेऽपश्यदात्मानं पूर्ववद्वानराकृतिम् १५ फलमूलादिभिःसार्द्धंपुत्राभ्यांसहितःकपिः ॥ नत्वाचतुर्मुखस्याग्रेऋक्षराजःस्थितासुधीः १६ ततोब्रवीत्समास्वास्यबहुशःकपिकुञ्जरम्॥ तत्रैकंदेवतादूतमाहूयामरसन्निभम् १७ ॥

(तत्रशक्रतुल्यपराक्रमः वालीसंअभवत्तस्यसुरईशानः स्वर्णमालांदत्त्वादिवंगतः) वहबीर्य भूमि में परतही इन्द्र के तुल्य पराक्रमी बाली नामे बानर भया ताको इन्द्र सोनेको माला दैजाकेप्रभाव ते सम्मुख बीर को आधा बल आय जाय इति आशीर्वाद दै स्वर्गको गये १२ (तत्रतदानींएवभानुः अपिआगतःभामिनींदृष्ट्वा कामवशंभूत्वातस्याःग्रीवादेशेमहत् वीजंअसृजन् ततःसद्यःमहाकायः हरिः अभवत् तस्यसहायार्थहनूमंतंदत्त्वारविःगतः) तहां ताही समय में सूर्य भी आये उस स्त्रीको देखि काम बश ह्वै तिस स्त्री के ग्रीवा देश पै महा उत्तम बीर्य डारते भये तब तुरतही उस बीर्य ते बड़े भारी तनको सुग्रीव नामे बानर होता भया ता सुग्रीव की सहायता अर्थ हनूमान् को दैकै सूर्य गये अर्थात् बिद्या पढ़ाये सो गुरु दक्षिणा हनुमान् ते मांगे १३ । १४ (पुत्रद्वयंसंआदायसागत्वाक्वचित् निद्रिताप्रभातेपूर्ववत् वानराकृतिंआत्मानंअपश्यत्) दोऊ पुत्रनको साथलै वह स्त्री जाय कहूं सोय रही प्रभात में जागे पर पूर्वकी नाईं बानराकार अपना शरीर देखते भये प्रथमकी नाईं बानर पुनः ऋक्षराज भये १५ (पुत्राभ्यांसहितःकपिः फलमूलादिभिः सार्द्धंचतुर्मुखस्यअग्रेनत्वासुधीः ऋक्षराजः स्थिता) पुत्रन करिकै सहित वह बानर फल मूलादि सहित जाय ब्रह्माजी के आगे प्रणाम करि बुद्धिवंत ऋक्षराज बैठते भये भाव अपना सब हालकहे १६ (ततःकपिकुंजरं बहुशः समास्वास्यतत्र एकंअमरसन्निभंदेवतादूतंआहूयअब्रवीत्) तब ब्रह्माजी ऋक्षराज को बहुत समुझाय स्त्री होने की ग्लानि दूरि करि पुनः एक देवतों के तुल्य तेजस्वी देवन को दूत बुलाय ताप्रति बोलते भये १७ ॥

गच्छदूतमयादिष्टोगृहीत्वावानरोत्तमं ॥ किष्किंधांदिव्यनगरींनिर्मितांविश्वकर्मणा १८ सर्वसौभाग्यबलितांदेवैरपिदुरासदाम् ॥ तस्यांसिंहासनेवीरंराजानमभिषेचय १९ सप्तद्वीपगतायेयेवानराःसंतिदुर्जयाः ॥ सर्वेतेऋक्षराजस्यभविष्यंतिवशेऽनुगाः २० यदानारायणःसाक्षाद्रामोभूत्वासनातनः ॥ भूभारासुरनाशाय संभविष्यतिभूतले २१ तदासर्वेसहायार्थेतस्यगच्छंतुवानराः ॥ इत्युक्तोब्रह्मणा दूतोदेवानांसमहामतिः २२ यथाज्ञप्तस्तथाचक्रेब्रह्मणातंहरीश्वरम् ॥ देवदूतस्ततोगत्वाब्रह्मणेतन्निवेदयत् २३ तदादिवानराणांसाकिष्किन्धाऽभून्नृपाश्रयः ॥ सर्वेश्वरस्त्वमेवासीरिदानींब्रह्मणार्थितः २४ ॥

(दूतमयादिष्टःवानरोत्तमंगृहीत्वागच्छविश्वकर्मणानिर्मितांदिव्य नगरींकिष्किंधां) हेदूत मेरी आज्ञा करिकै इन उत्तम बानर को साथ लैकरि मृत्यु लोक को जाउ जहां बिश्वकर्मा करिकै बनाई दिव्य नगरी किष्किंधा है १८ (देवैःअपिदुरासदाम् सर्वसौभाग्य बलितांतस्यां सिंहासनेराजानंवीरंअभिषेचय) जो देवतों करिकै भी प्राप्ती दुर्लभ ऐसे सब भोग पदार्थों करिकै युक्त तामें सिंहासन पर इस ऋक्षराज बानर बीर को राज्याभिषेक करौ १९ (येयेवानराःदुर्जयाः सप्तद्वीपगताःसंति तेसर्वेऋक्षराजस्यवशेअनुगाःभविष्यंति) अरु जेजे बानर दुर्जय किसी के जीतबे योग्य नहीं ऐसे बली बीर यावत् सातौ द्वीपन में प्राप्तहैं ते सर्व ऋक्षराज के बशीभूत आज्ञाकार होयँ २०(साक्षात् नारायणः यदा भूभारासुरनाशायसनातनः रामःभूत्वाभूतलेसंभविष्यति) साक्षात् नारायण जब भूमि को भार रूप रावणादि असुरों के नाश अर्थ सनातन राम रूप ह्वै भूतल में प्रकट होयँगे २१ (तदातस्यसहायार्थेसर्वेवानराःगच्छंतु इतिब्रह्मणाउक्तःमहामतिः देवानांदूतः) तब तिन रामकी सहाय के अर्थ सब बानर जायँगे ऐसा ब्रह्माने कहा तब सो महा बुद्धिवंत देवतों को दूत २२ (ब्रह्मणायथाआज्ञप्तः तं

हरीश्वरंचक्रे ततःदेवदूतःगत्वा तत्ब्रह्मणे निवेदयत्) ब्रह्माने जैसी आज्ञादियाहै तैसेही तिस ऋक्ष राज को सब वानरों को राजा करता भया तदनंतर सो देवदूत जाय सो सब हाल ब्रह्मा के अर्थ निवेदन किया सुनाय दिया २३ (तदादिशाकिष्किंधावानराणांनृपाश्रयःअभूत् त्वंसर्वेश्वरः एवासीः इदानींब्रह्मणार्थितः) तबते आदिदै सोकिष्किंधा वानरों की राजधानी होती भई हेरघुनाथजी आप तो सबके ईश्वरहौ सो इस समय में ब्रह्मा करिकै प्रार्थना किये गयेहौ २४ ॥

भूमेर्भारोहृतःकृत्स्नत्वयालीलानृदेहिना॥ सर्वभूतांतरस्थस्यनित्यमुक्तचिदात्मनः २५ अखंडानंदरूपस्यकियानेषपराक्रमः २६ तथापिवर्ण्यतेसद्भिर्लीलामानुषरूपिणः ॥ यशस्तेसर्वलोकानांपापहत्यैसुखायच २७ यइदंकीर्त्तयेन्मर्त्योवालिसुग्रीवयोर्महत् ॥ जन्मत्वदाश्रयत्वात्समुच्यतेसर्वपातकैः २८ अथान्यांसंप्रवक्ष्यामिकथांरामत्वदाश्रयाम् ॥ सीताहृतायदर्थंसारावणेनदुरात्मना २९ पुराकृतयुगेरामप्रजापतिसुतंविभुम्॥सनत्कुमारमेकांतेसमासीनंदशाननः ॥ विनयावनतोभूत्वाह्यभिवाद्येदमब्रवीत् ३० ॥

(नृदेहिनालीलात्वयाकृत्स्नभूमेःभारोहृतःनित्यमुक्तचिदात्मनःसर्वभूतांतरस्थस्य) तिस कारण मनुष्य देहसे लीला करिकै आपने सम्पूर्ण भूमिको भार हरिलिया सो नित्यमुक्त चैतन्य आत्मरूप ते सब भूतके अन्तर स्थित तिनको २५ (अखंडआनन्दरूपस्यएषपराक्रमःकियान्) पुनः सदा एक रस अखंड आनन्दरूप तिनको यह रावणादि वधरूप पराक्रम क्याहै २६ (तथापिलीलामानुषरूपिणःतेयशःसर्वलोकानांपापहत्यैचसुखायसद्भिःवर्ण्यते) तौ भी लीला करि मानुषरूपधारी आप को यश सब लोकोंको पाप दूर करनेके अर्थ पुनः परमसुख प्राप्तीके अर्थ महात्मों करिकै वर्णन किया जाताहै २७ (त्वत्आश्रयत्वात्महत्वालिसुग्रीवयोःजन्मइदंयःमर्त्यःकीर्त्तयेत्ससर्वपातकैःमुच्यते) हे रघुनन्दन आपके आश्रय अर्थात् आपके उपकार अर्थ उत्तम वालि सुग्रीवको जन्म यह कथा जो मनुष्यकीर्तन करताहै सो सब पापों करिकै छूटिजाताहै २८ (अथरामत्वदाश्रयाम्अन्यांकथांसंप्रवक्ष्यामियदर्थंदुरात्मनारावणेनसीताहृतासा) अब हेरघुनाथजी आपको यश बढ़ानेवाली और कछु कथा मैं वर्णन करताहौं जिस अर्थ दुष्टात्मा रावणने सीता हरा सो कथा २९ (हे रामपुराकृतयुगेएकांतेसमासीनंप्रजापतिसुतंविभुंसनत्कुमारंअभिवाद्यदशाननःहिविनयावनतःभूत्वाइदंअब्रवीत्) हेरघुनंदन पूर्वकाल सतयुग विषे एक समय एकांतमें बैठेहुये ब्रह्माके पुत्र समर्थ सनत्कुमार तिनहिं प्रणामकरि रावण बहुत प्रकार स्तुति विनतीकरि प्रसन्नजानि तब अत्यन्त नम्रतापूर्वक अर्थात् हाथ जोरि इस प्रकार वचन बोलता भया ३० ॥

कोन्वस्मिन्प्रवरोलोकेदेवानांबलवत्तरः ॥ देवाश्चयंसमाश्रित्ययुद्धेशत्रुंजयंतिहि ३१ कंयजंतिद्विजानित्यंकंध्यायंतिचयोगिनः ॥ एतन्मेशंसभगवन्प्रश्नंप्रश्नाविदांवर ३२ ज्ञात्वातस्यहृदिस्थंयत्तदशेषेणयोगदृक् ॥ दशाननमुवाचेदंशृणुवक्ष्यामिपुत्रक ३३ भर्त्तायगतांनित्यंयस्यजन्मादिकंनहि ॥ सुरासुरैर्नुतोनित्यंहरिर्नारायणोऽव्ययः ३४ यन्नाभिपंकजाज्जातोब्रह्मालोकसृजांपतिः ॥ सृष्टंयेनैवसकलं

जगत्स्थावरजंगमं ३५ तंसमाश्रित्यविबुधाजयंतिसमरेरिपून् ॥ योगिनोध्यान योगेनतमवानुजपंतिहि ३६ ॥

(देवानांबलवत्तरःप्रवरःकोन्वस्मिन्लोकेचयंसमाश्रित्यदेवाःयुद्धेशत्रूंजयंतिहि) रावण बोला हे भगवन् देवतनमें अधिक बलवान् श्रेष्ठ कौन यहिलोकमें है पुनः जाके बलके आश्रय सहायता पाय देवता युद्धमें शत्रुको जीततेहैं ३१ (द्विजाःनित्यंकंयजंतिचयोगिनःकंध्यायंतिप्रश्नविदांवरहेभगवन् एतत्प्रश्नमेशंस) तथा ब्राह्मण लोग नित्यही किसको पूजतेहैं पुनः योगीजन किसको ध्यावते हैं प्रश्नोत्तर देनेवालोंमें श्रेष्ठ हेभगवन् इस प्रश्नको उत्तर मोसों कहिये ३२ (तस्यहृदिस्थंयत्तत्अशेषेणयोगदृक्ज्ञात्वादशाननंइदंउवाचपुत्रकश्रृणुवक्ष्यामि) तिस रावणके हृदयमें स्थित जो अभिप्राय रहै सो सम्पूर्ण योग दृष्टि ध्यानकरिकै जानिलिये कि अपनी मुक्तिहेत पूछताहै इति जानि सनत्कुमार रावण प्रति बोलते भये हे पुत्र सुनु मैं कहता हौं ३३(यस्यजन्मादिकंनहि जगतांनित्यंभर्त्ताय सुरासुरैःनित्यंनुतःअव्ययःनारायणः) जिसको कभी जन्मादि नहीं होता सब जगत् को जोभरण पोषण करता है देवता दैत्यों करिकै नित्यही बंदनीय जो अविनाशी नारायणहै ३४ (यत्नाभिपंकजात् लोकसृजांपतिःब्रह्माजातः येनएवस्थावरजंगमंसकलंजगत्सृष्टं) जिनकी नाभी कमलते सब प्रजापतिन के पति ब्रह्मा उत्पन्न भये जिसने अचर चरादि सकल जगत् को उत्पन्न कियाहै ३५ (तंसमाश्रित्यविबुधासमरेरिपून्जयंति ध्यानयोगेन योगिनः तंएवानुजपंतिहि) ताही नारायण की सहायता पाय देवता संग्राम में शत्रुन को जीतते हैं पुनः ध्यान योग करिकै योगी जनभी तिसी नारायण को नाम जपते हैं ३६ ॥

महर्षेर्वचनंश्रुत्वाप्रत्युवाचदशाननः ॥ दैत्यदानवरक्षांसिविष्णुनानिहतानिच ३७ कांवागतिंप्रपद्यंतेप्रेत्यतेमुनिपुंगव ॥ तामुवाचमुनिःश्रेष्ठोरावणंराक्षसाधिपम् ३८ देवतैर्निहतानित्यंगत्वास्वर्गमनुत्तमम् ॥ भोगक्षयेपुनस्तस्माद्भ्रष्टाभूमौभवंतिते ३९ पूर्वार्जितैःपुण्यपापैर्म्रियंतेचोद्भवंतिच ॥ विष्णुनायेहतास्तेतुप्राप्नुवंतिहरेर्गतिम् ४० श्रुत्वामुनिमुखात्सर्वंरावणोहृष्टमानसः ॥ योत्स्येहंहरिणासार्द्धमितिचिंतापरोभवत् ४१ मनस्थितंपरिज्ञात्वारावणस्यमहामुनिः ॥ उवाचवत्सतेऽभीष्टं भविष्यतिनसंशयः ४२ ॥

(महान्ऋषेःवचनंश्रुत्वादशाननःप्रत्युवाचविष्णुनानिहितानिदैत्यदानवचरक्षांसि)महान्ऋषिसनत्कुमार के वचन सुनिरावण पुनः मुनि प्रति बोलता भया कि विष्णु करिकै मारेजाते हैं जे दैत्य दानव पुनः राक्षस इत्यादि३७(मुनिपुंगवः प्रेत्यतेकांवागतिंप्रपद्यंतेतंराक्षसाधिपंरावणंमुनिः श्रेष्ठःउवाच) हे मुनि वरतेदैत्यादि मृतकपाछे कौनी गतिकोप्राप्तहोतेहैं सोकहिये इतिसुनि तिसराक्षस राजरावण प्रतिमुनिवर सनत्कुमार बोलतेभये ३८(देवतैःनिहतानित्यंअनुत्तमंस्वर्गंगत्वाभोगक्षये तेपुनःतस्मात्भ्रष्टाभूमौभवंति) हेरावण दैत्यादि जे देवतोंकरिकै मारेजातेहैं ते नित्यही उत्तम गति स्वर्गलोक को जातेहैं तहां सुखभोग पूर्णभये सुकृत नाशभये परते पुनः स्वर्गते भ्रष्ट ह्वै भूमिपर आयमनुष्यादि योनिनमें उत्पन्न होतेहैं ३९ (पूर्वार्जितैःपुण्यपापैःउद्भवंतिचम्रियतेच विष्णुनायेहताःतेतुहरेःगतिंप्राप्नुवंति) पूर्व कियेहुयेपुण्य पापों करिकैजन्मतेहैं दुख सुख भोगि पुनः मरते हैं पुनः विष्णुकरिकै जे मारेजातेहैं ते पुनःहरिकी गतिको अर्थात्वैकुण्ठको प्राप्तहोतेहैं ४० (मुनिमुखात्सर्वंश्रुत्वाहृष्टमानसः

रावणःहरिणासार्द्धंअहंयोत्स्येइतिचिंतापरःअभवत्) मुनिसनत्कुमारकेमुखतेसर्वहालसुनिकैपरमानन्दमन रावणमनोरथ किया कि विष्णुसे मै युद्धकरिप्राणत्यागकरि हरिकी गतिकोलेउँगो ऐसा चितवन करता भया ४१ (रावणस्यमनःस्थितंपरिज्ञात्वा महामुनिःउवाचवत्सतेअभीष्टं भविष्यतिसंशयःन) रावणके मनमें स्थित जो मनोरथ ताहि जानिकै महा मुनि सनत्कुमार पुनः रावण प्रति बोलतेभये हे वत्स तेरा मनोरथ सिद्ध होइगो यामें सन्देह नहीं है ४२ ॥

कंचित्कालंप्रतीक्षस्वसुखभिवदशानन ॥ एवमुक्त्वामहाबाहोमुनिःपुनरुवाचत म् ४३ तस्यस्वरूपंवक्ष्यामिह्यरूपस्यापिमायिनः ॥ स्थावरेषुचसर्वेषुनदेषुचनदीषुच ४४ ओंकारश्चैवसत्यंचसावित्रीपृथिवीचसः ॥ समस्तजगदाधारःशेषरूपधरोहिसः ४५ सर्वेदेवाःसमुद्राश्चकालःसूर्यश्चचंद्रमाः ॥ सूर्योदयोदिवारात्रीयमश्चैवतथानिलः ४६ अग्निरिंद्रस्तथामृत्युःपर्जन्योवसवस्तथा ॥ ब्रह्मारुद्रादयश्चैवयेचान्येदेवदानवाः ४७ विद्योततिज्वलत्येषपातिचातीतिविश्वकृत् ॥ क्रीडां करोत्यव्ययात्मासोयंविष्णुसनातनः ४८ ॥

(हेदशाननकंचित्कालंप्रतीक्षस्वसुखीभव हेमहाबाहो एवंउक्त्वामुनिःपुनः तंउवाच) हे रावण कछु काल यही मनोरथ राखे रहु तव हरि हाथ मृतक ह्वै सुखी हो परमपद को जा अगस्त्य बोले हे महाबाहो रघुनन्दन इस प्रकार कहिकै सनत्कुमार मुनि पुनः तिस रावण प्रति बोलते भये ४३ (हिअरूपस्यअपिमायिनः तस्यस्वरूपंवक्ष्यामि नदेषुचनदीषुच स्थावरेषुचसर्वेषु) निश्चय करिकै अरूपहै तौभी मायाके आश्रय ह्वै तिस नारायण के स्वरूप कोभी कहता हों नदों विषे पुनः नदियों विषे तथा वृक्षादि स्थावरों विषे पुनः सर्व भूतों विषे ४४ (ओंकारःचएवसत्यंचसावित्रीचपृथिवीसशेषरूपधरोहिसमस्तजगदाधारःसः) शब्दोंमें ओंकार रूपते स्थित वचनोंमें सत्य रूपते स्थित मंत्रों में गायत्री रूप पुनः भूतों में पृथिवी रूप सोई है शेष रूपधारी सब जगत् को आधार सोई है ४५ (सर्वेदेवाःचसमुद्राः चसूर्यःचचंद्रमायमःचएवतथाअनिलः सूर्यउदयःदिवारात्रीकालः) सब देवता सब समुद्र सूर्य चंद्रमा यमराज पवन सूर्य उदय दिन राति इत्यादि जो काल है ४६ (अग्निःइंद्रः तथामृत्युःपर्जन्यःतथावसवः ब्रह्मारुद्रादयः चएवयेअन्येदेवचदानवाः) अग्नि इंद्र मृत्यु मेघ आठौ वसु ब्रह्मा रुद्रादि पुनः और यावद्देवता दानव हैं ४७ (विद्योततिज्वलतिएषविश्वपातिचअतीतिकृत्अव्ययआत्माक्रीडांकरोतिसःअयंविष्णुःसनातनः) सूर्यादि में प्रकाश करत अग्नि आदि में दाह करत संसार को उपजावत पालत संहार करत अविनाशी आत्म रूप से ऐसा क्रीड़ा करता सोई यह विष्णु सनातन है ४८ ॥

तेनसर्वमिदंव्याप्तंत्रैलोक्यंसचराचरम् ॥ नीलोत्पलदलश्यामोविद्युद्वर्णाम्बरावृ तः ४९ शुद्धजांबूनदप्रख्यांश्रियंवामांकसंस्थितां ॥ सदाऽनपायिनींदेवींपश्यन्नालिंग्यतिष्ठति ५० द्रष्टुंनशक्यतेकैश्चिद्देवदानवपन्नगैः ॥ यस्यप्रसादंकुरुतेसचैनंद्रष्टुमर्हति ५१ नचयज्ञतपोभिर्वानदानाध्ययनादिभिः ॥ शक्यतेभगवान्द्रष्टुमुपायैरितरैरपि ५२ तद्भक्तैस्तद्गतप्राणैस्तच्चित्तैर्धूतकल्मषैः ॥ शक्यतेभगवान्

विष्णुर्वेदांतामलदृष्टिभिः ५३ अथवाद्रष्टुमिच्छातेशृणुत्वंपरमेश्वरम् ॥ त्रेतायुगे सदेवेशोभवितानृपविग्रहः ५४ ॥

(सचराचरंइदंसर्वंत्रयलोक्यंतेनव्याप्तं नीलोत्पलदलश्यामः विद्युत्वर्णअंबरावृतं) सहित चर अचर यह सब तीनिहुं लोक तिसी करिकै व्याप्त हैं सोई नील कमल दल सम श्याम वर्ण सुंदर तनमें बिजुली सम वर्ण पीत बसन धारण किहे हैं ४९ (शुद्धजांबूनदप्रख्यांवामांकसंस्थितां सदा अनपायिनींदेवींश्रियं पश्यन्नालिंग्यतिष्ठति) शुद्ध कञ्चनवर्ण दीप्ति जाकी बाम भाग में स्थित सदा अविचल देवी लक्ष्मी को देखतेहुये अंक में लगाये हुये मणिमय सिंहासन पर बैठे हैं ५० (देवदानवपन्नगैःकैश्चित्द्रष्टुंनशक्यते यस्यप्रसादंकुरुतेसचएनंद्रष्टुंअर्हति) देवता दानव नागादि किसी करिकै देखने को शक्य नहीं जाके ऊपर उसी परमात्माकी प्रसन्नता होवै सोई हरि कृपा पात्र उस परमेश्वरको देखि सकता है ५१ (दानाध्ययनादिभिः वायज्ञतपोभिः नचइतरैः अपिउपायैः भगवान् द्रष्टुंनशक्यते) दान वेदाध्ययनादि करिकै अथवा यज्ञ तपस्या करिकै नहीं पुनः तीर्थ व्रतादि और भी उपायों करिकै भगवान् देखने को सुलभ नहीं है ५२ (धूतकल्मषैः तत्भक्तैः तत्गतप्राणैः तत् चित्तैःवेदांतामलदृष्टिभिःविष्णुः भगवान्शक्यते) दूरि भया है पाप जिन्हों को ऐसे जे उसी के भक्त हैं जिनके प्राण उसी में बसे जिनको चित्त उसी में बसा ऐसे रामानुरागिन करिकै वेदांत रूप अमल दृष्टिकरिकै विष्णु भगवान् देखने को सुलभ हैं ५३ (अथवापरमेश्वरंद्रष्टुंइच्छातेत्वंशृणुसदेवेशः त्रेतायुगेनृपविग्रहःभविता) अथवा हे रावण उस परमेश्वरको देखने की इच्छा होय तोको तौ तू मेरा बचन सुनु सोई सर्व देवतों को ईश्वर त्रेता युगमें राजाधिराज रूपते आविर्भाव होयगो ५४ ॥

हितार्थंदेवमर्त्यानामिक्ष्वाकूणांकुलेहरिः ॥ रामोदाशरथिर्भूत्वामहासत्त्वपराक्रमः ५५पितुर्नियोगात्सभ्रात्राभार्ययादण्डकेवने॥विचरिष्यतिधर्मात्माजगन्मात्रास्वमायया ५६ एवंतेसर्वमाख्यातंमयारावणविस्तरात् ॥ भजस्वभक्तिभावेनतदारामंश्रियायुतम् ५७ एवंश्रुत्वाऽसुराध्यक्षोध्यात्वाकिञ्चिद्विचार्यच ॥ त्वयासहविरोधेप्सुर्मुमुदेरावणोमहान् ५८ युद्धार्थीसर्वतोलोकान्पर्यटन्समवस्थितः ॥ एतदर्थंमहाराजरावणोऽतीवबुद्धिमान् ॥ हृतवाञ्जानकींदेवींत्वयात्मवधकांक्षया ५९ इमांकथांयःशृणुयात्पठेद्वासंश्रावयद्वाश्रवणार्थिनांसदा ॥ आयुष्यमारोग्यमनंतसौख्यंप्राप्नोतिलाभंधनमक्षयंच ६० ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेउत्तरकाण्डेतृतीयःसर्गः ३ ॥

(देवमर्त्यानांहितार्थंहरिः इक्ष्वाकूणांकुलेमहासत्त्वपराक्रमः दाशरथिःरामःभूत्वा) देवता मानुषों के हित के अर्थ सोई हरि इक्ष्वाकु बंशमें महा साहस पराक्रमी दशरथ के पुत्र राम नामे अवतीर्ण होयँगे ५५ (जगन्मात्रास्वमाययाभार्ययासभ्रात्राधर्मात्मापितुः नियोगात्दण्डकेवनेविचरिष्यति) जगत् को उत्पन्न पालन करनहारी अपनी माया भार्या सहित छोटेभाई सहित धर्मात्मा रामपिता की आज्ञा ते दण्डकबन में बिचरैंगे ५६ (एवंमयातेविस्तरात्सर्वं आख्यातंरावणतदा श्रियायुतंरामं भक्तिभावेनभजस्व) इसप्रकार प्रसिद्ध परमेश्वर को सब वृत्तांत मैंने तू प्रति विस्तार ते सब वर्णन

किया हे रावण ता समयमें सीता युक्त राम को भक्तिभाव करिकै भजौ ५७ (एवंश्रुत्वाअसुराध्यक्षः महान्रावणः ध्यात्वाकिंचित् विचार्य्यचत्वयासहविरोधेप्सुःमुमुदे) अगस्त्य बोले हे रघुनन्दन इस प्रकार सनत्कुमार ते सब हाल सुनिकै असुरों को राजा महान् रावण ध्यानपूर्वक कछु बिचार करि पुनः आप से विरोध की इच्छा करिकै आनन्द होता भया ५८ (युद्धार्थीलोकान्पर्यटन्सर्वतः समवस्थितः हे महाराज अतीव बुद्धिमान् रावण. त्वयाआत्मवधकांक्षयाएतत् अर्थंजानकींदेवींहृतवान्) युद्ध के अर्थ लोकों में विचरतसंते सर्वत्र स्थित रहै हे महाराज रघुनाथजी अत्यन्त बुद्धिमान् रावण आप के हाथ मरने की कांक्षा करिकै इसी अर्थ जानकी देवीको हरता भया ५९ (इमांकथांयःशृणुयात् वापठेद्वाश्रवणार्थिनांसदा संश्रावयेत्आयुष्यंआरोग्यंअनंतसौख्यंचअक्षयंधनलाभंप्राप्नोति) इस कथा को जो सुनै वा पढ़ै वा सुननेवालों को सदा सुनावता है सो दीर्घायु आरोग्यता अनन्त सुख पुनः नाश रहित धन की लाभ को प्राप्त होत ६० ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतवैजाथविरचितेअध्यात्म भूषणेउत्तरकाण्डेतृतीयप्रकाशः ३ ॥

एकदाब्रह्मणोलोकादायांतंनारदंमुनिम् ॥ पर्यटन्रावणोलोकान्दृष्ट्वानत्वाब्रवीद्वचः १ भगवन्ब्रूहिमेयोद्धुंकुत्रसंतिमहाबलाः ॥ योद्धुमिच्छामिबलिभिस्त्वंज्ञातासिजगत्त्रयम् २ मुनिर्ध्यात्वाऽहसुचिरंश्वेतद्वीपनिवासिनः ॥ महाबलामहाकायास्तत्रयाहिमहामते ३ विष्णुपूजारताःयेवैविष्णुनानिहताश्चये ॥ तएव तत्रसंजाताअजेयाश्चसुरासुरैः ४ श्रुत्वातद्रावणोवेगान्मंत्रिभिःपुष्पकेणतान् ॥ योद्धुकामःसमागत्यश्वेतद्वीपसमीपतः ५ तत्प्रभाहततेजस्कंपुष्पकंनाचलत्ततः ॥ त्यक्त्वाविमानंप्रययौमंत्रिणश्चदशाननः ६ ॥

सवैया । गतनारदप्रेरितश्वेतसुदीपतियाकररावणमानठहे । मुनिमाँगिबिदागतधामसबैप्रभुनीतिप्रजाप्रतिपालरहे ॥ जयमंत्रिहिपूछतहालप्रजासुखबैनकछूअपबादकहे । मुनिआश्रमसीयपठायतबैरघुनन्दऋषीव्रतआपगहे ॥ (लोकान्पर्यटन्रावणःएकदाब्रह्मणःलोकात्आयंतंनारदंमुनिंदृष्ट्वानत्वावचः अब्रवीत्) सब लोकन में घूमता हुआ रावण एक समय में ब्रह्मलोकते आवते हुये नारद मुनिको देखि रावण प्रणाम करि बचन बोलताभया १ (भगवन्मेयोद्धुंमहाबलाःकुत्रसंतिब्रूहि बलिभिःयोद्धुं इच्छामित्वंजगत्त्रयमज्ञातासि) हे भगवन् मोसोंयुद्ध करिवेयोग्य वीरबली कहाहैं तिनहिं बतलाइये क्योंकि बली वीरों से युद्ध करिवेको मोको इच्छा है अरु आप तीनिहु लोकनको हाल जानते हौ २ (मुनिःसुचिरंध्यात्वाआहमहामतेश्वेतद्वीपनिवासिनः महाकायाःमहाबलाःतत्रयाहि) मुनि बहुत बार तक ध्यान करि बोलते भये हे महामते रावण श्वेत द्वीप के बासी महा भारी शरीरवाले महाबलीहैं तहांको जाउ ३ (येवैविष्णुपूजारताःचयेविष्णुनानिहतःतएवतत्रसंजाताःचसुरासुरैःअजेयाः) जेजन निश्चय करि विष्णु के पूजा में परायण हैं पुनः जे संग्राम में विष्णु करिकै मारेगये वे सब निश्चय करि उहैं उत्पन्न होते हैं पुनः देवता दैत्यों करि अजित होते हैं ४ (तत्श्रुत्वारावणःतान् योद्धुंकामः मंत्रिभिःपुष्पकेनवेगात्समागत्यश्वेतद्वीपसमीपतः) सो सुनि रावणतिनहिं जीतने की कामनाते मंत्रिनसहित पुष्पक परसवार वेगतेचला जब श्वेतद्वीपके समीपगया५(तत्प्रभाहततेजस्कं

पुष्पकंनाचलत्ततः विमानंचमंत्रिणःत्यक्त्वादशाननःप्रययौ) तिस द्वीपकी प्रभाकरिकै तेज गति नाशभया ताते पुष्पक न चलिसका तब विमानको अरु मंत्रियों को त्यागि के रावण अकेला पैदर जाता भया ६ ॥

प्रविशन्नेवतद्वीपंधृतेहस्तेनयोषिता ॥ पृष्ठश्चत्वंकुतःकोऽसिप्रेषितःकेनवात्र द ७ इत्युक्तोलीलयास्त्रीभिर्हसंतीभिःपुनःपुनः ॥ कृच्छ्राद्धस्ताद्विनिर्मुक्तस्तासां स्त्रीणांदशाननः ८ आश्चर्यमतुलंलब्ध्वाचिंतयामासदुर्मतिः ॥ विष्णुनानिह तोयामिवैकुण्ठमितिनिश्चितः ९ मयिविष्णुर्यथाकुप्येत्तथाकार्यंकरोम्यहम् ॥ इतिनिश्चित्यवैदेहींजहारविपिनेऽसुरः १० जानन्नेवपरात्मानंसजहारावनीसुता म् ॥ मातृवत्पालयामासत्वत्तःकांक्षन्वधंस्वकम् ११

(तत्द्वीपंप्रविशन्नेवयोषिता हस्तेनधृतःचपृष्ठःत्वंकः असिकुतःवाकेनप्रेषितःवद) तिस द्वीप में प्रवेश करतही रावणको एकस्त्रीने हाथेसे गहिलिया पुनः पूछा कि तू कौनहै कहांते आया है अथवा किसने तोको पठावा है सो कहु ७ (इतिउक्तःलीलयास्त्रीभिःपुनःपुनःहसंतीभिःतासांस्त्रीणांहस्तात् दशाननः कृच्छ्रात्विनिर्मुक्तः) ऐसा कहा लीलामात्रही रावण को पकरे रहीअन्यस्त्रियां करिकै बारंबार हास किया गया तिन स्त्रियोंके हाथते बड़े क्लेशते रावण छूटाभगा ८ (अतुलंआश्चर्यंलब्ध्वादुर्मतिःचिंतयामास विष्णुनानिहतोयामि वैकुंठंइतिनिश्चितः) छूटेपर रावण बड़ा आश्चर्य माना पुनः दुर्बुद्धी रावण चिंतवन करता भया कि जो विष्णुकरिकै मृत्युको प्राप्त होउँ तौ मैं भी इसी भांति वैकुंठमें बासकरौं ऐसा मनमें निश्चय करता भया ९ (यथामयिविष्णुःकुप्येत्तथा कार्यंमहं करोमिइतिनिश्चित्यअसुरःविपिनेवैदेहीं जहार) जैसे मेरे ऊपर विष्णुकोप करैं तैसेही कार्य मैं करौं ऐसानिश्चय करि असुररावणबनमें विदेह पुत्रीको हरताभया१०(परात्मानंजानन्नेवत्वत्तःस्वकंवधकांक्षन्अवनीसुतांजहारमातृवत्पालयामास)आपकोपरमात्माकरि जानताहुवा निश्चय करिआपकेहाथों अपनी मृत्यु की कांक्षाराखि रावण भूमिसुता को हरताभया अरुमाताके तुल्यपालनकरतारहा ११ ॥

रामत्वंपरमेश्वरोसि सकलंजानासिविज्ञानदृक् भूतंभव्यमिदंत्रिकालकलना साक्षीविकल्पोज्झितः ॥ भक्तानामनुवर्तनायसकलां कुर्वन्क्रियासंहतिम् चाश्ट एवन्मनुजाकृतिर्मुनिवचोभासीशलोकार्चितः १२ स्तुत्वैवंराघवंतेनपूजितःकुंभ सम्भवः ॥ स्वाश्रमंमुनिभिःसार्द्धंप्रययौहृष्टमानसः १३ रामस्तुसीतयासार्द्धं भ्रातृभिःसहमंत्रिभिः ॥ संसारीवरमानाथोरममाणोवसद्गृहे १४ अनाशक्तोऽपिवि षयान्बुभुजेप्रिययासह ॥ हनूमत्प्रमुखैर्सद्भिर्वानरैःपरिवेष्टितः १५ पुष्पकंचाग मद्राममेकदापूर्ववत्प्रभुम् ॥ प्राहदेवकुवेरेणप्रेषितंत्वामहंततः १६ ॥

(रामत्वंपरमेश्वरोसि भूतंभव्यंइदंत्रिकालकलनासकलंविज्ञानदृक्जानासि) हे रघुनाथजी आपपरमेश्वर हौ ताते भूतजो पूर्व होगया भव्यं जो होनहार है इदं अब जो हो रहा है इत्यादि तीनिहु कालों की कलनासमय समय की यावत् वस्तु है सो सब विज्ञान दृष्टि करिकै जानते हौ (विकल्पोज्झितःसाक्षी) संशय रहित सब के अंतरमें साक्षी हौ (भासीशलोकार्चितः) अंतर्यामी रूपते सबके अंतमें भास अर्थात् प्रकाश किहेहौ पुनः ईशलोकोंके जो इंद्रादिहैं तिनकरिकै

ऐ पूजित हौ इति ऐश्वर्य रूप सोई माधुर्य में (भक्तानांमनुवर्तनायसंहर्तिक्रियासकलान्कुर्वन्चमनु जाकृतिःमुनिवचःमशृणवन्) भक्तनके अनुग्रह के अर्थ संपूर्ण क्रिया दान यज्ञादि सब करते हौ पुनः मनुष्य की नाईं बने मुनिन के बचन सुनते हौ १२ (एवंराघवंस्तुत्वा तेनपूजितःकुंभसंभवःहृष्टमानसःमुनिभिःसार्द्धं स्वाश्रमंप्रययौ) इसप्रकार रघुनंदनकी स्तुतिकरिकै रघुनंदन करिकै पूजित अगस्त्य मुनि आनंदमन मुनिन सहित बिदाह्वै अपने आश्रमको जाते भये १३ (तु रमानाथःरामःसंसारीव भ्रातृभिःसहमंत्रिभिः सीतयासार्द्धं रममाणःगृहेअवसत्) पुनः लक्ष्मीनाथ श्री रामचंद्र मनुष्यवत् भाइन सहित मंत्रियों करिकै राजकाज सँभारते हैं अरुसीता करिकै सहित रमण सुख विहार करते हुये मंदिरमें बास करतेहैं १४ (विषयान्मनासक्तःअपि प्रियया सहबुभुजे हनुमत्प्रमुखैःवानरैःसद्भिः परिवेष्टितः) शब्द स्पर्श रूपरस गंध मैथुनादि विषयनमें यद्यपि आसक्त नहीं हैं तौ भी माधुर्यमें राजकुमार रूप ते अपनी प्रियासीता सहित सुख विहार करते हैं पुनः हनूमानादि जो वानरश्रेष्ठ तिन करिकै सेवित रहतेहैं १५ (ततःएकदापुष्पकं आगमत् च प्रभुंरामं प्राह हेदेव कुवेरेण प्रेषितंअहंपूर्ववत् त्वां) तदनंतर एकसमय में पुष्पक विमान आया पुनः स्वामी रघुनंदन प्रति बोलताभया कि हे देव कुवेर करिकै पठावा हुआ मैं पूर्व की नाईं पुनः आपही को वाहन हौं १६ ॥

जितंत्वंरावणेनादौपश्चाद्रामेणनिर्जितम् ॥ अतस्त्वंराघवंनित्यंवहयावद्वसेद्भुवि १७ यदागच्छेद्रघुश्रेष्ठोवैकुण्ठंयाहिमांतदा ॥ तच्छ्रुत्वाराघवःप्राहपुष्पकंसूर्यसन्निभम् १८ यदास्मरामिभद्रंतेतदागच्छममांतिकम् ॥ तिष्ठांतर्द्धायसर्वत्र गच्छेदानींममाज्ञया १९ इत्युक्त्वारामचंद्रोपिपौरकार्याणिसर्वशः ॥ भ्रातृभिर्मंत्रिभिःसार्द्धंयथान्यायंचकारसः २० राघवेशासतिभुवंलोकनाथेरमापतौ ॥ वसुधासस्यसम्पन्नाफलवंतश्चभूरुहाः २१ जनाधर्मपराःसर्वेपतिभक्तिपराःस्त्रियः॥ नापश्यत्पुत्रमरणंकश्चिद्राजनिराघवे २२ ॥

(आदौत्वंरावणेनाजितं पश्चात्रामेणनिर्जितं अतःयावत् भुविवसेतत्त्वंनित्यंराघवंवह)पुष्पक बोला हे रघुनाथ जी कुवेर ने मोसों कहा कि हे पुष्पक प्रथमतौ तोको रावणने मोसों जीति लिया पाछें रामने रावण ते जीतिलिया इस कारण जब तक राघवभूमि पर बासकरैं तबतक तू नित्यही रघुनंदन की सवारी में रहु १७ (यदारघुश्रेष्ठःवैकुंठंगच्छेत् तदामांयाहि तत्श्रुत्वासूर्यसन्निभम्पुष्पकंराघवः प्राह) जब रघुबंशनाथ वैकुंठ को जायँ तब पुनःमेरे पास आयो इति पुष्पक बचन सो सुनिकै सूर्यवत् प्रकाशमान पुष्पक बिमान प्रति रघुनन्दन बोलते भये १८ (तेभद्रंयदास्मरामितदाममांतिकम् आगच्छ ममाज्ञयाइदानींगच्छ अंतर्धायसर्वत्रतिष्ठ) हे पुष्पक तुम्हारा कल्याण होय जब मैं तुम्हारी स्मरण करौं तब मेरे पास को आवो अरु मेरी आज्ञा करिकै या समय में जाउ अंतर्द्धान रूप ह्वै सर्वत्र बास करौ १९ (इतिउक्त्वा सःरामचन्द्रः अपिभ्रातृभिः मन्त्रिभिःसार्द्धंसर्वशः पौरकार्याणियथान्यायंचकार) अपनी ऐश्वर्य गुप्त राखने हेतु ऐसा पुष्पक प्रति कहि सो रामचन्द्र भी भाई मन्त्रिन सहित रक्षा दण्डादि सब प्रकार को पुरको कार्य जैसे नीतिशास्त्र ते चाहिये तैसेही करते भये २० (रमापतौराघवेशासतिभुवंलोकनाथे सतिवसुधासस्यसम्पन्ना च भूरुहाःफलवन्तः) लक्ष्मीपति रघुबंशनाथके भूमिमें लोकनाथ होत सन्ते पृथ्वी अन्न करिकै परिपूर्ण भई पुनः वृक्ष फलवंतभये२१ (जनाः

सर्वेधर्मपराःस्त्रियःपतिभक्तिपराः राघवेराजनिकश्चित्पुत्रमरणंनअपश्यत्) जन सब शौच तप दानादि धर्माचरण में परायण भये स्त्री सब पतिकी भक्ति में परायणभई पुनः रघुनन्दन के राजा होत सन्ते कोऊपुत्र को मरण नहीं देखता है २२ ॥

समारुह्यविमानाग्र्यंराघवःसीतयासह ॥ वानरैर्भ्रातृभिःसार्द्धंसंचचारावनिंप्रभुः २३ अमानुषाणिकार्याणिचकारबहुशोभुवि ॥ ब्राह्मणस्यसुतंदृष्ट्वाबालंमृतमकालतः २४ शोचंतंब्राह्मणंचापिज्ञात्वारामोमहामतिः ॥ तपस्यंतंवनेशूद्रंहत्वाब्राह्मणबालकम् २५ जीवयामासशूद्रस्यददौस्वर्गमनुत्तमम् ॥ लोकानामुपदेशार्थंपरमात्मारघूत्तमः २६ कोटिशःस्थापयामासशिवलिंगानिसर्वशः ॥ सीतांच रमयामाससर्वभोगैरमानुषैः २७ शशासरामोधर्मेणराज्यंपरमधर्मवित् ॥ कथां संस्थापयामाससर्वलोकमलापहम् २८ ॥

(वानरैःभ्रातृभिःसार्द्धंसीतयासहराघवः प्रभुः विमानाग्र्यंसमारुह्यअवनींसंचचार) हनूमानादि वानर भरतादि भाइन सहित सीता सहित रघुनंदन प्रभु पुष्पक विमान पर सवारह्वै सब देशों को हाल जानिबे हेतु भूमिपर विचरतेभये २३ (भुविःबहुशःअमानुषाणिकार्याणि चकार ब्राह्मणस्यसुतंअकालतःमृतंबालंदृष्ट्वा) भूतल में श्रीरघुनाथजी बहुत से अमानुष जिसको मनुष्य न करिसकैं ऐसे कार्यन को करते भये यथा एक ब्राह्मण को पुत्र अकाल में मराहुआ बालक को देखिकै २४ (चब्राह्मणंअपिशोचंतंज्ञात्वा महामतिः रामः वनेतपस्यंतंशूद्रंहत्वा ब्राह्मणबालकंजीवयामास) पुनः ब्राह्मण भी शोचताहुआ जानिकै बड़े बुद्धिमान् रघुनंदन विचार करि कारण जानि लिये कि शूद्र तपस्या करताहै सो धर्म प्रतिकूलहै ताते विप्रको पुत्र मरा सो जानि वनमें तपस्या करताहुआ शूद्र को मारिकै ब्राह्मणके बालक को जियायदेते भये २५ (शूद्रस्यअनुत्तमंस्वर्गंददौ परमात्मारघूत्तमःलोकानांउपदेशार्थम्) उस शूद्र को उत्तम स्वर्ग लोक में वासदीन्हे पुनः परमात्मा रघुवंशनाथ लोकन को उपदेश करने अर्थ उत्तम धर्मशील राजोंकी भांति २६ (कोटिशःशिवलिंगानिसर्वशःस्थापयामास च अमानुषैःसर्वभोगैःसीतांरमयामास) करोरिन शिवके लिंग पृथिवी भरे में सर्वत्र स्थापित करते भये पुनः अमानुष भोजन बसन भूषण वाहन नृत्य गान पान गंध मंदिर शय्या इत्यादि सब भोगों करिकै सीता को रमावते भये २७ (परमधर्मवित्रामःधर्मेणराज्यंशशास सर्वलोकमलापहम् कथांसंस्थापयामास) परमोत्तम धर्म के परिपूर्ण जाननेवाले श्रीरघुनाथजी धर्म नीति करिकै राज्य को पालते भये अरु सब लोकके पाप हरनेवालो पावन कथाको लोक में स्थापित करते भये २८ ॥

दशवर्षसहस्राणिमायामानुषविग्रहः ॥ चकारराज्यंविधिवल्लोकवंद्यपदांबुजः २९ एकपत्नीव्रतोरामोराजर्षिःसर्वदाशुचिः ॥ गृहमेधीयमखिलमाचरन्शिक्षयन्जनान् ३० सीताप्रेम्णानुवृत्त्याचप्रश्रयेणदमेनच ॥ भर्तुर्मनोहरासाध्वीभावज्ञासाह्रियाभिया ३१ एकदाक्रीडविपिनेसर्वभोगसमन्विते ॥ एकांतेदिव्यभवनेसुखासीनंरघूत्तमम् ३२ नीलमाणिक्यसंकाशंदिव्याभरणभूषितम् ॥ प्रसन्नवदनंशांतंविद्युत्पुंजनिभांबरम् ३३ सीताकमलपत्राक्षीसर्वाभरणभूषिता ॥ राममाहकराभ्यांसालालयंतीपदांबुजे ३४ ॥

(लोकवंद्यपदांबुजः मायामानुपविग्रहः दशसहस्रवर्षाणि विधिवत्राज्यंचकार) सब लोकों के वंदनीय पद कमल जिनके सोई माया करि मानुप शरीर से दश हजार वर्ष तक विधिपूर्वक राज्य करते भये २९ (एकपत्नीव्रतःसर्वदाशुचिःराजर्षिः रामः जनान्शिक्षयन्गृहमेधीयंअखिलंआचरन्) सेवाय आपनी स्त्री के और स्त्री में भूलिहूके न मन देना इति एक पत्नी व्रत सब काल में तन मन सों पवित्र ऐसे राजऋषि रघुनाथजी सब जननको शिक्षा सिखावन देत संते गृहस्थों के सब उत्तम आचरण करते भये ३० (प्रेम्णाअनुवृत्त्याच प्रश्रयेणचदमेनसा ह्रियाभियाभावज्ञासाध्वी सीताभर्तुः मनोहरा) प्रेम करिकै अनुकूल आचरण करिकै पुनः नम्रता करिकै पुनः मन इन्द्रिय स्वाधीन करिकै सहित लज्जा भय करिकै पतिकी मनोगति जानि कार्य करने वाली पतिव्रता सीता पति को मन हरती हैं स्वाधीन किहे हैं ३१ (एकदाक्रीडविपिने सर्वभोगसमन्विते दिव्यभवने एकांते सुखासीनंरघूत्तमम्) एक समय प्रमोद वन में सब भोग सामग्री युक्त दिव्य मन्दिरमें एकांत में सुखद आसन पर बैठे रघुनन्दन ३२ (नीलमाणिक्यसंकाशं विद्युत्पुंजनिभांवरम्दिव्याभरणभूपितं प्रसन्नवदनंशांतम्) नीलमणिवत् सुन्दर श्याम तन बिजुली सम प्रकाशमान पीताम्बर धारण किरीट कुण्डलादि दिव्यआभूपण भूषित प्रसन्नमुख शांत स्वभाव ३३ (सर्वाभरणभूपिताकमलपत्राक्षी सीताकराभ्यांपदांबुजेलालयंतीसारामंआह) सर्वांग भूपण भूपित कमलदलनयनी सीता दोऊ हाथों करिकै पद कमल सेवती हुई सो सीता प्रेमसहित नम्र वचन रघुनन्दन प्रति बोलतीभई ३४॥

देवदेवजगन्नाथपरमात्मन्सनातन ॥ चिदानंदादिमध्यांतरहिताशेषकारण ३५ देवदेवाःसमासाद्यमामेकांतेब्रुवन्वचः ॥ बहुशोऽर्थयमानास्तेवैकुण्ठगमनंप्रति ३६ त्वयासमेतश्चिच्छक्त्यारामस्तिष्ठतिभूतले ॥ विसृज्यास्मान्स्वकंधामवैकुंठं चसनातनम् ३७ आस्तेत्वयाजगद्धात्रिरामःकमललोचनः ॥ अग्रतोयाहिवैकुंठं त्वंतथाचेद्रघूत्तमः ३८ आगमिष्यतिवैकुंठंसनाथान्नःकरिष्यति ॥ इतिविज्ञापिता हंतैर्मयाविज्ञापितोभवान् ३९ यद्युक्तंतत्कुरुष्वाद्यनाहमाज्ञापयेत्प्रभो ॥ सीतायास्तद्वचःश्रुत्वारामोध्यात्वाऽब्रवीत्क्षणम् ४० ॥

(देवदेवआदिमध्यांतरहितसनातनपरमात्मन् चिदानन्दअशेषकारणजगन्नाथ) हे देवनके देव आदि जन्म मध्य जीवन अन्तनाश इत्यादि रहित हे सनातन परमात्म अखंड ज्ञानानंद सबके आदि कारण हेजगत्के पालनहारे नाथ ३५ (देवमांएकांतेसमासाद्य,वाःतेवैकुण्ठागमनं प्रति बहुशःअर्थयमानाःवचःअब्रुवन्) हे देव मोको एकान्तमें प्राप्तदेखि इंद्रादि देवता आपको वैकुण्ठ जाने हेतु बहुत प्रकार प्रार्थनापूर्वक वचन कहते हैं ३६ (अस्मान्चसनातनंस्वकंधामवैकुंठंविसृज्य चित्शक्त्यात्वयासमेतःरामःभूतलेतिष्ठति) क्या देवता कहते हैं कि हमसब देवतोंको पुनः सनातन अपना धाम वैकुण्ठको त्यागि अब हे सीते तुम जो चैतन्य सब कार्य करनेवाली आदि शक्तिहो तिन करिकै सहित नर राज रूपते रघुनाथजी भूतलमें वास करते हैं ३७ (जगत्धात्रिअग्रतःत्वंवैकुंठंयाहित्वया आस्तेतथाचेत्रघूत्तमः कमललोचनःरामः) हे जगन्मातः सीते जो आगे तुम वैकुण्ठको जाउ तुम्हारे जात संते तैसेही कदाचित् रघुवंशोत्तम कमलनयन रामचन्द्रभी ३८ (वैकुंठंआगमिष्यति नःसनाथान्करिष्यति इतितैःविज्ञापिताअहंमयाभवान्विज्ञापित·) तब रामौ वैकुण्ठको आवहिंगे हम लोगों को सनाथ करहिंगे ऐसा उन देवनोंने निवेदन किया मोसों तब मैंने आपसों कहाहै ३९ (यदि उ-

कृतंतत्अद्यकुरुष्वप्रभो अहंआज्ञापयेत्नततूसीतायाः वचःश्रुत्वाक्षणंध्यात्वारामःअब्रवीत्) जो उचित होय सो अब कीजिये हे प्रभो मैं आपसों आज्ञा नहीं करतीहौं जो देवतोंने कहा सोई आपको सुनायदिया सो सीताको वचन सुनिकै क्षणभरि ध्यानपूर्वक विचारकरि रघुनंदन बोलतेभये ४० ॥

देविजानामिसकलंतत्रोपायंवदामिते ॥ कल्पयित्वामिषंदेविलोकवादंत्वदाश्रयम् ४१ त्यजामित्वांवनेलोकेवादाद्भीतइवापरः ॥ भविष्यतःकुमारौद्वौवाल्मीकेराश्रमांतिके ४२ इदानींदृश्यतेगर्भःपुनरागत्यमेंतिकम् ॥ लोकानांप्रत्ययार्थंत्वंकृत्वाशपथमादरात् ४३ भूमेर्विवरमात्रेणवैकुण्ठंयास्यसिद्रुतम् ॥ पश्चादहंगमिष्यामिएषएवसुनिश्चयः ४४ इत्युक्त्वातांविसृज्याथरामोज्ञानैकलक्षणः ॥ मंत्रिभिर्मंत्रतत्त्वज्ञैर्बलमुख्यैश्चसंवृतः ४५ तत्रोपविष्टंश्रीरामंसुहृदःपर्युपासतः ॥ हास्यप्रौढकथासुज्ञाहासयंतःस्थिताहरिम् ४६ ॥

(देविसकलंजानामितत्रउपायंतेवदामिदेवित्वदाश्रयंलोकवादंमिषंकल्पयित्वा) हे देवि सब मैं जानताहौं ताको उपाय तोसों कहताहौं हेदेवि सीते तुही है कारण जिसमें ऐसा एक लोकापवाद रूप बहाना रचौंगो ४१ (लोकवादात्भीतःअपरःइवत्वांवनेत्यजामिवाल्मीकेः आश्रमांतिकेद्वौकुमारौ भविष्यतः) लोकापवादते भयभीत अन्यपुरुषोंके समान मैंतोको बनमें त्यागकरौंगो अरु या समय में तेरे गर्भ है सोई वाल्मीकिके आश्रममें तेरे दोपुत्र होयँगे ४२ (इदानींगर्भःदृश्यतेपुनःमेंअंतिकंआगत्यलोकानांप्रत्ययार्थंत्वंआदरात्शपथंकृत्वा) या समय में भी गर्भतेरे शरीर में दर्शित होताहै ताके निवृत्त भये पर तू पुनः मेरेपास आयकै लोकजनोंके विश्वासके अर्थ तू आदर प्रसन्न मनते शपथ करिकै ४३ (भूमेःविवरमात्रेणद्रुतंवैकुंठंयास्यसिपश्चात् अहंगमिष्यामिएषएवसुनिश्चयः) शपथकरि पुनः भूमिके विवरमात्र करिकै तू शीघ्रही बैकुण्ठ को जायगी ताके पाछे मैं भी बैकुण्ठ को आवोंगो यही मेरीबात निश्चयकरि सत्यजानु४४ (इतिउक्त्वातांविसृज्यअथज्ञानैकलक्षणःरामः मंत्रतत्त्वज्ञैःमंत्रिभिःचबलमुख्यैःसंवृतः) ऐसा कहि तिन जानकीजी को अंतःपुर में राखि अब अखंड ज्ञानरूप श्रीरघुनाथजी राजसभा को आये जहां उत्तममंत्र जाननेवाले मंत्री पुनः सेनापति इत्यादि करिकै सेवित हैं ४५ (तत्रउपविष्टंहरिंश्रीरामंहास्यप्रौढकथासुज्ञासुहृदः स्थिताहासयंतःपर्युपासतः) तहां सिंहासन पर बैठे हुये हरि जो श्री रघुनाथ जी तिनहिं हास्य कथा के तत्त्व के जानने वाले सखा मित्र लोग बैठे हास्य बार्ता करि हँसावते हुये सेवन करते हैं ४६ ॥

कथाप्रसंगात्पप्रच्छरामोविजयनामकम् ॥ पौराजानपदामेकिंवदंतीहशुभाशुभम् ४७ सीतांवामातरंवामेभ्रातॄन्वाकैकयीमथ ॥ नमेतव्यंत्वयाब्रूहिशापितोऽसिममोपरि ४८ इत्युक्तःप्राहविजयोदेवसर्वेवदंतिते ॥ कृतंसुदुष्करंसर्वंरामेणविदितात्मना ४९ किंतुहत्वादशग्रीवंसीतामाहृत्यराघवः ॥ अमर्षंपृष्ठतःकृत्वास्ववेश्मप्रत्यपादयत् ५० कीदृशंहृदयेतस्यसीतासंभोगजंसुखम् ॥ याहृताविजनेरण्येरावणेनदुरात्मना ५१ अस्माकमपिदुष्कर्मयोषितांमर्षणंभवेत् ॥ यादृक्भवतिवैराजाताहृश्योनियतंप्रजाः ५२ ॥

(कथाप्रसंगात्रामःविजयनामकंपप्रच्छ पौराजानपदाइहमेशुभाशुभंकिंवदंति) कथा प्रसंगतेरघुनाथ जी बिजयनामे मंत्री प्रतिपूछते भये कि पुरवासी तथा राज्य के लोग इस जन्ममें मोकोभला अथवा बुरा क्या कहते हैं ४७ (कैकेयीं अथवा मातरं वासीतां वा मेभ्रातृन्भेतव्यं नत्वयाब्रूहिममो परिशापितःअसि) कैकेयी अथवा कौशल्याको वासीताको वा मेरे भाइन को जो कुछ कोउ कहता होय ताके कहतमें भय न मानेउ अडरह्वै तुमकरिकै कहाजाय मेरी शपथहै तुमको सत्यही वार्ता कहना ४८ (इति उक्तविजयः प्राहदेवतेसर्वेवदंतिविदितात्मनारामेणसर्वंदुष्करंकृतं) ऐसा रघुनंदन कहे तब बिजय मंत्री बोलते भये कि हे देव आपको सब कहतेहैं कि बिदित आत्मा रामने सब कार्य दुष्कर अर्थात् जो सुरसुरानरनागादि किसी से नहीं होनेवाला रहै सो उत्तम कार्य किया ४९ (किंतुदशग्रीवंहत्वाएष्टतः अमर्पकृत्वासीताआहृत्यराघवःस्ववेश्मप्रत्यपादयत्) परंतु रावण को मारि पीछे निंदित कर्म किये जो सीता को लाय रघुनंदन अपने मंदिर में प्राप्त किये ५०(सीतासंभोगजं सुखंतस्यहृदयेकीदृशयादुरात्मनारावणेनविजनेअरण्येहृता) सीता के संभोग सों उत्पन्न सुख तिन रघुनंदन के हृदय में कैसा होता होयगा जिन सीताको दुष्टात्मा रावण विजन बनसोंहारलैगया ५१ (योपितांदुष्कर्मसर्षणंअस्माकंअपिभवेत् याहक्वैराजाभवतितादृशयोनियतंप्रजाः) जो ऐसेहीं रीतिचलीतौस्त्रियों को किया कुत्सितकर्म को दुखभारहम लोगों को भी होयगो भावनष्टकर्म करि प्रौढ़ता सहित घरमें वैठी रहैंगी क्योंकिजैसा निश्चय करिराजा होताहै ताही समरीति रहस्य करने वाले प्रजा अर्थात् राज्य बासी सब लोग होते हैं ५२ ॥

श्रुत्वातद्वचनंरामःस्वजनान्पर्यपृच्छत ॥ तेऽपिनत्वाऽब्रुवन्राममेवमेतन्नसंशयः ५३ ततोविसृज्यसचिवान्विजयंसुहृदस्तथा ॥ आहूयलक्ष्मणंरामोवचनंचेदमब्रवीत् ५४ लोकापवादस्तुमहान्सीतामाश्रित्यमेऽभवत् ॥ सीतांप्रातःसमानीयवाल्मीकेराश्रमांतिके५५त्यक्त्वाशीघ्रंरथेनत्वंपुनरायाहिलक्ष्मण॥वक्ष्यसेयदिवाकिंचित्तदामांहतवानसि ५६ इत्युक्तोलक्ष्मणोभीत्याप्रातरुत्थायजानकीम्॥सुमंत्रेण रथेकृत्वाजगामसहसावनम् ५७ ॥

(तत्वचनंश्रुत्वारामःस्वजनान्पर्यपृच्छततेअपिरामंनत्वा अब्रुवनएतत्एवंसंशयःन) सो बिजय को बचन सुनिकै रघुनन्दन अपने मित्र लोगों प्रति पूछते भये कि यह कैसी बात है ते मित्र भी रघुनन्दन को प्रणाम करि बोलते भये हे महाराज यह बात ऐसेहीहै यामें संशय नहीं है ५३ (ततः सचिवान्तथासुहृदःविजयंविसृज्यरामःलक्ष्मणंआहूयचइदंवचनंअब्रवीत्) तब सब मंत्रिनको तैसेही मित्र बिजय को बिदा करि रघुनन्दन लक्ष्मण को बुलाय पुनः ऐसा बचन बोलते भये ५४ (सीतां आश्रित्यमेलोकापवादस्तुमहान्अभवत् प्रातःसीतांसमानीयवाल्मीकेःआश्रमांतिके) रघुनन्दन कहे कि हे लक्ष्मण सीताको अंगीकार कीन्हें मोको लोकापवाद बड़ा भारी होताभया ताते काल्हि प्रातःकाल सीता को लैकै बाल्मीकि मुनिके आश्रम के समीप जाय ५५ (लक्ष्मणरथेनशीघ्रंत्यक्त्वात्वंपुनः आयाहिवायदिकिंचित्वक्ष्यसेतदामांहतवानसि) हे लक्ष्मण रथपर लैजाय तहां जानकी को त्यागि शीघ्रही तुम मेरे पासको लौटि आयो अथवा जो इस आज्ञामें प्रत्युत्तर कहोगे तौमेरे बध पापके भागी होहुगे ५६ (इतिउक्तःभीत्यालक्ष्मणः प्रातःउत्थायजानकींरथेकृत्वा सुमंत्रेणसहसावनंजगाम) ऐसा कठोर वचन जब रघुनन्दन कहे तब भय करिकै लक्ष्मण प्रातही उठि जानकीजीको रथ में बैठारि

सुमंत्र सहित लक्ष्मण शीघ्रहीं बनको जातेभये ५७ (वाल्मीकेःआश्रमस्य अंतेत्यक्त्वासःसीतांउवाच लोकापवादभीत्याराघवःत्वांवनेत्यक्तवान्) बिठूर घाट गंगा तट जाय वाल्मीकि मुनि के आश्रमके समीप बैठारि सो लक्ष्मण सीता प्रति बोलते भये हे देवि लोक में अपवाद भया त्यहि भयसे रघुनन्दन तुमको बन में त्याग किया ५८ ॥

दोषोनकश्चिन्मेमातर्गच्छाश्रमपदंमुने ॥इत्युक्त्वालक्ष्मणःशीघ्रंगतवान्रामसन्निधिम्५९ सीताऽपिदुःखसंतप्ताविललापातिमुग्धवत् । शिष्यैःश्रुत्वाचवाल्मीकिः सीतांज्ञात्वासादिव्यदृक् ॥ अर्घ्यादिभिःपूजयित्वासमाश्वास्यचजानकीम् ६० ज्ञात्वाभविष्यसकलमर्पयन्मुनियोषिताम् । तास्तांसंपूजयंतिस्मसीतांभक्त्या दिनेदिने ६१ ज्ञात्वापरमात्मनोलक्ष्मींमुनिवाक्येनयोषितः ॥ सेवांचक्रुःसदातस्याविनयादिभिरादरात् ६२ रामोपिसीतारहितःपरात्माविज्ञानदृक्केवलआदिदेवः ॥ संत्यज्यभोगानखिलान्विरक्तोमुनिव्रतोभून्मुनिसेवितांघ्रिः ६३ ॥

इतिश्रीअध्यात्मरामायणेउत्तरकांडेचतुर्थःसर्गः ॥ ४ ॥

(मातःमेदोषःकश्चित् न मुनेःआश्रमपदंगच्छ इतिउक्त्वालक्ष्मणःशीघ्रंरामसन्निधिंगतवान्) हे मातः मेरा दोष कछु नहींहै अब तुम वाल्मीकिमुनि के आश्रमको जाउ ऐसा कहि लक्ष्मणजी शीघ्रहीं रघुनन्दन के पास को जाते भये ५९ (सीताअपिदुःखसंतप्ता मुग्धवत् अतिविललापवाल्मीकिः शिष्यैःश्रुत्वाचसदिव्यदृक् सीतांज्ञात्वाजानकींसमाश्वास्यचअर्घ्यादिभिःपूजयित्वा) लक्ष्मणके गयेपर सीता भी दुःख करिकै संतप्त अज्ञकी नाईं अत्यन्त विलाप करती भईं तब वाल्मीकिजी शिष्योंकरिकै सुने भाव एक स्त्री रोदन करतीहै इति सुनि पुनः सो मुनि दिव्य दृष्टि से सीताकोजानि समीप आय जानकी को बहुत प्रकारससुभाय सावधान करि आश्रममें लाय आसनदै अर्घ्य पाद्यादि षोड़शोपचारों करिकै पूजन कीन्हे ६० (भविष्यसकलंज्ञात्वामुनियोषितांअर्पयन्ताः भक्त्यादिनेदिनेतांसीतांसंपूजयंतिस्म) जो आगे होनहारहै सो सब वृत्तान्त जानिकै वाल्मीकि मुनिनकी स्त्रियोंको सौंपि दीन्हे सो सब स्त्री भक्ति करिकै प्रतिदिन तिन सीताको पूजन करती हैं ६१ (मुनिवाक्येनयोषितः परमात्मनःलक्ष्मींज्ञात्वाविनयादिभिः आदरात्तस्याःसदासेवांचक्रुः) वाल्मीकि मुनिके बचनों करिकै मुनिकी स्त्री परमात्मा की लक्ष्मी जानिकै विनती आदिकों करिकै आदरते तिन सीता की सदा सेवा करतीहैं ६२ (सीतारहितःआदिदेवःकेवलविज्ञानदृक् परात्मामुनिसेवितांघ्रिःरामःअपिअखिलान्भोगान्संत्यज्याविरक्तःमुनिव्रतोभूत्) सीता करिकै रहित आदिदेव शुद्ध विज्ञान दृष्टि परमात्मा मुनिनकरिकैसेवित चरणजिनके ऐसेरघुनन्दन भी सबभोगत्यागि विरक्तह्वै मुनिव्रत धारणकीन्हे ६३

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचिते अध्यात्मभूषणेउत्तरकांडेचतुर्थःप्रकाशः ४ ॥

श्रीमहादेवउवाच ॥ ततोजगन्मंगलमंगलात्मनाविधायरामायणकीर्तिमुत्तमाम्। चचारपूर्वाचरितोरघूत्तमोराजर्षिवर्य्यैरभिसेवितंयथा १ सौमित्रिणापृष्टउदारबुद्धिनारामःकथाःप्राहपुरातनीःशुभाः ॥ राजाप्रमत्तस्यनृगस्यशापतोद्विजस्यतिर्यक्त्वमथाहराघवः २ ॥

सवैया । कबहूँजगमंगलरामस्वधामयकांतसुखासनबैठिरहे । परमानँदज्ञानस्वरूपकहौइतिपूछत लक्ष्मणपाँयगहे ॥ सकलाश्रमवर्णस्वधर्मभवासक्रियाकरतैमघपुंजदहे । मिलिआतमरूपसनातन सोपरमातमतत्त्वस्वज्ञानकहे ॥ (ततःजगन्मंगलमंगलात्मना उत्तमांरामायणकीर्तिंविधायराजर्षिवर्यैःअभिसेवितंपूर्वाचरितं यथातथारघूत्तमःचचार) भवलोक शिक्षा हेतु लक्ष्मण प्रति रघुनाथजी के वचन द्वारा परमज्ञान तत्त्व प्रसिद्ध पूर्वक शिवजी बोले हेगिरिजा सीताको वाल्मीकिकेआश्रमकोपठाय तदनन्तर जगत्को जो मंगल यथा जीवन पर्यन्त अर्थ धर्म काम अन्तकाल मोक्ष इति जगत्कोमंगल ताके मंगलकी मूर्त्ति अर्थात् जबते अवतीर्ण भये तबते अर्थ धर्म काम मोक्ष सर्वथा लोक में देतही रहे इति लोक मंगल के मंगलकी मूर्त्ति राजकुमार रूप करिकै उत्तम रामायण रूप आपनी कीर्त्ति को लोकन मे स्थापित कीन्हे तहां जो बाहु बल करिकै धर्म स्थापन करिकै जो प्रशंसा ताकोसुयश कही अरु स्तुति दान करिकै जो प्रशंसाताको कीर्त्ति कही इहां रावणादि वधते यश एकसमय तामें भी उनको मुक्ति दान दिये त्रिलोकको अभय सुख दानअरुदान तौ सर्वसमयमें देतेरहे तथा गुरुजन को सदा सन्मान तथा शील स्वभाव सुलभ उदारताते सबको सन्मानकीन्हे सो सर्वत्र प्रशंसा ह्वैरही इति कीर्त्ति स्थापित करिकै पुनः मनु अम्बरीष रघु इत्यादि राजऋषिन करिकै सेवित जो पूर्व के धर्माचरण जाभांति के रहे ताही भांति रघुवंशनाथ भी उत्तम धर्माचार करते भये १ (उदारबुद्धिनासौमित्रिणापृष्टपुरातनीः शुभाःकथारामःप्राहअथद्विजस्यशापतःप्रमत्तस्यराजानृगस्यतिर्यक्त्वंराघवःआह) उत्तम बुद्धिवंत लक्ष्मणजीने प्रश्नकिया उत्तम राजों को धर्माचार पूछे तब जे पृथु अम्बरीषादि धर्माचरण करि उत्तम यश सहित शुभ गति पाये तिन लोगों की प्राचीन मंगलकारी कथा रघुनंदन कहे अरु जे धर्म प्रतिकूल नीति विचार रहित राजमद में माते हैं तिनकी गति दर्शावने हेतु जो ब्राह्मण की शापते राज मदमें प्रमत्त राजानृगको तिर्यक्त्वप्राप्तभया किलकिलास होनापराअर्थात् प्रमत्तयातेकहेकिराजोंको चाहिये कि कोश सेना वाहन पशु आदि सबवस्तुकी रोज गनती लैलेना चाहिये सोनहीं कीन्हे कि काल्हि कितरीगोवैरहैंआजकितरीहैं पूर्व दिनकी सङ्कल्पीगाय आयइनकी गौवनमें मिलीरही दुसरेदिन पुनः और विप्रको संकल्प दिये दोउके विवादमें पूर्व विप्रने शापदिया गिर गिट होनापरा इतिरघुनन्दन कहे भावजे नीति धर्म विचारते सब कार्य नहीं करते हैं तिनकी ऐसी गति होती है जैसी राजानृगकी गतिभई २ ॥

कदाचिदेकांतउपस्थितंप्रभुंरामंरमालालितपादपंकजम् ॥ सौमित्रिरासादितशुद्धभावनःप्रणम्यभक्त्याविनयान्वितोब्रवीत् ३ त्वंशुद्धबोधोऽसिहिसर्वदेहिनामात्मास्यधीशोऽसिनिराकृतिःस्वयम् ॥प्रतीयसेज्ञानदृशांमहामतेपादाब्जभृंगाहितसंगसंगिनाम् ४ अहंप्रपन्नोऽस्मिपदांबुजंप्रभोभवापवर्गंतवयोगिभावितम् ॥ यथांजसाज्ञानमपारवारिधिंसुखंतरिष्यामितथानुशाधिमाम् ५ ॥

(कदाचित् एकांत उपस्थितंरमालालितपादपंकजं प्रभुंरामंशुद्धभावनःआसादितसौमित्रिः भक्त्याप्रणम्य विनयान्वितःअब्रवीत्) किसीसमय एकांत स्थानमें बैठेहुये लक्ष्मी करिकै सेवित हैं पद कमल जिनके ऐसे प्रभु रामको देखि शुद्ध अन्तःकरण प्राप्त लक्ष्मण भक्ति करिकै प्रणाम करि नम्रता पूर्वक बोलते भये ३ (हेमहामतेत्वंशुद्धबोधः असिहिसर्वदेहिनांआत्माअसि) सर्व विषयको जानन हारे हे महामते रघुनाथजी आप शुद्धबोधहौ अर्थात् अखण्ड ज्ञानरूपहौ पुनः

सब भूतमात्रके आत्माहौ भाव अन्तर्यामी रूपते सबके अन्तरमें प्रकाश किहेहौ (निराकृतिःस्वयंत्र धीशःअसि) मायावश कर्माधीन मनुष्योंकी नाईं स्थूल सूक्ष्म कारणादि शरीर रहित सदा स्वतंत्र लोकोद्धार हितस्वइच्छित अवतीर्ण होतेहौ क्योंकि अधीश सबके पालनहारहौ (पादाब्जभृंगआहितसंगसंगिनांज्ञानदृशांप्रतीयसे) ऐसारूप कौनको देखिपरता है आपके पदकमलोंके अनुराग रस पानमें भृंगवत् मनकरि सदासंग रहते हैं जे ऐसे भक्तोंके संगिनको देखिपरतेहौ ४ (हेप्रभोयोगिभाविंतंभवापवर्गंतवपदांबुजं अहंप्रपन्नोस्मियथाअंजसाअज्ञानं अपारवारिधिंसुखंतरिष्यामितथामांअनुशाधि) हे स्वामिन् जे योगिन करिकै ध्यान किये जाते हैं अरु भवबंधनसे छुडावनेवाले ऐसे आपके पदकमलोंके मैं शरणमें प्राप्तहौं ताते जाभांति अनायास अज्ञानरूप अपार समुद्र सुखपूर्वक तरिजाउँ पूर्णज्ञान उदयहोय तैसी मोको शिक्षा दीजिये ५ ॥

श्रुत्वाऽथसौमित्रिवचोऽखिलंतदाप्राहप्रपन्नार्तिहरःप्रसन्नधीः ॥ विज्ञानमज्ञानतमोपशांतयेश्रुतिप्रपन्नंक्षितिपालभूषणः ६ आदौस्ववर्णाश्रमवर्णिता क्रियाःकृत्वासमासादितशुद्धमानसः ॥ समाप्यतत्पूर्वमुपात्तसाधनःसमाश्रयेत्सद्गुरुमात्मलब्धये ७ क्रियाशरीरोद्भवहेतुराहताप्रियाप्रियौतौभवतःसुरागिणः ॥ धर्मेतरौतत्रपुनःशरीरकंपुनःक्रियाचक्रवदीर्यतेभवः ८ ॥

(अथसौमित्रिवचःअखिलंश्रुत्वातदाप्रपन्नार्त्तिहरः क्षितिपालभूषणः प्रसन्नधीःअज्ञानतमोपशांतये श्रुतिप्रपन्नंविज्ञानंप्राह) शिवजी कहत हे गिरिजा अब लक्ष्मणके वचन सब सुनिकै ता समय में शरणागतोंके दुःख हरणहारे परमात्मा माधुर्यमें सब राजोंमें शिरोमणि ऐसे रघुनाथजी प्रसन्न मनह्वै अज्ञानरूप हृदयको अन्धकार नाशहोने अर्थ वेदोक्त यथा तत्त्वमसि इत्यादि महावाक्यनको भाव दर्शाय विज्ञान कहतेभये ६(आदौस्ववर्णाश्रमवर्णिताःक्रियाःकृत्वा)प्रथम अपने वर्ण तथा आश्रमको धर्म कर्मादि जो वेदमें वर्णित हैं यथा संध्या तर्पण वैश्वदेव यज्ञ दान व्रतादि क्रिया निर्वासिक करै (समासादितशुद्धमानसः) तिन क्रियोंकरि जब प्राप्तहोय शुद्ध अन्तःकरण तब(पूर्वंतत्समाप्यउपात्तसाधनः) पूर्व क्रिया समाप्त करि पुनः ग्रहणकरै साधन यथा विवेक वैराग्य शमदमादिकरै (आत्मलब्धयेसद्गुरुंसमाश्रयेत्) अरु आत्मरूपकी प्राप्ती अर्थतत्त्व ज्ञाता उत्तम सद्गुरुको सेवन करै ७ (आहताक्रियाशरीरोद्भवहेतुः सुरागिणःधर्मइतरौप्रियअप्रियौतौभवतः तत्रपुनःक्रियापुनःशरीरकंभवः चक्रवत्ईर्यते) हे लक्ष्मण पूर्व जन्मोंमें जीव प्रीतिपूर्वक शुभाशुभ कर्म कियाहै सोई शरीर उत्पन्न होनेको कारणहै कौनभांति जब जीव देह सुख साधन इंद्री विषयोंमें अत्यन्त प्रीतिकिया तब धर्म अरु धर्मते इतरअधर्म तथा प्रियमित्र वासुख अरुअप्रिय शत्रु अथवा दुःखयेदो उहोते भये जब धर्म अधर्म दोऊ भये तथा प्रिय अप्रिय येदोनों भये तब पुनःशुभाशुभादि अनेक प्रकार के कर्म करता है ताही वशपुनः शरीर पावता है इसी भांति संसार में चक्रकी नाईं नित्यही जीव भ्रमता है८ ॥

अज्ञानमेवास्यहिमूलकारणंतद्धानमेवात्रविधौ विधीयते ॥ विद्यैवतन्नाशविधौपटीयसीनकर्मतज्जंसविरोधमीरितम् ९ नाज्ञानहानिर्नचरागसंक्षयोभवेत्ततःकर्मसदोषमुद्भवेत् ॥ ततःपुनःसंसृतिरप्यवारितातस्माद्बुधोज्ञानविचारवान्भवेत् १० ननुक्रियावेदमुखेनचोदितातथैवविद्यापुरुषार्थसाधनम् ॥ कर्तव्यताप्राणभृतःप्रचोदिताविद्यासहायत्वमुपैतिसापुनः ११ ॥

(अस्यहिमूलकारणंअज्ञानंएवअत्रविधौ ततहानंएवविधीयतेतत्नाशविधौ विद्याएवपटीयसीतत् जंसकर्मनविरोधइरितं) इस संसारको निश्चय करिकै मूल कारण अज्ञानहै तथा निश्चयकरि इहां संसारकी निवृत्त विधि में तिस अज्ञान को नाशही विधान करना चाहिये अरु ताके नाश विधिमें ब्रह्मविद्या निश्चयकरि समर्थ है ताको ग्रहण करै क्योंकि ब्रह्मज्ञान अज्ञानको विरोधीहै अरु अज्ञान से उत्पन्न अज्ञाने को अंश जो सवासिक कर्म सो नहीं अज्ञानको विरोधी कहागयाहै ताते सवासिक कर्म त्याग करना चाहिये ९ (नअज्ञान हानिःचनरागसंक्षयःभवेत् ततःकर्म सदोषउद्भवेत्ततःपुनःसं सृतिःअपिअवारितातस्मात्बुधःज्ञानविचारवान्भवेत्) जो न अज्ञान को नाश भया पुनः न विषयन में प्रीति नाशभई तब सवासिक कर्म करनेते सहित दोष कर्महीं उत्पन्न होतेहैं तब पुनः जीव सं सारहीमें जन्मता मरता दुःख भोगताहै तब मोक्ष की आशा कहां है ताते बुद्धिमान् को चाहिये कि अज्ञानता विषयमें प्रीति सवासिककर्म त्यागि ज्ञानको विचारवान् होवै १० (ननुक्रियावेदमुखेनचो दिता तथापुरुषार्थसाधनविद्याएवप्राणभृत.कर्तव्यताप्रचोदितासापुनःविद्यासहायत्वंउपेति) निश्चय करि यज्ञादि कर्मोंको करना वेदमुख करिकै कहागयाहै यथा यावज्जीवमग्निहोत्रंजुहोति अर्थात् या- वत् जीव बुद्धि तावत् अग्निहोत्र अवश्यकरै तैसेही पुरुषार्थ साधन विद्या ज्ञानभी है यथा ब्रह्म विदा प्नोति परम् अर्थात् ब्रह्मको जानने वाला ब्रह्महीको प्राप्तहोता है ताते प्राणधारी अर्थात् जीवों की जो कर्तव्यताभाव निर्वासिक अग्निहोत्रादि कर्म है तिनकीप्रेरणा अर्थात् इंद्री अन्तःकरण की शुद्धता सोई पुनःविद्या अर्थात् ज्ञानमें सहायत्वको प्राप्तहोताहै ताते कर्म ज्ञान दोऊ जीवके सहायक हैं ११ ॥

कर्माकृतोदोषमपिश्रुतिर्जगौतस्मात्सदाकार्यमिदंमुमुक्षुणा ॥ ननुस्वतंत्राध्रुवकार्य कारिणीविद्यानकिंचिन्मनसाप्यपेक्षते १२ नसत्यकार्योऽपिहियद्वदध्वरःप्रकांक्षते न्यानपिकारकादिकान् ॥ तथैवविद्याविधितःप्रकाशितैर्विशिष्यतेकर्मभिरेवमुक्तये १३ केचिद्वदंतीतिवितर्कवादिनस्तदप्यसदृष्टविरोधकारणात् ॥ देहाभिमानाद भिवर्द्धतेक्रियाविद्यागताहंकृतितःप्रसिद्ध्यति १४ ॥

कर्मअकृतःदोषःअपिश्रुतिःजगौतस्मात् मुमुक्षुणाइदंसदाकार्यंध्रुवकार्यकारिणीविद्याननुस्वतंत्राम नसाअपिकिंचित्नअपेक्षते) हेलक्ष्मण वेद वेदांत में यह वादहै कि जो जीवकर्म नहीं करताहै ताको दोष होताहै अवश्यही ऐसा वेद कहाहै यथा वीरहावाएषदेवानांयोग्निमुद्वासयेत् अर्थात् वह पुरुष देवतों के वीर को नाश करनेवाला होताहै जो अग्निहोत्र कुण्डके अग्निको बुझायदेताहै ताते मुक्ति की इच्छा करने वालों करिकै अग्निहोत्रादि यह कर्म सदा कियाजाय अरु वेदांत कहत कि ध्रुवकार्य को करनेवाली जो विद्याहै सो निश्चय करिकै स्वतंत्रहै कर्मादि सहायताकी मन करिकै भी किंचित नहीं अपेक्षा करती है १२ (नसत्यकार्यःअपिअध्वरःयद्वत्अन्यान्अपिकारकादिकान्हिप्रकांक्षतेतथा एवविधितःप्रकाशितैःकर्मभिःविद्यामुक्तयेविशिष्यते) पुनः किसी को मतहै कि जामें नहींहै स्वर्गादि सुख की इच्छा निश्चय करि ऐसी यज्ञ तथा और भी जे ज्ञानकारक साधनहैं तिनकी अपेक्षा करने वाले जे कर्म तैसेही संध्या तर्पणादि जे वेद विधिसों प्रकाशित हैं तिन कर्मन करिकै सहित विद्या मुक्तिके अर्थ समर्थहै स्वयं नहीं १३ (केचित्वितर्कवादिनःइतिवदंतिगतअहंकृतितःविद्याप्रसिद्ध्यति देहाभिमानात्अभिक्रियावर्द्धतेतत्अपिअसत्दृष्टविरोधकारणात्) हे लक्ष्मण कोऊ वितर्कवादी ऐसा कहत कि देहाभिमान नाशभयेते विद्या प्रसिद्धहोतीहै अरु देहाभिमानते क्रिया बढ़तीहै जो अभिमा-

न असत् तासों उत्पन्न सो क्रिया भी असत्है अरु विद्या सत्है इति सत् असत् परस्पर विरोध सब संसारको देखि परताहै इति विरोध कारणते अर्थात् असत् मिले सत् भी असत् ह्वैजात तथा क्रियो मिले विद्या भी असत् ह्वैजायगी ताते सर्वथा क्रिया त्यागि विद्या ग्रहण करना चाहिये १४ ॥

विशुद्धविज्ञानविरोचनांचिताविद्याऽत्मवृत्तिश्चरमेतिभण्यते ॥ उदेतिकर्माखिलकारकादिभिर्निहंतिविद्याखिलकारकादिकम् १५ तस्मात्त्यजेत्कार्यमशेषतःसुधीर्विद्याविरोधान्नसमुच्चयोभवेत् ॥ आत्मानुसंधानपरायणःसदानिवृत्तसर्वेंद्रियवृत्तिगोचरः १६ यावच्छरीरादिषुमाययात्मधीस्तावद्विधेयोविधिवादकर्मणाम् ॥ नेतीतिवाक्यैरखिलंनिषिध्यतत्ज्ञात्वापरात्मानमथत्यजेत्क्रियाः १७ यदापरात्मात्मविभेदभेदकंविज्ञानमात्मन्यवभातिभास्वरम् ॥ तदैवमायाप्रविलीयतेंजसासकारकाकारणमात्मसंसृतेः १८ ॥

(विशुद्धविज्ञानविरोचनांचिताआत्मवृत्तिःचरमाइतिविद्याभण्यतेकर्मअखिलकारकादिभिः उदेति विद्याअखिलकारकादिकंनिहंति) काहेते क्रिया त्यागना चाहिये कि इन्द्री विषय अन्तःकर्णकेकामादि जीवको रजतमादिमल रहित शुद्ध विज्ञान अनुभव प्रकाशयुतआत्मावृत्तिसर्वोपरिब्रह्म प्राप्तीरूपाइसको विद्याकहतेहैं अरु कर्म तौ सम्पूर्ण विषय व्यापारों करिकै उदय होताहै अरुविद्या सब व्यापारोंकोनाश करतीहै १५(तस्मात्सुधीःअशेषतःकार्यत्यजेत्विद्याविरोधात्समुच्चयःनभवेत्सर्वइन्द्रियवृत्तिगोचरःनिवृत्तसदाआत्मानुसंधानपरायणः) ताते ज्ञानी पुरुष सम्पूर्ण कार्योंको त्याग करै क्योंकि कर्मोंते विद्याते विरोधहै ताते समुच्चय अर्थात् कर्मज्ञान एक साथ नहीं ह्वैसक्ता है तातेइन्द्रिनकीवृत्ति विषयनते खैंचि परमात्म रूपके ध्यान में परायण रहै १६ (यावत्मायया शरीरादिषुआत्मधीःतावत्विधिवादकर्मणं विधेयः अथ परमात्मानंज्ञात्वानेतिइतिवाक्यैःअखिलंनिषिध्यतत्क्रियात्यजेत्) अब पूर्ववाद निषेध करि उचित कहत हे लक्ष्मण जबतक मायाकरिकै आवृत जीव देह गेहादिकों विषे आत्मबुद्धी अर्थात् मैं ब्राह्मण मैं क्षत्री इत्यादि देहैंको सत्यमाने तबतक अंतःकरण शुद्धीके अर्थ वेद आज्ञाते अग्निहोत्र संध्यादि कर्म करै अरु जीवत्व हीन जब आत्मबुद्धी आवै परमात्मरूप को जानि नेति ऐसावादी जो वेद ताके बचनौं करिकै सम्पूर्ण देह व्यवहार को मिथ्या मानि तब कर्म भी त्यागकरै १७ (यदापरात्मआत्मविभेदभेदकंविज्ञानंभास्वरंआत्मनिएवभातितदाआत्मसंसृतेः कारणंसकारकामायाएवअंजसा प्रविलीयते) जासमय में परमात्म आत्मको जो विशेषि भेद है कारण वश जीव बुद्धी ताको भेदक नाश करने वाला जो विज्ञान स्वयं प्रकाश रूप ताको प्रभाव जब आत्मामें प्रकाश करती है अर्थात् आत्मबुद्धी अंतःकरणकी वृत्ति जब अखण्ड ब्रह्माकारहोती है तब जीवात्माके भवसागरको कारण जो है सो सहित अपने व्यापार माया भी नाशहोतीहै १८ ॥

श्रुतिप्रमाणाभिविनाशिताचसाकथंभविष्यत्यपिकार्यकारिणी ॥ विज्ञानमात्रादमलाद्वितीयतस्तस्मादविद्यानपुनर्भविष्यति १९ यदिस्मनष्टानपुनःप्रसूयतेकर्ताऽहमस्येतिमतिःकथंभवेत् ॥ तस्मात्स्वतंत्रानकिमप्यपेक्षतेविद्याविमोक्षायविभाति केवला २० ॥

(श्रुतिप्रमाणाभिविनाशिताअपिकार्यकारिणीसाकथंचभविष्यतिअमलःअद्वितीयतःविज्ञानमात्रात्

तस्मात्अविद्यापुनःनभविष्यति) श्रुति यथा तत्त्वमसि इतिमहावाक्यार्थ प्रमाण करिकै विशेषि नाश ह्वैगई जो कार्यकारिणी माया सो कैसे पुनः होइगी अर्थात् कारिणी माया वाकों कही जो आ-त्मरूपमें आवरणकरि अखंड आनन्द खैंचि जीवबुद्धी करिदिया अरु कार्यमाया वाको कही जो जीव की चैतन्यता खैंचि देहबुद्धी करिदिया सोई जीव जब वेदवाक्यार्थ विचारा यथा तत्त्वमसि तत् कहे सो सच्चिदानन्द त्वंकहे तू असि कहे है अर्थात् सामवेद कहत हे जीव सोई सच्चिदानन्द तूहै इस वाक्य को प्रमाण किया देह जीवत्व त्यागि आत्म रूपको सत्यमाना तब कार्य कारिणी माया नाशह्वै पुनः नहीं ह्वै सकी है काहेते जब अमल अद्वितीय विज्ञान मात्रते नाशभई तातेअविद्या पुनःनहीं उत्पन्न होतीहै १९ (यदिस्मिनष्टापुनःनप्रसूयतेअहंकर्त्ताइतिमतिःअस्यकथंभवेत्तस्मात्स्वतंत्राविद्याकेवलावि-भातिमोक्षायकिमपिनअपेक्षते) हेलक्ष्मण जाके अंतरमें विज्ञान प्रकाश करिकै अविद्या नाशभई पुनः कार्य कारिणी माया नहीं उत्पन्नहोती है तब न देहबुद्धीहोवै न जीवबुद्धीहोवै तब मैं कर्मको करने वाला कर्त्ताहौं ऐसी बुद्धि वाके कैसे ह्वैसकी है यथा अँधेरे में रसरी देखिसर्पकी भ्रमभई जब उजियारे में देखि रसरी जानि गया तब कैसे पुनः भ्रम होसकी है तैसे जब विज्ञान प्रकाशभया तब अहंबुद्धी नहीं ह्वैसकी ताते स्वतंत्रा विद्या केवला विभाति अर्थात् स्वयं प्रकाश रूपा है ताते मोक्ष के अर्थ क्रिया योगादि किसी पदार्थ की अपेक्षा नहीं करती भाव सहायता नहीं चाहती हे २० ॥

सातैत्तिरीयश्रुतिराहसादरंन्यासंप्रशस्ताखिलकर्मणांस्फुटम् ॥ एतावदित्याहच वाजिनांश्रुतिर्ज्ञानंविमोक्षायनकर्मसाधनम् २१ विद्यासमत्वेनतुदर्शितस्त्वयाक्र तुर्नदृष्टांतउदाहृतःसमः ॥ फलैःपृथक्त्वाद्बहुकारकैःक्रतुःसंसाध्यतेज्ञानमतोवि पर्ययम् २२ सप्रत्यवायोह्यहमित्यनात्मधीरज्ञप्रसिद्धानतुतत्त्वदर्शिनः॥तस्माद्बुधै स्त्याज्यमपिक्रियात्मभिर्विधानतःकर्मविधिप्रकाशितम् २३ ॥

(सातैत्तिरीयश्रुतिःसादरंस्फुटंआहप्रशस्ताअखिलकर्मणांन्यासंचवाजिनांश्रुतिःएतावत्इतिआहवि मोक्षायज्ञानंकर्मसाधनंन) हे लक्ष्मण सोई बात प्रसिद्ध तैत्तिरीयआरण्यकी श्रुति आदरपूर्वक स्पष्ट कहतीहै कि मुक्ति हेत ज्ञान चाहिये अरु उत्तम भी सम्पूर्ण कर्म त्यागिदेना चाहिये यथा न कर्मणा न प्रजयाधनेनत्यागेनैकेनामृत्वमानशुःपुनः वाजसनेयि शाखावाले की श्रुति इसबातको ऐसेहीकहत कि विशेषि मोक्षके अर्थ ज्ञानही साधनहै कर्म साधन नहींहै यथा एतावदरेखल्वमृतत्वं २१ (विद्या क्रतुः समत्वेत्वयानदर्शितःतुफलैःपृथक्त्वात्समःदृष्टांतनउदाहृतःक्रतुःबहुकारकैःसंसाध्यतेअतःज्ञानंः विपर्ययम्) हेलक्ष्मण जो समुच्चयवादीको मतहै कि मुक्तिके अर्थ विद्या अरु यज्ञादि क्रिया दोऊ बराबरिहैं सो विद्या अरु क्रिया दोऊ बराबरि तुम करिकै न देखीजाय पुनः विद्याको फलमोक्ष अरु क्रियाको फल स्वर्गादिहै ताते दोउनके फल करिकै भेदहै ताते समता दृष्टांत नहींकहबे योग्यहै पुनः सब व्यवहार त्यागि शुद्ध आत्मरूपते ज्ञान साध्यहै अरु कर्म बहुते व्यापारों करिकै यथा अहंमम अभिमान अन्तरमें अरु देश कालादि नियमबाह्य इत्यादि बहुते व्यवहारों करिकै साध्यहै ताते कर्म ज्ञानके आचरण भी प्रतिकूलहै २२ (क्रियाआत्मभिःविधानतःकर्मविधिप्रकाशितंअहंइतिअनात्मधी अज्ञप्रत्यवायोहिप्रसिद्धातुतत्त्वदर्शिनःसप्रत्यवायोनतस्मात्बुधैःत्याज्यं) जे कर्म करिकै ताके फलकी बासनामें आसक्तहैं अन्तःकर्ण करिकै तिनको विधि विधान सहित कर्म करिबेको वेदने प्रसिद्धकिया हैजिन्हैं यह अहंकारहै यथा हम ब्राह्मण विद्वान् ऐसी अनात्म अर्थात् देहबुद्धी तिन अज्ञानोंकोप्रत्य-

वायोहि अर्थात् न कर्म करनेको प्रायश्चित्त निश्चय करिहोताहै यह वेदमें प्रसिद्धहै पुनः देहाभिमान जीवबुद्धी रहित आत्मतत्वदर्शिनको न कर्म करनेको सो प्रायश्चित्त नहीं होताहै ताते ज्ञानी पुरुषनकरिकै कर्मत्यागहै २३ ॥

श्रद्धान्वितस्तत्त्वमसीतिवाक्यतोगुरोःप्रसादादपिशुद्धमानसः॥ विज्ञायचैकात्म्यमथात्मजीवयोःसुखीभवेन्मेरुरिवाप्रकंपनः २४ आदौपदार्थावगतिर्हिकारणंवाक्यार्थविज्ञानविधौविधानतः॥ तत्त्वंपदार्थौपरमात्मजीवकावसीतिचैकात्म्यमथानयोर्भवेत् २५ प्रत्यक्परोक्षादिविरोधमात्मनोर्विहायसंगृह्यतयोश्चिदात्मताम्॥ संशोधितांलक्षणयाचलक्षितांज्ञात्वास्वमात्मानमथाद्वयोभवेत् २६ ॥

(श्रद्धान्वितःशुद्धमानसः अपिगुरोःप्रसादात् तत्त्वमसिइतिवाक्यतःअथआत्मजीवयोःएकआत्म्यं विज्ञायचमेरुः इवअप्रकंपनः सुखीभवेत्) गुरुवाक्य शास्त्र आज्ञामें विश्वास इति श्रद्धायुक्त विषय कामना रहित शुद्ध मानस भी तत्त्वज्ञ उत्तम गुरुके प्रसादते तत् त्वंअसि इति वाक्यार्थते आत्मजीवकी एकता जानि अखंड आत्माकार वृत्ति ह्वै पुनः सुमेरुसम अचल विषय वासना रहित साक्षात् परमात्मरूपके आनन्दको प्राप्तह्वै सुखी होताहै २४ (आदौपदार्थौअगतिःविधौविधानतःवाक्यार्थेहि विज्ञानकारणंतत्त्वंपदार्थौपरमात्मजीवकौअनयोःचएकात्म्यंअथअसिइतिभवेत्) प्रथम तो जो वाक्य पदोंके अर्थोंकी आगति जो जीव ब्रह्ममें द्वैतबुद्धी सोई विधि विधानते वाक्यार्थ विचार सोई निश्चय करि विज्ञानको आदि कारणहै सो तत् और त्वंपदोंको अर्थ परमात्म जीवहै इन दोऊको एकात्म्यहोना सोई अत्र असिपदको अर्थ भया यथा हे जीव सोई परमात्म तू है २५ (प्रत्यक्परोक्षादिविरोधं आत्मनःतयोःविहाय चिदात्मतां संगृह्यच लक्षणयासंशोधितां लक्षितांस्वं आत्मानंज्ञात्वा अथअद्वयो भवेत्) दुखसुखादि प्रत्यक्ष अहंममादि देहबुद्धी जीवसो प्रत्यक्है अरुस्वयं प्रकाश अखंड आनन्दरूप जाकीगति वेदहू नहींजानत सो परमात्म परोक्षहै इत्यादि जो विरोध जीवात्माको है तिनको त्यागि चिदात्म रूप ग्रहण करि पुनः लक्षणा करिकै शोधि शुद्धरूप पहिचानि अपने आत्मरूपको जानि भाव देहाभिमान जीवबुद्धी त्यागि शुद्धआत्मरूप अपना को जानि तब द्वैतबुद्धी रहित अद्वैत होताहै लक्षणा को अर्थ आगे कहा जायगा २६ ॥

एकात्मकत्वाज्जहतीनसंभवेत्तथाऽजहल्लक्षणताविरोधतः॥ सोऽयंपदार्थाविवभागलक्षणायुज्येततत्त्वंपदयोरदोषतः २७ ॥

(एकात्मकत्वात्जहतीनसंभवेत्) इहालक्ष्यार्थ याते कहेकी वाच्यार्थ सो जीव ब्रह्मकी एकतानहीं बनिसकत काहेते तत्पदको वाच्यार्थ मायोपाधिक सर्व ज्ञत्वादि विशिष्ट चैतन्य अरुत्वंपदको वाच्यार्थ माया कार्य्य भावद्यो पाधिक अल्पज्ञत्वादि विशिष्ट चैतन्य इति सर्वज्ञ अल्पज्ञ बिरुद्ध अर्थ होनेते वाच्यार्थते दोऊकी एकता सिद्ध नहीं है अरु लक्ष्यार्थते उपाधि रहित शुद्ध चैतन्य दोऊहै तामें दोऊकी एकताबनि सकीहै यथा हनूमानाह रावण प्रति ॥ त्वंब्राह्मणो ह्युत्तम वंश संभवा पौलस्त्यपुत्रोऽसिकुबेरबांधवः॥ देहात्म बुद्ध्या पिचपश्य राक्षसो नास्त्यात्म बुद्ध्याकिमुराक्षसो नाहि॥ पुनः रघुनन्दन प्रति कहे॥ देह बुद्धि त्वदासोऽहंजीव बुद्धित्वदंशकः॥ आत्म बुद्धित्वमेवोऽहमितिमे निश्चला मतिः सो लक्षणा यथा तर्क संग्रहेन्या यबोधिन्यां अथकेयं लक्षणाशक्य सम्बन्धो लक्षणा साचत्रिधा यथा जहदज हज्जह

दजहद्भेदात्वर्तते) अर्थात् इस लक्षणामें तीनि भेद हैं प्रथम् जहत् दूसरी अजहत् तीसरी जहदजहत् तहां तत्त्वंअसि इन पदोंको अर्थ जो परमात्म आत्मकी एकताहै सो जहत् लक्षणा करिके नहीं संभवित है काहेते जहां वाचक अपना अर्थ अन्यको देदेवे ताको जहत् लक्षणाकही(यथा गंगायांघोपः) इस वाचक को अर्थ यह भया कि गंगाजी में अहीर बसते हैं तहां गंगाजल प्रवाह में मनुष्योंको वास नहीं ह्वैसक्ताहै ताते गंगाको जल प्रवाह अपना अर्थ सो समीप को देदिया तब यह अर्थ सिद्धभया कि गंगाके समीप अहीर बसते हैं इसी लक्षणाकरि जो तत्त्वंअसि पदोंको अर्थ लक्ष कियाजाय तौ तत्पदको अर्थ है सो परमात्म यह अर्थ परमात्मके समीपमें ह्वैजाय यथा हे जीव सोई परमात्मको समीपीतू है तब एकता कहांभई पुनः (अजहत्लक्षणताविरोधतः) फिर जो अजहत् लक्षणाकरिकै अर्थ लक्षित कियाजाय ताहू सों विरोध आवता है काहेते जहां वाचक को अर्थ बनारहै ताही के अंतरवक्ताकी आशय विचारि कछु अधिक अर्थ ग्रहणहोय ताको अजहत् लक्षणा कही (यथाकाकेभ्योदधिरक्षताम्) अर्थात् कौवोंते दहीकी रक्षा कीन्हेउ इस वाक्यार्थ में वक्ताकी यह आशयहै कि काक बिल्ली कुत्तादि यावत् दही के घातकहैं तिन सबोंते रक्षा किहेउ इस लक्षणाकरिकै अर्थ लक्षित किया गया तौ तत्पद को अर्थ परमात्म है सो बनारहा अरु वक्ताके मनकी आशयते सच्चिदानन्द सदा एक रस सर्वज्ञ इत्यादि अधिक ग्रहण कियागया पुनः त्वंपदको अर्थ जीव सों बनारहा अरु वक्ताकी आशय ते मायावश परिच्छिन्नजड अल्पज्ञादि अधिक ग्रहणभया तौ दोऊ के अर्थमें परस्पर विरोधहै यथा हे जीव सर्वज्ञ परमात्म सोई अंशतू अल्पज्ञहै ताते एकता नहीं ह्वैसक्ती है (तत्त्वंपदयोः भागलक्षणा युज्येत्सःअयंपदार्थोइवअदोपतः)ताते हे लक्ष्मण तत्त्वं ये दोऊ पदनमें भाग अर्थात् जहदजहत्लक्षणा योजित कीजिये यथा सोई यह पदार्थ है इसभांति अदोपित अर्थ होता है अर्थात् जहदजहत् लक्षणाको लक्षण (यथासोऽयंदेवदत्तः) अर्थात् सोई यह देवदत्तहै यामें दोऊ लक्षणनको भावहै यथा यह देवदत्त पूर्व भूपणयुक्त पुष्टांगरहै अब भूपण रहित कृशांग है तामें जहत् करिकै अभूपणता कृशता अपना अर्थ देवदत्त के नाम को दिया अरु अजहत् करिकै देवदत्त को नाम पूर्व के प्रभाव को अधिक ग्रहण किया तथा तत्पदको अर्थ परमात्म है अरु त्वंपदको अर्थ जीव अल्पज्ञ है सो जहत् करिकै जीवत्व अल्पज्ञता अपना अर्थ आत्मरूप को दिया अरु अजहत्करि आत्मरूप अपनो अर्थ निर्विकार शुद्ध अमल ताको भी राखा अरु वक्ताकी आशय बिचारि सदा एकरस सत्चित् आनन्दादि अधिक ग्रहण किया अर्थात् वाक्यार्थ विचारि देहाभिमान जीव बुद्धी त्यागि शुद्ध आत्मरूपकी प्रत्यय प्रवाह वृत्ति तैल धारवत् सदा एकरस परमात्म रूप में लय बनी रहना इति दोप रहित आत्म परमात्म रूप की एकता होती है २७ ॥

रसादिपंचीकृतभूतसंभवंभोगालयंदुःखसुखादिकर्मणाम् ॥ शरीरमाद्यंतवदादि कर्मजंमायामयंस्थूलमुपाधिमात्मनः २८ ॥

(रसादिपंचीकृतभूतसंभवंदुःखसुखादिकर्मणां भोगालयंआदिअंतवत्कर्मजंमायामयंस्थूलंशरीरंआत्मनःउपाधिं) रस आदि जो पांचों तन्मात्रायथाशब्दस्पर्शरूपरसगंध इत्यादि पांचों के कियेहुये जे पञ्चभूत यथा आकाश वायु अग्नि जल भूमि इनभूतोंसे उत्पन्न जो दुःख सुखादिकर्म यथा परहानि पर स्त्री गमनचोरी हिंसादि दुःखद कर्महैं परोपकार तीर्थ दानादि सुखद कर्म हैं इत्यादि कर्मन के भोगने को मंदिर अरु उत्पन्न विनाश धर्म युक्त पूर्व कर्मोंसे उत्पन्न जो मायामय स्थूल शरीर सो आत्मा को उपाधि कहते हैं २८ ॥

सूक्ष्मंमनोवुद्धिदशेंद्रियैर्युतंप्राणैरपंचीकृतभूतसंभवम् ॥ भोक्तुःसुखादेरनुसाधनं भवेच्छरीरमन्यद्विदुरात्मनोवुधाः २९ अनाद्यनिर्वाच्यमपीहकारणंमायाप्रधानं तुपरंशरीरकम् ॥ उपाधिभेदात्तुयतःपृथक्स्थितंस्वात्मानमात्मन्यवधारयेत्क्रमात् ३० ॥

(मनःवुद्धिप्राणैःदशेंद्रियैःयुतंअपंचीकृतभूत् संभवंसूक्ष्मंशरीरंसुखादेःभोक्तुःअनुसाधनंभवेत्आत्मनःअन्यत्वुधाःविदुः) संकल्पविकल्पात्मक जोमन निश्चयात्मक जोबुद्धि पुनः प्राणहृदयकीवायुअपान गुदा की बायु समान नाभि की बायु उदान कंठ की बायु व्यान सर्वांग बायु इति पंच प्राण तथा श्रवण त्वचा नेत्र रस नाघ्राण इति पंच कर्मेन्द्री तथा हाथ पद मुख गुदा लिंग इति पंच कर्मेन्द्री इत्यादि सत्रह तत्त्व करिकै युत शब्दादि सूक्ष्म भूतों से उत्पन्न सूक्ष्म शरीर जो सुखादि भोग को करनेवाला जीव ताको साधन होता है भाव बिना सूक्ष्म शरीर रहे स्थूल शरीर मृतक ह्वै जाता है तिस सूक्ष्म शरीर को भी आत्मासे बिलग करि ज्ञानीलोग जानते हैं २९ (अनादिअनिर्वाच्यंअपीह मायाप्रधानंतुपरंकारणंशरीरकंउपाधिभेदात्तुयतःपृथक्स्थितंस्वआत्मानंक्रमात् आत्मनिअवधारयेत्) अनादि जाकी आदि उत्पत्ति कोऊ जानता नहीं पुनः अनिर्वाच्य अर्थात् सत् है वा असत् है ऐसा कहबे को अशक्य इति निश्चय जगत् को उपजावने वाली माया प्रधान अर्थात् जो लोक रचना हेत सत्त्व रज तमादि गुणों को धारण किहे है त्यहि मयी पुनः स्थूल सूक्ष्म जो जीवोपाधि शरीर हैं तिनते पर ईश्वरोपाधि जो कारण शरीरहै ताकी महाउपाधि भेदते पुनः जो चैतन्य आत्मरूप भूलि जीव बुद्धि ह्वै परमात्म ते बिलग स्थित भया अर्थात् सूक्ष्म स्थूलादि देहाभिमानी भयासो सब सों रहित है शुद्ध अमल जो अपनो आत्माहै ताहि श्रवण मनन निदिध्यासनादि क्रम क्रम करिकै आत्मही में परमात्म को निश्चय करै ३० ॥

कोशेषुपंचस्वपितत्तदाकृतिर्विभातिसंगात्स्फटिकोपलोयथा ॥ असंगरूपोयमजो यतोऽद्वयोविज्ञायतेस्मिन्परितोविचारिते ३१ बुद्धेस्त्रिधावृत्तिरपीहदृश्यतेस्वप्नादिभेदेनगुणत्रयात्मनः ॥ अन्योऽन्यतोऽस्मिन्व्यभिचारतोमृषानित्येपरेब्रह्मणिकेवलेशिवे ३२ देहेंद्रियप्राणमनश्चिदात्मनांसंघादजस्रंपरिवर्ततेधियः ॥ वृत्तिस्तमोमूलतयाज्ञलक्षणायावद्भवेत्तावदसौभवोद्भवः ३३ ॥

(पंचसुकोशेषुअपितत्तत्आकृतिःविभाति यथासंगात्स्फटिकोपलःअस्मिन्परितः विचारितेअयंअसंगरूपः अजःयतःअद्वयःविज्ञायते)अन्नमय प्राण मय मनोमय विज्ञानमय आनंद मयइत्यादि पांच कोशों में परि आत्मा भी तैसी तैसी आकृति दर्शित होत कौन भांति जैसे नील पीत अरुण हरितादि रंगों के संगते अमल श्वेत फटिक मणि भी रंगदार देखात अरु बिलग करनेते श्वेतही देखात तैसेही तत्त्वमसि इस महा वाक्यार्थ में अच्छी प्रकार बिचार करत संते यह आत्मा भी असंग रूप अजन्मा देखाती है ताते आत्म परमात्म में अद्वैत जाना जाता है ३१ (स्वप्नादिभेदेनइहबुद्धेः गुणत्रयात्मनःत्रिधावृत्तिःअपिदृश्यते अस्मिन्अन्योअन्यतःव्यभिचारतः केवलेशिवेनित्येपरेब्रह्मणि मृषा)जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यादि अवस्थों केभेदकरिकै इस जीव बुद्धीकी त्रिगुणात्ममयं अर्थात् सतोगुणी रजोगुणी तमोगुणी इति तीनि प्रकार की वृत्ती देखि परती हैं सो इन अवस्थों में परस्पर व्यभिचारहै यथा जाग्रत्स्वप्न को नाश करि सुषुप्ति होती जाग्रत् सुषुप्तिको नाशकरि स्वप्नहोत स्वप्नसुषुप्ति

नाश करि जाग्रत् होत इति व्यभिचार ते त्रिधा बुद्धि वृत्ती वृथाहैं ताते केवल आनंद रूप त्रिगुण अवस्थों ते अतीत नित्य एक रस परब्रह्म विषे बुद्धि की वृत्ती आरोपण करना वृथाहै ३२ (देहइंद्रियप्राणमनःसंघात् चिदात्मनांअजस्त्रंपरिवर्तते तमोमूलअज्ञलक्षणातयाधियःवृत्तिःयावत्भवेत् तावत्अस्योभवउद्भवः)हम विप्र हमक्षत्री इति देहाभिमान शब्दस्पर्श रूप रस गंध मैथुनादि विषयनमें इंद्री आसक्त प्राणोंमें अपनपौ संकल्प विकल्पादि मनको वेग इत्यादि बहुतोंते चैतन्य आत्माको नित्यही संग रहना तथा मोह की मूल अज्ञानता त्यहि करिकै युक्त बुद्धि की वृत्ति अर्थात् अज्ञवत् बुद्धि को व्यापार जब तक होता है तब तक यह संसार बंधन अर्थात् जन्म मरण दुःख सुख होतही रहता है ३३ ॥

नेतिप्रमाणेननिराकृतोखिलोहृदासमास्वादितचिद्घनामृतः ॥ त्यजेदशेषंजगदात्तसद्रसंपीत्वायथांऽभःप्रजहातितत्फलम् ३४ कदाचिदात्मानमृतोनजायतेन क्षीयतेनापिविवर्द्धतेऽनवः ॥ निरस्तसर्वातिशयःसुखात्मकःस्वयंप्रभः सर्वगतोऽमद्वयम् ३५ एवंविधेज्ञानमयेसुखात्मकेकथंभवोदुःखमयःप्रतीयते ॥ अज्ञानतोऽध्यासवशात्प्रकाशतेज्ञानेविलीयेतविरोधतःक्षणात् ३६ ॥

(नेतिप्रमाणेनअखिलःनिराकृतः चित्घनामृतःहृदासमास्वादितअशेषं जगदात्तत्यजेत्यथासतरसंअंभसःपीत्वातत्फलंप्रजहाति) नेति नेति कहनेवाला जो वेद ताकी महावाक्य तत्त्वमसि इत्यादि प्रमाण करि सत्यमानि सम्पूर्ण देह व्यवहारको मिथ्याकरि सारांश आत्मचैतन्य समूह अमृत हृदय में आस्वादित पानकरि तब असारजानि सम्पूर्ण संसारको त्यागकरै कौनभांति यथा आंब नारंगी मीठा निंबू नारियर आदि जिनमें उत्तम मधुर रस जल तिसको पानकरि वीज छिकला मात्र फल त्याग करिदेते हैं लोकजन तद्वत् ३४ (आत्मानकदाचित्जायतेनमृतः नक्षीयतेनापिवर्द्धतेअनवः सर्वातिशयःनिरस्तसुखात्मकःस्वयंप्रभः सर्वगतःअयंअद्वयः)अब देहाभिमानी जीवते विलक्षण आत्मरूप देखाव अर्थात् देह उत्पन्न होत नाशहोत नवीनहोत वृद्धहोत क्षीणहोत मृतकहोत इतिषट् विकार देहके धर्म हैं अरु आत्मान कभी उत्पन्नहोइ नमरै न कभी दुर्बलहोइ न कभी बढ़ता है अरु न कभी नवीन होवै अवस्था भेद रहित सदा एकरस देह अन्तःकरणादि सबको अत्यन्त त्यागि अखंड आनन्दरूप स्वयं प्रकाशमान जीवांतःकरणादि सबमें व्यापक ताते यह आत्माद्वैत रहितहै ३५ (एवंविधेज्ञानमयेसुखात्मकेदुःखमयःभवः कथंप्रतीयसेअज्ञानतः अध्यासवशात्प्रकाशतेविरोधतःज्ञानेक्षणात्विलीयेत्) इसप्रकार ज्ञानमय होनेते अखण्ड आनन्दरूप आत्मामें दुःखमय संसार कैसे प्रकाश ह्वै सकाहै अरु पूर्व जो भया ताको कारण यहहै कि अज्ञान अर्थात् देह बुद्धीते अध्यासवशते अर्थात् मैं मेरा तेरा इति भ्रम बुद्धि भयेते संसार प्रकाश भयारहै सो यथातमके विरोधी सूर्य उदय होतही तमनाशहोत तथा अज्ञानको विरोधी ज्ञान उदयहोत सन्ते क्षणैमें अज्ञान नाशहोत कारणके नाश भये कार्य्य संसार आपही नाश ह्वैजाता है ३६ ॥

यदन्यदन्यत्रविभाव्यतेभ्रमादध्यासमित्याहुरमुंविपश्चितः॥ असर्पभूतेहिविभावनंयथारज्ज्वादिकेतद्वदपीश्वरेजगत् ३७ विकल्पमायारहितेचिदात्मकेऽहंकारएषःप्रथमःप्रकल्पितः ॥ अध्यासएवात्मनिसर्वकारणेनिरामयेब्रह्मणिकेवलेपरे३८

इच्छादिरागादिसुखादिधार्मिकाःसदाधियःसंसृतिहेतवःपरे। यस्मात्प्रसुप्तौतदभावतःपरःसुखस्वरूपेणविभाव्यतेहिनः ३९ ॥

(भ्रमात्यत्अन्यत्अन्यत्रविभाव्यते असुंअध्यासंइतिविपश्चितः आहुःयथारज्ज्वादिके असर्पभूते अहिविभाव्यते तद्वत्अपिईश्वरेजगत्) बुद्धि भ्रम ते जहां और वस्तुमें और वस्तुकी कल्पना कीजाती है यही अध्यास है ऐसा ज्ञानीजन कहते हैं जैसे अँधियारेमें रसरी परी है यद्यपि वह सर्प नहीं है परन्तु तमकी सहायताते सर्पही भासताहै ताहीभांति ईश्वरमेंभी जगत् भासताहै भाव झूठा लोक व्यवहार सोभी मोहवश सांचा देखाताहै यही अज्ञान जगत्को कारण है ३७ (विकल्पमायारहिते चिदात्मके सर्वकारणेनिरामयेकेवलेपरेब्रह्मणि आत्मनिप्रथमःअहंकारकल्पितः एषःएवअध्यासः) विकल्प द्वैतबुद्धी कारण माया रहित चैतन्यरूप सबको आदि कारण शोक रहित आनन्दघन अद्वितीय ऐसे परब्रह्म आत्माविषे पूर्वही जो अहंकार कल्पितभया यथा मैं ब्राह्मण विद्वान् महात्मा मैं क्षत्री राजा तेजस्वी इत्यादि अभिमान भया सोई अध्यास संसारको कारणहै ३८ (रागादिसुखादिइच्छादिधार्मिकाः सदाधियःपरेसंसृतिहेतवःयस्मात्प्रसुप्तौतत्अभावतःपुरःसुखस्वरूपेणविभाव्यते हिनः) मित्रमें राग शत्रुमेंद्वेष सुखकी इच्छा दुःखकी अनिच्छा इत्यादि द्वंद्वही धर्म जिन्होंके ऐसी जो बुद्धिहै सोई परे आत्मरूपमें संसार होनेको कारणहै काहेते जिस कारणसे सोयगये पर तिस बुद्धिको अभाव होनेते अर्थात् सोवतमें द्वैतबुद्धिकी वृत्तिनहीं रहिजाती है तब पररूप आत्मा सबको आनन्द स्वरूप करिकै देखाताहै अर्थात् सोवनेवालेको जागेपर यही भास होताहै कि मैं सुखपूर्वक सोवतारहौं कछुभीनहीं जाना ताते यही निश्चय होताहै कि बुद्धिही में संसार रहता है आत्मरूपमें निश्चय करिकै संसार नहीं है ३९ ॥

अनाद्यविद्योद्भवबुद्धिविम्बितोजीवःप्रकाशोऽयमितीर्यतेचितः ॥ आत्मधियःसाक्षितयापृथक्स्थितोबुद्ध्यापरिच्छिन्नपरःसएवहि ४० चिद्बिंबसाक्षात्मधियांप्रसंगतस्त्वेकत्रवासादनलाक्तलोहवत् ॥ अन्योऽन्यमध्यासवशात्प्रतीयतेजडाजडत्वंचचिदात्मचेतसोः४१ गुरोःसकाशादपिवेदवाक्यतःसंजातविद्यानुभवोनिरीक्ष्यतम् ॥ स्वात्मानमात्मस्थमुपाधिवर्जितंत्यजेदशेषंजडमात्मगोचरम् ४२ ॥

(अनादिअविद्याउद्भवःबुद्धौचितः प्रकाशःविंबितःअयंजीवःइतिईर्यतेविपः साक्षिआत्मातयापृथक्स्थितःबुद्ध्याअपरिच्छिन्नसपरःएवहि) अनादि जो अविद्याताके संयोग कारणसे बुद्धिभई तिस बुद्धिमें चैतन्य आत्मकी प्रकाश परी सोई प्रतिबिंबभई यही जीवहै ऐसा कहते हैं अरु बुद्धिको साक्षी आत्मा सोतौ तिस बुद्धिकरिकै विलग स्थित रहताहै ताकी प्रतिबिंबमात्र जीवहै सोई जब ज्ञानके प्रभावते बुद्धि करिकै अपरिच्छिन्न भया बुद्धिधर्मोंको त्यागकिया तबसोई जीव परमात्मरूपही होता है ४० (चिदात्मचेतसःअन्योऽन्यंअध्यासवशात् जडाजडत्वंचप्रतीयतेचित् विंबसअक्षआत्माधियांप्रसंगतः तुएकत्रवासात्अनलाक्तलोहवत्)चिदात्म चैतन्य आत्माचेतसः जो बुद्धिइनदोनों को परस्पर संयोगवशतेदोऊमेंजड़ता अजड़ता प्रतीतहोतीहै अर्थात् बुद्धिकी जड़ता आत्मामे दर्शित होतीहै आत्माकी चैतन्यता बुद्धिमेंदर्शितहोतीहै ताकोकारण कि चैतन्यकी बिंबजो जीव सहित इंद्रिन आत्मा बुद्धि इनको मिलानपुनः एकत्रवासते परस्पर गुणनको मिलानहोगया कौन भांतियथा अग्नि में तपाईहुई लोहमें अग्निकीप्रकाश दाहकता दर्शत अग्निमें लोहकीआकार दर्शत तैसहीआत्मबुद्धि-

की गतिहैं ४१ (गुरोःसकाशात्वेदवाक्यतःअपिविद्यानुभवःसंजातआत्मस्थंस्वात्मानंउपाधिवर्जितं तंनिरीक्ष्यजड़ात्मगोचरंअशेषंत्यजेत्)गुरुके उपदेशते वेदकी महावाक्यार्थते निश्चय करि ज्ञान अनुभव उत्पन्न भया जाके सो अन्तरमें स्थित जो अपनी आत्मा उपाधि रहित ताहि अवलोकन करे अरु जड़ात्मक अन्तःकरणोंकी वृत्ति इंद्रिनकी विषय इत्यादि यावत् संसारके कारणहैं तिन सबको त्यागि देवै ४२ ॥

प्रकाशरूपोऽहमजोऽहमद्वयोसकृद्विभातोऽहमतीवनिर्मलः ॥ विशुद्धविज्ञानघनो निरामयःसम्पूर्णआनंदमयोहमक्रियः ४३ सदैवमुक्तोऽहमचिंत्यशक्तिमानतींद्रियज्ञानमविक्रियात्मकः ॥ अनंतपारोऽहमहर्निशंबुधैर्विभावितोऽहंहृदिवेदवादिभिः ४४ एवंसदात्मानमखंडितात्मनाविचारमाणस्यविशुद्धभावना ॥ हन्यादविद्यामचिरेणकारकैःरसायनंयद्वदुपासितंरुजः ४५ ॥

(अहंअज अहंअद्वयःअहंअतीवनिर्मलःअसकृद्विभातःप्रकाशरूपःअहंअक्रियानिरामयःविशुद्धविज्ञानघनःसम्पूर्णआनन्दमयः) सब विकार त्यागि अपने आत्मरूप इसभांति मानै कि मैं जन्म रहित सनातन एक रसहौं मेरी समताको दूसरा नहीं अद्वितीयहौं रजतमादिमल रहित मैं अत्यन्त निर्मल बड़ी प्रभायुक्त परमप्रकाशरूपहौं मैं कर्म रहित शोकादि रहित विशेष शुद्ध विज्ञान समूह युक्त सम्पूर्ण आनन्दमयहौं इत्यादि आचरणको दृढ़ानुसंधान राखे रहे ४३ (अहंसदैवमुक्तःअविक्रियात्मकःअतींद्रियज्ञानंअचिंत्यशक्तिमान्अहंअनन्तपारःवेदवादिभिःबुधैःअहर्निशंहृदिभावितोहं) मैं सदा मुक्त कभी बद्ध नहीं सब विकार रहित इन्द्रियोंते परज्ञानरूप अचिंत्यमाया मेरी शक्तिहै देश काल करिकै मेरा अन्तपार नहींहै वेदवादी ज्ञानिन करिकै दिनौराति हृदयमें चिंतवन किया जाता है सोई ब्रह्म मैंहौं ४४ (एवंअखंडितात्मनासदाआत्मानंविचारमाणस्यविशुद्धभावनाकारकैअविद्या अचिरेणहन्यात्यद्वत्रसायनंउपासितंरुजः) इसी प्रकार देहेंद्री अन्तःकरणादि एकाग्र करिकै सदा आत्माको विचार करता हुआ पुरुष ताके विशुद्धभावना ब्रह्माकार वृत्ति उत्पन्न होतीहै त्यहि करिकै पूर्व कर्मन सहित अविद्याको थोरेही कालमें नाश करिदेवै कौन भांति जैसे रसायन औषध सेवन करि रोग नाश करिदेत ४५ ॥

विविक्तआसीनउपारतेंद्रियोविनिर्जितात्माविमलांतराशयः॥विभावयेदेकमनन्यसाधनोविज्ञानदृक्केवलआत्मसंस्थितः ४६ विश्वंयदेतत्परमात्मदर्शनंविलापयेदात्मनिसर्वकारणे ॥ पूर्णश्चिदानंदमयोवतिष्ठतेनवेदबाह्यंनचकिंचिदंतरम् ४७ पूर्वंसमाधेरखिलंविचिंतयेदोंकारमात्रंसचराचरंजगत् ॥ तदेववाच्यंप्रणवोहिवाचकोविभाव्यतेऽज्ञानवशान्नबोधतः ४८ अकारसंज्ञःपुरुषोहिविश्वकोह्युकारकस्तैजसईर्यतेक्रमात् ॥ प्राज्ञोमकारःपरिपठ्यतेखिलैः समाधिपूर्वंनतुतत्त्वतोभवेत् ४९ ॥

(विविक्तआसीनउपारतेंद्रियः) अब साधन उपाय कहत हैं लक्ष्मण एकांत स्थानमें योगाभ्यासकी रीतियमनियमादि युक्त कमलासनकरि बैठि शब्द स्पर्शरूप रस गंधादि विषयनको त्यागि इन्द्रिनको स्वाधीन करिकै (विनिर्जितात्मा विमलांतराशयः) कर अंगुष्ठ से दक्षिण श्वासा मूंदि

प्रणव उच्चारण पूर्वक वाम श्वासाते धीरा धीरा पवनखेंचि बंद करि राखै जब न थँभिसकै तब दक्षिण श्वासाते धीरा धीरा छांड़ै इसीप्रकार वारम्वार प्राणायाम करि अन्तःकरण जीति लेवै तवमन चित्त बुद्धि अहंकारादि अंतःकरण अत्यंत अमल शुद्धहैजावै तब (विज्ञानदृक्एकअनन्यसाधनःकेवलआत्मसंस्थितःविभावयेत्) निर्विकल्प समाधि रूप विज्ञान दृष्टि करिकै और किती बातकी सुधि न होनेपावै एक अनन्यतत्त्व ज्ञान साधनसोंसंगरहित केवलआत्मा जो अंतरमें स्थित है ताहीको ध्यान करै ४६ (परमात्मदर्शनंयत्एतत्विश्वंतत्सर्वकारणेआत्मनिविलापयेत्पूर्णःचिदानंदमयोवतिष्ठतेनवाह्यंचनाकिंचित्अंतरवेद) परमात्म है प्रकाशक जिसका ऐसा जो चराचर विश्वताको माया समीप ताते सब को उपादान कारण जो परमात्मा तिसीमें लय करिदेय अर्थात् कारण जो परमात्म ताही में कार्यरूप संसार को देखै तब पूर्णकाम जाके ऐसा चिदानन्दमय रूप स्थितहै तब सिवाय ब्रह्मके न बाहेर पुनः न भीतर कछु और देखै ४७ (पूर्वंसमाधेःसचराचरंअखिलंजगत्ओंकारमात्रंविचिंतयेत्ततएववाच्यंप्रणवःहिवाचकःअज्ञानवशात्विभाव्यतेबोधतःनः) समाधि के पूर्व सहित चर अचर संपूर्ण जगत् ओंकारमात्र चिंतवन करै तहां सो संसार निश्चय करि वाच्यहै अरुप्रणव निश्चय करि वाचक है यह अज्ञान वशते भावना की जाती है ज्ञानवोध भये नहीं ४८ (अकारसंज्ञकःहिविश्वकःउकारकःतैजसईर्य्यतेमकारःप्राज्ञःसमाधिपूर्वंपुरुषःक्रमात्अखिलैःपरिपठ्यतेतुतत्त्वतःनभवेत्) ओंकार वाचक को वाच्य भावार्थ देखावते हैं तहां अकार उकार मकार येती वर्ण ओंकारमेंहैं तथा जीवमें तीनि अवस्था होती हैं जाग्रत् अवस्था को विश्व अभिमानी सो अकार संज्ञक विश्व जो विराट्रूप त्यहिमय अपना स्थूल शरीर को अकार को अर्थ जानै तथा स्वप्न अवस्था को अभिमानी तैजस सो उकार संज्ञक तैजस जो हिरण्यगर्भरूप त्यहिमय अपना सूक्ष्म शरीर उकार को अर्थ जानै तथा सुषुप्ति अवस्था को अभिमानी प्राज्ञ है सो मकार संज्ञक प्राज्ञ जो मायोपाधिक ईश्वर त्यहिमय अपना कारण शरीर सोमकार को अर्थ जानै इस प्रकार समाधि के पूर्व तीनि अवस्थन तक पुरुष इसी क्रमते सब जगन्मय करिकै तीनिहू वर्ण पढ़ै पुनः तत्त्वज्ञान भयेपर ऐसा नहीं होताहै अर्थात् तुरीय अवस्था प्राप्त भयेपर केवल ब्रह्ममय प्रणव विचारै ४९ ॥

विश्वंत्वकारंपुरुषंविलापयेदुकारमध्येबहुधाव्यवस्थितं ॥ ततोमकारेप्रविलाप्य तैजसंद्वितीयवर्णंप्रणवस्यचांतिमे ५० मकारमप्यात्मनिचिद्घनेपरेविलापयेत्प्राज्ञमपीहकारणम् ॥ सोहंपरंब्रह्मसदाविमुक्तिमद्विज्ञानदृङ्मुक्तउपाधितोऽमलः ५१ एवंसदाजातपरात्मभावनःस्वानंदतुष्टःपरिविस्मृताखिलः ॥ आस्तेसनित्यात्मसुखप्रकाशकःसाक्षाद्विमुक्तोऽचलवारिसिंधुवत् ५२ ॥

(बहुधाव्यवस्थितंविश्वंपुरुषंतुअकारंउकारमध्येविलापयेत्ततःतैजसंद्वितीयवर्णंप्रणवस्यचअंतिमेमकारेप्रविलाप्य) स्थूल शरीरादि बहुत प्रकार की रचना व्यवस्थित है जामें ऐसा विश्व ताको अभिमानी पुरुष विश्व को वाचक जो अकारताको प्रणव के दूसरे वर्ण उकार हिरण्यगर्भ तामें लयकरै तब जाग्रत् अवस्था लयभई तदनंतर स्वप्न अवस्था को अभिमानी जो प्राज्ञ हिरण्यगर्भ अपना सूक्ष्म रूप ताको वाचक जो दूसरा वर्ण उकार ताहिप्रणव के अंत को तीसरा वर्ण जो मकारतामें लय करै तब स्वप्नावस्था लय भई ५० (प्राज्ञंअपिइहकारणंमकारंअपिचिद्घनेपरे

आत्मनिविलापयेत्‌उपाधितःमुक्तअमलःविज्ञानदृक्‌सदाविमुक्तमत्‌परंब्रह्मसःमहं) पुनः सुषुप्ति अवस्था को अभिमानी जो प्राज्ञमायोपाधिक ईश्वर जो यह कारण शरीर ताको बाचक जो प्रणवको तीसरा वर्ण मकारताहि भी चैतन्य घनपरे आत्मा विषे लय करिदेय तवसुषुप्ति अवस्थाभी लयभई केवल तुरीय अवस्था में ऐसा बिचार करै कि सब उपाधि रहित अमल विज्ञान दृष्टि सदा विमुक्त-वंतपरब्रह्म सोईमैंहौं ५१ (एवंजातपरात्मभावन अखिलःपरिविस्मृतः सदास्वानंदतुष्टः) इसी प्रकार उत्पन्न भई है परमात्म रूप की भावना अरु देहेंद्रीसुख संबंधादिकोंकी बासनादि सब भूलि गई है जिनको अरुसदा एकरस अपने शुद्ध स्वरूप ब्रह्मानंद में तुष्टरहते हैं (सनित्यात्मसुख प्रकाशक.साक्षात्‌विमुक्तःअचलवारिसिंधुवत्‌ आस्ते) सो नित्य एकरस आत्म सुखमें परिपूर्ण स्वयं प्रकाशरूप साक्षात्‌ जविनमुक्त अचलजल समुद्रकी तुल्य रहताहै ५२ ॥

एवंसदाऽभ्यस्तसमाधियोगिनोनिवृत्तसर्वेन्द्रियगोचरस्यहि ।विनिर्जिताशेषरिपोरहंसदादृश्योभवेयंजितषड्गुणात्मनः ५३ ध्यात्वैवमात्मानमहर्निशंमुनिस्तिष्ठेत्सदामुक्तसमस्तबंधनः ॥ प्रारब्धमश्नन्नभिमानवर्जितोमय्येवसाक्षात्प्रविलीयते ततः ५४ आदौचमध्येचतथैवचांततोभवंविदित्वाभयशोककारणम् ॥ हित्वासमस्तंविधिवादचोदितंभजेत्स्वमात्मानमथाखिलात्मनाम् ५५ ॥

(एवंसमाधेः सदाभ्यस्तः सर्वेंद्रियगोचरस्यहि निवृत्तः अशेषरिपोः विनिर्जिताः षड्गुणात्मन जितः योगिनः अहंसदादृश्योभवेयं) इसप्रकार की समाधि को सदा अभ्यास किहे सब इन्द्रिन की विषय शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध मैथुनादि सब विषयों को निश्चय करि त्यागि दियाहै जिन्हों ने काम क्रोधादि सब शत्रुनको जीति लियाहै जिसने तथा सर्वज्ञत्व नित्यतृप्तत्व बोध-रूपत्व स्वतंत्रत्व नित्य अलुप्तत्व अनन्तरूपत्व इति षड्गुणमय आत्मको स्वाधीन कियाहै जिसने ऐसे योगीजनको मैं सदा देखिपरताहौं ५३(एवंअहर्निशआत्मानं ध्यात्वामुक्तसमस्तबंधनः अभिमा-नवर्जितःप्रारब्धंअश्नन्मुनिः सदातिष्ठेत्‌ततःसाक्षात्मयिएवप्रविलीयते) इसीप्रकार दिनौ राति आत्माको ध्यान करनेते छूटिगये हैं सब भवबंधन जिसके देहाभिमान रहित प्रारब्ध भोगताहुआ मुनि मननशील सदा रहताहै प्रारब्ध भोगिभये तदनन्तर साक्षात्‌ मेरेही रूपमें लयहोताहै भाव मेरारूप होताहै ५४ (आदौचमध्येचतथाएवअन्ततःभयशोक कारणंभवंविदित्वाविधिवादचोदितं समस्तं हित्वाअथअखिलात्मनां स्वंआत्मानंभजेत्‌) आदि जब जीवत्व नहीं भया शुद्ध आत्मरूप रहा तबौ संसारकी.वासना करि कारण मायाको ग्रहण करि जीव भया पुनः मध्यमें जब जीवभया तब लोकै सुख हेत कार्य माया ग्रहण करि इन्द्री विषय वश देहाभिमानी ह्वै अनेक शुभाशुभ कर्मकरि दुःखसुख भोगतारहा पुनः ताहीभांति अन्तमें जीवन्मुक्त भयेपरभी पुनः भय शोकको कारण संसार प्रसिद्ध बनाहै जहां वासना उठी फिरि भवबंधनमें परा ऐसा विचारि वेदाज्ञाकरि सवासिक यज्ञादि यावत्‌ कर्महैं तिन सबको त्यागि अरु सब भूतोंकी जो आत्मा सो अपनी आत्माको भजन करै ५५ ॥

आत्मन्यभेदेनविभावयन्निदंभवत्यभेदेनमयात्मनातदा ॥ यथाजलंवारिनिधौ यथापयःक्षीरेवियद्व्योम्न्यानिलेयथानिलः ५६ इत्थंयदीक्षेतहिलोकसंस्थितोजगन्मृषैवेतिविभावयन्मुनिः ॥ तिराकृतत्वाच्छ्रुतियुक्तिमानतोयथेंदुभेदोदिशिदि

ग्भ्रमादयः ५७ यावन्नपश्येदखिलंमदात्मकंतावन्मदाराधनतत्परोभवेत् ॥ श्रद्धालुरत्यूर्जितभक्तिलक्षणोयस्तस्यदृश्योहमहर्निशंहृदि ५८ ॥

(इदंआत्मनिअभेदेनभावयन् तदाआत्मनामयाअभेदेन भवतियथावारिनिधौजलंयथाक्षीरेपयः व्योम्निवियद्यथाअनिलेअनिलः) हे लक्ष्मण यह जो विश्वव्यापक मेरारूपहै तिसको आत्मा विषे अभेद करिकै भावना करत सन्ते तब उस जीवसे मेरेरूपसे अभेद ह्वैजाताहै कौनभांति यथा समुद्र में गये नदी आदिकोंको जल यथा दूधमें दूध यथा महदाकाशमें घटाकाश यथा खलायटादिकों को पवनपनमें मिलिजाताहै ५६ (हिलोकस्थस्थितःमुनिः यदिइत्थंईक्षेतजगन्मृषाएवइतिविभावयन्श्रुतियुक्तिमानतःनिराकृतत्वात्यथाइन्दुभेदः दिशिदिग्भ्रमादयः) निश्चय करि लोकहीमें रहतेहुये मननशील मुनि जो जीव ब्रह्मकी एकता इसप्रकारकी इच्छाकरै तो यह जगत् मिथ्याहै निश्चय करिकै ऐसी सत्यता दृढ करनेके कारण उपाय चिंतवन करै कौनप्रकार श्रुति वाक्य तत्त्वमसि आदि विचारते तथा शुक्तिरजवत् रवि किरण जलवत् लोकभी झूठाभ्रमहै इत्यादि युक्ति अनुमानते संसार को त्यागकरै शुद्ध आत्मरूप ग्रहणकरै कौनभांति जैसे किलोकारगते द्वैचन्द्रमा देखात पूर्वमें पश्चिम की भ्रम घूनतेको समीपके वृक्षादि घूमते देखात इत्यादि विचारते भ्रमजात तैसे ज्ञानते संसारके सत्यताकी भ्रमजात ५७ (यावत्अखिलंमत्आत्मकंनपश्येत् तावत्मत्आराधनतत्परःभवेत्श्रद्धालुःअतिऊर्जितभक्तिलक्षणःयःतस्यहृदिअहं अहर्निशंदृश्यः) अब जाके आश्रित ज्ञान दृढ रहिसकाहै सो भक्ति अवलंब रघुनाथजी कहत कि हे लक्ष्मण जबतक सम्पूर्ण चराचरमें व्यापक मेरारूप आत्माको नहीं देखताहै जीव बुद्धी बनाहै तबतक सेवक सेव्य भावकरि मेरे आराधनमें तत्पर बनारहै कौनभांति श्रद्धावन्त अत्यन्त दृढ प्रेम अनुरागादि उत्तम भक्तिके लक्षण युक्तहै जो ताके हृदय में मैं दिनौराति देखि परताहौं भाव विनाभक्ति मेरी प्राप्ती दुर्घटहै अर्थात् पूर्व रुक्ष ज्ञानकहि आये हैं सो उनको कहना यथार्थही है काहेते सर्वज्ञ रघुनाथजीको सदा एकरस अखंड ज्ञानहै अरु अल्पज्ञ जीव को सदा एकरस ज्ञान नहीं रहिसकाहै यथा ज्ञानिनमें शिरमौर सनकादि तिनकेभी वैकुण्ठ द्वारपालोंपर क्रोधह्वैगया इसी हेत सदा हरियश श्रवणमें तत्पर रहतेहैं ताते परमात्म भक्तिके आधार ज्ञान दृढ रहताहै यही सिद्धांत सबको है यथा भागवते ब्रह्मोवाच श्रेयःश्रितिंभक्तिमुदस्यते विभोक्लिश्यंति ये केवलबोधलब्धये । तेषामसौक्लेशलएवशिष्यते नान्यद्यथा स्थूलतुषावघातिनां॥ महारामायणेशिव उवाच येराममभक्तिममलांसुविहायरम्यांज्ञानेरताःप्रतिदिनंपरिक्लिष्टमार्गे॥आरान्महेंद्रसुरभीपरित्यक्तमूर्खाःअर्कंभजंतितुभगेसुखदुग्धहेतु॥ येब्रह्मास्मीति नित्यं वदंति हृदि विना रामचन्द्रांघ्रिपद्मम्। तेबुद्ध्यास्त्यक्तपोतास्तृणपरिनिचये सिंधुमुत्तरंति ५८ ॥

रहस्यमेतच्छ्रुतिसारसंग्रहंमयाविनिश्चित्यतवोदितंप्रिय ॥ यस्त्वेतदालोचयतीहबुद्धिमान्समुच्यतेपातकराशिभिःक्षणात् ५९ भ्रातर्यदीदंपरिदृश्यतेजगन्मायैवसर्वंपरिहृत्यचेतसा॥मद्भावनाभावितशुद्धमानसःसुखीभवानंदमयोनिरामयः ६० ॥

(हेप्रियश्रुतिसारसंग्रहंएतत्रहस्यं मयाविनिश्चित्यतवउदितंतुइहयः बुद्धिमान्एतत्आलोचयति सपातकराशिभिःक्षणात्मुच्यते) हेप्रिय लक्ष्मण वेदोंको सारांश निकारि संग्रहकरि यह जो रहस्य गुप्तज्ञान तत्त्वहै ताहि मैंने निश्चय करि तुमसे कहा है पुनः इससंसार में जो बुद्धिमान् इसगीताको विचार पूर्वक अवलोकन करता है सो समूह पापों करिकै छूटिजाता है अंतःकरण शुद्धह्वै शरणागत

को अधिकारी होताहै ५९ (हेभ्रातःयतइदंजगत्परिदृश्यते सर्वमायाएवचेतसापरिहृत्यमत्भावना भावितशुद्धमानसः निरामयःआनंदमयःसुखीभव) उपदेशांत रघुनाथ जी अशीर्वाद देतेहैं हे भाई लक्ष्मण जो यहतन धनधाम स्त्री पुत्रादि जगत् देखिपरता है सो सबमाया है निश्चय करिकै ताहि चित्त से परित्यागकरि केवल मेरे रूपको ध्यानकरि शुद्ध मनसों शोक उपाधि आदि रहित अंतर आनंदमय वाह्यसुखी होहु भावलोक व्यवहार त्यागि शुद्धमन मेरा ध्यानकरते हुये तनमन सों आनंद रहौ ६० ॥

यःसेवतेमामगुणंगुणात्परंहृदाकदावायदिवागुणात्मकम् ॥ सोऽहंस्वपादांचितरेणुभिःस्पृशन्पुनातिलोकत्रितयंयथारविः ६१ विज्ञानमेतदखिलंश्रुतिसारमेकं वेदांतवेद्यचरणेनमयैवगीतम् ॥ यःश्रद्धयापरिपठेद्गुरुभक्तियुक्तोमद्रूपमेतियदिमद्वचनेषुभक्तिः ६२ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसम्वादेउत्तरकाण्डेश्रीरामगीता नामपञ्चमःसर्गः ५ ॥

(यःकदावाहृदागुणात्परंअगुणंयदिवागुणात्मकंमांसेवतेसः अहं स्वपादांचितरेणुभिःस्पृशनलोक त्रितयपुनातियथारविः) जो पुरुषकभी अपने शुद्धहृदय में मायागुणोंते परजो मेरा अगुणरूपहै अंतर्यामी सच्चिदानंद ताको ध्यानकरताहै अथवा कृपा दया करुणा सौहार्द शील सुलभ उदार भक्त वात्सल्यतादि अनंत परमकल्याण गुणन्युत श्यामसुंदर द्विभुज धनुधारी रूपहै ताहि सेवन करताहै सो सज्जन मेरहीरूपहै सोपुरुष अपने पायँनकी लगीहुई धूरिकरिकै स्पर्श करतसंते तीनिहूं लोकन को पावन करताहै अर्थात् वाके पायँकी धूरिजो आपने तनमें लगायलेताहै ताको हृदयशुद्ध ह्वैजाता है तवसुकृत व्यापार सिद्धहोता है जैसे सूर्यनकी किरणि परेभूमि शुद्धहोतीहै ६१तामें रूपीउपजतीहै (वेदांतवेद्यचरणेनमयाएवगीतंअखिलंश्रुतिसारंएकंएतत् विज्ञानयदिमत्वचनेषुभक्तिगुरुभक्तियुक्तःयः श्रद्धयापरिपठेत्मत्रूपंएति) वेदांत करिकै वेद्यचरणहैं जाके ऐसाजो मैं ताहीकरिकै गानकियागया संपूर्ण वेदोंको सारांश एक अद्वितीय यह जो विज्ञान रूपगीता है ताहिजो मेरे वचनविषे भक्ति करि अरुगुरुभक्ति युक्त जो पुरुष श्रद्धाकरिकै पढ़ताहै सो मेरेस्वरूपको प्राप्तहोता है ६२॥दो० ॥ देहवुद्धि हरिसेवनित जीववुद्धिकरुप्रेम । आत्मवुद्धिअनुरागदृढ़ भक्तिज्ञानयुतनेम ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतबैजनाथविरचिते अध्यात्मभूषणेउत्तरकांडेश्रीरामगीतावर्णनोनामपंचमःप्रकाशः ५॥

श्रीशिवउवाच ॥ एकदामुनयःसर्वेयमुनातीरवासिनः ॥ आजग्मूराघवंद्रष्टुंभयाल्लवणरक्षसः १ कृत्वाग्रेतुमुनिश्रेष्ठंभार्गवंच्यवनंद्विजाः ॥ असंख्याताःसमायाता रामादभयकांक्षिणः २ तान्पूजयित्वापरयाभक्त्यारघुकुलोत्तमः ॥ उवाचमधुरं वाक्यंहर्षयन्मुनिमंडलम् ३ करवाणिमुनिश्रेष्ठाःकिमागमनकारणम् ॥ धन्योस्मि यदियूयंमांप्रीत्याद्रष्टुमिहागताः ४ दुष्करंचापियत्कार्यंभवतांतत्करोम्यहम् ॥ आज्ञापयंतुमांभृत्यंब्राह्मणादैवतंहिमे ५ ॥

सवैया ॥ प्रभु प्रेरितजाय तुरंतवधे रिपुसूदनजी लवणासुरको । मुनि आश्रम जन्म कुशीलवको प्रगटानँद जो सियके उरको ॥ प्रभु यज्ञरचे बहुदानमयी मुनिलोग चले विमलापुरको । कुशपूछत लोक सनेह वृथा मुनिभ्रातमरूप कहेफुरको ॥ (यमुनातीरवासिनःसर्वेमुनयःलवणरक्षसःभयात् राघवंद्रष्टुंएकदाआजग्मुः) शिवजी बोले हे गिरिजा यमुनातीर वासी मुनिलोग सब लवणासुर राक्षसकी भयते रघुनाथजीके दर्शन हेत एकसमय अयोध्याजीको आवतेभये १ (भार्गवंमुनिश्रेष्ठंच्य वनंअग्रेकृत्वातुअसंख्याताःद्विजाःरामात्अभयकांक्षिणःसमायाताः) भृगुवंश में उत्तम मुनिच्यवन मुनिको आगेकरि अनगिंतिन ब्राह्मण रघुनाथजीते अभयलेनेकी कांक्षासे सब आवतेभये २(रघुकु लोत्तमःपरयाभक्त्यातान्पूजयित्वामुनिमंडलंहर्षयन्मधुरंवाक्यंउवाच) मुनिनको देखि रघुवंशनाथ परमभक्ति सहित तिनहि पूजनकरि मुनि समाजको प्रसन्न करत संते मधुर वचन बोलतेभये ३ (हेमुनिश्रेष्ठाःआगमनकारणंकिंकरवाणियद्प्रीत्यामांद्रष्टुंयूयंइहागताःधन्योस्मि) रघुनंदन बोलेकि हे मुनीश्वरौ आपको इहाँ आवनेको कारण क्याहै कहिये सो करौं अरुजो प्रीति करिकै मोहिं देखने को आपलोग इहाँ आये तौ मैं धन्य भया ४ (ब्राह्मणाःहिमेदैवतंभृत्यंमांआज्ञापयंतुचभवतांयत्दु ष्करंकार्यंअपितत्अहंकरोमि) ब्राह्मण निश्चय करि मेरे इष्टदेवहैं ऐसाजानि सेवक जो मैं ताहि आज्ञादीजिये पुनः आपको जो दुर्घटकार्यभी होयगो सोऊ मैं करोंगो ५ ॥

तच्छ्रुत्वासहसाहृष्टश्च्यवनोवाक्यमब्रवीत् ॥ मधुनामामहादैत्यःपुराकृतयुगेप्र भो ६ आसीदतीवधर्मात्मादेवब्राह्मणपूजकः ॥ तस्यतुष्टोमहादेवोददौशूलमनु त्तमम् ७ प्राहचानेनयंहंसिसतुभस्मीभविष्यति ॥ रावणस्यानुजाभार्यातस्यकुं भीनसीश्रुता ८ तस्यांतुलवणोनामराक्षसोभीमविक्रमः ॥ आसीद्दुरात्मादुर्धर्षो देवब्राह्मणहिंसकः ९ पीड़ितास्तेनराजेंद्रवयंत्वांशरणंगताः ॥ तच्छ्रुत्वाराघवो प्याहमाभैष्टमुनिपुंगवाः १० लवणंनाशयिष्यामिगच्छंतुविगतज्वराः ॥ इत्यु क्त्वाप्राहरामोपिभ्रातॄन्कोवाहनिष्यति॥लवणंराक्षसंदद्याद्ब्राह्मणेभ्योभयंमहत् ११

(तत्श्रुत्वा सहसा हृष्टःच्यवनःवाक्यंअब्रवीत्प्रभोपुराकृतयुगेमधुनामामहादैत्यः) रघुनंदनके वचन सो सुनिकै अत्यन्त आनंदह्वै च्यवनमुनि वचन बोलतेभये हे प्रभो रघुनाथजी पूर्वकाल सतयुग बिषे मधुनामें महादैत्य होता भया ६ (देवब्राह्मणपूजकःअतीवधर्मात्माआसीत्तस्यमहादेवःतुष्टः अनुत्तमंशूलंददौ) देवता ब्राह्मणोंको पूजनेवाला अत्यन्त धर्मात्मा होताभया ताके तप पूजादिते महादेव प्रसन्न ह्वैकै उत्तम त्रिशूलदेतेभये ७ (चप्राहअनेनयंहंसिसतुभस्मीभविष्यतिरावणस्यअनुजा कुंभीनसीश्रुतातस्यभार्या) शिवजी त्रिशूलदै पुनः बोले कि हे मधु इस त्रिशूल करिकै जिसकोमारि है सो पुनःभस्म ह्वै जायगो अरु रावणकी छोटी भगिनी कुंभीनसी नामें सोई उस मधुकी भार्या रही ८(तुतस्यांभीमविक्रमःलवणोनामराक्षसःआसीत्दुराधर्षःदुरात्मादेवब्राह्मणहिंसकः) पुनःतिसी कुंभीनसीमें भयंकर पराक्रमी लवण नामें राक्षस होता भया जो किसीके जीतने योग्य नहीं दुष्टा त्मा देव ब्राह्मणोंको घात करताहै ९ (हेराजेंद्रतेनपीड़िताःवयंत्वांशरणंगताःतत्श्रुत्वाराघवःअपिमा हमुनिपुंगवाःमाभीः) हे राजाधिराज तिसी राक्षस करिकै पीड़ित हमलोग आपकीशरणको आये हैं सो सुनि रघुनंदनभी बोलते भये हे मुनि वरौ मति डरौ १० (लवणंनाशयिष्यामिविगतज्वराःगच्छंतु इतिउक्त्वारामःभ्रातॄन्प्राहब्राह्मणेभ्योमहद्भयंदद्यात्राक्षसंलवणंकोवाहनिष्यति) लवणासुरको हम

नाश करैंगे अवतुम लोग संताप रहित आश्रमनको जाउ ऐसा कहि रघुनंदन भरतादि भाइनप्रति बोलते भये कि इन ब्राह्मणोंके अर्थ बड़ी भारी अभयको देनेवाला लवणासुर राक्षसहि को बधकरैगो भावराक्षसको मारिजो ब्राह्मणोंको अभय करदेवैसो बोले ११ ॥

तच्छ्रुत्वाप्रांजलिःप्राहभरतोराघवायवै ॥ अहमेवहनिष्यामिदेवाज्ञापयमांप्रभो १२ ततोरामंनमस्कृत्यशत्रुघ्नोवाक्यमब्रवीत् १३ लक्ष्मणेनमहत्कार्यंकृतंराघवसंयुगे ॥ नन्दिग्रामेमहाबुद्धिर्भरतोदुःखमन्वभूत् १४ अहमेवगमिष्यामिलवणस्यवधायच ॥ त्वत्प्रसादाद्रघुश्रेष्ठहन्यान्तंराक्षसंयुधि १५ तच्छ्रुत्वास्वांकमारोप्यशत्रुघ्नंशत्रुसूदनः ॥ प्राहाद्यैवाभिषेक्ष्यामिमथुराराज्यकारणात् १६ आनाय्यचसुसंभारांल्लक्ष्मणेनाभिषेचने ॥ अनिच्छंतमपिस्नेहादभिषेकमकारयत् १७ दत्वातस्मैशरंदिव्यंरामःशत्रुघ्नमब्रवीत् ॥ अनेनजहिबाणेनलवणंलोककंटकम् १८ ॥

(तत्श्रुत्वाभरतःप्रांजलिःराघवायवैप्राह देवअहंएवहनिष्यामिप्रभोमांआज्ञापय) रघुनंदन के वचन सो सुनिकै भरत हाथ जोरि रघुनंदन के अर्थ निश्चय करि बोलते भये हेदेव महीं लवणासुर को वधकरिहौं ताते हे प्रभो मोको आज्ञा दीजिये १२ (ततः शत्रुघ्नःरामंनमस्कृत्यवाक्यं अब्रवीत्) तदनंतर शत्रुघ्न रघुनंदन को नमस्कार करि वचन बोलते भये १३ (राघवलक्ष्मणेनसंयुगेमहत्कार्यं कृतंमहाबुद्धिःभरतः नंदिग्रामेदुःखंअन्वभूत्) शत्रुहन बोले कि हे रघुवंशनाथ लक्ष्मणजीने तो आप के साथ संग्राम में घननादवधादि बड़ाभारी कार्य करि चुके तथा महाबुद्धिमान् भरतजी नंदीग्राम में नियम व्रतादि बड़ादुःख भोगे १४ (लवणस्यवधायअहंएवगमिष्यामिचरघुश्रेष्ठत्वत्प्रसादात्युधितं राक्षसंहन्यां) पुनः शत्रुहन बोले कि लवणासुर के वध के अर्थ महीं जांउगो पुनः हेरघुवंश नाथ आपकी अनुग्रह ते संग्राममें तिसराक्षसको मारौंगो ताते कृपादृष्टि आज्ञा दीजिये १५ (तत् श्रुत्वा शत्रुसूदनःशत्रुघ्नंस्वअंकं आरोप्यप्राहमथुराराज्यकारणात् अद्यैव अभिषेक्ष्यामि) सोबचन सुनिकै शत्रुनको नाश करने वाले रघुनाथ जी शत्रुघ्नको अपने अकोरामें बैठाय बोलते भये हे शत्रुघ्न मथुराकी राज्य करने कारणते तुमको अभी राज्याभिषेक करताहौं १६ (अभिषेचनेसुसंभारान्लक्ष्मणेनआनाय्यअनिच्छतंअपिस्नेहात् अभिषेकंअकारयत्) अभिषेककी सब सामग्री लक्ष्मण जीसे मँगाय अनिच्छित भी शत्रुघ्न को स्नेह ते रघुनाथ जी राज्याभिषेक करते भये १७ (तस्मैदिव्यंशरंदत्वारामःशत्रुघ्नंअब्रवीत्अनेनबाणेनलोककंटकं लवणंजहि) तिनके अर्थ दिव्य बाण दैकै रघुनंदन शत्रुहन प्रति बोलते भये कि हे शत्रुघ्न जो मैंने दियाहै इसी बाण करिकै लोकको कंटक अर्थात् सबको दुःखदलवणासुरको मारौ १८

सतुसंपूज्यतच्छूलंगेहेगच्छातिकाननम् ॥ भक्षणार्थंतुजंतूनांनानाप्राणिबधाय च १९ सतुनायातिसदनंयावद्वनचरोभवेत् ॥ तावदेवपुरद्वारितिष्ठत्वंधृतकार्मुकः २० योत्स्यतेसत्वयाक्रुद्धस्तदाबध्योभविष्यति ॥ तंहत्वालवणंक्रूरंतद्वनंमधुसंज्ञितम् २१ निवेश्यनगरंतत्रतिष्ठत्वंमेऽनुशासनात् ॥ अश्वानांपंचसाहस्रं रथानांचतदर्द्धकम् २२ गजानांषट्शतानीहपत्तीनामयुतत्रयम् ॥ आगमिष्य

तिपश्चात्त्वमग्रेसाधयराक्षसम् २३ इत्युक्त्वामूर्ध्न्यवघ्रायप्रेषयामासराघवः ॥ श त्रुघ्नमुनिभिःसार्द्धमाशीर्भिरभिनंद्यच २४ शत्रुघ्नोपितथाचक्रेयथारामेणचोदि तः ॥ हत्वामधुसुतंयुद्धेमथुरामकरोत्पुरीम् २५ ॥

(सतुगेहेतत्शूलंसंपूज्यतुभक्षणार्थजंतूनांच नानाप्राणिबधायकाननंगच्छति) पुनः रघुनाथजी बोले कि सो लवणासुर प्रभात काल अपने घरमें शिवको दिया हुआ सो त्रिशूल को पूजन करि यामदिन गत आपने भोजन के अर्थ वनचर जंतुनको पुनः और अनेक प्राणियों के वधके अर्थ वनको जाता है १९ (सतु सदनंनायातियावत् वनचरःभवेत्तावत्एवधृतकार्मुकःत्वंपुरद्वारितिष्ठ) सो लवणासुर घरको न आवने पावै बनहीं में फिरत होय तबै तक धनुषवाण धारण किहे तुम पुरके द्वारपर खड़े रहो २० (सक्रुद्धःत्वयायोत्स्येततदावध्येःभविष्यतितंक्रूरं लवणंहत्वातद्वनंमधुसंज्ञितम्) तबैसोराक्षस सहित क्रोध तुम्हारे साथ युद्धकरी तब तुम वाको मारिसकौगे तिस क्रूर लवणासुर को मारिकैतब सो जो वनहै मधुनामें तामें २१ (मेअनुशासनात्नगरंनिवेश्यतत्रत्वंतिष्ठपंचसाहस्रं अश्वानांच तदर्धकसूरथानां) मेरी आज्ञा ते राजधानी हेत मधुवन में नगर को वसाय तहां तुम राज्य करत संते वास करौ अरु पांचहजार घोड़े पुनः ताके आधे अढ़ाई हजार रथ २२ (पट्शतानिगजानांअयु तत्रयंपत्तीनांइहपश्चात् आगमिष्यतिअग्रेत्वंराक्षसंसाधय) छःसै हाथी दशहजार के तिगुने अर्थात् तीस हजार पैदर यह सेना पीछे आवैहगी अरु आगे जाय तुम राक्षस को मारहु २३ (इतिउक्त्वा राघवःमूर्ध्निअवघ्रायचआशीर्भिःअभिनंद्यमुनिभिःसार्द्धंशत्रुघ्नंप्रेषयामास) ऐसा कहि रघुनंदन शीश सूँघि पुनः आशीर्वादों करिकै आनंद करि मुनिन सहित शत्रुघ्नको पठावतेभये २४ (यथारामेणचो दितःशत्रुघ्नःअपितथाचक्रेयुद्धेमधुसुतंहत्वामथुरापुरींअकरोत्) अब जिसप्रकार रघुनाथजीने आज्ञा दिया रहै शत्रुघ्न भी तैसाही करते भये प्रथम युद्धमें मधुके पुत्रलवणासुरको मारि पुनः मथुरानामें पुरी वसावते भये २५ ॥

स्फीताञ्जनपदांचक्रेमथुरांदानमानतः ॥ सीतापिसुषुवेपुत्रौद्वौवाल्मीकेरथाश्र मे२६मुनिस्तयोर्नामचक्रेकुशोज्येष्ठोनुजोलवः ॥ क्रमेणविद्यासम्पन्नौसीतापुत्रौब भूवतुः २७ उपनीतौचमुनिनावेदाध्ययनतत्परौ ॥ कृत्स्नंरामायणंप्राहकाव्यंवा ल्मीकयोर्मुनिः. २८ शङ्करेणपुराप्रोक्तंपार्वत्यैपुरहारिणा ॥ वेदोपबृंहणार्थायताव ग्राहयतप्रभुः २९ कुमारौस्वरसम्पन्नौसुंदरावश्विनाविव ॥ तंत्रीतालसमायुक्तौ गायंतौचेरतुर्वने ३० तत्रतत्रमुनीनांतौसमाजेसुररूपिणौ ॥ गायंतावभितोदृ ष्ट्वाविस्मितामुनयोब्रुवन् ३१ ॥

(दानमानतः मथुरांस्फीतां जनपदांचक्रे अथवाल्मीकेः आश्रमे सीता अपि द्वौ पुत्रौ सुषुवे ऋषिनको दान सन्मान करि शत्रुघ्न मथुराजीमें संपूर्ण ऋद्धियुत राजधानी करते भये अबताही समय वाल्मीकि मुनिके आश्रममें सीताभी दोपुत्र उत्पन्न करती भई २६ (मुनिःतयोःनामचक्रेज्येष्ठः कुशःअनुजःलवःक्रमेणसीतापुत्रौविद्यासंपन्नौबभूवतुः)वाल्मीकिमुनि तिनके नामकरण करतेभये ज्येठे को कुश छोटेको लव नामधरे पुनः व्याकरणादि चौदह विद्या मीमांसादि पट्शास्त्र ऋगादि चारिहु वेद इत्यादि क्रमकरिकै पढ़तसंते सीताके दोऊपुत्र विद्यामें परिपूर्ण होतेभये २७ (मुनिनाउपनीतौ

चवेदाध्ययनतत्परौकाव्यंरामायणंकृत्स्नंमुनिःबालकयोःप्राह) मुनि वाल्मीकने दोउनको यज्ञोपवीत किया पुनः नित्य वेदपाठमें तत्परहैं पुनः आदिकाव्य रामायण संपूर्ण वाल्मीकमुनि बालकनको पढ़ाय देतेभये २८ (पुरहारिणाशंकरेणपुरापार्वत्यैप्रोक्तंवेदोपबृंहणार्थायप्रभुःतावत्ग्राहयत) त्रिपुरासुरको नाशकरनहारे शंकरने पूर्वहींजो रामचरित पार्वतीके अर्थ सुनाये हैं सोई रामचरित जोवेदनमें गुप्तहै सोई वेदोंको अर्थ वृद्धकरनेकेअर्थ प्रभु वाल्मीकजी रामायणको प्रथम लव कुशको ग्रहण करावते भये २९ (अश्विनौइवसुंदरौकुमारौ स्वरसंपन्नौतंत्रीतालसमायुक्तौ गायंतौवनेचेरतुः) अश्विनी कुमार के तुल्य सुन्दर दोऊ राज कुमार कुश लव षड्ज ऋषभ गांधार मध्यम पंचम धैवत निषध इत्यादि स्वरोंमें प्रवीणताल सहित बीणा बजावत रामायण गानकरतेहुये बनमें बिचरते हैं ३०(मुनीनांसमाजेतत्र २ तौ सुररूपिणौगायंतौ अभितः दृष्ट्वामुनयः विस्मिताब्रुवन्) मुनिनकी समाज जहां जहां तहां तहां समाजनमें दोऊ देवतों सम स्वरूपवान् राज कुमार गावते हैं तिनहिं सब दिशितेदेखे मुनि लोग आश्चर्य मानि वार्त्ता करते भये ३१ ॥

गंधर्वेष्विहकिन्नरेषुभुविवादेवेषुदेवालये । पातालेष्वथवाचतुर्मुखगृहेलोकेषुसर्वेषुच ॥ अस्माभिश्चिरजीविभिश्चिरतरंदृष्टादिशःसर्वतो । नाज्ञायीदृशगीतवाद्यगरिमानादर्शिनाश्राविच ३२ एवंस्तुवद्भिरखिलैर्मुनिभिःप्रतिवासरं ॥ आसातेसुखमेकांतेवाल्मीकेराश्रमेचिरं३३ अथरामोऽश्वमेधादींश्चक्रौबहुदक्षिणान् ॥ यज्ञान्स्वर्णमयींसीतांविधायविपुलद्युतिः ३४ तस्मिन्वितानेऋषयःसर्वेराजर्षयस्तथा ॥ ब्राह्मणाःक्षत्रियावैश्याःसमाजग्मुर्दिदृक्षवः ३५ वाल्मीकिरपिसंगृह्य गायंतौतौकुशीलवौ ॥ जगामऋषिवाटस्यसमीपंमुनिपुंगवः ३६ ॥

(अस्माभिः चिरजीविभिः सर्वतःदिशः चिरंतरंदृष्टा इहभुविवा देवालयेदेवेषुकिन्नरेषुगंधर्वेषुपातालेषुअथवाचतुर्मुखगृहेच सर्वेषुलोकेषुईदृशः गीतवाद्यगरिमानाज्ञायिनादर्शिचनाश्रावि) सब मुनि कहतेहैं कि हम लोग बहुत कालके जीनेवाले अरु सब दिशोंमें बहुत भांतिके गाने बजानेवाले देखा सो इस भूमिलोकमें यावत् गायकभये तिनमें वा देवलोकमें देवतोंमें किन्नरोंमें गंधर्वोंमें यावत् गायकहैं तथा पातालमें अथवा ब्रह्मलोकमें पुनः सर्वलोकोंमें यावत् गायकहैं तिनमें इन कुमारों के तुल्य गान बाजामें प्रवीन दूसरा नहीं देखा जैसा ये कुमारगाते बजाते हैं ऐसा न कानोंते सुना पुनः इनकी तुल्यको दूसरा गायक किसी औरहू श्रावकके मुखते प्रशंसा नहीं सुना इति विस्मय ३२ (एवंअखिलैःमुनिभिःप्रतिवासरंस्तुवद्भिः एकांतेवाल्मीकेःआश्रमेसुखंचिरंआसाते) इसी भांति सम्पूर्ण मुनि लोगों करिके प्रति दिन प्रशंसा कियेजाते हैं दोऊ कुमार पुनः एकान्त स्थान वाल्मीकके आश्रममें सुखपूर्वक बहुतकालतक रहतेभये ३३(अथरामःविपुलद्युतिः स्वर्णमयीं सीतां विधाय बहुदक्षिणान् अश्वमेधान् यज्ञान् चकार) अबरघुनाथजी ऋषिनके संमतसे बड़ीतेजवंत सोनेकी सीता निर्माण कराय ताकीगांठि जोरिबहुतहैं दक्षिणा जिनमें ऐसी अश्वमेधादि यज्ञीकरतेभये ३४ तस्मिन् वितानेसर्वे ऋषयःतथाराजऋषयः ब्राह्मणाः क्षत्रियाः वैश्याः दिदृक्षवः समाजग्मुः) तिसयज्ञमाड़वमें सबऋषि तैसे राजऋषि अरु ब्राह्मण क्षत्री वैश्य इत्यादि देखने को सब आवतेभये ३५ गायंतौ तौकुशीलवौ संग्राह्य मुनिपुंगवः वाल्मीकिः अपि ऋषि वाटस्य समीपं जगाम) रामायणके गावने

वाले दोऊ कुमार कुशलव को साथमें लिहे मुनिनमें श्रेष्ठ वाल्मीकि भी जहां ऋषिनको वृंदरहैं ताके समीप जातेभये ३६ ॥

तत्रैकान्तेस्थितंशान्तंसमाधिविरमेमुनिम् ॥ कुशःपप्रच्छवाल्मीकिंज्ञानशास्त्रंकथान्तरे ३७ भगवन्श्रोतुमिच्छामिसंक्षेपाद्भवतोखिलम् ॥ देहिनःसंसृतिर्बंधःकथमुत्पद्यतेदृढः ३८ कथंविमुच्यतेदेहीदृढबन्धाद्भवाभिधात् ॥ वक्तुमर्हसिसर्वज्ञमह्यंशिष्यायतेमुने ३९ ॥ वाल्मीकिरुवाच ॥ शृणुवक्ष्यामितेसर्वंसंक्षेपाद्बन्धमोक्षयोः ॥ स्वरूपंसाधनंचापिमत्तःश्रुत्वायथोदितम् ४० तथैवाचरभद्रन्तेजीवन्मुक्तोभविष्यसि ॥ देहएवमहागेहमदेहस्यचिदात्मनः ४१ तस्याहंकारएवास्मिन्मंत्रीतेनैवकल्पितः ॥ देहगेहाभिमानंस्वंसमारोप्यचिदात्मनि ४२ तेनतादात्म्यमापन्नःस्वचेष्टितमशेषतः ॥ विदधातिचिदानन्देतद्भासितवपुःस्वयं ४३ ॥

(तत्रएकांतेस्थितंसमाधिविरमेशांतं मुनिंवाल्मीकिंकथांतरेकुशःज्ञानशास्त्रंपप्रच्छ) तहां एकांत स्थानमें बैठेहुये समाधिके अंत शांत स्वभाव मुनिजो वाल्मीकि तिनप्रति कछु कथाको प्रसंग चलाय कुशजी ज्ञानशास्त्र पूछते भये ३७ (भगवन्भवतःसंक्षेपात् अखिलंश्रोतुंइच्छामिदेहिनः संसृतिः दृढःबंधःकथं उत्पद्यते) कुशबोले हे भगवन् आपके मुखसे संक्षेप ते यह हाल संपूर्ण सुनबेकी इच्छाहै कि जीवन को संसार में दृढबंधन काहेते उत्पन्न होताहै ३८ (भवाभिधात्दृढबंधात्देही कथंविमुच्यतेसर्वज्ञमुनेमह्यंशिष्यायतेवक्तुंअर्हसि) पुनः भवरूप दृढबंधन ते जीवकैसे छूटता है हे सर्वज्ञ मुने मैं जो आपको शिष्यहौं ताके अर्थ आपकहबे योग्यहौ ३९ (बंधमोक्षयोःस्वरूपंचसाधनं अपिसंक्षेपात् सर्वंतेवक्ष्यामिशृणुमत्तःयथाउदितंश्रुत्वा) वाल्मीकि मुनिबोले कि हे कुश संसार में बंध अरुसंसार ते मोक्ष दोऊको स्वरूप अरुसाधन भी संक्षेपते सबहाल तुमप्रति कहताहौं सुनिये मेरा यथा कहाहै ताहि सुनिकै ४० (तेभद्रंतथाएवआचरन्जीवनमुक्तःभविष्यसिअदेहस्यचिदात्मनः देहएवमहागेहं) तेरा कल्याण होय जैसा मैं कहौं तैसाही आचरण करु तब जीवन्मुक्त होयगो हेकुश देहरहित चैतन्य आत्मा को यह देहै महाघरहै ४१ (तस्यअहंकारएव तेनएवअस्मिन्मंत्रीकल्पितः स्वंदेहगेहाभिमानंचिदात्मनिसमारोप्य) तिसी देहको जो अहंकार भया तिसको तिस आत्माने इस देह रूपघर में मंत्री बनाया ताने मंत्रहै मेरी देहहै मेरा घर है ऐसा अभिमान आत्मामें आरोपित करि ४२ (तत्भासितवपुःस्वयंतेनतादात्म्यंआपन्नःअशेषतःस्वचेष्टितं चिदानंदेविदधाति) सोई आत्मा प्रकाश किये शरीर आपना माने ताते देहाभिमानसे आत्माअभेदको प्राप्त भया तब अभिमान सब अपने व्यापार चिदानंदमें विधानकरताहै कर्तृत्व बनाता है ४३ ॥

तेनसंकल्पितोदेहीसंकल्पानिगडावृतः॥पुत्रदारगृहादीनिसंकल्पयतिचानिशं ४४ संकल्पयन्स्वयंदेहीपरिशोचातिसर्वदा ॥ त्रयस्तस्याहमोदेहाअधमोत्तममध्यमाः ४५ तमःसत्वरजःसंज्ञाजगतःकारणंस्थितेः॥ तमोरूपाद्धिसंकल्पान्नित्यंतामसचेष्टया ४६ अत्यन्ततामसोभूत्वाकृमिकीटत्वमाप्नुयात् ॥ सत्वरूपोहिसंकल्पोधर्मज्ञानपरायणः ४७ अदूरमोक्षसाम्राज्यःसुखरूपोहितिष्ठति ॥ रजोरूपोहिसंकल्पोलोकेसव्यवहारवान् ४८ ॥

तेनसंकल्पितःसंकल्पनिगडावृतः देहीचअनिशंदारपुत्रगृहादीनिसंकल्पयति) आत्माकी एकताते देहाभिमान ने इंद्रीविषयवशते देहसुख की कामना किया सोई कामनारूपबेरी में वँधा आत्मदृष्टि भुलाय देहाभिमानी जीव पुनः दिनौराति स्त्री पुत्र धन धामादि की कामना करता है ४४ (देहांस्त्वयं संकल्पयन्सर्वदा परिशोचतितस्यअहमः अधमः उत्तमः मध्यमः त्रयःदेहाः) जीव अपनी कामना करत संते जब कामना पूर्णन भई वालाभद्दै नष्टह्वैगई इतिकारण सब कालमें शोचै करता है अरुतिस अहंकारके एकअधम एकउत्तम एकमध्यम ये तीनिदेहैंहैं ४५ (तमःसत्वरजःसंज्ञा) जो अधमदेह है ताकी तमोगुण संज्ञाहै जो उत्तम देह है ताकी सतोगुणसंज्ञा है जो मध्यमदेहहै ताकी रजोगुण संज्ञा है (जगतःकारणंस्थिते) इनहींतीनोंदेहैंजगतको उपजावने के कारण हैं (तमोरूपात्संकल्पा न्नित्यंहितामसचेष्टया) तामस रूप प्रधान ते अर्थात् जिसजीव में तमोगुण अधिक होता है ताते कामना करतसंते नित्यही निश्चय करिकै तामसकी चेष्टा अर्थात् सब तमोगुणी व्यापार यथा द्यूत दुराचार हिंसा शत्रुता पाखंड परस्त्री परधन हरण इत्यादि करिके ४६ (अत्यंततामसःभूत्वाक्रिमिकी टत्वंआप्नुयात्) तामसी व्यापार कीन्हे से अत्यंत तामस वृद्धहोताहै तब अज्ञानवश पशुवत् बुद्धि- होती है तबकृमि कीट यथा बीछि सर्पादिदेहौं को प्राप्त होता है (सत्वरूपोहि संकल्पःधर्म ज्ञानप रायणः) पुनः जिस जीवमें सत्वरूप प्रधान अर्थात् सतोगुण अधिक होताहै तामों कामना करतसंते धर्मज्ञानव्यापार यथा तीर्थ दान व्रत संध्या तर्पण निवृत्त सद्ग्रंथावलोकन विराग विवेक आत्मशो- धनादि में तत्पर रहताहै ४७ (अदूरमोक्षसाम्राज्यः सुखरूपोहितिष्ठति) समीपही है मोक्षरूप चक्र- वर्त्ति राज्यवत्पदअखंड आनन्दरूप रहताहै नित्य सतोगुणी जीव (रजोरूपोहिसंकल्पःसलोकेव्यव हारवान्) जिस जीवमें रजोगुण अधिकते कामना करताहै सो लोक व्यवहार यथा नृत्यगान भोजन वसन भूषण वाहन यान गंध कामिनी सभाचातुरी इत्यादि में प्रवीन होताहै ४८ ॥

परितिष्ठतिसंसारेपुत्रदारानुरंजितः ॥ त्रिविधंतुपरित्यज्यरूपमेतन्महामते ४९ संकल्पःपरमाप्नोतिपदमात्मपरिक्षये ॥ दृष्टीःसर्वाःपरित्यज्यनियम्यमनसामनः ५० सवाह्याभ्यन्तरार्थस्यसंकल्पस्यक्षयंकुरु ॥ यदिवर्षसहस्राणितपश्चरसिदा रुणम् ५१ पातालस्थस्यभूस्थस्यस्वर्गस्थस्यापितेनघ ॥ नान्यःकश्चिदुपा योस्तिसंकल्पोपशमादृते ५२ अनावाधेविकारेस्वेसुखेपरमपावने । संकल्पोप शमेयत्नम्पौरुषेणपरंकुरु ५३ ॥

(पुत्रदारानुरंजितः संसारेपरितिष्ठतितुमहामते एतंत्रिविधंरूपंपरित्यज्य) सो रजोगुणी जीव पुत्र स्त्री धनादिकों के प्रीति रंग में रँगाहुआ जन्मता मरता संसारही में रहता है पुनः हे महामते कुश वह संकल्प करनेवाला जीव इन तम सत्व रजादि तीनि बिधि के अहंकार रूपोंको परित्याग करिकै ४९ (संकल्प.आत्मपरिक्षयेपरंपदंआप्नोतिसर्वाः दृष्टिःपरित्यज्यमनसानियम्यमनः) कामना करनेवाला देहाभिमानरूप नाश भये पर जीव परं पद को प्राप्त होता है ताते हे कुश इन्द्री विषयों की सब दृष्टि त्यागि मनसे विषय वासना त्यागि शुद्ध मन ह्वै ५० (सवांह्यअभिअन्तरस्थस्यसंकल्प स्यक्षयंकुरु) सहित वाह्य इन्द्रिनकी तथा अंतःकर्ण की वसनेवाली जो संकल्प अर्थात् लोक सुख की कामना तिसको नाशकरो यहीएक भवबंधनते छूटनेकी मुख्य उपाय है नाहीं तौ (यदिवर्षसह स्राणि दारुणंतपः चरासि) जो हजारन वर्षतक महाकठिन तपकरौ ५१ (भूस्थस्यपातालस्थस्यस्व

गेस्थस्यापिहे अनघते संकल्पोपशमादृते अन्यःकश्चित् उपायः न अस्ति) पूर्ववत् तपस्या करतसंते चहै भूतलमें वासकरौ चहै पाताल लोकमें वासकरौ चहै स्वर्गमें भी वासकरौ हे निःपाप कुशतुम्हारी संकल्प अर्थात् कामना विनानाशभये मोक्षहेत और कछुभी उपाय नहीं है ५२ अनवाधे अविकारे परमपावनेस्वे सुखेसंकल्पोपशमे परंपौरुषेण यत्नंकुरु) जिसमें न कछुवाधाहै नकछु विकारहे ऐसे परम पावन अपने आत्मसुख प्राप्ति अर्थ संकल्प कामनाके नाश करिबेअर्थ परम पौरुष साहसकरिके यत्नकरौ ५३ ॥

संकल्पतंतौनिखिलाभावाःप्रोक्ताःकिलानघ ॥ छिन्नेतंतौनजानीमःक्यान्तिविभवाःपराः ५४ निःसंकल्पोयथाप्राप्तव्यवहारपरोभव ॥ क्षयेसंकल्पजालस्य जीवोब्रह्मत्वमाप्नुयात् ५५ अधिगतपरमार्थतामुपेत्यप्रसभमपास्यविकल्पजालमुच्चैः ॥ अधिगमयपदंतदद्वितीयंविततसुखायसुषुप्तचित्तवृत्तिः ५६ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसम्वादे उत्तरकाण्डे कुशलवोत्पत्तिर्नामषष्ठःसर्गः ६ ॥

(हेअनघसंकल्पतंतौ निखिलाःभावाःकिलप्रोक्ताः तंतौछिन्ने विभवाः पराः नजानीमः क्यान्ति) होनिःपाप यह जो संकल्प अर्थात् कामना है सोई धागाहै ताहीमें संपूर्ण संसारके पदार्थ निश्चय करिकै गुहेहैं तिसी कामनाको ग्रहण करनेते जीवसंसार में बँधाहै तिससंकल्प रूप धागाके टूटिगये पर विभव जो संसार सो परानाम नाशभये परहम नहीं जानते हैं कि वह जीवकहां जाता है भाव अवश्य मोक्षहोताहै ५४ (संकल्पजालस्यक्षयेजीवः ब्रह्मत्वंआप्नुयात् निःसंकल्पःयथाप्राप्तव्यवहारपरःभव) संकल्प अर्थात् संसार सुखकी कामना समूह के नाशभये परवहजीव ब्रह्मपदको प्राप्त होताहै ऐसाविचारि हे कुशनिःसंकल्प अर्थात् निःकामह्वैकै तवदैवयोग्य प्रारब्धवश जो पदार्थप्राप्त होय तिस व्यवहार वर्त्तने में सदा स्थितरहो ५५ (प्रसभंउच्चैः विकल्पजालंअपास्य अधिगत परमार्थतां उपेत्यतत् अद्वितीयंपदं अधिगमयविततसुखायसुषुप्तचित्तवृत्तिः) हठ करिकै बड़े विकल्प जालको त्यागि भाव वरवश कामना रोकि प्राप्तहोय ब्रह्मतत्व ज्यहि करिकै त्यहि भावको प्राप्तह्वै सोईजो अद्वियपदहै ताहि प्राप्तह्वै ऐसाजो अखंडसुख है ताके परिपूर्ण राखने अर्थ यथा सुषुप्त अवस्था अर्थात् सोवत में आनन्द मयवृत्ति रहती है तैसेही चित्तकी वृत्ति शुद्धब्रह्माकारवनी रहै ५६ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतवैजनाथ विरचितेअध्यात्मभूषणेउत्तरकाण्डेषष्ठःप्रकाशः ६ ॥

वाल्मीकिनाबोधितोसौकुशःसद्योगतभ्रमः ॥ अंतर्मुक्तोबहिःसर्वमनुकुर्वंश्चचार सः १ वाल्मीकिरपितौप्राहसीतापुत्रौमहाधियौ ॥ तत्रतत्रचगायंतौपुरवीथिषुसर्वतः २ रामस्याग्रेगायेतांशुश्रूषुर्यदिराघवः ॥ नग्राह्यंवैयुवाभ्यांतद्यदिकिंचित्प्रदास्यति ३ इतितौचोदितौतत्रगायमानौविचेरतुः ॥ यथोक्तंऋषिणापूर्वंतत्रतत्राभ्यगायताम् ४ तांसशुश्रावकाकुत्स्थःपूर्वंचर्यांततस्ततः ॥ अपूर्वपाठजातिंचगे

येनसमभिष्ठुताम् ५ बालयोःराघवःश्रुत्वाकौतूहलमुपेयिवान् ॥ अथकर्मांतरेराजासमाहूयमहामुनीम् ६ ॥

सवैया ॥ प्रभुयज्ञकुशील वगावतमें धनदेतरहे उननाहिंलये । करिसोंह सियामहिलोपभई सुर सानंदकै झरिफूलचये ॥ करियज्ञ क्रिया दयदान विदामुनि सानंदसों निजधामगये । जननी सब पूछत राघवजी निजपावन भक्तिसज्ञानदये ॥ (वाल्मीकिनाबोधितो लौकुशःसद्यःगतभ्रमः) शिवजी बोले हे गिरिजा वाल्मीकि करिकै बोधित जो कुशशीघ्र गतभ्रम (अन्तःमुक्त बहिःसः सर्वअनुकुर्वन् बचार) अन्तरमें मुक्त दशा अरु बाहेर देहते लोक व्यवहारभी करते हैं अर्थात् गुरुउपदेशसे ज्ञान प्राप्तभया द्वैत भ्रम तुरतही नाशभई देहाभिमान रहित शुद्ध अंतःकरण में आत्मरूपको ध्यान किहे अरु बाहेरते सबको देखनेमात्र देह व्यवहारभी करते हैं १ (पुरेवीथिषुतत्रतत्रचसर्वत. गायंतोसीतापुत्रौमहाधियौतौ वाल्मीकि.ऋषिप्राह) पुरमें जहां जहां मार्गहै तहां तहां सर्वत्र रामायण गान करते फिरते जो सीताके गोउपुत्र बड़े बुद्धिवन्त तिन प्रति वाल्मीकि बोलतेभये २ (यदिराघव.शुश्रूषुः रामस्याग्रेगायेतांयदिकिंचित्प्रदास्यति तत्युवाभ्यांवैनग्राह्यं) वाल्मीकि बोले कि जो रघुनाथजी को सुनवेकी इच्छाहोइ तौ रघुनाथजी के आगे गान किहेउ अरु जो कछु देनेलगै सो तुम निश्चय करिन ग्रहण करना ३ (इतिचोदितौतौगायमानौतत्रविचेरतुः पूर्वंऋषिणाथथाउक्तंतत्रतत्र अभ्यगायताम्) इसप्रकार मुनि करिकै प्रेरित दोऊकुमार गावतेहुये तहां विचरते हैं अरुरामायण में पूर्वही ऋषीश्वर ने जैसे जहां सिखाय राखे हैं तहां तहां तैसी रीतिसे गान करते हैं ४ (अपूर्वपाठजातिंचगेयेन समभिष्ठुतांततःततःपूर्वचयौतांकाकुस्थःसशुश्राव) अपूर्व पाठकी रीति पुनः गान करिकै प्रशंसा नगरमे व्याप्तहैं ठौर ठौर पुरवासिनमें वार्ता होतीहै ताहि रघुनन्दन सुनतेभये ५ (बालयोःश्रुत्वाराघवःकौतूहलंउपेयिवान् अथकर्मांतेराजामहामुनीम्समाहूय) बालकनको हाल सुनिकै रघुनन्दन आश्चर्य युक्त भये अब जासमय यज्ञ कर्मको विश्राम होवै तब रघुनाथजी महामुनिनको बुलाय ६ ॥

राज्ञश्चैवनरव्याघ्रःपंडितांश्चैवनैगमान् ॥ पौराणिकांश्चशब्दविदोयेचवृद्धाद्विजातय. ७ एतान्सर्वान्समाहूयगायकौसंप्रवेशयत् । तेसर्वेहृष्टमनसोराजानोब्राह्मणादयः ८ रामंतौदारकौदृष्ट्वाविस्मिताह्यनिमेषणाः ॥ अवोचन्सर्वएवैतेपरस्परमथागताः ९ इमौरामस्यसदृशौबिंबाद्बिंबमिवोदितौ ॥ जटिलौयदिनस्यातांनचवल्कलधारिणौ १० विशेषंनाधिगच्छामोराघवस्यानयोस्तदा ॥ एवंसंवदतांतेषांविस्मितानांपरस्परम् ११ उपचक्रमतुर्गातुंतावुभौमुनिदारकौ ॥ ततःप्रवृत्तंमधुरंगांधर्वमतिमानुषम् १२ श्रुत्वातन्मधुरंगीतमपराह्णेरघूत्तमः ॥ उवाचभरतंचाभ्यांदीयतामयुतंवसु १३ ॥

(नरव्याघ्रःराज्ञान्चएवनैगमान्च पौराणिकान्चशब्दाविदुः पंडितान्चएवयेवृद्धद्विजातयः) नरन में श्रेष्ठ राजोंको पुनः वेदपाठी तथा पौराणिक पुनः वैयाकरणी पण्डितोंको पुनः जेवृद्ध ब्राह्मण क्षत्री वैश्यादिकोंको ७ (एतान्सर्वान्समाहूयगायकौ संप्रवेशयत्तेराजानः ब्राह्मणादयःसर्वेहृष्टमनसः) इत्यादि सबनको बुलाय तथा गानेवाले कुशलव सहित प्रभु सभामें वैठे ते राजा लोग ब्राह्मणादिक सब आनन्द मन ८ (अथागताःतौदारकौरामंदृष्ट्वा अनिमेषणाःहिविस्मिताःएतेसर्व एवपरस्परंअवोचन्) अब यावत् लोग सभामें आय दोऊ बालकोंको अरु रघुनाथजीको देखि पलक चलन रहित

यकटकअवलोकतमें निश्चयकरि आश्चर्य वश येसवलोग आपसमें बोलतेभये ९(रामस्यसदृशौइमौ विंवात्विंवइवंउदितौ यदिजटिलौनस्यातांचनवल्कलधारिणौ) रामहीके तुल्य स्वरूप येदोऊ कुमार हैं यथा दर्पणादि में सूर्य बिंब की प्रति बिंब उदय है जो बालकों के शीश में जटा न होते अरु तन में वल्कल वसन न होते १० (तदाराघवस्यअनयोःविशेषंनाधिगच्छामः [illegible]विस्मितानांपरस्परंतेषां संवदतां) तब रघुनन्दन की अरु दोनों बालकोंकी विशेषता न जानि सके इसप्रकार विस्मयवंत-लोगनको आपुसमें तिनकी वार्ता ह्वै रहीहै ११ (तौउभौमुनिदारकौगातुंउपचक्रमतुः ततःअतिमानुषंमधुरंगांधर्वंप्रवृत्तं) ताही समयमें दोऊ मुनि वालक गान प्रारंभ करते भये तब जैसा किसी मानुषने कभी सुना नहीं ऐसा मधुर गान होताभया १२ (अपराह्णेरघूत्तमः तत्मधुरंगीतंश्रुत्वाच भरतं उवाचआभ्यांअयुतंवसुदीयतां) तीसरे पहर रघुनाथजी उस मधुर गानको सुनिकै पुनः रघुनन्दन भरत प्रतिबोलते भये कि हे भरत इन गायकोंको दशहजार अशरफी दीजिये १३ ॥

दीयमानंसुवर्णंतुनतज्जगृहतुस्तदा॥किमनेनसुवर्णेनराजन्नौवन्यभोजनौ १४इति संत्यज्यसंदत्तंजग्मतुर्मुनिसन्निधिम् ॥ एवंश्रुत्वातुचरितंरामःस्वस्यैवविस्मितः १५ ज्ञात्वासीताकुमारौतौशत्रुघ्नंचेदमब्रवीत् ॥ हनूमंतंसुषेणंचाविभीषणमथांगदम् १६ भगवंतंमहात्मानंवाल्मीकिंमुनिसत्तमम् ॥ आनयध्वंमुनिवरंससीतंदेवसंमितम् १७ अस्यास्तुपर्षदोमध्येप्रत्ययंजनकात्मजा ॥ करोतुशपथंसर्वेजानंतुगतकल्मषाम् १८ सीतांतद्वचनंश्रुत्वागताःसर्वेतिविस्मिताः ॥ ऊचुर्यथोक्तंरामेणवाल्मीकिंरामपार्षदाः१९ रामस्यहृद्गतंसर्वंज्ञात्वावाल्मीकिरब्रवीत् ॥ श्वःकरिष्यतिवैसीताशपथंजनसंसदि २० ॥

(सुवर्णंदीयमानंतुतदाततन्नजगृहतुः राजन्नौवन्यभोजनौअनेनसुवर्णेनकिं) प्रभु आज्ञासे भरत ने आनिकै दिया जो सुवर्ण अशरफी तब सोधन बालकोंने नहीं ग्रहण किया पुनः बोले कि हेराजन् हम बन के मूल फलादि भोजन करने वाले तिन को इन अशरफिन करिके क्या प्रयोजन है १४ (इतिसंदत्तंसंत्यज्य मुनिसन्निधिंजग्मतुः एवंस्वस्यएवचरितंश्रुत्वातुरामःविस्मितः) ऐसा कहिकै वह दिया हुआ धन त्यागकरि वाल्मीकि मुनिके समीपको कुशलवजाते भये इस प्रकार अपनाभी चरित सुनि पुनः रघुनन्दन आश्चर्य युक्त भये १५ (तौसीताकुमारौज्ञात्वाशत्रुघ्नंचहनूमंतंसुषेणम् चविभीषणंअथअंगदंइदंअब्रवीत्) तिन कुमारों को सीता के पुत्र जानिकै शत्रुघ्न प्रति पुनः हनूमान् प्रति सुषेण प्रति पुनः विभीषणप्रति अरु अंगदप्रति ऐसाबचन बोलेरघुनन्दन १६ (ससीतंदेवसमितंमुनिवरंभगवंतमहात्मानंवाल्मीकिं मुनिसत्तमंआनयध्वं) सहित सीताको अरु देव सम मुनिन में श्रेष्ठ भगवान्महात्माजो वाल्मीकि मुनि उत्तम हैं तिनहिं बुलाय लावो १७ (गतकल्मषांसीतांसर्वे जानंतु अस्यास्तुपर्षदोमध्येप्रत्ययंजनकात्मजाशपथंकरोतु) पाप रहित शुद्ध सीता को जामें सब लोग जानि लेईं इस हेत यहि सभा के बैठने वाले लोगों के बीच में अपना सत्त्व निश्चय कराय देने हेत जनक नंदिनी शपथ करैं १८ (तत्वचनंश्रुत्वासर्वेअतिविस्मिताःगताः रामेणयथाउक्तंरामपार्षदाःवाल्मीकिंऊचुः) सो बचन सुनि सब विस्मयवंत शत्रुहनादि उहां गये रघुनन्दनने जैसे कहा रहै सोई रामसेवक लोग वाल्मीकि प्रति कहते भये१९(रामस्यहृद्गतंसर्वंज्ञात्वावाल्मीकिःअब्रवीत् श्वःजनसंसदिसीतावैशपथंकरिष्यति) रघुनन्दनके हृदय का सब अभिप्राय जानिकै शत्रुघ्न आदिको

प्रति वाल्मीकि बोलतेभये कि कल्ह प्रभात सभाजनोंके बीचमें सीता निश्चयकरि शपथ करैगी २०॥

योषितांपरमंदैवंपतिरेवनसंशयः ॥ तच्छ्रुत्वासहसागत्वासर्वेप्रोचुर्मुनेर्वचः २१ राघवस्यापिरामोपिश्रुत्वामुनिवचस्तथा ॥ राजानोमुनयःसर्वेशृणुध्वमितिचाब्र वीत् २२ सीतायाःशपथंलोकाविजानंतुशुभाशुभम् ॥ इत्युक्काराघवेणाथलोकाः सर्वेदिदृक्षवः २३ ब्राह्मणाःक्षत्रियावैश्याःशूद्राश्चैवमहर्षयः ॥ वानराश्चसमाज ग्मुःकौतूहलसमन्विताः २४ ततोमुनिवरस्तूर्णंससीतःसमुपागमत् ॥ अग्रतस्त मृषिंकृत्वायांतीकिंचिदवांमुखी २५ कृतांजलिर्बाष्पकंठासीतायज्ञंविवेशतम् ॥ दृ ष्ट्वालक्ष्मीमिवायांतींब्रह्माणमनयायिनीम् २६ वाल्मीकेःपृष्ठतःसीतांसाधुवादो महानभूत् ॥ तदामध्येजनौघस्यप्रविश्यमुनिपुंगवः २७ ॥

(योषितांपतिःएवपरमंदैवंसंशयःन तत्श्रुत्वासर्वेसहसागत्वामुनेःवचःराघवस्यअपिप्रोचुः) क्योंकि स्त्री को अपना पतिही धर्म देव है यामें संशय नहीं है यह जो बचन सो सुनिकै शत्रुघ्नादि सब शीघ्रही जाय मुनिको बचन रघुनन्दन सों कहतेभये २१ (मुनिवचःश्रुत्वातथारामःअपिचइतिअब्रू- वीत् राजानःमुनयःसर्वेशृणुध्वं) सुनि को बचन सुनिकै तैसेही रघुनन्दन भी पुनः ऐसा बोलते भये हे राजा लोगो हे मुनिजनो मेरा वचन सुनो २२ (सीतायाःशपथशुभाशुभंलोकाविजानंतु इतिरा- घवेणउक्काअथलोकाःसर्वेदिदृक्षवः) सीता की शपथ शुभ होइ अथवा अशुभ होइ ताको लोक जनो तुम जानो भाव सांचे ते शपथ लेना शपथ लेने वाले को अशुभ होता है सो लोकजनों पर भार है जे अपवाद किये ऐसा रघुनन्दन ने कहा अब लोकजन सब देखने की इच्छा करि २३ (ब्राह्मणाः क्षत्रियावैश्याःशूद्राःतथाएवमहाऋषयः चवानराकौतूहलसमन्वितःसमाजग्मुः) ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्रादि सब प्रजा तैसेही सब महा ऋषि पुनः सब बानर इत्यादिसब आश्चर्ययुक्त देखिबेहेत आवते भये २४ (ततःससीतःमुनिवरःतूर्णंसमुपागमत् तंऋषिंअग्रतःकृत्वाकिंचित्अवाङ्मुखीयांती) तद- नन्तर सहित सीता मुनिवर बाल्मीकि शीघ्रही चलते भये तिन ऋषि को आगे करि पीछे नीचे को मुख किहे चुप चली आतीहै २५ (ब्रह्माणंअनुयायिनींलक्ष्मीइवआयांतींबाष्पकंठाकृतांजलिः सीता यज्ञविवेशतंदृष्ट्वा) यथा ब्रह्मा के पाछे आवती हुई लक्ष्मी के तुल्य बाल्मीकि के पाछे आवती हुई नेत्रनमें आंशु भरे कंठारोध हाथ जोरे सीता यज्ञशालामें प्रवेश कीन्ही तिनहिं देखिकै २६ (वाल्मी- केःपृष्ठतःसीतांमहान्साधुवादःअभूत् तदाजनौघस्यमध्येमुनिपुंगवःप्रविश्य) बाल्मीकि के पाछे सीता को देखि बड़ाभारी धन्यवाद होता भया ताही समय जन समूहों के मध्य में मुनिवर बाल्मीकि प्रवेश करते भये २७ ॥

सीतासहायोवाल्मीकिरितिप्राहचराघवम् ॥ इयंदाशरथेसीतासुव्रताधर्मचारिणी २८ अपपातेपुरात्यक्तामममाश्रमसमीपतः ॥ लोकापवादभीतेनत्वयाराममहावने २९ प्रत्ययंदास्यतेसीतातदनुज्ञातुमर्हसि ॥ इमौतुसीतातनयौइमौयमलजात कौ३०सुतौतुतवदुर्धर्षौतथ्यमेतद्ब्रवीमिते ॥ प्रचेतसोहंदशमःपुत्रोरघुकुलोद्वह ३१ अनृतंनस्मराम्युक्तंयथेमौतवपुत्रकौ ॥ बहून्वर्षगणान्सम्यक्कृतपश्चर्य्या मयाकृता ३२ नोपाश्नीयांफलंतस्यादुष्टेयंयदिमैथिली ॥ वाल्मीकिनैवमुक्तस्तुराघ

वःप्रत्यभाषत ३३ एवमेतन्महाप्राज्ञयथावदसिसुव्रत ॥ प्रत्ययोजनितोमह्यंतव वाक्यैरकिल्किविषैः ३४ ॥

(सीतासहायःवाल्मीकिःचराघवं इतिप्राहदाशरथे इयंसीतासुव्रता धर्मचारिणी) सीताके सहाय करता वाल्मीकि पुनः रघुनन्दन प्रति ऐसे वचन बोलते भये कि हे दशरथनन्दन यह सीता शोभन पातिव्रत धर्मके करने वाली निःपापहै २८ (अपापातेरामलोकापवादभीतेनमहावने ममाश्रमसमीपतःत्वयापुरात्यक्ता) यह निःपाप रहै तहूतुम हे रघुनन्दन लोकमें अपवाद भया ताकी भय करिकै महावनमें मेरेआश्रमके समीप आपने सीताको पूर्व त्यागकिया २६ (सीताप्रत्ययंदास्यते तत्अनुज्ञातुं अर्हसि इमौसीतातनयौ तुइमौचमलयातकौ) सीताआपके विश्वास कराने हेत शपथ करती है सो आज्ञा देनेयोग्य हौ अरु येदोऊ सीतामें उत्पन्न भये पुनःयेभी दोऊ उत्तम हैं ३० (तवसुतौतुर्द्धर्षौ एतत्तथ्यंतेब्रवीमि रघुकुलोद्वहप्रचेतसः दशमःपुत्रःअहं) दोऊ ये आपहीके पुत्रहैं पुनः अजितहैं यह सत्यही आपसे कहताहौं हे रघुवंशनाथ प्रचेता ऋषिको दशवां पुत्र मैंहौं पुनः ३१ (अनृतंउक्तंन स्मरामि यथाइमौतवपुत्रकौबहूत्वर्षगणान् सम्यक् मयातपश्चर्याकृता) मैं पूर्व झूठ कभी बोलाहौं यह नहीं मोको सुधि आती है भावकभी झूठ नहीं बोला हौं ताते यथा सबै सत्य बोलतहौं तैसेही यह सत्य कहताहौं कि ये दोऊ आपहीके पुत्रहैं पुनः बहुत वर्ष गनेमेंहैं तावत् सम्पूर्ण मैंने तपकिया है ३२ (तस्याःफलंनोपाश्नीयांयदि इयंमैथिलीदुष्टाएवंवाल्मीकिनाउक्तः तुराघवःप्रत्यभाषत्) तिस तपस्याको फल मोको न प्राप्तहोय जो यह जनकनन्दिनी दोष युक्तहोय जब ऐसा पुष्ट वचन वाल्मीकिने कहा पुनः रघुनन्दनभी वाल्मीकि प्रति बोलते भये ३३ (महाप्राज्ञसुव्रतयथावदसिएतत् एवं तववाक्यैःअकिल्विषैःमह्यंप्रत्ययोजानितः) हेमहाप्राज्ञ विद्वानोंमें श्रेष्ठ शोभन व्रतधारी यथा आप कहतेहौ यह बात ऐसेही है अरु आपके वचनन करिकै सीता पापों से रहित है ऐसा मोको निश्चय भया ३४ ॥

लङ्कायामपिदत्तोमेवैदेह्याप्रत्ययोमहान् ॥ देवानांपुरतस्तेनमंदिरेसंप्रवेशिता३५ सेयंलोकभयाद्ब्रह्मन्अपापापिसतीपुरा ॥ सीतामयापरित्यक्ताभवान्तत्क्षंतुमर्हसि३६ममैवजातौजानामिपुत्रावेतौकुशीलवौ॥शुद्धायांजगतीमध्येसीतायांप्रीतिरस्तुमे ३७ देवाःसर्वेपरिज्ञायरामाभिप्रायमुत्सुकाः ॥ ब्रह्माणमग्रतःकृत्वासमाजग्मुःसहस्रशः ३८ प्रजाःसमागमन्दृष्ट्वाःसीताकौशेयवासिनी ॥ उदङ्मुखीह्यधोदृष्टिःप्रांजलिर्वाक्यमब्रवीत् ३९ रामादन्यंयथाहंवैमनसापिनचिंतयेत् ॥ तथामेधरणीदेवीविवरंदातुमर्हति ४० तथाशपंत्यासीतायाःप्रादुरासीन्महाद्भुतम् ॥ भूतलाद्दिव्यमत्यर्थंसिंहासनमनुत्तमम् ४१ ॥

(लंकायांअपिदेवानांपुरतःवैदेह्यामहान्प्रत्ययः दत्तःतेनमन्दिरेसंप्रवेशिता) लंकामेंभी इन्द्रादि देवतोंके आगे विदेह पुत्रीने अपनी शुद्धताकी बडीभारी विश्वास दिया भाव प्रचण्ड अग्निमें प्रवेश करि निसरिआई तब मैंने गृहमें प्रवेश कराया ३५ (ब्रह्मन्सइयंसीतासतीअपापाअपिलोकभयात् मयापुरापरित्यक्तातत्भवान्क्षंतुंमर्हसि) हे ब्रह्मन् वाल्मीकिजी सोई यह सीतासती निःपापहै तौ भी लोक अपवादके भयते मैंने पूर्व परित्याग किया सो आप क्षमा करिबे योग्यहौ ३६ (एतौकुशी

लवौजातौएवममपुत्रौजानामि जगतामध्येशुद्धायांसीतायांमेप्रीतिःअस्तु) येदोऊ कुशलव जो सीता में उत्पन्नभये ते निश्चय करि मेरेही पुत्रहैं यह मैं जानताहौं ताते लोकमें शुद्ध सीताविषे मेरी प्रीति पुनःहोय इसहेत मैं शपथ कराताहौं ३७ (सर्वेदेवाः रामाभिप्रायंपरिज्ञाय उत्सुकाब्रह्माणंअग्रतःकृत्वा सहस्रशःसमाजग्मुः) ताहीसमय इन्द्रादि सब देवता रघुनन्दनका अभिप्राय जानिकै देखनेकी आतुरता सहित ब्रह्माको आगे करि हजारन देवता अयोध्याको आवते भये ३८ (प्रजाहृष्टाः संआगमन् कौशेयवासिनीउदमुखीहिअधोदृष्टि प्रांजलिः सीतावाक्यंअब्रवीत्) प्रजालोग सब आनन्द सहित देखनेको आवते भये तासमय नवीन रेशमी वस्त्र धारण किहे उत्तरको मुख जिनको निश्चय करि नीचे दृष्टिकिहे हाथ जोरि सीता वचन बोलतीभई ३६ (यथाअहंवैरामात्अन्यंमनसा अपिनचिंतयेत्तथाधरणीदेवीमेविवरंदातुंअर्हति) जो मैं निश्चय करि रघुनन्दनते भिन्न और किसीको मनकरिकै भी न चिंतवन करतीहोउँ तो हे पृथिवी देवी मोको विवरदेबे योग्यहौ ४० (सीतायाः शपंत्यातथा महाअद्भुतंदिव्यंअर्थअनुत्तमं सिंहासनंभूतलात्प्रादुरासीत्) सीताके शपथ करते तैसेही महा अद्भुत दिव्य कंचनमणी जटित परम उत्तम सिंहासन भूतलते निसरि आवताभया ४१ ॥

नागेंद्रैर्ध्रीयमाणंचदिव्यदेहैरविप्रभम् ॥ भूदेवीजानकींदोर्भ्यांगृहीत्वास्नेहसंयुता ४२ स्वागतंतामुवाचैनामासनेसंन्यवेशयत् ॥ सिंहासनस्थांवैदेहींप्रविशंतींरसातलम् ४३ निरंतरापुष्पवृष्टिर्दिव्यासीतामवाकिरत् ॥ साधुवादश्चसुमहान्देवानांपरमाद्भुतः ४४ ऊचुश्चबहुधावाचोअंतरिक्षगताःसुराः ॥ अंतरिक्षेचभूमौचसर्वेस्थावरजंगमाः ४५ वानराश्चमहाकायाःसीताशपथकारणात् ॥ केचिच्चिंतापरास्तस्याःकेचिद्ध्यानपरायणाः ४६ केचिद्रामंनिरीक्षंतःकेचित्सीतामचेतसः॥मुहूर्तमात्रंतत्सर्वंतूष्णींभूतमचेतनम् ४७ सीताप्रवेशनंदृष्ट्वासर्वंसंमोहितंजगत् ॥ रामस्तुसर्वंज्ञात्वेवभविष्यत्कार्यगौरवम् ४८ ॥

(नागेंद्रैःध्रीयमाणंचरविप्रभंदिव्यदेहैःभूदेवीस्नेहसंयुतादोर्भ्यांजानकींगृहीत्वा) वह विमान नागों करिकै धारण जिनमें सूर्यवत् प्रभा दिव्यदेहै तथा प्रसिद्ध पृथिवी देवी प्रीतिसहित दोऊ हाथोंकरिकै जानकीको ग्रहणकरि ४२ (तांस्वागतंउवाचएनांआसनेसंन्यवेशयत्सिंहासनस्थांवैदेहींरसातलंप्रविशंतीं) तिनसीता प्रति प्रसन्नता पूछि तिनको आसनपर बैठायलिये इसप्रकार सिंहासनपर बैठीहुई विदेहनंदिनी रसातलमें प्रवेशकरती भई ४३ (सीतांनिरंतरादिव्यापुष्पवृष्टिःअवाकिरत्चदेवानांपरमाद्भुतःसुमहान्साधुवादः)सिंहासनपर बैठतही सीतापर निरंतरबँधीधारदिव्य फूलोंकीवृष्टिकरिपुनः देवतोंको परमअद्भुत बड़ाभारी साधुवाद होताभया ४४ (चअंतरिक्षगताःसुराःबहुधावाचःऊचुःअंतरिक्षेचभूमौस्थावरजंगमाःसर्वेच) पुनः आकाशमेंस्थित देवता बोले हेराघव लंकामें सत्य शपथकराय सीताको ग्रहणकरि पुनःत्यागिपुनः शपथलेना चाहिये न इत्यादि बहुतवचनकहतेभये पुनःआकाशमें देवता अरुभूमिमें चराचर सबभूतमात्र ४५ (चमहाकायाःवानराःसीताशपथकारणात् केचित्तस्याः चिंतापराःकेचित्ध्यानपरायणाः)पुनःमहाभारी तनवाले वानर इत्यादिमेंकोई तौ सीताके चिंतामें परायण भये कोई सीताके ध्यान में परायण भये ४६ (केचित्सीतांअचेतसःकेचित्रामंनिरीक्षंतः सत्सर्वंमुहूर्तमात्रंअचेतनम्तूष्णींभूत्) कोई सीता को बियोग भया तिस दुःख में अचेत् भये कोई रघुनन्दन को देखि रहाहै इसी भांति यावत्सभा है सो सब लोग मुहूर्त मात्र अर्थात् दो दण्ड भरि

अचेत चुप बैठेरहे काहूको देह की सुधिनहींरहतीभई ४७ (सीताप्रवेशनंदृष्ट्वासर्वंजगत्संमोहितंतुरामः भविष्यतिकार्यगौरवंसर्वंज्ञात्वाएव) सीताको भूमिमें प्रवेश होना देखिकै सबसंसार तौ मोहितै भया पुनः रघुनन्दन होनहार जोकछुभया जोकछु आगे होयगो सोसब निश्चयकरि नीकी प्रकारतेजानते भीहैं तबहू माधुर्य में ४८ ॥

अजानन्निवदुःखेनशुशोचजनकात्मजाम् ॥ ब्रह्मणाऋषिभिःसार्द्धंबोधितोरघुनंदनः ४९ प्रतिबुद्धइवस्वप्नाच्चकारानंतराःक्रियाः ॥ विससर्जऋषीन्सर्वान्‌ऋत्विजोयेसमागताः ५० तान्सर्वान्धनरत्नौघैस्तोषयामासभूरिशः ॥ उपादायकुमारौतौअयोध्यामगमत्प्रभुः ५१ तदादिनिस्पृहोरामःसर्वभोगेषुसर्वदा ॥ आत्मचिंतापरोनित्यंएकांतेसमुपस्थितः ५२ एकांतेध्याननिरतेएकदाराघवेसति ॥ ज्ञात्वानारायणंसाक्षात्कौशल्याप्रियवादिनी ५३ भक्त्यागत्यप्रसन्नंतंप्रणताप्राहहृष्टधीः॥ रामत्वंजगतामादिरादिमध्यांतवर्जितः ५४ परमात्मापरानंदःपूर्णःपुरुषईश्वरः ॥ जातोसिमेगर्भगृहेममपुण्यातिरेकतः ५५ ॥

(अजानन्‌इवदुःखेनजनकात्मजांशुशोचऋषिभिःसार्द्धंब्रह्मणाबोधितःरघुनंदनः) अज्ञ पुरुष की नाईं बियोग दुःख करिकै जनकनंदिनी को शोच करतेहैं तब ऋषिन करिकै सहित ब्रह्मा करिकै बोध किये गये जो रघुनंदन ४९ (स्वप्नात्प्रतिबुद्धइवअनंतराःक्रियाचकार) यथा कोऊ सोवत से जागै तैसेही सावधानह्वै रघुनंदनयज्ञांतकर्मोंको पूर्ण करतेभये (ऋत्विजःयेसमागतासर्वान्‌ऋषीन्‌विससर्ज) यज्ञ करानेवालेजेआये सबऋषि तिनहिं बिदाकीन्हें कौनभांति सो आगेकहत५० (भूरिशःधनरत्नौघैः तान्सर्वानतोषयामासतौकुमारौउपादायप्रभुःअयोध्यांअगमत्) बहुतसे सोनादि धन रत्नसमूहदैकरिकै तिन सब ऋषिनको परितुष्टकरतेभये प्रणामकरि बिदाकीन्हे दोऊकुमारोंको संगलै प्रभुअयोध्यामें आये ५१ (तदादिसर्वदासर्वभोगेषुनिस्पृहःरामःनित्यंएकांतेसमुपस्थितःआत्मचिंतापरः)तबसे आदि दैकै सब काल में सब सुख भोगों में अनिच्छित ह्वै रघुनन्दन नित्यहीं एकांत स्थान में बैठे अपने स्वरूपही के ध्यान में परायण रहते हैं ५२ (एकदाएकांतेध्याननिरते राघवेसतिसाक्षात्‌नारायणंज्ञात्वाप्रियवादिनीकौशल्या) एक समय एकांतमें ध्यान में परायण रघुनन्दनबैठे रहे तिनहिं साक्षात् नारायण जानिकै प्रिय बचन बोलने वाली कौशल्या समीप जायकै ५३ (आगत्यप्रसन्नंतंभक्त्याप्रणताप्रहृष्टधीःप्राहरामत्वंआदिमध्यांतवर्जितः जगतांआदिः) समीप आयकै प्रसन्न जो रघुनन्दन तिनहिं भक्ति सहित प्रणाम करिकै आनंद मन कौशल्या बोलती भई हेरघुनन्दन तुम जन्म जीवन मरणादि रहित सदा एक रस जगत् के आदि कारण हो ५४ (परानंदःपूर्णः परमात्मापुरुषईश्वरः ममपुण्यातिः एकतःमेगर्भगृहेजातःअसि) परमानंद सदा एक रस परिपूर्ण परमात्मा पुरुष प्रकृति पार ईश्वर सब के पालनहारहौ अरु मेरे अनेक जन्मों की अत्यंत पुण्य एकत्र भई तब मेरे गर्भ रूप मंदिर में आय अवतीर्ण भयो ५५ ॥

अवसानेममाप्यद्यसमयोभूद्रघूत्तम ॥नाद्याप्ययोह्यजःकृत्स्नोभवबंधोनिवर्तते ५६ इदानीमपिमेज्ञानंभवबंधनिवर्तकम् ॥ यथासंक्षेपतोभूयात्तथाबोधयमांविभो ५७ निर्वेदवादिनीमेवंमातरंमातृवत्सलः ॥ दयालुःप्राहधर्मात्माजराजर्जरितां शुभा

मू ५८ मार्गास्त्रयोमयाप्रोक्ताःपुरामोक्षाप्तिसाधकाः ॥ कर्मयोगोज्ञानयोगोभक्तियोगश्चसाश्वतः ५९ भक्तिर्विभिद्यतेमातस्त्रिविधागुणभेदतः॥स्वभावोयस्ययस्तेन तस्यभक्तिर्विभिद्यते ६० ॥

(अवोधजःकृत्स्नःभवबंधःअद्यापिननिवर्ततेरघूत्तम अवसानेममापिअद्यसमयःअभूत्) अज्ञानसों उत्पन्न जो देह संबंध की कामना ताते संपूर्ण भव बंधन अब तक भी नहीं छूटा हेरघुनन्दन अंत अवस्था में मोको भी अब प्रश्न करने को समय भया ५६ (हेविभोइदानींअपिभववंधनिवर्तिकंज्ञानंयथामेभूयात् तथासंक्षेपतःमांबोधय) हे प्रभो इस समय मेंभी भव बंधन छूटने वाला ज्ञान जिस प्रकार मोको होवै तैसे संक्षेपते मोको बोध कीजिये ५७ (एवंनिर्वेदवादिनींजराजर्जरितांशुभांमातरं मातृवत्सलःदयालुःधर्मात्माप्राह) इस प्रकार विषय से वैराग्य बचन कहने वाली जरावस्था वश जर्जर पावन शरीर जिनको तिन माता कौशल्या से मातापर प्रीति करने वाले दया धाम धर्मात्मा रघुनन्दन बोलते भये ५८ (मोक्षाप्तिसाधकाःत्रयःमार्गाःपुराmयाप्रोक्ताः कर्मयोगःज्ञानयोगःचसाश्वतःभक्तियोगः) रघुनन्दन बोले किहेमातः मोक्ष प्राप्तीके साधन तीनि मार्ग पूर्वहीं मैंने कहाहै आदि कर्म योग अंत ज्ञानयोग पुनः आदि अंत निरंतर एकरस भक्तियेग अर्थात् यावत् देहाभिमानी जीव इंद्री विषयासक्त देह सुख में हर्ष शुभाशुभ कर्म करिरहाहै सो जो मुक्तिकी इच्छाकरै तौ हृदय तौ शुद्धहैनहींतौ एकीएका न ज्ञानह्वैसकै न भक्तिह्वैसकै तिनकेहेत प्रथमकर्म चाहिये यथार्थपंचके।।तत्रकर्म परिज्ञेयं वर्णाश्रमानुरूपितः।नित्यंनैमित्तिकंकाम्यंत्रेधाकर्मफलार्थिना ॥यज्ञोदानंतपोहोमंव्रतंस्वाध्यायसंयम।।संध्योपास्तिर्जपःस्नानंपुण्यदेशाटनालयं।चंद्रायणाद्युपवासश्चातुर्मास्यादिकानिच।फलमूलाशनश्चैवसमराधनतर्पणं।एवंकर्माद्यनुष्ठानैःकायशोधनपूर्वकं।पापंविनाश्यचेंद्रिय द्वाराज्ञानप्रसारकःइत्यादि कर्म करि जब हृदय शुद्धहोय तब ज्ञानके चारि साधनकरै विषय सुखते विराग जगत् असार आत्मसार इति विवेक शमदम उपराम तितीक्षा श्रद्धा समाधानादि पट् सम्पत्ति पुनः मेरी मुक्ति निश्चय होय इति मुमुक्षुता इत्यादि करि शुद्ध आत्मरूपको ध्यानराखै इति ज्ञान पुनः ईश्वरके शरणह्वै यश श्रवण कीर्तन स्मरण सेवन अर्चन वंदन दास्य सख्य आत्म निवेदन देहाभिमानिन को जीवबुद्धीते प्रेमाआत्म बुद्धितेपरा५९(मातात्रिविधागुणभेदतःभक्तिःविभिद्यतेयस्यसःस्वभावःतस्यतेनभक्तिःविभिद्यते) हेमातः तम सत्व रजादि तीनि विधि गुण भेदते भक्तिमें भेद तीनि विधिको है यथा जिस को जौने गुणमय जैसा स्वभावहोताहै ताके तिसी प्रकारकी भेदते भक्ति होती है अर्थात् तमोगुणी स्वभावते तामसीभक्ति सतोगुणी स्वभावते सात्विकभक्ति रजोगुणी स्वभावते राजसी भक्तिहै इत्यादि भक्तिमें भेदहै सो आगे प्रसिद्ध कहते हैं ६० ॥

यस्तुहिंसांसमुद्दिश्यदंभंमात्सर्यमेववा ॥ भेददृष्टिश्चसंरंभीभक्तोमेतामसःस्मृतः ६१ फलाभिसंधिर्भोगार्थीधनकामोयशस्तथा ॥ अर्चादौभेदबुद्ध्यामांपूजयेत्सतु राजसः ६२ परस्मिन्नर्पितंयस्तुकर्मनिर्हरणायवा ॥ कर्त्तव्यमितिवाकुर्याद्भेदबुद्ध्याससात्विकः ६३ मद्गुणश्रवणादेवमय्यनंतगुणालये॥अविच्छिन्नामनोवृत्तिर्यथागंगांबुनोवुधौ॥तदेवभक्तियोगस्यलक्षणंनिर्गुणस्यहि ६४ अहैतुक्यव्यवहितायाभक्तिर्मयिजायतेसामेसालोक्यसामीप्यसार्ष्टिसायुज्यमेववादात्यपिनगृह्णाति भक्तामत्सेवनंविना ६५ ॥

(यस्तुहिंसांसमुद्दिश्य वादंभेमात्सर्यंएवचभेददृष्टः संरंभीमेभक्तःतामसःस्मृतः) जो प्राणी किसी के प्राण घात को विचार करि अथवा पुजाने हेत देखाव मात्र वा किसी की उन्नता न सहि सके ताके बिगारिबे हेत पुनः शत्रु मित्रादि भेद दृष्टि राखे मेरा पूजा मंत्र जपादि करतेहैं सो मेरा भक्त तामसी कहाता है सो भक्ति तामसी है ६१ (फलाभिसंधिःभोगार्थीधनतथायशःकामः भेदबुद्ध्या अर्चादौमांपूजयेत्सतुराजसः) स्वर्ग राज्य पुत्रादि फलकी कामना राखि वा भोजन वाहन बसन भूषणादि देह सुख भोग के अर्थ तथा धन वा यशकी कामना राखि शत्रु मित्रादि भेद बुद्धि करिकै श्रीविग्रहादि अर्चा स्वरूपों में मोको पूजताहैं सो पुनः राजसी भक्त है ६२ (परस्मिन्भर्पितंवा निर्हणायवाकर्तव्यं इतिभेदबुद्ध्यायस्तुकर्मकुर्यात्ससात्विकः) कर्मफल परमात्म में अर्पित करना अथवा पापों के हरने अर्थ अथवा वेद आज्ञा से अवश्य कर्म करना चाहिये इत्यादि भेद बुद्धि करिके जो कर्म ममार्चनादि करताहै सो सात्विकी भक्त सतोगुणी भक्तिहै ६३ (मत्गुणश्रवणात्एवअनंत गुणालयेमयिअविच्छिन्नामनःवृत्तिःयथागंगायःअंबुनःअंबुधौतत्एवनिर्गणस्यहिभक्तियोगस्यलक्षणम्) कृपा दया करुणा शील सुलभ उदारतादि मेरे गुण सुनतेही अनंत कल्याण गुणधाम मेरे स्वरूपमें कभी छूटने न पावै सदा एकरस मनकी वृत्ति लगीरहै जैसे गंगाको जल समुद्रमें मिलारहत तैसे मेरे स्वरूपमें मन लगेरहना सोई गुण रहित शुद्धाभक्ति योग को लक्षणहै जिसमें अभेद बुद्धी गुण स्वभाव त्यागि शुद्ध मन मेरे सगुण रूप में लगायेसो शुद्ध मेरा भक्त है ६४ (अहैतुक्यव्यवहिताया भक्तिःमयिजायते) जिसमें वासनादि कोई कारण नहीं विशेषि शुद्ध सनेह जो भक्ति मेरेविषेहोतीहै (सामेसालोक्यसामीप्यसार्ष्टिवासायुज्यंएवददाति अपिमत्सेवनंविनाभक्ताःनगृह्णाति) सो भक्ति मेरी सालोक्य मुक्ति सामीप्य मुक्ति सार्ष्टि मुक्ति अथवा सायुज्य भी मुक्ति देती है तौं भी मेरी सेवा विना भक्तजन उन मुक्तिनको नहीं ग्रहण करते हैं ६५ ॥

सएवात्यंतिकोयोगोभक्तिमार्गस्यभामिनि ६६ मद्भावंप्राप्नुयात्तेनअतिक्रम्यगुण त्रयं ॥ महताकामहीनेनस्वधर्माचरणेनच ६७ कर्मयोगेनशस्तेनवर्जितेनविहिं सनम् ॥ मद्दर्शनस्तुतिमहापूजाभिःस्मृतिवंदनैः ६८ भूतेषुमद्भावनयासंगेनास त्यवर्जनैः ॥ बहुमानेनमहतांदुःखिनामनुकंपया ६९ स्वसमानेषुमैत्र्याचयमादी नांनिषेवया ॥ वेदांतवाक्यश्रवणान्ममनामानुकीर्तनात् ७० सत्संगेनार्जवेणैव ह्यहमःपरिवर्जनात् ॥ कांक्षयाममधर्मस्यपरिशुद्धांतरोजनः ७१ मद्गुणश्रवणा देवयातिमामंजसाजनः ॥ यथावायुवशाद्गंधःस्वाश्रयाद्घ्राणमाविशेत् ७२ योगा भ्यासरतंचित्तमेवमात्मानमाविशेत्॥सर्वेषुप्राणिजातेषुह्यहमात्माव्यवस्थितः७३॥

(भामिनिसएवभक्तिमार्गस्यअत्यंतिकःयोगः) हे मातः जो मुक्तिकीभी नहीं चाह करताहै ऐसा निष्काम मेरी सेवामें निरन्तर लगारहना सोई भक्तिमार्गका अत्यन्त सर्वोपरि उत्तम भक्तियोगहै ६६ (स्वधर्माचरणेनचमहताकामहीनेनमत्भावं प्राप्नुयात्तेनगुणत्रयंअतिक्रम्य) अपने वर्णाश्रम धर्म अनुकूल आचरण करिकै तथा महा कामना त्याग करिकै प्राणी मेरे सेवक भावको प्राप्त होता है त्यहि बलकरिकै तीनिहु गुणोंको उल्लंघन करिकै६७ (विहिंसनंवर्जितेनकर्मयोगेनशस्तेनमद्दर्शनस्तु- तिमहापूजाभिःस्मृतिवंदनैः) हिंसा रहित रहनेसे सन्ध्या तर्पणादि कर्म योग करनेसे मेरा दर्शन स्तुति यंत्र राजादि महापूजा स्मरण वंदना इत्यादि करिकै ६८ (असत्यअसंगेनवर्जनैःभूतेषुमत्भा

वनयामहतांबहुमानेन दुःखिनांअनुकम्पया) झूठ बोलना दुष्टोंको संग त्यागनेसे भूतमात्रमें व्यापक मेरे अन्तर्यामी रूपकी भावना करिकै महात्मोंको बहुत सन्मान करिकै दुःखित जनोंपर दयाकरिकै ६९ (स्वसमानेषुमैत्र्याचयमादीनांनिषेवया) अपनी समान सबसों मित्रता करिकै यम नियमादि सेवन करिकै (वेदांतवाक्यश्रवणात्ममनामानुकीर्तनात्) वेदांतकी वाक्य श्रवण करनेते मेरा नाम कीर्त्तन करनेते ७० (सत्संगेनआर्जवेणएवहि अहमःपरिवर्जनात्ममधर्मस्यपरिकांक्षयाशुद्धयांतरःजनः) सज्जनोंके संग रहनेसे श्रेष्ठ कोमल स्वभावसे निश्चय देहाभिमान त्याग करनेसे मेरी भक्ति शुद्ध धर्मकी इच्छा करिकै इत्यादि साधन करि शुद्धभया अंतःकरण जोजन७१ (मत्गुणश्रवणात्एव जनःअंजसामांयातियथावायुवशात् गन्धःस्वाश्रयात्घ्राणंआविशेत्) मेरेगुण रूपादयादि श्रवण करनेते निश्चय करि वहजन मेरे स्वरूपाकार वृत्तिको प्राप्त होताहै कौन प्रकार जैसे पवनके वशते फूलादि कोंकी सुगंध आपहीते आप नासिकामें प्रवेश होती है ७२ (एवंयोगाभ्यासरतंचित्तं आत्मानंआविशेत्सर्वेषुप्राणिजातेषुहिअहंआत्माऽव्यवस्थितः) इसीप्रकार योगाभ्यासमें रत पुरुषको शुद्धचित्त आत्मामें प्रवेश होताहै पुनः सब प्राणधारी मात्रमें निश्चय करि मैं आत्मरूपते वास किहे चराचर को चैतन्य किहे हौं ७३ ॥

तमज्ञात्वाविमूढात्माकुरुतेकेवलंवहिः॥क्रियोत्पन्नैर्नैकभेदैर्द्रव्यैर्मेनांबतोषणम्७४ भतावमानिनाचार्योमर्चितोहंनपूजितः७५तावन्ममार्च्चयेदेवंप्रतिमादौस्वकर्मभिः यावत्सर्वेषुभूतेषुस्थितंचात्मनिनस्मरेत् ७६ यस्तुभेदंप्रकुरुतेस्वात्मनश्चापरस्यच ७७ भिन्नदृष्टेर्भयंमृत्युस्तस्यकुर्यान्नसंशयः ॥ मामतःसर्वभूतेषुपरिच्छिन्नेषुसंस्थितम्॥ एकंज्ञानेनमानेनमैत्र्याचार्चेदभिन्नधीः ७८ चेतसैवानिशंसर्वभूतानिप्रणमेत्सुधीः ॥ ज्ञात्वामांचेतनंशुद्धंजीवरूपेणसंस्थितम् ७९ ॥

(हेभंवतंअज्ञात्वाविमूढात्माउत्पन्नैःनैकभेदैः द्रव्यैःकेवलंवहिःक्रियाकुरुतेमेतोषणंन) हेमातःतिस आत्मतत्त्वको नहीं जानते हैं विशेषि मूढात्मा देहाभिमानी क्या करते हैं कि लोकमें उत्पन्न जो अनेक भेदोंकी द्रव्यय हैं यथा जल चंदन दल फूल धूप दीप फल पक्वान्नादि वस्तुन करिकै केवल बाहेरकी क्रिया प्रतिमा पूजनादि करते हैं तिनमें मैं प्रसन्न नहीं होताहौं ७४ (भूतावमानिनाचार्योअर्चितःअहंपूजितःन) जे देहाभिमानी भूत मात्रको अपमानकरि अपनाको श्रेष्ठ मानें तिनके पूजनते मैं पूजित नहीं होताहौं यासे प्रतिमा पूजाको निषेध न विचारिये पूजापद्धतिनमें भी यही विधि लिखीहै कि प्रथम भूत संहारकरि देहाभिमान जीवमें लयकरै जीवत्व आत्मामें लयकरै सोई आत्मतत्त्व अपने अंतःकर्णते खैंचि प्रतिमामें स्थापितकरि पूजनकरै सो इसी ग्रंथ विषे किष्किंधाकांड में लिखाहै विस्तारते इहाँ थोरा लिखदेताहौं यथा अगस्त्य संहितायां प्राणान्निरूध्यात्मदेहं शोधयत्पुनर्दहेत।तंदेहंपुनराप्लाव्यपुनर्जीवमिहानयत्॥जीवेनपुनरात्मानंचिंतयेपुरुपासये।जीवस्यतत्त्वसिद्धयैश्चतस्याप्यात्मत्वसिद्धये॥नयनानयनार्थंचहंससोहमितीरयेत्।भूतशुद्धिरियंनामकर्त्तव्यानामसार्थकृत् भूतशुद्धिंविनायस्यजपहोमादिकाःक्रियाः भवंतिनिःफलाःसर्वाः प्रकारेणाप्यनुष्ठिताः॥तातेआत्म बुद्धी करि पूजा करना चाहिये ७५ (यावत्सर्वेषुभूतेषुस्थितंआत्मनिनस्मरेत्त्रतावत् स्वकर्मभिःएवंप्रतिमादौममअर्चयेत्) जबतक चराचर सब भूत मात्रमें स्थित जो मेरा आत्मरूप तामें दृढ स्मरण न होय पुनः तबतक अपने वर्णाश्रमके कर्मों सहित इसीप्रकार प्रतिमादिकोंमें मोको पूजन

करै ७६ (यःतुभिन्नदृष्टेःस्वमात्मनःचपरस्यच भेदंप्रकुरुतेतस्यमृत्युःभयंकुर्यात्संशयःन) यो पुनः जीवनमें न्यारी न्यारी दृष्टिते अपनी आत्माते पुनः औरनकी आत्मा भेद करता है तिसोको मृत्यु भयकरती है इसमें संशय नहीं है ७७ (अतःसर्वभूतेषुपरिच्छिन्नेषुसंस्थितम् एकंज्ञानेनचमैत्र्यामाने नअभिन्नधीःमांअर्चेत्) इसकारण हे मातः सब भूत चराचर न्यारे न्यारे आकारोंमें मैं आत्मरूप से स्थितहौं सोइ एकात्म ज्ञान करिकै पुनः सबसों मित्रता से सन्मान करिकै अभेद बुद्धिसे मेरा पूजनकरै ७८ (जीवरुपेणसंस्थितंशुद्धंचेतनंमांज्ञात्वासुधीः चेतसाएवअनिशंसर्वभूतानिप्रणमेत्) जीव रूप करिकै सब चराचरमें स्थित शुद्ध चैतन्य मोको जानिकै ज्ञानी पुरुष चेतसा अर्थात् मन करिकै सब भूतमात्र को मेरही रूपमानि दिनौराति चराचरको प्रणामकरै क्रोध किसीपै न करै ७९ ॥

तस्मात्कदाचिन्नेक्षेतभेदमीश्वरजीवयोः॥भक्तियोगोज्ञानयोगोमयामातरुदीरितः ८० आलंब्यैकतरंवापिपुरुषःशममृच्छति ॥ ततोमांभक्तियोगेनमातःसर्वहृदि स्थितम् ८१ पुत्ररूपेणवानित्यंस्मृत्वाशांतिमवाप्स्यसि ॥ श्रुत्वारामस्यवचनंकौ शल्यानंदसंयुता ८२ रामंसदाहृदिध्यात्वाछित्वासंसारबंधनम्॥ अतिक्रम्यगती स्तिस्रोप्यवापपरमांगतिम् ८३ कैकेयीचापियोगंरघुपतिगदितंपूर्वमेवाधिग म्य । श्रद्धाभक्तिप्रशांताहृदिरघुतिलकंभावयंतीगतासुः ॥ गत्वास्वर्गेस्फुरंतीद शरथसहितामोदमानावतस्थे । माताश्रीलक्ष्मणस्याप्यतिविमलमतिःप्रापभर्तुः समीपम् ८४ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेउत्तरकाण्डेमातॄणांस्वर्गप्रस्थानं नामसप्तमःसर्गः ७ ॥

(तस्मात्ईश्वरजीवयोःभेदंकदाचिन्नईक्षेत् हेमातःभक्तियोगःज्ञानयोगःमयाउदीरितः) सब भूत मात्रमें मैंहीहौं ऐसा जानिकै तातेईश्वर जीवमें भेदको कभी न देखै सर्वत्रसम दृष्टिराखै हेमातः इस प्रकारसे भक्तियोग अरु ज्ञानयोग मोक्षकीमार्ग मैंने तुम प्रति वर्णन किया ८० (वापिएकतरंआलं ब्यपुरुषःशमंऋच्छातिततः मातःभक्तियोगेनसर्वहृदिस्थितंमां) चहैज्ञानंगहै चहै भक्तिगहै अथवा दोऊ को एकत्र करि ताकी आधार पुरुषशमता भावको प्राप्तहोताहै इससे हेमातः भक्ति योगकरिकै सबके अंतरमें स्थितमो को ८१ (वापुत्ररुपेणनित्यंस्मृत्वाशांतिंअवाप्स्यसिरामस्य वचनंश्रुत्वाआनंदसंयु ताकौशल्या) अथवा पुत्र रूपकरिकै मोको नित्यही स्मरणकरौ तौ सब बंधन रहित शांतिको प्राप्तहो हुगी इति रघुनंदनके बचन सुनिकै आनंद सहित कौशल्या ८२(हृदिसदारामंध्यात्वासंसारबंधनंछि त्वा तिस्रोऽपिगतिःअतिक्रम्यपरमांगतिंअवाप) हृदयमें सदा रघुनंदनको ध्यानकरिकै संसार बंधन को काटि तम सत्व रजादि तीनों गुणोंकी गती उलंघन करिकै परमपदको प्राप्तभई ८३ (चकैकेयी अपिपूर्वंरघुपतिगदितंयोगंएवाधिगम्य श्रद्धाभक्तिप्रशांताहृदिरघुतिलकंभावयंतीगतासुः)पुनः कैकेयीभी पूर्व चित्रकूटमें रघुनंदनको कहा भक्तियोगको पाय श्रद्धा भक्तिसहित शांत हृदयमें रघुनंदनको ध्यान करती हुई प्राणत्यागकरि (स्फुरंतीस्वर्गंगत्वादशरथसहितामोदमानावतस्थे) प्रकाशमान दिव्य स्वरूपते स्वर्गमें जाय दशरथ सहित आनंद युतबास करती भई (श्रीलक्ष्मणस्यमाताअपि अतिवि-

मलमतिःभुर्तुःसमीपंप्राप) श्रीलक्ष्मणकी माता सुमित्राभी अत्यंत बिमलमतिहै जिनकी सोभी तन त्यागि पतिके समीप प्राप्तभई ८४ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचितेअध्यात्म भूषणेउत्तरकांडेसप्तमःसर्गः ७ ॥

श्रीमहादेवउवाच ॥ अथकालेगतेकस्मिन्भरतोभीमविक्रमः ॥ युधाजितामातुलेनह्याहूतोगात्ससैनिकः १ रामाज्ञयागतस्तत्रहत्वागंधर्वनायकान् ॥ तिस्रःकोटीःपुरेद्वेतुनिवेश्यरघुनंदनः २ पुष्करंपुष्करावत्यांतक्षंतक्षशिलाह्वये ॥ अभिषिच्यसुतौतत्रधनधान्यसुहृद्वृतौ ३ पुनरागत्यभरतोरामसेवापरोभवत् ॥ ततःप्रीतो रघुश्रेष्ठोलक्ष्मणंप्राहसादरम् ४ उभौकुमारौसौमित्रेगृहीत्वापश्चिमांदिशम् ॥ तत्रभिल्लान्विनिर्जित्यदुष्टान्सर्वापकारिणः ५ अंगदश्चित्रकेतुश्चमहासत्वपराक्रमौ ॥ द्वयोर्द्वेनगरेकृत्वागजाश्वधनरत्नकैः ६ अभिषिच्यसुतौतत्रशीघ्रमागच्छ मांपुनः ॥ रामस्याज्ञांपुरस्कृत्यगजाश्ववलवाहनः ७ ॥

सवैया ॥ भरतानुज शत्रुनमारितहां निजपुत्रन राज्य अकंटकये । निजहाथबयौं इतआवककुऊरू-पिकाल प्रभूव्रतरातभये ॥ दुरवासहिआगम लक्ष्मणगे वधयोग्य तिन्है प्रभुत्यागिदये । सरितातट प्राणनिरोध तजे निजरूपभये परधामगये ॥ (अथकस्मिन्कालेगतेयुधाजितामातुलेनाहि आहूतःभीमविक्रमःभरतःससैनिकःगात्) शिवजीबोले हेगिरिजा अवकैछुकाल व्यतीत भये युधाजितनामें अपने मामाकरिकै बुलायेगये बड़ेपराक्रमी जो भरतसो सहित सेना केकयदेशको जातेभये १ (रामाज्ञयागतःतत्रतिस्रःकोटीःगंधर्वनायकान् हत्वातुरघुनंदनःद्वेपुरेनिवेश्य) रघुनाथजीकी आज्ञाकरिकै गये तहाँ युधाजितके विरोधी तीनिकरोरि गंधर्व नायकोंको संग्राममें मारिकै पुनः भरतजी उस देशमें दोनगर वसावतेभये २ (तत्रधनधान्यसुहृद्वृतौसुतौअभिषिच्य पुष्करावत्यांपुष्करंतक्षशिलाह्वये तक्षं)तिननगरों में धनधान्य मंत्रीआदि युत अपने दोऊपुत्रोंको भरतजी राज्याभिषेक करतेभये तिनमें जो पुष्करावती नगरीहै तामें पुष्करको अरु जो तक्षशिलाहै तामें तक्षको अभिषेक किये ३ (भरतःपुनः आगत्यरामसेवापरः अभवत्ततःप्रीतःरघुश्रेष्ठःसादरंलक्ष्मणप्राह) उहांते भरतजी पुनः अयोध्याजी में आयरघुनाथजी की सेवामें तत्परभये तदनंतर प्रसन्नह्वै रघुनंदन आदर पूर्वक लक्ष्मण प्रतिबोलते भये ४ (सौमित्रेउभौकुमारौगृहीत्वापश्चिमांदिशंतत्रसर्वापकारिणःदुष्टान्भिल्लान्विनिर्जित्य) हेसुमित्रानंदन अपने दोऊ पुत्रनको साथलैकै तुम पश्चिमदिशाको जाउ तहाँ सबको दुःखदायक दुष्टभील रहते हैं तिनहिं जीतिसंग्राममें बधकरि ५ (गजाश्वधनरत्नकैःद्वेनगरंकृत्वातत्रअंगदःचचित्रकेतुः महासत्वपराक्रमौसुतौद्वयोः अभिषिच्यपुनःशीघ्रंमांआगच्छ) हाथी घोड़े धनरत्नादिकों करिकै भरिपूर दोनगर बनाय तहाँ अंगद पुनः चित्रकेतुमहासाहसी पराक्रमी जो तुम्हारे पुत्रहैं तिन दोऊको अभिषेक करि तुम पुनः शीघ्रही मेरे पासको लौटिआवो (रामस्यआज्ञांपुरस्कृत्यगज अश्वबलवाहनः) रघुनाथजी की आज्ञामानि हाथी घोड़े पैदरादि सेना रथादि वाहनों को साथलैकै ६ । ७ ॥

गत्वाहत्वारिपून्सर्वान्स्थापयित्वाकुमारकौ ॥ सौमित्रिःपुनरागत्यरामसेवापरोभ

वत् ८ ततस्तुकालेमहतिप्रयातेरामंसदाधर्मपथेस्थितंहरिम् ॥ द्रष्टुंसमागादृषिवेषधारीकालस्ततोलक्ष्मणमित्युवाच ९ निवेदयस्वातिवलस्यदूतंमांद्रष्टुकामंपुरुषोत्तमाय ॥ रामायविज्ञापनमस्तितस्यमहर्षिमुख्यस्यचिरायधीमन् १० तस्यतद्वचनंश्रुत्वासौमित्रिस्त्वरयान्वितः॥ आचचक्षेथरामायससंप्राप्तंतपोधनम् ११ एवंब्रुवंतंप्रोवाचलक्ष्मणंराघवोवचः ॥शीघ्रंप्रवेश्यतांतातमुनिःसत्कारपूर्वकम् १२ लक्ष्मणस्तुतथेत्युक्त्वाप्रावेशयततापसम् ॥ स्वतेजसाज्वलंतंतंघृतासिक्तंयथानलम् १३ सोभिगम्यरघुश्रेष्ठंदीप्यमानःस्वतेजसा ॥ मुनिर्मधुरवाक्येनवर्धस्वेत्याहराघवम् १४ ॥

(गत्वासर्वान्रिपून्हत्वाकुमारकौस्थापयित्वापुनःआगत्यसौमित्रिःरामसेवापरःअभवत्)उहाँ गये सब शत्रु भीलनको मारि दोनगर बलाय तिनमें अपने पुत्रोंको राज्याभिषेक करिकै पुनःअयोध्याजी में आय लक्ष्मण रघुनंदनकी सेवामे तत्परभये ८ (ततःतुमहतिकालेप्रयातेसदाधर्मपथेस्थितंरामंहरिं द्रष्टुं ऋषिवेषधारीकालःसमागात्ततःलक्ष्मणंइतिउवाच) तदनंतर पुनः बहुतकाल व्यतीतभयेपर सदा धर्ममार्गमें स्थित जो रामहरिहैं तिनहिं देखनेको ऋषिवेष धारणकिहे काल अयोध्याजीमें प्रभुके द्वारपर आयलक्ष्मण प्रतिइसप्रकार बोलताभया ९ (हेधीमन्महर्षिमुख्यस्य अतिवलस्यदूतंमांद्रष्टुकामंतस्य बिज्ञापनंचिरायअस्ति पुरुषोत्तमायरामायनिवेदयस्व) हे बुधिवंत महा ऋषिनमें मुख्यजो अति बलहैतिनको पठावा दूतमैंहौं अरुमोको रघुनाथजीके देखनेकीकामनाहै अरुतिनअतिबलको संदेशादेर तकमोको कहनाहै इतिमेराहाल पुरुषों में उत्तम रघुनाथजीके अर्थनिवेदन करौ १० (तस्यतत्वचनंश्रुत्वासौमित्रिः त्वरयान्वितःअथसंप्राप्तंतपोधनंसरामायआचचक्षे) तिस तापसके सो बचन सुनिकै लक्ष्मण शीघ्रता सहित जाय अब आया जो तपोधनी ताको हाल सो लक्ष्मण रघुनंदन से कहते भये ११ (एवंब्रुवंतंलक्ष्मणंराघवः वचःप्रोवाचतातसत्कारपूर्वकंमुनिः शीघ्रंप्रवेश्यतां) द्वार पर एक तापस आयाहै ऐसा कहते जो लक्ष्मण तिन प्रति रघुनंदन बचन बोलते भये कि हे तात सन्मान सहित मुनिको शीघ्रही मेरेपास को लावो १२ (तथाइतिउक्त्वालक्ष्मणः यथाघृतसिक्तंअनलंस्वतेजसाज्वलंतंतंतापसंप्रवेशयत) बहुत भली ऐसा कहि लक्ष्मण द्वारपर आये पुनः जैसे घृत परे अग्नि प्रज्वलित होत तैसेही अपने तेजकरि कै प्रज्वलित तिस तापस को मंदिर के भीतर लवाय लाये १३ (सोभिगम्यस्वतेजसादीप्यमानः रघुश्रेष्ठंमुनिःमधुरवाक्येनवर्धस्व इतिराघवं आह) सो सन्मुख जाय अपूर्व अपने तेज करिकै प्रकाश मान रघुबंश नाथ को देखि मुनि मधुर बचन करि कै वर्धस्व अर्थात् सप्तांग राज्ञ श्री वृद्ध होय ऐसा बचन रघुनंदन प्रति बोलता भया १४ ॥

तस्मैसमुनयेरामःपूजांकृत्वायथाविधि ॥ पृष्टानामायमव्यग्रोरामःपृष्टोथतेनसः १५ दिव्यासनेसमासीनोरामःप्रोवाचतापसम् ॥ यदर्थमागतोसित्वमिहतत्प्रापयस्वमे १६ वाक्येनचोदितस्तेनरामेणाहमुनिर्वचः ॥ द्वंद्वमेवप्रयोक्तव्यमनालक्ष्यंतुतद्वचः १७ नान्येनचैतच्छ्रोतव्यंनस्यातव्यंचकस्यचित् ॥ शृणुयाद्वानिरीक्ष्येद्वायःसवध्यस्त्वयाप्रभो १८ तथेतिचप्रतिज्ञायरामोलक्ष्मणमब्रवीत् ॥

तिष्ठत्वंद्वारिसौमित्रेनायात्वत्रजनोरहः १९ यद्यागच्छतिकोवापिसवध्योमेनसंशयः ततःप्राहमुनिंरामोयेनवात्वंविसर्जितः २० यत्तेमनीषितंवाक्यंतद्वदस्वममाग्रतः ॥ ततःप्राहमुनिर्वाक्यंशृणुरामयथातथम् २१ ब्रह्मणाप्रेषितोस्मीशकार्यार्थंतेन्तिकं प्रभो ॥ अहंहिपूर्वजोदेवतवपुत्रःपरंतप २२ ॥

(तस्मैमुनयेसरामःयथाविधिपूजांकृत्वाअव्यग्रःरामःअनामयंपृष्टाअथतेनसःपृष्टः) तिसमुनिके अर्थ सो रघुनंदन जैसेवेदमें विधिहै तैसेहीविधिपूर्वक पूजाकरि सावधानहै रघुनंदन मुनिसों प्रसन्नतापूछे तबतिसमुनि करिकै रघुनंदन कुशलपूछेगये १५ (दिव्यासनेसमासीनः रामः तापसंप्रोवाचयत्अर्थंत्वंइहआगतोसितत्मेप्रापयस्व) दिव्यसिंहासनपर बैठेहुये रघुनंदनतापस प्रतिबोलते भयेकिहे मुने जिसहेतु तुमइहाँ आयेहै सोकार्य मोप्रतिकहिये १६ (रामेणवाक्येनतेनचोदितःमुनिःवचःद्वंद्वएवप्रयोक्तव्यंतुतत्वचःअनालब्धं) रघुनंदनके वचनों करिकै आज्ञा दियागया सो मुनिबोला कि हेमहाराज आपअरुमैं दोहीरहे वार्ताकरोंगा तीसरा कोईनरहै काहेते वेवार्ता आपके सिवाय औरके सुनवेयोग्यनहीं हैं १७ (हेप्रभोएतत्नचअन्येनश्रोतव्यंचकस्यचित्नाख्यातव्यंयःशृणुयात्द्रष्टानिरीक्ष्येत्वासःत्वयावध्यः) हेप्रभो जोवार्ता मैंआपसेकरोंगोसो वार्ता न कोऊऔर सुने पुनः और किसीसेन आपकहें अरु कदाचित् कोऊ और सुनिलेवै अथवा इहांआपदेखिलेवें सोआप करिकै माराजाय १८(तथाइतिप्रतिज्ञायचरामः लक्ष्मणंअब्रवीत्सौमित्रेत्वंद्वारितिष्ठअत्ररहःजनःनायातु) बहुतभली इहाँकोई न आने पावैगोऐसी प्रतिज्ञा करिकै पुनःरघुनंदन लक्ष्मणप्रतिबोले किहे सुमित्रानंदन तुम द्वारपर बैठो इहाँएकांत में मैंवार्ताकरोंगो ताते इहाँकोऊ और जन नआने पावै १९(यदिकोवापिआगच्छतिसमेवध्यःसंशयःन ततःरामः मुनिंप्राहयेनवात्वंविसर्जितः) जो साइतिइहां कोऊ आवैगा सो मेरे हाथ बध होगा इसमें संशय नहीं है तदनंतर रघुनंदन मुनि प्रति बोले कि हे मुने जिसने तुमको पठावाहै तिसको जो कछु कार्य होय अथवा २० (यत्तेमनीषितंतत्वाक्यंममाग्रतः वदस्वततः मुनिः वाक्यंप्राहहे रामयथातथम्शृणु) जो तुम्हारा मनोरथहोय सो बचन मेरेआगेकहो तदनंतर मुनि बचन बोले कि हेराम सत्य बचन कहता हों सुनिये २१ (हे ईशब्रह्मणाप्रेषितःअस्मिकार्यार्थंतेंतिकं प्रभोपरंतपदेवअहंपूर्वजः तवपुत्रः) हेईश लोक पालन हारे ब्रह्मा करिकैपठावा हुआ मैं उन्हीं के कार्य अर्थ आपके पास आयाहों हे स्वामिन् स्वयं प्रकाश वेदतत्व में सबसे ज्येष्ठ आप को पुत्रहों २२ ॥

मायासंगमजोवीरकालःसर्वहरःस्मृतः ॥ ब्रह्मास्त्वामाहभगवान्सर्वदेवर्षिपूजितः २३ रक्षितुंस्वर्गलोकस्यसमयस्तेमहामते ॥ पुरात्वमेकएवासीर्लोकान्संहृत्यमायया २४ भार्ययासहितस्त्वंमामादौपुत्रमजीजनः ॥ तथाभोगवतंनागमनन्तमुदकेशयम् २५ माययाजनयित्वात्वंद्वौससत्वौमहाबलौ॥ मधुकैटभकौदैत्यौहत्वा मेदोस्थिसंचयम् २६ इमांपर्वतसंबद्धांमेदिनींपुरुषर्षभ ॥ पद्मेदिव्यार्कसंकाशे नाभ्यामुत्पाद्यमामपि २७ मांविधायप्रजाध्यक्षंमयिसर्वन्यवेदयत् ॥ सोहंसंयुक्त संभारस्त्वामवोचंजगत्पते २८ रक्षाविधत्स्वभूतेभ्योयेमेवीर्यापहारिणः ॥ तत स्त्वंकश्यपाज्जातोविष्णुर्वामनरूपधृक् २९ ॥

(वीरमायासंगमजःसर्वहरःकालःस्मृतः भगवन्सर्वदेवर्षिपूजितः ब्रह्मात्वांआह) हे रघुवीर जबमाया

से आपको संयोगभयातब मैं उत्पन्नभया सबको नाशकरनेहारा काल मेरानाम है हे भगवन् सब देवऋषिन करिकै पूजितब्रह्मा आपसों यहकहा है २३ (महामतेस्वर्गलोकस्यरक्षितुंतेसमयः) हे महामते अवस्वर्गलोककी रक्षाकरिबेको आपकोसमय है भावनरलोकरहनेको समयव्यतीत होगया पुरामाययालोकान्संहृत्यत्वंएकएवासीः) प्रलयादिकालमें अपनी मायाकरिकै सबलोकोंको संहार करि आपहीएकरहेहैं २४ (भार्य्यासहितःत्वंआदौमांपुत्रमजीजनःतथाउदकेशयम्भोगवतंनागंअनं-तं) अपनीभार्या मायाकरिकै सहितआपसृष्टिकी आदिमेंमैंजोहौं ब्रह्मातिसको पुत्रकरि उत्पन्नकीन्हें-उतैसेहीजलमें शयनकरनेवालावहुतहैं फन जिसके ऐसे नागअनंतकोउत्पन्नकीन्हेंउ २५(त्वंमायया जनयित्वाद्वौससत्वौमहाबलौदैत्यौमधुकैटभकौहत्वामेदःअस्थियसंचयम्) आपआपनीमायाकरिकैउत्प-न्नकियादोऊ सहित साहस महापराक्रम दैत्य जो मधुकैटभ तिनकोमारि उनकीचरबी हाड़ बटोरिकै २६ (पुरुषर्षभइमांमेदिनींपर्वतसंवद्धांनाभ्यांदिव्यार्कसंकाशेपद्मेमांअपिउत्पाद्य) हे पुरुषोंमेंश्रेष्ठ उसी चरबीकरिकै यहपृथिवी अरु हाड़ोंकरिकैपर्वतरचतेभयो पुनः हेप्रभोअपनीनाभी में दिव्यस्वरूप सूर्य-वत्प्रकाश मानकमल में मैं जो ब्रह्मा तिसको भी उत्पन्न किहेउ २७ (प्रजाध्यक्षंमांविधायमयिसर्वं न्यवेदयत् हे जगत्पते संभारः संयुक्तःसः अहंत्वांअवोचं) प्रजापति मोको बनाय मेरेमें लोक व्यापार सब निवेदन कीन्हेउ हे जगत्पते संपूर्ण लोकोंको भार संयुक्त सोई मैं आपप्रतिबोलेउ२८ (भूतेभ्यः चेमेवीर्यापहारिणः रक्षाविधत्स्वततः त्वंविष्णुः वामनरूपधृक्कश्यपात्जातः) क्याप्रार्थनाकीन्हेउ हे प्रभो भूत जो सब संसार को तथा मेरे पराक्रमको नाशकरनेवाले जे दुष्ट हैं तिनसों मेरीरक्षाको विधानकीजे तदनंतर आपजो विष्णुसो वामनरूपधरि कश्यपते उत्पन्नभयो २९ ॥

हतवानसिभूभारंवधाद्रक्षोगणस्यच ॥ सर्वासूत्सार्यमाणासुप्रजासुधरणीधर ३० रावणस्यवधाकांक्षीमर्त्यलोकमुपागतः ॥ दशवर्षसहस्राणिदशवर्षशतानिच ३१ कृत्वावासस्यसमयंत्रिदशेष्वात्मनःपुरा ॥ सतेमनोरथःपूर्णःपूर्णेचायुषिते नृषु ३२ कालस्तापसरूपेणत्वत्समीपमुपागमत् ॥ ततोभूयाश्चतेबुद्धिर्यदि राज्यमुपासितुम् ३३ तत्तथाभवभद्रंतेएवमाहपितामहः ॥ यदितेगमनेबुद्धि र्देवलोकंजितेन्द्रियम् ३४ सनाथाविष्णुनादेवाभवन्तुविगतज्वराः ॥ चतुर्मुख स्यतद्वाक्यंश्रुत्वाकालेनभाषितम् ३५ हसन्रामस्तदावाक्यंकृत्स्नास्यान्तकमब्र वीत् ॥ श्रुतंतववचोमेद्यममापीष्टतरंतुतम् ३६ संतोषःपरमोज्ञेयस्त्वदागमनका रणात् ॥ त्रयाणामपिलोकानांकार्यार्थंममसम्भवः ३७ ॥

(रक्षोगणस्यवधात्चभूभारंहतवानसिधरणीधरसर्वासुप्रजासुउत्सार्यमाणासु) तबराक्षसगणोंको मारिपुनः भूमिकोभारहरेहुपुनःहेधरणीधर फिरिजबदशमुखादिकोंकेसतानेसेसबप्रजादुखपीड़ितभये तबौमेरीप्रार्थनासेआप ३० (रावणस्यवधाकांक्षीमर्त्यलोकंउपागतःदशसहस्राणिवर्षाणिचदशशतानिव र्षाणि) हेरघुवंशनाथरावणकेवधकीइच्छाराखिआपमर्त्यलोकमेंअवतीर्णभयेसोसबकार्यकियेतहांदशह-जारवर्षपुनः दशसैबर्षतक ३१ (आत्मनःवासस्यपुरा त्रिदशेषुसमयंकृत्वासतेमनोरथः पूर्णःचतेंनृषु आयुषिपूर्णे) नरतनुसेमर्त्यलोकमेंवासकरणेकोदेवतों में प्रतिज्ञाकीन्हेंउभावगेरहहजार वर्षवासकरेंगे सोआपकोमनोरथपूर्णभयापुनःआपकेमनुष्यतनुकीआयुःभीपूर्णभई ३२ (तापसरूपेणकालःत्वत्समी-

पंउपागमत्ततः यदितेबुद्धिः चराज्यंउपासितुंभूयात्) सोपूरासमयपायकैतापसरूपकरिकैकालआपके समीप आवताहै ताकीमर्यादाराखि इच्छाहोयतौ निजलोकको भाइये तदनंतर जोआपकीवुद्धिपुनः राज्य करने को अधिकहो ३३ (तेभद्रंतत्तथाभवएवं पितामहःआहजितेंद्रिय यदिदेवलोकं गमनेते बुद्धिः)जो अभी उहां रहनेकी इच्छाहोयतौ आपको कल्याणहोय तैसाहीकीजे ऐसा संदेश ब्रह्माआप से कहाहै पुनः हे जितेंद्रिय जो देवलोक जाने की आपकी बुद्धिहोय ३४ (विष्णुनादेवाः विगतज्वराः सनाथाः भवंतुकालेन भाषितंतत् चतुर्मुखस्यवाक्यं श्रुत्वा) हेराघवेंद्र जो आप देवलोक को चलौ तौ विष्णुकरिकै देवता सब संताप रहित सनाथहोयंगे इति कालकरिकै भाषेसोब्रह्मा के वचन सुनि कै ३५ (तदारामः हसन् कृत्स्नस्य अंतकंवाक्यं अब्रवीत् तववचः मे भयश्रुतं तुतंममापि इष्टतरं) तबरघुनंदन हसतसंते संपूर्ण जगत् को नाशकरनेवाला जोकाल त्यहिप्रतिवचन बोलतभये हेकाल तुम्हारे वचन मैं आजुसुना अरु पूर्वही से यहीमेराभी अभीष्टरहा ३६ (त्वदागमनकारणात् परमः संतोषः ह्येषः त्रयाणां अपिलोकानांकार्यार्थमेमसंभवः) तुम्हारे इहांआगमभये कारणते मोको(परम संतोषभयाक्योंकि तीनिहुं लोकनकेकार्य करने अर्थमेरा अवतार भयाहै ३७ ॥

भद्रंतेस्तुगमिष्यामियतएवाहमागतः ॥ मनोरथस्तुसंप्राप्तोनमेत्रास्तिविचारणा ३८ मत्सेवकानांदेवानांसर्वकार्येषुवैमया ॥ स्थातव्यंमाययापुत्रयथाचाहप्रजापतिः ३९ एवंतयोःकथयतोर्दुर्वासामुनिरभ्यगात् ॥ राजद्वाररंराघवस्यदर्शनापेक्षयादृतम् ४० मुनिर्लक्ष्मणमासाद्यदुर्वासावाक्यमब्रवीत् ॥ शीघ्रंदर्शयराममेकार्यंमेत्यंतमाहितम् ४१ तच्छ्रुत्वाप्राहसौमित्रिर्मुनिंज्वलनतेजसम् ॥ रामेणकार्यंकिंतेद्यकितेभीष्टंकरोम्यहम् ४२ राजाकार्यान्तरेव्यग्रोमुहूर्तंसंप्रतीक्ष्यताम् ॥ तच्छ्रुत्वाक्रोधसंतप्तोमुनिःसौमित्रिमब्रवीत् ४३ अस्मिन्क्षणेतुसौमित्रेनदर्शयसिचेद्विभुम् ॥ रामंसविषयंवंशंभस्मीकुर्यान्नसंशयः ४४ श्रुत्वातद्वचनंघोरंत्रेषेर्दुर्वाससोभृशम् ॥ स्वरूपंतस्यवाक्यस्याचिंतयित्वासलक्ष्मणः ४५ ॥

(तेभद्रंअस्तुयतआगतःएवअहंगमिष्यामितुमनोरथःसंप्राप्तःअत्रमेविचारणानअस्ति)हेकालतेरा कल्याणहोयजहाँतेआयाहौ तिसीलोककोनिश्चयकरिअवमैंजाउँगोपुनःजोमेरामनोरथहै सोपूर्णप्राप्त भयातौइहांरहनेको मोकोविचारकरणाकछुनहीहै ३८ (मत्सेवकानांदेवानांकार्येषुयथाचाहप्रजापतिःहे पुत्रमाययामयावैस्थातव्यं) मेरेसेवकजेदेवताहैंतिनकेकार्योंमेंजहाँजैसाब्रह्माकहैं तहाँ तैसाही हे पुत्र अपनीमायाकरिकै मोको निश्चय करिस्थित होनाचाहिये ३९ (एवंतयोः कथयतः आदृतं राघवस्यदर्शनापेक्षयाराजद्वारंदुर्वासामुनिःअभ्यगात्) इसीप्रकार काल रघुनंदन दोऊ वार्ताकरतेरहे ताही समय में आदरपूर्वक रघुनंदन के दर्शनकी अपेक्षा करिकै राजद्वार पर दुर्वासा मुनि आवते भये ४० (लक्ष्मणं आसाद्य दुर्वासा मुनि.वाक्यं अब्रवीत् मे अत्यंतं आहितं कार्यं मे रामंशीघ्रं दर्शय) लक्ष्मणप्रतिप्राप्तहै दुर्वासा मुनि वचन बोलते भये हे लक्ष्मण मेरा अत्यंत जरूरी कार्यहै ताते मोकोरघुनंदन को शीघ्रही देखावौ ४१ तत्श्रुत्वाज्वलनतेजसंमुनिसौमित्रिः प्राहरामेणतेकिंकार्यंअद्यतेकिंअभीष्टंअहं करोमि) सोसुनि अग्निसमतेजवंत मुनि जो दुर्वासा तिनप्रति लक्ष्मण बोले कि रामकरिकै आपको क्याकार्य यासमयआप को क्या अभीष्टहै सो कहिये मैं करौं ४२ (कार्यांतरे राजाव्यग्रःमुहूर्तंसंप्रतीः

क्ष्यताम् तत्श्रुत्वामुनिः क्रोधसंतप्तः सौमित्रिं अब्रवीत्) किसीअवश्यक कार्यमें लगे राजा सावधान नहीं हैं ताते मुहूर्तभरि बैठिजाइये सो सुनि मुनि क्रोधसे प्रज्वलित लक्ष्मण प्रतिबोलतेभये ४३ (सौमित्रेअस्मिन्क्षणेतु चेत्विभुम्नदर्शयाति सविंरयं वंशरामंभस्मीकुर्यान्न संशयःन) हे लक्ष्मण इसीक्षणमें जो कदाचिरामको नहीं देखावते हौ तो सहितराज्यवंश रामको भस्मकरताहों यामें संशयनहीं है ४४ ऋषेर्दुर्वाससः भृशंघोरंवचनंतत्श्रुत्वातस्यवाक्यस्यस्वरूपं चिंतयित्वासलक्ष्मणः) ऋषि दुर्वासाके कहे अत्यंतभयंकर बचन सो सुनिके तिस वचन को स्वरूपभावार्थ चिंतवनकरि सबबात विचारि सो लक्ष्मण ४५ ॥

सर्वनाशाद्वरंमेद्यनाशोह्येकस्यकारणात् ॥ निश्चित्यैवंततोगत्वारामायप्राहलक्ष्मणः ४६ सौमित्रेर्वचनंश्रुत्वारामःकालंव्यसर्जयत् ॥ शीघ्रंनिर्गम्यरामोपिददर्शात्रेःसुतंमुनिम् ४७ रामोभिवाद्यसंप्रीतोमुनिंपप्रच्छसादरम् ॥ किंकार्यंतेकरोमीति मुनिमाहरघूत्तमः४८ तच्छ्रुत्वारामवचनंदुर्वासारामब्रवीत् ॥ अद्यवर्षसहस्राणामुपवाससमापनम् ४९ अतोभोजनमिच्छामिसिद्धंयत्तेरघूत्तम ॥ रामोमुनिवचःश्रुत्वासंतोषेणसमन्वितः ५० ससिद्धमन्नंमुनयेयथावत्समुपाहरत् ॥ मुनिर्भुक्त्वान्नमस्तंसंतुष्टःपुनरभ्यगात् ५१ स्वमाश्रमंगतेतस्मिन्रामःसस्मारभाषितम् ॥कालेनशोकदुःखार्त्तोविमनश्चातिविह्वलः ५२ अवाङ्मुखोदीनमनानशशाकाभिभाषितुम् ॥ मनसालक्ष्मणंज्ञात्वाहतप्रायंरघूद्वहः ५३ ॥

(कारणात्सर्वनाशात्अद्यमेएकस्यनाशःहिवरंएवंनिश्चित्यततः गत्वालक्ष्मणःरामायप्राह) दुर्वासा क्रोधकारण ते सबको नाश होनेसे अब मेरेएकको नाश होना निश्चय करि उत्तमहै इसप्रकारनिश्चित्यतदनंतर भीतरजाय लक्ष्मण रघुनंदनसे बोलतेभये ४६(सौमित्रेःवचनंश्रुत्वारामःकालंव्यसर्जयत् शीघ्रंनिर्गम्यरामः अपि अत्रेः सुतं मुनिंददर्श) लक्ष्मण के बचन सुनिकै रघुनंदन कालको विदा कीन्हें शीघ्रही द्वारपर आय रघुनंदन भी आत्रिके पुत्र दुर्वासा मुनिको देखते भये ४७ (संप्रीतःरामः अभिवाद्य सादरम् मुनिं पप्रच्छ ते किंकार्यं करोमि इतिरघूत्तमःमुनिंआह) प्रसन्नतासहित रघुनंदन प्रणाम करि आदर सहित मुनि प्रति पूछते भये हेमुने आपको क्या कार्य मैंकरौं ऐसा बचन रघुनंदन मुनि प्रति बोले ४८ (तत्रामवचनंश्रुत्वा दुर्वासा रामं अब्रवीत् वर्षसहस्राणां उपवास अद्यसमापनम्) सो रघुनंदनको वचन सुनिकैदुर्वासा रघुनंदन प्रति बोलते भये कि हजार वर्षको मेरा व्रत आज समाप्त भया है ४९ (अतःभोजनंइच्छामिरघूत्तमयत्तेसिद्धंमुनिवचःश्रुत्वारामःसंतोषेणसमन्वितः । इसहेतु मैं भोजनकी इच्छाकरताहौं हेरघुवर जोभोजन तुम्हारे तयारहोइ सोदीजे इतिउपाधिरहितसुलभ मुनिको वचनसुनिकै रघुनंदन संतोषसहितभये ५० (यथावत्ससिद्धं अन्नंमुनये समुपाहरत्अमृतंअन्नंभुक्त्वासंतुष्टःमुनिःपुनः अभ्यगात्) जैसाचाहिये तैसेही सिद्धकिया अन्नमुनिके अर्थ लाय प्राप्तकिये अमृतवत्स्वादुजामेंऐसाअन्नभोजन करिसंतुष्टह्वैमुनिपुनःजातेभये ५१(तस्मिन्स्वंआश्रमंगते रामः कालेनभाषितंसस्मार शोकदुःखार्तः विमनः च अतिविह्वलः) तिनमुनिको अपनेआश्रमकोगये संतेरघुनंदनकालकरिकै कहाहुवा वचन सुधि करिकै शोकदुःख युक्तआरत उदासमनपुनःविकलह्वैगये ५२ लक्ष्मणंहतप्रायंमनसाज्ञात्वा रघूद्वहःदीनमनाअवाक्मुखः अभिभाषितु नशशाक)लक्ष्मणको

वचयोग्य मनसे जानि रघुनंदन दीनमन बचनरहित मुखकिहे लक्ष्मण प्रति वार्ताकरनेको न समर्थभये भाव लक्ष्मणप्रति कछु न बोले ५३ ॥

अवाङ्मुखोवभूवाथतूष्णीमेवाखिलेश्वरः॥ ततोरामंविलोक्याहसौमित्रिर्दुःखसंप्लुतं ५४ तूष्णींभूतंचिंतयतंगर्हितंस्नेहबंधनम् ॥ मत्कृतेत्यजसंतापंजहिमांरघुनन्दन ५५ गतिःकालस्यकलितापूर्वमेवेदृशीप्रभो ॥ त्वयिहीनप्रतिज्ञेतुनरकोमेध्रुवंभवेत् ५६ मयिप्रीतिर्यदिभवेद्यद्यनुग्राह्यतवत्यक्त्वाशंकांजहिप्राज्ञमांमाधर्मंत्यजप्रभो ५७ सौमित्रिणोक्तंतच्छ्रुत्वारामश्चलितमानसः॥ आहूयमंत्रिणःसर्वान्वशिष्ठंचेदमब्रवीत् ५८ मुनेरागमनंयत्तुकालस्यापिहिभाषितम्॥ प्रतिज्ञामात्मनश्चैवसर्वमावेदयत्प्रभुः ५९ श्रुत्वारामस्यवचनंमंत्रिणःसपुरोहिताः ॥ ऊचुःप्रांजलयःसर्वेराममक्लिष्टकारिणम् ६० पूर्वमेवहिनिर्दिष्टंतवभूभारहारिणः ॥ लक्ष्मणेनवियोगस्तेज्ञातोविज्ञानचक्षुषा ६१ ॥

(अथअवाक्मुखःतूष्णींएवअखिलेश्वरःततः रामं विलोक्यदुःखसंप्लुतंसौमित्रिःआह) अब बचन हीन नीचे मुख किहे मौन बैठे अखिलेश्वर तदनंतर उदासीन रघुनंदन को देखि दुःखसागर में बूढ़े लक्ष्मण बोलते भये ५४ (गर्हितंस्नेहबंधनं चिंतयतंतूष्णींभूतं रघुनंदनमत्कृते संतापंत्यजमां जहि) निंदित जो स्नेह बंधन ताको चिंतवन करते मौन बैठे तिन प्रति लक्ष्मण बोले कि हे रघुनंदन मेरे हेत संताप को त्यागि मोको बधकरौ ५५ (प्रभोकालस्यगतिःईदृशीपूर्वं एव कलितातु त्वयिहीन प्रतिज्ञेध्रुवंमेनरकःभवेत्) हे प्रभो काल की गति इसीप्रकार अर्थात् जा काल में जो होनहार है सो अवश्यही होताहै इत्यादि पूर्वहीं आपने रचिराखाहै सो मिटनेको नहीं पुनः आप प्रतिज्ञा हीन होत संते निश्चय मोको नरक होयगो ५६ (हे प्राज्ञयदि मयिप्रीतिःभवेत् यदितवअनुग्राह्यता प्रभोशंकां त्यक्त्वामांजहि धर्ममात्यज) हे परम विद्वान् जो मेरे में प्रीति है जो आप अपना करि मानेहौ तौ हे स्वामिन् शंका त्यागि मोको मारौ अरु प्रतिज्ञा रूप धर्म न त्याग कीजिये ५७ (सौमित्रिणाउक्तंतत्श्रुत्वाचलितमानसःरामःसर्वान्मंत्रिणःआहूयचवशिष्ठंइदंअब्रवीत्) लक्ष्मण ने कहा सो सुनिधर्म स्नेहमें चलायमान मनजिनको ऐसे रघुनंदन सबमंत्रिनको बोलाय पुनःबशिष्ठप्रति ऐसा बचन बोलतेभये ५८ (यत्मुनेःआगमनंतुकालस्यअपिहिभाषितंचएवआत्मनःप्रतिज्ञांसर्वंप्रभुः आवेदयत्) जैसे दुर्वासामुनिको आगमभया पुनःकालको भी निश्चय बचन कहना पुनः अपनी प्रतिज्ञाइत्यादि सबहाल प्रभुबशिष्ठसे कहिदिये ५९ (रामस्यवचनंश्रुत्वामंत्रिणःसपुरोहिताःसर्वेप्रांजलयःअक्लिष्टकारिणंरामंऊचुः)रघुनंदनकेवचनसुनिकैसहितपुरोहितसबमंत्रीहाथजोरिअक्लेशकारीरघुनंदन प्रति बोलतेभये ६० (भूभारहारिणःतवलक्ष्मणेनतेवियोगः पूर्वंएवहिनिर्दिष्टंविज्ञानचक्षुषाज्ञातः)बशिष्ठबोले हे रघुनंदन भूमिको भारहरणेहेतजब आपको अवतार भयासो लक्ष्मणकरिकै आपको वियोग पूर्वहीसे निश्चय करिकै होनहाररहाहै सोविज्ञानदृष्टि करिकै हमजानते हैं ६१ ॥

त्यजाशुलक्ष्मणंराममाप्रतिज्ञांत्यजप्रभो॥ प्रतिज्ञातेपरित्यक्तेधर्मोभवतिनिष्फलः ६२ धर्मेनष्टेऽखिलेरामत्रैलोक्यंनश्यतिध्रुवम् ॥ त्वंतुसर्वस्यलोकस्यपालकोसिरघूत्तम ६३ त्यक्त्वालक्ष्मणमेवैकंत्रैलोक्यंत्रातुमर्हसि ॥ रामोधर्मार्थसहितंवाक्यं

तेषामनिंदितम् ६४ सभामध्येसमाश्रुत्यप्राहसौमित्रिमंजसा ॥ यथेष्टंगच्छसौमित्रेमाभूद्धर्मस्यसंक्षयः ६५ परित्यागोबधोवापिसतामेवोभयंसमम् ॥ एवमुक्तेरघुश्रेष्ठेदुःखव्याकुलितेक्षणः ६६ रामंप्रणम्यसौमित्रिःशीघ्रंगृहमगात्स्वकम् ॥ ततोगात्सरयूतीरमाचम्यसकृतांजलिः ६७ नवद्वाराणिसंयम्यमूर्ध्निप्राणमधारयत् ॥ यदक्षरंपरंब्रह्मवासुदेवाख्यमव्ययम् ६८ ॥

(राम लक्ष्मणं आशुत्यजप्रतिज्ञांमात्यजप्रभोतेप्रतिज्ञा परित्यक्तेधर्मः निष्फलः भवति)वशिष्ठबोले कि हे रघुनंदन लक्ष्मण को शीघ्रही त्याग कीजिये अरु प्रतिज्ञा को न त्याग कीजिये क्योंकि हे प्रभो आप के प्रतिज्ञा परित्याग करत संते धर्मही निष्फल होताहै६२(रघूत्तमत्वंतुसर्वस्यलोकस्यपालकः असिरामअखिले धर्मेनष्टे त्रैलोक्यं ध्रुवं नश्यति) हे रघुकुलोत्तम परिपूर्ण धर्म धारण करि आपसब लोकन के पालनहार हो अरु धर्मै ते संसार बनाहै जो आप धर्म त्यागो तौ संपूर्ण धर्म नाशभया संपूर्ण धर्मनाशहोतसंते तीनिहु लोक निश्चयकरि नाशहोजायँगे ६३ (एकंलक्ष्मणं एवत्यक्त्वात्रैलोक्यंत्रातुंअर्हसिधर्मार्थे सहितंअनिंदितंवाक्यंतेषांरामः) तातेएकलक्ष्मणहीकोत्यागकरि तीनिहुलोकनके रक्षाकरिबे योग्य हौ इति प्रभुको धर्म सबलोकनको अर्थ दोऊसहित पुनः जामें निंदानहीं ऐसे उत्तम बचन तिनको सुनिकै रघुनंदन ६४ (सभामध्येसमाश्रुत्यअंजसासौमित्रिंप्राहसौमित्रेयथाइष्टंगच्छधर्मस्यसंक्षयःमाभूत्) सभाजनोंमें सबकोसुनाय शीघ्रही लक्ष्मणप्रति रघुनंदन बोले हे लक्ष्मण जहाँ तुम्हारी इच्छाहोयतहाँजाव जामेंधर्मनाश नहोय ६५(बधःवापिपरित्यागःउभयंसतांसमंएवएवंरघुश्रेष्ठे उक्तेदुःखव्याकुलितइक्षणः) वधकरना अथवा निश्चयकरि परित्याग करना ये दोऊसत्पुरुषोंको बराबरिहीहैं इस प्रकार बचन रघुनंदनके कहतसंते दुःखव्याकुलनेत्र ६६ (सौमित्रिःरामंप्रणम्यशीघ्रंस्वकंगृहं अगात्ततःसरयूतीरंअगात् आचम्य सकृतांजलिः)लक्ष्मण रघुनंदनको प्रणामकरिशीघ्रही अपने मंदिर कोगये राजसी भूषणत्यागि तदनंतर सरयूतीरजाय आचमनकरिहाथजोरि६७ (नवद्वाराणिसंयम्यप्राणं मूर्ध्निअधारयत्यत्अक्षरंअव्ययंवासुदेवाख्यंपरब्रह्म) श्रवण नेत्रनासिका मुखादिनवौइन्द्रीद्वारोंको बंद करिसर्वांगतेखैंचिप्राण शीशमेंधारणकरिजोकारण परनाशरहितवासुदेवनामजाकोऐसा जोपरब्रह्म६८॥

पदंतत्परमंधामचेतसासोभ्यचिन्तयत् ॥ वायुरोधेनसंयुक्तंसर्वेदेवाःसहर्षयः ६९ साग्नयोलक्ष्मणंपुष्पैस्तुष्टुवुश्चसमाकिरन् ॥ अदृश्यंविबुधैःकैश्चित्सशरीरंसवासवः ७० गृहीत्वालक्ष्मणंशक्रःस्वर्गलोकमथागमत् ॥ ततोविष्णोश्चतुर्भागंतं देवंसुरसत्तमाः ॥ सर्वेदेवर्षयोदृष्ट्वालक्ष्मणंसमपूजयन् ७१ लक्ष्मणेहिदिवमागतेहृष्टा सिद्धलोकगतयोगिनस्तदा ॥ ब्रह्मणासहसमागमन्मुदा द्रष्टुमाहितमहाहिरूपकम् ७२ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादे उत्तरकाण्डेऽष्टमःसर्गः ॥ ८ ॥

(तत्परमंपदंधामचेतसासःअभिचिंतयत् वायुरोधेनयुक्तंसहऋषयःसर्वेदेवाः) सोई परमपद परधाम चित्त करिकै लक्ष्मण अंतरमें चिंतवन करतेहुये पवन रोध करिकै युक्त अर्थात् आसन लगाय प्राणायाम विधिसे वाम श्वासा बंद करि दहिने श्वासासे पवन खैंचि दोऊ बंद करि प्राणोंकोशीशमें राखि

परमात्मरूपमें तदाकार वृत्तिमें बैठेहुये जो लक्ष्मण तिनहिं देखि सहित महाऋषि सब देवता ६९ (साग्नयःसवासवःलक्ष्मणंपुष्पैः समाकिरन्चतुष्टुवुःसशरीरंकैश्चित्विबुधैःअदृश्यं) सहित अग्नि सहित इंद्र सब देवता लक्ष्मण पर फूलोंकी वर्षा करि पुनः स्तुति करते भये सहित शरीर लक्ष्मण किसी देवता करिकै नहीं देखेगये भाव सदेह किसीने नहीं देखि पावा कहाँगये ७० (शक्रःलक्ष्मणं गृहीत्वाअथस्वर्गलोकंअगमत् ततःविष्णोःचतुर्भागंतंदेवंलक्ष्मणंसर्वेदेवर्षयःसुरसत्तमाःदृष्ट्वासमपूजयन्) इंद्रने लक्ष्मणको ग्रहणकरि अर्थात् आदर सहित अपने विमानपर बैठारि स्वर्गलोकको जाते भये तदनंतर विष्णुको चौथा भाग जो व्यापरहा तिन देव लक्ष्मणको सब देवऋषि उत्तम देवता देखिकै पूजन करते भये ७१ (हरौलक्ष्मणेहिदिवंआगतेतदाआहितमहाअहिरूपकंदृष्टुं ब्रह्मणासहसिद्धलोकगतयोगिनःमुदासमागमन्) विष्णुरूप लक्ष्मण निश्चयकरि आकाशको जात संते पुनः लक्ष्मणको प्राप्तभया जो महासर्प रूप अर्थात् शेष रूप ताहि देखनेको ब्रह्मा सहित सिद्धलोक वासी योगीजन ते सब आनंद सहित अयोध्याजीको आतेभये ७२ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतबैजनाथविरचिते अध्यात्मभूषणेउत्तरकाण्डेऽष्टमःप्रकाशः ॥ ८ ॥

श्रीमहादेवउवाच ॥ लक्ष्मणंतुपरित्यज्यरामोदुःखसमन्वितः ॥ मंत्रिणोनैगमांश्चैववशिष्ठंचेदमब्रवीत्१ अभिषेक्ष्यामिभरतमधिराज्येमहामतिम् ॥ अद्यचाहंगमिष्यामिलक्ष्मणस्यपदानुगः २ एवमुक्तेरघुश्रेष्ठेपौरजानपदास्तदा ॥ द्रुमाइवछिन्नमूलादुःखार्तापतिताभुवि ३ मूर्च्छितोभरतोवापिश्रुत्वारामाभिभाषितम् ॥ गर्हयामासराज्यंसप्राहेदंरामसन्निधौ ४ सत्येनचशपेनाहत्वांविनादिविवाभुवि ॥ कांक्षेराज्यंरघुश्रेष्ठशपेत्वत्पादयोःप्रभो ५ इमौकुशलवौराजन्अभिषिंचस्वराघव॥ कोशलेषुकुशंवीरमुत्तरेषुलवंतथा ६ गच्छंतुदूतास्त्वरितंशत्रुघ्नानयनायहि ॥ अस्माकमेतद्गमनंस्ववासायशृणोतुसः ७ ॥

सवैया ॥ गतलक्ष्मण शोक निमग्नप्रभू भरतादि समाज सदुःखछये । मुनिबोधतहीं बलवाहन कोश विभागमही सुतराजदये ॥ निजरूप सँभारिसहानुज श्रीसरितातटलोक विरक्तभये । परिवार प्रजा पुरलोग कपीसह सानँद राम स्वधामगये ॥ (लक्ष्मणंपरित्यज्यतुदुःखसमन्वितः रामःमंत्रिणःचएवनैगमांचवशिष्ठंइदंअब्रवीत्) शिवजी बोले हे गिरिजा लक्ष्मणको परित्याग करि पुनः दुःख सहित रघुनन्दन मंत्रिन पुनः वनिकूजनन युत वशिष्ठप्रति प्रभु बोलतेभये १ (महामतिंभरतंअधिराज्येअभिषेक्ष्यामिच अहंअद्यलक्ष्मणस्यपदानुगःगमिष्यामि) अरु महामतिमान् जो भरतहैं तिनहिं राज्यपदमें अभिषेक करिहौं पुनः मैं अभी लक्ष्मणके पाछे जैहौं भाव जहां लक्ष्मण गये तहां मैंभी जाउँगो २ (एवंरघुश्रेष्ठेउक्तेतदापौरजानपदाः छिन्नमूलाः द्रुमाःइवदुःखार्ताःभुविपतिताः) इसप्रकारके वचन रघुनन्दनके कहत सन्ते ता समयमें पुरवासी राजाके जनमंत्री आदि कटेमूल वृक्षोंके समान दुःख करिकै आरत भूमिपर गिरिपरे ३ (रामाभिभाषितंश्रुत्वावाभरतः अपिमूर्च्छितःराज्यंगर्हयामासरामसन्निधौसइदंप्राह) रघुनन्दनके कहे वचन सुनिकै पुनः भरतभी मूर्च्छितह्वै गये अरु राज्यको अनादर करतेहुये भरत रघुनन्दनके समीप ऐसा वचन कहते भये ४ (रघुश्रेष्ठप्रभोत्वत्पाद्

योःशपेचसत्येनशपेत्वां विनाअहंभुविवादिविराज्यंनकांक्षे) हे रघुवंशनाथ प्रभो आपके पांयनकी शपथ है पुनः सत्य करिकै शपथहै आपके रहे विना मैं भूमिकी अथवा स्वर्गके राज्यकी नहीं इच्छा करता हौं ५ (हेराघवराजनइमौकुशलवौअभिषिंचस्ववीरं कुशंकोशलेषुतथालवंउत्तरेषु) भरत बोले कि हे रघुनन्दन महाराज इन कुश लवको अभिषेक करिये तिन वीरकुशको कोशला विषे तैसेही लवको उत्तर में अभिषेक करिये ६ (शत्रुघ्नानयनायहित्वरितंदूताः गच्छंतुस्ववर्वासायअस्माकं एततअगमनं सःश्रृणोतु) अरु शत्रुघ्नको लेवायलाने हेत शीघ्रही दूत मथुराको जाइ क्योंकि स्वर्ग वासार्थ हम लोगनको यह गमन शत्रुघ्नभी सुनि देखिलेवैं ७ ॥

भरतेनोदितंश्रुत्वापतितास्ताःसमीक्ष्यतम् ॥ प्रजाश्चभयसंविग्नारामविश्लेष कातराः ८ वशिष्ठोभगवान्राममुवाचसदयंवचः ॥ पश्यतातादरात्सर्वाःपतिता भूतलेप्रजाः ९ तासांभावानुगंरामप्रसादंकर्तुमर्हसि ॥ श्रुत्वावशिष्ठवचनंताःस मुत्थाप्यपूज्यच १० सस्नेहोरघुनाथस्ताःकिंकरोमीतिचाब्रवीत् ॥ ततःप्रांजल यःप्रोचुःप्रजाभक्त्यारघूद्वहम् ११ गन्तुमिच्छसियत्रत्वमनुगच्छामहेवयम् ॥ अस्माकमेषापरमाप्रीतिर्धर्मोयमक्षयः १२ तवानुगमनेरामहृद्गतानोदृढाम तिः ॥ पुत्रदारादिभिःसार्द्धमनुयामोद्यसर्वथा १३ तपोवनंवास्वर्गंवापुरंवारघुनं दन ॥ ज्ञात्वातेषांमनोदार्ढ्यंकालस्यवचनंयथा १४ ॥

(रामविश्लेषकातराः प्रजाःचभरतेनउदितं श्रुत्वातंसमीक्ष्यभयसंविग्नाः पतितास्ताः) रघुनंदन को वियोग जानि प्रजा दुखितैरहैं पुनः भरत करिकै कहा वचन सुनिकै भरतकी दशादेखि भय करिकै विकल सब मूर्च्छित ह्वै भूमिपर गिरिपरते भये ८ (भगवान्वशिष्ठः सदयंवचः रामंउवाच तातआदरात्पश्यसर्वाःप्रजाःभूतलेपतिताः)भगवान् वशिष्ठ सहित दयापर दुःख निवारक वचन रघुनन्दन प्रति बोलते भये हे तात रघुनन्दन दया दृष्टिते देखिये आपके स्नेहवश सब प्रजाभूमिमें परे हैं ९ (रामतासांभावानुगंप्रसादंकर्तुंअर्हसिवशिष्ठ वचनंश्रुत्वाताः समुत्थाप्यचपूज्य) हे रघुनन्दन तिन प्रजनके प्रेमभाव अनुकूल प्रसाद करिबे योग्यहौ भाव इनके मनोरथ अनुकूल कृपाकरो इति वशिष्ठके वचन सुनिकै रघुनन्दन तिन प्रजनको उठाय सत्कारकीन्हें १० (चसस्नेहःरघुनाथःताः इतिअब्रवीत् किंकरोमिततःप्रजाः भक्त्याप्रांजलयःरघूद्वहंप्रोचुः) पुनः सहित स्नेह रघुनन्दन तिन प्रति ऐसा बोलतेभये कि हे प्रजालोगो तुम्हारा क्या मनोरथ है कहो सो कार्य मैं करौं इति सुनि तदनन्तर सब प्रजालोग भक्ति करिकै अर्थात् प्रेम सहित हाथजोरि रघुनन्दन प्रति बोलते भये ११ (त्वंयत्रगंतुंइच्छसिवयंअनुगच्छामहेएषाअस्माकंपरमाप्रीतिः अयंधर्मअक्षयः) हे रघुनन्दन जहां को आपजाने की इच्छा करतेहौ तहँको हमलोग आपके पाछे पाछे चलैंगे यही हमलोगों की परम प्रीतिहै अरु यही स्वामी सेवकको धर्म अचलहै १२ (रामतवानुगमनेनोहृद्गताद्दृढामतिःपुत्रदारादिभिःसार्द्धंसर्वथाअद्यअनुयामः) हे रघुनन्दन आपके पाछे चलनेमें हमारे हृदयमें पुष्टमतिहै कौन भांति कि पुत्र स्त्री सहित सर्वथा हम आपके संगही चलैंगे १३ (रघुनन्दनपुरंवातपोवनंवास्वर्गंवा तेषांमनःदार्ढ्यंज्ञात्वाकालस्यवचनंयथा) हे रघुनन्दन किसी और पुरको चलौ वा चहौ तपोवनको चलौ वा चहौ स्वर्गको चलौ हम आपके साथै चलैंगे इति सुनि रघुनन्दन तिन प्रजन को मन

दृढ़ जानि पुनः काल को वचन जैसा रहै सो बिचारे भाव अबस्वर्ग जानेको समय है ॥ १४ ॥

भक्तपौरजनंचैववाढमित्याहराघवः ॥ कृत्यैवनिश्चयंरामतस्मिन्नेवाहनिप्रभुः १५ प्रस्थापयामासचतौरामभद्रःकुशीलवौ ॥ अष्टौरथसहस्राणिसहस्रंचैववाजिनाम् १६ षष्टिचाश्वसहस्राणामेकैकस्मैददौबलं ॥ वहुरत्नौबहुधनौहृष्टपुष्टजनावृतौ १७ अभिवाद्यगतौरामंकृच्छ्रेणतुकुशीलवौ ॥ शत्रुघ्नानयनेदूतान्प्रेषयामास राघवः १८ तेदूतास्त्वरितंगत्वाशत्रुघ्नायानिवेदयन् ॥ कालस्यागमनंपश्चादत्रिपुत्रस्यचेष्टितम् ॥लक्ष्मणस्यचनिर्याणंप्रतिज्ञांराघवस्यच १९ पुत्राभिषेचनंचैवसर्वरामचिकीर्षितम् ॥श्रुत्वातद्दूतवचनंशत्रुघ्नःकुलनाशनम् २०व्यथितोपिधृतिंलब्ध्वापुत्रावाहूयसत्वरः ॥ अभिषिंच्यसुबाहुंवैमथुरायांमहाबलः २१ ॥

(चएवभक्तंपौरजनंवाढं इतिएवनिश्चयंकृत्यराघवः आहतस्मिन्एवअहनिराम.प्रभुः) पुनःनिश्चय करि भक्त जो पुरवासी जन तिन प्रति दृढ़करि साथै चलौ ऐसा निश्चयकरि रघुनन्दनबोलतेभये पुनः ताही दिन रघुनन्दन प्रभु १५ (चरामभद्रः कुशीलवौतौप्रस्थापयामासरथअष्टौसहस्राणि चएवदंतिनांसहस्रं) पुनः कल्याणरूप रघुनन्दन कुशलव दोऊ पुत्रोंको राज्याभिषेक करि बिदाकीन्हे तिनके हेत रथ आठ हजार पुनः हाथी एक हजार १६ (चअश्वषष्टिंसहस्राणांबलौएकएकस्मैददौ वहुरत्नौबहुधनौहृष्टपुष्टजनावृतौ) पुनः घोड़े साठि हजार इत्यादि सेना एक एक पुत्रके अर्थ देते भये पुनः वहुतरत्न सोनादि वहुत धन प्रसन्न सवल वीरजनों करिकै वेष्टित कुशलव १७ (रामंअभिवाद्यकुशीलवौतुकृच्छ्रेणगतौशत्रुघ्नानयनेराघव दूतान्प्रेषयामास) रघुनन्दनको प्रणामकरि कुश लव पुनः रघुनन्दनके वियोगते वड़े दुःख करिकै बिदाभये पुनःशत्रुघ्नको बुलानेहेत रघुनन्दन दूतोंको पठावते भये १८ (तेदूताःत्वरितंगत्वाकालस्यआगमनपश्चात् अत्रिपुत्रस्यचेष्टितं लक्ष्मणस्यनिर्याणंचैराघवस्यप्रतिज्ञांशत्रुघ्नायन्यवेदयत्) ते दूतत्वरतही जाय अयोध्यामें कालको आगमन पीछे दुर्वासाकृत सब हाल लक्ष्मणको तनत्याग पुनः प्रजायुत स्वर्गजानेहेत रघुनन्दनकी प्रतिज्ञा इत्यादि सब हाल शत्रुघ्नसे कहते भये १९ (पुत्राभिषेचनंचएवरामचिकीर्षितंसर्वकुलनाशनंतत् दूतवचनशत्रुघ्नःश्रुत्वा) प्रभु पुत्रनको राज्याभिषेक इत्यादि रघुनाथजीके करनेको सब अभीष्ट अरु कुलको नाशहोना सो दूतके वचनको शत्रुघ्नसुनिकै २० (व्यथितःअपिधृतिंलब्ध्वासत्वरः पुत्रौआहूयमथुरायांमहाबल.सुवाहुंअभिषिंच्य) वड़े व्यथाको प्राप्तभी धीर्य पायशीघ्रही पुत्रोंको बुलायकै मथुरा विषे महाबली सुवाहुको अभिषेक कीन्हे २१ ॥

यूपकेतुंचविदिशानगरेशत्रुसूदनः ॥ अयोध्यांत्वरितंप्रागात्स्वयंरामंदिदृक्षयः २२ ददर्शचमहात्मानंतेजसाज्वलनप्रभम् ॥ दुकूलयुगसंवीतंऋषिभिश्चाक्षयैर्वृतम् २३ अभिवाद्यरमानाथंशत्रुघ्नोरघुपुंगवम् ॥ प्रांजलिर्धर्मसहितंवाक्यंप्राहमहामतिः २४ अभिषिच्यश्रुतौतत्रराज्येराजीवलोचन ॥ तवानुगमनेराजन् विद्धिमांकृतनिश्चयम् २५ त्यक्तुंनार्हसिमांवीरभक्तंतवविशेषतः ॥ शत्रुघ्नस्यदृढांबुद्धिंविज्ञायरघुनन्दनः २६ सज्जीभवतुमध्याह्नेभवानित्यब्रवीद्वचः ॥ अथक्ष

णात्समुत्पेतुर्वानराःकामरूपिणः २७ ऋक्षाश्चराक्षसाश्चैवगोपुच्छाश्चसहस्रशः ॥ ऋषीणांदेवतानांचपुत्रारामस्यानिर्गमे २८ ॥

(यूपकेतुंविदिशानगरेचशत्रुसूदनः रामदिदृक्षयास्वयंत्वरितंमयोध्यांप्रागात्) यूपकेतु नामे पुत्रको विदिशा नगरमें अभिषेक करि पुनःशत्रुघ्न रघुनन्दनके देखनेकी इच्छा करिकै आप शीघ्रही अयोध्याको आवते भये २२ (अक्षयैःऋषिभिःवृतंयुगदुकूलसंवीतंतेजसाज्वलनप्रभं महात्मानंददर्शच) तहां चिरजीवी ऋषिन करिकै आवृत भाव वशिष्ठादिके बीचमें बैठे दो वस्त्र धारणकिहे भाव राजसी वसन भूषण रहित अपने तेज करिकै अग्निवत् प्रकाशमान ऐसे महात्मा रघुनन्दनको देखते भये पुनः २३ (महामतिःशत्रुघ्नःरमानाथंरघुपुंगवं अभिवाद्यप्रांजलिः धर्मसहितंवाक्यंप्राह) महा बुद्धिमान् शत्रुघ्न लक्ष्मीपति रघुनन्दनको प्रणाम करि हाथजोरि धर्म सहित वचन बोलते भये २४ (राजीवलोचनतत्रराज्येसुतौअभिषिच्य राजन्तवानुगमनेनिश्चयंकृतमांविद्धि) हे कमलनयन रघुनन्दन जहां मैं रहौं तहांकी राज्यमें पुत्रोंको अभिषेक करिकै हे राजन् आपके पाछे गमन करनेकी निश्चयकियेहुये मोको जानिये २५ (वीरविशेषतःतवभक्तंमांत्यक्तुंनअर्हसि शत्रुघ्नस्यदृढांबुद्धिंरघुनंदनःविज्ञाय) हे रघुवीर विशेष करिकै आपको भक्त जोमैंहौं ताको त्याग करिबेयोग्य नहींहौ भाव-मोकोभी संगै लैचलौ इति संगजानेमें शत्रुघ्नकी दृढ बुद्धिको रघुनन्दन जानिकै २६ (भवान्मध्याह्नेसज्जीभवतुइतिवचःअब्रवीत् अथक्षणात्कामरूपिणःवानराःसमुत्पेतुः) हे रिपुहन् मेरे संग गमन हेत तुम दुपहर समयमें तैयार रहेउ ऐसा वचन रघुनन्दन कहतेभये अव क्षणैभरेमें कामरूपी वानर आय प्राप्तहोते भये २७ (ऋक्षाःचराक्षसाःचएवसहस्रशः गोपुच्छाःचऋषीणांचदेवतानांचपुत्राःरामस्यनिर्गमे) ऋक्ष राक्षस पुनः हजारन गोपुच्छवाले वानर पुनः ऋषिनके अरु देवनके पुत्र जे वार भये ते सब रघुनन्दनको स्वर्ग गमन ताको २८ ॥

श्रुत्वाप्रोचुरघुश्रेष्ठंसर्वेवानरराक्षसाः ॥ तवानुगमनेविद्धिनिश्चितार्थाह्निनःप्रभो २९ एतस्मिन्नन्तरेरामंसुग्रीवोपिमहाबलः ॥ यथावदभिवाद्याहराघवंभक्तवत्सलम् ३० अभिषिच्यांगदंराज्येआगतोस्मिमहाबलम् ॥ तवानुगमनेरामविद्धि मांकृतनिश्चयम् ३१ श्रुत्वातेषांदृढंवाक्यंऋक्षवानररक्षसाम् ॥ विभीषणमुवाचेदंवचनंमृदुसादरम् ३२ धरिष्यतिधरायावत्प्रजास्तावत्प्रशाधिमे ॥ वचनाद्राक्षसंराज्यंशापितोसिममोपरि ३३ नाकिंचिदुत्तरंवाच्यंत्वयामत्कृतकारणात् ॥ एवंविभीषणंतूक्त्वाहनूमन्तंमथाब्रवीत् ३४ मारुतेत्वंचिरंजीवममाज्ञांमामृषाकृथाः ॥ जाम्बवन्तमथप्राहतिष्ठत्वंद्वापरांतरे ३५मयासार्द्धभवेद्युद्धंयत्किंञ्चित्कारणांतरे ॥ ततःतान्राघवःप्राहऋक्षराक्षसवानरान् ॥

(श्रुत्वावानरराक्षसाःसर्वेरघुश्रेष्ठंप्रोचुः प्रभोतवानुगमनेनिश्चितार्थाह्निनःविद्धि) रघुनन्दनको स्वर्गगमन सुनिकै वानर राक्षस सब रघुनन्दन प्रति बोलते भये हे प्रभो आपके पाछे जानेको निश्चयार्थ उसी दिनमें हम लोगोंको जानिये २९ (एतस्मिन्अंतरेभक्तवत्सलंराघवंरामंमहाबलः सुग्रीवःअपियथावत्अभिवाद्यआह) ताही समयमें भक्तनपर प्रीति करने वाले रघुबंशनाथ रामप्रति महाबली सुग्रीव भी यथायोग्य प्रणामकरि बोलतेभये ३० (महाबलंअंगदंराज्येअभिषिंच्यआगतः

अस्मिरामतत्रानुगमनेकृतनिश्चयंमांविद्धि) महाबलवन्त अंगदको राज्यमें अभिषेक करिकै आयाहौं हे रघुनन्दन आपके पीछे गमन करनेको निश्चयकिया है जिसने ऐसा मोको जानिये ३१ (ऋक्ष वानरराक्षसांतेषांदृढंवाक्यंश्रुत्वासादरंविभीषणंमृदुवचनंइदंउवाच) ऋक्ष वानर राक्षस तिनको संगगमन इति दृढबचन सुनिकै रघुनन्दन आदरसहित बिभीषणप्राति कोमल वचन इसप्रकार बोलतेभये ३२ (यावत्धराधरिष्यातितावत्मेवचनात् राक्षसंराज्यंप्रजाः प्रशाधिममोपरिशापितोसि) हे बिभीषण जबतक पृथिवी बनीरहै तबतक मेरीआज्ञासे राक्षस राज्य प्रजापालन करौ तोको मेरी शपथ हैं ३३ (मत्कृतकारणात्त्वयाकिंचित् उत्तरंनवाच्यं एवंविभीषणंउक्त्वातु अथहनूमन्तंअब्रवीत्) मेरी ऐसीही इच्छा है इसकारण से तुमकरिकै कछुभी उत्तर न कहाजाय इसप्रकार बिभीषणप्राति कहिकै पुनः रघुनन्दन अब हनूमान्प्रति बोलतेभये ३४ (मारुतेत्वंचिरंजीवममआज्ञांमृषामाकृथाः अथजांबवंतंप्राहत्वंद्वापरान्तरेतिष्ठ) हे पवनपुत्र तुम मेरीइच्छासे बहुत कालतक जीवतरहौ ताते मेरीआज्ञाको वृथामतिकरौ अब जाम्बवन्तप्राति रघुनन्दन बोले कि हे जाम्बवान् तुम द्वापर के अन्ततक जीवतरहौ ३५(यत्किंचित्कारणान्तरे मयासार्द्धंयुद्धंभवेत् ततःऋक्षराक्षसवानरानृतान् राघवःप्राह) तब जो कछु कारणते,मेरेसाथ तुम्हारा युद्धहोइगो तब मेरे लोकको प्राप्तहोहुगे तदनन्तर ऋक्ष राक्षस वानर जोहैं तिनप्रति रघुनन्दन बोलतेभये ॥

सर्वांस्त्वेवमयासार्द्धंप्रयातेतिदयान्वितः ३६ ततःप्रभातेरघुवंशनाथोविशालवक्षा सितकंजनेत्रः ॥ पुरोधसंप्राहवशिष्ठमार्ययांत्वग्निहोत्राणिपुरोगुरोमे ३७ ततो वशिष्ठोपिचकारसर्वंप्रस्थानिकंकर्ममहद्विधानात् ॥ क्षौमांबरोदर्भपवित्रपाणिर्महाप्रयाणायगृहीतबुद्धिः ३८ निष्क्रम्यरामोनगरात्सिताभ्राच्छशीवयातःशशिकोटिकांतिः ॥ रामस्यसव्येसितपद्महस्तापद्मागतापद्मविशालनेत्रा ३९ पार्श्वेथ दक्षेरुणकञ्जहस्ताश्यामाययौभूरपिदीप्यमाना ॥ शास्त्राणिशस्त्राणिधनुश्चबाणा जग्मुःपुरस्ताद्धृतविग्रहास्ते ४० वेदाश्चसर्वेधृतविग्रहाश्चययुश्चसर्वेमुनयश्च दिव्याः ॥ माताश्रुतीनांप्रणवेनसाध्वीययौहरिंव्याहृतिभिःसमेता ४१ ॥

(मयासार्द्धंसर्वान्एवप्रयात् इतिदयान्वितः) मेरेसाथ सबलोगचलैं ऐसाबचन दयायुतरघुनन्दन कहे ३६ (ततःविशालवक्षःअसितकंजनेत्रः रघुवंशनाथःप्रभातेपुरोधसंआर्यंवशिष्ठंप्राहगुरोमेपुरःअग्निहोत्राणियान्तु)तदनन्तर विशालहै वक्षस्स्थल जिनका नीलकमलसम नेत्र जिनकेऐसेरघुवंशनाथ प्रातसमय में उपरोहित श्रेष्ठ जो वशिष्ठ तिनप्रति बोलतेभये हे गुरो मेरेआगे अग्निहोत्रके अग्निस सामग्रीचलै ३७ (ततःवशिष्ठःअपिप्रस्थानिकंकर्ममहत्विधानात् सर्वंचकारक्षौमांबरःदर्भपवित्रपाणिःमहाप्रयाणायगृहीतबुद्धिः) तदनन्तर वशिष्ठ भी यात्रासमयके जोकर्म सो बड़े विधि बिधानसे सबकरतेभये रेशमीबसन धारणकिहे कुशकी पवित्री हाथमें महायात्राके अर्थ ग्रहणकरी बुद्धि जिन्होंने ३८ (सिताभ्रात्शशीःइवयातःकोटिशशिकान्तिः रामःनगरात्निष्क्रम्यसतपद्महस्तापद्माविशालनेत्रापद्मारामस्यसव्येगता) समूह श्वेत मेघोंमेंसे चन्द्रमा यथाजाता है तैसेही धवलधामों के बीचमें कोटिन चन्द्रसम कांतिवन्त रघुनन्दन जातेहुये नगरते बाहर निकले पुनः श्वेतकमल हाथ में कमलसम बिशालनेत्र जिनके ऐसी लक्ष्मी रघुनन्दन के वामभाग में शोभित हैं ३९ (अथदक्षे पार्श्वेअरुणकञ्जहस्ताश्यामाभूः अपिदीप्यमानाययौशस्त्राणिशास्त्राणिचधनुः बाणाःधृतविग्रहाःते

पुरस्तात्जग्मुः) अरु प्रभुके दक्षिणदिशि अरुणकमल हाथमें तेरहवर्ष की अवस्था स्वरूप धारण किहे पृथिवीभी दिव्यप्रकाशमान चलीजाती है तथा अस्त्र शस्त्र धनुषबाण धारण किहे स्वरूप आगेआगे चलेजाते हैं ४० (धृतविग्रहाःसर्वेवेदाःचदिव्याःसर्वेसुनयःययुःचप्रणवेनव्याहृतिभिः समेताःश्रुतीनांमातासाध्वीहरिंययौ) धारणाकिहे स्वरूप सबवेद पुनः दिव्यस्वरूप सबमुनि जाते हैं पुनःप्रणव अरु व्याहृती करिकै सहित वेदन की माता गायत्री मूर्त्तिमान् रघुनन्दन के साथै चली जाती है ४१ ॥

गच्छंतमेवानुगताजनास्ते सपुत्रदाराःसहबन्धुवर्गैः ॥ अनावृतद्वारमिवापवर्गं शामंव्रजंतंययुरात्तकामाः ४२ सांतःपुरःसानुचरःसभार्यः शत्रुघ्नयुक्तोभरतोनुययात् ॥ गच्छंतमालोक्यरमासमेतं श्रीराघवंपौरजनाःसमस्ताः ४३ सबालवृद्धाश्चययुर्द्विजाग्र्या सामात्यवर्गाश्चसमंत्रिणोययुः ॥ सर्वेगताःक्षत्रमुखाःप्रहृष्टा वैश्याश्चशूद्राश्चतथापरेच ४४ सुग्रीवमुख्याहरिपुंगवाश्च स्नाताविशुद्धाशुभशब्दयुक्ताः ॥ नकश्चिदासीद्भवदुःखयुक्तो दीनोथवावाह्यसुखेषुसक्तः ४५ आनन्दरूपानुगताविरक्ता ययुश्चरामंपशुभृत्यवर्गैः ॥ भूतान्यदृश्यानिचयानितत्र येप्राणिनःस्थावरजंगमाश्च ४६ साक्षात्परात्मानमनंतशक्तिं जग्मुर्विरक्ताःपरमेकमीशम् ॥ नासीदयोध्यानगरेतुजंतुः कश्चित्तदाराममनानयातः ४७ ॥

(सहबंधुवर्गैःसपुत्रदाराःजनाः आप्तकामाःतेव्रजंतंरामंअनुगता गच्छंतंएवअनावृतद्वारंअपवर्गंइव ययुः) सहित भाई लोगन सहित पुत्र स्त्री सब जन पूर्ण प्राप्त मनोकामते अवधवासी अब जातेहुये जो राम तिनके पाछे कैसे चलेजाते हैं यथा खुलेहुये द्वार में मुक्ति धाम में मनो जाते हैं ४२ (सअंतःपुरःसअनुचरःसभार्यःशत्रुघ्नयुक्तःभरतःअनुयायात् रमासमेतंश्रीराघवंगच्छंतंआलोक्यपौरजनाः समस्ताः) सहित अंतःपुर के लोग सहित सेवकन शत्रुघ्नयुक्त भरत पाछे जाते हैं जिनके सो लक्ष्मी समेत श्रीरघुनाथजी को जाते देखिकै पुरवासी जन सब ४३ (सबालचवृद्धाद्विजाग्र्याःययुःस आमात्यवर्गाःचमंत्रिणःययुःक्षत्रमुखाः च वैश्याःचशूद्राःचतथाअपरेप्रहृष्टाःसर्वेगताः) सहित बाल वृद्ध ब्राह्मण श्रेष्ठ चलते भये क्षत्री आदि पुनः वैश्य पुनः शूद्र पुनः तैसेही अपर जाति इत्यादि आनन्द युत सब जाते भये ४४ (सुग्रीवमुख्याःचहरिपुंगवाःशुभशब्दयुक्ताःस्नाताःविशुद्धाः भवदुःखयुक्तःदीनः अथवा वाह्यसुखेषुसक्तःकश्चित्नआसीत्) सुग्रीव आदि उत्तम बानर श्रीसीतानाथ की जय होय इत्यादि मंगलीक शब्द उच्चारण युक्त स्नान करते विशेषि शुद्ध अंतःकरण जिनके श्रीराम प्रीतिरंग में रँगे आनन्द पुनः भवबन्धन दुःखयुक्त दीन अथवा वाह्य इन्द्री विषय सुखमें असक्त ऐसा कोई नहीं होता भया ४५ (पशुभृत्यवर्गैःचयानिअदृश्यानिभूतानिचस्थावरजंगमातत्रयेप्राणिनःविरक्ताःचआनन्दरूपाःरामंअनुगताययुः) हाथी घोड़ा गौ वृषभादि सब पशु दासी दासादि सेवकमात्र सबों करिकै सहित पुनः जो देखने में नहीं आते हैं ऐसे गुप्तजीव पुनः वृक्षादि जे अचरहैं पक्षी कीट पतंगादि जो चलि सकते हैं इत्यादि तहांये प्राणधारीमात्र सबलोकसै विरक्त आनन्दरूप रघुनंदनके पाछे जाते भये ४६ (साक्षात्परात्मानंअनन्तशक्तिंपरंएकंईशंविरक्ताःजग्मुःतुतदा राममनानयातःकश्चित्जंतुः अयोध्यानगरेनआसीत्) साक्षात् परमात्मा अनन्तशक्ति मायापर एक ईश्वर रघुनन्दनके पाछेविरक्त सबगयेपुनः तासमय में जो रघुनन्दनके संग न जाताहोइ ऐसाकोई जीवअयोध्या नगरमें नहीं है ४७॥

शून्यंबभूवाखिलमेवतत्रपुरंगतेराजनिरामचंद्रे॥ततोतिदूरंनगरात्सगत्वादृष्ट्वानदींतांहरिनेत्रजाताम् ४८ ननंदरामःस्मृतपावनोतोददर्शचाशेषमिदंहृदिस्थम्॥ अथागतस्तत्रपितामहोमहान्देवाश्चसर्वेऋषयश्चासिद्धाः ४९ विमानकोटीरभिपारपारंसमावृतंखंसुरसेविताभिः ॥ रविप्रकाशाभिरभिस्फुरत्स्वंज्योतिर्मयंतत्रनभोबभूव ५० स्वयंप्रकाशैर्महतांमहद्भिः समावृतंपुण्यकृतांवरिष्ठैः ॥ ववुश्चपातश्चसुगंधवंतो ववर्षवृष्टिःकुसुमावलीनाम् ५१ उपस्थितेदेवमृदंगनादे गायत्सु विद्याधरकिन्नरेषु ॥ रामस्तुपद्भ्यांसरयूजलंसकृत्स्पृष्ट्वापरिक्रामदनंतशक्तिः ५२ ब्रह्मातदाप्राहकृतांजलिस्तं रामपरात्मन्परमेश्वरस्त्वं ॥ विष्णुःसदानंदमयोसिपूर्णो जानासितत्त्वंनिजमैशमेकम् ५३ ॥

(राजनिरामचंद्रेगतेतत्रअखिलंपुरंएवशून्यंबभूवततः नगरात्अतिदूरंसगत्वाहरिनेत्रजातांनदींतां दृष्ट्वा) महाराज रामचन्द्र के जात सन्ते तहां सम्पूर्ण अवधपुर भी शून्य भया तदनन्तर नगर ते अति दूर रघुनन्दन जायकै तहां हरि नेत्र सों उत्पन्न नदी जो सरयू है तिनहिं देखते भये ४८ (पावनोतोस्मृतननन्दरामःचइदंअशेषंहृदिस्थंददर्श अथमहान्देवाःचसर्वेऋषयःचसिद्धाःपितामहः तत्रआगतः) तहां पावन जो अपना विराट् रूप ताको स्मरण करि आनन्द ह्वै रघुनन्दन पुनः यह जो सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को अपने हृदय में स्थित देखते भये अव ताही समय महान् सब देवता पुनः सब ऋषि पुनः सब सिद्ध अरु ब्रह्मा इत्यादि तहां आवते भये ४९ (सुरसेविताभिःविमानकोटिभिः अपारपारंखंसमावृतंरविप्रकाशाभिः स्वंअभिस्फुरत्तत्रज्योतिःमयंनभःबभूव) देवतों के विमान करोरिन जिनको ओर छोर नहीं देखाता है ऐसे आकाश में परिपूर्ण हैं जे सूर्यवत् अपनी प्रकाश करिकै ऐसे प्रकाशमान कि तहां प्रकाशमय आकाश होता भया ५० (पुण्यकृतांवरिष्ठैःस्वयंप्रकाशैःमहतांमहद्भिःसमावृतंसुगन्धवन्तःवातःववुः चकुसुमावलीनांवृष्टिःववर्ष) जे अन्यलोकोंमें पुण्य करि स्वर्गमें श्रेष्ठ भये तिन करिकै पुनः जे स्वयं प्रकाशमाने उत्पन्न भये तिन करिकै जे महात्मा हैं तिन करिकै आकाश परिपूर्ण अरु सुगन्धित वायु वहत पुनः समूह फूलों की वर्षा ह्वै रही है ५१ (देवमृदंगनादेउपस्थितेविद्याधरकिन्नरेषुगायत्सुअनन्तशक्तिः रामःसरयूजलंपद्भ्यांसकृत्स्पृष्ट्वातुपरिक्रामत्) देवतों के मृदंग वाजत सन्ते विद्याधर किन्नरन के गावत सन्ते अनन्त शक्ति रघुनन्दन सरयू जल को पाँयन करिकै एक वार स्पर्श करि पुनः भमिवत् जलपर चलतेभये ५२ (तदातंरामंब्रह्माकृतांजलिः प्राहपरात्मन्त्वंपरमेश्वरःविष्णुःसदाआनन्दमयोऽसिनिजंऐशंतत्त्वंएकंजानासि) ताहीसमय में तिन रघुनन्दन प्रति ब्रह्मा हाथ जोरिकै बोलते भये हे परमात्मन् आप परमेश्वर विष्णु सदा आनन्दमय हौ अरु अपना ईश्वर तत्त्व एक आपही जानते हौ ५३ ॥

तथापिदासस्यममाखिलेश कृतंवचोभक्तपरोसिविद्वन् ॥ त्वंभ्रातृभिर्वैष्णवमेकमाद्यं प्रविश्यदेहंपरिपाहिदेवान् ५४ यद्वापरोवायदिरोचतेतं प्रविश्यदेहंपरिपाहिनस्त्वम् ॥ त्वमेवदेवाधिपतिश्चविष्णुर्जानंतिनत्वांपुरुषाविनामां ५५ सहस्रकृत्वस्तुनमोनमस्ते प्रसीददेवेशपुनर्नमस्ते ॥ पितामहप्रार्थनयासरामः पश्यत्सुदेवेषुमहाप्रकाशः ५६ मुष्णंचचक्षूंषिदिवौकसांतदाबभूवचक्रादियुतश्चतुर्भुजः ॥

शेषोबभूवेश्वरतल्पभूतः सौमित्रिरत्यद्भुतभोगधारी ५७ बभूवतुश्चक्रदरौचदिव्यौकैकेयिसूनुर्लवणांतकश्च ॥ सीताचलक्ष्मीरभवत्पुरेव रामोहिविष्णुःपुरुषःपुराणः ५८ सहानुजःपूर्वशरीरकेन बभूवतेजोमयदिव्यमूर्तिः ॥ विष्णुंसमासाद्यसुरेंद्रमुख्या देवाश्चसिद्धामुनयश्चयक्षाः ५९ ॥

(तथापित्रिअखिलेशभक्तपरःअसिदासस्यममवचःकृतं विद्वन्भ्रातृभिःत्वंएकंआद्यंवैष्णवंदेहंप्रविश्यदेवान्परियाहि) आपकी ऐश्वर्य कोऊ नहीं जानता है तौभी हे अखिलेश सबके पालनहार भक्तन पर प्रीति.राखतेहौ ताते आपको दास जो मैंहौं ताको कहा बचन करतेहौ इसहेत कहताहौं हे विद्वन् भाइनसहित आप अब एकसबको आदि कारण वैष्णवदेह में प्रवेशह्वै देवनको पालनकीजै ५४ (यद्वापरःवायदिरोचतेतंदेहंत्वंप्रविश्यनःपरिपाहित्वंदेवाधिपतिः एवचविष्णुःमांविनापुरुषाःत्वांनजानन्ति) अथवा पर रूप में अर्थात् साकेत विहारी रूप में प्रवेश होउ अथवा जो रुचि होय तिस देह में प्रवेश है हम लोगों को पालन करौ आप सब देवों के स्वामी हौ भाव परात्पर रूप पुनः विष्णु हौ यह बात मेरे बिना और पुरुष आप को नहीं जानते हैं ५५ (देवेशप्रसीदतेसहस्रकृत्वस्तुनमोनमः पुनःतेनमः पितामहप्रार्थनयासर्वदेवेषुपश्यत्सुसरामःमहाप्रकाशः) हे देवेश प्रसन्न होहु आपके अर्थ मेरा हजारन वार नमस्कार है पुनः वारम्वार नमस्कार है इति ब्रह्मा की प्रार्थना से सब देवन के देखत सन्ते राघव महा प्रकाशरूप है ५६ (तदादिवौकसांचक्षुंषिमुष्णन्चचक्रादियुतःचतुर्भुजः बभूवसौमित्रिःअद्भुतभोगधारीशेषःबभूवईश्वरतल्पभूतः) अपने तेज करिकै देवतों के नेत्र दृष्टि हरि लिये पुनः चक्रादि अस्त्रन सहित चतुर्भुज होते भये पुनः लक्ष्मण अद्भुत फणधारी शेष होते भये तो ईश्वर की शय्या भये ५७ (लवणांतकःचकैकेयीसूनुःदिव्यौचक्रदरौचबभूवतुः सीताचपुरैवलक्ष्मीः अभवत्रामःहिपुरुषःपुराणःविष्णुः) लवणासुर के नाशक शत्रुघ्न दिव्य चक्र भये कैकेयीपुत्र भरत शङ्ख भये सीता पुनः पूर्ववत् लक्ष्मी होती भई रघुनन्दन पुरुष पुराण विष्णु भये ५८ (सहानुजःपूर्वशरीरकेनतेजोमयदिव्यमूर्तिःबभूवसुरेन्द्रमुख्यादेवाःचसिद्धाःमुनयःचयक्षाः) सहित छोटे भाइन रघुनन्दन पूर्व शरीर करिकै तेजमय दिव्यमूर्ति होतेभये अब इन्द्रादि देवता पुनःसिद्ध मुनियक्ष ५९ ॥

पितामहाद्याःपरितःपरेशंस्तवैर्गृणंतःपरिपूजयंतः ॥ आनन्दसंप्लावितपूर्णचित्ता बभूविरेप्राप्तमनोरथास्ते ६० तदाहविष्णुर्द्रुहिणंमहात्मा एतेहिभक्तामयिचानुरक्ताः ॥ यांतंदिवंमामनुयांतिसर्वे तिर्यक्शरीराअपिपुण्ययुक्ताः ६१ वैकुण्ठसाम्यंपरमंप्रयांतु समाविशस्वाशुममाज्ञयात्वं ॥ श्रुत्वाहरेर्वाक्यमथाब्रवीत्कः सांतानिकान्यांतुविचित्रभोगान् ६२ लोकान्मदीयोपरिदीप्यमानांस्त्वद्भावयुक्ताःकृतपुण्यपुंजाः ॥ येचापितेरामपवित्रनाम गृह्णंतिमर्त्यालयकालएव ६३ अज्ञानतोवापिभजंतिलोकांस्तानेवयोगैरपिचाधिगम्यान् ॥ ततोतिहृष्टाःहरिराक्षसाद्यास्पृष्ट्वा जलंत्यक्तकलेवरास्ते ६४ प्रपेदिरेप्राक्तनमेवरूपं यदंशजात्रृक्षहरीश्वरास्ते ॥ प्रभाकरंप्रापहरिप्रवीरः सुग्रीवआदित्यजवीर्यवत्वात् ६५ ॥

(पितामहाद्याःपरितःपरेशंविष्णुंसमासाद्यस्तवैः गृणन्तःपरिपूजयंतःप्राप्तमनोरथाः तेआनंदसंप्लावितपूर्णचित्ताबभूविरे.) ब्रह्मादि सब देवता आय सब से परे ईश जो विष्णु तिनहिं प्राप्त है षोड़-

शोपचार पूजन करि स्तोत्रों करि स्तुति करि प्राप्त भया मनोरथ जिनका ते सब देवता आनन्द में मग्न पूर्ण चित्त होते भये ६० (तदामहात्माविष्णुःद्रुहिणंआह एतेहिमयिभक्ताः चअनुरक्ताःतिर्यक्शरीराःअपिपुण्ययुक्ताःमांदिवंयांतिसर्वेअनुयांति) ताही समय में महात्मा विष्णु ब्रह्मा प्रति बोलते भये कि ये सब अयोध्यावासी मेरे भक्त पुनः अनुरागी भाव मेरी प्रीति रंगमें तनमनते रँगे हैं तिन्हमें जे पशु आदि तिर्यक्योनि ते भी पुण्य युक्त हैं अरु मेरे स्वर्ग जात समय सब मेरे साथै जाते हैं ६१ (ममआज्ञयात्वंप्रयांतुवैकुण्ठसाम्यंपरमंआशुसमाविशस्यअथहरेः वाक्यंश्रुत्वाकःअत्रवर्तिविचित्रभोगान्सांतानिकान्यांतु) ताते मेरी आज्ञा करिकै तुम इनको ले जाय जे वैकुण्ठ के समान परमोत्तम लोक हैं तिनमें शीघ्रही प्राप्त करौ अब हरिके वचन सुनिकै ब्रह्मा बोलते भये कि जहां विचित्र भोग है त्यहि सान्तानिक लोक को जाहिं ६२ (त्वत्भावयुक्तःकृतपुण्यपुंजाःमदीयउपरिदीप्यमानांल्लोकान् चरामयेअपिमर्त्यालयकालएवतेपवित्रनामगृह्णंति) आप के प्रेम भावयुक्त किया है पुण्य समूह जिन्होंने ते मेरे लोकके ऊपर प्रकाशमान लोकों में वास पावैंगे पुनः हे रघुनन्दन जे प्राणी निश्चय करि मरण काल में भी आपको पवित्र नाम उच्चारण करते हैं ६३ (वाअज्ञानतःअपिभजंतुतान्लोकान्एवचअधिगम्यान्योगैःअपि) पुनः जे अज्ञान ते भी आपको भजतेहैं तेभी तिन उत्तम लोकोंको जाने योग्य हैं (ततःहरिराक्षसाद्याअतिहृष्टाजलंस्पृष्ट्वात्यक्तकलेवराःते) तदनन्तर वानर राक्षसादि अत्यन्त आनन्द सहित सरयू जल स्पर्श करि तन त्याग करि ते ६४ (यत्अंशजात्ऋक्षहरीश्वराःतेप्राक्तनंएवरूपंप्रपेदिरेआदित्यजवीर्यंवरवात्सुग्रीवहरिप्रवीरःप्रभाकरंप्राप) जिस देवअंश ते उत्पन्न जो ऋक्ष वानरादि भया तिनहीं पूर्व रूपन को प्राप्त भये यथा सूर्यन के वीर्य से उत्पन्न भये सुग्रीव वानरन में श्रेष्ठवीर ते सूर्य के रूप को प्राप्त भये ६५ ॥

ततोविमग्नासरयूजलेषु नराःपरित्यज्यमनुष्यदेहम् ॥ आरुह्यदिव्याभरणाविमानं प्रापुश्चतेसांतनिकाख्यलोकान् ६६ तिर्यक्प्रजाताअपिरामदृष्टा जलंप्रविष्टादिवमेवजाताः ॥ दिदृक्षवोजानपदाश्चलोका रामंसमालोक्यविमुक्तसंगाः ६७ स्मृत्वाहरिंलोकगुरुंपरेशं स्पृष्ट्वाजलंस्वर्गमवापुरंजः ॥ एतावदेवोत्तरमाहशंभुःश्रीरामचंद्रस्यकथावशेषम् ६८ यःपादमप्यत्रपठेत्सपापाद्विमुच्यतेजन्मसहस्रजातात् दिनेदिनेपापचयंप्रकुर्वन्पठेन्नरःश्लोकमपीहभक्त्या ॥ विमुक्तसर्वाघचयः प्रयातिरामस्यसालोक्यमनन्यलभ्यम् ६९ आख्यानमेतद्रघुनाथकस्यकृतंपुरा राघवचोदितेन ॥ महेश्वरेणाप्तभविष्यदर्थं श्रुत्वातुरामःपरितोषमेति ७० रामायणंकाव्यमनंतपुण्यं श्रीशंकरेणाभिहितंभवान्यै ॥ भक्त्यापठेद्यःशृणुयात्सपापैर्विमुच्यतेजन्मशतोद्भवैश्च ७१ ॥

(ततःसरयूजलेपुविमग्नाअमनुष्यदेहंपरित्यज्य नराःदिव्याभरणाःविमानंआरुह्य च सांतनिकाख्य लोकान्प्रापुः) तदनंतर सरयू जलमें स्नान करतेही मनुष्य देहत्यागि नर दिव्यतन किरीट कुंडलादि दिव्य विभूषण धारण किहे विमानों पर सवार पुनः सांतनिक नामे लोकको प्राप्तहोते हैं ६६ (तिर्यक्प्रजाताअपिरामदृष्टाजलंप्रविष्टादिवंएवजाताः च जानपदाःलोकादिदृक्षवःरामंसमालोक्यविमुक्तसंगाः) गो गजाश्व श्वानादि जेतिर्यक् योनिन में भी उत्पन्न भये जिनको रघुनन्दन दया दृष्टि

देखेते भी सरयू जलमें स्नान करि दिव्य देहह्वै स्वर्गको जातेहैं पुनः राज्यवासी लोग जे देखने हेत आयेरहैं तेभी रघुनन्दन को देखि देहसनेह त्यागकरि ६७ (लोकगुरुंपरेशंहरिंस्मृत्वाजलंस्पृष्ट्वाअंजः स्वर्गंअवापुः एतावत्श्रीरामचन्द्रस्यकथाअवशेषंशंभुःउत्तरंएवआह) तेभी जनलोक गुरुपरेश हरि रघुनन्दन को स्मरण करि जलमें स्नान करि दिव्य देह ह्वै शीघ्रही स्वर्गको प्राप्तभये एती श्रीरघुनाथजी की कथा जो बाकीरही ताहि शिवजी उत्तरकाण्ड में वर्णन कीन्हे ६८ (यःपादंअपिअत्रपठेत्सजन्मसहस्रजातात्पापात्विमुच्यते नरःभक्त्याअपीहश्लोकंदिनेदिनेपठेत् पापचयंप्रकुर्वन्सर्वांपचयःविमुक्त) जो मनुष्य श्लोकको एक चरण भी इस रामायणमें पढ़ता है सो हजारों जन्मके उत्पन्न पापोंते छूटि जाता है पुनः जो मनुष्य भक्ति सहित निश्चय करि याको एक श्लोक प्रतिदिन पढ़ता है सो प्रतिदिन किये सर्व पापोंसे छूटिकै (अनन्यलभ्यंरामस्यसालोक्यंप्रयाति) जो किसी को लब्धनहीं तिस रघुनाथजी की सालोक्य मुक्तिको जाताहै ६९ (पुराराघवचोदितेनभविष्यत् अर्थंआसमहेश्वरेणकृतंएतत्रघुनायकस्यआख्यानंश्रुत्वातुरामःपरितोषंएति) पूर्वही रघुनन्दन की प्रेरणा करिकै होनहार अर्थ पायकै शिवजीने करा यह जो रघुनन्दनको चरित अध्यात्मरामायण ताको श्रवण कीन्हेते रघुनाथजी प्रसन्न होते हैं यह विचारि नित्य पाठकरै ७० (भवान्यैश्रीशंकरेणअभिहितंअनंतपुण्यंकाव्यंरामायणंयःभक्त्यापठेत्शृणुयात्सजन्मशतोद्भवैःचपापैःविमुच्यते) भवानीके अर्थ श्रीशंकरजी ने वर्णन किया अनंत पुण्यदायक काव्य यह जो अध्यात्मरामायण है ताहि जो प्राणी भक्तिसे पढ़ता सुनता है सो सैकरों जन्मके उत्पन्न हुये पापों करिकै छूटि जाताहै ७१ ॥

अध्यात्मरामंपठतश्चनित्यंश्रोतुश्चभक्त्यालिखितुश्चरामः ॥ अतिप्रसन्नश्चसदासमीपेसीतासमेतःश्रियमातनोति ७२ रामायणंजनमनोहरमादिकाव्यंब्रह्मादिभिःसुरवरैरपिसंस्तुतंच ॥ श्रद्धान्वितःपठतियःशृणुयात्तुनित्यंविष्णोःप्रयातिसदनंसविशुद्धदेहः ७३ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेउत्तरकाण्डेनवमःसर्गः ९ ॥ समाप्तम् ॥

(अध्यात्मरामंनित्यंपठतःचश्रोतुःचभक्त्यालिखितुःचसीतासमेतःरामःअतिप्रसन्नःसदासमीपेचश्रियंआतनोति) अध्यात्मनामे रामचरितको जे नित्यहीं पढ़ते वा श्रवण करते हैं अथवा जीविका रहित भक्तिसे लिखते हैं ताके सीता समेत रघुनन्दन सदा समीपही रहते हैं पुनः लक्ष्मी उत्पन्न करते हैं अर्थात् अन्न धनादि सुख संपदा वृद्धि करते हैं ७२ (ब्रह्मादिभिःसुरवरैःअपिसंस्तुतंचजनमनोहरंआदिकाव्यंरामायणंयःश्रद्धान्वितः नित्यंपठतितुशृणुयात्सविशुद्धदेहः विष्णोःसदनंप्रयाति) ब्रह्मादि उत्तम देवतों करिकै स्तुति करिबे योग्य हरि जननको मन हरनहारी आदि काव्य रामायण को जोप्राणी सहित श्रद्धा नित्यही पढ़ता पुनः श्रवण करता है सो पापकामादिमल रहित शुद्ध देहते विष्णुके धामको जाता है ७३ खंबाण खंडचशशौशुभविक्रमाब्दे माघे त्रयोदशि सिते रविबार पुष्ये ॥ सीतासमेतरघुनाथ पवित्र कीर्ति अध्यात्मभूषणमिदंकृत वैद्यनाथः ॥

दोहा डेहवासहित सुमानपुर नंबरदारी ग्राम । बारहबंकी जिले महँ बैजनाथ ममनाम ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियबल्लभपदशरणागतबैजनाथविरचिते अध्यात्मभूषणेउत्तरकाण्डेनवमःप्रकाशः ९ ॥

श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण ॥

पूरे सातोकाण्ड अयोध्या पाठशाला के तृतीयाध्यापक पण्डित महेशदत्तकृत भाषा—यह वही पण्डितजी महाराज हैं जिन्होंने पहिले देवीभागवत और विष्णुपुराण का उल्था किया है दोभागों में यथातथ्य सुगमरीति से परिपूर्ण श्लोकके अनुसार हुआहै कोई शब्दभी छूटने नहींपाया और श्लोक के जानने के लिये अंकभी लगादिये कि भ्रम न पड़े अक्षर टैपके बहुत पुष्ट डबलपैका अत्र के दुमरीवार वड़ी होशियारी से छापी गई है ॥

रामायणतुलसीकृत टीका बैजनाथकृत ॥

इस उत्तमोत्तम व नवीन विस्तृत टीकाको श्रीनवाबगंज प्रदेशान्तर्गत देहवामानपूरके नम्बरदार बैजनाथजीने सकल आगम निगम पुराण स्मृत वेदान्तादिका सम्मतलेकर निर्मितकियाहै प्रथमतो इस टीका में विशेष उत्तम वार्त्ता यह कियाहै कि सनातनभाषा अर्थात् देहातके बोल चालवाले शब्दोंमें अति सरलता युक्तहै दूसरे रामायणके किसी गूढ़ व सरल स्थलका आशय नहींरहनेपाया कहांतकप्रशंसा करें आजतक तो ऐसा टीका देखनेमें नहींआया कि जिसके अवलोकनमात्रसे रामायणका अर्थ अच्छे प्रकार भासित होजायगा-इसके सिवाय इन्हीं महाशय ने-रामायण कवितावली-बरवै-छप्पै-कुण्डलिया-दोहावली-विनयपत्रिका-रामायण सतसयी और यावत् श्रीगोसाईंजीकी काव्यहै उन सबका तिलक सुन्दर आर्य भाषामें कियाहै-और वे सब इस छापेखाने में छापीगई हैं आशा है कि जो विद्वान् दृष्टिगोचर करेंगे परमानन्द होंगे ॥

रामनिवास रामायण ॥

जानकीप्रसादजी कृत-जिसमें तुलसीकृत रामायणकी रीतिसे सातोकाण्ड श्रीरामचन्द्र जन्मोत्सव बाललीला विश्वामित्र यज्ञरक्षण, धनुषयज्ञ, जानकी स्वयम्बर, धनुभंग, परशुराम सम्वाद, वनागमन, जानकीहरण, रावणवध, भरतमिलाप, राज्याभिषेक ज्ञानमार्ग, रामगीता, प्रेमाविकार, जानकीविजय, अश्वमेधयज्ञ, विनयनयनीति विचारादिकी ललित कथा अनेक छन्दोंमें वर्णितहैं ॥

रामायणअध्यात्मविचार भाषा ॥

पंडित यमुनाशंकरजी रचित जिसमें श्रीरामचन्द्रादि चारों भाई और सब रामायणकी प्रतिकथा वेदान्तशास्त्र की रीति श्रुति समन्वय पूर्वक वर्णन कीगई है ॥

अद्भुतरामायण ॥

लालालालमणिजी रचित-इसमें श्रीसीतामहारानीकी करालं शक्तियोंका उत्पन्न होकर महिरावण के नाश होनेकी लीला पद्य में कथितहै बहुतही मनोहर कथाहै ॥

रामाश्वमेधभाषा ॥

श्रीपरमहंसकृष्णदासकृत- जिसमें दोहा चौपाई और सोरठादि अनेक छन्दों में रामचन्द्रके अश्वमेधकी सम्पूर्ण कथा वर्णितहै ॥

गीतरामायण ॥

महावीरदासकृत—जिसमें गीतोंमें रामायणकी कथा संक्षेपसे वर्णित है कागज़ सफेदहै ॥

श्यामरामायणपत्रानुमा ॥

श्यामलालजीकृत—जिसमें दोहा चौपाई आदि छन्दों में रामायणकी कथा संक्षेपसे वर्णित है कागज़ सफेद है ॥

रामायण छंदावली तुलसीकृत मूल ॥

जिसमें छन्दोंमें सातोंकांड रामायणकी कथा संक्षेप से वर्णितहै ॥

अध्यात्म रामायण भाषा टीकासहित ॥

फर्रुखाबाद निवासी पंडित उमादत्तकृत टीकासहित जिसमें सातकाण्डों में रामचन्द्रजीका सम्पूर्ण चरित्र वर्णितहै यह गुप्त रामायण श्रीशिवजी महाराजने पहले पार्वती से वर्णनकी वही ज्ञानामृत ब्रह्माजी ने नारदजीसे उपदेशकिया और नारदजीसे बाल्मीकिव्यास आदि ऋषियोंने प्राप्तकिया व्यास जी से सूतने अध्यात्मज्ञानपाकर नैमिषारण्य में शौनक आदि ऋषियों को ब्रह्मांडपुराण में सुनाया जिससे इस दिव्यरूप ज्ञान रूप रामायण का प्रचार लोक में प्रसिद्ध हुआ ॥

तुलसीकृत रामायणकी मानसप्रचारिका ॥

इस नवीन टीकाको बैकुंठबासी महन्त हरिउद्धवदासजी के शिष्य श्रीजानकीदासजीने जोकि अयोध्यानिवासीथे रचनाकियाहै इसमें तुलसीकृत रामायणमें बन्दनासे पैंतालीस अष्टपदी दोहे चौपाईकी टीका रचीगई है इस सुगमटीकाके पढ़नेसे बहुतसी रामायण और शास्त्रकी गूढ़बातें मालूम होती हैं ॥

अवध विलास रामायण ॥

ठाकुर महाबीरसिंहकृत जिस में भजनोंमें पूरीरामायणकी कथावर्णित है ॥

कुण्डलिया रामायण सटीक ॥

जिसमें सात काण्डोंमें श्रीरामायण तुलसीकृत की भांति कुण्डलिया छन्दों में श्रीरामचन्द्रजीका सम्पूर्ण चरित्रवर्णितहै जिसकी कुण्डलिया छन्दोंको श्रीतुलसीदासजी और भाषाटीकाको जिलान-न्वाबगंज मौजे डेहवा मानपुरके नम्बरदार बैजनाथकुर्मीने रचना कियाहै ॥

उभयप्रबोधक रामायण भाषा ॥

इसको बाबाबन्नादासजीने अनेक प्रकारके ललित छन्दों में रचना कियाहै इसमें भी रामायणकी कथा बिस्तार समेत वर्णितहै ॥